कालिका चार्य सङ्कलितसूत्र, [तदुपरि श्रीमलयगिरि सूरि कृता संस्कृत टीका] और पूज्य परमानन्दर्षि कृत भाषा टीका युत

पहिली दफे १००० पुस्तकें छपी
इस दाम की पुस्तक ५०॥-)

श्रीयुत राय धनपतिसिंह बहादुर कृत आगमसङ्ग्रह के

साधारण की पुस्तक ॥ १५ पनरहवा भाग सूत्र ॥ दाम १०) रुपया

॥ पंनवणा सूत्र चतुर्थोपाङ्ग प्रारम्भः ॥

लौकागच्छीय श्री रामचन्द्र गणि कृत संस्कृतानुवाद युत

ऋषि नानकचन्दजी से संशोधित होके मुद्रित हुआ।

५०० राय धनपतिसिंह बहादुर
५०० जैनियों में बांटी हैं

इस पुस्तक पर रजिस्टरी हुई है [बनारस जैन प्रभाकर प्रेस नानकचन्द्र जती] संवत् १९४१ । सन् १८८४ ईसवी ।

॥ विज्ञापनम् ॥

आसीद्दूगड़गोत्रज पृथुयशा श्रीवीरदासाभिधस्तत्पुत्रोबुधसिंहऊर्जितयशास्सूनुस्तदीयोगुणी । ख्यात श्रीलप्रतापसिंहविजयी भार्यातुरीयासती तस्यश्रीमहताबनामविदिताकुक्षेस्तदीयादभूत् ॥ १ ॥ उद्यत्कीर्त्तिरुदारधर्मदृढधी लक्ष्मीपते सादर श्रीमद्रायबहादुरोधनपति सिंहोगुणग्रामणी । श्रीजैनागमसङ्ग्रहसमकरोल्लोकोपकृत्यैचिरम् टीकावार्त्तिकसंयुतसुलिपिभि समुद्राप्यत्याशुतम् ॥ २ ॥ कृत्वापञ्चशतस्थलेषुचपुनस्तावन्त्यहोपुस्तका गाराण्येषुचपुस्तकानिसकलान्यस्थापयत्सादरम् । कुर्वन्त्वागमपाठनञ्चपठन सत्साधव श्रावका स्थित्यैश्रीजिनशासनस्यचपुनर्विज्ञानधर्मर्द्धये ॥ ३ ॥ प्राग पञ्चदशश्वलस्यगुरुक प्रज्ञापनास्योधुना नानापुस्तकपाठभेदबहुलोल्लेखप्रमादादपि । दुर्वाच्य खलुवृत्तिवार्त्तिकधृतपाठन्तथाप्राक्तन श्रीमत्पूजित रामचन्द्रगणिभिर्शोध्यबुध्वामया ॥ ४ ॥ संशोध्यातिपरिश्रमेणनितरा चावत्तरैर्मुद्रते स्यात्तत्रापिचकिञ्चिदीक्षणगतोन्मादादशुद्धयदि । क्षान्त्वा शोध्यमुदारबुद्धिविभवैर्विज्ञै कृपादृष्टितो मिथ्यादुष्कृतमस्तुनम्रवचसासम्प्रार्थय सज्जनान् ॥ ५ ॥

बनारस
जैनप्रभाकर
नानकचन्द यती

नकल चिठी १

श्रीमज्जिनवरप्रसादलब्धसद्बुद्धिप्रकाशितधर्मरत्नेषु श्री ५ रायधनपतिसिंहबहादुरेषु सविनयमावेदनम् ।

आगे, मैंने सुनाहै आप की ऐसी इच्छाहै कि पैंतालिसों जैनागम की पुस्तके मूल टीका और भाषाटीका सहित पाच ५ सौ कापी छपें और साधु श्रावकों के पठन पाठन के लिये पाचसौ स्थानमें पुस्तकालय स्थापित करें सो यह अति आनदकी बातहै, परंतु जिन महाशयों को द्रव्य देके पुस्तक लेने की इच्छा हो उनलोगों के निमित्त भी यदि आप की आज्ञाहो तो वेचने के वास्ते पाचसौ कापी जैनबुकसुसाइटी की ओरसे भी छपवा ली जावे यह पुस्तकें मै अजीमगज से प्रकाश करूगा अग्रे शुभम्, सम्वत् । १९३३ । मि० । चै० । शु० । ११

द० जैन बुक सुसाइटी

कार्यसम्पादक

शहर मुरसीदावाद

अजीमगज

सुबुद्धि सेठ

नकल चिठी २

श्रीविविधविद्याविचारतत्परेषु जैनबुकसुसाइटी कार्यसम्पादक महाशयेषु प्रतिनिवेदनम् ।

जोकि पत्र आपका द्रव्य देके खरीदनेवाले लोगो के लिये सुसाइटी की ओरसे पैंतालिसों जैनागम की पाचसौ पुस्तके छपवा लेन की आज्ञा के विषय मे आया सो मैं स्वीकार करताहू कि आप जैनबुक सुसाइटी की तरफ से आगम की प्रत्यक पाच ५ सौ पुस्तके वेचने के वास्ते छपवा लेवे, परतु पाचसौ से अधिक छपनकी आज्ञा मैं नही देता, यदि और कोई छपवाना चाहै तो उचित है कि पहले मुज से आज्ञा लेलेवे क्योंकि इन ग्रन्थोंपर रजस्टरी हुईहै, अग्रे शुभम् । सम्वत् । १९३३ । मि० । चै० । शु० । १३

द० रायधनपतिसिंह बहादुर

शहर मुरसीदावाद

॥ विज्ञापनम् ॥

इस अनादि अनत ससार मे अनादि काल से वारवार जन्म मरण करते करते जीव थावर योनि मे रहा, किसी एक अशुभ कर्मकी लघुता से जैसे पहाडी नदी मे पत्थर गुडते गुडते आपसे चिकना और गोल हो जाता है, तैसे जीव भी जन्म मरण करते करते पुण्यप्रकृतिरूप यथाप्रवृत्ति नाम करण से थावरपणे को छोड त्रसपने बेइन्द्रियादिक में उपजता है, अथवा पचेंद्रियतिर्यचयोनि मे, फेर किसी एक कर्मकी लघुता से मनुष्ययोनि मे पैदा होता है, उसमे भी शक यवन म्लेच्छ देशको छोड आर्य मगधादि जो साढे पचीस देश है उनमे जन्म होना—आर्यदेश मे जन्म होने पर भी अन्त्यजादि जाति को छोड उत्तमजाति और कुल मे जन्म होना—उत्तम जाति और कुल पाने पर भी सब अगोपाग सुदर प्रमाण सहित होना, शरीर के सुदर होने पर भी दीर्घायु होना—सब अशुभकर्म के कम होजाने और शुभकर्म के वढजाने से होते है, नही

थोडे आयुवाला पुरुष इसलोकसंबंधी वा परलोकसंबंधी काम कुछ कर सक्ता है, इसी कारण भगवान् वीत रागने भी हे आयुष्मन् (हे बडे आयुवाले) गौतम ऐसा कहके आयुको सब गुणों से बडा दिखलाया है, और भी अशुभकर्म के लघुता से और शुभकर्मके उदय से धर्मकी रुचि, धर्म का उपदेश करने वाला गुरु और उनके वचन का सुनना मिलजाने पर भी देव गुरु धर्म रूप तत्वपर सच्ची श्रद्धा होना बहुत दुर्लभ है, जिनोक्त तत्वपर सच्ची श्रद्धा होना यही सम्यक्त है, और सब तो मिथ्यादृष्टियों को भी होताहै, यह सब अशुभकर्म के कम होजाने और शुभकर्म बढने से जीव को मिलते है, इस हेतु अशुभकर्म का क्षय और शुभकर्म के बढने मे यत्न करना अवश्य है, अशुभकर्मका क्षय और शुभ को बढाने के लिये धर्म के सिवा य और कोई भी यत्न नही है, इस हेतु धर्म करो २ धर्म ही का सेवन करो, जैसा के घरके कार्य सिद्ध करने में अनेक तरह से परिश्रम करते हो कुछ काल धर्म के वास्ते भी परिश्रम करते रहो, कारण के धर्मी धर्म सेवन करने वाले पुरुष) की इंद्र आदि देवता भी केवल प्रशंसा, अनुमोदना और भक्ति करके अप ना जन्म सफल करते हैं, इतनी ऋद्धि पाके भी उन को धर्म का सेवन करना दुर्लभ है और भी धर्मी को त्रिभुवन की लक्ष्मी, कल्पवृक्ष, चिंतामणि और कामधेनु आपसे दास हो मिलते हैं, तो पुत्र मित्र कलत्र घर सवारी और राज्य मिलजाना क्या बडी चीज है ? धर्म सेवन करने वाले का दो घडी का जीना भी सफल और कार्यकारक है, परन्तु धर्महीन (अर्थात् पेय, अपेय, कृत्य, अकृत्य, गम्य, अगम्य, भक्ष्य

और अज्ञक्य इत्यादि विचार रहित) का कोटाकोटि वर्ष जीना भी निष्फल और अकिंचित्कर है , पशुवत् अपना आयु पूर्ण कर मरता है , इंद्रिय का निग्रह कराने वाला , सकल कल्याण और सुगति का कारण , भवसागर तरने के लिये नौका रूप तीर्थंकरो का कहा हुआ केवल धर्म ही है और धर्म का मूल दया "विना मतलब पराये दुख को दूर करने की इच्छा,, है दया से धर्म की प्राप्ति और धर्म से जीव मुक्त होते है, इसलिए दया सर्वोत्कृष्ट पदार्थ है । जैनदर्शन मे दया के अनेक " स्वदया परदया द्रव्यदया भावदया निश्चयदया व्यवहारदया स्वरूपदया अनुबंधदया ,, भेद विस्तार से वर्णन किये हैं सर्वदर्शनी दया का उपयोग रखते है परन्तु सर्वाशे दया का उपयोग तो जैनदर्शन ही मे स्वीकार है इसवास्ते जैनमत श्रेष्ठ भी कहाता है , दयाके सर्वांश उपयोग होनेकी रीति यही है कि जैसे भोजन के वास्ते कोई एक पक्कान्न बनाया जाय, तो घृत पिष्ट चीनी इत्यादि सामग्री अवश्य अपेक्षित होती है सामग्री होनेपर भी यथाविधि यथार्थ एकठा होने से तथाविध स्वादिष्ट पक्कान्न तयार होता है परन्तु हीनाधिक वस्तु होजाने से कदापि वैसा पक्कान्न नही होता तैसे ही यथाविधि दया पालीजाय तो तथाविध धर्मोपलब्धि होय , यद्यपि सर्वदर्शनो मे दयाका मान है परतु उसके स्वरूप मे फेरफार करदेने से गतप्राय (अर्थात् अकिंचित्कर वृथा) है, जब के उसका स्वरूपही शास्त्रानुसार यथार्थ नही जानसक्ते है तो पालन करना कैसे हो सके, फेरफार ऐसा के कोई कहते है पशुप्राणघात अर्थात् पशुजन्म से छोड़ाना दया है , कोई जिस शरीर को धारण करके जीव

सुखी न होय प्रत्युत दुःखित होय व्याधिग्रस्तादि दोष युक्त होय तो ऐसे प्राणीको तादृश शरीर से मुक्तकर
देना भी दया ही है, कोई सूक्ष्म अथवा स्थूल प्राणी जो मनुष्यको दुख देते है उनका नाश करना दया है,
कोई बलि यागादिक में प्राणिवधकरने से भी पुण्य मानते हैं और कोई स्थूल प्राणिरक्षामात्र को दया कहते
है, इस तरह दया का उपयोग अन्यदर्शनी रखते है लेकिन यह भ्रम है; और एकरीत से—आचारधर्म दया
धर्म क्रियाधर्म और वस्तुधर्म यह चार प्रकार धर्म होता है, इन चारो धर्मो के दान शील तप और भाव
चार कारण है, जब धनबल होय तो दान होय, मनबल होय तो शील पाला जाय, शरीरबल होय तो
तप होय, और सम्यग्ज्ञान होय तो भाव होय, यह भावधर्म दान शील तप से श्रेष्ठ है किसवास्ते के भा
वधर्म का कारण ज्ञानबल है "जिस्से वस्तुका स्वरूप यथार्थ जानाजाय उस्को ज्ञान कहते है,, ज्ञानसे जैसी
आत्मधर्म की वृद्धि और सरक्षण होता है उतना दान शील तपसे कदापि नही, क्योंकि नय, निक्षेप, प्रमा
ण, चारो अनुयोग का विचार, सप्तभगी, षड्द्रव्यविचार, आदिक सर्व ज्ञानहीसे जीवको परिपूर्ण प्राप्त हो
ते है। दशवैकालिक मे लिखा है के—ज्ञानहीन पुरुष की क्रिया केवल क्लेशरूप है अर्थात् क्रिया ज्ञानकी दा
सी है, और मरुदेवी तथा भरत महाराज वैसी अवस्थामें भी रहके जो कर्म विमुक्त भए यह ज्ञानहीका
माहात्म्य है, ज्ञानकी जो तीक्ष्णता सोही अवधचारित्र है, जो निकाचित कर्म कोटिवर्षपर्यंत दानादि कर
नेसे भी नष्ट नही होता वह ज्ञानी के एक स्वासोत्स्वास में नष्ट होशक्ता है इसीलिए ज्ञानीगुरु को रत्नाकर

ओर क्रियागुरु को पीपल के पान ओसा कहा है, ज्ञान विना सम्यक्त ओहिमा ओर सिद्धान्तोक्त समस्तक्रिया का मूल श्रद्धा नही होते यह कारण ज्ञानोपार्जन के लिए अवश्य यत करना चाहिए ज्ञानके पाच भेद—मति श्रुत अवधि मनपर्यव ओर केवल है परन्तु श्रुतज्ञान सबसे अधिकोपयोगी है क्यो कि यह पदार्थमात्र लोकालोक स्वमत परमत का प्रकाशक अज्ञानतिमिर को दूर करने के वास्ते सूर्य ओर दुःखमकालरूप रात्री मे दीप सदृश है, उद्देश समुद्देश आज्ञा इत्यादि व्यवहार का लाभ भी श्रुतज्ञान सेही होता है इस श्रुतज्ञान के सुनने से शुद्ध स्वरूप विशुद्ध श्रद्धान की प्राप्ति होती है इससे शुद्धात्माका आचरण आसेवन अनुभवन होता है और इससे परमपदप्राप्ति होती है, यही श्रुतज्ञान से पूर्वकाल मे श्रीगौतमादिक केवली हो ससार से मुक्त हुए वर्त्तमान मे महाविदेहक्षेत्र से विरहमान जिनेन्द्रो से सुनके जीव मुक्त होते हैं, आगामिकालमें पद्मनाभ आदि तीर्थकरोसे सुन अनेक जीव मुक्त होगे, इस श्रुतज्ञान की वाचना पृच्छना परावर्त्तना अनुप्रेक्षा और धर्मकथा होती है, श्रीउवाई सूत्रमे धर्मकथा चार प्रकार की कही है—आक्षेपिणी विक्षेपिणी निर्वेदिनी और सवेदिनी, जिस्से तत्वमार्ग मे प्रवृत्ति होय उसको आक्षेपिणी, जिस्से मिथ्यात्व की निवृत्ति होय उसको विक्षेपिणी, जिस्से मोक्ष की अभिलाषा होय उसका निर्वेदिनी, जिस्से वैराग्य की भावना होय उसको सवेदिनी कहते हैं वह श्रुतज्ञान रूप कथा श्री अरिहन्त देवाधिदेव तीर्थकर परमेश्वर समवसरणमे बैठ "उपन्नेइवा विगमेइवा धुवेइवा,, त्रिपदी उच्चारण पूर्वक करते हैं और त्रिपदी से ही गणधर द्वादशाग

की रचना करते हैं (उस्को सूत्र कहते हैं) इस कालमें जितने सूत्र है सब श्रुतज्ञान के भेद हैं यह श्रुतज्ञान सर्वोपकारी है इसलिए इस्की वृद्धि और सरक्षण के हेतु अवश्य यत्न करना चाहिये वर्त्तमान कालमे जितने ज्ञानवृद्धि के उपाय है सब से उत्कृष्ट मुद्रायन्त्र है इस कारण पुस्तक सुलभता ज्ञानवृद्धि की अति उत्कृष्ट अति सुगम रीति को स्वीकार करना जो के पूर्वाचार्योने वडे परिश्रम से परोपकार के हेतु ग्रंथ वनाये हैं छपवाके प्रसिद्ध करना हर एक विद्वानोको देना इस्से अधिक और कोई श्रेष्ठ कार्य नही है , यही सब कारण सोंच श्रीमुर्शिदावाद निवासी श्रीराय धनपतिसिंह वहादुर ने ४५ आगम छपवाके हरेक जगे भंडार स्थापन किये हैं आप लोग भी यथाशक्ति इस्के करने को प्रवृत्त होंय के जिस्से पुन जैनमत युवावस्था को प्राप्त होय इति शम् ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

वनारस जैनप्रभाकर

नानक चन्द्र यती

भूमिका।

—०—

पन्नवणा, इसकी प्रकृति प्रज्ञापना है, प्राकृत शब्द संस्कृत शब्दको आदेश निर्देश करने से सिद्ध होताहै।

प्रज्ञापना शब्द का समुदायार्थ यह है कि (प्र) प्रकर्षसे (ज्ञा) जानिये (प) पदार्थ जिस्से सो प्रज्ञापना अर्थात्—समस्त दर्शनी जिसरीति से पदार्थ का निरूपण नही करसक्के केवल तीर्थकर ही यथावस्थित स्वरूप से पदार्थ निरूपण करशक्ते है तो, यथावस्थितस्वरूप निरूपण करके शिष्योंकी बुद्धि मे आरोपण कियाजाय जीवाजीव आदिक पदार्थ जिस्से वह प्रज्ञापना कहाती है। यद्यपि अन्यदर्शनी भी जीवाजीवादि पदार्थोंको शिष्य की बुद्धि मे आरोपण कर्ते है परन्तु यथार्थ स्वरूप "जैसा २ जिस २ पदार्थ का स्वरूप है वैसाही ठीक ठीक स्वरूप,, निरूपण तीर्थकर सर्वज्ञ ही करशक्ते है अन्यका सामर्थ्य नही और वह पदार्थ का यथावस्थित स्वरूप इस ग्रन्थ के द्वारा शिष्यो की बुद्धि के गोचर होता है इस्से इस का प्रज्ञापना यह नाम सार्थकहै।

समवायाङ्ग मे कहे हुए पदार्थो का निरूपण इसमें है इस्से समवायाङ्ग चतुर्थ अङ्ग का उपाङ्ग है ॥

कहे का फिरसे कहना निरर्थक है ऐसा नही, क्यो कि कहे पदार्थो को भी फिरसे विस्तार पूर्वक कहना

मन्दबुद्धि वाले शिष्य लोगों के अनुग्रह के लिये होता है इस्से सार्थक है निरर्थक नही। ॥

यह प्रज्ञापना नामक उपाङ्ग भी सब जीव अजीव आदिक पदार्थो के शासन (कहने) से शास्त्र है और शास्त्र की आदि मे बुद्धिमान् पुरुषो की प्रवृत्ति के लिये प्रयोजन आदि तीन और मङ्गल अवश्य कहना चाहिये नही तो वृथा कटकशाखामर्दन की तरह कोई भी इस्मे प्रवृत्त न होगा ॥

इहा प्रयोजन दो प्रकार है, येक पर और दूसरा अपर है, पर भी दो प्रकार और अपर भी कर्त्तागत श्रोतागत होने से दो प्रकार है, तहा द्रव्यास्तिकनय के मत से देखिये तो आगम नित्य है और आगम के नित्य होजाने से कर्त्ता का अभाव ही है "जैसा के कहा है—यह द्वादशागी कधी नही थी कधी नही है कधी न होगी ऐसा नही (किन्तु) ध्रुव है नित्य है शास्वती है,, ॥

पर्यायास्तिकनय के मत से देखिये तो आगम अनित्य है अनित्य का सद्भाव अवश्य होगा, तत्वदृष्टिसे देखिये तो आगम सूत्र और अर्थ उभयरूप है इसलिए अर्थ की अपेक्षा से नित्य और सूत्र की अपेक्षा से अनित्य होने से कर्त्ता का अवश्य सद्भाव है ॥ ॥

ग्रन्थकर्त्ता का अनन्तर प्रयोजन सत्वानुग्रह और परम्पर प्रयोजन अपवर्गप्राप्ति है "कहाहै—के जो दुखी जीवों को सर्वज्ञ के कहे उपदेश का उपदेश देके कृपा करते है वो थोडेही काल में मुक्त हो जाते हैं,, अर्थ से कहनेवाले अरिहन्त को क्या प्रयोजन है क्यो के वह तो कृतकृत्य हैं और प्रयोजन विना अर्थरूप से कहने

का परिश्रम भी व्यर्थ है विनाप्रयोजन मूर्ख भी किसी कार्य मे प्रवृत्त नही होता तो तीर्थंकर कैसे प्रवृत्त हुए कोई प्रयोजन इनको भी कहना चाहिये अैसा न कहो, कारण के अर्थरूप से कहने का परिश्रम तीर्थंकर नामकर्म के विपाक का उदय से होता है " कहा है के—तीर्थंकरनामकर्म अग्लान धर्मदेशना के देने ही से भोगाजाता है,, अर्थात्—तीर्थंकरनामकर्म आधीनता से धर्मदेशनाव्यापार होता है उसकर्म का वह भोगही है कोई प्रयोजन अस्मदादिवत् उनको नही है। ॥

श्रोता का अनन्तर प्रयोजन जो अध्ययन कहा जायगा उस्के अर्थ का ज्ञान है और परम्परप्रयोजन मोक्षप्राप्ति है, श्रोता विवक्षित अध्ययन को अर्थ से अच्छीतरह सुनकर ससार से विरक्त होते है, विरक्त होके ससार से निकलने की इच्छा से सयममार्ग मे यथागम प्रवृत्त होते है, यथागम सयम मार्ग मे प्रवृत्त होने से सयम का प्रकर्ष होता है उस्से सकल कर्मक्षय और उस्से मोक्षप्राप्ति होती है, लिखा है के—सम्यक् पदार्थ ज्ञान से जीव विरक्त होते है, विरक्त हो क्रिया मे आशक्त और क्रिया मे आशक्त होने से परमगति को पहुचते है ॥ इस ग्रन्थ मे अभिधेय जीव अजीव पदार्थ का स्वरूप है। ॥

सम्बन्ध दो प्रकार है उपायोपेय भावलक्षण दूसरा गुरुपर्वक्रमलक्षण, तहां पहिला नैयायिक के—जैसे कि वचनरूपापन्न प्रकरण उपाय और उन प्रकरण का परिज्ञान उपेय है। दूसरा गुरुपर्वक्रमलक्षण केवल श्रद्धानुसारि के—जैसा के सूत्रकार आगे कहैगे, जानना चाहिये ॥

यह प्रज्ञापना नामक उपाङ्ग सम्यग्ज्ञान का कारण है, इसी हेतु परंपरा से मुक्तिपद को देनेवाला है, इसीसे स्वय श्रेयो भूत है तोभी विघ्न की शान्ति के लिये आदि मध्य और अन्त में मंगल कहाजाता है ॥

ग्रन्थ की आदि में मङ्गल निर्विघ्न शास्त्रपरिसमाप्ति के लिये है, मध्यमंगल अवगृहीतशास्त्र की स्थितिके लिये है, और अन्तमंगल शिष्य प्रशिष्यों के शास्त्र अव्यवच्छेद हो इसलिये है ॥

छत्तीस पदात्मक यह प्रज्ञापना सूत्र है इसमे जीव अजीव आस्रव बन्ध संवर निर्जरा और मोक्ष का प्ररूपण किया है तहां प्रज्ञापना वक्तव्यता विशेष चरमपरिणाम संज्ञक पांच पदमे जीव अजीव की प्रज्ञापना, प्रयोगपद और क्रियापद मे आस्रव (काय वचन मन कर्मयोग) की प्रज्ञापना, कर्मप्रकृतिपदमे बन्ध प्रज्ञापना, समुद्घातपद मे संवर निर्जरा बन्ध और मोक्ष की प्ररूपणा, बाकी स्थान आदि पदोमें कहीं किसी कीसी प्रज्ञापना कीहै, ॥ ॥

अथवा इसमें द्रव्य क्षेत्र काल और भाव की प्रज्ञापना है क्योंके इन चारपदार्थों के सेवाय और कोई प्रज्ञापनीय पदार्थ नही है इही पदार्थों के जानने से तत्वज्ञानरूप परमपुरुपार्थ सिद्ध होता है इस कारण इसके पढने पढाने मे अवश्य यत्न करना चाहिये, परन्तु पढने का अधिकार उसको है जोके मोक्षमार्ग का अभिलापी और गुरूका आज्ञाकारी हो, और इसके देने का अवसर भी वही है। इतिशम् ॥ ॥

बनारस जैनप्रभाकर प्रेस नानकचंद यती।

॥ अथ श्रीपन्नवणा सूत्रानुक्रमणिका प्रारभ्यते ॥



---

२ ॥

। ८ ॥

विषय और प्रश्नादि	पत्रांक	विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
भाषा कइंय पभवति इत्यादि गाथा २	३७१	नारकी अपर्याप्त अभापक पर्याप्त भापक है	६७५
कितने प्रकार भापा है, दो प्रकार भापा क है	३७२	एव एकेंद्रिय को छोडकर सर्वदडक प्रश्नोत्तर कहना	३७६
पर्याप्तिकी भासा सत्या मृपा से दो भेद है	३७२	चार भापा की जाति कही	३७६
सत्या पर्याप्तिकी भापा कितने प्रकार हैं १० प्रकारें	३७२	जीव क्या सत्य भापा वोलै कि असत्या भापा वोलै इत्यादि	३७६
मृपा भाषा भी दश प्रकारें कही है क्रोधनिश्रितादि भेद से	३७३	नारकी सत्य भी वोलै असत्य भी वोलै एव असुरकुमार यावत् स्तनितकुमार पर्यन्त, द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय नही सत्य नही असत्य नही सत्यासत्य असत्यामृपा वोलै, पचेंद्रिय तिर्यच असत्यामृपा भापा वोलै,	३७६
अपर्याप्तिकी भापा सत्यामृषा असत्यामृपा भेद से दो प्रकार है	३७३		
सत्यामृपा भापा उत्पन्न मिश्रितादि भेद से दश भेदें है	३७४		
असत्यामृपा अपर्याप्तिकी आमन्त्रणी आदिक भेदसे १२ भेद है	३७४	जीव जिन द्रव्यों को भापा पणे ग्रहै सो क्या स्थित ग्रहै के अस्थित	३७७
जीव भापक है के अभापक है इत्यादि	३७४	एव द्रव्य क्षेत्र काल और भाव वक्तव्यता से	

१५॥

(गति परिणाम पद १३ पूर्ण)

२० ॥

विषय और प्रश्नादि	पत्रांक	विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
जिस्को जितनी इद्रिय है उतने की निर्वर्तना भी कहना, श्रोत्रेद्रिय निर्वर्तना का काल अ सख्यात समय अन्तर्मुहूर्त भी कहा, एव स्प र्शन तक, एव नारकी से वैमानिक पर्यन्त नि र्वर्त्तना काल कहा, पाच भेदे इद्रिय लब्धि क ही, एव२४दडक मे जिस्को जितनी हो कहना, इद्रियोपयोग काल भी पाच प्रकार है नारकी से वैमानिक पर्यन्त यथोचित कहना	४४१	वगाहना कहनी, पाच प्रकार का अपाय २४ दडक मे यथोचित कहा, ईहा पाच प्रकार की चौवीस दडक मे यथोचित कहना,	४४३
इन श्रोत्र आदि पाचो इद्रियो के उपयोग ३ जघन्य उत्कृष्ट अजघन्योत्कृष्ट मे परस्पर कौन किस्से थोडा घणा इत्यादि	४४२	अवग्रह व्यजन और अर्थ के भेद से दो प्रकार है, व्यजनावग्रह श्रोत्र घ्राण जिह्वा स्पर्श से चार भेद है, अर्थावग्रह पाच इद्रियो का पाच और मन से छ प्रकार होता हैं उनमें से नार की को २ व्यजन और अर्थ का अवग्रह है एवं वैमानिक पर्यत कहा	४४४
इद्रियावगाहना पांच प्रकार नारकी से वैमानिक पर्यत जिस्को जितनी इद्रिय हो उन्ही की अ		पृथिवीकाय को दो प्रकार अवग्रह, व्यञ्जनाव ग्रह स्पर्शनेद्रिय का एक ही है, अर्थावग्रह भी एक स्पर्शनही का है, एव वनस्पति पर्यत कहा, एव द्वीन्द्रिय को, भेद यह के व्यञ्जनाव	

२३ ॥

विषय और प्रश्नादि	पत्राक	विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
साकारोपयुक्त अनाकारोपयुक्त भी इसीतरह	५६७	एव नारकी असुरकुमार याव स्तनितकुमार पर्यन्त, पृथिवीकाय मिथ्यादृष्टि होहै, एव वन स्पतिकाय पर्यन्त कहना, द्वीन्द्रिय मिश्रदृष्टि नही है एव चौरिन्द्रिय पर्यन्त कहा, पंचेंन्द्रिय तिर्यच जोतिपी मनुष्य वानव्यन्तर वैमानिक तीनो है, सिद्ध सम्यग्दृष्टि है	५७३
छद्मस्थ आहारक प्रश्न, केवलि आहारक तथा अनाहारक काल	५६८	(१९ वा सम्यक्त पद कहा)	
ज्ञापक अज्ञापक प्रश्न, काय परित्त अपरित्त काल निर्णय	५६९	॥ २० वां पद कहते है ॥	
पर्याप्त अपर्याप्त नो पर्याप्त नो अपर्याप्त सूक्ष्म बादर सज्ञी असज्ञी	५७१	नेरइय अतकिरिया यह द्वार गाथा—जीव अंत क्रिया करै एवं नारकी यावद्वैमानिक, नारकी नारकी मे अन्तक्रिया करै नही	५७५
भवसिद्धिक अभवसिद्धिक चरम अचरम काल निर्णय	५७२	नारकी असुरकुमार मे अन्तक्रिया करै एव याव	
(१८ वां पद समाप्त हुआ)			
॥ १९ कहते हैं ॥			
जीव सम्यग्दृष्टि मिथ्यादृष्टि सम्यङ्मिथ्यादृष्टि है,			

॥ २१ ॥

२६ ॥

विषय और प्रश्नादि	पत्रांक	विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
एव अप् वनस्पति मे भी असुरकुमार मरके तेज वायु द्वींद्रिय त्रीद्रिय चतुरीद्रिय मैं न उपजै शेप पांच मैं उपजै इत्यादि	५८०	असुरकुमारचवके तीर्थंकर पणा पावे नही, एव यावत् अप् , तेजस्काय तेजस्काय से निकल तीर्थंकर होय नही धर्मसुने एव वायु भी, वनस्पतिकाय अतक्रिया करै तीर्थंकर न हो, पञ्चेद्रिय तिर्यञ्च मनुष्य वानव्यंतर जोतिषी अतक्रिया ही करै	५८५
जैसे पृथिवीकाय कहा तैसे अप् वनस्पति भी कहना , तेजसकाय से निकल तेजसकाय मैं उपजै यावत् स्तनितकुमार	५८१	सौधर्म देव चवके तीर्थंकर होय कोई एक जैसे रत्नप्रभा नारकी एव यावत्सर्वार्थसिद्ध का देव	५८५
जैसे तेज तैसे वायु , वेरींद्री वेरींद्री से निकल नारकी में उपजै इत्यादि पञ्चेंद्रिय तिर्यंच पंचेंद्री तिर्यंच से निकल नारकी मे उपजै इहां तक	५८२	रत्नप्रभा का नारकी चक्रवर्त्त होय , शर्कराप्रभा का न होय एव यावत्सातमी का नारकी, तिर्यंच मनुष्य भी नही, भवनपति व्यतर जोतिषी वेमानिक से होय , एव वलदेव भेद यह के शर्करापृथिवीका नारकी भी होय , एव वासु	
रत्नप्रभा पृथिवी का नारकी निकल तीर्थंकर होय, कोई एक , एव यावत् वालुकाप्रभा पकप्रभा पृथिवी का नारकी निकल तीर्थंकर न होय धूमप्रभा तमा यावत् सप्तमी	५८४		

विषय और प्रश्नादि	पत्रांक	विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
रीर पाच प्रकार है	५९२	काय मसूरचद्र संस्थान सस्थित, एव सूक्ष्म पृ	
पृथिवीकाय एकेंद्रिय औदारिक शरीर सूक्ष्म बा		थिवीका बादर काजी कहा	५९६
दर भेदसे दो भेद, सूक्ष्म तथा बादरभी पर्याप्त		अपूकाय स्तिवुकबिंदु सस्थान, सूक्ष्म बादरपर्या	
अपर्याप्त भेदसे प्रत्येक दो दो भेदहै	५९२	प्ता पर्या० भी, तेज सूचीकलाप सस्थित एवं	
एव वनस्पतिकाय एकेंद्रिय औदारिकभी कहा	५९३	सूक्ष्मबादर पर्या० पर्या० भी, वायु पताका	
द्वित्रिचतुरिंद्रिय औदारिकशरीर पर्या० अपर्या०		सस्थान सस्थित है, एवं सूक्ष्मादि भीहै, वन	
भेदसे द्विविध कहाहै	५९३	स्पति नानासंस्थान सस्थितहै, एवं सूक्ष्मादि	
पचेंद्रिय औदारिक शरीर तिर्यच मनुष्यसे दो		भीहै, द्वींद्रियौदारिक शरीर हुंडसंस्थान है,	
भेद है, तिर्यच औदारिक तीन भेदहै एवं जल		एवं तेरिंद्री चउरिंद्री भी, पंचेंद्रिय तिर्यचको	
स्थल खचरादि भेदनिर्णय	५९३	छ सस्थान है पर्या० अपर्या० कोभी	५९६
मनुष्य पचेंद्रियौदारिक शरीर दो भेद इत्यादि	५९५	पर्या० अपर्या० सम्मूर्च्छिम पचें० तिर्यच हुंडहै,	
औदारिक शरीर नानासस्थान सस्थित है, एकें		प० अ० गर्भज पचेंद्रिय तिर्यच नाना है,	
द्रिय का औदारिक नानासस्थानहै, पृथिवी		एवं तिर्यच के ९ अलावे हैं, जलचर में ६	

विषय और प्रश्नादि	पत्रांक	विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
ज्ञानावरणी कर्म का जघन्य स्थिति वन्धक कौन, मोहनीय का जघन्यस्थिति वन्धक कौन; आयु का जघन्य स्थिति वन्धक कौन इत्यादि	७०४	(२३ वा पद पूर्ण हुआ)	
उत्कृष्टस्थितिक ज्ञानावरणी कर्म क्या नारकी वाधै कि तिर्यंच इत्यादि, कैसा नारकी उत्कृष्ट स्थितिक ज्ञानावरणी कर्म वाधै इत्यादि निरूपण	७०५	॥ २४ वा पद कहते है ॥ अष्ट कर्म प्रकृति कही, नारकी को यावद्वैमानिक को, जीव ज्ञानावरणी (आदि) कर्म वाधता हुआ कितनी कर्म प्रकृति वाधै इत्यादि निर्णय	७०८
एव आयु को छोड़ साती कर्म के आलावे कहना, उत्कृष्टस्थितिक आयुकर्म क्या नारकी वाधै इत्यादि कैसा तिर्यंच उत्कृष्टस्थितिक आयु कर्म वांधै	७०६	(२४ वा पद पूर्ण हुआ) ॥ २५ कहते है ॥ आठ कर्म प्रकृति कही, ज्ञानावरणी कर्म वाधतो जीव कितनी प्रकृति वेदै, एव नारकी यावद्वैमानिक, एव पृथक्क सेन्नी, यावत् अतराय तक कहना, जीव वेदनी कर्म वाधता कितनी	
कैसा मनुष्य तथा मानुषी उत्कृष्टस्थितिक आयु वाधै	७०७		

विपय और प्रश्नादि	पत्राक	विपय और प्रश्नादि	पत्रांक
कितने प्रकार पज्यत्ता कही २, साकार पज्यत्ता ६ प्रकार, अनाकार पज्यत्ता तीन प्रकार है एव जीव को कहना	७५६	प्ररूपणाधिकार	७५८
नारकी को २ पज्यत्ता, साकार पज्यत्ता ४ अना कार २ एव स्तनितकुमार पर्यन्त	७५७	केवली इस रत्नप्रभापृथिवी को आकार हेतु उपमा दृष्टान्त वर्ण सस्थान प्रमाण से जिससमय जाणै उससमय देखै इत्यादि प्रश्न	७६०
पृथिवीकाय को १ साकारपज्यत्ता एव वनस्पति पर्यन्त	७५७	(३० पद समाप्त हुआ)	
द्वीन्द्रिय को १ साकार पज्यत्ता सो २ तरहकी है एव त्रीन्द्रिय भी चक्षुरिन्द्रिय को २ साकार पज्यत्ता जैसे द्वीन्द्रिय को अनाकारपज्यत्ता १ कही, मनुष्य को जैसे जीवों को शेप जैसे नारकी यावद्वैमानिक	७५८	॥ ३१ कहते है ॥ जीव सज्ञी असज्ञी के नो सज्ञी नो असज्ञी इत्यादि प्रश्न निर्णय	७६२
जीव साकारपज्यी है के अनाकार इत्यादि		पृथिवी काय प्रश्न, एवं यावच्चतुरिन्द्री मनुष्य जैसे जीव, पचेन्द्रिय तिर्यच वानव्यन्तर जैसे नारकी जोतिपी वैमानिक सज्ञी,	७६३
		(३१ वा पद कहा)	

33 ॥

विषय और प्रश्नादि	पत्रांक	विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
॥ ३२ कहते हैं ॥ जीव सयत के असयत के सयतासयत, एवं वा रकी प्रश्न, आयचतुरिन्द्रिय, पचेंद्रिय तिर्यंच मनुष्य प्रश्न एव सिद्धतक	७६४	उत्कृष्ट चार जाणे, शर्करा का जघन्य तीन उत्कृष्ट साढ़े, वालुका नारकी जघन्य डेढ उत्कृष्ट तीन, पकप्रभा नारकी जघन्य दो उत्कृष्ट अढाई, धूमप्रभा नारकी जघन्य डेढ उ० दो तमा का नारकी कोश जघन्य उत्कृष्ट डेढ, नीचे सातमी का जघन्य अर्द्ध कोश उत्कृष्ट कोश।	७६८
(३२ वां पद कहा)		असुरकुमार जघन्य २५ योजन उत्कृष्ट अस ख्यात द्वीपसमुद्र, नाग जघन्य २५ उत्कृष्टवही, एव स्तनितकुमार पर्यन्त, पचेंद्रिय तिर्यच ज घन्य अगुल असख्यात भाग उ० असख्यात द्वीपसमुद्र, मनुष्य अगुल असख्यातभाग जघन्य उत्कृष्ट असख्यात अलोक मे लोक प्रमाण खड, वानव्यन्तर जैसे नाग, जोतिषी जघन्य उत्कृष्ट	
॥ ३३ कहते हैं ॥ भेद विषय संठाणे यह गाथा	७६५		
दो प्रकार अवधि कही भवप्रत्यय क्षायोपशमिक भेद से, देव नारकी को भवप्रत्यय, मनुष्य तिर्यंच को क्षायोपशमिक	७६७		
नारकी जघन्य अर्द्ध कोश उत्कृष्ट चार जाणें अ वधि चे, रत्नप्रभा का नारकी अढाई जघन्य			

विषय और प्रश्नादि	पत्राक	विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
हिर, मनुष्य दोनू है, व्यन्तर जोतिषी वैमानिक जैसे नारकी, नारकी देशावधि है, एव स्तनितकुमार पर्यन्त, पचेंद्रिय तिर्यच भी एव, मनुष्य दोनू । व्यन्तर जोतिषी वैमानिक जैसे नारकी । नारकी का अवधि आनुगामिक अप्रतिपाती अवस्थित है । एव स्तनितकुमार पर्यन्त ।	७७२	अणतरागयाहारे इह गाथा २	७७३
		नारकी अणतराहार है इत्यादि वक्तव्यता यावत् २४ दंडक मे	७७४
		नारकी का आहार आभोगनिर्वर्त्तित है के अनाभोगनिर्वर्त्तित इत्यादि वक्तव्यता	७७५
पचेंद्रिय तिर्यच का आनुगामी भी यावत् अवस्थित भी है, एव मनुष्य भी, वानव्यन्तर जोतिषी वैमानिक जैसे नारकी	७७३	नारकी जिन पुद्गलो को आहारपणें ले उनको जाणें देखे इत्यादि निर्णय	७७६
(३३ वां पद पूर्ण हुआ)		नारकी को असख्यात अध्यवसान, प्रशस्त भी अप्रशस्त भी वैमानिक कोभीहै	७७७
॥ ३४ वा पद कहते है ॥		नारकी सम्यक्ताभिगमी मिथ्यात्वाभिगमी सम्यक्मिथ्यात्वाभिगमी भी है, एव वैमानिक पर्यन्त एकेंद्रिय विकलेंद्रिय मिथ्यात्वाभिगमी ही है देवता सदेवीक सपरिचार है इत्यादि ४ भंग	

३५ ॥

विषय और प्रश्नादि	पत्रांक	विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
पचेंद्रिय तिर्यच यावत् वैमानिक को पाच समु० मनुष्य को सात, एकेक नारकी को कितने समु० अतीत अनत पुरस्कृत इत्यादि	७९६	है, एव वैमानिक भेद वनस्पतिकाय मनुष्य मे	८००
एव असुरकुमार को भी वैमानिक पर्यंत, एव चौवीस दण्डक कहा, ऐकेक नारकी को कितने समु० अतीत इत्यादि वैमानिक पर्यत	७९७	एकेक नारकी को नारकी पणे कितने वेदना स० अतीत इत्यादि	८०१
एकेक नारकी को कितने केवलिसमु० अतीत इत्यादि	७९८	एव असुरकुमार से वैमानिक पर्यन्त, एकेक असुरकुमार को नारकीपणे कितने वेदनासमु० अतीत इत्यादि, एकेक असुरकुमार को असुर कुमार पणे कितने वेदना स० अतीत एव वैमानिक	८०२
एव वैमानिक यावन्मनुष्य पर्यन्त, नारकी को कितने वेदना समु० अतीत इत्यादि, एव वैमानिक तक, एव तैजस भी एव पाच २४ दण्डक नारकी को कितने आहारक समु० अतीत	७९९	एव वैमानिक पर्यत २४ चौवीस दण्डक होय, नारकी के नारकीपणे कितने कषायसमु० अतीत इत्यादि एव एकेक नारकी के असुरकुमार पणे कितना अतीत एव स्तनितकुमार तक	८०४
एव वैमानिक तक विशेष वनस्पतिकाय मनुष्य मे		मारणातिक समु० स्वस्थान में एकोत्तरिका से जहा	

३५ ॥

॥ चतुर्थ उपाग प्रज्ञापना सूत्रानुक्रमणिका ॥

॥ समाप्त हुई ॥

ववगयजरमरणभए सिद्धाभवादऊणातिविहेणं । वंदामिजिणवरिंदं तेलोक्कगुरुंमहावीरं ॥ १ ॥ सुयरयणनिहाणजिण वरेणभवियजणणिव्वुइकरेण । उवदसियाभगवया पन्नवणासव्वभावाणं ॥ २ ॥ वायगवरवसाउ तेवीसइमेणधीरपुरिसेण । दुद्धरधरेणमुणिणा पुव्वसुयसमिद्धबुद्धीण ॥ ३ ॥ सुयसागराविएऊण जेणसुयरयणमुत्तमदिन्न । सीसगणस्सभगवउ तस्सणमोअज्जसामस्स ॥ ४ ॥ अज्झयणमिणचित्तं सुयरयणदिट्ठिवायणीसद । जहवन्नियभगवया अहमवितहवण्णइस्सामि ॥ ५ ॥ पण्णवणा १ ठाणाइं २, बहुवत्तव्व ३ ठिई ४ विसेसाय ५ । वक्कंती ६ उस्सास, ७ सण्णा ८ जोणीय ९ चरिमाइ १० ॥ १ ॥ भासा ११ सरीर १२ परिणा, म १३ कसाय १४ इंदिय १५ प्पओगेय १६ । लेसा १७ कायठिइया १८, सम्मत्ते १९ अंतकिरियाय २० ॥ २ ॥ उगाहणसठाणा २१, किरिया २२ कम्मेय २३ कम्मस्स । बंधए २४ कम्मवेयए २५, वेयस्सबंधए २६ वेयवेयए २७ ॥ ३ ॥ आहारे २८ उवओगे २९, पासणया ३० सन्नि ३१ संजमे ३२ चेव । ओही ३३ पवियारण ३४

व्यपगतजरामरणभयान् सिद्धानभिवन्द्य त्रिविधेन । वन्देजिनवरेन्द्र त्रैलोक्यगुरुमहावीरम् ॥ १ ॥ श्रुतरत्ननिधानाञ्जिन-वरेणभव्यजननिर्वृतिकरेण । उपदर्शिताभगवता प्रज्ञापनासर्वभावानाम् ॥ २ ॥ वाचकवरवंशेत्र-योविंशतितमेनधीरपुरुषेण । दुर्धरधरेणमुनिना पूर्वश्रुतसमृद्धबुद्धिना ३ ॥ श्रुतसागराद्विनीयत्वा येनश्रुतरत्नमुत्तमदत्त । शिष्यगणायभगवते तस्मैनमआर्यश्यामाय ॥ ४ ॥ अध्ययनमिदञ्चित्र श्रुतरत्नदृष्टिवादनिस्पन्द । यथावर्णितभगवता हमपितथावर्णयिष्यामि ॥ ५ ॥ प्रज्ञापनास्थानानिबहुवक्तव्यस्थितिर्विशेषश्च । व्युत्क्रान्तिश्चोच्छ्वास सञ्ज्ञायोनिश्चचरमाणि ॥ ६ ॥ भाषाशरीरपरिणाम कषायेन्द्रियेप्रयोगश्च । लेश्याकायस्थितिर्वा सम्यक्त्वमथान्तक्रियाचैव ॥ ७ ॥ अवगाहनास्थान क्रियाकर्मोथकर्मणा । बन्धकोवेदकश्चैव वेदबन्धकएव च ॥ ८ ॥ वेदवेदकआहार श्चोपयोगोथ दर्शनम् । सञ्ज्ञाचसयमश्चैवा वधिश्चप्रविचारणा ॥ ९ ॥ वदनाय समुद्धात षट्त्रि

॥ मूल ॥

परिणया नीलवन्नपरिणया लोहियवन्नपरिणया हालिद्दवन्नपरिणया सुक्किलवन्नपरिणया। जे गंधपरिणया ते दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—सुब्भिगंधपरिणया दुब्भिगंधपरिणया। जेरसपरिणया ते पंचविहा पन्नत्ता तंजहा तित्तरसपरिणया कडुयरसपरिणया कसायरसपरिणया अंबिलरसपरिणया महुररसपरिणया। जेफासपरिणया ते अट्ठविहा पन्नत्ता, तंजहा—कक्खडफासपरिणया मउयफासपरिणया गरुयफासपरिणया लहुयफासपरिणया सीयफासपरिणया उसिणफासपरिणया णिद्धफासपरिणया लुक्खफासपरिणया। जेसंठाणपरिणया ते पंचविहा पन्नत्ता, तंजहा—परिमंडलसंठाणपरिणया वट्टसंठाणपरिणया तंससंठाणपरिणया चउरंससंठाणपरिणया आयतसंठाणपरिणया॥ जे वन्नउ कालवन्नपरिणया ते गंधउ सुब्भिगंधपरिणयावि दुब्भिगंधपरिणयावि, रसउ तित्तरसपरिणतावि कडुयरसपरिणतावि कसायरसपरितावि अंबिलरसपरिणतावि महुररसपरिणतावि, फासउ कक्खडफासपरिणतावि मउयफासपरिणतावि गरुयफासपरिणतावि लहु

॥ सू० ॥

तद्यथा-सुरभिगन्धपरिणता दुरभिगन्धपरिणता । ये रसपरिणता स्ते पञ्चविधा प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-तिक्तरसपरिणता कटुकरसपरिणता कषायरसपरिणता आम्लरसपरिणता मधुररसपरिणता। ये स्पर्शपरिणता स्ते अष्टविधा प्रज्ञप्तास्तद्यथा-कर्कशस्पर्शपरिणता मृदुस्पर्शपरिणता गुरुकस्पर्शपरिणता लघुकस्पर्शपरिणता शीतस्पर्शपरिणता उष्णस्पर्शपरिणता स्निग्धस्पर्शपरिणता रूक्षस्पर्शपरिणता । ये संस्थानपरिणता स्ते पञ्चविधा प्रज्ञप्तास्तद्यथा-परिमण्डलसंस्थानपरिणता वृत्तसंस्थानपरिणता त्र्यस्रसंस्थानपरिणता चतुरस्रसंस्थानपरिणता आयतसंस्थानपरिणता । ये वर्णत कालवर्णपरिणता स्ते गन्धत सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसत स्तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि आम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, स्पर्शत कर्कशस्पर्शपरिणता मृदुकस्पर्शपरिणता

वे, यणा ३५ यतत्तोसमुग्घाए ३६ ॥ १ ॥ से किं तं पन्नवणा ? पन्नवणा दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—जीवपन्नव णाय अजीवपन्नवणाय। सेकित अजीवपन्नवणा २ दुविहा पन्नत्ता, तजहा—रूविअजीवपन्नवणा अरूवि अजीवपन्नवणाय। सेकितं अरूविअजीवपन्नवणा ? अरूविअजीववन्नवणा दसविहा पन्नत्ता तंजहा— धम्मत्थिकाए धम्मत्थिकायस्सदेसे धम्मत्थिकायस्सपएसा, अधम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकायस्सदेसे अधम्मत्थि कायस्सपएसा आगासत्थिकाए आगासत्थिकायस्सदेसे आगासत्थिकायस्सप्पदेसा अद्धासमए १० सेत्तंअरूवि अजीवपन्नवणा॥ सेकित रूविअजीवपन्नवणा रूविअजीवपन्नवणा चउव्विहा पन्नत्ता तजहा—खंधा खंधदे सा खंधप्पएसा परमाणुपोग्गला ४। तेसमासओ पंचविहा पन्नत्ता, तंजहा—वन्नपरिणया गंधपरिणया रस परिणया फासपरिणया संठाणपरिणया। जेवन्नपरिणया ते समासओ पंचविहा पन्नत्ता, तंजहा—कालवन्न

ज्ञात्वमितम्पदम्। अथ प्रज्ञापना कास्यात्, द्विधाप्रज्ञापनामता ॥ १० ॥ तद्यथा-जीवप्रज्ञापना अजीवप्रज्ञापना च। सा कतिविधा अजीवप्रज्ञा पना, द्विविधा प्रज्ञप्ता। तद्यथा रूप्यजीवप्रज्ञापना अरूप्यजीवप्रज्ञापना च अथ कतिविधा अरूप्यजीवप्रज्ञापना, अरूप्यजीवप्रज्ञापना दशवि धा प्रज्ञप्ता। तद्यथा धर्मास्तिकाय धर्मास्तिकायस्य देश धर्मास्तिकायस्य प्रदेशा, अधर्मास्तिकायो ऽधर्मास्तिकायस्य देशो ऽधर्मास्तिकायस्य प्रदेशा, आकाशास्तिकाय आकाशास्तिकायस्य देश आकाशास्तिकायस्य प्रदेशा, अद्धासमय। समाप्ता ऽरूप्यजीवप्रज्ञापना॥ अथ का सा रूप्यजीवप्रज्ञापना रूप्यजीवप्रज्ञापना चतुर्विधा प्रज्ञप्ता तद्यथा-स्कन्धा स्कन्धदेशा स्कन्धप्रदेशाः परमाणुपुद्गला, ते समासत पञ्चविधा प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-वर्णपरिणता गन्धपरिणता रसपरिणता स्पर्शपरिणता संस्थानपरिणता। ये वर्णपरिणता स्ते समासत पञ्चविधा प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-कालवर्णपरिणता नीलवर्णपरिणता लोहितवर्णपरिणता हारिद्रवर्णपरिणता शुक्लवर्णपरिणता। ये गन्धपरिणता स्ते द्विविधा प्रज्ञप्ता

परिणया नीलवण्णपरिणया लोहियवण्णपरिणया हालिद्दवण्णपरिणया सुक्किल्लवण्णपरिणया। जे गंधपरिणया ते दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—सुब्भिगंधपरिणया दुब्भिगंधपरिणया। जेरसपरिणया ते पंचविहा पण्णत्ता तंजहा तित्तरसपरिणया कडुयरसपरिणया कसायरसपरिणया अंबिलरसपरिणया महुररसपरिणया। जेफासपरिणया ते अट्ठविहा पण्णत्ता, तंजहा—कक्खडफासपरिणया मउयफासपरिणया गरुयफासपरिणया लहुयफासपरिणया सीयफासपरिणया उसिणफासपरिणया णिद्धफासपरिणया लुक्खफासपरिणया। जेसंठाणपरिणया ते पंचविहा पण्णत्ता, तंजहा—परिमंडलसंठाणपरिणया वट्टसंठाणपरिणया तंससंठाणपरिणया चउरंससंठाणपरिणया आयतसंठाणपरिणया॥ जे वण्णओ कालवण्णपरिणया ते गंधओ सुब्भिगंधपरिणयावि दुब्भिगंधपरिणयावि, रसओ तित्तरसपरिणतावि कडुयरसपरिणतावि कसायरसपरितावि अंबिलरसपरिणतावि महुररसपरिणतावि, फासओ कक्खडफासपरिणतावि मउयफासपरिणतावि गरुयफासपरिणतावि लहु

तद्यथा-सुरभिगन्धपरिणता दुरभिगन्धपरिणता । ये रसपरिणता स्ते पञ्चविधा प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-तिक्तरसपरिणता कटुकरसपरिणता कषायरसपरिणता आम्लरसपरिणता मधुररसपरिणताः । ये स्पर्शपरिणता स्ते अष्टविधा प्रज्ञप्तास्तद्यथा-कर्कशस्पर्शपरिणता मृदुस्पर्शपरिणता गुरुकस्पर्शपरिणता लघुकस्पर्शपरिणता शीतस्पर्शपरिणता उष्णस्पर्शपरिणता स्निग्धस्पर्शपरिणता रूक्षस्पर्शपरिणता । ये संस्थानपरिणता स्ते पञ्चविधा प्रज्ञप्तास्तद्यथा-परिमण्डलसंस्थानपरिणता वृत्तसंस्थानपरिणता त्र्यस्रसंस्थानपरिणता चतुरस्रसंस्थानपरिणता आयतसंस्थानपरिणता । ये वर्णत कालवर्णपरिणता स्ते गन्धत सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसत स्तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि आम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, स्पर्शत कर्कशस्पर्शपरिणता मृदुकस्पर्शपरिणता

यफासपरिणतावि सीतफासपरिणतावि उसिणफासपरिणतावि णिद्धफासपरिणतावि लुक्खफासपरिणतावि संठाणओ परिमंडलसंठाणपरिणतावि वट्टसंठाणपरिणतावि तंससंठाणपरिणतावि चउरससंठाणपरिणतावि आयतसंठाणपरिणतावि । जेवन्नओ नीलवन्नपरिणता ते गंधओ सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि, रसओ तित्तरसपरिणयावि कडुयरसपरिणतावि कसायरसपरिणतावि अंबिलरसपरिणतावि महुररसपरिणतावि, फासओ कक्खडफासपरिणतावि मउयफासपरिणतावि गरुयफासपरिणतावि लहुयफासपरिणतावि सीतफासपरिणतावि उसिणफासपरिणतावि णिद्धफासपरिणतावि लुक्खफासपरिणतावि, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरिणतावि वट्टसंठाणपरिणतावि तंससंठाणपरिणतावि चउरंससंठाणपरिणतावि आयतसंठाणपरिणतावि । जे वन्नओ लोहियवन्नपरिणता ते गंधओ सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि, रसओ तित्तरस

अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि, संस्थानत परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि त्र्यस्रसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि । ये वर्णतो लोहितवर्णपरिणता स्ते गन्धत. सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसत स्तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि आम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, स्पर्शत. कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुकस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि, संस्थानत परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि त्र्यस्रसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि । ये वर्णतो हारिद्रवर्णपरिणता स्ते गन्धत- सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिग

॥ मूल ॥

परिणतावि कडुयरसपरिणतावि कसायरसपरिणतावि अम्बिलरसपरिणतावि महुररसपरिणतावि, फासउ कक्खडफासपरिणतावि मउयफासपरिणयावि गरुयफासपरिणतावि लहुयफासपरिणतावि सीतफासपरिणतावि उसिणफासपरिणतावि णिद्धफासपरिणतावि लुक्खफासपरिणतावि, सठाणउ परिमंडलसठाणपरिणतावि वट्टसठाणपरिणतावि तससठाणपरिणतावि चउरससठाणपरिणतावि आयतसठाणपरिणतावि। जेवण्णउ हालिद्दवण्णपरिणता ते गधउ सुब्भिगधपरिणतावि दुब्भिगधपरिणतावि, रसउ तित्तरसपरिणतावि कडुयरसपरिणतावि कसायरसपरिणयावि अम्बिलरसपरिणतावि महुररसपरिणतावि, फासउ कक्खडफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीयफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि, सठाणउ परिमंडलसठाणपरि० वट्टसठाणपरि० तससठाणपरि० चउरससठाणपरि० आयतसठाणपरिणतावि। जेवण्णउ सुक्किलवण्णपरिणता ते गधउ सुब्भिगधपरिणतावि दुब्भिगध

॥ अ० ॥

न्धपरिणता अपि, रसतस्तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, स्पर्शत कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुकस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि, सस्थानत परिमण्डलसस्थानपरिणता अपि वृत्तसस्थानपरिणता अपि त्र्यस्रसस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसस्थानपरिणता अपि आयत सस्थानपरिणता अपि। ये वर्णत शुक्लवर्णपरिणता स्ते गन्धत सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसतस्तिक्तरसपरिणता कटुकरसपरिणता कषायरसपरिणता अम्लरसपरिणता मधुररसपरिणता अपि। स्पर्शत कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्ण

परिणतावि, रसउ तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अम्बिलरसपरि० मज्ञररसपरिणतावि, फासउ कक्खडफासपरिणतावि मउयफासपरिणयावि गरुयफासपरिणयावि लङ्गयफासपरिणतावि सीयफासपरिणतावि उसिणफासपरिणतावि णिद्धफासपरिणतावि लुक्खफासपरिणतावि, संठाणउ परिमंडलसंठाणपरिणतावि वट्टसंठाणपरिणतावि तससंठाणपरिणतावि चउरससंठाणपरिणतावि आयतसंठाणपरिणतावि। जे गंधउ सुब्भिगंधपरिणता ते वन्नउ कालवन्नपरिणतावि नीलवन्नपरिणतावि लोहितवन्नपरिणतावि हालिद्दवन्नपरिणतावि सुक्किल्लवन्नपरिणतावि, रसउ तित्तरसपरिणतावि कडुयरसपरिणतावि कसायरसपरिणतावि अबिलरसपरिणतावि मज्ञररसपरिणतावि, फासउ कक्खडफासपरिणतावि मउयफासपरिणतावि गरुयफासपरिणतावि लङ्गयफासपरिणतावि सीतफासपरिणतावि उसिणफासपरिणतावि णिद्धफासपरिणतावि लुक्खफासपरिणतावि, संठाणउ परिमंडलसंठाणपरिणतावि वट्टसंठाणपरिणतावि तससंठाणपरिणतावि

स्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रुक्षस्पर्शपरिणता अपि, संस्थानत परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि त्र्यस्रसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि । ये गन्धत सुरभिगन्धपरिणता स्ते वर्णत कृष्णवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, रसतस्तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, स्पर्शत. कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि, संस्थानत परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि त्र्यस्रसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता

चउरंससंठाणपरिणतावि आयतसंठाणपरिणतावि। जे गंधओ दुब्भिगंधपरिणता ते वण्णओ कालवण्णपरि० नीलवण्णपरिणतावि लोहितवण्णपरिणतावि हालिद्दवण्णपरिणतावि सुक्किल्लवण्णपरिणतावि, रसओ तित्तरसपरिणतावि कडुयरसपरिणतावि कसायरसपरिणतावि अंबिलरसपरिणतावि महुररसपरिणतावि, फासओ कक्खडफासपरिणतावि मउयफासपरिणतावि गरुयफासपरिणतावि लहुयफासपरिणतावि सीतफासपरि० उसिणफासपरिणतावि णिद्धफासपरिणतावि लुक्खफासपरिणतावि, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरिणतावि वट्टसंठाणपरिणतावि तंससंठाणपरिणतावि चउरंससंठाणपरिणतावि आयतसंठाणपरिणतावि। जे रसओ तित्तरसपरिणता ते वण्णओ कालवण्णपरिणतावि नीलवण्णपरिणतावि लोहियवण्णपरिणतावि हालिद्दवण्णपरिणतावि सुक्किल्लवण्णपरिणतावि, गंधओ सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि, फासओ कक्खडफासप

अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि। ये गन्धतो दुरभिगन्धपरिणतास्ते वर्णतः कृष्णवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, रसतस्तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि, संस्थानतः परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि त्र्यस्रसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि। ये रसतस्तिक्तरसपरिणतास्ते वर्णतः कृष्णवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि

रिणतावि मउयफासपरिणतावि गरुयफासपरिणतावि लहुयफासपरिणतावि सीतफासपरिणतावि उसिण फासपरिणतावि णिद्धफासरिणतावि लुक्खफासपरिणतावि, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरिणतावि वट्टसंठा णपरिणतावि तंससंठाणपरिणतावि चउरंससंठाणपरिणतावि आयतसंठाणपरिणतावि। जेरसओ कडुयरस परिणता ते वण्णओ कालवण्णपरिणतावि नीलवण्णपरिणतावि लोहितवण्णपरिणतावि हालिद्दवण्णपरिणतावि सुक्किल्लवण्णपरिणतावि, गंधओ सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि, फासओ कक्खडफासप० मउयफा सपरि० गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीयफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासप० लुक्खफासपरिण तावि, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाणपरि० चउरंससंठाणप० आयतसंठाणप रिणतावि। जे रसओ कसायरसपरिणता ते वण्णओ कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्णपरि० हालि

लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि, संस्थानतः परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि त्र्यस्रसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि। ये रसतः कटुकरसपरिणतास्ते वर्णतः कृष्णवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि, संस्थानतः परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि त्र्यस्रसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि। ये रसतः कषायरसपरिणतास्ते वर्णतः कृष्णवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारि

द्दवण्णपरि० सुक्किल्लवण्णपरिणतावि, गंधत्तो सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि, फासत्तो कक्खडफास परि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि, संठाणत्तो परिमंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाणप० चउरससंठाणप० आयतसंठाणपरिणतावि। जे रसत्तो अंबिलरसपरिणता ते वण्णत्तो कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्णपरि० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किल्लवण्णपरिणतावि, गंधत्तो सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि, फासत्तो कक्खडफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीयफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि। संठाणत्तो परिमंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाणपरि० चउरससंठाणपरि० आयतसंठाणपरिणतावि। जे रसत्तो महुरपरिणता ते वण्णत्तो कालवण्णपरि० नीलवण्ण०

द्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, स्पर्शेन कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि, संस्थानतः परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि त्र्यस्रसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि। ये रसतोऽम्लरसपरिणता ते वर्णतः कालवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि, संस्थानतः परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि त्र्यस्रसंस्थानपरिणता

। ४२ ॥ लोहितवन्नपरि० हालिद्दवन्नपरि० सुक्किल्लवन्नपरिणतावि, गंधत्ते सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि, फासत्ते कक्खडफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि, संठाणत्ते परिमंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाणपरि० चउरससंठाणपरि० आयतसंठाणपरिणतावि ॥ जे फासत्ते कक्खडफासपरि० ते वन्नत्ते कालवन्नपरि० नीलवन्नपरि० लोहितवन्नपरि० हालिद्दवन्नपरि० सुक्किल्लवन्नपरिणतावि, गंधत्ते सुब्भिगंधपरि० दुब्भिगंधपरिणतावि, रसत्ते तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासत्ते गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्ख

अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि । ये रसतो मधुररसपरिणतास्ते वर्णतः कालवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि, संस्थानतः परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि त्र्यस्रसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि । ये स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणतास्ते वर्णतः कालवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसतः तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, गुरुलघुशीतोष्णस्निग्धरूक्षस्पर्शपरिणता अपि संस्थानतः परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि त्र्यस्रसंस्थानपरि

॥ मूल ॥

फासपरिणतावि, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाणपरि० चउरंससंठाणपरि० आयतसंठाणपरिणतावि। जे फासओ मउयफासपरि० ते वण्णओ कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्णपरि० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किलवण्णपरिणतावि, गंधओ सुब्भिगंधपरि० दुब्भिगंधपरिणतावि, रसओ तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासओ गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाणपरि० चउरंससंठाण० आयतसंठाणपरिणतावि। जे फासओ गरुयफासपरिणता ते वण्णओ कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्णपरि० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किलवण्णपरिणतावि, गंधओ सुब्भिगंधपरि० दुब्भिगंधपरिणतावि, रसओ तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरस

॥ प० ॥

णता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि। ये स्पर्शतो मृदुस्पर्शपरिणतास्ते वर्णतः कृष्णवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसतः तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, स्पर्शतः गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि, संस्थानतः परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि त्र्यस्रसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि। ये स्पर्शतो गुरुकस्पर्शपरिणतास्ते वर्णतः कृष्णवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसतस्तिक्तरसपरिणता अपि कटु

लोहितवरणपरि० हालिद्दवरणपरि० सुक्किलवरणपरिणतावि, गंधत्तं सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि, फासत्तं कक्खडफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि, संठाणत्तं परिमंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाणपरि० चउरंससंठाणपरि० आयतसंठाणपरिणतावि ॥ जे फासत्तं कक्खडफासपरि० ते वरणत्तं कालवरणपरि० नीलवरणपरि० लोहितवरणपरि० हालिद्दवरणपरि० सुक्किलवरणपरिणतावि, गंधत्तं सुब्भिगंधपरि० दुब्भिगंधपरिणतावि, रसत्तं तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासत्तं गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्ख

अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि । ये रसतो मधुररसपरिणता स्ते वर्णत: कालवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धत सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, स्पर्शत कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि, संस्थानत परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि त्र्यस्रसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि । ये स्पर्शत कर्कशस्पर्शपरिणतास्ते वर्णत: कालवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धत सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसत तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि। गुरुलघुशीतोष्ण स्निग्धरूक्षस्पर्शपरिणताअपि संस्थानत परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि त्र्यस्रसंस्थानपरि

॥ मूल ॥

लवन्नपरि० लोहितवन्नपरि० हालिद्दवन्नपरि० सुक्किल्लवन्नपरिणतावि, गंधओ सुब्भिगंधपरि० दुब्भिगंधपरिणतावि, रसओ तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासओ कक्खडफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाणपरि० चउरससंठाणपरि० आयतसंठाणपरिणतावि । जे फासओ उसिणफासपरि० ते वन्नओ कालवन्नपरि० नीलवन्नपरि० लोहियवन्नप० हालिद्दवन्नपरि० सुक्किल्लवन्नपरिणतावि, गंधओ सुब्भिगंधपरि० दुब्भिगंधपरिणतावि, रसओ तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासओ कक्खडफासपरि० मउयफा

॥ भ० ॥

अपि त्र्यस्रसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि । ये स्पर्शत शीतस्पर्शपरिणतास्ते वर्णत कालवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि' गन्धत सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसत तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि' स्पर्शत कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि, संस्थानत परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि त्र्यस्रसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि । ये स्पर्शत उष्णस्पर्शपरिणतास्ते वर्णत कालवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धत सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसत तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, स्पर्शत

परि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासओ कक्खडफासपरिणतावि मउयफासपरिणतावि सीय फासपरिणतावि उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाणपरि० चउरंससंठाणप० आयतसंठाणपरिणतावि । जे फासओ लहुयफासपरिणता ते वण्णओ कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्णपरि० हालिद्दवण्णप० सुक्किलवण्णपरिणतावि, गंधओ सुब्भिगंधपरि० दुब्भिगंधपरिणतावि, रसओ तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासओ कक्खडफासपरि० मउयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाणपरि० चउरंससंठाणपरि० आयतसंठाणपरिणतावि। जे फासओ सीतफासपरिणता ते वण्णओ कालवण्णपरि० नी

कटुरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, स्पर्शत कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि, संस्थानत परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि त्र्यस्रसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि । ये स्पर्शतो लघुकस्पर्शपरिणतास्ते वर्णत कालवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धत सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसतस्तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, स्पर्शत कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि, संस्थानत परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता

लवण्णपरि० लोहितवण्णपरि० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किलवण्णपरिणतावि, गंधओ सुब्भिगंधपरि० दुब्भिगंधप
रिणतावि, रसओ तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि,
फासओ कक्खडफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासप
रिणतावि, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाणपरि० चउरंससंठाणपरि० आयत
संठाणपरिणतावि । जेफासओ उसिणफासपरि० ते वण्णओ कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहियवण्णप०
हालिद्दवण्णपरि० सुक्किलवण्णपरिणतावि, गंधओ सुब्भिगंधपरि० दुब्भिगंधपरिणतावि, रसओ तित्तरसपरि०
कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासओ कक्खडफासपरि० मउयफा

अपि त्र्यस्रसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि । ये स्पर्शत शीतस्पर्शपरिणतास्ते वर्णत कृष्णवर्ण परिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि' गन्धत सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसत तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि' स्पर्शत कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि, संस्थानत परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि त्र्यस्रसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि । ये स्पर्शत उष्णस्पर्शपरिणतास्ते वर्णत कालवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धत सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसत तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, स्पर्शत

परि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासओ कक्खडफासपरिणतावि मउयफासपरिणतावि सीयफासपरिणतावि उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाणपरि० चउरंससंठाणप० आयतसंठाणपरिणतावि। जे फासओ लहुयफासपरिणता ते वण्णओ कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्णपरि० हालिद्दवण्णप० सुक्किल्लवण्णपरिणतावि, गंधओ सुब्भिगंधपरि० दुब्भिगंधपरिणतावि, रसओ तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासओ कक्खडफासपरि० मउयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाणपरि० चउरंससंठाणपरि० आयतसंठाणपरिणतावि। जे फासओ सीतफासपरिणता ते वण्णओ कालवण्णपरि० नी

रसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, स्पर्शत कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि, संस्थानत परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि त्र्यस्रसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि। ये स्पर्शतो लघुकस्पर्शपरिणतास्ते वर्णत कृष्णवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धत सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसतस्तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, स्पर्शत कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि, संस्थानत परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता

दुब्भिगंधपरिणतावि, रसतो तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिण तावि, फासतो कक्खडफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिण फासपरिणतावि, संठाणतो परिमंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाणपरि० चउरंससंठाणपरि० आयतसंठाणप० । जे संठाणतो परिमंडलसंठाणपरिणता ते वण्णतो कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहित वण्णपरि० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किलवण्णपरिणतावि, गंधतो सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि, र सतो तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासतो कक्खड फासपरि० मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफास परि० लुक्खफासपरिणतावि । जे संठाणतो वट्टसंठाणपरि० ते वण्णतो कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहि

रूक्षस्पर्शपरिणतास्ते वर्णतः कृष्णवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसतः तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुस्पर्शपरिणता अपि लघुस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि, संस्थानतः परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि त्र्यस्रसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि । ये संस्थानतः परिमण्डलसंस्थानपरिणतास्ते वर्णतः कृष्णवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसतः तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि म

सपरि० गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाणपरि० चउरंससंठाणपरि० आयतसंठाणपरिणतावि। जे फासओ णिद्धफासपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्णपरि० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किलवण्णपरिणतावि, गंधओ सुब्भिगंधपरि० दुब्भिगंधपरिणतावि, रसओ तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसप० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासओ कक्खडफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीयफासपरि० उसिणफासपरिणतावि, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाणपरि० चउरंससंठाणपरि० आयतसंठाणपरिणतावि। जे फासओ लुक्खफासपरिणता ते वण्णओ कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्णपरि० हालिद्दवण्णप० सुक्किलवण्णपरिणतावि, गंधओ सुब्भिगंधप०

कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि, संस्थानतः परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि त्र्यस्रसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि। ये स्पर्शतः स्निग्धस्पर्शपरिणतास्ते वर्णतः कालवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसतः तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि, संस्थानतः परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि त्र्यस्रसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि। ये स्पर्शतो

दुब्भिगंधपरिणतावि, रसओ तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासओ कक्खडफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरिणतावि, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाणपरि० चउरंससंठाणपरि० आयतसंठाणप० । जे संठाणओ परिमंडलसंठाणपरिणता ते वण्णओ कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्णपरि० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किलवण्णपरिणतावि, गंधओ सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि, रसओ तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासओ कक्खडफासपरि० मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि । जेसंठाणओ वट्टसंठाणपरि० ते वण्णओ कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहि

रूक्षस्पर्शपरिणतास्ते वर्णतः कृष्णवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसतः तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि, संस्थानतः परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि त्र्यस्रसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि । ये संस्थानतः परिमण्डलसंस्थानपरिणतास्ते वर्णतः कृष्णवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसतः तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि म

तवसपरि० हालिद्दवसप० सुक्किलवसपरिणताबि, गंधत्ते सुब्भिगंधप० दुब्भिगधपरिणताबि, रसत्ते ति त्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणताबि, फासत्ते कक्खडफासप० मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्ख फासपरिणताबि । जेसट्ठाणत्ते तंससठाणपरि० ते वण्णत्ते कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्णपरि० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किलवण्णपरिणताबि, गधत्ते सुब्भिगधपरिणताबि दुब्भिगधपरिणताबि, रसत्ते तित्तर सपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणताबि, फासत्ते कक्खडफासपरि०

धुररसपरिणता अपि, स्पर्शत कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्श परिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि। ये सस्थानतो वृत्तसस्थानपरिणतास्ते वर्णत कृष्णवर्ण परिणता नीलवर्णपरिणता लोहितवर्णपरिणता हारिद्रवर्णपरिणता शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धत सुरभिगन्धपरिणता दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसतस्तिक्तपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि' स्पर्शत कर्क शस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि। ये सस्थानत त्र्यस्रसस्थानपरिणतास्ते वर्णत कृष्णवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धत सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसतस्तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, स्पर्शत कर्कशस्प र्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि

मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि । जे संठाणउ चउरससंठाणपरिणता ते वणउ कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहियवण्णपरि० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किल्लवण्णपरिणतावि, गंधउ सुब्भिगंधपरि० दुब्भिगंधपरिणतावि, रसउ तित्तरसप० कडुयरसप० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासउ कक्खडफासपरि० मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरि० । जे संठाणउ आयतसंठाणपरिणता ते वणउ कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्णप० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किल्लवण्णपरिणतावि, गंधउ सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि, रसउ तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि , फासउ कक्खडफासपरि० ॥ मूल ॥

स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि । ये संस्थानतश्चतुरस्रसंस्थानपरिणतास्ते वर्णत कालवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धत सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसतस्तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, स्पर्शत कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुकस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि । ये संस्थानत आयतसंस्थानपरिणतास्ते वर्णत कृष्णवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धत सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसतस्तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, स्पर्शत कर्कशस्पर्श ॥ अ० ॥

तवस्रपरि० हालिद्दवस्रप० सुक्किल्लवस्रपरिणतावि, गंधत्ते सुब्भिगंधप० दुब्भिगधपरिणतावि, रसत्ते ति त्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अम्बिलरसपरि० मडुररसपरिणतावि, फासत्ते कक्खडफासप० मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्ख फासपरिणतावि । जेसठाणत्ते तंससठाणपरि० ते वस्रत्ते कालवस्रपरि० नीलवस्रपरि० लोहितवस्रपरि० हालिद्दवस्रपरि० सुक्किल्लवस्रपरिणतावि, गधत्ते सुब्भिगधपरिणतावि दुब्भिगधपरिणतावि, रसत्ते तित्तर सपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अम्बिलरसपरि० मडुररसपरिणतावि, फासत्ते कक्खडफासपरि०

धुररसपरिणता अपि, स्पर्शत कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्श परिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि। ये सस्थानतो वृत्तसस्थानपरिणतास्ते वर्णत कृष्णवर्ण परिणता नीलवर्णपरिणता लोहितवर्णपरिणता हारिद्रवर्णपरिणता शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धत सुरभिगन्धपरिणता दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसतस्तिक्तपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि' स्पर्शत कर्क शस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि। ये सस्थानत त्र्यस्रसस्थानपरिणतास्ते वर्णत. कृष्णवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धत सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसतस्तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, स्पर्शत कर्कशस्प र्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि-शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि

मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि । जे संठाणओ चउरंससंठाणपरिणाता ते वण्णओ कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहियवण्णपरि० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किल्लवण्णपरिणतावि, गंधओ सुब्भिगंधपरि० दुब्भिगंधपरिणतावि, रसओ तित्तरसप० कडुयरसप० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासओ कक्खडफासपरि० मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरि० । जे संठाणओ आयतसंठाणपरिणता ते वण्णओ कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्णप० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किल्लवण्णपरिणतावि, गंधओ सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि, रसओ तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासओ कक्खडफासपरि०

स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि । ये संस्थानतश्चतुरस्रसंस्थानपरिणतास्ते वर्णतः कालवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसतस्तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुकस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि । ये संस्थानत आयतसंस्थानपरिणतास्ते वर्णतः कृष्णवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसतस्तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, स्पर्शतः कर्कशस्पर्श

तवन्नपरि० हालिद्दवन्नप० सुक्किल्लवन्नपरिणतावि, गंधत्तो सुब्भिगंधप० दुब्भिगंधपरिणतावि, रसत्तो तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासत्तो कक्खडफासप० मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि । जेसठाणत्तो तंससठाणपरि० ते वन्नत्तो कालवन्नपरि० नीलवन्नपरि० लोहितवन्नपरि० हालिद्दवन्नपरि० सुक्किल्लवन्नपरिणतावि, गंधत्तो सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि, रसत्तो तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासत्तो कक्खडफासपरि०

धुररसपरिणता अपि, स्पर्शत कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि। ये संस्थानतो वृत्तसंस्थानपरिणतास्ते वर्णत कृष्णवर्णपरिणता नीलवर्णपरिणता लोहितवर्णपरिणता हारिद्रवर्णपरिणता शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धत सुरभिगन्धपरिणता दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसतस्तिक्तपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि' स्पर्शत कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि। ये संस्थानत त्र्यस्रसंस्थानपरिणतास्ते वर्णत कृष्णवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धत सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसतस्तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, स्पर्शत कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि-शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि

मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि । जे संठाणतो चउरंससंठाणपरिणता ते वण्णतो कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहियवण्णपरि० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किलवण्णपरिणतावि, गंधतो सुब्भिगंधपरि० दुब्भिगंधपरिणतावि, रसतो तित्तरसप० कडुयरसप० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासतो कक्खडफासपरि० मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरि० । जे संठाणतो आयतसंठाणपरिणता ते वण्णतो कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्णप० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किलवण्णपरिणतावि, गंधतो सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि, रसतो तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासतो कक्खडफासपरि०

॥ मूल ॥

स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि । ये संस्थानतश्चतुरस्रसंस्थानपरिणतास्ते वर्णतः कालवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसतस्तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुकस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि । ये संस्थानत आयतसंस्थानपरिणतास्ते वर्णतः कृष्णवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसतस्तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, स्पर्शतः कर्कशस्पर्श

॥ अ० ॥

मउयफासप० गुरुयफासपरि० लहुयफासप० सीतफासप० उसिणफासप० णिद्धफासप० लुक्खफासपरिणतावि ॥ सेत्त रूविअजीवपन्नवणा ॥ सेत्त अजीवपन्नवणा ॥ से किंत जीवपन्नवणा ? जीवपन्नवणा दुविहा पन्नत्ता, तजहा—संसारसमावन्नजीवपन्नवणाय असंसारसमावन्नजीवपन्नवणाय । से किंत असंसारसमावन्नजीवपन्नवणा ? असंसारसमावन्नजीवपन्नवणा दुविहा पन्नत्ता, तजहा—अणंतरसिद्धअसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा परंपरसिद्धअसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा । से किंत अणंतरसिद्धअसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा ? अणंतरसिद्धअसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा पन्नरसविहा पन्नत्ता, तजहा—तित्थसिद्धा १ अतित्थसिद्धा २ तित्थगरसिद्धा ३ अतित्थगरसिद्धा ४ सयंबुद्धसिद्धा ५ पत्तेयबुद्धसिद्धा ६ बुद्धबोहियसिद्धा ७ इत्थीलिंगसिद्धा ८ पुरिसलिंगसिद्धा ९ नपुंसकलिंगसिद्धा १० सलिंगसिद्धा ११ अन्नलिंगसिद्धा १२

परिणता अपि मृदुकस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि ॥ सैषा रूप्यजीव प्रज्ञापना ॥ सैषा ऽजीव प्रज्ञापना ॥ अथ कतिविधा जीवप्रज्ञापना । ? जीव प्रज्ञापना द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-संसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना, असंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना च । अथ कतिविधा असंसारसमापन्न जीवप्रज्ञापना ? । असंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना द्विविधा प्रज्ञप्ता । अनन्तरसिद्धासंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना, परंपरसिद्धासंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना च । अथ कतिविधानन्तरसिद्ध संसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना । ? अनन्तरसिद्धासंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना पञ्चदशविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा तीर्थसिद्धा १ अतीर्थसिद्धा , २ तीर्थकरसिद्धा, ३ अतीर्थकरसिद्धा , ४ स्वयंबुद्धसिद्धा" ५ प्रत्येकबुद्धसिद्धा , ६ बुद्धबोधितसिद्धा , ७ स्त्रीलिङ्गसिद्धा , ८ पुरुषलिङ्गसिद्धा , ९ नपुंसकलिङ्गसिद्धा , १० स्वलिङ्गसिद्धा , ११ अन्यलिङ्गसिद्धा , १२ गृहिलिङ्गसिद्धा , १३ एकलिङ्गसिद्धा." १४

॥ सूत्र ॥

गिहिलिंगसिद्धा १३ एगसिद्धा १४ अणेगसिद्धा १५। सेत्तं अणंतरसिद्धअससारसमावन्नजीवपन्नवणा। से किं तं परंपरसिद्धअससारसमावन्नजीवपन्नवणा ? परंपरसिद्धअससारसमावन्नजीवपन्नवणा अणेगविहा प० तंजहा—अपढमसमयसिद्धा दुसमयसिद्धा तिसमयसिद्धा चउसमयसिद्धा जाव संखेज्जसमयसिद्धा असंखेज्जसमयसिद्धा अणंतसमयसिद्धा, सेत्तं परंपरसिद्धअससारसमावन्नजीवपन्नवणा। सेत्तं अससारसमावन्नजीवपन्नवणा। से किं तं संसारसमावन्नजीवपन्नवणा ? संसारसमावन्नजीवपन्नवणा पंचविहा पन्नत्ता, तंजहा एगिंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा बेइंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा तेइंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा चउरिंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा पंचिंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा। से किं तं एगिंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा ? एगिंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा पंचविहा पन्नत्ता, तंजहा—पुढविकाइया

॥ अ० ॥

अनेकलिङ्ग सिद्धाः, १५। सैषा अनन्तरसिद्धासंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना। अथ कतिविधा परम्परसिद्धासंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना ? । परम्परसिद्धासंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना अनेकविधा प्रज्ञप्ता। तद्यथा अप्रथमसमयसिद्धाः, द्विसमयसिद्धाः, त्रिसमयसिद्धाः चतुःसमयसिद्धाः, यावत् संख्येयसमयसिद्धाः, असंख्येयसमयसिद्धाः, अनन्तसमयसिद्धाः, सैषा परम्परसिद्धासंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना। सैषा असंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना। अथ कतिविधा संसारसमापन्न जीवप्रज्ञापना ? । संसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना पञ्चविधा प्रज्ञप्ता। तद्यथा-एकेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना, द्वीन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना, त्रीन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना, चतुरिन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना, पञ्चेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना। अथ कतिविधा एकेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना ?। एकेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना पञ्चविधा प्रज्ञप्ता। तद्यथा-पृथिवीकायिका, अप्कायिका, तेजःकायिका, वायुकायिका, वनस्पतिकायिका। अथ कतिविधा पृथिवीकायिका ?। पृथ्वीकायिका

ञ्राउकाइया तेउकाइया वाउकाइया वणस्सइकाइया। से किंतं पुढविकाइया पुढविकाइया दुविहा प०, तजहा–सुक्रुमपुढविकाइया बादरपुढविकाइया । से किंत सुक्रुमपुढविकाइया सुक्रुमपुढविकाइया दुविहा पसत्ता, तजहा–पज्जत्तसुक्रुमपुढविकाइयाय ञ्रपज्जत्तसुक्रुमपुढविकाइयाय, सेत्तसुक्रुमपुढविकाइया । से किंत बादरपुढविकाइया बादरपुढविकाइया दुविहा पसत्ता, तंजहा–सराहबादरपुढविकाइयाय खरबादर पुढविकाइयाय। से किंतं सराहबादरपुढविकाइया२ सत्तविहा पसत्ता, तजहा–किराहमत्तिया नीलमत्तिया लोहियमत्तिया हालिद्दमत्तिया सुक्किलमत्तिया पर्मात्तिया पणगमत्तिया । सेत्तं सराहबादरपुढविकाइया । से किंत खरबादरपुढविकाइया ? खरबादरपुढविकाइया ञ्रणेगविहा पसत्ता, तजहा–पुढवीयसक्करावालुयायउवलेसिलायलोणूसे । ञ्रयतंबतउयसीसं रुप्पसुवसोयवइरेय ॥ १ ॥ हरियालेहिंगुलुए मणोसिलासा

द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-सूक्ष्मपृथिवीकायिका, बादरपृथिवीकायिका । अथ कतिविधा सूक्ष्मपृथिवीकायिका ? । सूक्ष्मपृथिवीकायिका द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-पर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिका अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिका । तदेता सूक्ष्मपृथिवीकायिका । अथ कतिविधा बादर पृथिवीकायिका ? । बादरपृथिवीकायिका द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-श्लक्ष्णबादरपृथिवीकायिका खरबादरपृथिवीकायिकाश्च । अथ कति विधा श्लक्ष्णबादरपृथिवीकायिका ? । श्लक्ष्णबादरपृथिवीकायिका सप्तविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-कृष्णमृत्तिका, नीलमृत्तिका, लोहितमृत्तिका, हारिद्रमृत्तिका, शुक्लमृत्तिका पाण्डुमृत्तिका, पनकमृत्तिका । तदेता श्लक्ष्णबादरपृथिवीकायिका । अथ कतिविधा खरबादरपृथिवीकायिका ? । खरबादरपृथिवीकायिका अनेकविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-पृथिवीशर्करावालुका उपला शिला लवणमूषम् । अयस्ताम्रत्रपुसीसकरूप्यसुवर्णानि प्रतीतानि ॥ १ ॥ हरितालकहिंगुलके मनःशिला सीसकमञ्जनप्रवालम् । अभ्रपटलाभ्रवालुका बादरपृथिवीकायेत्यमीभेदा ॥ २ ॥ गोमेधकश्च

...गपवाले। अब्भपडलब्भवालुय बादरकाएमणिविहाणा ॥२॥ गोमेज्जएयरुयए अंकेफलिहेयलोहियक्खेय। मरगयमसारगल्ले भुयमोयगइंदनीलेय ॥ ३ ॥ चंदणगेरुयहंसे पुलएसोगंधिएयबोधव्वे। चंदप्पभवेरुलिए जलकंतेसूरकंतेय ॥ ४ ॥ जेयावन्नेयतहप्पगारा ते समासओ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा–पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय, तत्थण जेते अपज्जत्तगा तेणं असंपत्ता तत्थण जेते पज्जत्तगा एतेसिं वण्णादेसेण गंधादेसेण रसादेसेण फासादेसेण सहस्सग्गसोविहाणाइ संखिज्जाइ जोणिप्पमुहसयसहस्साइ पज्जत्तगणिस्साए अपज्जत्तगावक्कमंति, जत्थ एगो तत्थ णियमा असंखेज्जा। सेत्तं खरबादरपुढविकाइया। सेत्तंबादरपुढविकाइया॥ सेत्तंपुढविकाइया ॥ से किंतं आउकाइया ? आउकाइया दुविहा पण्णत्ता, तंजहा–सुहुमआउकाइयाय बादरआउकाइयाय। से किंतं सुहुमआउकाइया ? सुहुमआउकाइया दुविहा पण्णत्ता, तंजहा–पज्जत्तसुहुम

एवकोऽङ्क स्फटिकलोहिताक्षइति ॥ मरकतमसारगल्लौ भुजमोचकेन्द्रनीलौ च ॥ ३ ॥ चन्दनगैरिकहंसा पुलकसौगन्धिकेचबोद्धव्ये ॥ चन्द्रप्रभवैडूर्यो जलकान्त सूर्यकान्तश्च ॥ ४ ॥ ये चान्ये तथा प्रकारास्ते समासतस्तथा प्रज्ञप्ता । तद्यथा–पर्याप्तका, अपर्याप्तकाश्च, तत्र ये एते ऽपर्याप्तकास्ते असम्प्राप्ता । तत्र ये एते पर्याप्तका एते वर्णादेशेन गन्धादेशेन रसादेशेन स्पर्शादेशेन सहस्राग्रशो विधानानि सङ्ख्येयानि । योनिप्रमुखानि शतसहस्राणि पर्याप्तनिश्रया अपर्याप्तका व्युत्क्रामन्ति, यत्रैकस्तत्र नियमा असङ्ख्येया । त एते खरबादरपृथिवीकायिका । त एते बादरपृथिवीकायिका। त एते पृथिवीकायिका ॥ अथ कतिविधा अप्कायिका ?। अप्कायिका द्विविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा–सूक्ष्माप्कायिका, बादराप्कायिका । अथ कतिविधा सूक्ष्माप्कायिका, ?। सूक्ष्माप्कायिका द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा–पर्याप्त सूक्ष्माप्कायिका, अपर्याप्तसूक्ष्माप्कायिका । एते सूक्ष्माप्कायिका ॥ अथ कतिविधा बादराप्कायिका ?। बादराप्कायिका अनेकविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा–अवश्याय, हिम, महिक, करको,

आउकाइया तेउकाइया वाउकाइया वणस्सइकाइया। से किंतं पुढविकाइया पुढविकाइया दुविहा प०, तजहा—सुडुमपुढविकाइया वादरपुढविकाइया। से किंत सुडुमपुढविकाइया सुडुमपुढविकाइया दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—पज्जत्तसुडुमपुढविकाइयाय अपज्जत्तसुडुमपुढविकाइयाय, सेत्तसुडुमपुढविकाइया। से किंत वादरपुढविकाइया वादरपुढविकाइया दुविहा पण्णत्ता, तजहा—सण्हवादरपुढविकाइयाय खरवादर पुढविकाइयाय। से किंत सण्हवादरपुढविकाइया२ सत्तविहा पण्णत्ता, तजहा—किण्हमत्तिया नीलमत्तिया लोहियमत्तिया हालिद्दमत्तिया सुक्किल्लमत्तिया पण्डुमत्तिया पणगमत्तिया। सेत्तं सण्हवादरपुढविकाइया। से किंत खरवादरपुढविकाइया? खरवादरपुढविकाइया अणेगविहा पण्णत्ता, तजहा—पुढवीयसक्करावा लुयायउवलेसिलायलोणूसे। अयतंवतउयसीस रुप्पसुवण्णेयवइरेय॥ १॥ हरियालेहिंगुलुए मणोसिला

द्विविधा प्रज्ञप्ता। तद्यथा-सूक्ष्मपृथिवीकायिका, वादरपृथिवीकायिका। अथ कतिविधा सूक्ष्मपृथिवीकायिका?। सूक्ष्मपृथिवीकायिका द्विविधा प्रज्ञप्ता। तद्यथा-पर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिका अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिका। तदेता सूक्ष्मपृथिवीकायिका। अथ कतिविधा वादर पृथिवीकायिका?। वादरपृथिवीकायिका द्विविधा प्रज्ञप्ता। तद्यथा-श्लक्ष्णवादरपृथिवीकायिका खरवादरपृथिवीकायिकाश्च। अथ कति विधा श्लक्ष्णवादरपृथिवीकायिका?। श्लक्ष्णवादरपृथिवीकायिका सप्तविधा प्रज्ञप्ता। तद्यथा-कृष्णमृत्तिका, नीलमृत्तिका, लोहितमृत्तिका हारिद्रमृत्तिका, शुक्लमृत्तिका पाण्डुमृत्तिका, पनकमृत्तिका। तदेता श्लक्ष्णवादरपृथिवीकायिका। अथ कतिविधा खरवादरपृथिवीकायिका?। खरवादरपृथिवीकायिका अनेकविधा प्रज्ञप्ता। तद्यथा-पृथिवीशर्करावालुका उपला शिला लवणमूषम्। अयस्ताम्रत्रपुसीसकरूप्यसुवर्णानि प्रतीतानि॥ १॥ हरितालकहिंगुलके मन शिला सीसकमञ्जनप्रवालम्। अभ्रपटलाभ्रवालुका वादरपृथिवीकायेत्वमीभेदा॥ २॥ गोमेघकश्च

[illegible] अब्भपकलअब्भवालुय बादरकाएमणिविहाणा ॥२॥ गोमेज्जएयरुयए अंकेफलिहेयलोहियक्खेय।
मरगयमसारगल्ले भुयमोयगइंदनीलेय ॥ ३ ॥ चंदणगेरुयहंसे पुलएसोगंधिएयबोधव्वे। चंदप्पभवेरुलिए ज
लकंतेसूरकंतेय ॥ ४ ॥ जेयावण्णेयतहप्पगारा ते समासओ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—पज्जत्तगाय अपज्जत्त
गाय, तत्थण जेते अपज्जत्तगा तेण असंपत्ता तत्थण जेते पज्जत्तगा एतेसि वण्णादेसेण गंधादेसेण रसादे
सेण फासादेसेण सहस्सग्गसोविहाणाइ संखिज्जाइ जोणिप्पमुहसयसहस्साइ पज्जत्तगणिस्साए अपज्जत्तगाव
क्कमंति, जत्थ एगो तत्थ णियमा असंखेज्जा। सेत्त खरबादरपुढविकाइया। सेत्तबादरपुढविकाइया॥ सेत्तपु
ढविकाइया ॥ से कित आउकाइया ? आउकाइया दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—सुहुमआउकाइयाय बादर
आउकाइयाय। से कित सुहुमआउकाइया ? सुहुमआउकाइया दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—पज्जत्तसुहुम

रुचकोऽङ्क स्फटिकलोहिताक्षइति ॥ मरकतमसारगल्लौ भुजमोचकेन्द्रनीलौ च ॥ ३ ॥ चन्दनगैरिकहंसा पुलकसौगन्धिकेचबोद्धव्ये ॥ चन्द्रप्रभवैडू
र्यो जलकान्त सूर्यकान्तश्च ॥ ४ ॥ ये चान्ये तथा प्रकारास्ते समासतस्तथा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-पर्याप्तका, अपर्याप्तकाश्च, तत्र ये एते ऽपर्याप्तकास्ते
असंप्राप्ता । तत्र ये एते पर्याप्तका एते वर्णादेशेन गन्धादेशेन रसादेशेन स्पर्शादेशेन सहस्राग्रशो विधानाति संख्येयानि । योनिप्रमुखानि शतस
हस्राणि पर्याप्तनिश्रया अपर्याप्तका व्युत्क्रामन्ति, यत्रैकस्तत्र नियमा असंख्येया । त एते खरबादरपृथिवीकायिका । त एते बादरपृथिवीकायि
का । त एत पृथिवीकायिका ॥ अथ कतिविधा अप्कायिका ?। अप्कायिका द्विविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा-सूक्ष्माप्कायिका, बादराप्कायिका ।
अथ कतिविधा: सूक्ष्माप्कायिका, ?। सूक्ष्माप्कायिका द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-पर्याप्त सूक्ष्माप्कायिका, अपर्याप्तसूक्ष्माप्कायिका । एते
सूक्ष्माप्कायिका ॥ अथ कतिविधा बादराप्कायिका ?। बादराप्कायिका अनेकविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-अवश्याय, हिम, महिक, करको,

॥ मूल ॥
॥ अ० ॥

आउकाइयाय अपज्जत्तसुहुमआउकाइयाय॥ सेत्तं सुहुमआउकाइया॥ से किंतं वादरआउकाइया? वादर आउकाइया अणेगविहा पन्नत्ता, तजहा उसाहिमए महिया करए हरतणूए सुद्धोदए सीतोदए उसिणोदए खारोदए खट्टोदए अंबिलोदए लवणोदए वारुणोदए खीरोदए खोदोदए रसोदए जेयावन्नेतहप्पगारा तेसमा सत्त दुविहा पन्नत्ता, तजहा पज्जत्तगा अपज्जत्तगाय, अत्थणं जेते अपज्जत्तगा तेण असपत्ता, तत्थणं जेते पज्जत्ता एएसिणवन्नादेसेण गंधादेसेण रसादेसेण फासादेसेण सहस्सग्गसोविहाणाइं संखेज्जाइं जोणिप्पमुहसयसहस्साइं पज्जत्तगणिस्साए अपज्जत्तगा वक्कमंति, तत्थ एगो तत्थनियमा असंखेज्जा। सेत्तं वादर आउकाइया॥ सेत्त आउकाइया॥ से किंत तेउकाइया? तेउकाइया दुविहा पन्नत्ता, तजहा सुहुमतेउ काइयाय वादरतेउकाइयाय, से किंत सुहुमतेउकाइया सुहुमतेउकाइया दुविहा पन्नत्ता, तजहा पज्जत्त

हरतनु' शुद्धोदक, शीतोदकम्, उष्णोदक क्षारोदकम्' ईषदम्लोदकम्, अम्लोदक, लवणोदकं, वारुणोदक, क्षीरोदक, घोदोदकं, रसोदक, ये वाऽन्ये तथा प्रकारास्ते समासतो द्विविधा प्रज्ञप्ता, तद्यथा-पर्याप्तका अपर्याप्तकाश्च, तत्र ये एते अपर्याप्तकास्ते ऽसम्प्राप्ता। तत्र ये एते पर्याप्तास्त वर्णादेशेन गन्धादेशेन रसादेशेन स्पर्शादेशेन सहस्राग्रशो विधानानि संख्येयानि। योनिप्रमुखानि शतसहस्राणि पर्याप्तनिश्रया अपर्याप्तका व्युत्क्रामन्ति। यत्रैकस्तत्र नियमा असंख्येया। तदेते वादराप्कायिका। तदेते अप्कायिका॥ अथ कतिविधास्तेज कायिका?। तेजः कायिका द्विविधा प्रज्ञप्ता। तद्यथा-सूक्ष्मतेज कायिका, वादरतेज कायिकाश्च। अथ कतिविधा सूक्ष्मतेज कायिका?। सूक्ष्मतेज कायिका द्विविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा-पर्याप्तका, अपर्याप्तकाश्च। तदेता सूक्ष्मतेज कायिका। अथ कतिविधा वादरतेज कायिका। वादरतेज कायिका अनेकविधा प्रज्ञप्ता। तद्यथा-अङ्गार, ज्वालो, मुर्मुर, अर्चि, अलात शुद्धाग्नि, उल्का, विद्युत्, अशनि, निर्घात, संघर्षसमुत्थित., सूर्य

गाय अपज्जत्तगाय । सेत्त सुहुमतेउकाइया । से किंत बादरतेउकाइया २ अणेगविहा पन्नत्ता, तजहा इंगाले जाला मुम्मुरे अच्ची अलाए सुद्धागणी उक्का विज्जू असणी णिग्घाए संघरिससमुठिए सूरकंतमणिणिस्सिए, जेयावन्ने तहप्पगारा ते समासत्तो दुविहा पन्नत्ता, तजहा पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय, तत्थण जेते अपज्जत्तगा तेण असंपत्ता, तत्थण जेते पज्जत्तगा एएसि वण्णादेसेण गंधादेसेणं रसादेसेण फासादेसेण सहस्सग्गसोविहाणाइ संखिज्जाइ जोणिप्पमुहसयसहस्साइ पज्जत्तगणिस्साए अपज्जत्तगा वक्कमंति, जत्थ एगो तत्थ णियमा असंखेज्जा ॥ सेत्त बादरतेउकाइया ॥ सेत्त तेउकाइया ॥ से किंत वाउकाइया ? वाउकाइया दुविहा पन्नत्ता, तजहा सुहुमवाउकाइयाय बादरवाउकाइयाय, से किंत सुहुमवाउकाइया ? सुहुमवाउकाइया दुविहा पन्नत्ता, तजहा पज्जत्तगसुहुमवाउकाइयाय अपज्जत्तगसुहुमवाउकाइयाय । सेत्त सुहुमवाउकाइया । से किंत बादरवाउकाइया ? बादरवा० अणेगविहा पन्नत्ता, तजहा पाईणवाए पडीणवाए दाहि

कान्तमणिप्रभूत , ये चाप्यन्ये तथा प्रकारास्त समासतो द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-पर्याप्तका , अपर्याप्तकाश्च । तत्र ये एत अपर्याप्तकास्ते असंप्राप्ता । तत्र ये पर्याप्तकास्ते वर्णादेशेन गन्धादेशेन रसादेशेन स्पर्शादेशेन सहस्राग्रशो विधानानि सख्येयानि । योनि प्रमुखाणि शतसहस्राणि पर्याप्तकानि श्रया अपर्याप्तका व्युत्क्रामन्ति । यत्रैकस्तत्र नियमा असख्येया । तएत बादरतेजःकायिका । तएते तेज कायिका ॥ अथ कतिविधा वायुकायिका ? । वायुकायिका द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा--सूक्ष्मवायुकायिका बादरवायुकायिकाश्च । अथ कतिविधा सूक्ष्मवायुकायिका ? । सूक्ष्मवायुकायिका द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा पर्याप्तसूक्ष्मवायुकायिका , अपर्याप्तसूक्ष्मवायुकायिकाश्च । तएते सूक्ष्मवायुकायिका । अथ कतिविधा बादरवायुकायिका । बादरवायुकायिका अनेकविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-प्राचीनवायु , प्रतीचीनवायु , दक्षिणवायु , उदीचीनवायु , ऊ

णवाए उदीणवाए उड्ढवाए अहोवाए तिरियवाए विदिसीवाए वाउब्भामेत्रा उक्कलिया वायमंडलिया उक्कलियावाए मंडलियावाए गुंजावाए झंझावाए संवट्टवाए घणवाए तणुवाए सुद्धवाए, जेयावन्ने तहप्पगारा ते समासओ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय, तत्थणं जेते अपज्जत्तगा तेणं असपत्ता, तत्थण जेते पज्जत्तगा एएसिणं वण्णादेसेणं गंधादेसेण रसादेसेण फासादेसेण सहस्सग्गसोविहाणाइं संखिज्जाइं जोणिप्पमुहसयसहस्साइं पज्जत्तगणिस्साए अपज्जत्तगा वक्कमंति, जत्थ एगो तत्थ नियमा असंखेज्जा ॥ सेत्तं बादरवाउकाइया ॥ सेत्तं वाउकाइया ॥ से किंत वणस्सइकाइया वणस्सइकाइया दुविहा प०, तंजहा सुहुमवणस्सइकाइयाय बादरवणस्सइकाइयाय, से किंत सुहुमवणस्सइकाइया२ दुविहा पन्नत्ता, त० पज्जत्तसुहुमवणस्सइकाइयाय अपज्जत्तसुहुमवणस्सइकाइयाय। सेत्तं सुहुमवणस्सइकाइया। से किंतं

र्ध्ववायु , अधोवायु , तिर्यक्वायु , विदिक्वायु , वातोद्भ्रामे , वातोत्कलिका , वातमण्डली' उत्कलिकावातो, मण्डलिकावातो, गञ्जावातो, झञ्झावातो, संवृष्टिवातो, घनवाततनुवात ' शुद्धवात ये चान्ये तथा प्रकारास्ते सर्वे द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-पर्याप्तका' अपर्याप्तकाश्च । तत्र य एते अपर्याप्तकास्ते असंप्राप्ता । तत्र य एते पर्याप्तकास्ते वर्णादेशेन गन्धादेशेन रसादेशेन स्पर्शादेशेन सहस्राग्रशो विधानानि संख्यातानि । योनिप्रमुखानि शतसहस्राणि पर्याप्तकानि अथा अपर्याप्तका व्युत्क्रामन्ति । यत्रैक स्तत्र नियमा असंख्यया । तएत बादरवायुकायिका । तएते वायुकायिका ॥ अथ कतिविधा वनस्पतिकायिका ? । वनस्पतिकायिका द्विविधा' प्रज्ञप्ता । तद्यथा--सूक्ष्मवनस्पतिकायिका, बादरवनस्पतिकायिका । अथ कतिविधा सूक्ष्मवनस्पतिकायिका ? । सूक्ष्मवनस्पतिकायिका द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा--पर्याप्तसूक्ष्मवनस्पतिकायिका अपर्याप्तसूक्ष्मवनस्पतिकायिका , तएते सूक्ष्मवनस्पतिकायिकाः । अथ कतिविधा बादरवनस्पतिकायिकाः ? बादरवनस्पतिकायिका द्विविधा

वादरवणस्सइकाइया २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा पत्तेयसरीरवादरवणस्सइकाइयाय साहारणसरीरवादरवणस्सइकाइयाय, से किंत पत्तेयसरीरवादरवणस्सइकाइया २ दुवालसविहा पण्णत्ता, तंजहा रुक्खागुच्छागुम्मा लतायवल्लीयपव्वगाचेव । तणवलयहरियओसहि जलरुहकुहणायबोधव्वा ॥ १ ॥ से किंत रुक्खा२ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा एगट्ठियाय बहुबीयगाय, से किंत एगट्ठिया२ अणेगविहा पण्णत्ता, तंजहा निंबंबजंबुकोस वसालअंकोल्लपेलुसेलूया । सल्लइमोयइमालुय वउलपलासेकरंजेय ॥ १ ॥ पुत्तजीवअरिठे विभेलएहरिडएयभल्लाए । उंबेभरियाखीरिणि बोधव्वेधायइपियाले ॥ २ ॥ पूईयनिंबकरए सण्हातहसीसवायअसणेय । पुण्णागनागरुक्खे सिरिवण्णीतहअसोगेय ॥ ३ ॥ जेयावन्ने तहप्पगारा एएसिणमूलाविअसंखिज्जजीविया कंदावि खंधावि तयावि सालावि पवालावि, पत्तापत्तेयजीविया, पुप्फा अणेगजीवा, फला एगट्ठिया ॥

प्रज्ञप्ता । तद्यथा--प्रत्येकशरीरवादरवनस्पतिकायिका, साधारणशरीरवादरवनस्पतिकायिका । अथ कतिविधा प्रत्येकशरीरवादरवनस्पतिकायिका, २ । प्रत्येकशरीरवादरवनस्पतिकायिका द्वादशविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा--वृक्षा गुच्छा गुल्मालता वल्लय पर्वगाश्चैव ॥ तृणवलयहरितौषधिजलरुहकुहणाश्च बोद्धव्या ॥ १ ॥ अथ कतिविधा वृक्षा ? । वृक्षा द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा--एकास्थिका बन्हीबकाश्च । अथ कतिविधा एकास्थिका ? । एकास्थिका अनेकविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा--निम्बाम्ब्रजम्बुकोशम्ब शालाङ्कोठपीलुशेलवाख्या ॥ शल्लकमोचकमालकबकुल पलाशकरजभेदात् ॥ १ ॥ पुत्रजीवकारिष्ठा विभीतकहरीतकभल्लाता ॥ उम्बेभरिकाक्षीरणी बोद्धव्यौधातकीप्रियालौ ॥ २ ॥ पूतिकनिम्बकरञ्जाः सदृक्षयाशिंशपाशनभेदात् ॥ पुन्नागनागवृक्षौ श्रीपर्णीचतथाशोक० ॥ ३ ॥ येपि चान्ये तथाप्रकारा एतेषां मूलानि असंख्यजीवकानि । कन्दा अपि स्कन्धा अपि त्वचोपि शाखा अपि प्रवाला अपि, पत्राणि प्रत्येकजीवकानि । पुष्पाण्यनेकजीवकानि । फलान्येकास्थिकानि । उक्ता एकास्थिका ।

गाथा ॥ पद ॥ १

५० ॥

सेत्तं एगट्ठिया ॥ से किंतं बहुबीयगा२ अणेगविहा प०, तं० अत्थियतेंदुकविट्ठे अंबाडगमाउलिंगबिल्ले य
आमलगफणसदालिम आसोत्थेउंबरवडेय ॥ १ ॥ णग्गोहणंदिरुक्खे पिप्परिसयरीपिलुक्खरुक्खेय । काउंबरि
कुत्थुंभरि बोधव्वादेवदालीय ॥ २ ॥ तिलएलउएच्छत्ते हासिरीसेसत्तवण्णदहिवन्ने । लोद्धधवचंदणज्जुण णीमेकु
डएकयंबेय ॥३॥ जेयावन्ने तहप्पगारा एएसिण मूलावि असंखिज्जजीविया, कंदावि खंधावि तयावि सालावि
पवालावि, पत्ता पत्तेयजीविया, पुप्फायअणेगजीविया, फला बहुबीया, सेत्त बहुबीयगा ॥ सेत्त रुक्खा ॥
से किंत गुच्छा२ अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा—वाइंगिणिअल्लइपुण्ड इंयतहकच्छुरीयजासुमणा । रूवीआढ
इणीली तुलसीतहमाउलिंगाय ॥ १ ॥ कुत्थुंभरिपिप्पलिया अतसीविल्लीयकायमाईय । चुच्चुपडोलाकंदलि
वाउच्चावत्थुलेबदरे ॥ २ ॥ पत्तउरसीयउरए हवइतहजवासएयबोधव्वे । णिग्गुंडिअक्कतूवरि आढईचेवतलउ

अथ कतिविधा बहुबीजका ? । बहुबीजका अनेकविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा--अस्थिकतिन्दुककपित्था आम्बाटकमातुलिङ्गविल्वाश्च ॥ आमलकपन
सदाडिम मश्वत्थोदुम्बरवटाश्च ॥ १ ॥ न्यग्रोधनन्दिवृक्षौ पिप्पलीशतावरीप्लक्षा ॥ कादुम्बरिकुस्तुम्बरी बोद्धव्योदेवदारुश्च ॥ २ ॥ तिलकालावुकच्छत्रा॰
श्चोपशिरीषसप्तपर्णदधिपर्णा ॥ लोध्रधवचन्दनार्जुन नीपकुटजकदम्बाश्च ॥ ३ ॥ यचान्ये तथाप्रकारा एतेषा मूलानि असंख्येयजीवकानि । कन्दा
अपि स्कन्धा अपि त्वचोपि शाखा अपि प्रवाला अपि, पत्राण्यपि प्रत्येकजीवकानि, पुष्पाण्यप्यनकजीवकानि फलान्यपि बहुबीजानि । उक्ता
बहुबीजका । उक्ता वृक्षा ॥ अथ कतिविधा गुच्छा ? । गुच्छा अप्यनकविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-वृन्ताकसल्लकीवा एव तुकाच्छनारिजकुसुमम् ॥
रूपी आढि कनीली तुलसीतथाविजोरास्य ॥ १ ॥ कुस्तुम्भरिपिप्पलिका अतसीविलीयकास्यामादि ॥ चूर्णदपेलीकन्दलिका वाउलिकाबदरवृन्तौ ॥
२ ॥ पत्रवृशीरस्युरजा॰ ज्ञातितथायवासश्च ॥ निर्गुण्डाकतूवारिका आढकिश्चैवतलोडा ॥ ३ ॥ शणपानकामर्दका ग्राठकसिन्दुवारास्या ॥ करम

ला ॥ ३ ॥ सणपाणकासमद्दग अग्घाडगसामसिंदुवारेय । करमद्दअद्दरूसग करीरएरावणमहत्थे ॥ ४ ॥ जाउलतमालपत्तिरली गयमारिणिकुव्वकारियाभंडी । जावइकेयइतहगंज पाडलादासिअंकोल्ले ॥ ५ ॥ जेयावन्ने तहप्पगारा सेत्त गुच्छा ॥ से किंत गुम्मा२ अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा सेरियएणोमालिय कोरिंटय बंधुजीवगमणोज्जे । पीईयपाणकणइर कुज्जयतहसिंदुवारेय ॥१॥ जाईमोग्गरतहजूहियायतहमल्लियायवासंती । वत्थुलकच्छुलसेवा लगंठिमगदंतियाचेव ॥२॥ चंपगजाईणवणी इयायकुंदेतहामहाजाई । एवमणेगागारा हवंतिगुम्मामुणेयव्वा ॥ ३ ॥ सेत्त गुम्मा ॥ से किंत लयाउ लयाउ अणेगविहाउ पन्नत्ताउ, तंजहा—पउमलयानागलया असोगचंपयलयायचूतलता । वणलतवासंतिलता अइमुत्तयकुंदसामलता ॥ १ ॥ जेयावन्नेतहप्पगारा सेत्त लयाउ ॥ से किंत वल्ली२ अणेगविहाउ पन्नत्ताउ, तंजहा—पूसफलीकालिंगी तुंबीतपुसीय

दोडूसाख्या करवीरराक्णमहाख्या ॥ ४ ॥ जाउलतमापिरलीगज मारणकुब्बकारिकाजिवड्डी ॥ यावककेतकिवृक्षो गवफपालोप्यथाङ्कोल ॥ ५ ॥ ये वान्ये तथाप्रकारास्ते गुच्छा । अथ कतिविधा गुल्मा ?। गुल्मा अप्यनेकविधा॰ प्रज्ञप्ता । तद्यथा-सरिसनामानवमालिका कोरण्टकबन्धुजीवकमनोज्ञा ॥ प्रीतिकरप्राणतरी करवीरकुब्जकौनिर्गुण्डी ॥ १ ॥ जातीमुद्गरयूथ्यो मल्लिकाचतथावासन्ती ॥ वर्तुलकच्छोलगुल्मौ शैवालगण्ठिमगदन्तिकगाथ ॥ २ ॥ चम्पकजातीनारङ्गा मुचकुन्दस्तयामहाकाय ॥ एवमनेकाकारा भवन्तिगुल्माअनेकविधा ॥ ३ ॥ तएते गुल्मा ॥ अथ कास्ता लता ? लता अनेकविधा प्रज्ञप्तास्तद्यथा पद्मलतानागलता अशोकचम्पकलताश्चचूतलता । वनवासन्तीलतेस्त अतिमुक्तककुन्दश्यामलता ॥ १ ॥ याश्चान्यास्तथाप्रकारास्ता लता । अथ कास्ता वल्लय , वल्लयोनेकविधा प्रज्ञप्तास्तद्यथा-पुसकलीकालिङ्गी तुम्बीत्रपुसीतयेलवालुङ्की । घोषातकीपटोली पञ्चाङ्गुलिकातृणालीच ॥ १ ॥ कङ्गूलताचकुटुकी कर्कोटकीकारियल्लकीसुभगा । कुयवाचवल्लुलीसा त्वापावल्लीचदेवदालीका ॥ २ ॥ आस्फोटाचा

एलवालुंकी । घोसातईपडोला पचगुलिआयणालीय ॥ १ ॥ कंगूलयाकडुइया कक्कोडइकारियल्लईसुभगा । कुयवायवागलीपा वावल्लीतहदेवदालीत ॥ २ ॥ अप्फोआअइमुत्तय नागलयाकण्हसूरवल्लीय सघट्टसुमिण साविय जासुमणकुविंदवल्लीया ॥ ३ ॥ मुद्दियअवावल्ली वीरविरालीजियंतिगोवाली । पाणीसामावल्ली गुंजा वल्लीयवच्छाणी ॥ ४ ॥ ससविंदुगोत्तफुसिया गिरिकन्नइमालुयाअंजणई । दहफुल्लयकोगलिमा गलीयतह अक्कबोंदीया ॥ ५ ॥ जेयावन्ने तहप्पगारा सेत्त वल्लीओ ॥ से किंत पव्वगा २ अणेगविहा पन्नत्ता, तजहा इक्खूयइक्खुवडये वीरुणातहइक्कडेयमासेय । सुंठेसरेयवेत्ते तिमिरेसतपोरगणले ॥ १ ॥ वसेवेलूकणए कंका वसेयचववसेय । उदएकुडएविमए कडावेलूयकल्लाणे ॥ २ ॥ जेयावन्ने तहप्पगारा सेत्त पव्वगा ॥ से किंतं तणा ? तणा अणेगविहा पन्नत्ता, तजहा—सेडियभंतियहोत्तिय दब्भकुसेपव्वएयपोडइला । अज्जुणअसाढए

तिमुक्तक नागलतेकृष्णसूरवल्ल्यौ च । सघर्षसुमनसोपिच जातसुमना कुविन्दवल्लीका ॥ ३ ॥ मुद्रिकाम्बावल्लयौ वीरविरालीजयन्तीगोपाली । पाणी श्यामावल्ली गुञ्जावल्लीचवत्साणी ॥ ४ ॥ शशबिन्दुगोत्रा फुरसीगिरिकर्णिमालुकाञ्जनकी । द्विपुष्पकागणिमोगरी तथैवचान्याक्कबोंदीका ॥ ५ ॥ या चान्यास्तथा प्रकारास्ता वल्ल्य । अथ के ते पर्वगा पर्वगा अनेकविधा प्रज्ञप्तास्तद्यथा-इक्षुयाइक्षुवाटिका वीरुणीतथाइक्कामासश्च ॥ शुण्ठी सरेयवेत्रा तिमिरासतपोरगणालाश्च ॥ १ ॥ वंशोवेलूकणका कंकावंशस्तथैवचववंश ॥ उदककुटकविमुका कण्ठावेलश्चकल्याणी ॥ २ ॥ येचान्ये त थाप्रकारास्ते पर्वगा ॥ अथ कानि तृणानि तृणानि अनेकविधानि प्रज्ञप्तानि । तद्यथा-एरण्ड कुरुविन्द करकचसुण्ठीतथाविजङ्गश्च ॥ मधुरतृणक्षु रकशाप्य भेदात्चोप्यचशुल्कतृणम् ॥ १ ॥ यानिचान्यानि तथा प्रकाराणि तानि तृणानि । अथ कतिविधा वलया ? । वलया अनेकविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-तालस्तमालतक्ली तरकालितसारिकासारकल्याणा ॥ सरलजावित्रीकेतकी कदल्यस्तथापञ्चवृत्तश्च ॥ १ ॥ भूतवृक्षोहिंगुवृक्षो लवङ्गवृक्षश्चभव

री हियसिसुयवेयखीरज्ञुसे ॥ १ ॥ एरंडेकुरुविंदे करकरसुंठेतहाविज्ञंगूय । मज्जरतगाबुरयसिप्पिय वोधव्वे सुकालितणेय ॥ २ ॥ जेयावन्ने तहप्पगारा सेत्त तणा ॥ से किंत वलया२ अणेगविहा पन्नत्ता, तजहा—ताले तमालेतक्कालि, तेयालीसालिसारकल्लाणे । सरलेजावतिकेयइ, कदलितहचम्मरुक्खेय ॥ १ ॥ भुयरुक्खहिगुरुक्खे, लवगरुक्खेयहोइवोधव्वे । पूयफलीखज्जूरी, वोधव्वानालिएरीय ॥ २ ॥ जेयावन्ने तहप्पगारा सेत्त वलया । से किंत हरिया ? हरिया अणेगविहा पन्नत्ता, तजहा—अज्जोरुहवोडाणो, हरितगतहतदुलेज्जगतणेय । वत्थुलपोरगमज्जा, रपोइवल्लीयपालक्का ॥ १ ॥ दगपिप्पलीयदव्वी सोत्थियसाएतहेवमंडुक्की । मूलगसरिसवअविल, साएयजियतएचेव ॥ २ ॥ तुलसीकण्हउराले फणिज्जुएअज्जएयभूयणए । चोरगदमणगमरुयग सतपुप्फिदीवरेयतहा ॥ ३ ॥ जेयावन्ने तहप्पगारा सेत्त हरिया । से किंत ओसहीओ ? ओसहीओ अणेगविहाओ पन्नत्ताओ, तजहा—सालीवीहीगोहूम जवकलमसूरातिलमुग्गा । मासणिप्फावकुलत्थ अलिसिदसतीणएलिघा ॥ १ ॥ अयसीकुसुंभकोद्दव कगूरालगवरट्टकोदूसा । सणसरिसमूलवीया जेयावन्ने तहप्प

| ॥ मूल ॥

तियोद्रव्य ॥ पूगफलखर्जूर वोद्धव्योनारिकेलश्च ॥ २ ॥ येचान्ये तथाप्रकारास्ते वलया. ॥ अथ कतिविधा हरितका । हरितका अप्यनेकविधा । तद्यथा-अध्यारूढोवोढा हरिततन्दुलोजलगतानेक ॥ वस्तुलपोरगमज्जार पोंइवल्लीचपालकिका ॥ दकपीपलिकादर्वी स्वस्तिकाशाकस्तथैवमण्डूकी ॥ १ ॥ मूलकसरसवाम्लिल शाकजयन्तकश्चैव ॥ तुलसीकृष्णोरालो अर्जुनभूर्चभेदेन ॥ चोरदकमनकरुचक शतपुष्पीन्दीवरचतथा ॥ येचान्ये तथाप्रकारास्ते हरिता ॥ अथ कास्ता औषधय । औषधयो ऽनकविधा प्रज्ञप्ता । शालीव्रीहीगोधूमा यवकलममसूरतिलमुद्गा ॥ मासनिष्पावकुलत्था अलसीदशतीणकालिङ्गा ॥ १ ॥ अयसीकुसुम्भकोद्रव कङ्गूरालमासकोद्रवका ॥ शणसरिसवमूलयोजा येचान्ये तथाप्रकारास्ताश्चौ

। भ० ॥

गारा सेत्तं उसहीउ । से किंतं जलरुहा २ अणेगविहा पण्णत्ता, तंजहा—उदए अवए पणए सेवाले कलंबुए हढे कसेरूया कच्छभाणी उप्पले पउमे कुमुदे णलिणे सुभए सोगंधिए पोंडरीए महापोंडरीए सयवत्ते सहस्सवत्ते कल्हारे कोकणदे अरविंदे तामरस भिसे भिसमुणाले पोक्खले पोक्खलच्छिभए जेयावन्ने तहप्पगारा सेत्तं जलरुहा । से किंतं कुहणा ? अणेगविहा पण्णत्ता, तंजहा—आए काए कुहणे कुणक्के दव्वहलिया अफाए सज्जाए छत्तोए वसीणहिया कुरए १ जेयावन्ने तहप्पगारा सेत्तं कुहणा । णाणाविहसंठाणा रुक्खाणएगजीवियापत्ता । खंधोविएगजीवो तालसरलनालिएरीण ॥ १ ॥ जहसगलसरिसवाणं सिलेसमिस्साणवट्टियावट्टा । पत्तेयसरीराणं तहहोतिसरीरसंघाया ॥ २ ॥ जहवातिलपप्पडिया बहुएहितिलेहि सहतासती । पत्तेयसरीराणं तहहोतिसरीरसंघाया ॥ ३ ॥ सेत्तं पत्तेयसरीरबादरवणप्फइकाइया । से किंतं

अर्थ ॥ अथ कतिविधा जलरुहा ? । जलरुहा अनेकविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा—उदके अवके पनके शैवाले कलम्बुके हढे ॥ कसेरुककच्छभाणिका उत्पलपद्मकुमुदानि ॥ १ ॥ नलिनसुभगसौगन्धिकपुण्डरीक शतपत्र सहस्रपत्रकल्हारकोकनदारविन्दतामरस बिसबिसमृणाल पुष्कल पुष्कलशालि भेदात् । येचान्ये तथाप्रकारास्ते जलरुहा । अथ कतिविधा कुहणा । कुहणा अनेकविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा—आय काय, कुहण, कुणाक द्रव्यहलिका, अफाक, सद्यज, सत्राक, छत्राक, वसीणहित कुहकरभेदात् । येचान्ये तथाप्रकारास्ते कुहणा । नानाविधसंस्थाना वृक्षा एकजीविकापत्रा । स्कन्धोऽपि चैकजीवोत्पलसरलनारिकेलीनाम् ॥ १ ॥ यथासकलसर्षपाणां श्लेषमिश्राणां वर्तिकावृत्तम् । प्रत्येकशरीराणां तथाभवन्तिशरीरसंघाताः ॥ २ ॥ यथावातिलपर्पटिका बहुभिस्तिलैस्संहतासन्ती । प्रत्येकशरीराणां तथाभवन्तिशरीरसंघाता ॥ ३ ॥ उक्ता प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका । अथ कतिविधा साधारणशरीरबादरवनस्पतिकायिका साधारणशरीरबादरवनस्पतिकायिका अनेकविधा प्रज्ञप्ता ।

साहारणसरीरबादरवणस्सइकाइया ? २ अणेगविहा पण्णत्ता, तंजहा—अवए पणए सेवाले लोहिणी निहू त्थिभगा अस्सकण्णी सिहकण्णी सिउंढातत्तोमुसढीय ॥ १ ॥ रुरुकुण्डहरियाजारु, छीरविरालीतहेवकिट्टीया हलिद्दासिगवेरेय, आलुग्गमूलएड यकढूय कणकडूमज्जपोगलईतहेव मज्जसिंगी विरुहा सप्पसुगंधा छिन्नरुहा चेव वायरुहा पाढामियवालुकी मज्जररसा चेव रायवल्ली य पउमा य माढरी दंति चण्डिकिहाति यावरा मासपण्णी मुग्गपण्णि जीवियरिसिके य रेणुया चेव काउली खीरकाउली तया भंगीणहाईयाकिमिरा सिन्नद्दमुत्थाणगलईपेलुगाईय किण्हे पउले य हढेहरतणुया चेव लोयाणी कण्हकदेवज्जे सूरणकं तहेव खल्लूडे एए अणतजीवा जेयावण्णे तहाविहा ॥ तणमूलकदमूलो वसीमूलित्तियावरे । सखेज्ज मसखिज्जा बोध व्वाअणतजीवाय ॥१॥ सिघाडगस्सगुच्छो अणेगजीवोउ होति णायव्वो। पत्ता पत्तेयजिया दोण्णियजीवाउ फले

तद्यथा-अनक, पनक, सेवाल, लोही, थीहू, स्तिभका । अश्वकर्णी सिंहकर्णी सउंढि ततो, मुसुण्ढी ॥ १ ॥ तरुकन्दकुन्दरिजितवीरविराली त थाचोक्ता । हारिद्रशृङ्गवेर आलूमूलीकम्बु कम्बकन्दमधुपोलेव ॥ २ ॥ मधुशृङ्गीविरुढी सर्वसुगन्धिश्छिन्नरूढा । अश्मरुहावाताली मधुररसाचराज लता ॥ ३ पद्मागान्धारिदात्यौ चण्डीकिघातिकावरामासपर्णी । मुद्गपर्णीजीवरसिका रेणुकाकाकोलीक्षीरकाकोली ॥४॥ भङ्गाकमराशिमाया गु लागुलेयवालुका च । कृष्णपोलहण्डकन्दौ तथाहरतन्तुलोयाणी ॥ ५ ॥ कृष्णकन्दवज्रकन्दौ सूरणकन्द खल्लूक । एते अनन्तजीवा ये वाप्यन्ये तथा भूता ॥ ६ ॥ तृणमूल कन्दमूला वशीमूलास्तथाचपरे । सख्येया असख्येया बोद्धव्याश्चतथापरे ॥ १ ॥ शृङ्गाटकस्सगुच्छोप्य नेकजीवोभवतिविज्ञेय । पत्रा प्रत्येकजीवा द्वौद्वौजीवौफलेविज्ञेयौ ॥ २ ॥ यस्यमूलस्यभग्नस्य समोभङ्गस्तुदृश्यते ॥ अनन्तजीवास्तन्मूले येवाप्यन्येतथाविधा ॥ १ ॥ यस्य कन्दस्य भग्नस्य समो भङ्गस्तु दृश्यते ॥ अनन्त जीवास्त न्मूले येवाप्यन्ये तथाविधा ॥ २ ॥ यस्य स्कन्धस्य भग्नस्य समो भङ्गस्तु दृश्यते ॥ अनन्त जीवा

॥ मूल ॥

॥ अ० ॥

न्नणिया ॥२॥ जस्समूलस्सन्नग्गस्स समोन्नंगोयदीसए। ऋणतजीवेउसेमूले जेयावन्नेतहाविहा ॥१॥ जस्सकंदस्स न्नग्गस्स समोन्नगोयदीसई । ऋणतजीवेउसेकंदे जेयावन्नेतहाविहा ॥ २ ॥ जस्सखधस्सन्नग्गस्स समोन्नंगोय दीसई । ऋणतजीवेउनेखधे जेयावन्नेतहाविहा ॥ ३ ॥ जस्सतयाएन्नग्गाए समोन्नगोयदीसई । ऋणतजीवा तयासाउ जेयावन्नातहाविहा ॥ ४ ॥ जस्ससालस्सन्नग्गस्स समोन्नगोपदीसई ऋणतजीवउसेसाले जेयावन्ने तहाविहा ॥ ५ ॥ जस्सपवालस्सन्नग्गस्स समोन्नगोपदीसई । ऋणतजीवेपवालेसे जेयावन्नातहाविहा ६ ॥ जस्सपत्तस्सन्नग्गस्स समोन्नगोपदीसई। ऋणतजीवेउसेपत्ते जेयावन्नेतहाविहा ॥७॥ जस्सपुप्फस्सन्नग्गस्स समोन्नगोपदीसई । ऋणतजीवेउनेपुप्फे जेयावन्नेतहाविहा ॥८॥ जस्सफलस्सन्नग्गस्स समोन्नगोपदीसई । ऋणतजीवेफलेसेउ जेयावन्नेतहाविहा ॥ ९ ॥ जस्सबीयस्सन्नग्गस्स समोन्नगोपदीसई । ऋणतजीवेउनेबीए जेयावन्नेतहाविहा ॥ १० ॥ जस्समूलस्सन्नग्गस्स हीरोन्नगोपदीसई । परित्त ीवेउसेमूले जेयावन्नेतहाविहा १ जस्सकदस्सन्नग्गस्स हीरोन्नगोपदीसई । परित्तजीवेउसेकदे जेयावन्नेतहाविहा ॥ २ ॥ जस्सखधस्सन्नग्गस्स

स्तन्मूले यवाप्यन्ये तथाविधा ॥ ३ ॥ यस्य शाखा प्रभग्ना च समो भङ्गोऽपि दृश्यते ॥ अनन्त जीवास्तच्छाखा येवाप्यन्ये तथाविधा ॥ ४ ॥ यस्य त्वच स्तु भग्नाया समो भङ्गस्तु दृश्यते ॥ अनन्तजीवा स्तत्त्वक्तु येवाप्यन्ये तथाविधा ॥ ५ ॥ यत्प्रवालस्य भग्नस्य समो भङ्गस्तु दृश्यते ॥ अनन्तजीवा स्तु येवाप्यन्ये तथाविधा ॥ ६ ॥ यस्य पत्रस्य भग्नस्य समो भङ्गस्तु दृश्यते ॥ अनन्तजीवा स्तत्पत्रे ये वाप्यन्ये तथाविधा ॥ ७ ॥ यस्य पुष्पस्य भ- ग्नस्य समो भङ्गस्तु दृश्यते ॥ अनन्तजीवा स्तत्पुष्पे ये वाप्यन्ये तथाविधा ॥ ८ ॥ यत्फलस्य च भग्नस्य समो भङ्गस्तु दृश्यते ॥ अनन्तजीवा स्तत्फले ये वाप्यन्ये तथाविधा ॥ ९ ॥ यस्य बीजस्य भग्नस्य समो भङ्गस्तु दृश्यते ॥ अनन्तजीवा स्तद्बीजे ये वाप्यन्ये तथाविधा ॥ १० ॥ यस्य मूलस्य भग्न

हीरोभग्गेपदीसई । परित्तजीवेउसेखंधे जेयावन्नेतहाविहा ॥ ३ ॥ जस्सतयाएभग्गाए हीरोभग्गेपदीसई । परित्तजीवातयासाउ जेयावन्नातहाविहा ॥ ४ ॥ जस्ससालस्सभग्गस्स हीरोभग्गेपदीसई । परित्तजीवेउसेसाले जेयावन्नेतहाविहा ॥ ५ ॥ जस्सपवालस्सभग्गस्स हीरोभग्गेपदीसई । परित्तजीवेपवालेउ जेयावन्नेतहाविहा ॥ ६ ॥ जस्सपत्तस्सभग्गस्स हीरोभग्गेपदीसई । परित्तजीवेउसेपत्ते जेयावन्नेतहाविहा ॥ ७ ॥ जस्सपुप्फस्सभग्गस्स हीरोभग्गेपदीसई । परित्तजीवेउसेपुप्फे जेयावन्नेतहाविहा ॥ ८ ॥ जस्सफलस्सभग्गस्स हीरोभग्गेपदीसई । परित्तजीवफलेसेउ जेयावन्नेतहाविहा ॥ ९ ॥ जस्सवीयस्सभग्गस्स हीरोभग्गेपदीसई । परित्तजीवेउसेवीए जेयावन्नेतहाविहा ॥ १० ॥ जस्समूलस्सकट्ठाउ छल्लीवहुलतरीभवे । अणंतजीवाउसाछल्ली जायाव

स्य हीरो भङ्गस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवास्तन्मूले ये वाप्यन्ये तथाविधा ॥ १ ॥ यस्य स्कन्दस्य भग्नस्य हीरो भङ्गस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवा स्तत्कन्दे ये वाप्यन्ये तथाविधा ॥ २ ॥ यस्य स्कन्धस्य भग्नस्य हीरो भङ्गस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवास्त स्कन्ध ये वाप्यन्य तथाविधा ॥ ३ ॥ यस्य त्वचस्तु भग्नाया हीरो भङ्गस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवास्तु त्वचि ये वाप्यन्ये तथाविधा ॥ ४ ॥ यस्य शालस्य भग्नस्य हीरो भङ्गस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवास्त प्वाले येवाप्यन्य तथाविधा ॥ ५ ॥ यत्प्रवालस्य भग्नस्य हीरो भङ्गस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येक जीवास्तत्र स्यु यें वाप्यन्ये तथाविधा ॥ ६ ॥ यस्य पत्रस्य भग्नस्य हीरा भङ्गस्तु दृश्यते ॥ प्रत्यक जीवा स्तत्पत्रे ये वाप्यन्य तथाविधा ॥ ७ ॥ यस्य पुष्पस्य भग्नस्य हीरा भङ्गस्तु दृश्यत ॥ प्रत्येकजीवा स्तत्पुष्प ये वाप्यन्य तथाविधा ॥ ८ ॥ यत्फलस्य तु भग्नस्य हीरो भङ्गस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवास्तु फल य वाप्यन्य तथाविधा ॥ ९ ॥ यस्य वीजस्य भग्नस्य हीरो भङ्गस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवास्तद्वीज ये वाप्यन्ये तथाविधा ॥ १० ॥ यस्य कन्दस्य काष्ठेभ्यास्तत्त्वक वहुला भवेत ॥ अनन्तजीवास्त त्वचि या वाप्यन्या स्तथाविधा ॥ १ ॥ यस्य स्कन्धस्य काष्ठेभ्यो स्तत्त्वक् वहुला भवेत् ॥ अनन्त जीवास्तत्त्वचि ये वाप्यन्ये तथाविधा ॥ २ ॥ यस्य शा

स्मातहाविहा ॥ १ ॥ जस्सकंदस्सकठाउ छल्लीबहलतरीभवे। अणंतजीवाउसाछल्ली जायाअस्मातहाविहा २ ॥ जस्सखंधस्सकठाउ छल्लीबहलतरीभवे । अणंतजीवाउसाछल्ली जायाअस्मातहाविहा ॥ ३ ॥ जस्ससालाइक ठाउ छल्लीबहलतरीभवे अणंतजीवाउसाछल्ली जायाअस्मातहाविहा ॥ ४ ॥ जस्समूलस्सकठाउ छल्लीतणुयरीभवे । परित्तजीवाउसाछल्ली जायाअस्मातहाविहा ॥ १ ॥ जस्सकंदस्सकठाउ छल्लीतणुयरीभवे । परित्त जीवाउसाछल्ली जायाअस्मातहाविहा ॥ २ ॥ जस्सखंधस्सकठाउ छल्लीतणुयरीभवे । परित्तजीवाउसाछल्ली जायाअस्मातहाविहा ॥ ३ ॥ जस्ससालाइकठाउ छल्लीतणुयरीभवे। परित्तजीवाउसाछल्ली जायाअस्मातहावि हा ॥ ४ ॥ चक्कागभज्जमाणस्स गठीचुस्मघणोभवे । पुढवीसरिसएणभेदेण अणंतजीवंवियाणाहि ॥ १ ॥ गूढसिरागपत्त सच्छीरंजचहोइनिच्छीर । जंपियपणठसंधि अणंतजीवंवियाणाणि ॥ २ ॥ पुप्फाजलयाथलया

लस्य काष्ठेभ्य स्त्वक्तु बहुला भवेत् ॥ अनन्तजीवास्तत्त्वपि या वाप्यन्या स्तथाविधा ॥ ३ ॥ यस्य मूलस्य काष्ठेभ्यो स्तत्त्वक् तनुतरीमता ॥ प्रत्येक जीवास्त्वचि तु या वाप्यन्या स्तथाविधा ॥ १ ॥ यस्य कन्दस्य काष्ठेभ्यो स्तत्त्वक् तनुतरीमता ॥ प्रत्येकजीवास्त्वचितु यावाप्यन्यास्तथाविधा ॥ २ ॥ यस्य स्कन्धस्य काष्ठेभ्यो स्तत्त्वक् तनुतरी मता ॥ प्रत्येकजीवास्तु त्वचि या वाप्यन्या स्तथाविधा ॥ ३ ॥ यस्यशालस्य काष्ठेभ्यो स्तत्त्वक्तनुतरी मता ॥ प्रत्येक जीवास्तु त्वचि या वाप्यन्या स्तथाविधा ॥ ४ ॥ चक्राकृभज्यमानस्य ग्रन्थिश्चूर्णीकृताभवेत् ॥ पृथिवी सदृश भेदेना नन्त जीव विजानीयात् ॥ गूढ शिराक पत्र सक्षीरं यच्च नि क्षीरम् ॥ यदपि प्रनष्टसन्धि अनन्तजीव विजानीयात् ॥ पुष्पजलजस्थलज वृन्तबद्धश्चनालबद्धश्च । सङ्ख्येय मसङ्ख्येय बोद्धव्यमनन्तजीवश्च ॥ ३ ॥ येकेचिन्नालबद्धाः पुष्पा सङ्ख्येयजीविकाश्चस्तु । भणितास्त्वनन्तजीवा येचाप्यन्येतथाविधाश्चस्तु ॥ ४ ॥ पद्मन्यु त्पलिकन्दी वन्तरकन्दस्तथैवझिल्ली च । एतेह्यनन्तजीवा एकोजीवोबिपमृणाले ॥ ५ ॥ पलाण्डूलसुनकन्दौ कन्दुककुस्तुम्बकौचबोद्धव्यौ । एतेप्रत्येक

विंटवद्दासगालिवद्धाय । सखिज्जमसखेज्जा बोधब्बाणतजीवाय ॥ ३ ॥ जेकेइनालियावद्धा पुप्फासखेज्जजी
विया । णिज्जयाअणतजीवा जेयावन्नेतहाविहा ॥ ४ ॥ पउमुप्पलिणीकंदे अतरकंदेतहेवज्झिल्ली य । एते
अणतजीवा एगोजीवोविसमुणाले ॥ ५ ॥ पलडूलहसुणकंदय कदलीयकुहुवए । एएपरित्तजीवा जेयावन्नेत
हाविहा ॥ ६ ॥ पउमुप्पलणलिणाण सुभगसोगंधियाणय । अरविंदकुकणाण सतवत्तसहस्सपत्ताण ॥ ७ ॥
विंटबाहिरपत्ता यकण्णियाचेवएगजीवस्स । अब्भितरगपत्ता पत्तेयकेसरमिजा ॥ ८ ॥ वेणुनलइक्खुवाडिय
समासइक्खूयइक्कडेरंडे । करकरसुंठिविहगु तणाणतहपव्वगाणच ॥ ९ ॥ अच्छिंपव्वंवलिमोडओयएगस्सहो
तिजीवस्स । पत्तेयपत्ताइ पुप्फाइअणेगजीवाइ ॥ १० ॥ पुस्सफलकालिंग तुंबंतउसेलुवालुंक । घोसालय
पडोलं तिंदूयचेवतिदूसं ॥ ११ ॥ वेंटमंसकडाहं एयाइहवंतिएगजीवस्स । पत्तापत्ताइ सकेसरमकेसरंमिजा
१२ ॥ सप्फाएसज्जाए उव्वेहलियायकुहणकुंदुक्के । एएअणतजीवा कुंदुक्केहोइभयणाउ ॥ १३ ॥ जोणिब्भूएबीए

जीवा येचाप्यन्येतथाप्रकारा स्युः ॥ ६ ॥ पद्मोत्पलनलिनानां सुभगसौगन्धिकानां च वाच्यम् । अरविन्दकोकनदानां शतपत्रसहस्रपत्राणाम् ॥ ७ ॥
वृन्तबाह्यपत्रकर्णिका चैकजीवानि । आभ्यन्तरपत्रं कमरचे मिञ्जाच ॥ ८ ॥ वेणुनलइक्षुवाटिकनलासइक्षुकइक्कटैरण्डा । करकरसुंठिविहङ्गु
तृणानांचपर्वगानिस्युः ॥ ९ ॥ अक्षिपर्ववलिमोटकमेकजीवानि । पत्राणिचेकजीवान्यनेकजीवानिपुष्पाणि ॥ १० ॥ पुष्पफलकालिङ्गं तुम्ब
त्रपुषमेलवालुंकं घोषातकपटोल तिन्दूकचैवतिन्दूसम् ॥ ११ ॥ वृन्तसमांसकटाह एतानिभवन्तिचैकजीवस्य । प्रत्येकपत्राणि सकेसराकेसरा
मिञ्जा ॥ १२ ॥ सप्फाएसज्जाए उव्वेहलियाकुहुणकुंदुक्क । एतेअनन्तजीवा कुन्दुक्केभवतिभजना च ॥ १३ ॥ बीजेयोनिभूते जीवाव्युत्क्रामतिस
वान्यो वा । योपिचमूलजीव सोपिचपत्रेप्रथमतयेति ॥ १४ ॥ सर्वोपिकिसलय खलु उद्गच्छन्ननन्तकोभणित । सएववर्धमान प्रत्येकोऽनन्तजीवा

॥ मूल ॥

॥ अ० ॥

जीवोवक्कमइसोवअ्रणोवा । जोविअ्रमूलेजीवो सोविअपत्तेपढमयाए ॥ १४ ॥ सव्वोविकिसलउखलु उग्गम
माणोअ्रणतउन्नणिउ । सोचेवविवड्ढतो होइपरित्तोअ्रणतोवा ॥ १५ ॥ समयंवक्कंताणं समयतेसिसरीरणि
व्वत्ती । समयअ्राणग्गहण समयउस्सासनीसासो ॥ १६ ॥ एक्कस्सउजगहण बहूणसाहारणाणतचेव । जवहु
याणगहण समासउतंपिएगस्स ॥ १७ ॥ साहारणमाहारो साहारणमाणपाणगहणंच । साहारणजीवाणं सा
हारणलक्खणएय ॥ १८ ॥ जहअ्रयगोलोधतो जाउतत्ततवणिज्जसकासो । सव्वोअ्रगणिपरिणउ णिउयजीवे
तहाजाण ॥ १९ ॥ एगस्सदोराहतिराहव सखेज्जाणवपासिउंसक्का । दीसतिसरीराइ णिउयजीवाणणंताण २०
लोगागासपएसे णिउयजीवठवेहिएक्केक्कं । एवमविज्जमाणा हवतिलोयाअ्रणताउ ॥ २१ ॥ लोगागासपदेसे
परित्तजीवठवितुएक्केक्कं । एवमविज्जमाणा हवतिलोगाअ्रसखेज्जा ॥ २२ ॥ पत्तेयापज्जत्ता पयरस्सअ्रसख
भागमित्ताउ । लोगाअ्रसखाअ्रपज्जत्तयाणसाहारणमणता ॥ २३ ॥ एएहिसरीरेहि पच्चक्खतेपरूवियाजीवा

वा ॥ १५ ॥ समकव्युत्क्रान्तानां समकतेषाशरीरनिर्वृत्ति । समकप्राणापान ग्रहणचोच्छ्वासनिश्वासौ ॥ १६ ॥ एकस्यचयद्ग्रहण तच्चबहूनासाधारणा
नाच । यच्चबहूनाग्रहण समासतस्तदपिचैकस्य ॥ १७ ॥ साधारणमाहार प्राणापानादिकभवेत् सर्वम् साधारणजीवाना साधारणलक्षणचैतत् ॥ १८ ॥
यथायोगोलोध्मातो जातस्तप्ततपनीयसङ्काश । सर्वाग्निपरिणत खलु जानीहिनिगोदजीवान्त्वम् ॥ १९ ॥ एकस्यद्वयोस्त्रयाणा सख्येयानानवोपल
भ्यानि । गात्राण्यपदृश्यन्ते अनन्तानानिगोदजीवानाम् ॥ २० ॥ लोकाकाशप्रदेशे निगोदजीवस्थापयेत्कैकम् । एवन्तुमीयमाना भवन्तिलोकाअनन्ता
स्तु ॥ २१ ॥ लोकाकाशप्रदेशे प्रत्येकजीवस्थापयेत्कैकम् । एवन्तुमीयमाना भवन्तिलोकाअसख्याता ॥ २२ ॥ पर्याप्तप्रत्येकजीवा प्रतरस्यासख्यभागमि
ता । असख्यलोकाअपर्याप्ता साधारणाअनन्ता ॥ २३ ॥ एनि खलुशरीरैः प्रत्यक्षतेप्ररूपिताजीवा । सूक्ष्माआधाग्राह्या अनुस्पर्शनतेयान्ति ॥ २४ ॥

सुजमाअणागिज्जा चक्खुप्फासनतेइति ॥ २१ ॥ जेयावन्ने तहप्पगारा ते समासत्रो दुविहा पन्नत्ता, तं० पज्जत्तगा य अपज्जत्तगाय, तत्थण जे ते अपज्जत्तगा तेण असपत्ता, तत्थण जेते पज्जत्तगा तेसिण वन्नादेसेण गधादेसेण रसादेसेण फासादेसेण सहस्सग्गसो विहाणाइ सखेज्जाइ जोणिप्पमुहसयसहस्साइं पज्जत्तगणिस्साए अपज्जत्तगा वक्कमति, जत्थ एगो तत्थ सिय सखिज्जा सिय असखिज्जा सियअणता एएसिण इमाओ गाहाओ अणुगतव्वाओ तजहा—कदायकदमूलाय रुक्खमूलाइयावरे। गुच्छायगुम्मवल्लीय वेलुयाणितणाणिय ॥ १ ॥ पउमुप्पलसिघाडे हढयसेवालकिण्हगपणए। अवएयकच्छभाणी कदुक्कीकूणवीसइमे ॥ २ ॥ तयछल्लिपवालेसुय पत्तपुप्फफलेसुय। मूलग्गमज्झवीएसु जोणीकस्सइकेत्तिया ॥ ३ ॥ सेत्त साहारणसरीरबादरवणस्सइकाइया। सेत्तबादरवणस्सइकाइया॥ सेत्त एगिंदिया॥ से किंत बेइंदिया? बेइंदिया अणेगविहा पन्नत्ता, तजहा—पुलाकिमिया कुच्छिकिमिया गडूयलगा गोलोमा णेउरा सोमगलगा वसीमुहा सू

येविचान्ये तथाप्रकारास्ते समासतोद्विविधा प्रज्ञप्तास्तद्यथा-पर्याप्तकाश्चापर्याप्तकाश्च, तत्र येऽपर्याप्तकास्ते ऽसम्प्राप्ता, तत्र ये पर्याप्तका स्तेषां वर्णादेशेन गन्धादेशेन रसादेशेन स्पर्शादेशेन सहस्राग्रशो विधानानि (भेदा) सख्येयानि योनिप्रमुखशतसहस्राणि पर्याप्तकनिश्रया अपर्याप्तका व्युत्क्रमन्ते, यत्रैकस्तत्र स्यात्सख्येया स्यादसख्येया स्यादनन्ता। एतेषामिमा गाथा अनुगन्तव्या स्तद्यथा-कन्दाश्चकन्दमूलानि वृक्षमूलानिचापरे। गुच्छागुल्माश्चवल्लयश्च वेणुकानितृणानिच ॥ १ ॥ पद्मोत्पलशृङ्गाटकानि हढसेवालकृष्णपनकाश्च। अवनकाश्चकच्छभाणि कन्दुक्यकोनविंशतिक ॥ २ ॥ त्वक्छल्लिप्रवालेषु पत्रपुष्पफलेषुच। मूलाग्रमध्यबीजेषु योनि कस्यापिकापिच ॥ ३ ॥ उक्ता साधारणशरीरबादरवनस्पतिकायिका। उक्ता बादरवनस्पतिकायिका। समाप्तानि एकेन्द्रियाणि। अथ के ते द्वीन्द्रिया द्वीन्द्रिया अनेकविधा प्रज्ञप्तास्तद्यथा पूति कृमिका कुक्षिकृमि

इमुहा गोजलोया जलोया जालाउया संखा संखणगा घुल्ला खुल्ला खंधा वराडा सोत्तिया मोत्तिया कलुया वासा एगओवत्ता दुहओवत्ता णंदियावत्ता संबुक्का माइवाहा सिप्पि संपुडा चंदणा समुद्दलिक्खा, जेयावन्ने तहप्पगारा सव्वे ते समुच्छिमा नपुंसगा ते समासओ दुविहा प०, तं०—पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय एएसिणं एवमादियाणं बेइंदियाणं पज्जत्त पज्जत्ताणं सत्तजाइकुलकोडी जोणिप्पमुहसयसहस्सा भवतीति मक्खायं ॥ सेत्तं बेइंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा ॥ से किं तं तेइंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा २ ? अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा—उवाइया रोहिणिया कुंथू पिपीलिया उद्दंसगा उद्देहिया उक्कलिया उप्पाया उप्पडा तणहारा कट्ठहारा पत्तहारा मालुया तणविंटिया पत्तविंटिया पुप्फविंटिया फलविंटिया बीयविंटिया तेवुरणमिंजिया तउसमिंजिया कप्पासट्ठिमिंजिया हिल्लिया झिल्लिया झिंगिरा किंगिरिडा बाउया लहुया सु

का काडुयगा गोलोमा नकुला श्रमद्रुलगा वशीमुखा सूचीमुखा गोजलौका जलौका जलचूना शंखा शंखनका घुल्ला खुल्ला खडा कडा सौक्तिका मौक्तिका कुलापवासा एकोपयुक्ता, द्विधोपयुक्ता नन्द्यावर्ता शंबुका मातृवाहा शुक्तिका चन्दना समुद्रलीक्षा येवाप्यन्य तथाप्रकारा सर्वे ते सम्मूर्च्छिमा नपुंसकास्ते समासतो द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-पर्याप्तका अपर्याप्तकाश्च । एतेष मेवमादीनां द्वीन्द्रियाणामेषां पर्याप्तापर्याप्तकानां सप्तजातिकुलकोटीनां योनिप्रमुखाणि शतसहस्राणि भवन्ति इत्याख्यातम् । तदेतं द्वीन्द्रियसमापन्नजीवप्रज्ञापनाः ॥ अथ कतिविधा त्रीन्द्रियसमापन्नजीवप्रज्ञापना । त्रीन्द्रियसमापन्नजीवप्रज्ञापना अनेकविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-उत्पातिका रोहिणिका कुन्थुका पिपीलिका उद्दंशा उद्देहा उत्कलिता उत्पाता उत्पडा तृणाहारा काष्ठाहारा मूलाहारा पत्राहारा तृणवेंटी पत्रवेंटी पुष्पवेंटी फलवेंटी बीजवेंटी तेवुरणमज्जिता त्रपुसमज्जिता कर्पासा स्थिमिञ्जी हिल्लिका झिल्लिका झिंगिरिया किंगरिया बाहुका लघुका सुभगा सौवस्तिका सुखवृंटा इन्द्रकेति

गा सोवत्थिया सुयवेंटा इटकाइया इंदगोवया तुरतुंवगा कोत्थलवाहगा जूया हालाहला पिसुया सत्त वाइया गोम्ही हत्थिसोंडा जेयावन्ने त० सव्वे ते समुच्छिमनपुंसगा ते समासओ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय। एएसिणं एवमाइयाणं तेइंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं अट्ठजाइकुलकोडिजोणिप्पमुहसयसहस्सा हवंतीति मक्खायं। सेत्तं तेइंदियसंसा०। से किंतं चउरिंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा २? अणेगविहा पण्णत्ता, तंजहा—अंधिय पोत्तिय मच्छिय, मसगा कीडे तहा पयंगे य। ढंकुण कुक्कुड कुक्कुह, नंदावत्ते य सिंगिरिडे। किण्हपत्ता नीलपत्ता लोहियपत्ता हालिद्दपत्ता सुक्किल्लपत्ता चित्तपक्खा विचित्तपक्खा ओहंजलिया जलचारिया गंभीरा णीणिया तंतवा अच्छिरोडा अच्छिवेहा सारंगा नेउरा दोला भमरा भरिली जरुला तोट्ठा विच्छुया पत्तविच्छुया छाणविच्छुया जलविच्छुया पियंगाला कणगा गोमयकीडा जेयावन्ने तहप्पगारा सव्वे ते समुच्छिमा नपुंसगा ते समासओ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—पज्जत्तगाय अप

का इन्द्रगोपा तुरतुम्बगा कुलत्थवाहगा यूका हालाहला पिशुका सत्त्ववाहका कर्णाशला हस्तिशौण्डा ये चाप्यन्ये तथाविधास्ते सर्वे समूर्छिमा नपुंसकलिङ्गा ते समासतो द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-पर्याप्तकाश्चापर्याप्तकाश्च । एतेषामेवमादिकानां त्रीन्द्रियाणां पर्याप्तापर्याप्तकानामष्टजातिकुलकोटियोनिप्रमुखशतसहस्राणि भवन्ति इत्याख्यातम् ॥ तदेते त्रीन्द्रियग्राह्या ॥ अथ कतिविधाश्चतुरिन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना २। चतुरिन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना अनेकविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-अन्धिकपुत्तिकमक्षिका, मशककीटास्तथापतङ्गाश्च ॥ मत्कुणकुक्कुटकुक्कुहनन्द्यावर्त्तशृङ्गिरिटाश्च ॥ १ ॥ कृष्णपक्षा नीलपक्षा लोहितपक्षा हारिद्रपक्षा शुक्लपक्षाश्चित्रपक्षा विचित्रपक्षा अवजलिका जलचारिणा गम्भीरा निपताका सर्वाक्षिरोडा अक्षिवेधा सारङ्गा नकुला दोला भ्रमरा भ्रमर्यो जरुला तोट्टा वृश्चिका पत्रवृश्चिका गोमयवृश्चिका जलवृश्चिका

ज्जत्तगाय। एएसिणं एवमाइयाणं चउरिंदियाण पज्जत्तापज्जत्ताणं नवजाइकुलकोडि जोणिप्पमुहसयसहस्साइ भवतीति मक्खाय। सेत्तं चउरिंदियससारसमावन्नजीवपन्नवणा। से किंत पंचिंदियसंसारसमावन्न जीवपन्नवणा? पंचिंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा चउविहा पन्नत्ता, तंजहा—नेरइयपंचिंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा तिरिक्खजोणियपंचिंदियससारसमावन्नजीवपन्नवणा मणुस्सपंचिंदियससारसमावन्न जीवपन्नवणा देवपंचिंदियससारसमावन्नजीवपन्नवणा। से किंतं नेरइया २? सत्तविहा पन्नत्ता, तंजहा रयणप्पभा पुढवीनेरइया सक्करप्पभापुढविनेरइया वालुयप्पभापुढविणेरइया धूमप्पभापुढविणेरइया तमप्पभापुढविणेरइया तमतमप्पभापुढविणेरइया। ते समासओ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—पज्जत्तगा अपज्जत्तगाय। सेत्त णेरइया। से किंत पंचिंदियतिरिक्खजोणिया २? तिविहा पन्नत्ता, तंजहा—जलयरपंचिंदि

भ्रियगला कणगा गोमयकीटा ये वाप्यन्ये तथाप्रकारास्ते समूर्छिमा नपुंसकास्ते समासतो द्विविधा प्रज्ञप्ता ॥ पर्याप्तका अपर्याप्तकाश्च ॥ एतेषामेवमादीनां चतुरिन्द्रियप्राणां पर्याप्तापर्याप्तानां नवलक्षकुलकोटिशतसहस्राणि भवन्ति इति आख्यातम् ॥ तदेते चतुरिन्द्रियसमापन्न जीवप्रज्ञापना ॥ अथ कतिविधा पञ्चेन्द्रियससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना ?। पञ्चेन्द्रियससारसमापन्नजीवप्रज्ञापनाश्चतुर्विधा प्रज्ञप्ता ॥ तद्यथा-नैरयिकपञ्चेन्द्रियससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना तिर्यक्योनिकपञ्चेन्द्रियससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना मनुष्यपञ्चेन्द्रियससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना देवपञ्चेन्द्रियससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना। ते कतिविधा नैरयिका ? नैरयिका सप्तविधा प्रज्ञप्ता। तद्यथा-रत्नप्रभा पृथिवी नैरयिका शर्करप्रभा पृथिवीनैरयिका वालुकप्रभापृथिवी नैरयिका धूमप्रभापृथिवीनैरयिका तम प्रभा पृथिवीनैरयिका तमस्तम प्रभा पृथिवी नैरयिका ते समासेन द्विविधा प्रज्ञप्ता, तद्यथा-पर्याप्ता अपर्याप्ताश्च। तदेवे नैरयिका। अथ कतिविधा पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः ?। पञ्चेन्द्रियतिर्यक्योनिका

यतिरिक्खजोणिया थलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया खहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया। से किंतं जलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया २ ? पंचविहा पन्नत्ता, तंजहा मच्छा कच्छभा गाहा मगरा सुंसुमारा। से किं तं मच्छा २ ? अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा सण्हमच्छा खवल्लमच्छा जुगमच्छा विज्झिडियमच्छा हलिहमच्छा मग्गरिमच्छा रोहियमच्छा हलीसागरा गागरा वडा वडगरा तिमा तिमिंगिला णक्का तंदुलमच्छा कणिक्कामच्छा सालिसच्छियामच्छा लंभणमच्छा पडागा पडागाइपडागा। जेयावन्ने तहप्पगारा। सेत्तं मच्छा। से किंतं कच्छभा २ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा अट्ठकच्छभा य मंसकच्छभा य। सेत्तं कच्छभा। से किंतं गाहा २ ? पंचविहा पन्नत्ता, तंजहा दिलीवेढगा मुद्दुया पुलगा सीमागारा। सेत्तं गाहा॥ से किंतं मगरा २ ? दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—सोंडमगरा मच्छमगराय। सेत्तं मगरा। से किंतं सुंसुमारा २

॥ मूल ॥

त्रिविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः स्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः खचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः। अथ कतिविधा जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः ?। जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः पञ्चविधाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा-मत्स्याः कच्छपाः ग्राहाः मकराः शिशुमाराः। अथ [illegible] मत्स्याः ?। मत्स्या अनेकविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-श्लक्ष्णमत्स्याः खवल्लमत्स्याः युगमत्स्याः विज्झिडमत्स्याः हारिद्रमत्स्याः मकरमत्स्याः रोहितमत्स्याः हलीसमत्स्याः सागरमत्स्याः गगरमत्स्याः वृत्तमत्स्याः वडगरमत्स्याः तिमिमत्स्याः तिमिङ्गिलमत्स्याः नक्रमत्स्याः तन्दुलमत्स्याः कणिक्कामत्स्याः शालिशस्त्रिकामत्स्याः लम्भनमत्स्याः पताकामत्स्याः पताकपताकमत्स्याः ये चाप्यन्ये तथाप्रकारास्ते मत्स्याः। अथ कतिविधाः कच्छपाः ?। कच्छपाः द्विविधाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा-अस्थिकच्छपाः मांसकच्छपाश्च। त एते कच्छपाः। अथ कतिविधा ग्राहाः ?। ग्राहाः पञ्चविधाः प्रज्ञप्ताः [illegible] मुद्गुकाः पुलकाः सीमाकाराः त एते ग्राहाः। अथ कतिविधा मकराः ?। मकराः द्विविधाः प्रज्ञप्ताः शु

॥ अ० ॥

एगागारा प०, सेत्त सुसुमारा । जेयावन्ने तहप्पगारा ते समासओ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—संमुच्छिमा य गब्भवक्कंतिया य तत्थण जे ते सम्मुच्छिमा ते सव्वे नपुसका, तत्थणं जे ते गब्भवक्कंतिया ते तिविहा प०, तजहा इत्थी पुरिसा नपुसगा । एतेसिण एवमाइयाण जलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं अद्धतेरसजाइकुलकोडिजोणीप्पमुहसयसहस्सा भवंतीति मक्खायं । सेत्तं जलयरपंचिंदिय० । से किंत थलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया २ ? दुविहा पण्णत्ता, तजहा चउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया परिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया य । से किंतं चउप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया २ ? चउव्विहा पण्णत्ता, तजहा एगखुरा दुखुरा गण्डीपया सणप्फया । से किंत एगखुरा २ ? अणेगविहा पण्णत्ता, त० अस्सा अस्सतरा घोडगा गद्दभा गोरक्खरा कन्दलगा सिरिकंदलगा आवत्ता । जेयावन्ने तहप्पगारा । सेत्त

पडामकरा मत्स्यमकराश्च । तदेते मकरा । अथ कतिविधा शिशुमारा ? । शिशुमारा एकाकारा प्रज्ञप्तास्तदेते शिशुमाराः । ये वाप्यन्ये त थाप्रकारास्ते समासतो द्विविधा प्रज्ञप्ता । समूर्च्छिमाश्च गर्भव्युत्क्रान्तिकाश्च । तत्र यएते समूर्च्छिमास्ते समासत सर्वे नपुसका । तत्र यएते गर्भव्युत्क्रान्तिकास्ते त्रिविधा प्रज्ञप्ता, । स्त्रिय पुरुषा नपुसक । एतादृशानामेवमादीना जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाना पर्याप्तापर्याप्तानामर्धत्रयोदशजातिकुलकोटियोनिप्रमुखशतसहस्राणि भवन्तीति आख्यातम् ॥ तदेते जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यक्योनिका । अथ कतिविधा स्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यक्योनिका ? । स्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यक्योनिका द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-चतुष्पदस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यक्योनिका । परिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यक्योनिका । अथ कतिविधाश्चतुष्पदस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यक्योनिकाः ? । चतुष्पदस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यक्योनिकाश्चतुर्विधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-एकखुरा द्विखुरा गण्डीपदा सनखपदाश्च । अथ कतिविधा एकखुरा ? । एकखुरा अनेकविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-अश्वा अश्वतरा

एगखुरा । से किंतं दुखुरा २ ? अणेगविहा पण्णत्ता, तंजहा–उट्ठा गोणा गवया रोज्झा समया महिसा सवरा वराहा अया एलगा रुरु सरभ चमर कुरंग गोकण्णमाई सेत्तं दुखुरा। से किंतं गण्डीपया २ ? अणेगविहा पण्णत्ता, तंजहा हत्थी हत्थीयणा मकुणहत्थी खग्गा गण्डा। जेयावण्णे तहप्पगारा। सेत्तं गण्डीपया । से किंतं सणप्फया २ ? अणेगविहा पण्णत्ता, तंजहा सीहा वग्घा दीविया अच्छा तरच्छा परस्सरा सियाला सुणगा कोलसुणगा (ग्रंथा ५००) कोकंतिया ससगा चित्तगा चिल्ललगा । जेयावण्णे तहप्पगारा । सेत्तं सणप्फया । तेसमासओ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा संमुच्छिमाय गब्भवक्कंतियाय । तत्थणं जे ते संमुच्छिमा ते सव्वे णपुंसगा, तत्थणं जे ते गब्भवक्कंतिया ते तिविहा पण्णत्ता , तंजहा इत्थी पुरिसा नपुंसगा । एएसिणं एवमादियाणं थलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं दसजाइकुलकोडिजोणिप्पमुह

॥ मूल ॥

घोटका गर्दभा गौरखरा कन्दलका श्रीकन्दलका आवर्ताश्च । ये वाप्यन्ये तथाप्रकारा । तएते एकखुरा । अथ कतिविधा द्विखुरा ? । द्विखुरा अनेकविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-उष्ट्रा गोणा गवया रोहा शशका महिषा शम्बरा वराहा अजा एलका रुरव शरभाश्चमरा कुरङ्गा गोकर्णादिका स्तएते उक्ता द्विखुरा । अथ कतिविधा गण्डीपदा ? । गण्डीपदा अप्यनेकविधा प्रज्ञप्ता ।तद्यथा-हस्ती गण्डक मुकनहस्ती खड्गा गण्डा येवाप्यन्ये तथाप्रकारा उक्ता गण्डीपदा । अथ कतिविधा सनखपदा ? । सनखपदा अनेकविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा-सिंहा व्याघ्रा द्वीपिनो ऋक्षा तरक्ष पर शरा श्याला विराला श्वान कोला कोकतय शशका चित्रका विडाला येवाप्यन्ये तथाप्रकारास्सर्वे सनखा । ते समासतो द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-सम्मूर्च्छिमाश्च गर्भव्युत्क्रान्तिकाश्च । तत्र ये सम्मूर्छिमास्ते सर्वे नपुंसका । तत्र यएते गर्भव्युत्क्रान्तिकास्ते त्रिविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-स्त्रिय पुरुषा नपुंसका । एतेषामेवमादीनां स्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यक्योनिकानां पर्याप्तापर्याप्तानां दशजातिकुलकोटियोनिप्रमु

॥ अ० ॥

सयसहस्सा-हवतीति मक्खायं । सेत्त चउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया । से किंतं परिसप्पथलयर पंचिंदियतिरिक्खजोणिया २ ? दुविहा पन्नत्ता, तंजहा उरपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया भुय परिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया य । से किंत उरपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया २ ? च उव्विहा पन्नत्ता, तंजहा अही अयगरा आसालिया महोरगा। से किंत अही २ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा दव्वीकरा य मउलिणो य । से किंत दव्वीकरा २ ? अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा आसीविसा दिट्ठीविसा उग्गविसा भोगविसा तयाविसा लालाविसा उस्सासविसा निस्सासविसा कण्हसप्पा सेठसप्पा कउदरा दब्भ पुप्फा कोलाहा मेलिमिंदा सेसिंदा जेयावन्ने तहप्पगारा । सेत्त दव्वीकरा। से किंत मउलिणो २ ? अणेग विहा पन्नत्ता, तंजहा दिव्वागा गोणसा कसाहीया वउला चित्तलिणो मंडलिणो अही अहिसलागा वाय

रशतसहस्राणि भवन्तीति आख्यातम् सोऽत्र चतुष्पदस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यक्योनिकाः । अथ कतिविधा परिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यक्योनिकाः ? । परिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यक्योनिका द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-उर परिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यक्योनिका भुजपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यक्योनिकाश्च । अथ कतिविधा उर परिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यक्योनिका ? । उर परिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यक्योनिकाश्चतुर्विधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-अहय अजगरा आसालिगा महोरगा । अथ कतिविधा अहय ? । अहयो द्विविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा-दर्वीकराश्च मुकुलिनश्च । अथ कतिविधा दर्वीकरा ? । दर्वीकरा अनेकविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-आशीविषा, दृष्टिविषा उग्रविषा भोगविषा त्वग्विषा लालाविषा उच्छ्वासविषा निश्वासविषा कृष्णसर्पा श्वेतसर्पा काकोदरा दर्भपुष्पा कोलाहा मेलिमिंदा शेषेन्द्रा ये चाप्यन्ये तथाप्रकारा स्त एते दर्वीकरा । अथ कतिविधा मुकुलिन ? । मुकुलिनो ऽनेकविधा प्रज्ञप्ताः । तद्यथा-दिव्या गोनसा कसाधीका वहुला चित्रालिन मण्ड

फागा। जेयावण्णे तहप्पगारा। सेत्त यउलिया। सेत्त अही। से किंत अयगरा २? एगागारा पण्णत्ता, सेत्त अयगरा। से किंत आसालिया? कहिण जंते। आसालिया समुच्छति? गोयमा। अंतोमणुस्सखे त्ते अड्ढाइजेसु दीवेसु णिव्वाघाएण पण्णरससु कम्मजूमीसु वाघातं पडुच्च पचसु महाविदेहेसु चक्कवट्टीखधावा रेसु वासुदेवखधावारेसु वलदेवखधावारेसु मंडलियखधावारेसु महामंडलियखधावारेसु गामनिवेसेसु नगर निवेसेसु निगमनिवेसेसु खेडनिवेसेसु कव्वडनिवेसेसु मडंबनिवेसेसु दोणमुहनिवेसेसु पट्टणनिवेसेसु आग रनिवेसेसु आसमनिवेसेसु संवाहनिवेसेसु रायहाणिनिवेसेसु एएसिण चेव विणासेसु। एत्थण आसालिया समुच्छति। जहन्नेण अंगुलस्स असंखिज्जइजागमित्तीए उगाहणाए, उक्कोसेण वारसजोयणाइ। तहाणुरू व च ण विक्खंजबाहल्लेण जूमिदालित्ताण समुठेति। असन्नी मिच्छदिठी अन्नाणी अंतोमुहुत्तद्धाउया

लिन अहय अहिस्तगाला वायुकुंडागा। येचाप्यन्ये तथाप्रकाराः। तएते मुकुलिनः। उक्ता अहय। अथ कतिविधा अजगराः ? । अजगरा एकाकाराः प्रज्ञप्ताः तएते अजगराः। अथ कत्यासालिगा ? । कथ जदन्त। आसालिगा समूर्छन्ति। गौतम। अन्तर्मध्ये मनुष्यक्षेत्रस्यार्द्धतृतीये पु द्वीपेषु निर्व्याघात पञ्चदशसु कर्मभूमिषु पुनश्च पञ्चसु महाविदेहेषु चक्रवर्त्तिस्कन्धावारेषु वासुदेवस्कन्धावारेषु बलदेवस्कन्धावारेषु माण्डलि कस्कन्धावारेषु महामाण्डलिकस्कन्धावारेषु ग्रामनिवेशेषु नगरनिवेशेषु निगमनिवेशेषु खेटनिवेशेषु कर्वटनिवेशेषु मडम्बनिवेशेषु द्रोणमुखनि वेशेषु पत्तननिवेशेषु आकरनिवेशेषु आश्रमनिवेशेषु सम्बाधनिवेशेषु राजधानीनिवेशेषु एतेषामेव विनाशेषु। एतेषु आसालिगाः समूर्छन्ति। ज घन्यतोऽङ्गुलस्यासंख्येयभागमात्रया अवगाहनया। उत्कर्षतो द्वादशयोजनानि तथानुरूप च विष्कम्भबाहुल्या (विस्तारस्थूलत्वाभ्यां) भूमि दलयित्वा समुत्तिष्ठते। असंज्ञिमिथ्यादृष्टि अज्ञानी अन्तर्मुहूर्त्तायुरेव कालं करोति। तएते आसालिगाः। अथ कतिविधा महोरगाः ? । महोरगा अनेक

चेव कालं करेइ । सेत्तं आसालिया । से किंत महोरगा २ ? अणेगविहा पन्नत्ता , तंजहा अत्थेगइया अगुलं पि अंगुलपुहत्तिया वि वियच्छिंवि वियच्छिपुहत्त पि रयणीं पि रयणीपुहत्तिया पि कुच्छिंपि कुच्छि पुहत्तिया वि धणुं पि धणुपुहत्तिया वि गाउयं पि गाउयपुहत्तिया वि जोयणं पि जोयणपुहत्तिया वि जोयणसयं पि जोयणसयपुहत्तिया वि जोयणसहस्सं पि तेणं थले जाता जले विचरंति थले विचरंति ते णत्थि इहं बाहिरएसु दीवसमुद्देसु हवंति जेयावन्ने तहप्पगारा सेत्तं महोरगा । ते समासओ दुविहा प०, त०—सम्मुच्छिमा य गब्भवक्कंतिया य । तत्थ णं जेते समुच्छिमा ते सव्वे णपुंसगा, तत्थ णं जेते गब्भवक्कंतिया ते णं तिविहा प०, त०—इत्थी पुरिसा नपुंसगा, एएसिणं एवमाइयाणं पज्जत्ता २ णं उरपरिसप्पाणं दसजाइकुलकोडीजोणिप्पमुहसयसहस्सा हवंती ति मक्खायं । सेत्तं उरपरिसप्पा । से किंतं भुयपरिसप्पा २ अणेग

विधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-सन्त्येके केचन अङ्गुलमपि अङ्गुलपृथक्त्वमपि वितस्तिमपि वितस्तिपृथक्त्वमपि अरत्निमपि अरत्निपृथक्त्वमपि कुक्षिमपि कुक्षिपृथक्त्वं धनुरपि धनुःपृथक्त्वं गव्यूतिमपि गव्यूतिपृथक्त्वं योजनमपि योजनपृथक्त्वं योजनशतमपि योजनशतपृथक्त्वं योजनसहस्रमपि तेन स्थलेजाता जले विचरन्ति तनेह बाह्येषु द्वीपसमुद्रेषु भवन्ति ये चाप्यन्ये तथाप्रकारा । त एते महोरगा । ते समासतो द्विविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा-सम्मूर्च्छिमाश्च गर्भव्युत्क्रान्तिकाश्च । तत्र ये सम्मूर्च्छिमास्ते सर्वे नपुंसका । तत्र ये गर्भव्युत्क्रान्तिकास्ते त्रिविधा तद्यथा स्त्री पुरुषा नपुंसकलिङ्गा । एतेषामेवमादीनां पर्याप्तापर्याप्तानामुरःपरिसर्पाणां दशजातिकुलकोटियोनिप्रमुखशतसहस्राणि भवन्तीति मयाख्यातं । उक्ता उरःपरिसर्पा । अथ कतिविधा भुजपरिसर्पा ? भुजपरिसर्पा अनेकविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-नकुला सेहा- सरटा सल्ला सरठा सारा खरा घरोइला विश्वम्भरा मूषा मङ्गूसा पइला इला क्षीरविरालिका जाहा चतुष्पादिका ये चाप्यन्ये तथाप्रकारा । ते समासतो द्विविधा प्रज्ञप्ता । सं

विहा पण्णत्ता, तजहा—णउला सेहा सरडा सल्ला सरठा सारा खारा घरोइला विस्संभरा मूसा मंगुसा पइ लाइया खीरविरालिया जाहा चउप्पाइया जे यावन्ने तहप्पगारा। ते समासत्त दुविहा प०, त०—समुच्छिमा य गब्भवक्कतियाय, तत्थण जेते समुच्छिमा ते सव्वे नपुसगा, तत्थण जेते गब्भवक्कतिय तेण तिविहा पण्णत्ता, तजहा—इत्थी पुरिसा नपुसगा, एएसिण एवमाइयाण पज्जत्ता २ ण भुयपरिसप्पाण नवजाइकुल कोडिजोणिप्पमुहसयसहस्साइ हवतीति मक्खाय। सेत्त भुयपरिसप्पथलयरपचेंदियतिरिक्खजोणिया। सेत्त परिसप्पथलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिया। से कित खहयरपचिंदियतिरिक्खजोणिया २ चउविहा पण्णत्ता, तजहा—चम्मपक्खी लोमपक्खी समुग्गपक्खी वियतपक्खी। से कित चम्मपक्खी २ अणेगविहा प०, त० वग्गुली जलोया अडिल्ला भारुडपक्खी जीवजीवा समुद्दवायसा कण्णत्तिया पक्खिविराली जेयावन्ने तहप्पगारा ॥ सेत्त चम्मपक्खी ॥ से कित लोमपक्खी २ अणेगविहा प०, त० ढका कका कुरला वायसा चक्का

मूर्छिमाश्च गर्भव्युत्क्रान्तिकाश्च। तत्र ये सम्मूर्छिमास्ते सर्वे नपुसका। तत्र ये गर्भव्युत्क्रान्तिकास्ते त्रिविधाः प्रज्ञप्ता। तद्यथा-स्त्रिय पुरुषा नपुसका। एतेषामेवमादीना पर्याप्तापर्याप्ताना भुजपरिसर्पाणा नवजातिकुलकोटियोनिप्रमुखशतसहस्राणि भवन्तीति आख्यात। उक्ता भुजपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यक् योनिका। उक्ता परिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यक्योनिकाः। अथ कतिविधा खचरपञ्चेन्द्रियतिर्यक्योनिका. ?। खचरपञ्चेन्द्रियतिर्यक्योनिका चतुर्विधा प्रज्ञप्ता। तद्यथा-चर्मपक्षी लोमपक्षी समुद्गकपक्षी विततपक्षी। अथ कतिविधाश्चर्मपक्षिण, चर्मपक्षिणो नेकविधा प्रज्ञप्ता। तद्यथा-वकुला जलौका अडिल्ला भारण्डपक्षी जीवजीवा समुद्रवायसा. कर्णत्तिया पक्षिविराली ये चाप्यन्ये तथाप्रकारा। तएते चर्मपक्षिण ॥ अथ कतिविधा लोमपक्षिण ?। लोमपक्षिणोनेकविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा-ढङ्का कङ्का कुरला वायसा चक्राङ्गा हसा कल

गा हंसा कलहंसा पायहंसा रायहंसा अडा सेडीवगा वलागा पारिप्पवा कुंचा सारसा मेसरा मसूरा मऊ रा सतवच्छा गहरा पोंडरीया कागा कामियुगा वजुलगा तित्तिरा वट्टमा लावगा कवोया कविजला पारेवया चिडगा चासा कुकुडा सुगा वरहिणा मदणसला कोकिला सेरहा वरेल्लगमादी । सेत्तं लोमपक्खी। से किंत समुग्गपक्खी २ एगागारा प०, तेण नत्थि इहं वाहिरएसु दीवसमुद्देसु भवंति। सेत्तं समुग्गपक्खी। से किंत विततपक्खी २ एगागारा प०, तेण नत्थि इह वाहिरएसु दीवसमुद्देसु हवंति। सेत्तं विततपक्खी। तेस मासतो दुविहा प०, त० संमुच्छिमा य गब्भवक्कंतिया य। तत्थणं जेते समुच्छिमा तेसव्वे नपुंसगा तत्थणं जेते गब्भवक्कंतिया तेण तिविहा प०, त० इत्थी पुरिसा नपुंसगा। एएसिण एवमाइयाणं खहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाण पज्जत्तापज्जत्ताणं वारसजाईकुलकोडिजोणिप्पमुहसयसहस्सा हवतीतिमक्खायं, सत्तठ ॥ सू

हंसाः राजहंसाः अडा सेडीवगा वकुला पारिप्लवा कुञ्चा सारसा मेसरा॰ मसूरा मयूरा शतवत्सा गहरा पौण्डरीका कागा कामियुगा वञ्जुलका तित्तिरा वर्तका लावकाः कपोता कपिञ्जला॰ पारेवका चटका चाशा कुक्कुटा शुका वर्हिण मदनशला कोकिला॰ सेयहा वरेल्लगा एवमादय सएते लोमपक्षिण । अथ कतिविधा समुद्गपक्षिण ?। समुद्गपक्षिण एकाकारा प्रज्ञप्ता । तेनु वाह्येषु द्वीपसमुद्रेषु भवन्ति । त एते समुद्गपक्षिण । अथ कतिविधा वियतपक्षिण ? । वियतपक्षिण एकाकारा प्रज्ञप्ता । तेनु वाह्येषु द्वीपसमुद्रेषु भवन्ति । तएते विततपक्षिण । ते समासतो द्विविधा प्रज्ञप्ता समूर्छिमाश्च गर्भव्युत्क्रान्तिकाश्च । तत्र यएते समूर्छिमास्ते सर्वे नपुंसका । तत्र यएते गर्भव्युत्क्रान्तिकास्ते त्रिविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा-स्त्रिय पुरुषा नपुंसकाश्च । एतेषामेवमादीनां खचरपञ्चेन्द्रियतिर्यक्योनिकानापर्याप्तापर्याप्तानां द्वादशजातिकुल कोटियोनिप्रमुखशतसहस्राणि भवन्तीति आख्यातम् ॥ सप्तजाति कुलकोटयो भवन्ति नवार्धत्रयोदशानि चैव ॥ दशदश च भवन्ति नवकास्तथा द्वा ॥

जाइकुलकोडिजातिनवञ्जहतेरसाइच। दसदसयहोतिणवगा तहवारसचेवबोधव्वा ॥१॥ सेत्त खहयरपंचिदियतिरिक्खजोणिया॥ सेत्त पंचिदियतिरिक्खजोणिया॥ सेत्त तिरिक्खजोणिया॥ से किंत मणुस्सा २ दुविहा प०, त० समूच्छिममणुस्सा य गब्भवक्कंतियमणुस्सा य। से किंत समुच्छिममणुस्सा, कहिंण न्नते। समूच्छिममणुस्सा समुच्छंति? गोयमा। अंतो मणुस्सखेत्ते पणयालीसाए जोयणसयसहस्सेसु अड्ढ इज्जेसु दीवसमुद्देसु पणरससु कम्मनूमीसु तीसाए अकम्मनूमीसु छप्पन्नाए अंतरदीवएसु गब्भवक्कंतियमणुस्साण चेव उच्चारसु वा पासवणेसु वा खलेसु वा सिंघाणएसु वा वंतेसुवा पित्तेसु वा पूएसुवा सुक्केसुवा सुक्कपोग्गलपरिसाडेसु वा विगयकलेवरेसु वा इत्थीपुरिससंजोएसु वा नगरनिद्धमणेसु वा सव्वेसु चेव असुइएसु ठाणेसु एत्थणं समुच्छिममणुस्सा समुच्छंति, अंगुलस्स असंखिज्जन्नागमित्तीए उगाहणाए असन्नी मिच्छदिठी अन्नाणी सव्वाहिं पज्जत्तीहिं अपज्जत्तगा अंतोमुहुत्ताउया चेव कालं करंति। से किंत गब्भवक्कंतियमणुस्सा २

दश चैव बोद्धव्या. ॥ १ ॥ तएते खचरपचेन्द्रियतिर्यक्योनिका। तएते पचेन्द्रियतिर्यक्योनिका ॥ तएते तिर्यक्योनिका ॥ अथ कतिविधा मनुष्या ?। मनुष्या अप्यनेकविधा प्रज्ञप्ता। तद्यथा-समूर्छिममनुष्या गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्या। अथ कतिविधा समूर्छिममनुष्या। कस्मिन्नु नदन्त! समूर्छिममनुष्या समूर्छन्ति। गौतमान्तमनुष्यक्षेत्रे पञ्चचत्वारिंशत्तमे योजनशतसहस्रेषु सार्धद्वीपेषु द्वीपसमुद्रेषु पञ्चदशसु कर्मनूमिषु त्रिंशदाकर्मनूमिषु षट्पञ्चाशदन्तरद्वीपेषु गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्याणा चैव उच्चारेषु वा समीपेषु वा श्लेष्मसु वा शिघाणकेषु (नासामलेषु) वा वान्तेषु पित्तेषु वा पूयेषु वा शुक्रेषु वा शुक्रपुद्गलपरिसाटेषु वा विगतकलेवरेषु वा स्त्रीपुरुषसंयोगेषु वा नगरनिर्द्धमनेषु वा सर्वेषु चैवाशुचिस्थानेषु एतषु समूर्छिममनुष्या समूर्छन्ति। अङ्गुलस्य असंख्येयनागमात्रया अवगाहनया असन्मिथ्यादृष्टिरज्ञानी सर्वाहि पर्याप्तमपर्याप्तका अन्त

गा हंसा कलहंसा पायहंसा रायहंसा अडा सेडीवगा वलागा पारिप्पवा कुंचा सारसा मेसरा मसूरा मऊरा सतवच्छा गहरा पोंडरीया कागा कामियुगा वंजुलगा तित्तिरा वट्टगा लावगा कवोया कविंजला पारेवया चिडगा चासा कुकुडा सुगा वरहिणा मदणसला कोकिला सेएहा वरेल्लगमादी। सेत्त लोमपक्खी। से किंत समुग्गपक्खी २ एगागारा प०, तेणं नत्थि इह बाहिरएसु दीवसमुद्देसु भवंति। सेत्त समुग्गपक्खी। से किंत विततपक्खी २ एगागारा प०, तेणं नत्थि इह बाहिरएसु दीवसमुद्देसु हवंति। सेत्त विततपक्खी। तेसमासउ दुविहा प०, त० समुच्छिमा य गब्भवक्कंतिया य। तत्थणं जेते समुच्छिमा तेसव्वे नपुंसगा तत्थणं जेते गब्भवक्कंतिया तेणं तिविहा प०, त० इत्थी पुरिसा नपुंसगा। एएसिणं एवमाइयाणं खहयरपचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं वारसजाईकुलकोडिजोणिप्पमुहसयसहस्सा हवंतीतिमक्खायं, सत्तठ

हंसा राजहंसा अडा सेडीवगा वकुला पारिप्लवा कुञ्चा सारसा मेसरा मसूरा मयूरा शतवत्सा गहरा पौण्डरीका. कागा कामियुगा वञ्जुलका तित्तिरा वर्तका लावकाः कपोता कपिञ्जला पारेवका. चटका चाशा कुक्कुटा शुका बर्हिणा मदनशला कोकिलाः सेयहा वरेल्लगा एवमादय एते लोमपक्षिणः। अथ कतिविधा समुद्गपक्षिणः?। समुद्गपक्षिण एकाकारा. प्रज्ञप्ता। तेनु बाह्येषु द्वीपसमुद्रेषु भवन्ति। त एते समुद्गपक्षिणः। अथ कतिविधा विततपक्षिणः?। विततपक्षिण एकाकारा. प्रज्ञप्ता। तेनु बाह्येषु द्वीपसमुद्रेषु भवन्ति। त एते विततपक्षिणः। ते समासतो द्विविधा प्रज्ञप्ता समूर्छिमाश्च गर्भव्युत्क्रान्तिकाश्च। तत्र यएते समूर्छिमास्ते सर्वे नपुंसकाः। तत्र यएते गर्भव्युत्क्रान्तिकास्ते त्रिविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा-स्त्रिय पुरुषा नपुंसकाश्च। एतेषामेवमादीनां खचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानांपर्याप्तापर्याप्तानां द्वादशजातिकुल कोटियोनिप्रमुखशतसहस्राणि भवन्तीति आख्यातम्॥ सप्तजाति कुलकोटयो भवन्ति नवार्धत्रयोदशानि चैव॥ दशदश च भवन्ति नवकास्तथा द्वा

॥

जाइकुलकोडिजातिनवछहतेरसाइच। दसदसयहोंतिणवगा तहवारसचेववोधवा ॥१॥ सेत्त खहयरपंचिंदिय तिरिक्खजोणिया॥ सेत्त पंचिंदियतिरिक्खजोणिया॥ सेत्त तिरिक्खजोणिया॥ से किंत मणुस्सा २ दुविहा प०, तं० समूच्छिममणुस्सा य गब्भवक्कंतियमणुस्सा य। से किंत समुच्छिममणुस्सा, कहिण भंते! समूच्छिम मणुस्सा समुच्छंति? गोयमा! अंतो मणुस्सखेत्ते पणयालीसाए जोयणसयसहस्सेसु अड्ढ इज्जेसु दीवसमुद्देसु पणरससु कम्मभूमीसु तीसाए अकम्मभूमीसु छप्पन्नाए अंतरदीवएसु गब्भवक्कंतियमणुस्साण चेव उच्चारेसु वा पासवणेसु वा खलेसु वा सिंघाणएसु वा वंतेसुवा पित्तेसु वा पूएसुवा सुक्केसुवा सुक्कपोग्गलपरिसाडेसु वा विगयकलेवरेसु वा इत्थीपूरिससंजोएसु वा नगरनिद्धमणेसु वा सव्वेसु चेव असुइएसु ठाणेसु एत्थण समुच्छिममणुस्सा समुच्छंति, अंगुलस्स असंखिज्जभागमित्तीए ओगाहणाए असन्नी मिच्छदिठी अन्नाणी सव्वाहि पज्जत्तीहि अपज्जत्तगा अंतोमुहुत्ताउया चेव कालं करंति। से किंत गब्भवक्कंतियमणुस्सा २

दश चैव बोद्धव्या ॥ १ ॥ तदेते खचरपंचेन्द्रियतिर्यक्योनिका। तदेते पंचेन्द्रियतिर्यक्योनिका ॥ तदेते तिर्यक्योनिका ॥ अथ कतिविधा मनुष्या?। मनुष्या अप्यनेकविधा प्रज्ञप्ता। तद्यथा-समूर्छिममनुष्या गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्या। अथ कतिविधा समूर्छिममनुष्या। कस्मिन्नु भदन्त। समूर्छिममनुष्या समूर्छन्ति। गौतमान्तमनुष्यक्षेत्रे पञ्चचत्वारिंशतमे योजनशतसहस्रेषु सार्धद्वीपेषु द्वीपसमुद्रेषु पञ्चदशसु कर्मभूमिषु त्रिंशत्कर्मभूमिषु षट्पञ्चादशान्तरद्वीपेषु गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्याणा चैव उच्चारेषु वा समीपेषु वा श्लेष्मसु वा शिंघाण केषु (नासामलेषु) वा वान्तेषु पित्तेषु वा पूयेषु वा शुक्रेषु वा शुक्रपुद्गलपरिसाटेषु वा विगतकलेवरेषु वा स्त्रीपुरुषसंयोगेषु वा नगरनिर्द्धमनेषु वा सर्वेषु चैवाशुचिषु स्थानेषु एतषु समूर्छिममनुष्या समूर्छन्ति। अङ्गुलस्य असंख्येयभागमात्रया अवगाहनया असंज्ञिमिथ्यादृष्टिरज्ञानी सर्वाहि पर्याप्तमपर्याप्तका अन्त

गा हंसा कलहंसा पायहंसा रायहंसा अडा सेडीवगा वलागा पारिप्पवा कुंचा सारसा मेसरा मसूरा मऊरा सतवच्छा गहरा पोंडरीया कागा कामियुगा वंजुलगा तित्तिरा वट्टमा लावगा कवोया कविजला पारेवया चिडगा चासा कुकुडा सुगा वरहिणा मदणसला कोकिला सेरहा वरेल्लगमादी । सेत्तं लोमपक्खी। से किंत समुग्गपक्खी २ एगागारा प०, तेणं नत्थि इह बाहिरएसु दीवसमुद्देसु भवंति। सेत्तं समुग्गपक्खी। से किंत विततपक्खी २ एगागारा प०, तेणं नत्थि इह बाहिरएसु दीवसमुद्देसु हवंति। सेत्तं विततपक्खी। तेसमासओ दुविहा प०, त० समुच्छिमा य गब्भवक्कंतिया य। तत्थणं जेते समुच्छिमा तेसव्वे नपुंसगा तत्थणं जेते गब्भवक्कंतिया तेणं तिविहा प०, त० इत्थी पुरिसा नपुंसगा। एएसिणं एवमाइयाणं खहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं वारसजाईकुलकोडिजोणिप्पमुहसयसहस्सा हवंतीतिमक्खायं, सत्तट्ठ

हंसा राजहंसा अडा सेडीवगा वकुला पारिप्लवा कुञ्चा सारसा मेसरा मसूरा मयूरा शतवत्सा गहरा पौण्डरीका॰ कागा कामियुगा वञ्जुलका तित्तिरा वर्तका लावकाः कपोता कपिञ्जला॰ पारेवका चटका चाशा कुक्कुटा शुकाः बर्हिणा मदनशाला कोकिला॰ सेरहा वरेल्लगा एवमादय तएते लोमपक्षिण । अथ कतिविधा समुद्गपक्षिण ?। समुद्गपक्षिण एकाकारा प्रज्ञप्ता । तेनु बाह्येषु द्वीपसमुद्रेषु भवन्ति । त एते समुद्गपक्षिण । अथ कतिविधा विततपक्षिण ?। विततपक्षिण एकाकारा प्रज्ञप्ता । तेनु बाह्येषु द्वीपसमुद्रेषु भवन्ति । तएते विततपक्षिण । ते समासतो द्विविधा प्रज्ञप्ता सम्मूर्छिमाश्च गर्भव्युत्क्रान्तिकाश्च । तत्र यएते सम्मूर्छिमास्ते सर्वे नपुंसका । तत्र यएते गर्भव्युत्क्रान्तिकास्ते त्रिविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा-स्त्रिय पुरुषा नपुंसकाश्च । एतेषामेवमादीनां खचरपञ्चेन्द्रियतिर्यक्योनिकानांपर्याप्तापर्याप्तानां द्वादशजातिकुल-कोटियोनिप्रमुखशतसहस्राणि भवन्तीति आख्यातम् ॥ सप्तजाति कुलकोटयो भवन्ति नवार्धत्रयोदशानि चैव ॥ दशदश च भवन्ति नवकास्तथा द्वा

जाइकुलकोडिजातिनवञ्चहतेरसाइच। दसढसयहोंतिणवगा तहवारसचेवबोधव्वा ॥१॥ सेत्त खहयरपचिंदिय तिरिक्खजोणिया॥ सेत्त पचिंदियतिरिक्खजोणिया॥ सेत्त तिरिक्खजोणिया॥ से किंत मणुस्सा २ दुविहा प०, त० समूच्छिममणुस्सा य गब्भवक्कातियमणुस्सा य। से किंत समुच्छिममणुस्सा, कहिण भंते! समूच्छिम मणुस्सा समुच्छति? गोयमा! ञ्चतो मणुस्सखेत्ते पणयालीसाए जोयणसयसहस्सेसु ञ्चहु इज्जेसु दीवसमुद्देसु पन्नरससु कम्मनूमीसु तीसाए ञ्चकम्मनूमीसु छप्पन्नाए ञ्चतरदीवएसु गब्भवक्कातियमणुस्साण चेव उच्चारसु वा पासवणेसु वा खलेसु वा सिघाणएसु वा वत्तेसुवा पित्तेसु वा पूएसुवा सुक्केसुवा सुक्कपोग्गलपरिसाडेसु वा विगयकलेवरेसु वा इत्थीपूरिससजोएसु वा नगरनिद्धमणेसु वा सव्वेसु चेव ञ्चसुइएसु ठाणेसु एत्थण समुच्छिममणुस्सा समुच्छति, ञ्चंगुलस्स ञ्चसखिज्जनागमित्तीए उगाहणाए ञ्चसन्नी मिच्छदिठी ञ्चन्नाणी सव्वाहि पज्जतीहि ञ्चपज्जत्तगा ञ्चतोमुहुत्ताउया चेव काल करति। से किंत गब्भवक्कातियमणुस्सा २

दश चैव बोद्धव्या ॥ १ ॥ तएते खचरपचेन्द्रियतिर्यक्योनिका। तएते पचेन्द्रियतिर्यक्योनिका ॥ तएते तिर्यक्योनिका ॥ अथ कतिविधा मनुष्या?। मनुष्या अप्यनेकविधा प्रज्ञप्ता। तद्यथा-समूर्छिममनुष्या गर्नव्युत्क्रान्तिकमनुष्या। अथ कतिविधा समूर्छिममनुष्या। कस्मिन्नु भदन्त! समूर्छिममनुष्या समूर्छन्ति। गौतमान्तमनुष्यक्षेत्रे पञ्चचत्वारिंशत्तमे योजनशतसहस्रेषु सार्धद्वीपेषु द्वीपसमुद्रेषु पञ्चदशसु कर्मभूमिषु त्रिंशत्कर्मनूमिषु षट्पञ्चादशान्तरद्वीपेषु गर्नव्युत्क्रान्तिकमनुष्याणा चैव उच्चारेषु वा समीपेषु वा श्लेष्मसु वा शिघाण केषु (नासामलेषु) वा वान्तेषु पित्तेषु वा पूयेषु वा शुक्रेषु वा शुक्रपुद्गलपरिसाटेषु वा विगतकलेवरेषु वा स्त्रीपुरुषसयोगेषु वा नगरनिर्द्धमनेषु वा सर्वेषु चैवाशुचिषु स्थानेषु एतषु समूर्छिममनुष्या समूर्छन्ति। अङ्गुलस्य असख्येयनागमात्रया अवगाहनया असन्मिथ्यादृष्टिरज्ञानी सर्वाहि पर्याप्तमपर्याप्तका अन्त

तिविहा पसत्ता, तंजहा–कम्मभूमिगा अकम्मभूमिगा अंतरदीवगा। से किंतं अंतरदीवया? अंतरदीवया अठावीसतिविहा पसत्ता, तजहा एगोरुया आहासिया वेसाणिया णगोली १ हयकन्ना गयकन्ना गोकन्ना सक्कुलिकन्ना २ आयंसमुहा मेंढमुहा अयमुहा गोमुहा ३ असमुहा हत्थिमुहा सीहमुहा वग्घमुहा ४ आसकन्ना सीहकन्ना अकन्ना कसपाउरणा ५ उक्कामुहा मेहमुहा विज्जुमुहा विज्जादंता ६ घणदंता लठदंता गूढदंता सुद्धदंता ७। सेत्त अंतरदीवगा। से किंत अकम्मभूमिगा? २ तीसतिविहा पसत्ता, तं० पचहिं हेमवएहिं पचहिं हेरसवएहिं पचहिं हरिवासेहिं पचहिं रम्मगवासेहिं पचहिं देवकुरुएहिं पचहिं उत्तरकुरुएहिं सेत्त अकम्मभूमिगा। से किंत कम्मभूमगा? २ पसरसविहा पसत्ता, तंजहा पंचहिं भरहेहिं पचहिं एरवएहिं पचहिं महाविदेहेहिं। ते समासउ दुविहा पसत्ता, तजहा आयरिया य मिलक्खू य। से

मुहूर्तकायैव काल कुर्वन्ति। पथ कतिविधा गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्याः?। गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्या त्रिविधा प्रज्ञप्ता.। तद्यथा–कर्मभूमिगा अकर्मभूमिगा अन्तरद्वीपगाश्च। अथ कतिविधा अन्तरद्वीपका?। अन्तरद्वीपका अष्टाविंशतिविधा प्रज्ञप्ता.। तद्यथा-एकोरुका आभासिका वेसाणिका तुन्दालिका हयकर्णा गजकर्णा गोकर्णा मकुलकर्णा अयमुखा गोमुखा अश्वमुखा हस्तिमुखा सिंहमुखा व्याघ्रमुखा अश्वकर्णा सिंहकर्णा अकर्णा कर्णप्रावरणा उल्कामुखा मेघमुखा विद्युन्मुखा विद्युद्दन्ता घनदन्ता लोष्टदन्ता गूढदन्ता शुद्धदन्ता। तएते अन्तरद्वीपगाः। अथ कतिविधा अकर्मभूमिगा?। अकर्मभूमिगास्त्रिंशद्विधा प्रज्ञप्ता। तद्यथा–पञ्चहिमवति पञ्चहिरण्यवये पञ्चहरिवासे पञ्चरम्यकवासे पञ्चदेवकुरुषु पञ्चउत्तरकुरुषु तएते अकर्मभूमिगा। अथ कतिविधा कर्मभूमिगा? कर्मभूमिगा पञ्चदशविधाः प्रज्ञप्ता तद्यथा-पञ्चभिर्भरतैः पञ्चैरावतैः पञ्चमहाविदेहैः ते समासतो द्विविधा प्रज्ञप्ता। तद्यथा-आर्यमनुष्या म्लेच्छमनुष्याः। अथ कतिविधा म्लेच्छमनुष्या म्लेच्छमनुष्या अनेकविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा-श

किंत मिलक्खू? २ अणेगविहा पण्णत्ता, तंजहा सगा जवण चिलाये सवर बब्बर काय मुरुण्डोड्ड भडग णि ण्णग पक्कणिय कुलक्ख गोण्हा सींहला पारस गोधन्ध दमिल चिल्लल पुलिंद हारोस दोववोक्काण गंध हारग वहलिय अज्झल रोम पास वउसा मलयाय वधुयाय सूयलि कुंकुणगमेय पण्हव मालव मग्गर आभासिय कण वीरण ण्हासीस खसखासिय नेहुर मढ डोंबिलग लउस खउस कक्केया अरवागा हूण रोमग भमरु विलाय वासीय एवमादी ॥ सेत्तमिलक्खू से किंत आयरिया? आयरिया दुविहा पण्णत्ता, तंजहा इड्ढिपत्तारिया य अणड्ढिपत्तारिया य। से किंत इड्ढिपत्तारिया? २ छविहा पण्णत्ता, तंजहा— अरहंता चक्कवट्टी बलदेवा वासुदेवा चारणा विज्जाहरा ॥ सेत्त इड्ढिपत्तारिया ॥ से किंत अणिड्ढिपत्तारि या? २ नवविहा पण्णत्ता, तंजहा खेत्तारिया जातिआरिया कुलारिया कम्मारिया सिप्पारिया भासारिया णाणारिया दंसणारिया चरित्तारिया। से किंत खेत्तारिया? २ अद्धछव्वीसतिविहा पण्णत्ता, तंजहा राय

का यवना चिलाया शबरा बर्बरा काया मरुण्डा भडगा तीर्णगा पक्कणा नीपा कुलना गोण्डा सींहला पारसा गोधअन्धा द्रमिला चि ल्लगा पुलिन्दा हारोसा द्रोंवधकाणा गन्धहारका वहलिया आर्यला रोमा पासा वउसा मलवाया वन्धुवाया लउसा खउसा केकया अ रवागा हूणा रोमगा भमरा विलाया वासीया एवमादय। तएते म्लेच्छा। अथ कतिविधा आर्यका आर्यका द्विविधा प्रज्ञप्ता। ऋद्धिमन्त अनृद्धिमन्तश्च। अथ कतिविधा ऋद्धिमन्त ऋद्धिमन्त षट्विधा प्रज्ञप्ता। तद्यथा-आर्हता चक्रावर्त्ती बलदेवा वासुदेवा चारणा विद्याधरा तएते ऋद्धिमन्त। अथ कतिविधा अनृद्धिमन्त ?। अनृद्धिमन्तो नवविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा-क्षेत्रार्या जात्यार्या कुलार्या कर्मार्या शिल्पार्या भा षार्या ज्ञानार्या दर्शनार्या चरित्रार्या। अथ कतिविधा क्षेत्रार्या क्षेत्रार्या सार्द्धपञ्चविंशतिविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा-राजगृहनगरचम्पाअङ्गामहता

गिहमगहचंपा अ्रगामहतामलित्तिवगा य । कंचणपुरकलिंगा वाणारसि चेव कासीय ॥ १ ॥ साएयकोसलागय पुरचकुरुसोरियकुसट्ठा य । कंपिल्ल पचाला अ्रहिछत्ताजगलाचेव ॥ २ ॥ दारवतीयसुरठा मिहिलविदेहायवच्छकोसवी । नदिपुरसंडिल्ला भद्दिलपुरमेवमलया य ॥ ३ ॥ वइराडवच्छवरणा अ्रच्छातहमत्तियावइदसणा । सोत्तियमइयाचेदी वीइभयसिधुसोवीरा ॥ ४ ॥ महुरायसूरसेणा पावाभंगीयमासपुरिवट्टा । सावत्थीयकुलाणा कोडीवरिसंचलाढाय ॥ ५ ॥ सेयवियावियनगरी केयइअ्रद्धचआरियभणिय । एत्थुप्पत्तिजिणाण चक्कीणरामकण्हाणं ॥ ६ ॥ सेत्तखेत्तारिया ॥ से कित जाइआयरिया ? २ छव्विहा पण्णत्ता, तजहा—अ्रवठायकलिंदा विदेहावेदगाइय । हरियाचुंचुणाचेव छएयाइब्भजाइत्त ॥ ७ ॥ सेत्त जाइआरियाय ॥ से कित कुलारिया? २ छव्विहा पण्णत्ता, तजहा—उग्गा भोगा राइण्णा इक्खागा नाता कोरव्वा ।

वलिप्तिवङ्गाश्च । काञ्चनपुरकलिङ्गा वाराणसीचैवकाशीच ॥ १ ॥ साकेत कोसलका पुरचकुरु सौरिककुशावर्त । काम्पिल्यपाञ्चाला अहिछत्राजाङ्गलाश्चैव ॥ २ ॥ द्वारावतीचसुराष्ट्रा मिथिलाविदेहावत्सकौशाम्ब्यो ॥ नन्दीपुरशाण्डिल्ये भद्दिलपुरमेवमलयाश्च ॥ ३ ॥ वैराटमत्स्यवरणा अच्छा तथामृत्तिकादशार्णा ॥ शौक्तिकावतीचचेदी वीतभयासिन्धुसौवीरा ॥ ४ ॥ मथुराचसूरसेना पापामङ्गीचमासपुरवट्टी ॥ श्रावस्तीचकुलाला कोटीवर्षोचलाटाच ॥ ५ ॥ श्वेताम्बिकाचनगरी केकयस्यार्द्धमार्यभणितम् ॥ यस्मादेतेषुजिनानां चक्रीरामकृष्णानाम् ॥ ६ ॥ ते एते क्षेत्रार्या. ॥ अथ कतिविधा जात्यार्या । जात्यार्या षट्विधा. प्रज्ञप्ता तद्यथा-आम्बष्टा कलिन्दा वैदेहा वेदङ्गा हरिता. चुंचुणा एतेता इभ्यजातय. । तएते जात्यार्या । अथ कतिविधा कुलार्या । कुलार्या षट्विधा. प्रज्ञप्ताः । उग्रा भोगा राजान इक्ष्वाकव ज्ञाता कौरवा । तएते कुलार्या । अथ कतिविधा कर्मार्या ? । कर्मार्या अनेकविधा प्रज्ञप्ता. तद्यथा-दोषिका सौत्रिका कार्पासिका मुत्तिवेयालिया. भण्डवेयालिया कोलालिया नरवाहणि

सेत्त कुलारिया ॥ से किंत कम्मारिया ? २ अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा–दोस्सिया सुत्तिया कप्पासिया मुत्तावेया जीया भंडवेयालिया कोलालिया नरवाहणिया जेयावन्ने तहप्पगारा। सेत्त कम्मारिया॥ से किंत सिप्पारिया ? २ अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा–तुन्नागा तंतुवाया पट्टागारा देयडा वरुडा कट्ठपाउयारा मुंजपाउयारा छत्तारा वज्झारा पत्थारा पोत्थारा लेप्पारा चित्तारा संखरा दंतारा भंडारा जिब्भगारा सेल्लारा कोडिगारा जेयावन्ने तहप्पगारा ॥ सेत्त सिप्पारिया ॥ से किंत भासारिया २ जेण अद्धमागहाए भासाए भासंति, जत्थवि य णं बंभीलिवी पवत्तइ बंभीएण लिवीए अट्ठारसविहे लेखविहाणे पन्नत्ते, तंजहा बंभीजवणाणिया दासापुरिसा खरुट्ठी पुक्खरसारिया भोगवइया पहराइया अंतक्खरिया अक्खरपुट्ठिया वेणइया निण्हइया अंकलिवी गणियलिवी गंधव्वलिवी आयासलिवी माहेसरी दोमिली पोलिंदी ॥१८॥ सेत्त भासारिया ॥ से किंत नाणारिया ? २ पंचविहा पन्नत्ता, तंजहा–आभिणिबोहियनाणारिया सुयना

या ये वाप्यन्ये तथाप्रकारा । अथ कतिविधा शिल्पार्याः । तुन्नागा तन्तुवाया पट्टकारा देवडा वरुट्टा काष्ठपादुकाकरा मुञ्जपादुकाकरा छत्रकारा वज्राकरा प्रभाकरा पोत्थारा लथारा चित्रकरो शङ्खकरा दन्तकरा भण्डारा जिह्मकारा (कटकरा) सेल्लारा कोटिकरा । ये वाप्यन्ये तथाप्रकारा. । तएते शिल्पार्याः । अथ कतिविधा भाषार्याः ? । भाषार्या ये अर्द्धमागधीभाषया भाषन्ते यत्रेय ब्राह्मीलिपि प्रवर्तते तस्यां ब्राह्मण्या लिप्यामष्टादशविधे लेख्यविधाने प्रवर्तते । तद्यथा-ब्राह्मी यवनानी दासपुरुषाया खरुट्टी पुष्करसारिका भोगवती अन्तरिक्षका अक्षरपृष्ठिका वैनयिकी निह्निका अङ्कलिपि गणितलिपि गन्धर्वलिपि आदर्शलिपि माहेश्वरी दोमिलीलिपि पौलिन्दीलिपि तएते भाषार्याः । अथ कतिविधा ज्ञानार्याः ? । ज्ञानार्याः पञ्चविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-अभिनिबोधज्ञानार्याः श्रुतज्ञानार्याः अवधिज्ञानार्याः मन पर्यन्तज्ञानार्याः

णारिया ओहिनाणारिया मणपज्जवनाणारिया केवलनाणारिया॥ सेत्तं नाणारिया॥ से किंतं दंसणारिया? २ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—सरागदंसणारिया य वीयरागदंसणा०। से किंतं सरागदंसणारिया य? २ दस विहा पन्नत्ता, तंजहा—निस्सग्गुवदेसरुई आणारुइसुत्तबीयरुइचेव। अभिगमवित्थाररुई किरियासंखेवधम्मरुई ॥१॥ भूयत्थेणाहिगया जीवाजीवायपुन्नपावंच। सहस्समुइयासवसंवरोयवेयइएसणिस्सग्गो ॥२॥ जोजिणदिट्ठेभावे चउव्विहेसद्दहाइसयमेव। एमेवणन्नहत्तिय णिसग्गरुइत्तिणायव्वो ॥३॥ एएचेव उभावे, उवदिट्ठेजोपरेणसद्दहइ। छउमत्थेणजिणेणव उवएसरुइत्तिणायव्वो ॥४॥ जोहेउमयाणंतो आणाएरोयएपवयणंतु। एमेवणन्नहत्तिय एसोआणारुईनामा ॥५॥ जोसुत्तमहिज्जंतो सुएणओगाहईउसम्मत्तं। अंगेणवाहिरेणव सोसुत्तरुइत्तिनायव्वो ॥६॥ एगपएणेगाइं पदाइंजोपसरईउसम्मत्तं। उदएव्वतिल्लविंदू सोवीयरुइत्तिनायव्वो ॥७॥ सोहोइअभिगमरुई सुयनाणंजस्स। अत्थउदिट्ठं एकारसअंगाइं पइण्णगादिट्ठिवाओय ॥८॥

केवलज्ञानार्याश्च। तएते ज्ञानार्या। अथ कतिविधा दर्शनार्याः दर्शनार्या द्विविधा प्रज्ञप्ता। तद्यथा-सरागदर्शनार्या वीतरागदर्शनार्याश्च। अथ कतिविधा सरागदर्शनार्या? सरागदर्शनार्या दशविधा. प्रज्ञप्ता.। तद्यथा-निसर्गोपदेशरुचिआज्ञारुचिसूत्ररुचिबीजरुचयश्च ॥ अभिगमरुचि विचाररुचि क्रियासंक्षेपधर्मरुचय ॥ १ ॥ भूतार्थेनाधिगता जीवाजीवाश्चपुण्यपाप च ॥ सहसमत्याश्रवसंवरा एतेनिसर्गोविज्ञेया ॥ २ ॥ योजिनदृष्टान् भावान् चतुर्विधान् श्रद्दधातिस्वयमेव ॥ एवमेवनुचास्तीह निसर्गरुचिरितिज्ञातम् ॥ ३ ॥ एतानवचभावान् उपदिष्टान्य परेणसदिग्धे ॥ छद्मस्थेनजिनेन उपदिष्टमतिरसज्ञातव्य ॥ ४ ॥ योहेतुमजानन्आज्ञया रोचयसेप्रवचनतु ॥ एवमवनुचास्तीह यएआज्ञारुचिर्नाम ॥ ५ ॥ योसूत्रमधीयानः श्रुतेनधावगाहतेसम्यक्त्वम् ॥ अङ्गेनचसवाह्येन सूत्ररुचिस्तुविज्ञेय ॥ ६ ॥ एकपदेऽनेकानिपदानि य प्रसरतिसम्यक्त्वम्। उदकेइवतिलविन्दु सबीज

दव्वाणंसव्वभावा सव्वपमाणेहिजस्सउवलद्धा । सव्वाहिणयविहीहि वित्थाररुइत्तिनायव्वो ॥ ९ ॥ दंसणनाणच रित्ते तवविणएसव्वसमिइगुत्तीसु जोकिरियाभावरुईसो खलुकिरियारुईनामा ॥ १० ॥ अणभिग्गहियकुदिठी सखेवरुइत्तिहोइनायव्वो । अविसारउपवयणे अणभिग्गहिउयसेसेसु ॥ ११ ॥ जोअत्थिकायधम्मं सुयधम्मखलु चरित्तधम्मच सद्दहइजिणाभिहिय सोधम्मरुइत्तिनायव्वो ॥ १२ ॥ परमत्थसंथवोवा सुदिठपरमत्थसेवणावा वि । वावन्नकुदंसणवज्जणाय सम्मत्तसद्दहणा ॥१३॥ निस्संकियनिक्कंखिय निव्वितिगिच्छाअमूढदिठीय उववू हथिरीकरणे वच्छल्लपभावणेअठ ॥ १४ ॥ सेत्त सरागदंसणारिया । से कित वीयरागदंसणारिया ? २ दु विहा पण्णत्ता, तंजहा उवसंतकसायवीयरागदंसणारिया खीणकसायवीतरागदंसणारियाय । से कित उवसंतकसायवीतरागदंसणारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा पढमसमयउवसंतकसायवीतरागदंसणारि

रुचिरितिज्ञातव्य ॥ ७ ॥ समवत्यजिनमतरुचि श्रुतज्ञानजवतियस्य । अयतोदृष्टमेकादशाङ्गानि प्रकीर्णकादिदृष्टिवादश्च ॥ ८ ॥ द्रव्याणा, सर्वभावा सर्वप्रमाणैयस्यउपलब्धा ॥ सर्वैश्चाथनयविधिभि विस्ताररुचिस्सविज्ञय ॥ ९ ॥ दर्शनज्ञानचरित्रे तपोविनयेनर्वसमितिगुप्तिषुच ॥ य कुर्याद्भाव रुचि सखलुक्रियारुचिर्नामा ॥ १० ॥ अनभिगृहीतकुदृष्टि सक्षेपरुचिरवतिज्ञातव्य ॥ अभिसारप्रवचने अनभिगृहीतश्चशेषेषु ॥ ११ ॥ योस्तिकायध र्मं श्रुतधर्मंचचरित्रधर्मंच ॥ श्रद्दधातिजिनाभिहित सधर्मरुचिज्ञातव्य ॥१२॥ परमार्थसस्तवोवा सुदृष्टपरमार्थसेवनोवापि ॥ व्यापन्नकुदर्शनवज ना चसम्यक्त्वदर्शनाश्च ॥ १३ ॥ तदेते सरागदर्शनार्या । अथ कतिविधा वीतरागदर्शनार्या ? वीतरागदर्शनार्या द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-उपशान्त कषायवीतरागदर्शनार्या क्षीणकषायवीतरागदर्शनार्या । अथ कतिविधा उपशान्तकषायवीतरागदर्शनार्या ? । उपशान्तकषायवीतरागदर्श नार्या द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-प्रथमसमयोपशान्तकषायवीतरागदर्शनार्या अप्रथमसमयोपशान्तकषायवीतरागदर्शनार्या । अथवा चरमसम

या अपढमसमयउवसंतकसायवीतरागदंसणारिया, अहवा चरिमसयमउवसंतकसायवीयरागदंसणारिया य अचरिमसमयउवसंतकसायवीतरागदंसणारिया य। से किंतं खीणकसायवीतरागदंसणारिया? २ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा छउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया केवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया य। से किंतं छउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया? २ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा सयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया बुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया। से किंतं सयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीयरागदंसणारिया सयंबुद्धछउमत्थखीण० दुविहा पन्नत्ता, तंजहा पढमसमयसयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारियाय अपढमसमयसयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया, अहवा चरिमसमयसयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणा० अचरिमसमयसयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया

योपशान्तकषायवीतरागदर्शनार्या अचरमसमयोपशान्त कषायवीतरागदर्शनार्या। अथ कतिविधा क्षीण कषायवीतरागदर्शनार्याः?। क्षीणकषायवीतरागदर्शनार्या द्विविधा प्रज्ञप्ता। तद्यथा-छद्मस्थक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्या केवलक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याश्च। अथ कतिविधा. छद्मस्थक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याः?। छद्मस्थक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्या द्विविधा प्रज्ञप्ता· स्वयंबुद्धछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्या बुद्धबोधितछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्या। अथ कतिविधा स्वयंबुद्धछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याः प्रज्ञप्ता?। स्वयंबुद्धछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्या द्विविधा प्रज्ञप्ता। तद्यथा-प्रथमसमयस्वयंबुद्धछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्या अप्रथमसमयस्वयंबुद्धछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याश्च। अथवा चरमसमयस्वयंबुद्धछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्या अचरमस्वयंबुद्धछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याश्च। त एते स्वयंबुद्धछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्या। अथ कतिविधा बुद्धबोधितछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याः। बुद्धबोधितछद्मस्थक्षीण

य। सेत्तं सयबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागदसणारिया। से कित बुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागदसणारिया? २ दुविहा पण्णत्ता, तजहा पढमसमयबुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागदसणारिया अपढमसमयबुद्धबोहियछउमत्थखीणयसायवीतरागदसणारिया, अहवा चरिमसमयबुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागदसणारिया अचरिमसमयबुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया। सेत्तं बुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागदसणारिया। सेत्त छउमत्थखीणकसायवीतरागदसणारिया। से किंत केवलिखीणकसायवीतरागदसणारिया? २ दुविहा पण्णत्ता, तजहा—सजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदसणारिया अजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदसणारियाय। से कित सजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदसणारिया २ २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा पढमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदसणारिया अप

कषायवीतरागदर्शनार्या द्विविधा प्रज्ञप्ता। तद्यथा प्रथमसमयबुद्धबोधितछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्या अप्रथमसमयबुद्धबोधितछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याश्च। अथवा चरम समयबुद्धबोधितछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्या अचरमसमयबुद्धबोधितछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याश्च। तएते छद्मस्थक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्या। अथ कतिविधा केवलक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्या? । केवलक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्या द्विविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा-सयोगिकेवलक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्या अयोगिकेवलक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याश्च। अथ कतिविधा सयोगिकेवलक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्या सयोगिकेवलक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्या द्विविधा प्रज्ञप्ता। तद्यथा-प्रथमसमयसयोगिकेवलक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्या अप्रथमसमयसयोगिकेवलक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्या। अथवा चरमसमयसयोगिकेवलक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्या अचरमसमयसयोगिकेवलक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याश्च। अथ कतिविधा अयोगिकेवलक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्या? । अयोगिकेवलक्षीणकषाय

ढमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारियाय । अहवा चरिमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारियाय अचरिमसमयजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारियाय। सेत्तं सजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया । से किंतं अजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तजहा पढमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया अपढमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारियाय, अहवा चरिमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया अचरिमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया य । सेत्त अजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया । सेत्त केवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया । सेत्त खीणकसायवीतरागदंसणारिया । सेत्तं वीतरागदंसणारिया। सेत्तं दंसणारिया । से किंतं चरित्तारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तजहा—सरागचरित्तारिया वीतरागचरित्तारिया । से किंत सरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तजहा—सुहुमसंपरायसरागचरित्तारियाय बाय

वीतरागदर्शनार्या द्विविधाः प्रज्ञप्ता तद्यथा-प्रथमसमयायोगिकेवलक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्या अप्रथमसमयायोगिकेवलक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याश्च । अथवा चरमसमयायोगिकेवलक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्या अचरमसमयायोगिकेवलक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याश्च । तएते अयोगिकेवलक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्या । तएते केवलक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्या । तएते क्षीणकषायवीतरागदर्शनार्या तएते वीतरागदर्शनार्या । अथ कतिविधाश्चरित्रार्या ? चरित्रार्या द्विविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा-सूक्ष्मसंपरायसरागचरित्रार्या बादरसंपरायसरागचरित्रार्या । अथ कतिविधा सूक्ष्मसंपरायसरागचरित्रार्याः सूक्ष्मसंपरायसरागचरित्रार्या द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-प्रथमसमयसूक्ष्मसंपरायसरागचरित्रार्याः अप्रथमसमयसूक्ष्मसंपरायसरागचरित्रार्या श्च । अथवा सूक्ष्मसंपरायसरागचारित्रार्या द्विविधा प्रज्ञप्ता ; तद्यथा-संक्लिश्यमानार्या विशुद्ध्यमानार्या । तएते

रसपरायसरागचरित्तारियाय । से किंत सुहुमसंपरायसरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पणत्ता, तंजहा– पढमसमयसुहुमसपरायसरागचरित्तारिया अपढमसमयसुहुमसपरायसरागचरित्तारिया य, अहवा चरिम समयसुहुमसपरायसरागचरित्तारिया अचरिमसमयसुहुमसपरायसरागचरित्तारियाय। अहवा सुहुमसपरा यसरागचरित्तारिया दुविहा पणत्ता, तजहा संकिलिस्समाणाय विसुज्झमाणाय सेत्त सुहुमसपरायसरा गचरित्तारिया । से किंत वायरसपरायसरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पणत्ता, तजहा पढमसमयवायर सपरायसरागचरित्तारिया अपढमसमयवायरसपरायसरागचरित्तारिया य अहवा चरिमसमयवायरसपरा यसरागचरित्तारिया अचरिमसमयवायरसपरायसरागचरित्तारिया य अहवा वायरसपरायसरागचरित्तारि या दुविहा पणत्ता, तजहा पडिवाई य अपडिवाई य सेत्त वायरसपरायचरित्तारिया सेत्त सरागचरि त्तारिया । से किंत वीतरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पणत्ता, तजहा उवसतकसायवीतरागचरित्तारिया खीणकसायवीतरागचरित्तारिया य से किंत उवसतकसायवीतरागचरित्तारिया ? २ दुविहा प०, तंजहा

सूक्ष्मसपरायसरागचरित्रार्या । अथ कतिविधा वादरसपरायसरागचरित्रार्या वादरसपरायसरागचरित्रार्या द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा प्रथमसमय वादरसपरायसरागचरित्रार्या अप्रथमसमयवादरसपरायसरागचरित्रार्याश्च । अथवा चरमसमयवादरसपरायसरागचरित्रार्या अचरमसमयवादर सपरायसरागचरित्रार्याश्च । अथवा वादरसपरायसरागचरित्रार्या द्विविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा-प्रतिपातिका अप्रतिपातिकाश्च । तएते वादरसपरा यसरागचरित्रार्या तएते सरागचरित्रार्या । अथ कतिविधा वीतरागचरित्रार्या ? । वीतरागचरित्रार्या द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-उपशान्तक पायवीतरागचरित्रार्या क्षीणकपायवीतरागचरित्रार्याः । अथ कतिविधा उपशान्तकपायवीतरागचरित्रार्याः ? । उपशान्तकपायवीतरागचरित्रार्या

|| सूत्र ||

|| अ० ||

पढमसमयउवसंतकसायवीतरागचरित्तारिया अपढमसमयउवसंतकसायवीतरागचरित्तारिया य अहवा चरिमसमयउवसंतकसायवीतरागचरित्तारिया अचरिमसमयउवसंतकसायवीतरागचरित्तारिया य सेत्त उवसंतकसायवीतरागचरित्तारिया। से किंत खीणकसायवीतरागचरित्तारिया? २ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा छउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया केवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य से किंतं छउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया? २ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा सयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया बुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य से किंत सयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया? २ दुविहा प०, तंजहा पढमसमयसयंबुद्धखीणकसायवीतरागचरित्तारिया अपढमसमयसयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्ता य, अहवा चरिमसमयसयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया अचरिमसमयसयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य। सेत्त सयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्ता

द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-प्रथमसमयोपशान्तकषायवीतरागचरित्रार्या अप्रथमसमयोपशान्तकषायवीतरागचरित्रार्याश्च । अथवा चरमसमयोपशान्तकषायवीतरागचरित्रार्या अचरमसमयोपशान्तकषायवीतरागचरित्रार्याश्च । तदेते उपशान्तकषायवीतरागचरित्रार्याः । अथ कतिविधाः क्षीणकषायवीतरागचरित्रार्याः ? । क्षीणकषायवीतरागचरित्रार्या द्विविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा-छद्मस्थक्षीणकषायवीतरागचरित्रार्याः केवलिक्षीणकषायवीतरागचरित्रार्याश्च । अथ कतिविधाः छद्मस्थक्षीणकषायवीतरागचरित्रार्याः छद्मस्थक्षीणकषायवीतरागचरित्रार्या द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-स्वयंबुद्धछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागचरित्रार्या बुद्धबोधितछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागचरित्रार्याः अथ कतिविधाः स्वयंबुद्धछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागचरित्रार्या द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-प्रथमसमयस्वयंबुद्धक्षीणकषायवीतरागचरित्रार्या अप्रथमसमयस्वयंबुद्धक्षीणकषायवीतरागचरित्रार्याश्च । अथवा चरमसमय

रिया । से किं तं बुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा पढमसमयबुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया अपढमसमयबुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य, अहवा चरिमसमयबुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया अचरिमसमयबुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य । सेत्तं बुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया सेत्तं छउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया । से किं तं केवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा सजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया अजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य । से किं तं सजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—

स्वयंबुद्धछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागचारित्रार्याः अचरमसमयस्वयंबुद्धछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागचारित्रार्याश्च । तदेते स्वयंबुद्धछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागचारित्रार्याः । अथ कतिविधा बुद्धबोधितछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागचारित्रार्याः ? बुद्धबोधितछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागचारित्रार्या द्विविधा प्रज्ञप्ताः । तद्यथा प्रथमसमयबुद्धबोधितछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागचारित्रार्याः अप्रथमसमयबुद्धबोधितछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागचारित्रार्याश्च । अथवा चरमसमयबुद्धबोधितछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागचारित्रार्याः अचरमसमयबुद्धबोधितछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागचारित्रार्याश्च । तदेते बुद्धबोधितछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागचारित्रार्याः । अथ कतिविधा केवलक्षीणकषायवीतरागचारित्रार्याः ? । केवलक्षीणकषायवीतरागचारित्रार्या द्विविधा । तद्यथा--सयोगिकेवलक्षीणकषायवीतरागचारित्रार्याः अयोगिकेवलक्षीणकषायवीतरागचारित्रार्याश्च । अथ कतिविधा सयोगिकेवलक्षीणकषायवीतरागचारित्रार्याः ? । सयोगिकेवलक्षीणकषायवीतरागचारित्रार्या द्विविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा--प्रथमसमयसयोगिकेवलक्षीणकषायवीतरागचारित्रार्याः अप्रथमसमयसयोगिकेवलक्षीणकषायवीतरागचारित्रार्याः । अथवा चरमसमयसयोगिकेवलक्षीणकषायवीतरागचारित्रार्याः अचरमसमयसयोगिकेवलक्षीणकषायवीतरागचारित्रार्याश्च ।

पढमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया अपढमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीतराग चरित्तारिया य, अहवा चरिमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य अचरिमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य। सेत्तं सजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया। से किंतं अजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा–पढमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य अपढमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य, अहवा चरिमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य अचरिमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य सेत्त अजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया। सेत्तं केवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया। सेत्त खीणकसायवीतरागचरित्तारिया सेत्त वीतरागचरित्तारिया। अहवा चरित्तारिया पचविहा पन्नत्ता, तजहा–सामाइयचरित्तारिया छेदोवठावणीयचरित्तारिया परिहारविसुद्धिचरित्तारिया सुहुमसंपरायचरित्तारिया अहक्खायचरित्तारिया य। से कित सामाइयचरित्तारिया ? २ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा

तएते सयोगिकेवलक्षीणकषायवीतरागचरित्रार्याः। अथ कतिविधा अयोगिकेवलक्षीणकषायवीतरागचरित्रार्याः. अयोगिकेवलक्षीणकषायवीतरागचारित्रार्या द्विविधा प्रज्ञप्ता। तद्यथा--प्रथमसमयायोगिकेवलक्षीणकषायवीतरागचरित्रार्या अप्रथमसमयायोगिकेवलक्षीणकषायवीतरागचरित्रार्याश्च। अथवा चरमसमयायोगिकेवलक्षीणकषायवीतरागचरित्रार्या अचरमसमयायोगिकेवलक्षीणकषायवीतरागचरित्रार्याश्च। तएते ऽयोगिकेवलक्षीणकषायवीतरागचरित्रार्याः। तएते केवलक्षीणकषायवीतरागचरित्रार्याः। तएते क्षीणकषायवीतरागचरित्रार्याः। तएते वीतरागचरित्रार्याः। अथवा चरित्रार्याः पञ्चविधा प्रज्ञप्ता. तद्यथा-सामायिकचरित्रार्याः छेदोपस्थानीयचरित्रार्याः परिहारविशुद्धिचरित्रार्याः सूक्ष्मसंपरायचरित्रार्याः अनाख्यातचरित्रार्याश्च।

इत्तरियसामाइयचरित्तारियां आवकहियसामाइयचरित्तारिया य । सेत्तं सामाइयचरित्तारिया । से किंतं छेदोवट्ठावणीयचरित्तारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तजहा—साइयारा छेदोवट्ठावणीयचरित्तारिया निरइयारा छेदोवट्ठावणीयचरित्तारिया । सेत्तं छेदोवट्ठावणीयचरित्तारिया । से किंतं परिहारविसुद्धियचरित्तारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तजहा—निव्विस्समाणपरिहारविसुद्धियचरित्तारिया निव्विट्ठकाइयपरिहारविसुद्धियचरित्तारियाय । सेत्त परिहारविसुद्धियचरित्तारिया । से किंत सुहुमसपरायचरित्तारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तजहा संकिलिस्समाणसुहुमसपरायचरित्तारिया विसुज्झमाणसुहुमसंपरायचरित्तारियाय सेत्तं सुहुमसपरायचरित्तारिया । से किंत अहक्खायचरित्तारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तजहा छउमत्थ अहक्खायचरित्तारिया केवलिअहक्खायचरित्तारियाय सेत्त अहक्खायचरित्तारिया सेत्त चरित्तारिया सेत्तं अणढिपत्तारियां सेत्तं

अथ कतिविधा सामायिकचरित्रार्या सामायिकचरित्रार्या द्विविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा-इत्वरसामायिकचरित्रार्या यावत्कथितसामायिकचरित्रार्याश्च । तदेते सामायिकचारित्रार्या । अथ कतिविधाश्छेदोपस्थानीयचरित्रार्या ? छेदोपस्थानीयचरित्रार्या द्विविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा-सातिचाराश्छेदोपस्थानीयचरित्रार्या निरतिचाराश्छेदोपस्थानीयचरित्रार्या । तदेते छेदोपस्थानीयचरित्रार्या । अथ कतिविधा परिहारविशुद्धिकचरित्रार्या ? परिहारविशुद्धिकचरित्रार्या द्विविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा-निर्विश्यमानपरिहारविशुद्धिकचरित्रार्या निर्विष्टकायकपरिहारविशुद्धिकचरित्रार्याश्च । तदेते परिहारविशुद्धिकचरित्रार्या । अथ कतिविधा सूक्ष्मसंपरायचरित्रार्या सूक्ष्मसंपरायचरित्रार्या द्विविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा-उपक्लिश्यमानसूक्ष्मसंपरायचरित्रार्या विशुद्ध्यमानसूक्ष्मसंपरायचरित्रार्याश्च । तदेते सूक्ष्मसंपरायचरित्रार्या । अथ कतिविधा यथाख्यातचरित्रार्या ? यथाख्यातचरित्रार्या द्विविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा-छद्मस्थयथाख्यातचरित्रार्या केवलचरित्रार्याश्च । तदेते यथाख्यातचरित्रार्या । तदेते चरित्रार्या तदेते अनृद्धिप्राप्तार्या तदेते आर्या ।

आरिया सेत्तं कम्मभूमिगा सेत्तं गब्भवक्कंतिया सेत्तं मणुस्सा से किंतं देवा २ चउव्विहा प०, तंजहा भव णवासी वाणमंतरा जोइसिया वेमाणिया से किंतं भवणवासी? भवणवासी दसविहा पन्नत्ता, तंजहा असु रकुमारा नागकुमारा सुवण्णकुमारा विज्जुकुमारा अग्गिकुमारा दीवकुमारा उदहिकुमारा दिसाकुमारा वाउ कुमारा थणियकुमारा तेसमासतो दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय सेत्तं भवणवासी से किंतं वाणमंतरा२ अट्ठविहा प०, तंजहा किन्नरा किंपुरिसा महोरगा गंधव्वा जक्खा रक्खसा भूया पिसा या ते समासतो दुविहा पन्नत्ता, तंजहा पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय सेत्तं वाणमंतरा। से किंतं जोइसिया २ पंचविहा पन्नत्ता, तंजहा चंदासूरागहनक्खत्ततारा तेसमासतो दुविहा पन्नत्ता, तंजहा पज्जत्तगाय अप ज्जत्तगाय। से किंतं जोइसिया से किंतं वेमाणिया२ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा कप्पोवग्गाकप्पाईयाय से किंतं

तदेते कर्मभूमिगा तदेते गर्भव्युत्क्रान्तिका । तदेते मनुष्या ॥ अथ कतिविधा देवा. ? देवाश्चतुर्विधा. प्रज्ञप्ता तद्यथा-भवनवासिनः वानव्यन्तरा ज्योतिषका वैमानिका । अथ कतिविधा भवनवासिन ? भवनवासिनो दशविधा. प्रज्ञप्ता तद्यथा-असुरकुमारा नागकुमारा सुवर्णकुमारा विद्युत्कुमारा अग्निकुमारा द्वीपकुमारा उदधिकुमारा दिशाकुमारा. वायुकुमाराः स्तनितकुमारा । ते समासतो द्विविधा प्रज्ञप्ता पर्याप्तगाश्चापर्याप्तगाश्च । तदेते भवनवासिन । अथ कतिविधा वानव्यन्तरा ? वानव्यन्तरा अष्टविधाः प्रज्ञप्ता । तद्यथा--किनरा किंपुरुषा महोरगा· गन्धर्वा यक्षा रक्षा भूता पिशाचा. तदेते समासतो द्विविधा प्रज्ञप्ताः तद्यथा--पर्याप्तगाश्च अपर्याप्तगाश्च । तदेते वानव्यन्तरा । अथ कतिविधा ज्योतिषिका ज्योतिषिका पञ्चविधा प्रज्ञप्ता. तद्यथा--चन्द्रसूर्यग्रहनक्षत्रतारा. । ते समासतो द्विविधा. प्रज्ञप्ता तद्यथा-पर्याप्तगाश्चापर्याप्तगाश्च । तदेते ज्योतिषिका । अथ कतिविधा वैमानिका. ? वैमानिका द्विविधा प्रज्ञप्ता, तद्यथा--कल्पोपगा कल्पातीताश्च । अथ कतिविधा क

कप्पोवगा२ बारसविहा पणत्ता, तजहा सोहम्मा ईसाणा सणंकुमारा माहिंदा बम्भलोया लंतया महासुक्का सहस्सारा आणया पाणया आरणा अच्चुया तेसमासत्रे दुविहा पणत्ता, तजहा पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय सेत्त कप्पोवगा से कित कप्पाईया २ दुविहा पणत्ता, तजहा गेविज्जगाय अणुत्तरोववाइयाय से कित गेविज्जगा २ नवविहा पणत्ता, तजहा हिठिमहिठिमगेविज्जगा हिठिममज्झिमगेविज्जगा हिठिमउवरिम गेविज्जगा मज्झिमहिठिमगेविज्जगा मज्झिम२ गेविज्जगा मज्झिमउवरिमगेविज्जगा उवरिमहिठिमगेविज्जगा उवरिममज्झिमगेविज्जगा उवरिम२ गेविज्जगा तेसमासत्रे दुविहा पणत्ता, तजहा पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय सेत्त गेविज्जगा । से कित अणुत्तरोववाइया२ पंचविहा पणत्ता, तजहा विजया वेजयंता जयंता अपराजिया सव्वठसिद्धा तेसमासत्रे दुविहा पणत्ता, तजहा पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय सेत्त अणुत्तरोववा

ल्पोपगा ? कल्पोपगा द्वादशविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा--सौधर्मा ऐशाना सनत्कुमारा माहेन्द्रा ब्रह्मलोका लान्तका महाशुक्रा सहस्रारा आनता प्राणता आरणा अच्युता । ते समासतो द्विविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा--पर्याप्तकाश्चापर्याप्तकाश्च । तएते कल्पोपगा । अथ कतिविधा कल्पातीता ? कल्पातीता द्विविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा--ग्रैवेयकाः अनुत्तरवैमानिका च । अथ कतिविधा ग्रैवेयकाः ग्रैवेयका नवविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा-अधोधोग्रैवेयका, अधोमध्यमग्रैवेयका, अधउपरितनग्रैवेयका, मध्यमाधो ग्रैवेयका, मध्यममध्यमग्रैवेयकाः मध्यमोपरितनग्रैवेयका, उपरितनाधोग्रैवेयका उपरितनमध्यमग्रैवेयका उपरितनोपरितनग्रैवेयका ते समासतो द्विविधा प्रज्ञप्ता पर्याप्ताश्चापर्याप्ता च । तएते ग्रैवेयका । अथ कतिविधा अनुत्तरवैमानिका ? अनुत्तरवैमानिका पञ्चविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-विजया वैजयन्ता जयन्ताः अपराजिता सर्वार्थसिद्धा । ते समासतो द्विविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा--पर्याप्ताश्चापर्याप्ता च । तएते अनुत्तरवैमानिका । तएते कल्पाः । तएते वैमानिकाः । तएते देवा ।

इया सेत्त कप्पाईया सेत्तं वेमाणिया सेत्तं देवा सेत्त पंचिंदिया सेत्तं संसारसमावन्नजीवपन्नवणा सेत्तं जीव पन्नवणा सेत्त पन्नवणा ॥ पन्नवणाए पढम पय सम्मत्तं ॥ १ ॥ कहिणं भंते ! बादरपुढवि काइयाण पज्जत्तगाण-ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! सठाणेणं अठसु पुढवीसु तंजहा—रयणप्पभाए सक्करप्प. भाए वालुयप्पभाए पकप्पभाए धूमप्पभाए तमप्पभाए तमतमप्पभाए अहेसत्तमाए ईसिप्पभाराए अहोलोए पायालेसु भवणेसु भवणपत्थडेसु निरएसु निरयावलियासु निरयपत्थडेसु उड्ढलोए कप्पेसु विमाणेसु वि माणावलियासु विमाणपत्थडेसु तिरियलोए टंकेसु कूडेसु सेलेसु सिहरीसु पब्भारेसु विजएसु वक्खारेसु वासेसु वासहरपव्वएसु वा वेलासु वेइयासु दारेसु तोरणेसु दीवेसु समुद्देसु एत्थणं बादरपुढवीकाइयाणं पज्जत्तगाण ठाणा पन्नत्ता, उववाएण लोयस्स असंखेज्जइभागे समुग्घाएण लोयस्स असंखेज्ज० सठाणेणं

तत्ते पञ्चेन्द्रिया । तएते ससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना । तएते जीवप्रज्ञापना तएते प्रज्ञापना ॥ इति श्रीमदुपाध्याय रामचन्द्र गणि शिष्य नानकचन्द्र विरचिते जीवप्रज्ञापना रूपप्रथमपदानुवाद ॥ छ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

कस्मिन् भदन्त ! बादरपृथिवीकायिकाना पर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । गौतम ? स्वस्थानेनाष्टासु पृथिवीषु तद्यथा--रत्नप्रभाया शर्करप्रभा या वालुकप्रभाया पङ्कप्रभाया धूमप्रभाया तम प्रभाया तमस्तम प्रभायामधःसप्तमायामीषत्प्राग्भारायामधोलोके पातालेषु भवनेषु भवनप्रस्तरेषु नरकेषु नरकावलिकासु निरयप्रस्तरेषु ऊर्ध्वलोक कल्पेषु विमानेषु विमानावलिकासु विमानप्रस्तरेषु तिर्यक्लोके टङ्केषु कूटेषु शैलेषु प्राग्भारेषु विजयेषु वक्षारेषु वासेषु वासहरपर्वतेषु वा वेलासु वेदिकासु दारेषु तोरणेषु द्वीपेषु समुद्रेषु मतेषु बादरपृथिवीकायिकाना पर्याप्तानां स्थाना नि पर्याप्तानि । तत्रैव बादरपृथिवीकायिकानामपर्याप्तानां स्थानानि पर्याप्तानि । उपपातेनापि सर्वलोके समुद्घातेन सर्वलोके स्वस्थानेन लोकस्या

॥ मूल ॥

यस्स असंखेज्जइभागे । कहिणं भंते ! बादरपुढविकाइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! त्थ बादरपुढविकाइयाणं पज्जत्तगाण ठाणा पण्णत्ता, तत्थेव बादरपुढविकाइयाण अपज्जत्तगाणं ठाणा त्ता, उववाएण सव्वलोए समुग्घाएण सव्वलोए सट्ठाणेण लोयस्स असंखेज्जइभागे। कहिण भंते! सुहुम विकाइयाणं पज्जत्तगाण अपज्जत्तगाणयठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! सुहुमपुढविकाइया जेपज्जत्तगा जे ज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसा अनाणत्ता सव्वलोयपरियावन्नगा पण्णत्ता समणाउसो ! कहिणं ! बादरआउकाइयाण पज्जत्तगाण ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा । सट्ठाणेण सत्तसु घणोदधीसु सत्तसु घ धिवलएसु अहोलोए पायालेसु भवणेसु भवणपत्थडेसु उड्ढलोयकप्पेसु विमाणेसु विमाणावलियासु णपत्थडेसु तिरियलोए अगडेसु तलाएसु सरेसु नदीसु दहेसु वावीसु पुक्करिणीसु दीहियासु गुंजालि सरेसु सरपंतियासु सरसरपंतियासु बिलपंतियासु उज्झरेसु णिज्झरेसु चिल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दी समुद्देसु सव्वेसु चेव जलासएसु जलठाणेसु जलभूमिआसु एत्थण बादरआउकाइयाण पज्जत्तगाणं

॥ अ० ॥

गे । कस्मिन् भदन्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकानां पर्याप्तानामपर्याप्तकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि , गौतम सूक्ष्मपृथिवीकायिकाये पर्याप्तका य त्ते सर्वे एकविधा अविशेषा अनानात्वा सर्वलोकपर्यापन्नकाः प्रज्ञप्ताः श्रमणायुष्मन् कस्मिन् भदन्त बादराप्कायिकानां पर्याप्तका नि प्रज्ञप्तानि । गौतम स्वस्थानेन सप्तसु घनोदधिषु सप्तसु घनोदधिवलयेषु अधोलोके पातालेषु भवनेषु भवनप्रस्तरेषु ऊर्ध्वलोके कल्पे षु विमानावलिकासु विमानप्रस्तरेषु तिर्यक्लोके अवटेषु तडागेषु सरस्सु नदीषु ह्रदेषु वापीषु प रक्तिषु बिलपंक्तिषु निर्झरेषु विल्वरेषु पल्वलेषु वप्रे

सेत्तं कप्पाईया सेत्तं वेमाणिया सेत्तं पंचिंदिया सेत्तं संसारसमावन्नजीवपन्नवणा सेत्तं जीवपन्नवणा सेत्तं पन्नवणा ॥ पन्नवणाए पढमं पयं सम्मत्तं ॥ १ ॥ कहिणं भंते ! बादरपुढविकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! सट्ठाणेणं अट्ठसु पुढवीसु तंजहा—रयणप्पभाए सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए पंकप्पभाए धूमप्पभाए तमप्पभाए तमतमप्पभाए अहेसत्तमाए ईसिप्पब्भाराए अहोलोए पायालेसु भवणेसु भवणपत्थडेसु निरएसु निरयावलियासु निरयपत्थडेसु उड्ढलोए कप्पेसु विमाणेसु विमाणावलियासु विमाणपत्थडेसु तिरियलोए टंकेसु कूडेसु सेलेसु सिहरीसु पब्भारेसु विजएसु वक्खारेसु वासेसु वासहरपव्वएसु वेलासु वेइयासु दारेसु तोरणेसु दीवेसु समुद्देसु एत्थणं बादरपुढवीकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता, उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्ज० सट्ठाणेणं

तदेते पञ्चेन्द्रियाः । तदेते संसारसमापन्नजीवप्रज्ञापनाः । तदेता जीवप्रज्ञापनाः तदेते प्रज्ञापना ॥ इति श्रीमदुपाध्याय रामचन्द्र गणि शिष्य मालचन्द्र विरचिते जीवप्रज्ञापना प्रथमपदानुवादः ॥ छ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

क्वाऽऽत् भदन्त । बादरपृथिवीकायिकानां पर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । गौतम ? स्वस्थानेनाष्टासु पृथिवीषु तद्यथा--रत्नप्रभायां शर्कराप्रभायां वालुकाप्रभायां पङ्कप्रभायां धूमप्रभायां तमःप्रभायां तमस्तमःप्रभायामधःसप्तमायामीषत्प्राग्भारायामधोलोके पातालेषु भवनेषु भवनप्रस्तरेषु नरकेषु नरकावलिकासु निरयप्रस्तरेषु ऊर्ध्वलोके कल्पेषु विमानेषु विमानावलिकासु विमानप्रस्तरेषु तिर्यक्लोके टङ्केषु कूटेषु शैलेषु शिखरिषु प्राग्भारेषु विजयेषु वक्षारेषु वर्षेषु वर्षधरपर्वतेषु वा वेलासु वेदिकासु द्वारेषु तोरणेषु द्वीपेषु समुद्रेषु एतेषु बादरपृथिवीकायिकानां पर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । तथैव बादरपृथिवीकायिकानामपर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेनापि सर्वलोके समुद्घातेन सर्वलोके स्वस्थानेन लोकस्या

॥ मूल ॥

लोयस्स असंखेज्जइभागे । कहिणं भंते ! बादरपुढविकाइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! जत्थेव बादरपुढविकाइयाण पज्जत्तगाण ठाणा पन्नत्ता, तत्थेव बादरपुढविकाइयाण अपज्जत्तगाण ठाणा पन्नत्ता, उववाएण सव्वलोए समुग्घाएण सव्वलोए सठाणेण लोयस्स असंखेज्जइभागे। कहिण भंते ! सुहुम पुढविकाइयाण पज्जत्तगाण अपज्जत्तगाणयठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! सुहुमपुढविकाइया जेपज्जत्तगा जे अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसा अनाणत्ता सव्वलोयपरियावन्नगा पन्नत्ता समणाउसो ! कहिणं भंते ! बादरआउकाइयाण पज्जत्तगाण ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! सठाणेण सत्तसु घणोदधीसु सत्तसु घणोदधिवलएसु अहोलोए पायालेसु भवणेसु भवणपत्थडेसु उड्ढलोयकप्पेसु विमाणेसु विमाणावलियासु विमाणपत्थडेसु तिरियलोए अगडेसु तलाएसु सरेसु नदीसु दहेसु वावीसु पुक्खरिणीसु दीहियासु गुंजालियासु सरेसु सरपंतियासु सरसरपंतियासु बिलपंतियासु उज्झरेसु णिज्झरेसु चिल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दीवेसु समुद्देसु सव्वेसु चेव जलासएसु जलठाणेसु जलभूमिआसु एत्थण बादरआउकाइयाणं पज्जत्तगाण

॥ अ० ॥

सख्येयभागे । कस्मिन् भदन्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकाना पर्याप्तानामपर्याप्तकाना स्थानानि प्रज्ञप्तानि, गौतम सूक्ष्मपृथिवीकायिकाये पर्याप्तगा य अपर्याप्तगास्ते सर्वे एकविधा अविशेषा अनाज्ञाता सर्वलोकपर्यापन्नगा प्रज्ञप्ता श्रमणायुष्मन् कस्मिन् भदन्त बादराप्कायिकाना पर्याप्तका ना स्थानानि प्रज्ञप्तानि । गौतम सस्थानेन सप्तसु घनोदधेषु सप्तसु घनोदधिवलयेषु अधिलोके पातालेषु भवनेषु भवनप्रस्तरेषु ऊर्ध्वलोके कल्पेषु विमानेषु विमानावलिकासु विमानप्रस्तरेषु तिर्यक्लोके अवटेषु तडागेषु सरस्सु नदीषु ह्रदेषु वापीषु पुष्करणीषु दीर्घिकासु गुञ्जालिकासु सरस्सु सर सर पक्तिषु बिलपक्तिषु निर्झरेषु विल्वरेषु पल्वलेषु वप्रेषु द्वीपेषु समुद्रेषु सर्वेषु चेव जलाशयेषु जलस्थानेषु एतेषु बादराप्कायिकाना

ठाणा पण्णत्ता, उववाएण लोयस्स असंखेज्जइभागे। कहिणं भंते ! बायरआउकाइयाणं अपज्जत्तगाण ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा । जत्थेव बादरआउकाइयाण पज्जत्तगाण ठाणा तत्थेव बादरआउकाइयाणं अपज्जत्तगाण ठाणा पण्णत्ता , उववाएणं सव्वलोए समुग्घाएण सव्वलोए सठाणेण लोयस्स असंखिज्जभागे । कहिण सुहुमआउकाइयाण पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! सुहुमआउकाइया जेय पज्जत्तगा जे अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसा अनाणत्ता सव्वलोए परियावन्नगा प०, समणाउसो ! कहिणं भंते ! बादरतेउकाइयाण पज्जत्तगाण ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! सठाणेणं अंतोमणुस्सखेत्ते अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु निव्वाघाए पन्नरससु कम्मभूमीसु वाघाय पडुच्च पचसु महाविदेहेसु एत्थण बादरतेउकाइयाण पज्जत्तगाण ठाणा पण्णत्ता , उववाएण लोयस्स असंखेज्जइभागे समुग्घाएण लोयस्स असंखेज्जइभागे , सठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे । कहिण भंते । बादरतेउकाइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! जत्थेव बादरतेउकाइयाण पज्जत्तगाण ठाणा तत्थेव बादरतेउकाइयाणं अपज्जत्तगाण ठाणा प०,

पर्याप्तकाना स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन लोकस्य असख्येयभागे । कस्मिन् भदन्त बादराप्कायिकानामपर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन सवलोके समुद्घातेन सर्वलोके सस्थानेन लोकस्यासख्येयभाग । कस्मिन् भ० सूक्ष्माप्कायिकाना पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि गौतम सूक्ष्माप्कायिका ये च पर्याप्तगा ये अपर्याप्तगास्ते सर्वे एकविधा अविशेषा अनानात्ता सर्वलोके पर्यापन्नगा प्रज्ञप्ता श्रमणायुष्मन् कस्मिन् भदन्त ! बादरतेज कायिकाना पर्याप्तगाना स्थानानि प्रज्ञप्तानि । गौतम । स्वस्थानेन अन्तर्मनुष्यक्षेत्रे अर्द्धतृतीयपु द्वीपसमुद्रेषु निर्व्याघाते पञ्चदशसु कर्मभूमिषु व्याघात प्रतीत्य पञ्चसु महाविदेहेषु एतेषु बादरतेज कायिकाना पर्याप्तकाना स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन लोकस्य असख्येयभागे

उववाएण लोयस्स दोसु उड्ढकवाडेसु तिरियलोयतट्टेसमुग्घाएण सव्वलोए सठाणेण लोयस्स असंखेज्जइ भागे। कहिण भंते ! सुहुमतेउकाइयाण पज्जत्तगाण अपज्जत्तगाणय ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा। सुहुमतेउकाइयाण जे पज्जत्तगा अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसा अणाणत्ता सव्वलोयपरियावन्नगा पन्नत्ता समणाउसो ! कहिण भंते ! वादरवाउकाइयाण पज्जत्तगाण ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! सठाणेण सत्तसु घणवाएसु सत्तसु घणवायवलएसु सत्तसु तणुवाएसु सत्तसु तणुवायवलएसु अहोलोए पायालेसु भवणेसु भवनपत्थडेसु भवणछिद्देसु भवणनिक्खुडेसु निरएसु निरयावलियासु निरयपत्थडेसु निरयछिद्देसु निरयनिक्खुडेसु उड्ढलोयकप्पेसु विमाणेसु विमाणावलियासु विमाणपत्थडेसु विमाणछिद्देसु विमाणनिक्खुडेसु तिरियलोएसु पाईणदाहिणउदीणसव्वेसु चेव लोगागासछिद्देसु लोगनिक्खुडेसुय एत्थण वादरवाउकाइयाणं पज्जत्तगाण ठाणा पन्नत्ता, उववाएण लोयस्स असंखेज्जेसु भागेसु समुग्घाएण लोयस्स असंखेज्जभागेसु

समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे । कस्मिन् भदन्त । वादरतेजःकायिकानामपर्याप्तकाना स्थानानि प्रज्ञप्तानि । गौतम । यत्रैव वादरतेजःकायिकाना पर्याप्तकाना स्थानानि प्रज्ञप्तानि तत्रैव वादरतेजःकायिकानामपर्याप्तकाना स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन सर्वलोके समुद्घातेन सर्वलोके स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे । कस्मिन् भदन्त । सूक्ष्माप्कायिकाना पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि ? गौ० । सूक्ष्माप्कायिका ये च पर्याप्ता ये चापर्याप्तास्ते सर्वे एकविधा अविशेषा अनानात्वा सर्वलोके पर्यापन्ना प्रज्ञप्ता श्रमणायुष्मन् कस्मिन् भदन्त । वादरतेजःकायिकाना पर्याप्तकाना स्थानानि प्रज्ञप्तानि, गौतम । स्वस्थानेन अन्तर्मनुष्यक्षेत्रे अर्द्धतृतीयेषु द्वीपसमुद्रेषु निर्व्याघात पञ्चदशसु कर्मभूमिषु व्याघात प्रतीत्य पञ्चसु महाविदेहेषु वादरतेजःकायिकाना पर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन लोकस्यासंख्येयभागे

सठाणेणं लोयस्स असंखेज्जेसु भागेसु । कहिणं भंते ! अपज्जत्तबादरवाउकाइयाण ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! जत्थेव बादरवाउकाइयाणं पज्जत्तगाण तत्थेव बादरवाउकाइयाण अपज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता । उववाएण सव्वलोए समुग्घाएण सव्वलोए । सठाणेण लोयस्स असंखेज्जेसु भागेसु । कहिण भंते ! सुहुम वाउकाइयाण पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! सुहुमवाउकाइयाणं जे पज्जत्तापज्जत्ताण ते सव्वे एगविहा अविसेसा अनाणत्ता सव्वलोयपरियावन्नगा पन्नत्ता समणाउसो ! कहिण भंते बादरवण स्सइकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा प० ? गोयमा ! सठाणेण सत्तसु घणोदहीसु सत्तसु घणोदहिवलएसु अहो लोए पायालेसु भवणेसु भवणपत्थडेसु उड्ढलोए कप्पेसु विमाणेसु विमाणावलियासु विमाणपत्थडेसु तिरिय लोए अगडेसु तलागेसु नदीसु वावीसु पुक्खरिणीसु दीहियासु गुंजालियासु सरेसु सरसरपंतियासु सरपं तियासु बिलपंतियासु उज्झरेसु निज्झरेसु चिल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दीवेसु समुद्देसु सव्वेसुचेव जलास एसु जलठाणेसु एत्थण बादरवणस्सइकाइयाण पज्जत्तगाण ठाणा पन्नत्ता । उववाएण सव्वलोए, समुग्घा

गे समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे । कस्मिन् भदन्त ! बादरतेजःकायिकानामपर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि ? गौतम ! यत्रैव बादरतेजःकायिकानां पर्याप्तानां स्थानानि तत्रैव बादरतेजःकायिकानामपर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन लोकस्य द्वयोरूर्ध्वकपाटयोः तिर्यक्लोकतट्टके समुद्घातेन सर्वलोके स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे । कस्मिन् भदन्त ! सूक्ष्मतेजःकायिकानां पर्याप्तकानामपर्याप्तकानां च स्थानानि प्रज्ञप्तानि । गौतम सूक्ष्मतेजःकायिकानां ये पर्याप्तका अपर्याप्तकास्ते सर्वे एकविधा अविशेषा अनानात्वाः सर्वलोके पर्याप्तगाः प्रज्ञप्ताः श्रमण आयुष्मन् । कस्मिन् भ० । बादरवायुकायिकानां पर्याप्तकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि ? गौ० सप्तसु घनवातेषु सप्तसु घन

एण सव्वलोए सठाणेण लोगस्स असंखेज्जइभागे। कहिणं भंते ! बादरवणस्सइकाइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा । जत्थेव बादरवणस्सइकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा तत्थेव बादरवणस्सइकाइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता। उववाएणं सव्वलोए समुग्घाएणं सव्वलोए सठाणेण लोयस्स असंखेज्ज ॥ मूल ॥

॥ अ० ॥ वातवलयेषु सप्तसु घनवातेषु सप्तसु घनवातवलयेषु अधोलोके पातालेषु भवनप्रस्तटेषु भवनछिद्रेषु भवननिष्कुटेषु निरयेषु निरयावलिकासु निरयप्रस्तटेषु निरयछिद्रेषु निरयनिष्कुटेषु ऊर्ध्वलोककल्पेषु विमानेषु विमानावलिकासु विमानप्रस्तटेषु विमानछिद्रेषु विमाननिष्कुटेषु तिर्यग्लोकेषु प्राचीनदक्षिणोदीचीनेषु, सर्वत्र चैव लोकाकाशछिद्रेषु लोकनिष्कुटेषु च एतादृशबादरवायुकायिकानां पर्याप्तकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन लोकस्यासंख्येयेषु भागेषु समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयेषुभागेषु स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयेषु भागेषु । कस्मिन्नु भदन्त । अपर्याप्तबादरवायुकायिकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि ? । गौतम । यत्रैव बादरवायुकायिकानां पर्याप्तानां तत्रैव बादरवायुकायिकानामपर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन सर्वलोके समुद्घातेन सर्वलोके । स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयेषु भागेषु । कस्मिन्नु भदन्त ! सूक्ष्मवायुकायिकानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि ? । गौतम सूक्ष्मवायुकायिकाः पर्याप्तापर्याप्ता येऽते सर्वे एकविधा अविशेषा अनानात्वाः सर्वलोकपर्यापन्नाः प्रज्ञप्ता श्रमणायुष्मन् । कस्मिन् भदन्त बादरवनस्पतिकायिकानां पर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । गौतम स्वस्थानेन सप्तसु घनोदधिषु सप्तसु घनोदधिवलयेषु अधोलोके पातालेषु भवनेषु भवनप्रस्तटेषु ऊर्ध्वलोके कल्पेषु विमानेषु विमानावलिकासु विमानप्रस्तटेषु तिर्यग्लोके अवटेषु तडागेषु नदीषु ह्रदेषु वापीषु पुष्करणीषु दीर्घिकासु गुञ्जालिकासु सरस्सु सरःपङ्क्तिकेषु सरःसरःपङ्क्तिकेषु बिलपङ्क्तिकेषु उज्झरेषु निर्झरेषु चिल्ललेषु पल्वलेषु वप्रिणेषु द्वीपेषु समुद्रेषु सर्वेषु चैव जलाशयेषु जलस्थानेषु एतेषु बादरवनस्पतिकायिकानां पर्याप्तकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन सर्वलोके, समुद्घातेन सर्वलोके स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे । कस्मिन्नु भदन्त । बादरवनस्पतिकायिकानामपर्याप्तकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि ।

इभागे। कहिणं भंते! सुहुमवणस्सइकाइयाणं पज्जत्तगाणं अपज्जत्तगाणय ठाणा प०? गो०! सुहुमवण स्सइकाइया जे पज्जत्तगा जे अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसा अनाणत्ता सव्वलोयपरियावन्नगा पन्नत्ता, समणाउसो। कहिणं भंते! बेइंदियाणं पज्जत्ता पज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता? गोयमा! उड्ढलोए तदेकदेसभागे, अहोलोए तदेकदेसभागे, तिरियलोए अगडेसु तलाएसु नदीसु वावीसु पुक्खरणीसु दीहियासु गुंजालियासु सरेसु सरपंतियासु सरसरपंतियासु उज्झरेसु निज्झरेसु चिल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दीवेसु समुद्देसु सव्वेसुचेव जलासएसु जलठाणेसु, एत्थणं बेइंदियाणं पज्जत्तापज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता। उववाएणं लोगस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे। कहिणं भंते! तेइंदियाणं पज्जत्तापज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता? गोयमा! उड्ढलोए तदेकदेसभाए अहोलोए तदेक

गौतम! बादरवनस्पतिकायिकानां पर्याप्तकानां स्थानानि तत्रैव बादरवनस्पतिकायिकानामपर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि। उपपातेन सर्वलोके समुद्घातेन सर्वलोके स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे। कस्मिन्नु भदन्त! पर्याप्तकानामपर्याप्तकानां च स्थानानि प्रज्ञप्तानि। गौतम! सूक्ष्मवनस्पतिकायिका ये पर्याप्तका ये अपर्याप्तकास्ते सर्वे एकविधा अविशेषा अनानात्वाः सर्वलोकपर्यापन्नकाः प्रज्ञप्ताः श्रमणा युष्मन्! कस्मिन्नु भदन्त! द्वीन्द्रियाणां पर्याप्तापर्याप्तकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि। गौतम! ऊर्ध्वलोके तदेकदेशभागे अधोलोके तदेकदेशभागे तिर्यक्लोके, अवटेषु तडागेषु नदीषु वापीषु पुष्करणीषु दीर्घिकासु गुञ्जालिकासु सरस्सु सरःपङ्क्तिकासु सरःसरःपङ्क्तिकासु उत्झरेषु निर्झरेषु चिल्ललेषु पल्वलेषु वप्रिणेषु द्वीपेषु समुद्रेषु सर्वेषु चैव जलाशयेषु जलस्थानेषु एतेषां द्वीन्द्रियाणां पर्याप्तापर्याप्तकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि। उपपातेन लोकस्यासंख्येयभागे समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे। कस्मिन्नु भदन्त! त्रीन्द्रियाणां पर्याप्तापर्याप्तकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि। गौतम! ऊर्ध्वलोके

देसभागे, तिरियलोए अगडेसु तलाएसु वावीसु पुक्करणीसु दीहियासु गुंजालियासु सरेसु सरपंतियासु सरसरपंतियासु विलपंतियासु उज्झरेसु निज्झरेसु चिल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दीवेसु समुद्देसु सव्वेसुचेव जलासएसु जलठाणेसु एत्थण तेइंदियाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पन्नत्ता, उववाएण लोयस्स असंखिज्जइभागे समुग्घाएणं लोयस्स असंखिज्जइभागे सठाणेण लोयस्स असंखेज्जइभागे। कहिण भंते! चउरिंदियाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पन्नत्ता? गोयमा! उड्ढलोए तदेकदेसभाए, अहोलोए तदेकदेसभागे, तिरियलोए अगडेसु तलाएसु वावीसु पुक्करिणीसु दीहियासु गुंजालियासु सरेसु सरपंतियासु सरसरपंतियासु णिज्झरेसु उज्झरेसु चिल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दीवेसु समुद्देसु सव्वेसुचेव जलासएसु जलठाणेसु एत्थण चउरिंदियाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पन्नत्ता। उववाएण लोयस्स असंखेज्जइभागे समुग्घाएण लोयस्स असंखेज्जइभागे, सठाणेण लोयस्स असंखेज्जइभागे। कहिण भंते! पचिंदियाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा प०

तदेकदेशभागे अधोलोके तदेकदेशभागे तिर्यक्लोके अवटेषु तडागेषु वापीषु पुष्करणीषु दीर्घिकासु गुञ्जालिकासु सरस्सु सर पङ्क्तिकासु सरस्सर पङ्क्तिकासु विलपङ्क्तिकासु उत्झरेषु निर्झरेषु चिल्वलेषु पल्वलेषु वप्पिणेषु द्वीपेषु समुद्रेषु सर्वेषु चैव जलाशयेषु जलस्थानेषु एतेषां त्रीन्द्रियाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि। उपपातेन लोकस्यासंख्येयभागे समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे। कस्मिन्नु भदन्त! चतुरिन्द्रियाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि। गौतम! ऊर्ध्वलोके तदेकदेशभागे अधोलोके तदेकदेशभागे तिर्यक्लोके अवटेषु तडागेषु वापीषु पुष्करणीषु दीर्घिकासु गुञ्जालिकासु सरस्सु सर पङ्क्तिकासु सरस्सर पङ्क्तिकासु निर्झरेषु उत्झरेषु चिल्वलेषु पल्वलेषु वप्पिणेषु द्वीपेषु समुद्रेषु सर्वेषु चैव जलाशयेषु जलस्थानेषु एतेषां चतुरिन्द्रियाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि। उपपातेन लोकस्या

इन्नागे। कहिण न्नते। सुक्कमवणस्सइकाइयाणं पज्जत्तगाणं ऋपज्जत्तगाणय ठाणा प० ? गो०। सुक्कमवण स्सइकाइया जे पज्जत्तगा जे ऋपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा ऋविसेसा ऋनाणत्ता सव्वलोयपरियावन्नगा पन्नत्ता, समाणाउसो ! कहिणं न्नंते। वेइंदियाण पज्जत्ता पज्जत्तगाण ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा। उड्ढलोए तदेकदेसन्नागे, ऋहोलोए तदेकदेसन्नागे, तिरियलोए ऋगडेसु तलाएसु नदीसु वावीसु पुक्करणीसु दीहियासु गुंजालियासु सरेसु सरपतियासु सरसरपतियासु उज्करेसु निज्करेसु चिल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दीवेसु स मुद्देसु सव्वेसुचेव जलासएसु जलठाणेसु, एत्थण वेइंदियाणं पज्जत्तापज्जत्तगाण ठाणा पन्नत्ता। उववाएणं लोगस्स ऋसखेज्जइन्नागे, समुग्घाएणं लोयस्स ऋसंखेज्जइन्नागे सठाणेण लोयस्स ऋसखेज्जइन्नागे। कहिणं न्नते ! तेइंदियाण पज्जत्तापज्जत्तगाण ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! उड्ढलोए तदेकदेसन्नाए ऋहोलोए तदेक

गौतम। व दरवनस्पतिकायिकाना पर्याप्तकाना स्थानानि तत्रैव वादरवनस्पतिकायिकानामपर्याप्ता स्थानानि प्रज्ञप्तानि। उपपातेन सर्वलोके स मुद्घातेन सर्वलोके सस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे। कस्मिन्नु भदन्त। पर्याप्तकानामपर्याप्तकाना च स्थानानि प्रज्ञप्तानि। गौतम ! सूक्ष्मवनस्पति कायिका ये पर्याप्तगा ये अपर्याप्तगास्ते सर्वे एकविधा अविशेषा अनानात्वा सर्वलोकपर्यापन्नगा प्रज्ञप्ता श्रमणा युष्मन्। कस्मिन्नु भदन्त द्वीन्द्रि याणा पर्याप्तापर्याप्तकाना स्थानानि प्रज्ञप्तानि। गौतम। ऊर्ध्वलोके तदकदेशभागे अधोलोके तदेकदेशभागे तिर्यक्लोके, अवटेषु तडागेषु नदीषु वापीषु पुष्करणीषु दीर्घिकासु गुञ्जालिकासु सरस्सु सर पङ्क्तिकासु सर सर पङ्क्तिकासु उत्भरेषु निर्भरेषु चिल्वलेषु पल्वलेषु वप्रिणेषु द्वीपेषु स मुद्रेषु सर्वेषु चैव जलाशयेषु जलस्थानेषु एतेषा द्वीन्द्रियाणा पर्याप्तापर्याप्तकाना स्थानानि प्रज्ञप्तानि। उपपातेन लोकस्यासंख्येयभागे समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे सस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे। कस्मिन्नु भदन्त त्रीन्द्रियाणा पर्याप्तापर्याप्तकाना स्थानानि प्रज्ञप्तानि। गौतम ऊर्ध्वलोके

देसन्नागे, तिरियलोए अगडेसु तलाएसु वावीसु पुक्करणीसु दीहियासु गुंजालियासु सरेसु सरपंतियासु सरसरपंतियासु बिलपंतियासु उज्झरेसु निज्झरेसु चिल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दीवेसु समुद्देसु सव्वेसुचेव जलासएसु जलठाणेसु एत्थणं तेइंदियाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पन्नत्ता, उववाएण लोयस्स असंखेज्जइन्नागे समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइन्नागे सठाणेण लोयस्स असंखेज्जइन्नागे । कहिण न्नंते ! चउरिंदियाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पन्नत्ता? गोयमा ! उड्ढलोए तदेकदेसन्नाए, अहोलोए तदेकदेसन्नागे, तिरियलोए अगडेसु तलाएसु वावीसु पुक्करिणीसु दीहियासु गुंजालियासु सरेसु सरपंतियासु सरसरपंतियासु निज्झरेसु उज्झरेसु चिल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दीवेसु समुद्देसु सव्वेसुचेव जलासएसु जलठाणेसु एत्थणं चउरिंदियाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पन्नत्ता । उववाएण लोयस्स असंखेज्जइन्नागे समुग्घाएण लोयस्स असंखेज्जइन्नागे, सठाणेण लोयस्स असंखेज्जइन्नागे । कहिण न्नंते ! पंचिंदियाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा प०

तदेकदेशभागे अधोलोके तदेकदेशन्नागे तिर्यक्लोके अवटेषु तडागेषु वापीषु पुष्करणीषु दीर्घिकासु गुञ्जालिकासु सरस्सु सर पङ्क्तिकासु सरस्सर पङ्क्तिकासु बिलपङ्क्तिकासु उज्झरेषु निर्झरेषु चिल्वलेषु पल्वलेषु वप्पिणेषु द्वीपेषु समुद्रेषु सर्वेषु चैव जलाशयेषु जलस्थानेषु एतेषां त्रीन्द्रियाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन लोकस्यासंख्येयभागे समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयन्नागे । कस्मिन्नु भदन्त । चतुरिन्द्रियाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । गौतम । ऊर्ध्वलोके तदेकदेशन्नागे अधोलोके तदेकदेशन्नागे तिर्यग्लोके अवटेषु तडागेषु वापीषु पुष्करणीषु दीर्घिकासु गुञ्जालिकासु सरस्सु सर पङ्क्तिकासु सरस्सर पङ्क्तिकासु निर्झरेषु उज्झरेषु चिल्वलेषु पल्वलेषु वप्पिणेषु द्वीपेषु समुद्रेषु सर्वेषु चैव जलाशयेषु जलस्थानेषु एतेषां चतुरिन्द्रियाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन लोकस्या

इन्नागे । कहिण न्नते! सुहुमवणस्सइकाइयाणं पज्जत्तगाणं ञ्चपज्जत्तगाणय ठाणा प० ? गो० ! सुहुमवण स्सइकाइया जे पज्जत्तगा जे ञ्चपज्जत्तगा ते सद्वे एगविहा ञ्चविसेसा ञ्चनाणत्ता सद्वलोयपरियावन्नगा पन्नत्ता, समणाउसो । कहिण न्नते । बेइंदियाण पज्जत्ता पज्जत्तगाण ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! उड्ढलोए तदेकदेसन्नागे, ञ्चहोलोए तदेकदेसन्नागे, तिरियलोए ञ्चगडेसु तलाएसु नदीसु वावीसु पुक्खरणीसु दीहियासु गुंजालियासु सरेसु सरपंतियासु सरसरपंतियासु उज्झरेसु निज्झरेसु चिल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दीवेसु समुद्देसु सद्वेसुचेव जलासएसु जलठाणेसु, एत्थण बेइंदियाणं पज्जत्तापज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता । उववाएणं लोगस्स ञ्चसंखेज्जइन्नागे, समुग्घाएणं लोयस्स ञ्चसंखेज्जइन्नागे सठाणेण लोयस्स ञ्चसंखेज्जइन्नागे । कहिण न्नते ! तेइंदियाण पज्जत्तापज्जत्तगाण ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! उड्ढलोए तदेकदेसन्नाए ञ्चहोलोए तदेक

गौतम । बादरवनस्पतिकायिकाना पर्याप्तकाना स्थानानि तत्रैव बादरवनस्पतिकायिकानामपर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन सर्वलोके समुद्घातेन सर्वलोके स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे । कस्मिन्नु भदन्त । पर्याप्तकानामपर्याप्तकाना च स्थानानि प्रज्ञप्तानि । गौतम । सूक्ष्मवनस्पतिकायिका ये पर्याप्तका ये अपर्याप्तकास्ते सर्वे एकविधा अविशेषाः अनानात्वाः सर्वलोकपर्यापन्नका प्रज्ञप्ता श्रमणा युष्मन् । कस्मिन्नु भदन्त द्वीन्द्रियाणा पर्याप्तापर्याप्तकाना स्थानानि प्रज्ञप्तानि । गौतम । ऊर्ध्वलोके तदेकदेशभागे अधोलोके तदेकदेशभागे तिर्यक्लोके, अवटेषु तडागेषु नदीषु वापीषु पुष्करणीषु दीर्घिकासु गुञ्जालिकासु सरस्सु सर पङ्क्तिकासु सर सर पङ्क्तिकासु उत्झरेषु निर्झरेषु चिल्वलेषु पल्वलेषु वप्रिणषु द्वीपेषु समुद्रेषु सर्वेषु चैव जलाशयेषु जलस्थानेषु एतेषा द्वीन्द्रियाणा पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन लोकस्यासंख्येयभागे समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे । कस्मिन्नु भदन्त त्रीन्द्रियाणा पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि । गौतम ऊर्ध्वलोके

तमसा ववगयगहचंदसूरनक्खत्तजोइसपहा मेदवसापूयरुहिरमंसचिक्खल्ललित्ताणुलेवणतला असुईवीसा परमदुब्भिगंधा काऊयअगणिवण्णाभा कक्खडफासा दुरहियासा असुभा नरगा असुभा नरएसु वेयणाओ एत्थ णं नेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता, उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, एत्थ णं बहवे नेरइया परिवसंति काला कालोभासा गम्भीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणगा परमकण्हा वण्णेणं पन्नत्ता, ते णं तत्थ णिच्चं भीया णिच्चं तत्था णिच्चं तसिया णिच्चं उव्विग्गा णिच्चं परममसुहसंबद्धनरगभयं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति। कहि णं भंते! रयणप्पभापुढवीनेरइयाणं पज्जत्ता पज्जत्ताणं ठाणा प०? कहि णं भंते! रयणप्पभापुढविनेरइया परिवसंति? गो०! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्समोगाहित्ता ॥ मूल ॥

क्षुरप्रसंस्थानसंस्थिता नित्यान्धकारतमसा व्यपगतग्रहचन्द्रसूर्यनक्षत्रज्योतिष्प्रभा मेदवसापूयरुधिरमांसकर्दमलिप्तानुलेपनतला अशुचा विस्रा (आमगन्धिका) परमदुरभिगन्धा कपोताग्निवर्णाभा (लोहे धम्यमाने यादृशोऽग्नेः कपोतवर्णस्तद्वदाभा येषामेव भूता) कर्कशस्पर्शा दुरध्यासा अशुभा नरका अशुभाश्च नरकवेदना। एतेषु नैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि। उपपातेन लोकस्य असंख्येयभागे समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे, एतेषु बहवो नैरयिकाः परिवसन्ति काला कालावभासा गम्भीरलोमहर्षा उत्त्रासनका परमकृष्णा वर्णेन प्रज्ञप्ता। तेन तत्र नित्यभीता नित्यत्रस्ता नित्यत्रसिता नित्यमुद्विग्ना नित्यपरमाशुभसंबद्धनरकभयं प्रत्यनुभूयमाना विहरन्ति। कस्मिन् भदन्त रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि। कस्मिन् भदन्त रत्नप्रभापृथिवीनैरयिका परिवसन्ति?। गौतम! एतस्या रत्नप्रभाया पृथिव्यामशीत्युत्तरशतयोजनशतसहस्रबाहुल्यायोपरि एकं योजनसहस्रमवगाह्याधस्तादेकं योज ॥ भ० ॥

? गोयमा ! उड्ढलोए तदेकदेसभागे अहोलोए तदेकदेसभागे तिरियलोए अगडेसु तलाएसु नदीसु दहेसु वावीसु पुक्खरिणीसु दीहियासु गुंजालियासु सरेसु सरपंतियासु सरसरपंतियासु बिलपंतियासु उज्झरेसु णिज्झरेसु विल्लरेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दीवेसु समुद्देसु सव्वेसुचेव जलासएसु जलठाणेसु एत्थण पंचिंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता , उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे , समुग्घाएण लोयस्स असंखेज्जइ भागे, सट्ठाणेण लोयस्स असंखेज्जइभाग । कहिण भंते ! नेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता ? कहिणं भंते ! नेरइया परिवसंति ? गोयमा । सट्ठाणेण सत्तसु पुढवीसु तंजहा—रयणप्पभाए सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए पंकप्पभाए धूमप्पभाए तमप्पभाए तमतमप्पभाए एत्थण नेरइयाण चउरासि निरयावास सयहस्साइ भवंतीति अक्खाय, तेण णरगा अंतोवट्टा बाहिंचउरंसा अहे खुरप्पसंठाणसंठिया निच्चंधयार

संख्येयभागे समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे । कस्मिन्नु भदन्त । पञ्चेन्द्रियाणा पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि ? । गौतम ऊर्ध्वलोके तदेकदेशभागे अधोलोके तदेकदेशभागे तिर्यग्लोके अवटेषु तडागेषु नदीषु-ह्रदेषु वापीषु पुष्करणीषु दीर्घिकासु गुञ्जालिकासु सरस्सु सर पङ्क्तिकासु सर सर:पङ्क्तिकासु बिलपङ्क्तिकासु उज्झरेषु निर्झरेषु चिल्वलेषु पल्वलेषु वप्पिणेषु द्वीपेषु समुद्रेषु सर्वेषु चैव जलाशयेषु जलस्थानेषु एतेषां पञ्चेन्द्रियाणा पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन लोकस्यासंख्येयभागे समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभाग स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे । कस्मिन्नु भदन्त । नैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि ? । कस्मिन्नु भदन्त । नैरयिका परिवसन्ति ? । गौतम स्वस्थानेन सप्तसु पृथिवीषु । तद्यथा-रत्नप्रभायां शर्करप्रभायां वालुकप्रभायां पङ्कप्रभायां धूमप्रभायां तमःप्रभायां तमस्तमःप्रभायाम् एतेषां नैरयिकाणां चतुरशीतिनरकावासशतसहस्राणि भवन्तीत्याख्यातम् । तेन नरका अन्तर्वृत्ता बहिश्चतुरस्रा अध

नरगभयं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति । कहि णं भंते ! सक्करप्पभापुढविनेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता ? कहि णं भंते, सक्करप्पभापुढविणेरइया परिवसंति ? गोयमा ! सक्करप्पभापुढवीए बत्तीसुत्तर जोयणसयसहस्सबाहल्लाए, उवरिं एगं जोयणसहस्सं उग्गाहित्ता हेट्ठा चेगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे तीसुत्तरजोयणसयसहस्से एत्थ णं सक्करप्पभापुढवीणेरइयाणं पणवीसं निरयावाससहस्सा हवंतीतिमक्खायम् ते णं नरगा अंतो वट्टा बाहिं चउरंसा अहे खुरप्पसंठाणसंठिया णिच्चंधयारतमसा ववगयगहचंदसूरणक्खत्तजोइसपहा मेयवसापूयपडलरुहिरमंसचिक्खिल्ललित्ताणुलेवणतला असुईवीसा परमदुब्भिगंधा काऊअगणिवण्णाभा कक्खडफासा दुरहियासा असुभा नरगा असुभा नरगेसु वेयणाओ एत्थ णं सक्करप्पभापुढविणेरइयाणं पज्जत्ता पज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता। उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे । तत्थ णं बहवे सक्करप्पभापुढविनेरइया परिवसंति । काला

पृथिवीनैरयिकाः परिवसन्ति ? गौतम शर्करप्रभापृथिव्या द्वात्रिंशदुत्तरयोजनशतसहस्रबाहल्याया उपरि एकं योजनसहस्रमवगाह्याध एकं योजनसहस्रं वर्जयित्वा मध्ये त्रिंशदुत्तरयोजनशतसहस्रे अत्र शर्करप्रभापृथिवीनैरयिकाणां पञ्चविंशतिर्निरयावासशतसहस्राणि भवन्तीत्याख्यातम् । ते नरका अन्तर्वृत्ता बहिश्चतुरस्रा अधः क्षुरप्रसंस्थानसंस्थिता नित्यान्धकारतमसा व्यपगतग्रहचन्द्रसूर्यनक्षत्रज्योतिष्प्रभा मेदवसापूयपटलरुधिरमांसकर्दमलिप्तानुलेपनतला अशुचा विस्रा परमदुरभिगन्धाः कापोताग्निवर्णाभाः कर्कशस्पर्शा दुरध्यासा अशुभा नरका अशुभा नरकेषु वेदनाः । अत्र शर्करप्रभापृथिवीनैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन लोकस्यासंख्येयभागे समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे । तस्मिन् बहवः शर्करप्रभपृथिवीनैरयिकाः परिवसन्ति । काला कालावभासा गम्भीरलोमहर्षा भीमा उत्त्रासनका

हेट्ठा चेगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे अट्ठहत्तरिजोयणसयसहस्से एत्थ णं रयणप्पभापुढविनेरइयाणं तीसं निरयावाससयसहस्सा भवंतीति मक्खायं, ते णं नरगा अंतो वट्टा बाहिं चउरंसा अहे खुरप्पसंठाणसंठिया निच्चंधयारतमसा ववगयगहचंदसूरनक्खत्तजोइसपहा मेदवसापूयपडलरुहिरमंसचिक्खल्ललित्ताणुलेवणतला असुईवीसा परमदुब्भिगंधा काउअगणिवण्णाभा कक्खडफासा दुरहियासा असुभा णरगा असुभा नरगेसु वेदणाओ एत्थ णं रयणप्पभापुढविनेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता, उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे। तत्थ णं बहवे रयणप्पभापुढविनेरइया परिवसंति। काला कालोभासा गंभीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणगा परमकिण्हा वन्नेणं पण्णत्ता, समणाउसो ! ते णं णिच्चं भीया निच्चं तत्था णिच्चं तसिया णिच्चं उव्विग्गा निच्चं परममसुभसंबद्ध

नसहस्रं वर्जयित्वा मध्येऽष्टसप्तति योजनशतसहस्रे एतेषु रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकाणां त्रिंशन्निरयावासशतसहस्राणि भवन्तीत्याख्यातम्। तेन नरका अन्तर्वृत्ता बाह्ये चतुरस्रा अधः क्षुरप्रसंस्थानसंस्थिता नित्यान्धकारतमसा व्यपगतग्रहचन्द्रसूर्यनक्षत्रज्योतिषप्रभा मेदवसापूयपटलरुधिरमांसकर्दमलिप्तानुलेपनतला अशुभा विस्रा परमदुरभिगन्धा कपोताग्निवर्णाभा कर्कशस्पर्शा दुरध्यासा अशुभा नरका नरकेषु वेदनाश्च। एतेषां रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि। उपपातेन लोकस्यासंख्येयभागे समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे। तत्र बहवो रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकाः परिवसन्ति। कालाः कालावभासा गम्भीरलोमहर्षा भीमा उत्त्रासनकाः परमकृष्णा वर्णेन प्रज्ञप्ता श्रमणायुष्मन्। ते नित्यं भीता नित्यं त्रस्ता नित्यं त्रसिता नित्यमुद्विग्ना नित्यं परमाशुभसंबद्धनरकभयं प्रत्यनुभवमाना विहरन्ति। कस्मिन्नु भदन्त शर्करप्रभापृथिवीनैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि। कास्मिन्नु भदन्त शर्करप्रभा

॥ मूल ॥

सखेज्जइभागे । सट्ठाणेण लोयस्स असंखेज्जइभागे । तत्थणं बहवे वालुयप्पभापुढवीणेरइया परिवसंति काला कालोभासा गंभीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणगा परमकिण्हा वण्णेण प० समणाउसो । तेण निच्चं भीया निच्चं तत्था निच्चं तासिया निच्चं उव्विग्गा निच्चं परममसुभसबद्धं णरगभयं पच्चणुब्भवमाणा विहरति। कहिण भंते । पंकप्पभापुढविणेरइयाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा । पंकप्पभापुढवीए वीसुत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरि एगं जोयणसहस्सं उग्गाहित्ता हेट्ठावेगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे अट्ठारसुत्तरे जोयणसयसहस्से एत्थणं पंकप्पभापुढविनेरइयाणं दस निरयावाससयसहस्सा भवतीति मक्खायं । तेणं णरगा अंतो वट्टा बाहिं चउरंसा अहे खुरुप्पसंठाणसंठिया निच्चंधयारतमसा ववगयगहचंदसूरनक्खत्तजोइसपहा मेयवसापूयपडलरुहिरमसचिक्खिल्ललित्ताणुलेवणतला असुईवीसा परमदुब्भिगंधा

॥ अ० ॥

ना स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन लोकस्यासंख्येयभागे, समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे । तस्मिन् बहवः वालुकप्रभपृथिवीनैरयिकाः परिवसन्ति । कालाः कालाभासाः गम्भीरलोमहर्षा भीमाः उत्त्रासनकाः परमकृष्णा वर्णेन प्रज्ञप्ताः श्रमणायुष्मन् । तेन नित्यभीताः नित्यत्रस्ता नित्य त्रसिता नित्यमुद्विग्ना नित्यं परमाशुभसंबद्धं नरकभयं प्रत्यनुभवमाना विहरन्ति । कस्मिन् भदन्त । पङ्कप्रभपृथिवीनैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि ? । गौतम । पङ्कप्रभपृथिव्या विंशत्युत्तरयोजनशतसहस्रबहुलायामुपरि एकं योजनसहस्रमुद्गाह्याध एकं योजनसहस्रं वर्जयित्वा मध्ये अष्टादशोत्तरे योजनशतसहस्रे एतेषु पङ्कप्रभपृथिवीनैरयिकाणां दशनिरयावास शतसहस्राणि भवन्तीत्याख्यातम् । तेन नरका अन्तर्वृत्ता बहिश्चतुरस्रा अध क्षुरप्रसंस्थानसंस्थिता नित्यान्धकारतमसा व्यपगतग्रहचन्द्रसूर्यनक्षत्रज्योतिषप्रकाशा मेदवसापूयपटलरुधिरमांसकर्दमलिप्तानुलेपनतला अशुचा विस्रा परमदुरभिगन्धा कापूयाग्निवर्णाभा कर्कशस्पर्शा दुरध्यासा अशुभा नरका अशु

कालाभासा गम्भीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणगा परमकिण्हा वण्णेणं पण्णत्ता । समणाउसो ! तेणं निच्चं भीता निच्चं तत्था निच्चं तसिया निच्चं उव्विग्गा निच्चं परममसुभसबद्धं नरगभयं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति । कहिणं भंते ! वालुयप्पभापुढवीणेरइयाणं पज्जत्ता पज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! वालुयप्पभापुढवीए अट्ठावीसुत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्सं उग्गाहित्ता हेट्ठा वेगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे छव्वीसुत्तरजोयणसयसहस्से एत्थणं वालुयप्पभापुढविणेरइयाणं पण्णरसनिरयावासयसहस्सा भवतीति मक्खायं । तेणं नरगा अन्तो वट्टा बाहिं चउरंसा अहे खुरप्पसंठाणसंठिया निच्चंधयारतमसा ववगयगहचंदसूरणक्खत्तजोइसपहा मेयवसापूयपडलरुहिरमंसचिक्खिल्ललित्ताणुलेवणतला असुईवीसा परमदुब्भिगंधा काऊअगणिवण्णाभा कक्खडफासा दुरहियासा असुभा नरगा असुभा णरएसु वेयणा एत्थणं वालुयप्पभापुढवीणेरइयाणं पज्जत्ता पज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता । उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे । समुग्घाएणं लोयस्स अ

परमकृष्णा वर्णेन प्रज्ञप्ता श्रमणायुष्मन् । तेन नित्यभीता नित्यत्रस्ता नित्य त्रसिता नित्यमुद्विग्ना नित्य परमाशुभसबद्धनरकभय पर्यनुभूयमाना विहरन्ति । क्वसिन् भदन्त ! वालुकप्रभपृथिवीनैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । गौतम वालुकप्रभपृथिव्यामष्टाविंशत्युत्तरयोजनशतसहस्रबहुलायामुपरि एकं योजनसहस्रमुद्गाह्याधस्तात् योजनसहस्रं वर्जयित्वा मध्ये षड्विंशत्युत्तरयोजनशतसहस्रे एतेषु वालुकप्रभपृथिवीनैरयिकाणां पञ्चदशनिरयावासशतसहस्राणि भवन्तीत्याख्यातम् । तत नरका अन्तर्वृत्ता बाह्ये चतुरस्रा अध क्षुरप्रसंस्थानसंस्थिता नित्यान्धकारतमसा व्यपगतग्रहचन्द्रसूर्यनक्षत्रज्योतिषप्रकाशा मेदवसापूयपटलरुधिरमांसकर्दमलिप्तानुलेपनतला अशुचा विस्रा परमदुरभिगन्धा कापोताग्निवर्णाभा कर्कशस्पर्शा दुरध्यासा अशुभा नरका अशुभा नरकेषु वेदना । एतेषु वालुकप्रभपृथिवीनैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्त

त्तजोइसपहा मेयवसापूयपडलरुहिरमंसचिक्खल्ललित्ताणुलेवणतला असुईवीसा परमदुब्भिगंधा काऊअगणिवण्णाभा कक्खडफासा दुरहियासा असुभा नरगा असुभा नरगेसु वेयणाओ एत्थ णं धूमप्पभापुढविणेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता । उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे तत्थ णं बहवे धूमप्पभापुढविणेरइया परिवसंति काला कालोभासा गंभीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणगा परमकिण्हा वण्णेणं पण्णत्ता समणाउसो । ते णं णिच्चं भीया निच्चं तत्था निच्चं तसिया निच्चं उव्विग्गा निच्चं परममसुभमसंबद्धनरगभयं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति । कहि णं भंते । तमापुढविनेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा । तमापुढवीए सोलसुत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्सं उग्गाहित्ता हेट्ठावेगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे चोद्दसुत्तरे जोयणसहस्से

ता नित्यान्धकारतमसा व्यपगतग्रहचन्द्रसूर्यनक्षत्रज्योतिषप्रभा मेदवसापूयपटलरुधिरमांसकर्दमलिप्तानुलेपनतला अशुचा विस्रा परमदुरभिगन्धा कापूताग्निवर्णाभा कर्कशस्पर्शा अशुभा नरका अशुभा नरकेषु वेदनाश्च । एतेषु धूमप्रभपृथिवीनैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन लोकस्यासंख्येयभागे समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे । तत्र तु बहवो धूमप्रभपृथिवीनैरयिका परिवसन्ति । काला कालाभासा गम्भीरलोमहर्षा भीमा उत्त्रासनका परमकृष्णा वर्णेन प्रज्ञप्ता श्रमणायुष्मन् । ते नित्यभीता नित्यत्रस्ता नित्यत्रसिता नित्यमुद्विग्ना नित्यपरमाशुभसंबद्धनरकभयं प्रत्यनुभूयमाना विहरन्ति । कस्मिन्नु भदन्त । तम प्रभपृथिवीनैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । गौतम । तम पृथिव्या षोडशोत्तरयोजनशतसहस्रबहुलायामुपरि एकं योजनसहस्रमुद्गृहीत्वाध एकं योजनसहस्रं वर्जयित्वा मध्ये चतुर्दशोत्तरे योजनसहस्रे एतेषु तम प्रभपृथिवीनैरयिकाणामेकस्मिन्नञ्चोने नरकावासशतसहस्रे भवन्तीत्याख्यातम् । ते नरका अन्त

काऊयगणिवन्ना कक्खडफासा दुरहियासा असुभा नरगा असुभा नरगेसु वेयणाओ एत्थ णं पंकप्पभापुढविणेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता । उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे तत्थ णं बहवे पंकप्पभापुढविणेरइया परिवसंति, काला कालोभासा गंभीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणगा परमकिण्हा वण्णेणं पण्णत्ता समणाउसो । ते णं निच्चं भीया निच्चं तत्था निच्चं तसिया निच्चं उव्विग्गा निच्चं परममसुभसंबद्धं नरगभयं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति । कहि णं भंते ! धूमप्पभापुढविनेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! धूमप्पभाए पुढवीए अट्ठारसुत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्सं ओगाहित्ता हेट्ठा वेगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे सोलसुत्तरे जोयणसयसहस्से एत्थ णं धूमप्पभापुढवीणेरइयाणं तिण्णि निरयावाससयसहस्सा हवंतीतिमक्खायं तेणं नरगा अंतो वट्टा बाहिं चउरंसा अहे खुरुप्पसंठाणसंठिया निच्चंधयारतमसा ववगयगहचंदसूरनक्ख

भा नरकेषु वेदना एतेषु पङ्कप्रभा पृथिवीनैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन लोकस्यासंख्येयभागे समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे । तत्र तु बहवः पङ्कप्रभपृथिवीनैरयिकाः परिवसन्ति । कालाः कालावभासाः गम्भीरलोमहर्षाः भीमाः उत्त्रासनकाः परमकृष्णाः वर्णेन प्रज्ञप्ताः श्रमणायुष्मन् । ते नित्यं भीताः नित्यत्रस्ताः नित्यं त्रसिताः नित्यमुद्विग्नाः नित्यं परमाशुभसंबद्धनरकभयं प्रत्यनुभवमानाः विहरन्ति । कस्मिन्तु भदन्त ! धूमप्रभपृथिवीनैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि ? । गौतम ! धूमप्रभायाः पृथिव्यामष्टादशोत्तरयोजनशतसहस्रबहुलायामुपरि एकं योजनसहस्रमुद्गृह्य एकं योजनसहस्रं वर्जयित्वा मध्ये षोडशोत्तरे योजनशतसहस्रे अत्र तेषु धूमप्रभपृथिवीनैरयिकाणां त्रीणि निरयावासशतसहस्राणि भवन्तीत्याख्यातम् । ते नरका अन्तर्वृत्ता बहिश्चतुरस्रा अधः क्षुरप्रसंस्थानसंस्थि

॥ मूल ॥

हेठावि अद्धतेवन्नजोयणसहस्स वज्जित्ता मज्झे तिन्निजोयणसहस्सेसु एत्थणं तमतमापुढवीणेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताण पचदिसि पच अणुत्तरा महइमहालगा महानिरया पन्नत्ता, तंजहा—काले महाकाले रोरुए महारोरुए अपइठाणे, तेण नरगा अंतो वट्टा बाहिं चउरंसा अहे खुरप्पसंठाणसंठिया निच्चंधयारतमसा ववगयगहचंदसूरनक्खत्तजोइसपहा मेयपूयवसारुहिरमंसचिक्खल्ललित्ताणुलेवणतला असुईवीसा परमदुब्भिगंधा कक्खडफासा दुरहियासा असुभा नरगा असुभा नरगेसु वेदनाओ एत्थणं तमतमापुढविनेरइयाणं ठाणा पन्नत्ता, उववाएण लोयस्स असंखेज्जइभाए समुग्घाएण लोयस्स असंखेज्जइभाए सठाणेण लोयस्स असंखेज्जइभाए तत्थण बहवे तमतमापुढविनेरइया परिवसंति काला कालाभासा गंभीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणया परमकिण्हा वन्नेण पन्नत्ता समणाउसो। तेण निच्चं भीया णिच्चं तत्था निच्चं उव्विग्गा निच्चं परमअसुभसंबद्धं नरगभयं पच्चणुभवमाणा विहरंति॥ असीतबत्तीस अट्ठावीसंचहोइवीसंच। अट्ठारससो

॥ अ० ॥

सहस्राण्युद्गृहीत्वाधोपि अर्द्धत्रिपञ्चाशद्योजनसहस्राणि वर्जयित्वा मध्ये त्रियोजनसहस्रेषु एतषु तमस्तम पृथिवीनैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां पञ्चदशपञ्चानुत्तरा महामहालया महानिरया प्रज्ञप्ता तद्यथा-काले महाकाले रौरवे महारौरवे अप्रतिष्ठाने। तेन नरका अन्तर्वृत्ता बहिश्चतुरस्रा अध क्षुरप्रसंस्थानसंस्थिता नित्यान्धकारतमसा व्यपगतग्रहचन्द्रसूर्यनक्षत्रज्योतिषप्रभा मेदपूयवसारुधिरमांसपलकर्दमलिप्तानुलेपनतला अशुभा विस्रा परमदुरभिगन्धा कर्कशस्पर्शा दुरत्यया अशुभा नरका अशुभा नरकेषु वेदनाश्च, एतषु तमस्तम पृथिवीनैरयिकाणां स्थानानि प्रज्ञप्तानि। उपपातेन लोकस्यासंख्येयभागे समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे तत्र बहवस्तमस्तम पृथिवीनैरयिका परिवसन्ति काला कालाभासा गम्भीरलोमहर्षा भीमा उत्त्रासनका परमकृष्णा वर्णेन प्रज्ञप्ता श्रमणायुष्मन्। तेन नित्य भीता नित्य त्रस्ता नि

एत्थणं तमप्पभापुढविणेरइयाण एगं पंचूणे नरगावाससयसहस्से हवंतीति मक्खायं, तेणं नरगा अंतो वट्टा बाहिं चउरंसा अहे खुरप्पसंठाणसंठिया निच्चंधयारतमसा ववगयगहचंदसूरनक्खत्तजोइसपहा मेदवसापूयपडलरुहिरमंसचिक्खिल्ललित्ताणुलेवणतला असुईवीसा परमदुब्भिगंधा कक्खडफासा दुरहियासा असुभा नरगा असुभा नरगेसु वेयणाओ एत्थणं तमापुढविणेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता, उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे समुग्घाएण लोयस्स असंखेज्जइभागे सठाणेण लोयस्स असंखेज्जइभागे, तत्थण बहवे तमप्पभापुढवीणेरइया परिवसंति काला कालोभासा गंभीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणगा परमकिण्हा वण्णेण पण्णत्ता समणाउसो। तेण निच्चं भीया निच्चं तत्था निच्चं तसिया निच्चं उव्विग्गा निच्चं परममसुभसंबद्धं नरगभयं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति। कहिणं भंते। तमतमापुढविणेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा प०, ? गोयमा! तमतमापुढवीए अट्ठुत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरि अद्धतेवण्णजोयणसहस्साइ उग्गाहित्ता

वृत्ता बहिश्चतुरस्रा अध क्षुरप्रसंस्थानसंस्थिता नित्यान्धकारतमसा व्यपगतग्रहचन्द्रसूर्यनक्षत्रज्योतिषप्रभा मेदवसा पूयपटलरुधिरमांसकर्दमलिप्तानुलेपनतला अशुचा विस्रा परमदुरभिगन्धा कर्कशस्पर्शा दुरध्यासा अशुभा नरका अशुभा नरकेषु वेदना एतेषु तम प्रभपृथिवीनैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि। उपपातेन लोकस्यासंख्येयभागे समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे तत्र बहवस्तम प्रभपृथिवीनैरयिका परिवसन्ति काला॰ कालावभासा गम्भीरलोमहर्षा भीमा उत्त्रासनका परमकृष्णा वर्णेन प्रज्ञप्ता श्रमणायुष्मन्। तेन नित्यभीता नित्यत्रस्ता नित्यत्रसिता नित्यमुद्विग्ना नित्य परमाशुभसंबद्ध नरकभय प्रत्यनुभवमाना विहरन्ति। कस्मिन् भदन्त! तमस्तम पृथिवीनैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि ? । गौतम। तमस्तम॰ पृथिव्यामष्टोत्तरयोजनशतसहस्रबहुलायामुपरि अर्द्धत्रिपञ्चाशद्योजन

हेट्ठावि अद्धतेवण्णजोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे तिसु जोयणसहस्सेसु एत्थणं तमतमापुढवीणेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताण पंचदिसिं पंच अणुत्तरा महइमहालगा महानिरया पण्णत्ता, तंजहा—काले महाकाले रोरुए महारोरुए अपइट्ठाणे, ते णं नरगा अंतो वट्टा बाहिं चउरंसा अहे खुरप्पसंठाणसंठिया निच्चंधयारतमसा ववगयगहचंदसूरनक्खत्तजोइसपहा मेयपूयवसारुहिरमंसचिक्खल्ललित्ताणुलेवणतला असुईवीसा परमदुब्भिगंधा कक्खडफासा दुरहियासा असुभा नरगा असुभा नरगेसु वेदणाओ एत्थ णं तमतमापुढविनेरइयाणं ठाणा पन्नत्ता, उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभाए समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभाए सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभाए तत्थ णं बहवे तमतमापुढविनेरइया परिवसंति काला कालोभासा गंभीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणया परमकिण्हा वन्नेणं पन्नत्ता समणाउसो। ते णं निच्चं भीया निच्चं तत्था निच्चं उव्विग्गा निच्चं परममसुभसंबद्धं नरगभयं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति॥ असीतबत्तीस अठावीसचहोइवीसच । अठारससो

सहस्राण्यूर्ध्वाधोपि अर्द्धत्रिपञ्चाशद्योजनसहस्राणि वर्जयित्वा मध्ये त्रियोजनसहस्रेषु अत्र तमस्तम पृथ्वीनैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां पञ्चदिशि पञ्चानुत्तरा महामहालया महानिरया प्रज्ञप्ताः तद्यथा-काले महाकाले रौरवे महारौरवे अप्रतिष्ठाने। ते नरका अन्तर्वृत्ता बहिश्चतुरस्रा अधः क्षुरप्रसंस्थानसंस्थिता नित्यान्धकारतमसा व्यपगतग्रहचन्द्रसूर्यनक्षत्रज्योतिषप्रभा मेदपूयवसारुधिरमांसपलकर्दमलिप्तानुलेपनतला अशुचा विस्रा परमदुरभिगन्धा कर्कशस्पर्शा दुरध्यासा अशुभा नरका अशुभा नरकेषु वेदनाश्च, अत्र तमस्तम पृथ्वीनैरयिकाणां स्थानानि प्रज्ञप्तानि। उपपातेन लोकस्यासंख्येयभागे समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे तत्र बहवस्तमस्तम पृथ्वीनैरयिकाः परिवसन्ति काला कालाभासा गम्भीरलोमहर्षा भीमा उत्त्रासनका परमकृष्णा वर्णेन प्रज्ञप्ता श्रमणायुष्मन्। ते नित्य भीता नित्य त्रस्ता नि

लसग ऋठुत्तरमेवहेठिमया ॥ १ ॥ ऋठुत्तरंचवत्तीस ठव्वीसचेवसयसहस्सतु ऋठारससोलसग चोद्दससहियं तुठ्ठीए । ऋठ्ठतवन्नसहस्सा उवरिमहोवज्जिऊतोन्नणिय । मज्झेउतिसुसहस्से सुहोंतिनरगातमतमाए । तीसा यपन्नवीसा पन्नरसदसेवसयसहस्साइ । तिन्नियपचूणेग पंचेवऋणुत्तरानरगा ॥ ४ ॥ कहिण न्नते ! पचिं दियतिरिक्कजोणियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा प० ? गो० ! उड्ढलोए तदेकदेसन्नाए ऋहोलोए तदेकदेस न्नाए तिरियलोएसु ऋगढेसु तलाएसु नदीसु दहेसु वावीसु पुक्करिणीसु दीहियासु गुंजालियासु सरेसु स रपंतियासु सरसरपंतियासु बिलपंतियासु उज्झरेसु निज्झरेसु चिल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दीवेसु समुद्देसु स व्वेसुचेव जलासएसु जलठाणेसु एत्थण पंचिंदियतिरिक्कजोणियाणं पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा प० । उववा एण लोगस्स ऋसखेज्जइन्नागे । समुग्घाएण लोयस्स ऋसखेज्जइन्नागे । सठाणेणं लोयस्स ऋसखेज्जइन्नागे ।

त्यमुद्विग्ना नित्य परमाशुभसबद्ध नरकभय पर्यनुभूयमाना विहरन्ति । अशीतिर्द्वात्रिंशत् अष्टाविंशतिर्विंशतीच । अष्टादश षोडशकमष्टोत्तरमेवा धोधिमया ॥ १ ॥ अष्टोत्तर द्वात्रिंशत् षड्विंशतिश्चशतसहस्रतु ॥ अष्टादश षोडशक चतुर्दशसहित तु षट्त्रिंशत् । अर्द्धत्रिपञ्चाशत्सहस्र मुपरि मध्योवर्ज्य ततो भणितम् । मध्येतुत्रिषुसहस्रे षुभवन्तिनरकास्तमस्तमस ॥ त्रिंशत्चपञ्चविंशत् पञ्चदशैवशतसहस्राणि । त्रीणिचपञ्चोनैक पञ्चैवा नुत्तरानरका ॥ ४ ॥ कस्मिन् भदन्त । पञ्चेन्द्रियतिर्यक्योनिकाना पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि ? गौतम ! ऊर्ध्वलोके तदेकदेशभागे अधोलोके तदेकदेशभागे तिर्यक्लोकेषु अवटेषु तडागेषु नदीषु ह्रदेषु वापीषु पुष्करणीषु दीर्घिकासु गुञ्जालिकासु सरस्सु सर पङ्क्तिकासु सर सर पङ्क्तिकासु बिलपङ्क्तिकासु उत्झरेषु निर्झरेषु चिल्वलेषु पल्वलेषु द्वीपषु समुद्रेषु सर्वेषु चैव जलाशयेषु जलस्थानेषु एतेषु पञ्चेन्द्रियतिर्यक्यो निकाना पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि, उपपातेन लोकस्यासंख्येयभागे समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे ।

॥ मूल ॥

कहिण न्नते ! मणुस्साण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पं० । श्रुतो मणुस्सखित्ते पणयालीसाए जोयणसयसहस्सेसु श्रड्ढाईज्जेसु दीवसमुद्देसु पन्नरससु कम्मन्नूमीसु तीसाए श्रकम्मन्नूमीसु छप्पन्नाए श्रुतरदीवेसु एत्थणं मणुस्साण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा प० । उववाएण लोयस्स श्रुसखेज्जइन्नागे समुग्घाएण सव्वलोए सठाणेण लोयस्स श्रुसखेज्जइन्नागे । कहिण न्नते ! न्नवणवासीण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा प० ? कहिणं न्नवणवासीदेवा परिवसंति ? गो० ! इमीसे रयणप्पन्नाएपुढवीए श्रुसीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरि एग जोयणसहस्स उग्गाहित्ता हेठाचेग जोयणसहस्स वज्जित्ता मज्के श्रुठुत्तरिजोयणसयसहस्स एत्थण न्नवणवासीदेवाण पज्जत्तापज्जत्ताण सत्तन्नवणकोडीत्ते वावत्तरिच न्नवणावाससयसहस्सा हवतीति मरकाय, तेण न्नवणा वाहि वट्टा श्रुतो समचउरसा श्रुहे पुक्करकन्नियासठाणसठिया उक्किन्नतरविउलगं

॥ श्र० ॥

कस्मिन् न्नदन्त ! मनुष्याणा पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि । श्रन्तर्मनुष्यक्षेत्रे पञ्चचत्वारिंशत्तमेषु योजनशतसहस्रेषु सार्द्धद्वयेषु द्वीपसमुद्रेषु पञ्चदशसु कर्मन्नूमिषु त्रिंशदकर्मन्नूमिषु षट्पञ्चाशदन्तरद्वीपेषु एतेषु मनुष्याणा पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन लोकस्यासख्येयन्नागे समुद्घातेन लोकस्यासख्येयन्नागे स्वस्थानेन लोकस्यासख्येयन्नागे । कस्मिन् न्नदन्त । न्नवनवासिना देवाना पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि कस्मिन् न्नदन्त । न्नवनवासिनो देवा परिवसन्ति ? गौतम ! एतस्या रत्नप्रन्नपृथिव्यामशीत्युत्तरयोजनशतसहस्रबहुलायामुपर्येक योजनसहस्रमुद्गृह्णीत्वाऽधस्तादेक योजनसहस्र वर्जयित्वा मध्येऽष्टसप्तति योजनशतसहस्रमेतेषु न्नवनवासिदेवाना पर्याप्तापर्याप्ताना सप्तन्नवनकोट्या द्विसप्ततिन्नवनावासशतसहस्राणि न्नवन्तीत्याख्यातम् । तेन न्नवनानि वाह्यतो वृत्तानि श्रन्त समचतुरस्राणि श्रध पुष्करकर्णिकासस्थानसस्थितानि उत्कीर्णान्तरविपुलगम्भीरखातपरिखानि प्राकाराट्टालककपाटतोरणप्रतिद्वारदेशन्नागानि यन्त्रशतघ्नीमुशलमुसुण्ढीपरिवारितानि श्रयोध्यानि सदामानि तानि

भीरखातफलिहा पागारट्टालयकवाडतोरणपडिदुवारदेसभागा जंतसयग्घिमुसंढिपरिवारिया अउज्झा सयाजया सया अजेया सदा गुत्ता अडयालकोट्ठरइया अडयालकयवणमाला खेमा सिवा किंकरा मरदंडोवरक्खिया लाउल्लोइयमहिया गोसीससरसरत्तचदनदद्दरदिन्नपंचंगुलितला उवचियचंदणकलसा चंदणघडसुकयतोरणपडिदुवारदेसभागा आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावा पंचवन्नसरससुरभिमुक्कपुप्फपुंजोवयारकलिया (ग्र १९००) कालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कधूवमघमघंतगंधुद्धुयाभिरामा सुगंधवरगंधगंधिया गंधवट्टिभूया अच्छरगणसंघसंविकिन्ना दिव्वतुडियसद्दसंपणादित्ता सव्वरयणमया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा णीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पभा ससिरिया सउज्जोया पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा एत्थ णं भवणवासीण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा प० । उववाएण लोगस्स असंखेज्जइ

सदाजेयानि सदा गुप्तानि अष्टचत्वारिंशत्कोष्ठकरचितानि अष्टचत्वारिंशद्वनमालानि क्षेमाणि शिवानि किङ्करामरदण्डकृतोपरक्षितानि लाउल्लोइय (सेटिकागोमयादिभिरुल्लेपनसमृष्टीकरण) महितानि गोशीर्षसरसरक्तचन्दनदर्दरदत्तपञ्चाङ्गुलितलानि उपचितचन्दनकलशानि चन्दनघटसुकृततोरणप्रतिद्वारदेशभागानि आसक्तोत्सक्तविपुलवृत्तप्रघारित (प्रलम्बित) माल्यदामकलापानि पञ्चवर्णसरससुरभिमुक्तपुष्पपुञ्जोपचारकलितानि कालागुरुप्रवरकुन्दुरुष्कतुरुष्कधूपमघमघायमानगन्धोद्धूताभिरामाणि सुगन्धवरगन्धगन्धितानि गन्धवर्तिभूतानि अप्सरोगणसंघसंकीर्णानि दिव्यत्रुटितशब्दसम्प्रणादितानि सर्वरत्नमयानि अच्छानि श्लक्ष्णानि घृष्टानि मृष्टानि नीरजांसि निष्पङ्कानि निष्कण्टकच्छायानि सप्रभाणि समरीचीनि सोद्योतानि प्रसादीयानि दर्शनीयानि अभिरूपाणि प्रतिरूपाणि एतेषु भवनवासिनां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन लोकस्यासंख्येयभागे समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे तत्र बहवो भवनवासिदेवा परिवसन्ति । तद्यथा–

भागे समुग्घाएण लोयस्स असंखेज्जइभागे सठाणेणं लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थणं बहवे भवणवासीदेवा परिवसति त—असुरानागसुवन्ना विज्जूअग्गीयदीवउहीय । दिसिपवणथणियणामा दसहाएएभवणवासी ॥ चूडामणिमउडरयणभूसणा फणिगरुलवइरपुणकलसकिउप्फेसा सीहमगरमयंकअस्सवरवद्धमाणानिज्जुत्तचित्तचिधगता सुरूवा महिड्ढिया महज्जुतिया महायसा महाबला महाणुभावा महासोक्खा हारविराइयवत्था कडगतुडियथभियभुया अगदकुडलमठगडतलकण्णपीढधारी विचित्तहत्थाभरणा विचित्तमालामउलिमउडा कल्लाणगपवरवत्थपरिहिया कल्लाणगपवरमल्लाणुलेवणधरा भासुरबोंदी पलंबवणमालधरा दिव्वेणं वण्णेण दिव्वेण गधेण दिव्वेण फासेण दिव्वेण सघयणेण दिव्वेण संठाणेण दिव्वाए इड्ढीए दिव्वाए जुत्तीए दिव्वाए पभाए दिव्वाए छायाए दिव्वाए अच्चीए दिव्वेण तेएण दिव्वाए लेस्साए दसदिसाउ उज्जोवेमाणो

असुरनागसुपर्णा विद्युदग्निद्वीपोदधयश्च । दिशापवनस्तनिदाख्या दशैतेभवनवासिनोज्ञेया ॥ १ ॥ चूडामणिमुकुटरत्नभूषणा फणागरुडवज्रपूर्णकलशाङ्कितमुकुटा । सिहाश्वगजवरमाणिक्य वर्द्धमाननियुक्ताश्चित्रचक्रधरा ॥ २ ॥ सुरूपामहर्धिका महाद्युतिका महायशा महाबला महानुभावा महेश्वरा हारविराजितवक्षस कटकत्रुटितस्तम्भितभुजा अङ्गदकुण्डलमृष्टगण्डतलकर्णपीठधारिणो विचित्रमालामौलिमण्डला कल्याणकप्रवरवस्त्रपरिहिता कल्याणकप्रवरमाल्यानुलेपनधरा भासुरबोन्द (शरीर) यो प्रलम्बनमालाधरा दिव्येन वर्णेन दिव्येन गन्धेन दिव्येन स्पर्शेन दिव्येनसहननेन दिव्येन सस्थानेन दिव्यया दृष्ट्या दिव्यया युक्त्या दिव्यया प्रभया दिव्यया छायया दिव्यया द्युत्या दिव्येन तेजसा दिव्यया लेश्यया (देहवर्णसुन्दरतया) दशदिशासूद्योतमाना प्रकाशमाना, तेन तत्र साण २ (वाक्यालङ्कारे) भवनवासिशतसहस्राणा साण २ सामानिकसहस्राणा साण २ त्रयस्त्रिंशता साणं २ लोकपालाना साण २ अग्रमहिषीणा साण परिषदा साण अधिकारिणा मधिकारियतीना साण आत्मरक्षदेवसहस्राणा मन्ये

पभासेमाणा तेणं तत्थ साणं २ भवणवाससयसहस्साणं साणं २ सामाणियसाहस्सीणं साणं २ तायत्तीसाणं साणं २ लोगपालाणं साणं २ अग्गमहीसीणं साणं २ परियाणं साणं २ अणीयाणं साणं २ अणियाहिवईणं साणं २ आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिंच बहूणं भवणवासीणं देवाणंय देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्त भट्टित्त महत्तरगत्तं आणाईसरसेणावच्चं कारेमाणा पालेमाणा महयाहयनट्टगीयवाइयतंतीतलतालतुडियघणमुइंगपडुप्पवाइयरवेण दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरंति। कहिणं भंते! असुरकुमाराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता? कहिणं भंते! असुरकुमारादेवा परिवसंति? गोयमा! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्सं उग्गाहित्ता हेट्ठावेगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे अट्ठहत्तरे जोयणसयसहस्से बाहल्लाए एत्थणं असुरकुमाराणं देवाणं चोवट्ठिं भवणावाससयसहस्सा भवंतीति मक्खायं, तेणं भवणा बाहिं वट्टा अंतो चउरंसा अहे पुक्खरकण्णियासंठाणसंठिया किन्नतरविउलगंभीरखायफलिहा पागारट्टालयकवाडतोरणपडिदुवारदेसभागा जंतसयग्घिमुस

पा च बहूनां भवनवासिनां देवानां देवीनामाधिपत्यं स्वामित्वं भर्तृत्वं महत्तराङ्गत्वमाज्ञेश्वरसेनापत्यं कारयमाणा पालयमाना महताहतनृत्तगीतवादित्रतन्त्रीतलतालत्रुटितघनमृदङ्गपटुप्रवादित रवेणदिव्यानि भोगभोगानि भुञ्जमाना विहरन्ति। कस्मिन् भदन्त! असुरकुमाराणां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि? कस्मिन् भदन्त! असुरकुमारादेवाः परिवसन्ति गौतम! एतस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्यामशीत्युत्तरयोजनशतसहस्रबहुलायामुपर्येकयोजनसहस्रमुद्गृहीत्वा ऽधस्तादेकं योजनसहस्रं वर्जयित्वा मध्ये ऽष्टसप्ततियोजनशतसहस्रबहुलायाम् एतेषु असुरकुमाराणां देवानां चतुर्विंशतिभवनावाससहस्राणि भवन्तीत्याख्यातम्। तेन भवनानि बहिर्वृत्तानि अन्तश्चतुरस्राणि मध्ये

॥ मूल ॥

लमुसढिपरिवारिया अउज्झा सदा सया वलया सदा गुत्ता अडयाला कोठगरइया अडयालकयवन्नमाला
खेमा सिवा किंकरामरडंडोवरक्खिया लाउल्लोइयमहिया गोसीससरसरत्तचदणदद्दरदिन्नपचगुलितला उव
चियचदणकलसा चदणघडसुकयतोरणपडिदुवारदेसभागा आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावा
पचवन्नसरससुरभिमुक्कपुप्फपुजोवयारकलिया कालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कडज्झतधूवमघमघतगधुद्धुयाभिरा
मा सुगधवरगधिया गधवट्टिभूया अच्छरगणसघसकिण्णा दिव्वतुडियसद्दसपणदिया सव्वरयणामया अ
च्छा सण्हा घट्ठा मट्ठा नीरया निम्मला निप्पका निक्ककडच्छाया सप्पभा ससिरिया सउज्जोया पासाइया
दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा एत्थण असुरकुमाराण देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता । उववा
एण लोयस्स असखिज्जइभागे समुग्घाएण लोगस्स असखेज्जइभागे सठाणेण लोगस्स असखेज्जइभागे त

॥ अ० ॥

नि उत्कीर्णान्तरविपुलगम्भीरखातफलिकानि प्राकाराट्टालककपाटतोरणप्रतिद्वारदेशभागानि यन्त्रशतघ्नीमुसलमुसुण्ढिपरिवारितानि आयोधनानि
सदाजेयानि सदावलयानि सदागुप्तानि अष्टचत्वारिंशत्कोष्ठकरचितानि अष्टचत्वारिंशद्वलयमालानि शिवानि किङ्करामरदण्डोपरचितानि
लाउ उल्लोइय महितानि गोशीर्षसरक्तचन्दनदर्दरदत्तपञ्चाङ्गुलितलानि उपचितचन्दनकलशानि चन्दनघटसुकृततोरणप्रतिद्वारदशभागानि आस
क्तोत्सक्तविपुलवृत्तमाघा तिममाल्यदामकलापानि पञ्चवर्णसरससुरभिमुक्तपुष्पपुञ्जोपचारकलितानि कालागुरुप्रवरकुन्दरुक्कतुरुष्कधूपमघमघाय
मानगन्धोद्धूताभिरामाणि सुगन्धवरगन्धगन्धितानि गन्धवर्तिभूतानि अप्सरोगणसंघसंकीर्णानि दिव्यत्रुटितशब्दसंप्रणादितानि सर्वरत्नमया
नि अच्छानि श्लक्ष्णानि घृष्टानि मृष्टानि नीरजांसि निष्पङ्कानि निष्कङ्कटच्छायानि सप्रभाणि समरीचीनि सोद्योतानि प्रसादनीयानि दर्शनीयानि
अभिरूपाणि प्रतिरूपाणि एतेषु असुरकुमाराणां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन लोकस्यासंख्येयभागे समुद्घातेन लोक

त्थणं बहवे असुरकुमारा देवा परिवसंति काला लोहियक्खा बिंबोट्ठा धवलपुप्फदंता असियकेसा वामेयकुं
डलधरा अद्दचंदणाणुलित्तगत्ता ईसीसिलिंधपुप्फपगासाइं असंकिलिट्ठाइं सुहुमाइं वत्थाइं पवरपरिहिया
वयं च पढमं समइक्कंता बिइयं च असंपत्ता भद्दे जोव्वणे वट्टमाणा तलभंगयतुडियवरभूसणनिम्मलनिर
यमणिरयणमंडियभुया दसमुद्दामंडियग्गहत्था चूडामणिविचित्तचिंधगता सुरूवा महिड्ढीया महज्जुइया म
हायसा महब्बला महाणुभागा महासोक्खा हारविराइयवच्छा कडयतुडियथंभियभुया अंगयकुंडलमट्ठगंड
यलकण्णपीढधारी विचित्तहत्थाभरणा विचित्तमालामउलिमउडा कल्लाणगपवरवत्थपरिहिया कल्लाणगपवर
मल्लाणुलेवणधरा भासरबोंदी पलंबवणमालधरा दिव्वेणं वण्णेणं दिव्वेणं गंधेणं दिव्वेणं फासेणं दिव्वेणं संघय
णेणं दिव्वेणं संठाणेणं दिव्वाए इड्ढीए दिव्वाए जुईए दिव्वाए पभाए दिव्वाए छायाए अच्चीए दिव्वेणं तेएणं
दिव्वाए लेसाए दसदिसाओ उज्जोवेमाणा पभासेमाणा तेणं तत्थ साणं २ भवणावाससयसहस्साणं साणं २

स्यासङ्ख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासङ्ख्येयभागे । तत्र तु बहवः असुरकुमारा देवाः परिवसन्ति । काला लोहिताक्षा बिम्बोष्ठा धवलपुष्पदन्ता अ
सितकेशा वामेय (एकवर्णावसक्त) कुण्डलधरा आर्द्रचन्दनानुलिप्तगात्राः ईषच्छिलिन्ध्रपुष्पप्रकाशानि असंक्लिष्टानि सूक्ष्माणि वस्त्राणि प्रवरपरिधाना
वयश्च प्रथमं समतिक्रान्ता द्वितीयं चासम्प्राप्ता भद्रे यौवने वर्त्तमाना तलभङ्गत्रुटितवरभूषणा निर्मलमणिरत्नमण्डितभुजाः दशमुद्रामण्डिताग्रहस्ताः
चूडामणिचित्रचिह्नगताः सुरूपा महर्द्धिकाः महाद्युतयः महायशसः महाबला महानुभावा महासुखा हारविराजितवक्षस कटकत्रुटितस्तम्भितभु
जा अङ्गदकुण्डलमृष्टगण्डतलकर्णपीठधारिणो विचित्रहस्ताभरणा विचित्रमालामौलिमुकुटा कल्याणकप्रवरवस्त्रपरिहिता कल्याणकप्रवरमा
ल्यानुलेपनधरा भासुरबोन्दय (भासुरशरीराः) प्रलम्बवनमालाधराः दिव्येन वर्णेन दिव्येन गन्धेन दिव्येन स्पर्शेन दिव्येन संहननेन दिव्येन स

सामाणियसाहस्सीण साण २ तावत्तीसाणं साण २ लोगपालाणं साण २ अग्गमहिसीण साणं २ परिसाणं साण २ अणियाण साण २ अणियाहिवईण साण २ आयरक्खदेवसाहस्सीण अन्नेसि च बहूण भवणवासीण देवाणय देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणाईसरसेणावच्चं कारेमाणा पालेमाणा महयाहयनट्टगीयवाइयतंतीतलतालतुडियघणमुइंगपडुप्पवाइयरवेण दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरंति, चमरबलिणो इत्थ दुवे असुरकुमारिंदा असुरकुमाररायाणो परिवसंति काला महानीलसरिसा नीलगुलियगवलयसिकुसुमप्पगासा वियसियसयवत्तनिम्मलसीसियरत्ततंबनयणा गरुलाययउज्जुत्तुंगनासा उवचियसिलप्पवालबिंबफलसन्निहाहरोठा पंडुरससिसगलविमलनिम्मलदहिघणसंखगोखीरकुंदद गरयमुणालिया धवलदंतसेढी हुयवहणिद्धंतधोयतत्ततवणिज्जरत्ततलतालुजीहा अंजणघणकसिणरुयगरमणिज्जनिद्धकेसा वामेयकुंडलधरा अद्दचंदणाणुलित्तगत्ता ईसीसिलिंधपुप्फपगासाइं असंकिलिठाइं सुहुमाइं व

स्थानेन दिव्यया ऋध्या दिव्यया युक्त्या दिव्यया प्रभया दिव्यया छायया दिव्येन अर्चिषा एतेन दिव्येन लेश्येन दशदिशासूद्योतमाना प्रभासमान तेन तत्र स्वेषां २ भवनावासशतसहस्राणां सामानिकसहस्राणां त्रयस्त्रिंशता लोकपालानां अग्रमहिषीणां परिषदामधिकारिणां अधिकारिपतीनामायरत्तकदेवसहस्राणामन्येषां च बहूनां देवानां देवीनामाधिपत्यं पौरपत्यं स्वामित्वं भर्तृत्वं महत्तरकत्वमाज्ञेश्वरसेनापत्यंच कारयमाणा पालयमाना महताऽऽहतनृत्यगीतवादित्रतन्त्रीतलतालतुडियघनमृदङ्गपटुप्रवादितरवेण दिव्यानि भोगभोगानि भुञ्जाना विहरन्ति । चमरबलिनौ अत्रोभे असुरकुमारेन्द्रौ असुरकुमारराजानौ परिव सत काला महानीलशीर्षौ नीलगुटिका गवलातसीकुसुमप्रकाशा विकसितशतपत्रनिर्मलशीतरक्ततासनयना गरुडायतऋजूत्तुङ्गनासा उपचितशिलाप्रवालबिम्बसन्निभाधरोष्ठा पाण्डुरशशिसकलविमलनिमलदधिघनशङ्खगोक्षीरकुन्दौ

त्याइ पवरपरिहिया वयं च पढमं समइक्कंता विइयच असंपत्ता नद्दे जोव्वणे वहमाणा तलनंगयतुडियप वरनूसणनिम्मलमणिरयणमंडियनुया दसमुद्दामंडियग्गहत्था चूडामणिविचित्तचिंधगता सुरूवा महिड्ढीया महज्जुया महायसा महब्बला महाणुन्नागा महासोक्खा हारविराइयवत्था कडयतुडियथंनियनुया अंगदकुंड लमट्ठगंडतलकन्नपीढधारी विचित्तहत्थान्नरणा विचित्तमालामउलिमउडा कल्लाणगपवरवत्थपरिहिया कल्ला णगपवरमल्लाणुलेवणा नासुरबोंदी पलंबवणमालधरा दिव्वेण वन्नेणं दिव्वेण गंधेणं दिव्वेण फासेणं दिव्वेणं संघयणेणं दिव्वेणं संठाणेणं दिव्वाए इड्ढीए दिव्वाए जुईए दिव्वाए नासाए दिव्वाए छायाए दिव्वाए पहाए दिव्वाए अच्चीए दिव्वेण एएणं दिव्वाए लेसाए दसदिसाउ उज्जोवेमाणा पन्नासेमाणा तेण तत्थ साण२ नवणावाससयसहस्सा ण साण२ सामाणियसाहस्सीण साणं २ तावत्तीसाणं साण २ लोगपालाणं साणं २ अग्गमहिसीणं साणं २

द करजमृणालिकाधवलदन्तश्रेणयो हुतवहनिर्ध्मातधौततप्ततपनीयरक्ततलतालुजिह्वा अञ्जनघनकृष्णरुचिकरमणिस्निग्धकेशा. वामैककुण्डलधरा आर्द्रचन्दनलिप्तगात्रा ईषदीषच्छीलन्ध्रपुष्पप्रकाशानि असंक्लिष्टानि सूक्ष्माणि वस्त्राणि प्रवरपरिहिता वयश्च प्रथम समतिक्रान्ता द्वितीय चासम्प्राप्ता भद्रेयौवने वर्त्तमाना तलभङ्गयतुडियवरभूषणनिर्मलमणिरत्नमण्डितभुजा दशमुद्रामण्डिताग्रहस्ता चूडामणिविचित्रचिह्नगताः सुरूपा महर्द्धिका महद्युता महायसा महाबला महानुभावा महासुखा हारविराजितवक्षस कटकतुडियस्तम्भितभुजा अङ्गदकुण्डलमृष्टगण्डतलकर्णपीठधारिणो विचित्रहस्ताभरणा विचित्रमालामौलिमुकुटा कल्याणकप्रवरवस्त्रपरिहिता कल्याणकप्रवरमाल्यानुलेपना भासुरबोन्दय प्रलम्बवनमालाधरा दिव्येन वर्णेन दिव्येन गन्धेन दिव्येन स्पर्शेन दिव्येन संहननेन दिव्येन संस्थानेन दिव्यया ऋध्या दिव्यया युत्त्या दिव्यया भासा दिव्यया छायया दिव्यया प्रभया दिव्येनार्चिषा दिव्येन तेजसा दिव्यया लेश्यया दशदिशासूद्योतमाना प्रकाशयमाना तेन तत्र साण२ (स्वान २) भवनावासशतसहस्राणा साण २

॥ मूल ॥

परिसाण साणं २ अणियाणं साण २ अणियाहिवईणं साणं २ आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं च बहूणं भवणवासीण देवाणय देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणाईसरसेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे महयाहयनट्टगीयवाइयतंतीतलतुडियघणमुइंगपडुप्पवाइयरवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजेमाणा विहरंति। कहिणं भंते! दाहिणिल्लाण असुरकुमारदेवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पन्नत्ता? कहिणं भंते! दाहिणिल्लाण असुरकुमारा देवा परिवसंति? गोयमा! जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्सं उग्गाहित्ता हेठावेगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे अट्ठहत्तरजोयणसयसहस्से एत्थणं दाहिणिल्लाणं असुरकुमाराणं देवाणं देवीणय चोत्तीसं भवणावाससयसहस्सा हवंतीति मक्खायं तेणं भवणा बाहिं वट्टा अंतो चउरंसा सोच्चेव वन्नओ जाव पडिरूवा एत्थणं दाहिणिल्लाणं असुरकुमारदेवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता। तिसुवि लोगस्स

॥ प० ॥

सामानिकसहस्राणां साण२ त्रयस्त्रिंशत्कानां साण२ लोकपालानां साण२ अग्रमहिषीणां साण२ परिषदां साण२ अधिकारिणां साण २ अधिपतीनामात्मरक्षकदेवसहस्राणामन्येषां च बहूनां भवनवासिनां देवानां देवीनां च आधिपत्यं पुरपतित्वं स्वामित्वं भर्तृत्वं महत्तरकत्वमाज्ञेश्वरसेनापत्यं च कारयमाणा पालयमाना महताहतनृत्यगीतवादित्रतन्त्रीतलतालतुडियघनमृदङ्गपटुप्रवादितरवेण दिव्यानि भोगभोगानि भुञ्जाना विहरन्ति। कस्मिन् भदन्त! दक्षिणदिशासुरकुमाराणां देवानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि, कस्मिन् भदन्त! दक्षिणदिशासुरकुमारादेवा परिवसन्ति। गौतम! जम्बूद्वीपे मन्दरस्य पर्वतस्य दक्षिणेनैतस्यां रत्नप्रभायां पृथिव्यामशीत्युत्तरयोजनशतसहस्रबहुलायामुपर्येकं योजनसहस्रमुद्गृहीत्वाधस्तादेकं योजनसहस्रं वर्जयित्वा मध्ये अष्टसप्ततियोजनशतसहस्रे एतेषु दाक्षिणात्यानामसुरकुमाराणां देवानां देवीनां च चतुस्त्रिंशद्भवनावासशतसह

असंखेज्जइभागे, तत्थणं बहवे दाहिणिल्ला असुरकुमारदेवा देवीओ परिवसंति काला लोहितक्खा तहेव जाव भुंजेमाणे विहरंति, एवं सव्वत्थ भाणियव्वं भवणवासीणं, चमरे इत्थ असुरकुमारिंदे असुरकुमारराया परिवसइ काले महानीलसरिसे जाव पभासेमाणे सेण तत्थ चउत्तीसाए भवणावाससयसहस्साणं चउसट्ठीए सामाणियसाहस्सीण तावत्तीसाए तावत्तीसगाण चउण्हं लोगपालाणं पंचण्ह अग्गमहिसीणं सपरिवाणं तिण्हं परिसाण सत्तण्ह अणियाण सत्तण्ह अणियाहिवईण चउण्हं च चउसठ्ठीणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसि च बहूणं दाहिणिल्लाण देवाण देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं जाव विहरंति । कहिणं भंते ! उत्तरिल्लाण असुरकुमाराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता । कहिण भंते ! उत्तरिल्ला असुरकुमारा देवा परिवसंति ? गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तर

स्यापि भवन्तीत्याख्यातम् । तानि भवनानि बहिर्वृत्तानि अन्तश्चतुरस्राणि सोचैव वर्णतो यावत्प्रतिरूपा एतेषु दाक्षिणात्यानामसुरकुमारदेवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । त्रिष्वपि लोकस्यासंख्येयभागे तत्रनु बहवो दाक्षिणात्या असुरकुमारदेवा देव्यश्च परिवसन्ति काला लोहिताक्षा तथैव यावद्भुञ्जमाना विहरन्ति । एवं सर्वत्र भावनीय भवनवासिना चमरो ऽत्र असुरकुमारेन्द्रो असुरकुमारराजा परिवसति कालो महानीलसदृशो यावत्प्रकाशमान तत्र चतुस्त्रिंशत्भवनावासशतसहस्राणां चतु षष्टितमे सामानिकसहस्राणां त्रयस्त्रिंशो त्रयस्त्रिंशकानां चतुर्णां लोकपालानां पञ्चानामग्रमहिषीणां सपरिवाराणां तिसृणां परिषदां सप्तानामनीकानां सप्तानामनीकाधिपतीनां चतुर्णां च चतु षष्टिकानामात्मरक्षकदेवसहस्राणामन्येषां च बहूनां दाक्षिणात्यानां देवानां देवीनां चाधिपत्यं पौरपत्यं यावद्विहरन्ति । कस्मिन्नु भदन्त । औत्तराणामसुरकुमाराणां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । कस्मिन्नु भदन्त । औत्तरा असुरकुमारा देवा परिवसन्ति ? गौतम । जम्बूद्वीपे द्वीपे मन्दरस्य

॥ मूल ॥

जोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरि एगं जोयणसहस्सं उग्गाहित्ता हेठावेगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे अठहत्तरिजोयणसयसहस्से एत्थणं उत्तरिल्लाणं असुरकुमाराणं देवाणं देवीणय तीसं भवणावाससयसहस्सा भवतीति मक्खायं तेणं भवणा बाहिं वट्टा अंतो चउरंसा सेसं जहा दाहिणिल्लाणं जाव विहरति, बली इत्थ वइरोयणिंदे वइरोयणराया परिवसइ, काले महानीलसरिसे जाव पभासेमाणे सेणं तत्थ तीसाए भवणावाससयसहस्साणं सठीए सामाणियसाहस्सीणं तावत्तीसाए तावत्तीसगाणं चउण्हं लोगपालाणं पचण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणियाणं सत्तण्हं अणियाहिवईणं चउण्हं सठीणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं अण्णेसिं च बहूणं उत्तरिल्लाणं असुरकुमाराणं देवाणय देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं जाव कुव्वमाणे विहरति । कहिणं भंते ! नागकुमाराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता, कहिणं

॥ अ० ॥

पर्वतस्य उत्तरेण एतस्या रत्नप्रभाया पृथिव्या अशीत्युत्तरयोजनशतसहस्रबाहल्या । उपर्यैकं योजनसहस्रमवगाह्याधस्तादेकं योजनसहस्रं वर्जयित्वा मध्ये ऽष्टसप्ततियोजनशतसहस्रे अत्र औत्तराणामसुरकुमाराणां देवानां देवीनां च त्रिंशद्भवनावासशतसहस्राणि भवन्तीति मयाख्यातम् । तानि भवनानि बहिर्वृत्तानि अन्तश्चतुरस्राणि तद् यथा दाक्षिणात्यवद्विहरन्ति । बली अत्र वइरोचनेन्द्रो वइरोचनराजा परिवसति कालो महानीलसदृशो यावत्प्रकाशमानः स तत्र त्रिंशत् भवनावासशतसहस्राणि षष्टिसंख्याकसामानिकसहस्राणां त्रयस्त्रिंशत्या त्रायत्रिंशत्कानां चतुर्णां लोकपालानां पञ्चानामग्रमहिषीणां सपरिवाराणां तिसृणां परिषदां सप्तानामनीकानां सप्तानामनीकाधिपतीनां चतुःषष्टिकात्मरक्षकदेवसहस्राणामन्येषां च बहूनां औत्तरिकाणामसुरकुमाराणां देवानां च देवीनां चाधिपत्यं पुरोवर्तित्वं यावत्कुर्वाणा विहरन्ति । क्व भदन्त ! नागकुमाराणां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि, क्व भदन्त ! नागकुमारा देवा परिवसन्ति । गौतम ! एतस्या रत्नप्रभाया पृथिव्या अशीत्युत्तरयोजनशत

न्ते । नागकुमारा देवा परिवसंति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पन्नाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्स बाहल्लाए उवरि एग जोयणसहस्स वज्जिऊण मज्झे अठहत्तरिजोयणसयसहस्से एत्थण नागकुमाराण देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताण चुलसीइन्नवणावाससयसहस्सा हवतीति मरकाय, तेण न्नवणा वाहिं वट्टा अतो चउरं सा जाव पडिरूवा तत्थण नागकुमाराण पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता । तिसुवि लोगस्स असखेज्जइ न्नागे तत्थण बहवे नागकुमारा देवा परिवसंति, महिड्डिया महज्जुइया सेस जहा उहियाण जाव विहरंति धरणन्नूयाणदा एत्थ दुवे नागकुमाररायाणो परिवसंति महिड्डिया सेस जहा उहियाण जाव विहरंति। कहिणं न्ते ! दाहिणिल्लाणंनागकुमाराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पन्नत्ता । कहिणं न्ते ! दाहिणिल्ला नागकुमारादेवा परिवसंति ? गोयमा ! जबूद्दीवे २ मदरस्स पव्वयस्स दाहिणेण इमीसे रयणप्पन्नाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरि एग जोयणसहस्सं उग्गाहित्ता हेठावेग जोयणसहस्स व

सहस्र बाहल्यायाउपरि एक योजनसहस्र वर्जयित्वा पुनर्मध्ये अष्टसप्ततियोजनशतसहस्रे अत्र नागकुमाराणा देवाना पर्याप्तापर्याप्ताना चतुरशीतिन्नवनावासशतसहस्राणि न्नवन्तीत्याख्यातम्, तानि न्नवनानि वहिर्वृत्तानि अन्तश्चतुरस्राणि यावत्प्रतिरूपाणि तत्र नागकुमाराणा पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि । त्रिष्वपि लोकस्यासख्येयन्नाग तत्र बहवो नागकुमारदेवा परिवसन्ति, महर्द्धिका महाद्युतिका शेष यथौघिकाना यावद्विहरन्ति । धरणन्नूतानेन्द्रा अत्र द्वौ नागकुमारराजानौ परिवसतः महर्धिकौ शेष यथौघिकाना यावद्विहरन्ति । क्व न्नदन्त ! दाक्षिणात्य नागकुमाराणा देवाना पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि, क्व न्नदन्त ! दाक्षिणात्यनागकुमारदेवा परिवसन्ति । गौतम ! जम्बूद्वीपेद्वीपे मन्दरस्य पर्वतस्य दक्षिणेन एतस्या रत्नप्रन्नपृथिव्या अशीत्युत्तरयोजनशतसहस्र बाहल्याया उपर्येक योजनसहस्रमवगाह्या धस्तादेक योजनसहस्र

ज्जित्ता मज्जे अठहत्तरिजोयणसयसहस्से एत्थणं दाहिणिल्लाण नागकुमाराणं देवाण चोयालीस नवणावाससयसहस्सा हवतीति मरकाय, तेण नवणा बाहिं वट्टा जाव पडिरूवा एत्थण दाहिणिल्लाण नागकुमाराणं पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पन्नत्ता, तिसुवि लोगस्स असखेज्जइनागे एत्थण वहवे दाहिणिल्लाण नागकुमारा देवा परिवसति महिड्डिया जाव विहरति। धरणे एत्थ नागकुमारिंदे नागकुमारराया परिवसति महिड्डिए जाव पनासेमाणे सेण तत्थ चोयालीसाए नवणावाससयसहस्साणं छएहं सामाणियसाहस्सीण तावत्तीसाए तावत्तीसगाण चउएहं लोगपालाण छएहं अग्गमहिसीण सपरिवाराण तिएहं परिसाण सत्तएहं अणियाणं सत्तएहं अणियाहिवईण चउवीसाए आयरक्खदेवसाहस्सीण अन्नेसि च वहूण दाहिणिल्लाण नागकुमाराणं देवाणय देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं जाव कुव्वमाणे विहरति । कहिण नते ! उत्तरिल्लाणं नागकुमाराण दे

वर्जयित्वा मध्येष्टसप्ततियोजनशतसहस्त्रे अत्र दाक्षिणात्यानां नागकुमाराणां देवानां चतुश्चत्वारिंशद्भवनावासशतसहस्राणि भवन्तीत्याख्यातम् । तानि भवनानि बहिर्वृत्तानि यावत्प्रतिरूपाणि अत्र दाक्षिणात्यानां नागकुमाराणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । त्रिष्वपि लोकस्यासंख्येयभाग, अत्र बहवो दाक्षिणात्या नागकुमारदेवा परिवसन्ति महर्धिका यावद्विहरन्ति । धरण अत्र नागकुमारेन्द्रो नागकुमारराजा परिवसति महर्द्धिको यावत्प्रकाशमान तत्र चतुश्चत्वारिंशद्भवनावासशतसहस्राणां षण्णां सामानिकसहस्राणां त्रयस्त्रिंशत् त्रायस्त्रिंशकानां चतुर्णां लोकपालानां षण्णामग्रमहिषीणां सपरिवाराणां तिसृणां परिषदां सप्तानामनीकानां सप्तानामनीकाधिपतीनां चतुर्विंशत्यात्मरक्षकदेवसहस्राणां अन्येषां च बहूनां दाक्षिणात्यानां नागकुमाराणां देवानां देवीनां च आधिपत्यं पुरोवर्त्तित्वं यावत्कुर्वाणो विहरन्ति । क्व भदन्त ! औत्तरिकाणां नागकुमाराणां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । क्व भदन्त ! नागकुमारा औत्तरिका देवा परिवसन्ति ? गौतम ! जम्बूद्वीपे द्वीपे मन्दरस्य पर्वत

वाणं पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पसत्ता, कहिणं जंते ! उत्तरिल्ला नागकुमारा देवा परिवसंति ? गोयमा ! जंबूद्दीवे२ मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेण इमीसे रयणप्पजाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरि एग जोयणसहस्स उग्गाहित्ता हेठावेग जोयणसहस्स वज्जित्ता मज्झे अठहत्तरिजोयणसयसहस्से एत्थण उत्तरिल्लाण नागकुमाराणं देवाणं चत्तालीस जवणावासयसहस्सा हवतीति मक्खाय, तेण जवणा बाहिं वट्टा सेस जहा दाहिणिल्लाणं जाव विहरति, जूयाणंदे इत्थ नागकुमारिंदे नागकुमारराया परिवसइ महिड्ढिए जाव पजासेमाणे सेण तत्थ चत्तालीसाए जवणावाससयसहस्साण आहेवच्च जाव विहरइ । कहिणं जंते ! सुवसकुमाराण देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पसत्ता । कहिण जंते ! सुवसकुमारा देवा परिवसंति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पजाए पुढवीए जाव एत्थण सुवसकुमाराण देवाणं बावत्तरिजवणावाससयसहस्सा हवतीति मक्खाय, तेण जवणा बाहि वट्टा जाव पडिरूवा तत्थणं सुवसकुमाराण देवाणं पज्जत्ता

स्य उत्तरेण एतस्या रत्नप्रजाया पृथिव्या अशीत्युत्तरयोजनशतसहस्रबाहल्याया उपर्येक योजनसहस्रमवगाह्य पश्चादेक योजनसहस्र वर्जयित्वा मध्येऽष्टसप्ततियोजनशतसहस्रे अत्र औत्तरिकाणां नागकुमाराणां देवानां चतुश्चत्वारिंशद्भवनावासशतसहस्राणि भवन्तीत्याख्यातम् । तानि भवनानि वहिर्वृत्तानि शेष यथा दाक्षिणात्यानां यावद्विहरन्ति । भूतानन्दोऽत्र नागकुमारेन्द्रो नागकुमारराजा परिवसति । महर्द्धिको यावत् प्रकाशमान स तत्र चतुश्चत्वारिंशद्भवनावासशतसहस्राणां यावद्विहरन्ति । क्व भदन्त ! सुपर्णकुमाराणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि क्व भदन्त ! सुपर्णकुमारा देवा परिवसन्ति ? गौतम ! एतस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्या यावदत्र सुपर्णकुमाराणां देवानां द्विसप्तति भवनावासशतसहस्राणि भवन्तीत्याख्यातम् । तानि भवनानि बहिर्वृत्तानि यावत्प्रतिरूपाणि तत्र सुपर्णकुमाराणां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । त्रिष्वपि लो

पज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता। तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे, तत्थणं बहवे सुवन्नकुमारा देवा परिवसंति महिड्ढिया सेस जहा ओहियाण जाव विहरति, वेणुदेव वेणुदालीय इत्थ दुवे सुवन्नकुमारिंदा सुवन्नकुमार रायाणो परिवसति महिड्ढिया जाव विहरति। कहिणं भंते! दाहिणिल्लाण सुवन्नकुमाराणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता। कहिण भंते! दाहिणिल्ला सुवन्नकुमारा देवा परिवसति? गोयमा! इमीसे जाव मज्झे अट्ठहत्तरिजोयणसयसहस्से एत्थण दाहिणल्लाण सुवन्नकुमाराण अट्ठत्तीस भवणावाससहस्सा हवंतीति मक्खाय, तेण भवणा बाहिं वट्टा जाव पडिरूवा, तत्थण दाहिणिल्लाण सुवन्नकुमाराण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता, तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे, एत्थण बहवे सुवन्नकुमारा देवा परिवसति। वेणुदेवे इत्थ सुवन्निंदे सुवन्नकुमारराया परिवसति सेस जहा नागकुमाराण। कहिण भंते! उत्तरिल्लाणं सुवन्नकुमाराण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता। कहिण भंते! उत्तरिल्ला सुवन्नकुमारा परिवसति? गोय

कस्यासंख्येयभागमत्र बहव सुपर्णकुमारा देवा परिवसन्ति महर्धिका शेष यथौघिकानां यावद्विहरन्ति वेणुदेवो वेणुदालीच अत्र द्वौ सुपर्णकुमारेन्द्रौ सुवर्णकुमारराजानौ यावत्परिवसत महर्द्धिकौ यावद्विहरति। क्व भदन्त! दाक्षिणात्याना सुपर्णकुमाराणा देवाना पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि। क्व भदन्त! दाक्षिणात्या सुपर्णकुमारदेवा परिवसन्ति? गौतम! एतस्या यावन्मध्ये ऽष्टसप्ततियोजनशतसहस्र मत्र दाक्षिणात्याना सुपर्णकुमाराणामष्टत्रिंशद्भवनावासशतसहस्राणि भवन्तीत्याख्यातम्। तानि भवनानि बहिर्वृत्तानि यावत्प्रतिरूपाणि तत्र दाक्षिणात्याना सुपर्णकुमाराणा पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि त्रिष्वपि लोकस्यासंख्येयभाग अत्र बहव सुपर्णकुमारादेवा परिवसन्ति। वेणुदेवोत्र सुपर्णेन्द्रो सुपर्णकुमारराजा परिवसति। शेष यथा नागकुमाराणाम्। क्व भदन्त! औत्तरिकाणा सुपर्णकुमाराणा देवाना पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञ

मा ! इमीसे रयणप्पभाए जाव एत्थणं उत्तरिल्लाण सुवस्नकुमाराणं वत्तव्वया भणिया तहा सेसाणवि चोद्दसण्ह इंदाण भाणियव्वा नवरं भवणनाणत्त इंदाणनाणत्त वस्नण नाणत्त परिहाणनाणत्तं च इमाहि गाहाहिं अणुगतव्व—चोवठीअसुराणं चुलसीतीचेवहोइनागाणं । बावत्तरिसुवस्ने वाउकुमाराणछन्नउई ॥ १ ॥ दीवदिसाउदहीण विज्जुकुमारिदथणियमग्गीणं । छण्हपिजुवलयाण छावत्तरिमोसयसहस्सा ॥ २ ॥ चोत्तीसाचोयाला अठत्तीसचहोइसयसहस्साइं । पन्नाचत्तालीसा दाहिणउंहोंतिभवणाइ ॥ ३ ॥ तीसाचत्तालीसा चोत्तीसचेवसयसहस्साइ । छायालाछत्तीसा उत्तरउंहोंतिभवणाइ ॥ ४ ॥ चउसठीसठीखलु छच्चसहस्साउ असुरवज्जाण । सामाणियाउएए चउग्गुणाआयरक्खाउ ॥ ५ ॥ चमरेधरणेतहवे णुदेवहरिकंतअग्गिसीहेय । पुन्नेजलकंतेय अमियवेलवेयघोसेय ॥ ६ ॥ वलिभूयाणदेवे णुदालीहरिस्सहेअग्गिमाणवविसिठे । जलप्प

सानि। क्व भदन्त । औत्तरिका॰ सुपर्णकुमारा परिवसन्ति ? गौतम । एतस्या रत्नप्रभाया यावत् अत्र औत्तरिकाणा सुपर्णकुमाराणा वक्तव्यता भणिता तथा शेषाणामपि चतुर्दशाना मिन्द्राणामपि भणितव्या नवर भवनेनानात्वमिन्द्राणा नानात्व वर्णनानात्व परिधाननानात्व चैताभिर्गाथाभिरनुगन्तव्यम् । चतु षष्टिरसुराणा चतुरशीतिरेव भवतिनागानाम् । द्विसप्तति सुपर्णे वायुकुमारेषु षण्णवति ॥ १ ॥ द्वीपदिगुदधीना विद्युत्कुमारेन्द्र स्तनितमग्निनाम् षणामपियुगलकाना षट्सप्ततिमशतसहस्रम् ॥ २ ॥ चतुस्त्रिंशच्चतुश्चत्वारिंशत् अष्टत्रिंशच्चभवतिशतसहस्रम् । पञ्चाशच्चतुश्चत्वारिंशत् दक्षिणतोभवन्तिभवनानि ॥ ३ ॥ त्रिंशच्चत्वारिंशत् चतुस्त्रिंशच्चशतसहस्राणि । षट्चत्वारिंशत्षट्त्रिंश दुत्तरतोभवन्तिभवनानि ॥ ४ ॥ चतु॰ षष्टि षष्टि खलुषट् सहस्राण्यसुरवर्जाणाम् । सामानिकास्तुएते चतुर्गुणाआत्मरक्षास्तु ॥ ५ ॥ चमरधरणौतथा वेणुदेवहरिकान्ताग्निशिखा । पूर्णोजलकान्तोवा मितवेलम्बकघोषाश्च ॥ ६ ॥ वलिभूतानेन्द्रवेणुदालि हरिसहेग्निमाणवविशिष्टे ॥ जलप्रभोऽमितवाहन प्रभञ्जनश्चमहाघोष ॥ ७ ॥ औत्त

णेश्रमियवाहणे पन्नजणेयमहाघोसे ॥ ७ ॥ उत्तरिल्लाण जाव विहरंति, कालाश्रसुरकुमारा नागाउदहीयपंडुरादोवि। वरकणगणिहसगोरा होतिसुवस्लादिसाथणिया ॥ १ ॥ उत्तत्तकणगवन्ना विज्जूश्रग्गीयहोति दीवाय। सामापियगुवन्ना वाउकुमारामुणेयव्वा ॥ २ ॥ श्रसुरेसुहोतिरत्ता सिलिंदपुप्फप्पन्नातहाउदही। श्रासासयवसणधरा होतिसुवस्लादिसाथणिया ॥ ३ ॥ नीलाणुरागवसणा विज्जूश्रग्गीयहोतिदीवाय। सज्झाणुरागवसणा वाउकुमारामुणेयव्वा ॥ ४ ॥ कहिण भंते ! वाणमंतराण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पणत्ता, कहिण भंते। वाणमंतरा देवा परिवसंति ? गोयमा। इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए रयणमयस्स कंडस्स जोयणसहस्सवाहल्लस्स उवरिं एग जोयणसय उग्गाहित्ता हिठावि एग जोयणसय वज्जित्ता मज्झे श्रठसु जोयणसएसु एत्थण वाणमंतराण देवाण तिरियमसंखेज्जाउ भोमेज्जा नगरावाससयसहस्सा हवतीति मक्खाय तेण भोमेज्जा णगरा बाहिं वट्टा श्रंतो चउरसा श्रहे पुक्करकन्नियासंठाणसंठिया उक्किन्नंतरवि

रिका यावद्विहरन्ति। कालाश्रसुरकुमारा नागोदधीपाण्डुरौद्वौस्त। वरकनकनिकसगौरा। भवन्तिसुपर्णादिक्स्तनिता ॥ १ ॥ उत्तप्तकनकवर्णा विद्युदग्नीचभवन्तिद्वीपाश्च ॥ श्यामा प्रियङ्गुवर्णा वायुकुमाराश्चज्ञातव्या ॥ २ ॥ असुराभवन्तिरक्ता शिलीन्ध्रपुष्पप्रभास्तथोदधय ॥ आश्वाशतवसनधरा भवन्तिसुपर्णादिक्स्तनिता ॥ ३ ॥ नीलानुरागवसना विद्युदग्नीचभवन्तिद्वीपाश्च ॥ सन्ध्यानुरागवसना वायुकुमाराश्रनुमातव्या ॥ ४ ॥ क्व भदन्त। वानव्यन्तराणां देवानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि, क्व भदन्त। वानव्यन्तरा देवा परिवसन्ति? गौतम। एतस्या रत्नप्रभाया पृथिव्या रत्नमयस्य काण्डस्य योजनशतसहस्रबाहल्यस्य उपर्येक योजनसहस्रमवगाह्या ऽधस्तादेक योजनसहस्र वर्जयित्वा मध्ये ऽष्टसु योजनसहस्रेषु अत्र वानव्यन्तराणां देवानां तिर्यगसंख्येयानि भौमेयनगरावासशतसहस्राणि भवन्तीत्याख्यातम्। ते भौमेया नगरा बहिर्वृत्ता अन्तश्चतुरस्रा अध पुष्करकर्णिका

उलगंभीरखायफलिहा पागारट्टालयकवाडतोरणपडिदुवारदेसभागा जंतसयग्घिमुसलमुसंढिपरिवारिया अउज्झा सया जया सया गुत्ता अडयालकुट्ठरइयअडयालकयवणमाला खेमा सिवा किंकरामरदंडोवरक्खिया लाउल्लोइयमहिया गोसीससरसरत्तचंदणदद्दरदिन्नपचंगुलितला उवचियचंदणकलसा चंदणघडसुकयतोरणपडिदुवारदेसभागा आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावा पंचवन्नसरससुरभिमुक्कपुप्फपुंजोवयारकलिया कालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कधूवमघमघंतगंधुद्धुयाभिरामा सुगंधवरगंधिया गंधवट्टिभूया अच्छरगणसंघविकिण्णा दिव्वतुडियसद्दसंपणादिया पडागमालाउलाभिरामा सव्वरयणमया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा नीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पभा ससिरीया सउज्जोया पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा एत्थणं वाणमंतराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता । तिसुवि लोगस्स असं

समस्थानसंस्थिता उत्कीर्णान्तरविपुलगम्भीरखातपरिखा प्राकाराट्टालककपाटतोरणप्रतिद्वारदेशभागा यन्त्रशतघ्नीमुसलमुसण्ढिपरिवारिता अयोध्या सदा जया. सदागुप्ता अष्टचत्वारिंशत्कोष्ठकरचिताष्टचत्वारिंशत्कृतवनमाला क्षेमा शिवा किङ्करामरदण्डोपरक्षिता. लाउल्लोइयमहिता गोशीर्षरक्तचन्दनदर्दरदत्तपञ्चाङ्गुलितला उपचितचन्दनकलशा चन्दनघटसुकृततोरणप्रतिद्वारदेशभागा आसक्तोत्सक्तविपुलवृत्तवग्घारियमाल्यदामकलापा पञ्चवर्णसरससुरभिमुक्तपुष्पपुञ्जोपचारकलिता कालागुरुप्रवरकुन्दुरुष्कतुरुष्कधूपमघमघायमानगन्धधूमाभिरामा सुगन्धवरगन्धिता गन्धवर्तिभूता अप्सरोगणसङ्घविकीर्णा दिव्यत्रुटितनिनादसम्प्रणादिता पताकमालाकुलाभिरामा सर्वरत्नमया अच्छा. श्लक्ष्णा लष्टा घृष्टा मृष्टा नीरजस्का निर्मला निष्पङ्का निष्कण्टकच्छाया सप्रभा सश्रीका सोद्योता प्रासादीया दर्शनीया अभिरूपा प्रतिरूपा अत्र वानव्यन्तराणां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । त्रिष्वपि (स्थानेषु) लोकस्यासङ्ख्येयभागे तत्र बहवो वानव्यन्तरा देवा परिवसन्ति तद्यथा–पिशाचा भूता यक्षा

॥ मूल ॥

खेज्जइभागे तत्थण वहवे वाणमंतरा देवा परिवसंति तंजहा—पिसाया भूया जक्खा रक्खसा किन्नरा किंपुरिसा भुयगवतिणोय महाकाया गंधव्वगणा य निउणगंधव्वगीतरइणो अणवन्नियपणवन्नियइसिवाइयभूयवाइय कंदीय महाकंदीय कोहंडपयगदेवा ॥१॥ चंचलचवलचित्तकीलणदवप्पिया गहिरहसियपिया गीयणिच्चरती वणमालामेलमउलकुंडलसच्छंदविउव्वि याभरणचारुभूसणधरा सव्वोयसुरभिकुसुमसुरइयपलंबसोहंतकंतवियसितचित्तवन्नमालरइयवच्छा कामकामा कामरूवदेहधरा नाणाविहवन्नरागवरवत्थललंतचित्तचिल्लगणिवसणा विविहदेसीणेवत्थगहियवेसा समुइयकंदप्पकलहकेलिकोलाहलप्पिया हासबोलबहुला असिमोग्गरसत्तिकुंतहत्था अणेगमणिरयणविविहनिजुत्तविचित्तचिंधगयासुरूवा महिड्ढिया महज्जुतिया महायसा महाबला महाणुभागा महासोक्खा हारविराइयवच्छा कडगतुडियथंभियभुया अंगयकुंडलमट्ठगंडजुयलकण्णपीठधारी विचित्तहत्थाभरणा विचित्तमालामउलिकल्लाणगपवरवत्थपरिहिया कल्लाणगपवरमल्लाणुलेवणध

॥ मू० ॥

राक्षसा किन्नराः किम्पुरुषा भुजगपतयश्च महाकाया गन्धर्वगणाश्च निपुणगन्धर्वगीतरतयः, अणपन्नीपणपन्नी ऋषिवादी भूतवादी च। कन्दीय महाकन्दी कोहण्डो पतकश्च ॥ १ ॥ एतेऽष्टौ देवविशेषाः, चलचपलचित्तक्रीडनद्रवप्रिया गम्भीरहसितप्रिया गीतनृत्यरतयो वनमालापीडमुकुटकुण्डलस्वच्छन्दविकुर्विताभरणचारुभूषणधराः सर्वर्तुकसुरभिकुसुमसुरचितप्रलम्बशोभमानकान्तविकसितचित्रवनमालरचितवक्षसः कामकामाः कामरूपदेहधरा नानाविधवर्णरागवरवस्त्रचित्रचिल्लक (देदीप्यमान इत्यर्थ) निवसना विविधदेशीनेपथ्यगृहीतवेषाः समुदितकन्दर्पकलहकेलिकोलाहलप्रिया हासबोलबहुला असिमुद्गरशक्तिकुन्तहस्ता अनेकमणिरत्नविविधनियुक्तविचित्रचिह्नगताः सुरूपा महर्द्धिका महाद्युतिका महायशसो महाबला महानुभावा महेशाख्या हारविराजितवक्षसः कटकत्रुटितस्तम्भितभुजा अङ्गदकुण्डलमृष्टगण्डयुगलकर्णपीठधारिणो विचित्रहस्ताभरणा

रा भासुरबोंदी पलंबवणमालधरा दिव्वेणं वन्नेणं दिव्वेणं गंधेणं दिव्वेणं फासेणं दिव्वेणंसंठाणेणं दिव्वाए इड्ढीए दिव्वाए जूईए दिव्वाए पभाए दिव्वाए छायाए दिव्वाए अच्चीए दिव्वेण एएणं दिव्वाए लेस्साए दसदिसाओ उज्जोवेमाणा पभासेमाणा तेणं तत्थ साणं२ भोमेज्जाणगरावाससयसहस्साण असंखिज्जाणं साणं२ सामाणियसाहस्सीण साण२ अग्गमहिसीणं साण२ सपरिवाराणं साण२ अणियाण साणं२ अणियाहिवईण साण२ आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं च बहूणं वाणमंतराण देवाणय देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणाईसरसेणावच्चं कारेमाणा पालेमाणा महयाहयनट्टगीयवाइयतंतीतलताल तुडियघणमुइंगपडुप्पवाइयरवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरंति। कहिण भंते! पिसायाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा प०। कहिण भंते! पिसायादेवा परिवसंति? गो०! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए

विचित्रमालामुकुटा कल्याणकप्रवरवस्त्रपरिहिता कल्याणकप्रवरमाल्यानुलेपनधरा भासुरबोन्दय प्रलम्बवनमालधरा दिव्येन वर्णेन दिव्येन गन्धेन दिव्येन स्पर्शेन दिव्येन संस्थानेन दिव्यया ऋद्ध्या दिव्यया द्युत्या दिव्यया प्रभया दिव्यया छायया दिव्येनार्चिषा दिव्येनैतेन दिव्यया लेश्यया दश दिशः उद्योतयन्तः प्रभासयन्तस्ते तत्र स्वेषां २ भौमेयनगरावासशतसहस्राणां असंख्येयानां स्वेषां २ सामानिकसहस्राणां स्वेषां अग्रमहिषीणां सपरिवाराणां स्वेषां २ अनीकानां स्वेषां २ अनीकाधिपतीनां स्वेषां २ आत्मरक्षकदेवसहस्राणामन्येषाञ्च बहूनां वानव्यन्तराणां देवानां देवीनाञ्चाधिपत्यं पुरोवर्त्तित्वं स्वामित्वं भर्त्तृत्वं महत्तरकत्वमाज्ञेश्वरत्वं सेनापतित्वं कुर्वन्तः पालयन्तो महताहतनृत्यगीतवादित्रतन्त्रीतलतालत्रुटितघनमृदङ्गपटुप्रवादितरवेण दिव्यानि भोगभोगानि भुञ्जाना विहरन्ति। क्व भदन्त। पिशाचानां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि, क्व भदन्त। पिशाचा देवाः परिवसन्ति? गौतम! अस्याः रत्नप्रभायाः पृथिव्याः रत्नमयस्य काण्डस्य योजनसहस्रबाहल्यस्योपर्येकं योजनशतमवगाह्य

रयणामयस्स कंडस्स जोयणसहस्सबाहल्लस्स उवरिं एगं जोयणसयं उग्गाहित्ता हिट्ठावेगं जोयणसयं वज्जित्ता मज्झे अट्ठसु जोयणसएसु एत्थणं पिसायाणं देवाणं तिरियमसंखेज्जा भोमेज्जा नगरावाससयसहस्सा भवंतीति मक्खायं ते णं भोमेज्जा नगरा बाहिं वट्टा जहा ओहिओ भवणवण्णओ तहा भाणियव्वो जाव पडिरूवा, एत्थणं पिसायाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता, तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थणं बहवे पिसाया परिवसंति महिड्ढिया जहा ओहिया जाव विहरंति, काला महाकाला इत्थ दुवे पिसायइंदा पिसायरायाणो परिवसंति, महिड्ढिया महज्जुइया जाव विहरंति। कहिणं भंते! दाहिणिल्लाणं पिसायाणं देवाणं ठाणा पण्णत्ता। कहिणं भंते! दाहिणिल्ला पिसाया देवा परिवसंति? गो०। जंबूद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए रयणामयस्स कंडस्स जोयणसहस्सबाहल्लस्स उवरिं एगं जोयणसयं उग्गाहित्ता हिट्ठावेगं जोयणसयं वज्जित्ता मज्झे अट्ठसु जोयणसएसु एत्थणं दाहिणिल्लाणं

धश्चैकं योजनशतं वर्जयित्वा मध्येऽष्टसु योजनशतेष्वत्र पिशाचानां देवानां तिर्यगसङ्ख्येयानि भौमेयकनगरावासशतसहस्राणि भवन्तीत्याख्यातम्। ते भौमेया नगरा बहिर्वृत्ता यथौघिको भवनवर्णक स्तथा भणितव्यो यावत्प्रतिरूपा, अत्र पिशाचानां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि, त्रिष्वपि लोकस्यासङ्ख्येयभागे, तत्र बहवः पिशाचा परिवसन्ति महर्द्धिका यथौघिका यावद्विहरन्ति, कालमहाकालौ चात्र द्वौ पिशाचेन्द्रौ पिशाचराजानौ परिवसतः, महर्द्धिकौ महाद्युतिकौ यावद्विहरतः। क्व भदन्त! दाक्षिणात्यानां पिशाचानां देवानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि, क्व भदन्त! दाक्षिणात्या पिशाचा देवा परिवसन्ति? गौतम। जम्बूद्वीपे २ मन्दरस्य पर्वतस्य दक्षिणतोऽस्या रत्नप्रभाया पृथिव्या रत्नमयस्य काण्डस्य योजनसहस्रबाहल्यस्योपर्येकं योजनशतमवगाह्य अधश्चैकं योजनशतं वर्जयित्वा मध्येऽष्टसु योजनशतेष्वत्र दाक्षिणात्यानां पिशाचानां देवानां

एत्थणं ऋणवन्निया देवाणं ठाणा प०, उववाएलो० समुग्घाएलो० सठाणेणंलो० तत्थणं ऋणवन्निया देवा
परिवसति महिड्ढिया जहा पिसाया जाव विहरति सन्निहियसामाणा इत्थ दुवे ऋणवन्निदा ऋणवन्नि
यकुमाररायाणो परिवसति महिड्ढिया जहा कालमहाकाला एव जहा कालमहाकालाणं दोएहपि दाहिणि
ल्लाण उत्तरिल्लाणय ज्ञाणिया तहा सनिहियसामाणाणंपि ज्ञाणियव्वा संगहणि गाहा—ऋणवन्नियपणवन्निय
इसिवाइयज्ञूयवाइएचेव । कंदियमहाकंदिय कुहंडयपयगदेवाय इमे इंदा—सनिहियासामाणा धाइविधाएय
इसीयइसिवाले ईस्सरमहेस्सरेविय हवइसुवत्थेविसालेय ॥१॥ हासेहासरईविय सेएयज्ञवेतहामहासेए पयगेप
यगपएविय नेयव्वाआणुपुव्वीए ॥२॥ कहिणं ज्ञते। जोइसियाण देवाणं पज्जत्ताण२ ठाणा प० ? कहिणं ज्ञते!
जोइसिया देवा परिवसति ? गो० ! इमीसे रयणप्पज्ञाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाउ ज्ञूमिज्ञागाउ सत्तणउ
इ जोयणसए उड्ढ उप्पइत्ता दसुत्तर जोयणसय वाहल्ले तिरियमसंखिज्जे जोइसविसए एत्थणं जोइसियाणं

रन्ति, सन्निहितसमानौ चात्र द्वावणपन्निकेन्द्रावणपन्निकराजानौ परिवसतो महर्द्धिकौ यथा कालमहाकालौ एव यथा कालमहाकालयोर्द्वयो दा
क्षिणात्ययो रौत्तरिकायाश्च (वक्तव्यता) भणिता तथा सन्निहितसामानिकयोरपि ज्ञणितव्या सङ्ग्रहणिगाथा–अणपन्निकपणपन्निका ऋषिवादी चै
वभूतवादी च । कन्दीमहाकन्दी कोहण्डोचैवपतकश्च ॥ १ ॥ इमे इन्द्राः सन्निहित सामानौ धातविधातृपंयथार्षिपाल । ईश्वरमहेश्वरौखलु ज्ञवति
सुवत्सोविशालश्च ॥ २ ॥ हास्योहास्यरति खलु श्वेतश्चज्ञवस्तथा महाश्वेत. पतक पतकपदोपिच ज्ञातव्या आनुपूर्व्याच ॥ २ ॥ क्व भदन्त । ज्योति
ष्काणा देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि' क्व ज्ञदन्त । ज्योतिष्का देवा. परिवसन्ति ? गौतम । अस्या रत्नप्रज्ञाया पृथिव्या बहुसमर
मणीयाद् ज्ञूमिज्ञागा त्सप्तनवतियोजनशतमूर्द्ध मुत्पत्य दशोत्तर योजनशत बाहल्य तिर्यगसंख्येय ज्योतिष्कविषयमत्र ज्योतिष्काणा देवाना तिर्यग

देवाण तिरियमसंखिज्जा जोइसियविमाणावाससयसहस्सा हवंतीतिमक्खायं तेणं विमाणा अद्धकविठग सठाणसंठिया सव्वफालियामया अब्भुग्गयमुसियपहसियाइव विविहमणिकणगरयणभत्तिचित्ता वाउद्धुत विजयवेजयंतीपडागाछत्ताइछत्तकलिया तुंगा गगनतलमहिलंघमाणसिहरा जालंतररयणपंजरुम्मीलियव्व मणिकणगथूभियागा वियसियसयपत्तपोंडरीया तिलगरयणद्धचंदचित्ता नानामणिमयदामालंकिया अंतो बहिं च सण्हा तवणिज्जरुइलवालुयापत्थडा सुहफासा सस्सिरीयरूवा पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा एत्थणं जोइसियाणं पज्जत्ताऽपज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता, तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थणं बहवे जोइसिया देवा परिवसंति तंजहा—वहस्सईचंदासूरासुक्कासणिच्छराराहूधूमकेतुबुधाअंगारगा तत्ततवणि ज्जकणगवन्ना जेगहा जोइसंमि चारं चरंति केतूयगतिरइया अट्ठावीसइविहाय नक्खत्ता देवयगणा ना णासंठाणसंठियाओय पंचवन्नाओ तारयाओ ठवियलेस्साचारिणो अविस्साममंडलगई पत्तेयं णामंकपागडि

सख्येयानि भवनावासशतसहस्राणि भवन्तीति मयाख्यातम्, तानि विमानानि अर्द्धकपित्थकसंस्थानसंस्थितानि सर्वस्फाटिकमयानि अभ्युद्गतोत्सृतप्रभासितानि विविधमणिकनकरत्नभक्तिचित्राणि वातोद्धूतविजयवैजयन्तीपताकाछत्रातिछत्रकलितानि तुङ्गानि गगनतलानुलिखच्छिखराणि जालान्तररत्नपञ्जरोन्मीलितमिव मणिकनकस्तूपिकानि विकसितशतपत्रपुण्डरीकतिलकरत्नार्द्धचन्द्रचित्राणि नानामणिमयदामालङ्कृतानि अन्तर्बहिश्च श्लक्ष्णानि तपनीयरुचिरवालुकाप्रस्तटानि शुभस्पर्शानि सश्रीकरूपाणि प्रासादीयानि दर्शनीयानि अभिरूपाणि प्रतिरूपाणि अत्र ज्योतिष्काणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि, त्रिष्वपि लोकस्यासंख्येय भाग तत्र बहवो ज्योतिष्कदेवा परिवसन्ति तद्यथा–बृहस्पतय चन्द्रा सूर्या शुक्राः शनैश्चरा राहव केतवो बुधा अङ्गारकास्तप्ततपनीयकनकवर्णा ये ग्रहा ज्योतिश्चक्रे चारं चरन्ति केतवो गतिरतिका अष्टाविंशतिविधा

यचिंधमउफा महिढ्ढिया जाव पन्नासेमाणा तेणं तत्थ साणं२ विमाणावाससयसहस्साणं साणं२ सामाणि यसाहस्सीण साण २ अग्गमहिसीण सपरिवाराण साण २ परिसाण साण २ अणियाणं साणं २ अणि याहिवईणं साणं२ आयरक्खदेवसाहस्सीण अन्नेसिं च बहूण जोइसियाणं देवाणय देवीणय आहेवच्चं जाव विहरति चंदिमसूरियाय एत्थ दुवे जोइसिंदा जोइसियरायाणो परिवसति महिढ्ढिया जाव पन्नासेमाणा त ण तत्थ साण २ जोइसियविमाणावाससयसहस्साण चउण्ह सामाणियसाहस्सीण चउण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं तिण्ह परिसाणं सत्तण्ह अणियाण सत्तण्ह अणियाहिवईण सोलसण्ह आयरक्खदेवसाहस्सी ण जोइसियाण देवाणय देवीणय आहेवच्चं जाव विहरति । कहिण भंते ! वेमाणियाणं देवाणं पज्जत्ता२ ण ठाणा प० ? कहिण भंते ! वेमाणिया देवा परिवसति ? गो० ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरम

(अष्टाविंशतिसंख्याका अभिजिनाद्या लोकप्रसिद्धा) नक्षत्रा देवगणा नानासंस्थानसंस्थिताश्च पञ्चवर्णास्तारका (स्तारा एतेसर्वेऽपि) अवस्थितलेश्या चारिणो ऽविश्रामगतयद्दलगतिका प्रत्येक नामाङ्कप्रकटितचिह्नमुकुटा महर्द्धिका यावत्प्रभासयन्त स्ते तत्र स्वेषां २ विमानावासशतसहस्राणां स्वे षां २ सामानिकसहस्राणां स्वेषां २ अग्रमहिषीणां सपरिवाराणां स्वेषां २ पर्षदां स्वेषां २ अनीकानां स्वेषां २ अनीकाधिपतीनां स्वेषां २ आत्मर क्षकदेवसहस्राणां अन्येषाञ्च बहूनां ज्योतिकाणां देवानां देवीनाञ्चाधिपत्यं पुरोवर्त्तित्वं यावद्विहरन्ति। सूर्याचन्द्रमसौ चात्र द्वौ ज्योतिषेन्द्रौ ज्योतिषराजानौ परिवसत, महर्द्धिकौ यावत्प्रभासयन्तौ तौ तत्र स्वेषां २ ज्योतिष्कविमानावासशतसहस्राणां चतुर्णां सामानिकसहस्राणां चतु र्णामग्रमहिषीणां सपरिवाराणां त्रयाणां पर्षदां सप्तानामनीकानां सप्तानामनीकाधिपतीनां षोडशानामात्मरक्षकदेवसहस्राणां ज्योतिकाणामन्येषां बहूनां देवानां देवीनाञ्चाधिपत्यं यावद्विहरत । क्व भदन्त ! वैमानिकानां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि? क्व भदन्त ! वैमानिका

णिज्जाओ भूमिभागाओ उड्ढं चंदिमसूरियगहनक्खत्ततारारूवाणं बहूइं जोयणसयाइं बहूइं जोयणसहस्सा
इ बहूगाओ जोयणकोडीओ बहूगाओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढं दूरं उप्पइत्ता एत्थणं सोहम्मीसाणसणंकु
मारमाहिंदबंभलोगलंतगमहासुक्कसहस्सारआणयपाणयआरणअच्चुयगेविज्जाणुत्तरेसु तत्थ एत्थणं वेमाणि
याणं देवाणं चउरासीइविमाणसयसहस्सा सत्ताणउइंचवेसहस्साओ तेवीसं विमाणा हवंतीतिमक्खायं तेणं
विमाणा सव्वरयणामया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा नीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पहा
ससिरीया सउज्जोया पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा इत्थणं वेमाणियाणं देवाणं पज्जत्ताप
ज्जत्ताणं ठाणा प० तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थणं बहवे वेमाणिया देवा परिवसंति तं०—सोह
म्मीसाणसणंकुमारमाहिंदबंभलोगलंतगमहासुक्कसहस्सारआणयपाणयआरणअच्चुयगेवेज्जगाणुत्तरोववाइया
देवा तेणं मियमहिसवराहसीहछगलदद्दुरहयगयवइभुयगखग्गउसभंकविडिमपागडियचिंधमउडा पसिढिल

देवा परिवसन्ति ? गौतम ! अस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्या बहुसमरमणीयाद्भूमिभागादूर्ध्वं चन्द्रसूर्यग्रहनक्षत्रताराक्रूपाणां बहूनि योजनशतानि ब
हूनि योजनसहस्राणि बह्वीः योजनकोटीः बह्वीः योजनकोटीकोटीः ऊर्ध्वं दूरमुत्पत्यात्र सौधर्मेशानसनत्कुमारमाहेन्द्रब्रह्मलान्तकशुक्रसहस्रारानत
प्राणतारणाच्युतग्रैवेयकानुत्तरेषु तत्रैतेषां वैमानिकानां देवानां चतुरशीतिविमानशतसहस्राणि सप्तनवतिसहस्राणि त्रयोविंशतिर्विमानानि भव
न्तीति मयाख्यातम्. तानि विमानानि सर्वरत्नमयानि अच्छानि श्लक्ष्णानि लष्टानि घृष्टानि मृष्टानि नीरजांसि निर्मलानि निष्पङ्कानि निष्कण्टक
च्छायानि सप्रभाणि सोद्योतानि प्रासादीयानि दर्शनीयानि अभिरूपाणि प्रतिरूपाणि अत्र वैमानिकानां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञ
प्तानि. त्रिष्वपि लोकस्यासंख्येयभागे तत्र बहवो वैमानिका देवाः परिवसन्ति तद्यथा-सौधर्मेशानसनत्कुमारमाहेन्द्रब्रह्मलान्तकशुक्रसहस्रारान

वरमउडतिरीडधारिणो वरकुंडलुज्जोइयाणणा मउडदित्तसिरया रत्ताज्ञा पउमप्पहगोरा ज्ञासेया सुहवण्णगं ॥ मू
घफासा उत्तमवेउव्विणो पवरवत्थगंधमल्लाणुलेवणधरा महिड्ढिया महज्जुइया महायसा महब्बला महाणुज्ञा
गा महासोक्खा हारविराइयवत्था कडगतुडियथम्नियज्ञुया ञ्जगदकुंडलमट्ठगंडतलकण्णपीढधारी विचित्त
हत्थाज्ञरणा विचित्तमालामउलिकल्लाणपवरवत्थपरिहिया कल्लाणगपवरमल्लाणुलेवणा ज्ञासुरबोंदी पलंबव
णमालधरा दिव्वेणं वन्नेणं दिव्वेणं गंधेणं दिव्वेणं फासेण दिव्वेणं संघयणेणं दिव्वेण संठाणेणं दिव्वाए इड्ढीए
दिव्वाए जुईए दिव्वाए पज्ञाए दिव्वाए च्छायाए दिव्वाए ञ्चच्चीए दिव्वेणं तेएण दिव्वाए लेसाए दसदिसाउ उ
ज्जोवेमाणा पज्ञासेमाणा तेण तत्थ साणं २ विमाणावाससयसहस्साणं साण २ सामाणियसाहस्सीणं सा
णं २ तावत्तीसगाणं साण २ लोगपालाणं साण २ ञ्जग्गमहिसीणं सपरिवाराण साणं २ परिसाणं साणं

तमाणतारणाच्युतग्रैवेयकानुत्तरोपपातिका देवा स्तेच मृगमहिषवराहसिंहछगलदर्दुरहयगजपतिज्ञुजगखड्गवृषभाङ्कविडिमचिह्नमुकुटाः प्रशिथिल ॥ भ
वरमुकुटकिरीटधारिणो वरकुण्डलोद्योतितानना मुकुटदीप्तशिरसो रक्ताज्ञा पद्मप्रज्ञगौरा ज्ञास्वरा शुज्ञवर्णगन्धस्पर्शा उत्तमवैकुर्विका प्रवरवस्त्र
गन्धमाल्यानुलेपनधरा महर्द्धिका महाद्युतिका महायशस महब्बला महानुज्ञावा महेशाख्या हारविराजितवक्षसः कटकत्रुटितस्तम्भितज्ञुजा अङ्गद
कुण्डलमृष्टगण्डतलकर्णपीठधारिणो विचित्रहस्ताज्ञरणा विचित्रमालामौलिकल्याणकप्रवरवस्त्रपरिहिता कल्याणकप्रवरमाल्यानुलेपना ज्ञासुरबोन्द
य प्रलम्बवनमालधरा दिव्येन वर्णेन दिव्येन गन्धेन दिव्येन स्पर्शेन दिव्येन संघयणेन दिव्येन संस्थानेन दिव्यया ऋद्ध्या दिव्यया द्युत्या दिव्यया
प्रज्ञया दिव्यया च्छायया दिव्येनार्चिषा दिव्येनैतेन दिव्यया लेश्यया दश दिश उद्योतयन्त प्रज्ञासयन्त स्ते तत्र स्वेषां २ विमानावासशतसहस्रा
णा स्वेषां २ सामानिकसहस्राणां स्वेषां २ त्रायस्त्रिंशकानां स्वेषां २ लोकपालानां स्वेषां २ अग्रमहिषीणां सपरिवाराणां स्वेषां २ पर्षदां स्वेषां २

२ आणियाण साण २ आणियाहिवईण साणं २ आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं च बहूणं वेमाणियाणं देवाण देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणाईसरसेणावच्चं कारेमाणा पालेमाणा महयाहयनट्टगीयवाइयतंतीतलतालतुडियघणमुइंगपडुप्पवाइयरवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरंति। कहिणं भंते। सोहम्मगदेवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा प० कहिणं भंते। सोहम्मगदेवा परिवसंति? गो०! जंबूद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभा गाओ उड्ढं चंदिमसूरियगहगणनक्खत्ततारारूवाणं बहूणि जोयणसयाइं बहूणि जोयणसहस्साइं बहूणि जोयण सयसहस्साइं बहुगाओ जोयणकोडीओ बहुगाओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढं दूरं उप्पइत्ता एत्थणं सोहम्मे नाम कप्पे पन्नत्ते, पाचीणपडीणायते उदीणदाहिणविच्छिन्ने अद्धचंदसंठाणसंठिए अच्चिमालिभासरासिवन्ना

अनीकाना स्वेषां २ अनीकाधिपतीनां स्वेषां २ आत्मरक्षकदेवसहस्राणां अन्येषां च बहूनां वैमानिकानां देवानां च देवीनां चाधिपत्यं पुरोवर्त्तित्वं स्वामित्वं भर्तृत्वं महत्तरकत्वमाज्ञेश्वरसेनापतित्वं कुर्वन्तः पालयन्तो विहरन्ति महताहतनृत्यगीतवादित्रतन्त्रीतलतालत्रुटितघनमृदङ्गपटुप्रवादितरवेण दिव्यानि भोगभोगानि भुञ्जाना विहरन्ति। क्व भदन्त! सौधर्मकदेवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि, क्व भदन्त! सौधर्मकदेवाः परिवसन्ति? गौतम! जम्बूद्वीपे २ मन्दरस्य पर्वतस्य दक्षिणतोऽस्या रत्नप्रभाया पृथिव्या बहुसमरमणीयाद्भूमिभागादूर्ध्वं चन्द्रसूर्यग्रहगणनक्षत्रतारारूपेभ्यो बहूनि योजनशतानि बहूनि योजनसहस्राणि बहूनि योजनशतसहस्राणि बह्वीर्योजनकोटीर्बह्वीर्योजनकोटीकोटीरूर्ध्वं दूरमुत्पत्यात्र सौधर्मो नाम कल्पः प्रज्ञप्तः प्राचीनप्रतीचीनायतमुदीचीनदक्षिणविस्तीर्णमर्द्धचन्द्रसंस्थानसंस्थितमर्चिर्मालाभासराशिवर्णाभमसंख्येया योजनकोटीकोटीरायामविष्कम्भाभ्यामसंख्येया योजनकोटीकोटीः परिक्षेपेण सर्वरत्नमयं अच्छं यावत्प्रतिरूपं तत्र

ज्जे-असंखेज्जाइं जोयणकोडीओ असंखेज्जाइं जोयणकोडाकोडीओ आयामविक्खंभेणं असंखेज्जाइं जोयणकोडाकोडीओ परिक्खेवेणं सव्वरयणामए अच्छे जाव पडिरूवे तत्थणं सोहम्मगदेवाणं बत्तीसं विमाणावाससयसहस्सा हवंतीतिमक्खायं ते णं विमाणा सव्वरयणमया अच्छा जाव पडिरूवा तेसि णं विमाणाणं बहुमज्झदेसभाए पंचवडेंसया पण्णत्ता, तं०—असोगवडेंसए सत्तवन्नवडेंसए चंपगवडेंसए चूयवडेंसए मज्झे तत्थ सोहम्मवडेंसए ते णं वडेंसगा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा, एत्थणं सोहम्मगदेवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा प०, तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थणं बहवे सोहम्मगदेवा परिवसंति महिड्ढिया जाव पभासेमाणा ते णं तत्थ साणं २ विमाणावाससयसहस्साणं साणं २ अग्गमहिसीणं साणं २ सामाणियसाहस्सीणं एवं जहेव ओहियाणं तहेव एतेसिंपि भाणियव्वं जाव आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं च बहूणं सोहम्मगकप्पवासीणं वेमाणियाणं देवाण देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं जाव विहरंति। सक्के इत्थ देविंदे देव

सौधर्मकदेवानां द्वात्रिंशद्विमानावासशतसहस्राणि भवन्तीति मयाख्यातम्, तानि विमानानि सर्वरत्नमयानि अच्छानि यावत्प्रतिरूपाणि तेषां विमानानां बहुमध्यदेशभागे पञ्चावतंसकाः प्रज्ञप्तास्तद्यथा-अशोकावतंसकः सप्तपर्णावतंसकश्चम्पकावतंसकश्चूतावतंसको मध्ये तत्र सौधर्मावतंसकस्ते चावतंसकाः सर्वरत्नमया अच्छा यावत्प्रतिरूपाः, अत्र सौधर्मकदेवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि, त्रिष्वपि लोकस्यासंख्येयभागे तत्र बहवः सौधर्मकदेवाः परिवसन्ति महर्द्धिका यावत्प्रभासयन्तः ते तत्र स्वेषां २ विमानावासशतसहस्राणां स्वेषां २ अग्रमहिषीणां स्वेषां २ सामानिकसहस्राणामेवं यथैवौघिकानां तथैवैतेषामपि भणितव्यं यावदात्मरक्षकदेवसहस्राणामन्येषां च बहूनां सौधर्मकल्पवासिनां देवानां देवीनां चाधिपत्यं यावद्विहरन्ति। शक्रोऽत्र देवेन्द्रो देवराजः परिवसति वज्रपाणिः पुरन्दरः शतक्रतुः सहस्राक्षो मघवा पाकशासनो दक्षिणार्द्धलोकाधि

राया परिवसइ वज्जपाणी पुरंदरे सयक्कउ सहस्सक्खे मघवं पागसासणे दाहिणड्ढलोगाहिवई बत्तीसविमाणावाससयसहस्साहिवई एरावणवाहणे सुरिंदे अरयवरवत्थधरे आलइयमालमउडे नवहेमचारुचित्तचंचलकुंडलविलिहिज्जमाणगंडे महिड्ढिए जाव पभासेमाणे से णं तत्थ बत्तीसाए विमाणावाससयसहस्साणं चउरासीए सामाणियसाहस्सीणं तावत्तीसाए तावत्तीसगाणं चउण्हं लोगपालाणं अट्ठण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणियाणं सत्तण्हं अणियाहिवईणं चउण्हं चउरासीणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं च बहूणं सोहम्मकप्पवासीणं वेमाणियाणं देवाणय देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं कुव्वमाणे जाव विहरति। कहिणं भंते। ईसाणगदेवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा प०? कहिणं भंते। ईसाणगदेवा परिवसंति? गो०। जंबूद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ उड्ढं चंदिमसूरियगहगणनक्खत्ततारारूवाणं बहूइं जोयणसयाइं बहूइं जोयणसहस्साइं जाव

पति द्वात्रिंशद्विमानावासशतसहस्राधिपतिः ऐरावणवाहनः सुरेन्द्रोऽरजोम्बरवस्त्रधरः आलगितमालमुकुटो नवहेमचारुचित्तचञ्चलकुण्डलविलिख्यमानगण्डो महर्द्धिको यावत्प्रभासयन् स तत्र द्वात्रिंशद्विमानावासशतसहस्राणां चतुरशीत्याः सामानिकसहस्राणां त्रयस्त्रिंशतस्त्र्याकानां त्रायस्त्रिंशकदेवानां चतुर्णां लोकपालानां अष्टानामग्रमहिषीणां सपरिवाराणां तिसृणां पर्षदां सप्तानामनीकानां सप्तानामनीकाधिपतीनां चतुर्णां चतुरशीत्यात्मरक्षकदेवसहस्राणां अन्येषां च बहूनां सौधर्मकल्पवासिदेवानां देवीनां चाधिपत्यं कुर्वन् पालयन् यावद्विहरति। क्व भदन्त। ईशानदेवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि क्व भदन्त। ईशानदेवाः परिवसन्ति? गौतम। जम्बूद्वीपे द्वीपे मन्दरस्य पर्वतस्योत्तरतोऽस्याः रत्नप्रभायाः पृथिव्याः बहुसमरमणीयाद्भूमिभागादूर्ध्वं चन्द्रसूर्यग्रहगणनक्षत्रतारारूपेभ्यो बहूनि योजनशतानि बहूनि योजनशतसहस्राणि यावदुत्पत्येशान

उप्पइत्ता एत्थण ईसाणे नाम कप्पे पन्नत्ते. पाईणपडीणायए उदीणदाहिणविच्छिन्ने एवं जहा सोहम्मे जाव पडिरूवे तत्थणं ईसाणगदेवाण अट्ठावीस विमाणावाससयसहस्सा हवतीति मक्खाय तेण विमाणा सव्व रयणामया जाव पडिरूवा, तेसिण बहुमज्झदेसभाए पच वडिंसगा पन्नत्ता, अंकवडिंसए फलिहवडिंसए रयणवडिंसए जाव सरूववडिंसए मज्झे इत्थ ईसाणवडिंसए, तेण वडिंसया सव्वरयणामया जाव पडिरूवा एत्थण ईसाणाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पन्नत्ता। तिसुवि लोगस्स असखेज्जइभागे सेसं जहा सोहम्मगदेवाण जाव विहरति, ईसाणं इत्थ देविंदे देवराया परिवसति सूलपाणी उसभवाहणे उत्तरड्ढलोगाहिवई अट्ठावीसविमाणावाससयसहस्साहिवई अरयवरवत्थधरे सेस जहा सक्कस्स जाव पभासेमाणे तत्थ अट्ठावीसाए विमाणावाससयसहस्साण असीतीए सामाणियसाहस्सीणं तावत्तीसाए तावत्तीसगाणं चउण्ह लोगपालाण अट्ठण्ह अग्गमहिसीण सपरिवाराण तिण्ह परिसाण सत्तण्हं अणियाणं सत्तण्ह अणि

नाम कल्प प्रज्ञप्त, प्राचीनप्रतीचीनायत मुत्तरदक्षिणविस्तीर्णमेव यथा सौधर्मो यावत्प्रतिरूप तत्रेशानकाना देवाना अष्टाविंशति र्विमानावासशतसहस्राणि भवन्तीत्याख्यात' तानि विमानानि सर्वरत्नमयानि यावत्प्रतिरूपाणि, तेषा बहुमध्यदेशभागे पञ्चावतसका. प्रज्ञप्तास्तद्यथा–अङ्कावतसक स्फटिकावतसको यावत्सुरूपावतसको मध्ये त्वशानावतसक स्तेचावतसका सर्वरत्नमया यावत्प्रतिरूपा अत्रेशानाना देवाना पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि, त्रिष्वपि लोकासख्येयभाग शेष यथा सौधर्मकदेवाना यावद्विहरन्ति। ईशानश्चात्र देवेन्द्रो देवराज परिवसति शूलपाणिर्वृषभवाहन उत्तरार्द्धलोकाधिपति रष्टाविंशतिविमानावासशतसहस्राधिपति अरजोम्बरवस्त्रधर, शेष यथा शक्रस्य (वक्तव्यतोक्ता तथा त्रापि) यावत्प्रभासयन्नष्टाविंशतिविमानावासशतसहस्राणामशीति सामानिकसहस्राणा त्रयस्त्रिंशत् त्रायस्त्रिंशकाना चतुर्णा लोकपालाना च

याहिवईणं चउण्हं असीतीणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं च बहूण ईसाणकप्पवासीणं वेमाणियाणं देवाण य देवीण य आहेवच्चं पोरेवच्चं कुव्वमाणे जाव विहरइ, कहिण भंते! सणकुमारदेवाणं पज्जत्ता पज्जत्ताण ठाणा पन्नत्ता। कहिण भंते! सणकुमारा देवा परिवसंति? गोयमा! सोहम्मस्स कप्पस्स उप्पि सपक्खि सपडिदिसि बहूइ जोयणाइ बहूइ जोयणसयाइं बहूइ जोयणसयसहस्साइ बहुगाउ जोयणकोडीउ बहुगाउ जोयणकोडाकोडीउ उड्ढ दूर उप्पइत्ता एत्थण सणंकुमारे नाम कप्पे पन्नत्ते। पाईणपडीणायए उदीणदाहिणविच्छिन्ने जहा सोहम्मे कप्पे जाव पडिरूवे, एत्थण सणकुमाराण देवाणं बारस विमाणावाससयसहस्सा हवंतीति मक्खाय, तेण विमाणा सव्वरयणामया जाव पडिरूवा तेसिण विमाणाणं बहुमज्झदेसभागे पच वडिंसगा पन्नत्ता, तंजहा—असोगवडिंसए सत्तवण्णवडिंसए चंपगवडिंसए चूयवडिं

त्रायस्त्रिंशानामग्रमहिषीणां सपरिवाराणां तिसृणां पर्षदां सप्तानामनीकानां सप्तानामनीकाधिपतीनां चतुर्णां चतुरशीतिसामानिकसहस्राणां अन्येषां च बहूनां मीशानकल्पवासिदेवानां देवीनां चाधिपत्यं पुरोवर्त्तित्वं कुर्वन्यावद्विहरति। क्व भदन्त! सनत्कुमाराणां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि, क्व भदन्त! सनत्कुमारदेवाः परिवसन्ति? गौतम! सौधर्मस्य कल्पस्योपरि सपक्षं सप्रतिदिक् बहूनि योजनानि बहूनि योजनशतानि बहूनि योजनशतसहस्राणि बह्वीः योजनकोटीः बह्वीः योजनकोटीकोटीः ऊर्द्धं दूरमुत्पत्यात्र सनत्कुमारं नाम कल्पं प्रज्ञप्तं, प्राचीनप्रतीचीनायतमुत्तरदक्षिणविस्तीर्णं यथा सौधर्मः कल्पो यावत्प्रतिरूपः, तत्र सनत्कुमाराणां देवानां द्वादशविमानावासशतसहस्राणि भवन्तीति मयाख्यातम्, तानि विमानानि सर्वरत्नमयानि अच्छानि यावत्प्रतिरूपाणि तेषां विमानानां मध्ये बहुमध्यदेशभागे पञ्चावतंसकाः प्रज्ञप्तास्तद्यथा-अशोकावतंसकः सप्तपर्णावतंसकश्चम्पकावतंसकः चूतावतंसको मध्ये तत्र सनत्कुमारावतंसकः स्वावतंसकाः सर्वरत्नमया अच्छा यावत्प्रतिरूपा अत्रसन

सए मज्झे तत्थ सणंकुमारवडिंसए तेणं वडिंसया सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा तत्थणं सणंकुमारदेवाणं पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पन्नत्ता । तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थणं बहवे सणकुमारा देवा परिवसंति महिड्ढिया जाव पभासेमाणा विहरंति नवरं अग्गमहिसीओ णत्थि, सणकुमारे इत्थ देविंदे देवराया परिवसइ अरयवरवत्थधरे सेसं जहा सक्कस्स सेणं तत्थ बारसण्हं विमाणावाससयसहस्साणं बावत्तरीए सामाणियसाहस्सीणं सेसं जहा सक्कस्स अग्गमहिसीवज्जं नवरं चउण्हं बावत्तरीणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं जाव विहरइ । कहिणं भंते ! माहिंदाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता । कहिणं भंते ! माहिंदगा देवा परिवसंति ? गोयमा ! ईसाणस्स कप्पस्स उप्पिं सपक्खिं सपडिदिसिं बहूइं जोयणाइं जाव बहुगाओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढं दूरं उप्पइत्ता तत्थणं माहिंदे नामं कप्पे पन्नत्ते, पाईणपडीणायए जाव एवं जहेव सणकुमारे, नवरं अट्ठ विमाणावाससयसहस्सा वडिंसया जहा ईसाणे नवरं मज्झे तत्थ माहिं

त्कुमाराणां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि, त्रिष्वपि लोकस्यासंख्येये भागे तत्र बहवः सनत्कुमारा देवाः परिवसन्ति महर्द्धिका यावद्विहरन्ति नवरमग्रमहिष्यो न सन्ति, सनत्कुमारश्चात्र देवेन्द्रो देवराजः परिवसति अरजोम्बरवस्त्रधरः शेषं यथा शक्रस्य स तत्र द्वादशानां विमानावासशतसहस्राणां द्विसप्ततेः सामानिकसहस्राणां शेषं यथा शक्रस्याग्रमहिषीवर्जं नवरं चतसृणां द्विसप्ततीनामात्मरक्षकदेवसहस्राणां यावद्विहरति । क्व भदन्त ! माहेन्द्राणां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि ? क्व भदन्त ! माहेन्द्रका देवाः परिवसन्ति ? गौतम ! ईशानस्य कल्पस्योपरि सपक्षं सप्रतिदिक् बहूनि योजनानि यावद्बहुका योजनकोटीकोटय ऊर्ध्वं दूरमुत्पत्य तत्र माहेन्द्रो नाम कल्पः प्रज्ञप्तः प्राचीनप्रतीचीनायतः यावदेवं यथैव सनत्कुमारः नवरमष्टौ विमानावासशतसहस्राणि अवतंसका यथा ईशाने नवरं मध्ये तत्र माहेन्द्रावतंसकः एवं शेषं यथा स

॥ मूल ॥

दयकंसए एव सेस जहा सणंकुमारदेवाणं जाव विहरति माहिंदे इत्य देविंदे देवराया परिवसइ अरयंबर वत्थधरे एव जहा सणकुमारे जाव विहरइ नवर अठराह विमाणावाससयसहस्साणं सत्तरीए सामाणिय साहस्सीण चउराहं सत्तरीण आयरक्खदेवसाहस्सीण जाव विहरइ । कहिण भंते । बंभलोगदेवाणं पज्ज त्ता २ णं ठाणा पन्नत्ता । कहिण भंते । बंभलोगा देवा परिवसंति ? गो० ! सणंकुमारमाहिंदाण कप्पा ण उप्पि सपक्खि सपडिदिसि बहूइं जोयणाइ जाव उप्पइत्ता एत्यण बंभलोए नाम कप्पे पाईणपडीणा यते उदीणदाहिणविच्छिन्ने पडिपुन्नचदसठाणसठिए अच्चिमालीभासरासिप्पन्ने अवसेस जहा सणंकुमा राण नवर चत्तारि विमाणावाससयसहस्सा वडेसगा जहा सोहम्मस्स वडेसगा नवर मज्झे इत्य बंभलोयव डेसए एत्यण बंभलोगाण देवाण ठाणा प०, सेस तहेव जाव विहरति। बंभे इत्य देविंदे देवराया परिवस इ अरयवरवत्थधरे एव जहा सणकुमारे जाव विहरति नवर चउराह विमाणावाससयसहस्साणं सठीए

॥ प० ॥

नत्कुमारे कल्पे यावद्विहरति नवरमष्टानां विमानावासशतसहस्राणां सप्तति सामानिकसहस्राणां चतुर्णां (चतुर्गुणानां) सप्तत्यात्मरक्षकदेवसह स्राणां (अशीत्यधिकशतद्वयात्मरक्षकदेवसहस्राणामित्यर्थः) यावद्विहरति । क्व भदन्त । ब्रह्मलोकदेवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि, क्व भदन्त । ब्रह्मलोका देवा परिवसन्ति ? गौतम । सनत्कुमारमाहेन्द्रकल्पयोरुपरि सपक्ष सप्रतिदिक् बहूनि योजनानि यावदुत्पत्यात्र ब्रह्मलोक नाम कल्प प्रज्ञप्त प्राचीनप्रतीचीनायतमुत्तरदक्षिणविस्तीर्णं प्रतिपूर्णचन्द्रसस्थानसस्थित अर्चिर्मालाभाराशिप्रभ अवशेष यथा सनत्कुमाराणां नव र चत्वारि विमानावासशतसहस्राणि अवतसकाः यथा सौधर्मस्यावतसका नवर मध्येऽत्र ब्रह्मलोकावतसकोऽत्र ब्रह्मलोकानां देवानां स्थानानि प्र ज्ञप्तानि शेष तथैव यावद्विहरन्ति' ब्रह्मात्र देवेन्द्रो देवराज परिवसति अरजोम्बरवस्त्रधर एव यथा सनत्कुमारे यावद्विहरति नवर चतुर्णां वि

सामाणियसाहस्सीणं चउण्हयसठीणं आयरक्खदेवसाहस्सीण अन्नेसिं च बहूणं जाव विहरइ। कहिणं भंते! लंतगदेवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता, कहिण भंते! लंतगदेवा परिवसति? गोयमा! बंभलोगस्स कप्पस्स उप्पिं सपक्खिय सपडिदिसि बहूइ जोयणसयाइं जाव बहुईओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढं दूरं उप्पइत्ता एत्थण लंतए नाम कप्पे पण्णत्ते, पाईणपडीणायते जहा बंभलोए नवरं पन्नासाविमाणावाससहस्सा हवतीतिमक्खाय, वडंसगा जहा ईसाणवडंसगा नवर मज्झे इत्थ लंतगवडंसए देवा तहेव जाव विहरति, लंतए इत्थ देविंदे देवराया परिवसइ जहा सणकुमारे नवर पन्नासाए विमाणावाससहस्साण पन्नासाए सामाणियसाहस्सीण चउण्हं पन्नासाण आयरक्खदेवसाहस्सीण अन्नेसिंच बहूणं जाव विहरइ। कहिण भंते! महासुक्काण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता। कहिण भंते! महासुक्कादे

मानावासशतसहस्राणा सप्तति सामानिकसहस्राणा चतुर्णा (चतुर्गुणाना) पञ्चात्मरक्षकदेवसहस्राणा (चत्वारिंशदधिकशतद्वयदेवसहस्राणा) अन्येषाञ्च बहूना यावद्विहरति। क्व भदन्त! लान्तकदेवाना पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि, क्व भदन्त! लान्तकदेवा परिवसन्ति? गौतम! ब्रह्मलोकस्य कल्पस्योपरि सपक्ष सप्रतिदिक् बहूनि योजनशतानि यावदूरमुत्पत्यात्र लान्तक नाम कल्प प्रज्ञप्त प्राचीनप्रतीचीनायत यथा ब्रह्मलोके नवर पञ्चाशद्विमानावासशतसहस्राणि भवन्तीति मयाख्यातम्, अवतसका यथा ईशानावतसका नवर मध्येत्र लान्तकावतसको देवा स्तथैव यावद्विहरन्ति, लान्तकोत्र देवेन्द्रो देवराज परिवसति यथा सनत्कुमार नवर पञ्चाशद्विमानावासशतसहस्राणा पञ्चाशत्सामानिकसहस्राणां चतुर्णा (चतुर्गुणाना) पञ्चाशदात्मरक्षकदेवसहस्राणा (लक्षद्वयात्मरक्षकदेवसहस्राणा) अन्येषा च बहूना यावद्विहरति। क्व भदन्त! महाशुक्राणा देवाना स्थानानि प्रज्ञप्तानि' क्व भदन्त! महाशुक्रा देवा परिवसन्ति? गौतम! लान्तकस्य कल्पस्योपरि सपक्ष सप्रतिदिक् यावदुत्प

वा परिवसंति ? गोयमा ! लंतस्स कप्पस्स उप्पिं सपक्खिं सपडिदिसिं जाव उप्पइत्ता एत्थण महासुक्के नाम कप्पे पन्नत्ते, पाईणपडीणायते उदीणदाहिणविच्छिन्ने जहा बंभलोए नवरं चत्तालीस विमाणावाससहस्सा हवंतीति मक्खायं, वडेंसगा जहा सोहम्मवडेंसगा नवरं मज्झे तत्थ महासुक्कवडेंसए जाव विहरइ महासुक्के इत्थ देविंदे देवराया जहा सणंकुमारे नवरं चत्तालीसाए विमाणावाससाहस्सीणं चत्तालीसाए सामाणियसाहस्सीणं चउण्ह चत्तालीसाणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं जाव विहरति। कहिणं भंते ! सहस्सारदेवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा प०। कहिणं भंते। सहस्सारा देवा परिवसंति ? गो०। महासुक्कस्स कप्पस्स उप्पिं सपक्खिं सपडिदिसिं जाव उप्पइत्ता एत्थणं सहस्सारे नामं कप्पे प०, पाईणपडीणायते जहा बंभलोए नवरं छविमाणावाससहस्सा हवंतीति मक्खायं देवा तहेव वडेंसगा जहा ईसाणस्स वडेंसगा नवरं मज्झे इत्थ सहस्सारवडेंसए जाव विहरंति, सहस्सारे इत्थ देविंदे देवराया परिवसइ जहा सणंकु

त्यात्र महाशुक्र नाम कल्प प्रज्ञप्तः प्राचीनप्रतीचीनायतमुत्तरदक्षिणविस्तीर्णो यथा ब्रह्मलोको नवरं चत्वारिंशद्विमानावासशतसहस्राणि भवन्ती ति मयाख्यातमवतंसका यथा सौधर्मावतंसका नवरं मध्ये तत्र महाशुक्रावतंसको यावद्विहरति, महाशुक्रोत्र देवेन्द्रो देवराजो यथा सनत्कुमारो नवरं चत्वारिंशद्विमानावासशतसहस्राणां चत्वारिंशत्सामानिकसहस्राणां चतुर्णां चत्वारिंशदात्मरक्षदेवसहस्राणां यावद्विहरति। क्व भदन्त ! सहस्रारदेवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि, क्व भदन्त। सहस्रारदेवा परिवसन्ति ? गौतम। महाशुक्रस्य कल्पस्योपरि सपक्ष सप्रति दिक् यावदुत्पत्यात्र सहस्रार नाम कल्प प्रज्ञप्त प्राचीनप्रतीचीनायतमुत्तरदक्षिणविस्तीर्णो यथा ब्रह्मलोको नवरं षड्विमानावासशतसहस्राणि भ वन्तीति मयाख्यात देवास्तथैवावतंसका यथा ईशानस्यावतंसका नवरं मध्ये यत्र सहस्रारावतंसको यावद्विहरन्ति। सहस्रारोत्र देवेन्द्रो देवरा

मारे नवरं ठगहं विमाणावाससहस्साणं तीसाए सामाणियसाहस्सीणं चउण्हय तीसाणं श्रायरक्खदेवसाह स्सीण जाव श्राहेवच्चं कारेमाणे विहरति । कहिण भंते ! श्राणयपाणयदेवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा प० कहिणं भंते ! श्राणयपाणयदेवा परिवसंति ? गोयमा ! सहस्सारस्स कप्पस्स उप्पिं सपक्खि सपडिदि सि जाव उप्पइत्ता एत्यण श्राणयपाणयनामेणं दुवे कप्पा पन्नत्ता, पाईणपडीणायते उदीणदाहिणविच्छि न्ना श्रद्धचंदसंठाणसंठिया श्रच्चिमालीभासरासिप्पभा सेसं जहा सणकुमारे जाव पडिरूवा तत्यणं श्राण यपाणयदेवाणं चत्तारि विमाणावाससया हवंतीति मक्खाय जाव पडिरूवा, वडेंसगा जहा सोहम्मे नवरं मज्झे पाणयवडेंसए तेण वडेंसगा सव्वरयणामया श्रच्छा जाव पडिरूवा, एत्यणं श्राणयपाणयदेवाण पज्ज त्तापज्जत्ताण ठाणा पन्नत्ता, तिसुवि लोगस्स श्रसंखेज्जइभागे तत्यण बहवे श्राणयपाणयदेवा परिवसंति

ज परिवसति यथा सनत्कुमारो नवरं षण्णां विमानावासशतसहस्राणां त्रिंशत्सामानिकसहस्राणां चतुर्णां त्रिंशदात्मरक्षदेवसहस्राणां यावदाधिप त्यं कुर्वन्विहरति । क्व भदन्त ! आनतप्राणतदेवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । क्व भदन्त ! आनतप्राणतदेवाः परिवसन्ति ? गौतम ! सहस्रारस्य कल्पस्योपरि सपक्षं सप्रतिदिक् यावदुत्पत्यात्रानतप्राणतनामानौ द्वौ कल्पौ प्रज्ञप्तौ प्राचीनप्रतीचीनायतौ उत्तरदक्षिणविस्तीर्णौ अर्द्धच न्द्रसंस्थानसंस्थितौ अर्चिर्मालाभाराशिसप्रभौ शेषं यथा सनत्कुमारो यावत्प्रतिरूपौ तत्रानतप्राणतदेवानां चत्वारि विमानावासशतसहस्राणि भ वन्तीति समाख्यातम् यावत्प्रतिरूपौ, अवतंसका यथा सौधर्मे नवरं मध्ये प्राणतावतंसकः ते चावतंसकाः सर्वरत्नमया अच्छा यावत्प्रतिरूपा अत्रा नतप्राणतदेवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि त्रिष्वपि लोकस्यासंख्येयं भागं तत्र बहवं आनतप्राणतदेवाः परिवसन्ति महर्द्धिका याव त्प्रभासयन्त स्त तत्र स्वेषां २ विमानावासशतानां यावद्विहरन्ति, प्राणतश्चात्र देवेन्द्रो देवराजः परिवसति, यथा सनत्कुमारो नवरं चतुर्णां वि

महिड्डिया जाव पन्नासेमाणा तेणं तत्थ साण२ विमाणावाससयाणं जाव विहरंति पाणए इत्थ देविंदे देवराया परिवसति जहा सणकुमारे णवर चउरह विमाणावाससयाण वीसाए सामाणियसाहस्सीणं असीतीए आयरक्खदेवसाहस्सीण अन्नेसि च बहूण जाव विहरति । कहिण भंते ! आरणच्चुयाण देवाण पज्जत्ता २ण ठाणा पन्नत्ता । कहिणं भंते ! आरणच्चुया देवा परिवसति ? गोयमा ! आणयपाणयाण कप्पाणं उप्पि सपक्खि सपडिदिसि एत्थण आरणाच्चुयानाम दुवे कप्पा पन्नत्ता पाईणपडीणायगा उदीणदाहिणविच्छिन्ना अद्धचंदसठाणसठिया अच्चिमालीभासरासिवन्नाभा असखिज्जाउ जोयणकोडाकोडीउ आयामविक्खंभेणं असखेज्जाउ जोयणकोडाकोडीउ परिक्खेवेणं सव्वरयणामया अच्छा सण्हा लठा घठा मठा नीरया निम्मला णिप्पका निक्ककडच्छाया सप्पभा ससिरीया सउज्जोया पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा एत्थणं आरणच्चुयाण देवाण तिन्नि विमाणावाससया हवंतीति मक्खाय, तेणं विमाणा सव्वरयणाम

मानावासशतानां विंशति सामानिकसहस्राणां अशीति आत्मरक्षकदेवसहस्राणामन्येषां च बहूनां यावद्विहरति । क्व भदन्त ! आरणच्युतानां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि क्व भदन्त ! आरणाच्युतका देवा परिवसन्ति ? गौतम ! आनतप्राणतयो कल्पयोरुपरि सपक्ष सप्रतिदिक् अत्रानतप्राणतनामानौ द्वौ कल्पौ प्रज्ञप्तौ प्राचीनप्रतीचीनायतावुत्तरदक्षिणविस्तीर्णौ अर्द्धचन्द्रसस्थानसंस्थितौ अर्चिर्मालाभाराशिसप्रभौ असख्येया योजनकोटीकोट्य आयामविष्कम्भाभ्यां असख्येया योजनकोटीकोट्य परिक्षेपण सर्वरत्नमयौ अच्छौ श्लक्ष्णौ लष्टौ घृष्टौ मृष्टौ नीरजसौ निर्मलौ निष्पङ्कौ निष्कङ्कटच्छायौ सप्रभौ सश्रीकौ सोद्योतौ प्रासादीयौ दर्शनीयौ अभिरूपौ प्रतिरूपौ अत्रारणच्युतानां देवानां त्रीणि विमानावासशतानि भवन्तीति मयाख्यात । तानि विमानानि सर्वरत्नमयानि अच्छानि श्लक्ष्णानि लष्टानि घृष्टानि मृष्टानि नीरजांसि निर्मलानि निष्पङ्का

या अच्छा सण्हा लठा घठा मठा नीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पभा ससिरीया सउज्जोया पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा तेसिणं विमाणाण बहुमज्झदेसभाए पंच वडेंसया पन्नत्ता, तंजहा अंकवडेंसए फलिहवडेंसए रयणवडेंसए जाव रूववडेंसए मज्झे इत्थ अच्चुयवडेंसए, तेणं वडेंसया सव्वरय णामया जाव पडिरूवा, एत्थणं आरणच्चुयाणं देवाण पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता। तिसुवि लोगस्स असखेज्जइभागे तत्थण बहवे आरणच्चुया देवा जाव विहरंति, अच्चुए तत्थ देविंदे देवराया परिवसइ। जहा पाणए जाव विहरंति नवरं तिण्हं विमाणावाससयाण दसण्हं सामाणियसाहस्सीण चत्तालीसाए आयरक्खदेवसाहस्सीण आहेवच्चं जाव कुव्वमाणे विहरंति, बत्तीसठावीसा बारसाठचउरोसयसहस्सा पन्नाचत्तालीसा छच्चसहस्सासहस्सारे ॥ १ ॥ आणयपाणयकप्पे चत्तारिसयारणच्चुएतिन्नि। सत्तविमाणस याइ चउसुविएएसुकप्पेसु ॥ २ ॥ सामाणियसगहणीगाहा—चउरासीइअसीति बावत्तरिसत्तरीयसठीए।

नि निष्कण्टकच्छायानि सप्रभाणि सश्रीकाणि सोद्योतानि प्रासादीयानि दर्शनीयानि अभिरूपाणि प्रतिरूपाणि तेषा विमानाना बहुमध्यदेशभा गे पञ्चावतसका प्रज्ञप्ता तद्यथा-अंकावतसक स्फटिकावतसको रत्नावतसको यावद्रूपावतसको मध्ये तत्राच्युतावतसक स्ते चावतंसका सर्वरत्न मया यावत्प्रतिरूपा अत्रारणाच्युताना देवाना पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि' त्रिष्वपि लोकासख्येयभाग तत्र बहव आरणाच्युता देवा प रिवसन्ति यावद्विहरन्ति अच्युतश्चात्र देवेन्द्रो देवराज परिवसति यथा प्राणतो यावद्विहरति नवर त्रयाणा विमानावासशताना दशाना सामा निकसहस्राणा चत्वारिंशदात्मरक्षदेवसहस्राणा आधिपत्य पुरोवर्त्तित्व यावत्कुर्वन् विहरति, द्वात्रिंशदष्टाविंशति द्वादशाष्टौ चतु.शतसहस्राणि। पञ्चाशच्चत्वारिंश त्षट्सहस्राणिसहस्रारे ॥ १ ॥ आनतप्राणतकल्पे चत्वारिशतान्यारणाच्युतेत्रीणि। सप्तविमानसहस्राणि चतुर्ष्वप्येतेषुकल्पेषु ॥

पन्नाचत्तालीसा तीसावीसादससहस्सा ॥ ३ ॥ एएचेव श्रायरक्का चउगुणा । कहिण नते । हिठिमगेविज्जगदेवाण पज्जत्ता २ ण ठाणा पसत्ता ? कहिण नते । हेठिमगेविज्जगा देवा परिवसति ? गोयमा । श्रारणच्चुयाण कप्पाण उप्पि जाव उड्ढ दूर उप्पइत्ता एत्यण हेठिमगेविज्जगाण देवाण ततो गेवेज्जविमाणपत्यका पन्नत्ता, पाईणपईणायगा उदीणदाहिणविच्छिन्ना पक्किपुन्नचदसठाणसठिया श्रच्चिमालीन्नासरासिवन्नाज्ञा सेस जहा वन्नलोगे जाव पक्किरूवा, तत्यण हेठिमगेविज्जगाण देवाणं एक्कारसुत्तरे विमाणावाससए हवतीति मरकाय तेण विमाणा सव्वरयणामया जाव पक्किरूवा , एत्यण हेठिमगेविज्जगाण देवाण पज्जत्ताण २ ठाणा पसत्ता, तिसुवि लोगस्स श्रसखेज्जइन्नागे तत्यण वहवे हेठिमगेविज्जगा देवा परिवसति सव्वे सममहिड्ढीया सव्वे समज्जुतीया सव्वे समजसा सव्वे समवला सव्वे समाणुन्नावा महासोक्का श्रणिदा श्रपेस्सा श्रपुरोहिया श्रहमिदा नाम ते देवगणा पसत्ता समणाउसो ! कहिण नते ! मज्झिमगाण

२ ॥ सामानिकसग्रहणिगाथा-चतुरशीतिरशीति र्द्विसप्तति सप्ततिश्चपष्टिश्च । पचाशच्चत्वारिंशत् त्रिंशद्विंशद्दशसहस्राणि ॥ १ ॥ एते चैव चतुर्गुणा श्रात्मरक्षा । क्व भदन्त । अधस्तनग्रैवेयकदेवाना पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि, क्व भदन्त । अधस्तनग्रैवेयकदेवा परिवसन्ति ? गौतम । श्रारणाच्युतकल्पयोरुपरि सपक्ष सप्रतिदिक् यावदूर्ध्वमुत्पत्यात्र अधस्तनग्रैवेयकाना देवाना ग्रैवेयकप्रस्तटानि प्रज्ञप्तानि प्राचीनप्रतीचीनायतानि उत्तरदक्षिणाविस्तीर्णानि प्रतिपूर्णचन्द्रसस्थानसस्थितानि अर्चिर्मालाभाराशिवर्णाभानि शेष यथा ब्रह्मलोके यावत्प्रतिरूपाणि, तत्राधस्तनग्रैवेयकदेवाना एकादशोत्तर विमानावासशत भवतीति मयाख्यातम् । तानि विमानानि सर्वरत्नमयानि यावत्प्रतिरूपाणि । अत्राधस्तनग्रैवेयकाना देवाना पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि त्रिष्वपि लोकस्यासख्येय भाग तत्र बहवो अधस्तनग्रैवेयका देवा परिवसन्ति सर्वे सममहर्द्धिका, सर्वे सम

गेविज्जगदेवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पसत्ता । कहिणं भंते ! मज्झिमगेविज्जगदेवा परिवसंति ? गोयमा ! हेट्ठिमगेविज्जगाण उप्पिं सपक्खि सपडिदिसिं जाव उप्पइत्ता एत्थणं मज्झिमगेविज्जगदेवाण तओगेविज्जगविमाणपत्थडा पसत्ता पाईणपडीणायता जहा हेट्ठिमगेविज्जगाण नवरं सत्तुत्तरे विमाणावाससए हवंतीति मक्खाए, तेण विमाणा जाव पडिरूवा एत्थण मज्झिमगेवेज्जाण देवाण जाव तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थणं वहवे मज्झिमगेवेज्जगा देवा परिवसंति जाव अहमिंदा नाम देवगणा पसत्ता । समणाउसो ! कहिण भंते ! उवरिमगेवेज्जगा देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पसत्ता । कहिण भंते ! उवरिमगेविज्जगा देवा परिवसंति ? गोयमा ! मज्झिमगेवेज्जगदेवाण उप्पिं जाव उप्पइत्ता तत्थण उवरिमगेवेज्जगाण देवाण तओ गेविज्जगविमाणपत्थडा पसत्ता पाईणपडीणाउ सेस जहा हेट्ठिमगेविज्जगाण नवर

द्युतिका सर्वे समप्रज्ञास सर्वे समबला. सर्वे महानुभावा महेशाख्या अनिन्द्रा अप्रेष्या अपुरोहिता अहमिन्द्रा नामत स्ते देवगणा प्रज्ञप्ता श्रमण । आयुष्मन् । क्व भदन्त । मध्यमग्रैवेयकदेवाना पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि । क्व भदन्त । मध्यमग्रैवेयकदेवा परिवसन्ति ? गौतम । अधस्तनग्रैवेयकदेवानामुपरि सपक्ष सप्रतिदिक् यावदुत्पत्यात्र मध्यमग्रैवेयकदेवाना ग्रैवेयकप्रस्तटानि प्रज्ञप्तानि प्राचीनप्रतीचीनायतान्युत्तरदक्षिणविस्तीर्णानि यथा अधस्तनग्रैवेयकाना नवर सप्तोत्तर विमानावासशत भवतीति मयाख्यातम् । तानि विमानानि यावत्प्रतिरूपाणि अत्रमध्यमग्रैवेयकाना देवाना स्थानानि यावत्त्रिष्वपि लोकस्यासख्येय भाग तत्र बहवो मध्यमग्रैवेयका देवा परिवसन्ति यावदहमिन्द्रा नाम ते देवा प्रज्ञप्ता श्रमण । आयुष्मन् । क्व भदन्त । उपरिमग्रैवेयकदेवाना पर्याप्ता० स्थानानि प्रज्ञप्तानि क्व भदन्त । उपरिमग्रैवेयकदेवा परिवसन्ति ? गौतम । मध्यमग्रैवेयकदेवानामुपरि यावदुत्पत्य तत्रोपरिमग्रैवेयकाना देवाना ग्रैवेयकप्रस्तटानि प्रज्ञप्तानि प्राचीनप्रतीचीनायतानि शेष यथाधस्तनग्रैवेयका-

एगे विमाणावाससए हवतीति मक्खाए, सेस तहेव भाणियव्वं जाव अहमिंदा नाम ते देवगणा पण्णत्ता
समणाउसो ! एक्कारसुत्तरहेट्ठिमेसुसत्तुत्तरचमज्झिमए । सयमेगउवरिमए पंचेव अणुत्तरविमाणा ॥ १ ॥
कहिणं भंते ! अणुत्तरोववाइयाणं देवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पण्णत्ता ? कहिणं भंते ! अणुत्तरोववाइया
देवा परिवसंति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ उड्ढं चंदिमसू
रियगहगणनक्खत्तताराख्वाणं बहूइं जोयणसयाइं बहूइं जोयणसहस्साइं बहूइं जोयणसयसहस्साइं बहु
गाओ जोयणकोडीओ बहुगाओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढं दूरं उप्पइत्ता सोहम्मीसाणसणकुमारमाहिंदबंभ
लोगलंतगसुक्कसहस्सारआणयपाणयआरणअच्चुयकप्पा तिण्णिय अट्ठारसुत्तरे गेविज्जविमाणावाससए विती
वइत्ता तेय परं दूरं गता णीरया निम्मला वितिमिरा विसुद्धा पंचदिसिं पंच अणुत्तरा महतिमहालया महा
विमाणा पण्णत्ता, तंजहा—विजये वेजयंते जयंते अपराजिए सव्वट्ठसिद्धे । तेणं विमाणा सव्वरयणामया

ना नवरं एकं विमानावासशतं भवतीति मयाख्यातम्, शेषं तथैव भणितव्यं यावदहमिन्द्रा नाम ते देवगणाः प्रज्ञप्ताः श्रमण ! आयुष्मन् ! एका
दशोत्तरमध-स्तनेषु सप्तोत्तरशतंमाध्यमिके । शतमेकमौपरिमिके पञ्चैवानुत्तरविमाना ॥ १ ॥ क्व भदन्त ! अनुत्तरोपपातिकानां देवानां पर्याप्ताप
र्याप्तानां स्थानानि प्र० क्व भदन्त ! अनुत्तरोपपातिका देवा परिवसन्ति ? गौतम ! अस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्या बहुसमरमणीयाद्भूमिभागादूर्ध्वं
चन्द्रसूर्यग्रहगणनक्षत्रताराख्पाणां बहूनि योजनानि बहूनि योजनशतानि बहूनि योजनसहस्राणि यावदूर्ध्वं दूरमुत्पत्य सौधर्मेशानसनत्कुमारमा
हेन्द्रब्रह्मलान्तकशुक्रसहस्रारानतप्राणतारणाच्युतकल्पा त्रीणि चाष्टादशोत्तराणि ग्रैवेयकविमानावासशतानि व्यतिव्रज्य (उल्लंघ्य) तेभ्योऽपि परं
दूरं गता नीरजसो निर्मला वितिमिरा विशुद्धाः पञ्चसु दिक्षु पञ्चानुत्तरा महातिमहालया महाविमाना प्रज्ञप्ताः तद्यथा-विजयोवैजयन्तोजयन्तो

गेविज्जगदेवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पण्णत्ता । कहिण भंते ! मज्झिमगेविज्जगदेवा परिवसंति ? गोयमा ! हेठिमगेविज्जगाण उप्पिं सपक्खि सपडिदिसिं जाव उप्पइत्ता एत्थणं मज्झिमगेविज्जगदेवाण ततोगेविज्जगविमाणपत्थडा पण्णत्ता पाईणपडीणायता जहा हेठिमगेविज्जगाण नवरं सत्तुत्तरे विमाणावाससए हवंतीति मक्खाए, तेण विमाणा जाव पडिरूवा एत्थण मज्झिमगेवेज्जाण देवाण जाव तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थण वहवे मज्झिमगेवेज्जगा देवा परिवसंति जाव अहमिंदा नाम देवगणा पण्णत्ता । समणाउसो ! कहिण भंते । उवरिमगेवेज्जगा देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता । कहिणं भंते ! उवरिमगेविज्जगा देवा परिवसंति ? गोयमा ! मज्झिमगेविज्जगदेवाण उप्पि जाव उप्पइत्ता तत्थण उवरिमगेविज्जगाण देवाण तओ गेविज्जगविमाणपत्थडा पण्णत्ता पाईणपडीणाउ सेस जहा हेठिमगेविज्जगाण नवर

द्युतिका सर्वे समयशस सर्वे समवला. सर्वे महानुभावा महेशाख्या अनिन्द्रा अप्रेष्या अपुरोहिता अहमिन्द्रा नामत स्ते देवगणा. प्रज्ञप्ता श्रमण । आयुष्मन् । क्व भदन्त । मध्यमग्रैवेयकदेवाना पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि । क्व भदन्त । मध्यमग्रैवेयकदेवा परिवसन्ति ? गौतम । अधस्तनग्रैवेयकदेवानामुपरि सपक्ष सप्रतिदिक् यावदुत्पत्यात्र मध्यमग्रैवेयकदेवाना ग्रैवेयकप्रस्तटानि प्रज्ञप्तानि प्राचीनप्रतीचीनायतान्युत्तरदक्षिणविस्तीर्णानि यथा धस्तनग्रैवेयकाना नवर सप्तोत्तर विमानावासशत भवतीति मयाख्यातम् । तानि विमानानि यावत्प्रतिरूपाणि अत्रमध्यमग्रैवेयकाना देवाना स्थानानि यावत्त्रिष्वपि लोकस्यासख्येय भागं तत्र वहवो मध्यमग्रैवेयका देवा परिवसन्ति यावदहमिन्द्रा नाम ते देवा॰ प्रज्ञप्ता श्रमण । आयुष्मन् । क्व भदन्त । उपरिमग्रैवेयकदेवाना पर्याप्ता॰ स्थानानि प्रज्ञप्तानि क्व भदन्त । उपरिमग्रैवेयकदेवा॰ परिवसन्ति ? गौतम । मध्यमग्रैवेयकदेवानामुपरि यावदुत्पत्य तत्रोपरिमग्रैवेयकाना देवाना ग्रैवेयकप्रस्तटानि प्रज्ञप्तानि प्राचीनप्रतीचीनायतानि शेष यथाधस्तनग्रैवेयका

वहुमज्झदेसज्ञाए ऋठजोयणिए खेत्ते ऋठजोयणाइं वाहल्लेणं पन्नत्ते , ततो ऋणतरं चणं मताए २ पए सपरिहाणीए२ परिहायमाणी२ सव्वेसु चरिमतेसु मच्छियपत्तातो तणुयरी ऋगुलस्स सखेज्जइजागे वाहल्ले ण पणत्ता , इसीपञ्नाराएण पुढवीए दुवालसनामधेज्जा पणत्ता , इसीतिवा इसीपञ्नाराइवा तणूतिवा तणुयरीतिवा सिद्धीतिवा सिद्धालएतिवा मुत्तीइवा मुत्तालएइवा लोयग्गेतिवा लोयग्गथूनियातिवा लोय पडिवुज्झणाइवा सव्वपाणजूयजीवसत्तसुहावहा वइवा । इसीपञ्नाराण पुढवी सेता सखदलविमलसोच्छिय मुणालदगरयतुसारगोरकीरहारवन्ना उत्ताणयछत्तसठाणसठिया सव्वज्जुणसुवमई ऋच्छा सराहा लराहा घठा मठा णीरया निम्मला निप्पका निक्ककडच्छाया सप्पन्ना ससिरीया सउज्जोया पासादीया दरिसणिज्जा ऋ जिरूवा पडिरूवा इसीपञ्नाराएणं नीसाए जोयणमि लोगतो तस्सणं जोयणस्स जेसे उवरिल्ले गाउए तस्सणं गाउयस्स जेसे उवरिल्ले छब्नागे एत्यण सिद्धा जगवतो सादिया ऋपज्जवसिया ऋणेगजातिजरामरणजो

ऋमराल्या परिहीयमाना सर्वेषु चरिमान्तेषु मक्षिकापत्रतोप्यतितन्वी ऋगुलासख्येयज्ञाग वाहल्येन प्रज्ञप्ता , ईषत्प्राग्जारायाः पृथिव्या द्वादश ना मधेयानि जवन्तीति तद्यथा-ईषदिति वा ईषत्प्राग्जारेति वा तन्वीति वा तनुतरीति वा सिद्धिरिति वा सिद्धालय इति वा मुक्तिरिति वा मुक्ता लय इति वा लोकाग्र इति वा लोकाग्रस्तूपिकेति वा लोकाग्रप्रतिवाहिनीति वा सर्वप्राणजूतजीवसत्वसुखावहा इति वा साचेषत्प्राग्जारा पृथिवी श्वेता शङ्खदलविमलसौवस्तिकमृणालदकरजस्तुषारगोक्षीरहारधवला उत्तानकछत्रसस्थानसस्थिता सर्वार्जुनस्वर्णमयी ऋच्छा श्लक्ष्णा लष्टा घृष्टा मृष्टा नीरजा निर्मला निष्पङ्का निष्कण्टकच्छाया सप्रभा सश्रीका सोद्योता प्रासादीया दर्शनीया ऋजिरूपा प्रतिरूपा ईषत्प्राग्जारायाः पृथिव्या नि श्रे णिगत्या योजन लोकान्त स्तस्य च योजनस्य यदुपरितन गव्यूत तस्य गव्यूतस्य यदुपरितन षड्भाग यत्र सिद्धा भगवन्तः सादिका ऋपर्यवसिता ऋनेकजा

अच्छा सण्हा घठा मठा णीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पन्ना सिसिरीया सउज्जोया पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा एत्थणं अणुत्तरोववाइयाण देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा प० । तिसुवि लोगस्स असखेज्जइभागे तत्थणं बहवे अणुत्तरोववाइया देवा परिवसंति सव्वे सममहड्ढिया सव्वे समबला सव्वे समाणुभावा महासोक्खा अणिंदा अप्पेस्सा अपुरोहिया अहमिंदा ते देवगणा पण्णत्ता । समणाउसो । कहिणं भंते ! सिद्धाण ठाणा पण्णत्ता । कहिण भंते ! सिद्धा परिवसंति ? गोयमा ! सव्वठस्स महाविमाणस्स उवरिल्लाउ थूभियग्गाउ दुवालसजोयणे उड्ढ अबाहाए एत्थणं ईसीपब्भारा नाम पुढवी प०, पणयालीस जोयणसयसहस्साइ आयामविक्खंभेण एगंजोयणकोडीउ बायालीस च सयसहस्साइं तीसं सहस्साइ दोन्नि य अउणापन्ने जोयणसए किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं पण्णत्ता । ईसीपब्भाराएण पुढवीए

पराजित सर्वार्थसिद्ध । ते विमाना सवरत्नमया अच्छा श्लक्ष्णा घृष्टा मृष्टा नीरजसो निर्मला निष्पङ्का निष्कण्टकच्छाया सप्रभा सश्रीका सोद्योता प्रासादीया दर्शनीया अभिरूपा प्रतिरूपा अत्रानुत्तरोपपातिकाना देवाना पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि, त्रिष्वपि (आलापकेषु) लोकस्यासख्येय भाग तत्र बहवोनुत्तरोपपातिका देवा परिवसन्ति सर्वे समर्द्धिका सर्वे समबला सर्वे समानुभावा महेशाख्या अनिन्द्रा अपुराहिता अप्रेष्या अहमिन्द्रा नाम ते देवगणा प्रज्ञप्ता श्रमण । आयुष्मन् । क्व भदन्त । सिद्धाना स्थानानि प्रज्ञप्तानि क्व भदन्त । सिद्धा परिवसन्ति ? गौतम । सर्वार्थस्य महाविमानस्योपरितनाया स्तूपिकाया द्वादशयोजनान्यूर्द्ध अबाधया ईषत्प्राग्भारा नाम पृथिवी प्रज्ञप्ता, पचचत्वारिंशद्योजनशतसहस्राणि आयामविष्कम्भाभ्या एकायोजनकोटी द्विचत्वारिंशच्छतसहस्राणि त्रिंशत्सहस्राणि द्वे एकोनपंचाशद्योजनशते किंचिद्विशेषाधिकानि परिक्षेपेण प्रज्ञप्ता, ईषत्प्राग्भाराया पृथिव्या बहुमध्यदेशभागे अष्टयोजनिक क्षेत्र अष्टौ योजनानि बाहल्येन प्रज्ञप्त ततोनन्तर मात्रया २ प्रदे

तान्नवक्कयविमुक्का । ऋन्नान्नसमोगाढा पुठासव्वेविलोयते ॥ ९ ॥ फुसइऋणतेसिद्धे सव्वपएसेहिनियमसो
सिद्धा । तेविऋसखेज्जगुणा देसपदेसेहिजेपुठा ॥ १० ॥ ऋसरीराजीवघणा उवउत्तादसणेयनाणेय । सागा
रमणागारं लक्खणमेयतुसिद्धाण ॥ ११ ॥ केवलणाणुवउत्ता जाणतीसव्वभावगुणभावे । पासतिसव्वउंखलु
केवलदिठीहिणताहिं ॥१२॥ नविऋत्थिमानुसाणं तसोक्खनत्थिसव्वदेवाण । जासिद्धाणसुक्ख ऋव्वावाहउवग
याण ॥ १३ ॥ सुरगणसुहसमत्त सव्वद्धापिंडियऋणतगुण । नविपावइमुत्तिसुह णताहिवग्गवग्गूहि ॥ १४ ॥
सिद्धस्ससुहोरासी सव्वद्धापिंडिएजइहविज्जा । सोनतवग्गभइउ सव्वागासेणमाइज्जा ॥ १५ ॥ जहनामको
इमिच्छो नगरगुणबहुविहविजाणतो । णचएइपरिकहेउ उवमाएतहिऋसतीए ॥१६॥ इयसिद्धाणसोक्ख ऋ
णोवमनत्थितस्सउवम्म । किंचिविसेसेणितो सारिक्खमिणसुणहवोच्छ ॥ १७ ॥ जहसव्वकामगुणियं पुरिसो

अवगाहनयासिद्धा अवविप्रागेन भवन्तिपरिहीणा । अस्थानमनित्थस्य यजरामरणविप्रमुक्तानाम् ॥ ८॥ यत्रचैक सिद्ध स्तत्रानन्ताभवक्षयविमुक्ता ।
अन्योन्यसमवगाढा स्पृष्टा (लग्ना) सर्वेपिलोकान्ते ॥ ९ ॥ स्पृशत्यनन्तान्सिद्धान् सर्वप्रदेशैर्नियमश सिद्धा । तेप्यसख्येयगुणा देशप्रदेशैश्चयेस्पृ
ष्टा ॥ १० ॥ अशरीराजीवघना उपयुक्तादर्शने तथाज्ञाने । साकारानाकार लक्षणमेतत्तुसिद्धानाम् ॥ ११ ॥ केवलज्ञानोपयुक्ता जानन्तिसर्वभावगु
णभावान् । पश्यन्तिसर्वत खलु केवलदृष्टिभिरनन्ताभि ॥ १२ ॥ नैवास्तिमनुष्याणा तत्सौख्यनास्तिसर्वदेवना । यत्सिद्धाना सौख्यमव्याबाधामुपग
तानाम् ॥ १३ ॥ सुरगणसुखसमस्त सर्वाद्धापिण्डितमनन्तगुणम् । नप्राप्नोतिमुक्तिसुख अनन्तैर्वर्गै र्वर्गवर्गैरपि ॥ १४ ॥ सिद्धस्यसुखराशि सर्वा
द्धापिण्डितोयदि भवेत् । सोनन्तवर्गभक्त सर्वाकाशेनोमातितत्सौख्यम् ॥ १५ ॥ म्लेच्छःकश्चिन्नाम यथाहिविजानन्बहुनगरगुणान् । परिकथयितुन
शक्तो त्युपमायास्तत्राभावात् ॥ १६ ॥ इतिसिद्धानासौख्य मनुपमनास्तितस्यचौपम्यम् । किञ्चिद्विशेषणतोस्य सादृश्य शृणुतवक्ष्यमाणमिदम् ॥ १७ ॥

निससारकलकलीन्नावपुणब्भवगब्भवासवसही एवंते समइक्कंता सासयमणागयद्धं काल चिठंति, तत्थवियते अवेदा अवेयणाणिम्ममा असगायससारविप्पमुक्का । पदेसनिव्वत्तिसठाणा ॥ १ ॥ कहिपडिहयासिद्धा कहि सिद्धापडठिया । कहिवोंदीचइत्ताण कहगतूणसिज्झइ ॥ १ ॥ अलोएपडिहयासिद्धा लोयग्गेयपडठिया । इहवोंदीचइत्ताण तत्थगतूणसिज्झइ ॥ २ ॥ दीहंवाहस्सवा जंचरिमन्नवेहविज्जसठाण । तत्तोतिन्नागहीणा सिद्धाणोगाहणान्नणिया ॥ ३ ॥ सठाणतुइह न्नवंचयतस्सचरमसमयम्मि । आसीयपदेसघण तसठाणतहि तस्स ॥ ४ ॥ तिन्निसयातेत्तीसा धणुत्तिन्नागोयहोइनायव्वो । एसाखलुसिद्धाणं उक्कोसोगाहणान्नणिया ॥ ५ ॥ चत्तारियरयणीत रयणितिन्नागूणियायबोधव्वा । एसाखलुसिद्धाण मज्झिमोगाहणान्नणिया ॥ ६ ॥ एगाय होइरयणी अठेवयअगुलाइसाहियाईया । एसाखलुसिद्धाण जहन्नोगाहणान्नणिया ॥ ७ ॥ जंगाहणाएसिद्धा न्नवतिन्नागेणहोइपरिहीणा । सठाणमाणित्थत्थ जजरामरणविप्पमुक्काणं ॥ ८ ॥ जत्थयएगोसिद्धो तत्थअणं

तिजरामरणयोनिससारकलकलीन्नावपुनर्न्नवगर्भवसति रेव च समतिक्रान्ता शाश्वतमनागताद्धा काल तिष्ठन्ति, तत्रापि च ते अवेदा अवेदना निर्ममा असङ्गाश्च । ससारविप्रमुक्ता प्रदेशनिर्वृत्तसस्थाना ॥१॥ केनप्रतिहता सिद्धा केनसिद्धा प्रतिष्ठिता । क्वचबोंदितयात्यक्त्वा गत्वासिध्यन्तिकथ्यते ॥१॥ अलोकेप्रतिहता सिद्धा लोकाग्रेचप्रतिष्ठिता । इहैवबोंदित्यक्त्वाते गत्वासिध्यन्तितत्रतु ॥ २ ॥ दीर्घवाह्रस्ववा यच्चरमन्नवे न्नवेत्सुसस्थान । ततस्त्रि न्नागहीना सिद्धानामवगाहनान्नणिता ॥ ३ ॥ यत्ससस्थानमिह न्नवचत्यजतश्चरमसमयेच । आसीत्प्रदेशघन तत्ससस्थान तत्रतस्यैव ॥ ४ ॥ त्रीणिशतानि त्रयस्त्रि-शधनुस्त्रिन्नागो न्नवतिज्ञातव्य , एषाखलुसिद्धाना मुत्कृष्टावगाहनान्नणिता ॥ ५ ॥ चतस्रोरत्नय रत्निश्चत्रिन्नागोनायोद्धव्या । एषाखलुसि द्धाना मध्यमावगाहनान्नणिता ॥ ६ ॥ एकाचन्नवतिरत्नि रष्टावथचाङ्गुलानिसाधिकानिस्यु । एषाखलु सिद्धाना जघन्यावगाहना न्नणिता ॥ ७ ॥

या उत्तरेण विसेसाहिया , दिसानुवाएण सव्वत्थोवा तेउकाइया दाहिणुत्तरेण पुरच्छिमेण विसेसाहिया दाहिणेण विसेसाहि
पच्चच्छिमेण विसेसाहिया दिसानुवाएण सव्वत्थोवा वाउकाइया पुरच्छिमेण पच्चच्छिमेण विसेसाहिया दा
हिणेण विसेसाहिया उत्तरेण विसेसाहिया । दिसानुवाएण सव्वत्थोवा वणस्सइकाइया पच्चच्छिमेण पुर
च्छिमेणं विसेसाहिया दाहिणेण विसेसाहिया उत्तरेण विसेसाहिया । दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा बेइंदि
या पच्चच्छिमेण पुरच्छिमेण विसेसाहिया दाहिणेण विसेसाहिया उत्तरेण विसेसाहिया , दिसानुवाएणं
सव्वत्थोवा तेइंदिया पच्चच्छिमेण पुरच्छिमेण विसेसाहिया दाहिणेणं विसेसाहिया उत्तरेण विसेसाहिया ,
एव चउरिंदियावि, दिसानुवाएण सव्वत्थोवा णेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमेण उत्तरेण दाहिणेण असंखेज्ज
गुणा, दिसानुवाएण सव्वत्थोवा रयणप्पभापुढविणेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमेणं उत्तरेण दाहिणेणं असंखे

॥ सूत्र ॥ ५० ॥

विशेषाधिका , दिगनुपातेन सर्वस्तोका अप्कायिका पश्चिमेन पूर्वेण विशेषाधिका दक्षिणेन विशेषाधिका उत्तरेण विशेषाधिका , दिगनुपातेन सर्वस्तोका तेजस्कायिका दक्षिणेन पूर्वेण विशेषाधिका पश्चिमेन विशेषाधिका , दिगनुपातेन सर्वस्तोका वायुकायिका पूर्वेण पश्चिमेन विशेषाधिका दक्षिणेन विशेषाधिका उत्तरेण विशेषाधिका । दिगनुपातेन सर्वस्तोका वनस्पतिकायिका पश्चिमेन पूर्वेण विशेषाधिका दक्षिणेन विशेषाधिका उत्तरेण विशेषाधिका , दिगनुपातेन द्वीन्द्रिया पश्चिमेन पूर्वेण विशेषाधिका दक्षिणेन विशेषाधिका उत्तरेण विशेषाधिका , दिगनुपातेन सर्वस्तोकास्त्रीन्द्रिया पश्चिमेन पूर्वेण विशेषाधिका दक्षिणोत्तरेण च विशेषाधिका , एव चतुरिन्द्रिया अपि । दिगनुपातेन सर्वस्तोका नैरयिका. पूर्वेण पश्चिमेनोत्तरेण दक्षिणेनासंख्येयगुणा , दिगनुपातेन सर्वस्तोका रत्नप्रभपृथिवीनैरयिका पूर्वपश्चिमेनोत्तरेण दक्षिणेनासंख्येयगुणा , दिगनुपा

अोत्तूणअोयणंकोइ । तएहाबुहाविमुक्को अच्छिज्जजहाअमियतित्तो ॥ १८ ॥ इयसव्वकालतित्ता अउलंनि
व्वाणमुवगयासिद्धा । सासयमव्वाबाह चिठंतिसुहीसुहपत्ता ॥ १९ ॥ सिद्धत्तियबुद्धत्तिय पारगतत्तियपरंपर
गतत्ति । उम्मुक्ककम्मकवया अजराअमराअसंगाय ॥ २० ॥ णिच्छिन्नसव्वदुक्खा जातिजरामरणबंधणवि
मुक्का । अव्वाबाहसुक्खं अणुहोंतीसासयसिद्धा ॥ २० ॥ बितिय पदं सम्मत्तं ॥ २ ॥
दिसिगइइंदियकाए जोएवेएकसायलेसाय । सम्मत्तणाणदंसण संजयउवओगआहारे ॥ १ ॥ आसगपरित्तप
ज्जत्तसुहुमसण्णीयभवत्थिसेचरिमे । जीवयखेत्तबंधे पुग्गलमहदंडएचेव ॥ २ ॥ दिसानुवाएणं सव्वत्थोवा
जीवा पच्छिमेणं पुरच्छिमेण विसेसाहिया दाहिणेणं विसेसाहिया उत्तरेणं विसेसाहिया दिसानुवाएणं
सव्वत्थोवा पुढविकाइया दाहिणेण उत्तरेण विसेसाहिया पुरच्छिमेणं विसेसाहिया पच्छिमेण विसेसा

यथासर्वकामगुणित पुरुषोभुक्त्वाभोजन कोपि । तृषयाक्षुधाविमुक्त स्तिष्ठतियथाऽमृततृप्त ॥ १८ ॥ इतिसर्वकालतृप्ता अतुलनिर्वाणमुपगता सि
द्धा । शाश्वतमव्याबाध तिष्ठन्तिसुखिन सुखप्राप्ता ॥ १९ ॥ सिद्धाइतिबुद्धाइति पारगताइतिपरम्परगता श्च । उन्मुक्तकर्मकवचा अजराअमराअस
गाश्च ॥ २० ॥ निस्तीर्णसर्वदुःखा जातिजरामरणबन्धनविमुक्ता । अव्याबाधसौख्य मनुभवन्तिशाश्वतसिद्धा ॥ २१ ॥ इति श्री रामचन्द्रगणि शिष्यना
नकचन्द्रर्षि विरचिते प्रज्ञापनानुवादे द्वितीय पद समाप्तम् ॥ २ ॥ * ॥ * ॥
दिक्गतीन्द्रियकाया योगोवेदाकषायलेश्याश्च । सम्यक्त्वज्ञानदर्शन संयतोपयोगौतथाहार ॥ १ ॥ भाषकपरीतपर्या-प्तसूक्ष्मसञ्ज्ञीभवास्तिचरमा
णि । जीव क्षेत्रबन्ध पुद्गलमहादण्डकश्चसु ॥ २ ॥ दिगनुपातेन (दिशोधिकत्येत्यर्थ.) सर्वस्तोका जीवा- पश्चिमेन पूर्वेण विशेषाधिका दक्षिणेन
विशेषाधिका उत्तरेण विशेषाधिका , दिगनुपातेन सर्वस्तोका पृथिवीकायिका दक्षिणेनोत्तरेण च विशेषाधिका पूर्वेण विशेषाधिका पश्चिमेन

उत्तरेण असंखेज्जगुणा, दाहिणेण असंखेज्जगुणा । दाहिणिल्लेहिंतो धूमप्पभापुढविणेरइएहितो चउत्थीए पंकप्पभाए पुढवीए णेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेण असंखेज्जगुणा । दाहिणेण असंखेज्जगुणा । दाहिणिल्लेहितो पंकप्पभापुढविनेरइएहितो तइयाए वालुयप्पभाए पुढविनेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेण असंखेज्जगुणा, दाहिणेणं असंखेज्जगुणा । दाहिणिल्लेहितो वालुयप्पभापुढविणेरइएहितो बीयाए सक्करप्पभाए पुढवीए णेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेण असंखेज्जगुणा दाहिणेण असंखेज्जगुणा दाहिणिल्लेहितो सक्करप्पभापुढविणेरइएहितो इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए णेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेण असंखेज्जगुणा । दाहिणिल्लेण असंखेज्जगुणा, दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा पंचिंदियतिरिक्खजोणिया पच्चच्छिमेण पुरच्छिमेण विसेसाहिया, दाहिणेण विसेसाहिया, उत्तरेण विसेसाहिया, दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा मनुस्सा दाहिणउत्तरेण पुरच्छिमेणं संखेज्जगुणा । पच्चच्छिमेण विसेसाहिया । दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा भवणवासी देवा पुरच्छिमपच्चच्छिमेण उत्तरेण असंखेज्जगुणा । दाहिणेण असंखेज्जगुणा, दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा

नैरयिका पूर्वपश्चिमोत्तरेणासंख्येयगुणा दक्षिणेनासंख्येयगुणाः, दाक्षिणात्येभ्यो वालुकाप्रभपृथिवीनैरयिकेभ्यो द्वितीयाया शर्कराप्रभपृथिव्या नैरयिका पूर्वपश्चिमोत्तरेणासंख्येयगुणा दक्षिणेनासंख्येयगुणाः, दाक्षिणात्येभ्य शर्कराप्रभपृथिवीनैरयिकेभ्योस्या रत्नप्रभाया पृथिव्या नैरयिका पूर्वपश्चिमोत्तरेणासंख्येयगुणा दक्षिणेना संख्येयगुणा, दिगनुपातेन सर्वस्तोका पंचेंद्रियतिर्यग्योनिका पश्चिमेन पूर्वेण विशेषाधिका, दक्षिणेन विशेषाधिका, उत्तरेण विशेषाधिका । दिगनुपातेन सर्वस्तोका मनुष्या दक्षिणोत्तरेण संख्येयगुणा पूर्वेण, पश्चिमेन विशेषाधिका । दिगनुपातेन सर्वस्तोका भवनवासिदेवा पूर्वपश्चिमेनोत्तरेणासंख्येयगुणा दक्षिणेनासंख्येयगुणा, दिगनुपातेन वानव्यन्तरा देवा पूर्वपश्चिमेन विशेषाधि

ज्जगुणा, दिसानुवाएणं सव्वत्थोवा सक्करप्पभापुढविणेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेणं दाहिणेणं असं खेज्जगुणा। दिसानुवाएण सव्वत्थोवा णेरइया वालुयप्पभापुढविपुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेणं दाहिणेणं असं खिज्जगुणा। दिसानुवाएण सव्वत्थोवा पकप्पभापुढविणेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेणं दाहिणेणं असखे ज्जगुणा। दिसानुवाएण सव्वत्थोवा धूमप्पभापुढविनेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेणं दाहिणेणं असखेज्ज गुणा। दिसानुवाएणं सव्वत्थोवा तमप्पभापुढविनेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेणं दाहिणेणं असखेज्जगुणा दिसानुवाएण सव्वत्थोवा अहे सत्तमापुढविनेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेणं दाहिणेहितो अहे सत्तमापुढ विनेरइएहितो छट्ठीए तमाए पुढवीए नेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेणं असखेज्जगुणा, दाहिणेणं अस खेज्जगुणा, दाहिणिल्लेहितो तमापुढविनेरइएहितो पचमाधूमप्पभाए पुढवीए नेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिम

तेन सर्वस्तोका शर्करप्रभपृथिवीनैरयिका पूर्वपश्चिमोत्तरेण दक्षिणेनासख्येयगुणा, दिगनुपातेन सर्वस्तोका नैरयिका वालुकप्रभापृथिवीनैरयिका पूर्वपश्चिमोत्तरेण दक्षिणेना सख्येयगुणा, दिगनुपातेन सर्वस्तोका पङ्कप्रभपृथिवीनैरयिका पूर्वपश्चिमोत्तरेण दक्षिणेनासख्येयगुणा, दिगनुपातेन सर्वस्तोका धूमप्रभपृथिवीनैरयिका पूर्वपश्चिमोत्तरेण दक्षिणेना सख्येयगुणा, दिगनुपातेन सर्वस्तोका स्तम प्रभपृथिवीनैरयिका पूर्वपश्चिमोत्तरे ण दक्षिणनासख्येयगुणा। दिगनुपातन सर्वस्तोका अध सप्तमापृथ्वीनैरयिका पूर्वपश्चिमोत्तरेण दाक्षिणात्येभ्यो ध सप्तमापृथिवीनैरयिकेभ्य षष्ठ्या स्तमोपा पृथिव्या नैरयिका पूर्वपश्चिमोत्तरेणासख्येयगुणा दक्षिणेनासख्येयगुणा। दाक्षिणात्येभ्यस्तमापृथिवीनैरयिकेभ्य पञ्चमाया धूमप्रभा या पृथिव्या नैरयिका पूर्वपश्चिमोत्तरेणासख्येयगुणा दक्षिणेनासख्येयगुणा। दाक्षिणात्येभ्यो धूमप्रभापृथिवीनैरयिकेभ्य श्चतुर्थ्या पङ्कप्रभाया पृ थिव्या नैरयिका पूर्वपश्चिमोत्तरेणासख्येयगुणा दक्षिणेनासख्येयगुणा, दाक्षिणात्येभ्य पङ्कप्रभपृथिवीनैरयिकेभ्य स्तृतीयाया वालुकाप्रभपृथिवी

संखेज्जगुणा दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा देवा सहस्सारे कप्पे पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेणं दाहिणेणं असंखे० तेण पर बहुसमोववन्नगा समणाउसो! दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा सिद्धा दाहिणउत्तरेण पुरच्छिमेण संखेज्जगुणा, पच्चच्छिमेण विसेसाहिया दार १। एएसिण भंते! नेरइयाण तिरिक्खजोणियाण मणुस्साण देवाण सिद्धाणय पंचगइसमासेण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहिया वा? गोयमा! सव्वत्थोवा मणुस्सा नेरइया असंखेज्जगुणा देवा असंखेज्जगुणा सिद्धा अणंतगुणा तिरिक्खजोणिया अनंतगुणा। एएसिण भंते! णेरइयाण तिरिक्खजोणियाण तिरिक्खजोणिणीण मणुस्साण मणुस्सीण देवाण सिद्धाणय अट्ठगतिसमासेण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा? गोयमा! सव्वत्थोवा मणुस्सीओ मणुस्सा असंखेज्जगुणा। णेरइया असंखेज्जगुणा तिरिक्खजोणिणीओ असंखेज्जगुणा

ख्येयगुणा, दिगनुपातेन सर्वस्तोका देवा महाशुक्रे कल्पे पूर्वपश्चिमोत्तरेण दक्षिणेनासंख्येयगुणा, दिगनुपातेन सर्वस्तोका देवा सहस्रारे कल्पे पूर्वपश्चिमोत्तरेण दक्षिणेनासंख्येयगुणा, तेन परं बहुसमोपपन्नका श्रमणायुष्मन्! दिगनुपातेन सर्वस्तोका सिद्धा दक्षिणोत्तरेण पूर्वेण संख्येयगुणाः पश्चिमेन विशेषाधिका, द्वारम्।१। एतेषां भदन्त! नैरयिकाणां तिर्यग्योनिकानां मनुष्याणां देवानां सिद्धानाञ्च पञ्चगतिसमासेन कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा बहुका वा तुल्या वा विशेषाधिका वा? गौतम! सर्वस्तोका मनुष्या नैरयिका असंख्येयगुणा देवा असंख्येयगुणा सिद्धा अनन्तगुणा तिर्यग्योनिका अनन्तगुणा। एतेषां भदन्त! नैरयिकाणां तिर्यग्योनिकानां तिर्यग्योनिकीनां मनुष्याणां मानुषीणां देवानां सिद्धानां चाष्टगतिसमासेन कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा बहुका वा तुल्या वा विशेषाधिका वा? गौतम! सर्वस्तोका मानुष्यो मनुष्या असंख्येयगुणा नैरयिका असंख्येयगुणा स्तिर्यग्योनिक्योऽसंख्येयगुणा देवा असंख्येयगुणा देव्यः संख्येयगुणा, सिद्धा अनन्तगुणा स्तिर्यग्योनिका अनन्तगुणा। द्वारम्।२॥ ए

वाणमंतरादेवा पुरच्छिमेणं पच्चच्छिमेणं विसेसाहिया, उत्तरेणं विसेसाहिया, दाहिणेणं विसेसाहिया, दिसानुवाएण सव्वत्थोवा जोइसिया देवा पुरच्छिमपच्चच्छिमेणं दाहिणेण विसेसाहिया, उत्तरेणं विसेसाहिया दिसानुवाएण सव्वत्थोवा देवा सोहम्मे कप्पे पुरच्छिमपच्चच्छिमेणं उत्तरेणं असंखेज्जगुणा, दाहिणेण विसेसाहिया, दिसानुवाएणं सव्वत्थोवा देवा ईसाणेकप्पे पुरच्छिमपच्चच्छिमेणं उत्तरेणं असंखेज्जगुणा दाहिणेणं विसेसाहिया, दिसानुवाणं सव्वत्थोवा देवा सणंकुमारेकप्पे पुरच्छिमपच्चच्छिमेणं उत्तरेण असंखेज्जगुणा, दाहिणेण विसेसाहिया दिसानुवाएणं सव्वत्थोवा देवा माहिंदे कप्पे पुरच्छिमेण पच्चच्छिमेण, उत्तरेणं असंखेज्जगुणा, दाहिणेणं विसेसाहिया। दिसानुवाएणं सव्वत्थोवा बम्भलोए कप्पे देवा पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेण दाहिणेण असंखेज्जगुणा दिसानुवाएण सव्वत्थोवा बम्भलोए कप्पे देवा पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेण दाहिणेणं असंखेज्जगुणा। दिसानुवाएण लंतए कप्पे देवा पुरच्छिमपच्चच्छिम उत्तरेणं दाहिणेणं असंखेज्जगुणा। दिसानुवाएणं सव्वत्थोवा देवा महासुक्के कप्पे पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेण दाहिणेण असं

का उत्तरेण विशेषाधिका दक्षिणेन विशेषाधिका। दिगनुपातेन सर्वस्तोका ज्योतिष्का देवाः पूर्वपश्चिमेन दक्षिणेन विशेषाधिका उत्तरेण विशेषाधिका, दिगनुपातेन सर्वस्तोका देवा सौधर्मे कल्पे पूर्वपश्चिमेनोत्तरेणासंख्येयगुणा दक्षिणेन विशेषाधिका, दिगनुपातेन सर्वस्तोका देवा ईशाने कल्पे पूर्वपश्चिमेनोत्तरेणा सस्येयगुणा दक्षिणेन विशेषाधिका, दिगनुपातेन सर्वस्तोका देवाः सनत्कुमारे कल्पे पूर्वपश्चिमेणोत्तरेणासंख्येयगुणा दक्षिणेन विशेषाधिका, दिगनुपातेन सर्वस्तोका देवा माहेन्द्रे कल्पे पूर्वपश्चिमत उत्तरेणासंख्येयगुणा दक्षिणेन विशेषाधिका, दिगनुपातेन सर्वस्तोका ब्रह्मदेवलोके देवा पूर्वपश्चिमोत्तरेण दक्षिणेनासंख्येयगुणाः, दिगनुपातेन सर्वस्तोका देवा लान्तके कल्पे पूर्वपश्चिमोत्तरेण दक्षिणेनास

कयरेहिंतो ऋप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पज्जत्तगा चउरिंदिया पचिंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, तेइंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, बेइंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, एगिंदिया पज्जत्तगा ऋणंतगुणा, सइंदिया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा। एएसिणं भंते ! सइंदियाण पज्जत्ताप ज्जत्तगाण कयरे कयरेहिंतो ऋप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सइंदिया ऋपज्जत्ता पज्जत्तगा सइंदिया सखेज्जगुणा । एएसिण भंते ! एगिंदियाण पज्जत्तापज्जत्ताण कयरे कयरे हिंतो ऋप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा एगिंदिया पज्जत्तगा एगिंदिया ऋपज्जत्तगा ऋसं०। एएसिण भंते ! बेइंदियाण पज्जत्तापज्जत्ताण कयरे कयरेहिंतो ऋप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बेइंदिया पज्जत्ता बेइंदिया ऋपज्जत्ता ऋसखेज्जगुणा । एएसिणं भंते ! तेइंदियाण पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो ऋ प्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा तेइंदिया पज्जत्तगा तेइंदिया ऋपज्जत्तगा ऋसखेज्जगुणा। एएसिण भंते !

प्तकाना कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा बहुका वा तुल्या वा विशेषाधिका वा ? गौतम ! सर्वस्तोका पर्याप्तकाश्चतुरिन्द्रिया पञ्चेन्द्रिया पर्याप्तका वि शेषाधिका त्रीन्द्रिया पर्याप्तका विशेषाधिका द्वीन्द्रिया पर्याप्तका विशेषाधिका एकेन्द्रिया पर्याप्तका अनन्तगुणा सेन्द्रिया पर्याप्तका सख्येय गुणा । एतेषा भदन्त ! सेन्द्रियाणा पर्याप्तापर्याप्तकाना कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा बहुका वा तुल्या वा विशेषाधिका वा ? गौतम ! सर्वस्तोका सेन्द्रिया अपर्याप्तका. पर्याप्तकाः सेन्द्रिया सख्येयगुणा । एतेषा भदन्त ! एकेन्द्रियाणा पर्याप्तापर्याप्तकाना कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ गौतम ! सर्वस्तोका एकेन्द्रिया पर्याप्तका अपर्याप्तका असख्येयगुणा । एतेषा भदन्त ! द्वीन्द्रियाणा पर्याप्तकापर्याप्तकाना कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ? गौत म ! सर्वस्तोका द्वीन्द्रिया पर्याप्तका अपर्याप्तका असख्येयगुणा , एतेषा भदन्त ! त्रीन्द्रियाणा पर्याप्तकापर्या० कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ सर्वस्तो

न्ते । देवा ऋसंखेज्जगुणा । देवीउ संखेज्जगुणाउ सिद्धा ऋणंतगुणा तिरिक्खजोणिया ऋणंतगुणा दारं २ । एएसिण न्नते । सइंदियाणं एगिंदियाणं बेइंदियाण तेइंदियाणं चउरिंदियाणं पचिंदियाणं ऋणेंदियाणय कयरे कयरेहिंतो ऋप्पावा वज्ज्यावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पंचिंदिया चउरिंदिया विसेसाहिया तेइंदिया विसेसाहिया वेइंदिया विसेसाहिया ऋणिंदिया ऋणतगुणा एगिंदिया ऋ० सइंदिया वि० । एएसिणं न्नते! सइंदियाणं एगिंदियाणं वेइंदियाणं तेइंदियाणं चउरिंदियाणं पचिंदियाणं ऋपज्जत्तगाणं कयरे कयरेहिंतो ऋप्पावा वज्ज्यावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पंचिंदिया ऋपज्जत्तगा चउरिंदिया ऋपज्जत्तगा विसेसाहिया, तेइंदिया ऋपज्जत्तगा विसेसाहिया, वेइंदिया ऋपज्जत्तगा विसेसाहिया, एगिंदिया ऋपज्जत्तगा ऋणतगुणा, सइंदिया ऋपज्जत्तगा विसेसाहिया । एएसिण न्नते ! सइंदियाणं एगिंदियाण वेइंदियाण तेइंदियाणं चउरिंदियाणं पंचिंदियाणं पज्जत्तगाणं कयरे

तेषां न्नदन्त । सेन्द्रियाणामेकेन्द्रियाणां द्वीन्द्रियाणां त्रीन्द्रियाणां चतुरिन्द्रियाणां पञ्चेन्द्रियाणामनिन्द्रियाणां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा बहुका वा तुल्या वा विशेषाधिका वा ? गौतम ! सर्वस्तोका पञ्चेन्द्रिया चतुरिन्द्रिया विशेषाधिका त्रीन्द्रिया विशेषाधिका द्वीन्द्रिया विशेषाधिका अनिन्द्रिया अनन्तगुणा एकेन्द्रिया अनन्तगुणा सेन्द्रिया विशेषाधिका । एतेषां न्नदन्त । सेन्द्रियाणामेकेन्द्रियाणां द्वीन्द्रियाणां त्रीन्द्रियाणां चतुरिन्द्रियाणां पञ्चेन्द्रियाणामपर्याप्तकानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा बहुका वा तुल्या वा विशेषाधिका वा ? गौतम । सर्वस्तोका० पञ्चेन्द्रिया अपर्याप्तका चतुरिन्द्रिया अपर्याप्तका विशेषाधिका त्रीन्द्रिया अपर्याप्तका विशेषाधिका द्वीन्द्रिया अपर्याप्तका विशेषाधिका एकेन्द्रिया अपर्याप्तका अनन्तगुणा सेन्द्रिया अपर्याप्तका विशेषाधिका । एतेषां न्नदन्त । सेन्द्रियाणामेकेन्द्रियाणां द्वीन्द्रियाणां त्रीन्द्रियाणां चतुरिन्द्रियाणां पञ्चेन्द्रियाणां पर्या

याण पुढविकाइयाणं आउकाइयाणं तेउकाइयाण वाउकाइयाण वणस्सइकाइयाणं तसकाइयाण अकाइयाण कयरे कयरेहितो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा तसकाइया तेउकाइया असखेज्जगुणा, पुढविकाइया विसेसाहिया, आउकाइया विसेसाहिया, वाउकाइया विसेसाहिया अकाइया अणतगुणा, वणस्सइकाइया अणतगुणा, सकाइया विसेसाहियावा । एएसिण भंते ! सकाइयाण पुढविकाइयाण आउकाइयाण तेउकाइयाण वाउकाइयाणं वणस्सइकाइयाण तसकाइयाणय अपज्जत्तगाण कयरे कयरेहितो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा तसकाइया अपज्जत्तगा, तेउकाइया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा, पुढविकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, आउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, वाउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, वणस्सइकाइया अपज्जत्तगा अणतगुणा। सकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया

पर्याप्तका विशेषाधिका । द्वारम् । ३ । एतेषा भदन्त । सकायिकाना पृथिवीकायिकाना अप्कायिकाना तजस्कायिकाना वायुकायिकाना वनस्पतिकायिकाना त्रसकायिकानामकायिकाना कतरे कतरेभ्यो अल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोकास्त्रसकायिका स्तेजस्कायिका असख्येयगुणाः पृथिवीकायिका विशेषाधिका अप्कायिका विशेषाधिका वायुकायिका विशेषाधिका अकायिका अनन्तगुणा वनस्पतिकायिका अनन्तगुणा सकायिका विशेषाधिका । एतेषा भदन्त । सकायिकाना पृथिवीकायिकाना अप्कायिकाना तेजस्कायिकाना वायुकायिकानां वनस्पतिकायिकाना त्रसकायिकानामपर्याप्तकाना कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोकास्त्रसकायिका अपर्याप्तका स्तेजस्कायिका अप० असख्येयगुणा पृथिवीकायिका अ० विशेषाधिका अप्कायिका अ० विशेषाधिका वायुकायिका अप० विशेषाधिका वनस्पतिकायिका अप० अनन्तगुणा सकायिका अपर्याप्तका विशेषाधिका । एतेषां भदन्त । सकायिकाना पृथिवीकायिकाना अप्कायिकाना तेजस्कायिकाना वायुकायिकाना वनस्पतिकायिकाना त्रसकायि

चउरिंदियोण पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा चउरिंदिया पज्जत्तगा चउरिंदिया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । एएसिणं भंते! पचेंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पचिंदिया पज्जत्तगा पचिंदिया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । एएसिणं भंते! सइंदियाणं एगिंदियाण बेइंदियाणं तेइंदियाण चउरिंदियाण पचिंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे २ हिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा चउरिंदिया पज्जत्तगा पचिंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, बेइंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, तेइंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, पचिंदिया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा चउरिंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, तेइंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, बेइंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, एगिंदिया अपज्जत्तगा अणंतगुणा, सइंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, एगिंदिया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा, सइंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सइंदिया विसेसाहिया दारं ३ । एएसिणं भंते ! सकाइ

काश्चीन्द्रिया पर्याप्तका अपर्याप्तका असंख्येयगुणा । एतेषां भदन्त । चतुरिन्द्रियाणां पर्या० कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ गौतम । सर्वस्तोका चतुरिन्द्रिया पर्याप्तका अपर्याप्ता असंख्येयगुणा । एतेषां भदन्त । पचेंद्रियाणां पर्याप्तकापर्या० कतरे० ऽल्पा वा ४ गौतम । सर्वस्तोका पचेंद्रिया पर्याप्तका अपर्याप्तका असंख्येयगुणा । एतेषां भदन्त । सेंद्रियाणामेकेंद्रियाणां द्वींद्रियाणां त्रींद्रियाणां चतुरिन्द्रियाणां पचेंद्रियाणां पर्याप्तापर्याप्तानां कतरे० अल्पा वा ४ गौतम । सर्वस्तोका चतुरिन्द्रिया० पर्याप्तका पचेंद्रिया० पर्याप्तका विशेषाधिका द्वींद्रिया० पर्याप्तका विशेषाधिका त्रींद्रिया पर्याप्तका विशेषाधिका पचेंद्रिया अपर्याप्तका असंख्येयगुणा चतुरिन्द्रिया अपर्याप्तका विशेषाधिका त्रींद्रिया अपर्याप्तका विशेषाधिका द्वींद्रिया अपर्याप्तका विशेषाधिका एकेंद्रिया अपर्याप्तका अनन्तगुणा सेंद्रिया अपर्याप्तका विशेषाधिका एकेंद्रिया पर्याप्तका संख्येयगुणा सेंद्रिया

... ॥ एएसिणं भंते ! वणस्सइकाइयाणं पज्जत्ता२ णं
गोयमा ! सव्वत्थोवा वणस्सइकाइया अपज्जत्तगा, वणस्सइकाइया पज्ज
...भंते ! तसकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा ४ गोय
इया पज्जत्तगा, तसकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्ज० । एएसिणं भंते ! सकाइयाणं
आउकाइयाणं तेउकाइयाणं वाउकाइयाणं वणस्सइकाइयाणं तसकाइयाणं पज्जत्ता २ ण
हिंतो अप्पावा४ ? गो० । सव्वत्थोवा तसकाइया पज्जत्तगा, तसकाइया अपज्जत्तगा असंखे
ज्जगुणा, तेउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा पुढविकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, आउकाइया अ

यिका अपर्याप्तका पर्याप्तका सङ्ख्येयगुणा । एतेषां भदन्त ! वायुकायिकानां पर्याप्तापर्याप्तकानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तो
का वायुकायिका अपर्याप्तका पर्याप्तका सङ्ख्येयगुणा । एतेषां भदन्त ! वनस्पतिकायिकानां पर्या० २ नां कतरे २ भ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम !
सर्वस्तोका वनस्पतिकायिका अपर्याप्तका पर्याप्तका सङ्ख्येयगुणा । एतेषां भदन्त ! त्रसकायिकानां पर्याप्ता २ नां कतरे २ भ्योऽल्पा वा ४ ?
गौतम ! सर्वस्तोकास्त्रसकायिका पर्याप्तका अपर्याप्तका असङ्ख्येयगुणा । एतेषां भदन्त ! सकायिकानां पृथिवीकायिकानामप्कायिकानां तेजस्का
यिकानां वायुकायिकानां वनस्पतिकायिकानां त्रसकायिकानां पर्याप्तापर्याप्तकानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा बहुका वा तुल्या वा विशेषाधिका वा ?

॥ ध० ॥

एएसिणं नंते ! सकाइयाणं पुढविकाइयाणं आउकाइयाणं तेउकाइयाणं वाउकाइयाणं वणस्सइकाइयाणं तसकाइयाणय पज्जत्तगाण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा तसकाइया पज्जत्तगा, तेउकाइया पज्जत्तगा असखेज्जगुणा, पुढविकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया आउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, वाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, वणस्सइकाइया पज्जत्ता अणंतगुणा, सकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया। एएसिणं नंते ! सकाइयाण पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा वज्जयावा तुल्लावा सिसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सकाइया अपज्जत्तगा, सकाइया पज्जत्तगा सखेज्जगुणा। एएसिणं नंते ! पुढविकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा वज्जयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पुढविकाइया अपज्जत्तगा, पुढविकाइया पज्जत्तगा सखिज्जगुणा। एएसिणं नंते ! आउकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा आउकाइया अप ॥ मू०

कानां च पर्याप्तानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोका त्रसकायिका पर्याप्तका स्तेजस्कायिका पर्या० असंख्येयगुणा पृथिवीकायिका विशेषाधिका अप्कायिका विशेषाधिका वायुकायिका पर्याप्तका विशेषाधिका वनस्पतिकायिका पर्याप्तका अनन्तगुणाः सकायिका. पर्याप्तका विशेषाधिका । एतेषां भदन्त । सकायिकानां पर्याप्तकापर्याप्तकानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोका सकायिका अपर्याप्तका पर्याप्तका सख्येयगुणा । एतेषां भदन्त । पृथिवीकायिकानां पर्याप्तकापर्याप्तकानां कतरे २ भ्यो अल्पा वा ? गौतम । सर्वस्तोका पृथिवीकायिका अपर्या० पर्या० सख्येयगुणा । एतेषां भदन्त । पर्या० अपर्या० अप्कायिकानां कतरे २ भ्योऽल्पा वा ? गौतम । सर्वस्तोका अप्कायिका अपर्याप्तका पर्याप्तका. सख्येयगुणा । एतेषां भदन्त । तेजस्कायिकानां पर्या० अपर्या० कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४? गौतम । सर्वस्तोका स्तेजस्का ॥ अ०

ज्जत्तगा, आउकाइया पज्जत्तगा संखिज्जगुणा । एएसिणं भंते ! तेउकाइयाण पज्जत्तापज्जत्ताण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा तेउकाइया अपज्जत्तगा, तेउकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा एएसिण भंते । वाउकाइयाण पज्जत्तापज्जत्ताण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा । सव्वत्थोवा वाउकाइया अपज्जत्तगा, वाउकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा । एएसिण भंते । वणस्सइकाइयाण पज्जत्ता२ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वणस्सइकाइया अपज्जत्तगा, वणस्सइकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा । एएसिण भंते । तसकाइयाण पज्जत्तापज्जत्ताण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा ४ गोयमा । सव्वत्थोवा तसकाइया पज्जत्तगा, तसकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्ज० । एएसिणं भंते ! सकाइयाणं पुढविकाइयाण आउकाइयाणं तेउकाइयाण वाउकाइयाण वणस्सइकाइयाण तसकाइयाण पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गो० । सव्वत्थोवा तसकाइया पज्जत्तगा, तसकाइया अपज्जत्तगा असंखे ज्जगुणा, तेउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा पुढविकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, आउकाइया अ

यिका अपर्याप्तका पर्याप्तका संख्येयगुणा । एतेषां भदन्त ! वायुकायिकाना पर्याप्तापर्याप्तकाना कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तो का वायुकायिका अपर्याप्तका पर्याप्तकाः संख्येयगुणा । एतेषां भदन्त ! वनस्पतिकायिकाना पर्या० २ ना कतरे २ भ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका वनस्पतिकायिका अपर्याप्तका पर्याप्तका संख्येयगुणा । एतेषां भदन्त । त्रसकायिकाना पर्याप्ता २ ना कतरे २ भ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोकास्त्रसकायिका पर्याप्तका अपर्याप्तका असंख्येयगुणा । एतेषां भदन्त ! सकायिकाना पृथिवीकायिकानामप्कायिकाना तेजस्का यिकाना वायुकायिकाना वनस्पतिकायिकाना त्रसकायिकाना पर्याप्तापर्याप्तकाना कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा बहुका वा तुल्या वा विशेषाधिका वा ?

पज्जत्तगा विसेसाहिया, वाउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, तेउकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा, पुढविकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, अप्पकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, वाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, अपज्जत्तगा वण० अनन्त० पज्जत्तगा सखेज्जगुणा, सकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, सकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा सकाइया विसेसाहिया। एएसिणं भंते । सुज्जमाणं सुज्जमपुढविकाइयाणं सुज्जमआउकाइयाण सुज्जमतेउकाइयाण सुज्जमवाउकाइयाणं सुज्जमवणस्सइकाइयाणं सुज्जमणिगोयाणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा! सव्वत्थोवा सुज्जमतेउकाइया, सुज्जमपुढविकाइया विसेसाहिया सुज्जमआउकाइया विसेसाहिया, सुज्जमवाउकाइया विसेसाहिया, सुज्जमनिगोदा असखेज्जगुणा, सुज्जमवणस्सइकाइया अणतगुणा, सुज्जमा विसेसाहिया। एएसिण भंते ! सुज्जमअपज्जत्तगाण सुहुमपुढविकाइयाणं अपज्जत्तगाण सुज्जमआउकाइयाणं अपज्जत्तगाणं सुज्जमतेउकाइयाण अपज्जत्तगाणं सुज्जमवाउकाइयाणं अपज्जत्तगाणं सुज्जम

गौतम । सर्वस्तोकास्त्रसकायिका पर्याप्तका अपर्याप्तका असंख्येयगुणा स्तेजस्कायिका अपर्याप्तका असंख्येयगुणा पृथिवीकायिका अपर्याप्तका विशेषाधिका अप्कायिका अपर्याप्तका विशेषाधिका वायुकायिका अपर्याप्तका विशेषाधिका स्तेजस्कायिका पर्याप्तका संख्येयगुणा पृथिवीकायिकाः पर्याप्तका विशेषाधिका अप्कायिकाः पर्याप्तका विशेषाधिका वायुकायिका पर्याप्तका विशेषाधिका अपर्याप्तका वनस्पतिकायिका अनन्तगुणा' पर्याप्तका- संख्येयगुणा सकायिका अपर्याप्तका विशेषाधिका- सकायिका पर्याप्तका संख्येयगुणा । एतेषां भदन्त । सूक्ष्माणां सूक्ष्मपृथिवीकायिकानां सूक्ष्माप्कायिकानां सूक्ष्मतेजस्कायिकानां सूक्ष्मवायुकायिकानां सूक्ष्मवनस्पतिकायिकानां सूक्ष्मनिगोदानां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका सूक्ष्मतेजस्कायिका सूक्ष्मपृथिवीकायिका विशेषाधिका सूक्ष्माप्कायिका विशेषाधिकाः सूक्ष्मवायुकायिका विशेषाधिका

वणस्सइकाइयाण अपज्जत्तगाण सुहुमनिगोदाणं अपज्जत्तयाणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा!
सव्वत्थोवा सुहुमतेउकाइया अपज्जत्तया, सुज्जमपुढविकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, सुज्जमआउका०
अपज्जत्तया विसेसाहिया, सुज्जमवाउकाइया अपज्जत्तया विसेसाहिया, सुज्जमनिगोदा अपज्जत्तगा अ
सखेज्जगुणा, सुज्जमवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा अणतगुणा, सुज्जमा अपज्जत्तगा विसेसाहिया। एएसिणं
भंते। सुज्जमपज्जत्तगाण सुज्जमपुढविकाइयपज्जत्तगाण सुज्जमआउकाइयपज्जत्तगाणं सुज्जमतेउकाइयपज्ज
त्तगाण सुज्जमवाउकाइयापज्जत्तगाण सुज्जमवणस्सइकाइयापज्जत्ताण सुज्जमनिगोदपज्जत्तगाणय कयरे कय
रेहितो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुज्जमतेउकाइया पज्जत्तगा, सुज्जमपुढविकाइयापज्जत्तगा वि
सेसाहिया, सुज्जमआउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुज्जमवाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुज्ज
मनिगोदा पज्जत्तगा असखेज्जगुणा, सुज्जमवस्सइकाइयापज्जत्तया अणतगुणा, सुहुमापज्जत्ता विसेसा
हिया दार ३। एएसिणं भंते! सुहुमाण पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहितो अप्पावा४ ? सव्वत्थोवा सुहुमा

सूक्ष्मनिगोदा असख्यगुणा सूक्ष्मवनस्पतिकायिका अनन्तगुणा सूक्ष्मा विशेषाधिका। एतेषा भदन्त। सूक्ष्मापर्याप्तकाना सूक्ष्मपृथिवीकायिका
पर्याप्तकाना सूक्ष्माप्कायिकापर्याप्ताना सूक्ष्मतेजस्कायापर्याप्तकाना सूक्ष्मापर्याप्तवायुकायिकाना सूक्ष्मापर्याप्तवनस्पतिकायिकाना सूक्ष्मापर्या
प्तनिगोदाना कतरे २ भ्योऽल्पावा ? गौतम। सर्वस्तोका सूक्ष्मापर्याप्ता स्तेजस्कायिका सूक्ष्मपृथिवीकायिका अ० विशेषाधिका सूक्ष्माप्कायिका
अपर्याप्तका विशेषाधिका सूक्ष्मवायुकायिका अ० विशेषाधिका सूक्ष्मनिगोदा अ० असख्यगुणा, सूक्ष्मवनस्पतिकायिका अ० अनन्तगुणा सूक्ष्मा
अप० विशेषाधिका। एतेषा भदन्त। सूक्ष्मपर्याप्तकाना सूक्ष्मपृथिवीकायपर्याप्ताना सूक्ष्माप्कायिकपर्या०काना सूक्ष्मतेजस्कायिकपर्या०काना सू

अपज्जत्तगा सुहुमा पज्जत्तगा सखेज्जगुणा । एएसिणं भंते ! सुहुमपुढविकाइयाणं पज्जत्ता २ णं कयरे २ हितो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमपुढविकाइया अपज्जत्तया , सुहुमपुढविकाइया पज्जत्तगा सखेज्जगुणा । एएसिण भंते ! सुहुमआउकाइयाण पज्जत्ता२ णं कयरे२ हितो अप्पावा४ गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमआउकाइया अपज्जत्तया, सुहुमआउकाइया पज्जत्तगा सखेज्जगुणा । एएसिणं भंते ! सुहुमतेउकाइयाण पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहितो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमतेउकाइया अपज्जत्तगा सुहुमतेउकाइया पज्जत्तगा सखिज्जगुणा। एएसिण भंते! सुहुमवाउकाइयाण पज्जत्ता २ णं कयरे२ हितो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमवाउकाइया अपज्जत्तगा, सुहुमवाउकाइया पज्जत्तगा

क्ष्मवायुकायिकपर्याप्तकाना सूक्ष्मवनस्पतिकायपर्याप्तकाना सूक्ष्मनिगोदप०काना च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका सूक्ष्मतेजस्कायिका प० सूक्ष्मपृथिवीकायिका प० विशेषाधिका सूक्ष्माप्कायिका प० विशेषाधिका. सूक्ष्मवायुकायिका प० विशेषाधिका. सूक्ष्मनिगोदा. प० असंख्यगुणा सूक्ष्मवनस्पतिकायिका प० अनन्तगुणा सूक्ष्मा. पर्याप्तका. विशेषाधिका । द्वारम् । ४ ॥ एतेषा भदन्त ! सूक्ष्माणा पर्याप्तपर्याप्तानां कतरे कतरेभ्यो ऽल्पावा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका सूक्ष्मा अपर्याप्तका सूक्ष्मा पर्याप्तका सख्येयगुणा । एतेषा भदन्त ! सूक्ष्मपृथिवीकायिकाना पर्याप्तपर्याप्तना कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका सूक्ष्मपृथिवीकायिका अपर्याप्तका सूक्ष्मपृथिवीकायिका पर्याप्तका सख्येयगुणा । एतेषा भदन्त ! सूक्ष्माप्कायानामपर्याप्तपर्याप्तना कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका सूक्ष्मा अप्कायिका अप० पर्याप्तका सख्येयगुणा । एतेषा सूक्ष्मतेजस्कायपर्याप्तअप०काना कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका सूक्ष्मतेजस्कायिका अप० पर्याप्तका संख्यगुणा । एतेषा सूक्ष्मवायुकायिकाना पर्याप्तापर्याप्ताना कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सवस्तोका सूक्ष्मापर्याप्तका वायुकायिका. पर्याप्ता

संखेज्ज० । एएसिण भंते! सुहुमवणस्सइकाइयाणं पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहितो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा, सुहुमवणस्सइकाइया पज्जत्तगा संखिज्जगुणा । एएसिणं भंते ! सुहुमनिगोदाणं पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहितो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमनिगोदा अपज्जत्ता, सुहुमनिगोदा पज्जत्तगा सखेज्जगुणा । एएसिण भंते ! सुहुमाण सुहुमपुढविकाइयाण सुहुम आउकाइयाण सुहुमतेउकाइयाण सुहुमवाउकाइयाण सुहुमवणस्सइकाइयाण सुहुमनिगोदाणय पज्जत्ता२ ण कयरे कयरेहितो अप्पावा४ ? गोयमा! सव्वत्थोवा सुहुमतेउकाइया अपज्जत्तया, सुहुमपुढविकाइया अपज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमआउकाइया अपज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया अपज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमतेउकाइया पज्जत्तया सखेज्जगुणा, सुहुमपुढविकाइया पज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमआउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमनिगोदा अणतगु

सख्येयगुणा । एतेषा सूक्ष्मवनस्पतिकायिकाना पर्या०पर्या०ना कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका सूक्ष्मवनस्पतिकायिका अपर्याप्तका पर्या०का सख्येयगुणा , एतेषा सूक्ष्मनिगोदाना पर्या०पर्या०ना कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका सूक्ष्मनिगोदा अपर्या० का पर्या०का सख्यगुणा । एतेषा भदन्त! सूक्ष्माणा सूक्ष्मपृथिवीकायिकाना सूक्ष्माप्कायिकाना सूक्ष्मतेजस्कायिकाना सूक्ष्मवायुकायिकाना सूक्ष्म वनस्पतिकायिकाना सूक्ष्मनिगोदानाञ्च पर्या०पर्या०काना कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका सूक्ष्मतेजस्कायिका अपर्याप्ता सूक्ष्म पृथिवीकायिका अपर्याप्ता विशेषाधिका सूक्ष्माप्कायिका अप० विशेषाधिका सूक्ष्मवायुकायिका अप० विशेषाधिका सूक्ष्मतेजस्कायिका पर्या० का सख्यगुणा सूक्ष्मपृथिवीकायिका॰ पर्या० विशेषाधिका सूक्ष्माप्कायिका पर्या० विशेषाधिका सूक्ष्मवायुकायिका पर्या० विशेषाधिका सूक्ष्म

णा, सुहुमा ग्रपज्जत्तगा विसेसाहिया, सुजमा वणस्सइकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा, सुजमा पज्जत्तगा विसेसाहिया । एएसिणं त्नंते ! वादरगाण वादरपुढविकाइयाणं वादरग्राउकाइयाणं वादरतेउकाइयाणं वादरवाउकाइयाण वादरवणस्सइकाइयाणं पत्तेयसरीरवादरवणस्सइकाइयाणं वादरनिगोदाणं वादरतसकाइयाणय कयरे२ हितो ग्रप्पावा वज्जयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्योवा वादरतेउकाइया वादरतेउकाइया ग्रसखेज्जगुणा, पत्तेयसरीर वादरवणस्सइकाइया ग्रसंखेज्जगुणा वायरनिगोया ग्रसंखेज्जगुणा, वादरपुढविकाइया ग्रसंखिज्जगुणा, वादरग्राउकाइया ग्रसंखेज्जगुणा वादरवाउकाइया ग्रसंखेज्जगुणा वादरवणस्सइकाइया ग्रणंतगुणा वादरा विसेसाहिया, एएसिणं त्नंते ! वादरापज्जत्तगाणं वादरपुढवीकाइया ग्रपज्जत्तगाणं वादरग्राउकाइया ग्रपज्जत्तगाण वादरतेउकाइयाग्रपज्जत्तगाणं वादरवाउकाइया ग्रपज्जत्तणाण वादरवणस्सइया ग्रपज्जत्तगाणं पत्तेयसरीरवणस्सइकाइया ग्रपज्जत्तगाणं वादरनि

निगोदा अप० असंख्यगुणा' सूक्ष्मनिगोदा' पर्या० सङ्ख्येयगुणा सूक्ष्मवनस्पतिकायिका अप०का अनन्तगुणाः सूक्ष्मा अपर्या०का विशेषाधिका सूक्ष्म वनस्पतिकायिका पर्या० सङ्ख्यगुणा' सूक्ष्मा पर्या०का विशेषाधिका । एतेषा भदन्त । वादराणा वादरपृथिवीकायिकाना वादराप्कायिकाना वादरतेजस्कायिकाना वादरवायुकायिकाना वादरवनस्पतिकायिकाना प्रत्येकशरीरवादरवनस्पतिकायिकाना वादरनिगोदाना वादरत्रसकायिकाना च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोका वादरत्रसकायिका वादरतेजस्कायिका असंख्यगुणा॰ प्रत्येकशरीरवादरवनस्पतिकायिका असंख्यगुणा वादरनिगोदा असंख्यगुणा वादरपृथिवीकायिका असंख्यगुणा वादराप्कायिका असंख्यगुणा वादरवायुकायिका असंख्यगुणा वादरवनस्पतिकायिका अनन्तगुणा वादरा विशेषाधिका । एतेषा भदन्त । वादरपर्या०काना वादरापर्या०पृथिवीकायिकाना वादरापर्या० अप्कायिकानां

गोदा अपज्जत्तगाणं वादरतसकाइयाअपज्जत्तगाणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा वि सेसाहियावा? गोयमा! सव्वत्थोवा वादरतसकाइया अपज्जत्तगा, बादरतेउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्ज गुणा, पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, वादरनिगोदा अपज्जत्तगा असंखेज्ज गुणा, वादरपुढवीकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, वादरआउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, वादरवाउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, वादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा अणंतगुणा, वादरअप ज्जत्तगा विसेसाहिया २। एएसिणं भंते! वादरपज्जत्तयाण वादरपुढविकाइयाणं पज्जत्तयाणं, वादरआउ काइयाण पज्जत्तयाण वादरतेउकाइयपज्जत्तयाण वादरवाउकाइयापज्जत्तयाणं बादरवणस्सइकाइयाण पज्ज त्तयाण पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइयापज्जत्तयाण वादरनिगोदपज्जत्तयाण वादरतसकाइयपज्जत्तयाणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा? गोयमा! सव्वत्थोवा वादरतेउकाइया प

॥ मूल ॥

वादराप० तेजस्कायिकाना वादरापर्या० वायुकायिकाना वादरापर्या०वनस्पतिकायिकाना वादरापर्या० प्रत्येकशरीरवनस्पतिकायिकाना वादरनि गोदानामपर्या०कानां वादरापर्या० त्रसकायिकाना कतरे २ भ्योऽल्पा वा ४? गौतम! सर्वस्तोका वादरत्रसकायिका अपर्या०का वादरतेजस्कायि का अप० असंख्येयगुणा प्रत्येकशरीरवादरवनस्पतिकायिका अप० असंख्येयगुणा वादरनिगोदा अपर्याप्तका असंख्येयगुणा वादरपृथिवीकायिका अपर्याप्तका असंख्यगुणा वादराप्कायिका अप० असंख्यगुणा वादरवायुकायिका अप० असंख्यगुणा वादरवनस्पतिकायिका अपर्या० अनन्तगुणा वा दरापर्या०का विशेषाधिका। २। भंतेइ प्र०। वादरपर्या०कानां वादरपृथिवीकायपर्याप्तकानां पर्याप्तवादराप्कायानां पर्या० वादरतेजस्कायिका नां पर्याप्तवादरवायुकायानां पर्याप्तवादरवनस्पतिकायिकानां पर्याप्तप्रत्येकशरीरवादरवनस्पतिकायिकानां पर्याप्तवादरनिगोदानां पर्याप्तवादरत्रस

॥ भ० ॥

ज्ञत्तया, वादरतसकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । वादरनिगोदा पज्जत्तगा संखेज्जगुणा । वादरपुढविकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । वादरआउकाइया पज्जत्तया असंखेज्जगुणा । वादरवाउकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । वादरवणस्सइकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । वादरा पज्जत्तगा विसेसाहिया ३ । एएसिणं ज्ञते! बादराणं पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुगावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा! सव्वत्थोवा बादरा पज्जत्तगा । बादरा अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । एएसिण ज्ञते ! वादरपुढविकाइयाणं पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा! सव्वत्थोवा वादरपुढविकाइया पज्जत्तगा १ । वादरपुढविकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । एएसिण ज्ञते ! वादरआउकाइयाणं पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरआउकाइया पज्जत्तगा बादरआउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । एएसिणं ज्ञते !

कायिकाना च कतरे कतरेज्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोका पर्याप्तवादरतेजस्कायिका पर्याप्तवादरत्रसकायिका असंख्यगुणा पर्याप्तप्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका असंख्यगुणा पर्याप्तवादरनिगोदा असंख्यगुणा पर्याप्तवादरपृथिवीकायिका असंख्यगुणा पर्याप्तवादराप्कायिका असंख्यगुणा पर्याप्तवादरवायुकायिका असंख्यगुणा पर्याप्तवादरवनस्पतिकायिका असंख्यगुणा बादरा पर्याप्तका विशेषाधिका । ३ । एतेषां भदन्त । बादराणां पर्याप्तापर्याप्तानां कतरे कतरेज्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोका बादरा० पर्याप्तका अपर्या० असंख्यगुणा । एतेषां जद० । बादरपृथिवीकायिकानां पर्या०पर्या०कानां कतरे कतरेज्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोका बादरपृथिवीकायिकाः पर्याप्तका १ बादरपृथिवीकायिका अपर्याप्तका असंख्यगुणा । एतेषां भदन्त । बादराप्कायानां पर्याप्तापर्याप्तानां कतरे कतरेज्योऽल्पा वा ? गौतम । सर्वस्तोका बादराप्का

॥ मू

॥ भ

बादरतेउकाइयाणं पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा? गोयमा!
सव्वत्थोवा बादरतेउकाइया पज्जत्तया बादरतेउकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा। एएसिणं भंते! बाद
रवाउकाइयाण पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा ४? गोयमा! सव्वत्थोवा बादरवाउकाइया पज्ज
त्तगा। बादरवाउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा। एएसिण भंते! बादरवणस्सइकाइयाण पज्जत्ता२ णं
कयरे कयरेहिंतो अप्पावा ४? गोयमा! सव्वत्थोवा बादरवणस्सइकाइया पज्जत्तगा। बादरवणस्सइकाइ
या अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा। एएसिणं भंते! पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइयाणं पज्जत्ता २ णं कयरे
कयरेहिंतो अप्पावा ४? गोयमा! सव्वत्थोवा पत्तेयसरीरवणस्सइकाइया पज्जत्तगा। पत्तेयसरीरबादरव
णस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा। एएसिण भंते! बादरनिगोदाण पज्जत्ता२ णं कयरे कयरेहिंतो
अप्पावा ४? गोयमा! सव्वत्थोवा बादरनिगोदा पज्जत्तगा। बादरनिगोदा अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा।

यिका पर्याप्तका अपर्याप्तका असंख्येयगुणा। एतेषां भदन्त! बादरतेजस्कायानां पर्याप्तापर्याप्तकानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा? गौतम! सर्वस्तो
का बादरतेजस्कायिका पर्याप्तका अपर्याप्तबादरतेजस्कायिका असंख्येयगुणा। एतेषां भदन्त! बादरवायुकायिकानां पर्याप्तापर्याप्तानां कतरे क
तरेभ्योऽल्पा वा? गौतम! सर्वस्तोका बादरवायुकायिका पर्याप्तका अपर्याप्तबादरवायुकायिका असंख्येयगुणा। एतेषां भदन्त! बादरवनस्प
तिकायिकानां पर्याप्तापर्याप्तकानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४? गौतम! सर्वस्तोका बादरवनस्पतिकायिका पर्याप्तका अपर्याप्तबादरवनस्पति
कायिका असंख्येयगुणा। एतेषां भदन्त! प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिकानां पर्याप्तापर्याप्तानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४? गौतम! सर्व
स्तोका प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका पर्याप्तका अपर्याप्तप्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका असंख्येयगुणा। एतेषां भदन्त! बादरनिगो

एएसिण न्नते ! वादरतसकाइयाण पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिंतो ऋप्पावा ४ ? गोयमा ! सह्नत्थोवा वादरतसकाइया पज्जत्तगा । वादरतसकाइया ऋपज्जत्तगा ऋसंखेज्जगुणा४ । एएसिण न्नते ! वादराणं वादरपुढविकाइयाण वादरऋाउकाइयाण वादरतेउकाइयाणं वादरवाउकाइयाणं वादरवणस्सइकाइयाणं पत्तेयसरीरवादरवणस्सइकाइयाण वादरनिगोदाण वादरतसकाइयाणं पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिंतो ऋप्पावा वज्जयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सह्नत्थोवा वादरतेउकाइया पज्जत्तया १ । वादरतसकाइया पज्जत्तया ऋसखेज्जगुणा २ । वादरतसकाइया ऋपज्जत्तया ऋसखिज्जगुणा ३ । वादरपत्तेयवणस्सइकाइया पज्जत्तगा ऋसखेज्जगुणा ४ । वादरनिगोदा पज्जत्तगा ऋसखेज्ज० ५ । वादरपुढविकाइया पज्जत्तगा ऋसखेज्जगुणा ६ । वादरऋाउकाइया पज्जत्तगा ऋसखेज्जगुणा ७ । वादरवाउकाइया पज्ज

दाना पर्याप्तापर्याप्ताना कतरे कतरेज्योऽल्पा वा ४? गौतम ! सर्वस्तोका वादरनिगोदा पर्याप्तका अपर्याप्तवादरनिगोदा असख्यगुणा । एतेषा न्नदन्त ! वादरत्रसकायाना पर्याप्तापर्याप्ताना कतरे कतरेज्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका वादरत्रसकायिका पर्याप्तका वादरत्रसकायिका अपर्याप्तका असख्येयगुणा ।४। एतेषा न्नदन्त ! वादराणा वादरपृथिवीकायिकाना वादराप्कायाना वादरतेजस्कायिकाना वादरवायुकायिकाना वादरवनस्पतिकायिकाना प्रत्येकशरीरवादरवनस्पतिकायिकाना वादरनिगोदाना वादरत्रसकायिकाना पर्याप्तापर्याप्ताना कतरे कतरेज्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका वादरतेजस्कायिका पर्याप्तका १। वादरत्रसकायिका पर्याप्तका असख्येयगुणा २ । वादरत्रसकायिका अपर्याप्तका असख्येयगुणा ३ । पर्याप्तवादरप्रत्येकवनस्पतिकायिका असख्येयगुणा ४ । पर्याप्तवादरनिगोदा असख्येयगुणा ५ । पर्या०वादरपृथिवीकायिका असख्येयगुणा ६ । पर्या०वादराप्कायिका असख्येयगुणा ७ । पर्या०वादरवायुकायिका असख्येयगुणा ८ । अपर्या०वादरतेजस्कायिका असख्येयगुणा ९ ।

त्तगा असंखेज्जगुणा ८। बादरतेउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा ९। पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा १०। बादरनिगोदा अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ११। बादरपुढविकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा १२। बादरआउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा १३। बादरवाउकाइया अप० असंखेज्जगुणा १४। बादरवणस्सइकाइया पज्जत्तगा अणंतगुणा १५। बादरपज्जत्तगा विसेसाहिया १६। बादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा १७। बादरा अपज्जत्तगा विसेसाहिया १९। बादरा विसेसाहिया २०। एएसिण भंते! सुहुमाण सुहुमपुढविकाइयाण सुहुमआउकाइयाण सुहुमतेउकाइयाणं सुहुमवाउकाइयाण सुहुमवणस्सइकाइयाण सुहुमनिगोदाण बादराण बादरपुढविकाइयाणं बादरआउकाइयाण बादरतेउकाइयाण बादरवाउकाइयाण बादरवणस्सइकाइयाणं पत्तेयसरीरबादरवण

अपर्याप्तप्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका असंख्यगुणा १०। अपर्याप्तबादरनिगोदा असंख्यगुणा ११। अपर्या०बादरपृथिवीकायिका असंख्यगुणा १२। अपर्या०बादराप्कायिका असंख्यगुणा १३। अपर्या०बादरवायुकायिका असंख्यगुणा. १४। पर्या०बादरवनस्पतिकायिका अनन्तगुणा १५। पर्याप्ता बादरा विशेषाधिका १६। अपर्याप्तबादरवनस्पतिकायिका असंख्यगुणा १७। अपर्याप्ता बादरा विशेषाधिका १८। बादरा विशेषाधिका १९। एतेषां भदन्त! सूक्ष्माणां सूक्ष्मपृथिवीकायिकानां सूक्ष्माप्कायिकानां सूक्ष्मतेजस्कायिकानां सूक्ष्मवायुकायिकानां सूक्ष्मवनस्पतिकायिकानां सूक्ष्मनिगोदानां बादराणां बादरपृथिवीकायिकानां बादराप्कायिकानां बादरतेजस्कायिकानां बादरवायुकायिकानां बादरवनस्पतिकायिकानां प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिकानां बादरनिगोदानां बादरत्रसकायिकानां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४? गौतम! सर्वस्तोका बादरत्रसकायिका १। बादरतेजस्कायिका असंख्यगुणा २। प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका असंख्यगुणा ३। बादरनिगोदा असंख्यगुणा ४। बाद

एएसिण न्नते ! वादरतसकाइयाणं पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहितो छप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्योवा वादरतसकाइया पज्जत्तगा । वादरतसकाइया छपज्जत्तगा छसंखेज्जगुणा४ । एएसिण न्नते ! वादराणं वादरपुढविकाइयाण वादरछाउकाइयाण वादरतेउकाइयाण वादरवाउकाइयाण वादरवणस्सइकाइयाणं पत्तेयसरीरवादरवणस्सइकाइयाण वादरनिगोदाण वादरतसकाइयाणं पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहितो छप्पावा वज्जयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्योवा वादरतेउकाइया पज्जत्तया १ । वादरतसकाइया पज्जत्तया छसखेज्जगुणा २ । वादरतसकाइया छपज्जत्तया छसखिज्जगुणा ३ । वादरपत्तेयवणस्सइकाइया पज्जत्तगा छसखेज्जगुणा ४ । वादरनिगोदा पज्जत्तगा छसखेज्ज० ५ । वादरपुढविकाइया पज्जत्तगा छसखेज्जगुणा ६ । वादरछाउकाइया पज्जत्तगा छसखेज्जगुणा ७ । वादरवाउकाइया पज्ज

दाना पर्याप्तापर्याप्तानां कतरे कतरेन्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोका वादरनिगोदा पर्याप्तका अपर्याप्तवादरनिगोदा असख्यगुणा । एतेषां नदन्त । वादरत्रसकायानां पर्याप्तापर्याप्तानां कतरे कतरेन्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोका वादरत्रसकायिका पर्याप्तका वादरत्रसकायिका अपर्याप्तका असख्येयगुणा । ४ । एतेषां नदन्त ! वादराणां वादरपृथिवीकायिकानां वादराप्कायानां वादरतेजस्कायिकानां वादरवायुकायिकानां वादरवनस्पतिकायिकानां प्रत्येकशरीरवादरवनस्पतिकायिकानां वादरनिगोदानां वादरत्रसकायिकानां पर्याप्तापर्याप्तानां कतरे कतरेन्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोका वादरतेजस्कायिका पर्याप्तका १, वादरत्रसकायिका पर्याप्तका असख्यगुणा २ । वादरत्रसकायिका अपर्याप्तका असख्येयगुणा ३ । पर्याप्तवादरप्रत्येकवनस्पतिकायिका असख्येयगुणा ४ । पर्याप्तवादरनिगोदा असख्यगुणा ५ । पर्या०वादरपृथिवीकायिका असंख्यगुणा ६ । पर्या०वादराप्कायिका असख्यगुणा ७ । पर्या०वादरवायुकायिका असख्यगुणा ८ । अपर्या०वादरतेजस्कायिका असख्येयगुणा. ए ।

त्तगा असंखिज्जगुणा ८। बादरतेउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा ९। पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा १०। बादरनिगोदा अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ११। बादरपुढविकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा १२। बादरआउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा १३। बादरवाउकाइया अप० असंखेज्जगुणा १४। बादरवणस्सइकाइया पज्जत्तगा अणंतगुणा १५। बादरपज्जत्तगा विसेसाहिया १६। बादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा १७। बादरा अपज्जत्तगा विसेसाहिया १९। बादरा विसेसाहिया २०। एएसिणं भंते! सुहुमाणं सुहुमपुढविकाइयाणं सुहुमआउकाइयाणं सुहुमतेउकाइयाणं सुहुमवाउकाइयाणं सुहुमवणस्सइकाइयाणं सुहुमनिगोदाणं बादराणं बादरपुढविकाइयाणं बादरआउकाइयाणं बादरतेउकाइयाणं बादरवाउकाइयाणं बादरवणस्सइकाइयाणं पत्तेयसरीरबादरवण

अपर्याप्तप्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका असंख्यगुणा १०। अपर्याप्तबादरनिगोदा असंख्यगुणा ११। अपर्या०बादरपृथिवीकायिका असंख्यगुणा १२। अपर्या०बादराप्कायिका असंख्यगुणा १३। अपर्या०बादरवायुकायिका असंख्यगुणा १४। पर्या०बादरवनस्पतिकायिका अनन्तगुणा १५। पर्याप्ता बादरा विशेषाधिका १६। अपर्याप्तबादरवनस्पतिकायिका असंख्यगुणा १७। अपर्याप्ता बादरा विशेषाधिका १८। बादरा विशेषाधिका १९। एतेषां भदन्त! सूक्ष्माणां सूक्ष्मपृथिवीकायिकानां सूक्ष्माप्कायिकानां सूक्ष्मतेजस्कायिकानां सूक्ष्मवायुकायिकानां सूक्ष्मवनस्पतिकायिकानां सूक्ष्मनिगोदानां बादराणां बादरपृथिवीकायिकानां बादराप्कायिकानां बादरतेजस्कायिकानां बादरवायुकायिकानां बादरवनस्पतिकायिकानां प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिकानां बादरनिगोदानां बादरत्रसकायिकानां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४? गौतम! सर्वस्तोका बादरत्रसकायिका १। बादरतेजस्कायिका असंख्यगुणा २। प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका असंख्यगुणा ३। बादरनिगोदा असंख्यगुणा ४। बाद

एएसिणं भंते ! वादरतसकाइयाणं पज्जत्ता २ णं कयरे-कयरेहिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वादरतसकाइया-पज्जत्तगा । वादरतसकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा४ । एएसिण भंते ! वादराणं वादरपुढविकाइयाण वादरआउकाइयाण वादरतेउकाइयाण वादरवाउकाइयाण वादरवणस्सइकाइयाणं पत्तेयसरीरवादरवणस्सइकाइयाण वादरनिगोदाण वादरतसकाइयाण पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहितो अप्पावा वज्ञयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वादरतेउकाइया पज्जत्तया १ । वादरतसकाइया पज्जत्तया असखेज्जगुणा २ । वादरतसकाइया अपज्जत्तया असखिज्जगुणा ३ । वादरपत्तेयवणस्सइकाइया पज्जत्तगा असखेज्जगुणा ४ । वादरनिगोदा पज्जत्तगा असखेज्ज० ५ । वादरपुढविकाइया पज्जत्तगा असखेज्जगुणा ६ । वादरआउकाइया पज्जत्तगा असखेज्जगुणा ७ । वादरवाउकाइया पज्ज

दाना पर्याप्तापर्याप्तानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४? गौतम । सर्वस्तोका वादरनिगोदा पर्याप्तका अपर्याप्तवादरनिगोदा असंख्यगुणा । एतेषां भदन्त । वादरत्रसकायानां पर्याप्तापर्याप्तानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोका वादरत्रसकायिका पर्याप्तका वादरत्रसकायिका अपर्याप्तका असंख्येयगुणा ।४। एतेषां भदन्त । वादराणां वादरपृथिवीकायिकानां वादराप्कायानां वादरतेजस्कायिकानां वादरवायुकायिकानां वादरवनस्पतिकायिकानां प्रत्यकशरीरवादरवनस्पतिकायिकानां वादरनिगोदानां वादरत्रसकायिकानां पर्याप्तापर्याप्तानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोका वादरतेजस्कायिका पर्याप्तका १। वादरत्रसकायिका पर्याप्तका असंख्यगुणा २। वादरत्रसकायिका अपर्याप्तका असंख्येयगुणा ३। पर्याप्तवादरप्रत्येकवनस्पतिकायिका असंख्येयगुणा ४। पर्याप्तवादरनिगोदा असंख्यगुणा ५। पर्या०वादरपृथिवीकायिका असंख्येयगुणा ६। पर्या०वादराप्कायिका असंख्यगुणा ७। पर्या०वादरवायुकायिका असंख्यगुणा ८। अपर्या०वादरतेजस्कायिका असंख्येयगुणा. ९।

ज्जत्तयाण वादरआउकाइयअपज्जत्तयाण वादरतेउकाइयाअपज्जत्तयाण वादरवाउकाइयअपज्जत्तयाणं
वादरवणस्सइकाइयअपज्जत्तयाण पत्तेयसरीरवादरवणस्सइकाइयअपज्जत्तयाण वादरनिगोदा अपज्ज
त्तयाण वादरतसकाइया अपज्जत्तगाणय कयरे कयरेहितो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वादरत
सकाइया अपज्जत्तगा । वादरतेउकाइया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा , पत्तेयसरीरवादरवणस्सइकाइया
अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा ३ । वादरनिगोदा अपज्जत्तया असखेज्जगुणा । बादरपुढविकाइया अपज्ज
त्तगा असखेज्जगुणा । वादरआउकाइया अपज्जत्तगा असखे० ६ । वादरवाउकाइया अपज्जत्तगा अस
खेज्जगुणा, सुहुमतेउकाइया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा। सुहुमपुढविकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया ९
सुहुमआउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया १० । सुहुमवाउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुम
निगोदा अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा, वादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा अणतगुणा, वादरा अपज्जत्तगा

वनस्पतिकायिकानामपर्याप्तवादरनिगोदाना मपर्याप्तबादरत्रसकायिकानाञ्च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका अपर्याप्तबा
दरत्रसकायिका १ । अपर्याप्तबादरतेजस्कायिका असख्येयगुणा २ । अपर्याप्तप्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका असख्यगुणा ३ । अपर्याप्तबा
दरनिगादा असख्यगुणा ४ । अपर्याप्तबादरपृथिवीकायिका असख्यगुणा ५ । अपर्याप्तबादराप्कायिका असख्यगुणा ६ । बादरवायुकायिका अप
र्याप्तका असख्यगुणा अपर्याप्तसूक्ष्मतेजस्कायिका असख्यगुणा अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिका विशेपाधिका ९ । अपर्याप्तसूक्ष्माप्कायिका विशेपा
धिका १० । अपर्याप्तसूक्ष्मवायुकायिका विशेपाधिका ११ । अपर्याप्तसूक्ष्मनिगोदा असख्यगुणा अपर्याप्तबादरवनस्पतिकायिका अनन्तगुणा बा
दरा अपर्या०का विशेपाधिका अपर्या०सूक्ष्मवनस्पतिकायिका असख्यगुणा अपर्या०का सूक्ष्मा विशेपाधिका २ । एतेपा भदन्त । सूक्ष्मपर्या०काना

स्सइकाइयाणं बादरनिगोदाणं बादरतसकाइयाणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा? ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरतसकाइया १ । बादरतेउकाइया असखेज्जगुणा पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया असंखेज्जगुणा । बादरनिगोदा असंखिज्जगुणा । बादरपुढविकाइया असंखेज्जगुणा ५। बादरआउकाइया असंखेज्जगुणा बादरवाउकाइया असखेज्जगुणा । सुहुमतेउकाइया असखेज्जगुणा । सुहुमपुढविकाइया विसेसाहिया । सुहुमआउकाइया विसेसाहिया । सुहुमवाउकाइया विसेसाहिया । सुहुमनिगोदा असंखेज्जगुणा । बादरवणस्सइकाइया अणतगुणा बादरा विसेसाहिया । सुहुमवणस्सइकाइया असखेज्जगुणा १५ । सुहुमाविसेसाहिया १ । एएसिणं भंते ! सुहुमअपज्जयाणं सुहुमपुढविकाइयाणं अपज्जत्तगाणं सुहुम आउकाइया अपज्जत्तयाणं सुहुमतेउकाइयाणं अपज्जत्तयाणं सुहुमवाउकाया अपज्जत्तयाणं सुहुमवण स्सइकाइयाणं अपज्जत्तयाणं सुहुमनिगोदा अपज्जत्तयाण बादरा अपज्जत्तयाणं बादरपुढविकाइया अप

रपृथिवीकायिका असंख्यगुणा ५ । बादराप्कायिका असंख्यगुणा ६ । बादरवायुकायिका असंख्यगुणा ७ । सूक्ष्मतेजःकायिका असंख्यगुणा ८ । सूक्ष्मपृथिवीकायिका विशेषाधिका. ९ । सूक्ष्माप्कायिका विशेषाधिका. १० । सूक्ष्मवायुकायिका विशेषाधिका ११ । सूक्ष्मनिगोदा असंख्यगुणा १२ । बादरवनस्पतिकायिका अनन्तगुणाः १३ । बादरा विशेषाधिका १४ । सूक्ष्मवनस्पतिकायिका असंख्यगुणा १५ । सूक्ष्मा विशेषाधिका १६ । एतेषां भदन्त ! सूक्ष्मापर्याप्तकानां सूक्ष्मपृथिवीकायिकानां अपर्याप्तकानां सूक्ष्माप्कायिकानामपर्याप्तानां सूक्ष्मतेजस्कायिकानामपर्याप्तानां सूक्ष्मवायुकायिकानामपर्याप्तानां सूक्ष्मवनस्पतिकायिकानामपर्याप्तानां सूक्ष्मनिगोदानामपर्याप्तानां बादरापर्याप्तकानामपर्या०बादरपृथिवीकायिकानामपर्याप्तबादराप्कायिकानां बादरतेजस्कायिकानामपर्याप्तकानामपर्याप्तबादरवायुकायिकानामपर्याप्तबादरवनस्पतिकायिकानामपर्याप्तप्रत्येकशरीर बादर

ज्जत्तयाण वादरआउकाइयअपज्जत्तयाण वादरतेउकाइयाअपज्जत्तयाण वादरवाउकाइयअपज्जत्तयाणं वादरवणस्सइकाइयअपज्जत्तयाण पत्तेयसरीरवादरवणस्सइकाइयअपज्जत्तयाणं वादरनिगोदा अपज्जत्तयाण वादरतसकाइया अपज्जत्तगाणय कयरे कयरेहितो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वादरतसकाइया अपज्जत्तगा । वादरतेउकाइया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा , पत्तेयसरीरवादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा ३ । वादरनिगोदा अपज्जत्तया असखेज्जगुणा । वादरपुढविकाइया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा । वादरआउकाइया अपज्जत्तगा असखे० ६ । वादरवाउकाइया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा , सुज्ञमतेउकाइया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा। सुज्ञमपुढविकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया ९ सुज्ञमआउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया १० । सुज्ञमवाउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया , सुज्ञम निगोदा अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा , वादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा अणतगुणा , वादरा अपज्जत्तगा

वनस्पतिकायिकानामपर्याप्तवादरनिगोदाना मपर्याप्तवादरत्रसकायिकानाञ्च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका अपर्याप्तवादरत्रसकायिका १ । अपर्याप्तवादरतेजस्कायिका असख्येयगुणा २ । अपर्याप्तप्रत्येकशरीरवादरवनस्पतिकायिका असख्यगुणा ३ । अपर्याप्तवादरनिगादा असख्यगुणा ४ । अपर्याप्तवादरपृथिवीकायिका असख्यगुणा ५ । अपर्याप्तवादराप्कायिका असख्यगुणा ६ । वादरवायुकायिका अपर्याप्तका असख्यगुणा अपर्याप्तसूक्ष्मतेजस्कायिका असख्यगुणा अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिका विशेषाधिका ९ । अपर्याप्तसूक्ष्माप्कायिका विशेषाधिका १० । अपर्याप्तसूक्ष्मवायुकायिका विशेषाधिका ११ । अपर्याप्तसूक्ष्मनिगोदा असख्यगुणा अपर्याप्तवादरवनस्पतिकायिका अनन्तगुणा वादरा अपर्या०का विशेषाधिका अपर्या०सूक्ष्मवनस्पतिकायिका असख्यगुणा अपर्या०का सूक्ष्मा विशेषाधिका २ । एतेपा भदन्त ! सूक्ष्मपर्या०काना

स्सइकाइयाणं बादरनिगोदाणं बादरतसकाइयाणय कयरे कयरेहिंतो अप्पांवा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरतसकाइया १ । बादरतेउकाइया असखेज्जगुणा पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया असंखेज्जगुणा । बादरनिगोदा असंखिज्जगुणा । बादरपुढविकाइया असंखेज्जगुणा ५ । बादरआउकाइया असंखेज्जगुणा बादरवाउकाइया असखेज्जगुणा । सुहुमतेउकाइया असंखेज्जगुणा । सुहुमपुढविकाइया विसेसाहिया । सुहुमआउकाइया विसेसाहिया । सुहुमवाउकाइया विसेसाहिया । सुहुमनिगोदा असखेज्जगुणा । बादरवणस्सइकाइया अणतगुणा बादरा विसेसाहिया । सुहुमवणस्सइकाइया असंखेज्जगुणा १५ । सुहुमाविसेसाहिया १ । एएसिणं भंते ! सुहुमअपजत्ताण सुहुमपुढविकाइयाणं अपज्जत्तगाणं सुहुम आउकाइया अपज्जत्तयाणं सुहुमतेउकाइयाणं अपज्जत्तयाणं सुहुमवाउकाया अपज्जत्तयाण सुहुमवण स्सइकाइयाण अपज्जत्तयाणं सुहुमनिगोदा अपज्जत्तयाण बादरा अपज्जत्तयाणं बादरपुढविकाइया अप

रपृथिवीकायिका असख्यगुणा ५ । बादराप्कायिका असख्यगुणा ६ । बादरवायुकायिका असंख्यगुणा ७ । सूक्ष्मतेजःकायिका असख्यगुणा ८ । सूक्ष्मपृथिवीकायिका विशेषाधिका ९ । सूक्ष्माप्कायिका विशेषाधिका १० । सूक्ष्मवायुकायिका विशेषाधिका ११ । सूक्ष्मनिगोदा असख्यगुणा १२ । बादरवनस्पतिकायिका अनन्तगुणाः १३ । बादरा विशेषाधिका १४ । सूक्ष्मवनस्पतिकायिका असख्यगुणा १५ । सूक्ष्मा विशेषाधिका १६ । एतेषां भदन्त । सूक्ष्मापर्याप्तकाना सूक्ष्मपृथिवीकायिकाना अपर्याप्तकाना सूक्ष्माप्कायिकानामपर्याप्ताना सूक्ष्मतेजस्कायिकानामपर्याप्ताना सूक्ष्मवायुकायिकानामपर्याप्ताना सूक्ष्मवनस्पतिकायिकानामपर्याप्ताना सूक्ष्मनिगोदानामपर्याप्ताना बादरापर्याप्तकानामपर्या० बादरपृथिवीकायिकानामपर्याप्तबादराप्कायिकानां बादरतेजस्कायिकानामपर्याप्तकानामपर्याप्तबादरवायुकायिकानामपर्याप्तबादरवनस्पतिकायिकानामपर्याप्तप्रत्येकशरीर बादर

ज्जत्तयाण बादरआउकाइयअपज्जत्तयाणं बादरतेउकाइयाअपज्जत्तयाण बादरवाउकाइयअपज्जत्तयाणं बादरवणस्सइकाइयअपज्जत्तयाण पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइयअपज्जत्तयाण बादरनिगोदा अपज्जत्तयाण बादरतसकाइया अपज्जत्तगाणय कयरे कयरेहितो अप्पावा४ ? गोयमा । सव्वत्थोवा बादरतसकाइया अपज्जत्तगा । बादरतेउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा ३ । बादरनिगोदा अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा । बादरपुढविकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । बादरआउकाइया अपज्जत्तगा असंखे० ६ । बादरवाउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, सुहुमतेउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा। सुहुमपुढविकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया ९ सुहुमआउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया १० । सुहुमवाउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुम निगोदा अपज्जत्तगा असंखज्जगुणा, बादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा अणंतगुणा, बादरा अपज्जत्तगा

वनस्पतिकायिकानामपर्याप्तबादरनिगोदानां अपर्याप्तबादरत्रसकायिकानाञ्च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोका अपर्याप्तबादरत्रसकायिका १ । अपर्याप्तबादरतेजस्कायिका असंख्येयगुणा २ । अपर्याप्तप्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका असंख्यगुणा ३ । अपर्याप्तबादरनिगोदा असंख्यगुणा ४ । अपर्याप्तबादरपृथिवीकायिका असंख्यगुणा ५ । अपर्याप्तबादराप्कायिका असंख्यगुणा ६ । बादरवायुकायिका अपर्याप्तका असंख्यगुणा अपर्याप्तसूक्ष्मतेजस्कायिका असंख्यगुणा अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिका विशेषाधिका ९ । अपर्याप्तसूक्ष्माप्कायिका विशेषाधिका १० । अपर्याप्तसूक्ष्मवायुकायिका विशेषाधिका ११ । अपर्याप्तसूक्ष्मनिगोदा असंख्यगुणा अपर्याप्तबादरवनस्पतिकायिका अनन्तगुणा बादरा अपर्या०का विशेषाधिका अपर्या०सूक्ष्मवनस्पतिकायिका असंख्यगुणा अपर्या०का सूक्ष्मा विशेषाधिका २ । एतेषां भदन्त । सूक्ष्मपर्या०काना

विसेसाहिया, सुहुमवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा, सुहुमा अपज्जत्तगा विसेसाहिया २। एएसिण भंते। सुहुमपज्जत्तयाणं सुहुमपुढविकाइयपज्जत्तगाण सुहुमआउकाइयपज्जत्तगाणं सुहुमतेउकाइयपज्जत्तयाण सुहुमवाउकाइयपज्जत्तयाणं सुहुमवणस्सइकाइयपज्जत्तयाण सुहुमनिगोयपज्जत्तयाणं बादरपज्जत्तगाण बादरपुढविकाइयपज्जत्तयाणं बादरआउकाइयपज्जत्तयाण बादरतेउकाइयपज्जत्तयाणं बादरवाउकाइयपज्जत्तयाण बादरवणस्सइकाइयपज्जत्तयाणं पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइयपज्जत्तयाणं बादरनिगोदपज्जत्तयाण बादरतसकाइयपज्जत्तयाणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४? गोयमा! सव्वत्थोवा बादरतेउकाइया पज्जत्तगा। बादरतसकाइया पज्जत्तया असंखिज्जगुणा। पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा। बादरनिगोदा पज्जत्तया असंखेज्जगुणा, बादरपुढविकाइया पज्जत्तया असं० बादरआउकाइया पज्जत्तया असंखेज्जगुणा, बादरवाउकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा। सुहुमतेउकाइ

सूक्ष्मपृथिवीकायिकपर्या०काना पर्या०सूक्ष्माप्कायिकाना पर्या०सूक्ष्मतेजस्कायिकाना पर्या०सूक्ष्मवायुकायिकाना पर्या०सूक्ष्मवनस्पतिकायिकानां पर्या०सूक्ष्मनिगोदाना बादरपर्या०काना पर्या०बादरपृथिवीकायिकाना पर्या०बादराप्कायिकाना पर्या०बादरतेजस्कायिकाना पर्या०बादरवायुकायिकाना पर्या०बादरवनस्पतिकायिकाना पर्या०प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिकाना पर्या०बादरनिगोदाना पर्या०बादरत्रसकायिकाना च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४? गौतम। सर्वस्तोका पर्या०बादरतेजस्कायिका पर्या०बादरत्रसकायिका असंख्यगुणाः पर्या०प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका असंख्यगुणा पर्या०बादरनिगोदा असंख्यगुणा पर्या०बादरपृथिवीकायिका असंख्यगुणा पर्या०बादराप्कायिका असंख्यगुणा पर्या०बादरवायुकायिका असंख्यगुणा पर्या०सूक्ष्मतेजस्कायिका असंख्यगुणा पर्या०सूक्ष्मपृथिवीकायिका विशेषाधिका पर्या०सूक्ष्माप्कायिका विशेषाधिका पर्या०सूक्ष्म

या पज्जत्तया असंखेज्जगुणा, सुहुमपुढविकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमआउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया। सुहुमनिगोदा पज्जत्तया असंखेज्जगुणा, वादरवणस्सइकाइया पज्जत्तया अणंतगुणा, वादरपज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमवणस्सइकाइया पज्जत्तगा असंखगुणा । सुहुमपज्जत्तया विसेसाहिया ३ । एएसिण भंते ! सुहुमाणबादराणय पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा। सव्वत्थोवा वादरा पज्जत्तया, वादरा अपज्जत्तगा असंखगुणा सुहुमा अपज्जत्तगा असंखगुणा, सुहुमा पज्जत्तगा संखगुणा । एएसिण भंते ! सुहुमपुढविकाइयाणय वादरपुढविकाइयाणय पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वादरपुढविकाइया पज्जत्तया वादरपुढविकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा, सुहुमपुढविकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, सुहुमपुढविकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा । एएसिण भंते ! सुहुमआउकाइयाण वादरआउ

वायुकायिका विशेषाधिका पर्या०सूक्ष्मनिगोदा असंख्यगुणा पर्या०वादरवनस्पतिकायिका अनन्तगुणा पर्याप्ता वादरा विशेषाधिका पर्या०सूक्ष्मवनस्पतिकायिका असंख्यगुणा सूक्ष्मा पर्या०का विशेषाधिका ३। एतेषा भदन्त । सूक्ष्माणा बादराणाञ्च पर्याप्तापर्याप्ताना कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोका वादरा पर्या०का अपर्या०का वादरा असंख्यगुणा सूक्ष्मा अपर्या०का असंख्यगुणा सूक्ष्मा पर्या०का संख्यगुणा । एतेषा भदन्त । सूक्ष्मपृथिवीकायिकाना बादरपृथिवीकायिकाना पर्या०पर्या०ना कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोका पर्याप्तवादरपृथिवीकायिका अपर्या०वादरपृथिवीकायिका असंख्यगुणा अपर्या०सूक्ष्मपृथिवीकायिका असंख्यगुणा पर्या०सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः संख्यगुणा । एतेषा भदन्त । सूक्ष्माप्कायिकानां बादराप्कायिकाना पर्या०पर्या०ना कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोका पर्या०वादराप्का

काइयाणं पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वादरआउकाइया पज्जत्तया वादरआउकाइय अपज्जत्तया असखगुणा, सुज्झमआउकाइया अपज्जत्तया असखगुणा, सुज्झमआउकाइया पज्जत्तगा सखगुणा । एएसिण भंते ! सुज्झमतेउकाइयाण वादरतेउकाइयाणय पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वादरतेउकाइया पज्जत्तया, वादरतेउकाइया अपज्जत्तया असखेज्जगुणा, सुज्झमतेउकाइया अपज्जत्तया असखगुणा, सुज्झमतेउकाइया पज्जत्तगा सखेज्जगुणा । एएसिण भंत ! सुज्झमवाउकाइयाणं वादरवाउकाइयाणय पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वादरवाउकाइया पज्जत्तया वादरवाउकाइया अपज्जत्तया असंखगुणा । सुज्झमवाउकाइया अपज्जत्तया असखे० । सुज्झमवाउकाइया पज्जत्तया असखगुणा । एएसिण भंते ! सुज्झमवणस्सइकाइयाण वादरवणस्सइकाइयाणय पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा !

यिका अपर्या०वादराप्कायिका असख्यगुणा अपर्या०सूक्ष्माप्कायिका असख्यगुणा पर्या०सूक्ष्माप्कायिका सख्यगुणा । एतेषा भदन्त । सूक्ष्मतेजस्कायिकाना वादरतेजस्कायिकाना पर्या०पर्या०ना कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोका पर्या०वादरतेजस्कायिका अपर्या०वादरतेजस्कायिका असख्यगुणा अपर्या०सूक्ष्मतेजस्कायिका असख्यगुणा पर्या०सूक्ष्मतेजस्कायिका सख्यगुणा । एतेषा भदन्त । सूक्ष्मवायुकायिकाना वादरवायुकायिकाना च पर्या०प० कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोका पर्या०वादरवायुकायिका अपर्या०वादरवायुकायिका असंख्यगुणा अपर्या०सूक्ष्मवायुकायिका असख्येयगुणा पर्या०सूक्ष्मवायुकायिका असख्येयगुणा । एतेषां भदन्त । सूक्ष्मवनस्पतिकायिकाना वादरवनस्पतिकायिकाना पर्या०पर्या०ना कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ? गौतम । सर्वस्तोका पर्या०वादरवनस्पतिकायिका अपर्या०वादरवनस्पतिकायिका असख्येयगुणा

सव्वत्थोवा बादरवणस्सइकाइया पज्जत्तया, बादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तया असंखिज्जगुणा, सुहुम वणस्सइकाइया अपज्जत्तया असंखिज्जगुणा। सुहुमवणस्सइकाइया पज्जत्तया संखिज्जगुणा। एएसिण भंते! सुहुमनिगोदाण बादरनिगोदाणय पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४? गोयमा! सव्वत्थोवा बादरनिगोदा पज्जत्तया, बादरनिगोदा अपज्जत्तया असंखे०, सुहुमनिगोदा अपज्जत्तया असंखिज्जगुणा, सुहुमनिगोदा पज्जत्तया संखेज्जगुणा ४। एएसिण भंते! सुहुमाणं सुहुमपुढविकाइयाणं सुहुमआउकाइयाण सुहुमतेउकाइयाण सुहुमवाउकाइयाण सुहुमवणस्सइकाइयाण सुहुमनिगोदाण बादराण बादर पुढविकाइयाण बादरआउकाइयाण बादरतेउकाइयाण बादरवाउकाइयाण बादरवणस्सइकाइयाण पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइयाण बादरनिगोदाण बादरतस्सकाइयाण पज्जत्ता२ ण कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा४? गोयमा! सव्वत्थोवा बादरतेउकाइया पज्जत्तया १। बादरतसकाइया पज्जत्तया असंखगुणा २

अपर्या०सूक्ष्मवनस्पतिकायिका असंख्यगुणा पर्या०सूक्ष्मवनस्पतिकायिका संख्येयगुणा। एतेषां भदन्त! सूक्ष्मनिगोदानां बादरनिगोदानां पर्याप्तापर्याप्तानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४? गौतम! सर्वस्तोका पर्या०का बादरनिगोदा अपर्याप्तबादरनिगोदा असंख्यगुणा अपर्याप्तसूक्ष्मनिगोदा असंख्यगुणा पर्याप्तसूक्ष्मनिगोदा संख्यगुणा। एतेषां भदन्त! सूक्ष्माणां सूक्ष्मपृथिवीकायिकानां सूक्ष्माप्कायानां सूक्ष्मतेजस्कायिकानां सूक्ष्मवनस्पतिकायिकानां सूक्ष्मवायुकायिकानां सूक्ष्मनिगोदानां बादराणां बादरपृथिवीकायिकानां बादराप्कायिकानां बादरतेजस्कायिकानां बादरवायुकायिकानां बादरवनस्पतिकायिकानां प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिकानां बादरनिगोदानां बादरत्रसकायिकानां पर्याप्तापर्याप्तानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४? गौतम! सर्वस्तोका बादरतेजस्कायिका पर्याप्तका १। पर्याप्तबादरत्रसकायिका असंख्येयगुणा २। अपर्याप्तबादरत्रसकायिका

वादरतसकाइया ऋपज्जत्तया ऋसंखिज्जगुणा ३ । पत्तेयसरीबादरवणस्सइकाइया पज्जत्तया ऋसंखिज्ज गुणा ४ । वादरनिगोदा पज्जत्तया ऋसखिज्जगुणा ५ । बायरपुढविकाइया पज्जत्तया ऋसखेज्जगेणा ६ । वादरऋाउकाइया पज्जत्तगा ऋसखिज्जगुणा ७ । बादरवाउकाइया पज्जत्तगा ऋसंखेज्जगुणा ८ । बादरतेउ काइया ऋपज्जत्तया ऋसखिज्जगुणा ९ । पत्तेयसरीवादरवणस्सइकाइया ऋपज्जत्तया ऋसखेज्ज० १० । वादनिगोदा ऋपज्जत्तया ऋसखे० ११ । वादरवाउकाइया ऋपज्जत्ता ऋसंखे० १२ । वादरऋाउकाइया ऋपज्जत्तया ऋसखे० १३ । वादरवाउकाइया ऋपज्जत्ता ऋसखे० १४ । सुज्ञमतेउकाइया ऋपज्जत्तया ऋसखेज्जगुणा १५ । सुज्ञमपुढविकाइया ऋपज्जत्तगा विसेसाहिया १६ । सुज्ञमऋाउकाइया ऋपज्जत्तगा विसेसाहिया १७ । सुज्ञमवाउकाइया ऋपज्जत्तया विसेसाहिया १८ । सुज्ञमतेउकाइया पज्जत्तया सखि०१९ । सुज्ञमपुढविकाइया पज्जत्तया विसेसाहिया २० । सुहुमऋाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया २१ सुज्ञमवाउकाइया पज्जत्तया विसेसाहिया २२ । सुज्ञमनिगोदा ऋपज्जत्तया ऋसखे० २३ । सुहुमनिगो

असंख्येयगुणा ३ । पर्याप्तप्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका असंख्यगुणा ४ । पर्याप्तबादरनिगोदा असंख्यगुणा. ५ । पर्याप्तबादरपृथिवीकायिका असंख्येयगुणा ६ । पर्याप्तबादराप्कायिका असंख्येयगुणा ७ । पर्याप्तबादरवायुकायिका असंख्यगुणा. ८ । अपर्याप्तबादरतेजस्कायिका असंख्यगुणा ९ । अपर्याप्तप्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका असंख्यगुणा १० । अपर्याप्तबादरनिगोदा असंख्यगुणा ११ । अपर्याप्तबादरपृथिवीकायिका असंख्येयगुणा १२ । अपर्याप्तबादराप्कायिका असंख्यगुणा १३ । अपर्याप्तबादरवायुकायिका असंख्यगुणा १४ । अपर्याप्तसूक्ष्मतेजस्कायिका असंख्यगुणा १५ । अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिका विशेषाधिका १६ । अपर्याप्तसूक्ष्माप्कायिका विशेषाधिका १७ । अपर्याप्तसूक्ष्मवायुकायिका -विशेषाधि

दा पज्जत्तया संखि० २४ । बादरवणस्सइकाइया पज्जत्तया अणंतगुणा २५ । बादरपज्जत्ता विसेसाहिया २६ बादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा २७ । बादरअपज्जत्तया विसेसाहिया २८ । बादरा विसेसाहिया २९ । सुहुमवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखि० ३० । सुहुमअपज्जत्तगा विसेसाहिया ३१ सुहुमवणस्सइकाइया पज्जत्तगा संखे० ३२ । सुहुमपज्जत्तगा विसेसाहिया ३३ । सुहुमा विसेसाहिया ३४ दार ४ । एएसिण भंते ! जीवाण सजोगीण मणजोगीण वयजोगीण कायजोगीण अजोगीणय कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा मणजोगी वयजोगी अ संखेज्जगुणा अजोगीअणंतगुणा कायजोगी अणंतगुणा सजोगी विसेसाहिया, दार ५ । एएसिण भंते ! जीवाण सवेदगाण इत्थीवेदगाण पुरिसवेदगाण नपुंसगवेदगाण अवेदगाणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४

का १८ । पर्याप्तसूक्ष्मतेजस्कायिका संख्येयगुणा १९ । पर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिका विशेषाधिका २० । पर्याप्तसूक्ष्माप्कायिका विशेषाधिका २१ पर्याप्तसूक्ष्मवायुकायिका विशेषाधिका. २२ । अपर्याप्तसूक्ष्मनिगोदा असंख्यगुणा २३ । पर्याप्तसूक्ष्मनिगोदा संख्यगुणा २४ । पर्याप्तबादरवनस्पति कायिका अनन्तगुणा २५ । पर्याप्ता बादरा विशेषाधिका २६ । अपर्याप्तबादरवनस्पतिकायिका असंख्यगुणा २७ । अपर्याप्ता बादरा विशेषाधि का २८ । बादरा विशेषाधिका २९ । अपर्याप्तसूक्ष्मवनस्पतिकायिका असंख्यगुणा. ३० । सूक्ष्मा अपर्याप्ता विशेषाधिका ३१ । पर्याप्ता सूक्ष्मवन स्पतिकायिका संख्यगुणा ३२ । पर्याप्ता सूक्ष्मा विशेषाधिका ३३ । सूक्ष्मा विशेषाधिका ३४ द्वारम् । ४ । एतेषां भदन्त ! जीवाना सयोगिना मनोयोगिना वाग्योगिना काययोगिना अयोगिना च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका जीवा मनोयोगिनो वाग्योगिनोऽसंख्येय गुणा अयोगिनोऽनन्तगुणा काययोगिनो नन्तगुणा सयोगिनो विशेषाधिका । द्वारम् । ५ । एतेषां भदन्त ! जीवाना सवेदकाना स्त्रीवेदकाना

? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा पुरिसवेदगा इत्थीवेदगा संखेज्जगुणा, अवेदगा अणंतगुणा नपुंसगवेदगा अणंतगुणा सवेयगा विसेसाहिया, दार ६। एएसिण भंते ! जीवाण सकसाईण कोहकसाईणं माणकसाईण मायाकसाईण लोभकसाईण अकसाईणय कयरे कयरेहितो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा अकसाई माणकसाई अणंतगुणा, कोहकसाई विसेसाहिया, मायाकसाई विसेसाहिया, लोभकसाई विसेसाहिया, सकसाई विसेसाहिया, दार ७। एएसिण भंते ! जीवाण सलेसाण किण्हलेसाण नीललेसाण काउलेसाण तेउलेसाण पम्हलेसाण सुक्कलेसाण अलेसाणय कयरे कयरेहितो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा सुक्कलेसा पम्हलेसा सखिज्जगुणा तेउलेसा सखिज्ज० अलेसा अणतगुणा काउलेसा अणतगुणा नीललेसा विसेसाहिया कण्हलेसा विसेसाहिया, दार ८। एएसिण भंते ! जीवाण सम्मदिठीण मिच्छादिठीणं

पुरुषवेदकाना नपुंसकवेदकानामवेदकाना च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका जीवा पुरुषवेदका स्त्रीवेदका सख्यगुणा अवेदका अनन्तगुणा नपुंसकवेदका अनन्तगुणा, सवेदका विशेषाधिका द्वार ६। एतेषां भदन्त ! जीवाना सकषायिना क्रोधकषायिना मानकषायिना मायाकषायिना लोभकषायिना अकषायिना च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका जीवा अकषायिनो मानकषायिनो नन्तगुणा क्रोधकषायिनो विशेषाधिका मायाकषायिनो विशेषाधिका लोभकषायिनो विशेषाधिका सकषायिनो विशेषाधिका द्वारम् । ७ । एतेषां भदन्त ! जीवाना सलेश्याना कृष्णलेश्याना नीललेश्याना कापोतलेश्याना तेजोलेश्याना पद्मलेश्याना शुक्ललेश्याना अलेश्याना च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोका जीवा शुक्ललेश्या पद्मलेश्या सख्यगुणा स्तेजोलेश्या सख्यगुणा अलेश्या अनन्तगुणा कापोतलेश्या अनन्तगुणा नीललेश्या विशेषाधिका कृष्णलेश्या विशेषाधिका । द्वारम् । ८ । एतेषां भदन्त । सम्यग्दृष्टिना मिथ्यादृष्टिना सम्यग्मिथ्यादृष्टिना च कतरे कतरे

सम्मामिच्छदिठीण च कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा सम्मामिच्छदिठी, सम्म दिठी अणंतगुणा मिच्छदिठीअणंतगुणा, दार ९ । एएसिण भंते ! जीवाण आभिणिबोहियणाणीण सुयणाणीण उहिणाणीण मणपज्जवनाणीण केवलनाणीणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्व त्थोवा मणपज्जवनाणी उहिनाणी असं० आभिणिबोहियनाणी सुयनाणी दोवि तुल्ला विसेसाहिया केव लनाणी अण० । एएसिण भंते ! जीवाणं मइअन्नाणीण सुयअन्नाणीण विभंगनाणीणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा विभंगनाणी मइअन्नाणी सुयअन्नाणी दोवि तुल्ला अणंतगुणा । एएसिण भंते ! जीवाण आभिणिबोहियनाणीण सुयनाणीण उहिनाणीण मणपज्जवनाणीण केवलनाणी ण मतिअन्नाणीण सुयअन्नाणीण विभंगनाणीणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा

भ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोका जीवा सम्यग्मिथ्यादृष्टिन सम्यग्दृष्टिनोनन्तगुणा मिथ्यादृष्टिनोनन्तगुणा , द्वारम् । ६ । एतेषां भदन्त ! जीवानामाभिनिबोधिकज्ञानिना श्रुतज्ञानिनामवधिज्ञानिना मनःपर्यवज्ञानिना केवलज्ञानिना च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोका मन पर्यवज्ञानिनो ऽवधिज्ञानिनोऽसंख्यगुणा आभिनिबोधिकज्ञानिन श्रुतज्ञानिनश्च द्वावपि तुल्यौ विशेषाधिकौ केवलज्ञानिनोऽनन्तगुणा । एते षां भदन्त ! मत्यज्ञानिना जीवाना श्रुताज्ञानिना विभङ्गज्ञानिना च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोका जीवा विभङ्गज्ञानिनो मत्य ज्ञानिन श्रुताज्ञानिनश्च द्वावपि तुल्यौ अनन्तगुणौ । एतेषां भदन्त ! जीवाना आभिनिबोधिकज्ञानिना श्रुतज्ञानिनामवधिज्ञानिना मन पर्यवज्ञा निना केवलज्ञानिना मत्यज्ञानिना श्रुताज्ञानिना विभङ्गज्ञानिनाञ्च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोका जीवा मन पर्यवज्ञानिनोऽव धिज्ञानिनोऽसंख्यगुणा आभिनिबोधिकज्ञानिन श्रुतज्ञानिनश्च द्वौ अपि तुल्यौ विशेषाधिकौ, विभङ्गज्ञानिनो ऽसंख्येयगुणा केवलज्ञानिनोऽनन्त

जीवा मणपज्जवनाणी उहिनाणी असंखिज्जगुणा, आभिणिबोहियनाणी सुयनाणीय दोवि तुल्ला विसेसाहिया विभंगनाणी असखेज्ज० केवलनाणी अणतगुणा मइअन्नाणी सुयअन्नाणीय दोवि तुल्ला विसेसाहिया, विभंगनाणी असखेज्ज०, केवलनाणी अणतगुणा मइअन्नाणी सुयअन्नाणीय दोवि तुल्ला अणतगुणा, दार १० । एएसिण भंते । जीवाण चक्खुदसणीणं अचक्खुदसणीणं उहिदंसणीणं केवलदसणीणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ?गोयमा। सव्वत्थोवा जीवा उहिदसणी चक्खुदसणी असंखेज्जगुणा, केवलदंसणी अणतगुणा अचक्खुदसणी अणंतगुणा, दार ११ । एएसिण भंते ! जीवाणं सजयाणं असंजयाणं संजयासजयाण नोसजयाण नोअसजयाण नोसजया२ णय कयरे२ हिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा सजयासजया असजया असखेज्जगुणा, नोसजता नोअसजता नोसजतासजता अणतगुणा, असजता अणतगुणा, दार १२ । एएसिण भंते ! जीवाण सागारोवउत्ताणं अणागारोवउत्ताणय कयरे २ हिंतो

गुणा मत्यज्ञानिनं श्रुताज्ञानिनो द्वावपि तुल्यावनन्तगुणौ । द्वारम् । १० । एतेषा भदन्त । जीवाना चक्षुर्दर्शनिनामचक्षुर्दर्शनिनामवधिदर्शनिनां केवलदर्शनिना च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोका जीवा अवधिदर्शनिनश्चक्षुर्दर्शनिनोऽसख्यगुणा केवलदर्शनिनोऽनन्तगुणा अचक्षुर्दर्शनिनोऽनन्तगुणा । द्वारम् । ११ । एतेषा भदन्त । जीवाना सयताना असयताना सयतासयताना नोसयताना नोअसयताना नोसयतासयताना च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोका जीवा सयतासयता असख्यगुणा., नो सयता नो असयता नो संयतासयता अनन्तगुणा , असयता अनन्तगुणा । द्वारम् । १२ । एतेषा भदन्त । जीवाना साकारोपयोगयुक्तानामनाकारोपयोगयुक्ताना च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका जीवा अनाकारोपयोगयुक्ता साकारोपयोगयुक्ता सख्येयगुणा । द्वारम् । १३ । एतेषां भदन्त । जीवानामाहार

अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा अणागारोवउत्ता सागारोवउत्ता संखिज्जगुणा, दारं १३ । एए सिणं भंते । जीवाणं आहारगाणं अणाहारगाणय कयरे२ हिंतो अप्पावा४ ? गोयमा । सव्वत्थोवा जीवा अणाहारगा आहारगा असंखिज्जगुणा, दार १४ । एएसिणं भंते ! जीवाणं भासगाणं अभासगाणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा भासगा अभासगा अणंतगुणा, दारं १५ । एएसिणं भंते ! जीवाणं परित्ताणं अपरित्ताणं नोपरित्ता नोअपरित्ताणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा परित्ता नोपरित्ता नोअपरित्ता अणंतगुणा अपरित्ता अणंतगुणा, दार १६ । एएसिणं भंते ! जीवाणं पज्जत्ताणं अपज्जत्ताणं नोपज्जत्ता नोअपज्जत्ताणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा नोपज्जत्तगानोअपज्जत्तगा अपज्जत्तगा अणंतगुणा पज्जत्तगा संखेज्जगुणा । एएसिणं भंते ! सुहुमाणं बादराणं नोसुहुमाणं नोबादराणय कयरे२

कानामनाहारकाना च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका जीवा अनाहारका आहारका असंख्यगुणाः । द्वारम् । १४ । एतेषां भदन्त । जीवाना भाषकानामभाषकाना च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा तुल्या वा विशेषाधिका वा ? गौतम । सर्वस्तोका जीवा भाषका अभाषका अनन्तगुणा । द्वारम् । १५ । एतेषां भदन्त । जीवाना परीतानामपरीताना नो परीताना नो अपरीताना च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ? गौतम ! सर्वस्तोका जीवा परीता नोपरीता नो अपरीता अनन्तगुणा अपरीता अनन्तगुणा । द्वारम् । १६ । एतेषां भदन्त । जीवाना पर्याप्तानामपर्याप्ताना नोपर्याप्ताना नोअपर्याप्ताना च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोका जीवा नोपर्याप्तका नो अपर्याप्तका अपर्याप्तका अनन्तगुणा पर्याप्तका सङ्ख्यगुणा० । एतेषां भदन्त । सूक्ष्माणां बादराणां नोसूक्ष्माणां नो बादराणां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोका जीवा

हितो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा नोसुहुमा नोबादरा, बादरा अणंतगुणा सुहुमा असंखेज्जगुणा, दार १८। एएसिणं भंते ! जीवाणं सन्नीण असन्नीणं नोसन्नीणंनोअसन्नीणय कयरे कयरे हितो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सन्नी नोसन्नी नोअसन्नी अणतगुणा, असन्नी अणतगुणा। दार १९। एएसिणं भंते ! जीवाण भवसिद्धियाण अभवसिद्धियाणं नोभवसिद्धियनोअभवसिद्धियाणय कयरे कयरेहितो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा अभवसिद्धिया नोभवसिद्धिया, नोअभवसिद्धिया अणतगुणा भवसिद्धिया अणतगुणा, दार २०। एएसिणं भंते ! धम्मत्थिकायअधम्मत्थिकायआगासत्थिकाय जीवत्थिकाय पुग्गलत्थिकाय अद्धासमयाण दव्वठयाए कयरे कयरेहितो अप्पावा४ ? गोयमा ! धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए आगासत्थिकाए एए तिन्निवि तुल्ला दव्वठयाए सव्वत्थोवा जीवत्थिकाए दव्व

नो सूक्ष्मा नो बादरा, बादरा अनन्तगुणा सूक्ष्मा असंख्यगुणा। द्वारम्। १८। एतेषां भदन्त ! जीवानां संज्ञिनां असंज्ञिनां नो संज्ञिनां नो असंज्ञिनाञ्च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ? गौतम ! सर्वस्तोका संज्ञिनो नोसंज्ञिनो नो असंज्ञिनो नन्तगुणा, असंज्ञिनोऽनन्तगुणाः। द्वारम्। १९। एतेषां भदन्त ! जीवानां भवसिद्धिकानामभवसिद्धिकानां नो भवसिद्धिकनोअभवसिद्धिकानां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम। सर्वस्तोका अभवसिद्धिका नोभवसिद्धिका नो अभवसिद्धिका अनन्तगुणा भवसिद्धिका अनन्तगुणा। द्वारम् २०। एतेषां भदन्त ! धर्मास्तिकायाधर्मास्तिकायाकाशास्तिकायजीवास्तिकायपुद्गलास्तिकायाद्धासमयानां द्रव्यार्थतया कतरे कतरेभ्यो ऽल्पा वा ४ ? गौतम। धर्मास्तिकायोऽधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय एते त्रय स्तुल्या द्रव्यार्थतया सर्वस्तोका, जीवास्तिकायो द्रव्यार्थतयानन्तगुणः पुद्गलास्तिकायोद्रव्यार्थतयाऽनन्तगुणोऽद्धासमयो द्रव्यार्थतयाऽनन्तगुण.। एतेषां भदन्त। धर्मास्तिकायाधर्मास्तिकायाकाशास्तिकायजीवास्तिकायपुद्गलास्तिकायाद्धासमयानां प्रदेशार्थतया कतरे कतरेभ्यो

ठयाए अणन्तगुणेपुग्गलत्थिकाए दवठयाए अणंतगुणे अद्धासमए दवठयाए अणंतगुणे । एएसिणं नंते ! धम्मत्थिकायअधम्मत्थिकायआगासत्थिकायजीवत्थिकायपोग्गलत्थिकायअद्धासमयाण पदेसठयाए कयरे कयरेहितो अप्पावा४ ? गोयमा । धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए एएसिण दोवि तुल्ला पदेसठयाए सव्व त्थोवा जीवत्थिकाए पदेसठयाए अणतगुणे पोग्गलत्थिकाए पदेसठयाए अणतगुणे अद्धासमए पदेसठ याए अणतगुणा आगासत्थिकाए पदेसठाए अणतगुणा । एएसिण नंते ! धम्मत्थिकायस्स दवठयाए पदे सठयाए कयरे कयरेहितो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सवत्थोवा एगे धम्म त्थिकाए दवठयाए सोचेव पदेसठयाए असंखिज्जगुणा । एएसिण नंते ! अधम्मत्थिकायस्स दवठयपदे सठयाए कयरे कयरेहितो अप्पावा४ ? गोयमा । सवत्थोवे एगे अधम्मत्थिकाए दवठयाए सोचेव पदे सठयाए असंखिज्जगुणे । एतस्सण नंते । आगासत्थिकायस्स दवठपदेसठयाए कयरे कयरेहितो अप्पावा४ ? गोयमा ! सवत्थोवे एगे आगासत्थिकाए दवठयाए सोचेव पदेसठयाए अनतगुणा , एतस्सण नंते !

ऽल्पा वा ? गौतम । धर्मास्तिकायाधर्मास्तिकायौ द्वावप्येतौ तुल्यौ प्रदेशार्थतया सर्वस्तोकौ जीवास्तिकाय प्रदेशार्थतयानन्तगुण पुद्गलास्तिकाय प्रदेशार्थतयाऽनन्तगुणो ऽद्धासमय प्रदेशार्थतयानन्तगुण आकाशास्तिकाय प्रदेशार्थतयानन्तगुण । अस्य भदन्त । धर्मास्तिकायस्य च द्रव्यार्थतया प्रदेशार्थतया कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोक एको धर्मास्तिकाय प्रदेशार्थतया स एवानन्तगुण । अस्य भदन्त । अधर्मास्तिकायस्य द्रव्यार्थतया प्रदेशार्थतया कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोक एकोऽधर्मास्तिकायो द्रव्यार्थतया सएव प्रदेशार्थतया ऽसंख्यगुण । एतस्य भदन्त । आकाशास्तिकायस्य द्रव्यार्थप्रदेशार्थतया कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोक एक आकाशास्तिकायो

जीवत्थिकायस्स दव्वठपदेसठयाए कयरे कयरेहितो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवे जीवत्थिकाए दव्वठयाए सोचेव पदेसठयाए असखिज्जगुणा, एनस्सणं नते ! पुग्गलत्थिकायस्स दव्वठपदेसठयाए कयरे २ हितो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पुग्गलत्थिकाए दव्वठयाए सोचेव पदेसठयाए असखिज्जगुणा अद्धासमए ण पुच्छिज्जइ पदसान्नावा । एएसिण नते । धम्मत्थिकाय अधम्मत्थिकाय आगासत्थिकाय जीवत्थिकाय पोग्गलत्थिकाय अद्धासमयाण दव्वठयाए पदेसठयाए कयरे कयरेहितो अप्पावा४ ? गोयमा ! धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए आगासत्थिकाएय एएण तिन्निवि तुल्ला, दव्वठयाए सव्वत्थोवा धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाएय एएण दोन्निवितुल्ला पदेसठयाए असखेज्जगुणा, जीवत्थिकाए दव्वठयाए अणतगुणे सोचेव पदेसठयाए असखिज्जगुणे पोग्गलत्थिकाए दव्वठयाए अणतगुणे सोचेव पएसठयाए असखेज्जगुणे

द्रव्यार्थतया सएव प्रदेशार्थतयाऽनन्तगुणा । एतस्य नदन्त । जीवास्तिकायस्य द्रव्यार्थप्रदेशार्थतया कतरे कतरेन्योऽल्पा वा ४ ? सर्वस्तोको जीवास्तिकाय एको द्रव्यार्थतया सएव प्रदेशार्थतया ऽसख्यगुणा । एतस्य भदन्त । पुद्गलास्तिकायस्य द्रव्यार्थप्रदेशार्थतया कतरे कतरेन्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोक पुद्गलास्तिकायो द्रव्यार्थतया सएव प्रदेशार्थतया ऽसख्यगुणा । अद्धासमयो नपृच्छयते प्रदेशाभावात् । एतेषा नदन्त । धर्मास्तिकायाधर्मास्तिकायकाशास्तिकायजीवास्तिकायपुद्गलास्तिकायाद्धासमयाना द्रव्यार्थतया प्रदेशार्थतया कतरे २ न्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! धर्मास्तिकायो ऽधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय एते त्रयस्तुल्या द्रव्यार्थतया सर्वस्तोका धर्मास्तिकायोधर्मास्तिकाय एतौ द्वावपि तुल्यौ प्रदेशार्थतया ऽसख्येयगुणौ, जीवास्तिकायो द्रव्यार्थतयानन्तगुणा स एव प्रदेशार्थतयाऽसख्यगुणा । पुद्गलास्तिकायो द्रव्यार्थतयाऽनन्तगुणा स एव प्रदेशार्थतया ऽसख्यगुणा । अद्धासमयो द्रव्यार्थप्रदेशार्थतयाऽनन्तगुणा । आकाशास्तिकाय प्रदेशार्थतयाऽनन्तगुणः । द्वारम् २१ । एतेषा नदन्त । जीवा

… पदेसठ्याए अणंतगुणे आगासात्थिकाए पदेसठ्याए अणतगुणा दार २१। एएसिण भंते।
जीवाण चरिमाण अचरिमाणय कयरे कयरेहितो अप्पावा४ ? गोयमा । सव्वत्थोवा जीवा अचरिमा च
रिमा अणतगुणा दार २२। एएसिण भंते। जीवाण पोग्गलाण अद्धासमयाण सव्वदव्वाण सव्वपएसाणं
सव्वपज्जवाणय कयरे कयरेहितो अप्पावा४ ? गोयमा । सव्वत्थोवा जीवा पोग्गला अणतगुणा अद्धास
मया अणतगुणा सव्वदव्वा विसेसाहिया सव्वपदेसा अणतगुणा सव्वपज्जवा अणतगुणा दार २३। खित्ता
णुवाएण सव्वत्थोवा जीवा उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोय तिरियलोए विसेसाहिया तिरियलोए असखि
ज्जगुणा तेलुक्के असखेज्जगुणा उड्ढलोए असखेज्जगुणा अहोलोए विसेसाहिया, खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा
नेरइया तेलुक्के अहोलोगतिरियलोगे असखेज्ज० अहोलोए असखेज्जगुणा। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा

ना चरमाणामचरमाणां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोका जीवा अचरमाश्चरमा अनन्तगुणा । द्वारम् २२। एतेषां भदन्त ! जीवानां पुद्गलानामद्धासमयानां सर्वद्रव्याणां सर्वप्रदेशानां सर्वपर्यवानां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोका जीवा पुद्गला अनन्तगुणा अद्धासमया अनन्तगुणा सर्वद्रव्याणि विशेषाधिकानि सर्वप्रदेशा अनन्तगुणा सर्वपर्यवा अनन्तगुणा । द्वारम् २३। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका जीवा ऊर्द्ध्वलोकतिर्यग्लोके अधोलोकतिर्यग्लोके विशेषाधिकास्तिर्यग्लोकेऽसंख्यगुणा त्रैलोक्येऽसंख्यगुणा ऊर्द्ध्वलोकेऽसंख्यगुणा अधोलोके विशेषाधिका क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका नैरयिकास्त्रैलोक्ये अधोलोकतिर्यग्लोके ऽसंख्यगुणा अधोलोके असंख्यगुणा । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोकास्तिर्यग्लोके अधोलोकतिर्यग्लोके विशेषाधिकास्तिर्यग्लोकेऽसंख्यगुणा त्रैलोक्ये ऽसंख्यगुणा ऊर्द्ध्वलोके असंख्यगुणा अधोलोके … पातेन सर्वस्तोकास्तिर्यग्योनिका ऊर्द्ध्वलोके ऊर्द्ध्वलोकतिर्यग्लोके असंख्यगुणा त्रैलोक्ये ऽसंख्यगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके सख्ये

सतव प्रदेशार्थतयाऽनन्तगुणा । एतस्य भावना । जीवास्तिकायस्य द्रव्यार्थप्रदेशार्थतया कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? सर्वस्तोको जीवा
द्रव्यार्थतया सएव प्रदेशार्थतयाऽसंख्यगुणा । एतस्य भावना । पुद्गलास्तिकायस्य द्रव्यार्थप्रदेशार्थतया कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ?
केः पुद्गलास्तिकायो द्रव्यार्थतया सएव प्रदेशार्थतयाऽसंख्यगुणाः । अद्धासमयो नपृच्छते प्रदेशाभावात् । एतेषां भावना । धर्मा
स्तिकायाकाशास्तिकायजीवास्तिकायपुद्गलास्तिकायाद्धासमयानां द्रव्यार्थतया प्रदेशार्थतया कतरे २ भ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । ध
र्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय एते त्रयस्तुल्याः द्रव्यार्थतया सर्वस्तोकाः धर्मास्तिकायोऽधर्मास्तिकाय एतौ द्वावपि तुल्यौ प्रदेशार्थ
जीवास्तिकायो द्रव्यार्थतयाऽनन्तगुणाः स एव प्रदेशार्थतयाऽसंख्यगुणाः । पुद्गलास्तिकायो द्रव्यार्थतयाऽनन्तगुणाः स एव प्रदेशा
अद्धासमयो द्रव्यार्थप्रदेशार्थतयाऽनन्तगुणाः । आकाशास्तिकायः प्रदेशार्थतयाऽनन्तगुणाः । द्वारम् २१ । एतेषां भावना । जीवा

॥ मूल ॥

पदेसठयाए अणंतगुणे आगासत्यिकाए पदेसठयाए अणंतगुणा दारं २१ । एएसिणं भंते !
अचरिमाणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा अचरिमा च
र २२ । एएसिणं भंते ! जीवाणं पोग्गलाणं अद्धासमयाणं सव्वदव्वाणं सव्वपएसाणं
कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा पोग्गला अणंतगुणा अद्धास
दव्वा विसेसाहिया सव्वपदेसा अणंतगुणा सव्वपज्जवा अणंतगुणा दारं २३ । खित्ता
वा उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोय तिरियलोए
गा

अद्धासमए दव्वट्ठपएसट्ठयाए अणंतगुणे आगासत्थिकाए पएसट्ठयाए अणंतगुणा दारं २१ । एएसि णं भंते ! जीवाणं चरिमाण अचरिमाणय कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा अचरिमा चरिमा अणंतगुणा दारं २२ । एएसि णं भंते ! जीवाणं पोग्गलाणं अद्धासमयाणं सव्वदव्वाणं सव्वपएसाणं सव्वपज्जवाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा पोग्गला अणंतगुणा अद्धासमया अणंतगुणा सव्वदव्वा विसेसाहिया सव्वपएसा अणंतगुणा सव्वपज्जवा अणंतगुणा दारं २३ । खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा जीवा उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया तिरियलोए असंखिज्जगुणा तेलुक्के असंखेज्जगुणा उड्ढलोए असंखेज्जगुणा अहोलोए विसेसाहिया, खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा नेरइया तेलुक्के अहोलोयतिरियलोए असंखेज्ज० अहोलोए असंखेज्जगुणा । खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा

समयानां च मध्ये कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका जीवा अचरमास्ततः चरमा अनन्तगुणाः । द्वारम् २२ । एतेषां भगवन् ! जीवपुद्गलाद्धासमयानां सर्वद्रव्याणां सर्वप्रदेशानां सर्वपर्यवाणां च मध्ये कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका जीवाः पुद्गला अनन्तगुणा अद्धासमया अनन्तगुणाः सर्वद्रव्याणि विशेषाधिकानि सर्वप्रदेशा अनन्तगुणाः सर्वपर्यवा अनन्तगुणाः । द्वारम् २३ । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका जीवा ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके अधोलोकतिर्यग्लोके विशेषाधिकास्तिर्यग्लोकेऽसंख्येयगुणास्त्रैलोक्येऽसंख्येयगुणा ऊर्ध्वलोकेऽसंख्येयगुणा अधोलोके विशेषाधिकाः, क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका नैरयिकास्त्रैलोक्ये अधोलोकतिर्यग्लोकेऽसंख्येयगुणा अधोलोकेऽसंख्येयगुणाः । क्षेत्रानुपातेन सर्व ...

जीवत्थिकायस्स दव्वठपदेसठयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवे जीवत्थिकाए दव्वठयाए सोचेव पदेसठयाए असंखिज्जगुणा, एतस्सणं भंते ! पुग्गलत्थिकायस्स दव्वठपदेसठयाए कयरे २ हिंतो अप्पावा४ ? गोयमा । सव्वत्थोवा पुग्गलत्थिकाए दव्वठयाए सोचेव पदेसठयाए असंखिज्जगुणा अद्धासमए ण पुच्छिज्जइ पदसाभावा । एएसिणं भंते । धम्मत्थिकाय अधम्मत्थिकाय आगासत्थिकाय जीवत्थिकाय पोग्गलत्थिकाय अद्धासमयाण दव्वठयाए पदेसठयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए आगासत्थिकाएय एएण तिन्निवि तुल्ला, दव्वठयाए सव्वत्थोवा धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाएय एएण दोन्निवितुल्ला पदेसठयाए असंखेज्जगुणा, जीवत्थिकाए दव्वठयाए अणंतगुणे सोचेव पदेसठयाए असंखिज्जगुणे पोग्गलत्थिकाए दव्वठयाए अणंतगुणे सोचेव पएसठयाए असंखेज्जगुणे

द्रव्यार्थतया स एव प्रदेशार्थतयाऽनन्तगुण । एतस्य भदन्त । जीवास्तिकायस्य द्रव्यार्थप्रदेशार्थतया कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? सर्वस्तोको जीवास्तिकाय एको द्रव्यार्थतया स एव प्रदेशार्थतया ऽसंख्यगुण । एतस्य भदन्त । पुद्गलास्तिकायस्य द्रव्यार्थप्रदेशार्थतया कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोक पुद्गलास्तिकायो द्रव्यार्थतया स एव प्रदेशार्थतया ऽसंख्यगुण । अद्धासमयो नपृच्छ्यते प्रदेशाभावात् । एतेषां भदन्त । धर्मास्तिकायाधर्मास्तिकायकाशास्तिकायजीवास्तिकायपुद्गलास्तिकायाद्धासमयाना द्रव्यार्थतया प्रदेशार्थतया कतरे २ भ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । धर्मास्तिकायो ऽधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय एते त्रयस्तुल्या द्रव्यार्थतया सर्वस्तोका धर्मास्तिकायोऽधर्मास्तिकाय एतौ द्वावपि तुल्यौ प्रदेशार्थतया ऽसंख्येयगुणौ, जीवास्तिकायो द्रव्यार्थतयानन्तगुण स एव प्रदेशार्थतयाऽसंख्यगुण । पुद्गलास्तिकायो द्रव्यार्थतयाऽनन्तगुण स एव प्रदेशार्थतया ऽसंख्यगुण । अद्धासमयो द्रव्यार्थप्रदेशार्थतयाऽनन्तगुण । आकाशास्तिकाय प्रदेशार्थतयाऽनन्तगुण । द्वारम् २१ । एतेषां भदन्त । जीवा

अद्धासमए दव्वठपदेसठयाए अणंतगुणे आगासत्थिकाए पदेसठयाए अणतगुणा दार २१। एएसिण भंते! जीवाण चरिमाण अचरिमाणय कयरे कयरेहितो अप्पावा४ ? गोयमा! सव्वत्थोवा जीवा अचरिमा च रिमा अणतगुणा दार २२। एएसिण भंते। जीवाण पोग्गलाण अद्धासमयाण सव्वदव्वाण सव्वपएसाण सव्वपज्जवाण कयरे कयरेहितो अप्पावा४ ? गोयमा। सव्वत्थोवा जीवा पोग्गला अणतगुणा अद्धास मया अणतगुणा सव्वदव्वा विसेसाहिया सव्वपदेसा अणतगुणा सव्वपज्जवा अणतगुणा दार २३। खित्ता णुवाएण सव्वत्थोवा जीवा-उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोय तिरियलोए विसेसाहिया तिरियलोए असखि ज्जगुणा तेलुक्के असखेज्जगुणा उड्ढलोए असखेज्जगुणा अहोलोए विसेसाहिया, खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा नेरइया तेलुक्के अहोलोगतिरियलोगे असखेज्ज० अहोलोए असखेज्जगुणा। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा

ना चरमाणामचरमाणा च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम। सर्वस्तोका जीवा अचरमाश्चरमा अनन्तगुणा। द्वारम् २२। एतेषां भदन्त! जीवाना पुद्गलानामद्धासमयाना सर्वद्रव्याणा सर्वप्रदेशाना सर्वपर्यवाना च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम। सर्वस्तोका जीवा पुद्गला अन न्तगुणा अद्धासमया अनन्तगुणा सर्वद्रव्याणि विशेषाधिकानि सर्वप्रदेशा अनन्तगुणा सर्वपर्यवा अनन्तगुणा। द्वारम् २३। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तो का जीवा ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके अधोलोकतिर्यग्लोके विशेषाधिकास्तिर्यग्लोके ऽसख्यगुणा स्त्रैलोक्यऽसख्यगुणा ऊर्ध्वलोकेऽसख्यगुणा अधोलोके वि शेषाधिका. क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका नैरयिकास्त्रैलोक्ये अधोलोकतिर्यग्लोके ऽसख्यगुणा अधोलोके असख्यगुणा। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोकास्ति र्यग्योनिका ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके अधोलोकतिर्यग्लोके विशेषाधिकास्तिर्यग्लोकेऽसख्यगुणा स्त्रैलोक्य ऽसख्यगुणा ऊर्ध्वलोके असख्यगुणा अधोलोके विशेषाधिका। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोकास्तिर्यग्योनिका ऊर्ध्वलोके ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके असख्यगुणा स्त्रैलोक्ये ऽसख्यगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके सख्ये

तिरिक्खजोणिया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोगतिरियलोए विसेसाहिया तिरियलोए असंखेज्जगुणा, ते
लुक्के असखेज्जगुणा उड्ढलोए असंखिज्ज० अहोलोए विसेसाहिया, खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा तिरिक्खजो
णिणीओ उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्ज०, तेलुक्के असखेज्ज० अहोलोयतिरिलोए संखिज्जगुणाओ
अहोलोए सखेज्जगुणाओ तिरियलोए संखिज्जगुणाओ खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा मणुस्सा तेलुक्के उड्ढलोयतिरि
यलोए असखेज्जगुणा अहोलोयतिरियलोए संखिज्जगुणा अहोलोए सखेज्जगुणा तिरियलोए सखेज्जगुणा।
खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवाओ मणुस्सीओ तेलुक्के उड्ढलोयतिरियलोए सखेज्जगुणाओ अहोलोयतिरियलोए सखे
ज्जगुणाओ उड्ढलोए सखेज्जगुणाओ अहोलोए सखेज्ज० तिरियलोए सखेज्ज०, खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा
देवा उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असखेज्जगुणा तेलुक्के असखेज्जगुणा अहोलोए तिरियलोए असखेज्ज०

॥ ध० ॥

यगुणा अधोलोके सख्यगुणा स्तिर्यग्लोके सख्यगुणा । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका मनुष्या त्रैलोक्ये ऊर्द्धलोकतिर्यग्लोके ऽसख्यगुणा अधोलोकतिर्य
ग्लोक सख्येयगुणा अधोलोके सख्यगुणा स्तिर्यग्लोके सख्यगुणा । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका मानुष्य त्रैलोक्ये ऊर्द्धलोकतिर्यग्लोके सख्यगुणा अधो
लोकतिर्यग्लोके सख्यगुणा ऊर्द्धलोके सख्यगुणा अधोलोके सख्यगुणा स्तिर्यग्लोके सख्यगुणा । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका देवा ऊर्द्धलोके ऊर्द्धलोकति
र्यग्लोके ऽसख्यगुणा त्रैलोक्ये ऽसख्यगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके ऽसख्यगुणा अधोलोक सख्यगुणा स्तिर्यग्लोके सख्यगुणा । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तो
का देवा ऊर्द्धलोके ऊर्द्धलोकतिर्यग्लोके ऽसख्यगुणा त्रैलोक्ये सख्यगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके असख्यगुणा अधोलोके सख्यगुणास्तिर्यग्लोके सख्यगु
णाः । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका भवनवासिदेवा ऊर्द्धलोके ऊर्द्धलोकतिर्यग्लोकेऽसख्यगुणा त्रैलोक्ये सख्यगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके ऽसख्येयगुणा स्ति
र्यग्लोक ऽसख्यगुणा. अधोलोके ऽसख्यगुणा । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका भवनवासिन्योदेव्य ऊर्द्धलोके तिर्यग्लोके ऽसख्यगुणा त्रैलोक्ये सख्यगुणा

अहोलोए संखिज्जगुणाउ तिरियलोए संखिज्जगुणाउ खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवाउ देवीउ उड्ढलोय उड्ढलोए तिरियलोए असंखेज्जगुणाउ तेलुक्के संखेज्जगुणाउ अहोलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणाउ अहोलोए संखेज्जगुणाउ तिरियलोए संखिज्जगुणाउ खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा भवणवासीदेवा उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणाउ तेलुक्के संखिज्जगुणा अहोलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, तिरियलोए असंखिज्जगुणा अहोलोए असंखेज्ज०, खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा भवणवासिणीउ देवीउ उड्ढलोए तिरियलोए असंखि०, तेलुक्के संखेज्जगुणाउ अहोलोए तिरियलोए असंखेज्ज०, तिरियलोए असंखिज्ज० अहोलोए असंखिज्ज० खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा वाणमंतरादेवा उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखिज्जगुणा, तेलुक्के असंखिज्ज० अहोलोए तिरियलोए असंखेज्जगुणा अहोलोए संखेज्जगुणा तिरियलोए संखिज्ज०, खेत्ताणुवाएण सव्वत्थो

अधोलोकतिर्यग्लोके ऽसख्यगुणास्तिर्यग्लोके ऽसख्यगुणा अधोलोके असख्यगुणा । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका वानव्यन्तरा देवा ऊर्ध्वलोके ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके ऽसख्यगुणा त्रैलोक्ये ऽसख्यगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके ऽसख्यगुणा अधोलोके सख्यगुणा स्तिर्यग्लोके सख्यगुणा । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका वानव्यन्तर्यो देव्य ऊर्ध्वलोके ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके असख्यगुणा त्रैलोक्ये सख्यगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके असख्यगुणा अधोलोके सख्यगुणा स्तिर्यग्लोके सख्यगुणा । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका ज्योतिष्का देवा ऊर्ध्वलोके ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके ऽसख्यगुणास्त्रैलोक्ये सख्यगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके ऽसख्यगुणा अधोलोके सख्येयगुणा स्तिर्यग्लोके असख्यगुणा । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका ज्योतिष्कदेव्य ऊर्ध्वलोके ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके ऽसख्यगुणा त्रैलोक्ये सख्यगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके सख्यगुणा अधोलोके सख्यगुणा स्तिर्यग्लोके असख्यगुणा । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका वैमानिका देवा ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके त्रैलोक्ये सख्यगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके सख्यगुणा अधोलोके सख्यगुणा स्तिर्यग्लोके सख्येयगुणा ऊर्ध्वलोके ऽसख्यगुणा । क्षेत्रानु

वाउ वाणमतरीउ देवीउ उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असखिज्जगुणाउ तेलुक्के संखिज्जगुणाउ अहोलोए तिरियलोए असखिज्ज० अहोलोए सखिज्ज० तिरियलोए सखिज्जगुणाउ खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा जोइसिया देवा उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोएअसखिज्ज० तेलुक्के संखेज्जगुणा अहोलोएतिरियलोए असखिज्जगुणा अहोलोए सखेज्जगुणा तिरियलोए असखेज्जगुणा खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा जोइसिणीउ देवीउ उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असखेज्जगुणाउ तेलुक्के सखेज्जगुणाउ अहोलोयतिरियलोए सखेज्ज०, अहोलोए सखि० तिरियलोए असखे० खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा वेमाणिया देवा २००० उड्ढलोयतिरियलोए तेलुक्के सखेज्ज० अहोलोयतिरियलोए सखिज्ज० अहोलोए सखेज्जगुणा तिरियलोए सखेज्ज० उड्ढलोए असखिज्ज० खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवाउ वेमाणिणीउ देवीउ उड्ढलोयतिरियलोए तेलुक्के सखेज्जगुणाउ अहोलोयतिरियलोए सखिज्ज० अहोलोयसखेज्ज० तिरियलोए सखेज्ज० उड्ढलोए असखि० खेत्ताणुवाएणं

पातेन सर्वस्तोका वैमानिको देव्य ऊर्द्ध्वलोकतिर्यग्लोके त्रैलोक्ये सख्येयगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके सख्यगुणा अधोलोक सख्यगुणा स्तिर्यग्लोक सख्यगुणा ऊर्द्ध्वलोके ऽसख्यगुणा । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका एकेन्द्रिया जीवा ऊर्द्ध्वलोकतिर्यग्लोके अधोलोकतिर्यग्लोके विशेषाधिका स्तिर्यग्लोके ऽसख्यगुणा स्त्रैलोक्ये ऽसख्यगुणा ऊर्द्ध्वलोके ऽसख्यगुणा अधोलोके विशेषाधिका । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका एकेन्द्रिया जीवा अपर्याप्तका ऊर्द्ध्वलोकतिर्यग्लोके अधोलोकतिर्यग्लोके विशेषाधिकास्तिर्यग्लोक ऽसख्यगुणा स्त्रैलोक्ये ऽसख्यगुणा ऊर्द्ध्वलोके ऽसख्यगुणा अधोलोके विशेषाधिका । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका एकेन्द्रिया जीवा पर्याप्तका ऊर्द्ध्वलोकतिर्यग्लोके अधोलोकतिर्यग्लोके विशेषाधिका स्तिर्यग्लोके ऽसख्यगुणा स्त्रैलोक्ये ऽसख्यगुणा ऊर्द्ध्वलोके ऽसख्यगुणा अधोलोके विशेषाधिका, । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका द्वीन्द्रिया ऊर्द्ध्वलोके ऊर्द्ध्वलोकतिर्यग्लोके ऽसख्यगुणा स्त्रैलोक्ये ऽस

सव्वत्थोवा एगिंदिया जीवा उड्ढलोए तिरियलोए, श्रहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए श्रसं
खेज्जगुणा, तेलुक्के श्रस०, उड्ढलोए श्रसखेज्जगुणा, श्रहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा
एगिंदिया जीवा श्रपज्जत्तगा, उड्ढलोयतिरियलोए श्रहोलोए तिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए श्रसं
खेज्जगुणा, तेलुक्के श्रसखेज्जगुणा, उड्ढलोए श्रसखेज्जगुणा, श्रहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएणं
सव्वत्थोवा एगिंदिया जीवा पज्जत्तगा, उड्ढलोयतिरियलोए श्रहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए
श्रसखेज्जगुणा, तेलुक्के श्रसखेज्जगुणा, उड्ढलोए श्रसखेज्जगुणा, श्रहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएणं
सव्वत्थोवा बेइंदिया उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए श्रसखेज्जगुणा, तेलुक्के श्रस०, श्रहोलोए तिरियलोए
श्रसखेज्जगुणा, श्रहोलोए सखेज्जगुणा, तिरियलोए सखेज्जगुणा। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा बेइंदिया श्र
पज्जत्तया उड्ढलोए। उड्ढलोयतिरियलोए सखेज्जगुणा, तेलुक्के श्रसखेज्जगुणा, श्रहोलोयतिरियलोए श्रस
खेज्जगुणा, श्रहोलोए सखे०, तिरियलोए सखे०। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा बेइंदिया पज्जत्तया उड्ढलोए उ
ड्ढलोयतिरियलोए श्रसखेज्जगुणा, तेलुक्के श्रसखेज्जगुणा, श्रहोलोयतिरियलोए श्रसखेज्जगुणा, श्रहोलो
ए सखेज्जगुणा, तिरियलोए सखेज्जगुणा। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा तेइंदिया उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलो

स्यगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके ऽसख्यगुणा अधोलोके सख्यगुणा तिर्यग्लोके सख्यगुणा। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका द्वीन्द्रिया अपर्याप्तका ऊर्ध्वलोक
ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके सख्यगुणास्त्रैलोक्ये ऽसख्यगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके ऽसख्यगुणा अधोलोके सख्यगुणा तिर्यग्लोके सख्यगुणा। क्षेत्रानुपातेन
सर्वस्तोका द्वीन्द्रिया पर्याप्तका ऊर्ध्वलोके ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके ऽसख्यगुणा त्रैलोक्ये ऽसख्यगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके ऽसख्यगुणा अधोलोके सख्य

ए असं० । तेलुक्के असखेज्जगुणा, अधोलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए सखेज्जगुणा । खेत्ताणुवाएण स
व्वत्थोवा तेइंदिया अपज्जत्तगा उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असखेज्जगुणा, अ
होलोयतिरियलोए असखेज्जगुणा, अहोलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए सखेज्जगुणा । खेत्ताणुवाएणं सव्व
त्थोवा तेइंदिया पज्जत्तगा उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असखेज्जगुणा, तेलुक्के असखिज्जगुणा, अहोलो
ए तिरियलोए असखिज्जगुणा, अहोलोए सखिज्जगुणा, तिरियलोए सखिज्जगुणा । खेत्ताणुवाएण सव्व
त्थोवा चउरिंदिया जीवा उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असखेज्जगुणा । तेलुक्के असखेज्जगुणा, अहोलो
यतिरियलोए असखेज्जगुणा, अहोलोए सखेज्जगुणा, तिरियलोए सखेज्जगुणा । खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा
चउरिंदिया जीवा अपज्जत्तगा उड्ढलोए, उड्ढलोयतिरियलोए असखेज्जगुणा, तेलुक्के असखेज्जगुणा, अ
होलोयतिरियलोए असखेज्जगुणा, अहोलोए सखेज्जगुणा, तिरियलोए सखेज्जगुणा । खेत्ताणुवाएण सव्व

गुणा स्तिर्यग्लोके सख्येयगुणा । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोकास्त्रीन्द्रिया ऊर्द्ध्वलोके ऊर्द्ध्वलोकतिर्यग्लोके ऽसख्येयगुणा स्त्रैलोक्ये असख्येयगुणा अधोलोके स
ख्येयगुणा तिर्यक्लोके सख्येयगुणा । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोकास्त्रीन्द्रिया अपर्याप्तका ऊर्ध्वलोके ऊर्ध्वलोकतिर्यक्लोके असख्येयगुणा, त्रैलोक्ये
असख्येयगुणा अधोलोकतिर्यक्लोके असख्येयगुणा तिर्यक्लोके सख्येयगुणा । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोकास्त्रीन्द्रिया पर्याप्तका ऊर्ध्वलोके ऊर्ध्वलोक
तिर्यक्लोके असख्येयगुणा स्त्रैलोक्ये असख्येयगुणा अधोलोके तिर्यक्लोके असख्येयगुणा स्तिर्यक्लोके सख्येयगुणा । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोकाश्चतुरिन्द्रि
या जीवा ऊर्ध्वलोके ऊर्ध्वलोकतिर्यक्लोके असख्येयगुणा त्रैलोक्ये असख्येयगुणा अधोलोकतिर्यक्लोके असख्येयगुणा अधोलोके सख्येयगुणा स्तिर्यक्
लोके सख्येयगुणा । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोकाश्चतुरिन्द्रिया जीवा अपर्याप्तका ऊर्ध्वलोके ऊर्ध्वलोकतिर्यक्लोके असख्येयगुणा स्त्रैलोक्ये असख्येयगुणा अ

ख्योवा चउरिंदिया जीवा पज्जत्तगा उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असखेज्जगुणा, तेलुक्के असखेज्जगुणा अहोलोयतिरियलोए असखेज्जगुणा, अहोलोए सखेज्जगुणा, तिरियलोए सखे० । खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा पचिंदिया तेलुक्के उड्ढलोयतिरियलोए असखेज्जगुणा, अहोलोए तिरियलोए सखेज्जगुणा, उड्ढलोए सखेज्जगुणा, अहोलोए सखेज्जगुणा, तिरियलोए असखेज्जगुणा । खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा पचिंदिया अपज्जत्तया, तेलोक्के उड्ढलोयतिरियलोए असखेज्जगुणा, अहोलोयतिरियलोए सखेज्जगुणा, उड्ढलोए सखेज्जगुणा, अहोलोए सखेज्जगुणा तिरियलोए सखिज्जगुणा । खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा पचिंदिया पज्जत्ता उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असं०, तेलुक्के असं०, अहोलोयतिरियलोए सखेज्ज० अहोलोए सखेज्ज० तिरियलोए असंखेज्ज० । खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा पुढविकाइया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए

धोलोकतिर्यक्लोके असंख्यगुणा अधोलोके सख्येयगुणा, तिर्यक्लोके सख्येयगुणा । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोमाश्चतुरिन्द्रिया जीवा पर्याप्तगा ऊर्ध्वलोके ऊर्ध्वलोकतिर्यक्लोके असंख्यगुणा त्रैलोक्ये असंख्यगुणा अधोलोकतिर्यक्लोके असंख्येयगुणा, अधोलोके सख्येयगुणा तिर्यक्लोके सख्येयगुणा । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोमा पञ्चेन्द्रिया त्रैलोक्ये ऊर्द्ध्वलोकतिर्यक्लोके असंख्येयगुणा अधोलोकतिर्यक्लोके सख्येयगुणा ऊर्द्ध्वलोके सख्येयगुणा, तिर्यक्लोके असंख्येयगुणा । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोमा पञ्चेन्द्रिया अपर्याप्तगा त्रैलोक्ये ऊर्द्ध्वलोकतिर्यक्लोके असंख्येयगुणा अधोलोकतिर्यक्लोके सख्येयगुणा ऊर्द्ध्वलोके सख्येयगुणा अधोलोके सख्येयगुणा तिर्यक्लोके सख्येयगुणा । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोमा पञ्चेन्द्रिया पर्याप्ता ऊर्द्ध्वलोके ऊर्द्ध्वलोकतिर्यक्लोके असंख्येयगुणा त्रैलोक्ये असंख्येयगुणा अधोलोकतिर्यक्लोके असंख्येयगुणा अधोलोके सख्येयगुणा तिर्यक्लोके असंख्येयगुणा । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोमा पृथिवीकायिका ऊर्द्ध्वलोकतिर्यक्लोके अधोलोकतिर्यक्लोके विशेषाधिका, तिर्यक्लोके असंख्येयगुणा, त्रैलोक्ये

विसेसाहिया, तिरियलोए असखेज्जगुणा, तेलुक्के असखिज्जगुणा, उड्ढलोए असखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा पुढविकाइया अपज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असखेज्जगुणा, तेलुक्के असखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखिज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा पुढविकाइया पज्जत्तया उड्ढलोए तिरियलोए तिरियलोयअहोलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असखिज्जगुणा, तेलुक्के असखिज्जगुणा, उड्ढलोए असखिज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा आउकाइया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया तिरियलोए असखेज्जगुणा, तेलुक्के असखेज्जगुणा, उड्ढलोए असखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा आउकाइया अपज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए वि

असख्येयगुणाः ऊर्द्धलोके असख्येयगुणा अधोलोके विशेषाधिका। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोमा पृथिवीकायिका अपर्याप्ता ऊर्द्धलोकतिर्यक्लोके अधोलोकतिर्यक्लोके विशेषाधिका तिर्यक्लोके असख्येयगुणा, त्रैलोक्ये असख्येयगुणा ऊर्द्धलोके असख्येयगुणा, अधोलोके विशेषाधिका। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोमा पृथिवीकायिका, पर्याप्तता ऊर्द्धलोके तिर्यक्लोके तिर्यक्लोकाधोलोके विशेषाधिका तिर्यक्लोके असख्येयगुणा, त्रैलोक्ये असख्येयगुणा ऊर्द्धलोके असख्येयगुणा अधोलोके विशेषाधिका। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोमा अप्कायिका, ऊर्द्धलोकतिर्यक्लोके अधोलोकतिर्यक्लोके विशेषाधिका तिर्यक्लोके असख्येयगुणा त्रैलोक्ये असख्येयगुणा ऊर्द्धलोके असख्येयगुणा अधोलोके विशेषाधिका। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोमा अप्कायिकाः अपर्याप्तता ऊर्द्धलोकतिर्यक्लोके अधोलोकतिर्यक्लोके विशेषाधिका तिर्यक्लोके असख्येयगुणा त्रैलोक्ये असख्येयगुणा ऊर्द्धलोके असख्येयगुणा अधोलोके विशेषाधिका। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोमा अप्कायिका, पर्याप्तता ऊर्द्धलोकतिर्यक्लोके विशेषाधिकाः अधोलोकतिर्यक्

सेसाहिया तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलोक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा आउकाइया पज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असखेज्जगुणा, तेलुक्के असखेज्जगुणा, उड्ढलोए असखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा तेउकाइया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असखेज्जगुणा, तेलुक्के असखेज्ज०, उड्ढलोए असखिज्ज०, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा तेउकाइया अपज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असखेज्जगुणा, तेलुक्के असखिज्जगुणा, उड्ढलोए असखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा तेउकाइया पज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरि

लोके विशेषाधिका तिर्यक्लोके असख्येयगुणा त्रैलोक्ये असख्येयगुणा ऊर्द्ध्वलोके असख्येयगुणा अधोलोके विशेषाधिका । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोकास्तेजःकायिका ऊर्द्ध्वलोकतिर्यक्लोके अधोलोकतिर्यक्लोके विशेषाधिका तिर्यक्लोके असख्येयगुणा त्रैलोक्ये असख्येयगुणा ऊर्द्ध्वलोके असख्येयगुणा अधोलोके विशेषाधिका । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोकास्तेजःकायिका अपर्याप्तका ऊर्द्ध्वलोकतिर्यक्लोके अधोलोकतिर्यक्लोके विशेषाधिका तिर्यक्लोके असख्येयगुणा त्रैलोक्ये असख्येयगुणा ऊर्द्ध्वलोके असख्येयगुणा अधोलोके विशेषाधिका । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोकास्तेजःकायिकाः पर्याप्तका ऊर्द्ध्वलोकतिर्यक्लोके अधोलोकतिर्यक्लोके विशेषाधिका तिर्यक्लोके असख्येयगुणा त्रैलोक्ये असख्येयगुणा ऊर्द्ध्वलोके असख्येयगुणा अधोलोके विशेषाधिका । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका वायुकायिका ऊर्द्ध्वलोकतिर्यक्लोके अधोलोकतिर्यक्लोके विशेषाधिका. तिर्यक्लोके असख्येयगुणा त्रैलोक्ये असख्येयगुणा ऊर्द्ध्वलोके असख्येयगुणा अधोलोके विशेषाधिकाः । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका वायुकायिका. अपर्याप्तका

विसेसाहिया, तिरियलोए असखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखिज्जगुणा, उड्ढलोए असखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा पुढविकाइया अपज्जत्तया उड्ढलोयंतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असखेज्जगुणा, तेलुक्के असखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखिज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा पुढविकाइया पज्जत्तया उड्ढलोए तिरियलोए तिरियलोयअहोलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असखिज्जगुणा, तेलुक्के असखिज्जगुणा, उड्ढलोए असखिज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा आउकाइया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया तिरियलोए असखेज्जगुणा, तेलुक्के असखेज्जगुणा, उड्ढलोए असखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा आउकाइया अपज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए वि

असख्येयगुणा ऊर्द्धलोक असख्येयगुणा अधोलोके विशेषाधिका। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोमा पृथिवीकायिका अपर्याप्ता ऊर्द्धलोकतिर्यक्लोके अधोलोकतियक्लोके विशेषाधिका तिर्यक्लोके असख्यगुणा. त्रैलोक्य असख्ययगुणा ऊर्द्धलोके असख्येयगुणा अधोलोके विशेषाधिका। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोमा पृथिवीकायिका. पर्याप्तया ऊर्द्धलोके तिर्यक्लोक तियक्लोकाधोलोक विशेषाधिका तिर्यक्लोके असंख्येयगुणा त्रैलोक्ये असख्येयगुणा ऊर्द्धलोके असख्येयगुणा अधोलोक विशेषाधिका.। क्षत्रानपातेन सर्वस्तोमा अप्कायिका. ऊर्द्धलोकतिर्यक्लोके अधोलोकतिर्यक्लोके विशेषाधिका तिर्यक्लोके असख्ययगुणा त्रैलोक्ये असख्येयगुणा ऊर्द्धलोके असख्येयगुणा अधोलोके विशेषाधिका। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोमा अप्कायिका अपर्याप्तया ऊर्द्धलोकतिर्यक्लोके अधोलोकतियकलोक विशेषाधिका' तियक्लोके असख्येयगुणा' त्रैलोक्ये असख्येयगुणा ऊर्द्धलोके असख्येयगुणा अधोलोके विशेषाधिका। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोमा अप्कायिका. पर्याप्तया ऊर्द्धलोकतिर्यक्लोके विशेषाधिका. अधोलोकतिर्यक

सेसाहिया तिरियलोए असखेज्जगुणा, तेलोक्के असंखेज्जगुणा; उड्ढलोए असखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा आउकाइया पज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असखेज्जगुणा, तेलुक्के असखेज्जगुणा, उड्ढलोए असखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा तेउकाइया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असखेज्जगुणा, तेलुक्के असखेज्ज०, उड्ढलोए असखिज्ज०, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा तेउकाइया अपज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असखेज्जगुणा, तेलुक्के असखिज्जगुणा, उड्ढलोए असखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा तेउकाइया पज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरि

लोके विशेषाधिका तिर्यक्लोके असख्येयगुणा त्रैलोक्ये असख्येयगुणा ऊर्द्धलोके असख्येयगुणा अधोलोके विशेषाधिका । क्षेत्रानुवातेन सर्वस्तोमास्तेज कायिका ऊर्द्धलोकतिर्यक्लोके अधोलोकतिर्यक्लोके विशेषाधिका तिर्यक्लोके असख्येयगुणा त्रैलोक्ये असख्येयगुणा ऊर्द्धलोके असख्येयगुणा अधोलोके विशेषाधिका । क्षेत्रानुवातेन सर्वस्तोमा स्तेज कायिका अपर्याप्तया ऊर्द्धलोकतिर्यक्लोके अधोलोकतिर्यक्लोके विशेषाधिका तिर्यक्लोके असख्येयगुणा त्रैलोक्ये असख्येयगुणा ऊर्द्धलोके असख्येयगुणा अधोलोके विशेषाधिका । क्षेत्रानुवातेन सर्वस्तोमास्तेज कायिका पर्याप्तया ऊर्द्धलोकतिर्यक्लोके अधोलोकतिर्यक्लोके विशेषाधिका तिर्यक्लोके असख्येयगुणा त्रैलोक्ये असख्येयगुणा ऊर्द्धलोके असख्येयगुणा अधोलोके विशेषाधिका । क्षेत्रानुवातेन सर्वस्तोमा वायुकायिका ऊर्द्धलोकतिर्यक्लोके अधोलोकतिर्यक्लोके विशेषाधिका तिर्यक्लोके असख्येयगुणा त्रैलोक्ये असख्येयगुणा ऊर्द्धलोके असख्येयगुणा अधोलोके विशेषाधिकाः । क्षेत्रानुवातेन सर्वस्तोमा वायुकायिका॰ अपर्याप्तया

यलोए असखेज्जगुणा, तेलुक्के असखेज्जगुणा, उड्ढलोए असखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा वाउकाइया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया । तिरियलोए असखेज्जगुणा, तेलुक्के असखिज्जगुणा उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा वाउकाइया अपज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया । तिरियलोए असखेज्जगुणा, तेलुक्के असखेज्जगुणा, उड्ढलोए असखिज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा वाउकाइया पज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया । तिरियलोए असखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा वणस्सइकाइया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया । तेलुक्के असखेज्जगुणा

ऊर्द्धलोकतिर्यक्लोके अधोलोकतिर्यक्लोके विशेषाधिका तिर्यक्लोक असख्येयगुणा त्रैलोक्ये असख्येयगुणा ऊर्द्धलोके असख्येयगुणा अधोलोके विशेषाधिका । क्षेत्रानुवातेन सर्वस्तोमा वायुकायिका पर्याप्तया ऊर्द्धलोकतिर्यक्लोके अधोलोकतिर्यक्लोके विशेषाधिका तिर्यक्लोके असख्येयगुणा त्रैलोक्ये असख्येयगुणा ऊर्द्धलोके असख्येयगुणा अधोलोक विशेषाधिका । क्षेत्रानुवातेन सर्वस्तोमा वनस्पतिकायिका ऊर्द्धलोकतिर्यक्लोके अधोलोकतिर्यक्लोके विशेषाधिका त्रैलोक्ये असख्येयगुणा ऊर्द्धलोके असख्येयगुणा अधोलोक विशेषाधिका । क्षेत्रानुवातेन सर्वस्तोमा वनस्पतिकायिका अपर्याप्तया ऊर्द्धलोकतिर्यक्लोके अधोलोकतिर्यक्लोके विशेषाधिका तिर्यक्लोके असख्येयगुणा त्रैलोक्ये असख्येयगुणा ऊर्द्धलोके असख्येयगुणा अधोलोके विशेषाधिका । क्षेत्रानुवातेन सर्वस्तोमा वनस्पतिकायिका पर्याप्तया ऊर्द्धलोकतिर्यक्लोके अधोलोकतिर्यक्लोके विशेषाधिका तिर्यक्लोक असख्येयगुणा त्रैलोक्ये असख्येयगुणा ऊर्द्धलोके असख्येयगुणा अधोलोके विशेषाधिका । क्षेत्रानुवातेन सर्वस्तोमाश्च

उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा वणस्सइकाइया अपज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखिज्जगुणा, तेलुक्के असंखिज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा वणस्सइकाइया पज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखिज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा तसकाइया तेलुक्के उड्ढलोयतिरियलोए असंखिज्जगुणा, अहोलोयतिरियलोए संखेज्जगुणा, उड्ढलोए संखेज्जगुणा, अहोलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए असंखिज्जगुणा। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा तसकाइया अपज्जत्तया तेलुक्के उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए संखिज्जगुणा, अहोलोए संखिज्जगुणा, तिरियलोए असंखेज्जगुणा। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा तसकाइया पज्जत्तया तेलुक्के उड्ढलोयतिरियलोए असंखिज्जगुणा, अहोलोयतिरियलोए संखेज्जगुणा, उड्ढलोए संखिज्जगुणा, अहोलोए संखिज्जगुणा, तिरियलोए असंखेज्जगु

कायिका त्रैलोक्ये ऊर्द्ध्वलोकतिर्यक्लोके असंख्येयगुणा अधोलोकतिर्यक्लोके संख्येयगुणा ऊर्द्ध्वलोके संख्येयगुणा अधोलोके संख्येयगुणास्तिर्यक्लोके असंख्येयगुणा। तत्रानुपातेन सर्वस्तोकास्त्रसकायिका अपर्याप्तका त्रैलोक्ये ऊर्द्ध्वलोकतिर्यक्लोके असंख्येयगुणा ऊर्द्ध्वलोके संख्येयगुणा अधोलोके संख्येयगुणास्तिर्यक्लोके असंख्येयगुणा। तत्रानुपातेन सर्वस्तोकास्त्रसकायिकाः पर्याप्तकास्त्रैलोक्ये ऊर्द्ध्वलोकतिर्यक्लोके असंख्येयगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके संख्येयगुणा ऊर्द्ध्वलोके संख्येयगुणा अधोलोके संख्येयगुणा तिर्यग्लोके ऽसंख्येयगुणाः। द्वारम् २४। एतेषां भदन्त। जीवानामायुष्यकर्मबन्धकानामबन्धकानामपर्याप्तानां पर्याप्तानां सुप्तानां जाग्रतां समवहतानामसमवहतानां सातावेदकानामसातावेदकानामिन्द्रियोपयुक्तानां नोइन्द्रियो

यलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा वाउकाइया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया। तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा वाउकाइया अपज्जत्तगा उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया। तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा वाउकाइया पज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया। तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा वणस्सइकाइया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया। तेलुक्के असंखेज्जगुणा

ऊर्द्ध्वलोकतिर्यक्लोके, अधोलोकतिर्यक्लोके विशेषाधिका तिर्यक्लोके असंख्येयगुणा त्रैलोक्ये असंख्येयगुणा ऊर्द्ध्वलोके असंख्येयगुणा अधोलोके विशेषाधिका। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोमा वायुकायिका पर्याप्तया ऊर्द्ध्वलोकतिर्यक्लोके अधोलोकतिर्यक्लोके विशेषाधिका तिर्यक्लोके असंख्येयगुणा त्रैलोक्ये असंख्येयगुणा ऊर्द्ध्वलोके असंख्येयगुणा अधोलोके विशेषाधिका। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोमा वनस्पतिकायिका ऊर्द्ध्वलोकतिर्यक्लोके अधोलोकतिर्यक्लोके विशेषाधिका त्रैलोक्ये असंख्येयगुणा ऊर्द्ध्वलोके असंख्येयगुणा अधोलोके विशेषाधिका। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोमा वनस्पतिकायिका अपर्याप्तया ऊर्द्ध्वलोकतिर्यक्लोके अधोलोकतिर्यक्लोके विशेषाधिका तिर्यक्लोके असंख्येयगुणा त्रैलोक्ये असंख्येयगुणा ऊर्द्ध्वलोके असंख्येयगुणा अधोलोके विशेषाधिका। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोमा वनस्पतिकायिका पर्याप्तया ऊर्द्ध्वलोकतिर्यक्लोके अधोलोकतिर्यक्लोके विशेषाधिका। तिर्यक्लोके असंख्येयगुणा त्रैलोक्ये असंख्येयगुणा ऊर्द्ध्वलोके असंख्येयगुणा अधोलोके विशेषाधिका। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोमास्त्रस

उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा वणस्सइकाइया अपज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखिज्जगुणा, तेलुक्के असंखिज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा वणस्सइकाइया पज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखिज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा तसकाइया तेलुक्के उड्ढलोयतिरियलोए असंखिज्जगुणा, अहोलोयतिरियलोए संखेज्जगुणा, उड्ढलोए संखेज्जगुणा, अहोलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए असंखिज्जगुणा। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा तसकाइया अपज्जत्तया तेलुक्के उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए संखिज्जगुणा, अहोलोए संखिज्जगुणा, तिरियलोए असंखेज्जगुणा। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा तसकाइया पज्जत्तया तेलुक्के उड्ढलोयतिरियलोए असंखिज्जगुणा, अहोलोयतिरियलोए संखेज्जगुणा, उड्ढलोए संखिज्जगुणा, अहोलोए संखिज्जगुणा, तिरियलोए असंखेज्जगु

कायिका त्रैलोक्य ऊर्द्ध्वलोकतिर्यक्लोके असंख्येयगुणा अधोलोकतिर्यक्लोके संख्येयगुणा ऊर्द्ध्वलोके संख्येयगुणा अधोलोके संख्येयगुणास्तिर्यक्लोके असंख्येयगुणा। तत्रानुपातेन सर्वस्तोकास्त्रसकायिका अपर्याप्तकास्त्रैलोक्ये ऊर्द्ध्वलोकतिर्यक्लोके असंख्येयगुणा ऊर्द्ध्वलोके संख्येयगुणा अधोलोके संख्येयगुणास्तिर्यक्लोके असंख्येयगुणा। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोकास्त्रसकायिका पर्याप्तकास्त्रैलोक्य ऊर्द्ध्वलोकतिर्यक्लोके असंख्येयगुणा अधोलोकतिर्यक्लोके संख्येयगुणा ऊर्द्ध्वलोके संख्येयगुणा अधोलोके संख्येयगुणा तिर्यग्लोके असंख्येयगुणा। द्वारम् २४। एतेषां भदन्त! जीवानामायुष्यकर्मबन्धकानामबन्धकानां पर्याप्तानामपर्याप्तानां सुप्तानां जाग्रतां समवहतानामसमवहतानां सातवेदकानामसातवेदकानामिन्द्रियोपयुक्तानां नो इन्द्रियो

णा। दार २४। एएसिण भंते। जीवाण आउस्स कम्मस्स बंधगाण अबंधगाण अपज्जत्ताण पज्जत्ताण सुत्ताण जागराण समोहयाण असमोहयाण सातावेदगाण असातावेदगाण इंदियउवउत्ताणं णोइंदियउव उत्ताण सागारोवउत्ताण अणागारोवउत्ताणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहिया वा? गोयमा। सव्वत्थोवा जीवा आउस्स कम्मस्स बंधगा अपज्जत्तया संखिज्जगुणा, सुत्ता संखिज्जगु णा, समोहया संखिज्जगुणा, सातावेदगा संखिज्जगुणा, इंदियउवउत्ता संखिज्जगुणा, अणागारोवउत्ता संखेज्जगुणा, सागारोवउत्ता संखिज्जगुणा, नोइंदियउवउत्ता विसेसाहिया, असातावेदगा विसेसाहिया, असमोहिया विसेसाहिया, जागरा विसेसाहिया, पज्जत्तगा विसेसाहिया, आउस्स कम्मस्स अबंधगा विसेसाहिया, दार २५। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा पोग्गला तेलुक्के उड्ढलोयतिरियलोए अणंतगुणा अहो

पयुक्ताना साकारोपयुक्तानामनाकारोपयुक्ताना कतरे २ अल्पावा बहुला वा तुल्या वा विशेषाधिका वा?। गौतम। सर्वस्तोका जीवा आयुष कर्मणो बन्धका अपर्याप्तका सख्येयगुणा सुप्ता सख्येयगुणा जाग्रत सख्येयगुणाः समवहता सख्येयगुणा सातावेदका सख्येयगुणा इन्द्रियोपयुक्ता सख्येयगुणा अनाकारोपयुक्ता सख्येयगुणा साकारोपयुक्ता सख्येयगुणा नो इन्द्रियोपयुक्ता सख्येयगुणा विशेषाधिका। असातवेदकाः विशेषाधिका असमोहिता विशेषाधिका जाग्रतो विशेषाधिका, पर्याप्तका विशेषाधिका आयुष कर्मण अबन्धका विशेषाधिका। द्वारम् २५॥ क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका पुद्गला त्रैलोक्ये ऊर्द्ध्वलोकतिर्यक्लोके अनन्तगुणा अधोलोकतिर्यक्लोके विशेषाधिका, तिर्यक्लोक असख्येयगुणा अधो लोके विशेषाधिका,। दिशानुपातेन सर्वस्तोका पुद्गला ऊर्द्ध्वदिशायामधोदिशायां विशेषाधिका उत्तरपूर्वस्या दक्षिण पश्चिमायां च द्वयोरपि तुल्या असख्येयगुणाः। दक्षिण पूर्वस्यामुत्तरपश्चिमायां च द्वयोरपि तुल्या विशेषाधिका पूर्वस्या मसख्येयगुणा पश्चिमाया विशेषाधिका दक्षिणेन

लोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा उड्ढलोए असंखिज्जगुणा अहोलोए विसेसाहिया दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा पोग्गला उड्ढदिसाए अहोदिसाए विसेसाहिया उत्तरपुरच्छिमेण दाहिणपच्चच्छिमेणय दोवि तुल्ला असंखेज्जगुणा। दाहिणपुरच्छिमेण उत्तरपच्चच्छिमेणय दोवि तुल्ला विसेसाहिया पुरच्छिमेण असंखेज्जगुणा पच्चच्छिमेण विसेसाहिया दाहिणेण विसेसाहिया उत्तरेण विसेसाहिया खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा दव्वाइ तेलुक्के उड्ढलोयतिरियलोए अणंतगुणाइ अहोलोयतिरियलोए विसेसाहियाइ उड्ढलोए असंखेज्ज० अहोलोए अणंतगुणाइ तिरियलोए संखिज्जगुणाइ दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा दव्वाइ अहेदिसाए उड्ढदिसाए अणंतगुणाइ उत्तरपुरच्छिमेण दाहिणपच्चच्छिमेण दोवि तुल्लाइ असंखेज्जगुणाइ दाहिणपुरच्छिमेण उत्तरपच्चच्छिमेणय दोवि तुल्लाइ विसेसाहियाइ पुरच्छिमेण असंखेज्जगुणाइ पच्चच्छिमेण विसेसाहियाइ दाहिणेण विसेसाहियाइ उत्तरेण विसेसाहियाइ। एएसिणं भंते। परमाणुपोग्गलाणं संखेज्जप

विशेषाधिका उत्तरेण विशेषाधिका। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोकानि द्रव्याणि त्रैलोक्ये ऊर्ध्वलोकतिर्यक्लोके अनन्तगुणानि अधोलोकतिर्यक्लोके विशेषाधिकानि ऊर्ध्वलोके असंख्येयगुणानि अधोलोके अनन्तगुणानि तिर्यक्लोके असंख्येयगुणानि दिशानुपातेन सर्वस्तोकानि द्रव्याणि अधोदिशाया मूर्ध्वदिशायामनन्तगुणानि उत्तरपूर्वस्यां दक्षिण पश्चिमायां द्वयोरपि तुल्यान्यसंख्येयगुणानि दक्षिण पूर्वस्यामुत्तरपश्चिमायां द्वयोरपि तुल्यानि विशेषाधिकानि। एतेषां भदन्त। परमाणु पुद्गलानां संख्येयप्रादेशिकानामसंख्येयप्रादेशिकानामनन्तप्रादेशिकानां च स्कन्धानां द्रव्यार्थतया प्रदेशार्थतया द्रव्यार्थप्रदेशार्थतया कतरे० ?। गौतम। सर्वस्तोका अनन्तप्रादेशिकाः स्कन्धा द्रव्यार्थतया परमाणु पुद्गला द्रव्यार्थतया ऽनन्तगुणा संख्येयप्रदेशिका स्कन्धा द्रव्यार्थतया संख्येयगुणा असंख्यप्रदेशिका स्कन्धा. द्रव्यार्थतया ऽसंख्येयगुणा प्रदेशार्थतया सर्वस्तोका अनन्तप्रदेशिका. स्क

देसियाण असखिज्जपदेसियाणं अणंतपदेदियाणय खधाण दव्वठयाए पएसठयाए दव्वठ पदेसठयाए कयरे२ हितो अप्पावा४ गो०। सव्वत्थोवा अणंतपदेसिया खधा दव्वठयाए परमाणुपोग्गला दव्वठयाए अणतगुणा सखेज्जपदेसिया खधा दव्वठयाए सखेज्जगुणा असखेज्जपदेसिया खधा दव्वठयाए असखेज्जगुणा पदेसठयाए सव्वत्थोवा अणंतपदेसिया खधा पदेसठयाए परमाणुपोग्गला अणतगुणा सखेज्जपदेसिया खधा पदेसठयाए सखेज्जगुणा असखेज्जपएसिया खधा पदेसठयाए असखेज्जगुणा दव्वठपदेसठयाए सव्वत्थोवा अणतपदेसिया खधा दव्वठयाए तेचेव पदेसठयाए अणतगुणा परमाणुपोग्गला दव्वठपदेसठयाए अणतगुणा सखिज्जपदेसिया खधा दव्वठयाए सखिज्जगुणा तेचेवय पदेसठयाए सखिज्जगुणा असंखिज्ज पएसिया खधा दव्वठयाए असखिज्जगुणा तेचेव पदेसठयाए असखेज्जगुणा। एएसिण भंते ! एगपदेसोगाढाण सखेज्जपदेसोगाढाण असखिज्जपदेसोगाढाणय पोग्गलाण दव्वठयाए पदेसठयाए दव्वठपदेसठयाए

न्धा प्रदेशार्थतया परमाणुपुद्गला अनन्तगुणा संख्येयप्रदेशिका स्कन्धा. प्रदेशार्थतया संख्येयगुणा असंख्येयप्रदेशिका स्कन्धा प्रदेशार्थतया असंख्येयगुणा द्रव्यार्थप्रदेशार्थतया सर्वस्तोका अनन्तप्रदेशिका स्कन्धा द्रव्यार्थतया ते चैव प्रदेशार्थतया अनन्तगुणा परमाणुपुद्गला द्रव्यार्थप्रदेशार्थतया अनन्तगुणा संख्येयप्रदेशिका स्कन्धा द्रव्यार्थतया संख्येयगुणा तत्रैव च प्रदेशार्थतया संख्येयगुणा असंख्येयप्रदेशिका. स्कन्धा द्रव्यार्थतया असंख्येयगुणा स्तत्रैव प्रदेशार्थतया असंख्येयगुणा । एतेषां भदन्त ! एकप्रदेशावगाढाना संख्येयप्रदेशावगाढानामसंख्येय प्रदेशावगाढाना च पुद्गलाना द्रव्यार्थतया प्रदेशार्थतया द्रव्यप्रदेशार्थतया च कतरे ० ? । गौतम । सर्वस्तोका एकप्रदेशावगाढा पुद्गला द्रव्यार्थतया असंख्येयप्रदेशावगाढा पुद्गला द्रव्यार्थतया संख्येयगुणा असंख्येयप्रदेशावगाढा पुद्गला द्रव्यार्थतया असंख्येयगुणा प्रदेशार्थतया सर्वस्तोका एकप्रदेशावगाढा पुद्गला.

कयरे २ हिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा एगपदेसोवगाढा पुग्गला दव्वठयाए सखेज्जपएसोवगा
ढा पुग्गला दव्वठयाए सखिज्जगुणा असखिज्जपदेसोगाढा पोग्गला दव्वठयाए असखिज्जगुणा पदेसठयाए
सव्वत्थोवा एगपदेसोगाढा पोग्गला पदेसठयाए सखिज्जपदेसोगाढा पोग्गला पदेसठयाए सखेज्जगुणा अ
सखेज्जपदेसोगाढा पोग्गला पदेसठयाए असखेज्जगुणा दव्वठपदेसठयाए सव्वत्थोवा एगपदेसोगाढा पोग्ग
ला दव्वठयपदेसठयाए सखेज्जपदेसोगाढा पोग्गला दव्वठयाए सखेज्जगुणा तचेव पएसठयाए सखेज्जगुणा
असखिज्जपएसोगाढो पोग्गला दव्वठयाए असखेज्जगुणा तचेव पएसठयाए असखिज्जगुणा । एएसिण
भते ! एगसमयठितीयाण सखिज्जसमयठितीयाण असखिज्जसमयठितीयाणय पोग्गलाण दव्वठयाए पदे
सठयाए दव्वठपदेसठयाए कयरे २ हिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा एगसमयठिईया पोग्गला
दव्वठयाए सखेज्जसमयठितीया पोग्गला दव्वठयाए सखेज्जगुणा असखिज्जसमयठिईया पोग्गला दव्वठयाए

प्रदेशार्थतया संख्येयप्रदेशावगाढा पुद्गला प्रदेशार्थतया संख्येयगुणा असंख्येय प्रदेशावगाढा पुद्गला प्रदेशार्थतया असंख्येयगुणा द्रव्यप्रदेशार्थ
तया सर्वस्तोका एकप्रदेशावगाढा पुद्गला द्रव्यार्थप्रदेशार्थतया संख्येयप्रदेशावगाढा पुद्गला द्रव्यद्रव्यप्रदेशार्थतया संख्येयप्रदेशावगाढा पुद्गला द्र
व्यार्थतया संख्येयगुणा ते चैव प्रदेशार्थतया संख्येयगुणा असंख्येयप्रदेशावगाढा पुद्गला द्रव्यार्थतया असंख्येयगुणास्ते चैव प्रदेशार्थतया असंख्ये
यगुणा । एतेषा भदन्त ! एकसमयस्थितिकाना संख्येयसमयस्थितिकानामसंख्येयसमयस्थितिकाना पुद्गलाना द्रव्यार्थतया प्रदेशार्थतया द्रव्यार्थप्र
देशार्थतया कतरे० ? । गौतम ! सर्वस्तोका एकसमयस्थितिका पुद्गला द्रव्यार्थतया संख्येय समयस्थितिका पुद्गला द्रव्यार्थतया संख्येयगुणा अ
संख्येयसमयस्थितिका पुद्गला द्रव्यार्थतया असंख्येयगुणा प्रदेशार्थतया सर्वस्तोका एकसमयस्थितिका पुद्गला प्रदेशार्थतया संख्येयसमयस्थिति

असंखिज्जगुणा पदेसठयाए सव्वत्थोवा एगसमयठिईया पोग्गला पदेसठयाए सखेज्जसमयठिईया पोग्गला पएसठयाए सखिज्जगुणा असंखिज्जसमयठिईया पोग्गला पदेसठयाए असंखिज्जगुणा दव्वठयपदेसठयाए सव्वत्थोवा एगसमयठिईया पुग्गला दव्वठपएसठयाए सखेज्जसमयठिईया पोग्गला दव्वठयाए सखेज्जगुणा तेचेव पदेसठयाए सखेज्जगुणा असखिज्जसमयठिईया पोग्गला दव्वठयाए असखिज्जगुणा तेचेव पदेसठयाए असखिज्जगुणा । एएसिणं भंते ! एगगुणकालगाणं सखिज्जगुणकालगाणं असखेज्जगुणकालगाणं अणंतगुणकालगाणय पोग्गलाणं दव्वठयाए पदेसठयाए दव्वठपदेसठयाए कयरे कयरेहितो अप्पावा ४ ? गोयमा ! जहा परमाणुपोग्गला तहा भाणियव्वा, एवं सखेज्जगुणकालयाणवि, एवं सेसाणवि वण्णरस गंधा भाणियव्वा, फासाणं कक्खडमउयगरुयलहुयाणं जहा एगपदेसोगाढाणं भणियं तहा भाणियव्वं अवसेसा फासा जहा वण्णा भणिया तहा भाणियव्वा दारं २६ ॥ ॥ ॥ ॥

का पुद्गला प्रदेशार्थतया सख्येयगुणा असंख्येयसमयस्थितिका पुद्गला प्रदेशार्थतया असंख्येयगुणा द्रव्यार्थप्रदेशार्थतया सर्वस्तोका एकसमयस्थितिका पुद्गला द्रव्यार्थप्रदेशार्थतया सख्येयसमयस्थितिका पुद्गला द्रव्यार्थतया सख्येयगुणा तएव प्रदेशार्थतया संख्येयगुणा असख्येयसमयस्थितिका पुद्गला द्रव्यार्थतया असख्येयगुणास्तएव प्रदेशार्थतया असख्येयगुणा । एतेषां भदन्त । एकगुणकालकानां सख्येयगुणकालकानामसख्येयगुणकालकानामनन्तगुणकालकानां च पुद्गलानां द्रव्यार्थतया प्रदेशार्थतया द्रव्यार्थप्रदेशार्थतया कतरे० ? । गौतम ! यथा परमाणु पुद्गलास्तथा ज्ञातव्या एवं सख्येयगुणकालका अपि, एवं शेषा अपि वर्णरसगन्धा भणितव्या । एवं स्पर्शाना कर्कश मृदुकगुरुकलघुकाणां यथैकप्रदेशावगाढानां भणितं तथा ज्ञातव्या अवशिष्टाः स्पर्शाः । यथा वर्णा भणितास्तथा भणितव्या द्वारम् । २६ ॥ ॥ ॥

॥ मूल ॥

अह भंते ! सव्वजीवप्पबहुं महादंडयं वत्तइस्सामि सव्वत्थोवा गब्भवक्कंतियमणुस्सा मणुस्सीओ संखेज्जगुणाओ बादरतेउकाइयापज्जत्तया असंखिज्जगुणा अणुत्तरोववाइया देवा असंखेज्जगुणा उवरिमगेवेज्जगा देवा संखेज्जगुणा मज्झिमगेवेज्जगा देवा संखेज्जगुणा हेठिमगेवेज्जगा देवा संखेज्जगुणा अच्चुएकप्पे देवा संखेज्जगुणा आरणे कप्पे देवा संखेज्जगुणा पाणए कप्पे देवा संखेज्जगुणा आणएकप्पे देवा संखिज्जगुणा अहे सत्तमाए पुढवीए णेरइया असंखेज्जगुणा छठीए तमाए पुढवीए नेरइया असं० सहस्सारे कप्पे देवा असंखिज्जगुणा महासुक्के कप्पे देवा असंखिज्जगुणा पंचमाए धूमप्पभाए पुढवीए णेरइया असं० लंतए कप्पे देवा असंखेज्जगुणा, चउत्थीए पंकप्पभाए पुढवीए नेरइया असंखेज्जगुणा बंभलोए कप्पे देवा असंखेज्जगुणा तच्चाए वालुयप्पभाए पुढवीए णेरइया असंखेज्जगुणा माहिंदे देवा असंखिज्जगुणा सणकुमारे कप्पे

॥ भ० ॥

अथ भदन्त ! सर्वजीवाल्पबहुत्वं महादण्डकं वर्तयिष्यामि सर्वस्तोका गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्या मानुष्यः संख्यातगुणा बादरतेजःकायिका पर्याप्तका असंख्येयगुणा अनुत्तरोपपातिनो देवा असंख्येयगुणा उपरितनग्रैवेयका देवा संख्येयगुणा मध्यमग्रैवेयका देवा संख्येयगुणा अधस्तनग्रैवेयका देवा संख्येयगुणा अच्युते कल्पे देवा संख्येयगुणा आरण्ये कल्पे देवा संख्येयगुणा प्राणते कल्पे देवा संख्येयगुणा आनते कल्पे देवा. संख्येयगुणा अध सप्तमाया पृथिव्या नैरयिका असंख्येयगुणा षष्ठतमाया पृथिव्या नैरयिका असं० सहस्रारे कल्पे देवा असंख्येयगुणा. महाशुक्रे कल्पे देवा असंख्येयगुणा पञ्चमाया धूमप्रभाया पृथिव्या नैरयिका असंख्येयगुणा लान्तके कल्पे देवा असंख्येयगुणा चतुर्थ्यां पङ्कप्रभाया पृथिव्या नैरयिका असंख्येयगुणा ब्रह्मलोके कल्पे देवा असंख्येयगुणा तृतीयस्या वालुकप्रभाया पृथिव्या नैरयिका असंख्येयगुणा माहेन्द्रे देवा असंख्येयगुणा· सनत्कुमारे कल्पे देवा असंख्येयगुणा द्वितीयस्या शर्करप्रभाया पृथिव्या नैरयिका असंख्येयगुणा· संमूर्छिममनुष्या असंख्येयगुणा ईशाने कल्पे देवा

देवा असंखेज्जगुणा दोच्चाए सक्करप्पभाए पुढवीए णेरइया असं० संमुच्छिममणुस्सा असंखेज्ज० ईसाणे कप्पे देवा असं० ईसाणे कप्पे देवीओ संखे०, सोहम्मे कप्पे देवा संखेज्ज० सोहम्मे कप्पे देवीओ संखेज्जगुणाओ भवणवासीदेवा असंखेज्जगुणा भवणवासिणीओ देवीओ संखिज्जगुणाओ । इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए णेरइया असंखिज्जगुणा खहचरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया पुरिसा असंखेज्जगुणा खहचरपंचिंदियतिरिक्खजोणिणीओ संखिज्जगुणाओ थलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया पुरिसा असंखेज्जगुणा थलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिणीओ संखिज्जगुणाओ जलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया पुरिसा संखेज्जगुणा जलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिणीओ संखिज्जगुणाओ वाणमंतरा देवा संखेज्जगुणा वाणमंतरीओ देवीओ संखेज्ज० जोइसिया देवा संखेज्जगुणा जोइसिणीओ देवीओ संखिज्जगुणाओ खहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया नपुंसया संखिज्ज० थलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया नपुंसया संखेज्ज० जलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया नपुंसया संखेज्ज० चउ

असं० ईशाने कल्पे देव्य संख्येयगुणा सौधर्मे कल्पे देवाः संख्येयगुणा सौधर्मे कल्पे देव्य संख्येयगुणा भवनवासि देवा असंख्येयगुणा भवनवासि देव्य संख्येयगुणा । एतस्या रत्नप्रभाया पृथिव्या नैरयिका असंख्येयगुणा खचरपञ्चेन्द्रिय तिर्यक्योनिकाः पुरुषा असंख्येयगुणा खचरपञ्चेन्द्रियतिर्यक्योनिका (स्त्रिय) संख्ये० स्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका पुरुषा असंख्येयगुणा स्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः (स्त्रिय) संख्ये० जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका पुरुषा संख्येयगुणा जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका (स्त्रिय) संख्ये० वानमन्तरादेवास्संख्येयगुणा वानमन्तर्यो देव्य संख्येयगुणा ज्योतिषिका देवा संख्ये० ज्योतिषिका देव्य संख्ये० खचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका नपुंसका संख्ये० स्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका नपुंसका संख्येयगुणा जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका नपुंसका संख्ये० चतुरिन्द्रिया पर्याप्तका संख्येयगुणा पञ्चेन्द्रिया पर्याप्तका

रिंदिया पज्जत्तया सखेज्ज० पदिया पज्जत्ताविसेसाहिया वेइंदिया पज्जत्ता विसेसा । पंचिंदिया अपज्जत्तया असंखिज्जगुणा चउरिंदिया अपज्जत्तया विसेसाहिया तेइंदिया अपज्जत्तया विसेसाहिया वेइंदिया अपज्जत्तया विसेसाहिया पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया पज्जत्तगा असखेज्जगुणा वादरनिगोदा पज्जत्तगा असखेज्जगुणा वादरपुढविकाइया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा वादरआउकाइया पज्जत्तया असखिज्जगुणा वादरवाउकाइया पज्जत्तगा असखिज्जगुणा वादरतेउकाइया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असखिज्जगुणा वादरनिगोदा अपज्जत्तया सखिज्जगुणा वादरपुढविकाइया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा वादरआउकाइया अपज्जत्तगा असखिज्जगुणा वादरताउकाइया अपज्जत्तया असखेज्जगुणा सुहुमतेउकाइया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा सुहुमपुढविकाइया अपज्जत्तगा विसे

विशेषाधिका द्वीन्द्रिया पर्याप्ता विशेषा० । पञ्चेन्द्रिया अपर्याप्तगा असंख्येयगुणा चतुरिन्द्रिया अपर्याप्तया विशेषाधिका । त्रीन्द्रिया अपर्याप्तया विशेषाधिका द्वीन्द्रिया अपर्याप्तया विशेषाधिका प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका पर्याप्तगा असंख्येयगुणा बादरनिगोदा पर्याप्तगा असंख्येयगुणा। बादरपृथिवीकायिका अपर्याप्तगा असंख्ये० बादराप्कायिका पर्याप्तगा अस० बादरवायुकायिका पर्याप्तगा अस० बादरतेजकायिका अपर्याप्तगा अस० प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका अपर्याप्तगा अस० बादरनिगोदा अपर्याप्ता संख्ये० बादरपृथिवीकायिका अपर्याप्तगा अस० बादराप्कायिका अपर्याप्तगा अस० बादरवायुकायिका अपर्याप्तगा असंख्ये० सूक्ष्मतेज कायिका अपर्याप्तगा अस० सूक्ष्मपृथिवीकायिका अपर्याप्तगा विशेषाधिका सूक्ष्माप्कायिका अपर्याप्तगा विशे० सूक्ष्मवायुकायिका अपर्याप्तगा विशेषा० सूक्ष्मतेज कायिका अपर्याप्तगा अस० सूक्ष्मपृथिवीकायिका पर्याप्तगा विशे० सूक्ष्माप्कायिका पर्याप्तगा विशेषा० सूक्ष्मवायुकायिका पर्याप्तगा विशे० सूक्ष्मनिगोदा अपर्याप्तगा अस० सूक्ष्म

साहिया सुज्ञमच्याउकाइया च्यपज्जत्तया विसेसाहिया सुज्ञमवाउकाइया च्यपज्जत्तगा विसेसाहिया सुज्ञम तेउकाइया पज्जत्तगा च्यसखिज्ज० सुज्ञमपुढविकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया सुज्ञमच्याउकाइया पज्जत्त गा विसेसाहिया सुज्ञमवाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया सुज्ञमणिगोदा च्यपज्जत्ता च्यसखे० सुज्ञमणि गोदा पज्जत्तया सखिज्जगुणा च्यन्नवसिद्धिया च्यणंतगुणा पडिवत्तिय सम्मदिठी च्यणंतगुणा सिद्धा च्यणंत गुणा वादर वणस्सइकाइया पज्जत्तगा च्यणतगुणा वादरपज्जत्ता विसेसाहिया वादरवणस्सइकाइया च्यप ज्जत्तया च्यसखिज्जगुणा वादरपज्जत्तया विसेसाहिया वादरा विसेसाहिया सुज्ञमवणस्सइकाइया च्यपज्ज त्तया च्यसखेज्जगुणा सुज्ञमा च्यपज्जत्तया विसेसाहिया सुज्ञमवणस्सइकाइया पज्जत्तया संखेज्ज० सुज्ञम पज्जत्तया विसेसाहिया सुज्ञमा विसेसाहिया ज्ञवसिद्धिया विसेसाहिया निगोदा जीवा विसेसाहिया वण स्सइजीवा विसेसाहिया एगिंदिया विसेसाहिया तिरिक्खजोणिया विसेसाहिया मिच्छदिठी विसेसाहिया च्यविरया विसेसाहिया छउमत्था विसेसाहिया सजोगी विसेसाहिया ससारत्था विसेसाहिया सव्वजीवा वि सेसाहिया ॥ पन्नवणाए ज्ञगवईए वहुवत्तव्वयपद सम्मत्तं ॥ ३ ॥ ॥ ॥

निगोदा पर्याप्तगा सख्ये० भव्यसिद्धिका. अनन्तगुणा प्रतिपतितसमदृष्टिका अनन्त० सिद्धा अन० वादरवनस्पतिकायिका पर्याप्तगा अन० वाद रपर्याप्ता विशेषाधिता वादरा विशेषाधिताः सूक्ष्मवनस्पतिकायिका अपर्याप्तगा असं० सूक्ष्मा अपर्याप्ता विशे० सूक्ष्मवनस्पतिकायिका. पर्याप्ता सख्ये० सूक्ष्मपर्याप्ता विशेषाधिता सूक्ष्मा विशेषा० भवसिद्धिका विशेषाधिता निगोदा जीवा विशे० वनस्पति जीवा विशे० एकेन्द्रिया विशे० ति र्यग्योनिका विशे० मिथ्यादृष्टयो विशेषा० अविरतयो विशे० छद्मस्था विशेषा० सयोगयो विशे० ससारस्था विशे० सर्वे जीवा विशेषाधिताः ॥ प्रज्ञापनाया भगवत्या श्रीमदुपाध्याय रामचन्द्रगणि शिष्य ऋषि नानकचन्द्र विरचितो बहुवक्तव्यपदानुवादो ऽप्तापीत् ॥ ॥

॥ श्रीजिनायनम ॥ जयतिनमदमरमुकुट प्रतिबिम्बच्छद्मविहितबहुरूप । उद्धर्तुमिवसमस्त विश्वम्भवपङ्कतोवीर ॥ १ ॥ जिनवचनामृतजलधि वन्देयद्बिन्दुमात्रमादाय अभवन्नूनसत्वा जन्मजराव्याधिपरिहीणा ॥ २ ॥ प्रणमतगुरुपदपङ्कज मधरीकृतकामधेनुकल्पलत । यदुपास्तिवशान्निरुपम मश्नुवतेब्रह्मतनुभाज ॥ ३ ॥ अल्पमतिरपिगुरुचरणो पास्तिसमुद्भूतविपुलमतिविभव । समयानुसारतोऽह विदधेप्रज्ञापनाविवृतिम् ॥ ४ ॥ अथ प्रज्ञापने ति क शब्दार्थ ? उच्यते प्रकर्षेण नि शेषकुतीर्थितीर्थकरासाध्येन यथावस्थितस्वरूपनिरूपणलक्षणेन ज्ञाप्यन्ते शिष्यबुद्धा वारोप्यन्ते जीवाजीवादय पदार्था अनयेति प्रज्ञापना ॥ इयञ्च समवायाख्यस्य चतुर्थाङ्गस्यो पाङ्ग, तदुक्तार्थप्रतिपादनार्थ उक्तप्रतिपादन मनर्थक मितिचे न्न उक्तानामपि विस्तरेणा भिधानस्य मन्दमतिविनेयजनानुग्रहार्थतया सार्थकत्वात् ' इयञ्चो पाङ्गमपि प्राय सकलजीवाजीवादिपदार्थशासनात् शास्त्र शास्त्रस्यचादौ प्रेक्षावता प्रवृत्त्यर्थ मवश्य प्रयोजनादित्रितय मङ्गलञ्च वक्तव्य, उक्तच-प्रेक्षावताप्रवृत्त्यर्थ फलादित्रितयस्फुट मङ्गलचैवशास्त्रादौ वाच्यमिष्टार्थसिद्धये

इति ॥ १ ॥ तत्र प्रयोजन द्विधा पर मपरच पुन रेकैक द्विधा कर्तृगतश्रोतृगतच तत्र द्रव्यास्तिकनयमतपर्यालोचनाया मागमस्य नित्यत्वा त्कर्तुरभाव यत तथाचोक्त-एषाद्वादशाङ्गी नकदाचि न्नासी न्नकाचि न्नभवति नकदाचि न्नभविष्यति ध्रुवा नित्या शाश्वतीत्यादिपर्यायास्तिकनयमतपर्यालोच नाया या नित्यत्वा दवश्यभावी तत्सद्भाव, तत्त्वपर्यालोचनाया तु सूत्रार्थोभयरूपत्वा दाऽगमस्या ऽर्थापेक्षया नित्यत्वात् सूत्रापेक्षया चा नित्य त्वा त्कर्तृसिद्धि, तत्र सूत्रकर्तु रनन्तर प्रयोजन सत्त्वानुग्रह, परम्पर त्वपवर्गप्राप्ति रुक्तञ्च-सर्वज्ञोक्तोपदेशेन य सत्त्वानामनुग्रह करोतिदु खतप्ता ना सप्राप्नोत्यचिराच्छिव ॥ २ ॥ तदर्थप्रतिपादकस्या र्हत किम्प्रयोजन मितिचेत् ? न किंचित् कृतकृत्यत्वात्, प्रयोजनमन्तरेणा र्थप्रतिपादनप्रयासो निरर्थक इतिचे ? न्न तस्य तीर्थकरनामकर्मविपाकोदयप्रभवत्वा दुक्तञ्च – तचकहवेज्जइ अगिलाएधम्मदेसणाएउ इति, श्रोतृणा मनन्तर प्रयोजन विवक्षिताध्ययनार्थ परिज्ञान, परम्परन्तु निश्रेयसावाप्ति, तेहि विवक्षित मध्ययन मयत सम्यगवगम्य ससारा द्विरज्यते विरक्ताश्च सत ससारा

द्विनिर्जिगमिषत संयमाध्वनि यथागम सम्यक् प्रवृत्ति मातन्वते प्रवृत्तानाच संयमप्रकर्षवशात उपजायते सकलकर्मक्षया न्निश्रेयसावाप्ति रिति उक्त च-सम्यग्भावपरिज्ञाना द्विरक्ताभवतोजना । क्रियासक्ताह्यविघ्नेन गच्छन्तिपरमागतिमिति ॥ १ ॥ अभिधेय जीवाजीवस्वरूप तच्च प्राक्प्रदर्शितना मव्युत्पत्तिसामर्थ्यमात्रा दवगत सम्बन्धो द्विधा उपायोपेयभावलक्षणो गुरुपर्वक्रमलक्षणश्च तत्राद्य स्तर्कानुसारिण मति तद्यथा-वचनरूपापन्न प्रकरणमुपाय स्तत्परिज्ञान चोपेय, गुरुपर्वक्रमलक्षण केवलश्रद्धानुसारिण मति तच्चाग्रे स्वयमेव सूत्रकृ दभिधास्यति इदञ्च प्रज्ञापनाख्य मुपाङ्ग सम्यग् ज्ञानहेतुत्वा दतएव परम्परया मुक्तिपदप्रापकत्वात् श्रेयोभूत मतो माभू दत्र विघ्न इति विघ्नविनायकोपशान्ताय शिष्याणा मङ्गलबुद्धिपरिग्रहाय स्वतो मङ्गलभूतस्या प्यस्यादिमध्यावसानेषु मङ्गलमभिधातव्य मादिमङ्गल मविघ्नेन शास्त्रपारगमनार्थं मध्यमङ्गल मवगृहीतशास्त्रस्थिरीकरणार्थं मन्तमङ्गल शिष्यप्रशिष्यपरम्परया शास्त्रस्या ऽव्यवच्छेदनाय मुक्तञ्च-तमगलमाईए मज्झेपज्जतएयसत्थस्स । पढमसत्यत्याविग्घ पारगमणायनिद्दिठ ॥१॥ तस्सेवयथिज्जत्थ मज्झिमयमतिमपितस्सेव अत्योच्छित्तिनिमित्त सिस्सपसिस्साइवसस्स ॥२॥ तत्र प्रथमपदगतेन॥ववगयजरमरणभये त्यादि

प्रणाम्यश्रीमहावीर नताशेषसुरेश्वरम् प्रज्ञापनाख्यसूत्रस्य वक्ष्येर्थलोकभाषया ॥ १ ॥ मतिसूरिकृताटीका दर्याद्यामनाहरा स्तत्राम्बपरशिष्याना विनोदार्थंकरीस्वयम् ॥ २ ॥ मद्गुरुवहिदनत्वा जिनयाहिमलाभिधम् स्वपरस्यावबोधाय स्तवर्कोलिख्यतेमया ॥ ३ ॥ अरिहत १ असरीर २ आचार्य ३ उपाध्याय ४ मुनि ५ एहना आदि अक्षरा पाषा ओंकार नीपजे तिके पचूहीनै नमस्कारकरीजै सास्वतापद त्रिकाले। णमोअरिहताण। अरिहताभणी नमस्कार हुवो माहरो स्वेतवर्ण १२ गुण_सहितरहा गुणे विवसहित । णमोसिद्धाण। सिद्धाभणी नमस्कार हुवो गुणे ८ रक्तवर्ण मखेनपे त्रिधसहित। णमोआयरियाण । नमस्कारहुवो आचार्याभणी सौवर्णवर्णे ३६ गुणे गलामाहि ध्यानकरे विधिसहित। णमोउवज्झायाण। नमस्कारहुवो उपाध्यायांभणी नीलवर्ण हियामाहि ध्यानकरे निरारो २५ गुणेसहित। णमोलोएसव्वसाहूण । नमस्कारहुवो सर्वगुणसहित साधुके जिकाभणी स्यामवर्ण २७ गुणस

॥ टीका ॥

ना ॥ दिमगल मिएदेरतास्तवस्य परममङ्गलत्वात्, उपयोगपदगतेन कश्चिद्विशेषज्ञते । उवायोगे पन्नत्ते॰ इत्यादिना मध्यमङ्गल मुपयोगस्य ज्ञानरूप त्वात् ज्ञानस्य कर्मक्षयप्रति प्रधानकारणतया मङ्गलत्वात् नच कर्मक्षयप्रति प्रधानकारणता तस्य नप्रसिद्धा तस्याः साक्षादागमे त्रिधाना त्वयाचाग म अग्रन्नाणीकम्म सवइवहुपाहिवासकोडीहिं ॥ तनाणीतिहिगुत्तो खवेइऊसासमित्तेण ॥ १ ॥ तथासमुद्घातपदगतेन केवलिसमुद्घातपरिसमाप्त्य न्तरकालभाविना सिद्धाधिकारप्रतिबद्धेन निच्छिन्नसव्वदुक्खा जाइजरामरणबंधणविमुक्का सासयनिव्वावाहं चिठंतिसुही सुहंपत्ता ॥ १ ॥ इत्यादिना ऽवसानमङ्गल मधुना दिमङ्गलसूत्र व्याख्यायते ॥ ववगयइत्यादि ॥ सित बद्ध मष्टप्रकार कर्मेधन ध्मात दग्ध जाज्वल्यमानशुक्लध्यानानलेन येस्ते निरुक्तविधिना सिद्धा, अथवा, षिधुगतौ सेधतिस्म अपुनरावृत्त्या निर्वृतिपुरी मगच्छन्, यदिवा, षिधसराद्धौ सिध्यन्ति स्म निष्ठितार्था भवन्ति स्म यद्वा, षिधूशास्त्रे माङ्गल्येच सेधतेस्म शासितारो ऽभवन् मङ्गल्यरूपता वानुभवन्तिस्मेति सिद्धा, अथवा, सिद्धा नित्याअपर्यवसानस्थिति कत्वात् प्रख्याताभव्यै रुपलब्धगुणसन्दोहत्वात् उक्तच – ध्मातसितयेनपुराणकर्म योवागतोनिर्वृतिसौधमूर्ध्नि ख्यातोऽनुशास्तापरिनिष्ठितार्थो य सोऽस्तुसिद्ध कृतमङ्गलोमे ॥ १ ॥ सिद्धाश्च नामादिभेदतो नेकधा ततो यथोक्तसिद्धप्रतिपत्त्यर्थं विशेषण माह–व्यपगतजरामरणभयान्, जरावयोहा निलक्षणा मरणप्राणत्यागरूप भयमिह लोकादिभेदा त्सप्तप्रकार मुक्तञ्च–इहपरलोगादाणा मकम्हाआजीवमरणमसिलोए ॥ इति विशेषतो ऽपुन र्भावत्यागरूपतया अपगतानि भ्रष्टानि जरामरणभयानि येभ्यस्ते तथा तान् त्रिविधेन मनसा वाचा कायेन अनेन योगत्रयव्यापारविकल द्रव्यवन्द न मित्याह अभिवन्द्य अभिमुख वन्दित्वा प्रणम्येत्यर्थ, अनेन समानकर्तृकतया पूर्वकाले क्त्वाप्रत्ययविधानात् नित्यानित्यैकान्तपक्षव्यवच्छेद

॥ मूल ॥

ववगयजरमरणभए सिद्धेअभिवंदिऊणतिविहेणं । वंदामिजिणवरिंदं तिलोक्कगुरुमहावीरं ॥ १ ॥

॥ भाषा ॥

चारित्रगुण रह्या छे जिके तानयणे विधसहित पाचपन्ने नमू, किवे ववगयजरमरणभए सिद्धेअभिवंदिऊणतिविहेण । वंदामिजिणवरिंदे तिलोक्कगुरु महावीर ॥ १ ॥ चरम तीर्थंकर शासन वर्त्तमान तेहभणी नमस्कारकरोछे व्यपगत गयगयाछे जरामरण ८ कर्मरूपवैरी ते आठकर्मखपावी सिद्ध

॥ टीका ॥

माह एकान्तनित्यानित्यपक्षे क्त्वाप्रत्ययस्या सम्भवात् तथा ह्य प्रच्युतानुत्पन्नस्थिरैकस्वभाव नित्य तस्य कथ भिन्नकालक्रियाद्वयकर्तृत्वोपपत्ति राकाल मेकस्वभावत्वे न कस्याएव कस्याश्चित् क्रियाया सदाभावप्रसङ्गात् अनित्य मपि प्रकृत्यैकलक्षणस्थितिधर्मक तत स्तस्यापि भिन्नकालक्रिया द्वयकर्तृत्वायोगो वस्थानाभावा दित्यल विस्तरेणा न्यत्र सुचर्चितत्वात्, क्त्वाप्रत्ययस्यो त्तरक्रिया सापेक्षत्वा दुत्तरा क्रिया माह-वदामिजिणवरि दमित्यादि ॥ सूरवीरविक्रान्तो वीरयतिस्म कषायादिशत्रून् प्रति विक्रामतिस्मेति वीर महाश्चासौ वीरश्च महावीर इदञ्च महावीर इतिनाम ्क कितु यथावस्थित मनन्यसाधारण परीषहोपसर्गादिविषय वीरत्वमपेक्ष्य सुरासुरकृत मुक्तञ्च-अयलेभयभेरवाण खतिसमेपरीस देवेहि कए महावीरे इति, अनेना पायापगमातिशयो ध्वन्यते तकथभूत मित्याह जिनवरेन्द्र जयन्ति रागादिशत्रू नजिनवन्ति तुर्विधा स्तद्यथा श्रुतजिना अवधिजिना मन पर्यायजिना केवलिजिना स्तत्र केवलिजिनत्वप्रतिपत्तये वरग्रहण जिनाना वरा उ वज्ञाविभावस्वभावावभासिकेवलज्ञानकलितत्वात्, जिनवरा स्तेचा तीर्थकरा अपि सत सामान्यकेवलिनो भवन्ति तत स्तीर्थङ्करत्वप्र मेन्द्रग्रहण जिनवराणा मिन्द्रो जिनवरेन्द्र प्रकृष्टपुण्यस्कन्धरूपतीर्थकरनामकर्मोदया त्तीर्थकर इत्यर्थ ' अनेन ज्ञानातिशय पूजातिशय शयमन्तरेण जिनेषु मध्ये उत्तमत्वस्य पूजातिशयमन्तरेण जिनवराणामपि मध्ये इन्द्रत्वस्या योगात् तपुन किभूत मित्याह-त्रैलो ाति यथावस्थित प्रवचनार्थमिति गुरु त्रैलोक्यस्य गुरु स्त्रैलोक्यगुरु स्तथाच भगवान् अधोलोकनिवासिभवनपतिदेवेभ्य स्तिर्यग्लो ासिव्यन्तरनरपशुविद्याधरज्योतिषेभ्य ऊर्द्ध्वलोकनिवासिवैमानिकदेवेभ्यश्च धर्म दिदेश त अनेन वागतिशय माह एतेचा पायापगमातिशयादय ारोप्यतिशया देहसौगन्ध्यादीना मतिशयाना मुपलक्षण तानन्तरेण तेपामसम्भवा त्तत श्चतुस्त्रिंश दतिशयोपेत भगवन्त महावीर वन्दे इत्युक्त

॥ भाषा ॥

हुआ तेहभणी साहमा थई वांदीने मन वचन कायायेंकरी सिद्धाने वादूछु सामान्यकेवलीमाहि प्रधान इन्द्रसमान ते जिणेंद्र अरिहत केहवोछे वीर

॥ टीका ॥

द्रष्टव्य माह ननु ऋषभादीन् व्युदस्य किमर्थं भगवतो महावीरस्य वदन ? उच्यते वर्त्तमानतीर्थाधिपतित्वेना सन्नोपकारित्व दर्शयति ॥ सुयरय णेत्यादि ॥ अत्र प्रज्ञापनेति विशेष्य, शेष सामानाधिकरण्येन वैय्यधिकरण्येनच विशेषण ॥ जिनवराणेति ॥ जिना सामान्यकेवलिन स्तेषामपि वर उत्तम स्तीर्थकृत्वात् जिनवरस्तेन सामर्थ्यान् महावीरेणा न्यस्य वर्त्तमानतीर्थाधिपतित्वाभावात्' इह छद्मस्थक्षीणमोहजिनापेक्षया सामान्यकेवलि नोपि जिनवरा उच्यते तत स्तत्कल्पमाशङ्कासी द्विनेयजन इति तीर्थकृत्त्वप्रतिपत्तये विशेषणान्तर माह भगवता भग समग्रैश्वर्यादिरूप उक्तच-ऐश्व र्यस्यसमग्रस्य रूपस्ययशस श्रिय ॥ धमस्यार्थप्रयत्नस्य षणाभग इतीङ्गना ॥ १ ॥ भगो स्यास्तीति भगवान्, अतिशयने वतुप्रत्ययो ऽतिशायीच भगो वर्द्धमानस्वामिन शेषप्राणिगणापेक्षया त्रैलोक्याधिपतित्वात् तेन भगवता परमार्हत्यमहिमोपेतेने त्यर्थ ' पुन कथम्भूतेने त्याह--भव्यजननिर्वृतिकरे ण भव्य स्तथाविधानादिपरिणामिकभावात् सिद्धिगमनयोग्य सचासौ जनश्च भव्यजन , निर्वृतिर्निर्वाण सकलकर्ममलापगमनेन स्वस्वरूपलाभत परमस्वास्थ्य तद्धेतु, सम्यक्दर्शनाद्यपि कारणेकार्योपचारा न्निर्वृति स्तत्करणशीलो निर्वृतिकर भव्यजनस्य निर्वृतिकरो भव्यजननिर्वृतिकर स्तेन अत्र भव्यग्रहण मभव्यव्यवच्छेदार्थं मन्यथा तस्य नैरर्थक्यप्रसङ्गात् तत इद मापतित भव्यानामेव सम्यग्दर्शनादिक करोति नाभव्याना नचैत दुप पन्न भगवतो वीतरागत्वेन पक्षपातासम्भवात् नैतत्सार सम्यग्वस्तुतत्वापरिज्ञानात्, भगवान्हि सवितेव प्रकाश मविशेषेण प्रवचनार्थ मातनोति केवल मभव्याना तथास्वाभाव्या देव तामसखगकुलानामिव सूर्यप्रकाशो नप्रवचनार्थ उपदिश्यमानोपि उपकाराय प्रभवति तथाचाह वादिमुख्य - सद्धर्मबीजवपनानघकौशलस्य यल्लोकबान्धवतवापिखिलान्यभूवन् ॥ तन्नाद्भुतखगकुलेष्विहतामसेषु सूर्यांशवोमधुकरीचरणावदाता ॥ १ ॥ ततो भव्या

॥ मूल ॥

सुयरयणनिहाणजिण वरेणभवियजणणिव्वुइकरेण ।

॥ भाषा ॥

वर्धमान तीन लोकनां गुरुछे ते महावीरस्वामी प्रति शासनाधीस प्रति ॥ १ ॥ सयरयणतिहाण जिणवरेणभवियजणणिव्वुइकरेण । उवदंसियाभगवया पणवणासव्वभावाण ॥ २ ॥ सिद्धांतरत्न तेहनो निधान घरछे ते भगवत श्रीवीतरागे भविकजीवने मोक्ष सुखनो देणहार कह्या भगवते अरिहंते प्रज्ञा

॥ टीका ॥

नामेव भगवद्वचना दुपकारो जायते इति भव्यजननिर्वृतिकरेणे त्युक्त किमित्याह॥ उवदंसियत्ति ॥ उपसामीप्येन यथाश्रोतॄणां झटिति यथावस्थित वस्तुतत्वावबोधो भवति तथा स्फुटवचनै रित्यर्थ , दर्शिता श्रवणगोचरनीता उपदिष्टा इत्यथ , का सौ प्रज्ञापना ? प्रज्ञाप्यन्ते जीवादयो भावा अनया शब्दसंहत्या इतिप्रज्ञापना , किंविशिष्टे त्यत आह–श्रुतरत्ननिधान ' इह रत्नानि द्विविधानि भवन्ति तद्यथा द्रव्यरत्नानि भावरत्नानि तत्र द्रव्यर त्नानि वैडूर्यमरकतेन्द्रनीलादीनि भावरत्नानि श्रुतव्रतादीनि तत्र द्रव्यरत्नानि नतात्विकानीति भावरत्नै रिहाधिकार स्तत एवसमास श्रुतान्यवरत्नानि श्रुतरत्नानि ननु श्रुतानिचरत्नानिच नापि श्रुतानि रत्नानीवेति कुत इतिचे ? दुच्यते प्रथमपदे श्रुतव्यतिरिक्तै द्रव्यरत्नै रिहाधिकाराभावात्' द्वितीयप क्षेतु श्रुतानामेव तात्विकरत्नत्वात् शेषरत्नै रुपमाया अयोगा न्निधानमिव निधाम श्रुतरत्नाना निधान श्रुतरत्ननिधान कया प्रज्ञापने त्यत आह सर्वभावाना सर्वेच ते भावाश्च सर्वभावा जीवाजीवाश्रवबन्धसंवरनिर्जरामोक्षा , तथा ह्यस्या प्रज्ञापनाया षट्त्रिंश त्पदानि तत्र प्रज्ञापनाबहुवक्तव्य विशेषचरमपरिणामसञ्ज्ञेषु पञ्चसु पदेषु जीवाजीवाना प्रज्ञापना , प्रयोगपदे क्रियापदेचाश्रवस्य कायवाङ्मन कर्मयोग आश्रव इतिवचनात् कर्मप्रकृ तिपदे बन्धस्यप्ररूपणा , समुद्घातपदकेवलिसमुद्घातप्ररूपणाया संवरनिर्जरामोक्षाणा त्रयाणा शेषेषुतु स्थानादिषु पदेषु क्वचि त्कस्यचिदिति अथवा सर्वभावाना मिति द्रव्यक्षेत्रकालभावाना मेतद्व्यतिरेकेणा न्यस्य प्रज्ञापनीयस्या भावात्' तत्र प्रज्ञापनापदे जीवाजीवद्रव्याणा प्रज्ञापना , स्थानपदे जीवाधारस्य क्षेत्रस्य , स्थितिपदे नारकादिस्थितिनिरूपणात् कालस्य , शेषपदेषु सम्यग्ज्ञानादिपर्यायव्युत्क्रान्त्युच्छ्वासादीना भावाना मिति , अस्याश्च गाथाया अज्झयणमिणं चित्तमित्यनया सहाभिसम्बन्ध केवलयेनेय सत्वानुग्रहाय श्रुतसागरादुद्धृता असाव त्यासन्नतरोपकारित्वा दस्माद्विधाना नमस्का रार्ह इति तन्नमस्कारविषय मिदमपान्तरालएवा न्यकर्तृक गाथाद्वय–वायगवरवसाउ इत्यादि ॥ वाचका पूर्वविदो वाचकाश्च तेवराश्च वाचकवरा

उवदंसियाभगवया पन्नवणासव्वभावाणं ॥ २ ॥

॥ मूल ॥

पना जणावणा सर्वभाव जीवा जीवादिपदार्थ ॥ २ ॥ वायगवरवंसाओ ते वीसइमेणधीरपुरिसेण । दुद्धरधरेणमुणिणा पुव्वसुयसमिद्धबुद्धीणं ॥ ३ ॥ वाच

॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

याचकप्रधाना स्तेपा वश प्रवाहो याचकवरवश स्तस्मिन्' सूत्रेच पञ्चमीनिर्देश प्राकृतत्वात्, प्राकृतेहि सर्वासुविभक्तिषु सर्वाअपि विभक्तयो यथा योग प्रवर्त्तन्ते, तथाचाह पाणिनि स्वप्राकृतव्याकरणे-व्यत्ययोप्यासामिति, त्रयोविंशतितमेन तथाच सुधर्मस्वामिन आरभ्य भगवानार्यश्याम स्त्रयोविंशतितमएव, किंभूतेन धीरपुरुषेण, धीर्बुद्धि स्तया राजत इतिधीर धीरश्चासौ पुरुषश्च धीरपुरुष स्तेन, तथा दुर्द्धराणि प्राणातिपातादिनिवृत्तिलक्षणानि पञ्चमहाव्रतानि धारयतीति दुर्द्धरधर स्तेन' तथा मन्यते जगतस्त्रिकालावस्था मिति मुनि स्तेन विशिष्टसंवित् समन्वितेनेत्यर्थ ' पुन कथंभूतेनेत्याह-पूर्वश्रुतसमृद्धबुद्धिना, पूर्वाणिच तत्श्रुतच पूर्वश्रुत तेन समृद्धा वृद्धिमुपागता बुद्धि यस्य स पूर्वश्रुतसमृद्धबुद्धि स्तेन, आह यो वाचकवरवशान्तर्गत स पूर्वश्रुतसमृद्धिबुद्धिरेव भवति तत किमनेन विशेषणेन? सत्यमेतत् किन्तु पूर्वविदोपि षट्स्थानकपतिता भवन्ति, तथाच चतुर्दशपूर्वविदामप्य धिकृत्य षट्स्थानक वक्ष्यति तत आधिक्यप्रदर्शनार्थ मिद विशेषण मित्यदोष, समिद्धबुद्धीणेत्यत्र णाशब्दस्य ह्रस्वत्व द्विशब्दस्यच दीर्घता आर्षत्वात्, तथा श्रुतमनर्वाक्पारत्वा त्सुनापितरत्नयुक्तत्वाच्च सागरइव श्रुतसागर, व्याघ्रादिभि गौणि स्तद्गुणानुक्ताविति समास' तस्मात् ॥ विएजणाति ॥ देशीयवचनमेतत् साम्प्रतकालीनपुरुषयोग्य वीनयित्वाइत्यर्थ येनेद प्रज्ञापनारूप श्रुतरत्न मुत्तम प्रधान, प्राधान्यच न शेषश्रुतरत्नापेक्षया किंतु स्वरूपतो, दत्त शिष्यगणाय तस्मै भगवते ज्ञानैश्वर्यधर्मादिवते' आरात् सर्वहेयधर्मेभ्यो यात प्राप्तो गुणै रित्यार्य सचासौ श्यामश्च आर्यश्याम स्तस्मै, सूत्रेचषष्ठी चतुर्थ्यर्थे द्रष्टव्या ॥ छठिविभत्तीएभन्नइचउत्थीतिवचनात्, अधुनोक्तसंबंधेय गाथा ॥ अज्झयणमित्यादि ॥

॥ मूल ॥

वायगवरवसाउ तेवीसइमेणधीरपुरिसेण । दुद्धरधरेणमुणिणा पुव्वसुयसमिद्धबुद्धीण ॥ ३ ॥ सुयसागराविएऊण जेणसुयरयणमुत्तमदिन्न । सीसगणस्सभगवउ तस्सणमोअज्जसामस्स ॥ ४ ॥ अज्झयणमिणचित्त सुय

॥ भाषा ॥

क प्रधान वशानक्रमे सुधर्मास्वामी आरम्भ तेवीसमा धीर पुरुष स्यामाचार्य दुर्द्धर महाव्रतना धरणहार मुनि तिण पूर्वरूप श्रुत तिणें साहतके बुद्धिजि णारो ॥ ३ ॥ सुयसागराविणेऊण जेणसुयरयणमुत्तमदिन्न । सीसगणस्सभगवओ तस्सनमोअज्जसामस्स ॥४॥ श्रुत सागरमाहिथी वीणने काढ्यो जिणें ए

॥ टीका ॥

अध्ययनमिद प्रज्ञापनाख्य, ननु यदीयमध्ययन किमित्यस्यादा वनुयोगादिद्वारोपन्यासो नक्रियते ? उच्यते नायनियमो यदवश्य मध्ययनादा वुप क्रमाद्युपन्यास- क्रियत इति, अनियमोपि कुतोवसीयत इतिचेत्? उच्यते नन्द्यध्ययनादि प्रदर्शनात्, तथा चित्रार्थाधिकारयुक्तत्वा चित्र श्रुतमेव रत्न श्रुतरत्न दृष्टिवादस्य द्वादशस्याङ्गस्य निस्यन्दइव दृष्टिवादनिस्यन्द ' सूत्रेनपुंसकतानिर्देश प्राकृतत्वात्, यथावर्णित भगवता श्रीमन्महावीरवर्द्धमा नस्वामिना इन्द्रभूतिप्रभृतीना मध्ययनार्थस्य वर्णितत्वात्, अध्ययन वर्णितमित्युक्त अहमपि तथा वर्णयिष्यामि आह–कथमस्य छद्मस्थस्य तथावर्णयितु शक्ति ? नैषदोष सामान्येना भिधेयपदार्थवर्णनमात्र मधिकृत्यैव मभिधानात्, तथाच अहमपि तथावर्णयिष्यामीति किमुक्तभवति तदनुसारेण वर्णा यिष्यामि नस्वमनीषिकयेति, अस्याच प्रज्ञापनाया षट्त्रिंशत्पदानि भवन्ति पद प्रकरण मर्थाधिकारइति पर्याया, तानिच पदान्यमूनि॥ पन्नव णेत्यादि गाथाचतुष्टये ॥ तत्र प्रथमम्पद प्रज्ञापनाविषय मन्नमधिकृत्य प्रवृत्तत्वा त्प्रज्ञापना । १ । एव द्वितीय स्थानानि । २ । तृतीय बहुवक्तव्य । ३ । चतुर्थ स्थिति । ४ । पञ्चम विशेष । ५ । षष्ठ व्युत्क्रान्ति व्युत्क्रान्तिलक्षणाधिकारयुक्तत्वात् ।६। सप्तम मुच्छ्वास ।७। अष्टम सञ्ज्ञा ।८।

॥ मूल ॥

रयणंदिठिवायणीसद । जहवंणियभगवया अहमवितहवणइस्सामि ॥ ५ ॥ पन्नवणा १ ठाणाइ २, बहुव त्तव्वं ३ ठिई ४ विसेसाय ५। वक्कंती ६ उस्सास, ७ सन्ना ८ जोणीय ९ चरिमाइ १० ॥ १ ॥ भासा ११ सरीर १२

॥ भाषा ॥

इवा श्रुतसागर मांहियी श्रुतरत्न उत्तमदीधा शिष्य समूहने भगवत तिण आर्य स्यामाचार्यने नमस्कार करूछू ॥ ४ ॥ अज्झयणमिणचित्त सुयरयण दिठिवायणीसद । जहवणियभगवया अहमवितहवणइस्सामि ॥ ५ ॥ अध्ययन प्रज्ञापनानामे अनेकाधिकार युक्त श्रुतरत्न दृष्टिवाद बारह अगनो रहस्य रसभूत जिम वर्ण्यो भगवन्ते वीतरागें छू तिमे तेहने अनुसारे तिम वर्णवस्यु ॥ २ ॥ पणवणाठाणाई बहुवत्तव्वठिइविसेसाय । वक्कतीउस्सासस्सणीजो णीयचरमाई ॥६॥ जीवादि प्रज्ञापनापद १ तेहनो ठामनो बीजोपद २ अल्पबहुत्व ३ कहयो, तेहनो स्थितिपद ४ तेहनो विशेषपद प्ररूपणा ५ व्युत्क्रा न्ति लक्षणाधिकारपद ६ उत्स्वासपद ७ सञ्ज्ञाहारपद ८ योनिपद ९ चरमउहे शोने प्रवर्त्तवो १० ॥६॥ भासासरीरपरिणा मकसाएइ दिंगपओगेय । लेसा

॥ टीका ॥

णाम । १३ । चतुर्दश कषाय । १४ । पञ्चदश मिन्द्रिय । १५ । षोडश प्रयोग । १६ । सप्तदश लेश्या । १७ । अष्टादश कायस्थिति । १८ । एकोनविंशतितम सम्यक्त्वम् । १९ । विंशतितम मन्तक्रिया । २० । एकविंशतितम मवगाहनास्थान । २१ । द्वाविंशतितम क्रिया । २२ । त्रयोविंशतितम कम । २३ । चतुर्विंशतितम कर्मणो बन्धक ' तस्मिन् हि यथाजीव कर्मणो बन्धको भवति तथा प्ररूप्यत इति तथानाम । २४ । एव पञ्चविंशतितम कर्मवेदक । २५ । षड्विंशतितम वेदस्य बन्धकइति वेदयते ऽनुभवतीति वेद स्तस्य बन्धएव बन्धक ' किमुक्तम्भवति कति प्रकृती वेदयमानस्य कतिप्रकृतीना बन्धो भवतीति तत्र निरूप्यते तत स्तद्वेदस्य बन्ध इति नाम । २६ । एव का प्रकृति वेदयमान कतिप्रकृती वेंदयत इत्यर्थप्रतिपादक वेदवेदकनाम सप्तविंशतितम । २७ । अष्टाविंशतितम माहारप्रतिपादकत्वा दाहार ।२८। एव मेकोनत्रिंशत्तम मुपयोग

॥ मूल ॥

परिणा, म १३ कसाय १४ इंदिय १५ प्पजोगेय १६ । लेसा १७ कायठिइया १८, सम्मत्ते १९ अंतकिरियाय २० ॥ २ ॥ उगाहणसठाणा २१, किरिया २२ कम्मेय २३ कम्मस्स । बधए २४ कम्मवेयए २५, वेयस्सबधए २६ वेयवेयए २७ ॥ ३ ॥ आहारे २८ उवओगे २९, पासणया ३० सन्नि ३१ सजमे ३२ चेव । ओही ३३ पवियारण ३४

॥ भाषा ॥

कायठिइया सम्मत्तिअतकिरियाय ॥ ७ ॥ तेहनो भाषापद ११ शरीरकारणपद १२ परिणामपदाधिकार १३ कषायपद १४ इन्द्रियपद १५ प्रयोगद्वारपद १६ लेश्यापद १७ कायस्थितिपदद्वार १८ सम्यक्त्वनामपद १९ अतक्रियाधिकारपद २० ॥ ७ ॥ उग्गहणसठाणे किरियाकम्मेइयावरेकम्म । स्सबधएकम्मस्सवेयए वेयस्सबधए वेयवेयए ॥ ८ ॥ अवगाहनास्थानपद २१ क्रियापद २२ कर्मपद २३ कमरे जीवरे बधक्रिमथाय जीव कर्मने किमबाधे २४ कर्मनो वेदवो भोगवो २५ वेदबधक केतलीप्रकृतिबाधे २६ वेदनो केतला बधकरे कर्मप्रकृतिकरे, वेदने बाधीने वेदेकिम २७ ॥ ८ ॥ आहारेउवओगे फासणयासण्णिसजमेचेव । ओही पवियारणवेयणाएतत्तासमुग्घाए ॥ ९ ॥ आहारपद २८ उपयोगपद २९ फरसवो जवो ३० सज्ञापद ३१ सयमपद ३२ निश्चे अवधिज्ञानपद ३३ प्रविचारणापद ३४

॥ टीका ॥

। २९ । त्रिंशत्तम पासणयत्ति दर्शनता । ३० । एकत्रिंशत्तम सञ्ज्ञा । ३१ । द्वात्रिंशत्तम संयम । ३२ । त्रयस्त्रिंशत्तम मवधि । ३३ । चतुस्त्रिंशत्तम प्रविचारणा । ३४ । पञ्चत्रिंशत्तम वेदना । ३५ । पट्त्रिंशत्तम समुद्घात । ३६ । तदेव मुपन्यस्तानि पदानि ॥ साम्प्रत यथाक्रम पदगतानि सूत्राणि वक्तव्यानि तत्र प्रथमपदगत मिद मादिम सूत्र–सेकित पन्नवणा इति ॥ अथास्य सूत्रस्य क प्रस्ताव ? उच्यते प्रश्नसूत्रमिदमेतच्चादा वुपन्यस्त मिदं ज्ञापयति पृच्छतो मध्यस्थबुद्धिमतो र्थिनो भगवदर्हदुपदिष्टतत्वप्ररूपणाकार्यो नशेपस्य तथा चोक्त–मध्यस्थोबुद्धिमानर्थो श्रोतापात्रमितिस्मृत । तत्र सेशब्दो मागधदेशीप्रसिद्धनिपात स्तत्र शब्दार्थं अथवा अथशब्दार्थे सच वाक्योपन्यासार्थ , किमितिपरप्रश्ने, तन्ति तावदितिद्रष्टव्य' तच्च क्रमो द्योतने, तत एप समुदायार्थ , तिष्ठन्तु स्थानादीनि पदानि प्रष्टव्यानि याव क्रमवर्त्तित्वात् प्रज्ञापनानन्तरञ्च तेपा मुपन्यस्तत्वात्, तत्र तावदे तावत् पृच्छामि किम्प्रज्ञापनेति ? अथवा प्राकतशैल्या अभिधेयवल्लिङ्गवचनानि योजनीयानीति न्याया देवन्द्रष्टव्य । तत्र कातावत्प्रज्ञापनेति ? एव सामान्येन केनचि त्प्रश्ने कृतेसति भगवान् गुरु शिष्यवचनानुरोधेना दरार्थं किञ्चि च्छिष्योक्त प्रत्युच्चार्याह–पन्नवणादुविहा पन्नत्ताइति ॥ अने नचागृहीतशिष्याभिधानेन निर्वचनसूत्रेणैतदाचष्टेन सर्वमेवसूत्र गणधरप्रश्नतीर्थकरनिर्वचनरूप किन्तु किञ्चिदन्यथापि वाहुल्येनतु तथारूप यत उक्त–अत्यभासइअरहा सुतगयतिगणहरानिउण मित्यादि ॥ तत्र प्रज्ञापनेति पूर्ववत् द्विविधा द्विप्रकारा प्रज्ञप्ता प्ररूपिता यदा तीर्थकराएव निर्वक्तार स्तदा यमर्थो वसेयो ऽन्यैरपि तीर्थकरै र्यदा पुन रन्य कश्चि दाचार्य स्तन्मतानुसारी तदा तीर्थकरगणधरै रिति, द्वैविध्यमेवो पदर्शयति तजहा जीवपन्नवणाय अजीवपन्नवणाय ॥ तद्यथेति वक्ष्यमाणभेदकथनप्रकाशनार्थ , जीवन्ति प्राणान् धारयन्तीति जीवा , प्राणाश्च द्विधा द्रव्यप्राणा

॥ मूल ॥

वे, यणा ३५ यत्तीसमुग्घाए ३६ ॥ ४ ॥ से किं त पन्नवणा ? पन्नवणा दुविहा पंनत्ता, तंजहा—जीवपन्नव

॥ भाषा ॥

वेदनापद ३५ तिवारेपछी समुद्घातपद। ३६। सकितपन्नवणा २ दुविहापन्नत्ता तंजहा। ते कुण ते ३६ द्वारप्रज्ञापना उत्कृष्ट जितायणा जाणपणा रोभेद टीयप्र कारे कह्या तेकिम। जीवपन्नवणा अजीवपन्नवणा। जीवनो जाणपणो ते जीवप्रज्ञापना, वली अजीवनो जाणपणो प्रकाशवो ते अजीवप्रज्ञापना । सेकित अ

पगतसमस्तकर्मसङ्गा सिद्धा, जीवाना प्रज्ञापना जीवप्रज्ञापना, नजीवा अजीवा जीवविपरीतस्वरूपा स्तेच धर्माधर्माकाशपुद्गलास्तिकायाद्धासमयरूपा स्तेषा प्रज्ञापना अजीवप्रज्ञापना' चकारौ द्वयोरपि प्राधान्यख्यापनार्थौ, नखल्विहान्यतरस्या प्रज्ञापनाया गुणभाव एव सर्वत्राप्यतरगमनिका कार्या, तदेव सामान्येन प्रज्ञापनाद्वय मुपन्यस्य सम्प्रति विशेषस्वरूपावगमार्थ मादावल्पवक्तव्यत्वा दजीवप्रज्ञापना स्प्रतिपिपादयिषु स्तद्विषय प्रश्नसूत्रमाह-सकित अजीवपन्नवणा ? अथ किन्तत् अजीवप्रज्ञापनेति अथवा, कासा अजीवप्रज्ञापना-सूरिराह ? अजीवपन्नवणा दुविहा पण्णत्ता तजहा इत्यादि ॥ अजीवप्रज्ञापना द्विविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा रूप्यजीवप्रज्ञापनाच अरूप्यजीवप्रज्ञापनाच, रूपमेषा मस्तीतिरूपिण रूपग्रहण गन्धादीना मुपलक्षण तद्व्यतिरेकेण तस्यासम्भवात् तथाहि प्रतिपरमाणुरूपरसगन्धस्पर्शा उक्तञ्च—कारणमेवतदन्त्य सूक्ष्मोनित्यश्चभवतिपरमाणु । एकरसगन्धवर्णो द्विस्पर्शोकार्यलिङ्गश्च ॥ १ ॥ तस्मा दव्यतिरेक परस्पर रूपादीनामिति अथवा रूप नाम स्पर्शरूपादिसम्मूर्च्छनात्मिकामूर्त्ति स्तदेषामस्तीति रूपिण ' रूपिणश्च ते अजीवाश्च रूप्यजीवा स्तेषा प्रज्ञापना रूप्यजीवप्रज्ञापना पुद्गलस्वरूपा जीवप्रज्ञापनेति यावत्, पुद्गलाना मेव रूपादिमत्वात्, रूपिव्यतिरेकेण रूपिणो धर्मास्तिकायादय स्तेचते अजीवाश्च अरूप्यजीवा स्तेषा प्रज्ञापना ऽरूप्यजीवप्रज्ञापना चशब्दौ प्राग्वत्, तत्राल्पवक्तव्यत्वात् प्रथमतो ऽरूप्यजीवप्रज्ञापनाचिकीर्षु रिदमाह-सेकितमित्यादि॥सेशब्दो ऽथशब्दार्थ , अथ कासा अरूप्यजीवप्रज्ञापना ? सूरिराह—

॥ मूल ॥

णाय अजीवपण्णवणाय। सेकित अजीवपण्णवणा २ दुविहा पण्णत्ता, तजहा—रूविअजीवपण्णवणा अरूविअजीवपण्णवणाय। सेकित अरूविअजीवपण्णवणा ? अरूविअजीवपण्णवणा दसविहा पण्णत्ता तजहा—

॥ भाषा ॥

जीवपण्णवणा २ दुविहा पण्णत्ता तजहा। तेकुण अजीव प्रज्ञापना शिष्यपूछे तवगरु कहै अजीवप्रज्ञापनाना दोयभेद ते कहेछे—ते जिम रूविअजीवपण्णवणा अरूविअजीवपण्णवणाय। रूपी अजीव प्रज्ञापना रूप गृहण गन्धादि लक्षणकहिये, अरूपी अजीव परमाणु प्रज्ञापना परमाणु सूक्ष्मअरूपी एक द्विप्रदेशी उ

॥ टीका ॥

अरूप्यजीवप्रज्ञापना दशविधा दशप्रकारा प्रज्ञप्ता अरूप्यजीवाना दशविधत्वात् तत्प्ररूपणादिदशविधोक्ता, तदेव दशविधत्व दर्शयति-तजहेत्यादि ॥ तद्यथेति वक्ष्यमाणभेदकथनोद्योतनार्थ, त इशविधत्व यदिवा तदि त्यव्यय सर्वलिङ्गवचनेषु, सा दशविधा अरूप्यजीवप्रज्ञापना यथाभवति तथादर्श्यते ॥ धम्मत्थिकायइति ॥ जीवाना पुद्गलानाञ्च स्वभावतएव गतिपरिणामपरिणताना तत्स्वभावधरणात् तत्स्वभावपोषणा द्धर्म अस्तयश्चेह प्रदेशा स्तेषा काय सङ्घात, गणकाय्यनिकाये स्वधेवमेतद्वेरासीय इतिवचनात् ॥ अस्तिकाय प्रदेशसङ्घात इत्यर्थ, धर्मश्चासौ अस्तिकायश्च धर्मास्तिकाय, अनेनच सकलमेव धर्मास्तिकायरूप मवयविद्रव्यमाह, अवयवीनाम अवयवाना तथारूपसङ्घातपरिणामविशेषएव नपुन रवयव द्रव्येभ्य पृथगर्थान्तरद्रव्य तथानुपलम्भात् तथाह्य एवहि आतानवितानरूप सङ्घातपरिणामविशेषमापन्ना लोके पटव्यपदेशभाज उपलभ्यन्ते न तदतिरिक्त पटाख्यनाम उक्तञ्चान्यैरपि-तन्त्वादिव्यतिरेकेण नपटाद्युपलम्भन तन्त्वादयोविशिष्टाहि पटादिव्यपदेशिन ॥ १ ॥ कृत प्रसङ्गेना न्यत्र चिन्तितत्वा देतद्वादस्य, तथाधर्मास्तिकायस्य देशइति तस्यैव धर्मास्तिकायस्य बुद्धिविकल्पितो द्व्यादिप्रदेशात्मको विभाग ॥ धम्मत्थिकायस्सपदे सा इति ॥ धर्मास्तिकायस्य प्रदेशा इति प्रकृष्टा देशा प्रदेशा निर्विभागाभागा इतिभाव, स्तेषा सङ्ख्या लोकाकाशप्रमाणत्वा त्तेषां, अतएवच बहुवचन, धर्मास्तिकायप्रतिपक्षभूतो ऽधर्मास्तिकाय किमुक्त भवति जीवपुद्गलाना स्थितिपरिणामपरिणताना तत्परिणामोपष्टम्भको मूर्त्तोऽसङ्घात प्रदेशसङ्घातात्मको ऽधर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकायस्य देश इत्यादि पूर्ववत्, तथा आङिति मर्यादया स्वस्वभावाऽपरित्यागरूपया काशन्ते स्व

॥ मूल ॥

धम्मत्थिकाए धम्मत्थिकायस्सदेसे धम्मत्थिकायस्सपएसा, अधम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकायस्सदेसे अधम्मत्थि

॥ भाषा ॥

तथ—कारणमेवनदत्य सूक्ष्मोनित्यथभवतिपरमाणु। एकरसगन्धवर्णो द्विस्पर्शोकार्यलिङ्गश्च ॥१॥ सेकितअरूपिअजीवपण्णवणा२ दसविहापण्णत्ता तंजहा।ते कुण अजीवप्रज्ञापना अरूपीना दशभेद कह्याछै, ते जिम शिष्यने गुरु कहैछै—धम्मत्थिकाए धम्मत्थिकायस्सदेसे धम्मत्थिकायस्सपएसा।२। धर्मास्तिकाय पुद्ग लादिमध्ये गमनकारता साहाय्यदे ते धर्मास्तिकाय, देशसमग्र सर्वदेशनो जेकोई विभाग ते देशकहिये, हिवे प्रदेश धर्मास्तिकायनो प्रदेश निर्विभाग सूक्ष्म

॥ टीका ॥

रूपेण प्रतिभासन्ते स्मिन् व्यवस्थिता पदार्था इत्याकाश, यदास्वभिविधावाङ् तदा आङिति सर्वभावाभिव्याप्त्या काशते इत्याकाश, अस्त य प्रदेशा स्तेषा कायो स्तिकाय, आकाशञ्च तत् अस्तिकाया श्चाकाशास्तिकाय, आकाशास्तिकायस्य इत्यादि पूर्ववन्नवर प्रदेशा अनन्ता द्रष्टव्या, अलोकस्या नन्तत्वात् ॥ अद्धेति ॥ कालस्याख्या, अद्धाचासौ समयश्च अद्धासमय , अथवा, अद्धाया समयो निर्विभागोभाग , अयञ्च एकएव वर्त मान परमायत मन्त्रा तीतानागता समया स्तेषा यथाक्रम विनष्टानुत्पन्नत्वेना सत्वात् तत कायत्वाभावइतिदेशप्रदेशकल्पनाविरह , आवलि कादयस्तु पूर्वसमयविरोधेनैवोतरसमयसद्भावइति, तत समुदयसमित्याद्यसम्भवेन व्यवहारार्थमेव कल्पिता इति द्रष्टव्य, तथा मीपा मित्थ क्रमोपन्या से किम्प्रयोजन ? मुच्यते इह धर्मास्तिकाय इतिपद मङ्गलभूत मादौ धर्मशब्दान्वितत्वात्, पदार्थप्ररूपणाच सम्प्रतिप्रथमत उत्क्षिप्ता वर्त्तते ततो मङ्गलाय मादौ धर्मास्तिकायस्यो पादान, धर्मास्तिकायप्रतिपक्षभूतश्चा धर्मास्तिकाय स्तदनन्तर मधर्मास्तिकायस्य ' द्वयोरपि चानयो राधारभूत माकाशमिति तदनन्तर माकाशास्तिकायस्य, तत पुन रजीवसाधर्म्या द्धा समयस्य, अथवा, इह धर्माधर्मास्तिकायौ विभू नभवत स्तद्विभूत्वे तत्सामर्थ्यतो जीवपुद्गलाना मस्खलितप्रचारप्रवृत्तो लोकालोकव्यवस्थानुपपत्ते, रस्तिच लोकालोकव्यवस्था तत्र २ प्रदेशे सूत्रे साक्षाद्दर्शनात्, ततो यावतिनेत्र ऽवगाढौ तावत्प्रमाणोलोक शेषस्त्वलाक इति सिद्ध मुक्तच–धर्माधर्मविभुत्वात् सर्वत्रचजीवपुद्गलविचारात् । नालोक कश्चिरस्या न्नच सम्मतमेतदार्याणाम् ॥१॥ तस्माद्धर्माधर्मौ ववगाढौव्याप्यलोकरवसर्वं ॥ एवह्विपरिच्छिन्न सिद्ध्यतिलोकस्तदविभुत्वात् ॥२॥ ततएव लोकालोकव्यवस्था

॥ मूल ॥

कायस्सपएसा आगासत्थिकाए आगासत्थिकायस्सदेसे आगासत्थिकायस्सप्पदेसा अद्धासमए१० सेत्तअरूवि

॥ भाषा ॥

प्रदेश कह्यो । अधम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकायस्सदेसे अधम्मत्थिकायस्सपएसा ६ । धर्मास्तिकायनो प्रतिपक्षो ते अधर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकायनोदेश इम अधर्मास्तिकायनाप्रदेश असंख्यात लोकाकाशप्रमाण प्रदेशकहिये । आगासत्थिकाए आगासत्थिकायस्सदेसे आगासत्थिकायस्सपएसा ४ । आकाशास्ति काय स्वभावें शोभे ते इमहोज ते आकाशास्तिकायनोदेश इमहोज आकाशास्तिकायनो प्रदेश । अद्धासमए १० । कालसमय ॥१०॥ सेत्त अरूविअजीव

॥ टीका

हेतू धर्माधर्मास्तिकाया वित्यनयो रादावुपादान, त्त्रापि माङ्गलिकत्वात् प्रथमतो धर्मास्तिकायस्य' तत्प्रतिपक्षत्वा त्ततो ऽधर्मास्तिकायस्य, ततो लोकालोकव्यापित्वा दाकाशास्तिकायस्य, तदनन्तर लोके समयासमयक्षेत्रव्यवस्थाकारित्वा दद्धा समयस्य, एव मागमानुसारेणा न्यदपि युक्त्यनुपा ति वक्तव्य मित्यल प्रसङ्गेन' प्रकृतोपसहारमाह–सेत्तअरूविअजीवपन्नवणा ॥ सैषा अरूप्यजीवप्रज्ञापना' पुन राह विनेय –सेकितमित्यादि ॥ अथकासा रूप्यजीवप्रज्ञापना ? सूरि राह–रूप्यजीवप्रज्ञापना चतुर्विधा प्रज्ञप्ता तद्यथा–स्कन्धा' स्कन्दन्ति शुष्यन्ति धीयन्तेच पुष्यन्ते पुद्गलाना विघटनेन घटनेनवेति स्कन्धा पृषोदरादय इतिरूपनिष्पत्ति, अत्रबहुवचन पुद्गलस्कन्धाना मानन्त्य ख्यापनार्थ च, न चा नन्त्यमनुपपन्न मागमे भिधाना, तथा च वक्ष्यन्ति–दव्वतोणपुग्गलत्थिकायणतादव्वाइत्यादि ॥ स्कन्धदेशा स्कन्धानामेव स्कन्धत्वपरिणाममजहन्तो बुद्धिपरिकल्पिता द्व्यादि प्रदेशात्मका विभागा, अत्रापि बहुवचन मनन्तप्रादेशिकेषु तथाविधेषु स्कन्धेषु प्रदेशानन्तत्वसम्भावनार्थ स्कन्धाना स्कन्धत्वपरिणामपरिणताना बुद्धिपरिकल्पिता प्रकृष्टादेशा निर्विभागाभागा परमाणव इत्यर्थ, स्कन्धप्रदेशा अत्रापि बहुवचन प्रदेशानन्तत्वसम्भावनार्थ, परमाणुपुद्गला इति परमाश्चते अणवश्च परमाणवो निर्विभागद्रव्यरूपा स्ते च ते पुद्गलाश्च परमाणुपुद्गला, स्कन्धत्वपरिणामरहिता केवला परमाणव इत्यर्थ, तेस

॥ मूल ॥

अजीवपन्नवणा ॥ सेकित रूविअजीवपन्नवणा रूविअजीवपन्नवणा चउव्विहा पन्नत्ता तजहा–खधा खंधदेसा खधप्पएसा परमाणुपोग्गला ४ । तेसमासओ पचविहा पन्नत्ता, तंजहा–वन्नपरिणया गधपरिणया रस

॥ भाषा

पन्नवणा । ते जिम अरूपी अजीव प्रज्ञापना जाणवो । सेकि त रूवीअजीवपन्नवणा २ चउव्विहा पन्नत्ता तजहा । ते शिष्यकहै कुण रूपी जिम अजीवप्रज्ञापना चाहि गुरुकहै, अजीव प्रज्ञापनारा चारभेद कह्या ते जिम कहछू । खधा खधदेसा खधप्पएसा परमाणुपुग्गला ४ । खध ते समस्तवस्तु, देश ते कोइएक विभाग, प्रदेश ते कहिये निर्विभाग सूक्ष्मतेप्रदेश, परमाणु ते निर्विभागरूप अनन्तप्रदेशे निष्पन्न ते परमाणुपुद्गल कहिये । ते समासओ पचविहा पन्नत्ता तजहा । ते परमाणुपुद्गल पाचेप्रकारेकह्या ते पाचप्रकार जिम कहैछे–वन्नपरिणया गधपरिणया रसपरिणया फासपरिणया सठाणपरिणया ५ ।

॥ टीका ॥

मामउइत्यादि ॥ तेस्कन्धादयो यथासम्भव समासत सङ्क्षेपेण पञ्चविधा प्रज्ञप्ता स्तद्यथा—वर्णपरिणता वर्णत परिणता यथाभाग इत्यर्थ , एव गन्धपरिणता , रसपरिणता , स्पर्शपरिणता , सस्थानपरिणता , परिणता इति अतीतकालनिर्देशो वर्त्तमानानागतकालोपलक्षण , वर्त्तमानानागतत्वमन्तरेण तीतत्वस्या सम्भवात्, तथाहि—यावर्त्तमानत्व मतिक्रान्त सोतीतो भवति' वर्त्तमानत्व ञ्च सो नुभवति योनागतत्व मतिक्रान्तवानुक्तञ्च—भवतिसनामातीतो य प्राप्तोनामवर्त्तमानत्व ॥ एष्यश्चनामसञ्जवति य प्राप्स्यतिवर्त्तमानत्वम् ॥ १ ॥ ततो वर्णपरिणता इति वर्णरूपतया परिणता परिणमन्तीति परिणमिष्यन्तीति द्रष्टव्य' मेव गन्धरसपरिणता इत्याद्यपि परिभावनीय ॥ जेवण्णपरिणया इत्यादि ॥ येवर्णपरिणता स्ते पञ्चविधा प्रज्ञप्ता, स्तद्यथा—कृष्णवर्णपरिणता कज्जलादिवत्, नीलवर्णपरिणता नील्यादिवत्, लोहितवर्णपरिणता हिङ्गुलकादिवत्, हारिद्रवर्णपरिणता हरिद्रादिवत्, शुक्लवर्णपरिणता शङ्खादिवत्, येगन्धपरिणता स्ते द्विविधा प्रज्ञप्ता स्तद्यथा—सुरभिगन्धपरिणताश्च दुरभिगन्धपरिणताश्च चशब्दौ परिणामभवन प्रति विशेषाभावस्यापनार्थौ तथाहि—यथाकथचिदवस्थिता सामग्रीवशत सुरभिगन्धपरिणाम व्रजन्ते तथा कथञ्चिदवस्थि

॥ मूल ॥

परिणया फासपरिणया सठाणपरिणया । जेवण्णपरिणया ते समासउ पचविहा पण्णत्ता, तजहा—कालवण्णपरिणया नीलवण्णपरिणया लोहियवण्णपरिणया हालिद्दवण्णपरिणया सुक्किल्लवण्णपरिणया । जे गधपरिणया

॥ भाषा ॥

वर्णपरिणया वर्णपरिणाम भाज इत्यर्थ, स्कन्धास्कन्दतिशुष्यति १ गन्धपरिणत २ रसपरिणत ३ स्पर्शपरिणत ४ सस्थानपरिणत ५ । जेवण्णपरिणया तेपचविहा पणत्ता तजहा । हिवे जे वर्णपरिणतछे तिके पाचप्रकारना कह्या ते जिम कहैछै—कालवण्णपरिणया नीलवण्णपरिणया लोहियवण्णपरिणया हालिद्दवण्णपरिणया सक्किल्लवण्णपरिणया ५ । कृष्णवर्णपरिणत ते काजलनीपरे स्यामवर्ण परिणम्यो, नीलवर्ण परिणत जगालनीपरे, रक्तवर्णपरिणत हिंगलूनीपरे, पीतवर्ण परिणत हलद नीपरे, स्वेतवर्ण परिणत शख नीपरे । जेगधपरिणया ते दुविहा पणत्ता तजहा । जिके गन्धपरिणत तेहना दोयभेदकह्या ते कहैछै—सुभिगधपरिणया दुब्भिगधपरिणया । सुगन्ध परिणत घोखडनीपरे, दुर्गन्धपरिणत लसुननीपरे । जेरसपरिणया ते पचविहा पणत्ता तज

ता गव मामग्रीवशतो दुरभिगन्धपरिणाम मपीति, सुरभिगन्धपरिणता श्च यथाश्रीखण्डादय, दुरभिगन्धपरिणता लशुनादिवत्, येरसपरिणता स्त पञ्चविधा प्रज्ञप्ता स्तद्यथा–तिक्तरसपरिणता कोशातक्यादिवत्' कटुकरसपरिणता शुण्ठ्यादिवत्' कषायरसपरिणता अपक्वकपित्थादिवत्, आम्लरसपरिणता आम्लवेतसादिवत्' मधुररसपरिणता शर्करादिवत् ॥ ये स्पर्शपरिणता स्ते अष्टविधा प्रज्ञप्ता स्तद्यथा–कर्कशस्पर्शपरिणता पाषाणादिवत्' मृदुस्पर्शपरिणता हंसरुतादिवत्' गुरुकस्पर्शपरिणता वज्रादिवत्, लघुकस्पर्शपरिणता अर्कतूलादिवत्, शीतस्पर्शपरिणता मृणालादिवत्, उष्णस्पर्शपरिणता वह्न्यादिवत्, स्निग्धस्पर्शपरिणता घृतादिवत्, रूक्षस्पर्शपरिणता भस्मादिवत् ॥ ये संस्थानपरिणता,

ते दुविहा पणत्ता, तजहा—सुब्भिगंधपरिणया दुब्भिगंधपरिणया। जेरसपरिणया ते पंचविहा पणत्ता तजहा तित्तरसपरिणया कडुयरसपरिणया कसायरसपरिणया अंबिलरसपरिणया महुररसपरिणया। जेफासपरिणया ते अट्ठविहा पणत्ता, तजहा—कक्खडफासपरिणया मउयफासपरिणया गरुयफासपरिणया लहुयफासपरिणया सीयफासपरिणया उसिणफासपरिणया णिद्धफासपरिणया लुक्खफासपरिणया। जेसठाणपरि

हा। जे रस परिणतछे तेहना पाच प्रकारकह्या तेहोज कहैछे—तित्तरसपरिणया कडुयरसपरिणया कसायरसपरिणया अंबिलरसपरिणया महुररसपरिणया। तीखारस परिणतछे कोसातकीपरे कुलिजण ज्यु कोसात ते कुलिजन, कटुकरस परिणत सूठनीपरे, कसायरस परिणत काची कोखनीपरे, अंबिलरस परिणत आंबलवेतनीपरे, मधुररस साकरनीपरे। जेफासपरिणया तेअट्ठविहा पणत्ता तजहा। जिके फरसथकी परिणम्याछे तेहना ८ भेदकह्या ते जिम कहैछे—कक्खडफास प० मउयफास प० गरुयफास प० लहुयफास परिणया। कर्कश स्पर्श पाषाणनीपरे, मृदु कोमल स्पर्श हंसनीपरे, गुरुस्पर्श परिणत वज्रनीपरे, तिम लघुस्पर्श परिणत अर्कतूलनीपरे। सीयफास प० उसिणफास प० णिद्धफास प० लुक्खफास परिणया। शीत स्पर्श परिणत मृणालनीपरे, उष्णस्पर्श परिणत अग्निनीपरे, स्निग्ध सचिक्कणस्पर्श परिणत घृतनीपरे, रूक्षस्पर्श परिणत भस्मनीपरे। जे सठाण प

॥ टीका
॥ मूल
॥ भाषा

॥ टीका ॥

स्ते पञ्चविधा प्रज्ञप्ता स्तद्यथा–परिमण्डलसंस्थानपरिणता वलयवत्, वृत्तसंस्थानपरिणता कुलालचक्रादिवत्' त्र्यस्रसंस्थानपरिणता शृङ्गाटकादिवत्, चतुरस्रसंस्थानपरिणता कुम्भिकादिवत्' आयतसंस्थानपरिणता दण्डादिवत्, एतानिच परिमण्डलादीनि संस्थानानि घनप्रतरभेदेन द्विविधानि भवन्ति, पुन परिमण्डल मपहाय शेषाणि ओज प्रदेशजनितानि युग्मप्रदेशजनितानि इतिद्विधा, तत्रोत्कृष्ट परिमण्डलादि सर्वमनन्ताणु निष्पन्न मसङ्ख्येयप्रदेशावगाढ चेति प्रतीतमेव, जघन्य तु प्रतिनियतमङ्कपरमाणवात्मक मतो नाभिर्दिष्ट ज्ञातु शक्यते इतिविनेयजनानुग्रहाय तदुपदर्श्यते–तत्रौ ज प्रदेशप्रतरवृत्त पञ्चपरमाणुनिष्पन्न पञ्चाकाशप्रदेशावगाढञ्च तद्यथा–एक परमाणुर्मध्ये स्थाप्यते चत्वार क्रमेण पूर्वादिषु तचसृषु दिक्षु, युग्मप्रदेशप्रतरवृत्त द्वादशपरमाणवात्मक द्वादशप्रदेशावगाढञ्च तत्र निरन्तर चत्वार परमाणव श्चतुर्ष्वाकाशप्रदेशेषु रुच काकारेण व्यवस्थाप्यन्ते तत स्तत्परिक्षेपेण शेषा अष्टौ ॥ ओज प्रदेशघनवृत्त सप्तपरमाणवात्मक सप्तप्रदेशावगाढञ्च तत्रैव–तत्रैव पञ्चप्रदेशे प्रतरवृत्तमध्यस्थितस्य परमाणो रुपरिष्टा दधस्ता च एकैकोणु रवस्थाप्यते तत एव सप्तप्रदेश भवति ॥ युग्मप्रदेश घनवृत्तद्वात्रिंशत्प्रदेश द्वात्रिंशत्प्रदेशावगाढञ्च तत्रैव–पूर्वोक्तद्वादशप्रदेशात्मकस्य प्रतरवृत्तस्योपरि द्वादश ततउपरिष्टा दधश्चा न्येचत्वारश्चत्वार परमाणव इति ॥ ओज प्रदेश प्रतरत्र्यस्र त्रिप्रदेश त्रिप्रदेशावगाढञ्च तत्रैव–एव न्तिर्यगणुद्वय न्यस्यते तत आद्यस्या ध एकोणु ॥ युग्मप्रदेशप्रतरत्र्यस्र षट्परमाणुनिष्पन्न षट्प्रदेशावगाढञ्च तत्र तिर्यग्निरन्तर त्रय परमाणव स्थाप्यन्ते तत आद्यस्या ध उपर्यधोभावेना णुद्वय द्वितीयस्याध एकोणु स्थापना ॥ ओज प्रदेश घनत्र्यस्र पञ्चत्रि

॥ मूल ॥

णया ते पंचविहा पण्णत्ता, तंजहा–परिमंडलसंठाणपरिणया वट्टसंठाणपरिणया तंससंठाणपरिणया चउर

॥ भाषा ॥

रिणया ते पंचविहा पण्णत्ता तंजहा। जिके संस्थान परिणत तेहना पांचप्रकार कह्या तेहोज कहेछे—परिमंडलसंठाण प० वट्टसंठाण प० तंससंठाण प० चउरंससंठाण प० आययसंठाण परिणया। परिमण्डलसंस्थान परिणत वलयनीपरे, वृत्तसंस्थान परिणत कोलालचक्रनीपरे, त्र्यस्र त्रिखूणो संस्थानपरिणत सिंघाडानीपरे, चतुरस्र चौखूणो संस्थानपरिणत कुम्भीपरे, आयतसंस्थानपरिणत दण्डनीपरे, पञ्चपरमाणु निष्पन्न पंचाकाशप्रदेशावगाढ इम सर्व

णत्वपरमाणुनिष्पन्न पञ्चत्रिंशत्प्रदेशावगाढञ्च तत्रैव–तिर्यग् निरन्तरा पञ्चपरमाणव स्थाप्यन्ते तेषा चाधोध क्रमेण तिर्यगेव चत्वार स्त्रयो द्वा वेकश्चेति पञ्चदशात्मक प्रतरोजात स्थापना॥ अस्यैवच प्रतरस्योपरि सर्वपङ्क्तिषु अन्त्यान्त्यपरित्यागेन दश ॥ १ ॥ तथैव तदुपर्युपरि षट् त्रय एकश्चेति क्रमशा णव स्थाप्यन्ते स्थापना एतेमीलिता पञ्चत्रिंश द्भवन्ति॥ युग्मप्रदेश घनत्र्यस्र चतु परमाणवात्मक चतु प्रदेशावगाढ ञ्च तत्र प्रत रत्र्यस्रस्यैव त्रिप्रदेशात्मकस्य सम्बन्धिन एकस्याणो रुपर्येकोणु स्थाप्यते ततो मीलिता श्चत्वारो भवन्ति ॥ ओज प्रदेश प्रतरचतुरस्रनवपरमाणवात्मकं नवप्रदेशावगाढञ्च तत्र तिर्यग्निरन्तर त्रिप्रदेशा स्त्रिस्र पङ्क्तय स्थाप्यन्ते युग्मप्रदेश प्रतरचतुरस्रं चतु परमाणवात्मक चतु प्रदेशावगाढञ्च तत्र तिर्यग्प्रदेशो द्वेपङ्क्ती स्थाप्येते, ओज प्रदेश घनचतुरस्र सप्तविंशतिपरमाणवात्मक सप्तविंशतिप्रदेशावगाढञ्च तत्र नवप्रदेशात्मकस्यैव पूर्वोक्तस्य प्रत रस्या धउपरिच नवप्रदेशा स्थाप्यन्ते तत सप्तविंशतिपरमाणवात्मक मोज प्रदेश घनचतुरस्र भवति स्थापनाचैव, युग्मप्रदेश घनचतुरस्र मष्टपरमा

णवात्मक मष्टप्रदेशावगाढञ्च तत्रैव–चतु प्रदेशात्मकस्य पूर्वोक्तस्य प्रतरस्योपरि चत्वारोन्ये परमाणव स्थाप्यन्त इति ॥ ओज प्रदेश आयत त्रिपर माणु त्रिप्रदेशावगाढञ्च तत्र तिर्यग्निरन्तर त्रय स्थाप्यन्ते ॥ युग्मप्रदेशश्रेण्यायत द्विपरमाणु द्विप्रदेशावगाढञ्च तथैवा णुद्वय स्थाप्यते ॥ ओज प्रदेश प्रतरायत पञ्चदशपरमाणवात्मक पञ्चदशप्रदेशावगाढञ्च तत्र पञ्चदशप्रदेशात्मिका स्त्रिस्र पङ्क्तय स्तिर्यक्स्थाप्यन्ते॥ युग्मप्रदेश प्रतरायतं षट्प्रदेशात्मक षट्प्रदेशावगाढञ्च तत्र त्रिप्रदेश पङ्क्तिद्वय स्थाप्यते स्थापना, ओज प्रदेश घनायत पञ्चचत्वारिंशत्परमाणवात्मक ताव त्प्रदेशावगाढ ञ्च तत्र पूर्वोक्तस्यैव प्रतरायतस्य पञ्चदशप्रदेशात्मकस्याधउपरि तथैव पञ्चदशपरमाणव स्थाप्यन्ते ॥ युग्मप्रदेश घनायत द्वादशपरमाणवात्मक द्वादशप्रदेशावगाढञ्च तत्र प्रागुक्तस्य षट्प्रदेशस्य प्रतरायतस्योपरि तथैव तावन्त परमाणव स्थाप्यन्ते ॥ प्रतरपरिमण्डल विंशतिपरमाणवात्म क विंशतिप्रदेशावगाढञ्च तत्रैव–प्राच्यादिषु चतसृषु दिक्षु प्रत्येक चत्वारश्चत्वारो णव स्थाप्यन्ते विदिक्षुच प्रत्येक मेकैकोणु स्थाप्यते ॥ घनप

॥ टीका ॥

रिमण्डलं चत्वारिंशत्प्रदेशावगाढं चत्वारिंशत्परमाण्वात्मकञ्च तत्र तस्या एव विंशते रुपरितना तथैवान्याविंशति रवस्थाप्यते इत्यर्थेषा प्ररू पणा मितोपि न्यूनप्रदेशतायां यथोक्तसंस्थानाभावात्, एतत्सङ्ग्राहिका चे मा उत्तराध्ययननिर्युक्तिगाथा –परिमण्डले य वट्टे, तंसे चउरंसआय ए चेव ॥ घणपयर पढमवज्जं, ओजपएसे य जुम्मेय ॥ १ ॥ पंचगबारसगखलु, सत्तगबत्तीसगंच वट्टंमि ॥ तियछक्क पणतीसा, चत्तारियहोंति तंस म्मि ॥ २ ॥ नव चेउतट्टाचउरो, सत्तावीसाय अट्ठ चउरंसे ॥ तिगदुग पन्नरसेवय, छच्चेवय आयएहोंति ॥ ३ ॥ पणयाला बारसग, तह चेवय आ ययम्मि सट्ठाणे ॥ वीसाचत्तालीसा परिमण्डलएयसट्ठाणे ॥ ४ ॥ इति ॥ सम्प्रत्येतेषा मेव वर्णादीना परस्परसम्बंधमाह–जेवन्नतोइत्यादि ॥ येस्क न्धादयो वर्णतो वर्णमाश्रित्य कालवर्णपरिणताअपि भवन्ति ते सुरभिगन्धपरिणताअपि भवन्ति दुरभिगन्धपरिणताअपि॥ किमुक्तं भवति ? गन्ध मधिकृत्य ते भाज्या केचित्सुरभिगन्धपरिणता भवन्ति केचिद्दुरभिगन्धपरिणता, नतु प्रतिनियतैकगन्धपरिणामपरिणताइति, एवम्बरसत स्प

॥ मूल ॥

ससंठाणपरिणया आयतसंठाणपरिणया॥ जे वणओ कालवण्णपरिणया ते गंधओ सुब्भिगंधपरिणयावि दुब्भि गंधपरिणयावि, रसओ तित्तरसपरिणतावि कडुयरसपरिणतावि कसायरसपरिणतावि अंबिलरसपरिणता वि महुररसपरिणतावि, फासओ कक्खडफासपरिणतावि मउयफासपरिणतावि गरुयफासपरिणतावि लहु यफासपरिणतावि सीतफासपरिणतावि उसिणफासपरिणतावि णिद्धफासपरिणतावि लुक्खफासपरिणतावि

॥ भाषा ॥

स्थापनायें२५ कह्या, हिवे परस्पर वर्णादि सवंभाङ्गा कहैछे—जे कालवण्णपरिणया । जे वर्णथी कालवर्ण परिणतहुवे तथा । तेगंधओ । ते गन्धथकी । सु भिगंधदुब्भिगंधपरिणयावि। सुगन्ध तथा दुर्गन्धगन्धे परिणतहुवे। रसओ। रसथकी। तित्तरसप० कडुयरस प० कसायरस प० अंबिलरस प० महुररसपरि णयावि। तिक्तरसपरिणतहुवे कोई कटुकरस परिणतहुवे कोई कषायरस परिणतहुवे कोई अम्बिलरस परिणतहुवे कोई मधरस परिणतहुवे। फासओ क क्खडफासप० मउयफास प० गुरुयफास प० लहुयफास प० सीयफास प० उसिणफास प० णिद्धफास प० लुक्खफासपरिणया। स्पर्शथकी कर्कश परिणतहुवे

॥ टीका ॥

र्शत सम्यानतश्च वाच्या , तत्र द्वौगन्धौ • पञ्चरसा , अष्टौस्पर्शा , पञ्चसस्थानानि , एतेच मीलिता विंशतिरिति ॥ कृष्णवर्णपरिणता एतावन्तो भङ्गान्लभन्ते २०, एव नीलवर्णपरिणताअपि २०, लोहितवर्णपरिणता अपि २०, हारिद्रवर्णपरिणता अपि २०, शुक्लवर्णपरिणता अपि २०, एव

॥ मूल ॥

सठाणउ परिमण्डलसंठाणपरिणतावि वट्टसठाणपरिणतावि तससठाणपरिणतावि चउरससंठाणपरिणतावि आयतसठाणपरिणतावि । जेवसाउ नीलवण्णपरिणता ते गधउ सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि, रसउ तित्तरसपरिणयावि कडुयरसपरिणतावि कसायरसपरिणतावि अंबिलरसपरिणतावि महुररसपरिण तावि, फासउ कक्खडफासपरिणतावि मउयफासपरिणतावि गरुयफासपरिणतावि लहुयफासपरिणतावि सीतफासपरिणतावि उसिणफासपरिणतावि णिद्धफासपरिणतावि लुक्खफासपरिणतावि , सठाणउ परिमण्डल

॥ भाषा ॥

मग्गुभपदेशो माटे, काइ मृदुस्पर्श परिणतहुवे गुरुस्पर्श परिणत काइ लघुस्पर्श परिणतहुवे शीतस्पर्श परिणत उष्णस्पर्श परिणतहुवे स्निग्धपरिणत काइ रूक्षस्पर्श परिणतहुवे । सठाणओ परिमडलसठाणपरिणया । सस्थानथको कोइ परिमण्डल सस्थान परिणतहुवे । वट्टसठाण प० तंससठाण प० चउरसठाण प० आयतसठाणपरिणया । काइ वृत्तसस्थानपरिणतहुवे त्र्यस्रसस्थान परिणतहुवे काइ चतुरस्रसस्थाने परिणतहुवे आयतसस्थान परिणतहुवे । जेवण्णओणीलवण्णपरिणया । जिकेवर्णथको नीलवर्ण परिणतहुवे । तेगधओ सुब्भिगध प० दुब्भिगध परिणयावि । ते गन्धथकी सुगन्ध परिणतहुवेदु गंधर परिणतहुवे । रसओ । रसथकी । तित्तरस प० कडुयरस प० कसायरस प० अंबिलरस प० महुररसपरिणया । तिक्तरस परिणत हुवे कटुक रस परिणतहुवे कषायरस परिणतहुवे आंबिलरस परिणतहुवे मीठोरस परिणतहुवे । फासओ । स्पर्शथकी । कक्खडफास प० मउयफास प० गरुयफा स प० लहुयफास प० सीयफास प० उसिणफास प० णिद्धफास प० लुक्खफास परिणयावि । कर्कशस्पर्श परिणतहुवे मृदुस्पर्शपरिणतहुवे गुरुस्पर्श परिण तहुवे लघुस्पर्शपरिणतहुवे शीतस्पर्शपरिणत हुवे उष्णस्पर्शपरिणतहुवे स्निग्धस्पर्शपरिणतहुवे रूक्षस्पर्शपरिणतहुवे । सठाणओ परिमडलसठाणपरि

सठाणपरिणतावि वट्टसठाणपरिणतावि तससठाणपरिणतावि चउरससठाणपरिणतावि आयतसठाणपरिणतावि। जे वण्णउ लोहियवण्णपरिणता ते गधउ सुब्भिगधपरिणतावि दुब्भिगधपरिणतावि, रसउ तित्तरस परिणतावि कडुयरसपरिणतावि कसायरसपरिणतावि अंबिलरसपरिणतावि महुररसपरिणतावि, फासउ कक्खडफासपरिणतावि मउयफासपरिणयावि गरुयफासपरिणतावि लहुयफासपरिणतावि सीतफासपरिणतावि उसिणफासपरिणतावि णिद्धफासपरिणतावि लुक्खफासपरिणतावि, सठाणउ परिमंडलसंठाणपरिणतावि वट्टसठाणपरिणतावि तससठाणपरिणतावि चउरससठाणपरिणतावि आयतसठाणपरिणतावि।

यथा। संस्थानथकी परिमडलसंस्थान परिणतहुवे। वट्टसठाण प० तससठाण प० चउरससंठाण प० आययसठाणपरिणयावि। हत्त संस्थानपरिणत हुवे कोई त्र्यस्रसंस्थानपरिणतहुवे कोई चतुरस्रसंस्थानपरिणतहुवे आयतसंस्थानपरिणतहुवे॥ जेवण्णओ लोहियवण्णपरिणया। जेवर्णथकी लोहितवर्ण परिणतहुवे। ते गधओ। ते गन्धथकी। सुब्भिगध प० दुब्भिगध परिणयावि। सुगन्ध परिणत पिणहुवे दुर्गन्धपरिणत पणिहुवे। रसओ। रसथकी। तित्तरस प० कडुयरस प० कसायरस प० अविलरस प० महुररसपरिणयावि। तिक्तरसपरिणतहुवे कटुकरसपरिणतहुवे कषायरसपरिणतहुवे आंबिलरसपरिणतहुवे मधररसपरिणत हुवे। फासओ। स्पर्शथकी। कक्खडफास प० मउयफास प० गरुयफासप० लहुयफास प० सीयफास प० उसिणफासप० णिद्धफास प० लुक्खफास परिणयावि। कर्कशस्पर्शपरिणतहुवे मृदुस्पर्शपरिणतपिणहुवे गुरुस्पर्शपरिणतहुवे लघुस्पर्शपरिणतहुवे शीतस्पर्शपरिणतहुवे उष्णस्पर्शप रिणतहुवे स्निग्धस्पर्शपरिणतहुवे रूक्षस्पर्शपरिणतहुवे। सठाणओ। संस्थानथकी। परिमडलसठाणपरिणया। परिमडलसंस्थान परिणत हुवे। वट्टसठाण प० तससठाण प० चउरसआययसठाण परिणयावि। कोई वृत्तसंस्थान परिणतहुवे कोई त्र्यस्रसंस्थानपरिणतहुवे कोई चतुरस्रआयतसंस्थानते परिणत हुवे॥ जावण्णओ। जे वर्णथकी। हालिद्दवण्णपरिणया। हारिद्रवर्ण पीतवर्ण परिणत हुवे। ते गधओ। ते गन्धथकी। सुब्भिगध दुब्भि

॥ मूलं ॥

सपरिणतावि उसिणफासपरिणतावि णिद्धफासपरिणतावि लुक्खफासपरिणतावि, सठाणउ परिमंडलसठाण परिणतावि वट्टसठाणपरिणतावि तससठाणपरिणतावि चउरससठाणपरिणतावि आयतसठाणपरिणतावि जेगधउ सुब्भिगधपरिणता ते वन्नउ कालवन्नपरिणतावि नीलवन्नपरिणतावि लोहितवन्नपरिणतावि हालिद्दवन्नपरिणयावि सुक्किल्लवन्नपरिणतावि, रसउ तित्तरसपरिणतावि कडुयरसपरिणतावि कसायरसपरिणतावि अंबिलरसपरिणतावि महुररसपरिणतावि, फासउ कक्खडफासपरिणतावि मउयफासपरिणतावि गरुयफासपरिणतावि लहुयफासपरिणतावि सीतफासपरिणतावि उसिणफासपरिणतावि णिद्धफासपरिणतावि लुक्खफासपरिणतावि, सठाणउ परिमंडलसठाणपरिणतावि वट्टसठाणपरिणतावि तंससंठाणपरिणतावि चउरससठाणपरिणतावि आयतसठाणपरिणतावि। जेगंधउ दुब्भिगंधपरिणता ते वन्नउ कालवन्नपरिणतावि

॥ भाषा ॥

यावत् जिहांलगे रूक्षस्पर्श परिणतहुवे इमहीज आठवार कहवो । सठाणओपरिमडलसठाणपरिणया । सस्थानथकी परिमडलसस्थान परिणत हुवे । जाव आययसठाणपरिणयावि । यावत् जिहालगे आयतसस्थानपरिणतहुवे ॥ जे गधओ सुब्भिगंध परिणया । जे गंधथकी सुगन्ध परिणतहुवे । ते वणओ कालवणपरिणयावि नीलवण्ण प० लोहियवण्ण प० हालिद्दवण्ण प० सुक्किल्लवण्णपरिणयावि । ते वर्णथकी कोई कालेवर्ण परिणतहुवे कोई नीलवर्ण परिणतहुवे रातेवर्ण परिणतहुवे पीलेवर्ण परिणतहुवे कोई स्वेतवर्ण परिणतहुवे। रसओ तित्तरस प० जावमहुररसपरिणयावि। रसथकी तिक्तरस परिणत हुवे यावत् पचम मधररस परिणतहुवे। फासओ कक्खडफास प०जावलुक्खफास परिणयावि। स्पर्शथकी कर्कशस्पर्श परिणतहुवे यावत् जिहालगे कोई रूक्षस्पर्श परिणतहुवे। सठाणओ परिमडलसठाण प० जाव आययसठाणपरिणयावि । सस्थानथकी कोई परिमडलसस्थान परिणतहुवे इम यावत् पचम आयतसस्थानलगे परिणत पिणहुवे ॥ जे गधओ दुब्भिगध प०। जे गधथको दुरगन्ध परिणतहुव । ते वणओ कालवण प०जावसुक्किल्लवणपरिण

जेवणउ हालिद्दवन्नपरिणता ते गधउ सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगधपरिणतावि, रसउ तित्तरसपरिणतावि कडुयरसपरिणतावि कसायरसपरिणयावि अंबिलरसपरिणतावि महुररसपरिणतावि, फासउ कक्खडफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीयफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि, सठाणउ परिमंडलसठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तससठाणपरि० चउरससठाणपरि० आयतसठाणपरिणतावि। जेवन्नउ सुक्किलवन्नपरिणता ते गधउ सुब्भिगधपरिणतावि दुब्भिगधपरिणतावि, रसउ तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासउ कक्खडफासपरिणतावि मउयफासपरिणयावि गरुयफासपरिणयावि लहुयफासपरिणतावि सीयफा

गध परिणया। सुगन्ध दुरगन्ध परिणतहुवे। रसथी। रसथकी। तित्तरस प० कडुयरस प० कसायरस प० अंबिलरस प० महुररसपरिणयावि। तित्तरस परिणत हुवे कटकरस परिणतहुवे कषायरस परिणतहुवे अंबिलरस परिणतहुवे मधुररस परिणतहुवे। फासथी कक्खडफास प० मउयफास प० गरुयफास प० लहुयफास प० सीयफास प० उसिणफास प० णिद्धफास प० लुक्खफासपरिणयावि। स्पर्शथकी कर्कशस्पर्श प० मृदुस्पर्श प० गुरुस्पर्श प० लघुस्पर्श प० शीतस्पर्श प० उष्णस्पर्श प० स्निग्धस्पर्श रूक्षस्पर्श परिणत हुवे। सठाणथी परिमडल स० वट्ट स० तस स० चउरस स० आययसठाण परिणयावि। सस्थानथकी परिमडलसस्थान परिणतहुवे कोई वृत्तसस्थान परिणतहुवे कोई त्र्यस्र सस्थान प० कोई चतुरस्रसस्थान प० कोई आयत सस्थान परिणतहुवे॥ जे वणथी सक्किलवन्नपरिणया। जे वर्णथकी शुक्लवर्ण परिणतहुवे। ते गधथी सुब्भिगंध दुब्भिगध परिणया। ते गधथकी सुगध दुरगध परिणतहुवे। रसथी तित्तरस प० कडुयरस प० कसायरस प० अंबिलरस प० महुररसपरिणया। रसथकी तित्तरस प० कटकरस प० कषायरस प० आंबिलरस प० मधुररस परिणत हुवे। फासथी कक्खडफास परिणयावि। स्पर्शथको, कोई कर्कशस्पर्शपरिणत हुवे। जावलुक्खफास प०

॥ टीका ॥ पन्नत्ति वर्णालंब्ध शत १००, गन्धमधिकृत्याह–जेगन्धउइत्यादि ॥ ये गन्धतोगन्धमधिकृत्य सुरभिगन्धपरिणामपरिणता स्ते वर्णत कालवर्णपरिणता

॥ मूल ॥ नीलवस्सपरिणतावि लोहितवस्सपरिणतावि हालिद्दवस्सपरिणतावि सुक्किल्लवस्सपरिणतावि, रसउ तित्तरसप
रिणतावि कडुयरसपरिणतावि कसायरसपरिणतावि अंबिलरसपरिणतावि मह्हररसपरिणतावि, फासउ क
क्खडफासपरिणतावि मउयफासपरिणतावि गरुयफासपरिणतावि लहुयफासपरिणतावि सीतफासपरिणता
वि उसिणफासपरिणतावि णिद्धफासपरिणतावि लुक्खफासपरिणतावि, सठाणउ परिमण्डलसठाणपरिणता
वि वट्टसठाणपरिणतावि तंससठाणपरिणतावि चउरससठाणपरिणतावि आयतसठाणपरिणतावि। जेरस
उ तित्तरसपरिणता ते वस्सउ कालवस्सपरिणतावि नीलवस्सपरिणतावि लोहियवस्सपरिणतावि हालिद्दवस्स
परिणतावि सुक्किल्लवस्सपरिणतावि, गधउ सुब्भिगधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि, फासउ कक्खडफासप
रिणतावि मउयफासपरिणतावि गरुयफासपरिणतावि लहुयफासपरिणतावि सीतफासपरिणतावि उसिण

॥ भाषा ॥ यावि। ते वर्णथकी कोई कृष्णवर्ण परिणतहुवे इम यावत कोई शुक्लवर्ण परिणतहुवे। रसथी तित्तरस प० जाव मह्हररसपरिणयावि। रसथको तिक्तर
स परिणतहुवे इम यावत् कोईक मधुररसपरिणतहुव। फासथी कक्खडफास प० जावलुक्खफासपरिणयावि। स्पर्शथकी कर्कशस्पर्श परिणतहुवे यावत्
रूक्षस्पर्श परिणतहुवे। सठाणथी परिमडलसठाण प० जाव आययसठाणपरिणयावि। सस्थानथकी परिमडलसस्थान परिणतहुवे यावत् आयतसस्थान
परिणतहुवे ॥ जे रसथी तित्तरसपरिणया। जे रसथकी तिक्तरस परिणतहुवे। तेवस्सथी कालवस्स जावसुक्किल्लवस्सपरिणया। ते वर्णथकी कालवर्ण परि
णतहुवे इम यावत् शुक्लवर्ण परिणतहुवे। गंधथी सब्भिगध दुब्भिगध परिणयावि। गधथकी सुगध दुरगन्ध परिणतहुवे। फासथी कक्खडफास जावलुक्ख
फास परिणयावि। कर्कशस्पर्श परिणतहुवे इम यावत् रूक्षस्पर्श परिणतहुवे। सठाणथी परिमडलसठाण प० जावआययसठाणपरियावि। सस्थानथ

अपि नीलवर्णपरिणताअपि लोहितवर्णपरिणताअपि हारिद्रवर्णपरिणताअपि शुक्लवर्णपरिणताअपि ८ एव रसत ५ स्पर्शत ८ संस्थानत ५ एतेच मीलिता त्रयोविंशति रिति सुरभिगन्धपरिणता त्रयोविंशति भङ्गान्लभन्ते, एव दुरभिगन्धपरिणताअपि २३ ततो गन्धपदेन लब्धा भङ्गाना षट्चत्वारिंशत्, रसमधिकृत्याह–ये रसतो रसमधिकृत्य तिक्तरसपरिणता स्ते वर्णत ५ गन्धत २ स्पर्शत ८ संस्थानत ५ एते सर्वेपि एकत्र मीलिता विंशतिरिति॥ तिक्तरसपरिणता विंशतिभङ्गा लभन्ते २०, एव कटुकरसपरिणता २०, कषायरसपरिणता २०, अम्लरसपरिणता २०, मधुररसप

फासपरिणतावि णिद्धफासपरिणतावि लुक्खफासपरिणतावि, सठाणओ परिमंडलसठाणपरिणतावि वट्टसठाणपरिणतावि तंससठाणपरिणतावि चउरससठाणपरिणतावि आयतसठाणपरिणतावि। जेरसओ कडुयरसपरिणता ते वणओ कालवणपरिणतावि नीलवणपरिणतावि लोहितवणपरिणतावि हालिद्दवणपरिणतावि सुक्किलवणपरिणतावि, गधओ सुब्भिगधपरिणतावि दुब्भिगधपरिणतावि, फासओ कक्खडफासप० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीयफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासप० लुक्खफासपरिणतावि, सठाणओ परिमंडलसठाणपरि० वट्टसठाणपरि० तससठाणपरि० चउरससठाणप० आयतसठाणप

को परिमण्डलसंस्थानपरिणतहुवे इम यावत आयतसंस्थान परिणतहुवे॥ जे रसथी कडुयरसपरिणया। जिके रसथकी कटुकरस परिणतहुवे। तेवर्णथी कालवर्णपरिणयावि। ते वर्णथकी काई कालेवर्ण परिणतहुवे। जावसुक्किलवणपरिणयावि। यावत कोई शुक्लवर्ण परिणतहुवे। गंधथी सुब्भिगंध प० दुब्भिगंध परिणयावि। गन्धथकी सुगन्ध गंध परिणत हुवे दुर्गन्ध परिणत हुवे। फासथी कक्खडफास प० जावलुक्खफास परिणयावि। स्पर्शथकी कर्कश स्पर्शपरिणत हुवे इम यावत रूक्षस्पर्शपरिणतहुवे। सठाणथी परिमंडलसठाण प० जाव आययसठाणपरिणयावि। संस्थानथकी परिमंडलसंस्थान परिणतपिणहुवे यावत शब्दे जिहालगे आयतसंस्थान परिणत संस्थान हुवे॥ जे रसथी कसायरस अविण महुररस परिणया। जे रसथकी कषायरस आ

पन्नत्ति वर्णलब्ध शत १००, गन्धमधिकृत्याह–जेगन्धउइत्यादि ॥ ये गन्धतोगन्धमधिकृत्य सुरभिगन्धपरिणामपरिणता स्ते वर्णत कालवर्णपरिणता

नीलवन्नपरिणतावि लोहितवन्नपरिणतावि हालिद्दवन्नपरिणतावि सुक्किल्लवन्नपरिणतावि, रसउ तित्तरसपरिणतावि कडुयरसपरिणतावि कसायरसपरिणतावि अंबिलरसपरिणतावि महुररसपरिणतावि, फासउ कक्खडफासपरिणतावि मउयफासपरिणतावि गरुयफासपरिणतावि लहुयफासपरिणतावि सीतफासपरिणतावि उसिणफासपरिणतावि णिद्धफासपरिणतावि लुक्खफासपरिणतावि, संठाणउ परिमंडलसंठाणपरिणतावि वट्टसंठाणपरिणतावि तंससंठाणपरिणतावि चउरंससंठाणपरिणतावि आयतसंठाणपरिणतावि। जेरसउ तित्तरसपरिणता ते वन्नउ कालवन्नपरिणतावि नीलवन्नपरिणतावि लोहियवन्नपरिणतावि हालिद्दवन्नपरिणतावि सुक्किल्लवन्नपरिणतावि, गंधउ सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि, फासउ कक्खडफासपरिणतावि मउयफासपरिणतावि गरुयफासपरिणतावि लहुयफासपरिणतावि सीतफासपरिणतावि उसिण

यावि। ते वर्णथकी कोई कृष्णवर्ण परिणतहुवे इम यावत् कोई शुक्लवर्ण परिणतहुवे। रसथी तित्तरस प० जाव महुररसपरिणयावि। रसथकी तिक्तरस परिणतहुवे इम यावत् कोईक मधुररसपरिणतहुव। फासथी कक्खडफास प० जावलुक्खफासपरिणयावि। स्पर्शथकी कर्कशस्पर्श परिणतहुवे यावत् रूक्षस्पर्श परिणतहुवे। संठाणथी परिमंडलसंठाण प० जाव आययसंठाणपरिणयावि। संस्थानथकी परिमंडलसंस्थान परिणतहुवे यावत् आयतसंस्थान परिणतहुवे॥ जे रसथी तित्तरसपरिणया। जे रसथकी तिक्तरस परिणतहुवे। तेवर्णथी कालवर्ण जावसुक्किल्लवन्नपरिणया। ते वर्णथकी कालवर्ण परिणतहुवे इम यावत् शुक्लवर्ण परिणतहुवे। गंधथी सुब्भिगंध दुब्भिगंध परिणयावि। गंधथकी सुगंध दुरगंध परिणतहुवे। फासथी कक्खडफास जावलुक्खफास परिणयावि। कर्कशस्पर्श परिणतहुवे इम यावत् रूक्षस्पर्श परिणतहुवे। संठाणथी परिमंडलसंठाण प०. जावआययसंठाणपरिणयावि। संस्थानथ

॥ टीका ॥

अपि नीलवर्णपरिणताअपि लोहितवर्णपरिणताअपि हारिद्रवर्णपरिणताअपि शुक्लवर्णपरिणताअपि ८ एव रसत ५ स्पर्शत ८ सस्थानत ५ एतेच मीलिता त्रयोविंशति रिति सुरभिगन्धपरिणता त्रयोविंशति भङ्गानलभन्ते, एव दुरभिगन्धपरिणताअपि २३' ततो गन्धपदेन लब्धा भङ्गाना षट्च त्वारिंशत्, रसमधिकृत्याह–ये रसतो रसमधिकृत्य तिक्तरसपरिणता स्ते वर्णत ५ गन्धत २ स्पर्शत ८ सस्थानत ५ एते सर्वेपि एकत्र मीलिता विंशतिरिति॥ तिक्तरसपरिणता विंशतिभङ्गा लभन्ते २०, एव कटुकरसपरिणता २०, कषायरसपरिणता २०, अम्लरसपरिणता २०, मधुररसप

॥ मूल ॥

फासपरिणतावि णिद्धफासपरिणतावि लुक्खफासपरिणतावि, सठाणउ परिमंडलसठाणपरिणतावि वट्टसठाणपरिणतावि तंससठाणपरिणतावि चउरससठाणपरिणतावि आयतसठाणपरिणतावि। जेरसउ कडुयरसपरिणता ते वन्नउ कालवन्नपरिणतावि नीलवन्नपरिणतावि लोहितवन्नपरिणतावि हालिद्दवन्नपरिणतावि सुक्किलवन्नपरिणतावि, गधउ सुब्भिगधपरिणतावि दुब्भिगधपरिणतावि, फासउ कक्खडफासप० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीयफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासप० लुक्खफासपरिणतावि, सठाणउ परिमंडलसठाणपरि० वट्टसठाणपरि० तंससठाणपरि० चउरससठाणप० आयतसठाणप

॥ भाषा ॥

को परिमण्डलसस्थानपरिणतहुवे इम यावत आयतसस्थान परिणतहुवे॥ जे रसथी कडुयरसपरिणया। जिके रसथकी कटुकरस परिणतहुवे। तेवन्नओ कालवन्नपरिणयावि। ते वर्णथकी कोई कालिवर्ण परिणतहुवे। जावसुक्किलवन्नपरिणयावि। यावत कोई शुक्लवर्ण परिणतहुवे। गधओ सुब्भिगध प० दुब्भिगध परिणयावि। गन्धथकी सुगन्ध गन्ध परिणत हुवे दुर्गन्ध परिणत हुवे। फासओ कक्खडफास प० जावलुक्खफास परिणयावि। स्पर्शथकी कर्कश स्पर्शपरिणत हुवे इम यावत रूक्षस्पर्शपरिणतहुवे। सठाणओ परिमंडलसठाण प० जाव आययसठाणपरिणयावि। सस्थानथकी परिमंडलसस्थान परिणत पिणहुवे यावत शब्दे जिहालगे आयतसस्थान परिणत सस्थान हुवे॥ जे रसओ कसायरस अविय महुररस परिणया। जे रसथकी कषायरस आ

रिणतावि । जे रसउ कसायरसपरिणता ते वन्नउ कालवन्नपरि० नीलवन्नपरि० लोहितवन्नपरि० हालि
सुक्किलवन्नपरिणतावि , गंधउ सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि , फासउ कक्खडफा
यफासपरि० गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि०
रिणतावि , संठाणउ परि मंडल णपरि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाणप० चउरससंठाणप०
णपरिणतावि ।

परिणता ते वन्नउ कालवन्नपरि० नीलवन्नपरि० लोहितव
, गंधउ सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि , फासउ
सपरि० लहुयफासपरि० सीयफासपरि० उसिणफासपरि०
। संठाणउ परिमंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाणपरि०
परिणतावि । जे रसउ महुरपरिणता ते वन्नउ कालवन्नपरि० नीलवन्नप०
प रे०
वि , गंधउ सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणता
परि० लहुयफासपरि० सीत

॥ मूल ॥

रियाता २०, एव रसपञ्चकसयोगे लब्ध भङ्गकाना शत १००, स्पर्शमधिकृत्याह-ये फासतोकक्खडफासपरिणयाइत्यादि ॥ ये स्पर्शत कर्कशस्पर्शपरि

फासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्कफासपरिणतावि, सठाणत्तै परिमण्डलसठाणपरि० वट्टसठाणपरि० तसस ठाणपरि० चउरससठाणपरि० आयतसठाणपरिणतावि ॥ जे फासत्तै कक्खडफासपरि० ते वसत्तै कालव ण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्णपरि० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किल्लवण्णपरिणतावि, गधत्तै सुब्भिगधपरि० दुब्भिगधपरिणतावि, रसत्तै तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अबिलरसपरि० मधुररसपरिण तावि, फासत्तै गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्क फासपरिणतावि, सठाणत्तै परिमण्डलसठाणपरि० वट्टसठाणपरि० तससठाणपरि० चउरंससठाणपरि० आयतसठाणपरिणतावि । जे फासत्तै मउयफासपरि० ते वसत्तै कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्ण

आयतसठाणपरिणयावि । परिमडलसस्थानथकी परिणत पिणहुवे यावत् आयतसस्थानपरिणत पिणहुवे ॥ ज फासथी कक्खडफास प० ते वर्णथी कालवण्णप० । जे स्पर्शथकी कर्कश परिणतहुवे ते वर्णथकी कालिवर्ण परिणत पिणहुवे । जावसुक्किल्लवण्णपरिणयावि । यावत् शुक्लवर्ण परिणत हुवे । गधथी सुब्भिगध प० दुब्भिगध परिणयावि । गधथकी सुरभिगध परिणतहुवे दुरभिगंध परिणतहुवे । रसथी तित्तरस प० जावमहुररस परिणयावि । रसथकी तिक्तरस परिणतहुवे यावत् मधुररस परिणत हुवे । फासथी गरुयफास प० लहुयफास प० सीयफास प० उसिणफास प० णिद्धफास प० लुक्खफास परिणयावि । स्पर्शथकी गुरुस्पर्श परिणतहुवे लघुस्पर्श परिणत हुवे शीतस्पर्श परिणत हुवे उष्णस्पर्श परिणतहुवे स्निग्धस्पर्श परिणतहुवे रूक्षस्पर्श परिणतहुवे । सठाणथी परिमडलसठाण प० जाव आयतसठाणपरिणयावि । सस्थानथकी परिमडलसस्थानपरिणत पिण हुवे यावत् आयतसस्थानपरिणतहुवे । जेफासथी मउयफास प० । जे स्पर्शथकी मृदुस्पर्श परिणतहुवे । ते वर्णथी कालवण्ण प० जाव सुक्किल्लवण्ण परिणयावि । ते वर्णथकी कालिवर्ण परिण

रिणतावि । जे रसउ कसायरसपरिणता ते वसउ कालवसपरि० नीलवसपरि० लोहितवसपरि० हालिद्दवसपरि० सुक्किलवसपरिणतावि , गधउ सुब्भिगधपरिणतावि दुब्भिगधपरिणतावि , फासउ कक्खडफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि, सठाणउ परिमडलसठाणपरि० वट्टसठाणपरि० तससठाणप० चउरससठाणप० आयतसठाणपरिणतावि । जे रसउ अबिलरसपरिणता ते वसउ कालवसपरि० नीलवसपरि० लोहितवसपरि० हालिद्दवसपरि० सुक्किलवसपरिणतावि, गधउ सुब्भिगधपरिणतावि दुब्भिगधपरिणतावि, फासउ कक्खडफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीयफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि । सठाणउ परिमडलसठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंससठाणपरि० चउरससठाणपरि० आयतसंठाणपरिणतावि। जे रसउ महुरपरिणता ते वसउ कालवसपरि० नीलवसप० लोहितवसपरि० हालिद्दवसपरि० सुक्किलवसपरिणतावि , गधउ सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगधपरिणतावि, फासउ कक्खडफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिण

विलरस मधुररस परिणतहुवे। ते वर्णथी कालवर्ण प० जाव सुक्लिवर्णपरिणयावि। ते वर्णथकी कालेवर्ण परिणत पिणहुवे यावत् शुक्लवर्ण परिणत हुवे । गधथी सुभिगध प० दुभिगधपरिणयावि । ते गन्धथकी सुगन्धपरिणत पिणहुवे दुर्गन्धपरिणत पिणहुवे। फासथी कक्खडफास प० जाव लुक्खफासपरिणयावि। स्पर्शथकी कर्कशस्पर्श परिणत पिणहुवे यावत् रूक्षस्पर्श परिणत पिणहुवे । सठाणथी परिमडलसठाण प० जाव

|| टीका ||

ते कर्कशस्पर्शपरिणता २३ एतावन्त एवमृदुस्पर्शपरिणता २३, गुरुस्पर्शपरिणता २३, लघुस्पर्शपरिणता २३, शीतस्पर्शपरिणता २३, उष्णस्पर्शपरिणता २३,

|| मूल ||

फासपरिणतावि उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि, सठाणओ परिमंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाणपरि० चउरंससंठाणपरि० आयतसंठाणपरिणतावि। जेफासओ लहुयफासपरि णता ते वण्णओ कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्णपरि० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किल्लवण्णपरिणतावि, गंधओ सुब्भिगंधपरि० दुब्भिगंधपरिणतावि, रसओ तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलर सपरि० महुररसपरिणतावि, फासओ कक्खडफासपरि० मउयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि, सठाणओ परिमंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाणपरि० चउरंससंठाणपरि० आयतसंठाणपरिणतावि। जे फासओ सीतफासपरिणता ते वण्णओ कालवण्णपरि० नी

|| भाषा ||

... कांई स्निग्धस्पर्श प० रूक्षस्पर्श परिणतहुवे। संठाणथी प लुक्खफासपरिणयावि। स्पर्शथकी कर्कशस्पर्श प० मृदुस्पर्श प० शीतस्पर्श प० उष्णस्पर्श प० रिमंडलसंठाण प० जाव आयतसंठाणपरिणयावि। संस्थानथकी परिमंडलसंस्थान प० यावत् आयतसंस्थानपरिणतपिणहुवे॥ जेफासथी लहु फास प० ते वण्णथी कालवण्ण प० जावसुक्किलवण्णपरिणयावि। जे स्पर्शथकी लघुस्पर्श परिणतहुवे। ते वर्णथकी कालवर्ण प० यावत् शुक्लवर्णपरिणतहुवे। गंधथी सुब्भिगंध दुब्भिगंध परिणयावि। गंधथकी सुगन्ध दुर्गन्ध परिणतहुवे। रसथी तित्तरस प० जाव महुररसपरिणयावि। रसथकी तिक्तरस प० यावत मधुररस परिणतहुवे। फासथी कक्खडफास प० मउयफास प० सीयफास प० उसिणफास प० णिद्धफास प० लुक्खफासपरिणयावि। स्पर्शथ की कर्कशस्पर्श प० मृदुस्पर्श प० शीतस्पर्श प० उष्णस्पर्श प० कांई स्निग्धस्पर्श प० रूक्षस्पर्शपरिणतहुवे। संठाणथी परिमंडलसंठाण प० जावआयतसं ठाणपरिणयावि। संस्थानथकी परिमंडलसंस्थान प० यावत् आयतसंस्थान परिणतपिणहुवे॥ जेफासथी सीयफास प० ते वण्णथी कालवर्ण प० जावसुक्किलव

सता स्ते वर्णत ५ गन्धत २ रसत ५ स्पर्शत ६ प्रतिपक्षस्पर्शयोगाभावात्, संस्थानत ५ एते सर्वेऽत्रमीलिता स्त्रयोविंशति, एतावन्तो भङ्गाभवन्ते ॥ टीका ॥

पारे० हालिद्दवन्नपरि० सुक्किलवन्नपरिणतावि, गधओ सुब्भिगधपरि० दुब्भिगधपरिणतावि, रसओ तित्त रसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासओ गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि, संठाणओ परि मंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाणपरि० चउरंससंठाण० आयतसंठाणपरिणतावि। जे फासओ गरुयफासपरिणता ते वन्नओ कालवन्नपरि० नीलवन्नपरि० लोहितवन्नपरि० हालिद्दवन्नपरि० सुक्किलव न्नपरिणतावि, गधओ सुब्भिगधपरि० दुब्भिगधपरिणतावि, रसओ तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरस परि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासओ कक्खडफासपरिणतावि मउयफासपरिणतावि सीय ॥ मूल ॥

त हुवे। यावत् शुक्लवर्ण परिणतहुवे। गंधओ सुभिगंध प० दुभिगंधपरिणयावि। गंधथकी सुरभिगंध परिणतहुवे दुरभिगंध परिणतहुवे। रसओ तित्तर स प० जावमहुररस परिणयावि। रसथकी तिक्तरस परिणतहुवे यावत् मधुररस परिणतहुवे। फासओ गरुयफास प० लहुयफास प० सीयफास प० उसिणफास प० णिद्धफास प० लुक्खफास परिणयावि। स्पर्शथकी गुरुस्पर्श प० लघुस्पर्श प० शीतस्पर्श प० कोई उष्णस्पर्श प० कोई स्निग्धस्पर्श प० कोई रूक्षस्पर्श परिणतहुवे। संठाणओ परिमंडलसंठाण प० जावआयतसंठाणपरिणयावि। संस्थानथकी परिमंडलसंस्थान परिणतहुवे यावत् आयतस स्थान परिणतहुवे। जेफासओ गरुयफास प० ते वन्नओ कालवन्न प० जाव सुक्किलवन्नपरिणयावि। जेस्पर्शथकी गुरुस्पर्श प० ते वर्णथकी कालवर्ण प० यावत शुक्लवर्ण परिणतहुवे। गंधओ सुभिगंध दुभिगंध परिणयावि। गंधथकी सुगन्ध दुर्गन्ध परिणत हुवे। रसओ तित्तरस प० जाव महुररस परि णयावि। रसथकी तिक्तरस प० यावत् मधुररस परिणतहुवे। फासओ कक्खडफास प० मउयफास प० सीयफास प० उसिणफास प० णिद्धफास प० ॥ भाषा ॥

परि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाणपरि० चउरंससंठाणपरि० आयतसंठाणपरिणतावि । जे फासओ णिद्ध फासपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्णपरि० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किलवण्णप रिणतावि, गंधओ सुब्भिगंधपरि० दुब्भिगंधपरिणतावि, रसओ तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसप० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासओ कक्खडफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लहुय फासपरि० सीयफासपरि० उसिणफासपरिणतावि, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंस संठाणपरि० चउरंससंठाणपरि० आयतसंठाणपरिणतावि । जे फासओ लुक्खफासपरिणता ते वण्णओ काल वण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्णपरि० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किलवण्णपरिणतावि, गंधओ सुब्भिगंधप०

फास प० णिद्धफास प० लुक्खफास परिणयावि । स्पर्शथकी कर्कशस्पर्शहुवे मृदुस्पर्श प० गुरुस्पर्श प० लघुस्पर्श प० स्निग्धस्पर्श प० रूक्षस्पर्श परिणत हुवे, संठाणओ परिमंडलसंठाण प० जाव आयतसंठाणपरिणयावि । संस्थानथकी परिमंडलसंस्थान यावत् आयतसंस्थानपरिणतहुवे॥ जेफासओ णिद्धफा स प० ते वण्णओ कालवण्ण प० जावसुक्किलवण्णपरिणयावि । अथवा जे स्पर्शथकी स्निग्धस्पर्श परिणतहुवे ते वर्णथकी कालेवर्ण प० यावत् शुक्लवर्ण परि णतहुवे । गंधओ सुब्भिगंध दुब्भिगंधपरिणयावि । गंधथकी सुगंध दुर्गंधपरिणतहुवे । रसओ तित्तरस प० जाव महुररसपरिणयावि । रसथकी तिक्त रस प० यावत् मधुररसपरिणतहुवे । फासओ कक्खडफास प० मउयफास प० गरुयफास प० लहुयफास प० सीयफास प० उसिणफासपरिणयावि । स्पर्शथकी कर्कशस्पर्शपरिणतहुवे मृदुस्पर्शपरिणतहुवे गुरुस्पर्श प० लघुस्पर्श प० शीतस्पर्श प० उष्णस्पर्श परिणतहुवे । संठाणओ परिमंडलसंठाण प० जा व आयतसंठाणपरिणयावि । संस्थानथकी परिमंडलसंस्थान परिणतहुवे यावत् आयतसंस्थानपरिणतहुवे ॥ जेफासओ लुक्खफास प० ते वण्णओ काल वण्ण प० जावसुक्किलवण्णपरिणयावि । जे स्पर्शथकी रूक्षस्पर्श परिणतहुवे ते वर्णथकी कालेवर्ण परिणतहुवे यावत् शुक्लवर्णपरिणतहुवे । गंधओ सुब्भि

॥ मूल ॥

लवणपरि० लोहितवणपरि० हालिद्दवणपरि० सुक्किल्लवणपरिणतावि, गधत्ते सुब्भिगंधपरि० दुब्भिगंधपरिणतावि, रसत्ते तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० मडुररसपरिणतावि, फासत्ते कक्खडफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि, सठाणत्ते परिमडलसठाणपरि० वट्टसठाणपरि० तससठाणपरि० चउरससठाणपरि० आयतसठाणपरिणतावि। जेफासत्ते उसिणफासपरि० ते वणत्ते कालवणपरि० नीलवणपरि० लोहियवणप० हालिद्दवणपरि० सुक्किल्लवणपरिणतावि, गधत्ते सुब्भिगधपरि० दुब्भिगधपरिणतावि, रसत्ते तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० मडुररसपरिणतावि, फासत्ते कक्खडफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि, सठाणत्ते परिमंडलसठाण

॥ भाषा ॥

सपरिणयावि। जे स्पर्शथकी शीतस्पर्शपरिणत ते वर्णथकी कालेवर्ण प० यावत् शुक्लवर्ण परिणतहुवे। गधथी सुब्भिगध दुब्भिगधपरिणयावि। गधथकी सुगध दुर्गन्ध परिणतहुवे। रसथी तित्तरसपरिणया जाव महुररसपरिणयावि। रसथकी तिक्तरस प० यावत् मधुररसपरिणतहुवे। फासथी कक्खड फास प० मउयफास प० गरुयफास प० लहुयफास प० णिद्धफास प० लुक्खफासपरिणयावि। स्पर्शथकी कर्कशस्पर्श प० मृदुस्पर्श प० गुरुस्पर्श प० लघुस्पर्श प० स्निग्धस्पर्श प० रूक्षस्पर्शपरिणतहुवे। संठाणथी परिमडलसठाण प० जाव आययसठाणपरिणयावि। संस्थानथकी परिमडलसस्थान प० यावत् आयतसस्थान परिणतहुवे॥ जेफासथी उसिणफास प० तेवणथी कालवण प० जाव सुक्किल्लवणपरिणयावि। जे स्पर्शथकी उष्णस्पर्श प० ते वर्णथकी कालेवर्ण प० यावत् शुक्लवर्ण परिणतहुवे। गधथी सुब्भिगध दुब्भिगध परिणयावि। गधथकी सुगध दुर्गन्धपरिणतहुवे। रसथी तित्तरस प० जाव महुररस परिणयावि। रसथकी तिक्तरस प० यावत् मधुररस परिणतहुवे। फासथी कक्खडफास प० मउयफास प० गरुयफास प० लहुय

परि० वट्टसठाणपरि० तससठाणपरि० चउरंससठाणपरि० आयतसठाणपरिणतावि । जे फासउ णिद्धफासपरिणया ते वण्णउ कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्णपरि० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किलवण्णपरिणतावि, गधउ सुब्भिगधपरि० दुब्भिगधपरिणतावि, रसउ तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसप० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासउ कक्खडफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीयफासपरि० उसिणफासपरिणतावि, सठाणउ परिमडलसंठाणपरि० वट्टसठाणपरि० तससठाणपरि० चउरंससठाणपरि० आयतसठाणपरिणतावि । जे फासउ लुक्खफासपरिणता ते वण्णउ कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्णपरि० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किलवण्णपरिणतावि, गधउ सुब्भिगंधप०

फास प० णिद्धफास प० लुक्खफास परिणयावि । स्पर्शथकी कर्कशस्पर्शहुवे मृदुस्पर्श प० गुरुस्पर्श प० लघुस्पर्श प० स्निग्धस्पर्श प० रूक्षस्पर्श परिणत हुवे, सठाणथी परिमडलसठाण प० जाव आयतसठाणपरिणयावि । सस्थानथकी परिमडलसस्थान यावत् आयतसस्थानपरिणतहुवे ॥ जेफासथी णिद्धफास प० ते वर्णथी कालवर्ण प० जावसुक्किलवर्णपरिणयावि । अथवा जे स्पर्शथकी स्निग्धस्पर्श परिणतहुवे ते वर्णथकी कालेवर्ण प० यावत् शुक्लवर्ण परिणतहुवे । गधथी सुब्भिगध दुब्भिगधपरिणयावि । गधथकी सुगध दुर्गन्धपरिणतहुवे । रसथी तित्तरस प० जाव महुररसपरिणयावि । रसथकी तिक्त रस प० यावत् मधुररसपरिणतहुवे । फासथी कक्खडफास प० मउयफास प० गरुयफास प० लहुयफास प० सीयफास प० उसिणफासपरिणयावि । स्पर्शथकी कर्कशस्पर्शपरिणतहुवे मृदुस्पर्शपरिणतहुवे गुरुस्पर्श प० लघुस्पर्श प० शीतस्पर्श प० उष्णस्पर्श परिणतहुवे । सठाणथी परिमडलसठाण प० जाव आयतसठाणपरिणयावि । सस्थानथकी परिमडलसस्थान परिणतहुवे यावत् आयतसस्थानपरिणतहुवे ॥ जेफासथी लुक्खफास प० ते वर्णथी काल वर्ण प० जावसुक्किलवर्णपरिणयावि । जे स्पर्शथकी रूक्षस्पर्श परिणतहुवे ते वर्णथकी कालेवर्ण परिणतहुवे यावत् शुक्लवर्णपरिणतहुवे । गधथी सुब्भि

॥ टीका ॥

स्निग्धस्पर्शपरिणता २३' रूक्षस्पर्शपरिणता २३' एतेषा मेकत्रमीलने जात भङ्गकाना चतुरशीत्यधिक शत १८४, सस्थानमधिकृत्याह–जेसठाणतोप रिमण्डलसठाणपरिणयाइत्यादि ॥ ये सस्थानत परिमण्डलसस्थानपरिणता स्ते वर्णत ५ गन्धत' २ रसत ५ स्पर्शत ८ एते सर्वेप्येकत्र मीलिता

॥ मूल ॥

दुब्भिगंधपरिणतावि, रसउ तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासउ कक्खडफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरिणतावि, सठाणउ परिमंडलसठाणपरि० वट्टसठाणपरि० तससठाणपरि० चउरससठाणपरि० आयतसठापरि० । जे संठाणउ परिमंडलसंठाणपरिणता ते वन्नउ कालवन्नपरि० नीलवन्नपरि० लोहितवन्नपरि० हालिद्दवन्नपरि० सुक्किलवन्नपरिणतावि, गंधउ सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि, रसउ तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासउ कक्खडफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफास

॥ भाषा ॥

गध दुब्भिगधपरिणयावि । गन्धथकी सुगन्ध दुगन्धपरिणतहुवे । रसथी तित्तरस प० जावमहुरस परिणयावि । रसथकी तिक्तरसपरिणतहुवे यावत् मधुररसपरिणतहुवे । फासथी कक्खडफास प० मउयफास प० गुरुयफास प० लहुयफास प० सीयफास प० उसिणफास परिणयावि । स्पर्शथकी कर्कशस्पर्श प० गुरुस्पर्श प० लघुस्पर्श प० शीतस्पर्श प० उष्णस्पर्श परिणतहुवे । सठाणथी परिमडलसठाण प० जाव आययसंठाणपरिणयावि । सस्थानथकी परिमडलसस्थानपरिणतहुवे यावत् आयतसस्थानपरिणतहुवे ॥ जे सठाणथी परिमडलसठाण प० ते वणथी कालवन्न प० जाव सुक्किलवन्न परिणयावि । ते वर्णथकी कालेवर्णपरिणतहुवे यावत् श्वेतवर्ण परिणतहुवे । गधथी सुब्भिगध दुब्भिगधपरिणयावि । गधथकी सुगध दुर्गधपरिणतहुवे । रसथी तित्तरस प० यावत् महुररसपरिणयावि । रसथकी तिक्तरस यावत् मधुररसपरिणतहुवे । फासथी कक्खडफास प० मउयफास प० गरुयफास प० लहु

विंशति २० एतावन्तो जङ्कान् परिमण्डलसंस्थानपरिणता लभन्ते, एवं वृत्तसंस्थानपरिणता २० ॥ त्र्यस्रसंस्थानपरिणता २०, चतुरस्रसंस्थान परिणता २०, आयतसंस्थानपरिणता २० ॥ अमीषां चैकत्रमीलनेन लब्धं जङ्कानां शतं, एषां च वर्णगन्धरसस्पर्शसंस्थानानां सकलजङ्कसङ्कलने

परि० लुक्कफासपरिणतावि । जेसठाणउ वट्टसठाणपरि० ते वखउ कालवखपरि० नीलवखपरि० लोहितवखपरि० हालिद्दवखपरि० सुक्किलपरिणतावि, गधउ सुब्भिगधपरि० दुब्भिगधपरिणतावि, रसउ तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासउ कक्खडफासप० मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्कफासपरिणतावि । जेसठाणउ तससठाणपरि० ते वखउ कालवखपरि० नीलवखपरि० लोहितवखपरि० हालिद्दवखपरि० सुक्किलवखपरिणतावि, गधउ सुब्भिगधपरिणतावि दुब्भिगधपरिणतावि, रसउ तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासउ कक्खडफासपरि०

उफास प० सीयफास प० उसिणफास प० णिद्धफास प० लुक्खफास परिणयावि । स्पर्शथकी कर्कशस्पर्शपरिणतहुवे मृदुस्पर्शपरिणतहुवे गुरुस्पर्शपरिणतहुवे लघुस्पर्शपरिणतहुवे शीतस्पर्शपरिणतहुवे उष्णस्पर्शपरिणतहुवे स्निग्धस्पर्शपरिणतहुवे रूक्षस्पर्शपरिणतहुवे ॥ जे सठाणथी वट्टसठाणपरिणयावि जे संस्थानथकी वृत्तसंस्थानपरिणत ते पिण तेवर्णथी कालवण्ण० जावसुक्किलवण्णपरिणयावि । ते वर्णथकी कालेवर्णपरिणतहुवे यावत् शुक्लवर्णपरिणतहुवे । गधथी सुब्भिगध दुब्भिगधपरिणयावि । गधथकी सुगध दुर्गन्धपरिणतहुवे । रसथी तित्तरस जाव महुररसपरिणयावि । रसथकी तिक्तरस याव त् मधुररसपरिणतहुवे । फासथी कक्खडफास प० जाव लुक्खफासपरिणयावि । स्पर्शथकी कर्कशस्पर्शपरिणतहुवे यावत् रूक्षस्पर्शपरिणतहुवे ॥ जेसठाण थी तससठाण प० ते वण्णथीकालवण्ण प० जाव सुक्किलवण्णपरिणयावि । जे संस्थानथकी त्र्यस्रसंस्थानपरिणतहुवे ते वर्णथकी कालेवर्णपरिणतहुवे यावत्

॥ टीका ॥

स्निग्धस्पर्शपरिणता २३' रूक्षस्पर्शपरिणता २३' एतेषा मेकत्रमीलने जात भङ्गकाना चतुरशीत्यधिक शत १८४, सस्थानमधिकृत्याह—जेसठाणओप रिमण्डलसठाणपरिणयाइत्यादि ॥ ये सस्थानत परिमण्डलसस्थानपरिणता स्ते वर्णत ५ गन्धत' २ रसत ५ स्पर्शत ८ एते सर्वेप्येकत्र मीलिता

॥ मूल ॥

दुब्भिगंधपरिणतावि, रसउ तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासउ कक्खडफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरिणतावि, सठाणउ परिमंडलसठाणपरि० वट्टसठाणपरि० तंससंठाणपरि० चउरससठाणपरि० आयतसठापरि० । जे संठाणउ परिमंडलसठाणपरिणता ते वन्नउ कालवन्नपरि० नीलवन्नपरि० लोहितवन्नपरि० हालिद्दवन्नपरि० सुक्किलवन्नपरिणतावि, गंधउ सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि, रसउ तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासउ कक्खडफासपरि० मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफास

॥ भाषा ॥

गध दुब्भिगधपरिणयावि । गन्धथकी सुगन्ध दुर्गन्धपरिणतहुवे । रसथी तित्तरस प० जावमहुररस परिणयावि । रसथकी तिक्तरसपरिणतहुव यावत् मधररसपरिणतहुवे । फासथी कक्खडफास प० मउयफास प० गुरुयफास प० लहुयफास प० सीयफास प० उसिणफास परिणयावि । स्पर्शथकी कर्कशस्पर्श प० गुरुस्पर्श प० लघुस्पर्श प० शीतस्पर्श प० उष्णस्पर्श परिणतहुवे । सठाणथी परिमडलसठाण प० जाव आययसठाणपरिणयावि । सस्थानथकी परिमडलसस्थानपरिणतहुवे यावत् आयतसस्थानपरिणतहुवे ॥ जे सठाणथी परिमडलसठाण प० ते वर्णथी कालवन्न प० जाव सुक्किलवन्न परिणयावि । ते वर्णथकी कालेवर्णपरिणतहुवे यावत् श्वेतवर्ण परिणतहुवे । गधथी सुब्भिगध दुब्भिगधपरिणयावि । गधथकी सुगध दुर्गधपरिणतहुवे । रसथी तित्तरस प० यावत् महुररसपरिणयावि । रसथकी तिक्तरस यावत् मधुररसपरिणतहुवे । फासथी कक्खडफास प० मउयफास प० गरुयफास प० लहु

॥ टीका ॥

विंशति २० एतावन्तो भङ्गान् परिमण्डलसंस्थानपरिणता लभ्यन्ते, एवं वृत्तसंस्थानपरिणता २० ॥ त्र्यस्रसंस्थानपरिणता २०, चतुरस्रसंस्थान परिणता २०, आयतसंस्थानपरिणता २० ॥ अमीषां चैकत्रमीलनेन लब्ध भङ्गाना शत, एवाच वर्णगन्धरसस्पर्शसंस्थानाना सकलभङ्गसङ्कलने

॥ मूल ॥

परि० लुक्खफासपरिणतावि । जेसंठाणऊ वट्टसंठाणपरि० ते वण्णऊ कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्णपरि० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किलपरिणतावि, गंधऊ सुब्भिगंधपरि० दुब्भिगंधपरिणतावि, रसऊ तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासऊ कक्खडफासप० मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि । जेसंठाणऊ तंससंठाणपरि० ते वण्णऊ कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्णपरि० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किलवण्णपरिणतावि, गंधऊ सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि, रसऊ तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासऊ कक्खडफासपरि०

॥ भाषा ॥

यफास प० सीतफास प० उसिणफास प० णिद्धफास प० लुक्खफास परिणयावि । स्पर्शथकी कर्कशस्पर्शपरिणतहुवे मृदुस्पर्शपरिणतहुवे गुरुस्पर्शपरिणतहुवे लघुस्पर्शपरिणतहुवे शीतस्पर्शपरिणतहुवे उष्णस्पर्शपरिणतहुवे स्निग्धस्पर्शपरिणतहुवे रूक्षस्पर्शपरिणतहुवे ॥ जे संठाणथी वट्टसंठाणपरिणयावि जे संस्थानथकी वृत्तसंस्थानपरिणत ते पिण तेवण्णथी कालवण्णप० जावसुक्किलवण्णपरिणयावि । ते वर्णथकी कालेवर्णपरिणतहुवे यावत् शुक्लवर्णपरिणतहुवे । गंधथी सुब्भिगंध दुब्भिगंधपरिणयावि । गंधथकी सुगंध दुर्गंधपरिणतहुवे । रसथी तित्तरस जाव महुररसपरिणयावि । रसथकी तिक्तरस यावत् मधुररसपरिणतहुवे । फासथी कक्खडफास प० जाव लुक्खफासपरिणयावि । स्पर्शथकी कर्कशस्पर्शपरिणतहुवे यावत् रूक्षस्पर्शपरिणतहुवे ॥ जेसंठाणथी तंससंठाण प० ते वण्णथीकालवण्ण प० जाव सुक्किलवण्णपरिणयावि । जे संस्थानथकी त्र्यस्रसंस्थानपरिणतहुवे ते वर्णथकी कालेवर्णपरिणतहुवे यावत्

जातानि त्रिंशदधिकानि पञ्चशतानि' इह यद्यपि बादरेषु स्कन्धेषु पञ्चापि वर्णा द्वावपिगन्धौ पञ्चापिरसा प्राप्यन्ते ततोवधीकृतवर्णादिव्यति रेकेण शेषवर्णादिभिरपि भङ्गा सम्भवन्ति तथापि तेष्वेव बादरेषुस्कन्धेषु व्यवहारत केवलकृष्णवर्णाद्युपेता अपान्तरालस्कन्धा यथादेहस्कन्धएव लोचनस्कन्ध कृष्ण स्तदन्तर्गतएव कश्चिल्लोहितोऽन्य स्तदन्तर्गतएव शुक्लइत्यादि ते इहविवक्ष्यन्ते तेषाञ्चा न्यद्वर्णान्तरादि नसम्भवति, स्पर्शचिन्तायां

मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि । जे संठाणउ चउरससंठाणपरिणता ते वण्णउ कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहियवण्णपरि० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किलवण्णपरिणतावि, गंधउ सुब्भिगंधपरि० दुब्भिगंधपरिणतावि, रसउ तित्तरसप० कडुयरसप० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासउ कक्खडफासपरि० मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरि० । जे संठाणउ आयतसंठाणपरिणता ते वण्णउ कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्णप०

स्वेतवर्णपरिणतहुवे । गंधथी सुब्भिगंध दुब्भिगंधपरिणयावि । गंधथकी सुगन्ध दुर्गन्धपरिणतहुवे । रसथी तित्तरस जाव महुररसपरिणयावि । रसथकी तिक्तरस यावत् मधुररसपरिणतहुवे । फासथी कक्खडफास प० जाव लुक्खफासपरिणयावि । स्पर्शथकी कर्कशस्पर्श प० रूक्षस्पर्शपरिणतहुवे । जे संठाणथी चउरंससंठाणपरिणयावि । जे संस्थानथकी चउरससंस्थानपरिणतहुवे । ते वर्णथीकालवर्णपरिणया जाव सुक्किलवर्णपरिणयावि । ते वर्णथकी कालेवर्णपरिणत यावत् शुक्लवर्णपरिणतहुवे । गंधथी सुब्भिगंध दुब्भिगंधपरिणयावि । गंधथकी सुगंधदुर्गन्धपरिणतहुवे । रसथी तित्तरस प० जाव महुररसपरिणयावि । रसथकी तिक्तरस यावत् मधुररसपरिणतहुवे । फासथी कक्खडफास जाव लुक्खफासपरिणयावि । स्पर्शथकी कर्कशस्पर्श परिणतहुवे यावत् रूक्षस्पर्शपरिणतहुवे । जे संठाणथी आयतसंठाणपरिणया । जे संस्थानथकी आयतसंस्थानपरिणतहुवे । ते वर्णथी कालवर्ण प०

॥ टीका ॥

स्पर्शाः कृतस्पर्शास्प्रति प्रतिपक्षव्यतिरेकेणान्ये स्पर्शालोकव्यावरोधिनो दृश्यन्ते, ततो यथोक्तैव भङ्गसङ्ख्या' सापि च परिस्थूरन्यायमङ्गीकृत्या ज्ञिहिता ऽन्यथा प्रत्येक मप्येषा तारतम्येना नन्तत्वात् अनन्तभङ्गा सम्भवन्ति, एपाञ्च वर्णादिपरिणामाना जघन्यतो वस्थान मेक समय मुत्कर्षतो सङ्ख्येय काल, सम्प्रत्युपसहारमाह–सेत्तरूविअजीवपन्नवणा ॥ सेत अजीवपरणवणा सैपा रूप्यजीवप्रज्ञापना॥ सैपा ऽजीवप्रज्ञापना॥ साम्प्रत ज्जीवप्रज्ञापना मभि धित्सु स्तद्विपय प्रश्नसूत्र चाह–सेकितमित्यादि ॥ अथ का सा जीवप्रज्ञापना ? सूरिराह–जीवप्रज्ञापना द्विविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा–ससारसमापन्नजीवप्र ज्ञापनाच असंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापनाच, तत्र ससरण ससारो नारकतिर्यग्नरामरभवानुभवलक्षण स्त सम्यगेकीभावेनापन्ना , ससारवर्त्तिन इत्य

॥ मूल ॥

हालिद्दवण्णपरि० सुक्किल्लवण्णपरिणतावि, गधत्ते सुब्भिगधपरिणतावि दुब्भिगधपरिणतावि, रसत्ते तित्तरस परि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अविलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासत्ते कक्खडफासपरि० म उयफासपरि० गुरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफा सपरि० ॥ सेत्त रूविअजीवपण्णवणा ॥ सेत्त अजीवपण्णवणा ॥ से कित जीवपण्णवणा ? जीवपण्णवणा दुवि हा पण्णत्ता, तजहा–ससारसमावण्णजीवपण्णवणाय असंसारसमावण्णजीवपण्णवणाय । से कित असंसार

॥ भाषा ॥

जायसुक्किल्लवण्णपरिणयावि । ते वर्णथकी कालेवर्ण यावत् शुक्लवर्णपरिणतहुवे । गधथी सुब्भिगध दुब्भिगधपरिणयावि । गन्धथकी सुगन्धदुर्गन्धपरिणत हुवे । रसथी तित्तरस जाव महुररसपरिणयावि । रसथकी तिक्तरस यावत् मधुररसपरिणतहुवे । फासथा कक्खडफास प० मउयफास प० गरुयफास प० लहुयफास प० सीयफास प० उसिणफास प० णिद्धफास प० लुक्खफासपरिणयावि । स्पर्शथकी कर्कशस्पर्शपरिणतहुवे मृदुस्पर्शपरिणतहुवे गुरुस्प र्शपरिणतहुवे लघुस्पर्शपरिणतहुवे शीतस्पर्शपरिणतहुवे उष्णस्पर्शपरिणतहुवे स्निग्धस्पर्शपरिणतहुवे रूक्षस्पर्शपरिणतहुवे । सेत्तरूवीअजीवपण्णवणा सेत्तअजीवपण्णवणा । ते जिम सर्व रूपी अजीवप्रज्ञापनाकही एतले रूपीका भाव अरूपीका भावभेद प्रकाश्या तेजिम इति पाचसौतीस ५३० भेदे

॥ टीका ॥

र्थः, तेचते जीवाश्च तेषां प्रज्ञापना संसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना" नसंसारो ऽसंसारो मोक्ष स्तं समापन्ना असंसारसमापन्ना, मुक्ताइत्यर्थः, तेचते जीवाश्च तेषां प्रज्ञापना असंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना" चशब्दौ प्राग्वत् तत्राल्पवक्तव्यत्वा त्प्रथमतो ऽसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना मभिधित्सु स्त द्विषय प्रश्नसूत्रमाह–सेकितमित्यादि ॥ अथ कासा असंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना ? सूरिराह–असंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना द्विविधा प्रज्ञप्ता त द्यथा–अनन्तरसिद्धाऽसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापनाच परम्परसिद्धाऽसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापनाच, तत्र नविद्यते ऽन्तरं व्यवधानं मर्या त्समयेन ये षांते ऽनन्तरा स्तेचते सिद्धा श्चानन्तरसिद्धाः, सिद्धत्वप्रथमसमये वर्त्तमाना इत्यर्थः, तेचते असंसारसमापन्नजीवाश्च अनन्तरसिद्धाऽसंसारसमापन्न जीवा स्तेषां प्रज्ञापना अनन्तरसिद्धाऽसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना, चशब्द स्वगतानेकभेदसूचकः, तथा विवक्षिते प्रथमेसमये यः सिद्ध स्तस्य यो द्वितीयसमयसिद्ध सपर स्तस्यापि यस्तृतीयसमयसिद्ध सपरएव मन्येपिवाच्या, परेचपरेचेति वीप्सायां, पृषोदरादय इति परम्परशब्दनिष्पत्तिः,

॥ मूल ॥

समावन्नजीवपन्नवणा असंसारसमावन्नजीवपन्नवणा दुविहा पन्नत्ता, तंजहा–अणंतरसिद्धअसंसारसमाव न्नजीवपन्नवणा परंपरसिद्धअसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा। से किंतं अणंतरसिद्धअसंसारसमावन्नजीवपन्न

॥ भाषा ॥

अजीवप्रज्ञापना जाणपणे कह्यो ॥ १ ॥ सेकितंजीवपन्नवणा जीवपन्नवणा दुविहा पन्नत्ता तंजहा । हिवे अठा आगे अजीवराभेदकह्या पछे जीवरी जाणपणो शिष्यपूछेछे जीवप्रज्ञापनानाभेद गुरुकहेछे—ते जीवप्रज्ञापना दोयप्रकारे तेजिम ॥ संसारसमावन्नजीवपन्नवणा । संसारप्राप्त ते संसारीजीव संसारमांहिरहेछे ते जीवप्रज्ञापना । असंसारसमावन्नजीवपन्नवणा । असंसारप्राप्त असंसारीजीव ते सिद्धना जीव कर्मरहित ते असंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना । सेकितंअसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा २ दुविहा पन्नत्ता तंजहा । ते जिमछे तिम असंसार सम्प्राप्त जीवप्रज्ञापनाना दोयभेदकह्या तेहीजकहेछे—संसारसमावन्नजीवपन्नवणा । ते संसारस्थ जीवप्रज्ञापना । असंसारसमावन्नजीवपन्नवणा । असंसारस्थ जीवप्रज्ञापना सेकितंअसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा । ते कुण असंसारसम्प्राप्त जीवप्रज्ञापना । असंसारसमावन्नजीवपन्नवणादुविहा प० तंजहा । असंसार सम्प्रा-

॥ टीका ॥

परम्पराश्च तेसिद्धाश्च परम्परसिद्धा विवक्षितसिद्धस्य प्रथमसमयात्प्राक् द्वितीयादिसमये सिद्धताद्या यावद्वर्तमाना इतिज्ञाव, स्तेच ते असंसारसमापन्ना श्च परम्परसिद्धासंसारसमापन्ना स्तेषते जीवा श्च तेषा प्रज्ञापना परम्परसिद्धासंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना, अत्रा पि च शब्द स्वगतानेक भेदसूचक ॥ सेकिंत मित्यादि ॥ अथ का सा अनन्तरसिद्धाऽसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना ? सूरि राह–अनन्तरसिद्धासंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना पञ्चदशविधा प्रज्ञप्ता अनन्तरसिद्धाना मुपाधिभेदत पञ्चदशविधत्वात्, तदेव पञ्चदशविधत्वतेषामाह–तजहेत्यादि ॥ तद्यथेति । पञ्चदशभेदो पदर्शनसूचक, तीर्थसिद्धा तीयते संसारसागरो ऽनेनेति तीर्थं यथावस्थितसकलजीवाजीवादिपदार्थसार्थप्ररूपक परमगुरुप्रणीत प्रवचन, तच्चनिराधार नभवती तिसघ ' प्रथमगणधरोवा वेदितव्य, उक्तच–तित्यभतेतित्थ तित्थकरेतित्थ गो ? अरिहाताव तित्थकरे तित्थ पुण चाउवन्नो सम णसघो पढमगणहरो वा इति, तस्मि न्नुत्पन्ने ये सिद्धा स्ते तीर्थसिद्धा ।१। तथा तीर्थस्या भावो ऽतीर्थ, तीर्थस्या भावश्चा नुत्पादो ऽपान्तराले व्यवच्छेदो वा, तस्मिन् ये सिद्धा स्ते ऽतीर्थसिद्धा स्तत्र तीर्थस्या नुत्पादे सिद्धा मरुदेवीप्रभृतय, नहि मरुदेव्यादिसिद्धिगमनकाले तीर्थं मुत्पन्न मासीत्, तथा तीर्थस्य व्यवच्छेद सुविधस्वाम्याद्यपान्तरालेषु तत्र य जातिस्मरणादिना ऽपवर्गमार्गमवाप्य सिद्धा स्तेतीर्थव्यवच्छेदसिद्धा । २ । तथा तीर्थकरा सन्तो ये सिद्धा स्ते तीर्थकरसिद्धा । ३ । सामान्यकेवलिन सतो ये सिद्धा स्ते ऽतीर्थकरसिद्धा । ४ । स्वयम्बुद्धा सतो ये सिद्धा स्तेस्वयम्बुद्धसिद्धा । ५ । प्रत्येकबुद्धा सतो ये सिद्धा स्ते प्रत्येकबुद्धसिद्धा, अथ स्वयम्बुद्धप्रत्येकबुद्धाना क प्रतिविशेष ? उच्यते बोध्युपधिश्रुतलिङ्गकृतोविशेष, तथाहि–स्वयम्बुद्धा बाह्यप्रत्यय मन्तरेणैव निजजातिस्मरणादिना बुद्धा स्वयम्बुद्धा इति व्युत्पत्ते, ते च द्विधा तीर्थकरा स्तीर्थकरव्यतिरिक्ताश्च

॥ मूल ॥

वणा ? अणतरसिद्धअससारसमावन्नजीवपन्नवणा पन्नरसविहा पन्नत्ता, तजहा–तित्थसिद्धा १ अतित्थसिद्धा २ तित्थगरसिद्धा ३ अतित्थगरसिद्धा ४ सयबुद्धसिद्धा ५ पत्तेयबुद्धसिद्धा ६ बुद्धबोहियसिद्धा ७

॥ भाषा ॥

तीर्थंकर ते प्रत्येकबुद्ध ६ एकादिकरूप सचेतन तथा अचेतन देखीजातिस्मरण ज्ञानथी करकडूनमिअनगार बुद्धबोधितसिद्ध ७ आचार्यगणधरैप्रतिबोध्या

इहतीर्थंकरव्यतिरिक्ते रधिकार आहच नन्द्यध्ययनचूर्णिकृत्-दुविहा सयबुद्धा तित्थयरा तित्थयरवइरित्ता य इह वइरित्ते हि अहिगारो इति, प्रत्येकबुद्धा स्तु बाह्यप्रत्यय मपेक्ष्य प्रत्येक बाह्य वृषभादिक कारण मभिसमीक्ष्य बुद्धा प्रत्येकबुद्धा इतिव्युत्पत्ते, तथाच श्रूयते बाह्यप्रत्ययसापेक्षा करकण्डादीना बोधि ' बहि प्रत्यय मपेक्ष्य च तेबुद्धा सतो नियमत प्रत्येक मेव विहरन्ति न गच्छवासिनइव सइला ' आहच नन्द्यध्ययनचूर्णिकृत्-पत्तेय बाह्य वृषभादिक कारण मभिसमीक्ष्य बुद्धा बहि प्रत्ययप्रतिबुद्धाना पत्तेय नियमा विहारो जम्हातम्हा य ते च पत्तेयबुद्धा इति, तथा स्वयम्बुद्धाना मुपधि र्द्वादशविधएव पात्रादिक ' प्रत्येकबुद्धानातु द्विधा जघन्यत स्तथो त्कर्षतश्च, तत्र जघन्यतो द्विविध, उत्कर्षतो नवविध प्रावरणवर्ज, उक्तच-पत्तेयबुद्धाण जहन्नेण दुविहो उक्कोसेण नवविहो नियमा पाउरणवज्जो भवइ त्ति, तथा स्वयम्बुद्धाना पूर्वाधीत श्रुत भवति वानवा यदिभवति ततो लिङ्ग देवतावा प्रयच्छति गुरुसन्निधौवा गत्वा प्रतिपद्यते, यदिचै काकी विचरणसमर्थ इच्छाया तस्य तथारूपा जा

यते तत एकाकी विहरति, अन्यथा गच्छवासे ऽवतिष्ठते' अथ पूर्वाधीत श्रुत तस्य नभवति तर्हि नियमा गुरुसन्निधौ गत्वा लिङ्गप्रतिपद्यते गच्छ
१ वश्य नमुञ्चति' तथाचोक्त-पुव्वाहीय सुय से हवइ वान वा जइ से नत्थि तो लिंग नियमा गुरुसन्निहि पडिवज्जिय गच्छेय विहरइति'
अह पुव्वाधीय सुयसंभवो अत्थि तो सेलिंग देवया पडिच्छइ गुरुसन्निहेवा पडिवज्जइ जइ य एगविहारविहरणसमत्थो इच्छावा से तो एक्को
२ चेव विहरइ अन्नहा गच्छे विहरइत्ति । प्रत्येकबुद्धानातु पूर्वाधीत श्रुत नियमतो भवति, तच्च जघन्यत एकादशाङ्गान्यु त्कर्षत किञ्चिन्न्यूनानि दशपूर्वाणि, तथा लिङ्ग तस्मै देवता प्रयच्छति, लिङ्गरहितोवा कदाचि द्भवति तथाचोक्त-पत्तेयबुद्धाण पुव्वाहीय सुय नियमा हवइ जहन्नेण एक्कारसअंगा उक्कोसेण भिन्नदसपुव्वी लिगच से देवया पयच्छइ लिगवज्जिओ वा हवइ जओ भणिय रूप्प पत्तेयबुद्धा इति ।६। तथा बुद्धा आचार्या स्तै र्बोधिता सतो ये सिद्धा स्ते बुद्धबोधितसिद्धा ।७। एतेच सर्वेपि केचि त्स्त्रीलिङ्गसिद्धा स्त्रियालिङ्ग स्त्रीलिङ्ग' स्त्रीत्वस्यो पलक्षणमित्यर्थ ' तच्च त्रिधा

वेद' शरीरनिर्वृत्ति नेपथ्यच तत इह शरीरनिर्वृत्त्या प्रयोजन न वेदनेपथ्याभ्या वेदेसति सिद्धत्वाभवात्, नेपथ्यस्य चा प्रमाणत्वात्, आहच–नन्द्यध्ययनचूर्णिकृत्–इत्थीए लिग इत्थिलिग इत्थीए उवलक्खणाति वुत्त भवइ, त च तिविह वेदो सरीरनिव्वत्तीए नेयरथेच इह सरीरनिव्वत्तीए अहिगारो न वेयनेवत्थेहिति । तत स्तस्मिन् लिङ्गवर्तमाना सतो ये सिद्धा स्ते स्त्रीलिङ्गसिद्धा, एतेन यदाहु राशाबरा नस्त्रीणानिर्वाणमिति तद पास्त द्रष्टव्य, स्त्रीनिर्वाणस्य साक्षा दनेन सूत्रेण जिधानात्' त त्प्रतिवेधस्य युत्त्यनुपपन्नत्वा तथाहि–मुक्तिपथो ज्ञानदर्शनचारित्राणि, सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्ग इतिवचनात् सम्यग्दर्शनादीनि पुरुषाणामिव स्त्रीणा म प्यविकलानि दृश्यन्ते तथाहि–दृश्यन्ते स्त्रियोपि सकलमपि प्रवचनाथ मभिरोचयमाना जानते च षडावश्यककालिकोत्कालिकादिभेदभिन्न श्रुत परिपालयन्ति सप्तदशप्रकार मकलङ्क सयम धारयन्ति च देवासुराणामपि दुर्द्धर ब्रह्मचर्य तप्यते च तपासि मासक्षपणादीनि तत कथ मिव न तासा मोक्षसम्भव ? (नग्न प्राह)स्या देतद स्ति स्त्रीणा सम्यग्

दर्शन ज्ञान वा न पुनश्चारित्र सयमाभावात्, तथाहि–स्त्रीणा मवश्य वस्त्रपरिभोगेन भवितव्य मन्यथा विवृताङ्ग्य स्ता स्तिर्यक्स्त्रियइव पुरुषाणा मभिभवनीया भवेयु, लोकेच गर्हा पजायते ततो वश्य ताभि र्वस्त्र परिभोक्तव्य, वस्त्रपरिभोगे च सपरिग्रहता, सपरिग्रहत्वे च सयमाभाव इति, (सैद्धान्तिक)तदसमीचीन सम्यक् सिद्धान्तापरिज्ञानात्, परिग्रहो हि परमार्थतो मूर्च्छा भिधीयते, मुच्छा परिग्गहो वुत्तो इतिवचनात्, तथाहि–मूर्च्छारहितो भरत श्चक्रवर्त्ती सान्त पुरो प्या दर्शकगृहे वतिष्ठमानो निष्परिग्रहो गीयते, अन्यथाकेवलोत्पादो न सम्भवेत्' अपिच–यदिमूर्च्छाया मभावेपि वस्त्रससर्गमात्र परिग्रहो भवे त्ततोजिनकल्पप्रतिपन्नस्य कस्यचि त्साधो स्तुषारकणानुषक्ते प्रपतति शीते केना प्यविपश्चा पनिपात मद्य शीत मिति विभाव्य धर्मार्थिना शिरसि वस्त्रे प्रक्षिप्ते तस्य सपरिग्रहता भवेत् नचै तदिष्ट तस्मा न्न वस्त्रससर्गमात्र परिग्रह' किं तु मूर्च्छा सा च स्त्रीणा वस्त्रादिषु न विद्यते धर्मोपकरणमात्रतया तस्यो पादानात्, न खलु ता वस्त्र मतरेण स्थान रक्षयितु मीशते नापि शीतकालादिषु

वाग्दशाया स्वाध्यायादिक कर्तुं, ततो दीर्घतरसंयमपरिपालनाय यतनया वस्त्र परिभुञ्जाना न ता परिग्रहवत्य, अथो च्यते सत्नवति नाम स्त्री णा मपि सम्यग्दर्शनादिकरत्नत्रय पर न तत्सत्रवमात्रेण मुक्तिपदप्रापक जवति, कि तु प्रकर्षप्राप्त मन्यथादीक्षानतर मेव सर्वेषा मप्य विशेषेण मुक्तिपदप्राप्तिप्रसक्ति, सम्यग्दर्शनादिरत्नत्रयप्रकर्ष श्च स्त्रीणा मसम्भयी ततो न निर्वाण मिति' तद प्य युक्त' स्त्रीपुरत्नत्रयप्रकर्ष स्सम्भवति, स म्भयग्राहक प्रमाण विजृम्भते देशकालविप्रकृष्टेषु प्रत्यक्षस्याप्रवृत्त, सद प्रवृत्तोचा नुमानस्या प्य सम्भवात्, नापि तासु रत्नत्रयप्रकर्षासम्भयप्रति पादक को प्यागमो विद्यत' प्रत्युतसम्भवप्रतिपादक स्याने २ स्ति, यथा इद मेव प्रस्तुत सूत्र ततो न तासा रत्नत्रयप्रकर्षासत्नवो, ऽथ मन्येथा स्वभाव तएवा तपेनेव च्छाया विरुध्यते स्त्रीत्वेन सह रत्नत्रयप्रकर्ष, स्तत स्तदसत्नवो नुमीयत, तदयुक्त मुक्त युक्तिविरोधात्, तथाहि–रत्नत्रयप्रकर्ष स उ च्यते ततो नन्तर मुक्तिपदप्राप्ति, स चा योग्यवस्था चरमसमयभावी अयोग्यवस्था चा स्तादृग प्रत्यक्षा तत कथ विरोधगति ? नहि अदृष्टेन स

ह विरोध प्रतिपत्तु शक्यते, माप्रापत् पुरुषेष्वपि प्रसङ्ग (नम्न) ननु जगति सर्वोत्कृष्टपदप्राप्ति सर्वोत्कृष्टेनाध्यवसायेना वाप्यते ना न्यथा, एत च्चो त्र यो रप्या वयो रागमप्रामाण्यबलत सिद्ध सर्वोत्कृष्टदु'खस्थान सर्वोत्कृष्टसुखस्थान च, तत्रसर्वोत्कृष्टदु खस्थान सप्तमनरकपृथ्वी अत पर परमदु खस्था नस्या जावात्, सर्वोत्कृष्टसुखस्थान तु नि श्रेयस, तत्रस्त्रीणासप्तमनरकपृथिवीगमन मागमे निषिद्ध, निषेधस्य च कारण, तद्गमनयोग्यतथाविधसर्वो त्कृष्टमनोवीर्यपरिणत्य ज्ञाव स्तत, सप्तमपृथिवीगमनवत्याजावात् समूर्च्छिमादिवत्, अपि च यासा वादलब्धी विकुर्वणत्वादिलब्धौ पूर्वगतश्रुताधिग तौ च न सामर्थ्यगति स्तासा मोक्षगमनसामर्थ्य मित्य तिदु श्रद्धेय (सैद्धान्तिक) तदेतदयुक्त, यतो यदि नाम स्त्रीणा सप्तमनरकपृथिवीगमनप्रति सर्वो त्कृष्टमनोवीर्यपरिणत्यजाव, स्तत एतावता कथ मवसीयत नि श्रेयसम पि प्रति तासा सर्वोत्कृष्टमनोवीर्यपरिणत्य जावो? नहि यो भूमिकर्षणादिक क र्मकर्तु न शक्नोति स शास्त्राण्यप्य वगाढ न शक्नोती ति प्रत्येतु शक्य प्रत्यक्षविरोधात्, अथ समूर्च्छिमादिषू जयत्रा पि सर्वोत्कृष्टमनोवीर्यपरिण

॥ टीका ॥

त्यजावोदृष्ट स्ततो त्रा वसीयते, ननु यदि तत्र दृष्ट स्तर्हि कथ मत्रावसीयते, न खलु बहि व्याप्तिमात्रेण हेतु र्गमको जवति कि त्वन्तर्व्याप्त्या, ऽन्त
र्व्याप्ति श्च प्रतिबन्धबलेन, न चा त्र प्रतिबन्धो विद्यते, न खलु सप्तमपृथिवीगमन निर्वाणगमनस्यकारण, ना पि सप्तमपृथिवीगमनाविनाजावि नि
र्वाणगमन चरमशरीरिणा सप्तमपृथिवीगमन मन्तरेणै व निर्वाणगमनाजावात्' न च प्रतिबन्ध मन्तरेण एकस्या,भावे न्यस्या वश्य मजावो माप्राप
त् यस्य तस्य वा कस्यचिद जावे सर्वस्या जावप्रसङ्ग , यद्ये व तर्हि कथ समूर्च्छिमादिषु निर्वाणगमनाजाव इति? उच्यते-तथाजवस्वाजाव्यात्, त
थाहि-समूर्च्छिमादयो जवस्वजावतएव न सम्यग्दर्शनादिक यथाव त्प्रतिपत्तु शक्यन्ते, ततो न तेषा निर्वाणसजव ' स्त्रिय स्तु प्रागुक्तप्रकारेण य
थाव त्सम्यग्दर्शनादिरत्नत्रयसम्पद्योग्या स्तत स्तासा न निर्वाणगमनाजाव , अपि च भुजपरिसर्पा द्वितीया मेव पृथिवी याव द्गच्छन्ति न परत
परपृथिवीगमनहेतुस्तथारूपमनोवीर्यपरिणत्यजावात्, तृतीयायावत्पक्षिण' श्चतुर्थी चतुष्पदा , पञ्चमी सुरगा , श्रथ च सर्व प्यू र्द्ध मुत्कर्षत
सहस्रार याव द्गच्छन्ति तत्रा धोगतिविषय मनोवीर्यपरिणतिवैषम्यदर्शना दूर्द्धगताव पि च न त द्वैषम्यु श्राह च-विषमगतयो प्यधस्ता दुपरिष्टा
तुल्यमासहस्रार। गच्छन्तिचतिर्यञ्च स्तदधोगत्यूनताहेतु ॥ १ ॥ तथाचसति सिद्ध, स्त्रीपुसा मधोगतिवैषम्ये पि निर्वाण सम, यद प्यु क्त मपि च
यासा वादलब्धा वित्यादि' तद प्यश्लील वादिविकुर्वणत्वादिलब्धिविरहे पि विशिष्टपूर्वगतश्रुताजावे पि मानुषादीना निश्रेयसपदाधिगमश्रवणा'
दा त्र्च-वादविकुर्वणत्वादिलब्धिविरहे श्रुते कनीयसि च जिनकल्पमन पर्यवविरहे पि न सिद्धिविरहो स्ति अपि च यदि वादादिलब्ध्यजाववत्
नि श्रेयसाभावो पि स्त्रीणा मजविष्यत् तत स्तथैव सिद्धाते प्रत्यपादयिष्यत्, यथा जम्बुयुगो दारात् केवलज्ञानाभावो न च प्रतिपाद्यते, तस्मा दु

॥ मूल ॥

इत्थीलिंगसिद्धा ८ पुरिसलिंगसिद्धा ९ नपुसकलिंगसिद्धा १० सलिंगसिद्धा ११ अन्नलिंगसिद्धा १२ गि

॥ भाषा ॥

उपदेशदेवेंकरी जबुवत्। इत्थीलिंगसिद्धा ८। स्त्रीलिंगेनिवर्त्त्योशरीर तेस्त्रीसिद्ध। पुरिसलि ।सिद्धा ९। पुरुषचिह्नसिद्धहुवा गणधरसाधुउपाध्याय। नपुसक
लिंगसिद्धा १०। कृत्रिम कोगोडानपुसक तेसिद्धहुवा। सलिंगसिद्धा ११। स्वलिंगीसिद्धपामे। अन्यलिंगसीधा १२। अन्यवेषेकरीसिद्धा। गिहिलिंगसिद्धा १३।

॥ टीका ॥

पपद्यते स्त्रीणां निर्वाण मिति कृत प्रसङ्गेन ॥ तथा पुलिङ्गे शरीरनिर्वृतिरूपे व्यवस्थिता सन्तो ये सिद्धा स्ते पुलिङ्गसिद्धा, एव नपुंसकलिङ्गसिद्धा ॥ १० ॥ तथा स्वलिङ्गे रजोहरणादिरूपे व्यवस्थिता सतो ये सिद्धा स्ते स्वलिङ्गसिद्धा ॥ ११ ॥ तथा ऽन्यलिङ्गे परिव्राजकादिसम्बन्धिनि वल्कलकाषायादिरूपे द्रव्यलिङ्गेव्यवस्थिता सतो ये सिद्धा स्ते ऽन्यलिङ्गसिद्धा ॥ १२ ॥ गृहिलिङ्गेसिद्धा गृहिलिङ्गसिद्धा मरुदेवीप्रभृतय, तथा एकस्मिन् समये एकएवसन्त सिद्धा एकसिद्धा ॥ अणेगसिद्धा इति ॥ एकस्मिन् समये ऽनेके सिद्धा अनेकसिद्धा, अनेके च एकस्मिन् समये सिध्यन्त उत्कर्षतो ऽष्टोत्तरशतसङ्ख्या वेदितव्या, यस्मा दुक्त–बत्तीसा अडयाला, सट्ठी बावत्तरीय बोधव्वा ॥ चुलसीइ छन्नउई, दुरहियमट्ठुत्तरसय च ॥ १ ॥ अस्या विनेयजनानुग्रहाय व्याख्या–अष्टौ समयान् याव न्निरन्तर मेकादयो द्वात्रिंशत्पर्यन्ता सिध्यन्त प्राप्यन्ते, किमुक्त भवति? प्रथमे समये जघन्यत एको द्वौ वा उत्कर्षतो द्वात्रिंशत्सिध्यन्त प्राप्यते, द्वितीये पि समये जघन्यत एको द्वौ वा उत्कर्षतो द्वात्रिंशत्, एव यावदष्टमे पि समये एको द्वा वुत्कर्षतो द्वात्रिंशत्, तत परम वश्य मन्तर, तथा त्रयस्त्रिंशदादयो ष्टचत्वारिंशत्पर्यन्ता निरन्तर सिध्यन्त सप्तसमयान् याव त्प्राप्यन्ते परतो नियमा दन्तर तथा एकोनपञ्चाशदादय षष्टिपर्यन्ता निरन्तर सिध्यन्त षट्समयान् यावद् वाप्यन्ते परतो ऽवश्य मन्तर' तथा एकषष्ट्यादयो द्विसप्ततिपर्यन्ता निरन्तर सिध्यन्त उत्कर्षत पञ्चसमयान् यावद् वाप्यन्ते तत परम न्तर, त्रिसप्तत्यादय श्चतुरशीतिपर्यन्ता निरन्तर सिध्यन्त उत्कर्षत श्चतुर समयान् याव ततऊर्द्ध मन्तर, तथा पञ्चाशीत्यादय षण्णवति पर्यन्ता निरन्तर सिध्यन्त उत्कर्षत स्त्रीन्समयान् याव त्परतो नियमा दन्तर, तथा सप्तनवत्यादयो द्व्युत्तरशतपर्यन्ता निरन्तर सिध्यन्त उत्कर्षतो द्वौ समयौ परतो वश्यमन्तर, तथा त्र्युत्तरशतादयो ऽष्टोत्तरशतपर्यन्ता सिध्यन्तो नियमा देकमेवसमय यावद् वाप्यन्ते, न द्वित्र्यादिसमयान्, तदे व मेकस्मिन् समये उत्कर्षतो ऽष्टोत्तरशतसङ्ख्या सिध्यन्त प्राप्यन्ते इत्य

॥ मूल ॥

हिलिंगसिद्धा १३ एगसिद्धा १४ अणेगसिद्धा १५। सेत्तं अणंतरसिद्धअसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा । से किं

॥ भाषा ॥

गृहस्थलिंगसिद्ध प्रथमजिनमातामरुदेवीपरे। एगसिद्धा १४।एकसमेसिद्धहुवा ते एकसिद्ध। अणेगसिद्धा १५। अनेकसिद्ध एकसमेसिद्ध ते। सेत्तअणंतरसि

स्या विनेयजनानुग्रहाय व्याख्या–अष्टौ समयान् याव निरन्तर मेकादयो द्वात्रिंशत्पर्यन्ता सिद्ध्यन्त' प्राप्यन्ते, कि मुक्त भवति ? प्रथमे समय जघन्यत एको द्वौ वा उत्कर्षतो द्वात्रिंशत्सिद्ध्यन्त प्राप्यते, द्वितीये पि समये जघन्यत एको द्वौ वा उत्कर्षतो द्वात्रिंशत्, एव यावदष्टमे पि समये एको द्वा वुत्कर्षतो द्वात्रिंशत्, तत पर मवश्य मन्तर, तथा त्रयस्त्रिंशदादयो ऽष्टचत्वारिंशत्पर्यन्ता निरन्तर सिद्ध्यन्त सप्तसमयान् याव त्प्राप्यन्ते परतो नियमा दन्तर' तथा एकोनपञ्चाशदादय षष्टिपर्यन्ता निरन्तर सिद्ध्यन्त षट्समयान् यावद् वाप्यन्ते परतो ऽवश्य मन्तर' तथा एकषष्ट्यादयो द्वि सप्ततिपर्यन्ता निरन्तर सिद्ध्यन्त उत्कर्षत पञ्चसमयान् याव द्वाप्यन्ते तत पर मन्तर, त्रिसप्तत्यादय श्चतुरशीतिपर्यन्ता निरन्तर सिद्ध्यन्त उत्कर्षत श्चतुर समयान् याव त्ततऊर्द्ध मन्तर, तथा पञ्चाशीत्यादय षण्णवतिपर्यन्ता निरन्तर सिद्ध्यन्त उत्कर्षत स्त्रीन् समयान् याव त्परतो नियमा दन्त र तथा सप्तनवत्यादयो द्व्युत्तरशतपर्यन्ता निरन्तर सिद्ध्यन्त उत्कर्षतो द्वौ समयौ परतो वश्यमन्तर, तथा त्र्युत्तरशतादयो ऽष्टोत्तरशतपर्यन्ता सिद्ध्यन्तो नियमा देकमेवसमय यावदयाप्यन्ते न द्वित्र्यादिसमयान्, तदे व मेकस्मिन् समये उत्कर्षतो ऽष्टोत्तरशतसङ्ख्या सिद्ध्यन्त प्राप्यन्ते इत्य नेकसिद्धा, उत्कर्षतो ऽष्टोत्तरशतप्रमाणा वेदितव्या, आह–तीर्थसिद्धातीर्थसिद्धरूपभेदद्वय एव शेषभेदा अन्त र्भवन्ति, त त्किमर्थं शेषभेदोपा दान ? अन्तर्भवन्ति पर न तीर्थसिद्धाऽतीर्थसिद्धभेदद्वयोपादानमात्रा च्छेषभेदपरिज्ञान भवति, विशेषपरिज्ञानायच एष शास्त्रारम्भप्रयास इति शेष भेदोपादान, उपसहारमाह– सेत्त मित्यादि ॥ सै पा अनन्तरसिद्धाऽससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना ॥ सेकितमित्यादि । अथ का सा परम्परसिद्धा

त परंपरसिद्धअससारसमावन्नजीवपन्नवणा ? परंपरसिद्धअससारसमावन्नजीवपन्नवणा अणेगविहा प० तजहा—अपढमसमयसिद्धा दुसमयसिद्धा तिसमयसिद्धा चउसमयसिद्धा जाव सखेज्जसमयसिद्धा असखेज्ज

हवससारसमावन्नजीवपन्नवणा, तेतिकोहीज जिम अनंतरसिद्धअससारप्राप्तजीवप्रज्ञापनाकही ॥ सेकि त । शिष्यपूछे कुणतेकहीं तिकोहीजदरसा वेछे। परंपरसिद्धअससारसमावन्नजीवपन्नवणा २ । परंपरसिद्धअससारप्राप्तजीवप्रज्ञापना । अणगविहापत० । ते अनेकप्रकारेकहीतेकहैछै । अपढमस

॥ टीका ॥ ॥ मूल ॥ ॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

ऽससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना ? सूरिराह–परम्परसिद्धासंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना अनेकविधा प्रज्ञप्ता, परम्परसिद्धाना मनेकविधत्वा, त देवा नेकविधत्व माह–तजहे त्यादि ॥ तद्यथे त्यनेकविधत्वोपदर्शने' अप्रथमसमयसिद्धाइति, न प्रथमसमयसिद्धा अप्रथमसमयसिद्धा· परम्परसिद्धविशेष णाप्रथमसमयवर्त्तिन सिद्धत्वसमया द्वितीयसमयवर्त्तिन इत्यर्थ ' आदिपुतुसमयेपु द्वितीयसमयसिद्धादय उच्यते–यद्वा सामान्यत· प्रथम समयसिद्धा इत्युक्त, तत एत द्विशेषतो व्याचष्टे, द्विसमयसिद्धा, त्रिसमयसिद्धा, चतु समयसिद्धाइत्यादि, यावच्छब्दकरणात् पञ्चसमयसिद्धादय परिगृह्यन्ते सेतमित्यादिनिगमनद्वयसुगम, तदेव मुक्ता असंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना । सम्प्रतिसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापनामभिधित्सु स्तद्विपय प्रश्नसूत्र माह सेकितमित्यादि । अथ का सा संसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना ? सूरिराह–संसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना पञ्चविधा प्रज्ञप्ता' तद्यथा–एकेन्द्रियससार समापन्नजीवप्रज्ञापना इत्यादि' तत्रै क स्पर्शनलक्षणमिन्द्रिय मेषान्ते एकेन्द्रिया , पृथिव्यप्तेजोवायुवनस्पतयो वक्ष्यमाणस्वरूपा स्ते चते संसारस

॥ मूल ॥

समयसिद्धा अणतसमयसिद्धा , सेत्त परपरसिद्धअससारसमावन्नजीवपन्नवणा । सेत्तं अससारसमावन्नजीवपन्नवणा । से कित ससारसमावन्नजीवपन्नवणा ? संसारसमावन्नजीवपन्नवणा पंचविहा पन्नत्ता तंजहा एगिदियससारसमावन्नजीवपन्नवणा बेइंदियससारसमावन्नजीवपन्नवणा तेइंदियससारसमावन्नजीवपन्नव

॥ भाषा ॥

मउसिद्धा। अप्रथमसमउसिद्ध मध्यमसमयथी आगेसमवे सीधाते अप्रथमसमउसिद्ध । दुसमयसिद्धा। इमबीजासमयनासिद्ध । तिसमयसिद्धा। तीजासमयना सिद्ध । चउसमउसिद्धा। इमचोथासमउनासिद्ध । जावसंखिज्जसमयसिद्धा। इमयावत् सख्यातसमयनासिद्ध । असंखिज्जसमयसिद्धा । इमअनतरसमय नासिद्ध असख्यातसमयनासिद्धकहिये। सेत्तपरपरसिद्धअससारसमावन्नजीवपन्नवणा । तजिमकह्यु परपरासिद्ध अससारसमापन्नजीवप्रज्ञापनाकही॥ से त्तअससारसमावन्नजीवपन्नवणा। तेतिमएतलेअससारसमापन्नजीवप्रज्ञापनाकहीइतिसपूर्ण॥ सेकितससारसमावन्नजीवपन्नवणा॥ पचविहापन० । हिवेसंसारी आगेजिमकहे तेतिमससारसमापन्नजीवप्रज्ञापनापचप्रकारेकहो तेतिम। एगिदियससारसमावन्नजीवपन्नवणा । एकेंद्रियससारसमापन्नजीवप्रज्ञापनाएक

॥ टीका ॥

मापन्नजीवाय तेषाप्रज्ञापना एकेन्द्रियससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना, एव सर्वपदे ग्रक्षरघटना कार्या, नवर, द्वेस्पर्शनरसनालक्षणे इन्द्रिये येषा ते द्वीन्द्रिया शखशुक्तिकादय, त्रीणि स्पर्शनरसनाघ्राणलक्षणानि इन्द्रियाणि येषा ते त्रीन्द्रियायूकामत्कुणादय, चत्वारि स्पर्शनरसनाघ्राणचक्षुर्लक्षणानि इन्द्रियाणि येषा ते चतुरिन्द्रिया दशमशकादय, पञ्च स्पर्शनरसनघ्राणचक्षु श्रोत्रलक्षणानि इन्द्रियाणि येषा ते पञ्चेन्द्रिया मत्स्यमकरमनुजादय, ग्रमीपाश्चैकादि सङ्ख्याना मिन्द्रियाणा स्पर्शादीना मसव्यवहारराशेरारभ्य प्रायोनेनैव क्रमेण लाभ इति सम्प्रत्ययार्थ मित्थ क्रमेणैकेन्द्रियाद्युपन्यास, इन्द्रियाणिचद्विधा–द्रव्येन्द्रियाणि भावेन्द्रियाणि च, तत्र द्रव्येन्द्रियाणि निर्वृत्युपकरणरूपाणि तानि च सविस्तर नन्द्यध्ययनटीकाया व्याख्यातानीति नभूयो व्याख्यायते' भावेन्द्रियाणि क्षयोपशमोपयोगरूपाणि तानि चा नियतानि, एकेन्द्रियाणामपि क्षयोपशमोपयोगरूप भावेन्द्रियपञ्चकसम्भव केषाञ्चित्तत्फलदर्शनात्, तथाहि–बकुलादयो मत्तकामिनीगीतध्वनिश्रवणसविलासकटाक्षनिरीक्षणमुखक्षिप्तसुरागण्डूषगन्धाघ्राणरसास्वादपदाद्यवयवस्पर्शनत प्रमोदभावेनकालक्षेप मुपलभ्यन्ते पुष्पफलानिप्रयच्छन्ते उक्तञ्च–जकिरबउलाईण दीसइसेसदिउवलभोवि तेणत्थितदावरण कराउवसमसभवोतेसि ॥ १ ॥ ततो नभावेन्द्रियाणि लौकिकव्यवहारपथावतीर्णैकेन्द्रियादिव्यपदेशनिबन्धन किन्तु द्रव्येन्द्रियाणि, तथाहि–येषामेक बाह्य द्रव्येन्द्रियस्पर्शनलक्षणमस्ति ते एकेन्द्रिया' येषा द्वे तेद्वीन्द्रिया एव यावत् येषा पञ्च तेपञ्चेद्रिया, ग्राह्च–पचिदिउवि

॥ मूल ॥

णा चउरिंदियससारसमावन्नजीवपन्नवणा पचिंदियससारसमावन्नजीवपन्नवणा। से किंत एगिंदियससारसमावन्नजीवपन्नवणा? एगिंदियससारसमावन्नजीवपन्नवणा पचविहा पन्नत्ता, तजहा–पुढविकाइया

॥ भाषा ॥

जीभ" १। बेइंदियससारसमावण्णजीव०। द्वीन्द्रियससारसमापन्नजीवप्रज्ञापनादीव २। तेइंदियससारसमावन्नजीव०। त्रीन्द्रियससारसमापन्नजीवप्रज्ञापनाजाणवी ३। चउरिंदियससार० पचेंदियसस०। चतुरिन्द्रियपचेंद्रियससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना ४। सेकित ५। एगिंदियससारसमावन्नजीवपन्नवणा २ पचविहापन्न०। तेशिष्यपूछे स्वामीजीतिनकुण कहीते एकेन्द्रियससारसमापन्न जीवप्रज्ञापनाना केतलाभेद गुरुकहै तेहपाचप्रकारनी कही तेतिमकहीज। पुढ

वउलो नरोवसव्वविसयोवलज्जाउं तहविनजम्मइपचे दिउंतिवज्जिदियाजावा ॥ सेकितमित्यादि ॥ अथ कासा एकेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना ? सूरिराह–एकेन्द्रियससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना पञ्चविधा प्रज्ञप्ता, एकेन्द्रियाणा पञ्चविधत्वात्, तदेवपञ्चविधत्वमाह ॥ तजहेत्यादि ॥ पृथिवी काठिन्यादिलक्षणा प्रतीता सैव काय शरीर येषाते पृथिवीकाया पृथिवीकाया एव पृथिवीकायिका, स्वार्थइकप्रत्यय ' अपो द्रवा स्ताश्च प्रतीता एव ता काय शरीरयेषान्तेअप्काया अप्काया एव अप्कायिका ' तेजो वह्नि स्तदेवकाय शरीरयेषा ते तेजस्काया तेजस्काया एव तेजस्कायिका, वायु पवन सएव कायो येषान्ते वायुकाया वायुकायाएव वायुकायिका, वनस्पतिर्लतादिरूप सएव काय शरीर येषान्ते वनस्पतिकाया व नस्पतिकायाएववनस्पतिकायिका, इहसर्वभूताधारत्वात् पृथिवीकायिकाना प्रथममुपादान' तदनन्तर तत्प्रतिष्ठितत्वा दप्कायिकाना' अप्कायि काश्च तेज प्रतिपक्षभूता स्तदनन्तर तेजस्कायिकाना मुपादान, तेजश्च वायुसम्पर्कत प्रवृद्धिमुपयाति, तत स्तदनन्तर वायुकायिकग्रहण' वायुश्च दूर स्थितो वृक्षशाखादिकम्पनतो लक्ष्यते, तत स्तदनन्तर वनस्पतिकायिकोपादान, सम्प्रतिपृथिवीकायिक मनवबुध्यमान स्तद्विषय शिष्य प्रश्न करो ति–सेकितमित्याह–अथ के ते पृथिवीकायिका ? सूरिराह–पृथिवीकायिका द्विविधा प्रज्ञप्ता, स्तद्यथा–सूक्ष्मपृथिवीकायिकाश्च यादरपृथिवीकायि ॥ टीका ॥

आउकाइया तेउकाइया वाउकाइया वणस्सइकाइया । से कित पुढविकाइया पुढविकाइया दुविहा प०, तजहा–सुहुमपुढविकाइया बादरपुढविकाइया। से कित सुहुमपुढविकाइया सुहुमपुढविकाइया दुविहा पण्णत्ता, तजहा–पज्जत्तसुहुमपुढविकाइयाय अपज्जत्तसुहुमपुढविकाइयाय, सेत्तसुहुमपुढविकाइया। से ॥ मूल ॥

विकाइया आउकाइया तेउका० वाउवणस्स०। पृथ्वीकाइयाजीव १ अपकायनाजीव २ तेजकाइयाजीव ३ वाउकाइयाजीव वनस्पतिकाइया ५। सेकितपुढवि काइया २। तेशिष्यपूछपृथ्वीकायनाभेदकेतलेप्रकार। दुविहापत०। गुरुकहैदोयप्रकारे। सुहुमपुढविकाइया। सूक्ष्मपृथ्वीकाय। बादरपुढविकाइया। बादरपृथ्वी वीकाय २॥ सेकितसुहुमपुढविकाइया ?। ते शिष्यपूछे सूक्ष्मनाभेद केता तिम गुरुकहै। दुविहा पंणत्ता तजहा। दोयप्रकारना ते कहैछे पज्जत्तसुहुमपुढवि ॥ भाषा ॥

काय, सूक्ष्मनामकर्मोदयात्सूक्ष्मा बादरनामकर्मोदयाद्बादरा, कर्मोदयजनितं खल्वेते सूक्ष्मबादरत्वे न पेक्षके बदरामलकयो रिव, सूक्ष्माश्च ते पृथिवीकायिकाश्च सूक्ष्मपृथिवीकायिका, चशब्द स्वगतपर्याप्ताऽपर्याप्तभेदसूचक, बादराश्च ते पृथिवीकायिकाश्च बादरपृथिवीकायिका, अत्रापि चशब्द स्वगतशर्करावालुकादिभेदसूचक, तत्रसूक्ष्मपृथिवीकायिका समुद्गकपर्याप्तप्रक्षिप्तगन्धावयववत् सकललोकव्यापिनो, बादरा प्रतिनियतदेशचारिण स्तत्प्रतिनियतदेशचारित्व द्वितीयपदेप्रकटयिष्यन्ते, तत्र सूक्ष्मपृथिवीकायिकाना स्वरूप जिज्ञासु रिदमाह–सेकितमित्यादि ॥ अथ केतेसूक्ष्मपृथिवीकायिका ? सूरिराह–सूक्ष्मपृथिवीकायिका द्विविधा प्रज्ञप्ता स्तद्यथा–पर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिका श्चा पर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकाश्च तत्रपर्याप्तिनाम, आहारादिपुद्गलग्रहणपरिणमनहेतु रात्मन शक्तिविशेष, स च पुद्गलोपचया दुपजायते, किमुक्त भवति – उत्पत्तिदेशमागतेन प्रथमसमये ये गृहीता पुद्गला स्तेषा तथा न्येषा म पि प्रतिसमय गृह्यमाणाना त त्सम्पर्कत स्तद्रूपतया जाताना य शक्तिविशेष आहारादिपु

द्गलखलरसरूपतापादनहेतु यथो दरान्तर्गताना पुद्गलविशेषाणा माहारपुद्गलखलरसरूपतापरिणमनहेतु सा च पर्याप्ति षोढा–आहारपर्याप्ति, शरीरपर्याप्ति,रिन्द्रियपर्याप्ति, प्राणापानपर्याप्ति र्भाषापर्याप्ति, मन पर्याप्ति श्च, तत्र यया बाह्यमाहारमादाय खलरसरूपतया परिणमयति साहारपर्याप्ति, यया रसीभूतमाहार रमासृग्मांसमेदास्थिमज्जाशुक्रलक्षणसप्तधातुरूपतया परिणमयति साशरीरपर्याप्ति, यया धातुरूपतया परिणमित माहार मिन्द्रियरूपतया परिणमयति सा इन्द्रियपर्याप्ति, अपज्जत्तसुहुमपुढविकाइयाय' तथा चाय मर्थो ऽन्यत्रा पि प्रग्यतरेणो क्त, पञ्चाना मिन्द्रियाणा प्रायोग्यान् पुद्गलान् गृहीत्वा ऽनाभोगनिर्वर्तितेन वीर्येण तद्भावनयनशक्ति रिन्द्रियपर्याप्ति रिति' यया पुन रुच्छ्वासप्रायोग्यान् पुद्गलाना दायो च्छ्वासरूपतया परिणमय्या लम्ब्य च मुञ्चति सा उच्छ्वासपर्याप्ति, यया तु भाषाप्रायोग्यान् पुद्गला नादाय भाषात्वेन परिणमय्या लम्ब्य च मुञ्चति सा भाषापर्याप्ति, यया पुन मन प्रायोग्यान् पुद्गलानादाय मनस्त्वेन परिणमय्या लम्ब्य च मुञ्चति सा मन पर्याप्ति, एता श्च

यथाक्रम मेकेन्द्रियाणा सञ्जिवर्जानां द्वीन्द्रियादीना सञ्जिना चतु पञ्च पट् सङ्ख्या भवन्ति, उक्तञ्च प्रज्ञापनामूलटीकाकृता-एकेन्द्रियाणा चतस्रो विकलेन्द्रियाणा पञ्च सञ्जिना षडि ति' उत्पत्तिप्रथमसमयएव ता यथातथसर्वाअपियुगपन्निष्पादयितु मारभ्यन्ते, क्रमेण च निष्ठामु पयान्ति, त द्यथा-प्रथम माहारपर्याप्ति स्तत शरीरपर्याप्ति स्तत, इन्द्रियपर्याप्ति रित्यादि, आहारपर्याप्ति श्च प्रथमसमयमेव निष्पत्ति मुपपद्यते' शेषा स्तु प्र त्येक मन्तर्मुहूर्त्तेन कालेन, अथाहारपर्याप्ति प्रथमसमय एव निष्पद्यते इति कथ मवसीयते ? उच्यते-यत आहारपदे द्वितीयोद्देशके सूत्र मिद, आहारपज्जतीए अपज्जत्तएण भते कि आहारए अणाहारए गो० नोआहारए अणाहारए इति, तत आहारपर्याप्त्या अपर्याप्तोविग्रहगता वर्त्ता पप द्यते नो पपातक्षेत्र मागतो पि, उपपातक्षेत्र मागतस्य प्रथमसमय एवा हारकत्वात् तत एकसामायिकी आहारपर्याप्तिनिर्वृत्ति, यदि पुन रुपपात क्षेत्रमागतो पि आहारपर्याप्त्या पर्याप्त स्या तत एव सति व्याकरणसूत्र मित्य भवेत् "सियआहारएसियअणाहारए, यथा शरीरादिपर्याप्तिषु सि यआहारएसियअणाहारए इति, सर्वासाम पि च पर्याप्तीना परिसमाप्तिकालो न्तर्मुहूर्त्तप्रमाण, पर्याप्तयो विद्यन्ते येषान्ते पर्याप्ता अभ्रादिभ्य श्च ति मत्वर्थीयो ऽप्रत्यय' पर्याप्तका श्च तेसूक्ष्मपृथिवीकायिकाश्च पर्याप्तकसूक्ष्मपृथिवीकायिका, च शब्दो लब्धिपर्याप्तकरणपर्याप्तरूपस्वगतभेदद्वयसूच को, ये पुन स्वयोग्यपर्याप्तिपरिसमाप्तिविकला स्ते ऽपर्याप्ता अपर्याप्ता श्च ते सूक्ष्मपृथिवीकायिका श्च अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिका, च शब्द करण लब्धिनियधनस्वगतभेदद्वयसूचक, तथा हि-द्विविधा सूक्ष्मपृथिवीकायिका अपर्याप्ता, स्त द्यथा-लब्ध्या करणे श्च, तत्र ये अपर्याप्तका एव सती म्रि ॥ टीका ॥

कितं बादरपुढविकाइया बादरपुढविकाइया दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—सण्हबादरपुढविकाइयाय खरबादर पुढविकाइयाय । से कितं सण्हबादरपुढविकाइया २ सत्तविहा पण्णत्ता, तंजहा—किण्हमत्तिया नीलमत्तिया ॥ मूल ॥

काइया अपज्जत्तसुहुम० २ । एकेंद्रियपर्याप्ता सूक्ष्मपृथिवीकाय अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकाय २ । तेसुहुमपुढविकाइया ते तिमहीज सूक्ष्मपृथिवीकायना दोयभेद कह्या तिम, हिवबादरना । सेकिंतबादरपुढविकाइया २ दुविहा पण्णत्ता । हिवे ते शिष्यपूछे गुरुप्रते कुण ते बादरते, बादर पृथिवीकायना दोयभेदकह्या ते ॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

पते ते लब्ध्यऽपर्याप्तका ये पुन करणानि शरीरेन्द्रियादीनि न ताव न्निवर्त्तयति अथ चा वश्य निवर्त्तयिष्यति ते करणाऽपर्याप्ता, उपसंहार मा ह-सेत्त मित्यादि ॥ त एत सूक्ष्मपृथिवीकायिका स्तदे व सूक्ष्मपृथिवीकायिकानभिधाय संप्रति वादरपृथिवीकायिका नभिधित्सु स्तद्विषय प्रश्नसूत्र माह-सेकितमित्यादि ॥ अथक ते वादरपृथिवीकायिका ? सूरि राह-वादरपृथिवीकायिका द्विविधा प्रज्ञप्ता स्त द्यथा-श्लक्ष्णवादरपृथिवीकायिका श्च खरवादरपृथिवीकायिका श्च, तत्रश्लक्ष्णा नाम चूर्णितलोष्टकल्पा मृदुपृथिवी तदात्मका जीवा श्च प्युपचारत श्लक्ष्णा स्ते च ते वादरपृथिवीकायि काश्च श्लक्ष्णवादरपृथिवीकायिका, अथवा श्लक्ष्णाचसावादरपृथिवीचसाकाय शरीरयेषाते श्लक्ष्णवादरपृथिवीकाया स्तएव स्वार्थिके क प्रत्यय विधा नात् श्लक्ष्णवादरपृथिवीकायिका श्च शब्दो वक्ष्यमाणस्वगत नेकभेदसूचक खरा नाम पृथिवीसङ्घातविशेषकाठिन्यविशेष ञ्चा पन्ना तदात्मकाजीवा अपि खरा स्ते च ते वादरपृथिवीकायिका श्च खरवादरपृथिवीकायिका अथवा पूर्ववत् प्रकारान्तरेण समास श्च शब्द स्वगतवक्ष्यमाणचत्वारिंशद्भे दसूचक ॥ सेकितमित्यादि ॥ अथ के तश्लक्ष्णवादरपृथिवीकायिका ? सूरिराह-श्लक्ष्णवादरपृथिवीकायिका, सप्तविधा प्रज्ञप्ता स्त देवसप्तविधत्व त द्यथत्यादिना पदर्शयति-कृष्णमृत्तिका कृष्णमृत्तिकारूपा एवनीलमृत्तिका लोहितमृत्तिका हारिद्रमृत्तिका शुक्लमृत्तिका, इत्यवर्णभेदेनपञ्चविधत्वमु क्तम्, पाण्डुमृत्तिकानाम दशविशेषपयाधूलीरूपासतीपाण्डूइतिप्रसिद्धा तदात्मकाजीवा अप्यभेदोपचारात् पाण्डुमृत्तिके त्युक्ता ॥ पणगमट्टियत्ति॥ नद्यादि

॥ मूल ॥

लोहियमत्तिया हालिद्दमत्तिया सुक्किल्लमत्तिया पंडुमत्तिया पणगमत्तिया । सेत्त सराहवादरपुढविकाइया ।

॥ भाषा ॥

गुरु कहै, सण्हवादरपुढविकाइया खरवादरपुढविकाइया । सूक्ष्मनामकर्मोदयथी सुकमालबादर पृथिवीकाय पृथिवीकाय कठिननामकर्मोदयथीवादर तेखरवादरपृथिवीकाय। सेकितसण्हबादरपुढविकाइया० सत्तविहा प तजहा । वादरपृथिवीकायनाभ० केतनेप्रकारे गुरुकहै ते सातप्रकारे कहना तेकहैछे, किण्हमट्टिया णीलम० लोहियम० हालिद्दम० सुक्किलम० पडुम० पणगमट्टिया । कालोमट्टी १ नीलोमट्टी २ रातोमट्टी ३ पीलोमट्टी ४ध लौमट्टी ५ स्वेतरक्तदेश विशेषपाटोधनरै पनकम टो ७ । सत्तएह वादरपुढविकाइया ते तिमहीज कोमलवादरकायनाभेदकह्या । सेकितखरवादरपुढविकाइया २ अणेगविहा

॥ टीका ॥

पूरप्लावितदेशे नद्यादिपूरेऽपगते यो भूमौ श्लक्ष्णमृदुरूपो नलमलापरपर्याय पङ्क सापनकमृत्तिका तदात्मकाजीवा अभेदोपचारात् पनकमृत्तिका, निगमनमाह–सेत्तसाह्ववायरपुढविकाइया॥ सुगम' सेकितमित्यादि ॥ अथ के ते खरवादरपृथिवीकायिका ? सूरिराह–खरवादरपृथिवीकायिका अनेकविधा प्रज्ञप्ता चत्वारिंशद्भेदा मुख्यत प्रज्ञप्ता इत्यर्थ, तानेवचत्वारिंशद्भेदाना ह–तज्जहा पुढवीय इत्यादिगाथाचतुष्टय, पृथिवी ति नामा सत्यनामावत् शुद्धपृथिवी नदीतटभित्यादिरूपा चशब्दउत्तरभेदापेक्षया समुच्चये शर्करा लघूपलशकलरूपा । २ । वालुका सिकता । ३ । उपल टङ्काद्युपकरणपरिकर्मणायोग्य पाषाण । ४ । शिला घटनयोग्या देवकुलपीठाद्युपयोगी महान्पाषाणविशेष । ५ । लवणसामुद्रादि । ६ । ऊ षोयद्वशादूषरक्षेत्र । ७ । अयस्ताम्रत्रपुसीसकरूप्यसुवर्णानिप्रतीतानि । १३ । वज्रोहीरक । १४ । हरितालहिङ्गुलकमन शिला प्रतीता, सीसग पारद न । १८ । अञ्जन सौवीराञ्जनादि । १९ । प्रवाल विद्रुम । २० । अभ्रपटल भ्प्रसिद्ध । २१ । अभ्रवालुका अभ्रपटलमिश्रावालुका । २२ । वायरका ये इति ॥ वादरपृथिवीकाये अमी भेदा इति शेष, मणिविहाणा इति च शब्दस्य गम्यमानत्वात् मणिविधानानिचमणिभेदाश्च वादरपृथिवीकायभेद

॥ मूल ॥

से कित खरवादरपुढविकाइया ? खरवादरपुढविकाइया अणेगविहा पमत्ता, तंजहा–पुढवीयसक्करावा लुयायउवलेसिलायलोणूसे । अयतंवतउयसीसे रुप्पसुवमेयवइरेय ॥ १ ॥ हरियालेहिंगुलुए मणोसिलासास गजणपवाले । अब्भपडलब्भवालुय वादरकाएमणिविहाणा ॥ २ ॥ गोमेज्जएयरुयए अंकेफलिहेयलोहियक्खेय

॥ भाषा ॥

प त । ते हिवे कुण ते कहैछे, खरपृथिवी कठिनवादर पृथिवी ते किम, खर कठिनवादर पृथिवीकायना अनेकभेदकह्या ते कहैछे, पुढवीयसक्करावा लुयायउ वलेसिलायलोणूसे । अयतवतउयसीसे रुप्पसुवणेयवइरेय ॥ १ ॥ पृथिवी काकरासहित १ वालू २ उपल टाकवायोग्य ३ शिलाघडवायोग्य ४ लेगु ते मोटापाषाण विग्रह ५ अग नाहपाति ६ तांबो ७ तरुयो ८ सीसो ९ रूपो १० सोनो ११ वज्र ते हीरा १२ ॥ १ ॥ हरियालेहिंगुलुए मणोसिलासासगजणपवाले । अब्भपडलब्भ वालुय वादरकाएमणिविहाणा ॥ २ ॥ हरिताल १३ हीगलू १४ मणसिल १५ पवालो अभ्रक नाम भोडल पटल अभ्रवेलू ए वादर पृथिवीकायकह्यो २ ।

पूरप्लावितेदेशे नद्यादिपूरेऽपगते यो भूमौ श्लक्ष्णमृदुरूपो जलमलापरपर्याय पङ्कः सापनकमृत्तिका तदात्मकाजीवा उपचारात् पनकमृत्ति का, निगमनमाह-सेत्तमित्यादि श्लक्ष्णबादरपुढविकाइया॥सुगम' सेकितमित्यादि ॥ अथ के ते खरबादरपृथिवीकायिका ? सूरिराह–खरबादरपृथिवीकायिका अनेकविधा प्रज्ञप्ता चत्वारिंशद्भेदा मुख्यत प्रज्ञप्ता इत्यर्थ , तानेवचत्वारिंशद्भेदाना ह–तंजहा पुढवीय इत्यादिगाथाचतुष्टय, पृथिवी ति नामा सत्यभामावत् शुद्धपृथिवी नदीतटभित्त्यादिरूपा चशब्दउत्तरभेदापेक्षया समुच्चये शर्करा लघूपलशकलरूपा । २ । वालुका सिकता । ३ । उपल टङ्काद्युपकरणपरिकर्मणायोग्य पाषाण । ४ । शिला घटनयोग्या देवकुलपीठाद्युपयोगी महापाषाणविशेष । ५ । लवणसामुद्रादि । ६ । ऊ षोयद्वशादूषरक्षेत्र । ७ । अयस्ताम्रत्रपुसीसकरूप्यसुवर्णानिप्रतीतानि । १३ । वज्रोहीरक । १४ । हरितालहिङ्गुलकमन शिला प्रतीता , सीसग पारद्रज । १८ । अञ्जन सौवीराञ्जनादि । १९ । प्रवाल विद्रुम । २० । अभ्रपटल अभ्रसिद्ध । २१ । अभ्रवालुका अभ्रपटलमिश्रावालुका । २२ । बादरका ये इति॥ बादरपृथिवीकाये अमी भेदा इति शेष , मणिविधाना इति च शब्दस्य गम्यमानत्वात् मणिविधानानिचमणिभेदाश्च बादरपृथिवीकायभेद

से किंतं खरबादरपुढविकाइया ? खरबादरपुढविकाइया अणेगविहा पण्णत्ता , तंजहा–पुढवीयसक्करावा लुयायउवलेसिलायलोणूसे । अयतंबतउयसीसे रुप्पसुवण्णेयवइरेय ॥ १ ॥ हरियालेहिंगुलुए मणोसिलासास गजणपवाले । अब्भपडलब्भवालुय बादरकाएमणिविहाणा ॥ २ ॥ गोमेज्जएयरुयए अंकेफलिहेयलोहियक्खेय

पं त । ते किं ते कुण ते कहेछे, खरपृथिवी कठिनबादर पृथिवी ते किम, खर कठिनबादर पृथिवीकायना अनेकभेद कह्या ते कहेछे, पुढवीयसकरावा लुयायउ वलेसिलायलोणूसे । अयतंबतउयसीसे रुप्पसुवण्णेयवइरेय ॥१॥ पृथिवी कांकरासहित १ वालू २ उपल टांकवायोग्य ३ शिलाघडवायोग्य ४ लूण ते मोटापाषाण विशे ५ खारापाणि ६ तांबो ७ कथीर ८ सीसो ९ रूपो १० सोनो ११ वज्र ते हीरा १२ ॥१॥ हरियालेहिंगुलुए मणोसिलासासगजणपवाले । अब्भपडलब्भ वालुय बादरकायमणिविहाणा ॥ २ ॥ हरिताल १३ हीगलू १४ मणसिल १५ पवालो अभ्रक नाम भोडल पटल अभ्रवेलू ए बादर पृथिवी कायभेदो २१

त्वेन ज्ञातव्या, तान्ये व मणिविधानानि दर्शयति-गोमज्जग इत्यादि॥ गोमेद्यक २३ च समुच्चये रुचक २४ अंक २५ स्फटिक २६ च पूर्ववत्, लोहिताक्ष २७ मरकत २८ मसारगल्ल २९ भुजमोचक ३० इन्द्रनीलश्च ३१ चन्दनो ३२ गैरिको ३३ हंसगर्भ ३४ पुलक ३५ सौगन्धिकश्च ३६ चन्द्रप्रभो ३७ वैडूर्यो ३८ जलकान्त ३९ सूर्यकान्तश्च ४० तदेव माद्यगाथया पृथिव्यादयउक्ता श्चतुर्दशभेदा, द्वितीयगाथया ऽष्टौ हरितालादय स्तृतीयगाथया गोमेद्यकादयो नव, तुर्ययागाथया नवे तिसङ्ख्या श्चत्वारिंशत्, जेयावन्नेतहप्पगाराइति॥ ये पि चा न्ये तथा प्रकारा मणिभेदा पद्मरागादय स्ते पि खरबादरपृथिवीकायत्वेन वेदितव्या ॥ तेसमासउइत्यादि॥ तेसामान्यतो वादरपृथिवीकायिका समासत सङ्क्षेपेण द्विविधा प्रज्ञप्ता, तद्यथा-पर्याप्तका अपर्याप्तका श्च, तत्र ये ऽपर्याप्तका स्ते स्वयोग्या पर्याप्ती साकल्येना सम्प्राप्ता इति, अथवा ऽसम्प्राप्ता इति विशिष्टान् वर्णादीन् अनुपगता स्तथापि-वर्णादिभेदविवक्षाया मेते न शक्यन्ते कृष्णादिवर्णभेदेन व्यपदेष्टु, किंकारणमि ति चेत्? उच्यते इहशरीरादिपर्याप्तिषु परिपूर्णासु सतीषु वादराणा वर्णादिविभाग प्रकटो भवति नापरिपूर्णासु, ते चा पर्याप्ता उच्छ्वासपर्याप्त्याऽपर्याप्ता एव म्रियन्ते ततो न स्पष्टतरवर्णादिविभाग इत्य

मरगयमसारगल्ले भुयमोयगइदनीलेय ॥ ३ ॥ चदणगेरुयहंसे पुलएसोगंधिएयबोधव्वे । चदप्पभवेरुलिए जलकंतसूरकंतेय ॥ ४ ॥ जेयावन्नेतहप्पगारा ते समासउ दुविहा पण्णत्ता, तजहा—पज्जत्तगाय अपज्जत्त

द्विवे मणिनाम भेद कहेछे—गोमिज्जएयरुयग अंकेफलिहेयलोहियक्खेए । मरगयमसारगल्ले भुजमोयगइंदणीलेय ॥ ३॥ गोमेदमणि १ रुचकमणि २ अंकमणि ३ फटिकमणि ४ लोहिताक्षमणि ५ मरकतमणि ६ मसारगल्ल ७ भुजमोचकरत्न ८ इन्द्रनीलरत्न ९ ॥ ९ ॥ चदणगेरुयहंसे पुलएसोगंधिएयबोधव्वे। चदप्पभवेरुलिए जलकंते सूरकंतेय ॥ ४ ॥ चन्दनरत्न १० गैरिकरत्न ११ पुलकरत्न १२ सौगन्धिकरत्न १३ एहवेनामे जाणवा चन्द्रप्रभरत्न वैडूर्य जलकान्तरत्न सूर्यकान्तरत्न ॥ ४ । जेयावणेतहप्पगारा तसमासओ दुविहा पण्णत्ता तंजहा । जेहवा अनेराछे तथा प्रकारना ते संक्षेपथको दोयभेदे कह्या ते कहेछे । पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय, तत्थण जेते अपज्जत्तगा तेण असपत्ता तत्थण जेते पज्जत्तगाय । पर्याप्ता अपर्याप्ता तथा तिहां जो पर्याप्ता एतलाभेद नथी

॥ टी

सम्प्राप्ता इत्युक्त ननु कस्मा दुच्छ्वासपर्याप्त्यै वा ऽपर्याप्ता म्रियन्ते नो र्वाक् शरीरेन्द्रियपर्याप्तिभ्या मपर्याप्ता अपि? उच्यते तस्मा दागामिभवा
यु र्बद्धा म्रियन्ते सर्व एव देहिनो ना बध्वा, तच्च शरीरेन्द्रियपर्याप्तिभ्या पर्याप्ताना बध्यमा यान्ति ना न्यथा इति, अन्ये तु व्याचक्षन्ते सामा
न्यतो वर्णादी नसम्प्राप्ताइति' त च न युक्त यत शरीरमात्रभाविनो वर्णादय , शरीर च्च शरीरपर्याप्त्या सञ्जात इति ॥ तत्थ णं जे ते पज्जत्त
गा इत्यादि ॥ तत्र ये ते पर्याप्तका परिसमाप्तस्वयोग्यसमस्तपर्याप्तय एतेषा वर्णादेशेन वर्णभेदविवक्षया एव गन्धादेशेन रसादेशेन स्पर्शादेशेन
सहस्राग्रश सहस्रसङ्ख्याविधानानि भेदा, स्तद्यथा-वर्णा कृष्णादिभेदात्पञ्च, गन्धौ सुरभीतरभेदा द्वौ, रसा स्तिक्तादय पञ्च, स्पर्शा मृदुकर्कशा
दयो ऽष्टौ, एकैकस्मि श्च वर्णादौ तारतम्यभेदेना नेके वान्तरभेदा स्तथाहि-भ्रमरकोकिलकज्जलादिषु तरतमभावा दित्यादिरूपतया ऽनेके कृष्ण
भेदा' एवनीलादिष्व प्या योज्य, तथा गन्धरसस्पर्शेष्व पि तथा परस्पर वर्णाना सयोगतो धूसरकर्बुरत्वादयो नेके सङ्ख्याभेदा' एव गन्धादीनाम
पि परस्पर गन्धादिभि समायोगा दतो भवन्ति वर्णाद्यादेशै सहस्राग्रशो भेदा ॥ सखेज्जाइ जोणिप्पमुहसयसहस्साइ इति॥ सङ्ख्येयानि योनिप्रमु
खाणि योनिद्वाराणि शतसहस्राणि तथाहि-एकैकस्मिन् वर्णे गन्धे रसे स्पर्शे च सवृतायोनि पृथिवीकायिकाना, सा पुन स्त्रिधा, सचित्ता अचित्ता

॥ क

गाय, तत्थण जेते अपज्जत्तगा तेण असपत्ता तत्थण जेते पज्जत्तगा एतेसिं वण्णादेसेणं गंधादेसेणं रसादे
सेण फासादेसेण सहस्सग्गसोविहाणाइ सखिज्जाइ जोणिप्पमुहसयसहस्साइ पज्जत्तगाणिस्साए अपज्जत्तगाव

॥ भ

पाम्या विशिष्ट वर्ण गंध रस स्पर्श ए पर्याप्त पूरी थयाविना न प्रगट । तेमिण वण्णाएसेण । तिणामाहि वर्णादेशेकरी । गंधाएसेण रसाएसेण । गंधा
देशेकरी रसादेशेकरी । फासाएसेण सहस्सग्गसोविहाणाइ सखिज्जाइ । स्पर्शादेशेकरी वर्ण देशेकरी सहस्रगो भेदहुवे वर्णादि २५ भेदना वर्णादि तर
तमभेदे अनेकभेदहुवे ते किम श्यामवर्णहुवे भ्रमर कोकिल तेहनको कज्जल इम श्याम सघलभेदे वधता २ कहिवान सख्याते भेदेहवे । जोणिप्पमुहस
यसहस्साइ पज्जत्तगाइसाए अपज्जत्तगावक्कमति । नाख जोनि मनसहस्रकहता लाखगमेहुवे पर्याप्तना निश्राये अपर्याप्ताउपजे ते फेर आगासु कहेछे।

मिश्रा च, पुन रेकैकात्रिधा, शीता उष्णा शीतोष्णा, शीतादीना मपि प्रत्येक तारतम्यभेदा दनेकभेदत्व' केवल मेव विशिष्टवर्णादियुक्ता सख्याऽतीता अपि स्वस्थाने व्यक्तिभेदेन योनयो जातिमधिकृत्यै केव योनि र्गण्यते, तत सङ्ख्यानि सप्तपृथिवीकायिकाना योनिशतसहस्राणि भवन्ति तानि च सूक्ष्मवादरगतसर्वसङ्ख्या सह॥ पज्जत्तगनिस्साए इत्यादि॥ पर्याप्तनिश्रया अपर्याप्तका व्युत्क्रामन्ति उत्पद्यन्ते' कियन्त इत्या ह–यत्रै क पर्याप्त स्तत्र नियमा तन्निश्रया असङ्ख्या सङ्ख्यातीता अपर्याप्तका, उपसहारमाह–सेत्त मित्यादि॥ निगमनत्रय सुगम' तदे व मुक्ता पृथिवीकायिका 'स म्प्रत्य प्कायिकप्रतिपादनार्थमाह–से कि त मित्यादि सुगम' उसा इत्य वश्याय त्रेह ' हिम स्त्यानोदक, महिका गर्भमासेपु सूक्ष्मवर्प' करको घ

॥ मूल

क्कमति, जत्थ एगो तत्थ णियमा असखेज्जा । सेत्तखरवादरपुढविकाइया । सेत्तबादरपुढविकाइया ॥ सेत्तपुढविकाइया ॥ से कित आउकाइया ? आउकाइया दुविहा पन्नत्ता, तजहा–सुहुमआउकाइयाय वादरआउकाइयाय । से कित सुहुमआउकाइया ? सुहुमआउकाइया दुविहा पन्नत्ता, तजहा–पज्जत्तसुहुमआउकाइयाय अपज्जत्तसुहुमआउकाइयाय॥ सेत्त सुहुमआउकाइया॥ से कित वादरआउकाइया ? वादर

॥ भाषा

जत्थएगोतत्थणियमा असखेज्जा । जिहा एकजीवपर्याप्ता उपजे तिहा निश्चे असख्याता अपर्याप्ता उपजे । सेत्तखरवायरपुढविकाइया । तेकहेछै । कठिनबादर पृथिवीकाय । सेत्तबादरपुढविकाइया । एतले बादर पृथिवीकायनाभेद कह्या ॥ सेत्तपुढविकाइया ॥ एतले सर्वपृथिवीकायना भेदकह्या हिवे । अप्कायकहछे । सेकितअप्पकाइया २ दुविहा पण्णत्ता तजहा । ते शिष्य पुछे कुण अप्काय गुरु कहेछै–हेमहानुभाव ! अप्काय केटलाभेदकह्या ते कहेछै– सुहुमआउकाइया बायर आउ० । सूक्ष्म अप्काय १ बादरअप्काय २ हिवे । सेकित सुहुमआउकाइया २ दुविहा पन । ते कुण ते कहो स्वामीजी सूक्ष्मप्रकार तिहा गुरुकहेछे–हेदेवानुप्रिय । महानुभाव केटलाप्रकारे कह्या ते कहेछे–पज्जत्तसुहुमआउकाइया । पर्याप्ता सूक्ष्मअप्काय १ । अपज्जत्तसुहुमआउकाइया । अपर्याप्ता सूक्ष्मअप्काय । ते हिवे । सेत्तसुहुमआउकाइया । तेह सूक्ष्मअप्काय कह्या ॥ अठा आगे बादरकहछै–सेकित वायरआउका

नोपल, हरतनु यो नुत्र सुद्भिद्य गोधूमाङ्कुरतृणाग्रादिषु बद्धो विन्दु रुपजायते, शुद्धोदक मन्तरिक्षसमुद्भव नद्यादिगत च, त च स्पर्शरसादिभेदा दनेकभेद, त देवा नेकभेदत्वदर्शयति–शीतोदक नदीतडागावटवापीपुष्करिण्यादिषु शीतपरिणाम' उष्णोदक स्वभावत एव क्वचि न्निर्झरादा वुष्णपरिणाम, क्षारोदक मीषल्लवणस्वभाव, यथा लाटदेशादौ केषुचिदवटेषु, खट्टोदक मीषदम्लपरिणाम, अम्लोदक मतीवस्वभावत एवा म्लपरिणाम काञ्जिकवत्, लवणोदक लवणसमुद्रे, वारुण वारुणसमुद्रे' क्षीरोदक क्षीरसमुद्रे, क्षोदोदक मिक्षुसमुद्रे, रसोदक पुष्करवरसमुद्रादिषु' ये पि चा न्ये तथा प्रकारा रसस्पर्शादिभेदभिन्ना घृतोदकादयो वादराप्कायिका स्ते सर्वे वादराप्कायिकतया प्रतिपत्तव्या' स्ते समासतो इत्यादि

आउकाइया अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा–उसाहिमए महिया करए हरतणूए सुद्धोदए सीतोदए उसिणोदए खारोदए खट्टोदए अंबिलोदए लवणोदए वारुणोदए खीरोदए खोदोदए रसोदए जेयावन्नेतहप्पगारा तेसमासउ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा–पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय, तत्थणं जेते अपज्जत्तगा तेणं असंपत्ता, तत्थणं जेते पज्जत्ता एतेसिणंवण्णादेसेणं गंधादेसेणं रसादेसेणं फासादेसेणं सहस्सग्गसोविहाणाइं संखेज्जाइं जोणिप्पमु

इरा २ अणेगविहा प त । ते हिवे कुण बादरअप्काय अनेकप्रकारकहेछे—तिकोहो दरसावेछे । उसाहिमएमिहिया । ठार मध्यनेह १ हिम २ धूहर ३ करग हरतणुए सुद्धोदए सीतदए । गडानोपाणी ४ हरीनेअणीये जलविन्दु वरसातनो ५ शुद्धपाणी ६ शीतजल ७ । उसिणोदए खारोदए खट्टोदए अविलोदए लवणोदए वरुणोदए खीरोदए घअोदए इक्खोदए रसोदए । उष्णजल ८ चारजल ९ खाटो १० आंविलरसपाणी ११ लूण जेहवो १२ वारुणीसमदनो पाणी द ढ जेहवो १३ दूधसरीखोपाणी १४ घृतसरीखोपाणी १५ इक्षुरस सेलडीरस १६ रस पटरस तेहवोपाणी १७ । जेयावन्नेतहप्पगारा ते समासओदुविहा प त । जे एहवा अनेरा तथा प्रकारना तेह सर्व सचेपथी दोयप्रकारे कह्या ते कहेछे—पज्जत्तगा अपज्जत्तगाय । पर्याप्ता १ अपर्याप्ता २ । तत्थणजेतेअपज्जत्तगा । जेते अपर्याप्ता । तेणअसंपत्ता । तेणे नहीपाम्या वर्णादिकथी कहता ते । तत्थणजेतेपज्जत्तगा । तिहां जेते पर्याप्ता । एएसिणंवण्णा

प्राग्वत्' नवर, सङ्ख्यानि योनिप्रमुखाणि शतसहस्राणी त्यत्रा पि सम्प्रवेदितव्यानि, उक्ता अप्कायिका , सम्प्रति तेजस्कायिकान् प्रतिपिपाद यिषु राह--सेकितमित्यादि ॥ सुगम, नवर, मङ्गारी विगतधूम , ज्वालो नाज्वल्यमान , खादिरादिज्वालानलसम्बद्धादीपशिखे त्य न्ये' मुर्मुर फुम्फुका

हसयसहस्साइ पज्जत्तगणिस्साए अपज्जत्तगा वक्कमति, जत्थ एगो तत्थनियमा असखेज्जा । सेत्त वादर आउकाइया ॥ सेत्त आउकाइया ॥ से कित तेउकाइया ? तेउकाइया दुविहा पणत्ता , तजहा—सुहुमतेउ काइयाय वादरतेउकाइयाय, से कित सुहुमतेउकाइया सुहुमतेउकाइया दुविहा पणत्ता, तजहा—पज्जत्त गाय अपज्जत्तगाय । सेत्त सुहुमतेउकाइया । से कित वादरतेउकाइया २ अणेगविहा पणत्ता , तजहा इगाले जाला मुम्मुरे अच्ची अलाए सुद्धागणी उक्का विज्जू असणी णिग्घाए सघरिससमुट्ठिए सूरकतमणिणि

०सेण गधाएसेण रसाएसेण फासाएसेण । इणारा वर्णादेशेकरी गधादेशेकरी रसादेशेकरी फरसादेशेकरो । सहस्सग्गसोविहाणाइ । सहस्राग्र एतले लाख एहवेनामे । सखिज्जाइ जाणिप्पमहसयसहस्साइ । सख्याता सतसहस्रयानिप्रमुखहुवे । पज्जत्तगणीसाए । पर्याप्तानो निश्राये। अपज्जत्तगावक्कमति अपर्याप्ता आवी उपजे । जत्थएगोतत्थणियमाअसखेज्जा । जिहा एकजीव तिहा निश्राये असख्याताजीव कहवा । सेत्तवादरआउकाइया । ते वादर अ प्कायना भेदकह्या । सेत्तआउकाइया । एतले ते सूक्ष्मवादर सर्वअप्काय कह्या ॥ हिवे सेकित तेउकाइया२ दुविहा प त । तेउकाय पूछेशिष्य कुण ते तद गुरु कहे दोयप्रकारे कह्या तेकहेछे—सुहुमतेउकाइया वायरते० । सूक्ष्मतेउकाय १ वायरतेउकाय २ । सेकितसहुमतेउकाइया २ दुविहा प त । हिवे शि ष्यकहे कुण तेगुरुकहे सूक्ष्म तेउकाय तेहना दोयभेदकह्या ते गुरुकहेछे—पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय । पर्याप्ता १ अपर्याप्ता २ । सेत्तसुहुमतेउकाइया । ते तिम सूक्ष्मतेउकाय ॥ सेकितवायरतेउकाइया २ अणेगविहा प त । शिष्यपूछे कुणवादरतेउकाय गुरुकहे अनेकप्रकारेकह्या तेकहेछे—इगाले जालमुम्मुरे । अगा रा वभूतरहित १ ज्वाला दीपसिखा अग्नि प्रतिबद्ध २ वभूतमिश्रा अग्निकण । अचीअलाएसुद्धागणी । अप्रतिबद्धज्वाला सुद्धाग्नि । उक्का विज्जू । उल्का

॥ टीका

दौ त्रसमिश्रिताग्निकणारूप , अर्चि रनलाप्रतिवद्धाज्वाला, आलात मुल्मुक, शुद्धाग्नि रय पिण्डादौ, उल्का चुडुली, विद्यु त्प्रतीता अशनि राकाशे पतदग्निमय कण , निर्घातो वैक्रियाशनिप्रपात , सङ्घर्षसमुपस्थितो ऽरण्यादिकाष्ठनिर्मथनसमुद्भूत , सूर्यकान्तमणिनिसृत सूर्यखरकिरणसम्पर्के सूर्यकान्तमणे र्य समुपजायते ॥ जेयावन्नेतहप्पगारा इति ॥ ये पि चा न्ये तथाप्रकारा एवम्प्रकारा स्तेजस्कायिका स्ते पि बादरस्तेजस्कायिकतया वे दितव्या, स्तेसमासतो इत्यादिप्राग्वत् , नवर मत्रापि सङ्ख्येयानि योनिप्रमुखाणि शतसहस्राणि सप्तवेदितव्यानि, उक्ता स्तेजस्कायिका , सम्प्रतिवायु

॥ मूल

स्सिए, जेयावन्नेतहप्पगारा ते समासउ दुविहा पन्नत्ता, तजहा—पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय, तत्थण जेते अपज्जत्तगा तेण असंपत्ता, तत्थण जेते पज्जत्तगा एएसि वन्नादेसेणं गंधादेसेण रसाएसेणं फासादेसेणं सहस्सग्गसोविहाणाइ सखिज्जाइ जोणिप्पमुहसयसहस्साइं पज्जत्तगणिस्साए अपज्जत्तगा वक्कमति, जत्थएगो तत्थणियमा असंखेज्जा ॥ सेत्त बादरतेउकाइया ॥ सेत्त तेउकाइया ॥ से किंत वाउकाइया ? वाउकाइया दुवि

॥ भा

पात वीजली। असिणागिग्घाए । आकाशे अग्निमयो कण वैक्रियअग्नि । सघरिससमुट्ठिए। अरणीयादिकथकी उपनो। सूरिकातमणिनिस्सिए सूर्यने तापेकरी ऊपजे मणिथी ऊपजे ते अग्नि। जेयावन्नेतहप्पगारा ते समासओ दुविहा प त। जे वली एहवा अनेरा तथा प्रकारनाभेद तेसर्व स क्षेपथी दोयप्रकारेकह्या ते कहेछे—पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय। पर्याप्ता अपर्याप्ता। तत्थणजेतेअपज्जत्तगा तेणअसपत्ता। तिहाजेते अपर्याप्ता वर्णादि केनथी पाम्या पूरा। तत्थणजेतेपज्जत्तगा। तिहा जेते पर्याप्ता। एसिण वन्नाएसेण गधाएसेण रसाएसेण फासाएसेण। इणारा वर्णादेशेकरी गन्धादेशे करी रसादेशेकरी स्पर्शादेशेकरी। सहस्सग्गसोविहाणाइ। सहस्राग एतले सातलाख भेदेकरी। संखिज्जाइ जोणिप्पमुहसयसहस्साइ पज्जत्तगणीसाए संख्याता सतसहस्रयोनि प्रमुख ऊपजे पर्याप्तानीनिश्रायें। अपज्जत्तगावक्कमति। अपर्याप्ता उपजे। जत्थएगोतत्थणियमा। जिहां एकजीव तिहा नि श्चै। असंखिज्जा। असंख्यातजीव उपजे। सेत्तबायरतेउकाइया। एतले बादर तेउकाय। सेत्ततेउकाइया। ते सर्व तेउकायकह्या। सेकिंतवाउकाइया२ दु

॥ टीका ॥

कायिकप्रतिपादनार्थ माह–सेकिंतमित्यादि॥ प्रतीत, नवर॥ पाईणवाए इति॥ य प्राच्यादिश समागच्छति वात सप्राचीनवात, एव प्रतीचीनवातो दक्षिणवात उदीचीनवात श्च वक्तव्य, ऊर्द्धगच्छन् यो वाति वात स्स ऊर्द्धवात, एव मधोवात तिर्यग् वातावपि परिभावनीयौ, विदिग्वातोयो विदिग्भ्यो वाति वातो भ्रामो ऽनवस्थितो वातो वातोत्कलिका समुद्रस्ये व वातोत्कलिका , वातमण्डली वातोली, उत्कलिकावातउत्कलिकाभि प्रचुरतराभि सम्मिश्रितो यो वातो मण्डलिकावातो, मण्डलिकाभि मूलत आरभ्य प्रचुरतराभि समुत्थोयो वात, गुञ्जावातो यो गुञ्जनशब्द कुर्वन्

॥ मूल ॥

हा पन्नत्ता, तजहा—सुहुमवाउकाइयाय बादरवाउकाइयाय, से किंत सुहुमवाउकाइया ? सुहुमवाउकाइया दुविहा पन्नत्ता, तजहा—पज्जत्तगसुहुमवाउकाइयाय अपज्जत्तगसुहुमवाउकाइयाय । सेत्त सुहुमवाउकाइया । से किंत बादरवाउकाइया ? बादरवा० अणेगविहा पन्नत्ता, तजहा—पाईणवाए पदीणवाए दाहिणवाए उदीणवाए उड्ढवाए अहोवाए तिरियवाए विदिसीवाए वाउब्भामेवा उक्कलिया वायमंडलिया उ

॥ भाषा ॥

विहा प त। शिष्यपूछे कुणगुरुकहे वाउकायना दोयभेदकह्या ते कहेछे—सुहुमवाउकाइया । सूक्ष्मवाउकाय । बायरवाउकाइया । बादरवाउकाय। सेकितसुहुमवाउकाइया २ दुविहा प त। हिवे कुण सूक्ष्मवाउकाय तेहना दोयभेद कह्या ते कहेछे—पज्जत्तसुहुमवाउकाइया अपज्जत्तसुहुम वा०। पर्याप्ता सूक्ष्मवाउकाय अपर्याप्ता सूक्ष्मवाउकाय। सेत्तसुहुमवाउकाइया । एतले सूक्ष्मवायुकायना भेदकह्या ॥ सेकितबायरवाउकाइया २ अणेगविहा प० त०। हिव बादर वाउकायना भेदकरी भेदकहेछे—अनेकप्रकारे कह्या वाउकायबादरना ते कहेछे—पाईणवाए पईणवाए दाहिणवाए उदीण वाए। पूर्वदिशिनो उपनो पश्चिमदिशिनो उपनो दक्षिणदिशिनो उपनो वायु उत्तरदिशिनो उपनो वायु। उड्ढवाए अहोवाए तिरियवाए विदिसिवा ए वाउब्भाए। ऊंचीदिशिनोउपन्यो नीचीदिशिनो वायु तिरछीदिशिनो विदिशिवायु ऊचोभमतोवायु। वाउक्कलिया वायमंडलिया। उत्कलवायु समुद्रनी मण्डलिकावायु गोल। उक्कलियवाए मंडलियवाए। वेलू उछलीपाडे मण्डलावर्त्तवायु। गुजावाए झझावाए संवट्टवाए घणवाए तणुवाए सुद्धवाए।

वाति, कम्भावात संदृष्टि, रशुभनिष्ठुर इत्य न्ये' सम्वर्त्तकवात स्तृणादिसवर्त्तनस्वभाव, घनवातो घनपरिणामो रत्नप्रभापृथिव्याद्य धोवर्ती, तनुवातो विरलपरिणामो घनवातस्या ध स्थायी शुद्धवातो मदृस्तिमितो, वस्त दृत्यादिगल इत्य न्ये॥ त समासतो इत्यादि प्राग्वत्, अत्रा पि सङ्ख्येयानि योनिप्रमुखाणि शतसहस्राणि सप्त वसेयानि, उक्ता वायुकायिका ' सम्प्रति वनस्पतिकायिकप्रतिपादनार्थ माह–सेकितमित्यादि॥ सुगम, यावत् से

कालियावाए मंडलियावाए गुंजावाए झंझावाए संवट्टवाए घणवाए तणुवाए सुद्धवाए, जेयावन्ने तहप्पगारा ते समासओ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा–पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय, तत्थण जेते अपज्जत्तगा तेण असंपत्ता, तत्थण जेते पज्जत्तगा एतेसिण वण्णादेसेण गंधादेसेण रसादेसेण फासादेसेण सहस्सग्गसोविहाणाइ संखिज्जाइ जोणिप्पमुहसयसहस्साइ पज्जत्तगणिस्साए अपज्जत्तगा वक्कमंति, जत्थ एगो तत्थ नियमा असंखेज्जा॥ सेत्त बादरवाउकाइया॥ सेत्त वाउकाइया॥ से कित वणस्सइकाइया वणस्सइकाइया दुविहा प०,

गुंजारव बोलतो अशुभ अनिष्टवायु संवर्त्तवायु तृणउडावे ते वायु घनवात तनुवायु पछे रत्नप्रभा हेठे शुद्धवायु । जेयावन्नेतहप्पगारातेसमासओ दुविहा प० त० । जे एहवा अनेरा तथा प्रकारनावायु ते संक्षेपथकी दोयप्रकारेकह्या ते कहेछे–पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय । पर्याप्ता अपर्याप्ता । तत्थणजेतेअपज्जत्तगा तेणअसपत्ता । तिहा जेते अपर्याप्ता ते वर्णादिकने अणपामवेकरी । तत्थणजेते पज्जत्तगा एएसिण । तिहाजेते पर्याप्ता इणारा । वण्णाएसेण गंधाएसेण फासाएसेण । वर्णादेशें गन्धादेशें स्पर्शादेशें । सहस्सग्गसोविहाणाइ । सतसहस्र एतले सातलाख योनिने भेदेकरी । संखिज्जाइ जोणिप्पमुहसयसहस्साइ । सातेलाखे सख्यातायोनिविषे । पज्जत्तगनीसाए । पर्याप्तानी निश्राये । अपज्जत्तगावक्कमंति । अपर्याप्ता उपजे । जत्थएगोतत्थणियमाअसंखेज्जा । जिहा एकजीव तिहा निश्चे असख्याता । सेत्तबादरवाउकाइया । ते तिमकह्यो जिम वाउकाय । सेत्तवाउकाइया । एतले सर्व सूक्ष्मबादर वायु भेदेकरी कह्या॥ से कित वणस्सइकाइया २ दुविहा प० त० । हिवे वनस्पतिकायना भेदकहेछे, गुरु शिष्यप्रते कहेछे, हेशिष्य! दोयप्रकारे कहेछे, तेकिम!

॥ टीका ॥ त्त सुहुमवणस्सइकाइया ॥ सेकितमित्यादि ॥ अथ के ते वादरवनस्पतिकायिका २ द्विविधा प्रज्ञप्ता स्त द्यथा—प्रत्येकशरीरवादरवनस्पतिकायिका श्च साधारणशरीरवादरवनस्पतिकायिका श्च, तत्रै क मेक जीव म्प्रतिगत म्प्रत्येक शरीर येषान्ते प्रत्येकशरीरा, स्ते च ते वादरवनस्पतिकायिका श्च प्रत्येकशरीरवादरवनस्पतिकायिका, श्च शद्ब स्वगतानेकभेदसूचक ' समान न्तुल्य प्राणापानाद्युपभोग यथाभवति' एव आसमन्ता देकीभावेना न न्ताना जन्तूना साधारण सद्भृश येन त त्साधारण' साधारण शरीर येषा ते साधारणशरीरा स्ते च ते वादरवनस्पतिकायिका श्च साधारणबा दरवनस्पतिकायिका , च शब्दो त्रा पि स्वगतानेकभेदसूचक ॥ सेकितमित्यादि ॥ अथ के त प्रत्येकशरीरवादरवनस्पतिकायिका ? सूरि राह—प्रत्ये

॥ मूल ॥ तजहा—सुहुमवणस्सइकाइयाय वादरवणस्सइकाइयाय, से कित सुहुमवणस्सइकाइया२ दुविहा पण्णत्ता, तं०—पज्जत्तसुहुमवणस्सइकाइयाय अपज्जत्तसुहुमवणस्सइकाइयाय । सेत्त सुहुमवणस्सइकाइया। से कित वादरवणस्सइकाइया २ दुविहा पण्णत्ता, तजहा—पत्तेयसरीरवादरवणस्सइकाइयाय साहारणसरीरवादरव

॥ भाषा ॥ सुहुमवणस्सइकाइया । सूक्ष्मवनस्पतिकाय । वायरवणस्सइकाइया १ । वादरवनस्पतिकाय २ । सेकितसुहुमवणस्सइकाइया २ दुविहा प० त० । हिवे ते शि ष्यप्रतें गुरू समझावेछे सूक्ष्मवनस्पतिकायना दोयप्रकार कह्या ते कहेछे—पज्जत्तसुहुमवणस्सइकाइया । पर्याप्ता सूक्ष्मवनस्पतिकाय । अपज्जत्तसुहुम वणस्सइकाइया । अपर्याप्ता सूक्ष्मवनस्पतिकाय । सेत्तसुहुमवणस्सइकाइया । एतले सूक्ष्मवनस्पतिकाय कह्या । सेकितवायरवणस्सइकाइया २ दुविहा प त० । ते शिष्य कहे कुण वादरवनस्पति कहो स्वामीजी तदगुरु कहेछे—हे शिष्य ! दोयप्रकारेकह्या ते कहेछे—पत्तेयसरीरवायरवणस्सइकाइया । प्रत्येक शरीर वादरवनस्पतिकाय पहिलो । साहारणसरीरवायरवणस्सइकाइया । दूजो साधारणशरीर वादरवनस्पतिकाय । सेकित पत्तेयसरीरवायरवणस्स इकाइया २ दुवालसविहा प० त० । शिष्य ते गुरुप्रति कहे कुण ते प्रत्येकशरीर वादरवनस्पतिकाय शिष्य ते गुरु कहेछे—प्रत्येकशरीर वादरवनस्पतिकायना १२ बारे भेद कह्या ते कहुछु । रुक्खागुच्छागुम्मा लयायवल्लीयपव्वयाचेव । तणवलयहरियोसहि जलरुहकुहणायबोधव्वा ॥ १ ॥ वृक्ष आम्रादि १ गुच्छावृन्ता

कशरीरबादरवनस्पतिकायिका द्वादशविधा प्रज्ञप्ता स्त द्यथा-रुक्खेत्यादि ॥ वृक्षा थूतादय, गुच्छा वृंताकीप्रभृतय, गुल्मानि नवमालिकाप्रभृतीनि लता ध्रपकलतादय, इह येषां स्कन्धप्रदेशे विवक्षितोर्द्धगतैकशाखाव्यतिरेकेण न्यत् शाखान्तर परिस्थूर न निर्गच्छति ते लता विज्ञेया, स्ते च चम्प कादय इति, वल्लय कूष्माण्डीत्रपुषीप्रभृतय, पर्वगा इक्ष्वादय, तृणानि कुशकुशकार्जुनादीनि, वलयानि केतकीकदल्यादीनि, तेषाहि त्वचावलयाका रेण व्यवस्थिते ति, हरितानि तन्दुलीयकवस्तुलप्रभृतीनि' ओषध्य फलपाकान्ता, स्ते च शाल्यादय, जले रुहन्तीति जलरुहा, उदकावकपनकाद य, कुहणा भूमिस्फोटा भिधाना स्ते चा यकायप्रभृतय, तत्र यथोद्देश निर्देश इति न्यायात् प्रथमतो वृक्षप्रतिपादनार्थमाह-से कि त मित्या दि ॥ अथ के ते वृक्षा ? सूरि राह-वृक्षा द्विविधा प्रज्ञप्ता' स्त द्यथा-एकास्थिका श्च बहुबीजका श्च, तत्र फल २ प्रतिएक मस्थि येषान्ते एकास्थि का' श्च शब्दो वक्ष्यमाणस्वगतानेकभेदसूचक, तथा मायो स्थिवन्थ मन्तरेणै व फलान्तर्वर्त्तीनि बहूनि बीजानि येषान्ते बहुबीजका, शेषाद्वे ति क प्रत्यय, अत्रा पि च शब्दो वक्ष्यमाणस्वगतानेकभेदसूचक, तत्रै कास्थिकप्रतिपादनार्थमाह-से कि त मित्यादि ॥ अथ के त एकास्थिका अ

णस्सइकाइयाय, से किंत पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया २ दुवालसविहा पन्नत्ता, तजहा-रुक्खागुच्छा गुम्मा लतायवल्लीयपव्वगाचेव । तणवलयहरियओसहि जलरुहकुहणायबोधव्वा ॥ १ ॥ से किंतं रुक्खा २ दु विहा पन्नत्ता, तजहा-एगठियाय बहुबीयगाय, से किंतं एगठिया २ अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा निंब

कादि २ नवमालिकादि २ लता चपकवृक्ष ४ नागरवेल ५ सेलडी ६ निथे तृणघाल ७ वलयकेतकी ८ हरिमाल ९ ओषधि १० पाणीमाहिजगे ११ भूफोड १२ जाणिवा । सेकितरुक्खा २ दुविहा प० त० । शिष्य कुणसा भेदकह्या इसना गुरुकहे हे शिष्य। दोयभेद कह्या ते कहेछे—एगठियाय बहुबीया य । एकास्थिता एकबीज अने बहुबीजा २ । सेकितएगठिया २ अणेगविहा प त । ते हिवे एकबीजवालाना अनेकभेदकह्या ते कहेछे—णिबजबुकोस व सालअकोल्लपीलुसेलूय । सल्लइमोदयमालुय बउलपलासेकरंजेय ॥ १ ॥ नीब १ आब २ जबू ३ कोसब ४ सालवृक्ष ५ अकोठ ६ पीलू ७ लिसोडा ८ साल

॥ टीका ॥

नेकविधा: प्रज्ञप्ता स्त यथा–निवये इत्यादि ॥ गाथा त्रय, तत्र निंबाम्रजम्बूकोशाम्बा प्रतीता, शाल्म सर्ज ॥ अंकोल्लति॥ अङ्कोट प्राकृतत्वा त्सूत्रे च ठकारस्य लादेश, अङ्कोठेल्ल इति वचनात्' पीलु प्रतीत, शेलु श्लेष्मान्तक, शलकी गजप्रिया' मोचिकीमालको देशविशेषप्रतीतो, बकुल केसर, पलाश किंशुक, करंजो नक्तमाल' पुत्रजीवको देशविशेषप्रतियट्, अरिष्ट पिचुमन्द, बिभीतकोक्ष, हरीतक कोङ्कणदेशप्रसिद्ध कषायरसुल, भल्लात को यस्य भिल्लातकाभिधानानि फलानि लोकप्रसिद्धानि, उम्बेभरिकाक्षीरणीधातकीप्रियालपूतिकरंजश्लक्ष्णशिंशपाशनपुन्नागनागश्रीपर्ण्यशोका लोकप्रतीता, जे या वन्ने तहप्पगारा इति ॥ ये पि चा न्ये तथाप्रकारा गत्र स्प्रकारा स्तत्तद्देशविशेषभाविन स्त सर्व प्ये कास्थिका वेदितव्या, एते षा मेकास्थिकाना मूलान्य प्य सङ्ख्येयजीवकानि, असङ्ख्येयप्रत्येकशरीरजीवात्मकानि ॥ एव कन्दा अपि स्कन्धा अपि त्वचो पि शाखा अपि प्रवाला

॥ मूल ॥

वजबुकोस वसालअंकोल्लपेलुसेलूया । सल्लइमोयइमालुय बउलपलासेकरंजेय ॥ १ ॥ पुत्तजीवअरिठे विभेल एहरिडएयभल्लाए । उंबेभरियाखीरिणि धोधईधायइपियाले ॥ २ ॥ पूईयनिंबकरए सण्हातहसीसवायअसणेय। पुण्णागनागरुक्के सिरिवणीतहअसोगेय ॥ ३ ॥ जेयावन्नेतहप्पगारा एतेसिणमूलाविअसखिज्जजीविया कंदावि खधावि तयावि सालावि पवालावि, पत्तापत्तेयजीविया, पुप्फा अणेगजीवा, फला एगठिया ॥ सेत्त

॥ भाषा ॥

र ८ माचको १० मालक ११ कमर १२ पलास कसुभ १३ कणगच ॥१॥ पुत्तजीवअरिट्ठे विभेलएहरिडएयभल्लाए। उबेभरियाखीरणि धीवधेधायइपियाले ॥ २ ॥ जावापातो देशोभाषा अगरो यो कांठानोबोलो आरीठो बहेडा हरडे भिलामा उंबेभरिका खीरणी जाणिवा धातकी प्रियाल ॥ २ ॥ पूईय निबकरजे सण्हातहसोसवायअसणाय। पुण्णागनागरुक्खे सिरिवणीतहअसोगेय ॥ ३ ॥ पूतिका नींब करंज सेलहा मगधदेश प्रसिद्ध तिम शीशम टीव रू पुन्नागवृक्ष नागवृक्ष श्रीपर्णी तिम अशोकवृक्ष ॥३॥ जयावन्नेतहप्पगारा। जे वलवा अनेरा तथाप्रकारना। एएसिणमूलावि असखिज्ज जीविया। एह ना मूलनविषे असख्याता आउखानाजीवछुवे। कंदावि खधावि तयावि सालावि। मूलसधि केउना उपरिला काठ स्कन्धनेयुड लचा सालप्रमुख। पवाला

अपि प्रत्येक मसङ्ख्यप्रत्येकशरीरजीवका , तत्र मूलानियानिकन्दस्या पत्ता द्रुमे रत्त प्रभरन्ति तेषा मुपरि बन्दा स्ते च लोकप्रतीता , स्कन्धा स्थुडा , त्वच छल्ल्य , शाला शाखा , प्रवाला पल्लवाङ्कुरा ॥ पत्तापत्तेयजीवयाति ॥ पत्राणि प्रत्येकजीवकानि , एकेक पत्र मेकैकेन जीवेना धिष्ठित मि ति भाव , पुष्पाणि नेकजीवानि प्राय प्रतिपुष्पपत्र जीवभावा , स्फलान्ये कास्थिकानि , उपसंहारमाह–से त्त गरुद्विया ॥ सुगम , बहुबीजकप्रतिपा दनार्थमाह–सेकितमित्यादि ॥ अथ के ते बहुबीजका ? सूरि राह–बहुबीजका अनेकविधा प्रज्ञप्ता स्त द्यथा–अत्थियेत्यादिगाथात्रय ॥ एते च अस्थि पित्थाम्बाभ्रमातुलिङ्गबिल्वामलकपनसदाडिमाश्वत्थोदुम्बरवटन्यग्रो धनन्दिवृक्षपिप्पलीशतावरीप्लक्षकादुम्बरिकुसुम्भरिदेवदालितिलकाल रीपमसपर्णादधिपर्णलोध्रधवचन्दनार्जुननीपकुटजकदम्बकाना मध्ये केचिदतिप्रसिद्धा केचि द्देशविशेषतो वेदितव्या , नवर मिद्धा

पंठिया ॥ से किंत बहुबीयगा ? अणेगविहा पराणत्ता , तंजहा–अत्थियतेंदुकविठे अंबाडगमाउलिंगबिल्ले य ॥ ॥ २ ॥
गफगसदालिम आसोत्थेउंबरवडेय ॥ १ ॥ णग्गोहणंदिरुक्खे पिप्परिसयरीपिलुक्खरुक्खेय । काउंबरि ॥ ३ ॥
रि कुत्थुंभरि देवदालीय ॥ २ ॥ तिलएलउएच्छत्तो हसिरीसेसत्तवणदहिवन्ने। लोद्धधवचंदणज्जुण णीमेकु

नाप तर जाविया पुष्फा अनेकजाता फलाएगाठ्ठिया । प्रवाल प्रमुख अकुरा पत्रप्रमुख प्रत्येकजीवइंडे एकेकपत्रे एकेकजीव इवे एकफले एकजीवइवे फू
लमे अनेकजीवइवे । सत्तरगठ्ठिया । एतले एकस्थिता जीव कह्या । सेकितवहुबीयगा ? अणेगविहा प०त० । हिवे शिष्यकहे गुरुप्रते कुण बहुबीज तद
इ बहुबीजना अनेकभेदछे ते कह्या तिम । अत्थियतिंदुकविठे । अस्तिकनामावृक्ष १ तिंदुकवृक्ष२ कोठ । अंबाडगमाउलिंगबिल्ले । अंबाडगबीजोरा
स । आमलगफणसदाडिम आसोत्थेउंबरवडेय ॥ १ ॥ आमला फणस दाडिम अश्वत्थ पीपर वट । निग्गोह नंदिरुक्खे पिप्परिसयरीपिलुरुक्खरुक्खेय ।
काउंबरि कुत्थुंभरि बावन्ना देवदालीय ॥ १ ॥ न्यग्रोध नंदिवृक्ष पीपर सतावर रक्तवृक्ष कादंबरी धणिया जागिया देवदार ॥ १ ॥ तिलएलउएछत्तो
हसिरीसेसत्तिवणदहिवसे । लोद्धधवचंदणज्जुण निंबे कुडुए कयंबेय । तिलकठी आलावक ...

मलकादयो न लोके प्रसिद्दा प्रतिपत्तव्या स्तेषा मेकास्थिकत्वात्, किन्तु देशविशेषप्रसिद्धा बहुबीजका एव केचन ॥ जे या वन्ने तहप्प गारत्ति ॥ ये चा न्य तथाप्रकारा एव प्रकारा स्त पि बहुबीजका मन्तव्या, एतेषा मपि मूलकन्दस्कन्धत्वक्शाखा प्रवाला प्रत्येक ममर्ङ्गेय प्रत्येकशरीरजीवका, पत्राणि प्रत्येकजीवकानि, पुष्पाण्य नेकजीवकानि, फलानि बहुबीजकानि' उपसंहारमाह–से त मित्यादि ॥ निगमनह

मएकयवेर ॥ ३ ॥ जेयावन्ने तहप्पगारा एतेसिणमूलावि असंखिज्जजीविया, कंदावि खंधावि तयावि सालावि पवालावि, पत्ता पत्तेयजीविया, पुप्फाय अणेगजीविया, फलावहुबीया, सेत्त बहुबीयगा ॥ सेत्त रुक्खा ॥ से किंत गुच्छा २ अणेगविहा पणत्ता, तंजहा—वाइंगिणिअल्लइपुंडईयतहकच्छुरीयजासुमणा। रूवीआढइणीली तुलसीतहमाउलिंगाय ॥ १ ॥ कुत्थुंभरिपिप्पलिया अतसीविल्लीयकायमाईय। चुयपडोलाकंदलि वाउल्लावत्थुलेबदरे ॥ २ ॥ पत्तउरसीयउरए हवइतहजवासएयबोधव्वे। णिग्गुंडिअक्कतूवरि आढईचेवतलउं

अर्जुन नाम कुटज कदंबवृक्ष। जयावन्नेतहप्पगाराएएसिणमूलाविअसंखिज्जजीविया। जे वली अनेरा तथाप्रकारना एहना मूलपिण असंख्यातजीवमंछि त हवे कांइवचनामूल अनन्तजीवहुवे। कंदावि खंदावि तयावि सालावि पवालावि। कंदनेविषे खंधनेविषे त्वचानेविषे शाखानेविषे प्रवाल पत्रनेवि षे। पत्ता पत्तेयजीविया फला बहुबीया। पत्रनेविषे प्रत्येकजीवहुवे फलमें बहुबीजहुवे तेहनाभेदकह्या। सेत्तबहुबीयगा। एतले बहुबीजनाभेद कह्या। सेत्तरुक्खा। ते तिम वृक्ष ॥ सेकितगच्छा २ अणेगविहा प त। हिवे, गुच्छानाभेद शिष्यपूछेछे गुरुकहेछे—गुच्छानाभेद अनेक प्रकारे कह्या ते कहेछे— वाइंगिणिअल्लइपुंडईयतहकच्छुरीयजासुमणा। रूवीआढइणीली तुलसीतहमाउलिंगीय ॥ १ ॥ वेंगण रीङ्गणी सम्भाली तिम कछुरीना गुच्छा जाणिवा रूपी आढो नीलफली तुलसी तिम बीजोरा मतीरण ॥ १ ॥ कुत्थुंभरिपिप्पलिया अयसीवल्लीयकायमाईया। चुयपडोलाकदलियावाउल्लीयावत्थुलेबदरे ॥ २ ॥ कटुंभरी पीपरण अलसी वल्लीकायमादि चूअ पटोल कदलिका वाउलिका वाथलो बदरवृक्ष ॥ २ ॥ पत्तउरसीयउरए हवइतहजवासएयबोधव्वे।

य सुगम, सम्प्रति गुच्छप्रतिपादनार्थमाह–सेकिं त मित्यादि ॥ एते गुल्मादिभेदा प्राय स्वरूपत एव प्रतीता, केचि द्देशविशेषा दवगन्त व्या, अत्र वृक्षादिषु यस्यै कस्य नाम गृहीत्वा परत्रा पि त न्नाम गृहीत तत्रा न्यो भिन्नजातीय सदृग् नामा प्रतिपत्तव्य, अथवा, एकोपि क

ऊा ॥ ३ ॥ सणपाणकासमद्दग अग्घाडगसामसिंदुवारेय । करमद्दअद्दरूसग करीरएरावणमहत्थे ॥ ४ ॥ जाउलतमालपत्तिरिली गयमारिणिकुच्चकारियाभंडी । जावइकेयइतहग जपाडलादासिअंकोल्ले ॥ ५ ॥ जेयावण्णे तहप्पगारा सेत्त गुच्छा ॥ से किंत गुम्मा २ अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा–सेरियएणोमालिय कोरिंटय वंधुजीवगमणोज्जे । पीईयपाणकणइर कुज्जयतहसिंदुवारेय ॥ १ ॥ जाईमोग्गरतहजू हियायतहमल्लियायवा ती । वत्थुलकच्छुलसेवा लगंठिमगदंतियाचेव ॥२॥ चंपगजाईणवणी इयायकुंदतहामहाजाई । एवमणेगागारा

गिग्गुडिअंकट्ठरिं आढइचंगतलआडा ॥ २ ॥ पतवृंच उरसो उरज हुवे तिम जवास जाणिवा निर्गूडो अक आढ तूवरकोनिर्ये तेलोडावृच्च ॥ ३ ॥ सण पाणकासमद्द ॥ अग्घाडगसामसिंदुवारेय । करमद्दअद्दरूसग करीरएरावणमहत्थे ॥ ४ ॥ सण पान कासमर्दवृच्च आघाडो स्याम सिंदुवार कर अडू सा कैर कटालो रावण ॥ ४ ॥ जाउलतमालपत्तिरिलो गयमारिणिकुच्चकारिआ भंडो । जावइकेयइतहग जपाडलादासिअंकोल्ले ॥ ५ ॥ जाउल तमाल परि लो हरिगयिगेर गजमारणो कुचकारिका भौडो यावत् केतकी तिम गडपाडल एहवा अंकोल ॥ ५ ॥ जेयावण्णेतहप्पगारा । ज अनेरा तथाप्रकारना । सेत्त गुच्छा । ते तिमं गुच्छाकह्या ॥ सेकित गुम्मा २ अणेगविहा प त । ते कुण गुल्म गुल्मकहै ते अनेकप्रकारे कह्या ते कहैछै–सेरियए णामालिय कोरंटबंधुजीवगमणोज्जे । पीईयपाणकणइर कुज्जयतहसिंधुवारेय ॥ १ ॥ सेरीयनामा नवमालिका कोरटक बधुजीवक विपछुरिया फूल मनोजनामा गुल्म प्रीतिकर प्राणतर प्रसिद्ध कणयर कुब्जकनामा तिम निर्गुडो ॥ १ ॥ जाईमुग्गरतहजू हियायतहमल्लियायवासती । वत्थुलकच्छुल सेवा लगंठिमगदंतियाचेव ॥२॥ जायनाफूल मागरा तिम जूहो तिम मालतीगुल्म वासती वत्थुल कच्छालगुल्म सेवालगुल्म गंठिमगनामे दंतिमग ॥२॥

हवतिगुम्मामुणेयव्वा ॥ ३ ॥ सेत्त गुम्मा ॥ से किंत लयाउ लयाउ अणेगविहाउ पण्णत्ताउ, तंजहा—पउमलयानागलया असोगचपयलयायचूतलता । वणलतवासंतिलता अइमुत्तयकुंदसामलता ॥ १ ॥ जेयावण्णेतहप्पगारा सेत्त लयाउ ॥ से किंत वल्लीउ २ अणेगविहाउ पण्णत्ताउ, तंजहा—पूसफलीकालिंगी तुंबीतपुसीय एलवालुकी । घोसालईपञोला पचगुलिआयणालीय ॥ १ ॥ कगूलयाकडुइया कक्कोडइकारियल्लईसुभगा । कुयधायवागलीपा वावल्लीतहदेवदालीय ॥ २ ॥ अप्फोआअइमुत्तय नागलयाकण्हसूरवल्लीय सघट्टसुमिणसावि जायसुमणकुविदवल्लीया ॥ ३ ॥ मुद्दियअवावल्ली वीरविरालीजियतिगोवाली । पाणीसामावल्ली गुंजा

चपगजाइणवणा यावकुदातहामहाजाई । एवइणेगागारा हवतिगुम्मासुणेयव्वा ॥ ३ ॥ चपक जातो नवरगौ मचकन्द तिम महाकाय द्रुम अनेकभेद आकारके गुम्म नातिजाणिवा ॥ ३ ॥ सेत्तगुम्मा सेकित लया२ अणेगविहा प तजहा । ते तिम गल्म ॥ ते हिवे शिष्य लताजातिपूछेगुरूकहै हेमहानुभाव। लताजाति अनेक प्रकारनो कहौ तेकहेछे—पउमलयानागलया असोगचपयलयायभूयलया । वनलयवासंतिलया अइमुत्तयकुदसामलया ॥ १ ॥ पद्मलता नागलता अशोकलता चपकलता भूतलता वनलता वासतीलता अतिमुक्तकलता कुदलता श्यामलता ॥ १ ॥ जयावण्णेतहप्पगारा । जे पणि और तथा प्रकारना ते लता कहिये । सेत्तलताओ । लता वनस्पति कहो ॥ सेकित वल्लीओ वल्लीओ अणेगविहाओ प० त० । हिवेशिष्यपूछे कुण ते वल्ली वल्ली अनेक प्रकारनो कहौ तेकहैछे—पूसफलीकालिंगी तुबीतउसीयएलवालुकी । घोसाडइपडोला पचगुलिआयनालीय ॥ १ ॥ कगूयाकडुइया ककोलाकारियल्लइसुभगा । कुयहायवगलिपावे वल्लीतहदेवदालीय ॥ २ ॥ अप्फोआअइमुत्तय नागलताकण्हसूरवल्लीय । सघट्टसुमिणसाविय जासुवणकुविदवल्लीय ॥ ३ ॥ मुद्दियअवावल्ली वेरालीजियतिगोवाली । पाणीमासावल्ली गुजावल्लीयवत्थाणी ॥ ४ ॥ ससिविदुगोत्तफसिया गिरिकण्णइमालुयायअजणई । दहफुल्लयकागलिमा गल्लोयतहपक्कोदाया ॥ ५ ॥ पूसफलीका लिंगी तुबो तोउसी एलची घोसडो घोसातकी पटोल पचागुली नालिका ॥१॥ कगू कटुकी ककोडा

थि दनेकजातीयको जवति यथानालिकेरीतरु रेकास्थिक स्त्वचो वलयाकारत्वा ग्र वलय स्ततो नेकजातीयत्वा दनेकत्वा दपि त न्नाम निर्दिश्य

वल्लीयवत्थाणी ॥ ४ ॥ ससविदुगोत्तफुसिया गिरिकस्रइमालुयायञ्जणई । दहफुल्लयकागलिमा गलीयतह ञक्कबोदीया ॥ ५ ॥ जेयावस्रे तहप्पगारा सेत्त वल्लीउ॥ से कित पव्वगा २ ञ्रणेगविहा पस्सत्ता, तजहा— इक्खूयाइक्खुवाडये वीरुणातहइक्कडेयमासेय । सुंठेसरेयवेत्ते तिमिरेसतपोरगणले ॥ १ ॥ वसेवेलूकणए कंकावसेयवववसेय । उदएकुडएविमए कडावेलूयकल्लाणे ॥ २ ॥ जेयावस्रे तहप्पगारा सेत्तं पव्वगा॥ से कित तणा? तणा ञ्रणेगविहा पस्सत्ता, तजहा—सेडियगंतियहोत्तिय दब्भकुसेपव्वएयपोडइला । ञ्ज्जुणञ्रसाढए रो हियसिसुयवेयखीरभुसे ॥ १ ॥ एरडेकुरुविंदे करकरसुंठेतहाविभ्भगूय । मकुरतणछुरयसिप्पिय बोधव्वे सुकलितणेय ॥ २ ॥ जेयावस्रे तहप्पगारा सेत्त तणा॥ से कितवलया २ ञ्रणेगविहा पस्सत्ता, तजहा—ताले

करेना मभगा कवथा वागला पवेका तिमन्न टंवटालो ॥ २ ॥ ञपाक ञतिमुक्ता नागरवल कृष्णवल्ली सवफ समनसा जासुपर्ण कुविंदवल्ली ॥ ३ ॥ मुद्रिका ञवा विराली जयती गोपाली वाणी मासावल्ली गुंजावल्ली वत्थाणी ॥ ४ ॥ सेसवती दुर्गोत्रा फरसी गिरिकर्णी मालुका ञजना दहो फोलिका कागणी मोगरो तिम ञकावोंदी ॥ ५ ॥ जेयावणे तहप्पगारा सेत्तवल्लीञो । जे ञन्य पिण तथा प्रकारना तेवल्लीकहिये एतलेवल्लीकही ॥ सेकित पव्वगा २ ञणेगविहा प० त०—तेकुण पर्वग पर्वग ञनेक प्रकारनाकह्या तेकहेछे—सेलडी इक्षुवाटिका वीरणी इकड मासो सूंठ तमरिस पोरगण वास सेच्छकणा ककावसो वाववसो उदक कुडक विमुक कठवेल कल्याणो ॥ १ ॥ जेया० । जेएहवा ञनेरा पिण ते पर्वग कहिये । सेत्त पव्वगा । एतले पर्वग कह्या ॥ सेकित तणा तणा ञणेगविहा प० त० । तेकुण तृण तृण ञनेकप्रकारना कह्या ते कहेछे । सेठिञगति ॥ सेटिल भूतिका होतिक डाभ कुश पर्वग पोटल ञर्जुन ञाषाढ रोहिस सुञवक खीरभुस ॥ १ ॥ एरड कुरुविंद करकच सूंठ विभगू मधुरतृण छुरक सिप्पय शुक्लतृण ॥ २ ॥ जेया० । ञन्यपिण एहवा ते

मान न विरुध्यते, साम्प्रतमुक्तानुक्तार्थसंग्रहार्थमिदमाह-नाणाविहेत्यादि ॥ नानाविधं नानाप्रकारं संस्थानं आकृतियेषां तानि नानाविधसं

तमालतक्कलि, तेयालीसालिसारकल्लाणे । सरलेजायतिकेयइ, कदलितहचम्मरुक्खेय ॥ १ ॥ भुयरुक्खहिंगुरुक्खे, लवंगरुक्खेयहोइबोधव्वे । पूयफलीखज्जूरी, बोधव्वानालिएरीय ॥ २ ॥ जेयावन्ने तहप्पगारा सेत्तं वलया । से किंत हरिया ? हरिया अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा—अज्जोरुहवोडाणे, हरितगतहतंदुलेज्ज गतणय । वत्थुलपोरगमज्जा, रपोइअल्लीयपालक्का ॥ १ ॥ दगपिप्पलीयदव्वी सोत्थियसाएतहेवमंडुक्की । मूलगसरिसवअंबिल, साएजियंतएचेव ॥ २ ॥ तुलसीकण्हउराले फणिज्जुएअज्जएयभूयणए । चोरगदमण

जे एहवा अनेरा तथाप्रकारना तृणकहिवा देशीभाषायें । सेत्तंतणा । ते तिम तृण कहवा । सेकिंत वलया २ अणेगविहा प० तं० । तेहिज पूछे कुण व
नय भेद, तद गुरु वलयनाभेद अनेकप्रकारे कह्या ते कहिछे—ताल तमालतक्कलि तेयलिसालियसारकल्लाणे सरलेजावइकेयइ कदलतहचम्मरुक्खेय । १ ।
तालवृक्ष तमालवृक्ष तक्कलिवृक्ष सालिका सारकल्याण सरलै जावत्री केतकी कदली तथा धर्मवृक्ष । भुयरुक्खहिंगुरुक्खे लवंगरुक्खयहोइबोधव्वे पूयफली
खज्जूरीबोधव्वा नालिएरीय । २ । भूतवृक्ष हींगवृक्ष लवङ्गवृक्ष एहवैनाम ते जाणिवा पूगीफल खिज्जूरी जाणिवी नालिकेर । २ । जयावन्नेतहप्पगारा ।
एहवा पणो तथाप्रकारे अनेरा । सेत्तंवलया २ सेकिंत हरिया अणेगविहा प० तं० । एतले वनस्पतीना वलयानाभेद कह्या । हिवे हरितनाभेद पूछे शि
य तद गुरुकहे हरितभेद तिम हेशिष्य हरितभेद अनेकप्रकारे कह्या तेकहछे—अज्जोरुहवोडाणे हरियगतहतंदुलिज्ज तणेय वत्थुलपारगमज्जार पोइव
ल्लीयपालक्का । १ । अज्जोरुह वोडाण हरित तथा तंदुल तृणवत्थुल पौर मार्जार पोयवल्ली पालक्का । २ । दगपिप्पलियदव्वी सोत्थियसाएतहेवमंडुक्की
मूलगसरिसवअंबिल साएजियंतिएचेव । १ । दगपींपल दर्वी स्वस्तिका तिमहीज मंडूकी मूलग सरसव अंबिल सांगत जयंती निश्चे । तुलसीकण्हउ
राले फणिज्जअज्जुएयभूयणए चोरगदमणगमरुयग सयपुप्फादिवरेयतहा । २ । तुलसी कृष्ण उदार फाणिज अर्जुन भूचंन चोरग मनक दुंचन सय

थि दनेकजातीयको भवति यथानालिकेरीतरु रेकास्थिक स्त्वचो वलयाकारत्वा म्र वलय स्ततो नेकजातीयत्वा दनेकत्वा दपि त न्नाम निर्दिश्य

वल्लीयवत्याणी ॥ ४ ॥ ससविदुगोत्तफुसिया गिरिकन्नइमालुयायञ्जणई । दहफुल्लयकागलिमा गलीयतह ञ्क्कबोंदीया ॥ ५ ॥ जेयावन्ने तहप्पगारा सेत्त वल्लीउ॥ से कित पव्वगा २ ञ्णेगविहा पन्नत्ता, तजहा—इक्खूयाइक्खुवडये वीरुणातहइक्कडेयमासेय । सुठेसरेयवेत्ते तिमिरेसतपोरगणले ॥ १ ॥ वसेवेलूकणए कंका वसेयवववसेय । उदएकुडएविमए कडावेलूयकल्लाणे ॥ २ ॥ जेयावन्ने तहप्पगारा सेत्तं पव्वगा॥ से कित तणा? तणा ञ्णेगविहा पन्नत्ता, तजहा—सेडियगतियहोत्तिय दब्भकुसेपव्वएय्यपोडइला । ञ्ज्जुणञ्साढए रो हियसुयवेयखीरत्तुसे ॥ १ ॥ एरडेकुरुविंदे करकरसुठेतहाविभगूय । मकुरतणझुरयसिप्पिय बोधव्वे सुंकलितणेय ॥ २ ॥ जेयावन्ने तहप्पगारा सेत्त तणा॥ से कितवलया २ ञ्णेगविहा पन्नत्ता, तजहा—ताले

करेना मभगा कवधा वागला पवेकी तिमज टेवटाला ॥ २ ॥ अपीक अतिमुक्ता नागरवल कष्णवल्ली सघम ममनमा जासूपर्ण कुविदवल्ली ॥ ३ ॥ मुद्रिका अम्र विराली जयती गोपाली वाणी मामावल्ली गुजावल्ली वत्याणी ॥ ४ ॥ सेसवती दुर्गात्रा फरसी गिरिकर्णी मालुका अजना दही फोलिका कागणी मोगरो तिम अकाबोंदो ॥ ५ ॥ जेजावली तहप्पगारा सेत्तवल्लीओ । जे अन्य पिण तथा प्रकारना तेवल्लीकहिये एतलेवल्लीकही ॥ सेकित पव्वगा २ अणेगविहा प० त०—तेकुण पर्वग पर्वग अनेक प्रकारनाकह्या तेकहेछे—सेलडी इक्षुवाटिका वीरुणी इकड मासो सूठ तमरिस पोरगण वांस सेच्छका णा ककावसो वाववसो उदक कुठक विमुक कठवेल्ल कल्याणी ॥ १ ॥ जेया० । जेएहवा अनेरा पिण ते पर्वग कहिये । सेत्त पव्वगा । एतले पर्वग कह्या ॥ सेकित तणा तणा अणेगविहा प० त० । तेकुण तृण तृण अनेकप्रकारना कह्या ते कहेछे । सेठियगति ॥ सेटित भूतिका होतिक डाभ कुश पर्वग पोटल अर्जुन आषाढ रोहिस सुयवक खीरभुस ॥ १ ॥ एरंड कुरुविंद करकच सूठ विभगू मधुरतृण कुरक सिप्पय सुंकलतृण ॥ २ ॥ जेया० । अन्यपिण एहवा ते

एकजीव एकजीवाधिष्ठित किं सर्वेषा मपि ने त्याह-तालसरलनालिकेरीणा तालसरलनालिकेरीग्रहणमुपलक्षण तेना न्येषा मपि यथागम मेक जीवाधिष्ठितत्व स्कन्धस्य प्रतिपत्तव्य, अन्येषा तु स्कन्धा प्रत्येक मनेकप्रत्येकशरीरजीवात्मका इति सामर्थ्या दवसेय ॥ खन्धाविएगगजीविया इति पूर्वमभिधानात्' अथ यदि प्रत्येकमनेकशरीरजीवाधिष्ठिता स्तत कथ मेकस्वरूपशरीराकारा उपलभ्यन्ते इति, तदऽवस्थानस्वरूपमाह-जहसगले त्यादि ॥ यथा सकलसर्षपाणा श्लेषमिश्रणा श्लेषद्रव्यविमिश्रितानां वलितावर्त्तिरेकरूपा भवति, अथ ते सकलसर्षपा परिपूर्णशरीरा सन्त पृथक् स्वस्वावगाहनया तिष्ठन्ति तथा नया एवो पमया प्रत्येकशरीरिणा जीवाना शरीरसङ्घाता पृथक् स्वस्वावगाहना भवन्ति, इति इह जीवा

रुसवत्ते कल्हारे कोकणदे अरविंदे तामरसे भिसे भिसमुणाले पोक्खले पोक्खलच्छिलए जेयावन्ने तहप्प गारा सेत्त जलरुहा । से किंत कुहणा ? कुहणा अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा—आए काए कुहणे कुणक्के दव्वहलिया अफाए सज्झाए छत्तोए वंसीणहिया कुरए १ जेयावन्ने तहप्पगारा सेत्त कुहणा । णाणाविहस ठाणा रुक्खाणएगजीवियापत्ता । खधोविएगजीवो तालसरलनालिएरीण ॥ १ ॥ जहसगलसरिसवाण सिलेस

सेंकित कुणहा २ अणेगविहा प० तं० । कुण गुरुकहै ते अनेकप्रकारे कहेछे, कुणहानामा वनस्पतीनाभेदछे तिके गुरु भिन्न कहेछे जदो । आएकाएकहणे क कणक्केदव्वहलिया, सपभाएसेत्ताए छत्तोपवसीणडियाकहरए । आय काय कहण कणक द्रव्यहलिका सप्रभ सेत्ताक छत्राक वसीणहित कुहरकन।मा । जेयावणेतहप्पगारा सेत्त कुणहा । जे अनेरा तथाप्रकारे सर्व कुहण कहिये । णाणाविहसठाणारुक्खाण एगजीविया पणत्ता । नानाप्रकारे सस्थान अ नेकआकारे वृक्षादिकना सर्वपत्रादि एकजीवछे तेकह्या—खधाविएगजीवो तालसरलनालिएरीण जहसगलसरिसवाण सिलेनमिस्साणवट्टियावट्टी । खु न्ध पिण एकजीवछे ताल खजूरी नालेरी सदेरुट लता गाथा कहेछे, जिम सकल सरसव सर्षप द्रव्य चीकणोद्रव्य तेणे मिश्रकीधा एकठाथाय जिम । पत्तेयसरीराण तहहोंतिसरीरसघाया जहवातिलपप्पडिया बहुएहितिलहिसघयामती । प्रत्येक शरीरप्रतें तिमहुवे शरीरसघात एकठाछे जिम तिलपा

धिकारि स्नेपद्रव्यस्थानीये रागद्वेषोपचित तथाविध कर्म सकलसर्षपस्थानीया प्रत्येकशरीरा सकलसर्षपग्रहणा सर्षपवैविक्त्यप्रतिपत्त्या पृथक् स्व स्वावगाहकप्रत्येकशरीरवैविक्त्यप्रतिपत्त्यर्थं, अत्रैव दृष्टान्तान्तर माह–जहवेत्यादि ॥ वाशब्दो दृष्टान्तान्तरसूचने यथा तिलशष्कुलिका तिलप्रधाना पिष्टमयी अपूपिका बहुभि स्तिलै र्मिश्रिता सती यथा पृथक् २ स्वस्वावगाहतिलात्मिका भवति, कथञ्चि देकरूपा च, तथा अनयै वा पर्यया प्रत्येकशरीरिका जीवाना शरीरसङ्घाता कथ ञ्चि देकरूपा पृथक् स्वस्वावगाहना श्च भवन्ति, उपसहारमाह–सेत्तमित्यादि ॥ युग्म ॥ स स्प्रति साधारणवनस्पतिकायिकप्रतिपादनार्थमाह–सेकितमित्यादि ॥ अथ के ते साधारणशरीरवादरवनस्पतिकायिका अनेकविधा प्रज्ञप्ता स्तद्यथा–अव दि ॥ एतेच केचिदतिप्रसिद्धत्वा त्केचि द्देशविशेषत स्वय मेव ज्ञातव्या ॥ जेयावन्नेतहाविहाइति ॥ ये पि चा न्ये उक्तव्यतिरिक्ता स्तथा प्रका

मिस्साणवहियावहा । पत्तेयसरीराण तहहोतिसरीरसघाया ॥ २ ॥ जहवातिलपप्पडिया बहुएहितिलेहिं सहतासती । पत्तेयसरीराणं तहहोतिसरीरसघाया ॥ ३ ॥ सेत्त पत्तेयसरीरवादरवणप्फइकाइया । से किंत साहारसरीरबादरवणस्सइकाइया ? २ अणेगविहा पण्णत्ता, तजहा–अवए पणए सेवाले लोहिणी निह्न स्थिभगा अस्सकणी सिंहकणी सिउठातत्तोमुसढीय ॥ १ ॥ रुरुकुएहरियाजारु, छीरविरालीतहेवकिट्टीया ।

पडी वहुततिला एकठा·थे थाकेहवे । पत्तेवसरीरा·ण तहहोतिसरीरसघाया सेपपत्तेयसरीर वायरवणस्सइलाइ । प्रत्येकशरीर तिमएवे शरीरसघात भेलो पतरी तिम प्रत्येकशरीर वादर वनस्पतीकायना भेदकह्या । से किंत साहारणसरीरवायरवणस्सइकाइया २ अणेगविहा प० त० । ते किंवे साधारण शरीर वनस्पतीनाभेद केतला, तद यथा कहे साधारणशरीर वादरवनस्पतीना अनेकभेद कह्या ते कहेछे– अवपपणएसेवाले लोहिणीमिहुणीहत्थिभगा असोकणिसीहकणी सिउठनत्तोमस,ढीय रुरुकुडरिया । अवक पनक सेवाल रोहिणी मिथुनी ह स्तभागा अश्वकर्णी सिंहकर्णी सजाढि तर्सकन्द मुसट य कन्द कुन्दरी । जोछवीरविराली तहशमिहावहालिद्दसिगबेर आउलउयामूलणकम् कंगुकीदसूमहत्तीपायलइएतवेव । औरो वीरविराली तिमहीज की

हलिद्दासिगबेरेय, आलुगमूलएइ यकतूय कणककतूमञ्जपोगलईतहेव मञ्जसिगी विरुहा सप्पसुगधा छि
न्नरुहा चेव वायरुहा पाढामियवालुकी मञ्जररसा चेव रायवल्ली य पउमा य माढरी दंति चक्किकिहाति
यावरामासपणी मग्गपणि जीवियरिसिके य रेणुया चेव काउली खीरकाउली तया जगीणहाईयाकिमिरा
सिन्नद्दमुत्थार्णगलईपेलुगाईये किराहे पउले य हेढहरतणुया चेव लोयाणी कंराहंकदेवज्जो सूरणकंदे तहेव
खल्लूडे एए अणतजीवा जेयावरो तहाविहा॥ तणमूलकंदमूलो वंसीमूलितियावरे। सखेज्ज मसखिज्जा बोध
व्वाअणतजीवाय॥१॥ सिंघाडगस्सगुच्छो अणेगजीवोउ होति णायव्वो। पत्ता पत्तेयजिया दोणियजीवाउ फले

टो हालिद्र शृङ्गबेर आलू रतालू मूलो कसू कणकन्द मधुर्भा पोलिव तिमहोज। मुहसिगीविरुहा सप्पसुगधाछिन्नरुहाचेव बीयरुहापाढामियवालुकीम
हुररसचेव। मधुसिगी विरुढो सर्पनोखन्धो छिन्नरुहा निश्च बीजरुहा पाढारुहा मितवालुका मधुररस निश्च। रायवल्लीयपउमाय माढरदंतीचक्कोकि
ट्टिसियवराय नासपणिमुग्गपणी जोविवरसहेयरेणुयाचेव। रायबेल पद्मा माढरी दांती चक्को किट्टिभक्तिभरा मासपर्णी मुग्दपर्णी जीविकरसभ रेणुका
निश्चे। काआलिखीरकाउलो तहभगीविपनिहोएव किमरासिभद्दमुच्छाण गुलइपीगलोयपिलगए। काउलो चोरकाउली तह तिम भाग निश्चे क्रमरा
गि भद्रमोथ गुलो गिलोय वलुका। किराहपउलेहडे हरतणुयाचेवलोयदणीकण्हे कंदेवज्जिसूरण कंदेतहेवखल्लूडे। कण्हपटाल हडकन्द हरतनु निश्चे लोया
णी कणकन्द वज्रकन्द सूरणकन्द तिमहोज खिलोडा। ए अणतजोवा जियावणेतहाविहाय। इणा कन्दामाहि अनन्तजोवछै जे एहवा अनेराहोग तथा
प्रकारना। तणमूलकन्दमूले वसीमूलेत्तियावरे सखिज्जामसखिज्जा बोधव्वाणतजीवाय। तृणमूल कन्दमूल वंशीमूल इणामाहि सख्याता असंख्याता जा
णिवा अनन्ताजीव। सिघाडगस्सगुच्छो अणेगजीवोउहोइणायव्वो पत्तापत्तेयजिया दोणियजीवाफलेभणिया। सिंघोडानो जे गुच्छहुवे तेहमाहि अनेक
जोव जाणिवा हुवे पातडे २ प्रत्येके बेबे जोवहुवे फलमाहि कह्या। जस्समूलस्सभगस्स समाभगोपदीसई णणतजीवेउसेमूले जेयावणेतहाविहा १९।

पिकारे श्लेषद्रव्यस्थानीये रागद्वेषोपचितं तथाविधं कर्म सकलसर्षपस्थानीया प्रत्येकशरीरा सकलसर्षपग्रहण सर्षपवैविक्त्यप्रतिपत्त्या पृथक् स्व स्वावगाहकप्रत्येकशरीरवैविक्त्यप्रतिपत्त्यर्थं, अत्रैव दृष्टान्तान्तर माह-जहवेत्यादि ॥ वाशब्दो दृष्टान्तान्तरसूचने यथा तिलशष्कुलिका तिलप्रधाना पिष्टमयी अपूपिका बहुभि स्तिलै र्मिश्रिता सती यथा पृथक् २ स्वस्वावगाहतिलात्मिका भवति, कथञ्चि देकरूपा च, तथा अनयै वो पमया प्रत्येकशरीरिणा जीवाना शरीरसङ्घाता कथ ञ्चि देकरूपा पृथक् स्वस्वावगाहना श्च भवन्ति, उपसंहारमाह-सेत्तमित्यादि ॥ युग्म ॥ स्प्रति साधारणवनस्पतिकायिकप्रतिपादनार्थमाह-सेकितमित्यादि ॥ अथ के ते साधारणशरीरबादरवनस्पतिकायिका अनेकविधा प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-अव एत्यादि॥ एतेच केचिदतिप्रसिद्धत्वा त्केचि द्देशविशेषत स्वय मेव ज्ञातव्या ॥जेयावन्नेतहप्पगाराइति ॥ ये पि चा न्ये उक्तव्यतिरिक्ता स्तथा प्रका

मिरसाणवहियावहा । पत्तेयसरीराण तहहोंतिसरीरसघाया ॥ २ ॥ जहवातिलपप्पडिया वहुएहितिलेहि सहतासती । पत्तेयसरीराणं तहहोंतिसरीरसघाया ॥ ३ ॥ सेत्तं पत्तेयसरीरवादरवणप्फइकाइया । से कित साहारसरीरवादरवणस्सइकाइया ? २ अणेगविहा पण्णत्ता, तंजहा—अवए पणए सेवाले लोहिणी निहू त्थिभगा असकण्णी सिहकण्णी सिउठातत्तोमुसढीय ॥ १ ॥ रुरुकुण्हरियाजारु, छीरविरालीतहेवकिट्टीया ।

पडी वहुतिला एकठय,ये थाकेहवे । पत्तेयसरीराण तहहोंतिसरीरसघाया सेत्तंपत्तेयसरीर वायरवणस्सइकाइ । प्रत्येकशरीर तिमहुवे शरीरसंघात भेनो पतले तिम प्रत्येकशरीर बादर वनस्पतीकायनो भेदकह्यो । सेकित साहारणसरीरवायरवणस्सइकाइया २ अणेगविहा पं० तं० । ते हिवे साधारण शरीर वनस्पतीनाभेद केतला, तद गुरुकहे साधारणशरीर बादरवनस्पतीना अनेकभेद कह्या ते कहेछे—अवपणएसेवाले लोहिणीनिहूणीहथिभगा असोकणिसीहकणी सिउठनत्तोमस,ढीय रुरुकुडरिया । अवक पनक सेवाल रोहिणी निहुनो हथिभगा असोकणी सिहकणी सउढि तसकन्द मुसढ रु रुकन्द कुन्दरी । जीरूवीरविरालो तहवमिट्टावहालिहसिगबेरे आउलउयामूलएकन्द कणुकादसूमहुआपावलईएतहेव । शीरो वीरविरालो तिमहीज कीं

अनन्तानि तथाप्रकाराणि अधिकृतमूलभग्नसमप्रकाराणि तान्य प्य नन्तजीवानि ज्ञातव्यानि, एव कन्दस्कन्धत्वक्शाखाप्रवालपत्रपुष्पफलबीजवि षया अपि नव व्याख्यया 'सम्प्रति प्रत्येकशरीरलक्षणाभिधानार्थ गाथादशक माह-जस्सत्यादि॥ यस्य मूलस्य भग्नस्य सतो भङ्ग भङ्गप्रदेश हीरो

जस्सपत्तस्सभग्गस्स समोभगोपदीसई । अणतजीवेउसेपत्ते जेयावन्नेतहाविहा ॥७॥ जस्सपुप्फस्सभग्गस्स समोभगोपदीसई । अणतजीवेउसेपुप्फे जेयावन्नेतहाविहा ॥ ८ ॥ जस्सफलस्सभग्गस्स समोभगोपदीसई । अणतजीवेफलेसेउ जेयावन्नेतहाविहा ॥ ९ ॥ जस्सबीयस्सभग्गस्स समोभगोपदीसई । अणतजीवेउसेबीए जेयावन्नेतहाविहा ॥ १० ॥ जस्समूलस्सभग्गस्स हीरोभगोपदीसई । परित्तजीवेउसेमूले जेयावन्नेतहाविहा १ जस्सकदस्सभग्गस्स हीरोभगोपदीसई । परित्तजीवेउसेकदे जेयावन्नेतहाविहा ॥ २ ॥ जस्सखधस्सभग्गस्स

मभगो० अणतजीवपवालसे जेयावणेतहाविहा । जे सालभागेथके समभग दीसै तेसाल अनन्तजीवम हवे जे एहवा अनेरा तथाप्रक रे । जस्सपत्तस्स भगस्स समो'भ० अणतजीवेसेपत्त जेयावणेतहाविहा । जिण पानडे भागताथका सम भग दीसे ते पत्र अनन्तजीव हवे जे अनेरा पिण तिणप्रकारे जाणिवा । जस्सपुप्फस्सभगस्स समोभगोपदीसइ अणतजीवेउसेपुप्फे जयावणेतहाविहा । जिण फूलभागेथके समोभ० हवे दीसे ते अनन्तजीव हवे फूल जे अनेरा तथाप्रकारे । जस्सफलस्सभगस्स समोभ० अणतजीवेउफलसेण जेयावणेतहाविहा । जिणफल भागतेथके समभग दीसे ते फल अनन्तजीवमे हवे जे एहवा तथाप्रकारे । जस्सबीयस्सभगस्स समोभ० अणतजीवेउसेब ए जयावणेतहाविहा । जे बीज भागेथके समभग दीसे ते अनन्तजीव बीज अनेराप्रकारे तथाविध हवे । जस्समूलस्सभगस्स हीराभगोउदीसए परित्तजीवेउसेमूल जयावणेतहाविहा । जेमूल भागेथके विषमभग दीसे ते मूल प्रत्ये क जीवसहित कहिवे जे अनेरा तथाप्रकारे । जस्सकन्दस्सभगस्स हीराभगोउदीसए परित्तजीवेउसेकन्दे जयावणेतहाविहा । जे कन्दभागेथके विष मभग दीसे ते कन्दमाहि प्रत्येक जीवमाहे हवे जे अनेरा तथाप्रकार । जस्सखन्धस्सभ स्स हीराभ० परित्तजीवेउसेखध जेयावणेतहाविहा । जे

रा उक्तप्रकारा स्तेप्य नन्तजीवा ज्ञातव्या ॥ तणेत्यादि ॥ तृणमूल कन्दमूलय च्चा पर वशीमूल एतेषां मध्ये क्वचि ज्जातिभेदतो देशभेदतो वासङ्ख्याता जीवा क्वचिदसङ्ख्याता क्वचि दनन्ता च ज्ञातव्या ॥ सिंघाडगस्सेत्यादि ॥ शृङ्गाटकस्य यो गुच्छ सो ऽनेकजीवो भवति ज्ञातव्य । त्वक्शखादी नामनेकजीवात्मकत्वात् केवल तत्रापि यानि पत्राणि तानि प्रत्येकजीवानि फले पुन प्रत्येकमेकैकस्मिन् द्वौ२ जीवौ भणितौ ॥ जस्समूलस्सेत्यादि ॥ यस्यमूलस्य भग्नस्य सत समसकान्तरूप श्चक्राकारो भङ्ग प्रकर्षेण दृश्यते तन्मूलमनन्तजीवमवसेय ॥ जेयावन्नेतहाइति ॥ यान्य ऽपि चान्यानि

भणिया ॥२॥ जस्समूलस्सभग्गस्स समोभंगोयदीसए । अणतजीवेउसेमूले जेयावन्नेतहाविहा ॥१॥ जस्सकंदस्स भग्गस्स समोभगोयदीसई । अणतजीवेउसेकंदे जेयावन्नेतहाविहा ॥ २ ॥ जस्सखधस्सभग्गस्स समोभगोय दीसई । अणतजीवेउसेखधे जेयावन्नेतहाविहा ॥ ३ ॥ जस्सतयाएभग्गाए समोभगोयदीसई । अणतजीवा तयासाउ जेयावन्नातहाविहा ॥ ४ ॥ जस्ससालस्सभग्गस्स समोभगोपदीसई अणंतजीवेउसेसाले जेयावन्ने तहाविहा ॥ ५ ॥ जस्सपवालस्सभग्गस्स समोभंगोपदीसई । अणंतजीवेपवालेसे जेयावन्नातहाविहा ६ ॥

हिव साधारण प्रत्येकरो लक्षण हुवे जिणमूलभागे थके समोभग दीसे ते मूल अनन्तजीव ते जाणिवो जे वली अनेरा तथाप्रकारे इम १० । जस्सकंदस्स मूलस्स समोभगोयदीसइ अणतजीवेसेकंदे जेयावण्णेतहाविहा ११ । जिण कन्दमूल समोभग चक्राकार दीसे ते कन्दमें अनन्तजीव हुवे ते कन्दनेविषे जे अनेरा तथाप्रकारना तेकन्द जाणिवा । जस्सखधस्सभगस्ससमोभ० अणतजीवेसेखधे जेयावण्णेतहाविहा । जिण स्कन्धभागे थके समोभाजतो भगदीसे ते स्कन्ध अनन्तजीव मिश्रहुवे इम स्कन्ध जिके अनेराप्रकारना जाणिवा । जोसेतइयाएभागाएसमोभ० अणतजीवतयासाओ जेयावण्णेतहाविहा । जिण नी त्वचा भागेथके भाजता समोभग दीसे ते त्वचा अनन्तजीवने हुवे एहवी अनेरीत्वचा जाणिवी तथाप्रकारे । जस्ससालस्सभगस्स समोभ० अणतजीवेउ सेसाले जेयावण्णेतहाविहा । जेह प्रवालटोसो भागेथके समोभग दीसे ते प्रवाल अनन्तजीव दीसे जे एहवा अनेरा तथाप्रकारे । जस्सपवालस्सभगस्स स

त्या, एव कन्दस्कन्धशाखाविषया अपि तिस्रो गाथा परिभावनीया ' अधुना तासामेव छल्लीनां प्रत्येकजीवत्वपरिज्ञानाय लक्षणमाह-जस्समूलस्सेत्यादि ॥ गाथाचतुष्टय यस्य मूलस्य काष्ठात् मध्यसारात् छल्ली वल्कलरूपा तनुतराजवति सा परित्तजीवा प्रत्यकशरीरजीवात्मिका द्रष्टव्या, जयावन्नेतहाइति ॥ या पि चान्या अधिकृतया प्रत्यकशरीरजीवात्मकत्वेन निश्चितया छल्ल्या समानरूपा छल्ली सा पि तथाविधा प्रत्येकशरीर जीवात्मिका अवगन्तव्या, एव कन्दादिविषया अपि तिस्रो गाथा भावनीया , यदुक्त-जस्समूलस्सकट्ठस्ससमोभङ्गोपदीसइ ॥ इत्यादि तदेव लक्षण

स्स हीरोभङ्गोपदीसई । परित्तजीवेउसेपुप्फे जेयावन्नेतहाविहा ॥ ८ ॥ जस्सफलस्सभङ्गस्स हीरोभङ्गोपदीसई । परित्तजीवेफलेनेउ जेयावन्नेतहाविहा ॥ ९ ॥ जस्सबीयस्सभङ्गस्स हीरोभङ्गोपदीसई । परित्तजीवेउसे बीए जेयावन्नेतहाविहा ॥ १० ॥ जस्समूलस्सकट्ठाओ छल्लीबहलतरीभवे । अणंतजीवाउसाछल्ली जायावन्नातहाविहा ॥ १ ॥ जस्सकन्दस्सकट्ठाओ छल्लीबहलतरीभवे । अणंतजीवाउसाछल्ली जायावन्नातहाविहा २ ॥

जे फूल भागताथका समभङ्गदीसे ते फूल अनन्तजीवसहुवे ते अनेरा नानाप्रकारे ते पिण जाणिवा। जस्सफलस्सभङ्गस्स समोभङ्गपदीसइ अणंतजीवे उमूलेसे जेयावन्नेतहाविहा। जे फल भागतेथके समोभङ्गदीसे ते फल अनन्तजीवसे हुवे जे एहवा अनेरा तथा नानाप्रकारे इम जाणवा। जस्सबीयस्स भङ्गस्स समोभङ्गोपदीसइ अणंतजीवेउसेबीए जेयावन्नेतहाविहा। जे बीजभागताथका समोभङ्ग दीसे तेबीज अनेरा नानाप्रकारना तेपिण इमबीज जाणिवा। जस्समूलस्सभङ्गस्स हीरोभङ्गोपदीसए परित्तजीवेउसेमूले जेयावन्नेतहाविहा। जिवे मूलभागेथका विषमभङ्ग दीसे ते मूल प्रत्येकजीव सहित कहिये अनेरा तथाप्रकारना तेपिण इमजाणिवा। जस्सकन्दस्सभङ्गस्स हीरोभङ्गोपदीसए परित्तजीवेउसेकन्दे जेयावन्नेतहाविहा। जे कन्दभाजेतके विषमभङ्ग दीसे तेकन्दमाहि प्रत्येकजीव हवे जे अनेरा तथाप्रकारना ते पिण इम जाणिवा। जस्सखन्धस्सभङ्गस्स हीरोभङ्गो॰ परित्तजीवेउसेखन्धे जेयावन्नेतहाविहा। जे खन्धभाजेथके विषमभङ्गदीसे ते स्कन्ध प्रत्येकशरीर कहिये एहवा अनेरा तथाप्रकारना ते पिण इम जाणिवा। जीसेतईयाएभगाए

विषमच्छेदमङ्कुर ना प्रदृश्यते प्रकर्षेण स्पष्टरूपतया लक्ष्यते ततो मूल परित्तजीव प्रत्येकशरीरजीवात्मक ज्ञातव्य ॥ ज्ञेयावलेतराविहाइति ॥ या न्य पि चा न्यानि अनन्तानि तथाप्रकाराणि अधिकृतसदृशभग्नमूलसदृशानि मूलानि ता न्यपि प्रत्येकशरीरजीवात्मकानि मन्तव्यानि एव कन्दा दिविषया अपि नव गाथा भावनीया , यत्र कुत्रापि लिङ्गव्यत्यय स प्राकृतलक्षणाद् ऽवसेय , अधुना मूलादिगताना वल्कलरूपाणा छल्लीनामन न्तजीवत्वपरिज्ञानार्थलक्षण माह–जस्समूलस्सेत्यादिगाथाचतुष्टय ॥ यस्य मूलस्य काष्ठात् मध्यसारात् छल्लीवल्कलरूपा बहलतरा भवति सा अनन्त जीवा ज्ञातव्या ॥ येयावन्नहत्ति ॥ यापि चा न्या अधिकृतया अनन्तजीवत्वेन निश्चितया समानरूपा छल्ली सापि तथाविधा अनन्तजीवात्मका ज्ञात

हीरोभंगेपदीसई । परित्तजीउसेखंधे जेयावन्नेतहाविहा ॥ ३ ॥ जस्ससतयाएभंगगाए हीरोभंगेपदीसई । परि त्तजीवातयासाउ जेयावन्नेतहाविहा ॥ ४ ॥ जस्ससालस्सभंगस्स हीरोभंगेपदीसई । परित्तजीवउसेसाले जेयावन्नेतहाविहा ॥ ५ ॥ जस्सपवालस्सभंगस्स हीरोभंगेपदीसई । परित्तजीवेपवालेऊ जेयावन्नेतहाविहा ६ ॥ जस्सपत्तस्सभंगस्स हीरोभंगेपदीसई । परित्तजीवेउसेपत्ते जेयावन्नेतहाविहा ॥ ७ ॥ जस्सपुप्फस्सभंगस्स

खंधभांजेथके विषमभंग दीसे ते खंध प्रत्येकशरीरि कहिये एहवा जे अनेरा तथाप्रकारे ते पिण जाणिवो । जीसेतयाएभगाए हीरोभगो० परित्तजीवो तयासाओ जेयावन्नतहाविहा । जेहनी त्वचा भांजताथका विषमभगदीसै त्वचा प्रत्येकजीवमें कहिये एहवा जे अनेरा ते पिण इम जाणवा । जस्ससा लस्सभगस्स हीरोभगो० परित्तजीवउसेसाले जेयावन्नतहाविहा । जे सालभाजेथके विषमभग दीसै ते साल प्रत्येक जीवमें हुवे जे एहवा अनेरा पिण इ महीज जाणिवा तिणप्रकारे । जस्सपवालस्सभगस्स हीरोभगो० परित्तजीवेपवालेमे जेयावन्नतहाविहा । जे साल भागेथके विषमभग दीसे तेसाल प्रत्येक जीवमें हुवे एहवा जे अनेरा ते पिण इमहीज जाणवा । जस्सपत्तस्सभगस्स समोभंगोपदीसई अणतजीवेसेपत्ते जेयावन्नतहाविहा । जेपत्र भागताथका समभग दीसे तेपत्र अनन्तजीवमें हुवे जे अनेरापिण इमहीज जाणिवा । जस्सपुप्फस्सभगस्स समोभगोपदीसई अणतजीवेउसेपुप्फे जेयावन्नतहाविहा ।

॥ मूल

जीवाउसाछ्ली जायावण्यातहाविहा ॥ २ ॥ जस्ससखंधस्सकठाउ छल्लीतणुयरीभवे । परित्तजीवाउसाछल्ली
जायावण्यातहाविहा ॥ ३ ॥ जस्ससालाइकठाउ छल्लीतणुयरीभवे । परित्तजीवाउसाछल्ली जायावण्यातहावि
हा ॥ ४ ॥ चक्कागभज्जमाणस्स गठीचुण्णघणोभवे । पुढवीसरिसएणभेदेण अणतजीवंवियाणाहि ॥ १ ॥

॥ भाषा

हिरलो छाल जाडोहवे ते छालिमाहि अनन्ताजोव छाल बहुतजाडोहवे-अनन्तजीवमें हुवे इम अनेरा तथाप्रकारे पिण कहवा । जस्सकंदस्सकट्ठाओ
छल्लीवहलतरीभवे अणतजीवाउसाछल्ली जेयावण्णतहाविहा । जकन्दनो काष्टनीछ न जाडोहुवे तेहनें अनन्तजीव हवे जेहनो अनेरा तथाप्रकारे तेपिण
इमहीज कहवा । जस्सखंदस्सकट्ठाओ छल्लीवहलतरीभवे अणतजीवाउसाछल्ली जेयावण्णतहाविहा । जे कन्द काष्टछालजाडो हुवे ते छालमें अनन्ता
जीवहुवे ते छली अनेरा तथाप्रकारे इमहीज जाणिवा । जिसेसालाएकट्ठाओ छल्लीवहलतरीभवे अणतजीवाउसाछल्ली जेयावण्णतहाविहा । ज सालना
काष्टनो छाल जाडोहुवे वाकुल रूप हुवे ते छाला अनन्तजीवमें कहिये तथाप्रकारे । जोसिसालाएकट्ठाओ छल्लीवहलतरीभवे अणतजीवाउसाछल्ली जया
वण्णतहाविहा । जेसालकाष्टमें छालजाडोहवे तेसालमें अनन्ताजोव कहिये एहवा अनेरा पिणइमहीज जाणिवा । जस्समूलस्सकट्ठाओ छल्लीतणुयरीभवे
परित्तजीवाउसाछल्ली जयाव० । जेमूलना काष्टनाटल घणी हुवे वाहिरलो छाल पातलो हुवे ते प्रत्येकरूप जाणिवो जे एहवा अनेरा पिण इमहीज
जाणिवा । जस्सकंदस्सकट्ठाओ छल्लीतणुयरीभवे परित्तजीवाउसाछल्ली जेयाव० । जेकन्दना काष्टनीछाल पातलीहवे त छाल प्रत्येकशरीरमें कहिये ए
हवा अनेरा पिण इमहीज । जस्सखंधस्सकट्ठाओ छल्लीतणयरीभवे परित्तजीवाउसाछल्ली जेयावण्णतहाविहा । जे स्कन्ध काष्टनीछाल प्रत्येकशरीरमें क
हिये एहवा अनेरा पिण इमहीज । जिसेसालाएकट्ठाओ छल्लीतणुयरीभवे परित्तजीवाउसाछल्ली जेयाव० । जे सालना काष्टनीछाल पातलीहवे तेछा
ल प्रत्येकजीवमें कहिये एहवा जे अनेरा पिण इमहीज । चक्काभज्जमाणस्स गठीचुण्णघणोभवे पुढवीसरिसभेएण अणतजीवंवियाणाहि । जे भांजनेथ
के चक्राकार हुवे समाजरस्थानकमूल कन्दादिक हुवे ज गाठभाजतें चूर्णाचित हुवे पृथिवीनोपरे पच वर्णभेदे रगहुवे ते पिण्ड अनन्तजीवमें हुवे ते मूल

स्पष्ट प्रतिपिपादयिषु रिदमाह-चक्कागमित्यादि ॥ चक्रक चक्राकारमेकान्तेन सम भङ्गस्थान यस्य भज्यमानस्य मूलकन्दस्कन्धत्वक्शाखापत्रपुष्पादे र्भवति त न्मूलादिकम नन्तजीव विजानीहि इति सम्बन्ध , तथागठीचुस्रघणोभवेइतिग्रथि ' पर्वसामान्यतो भङ्गस्थान वा स यस्य भज्यमानस्य चूर्णेन रजसा घनो व्याप्तो भवति अथवा यस्य पत्रादे भज्यमानस्य चक्राकार भङ्ग रजसा ग्रन्थिस्थाने व्याप्ति च विना पृथिवीसदृशेन भेदेन भङ्गस्या

जस्सखंधस्सकठाउ छल्लीबहलतरीभवे । अणंतजीवाउसाछल्ली जायावस्रातहाविहा ॥ ३ ॥ जस्ससालाइक ठाउ छल्लीबहलतरीभवे । अणंतजीवाउसाछल्ली जायावस्रातहाविहा ॥ ४ ॥ जस्समूलस्सकठाउ छल्लीतणु यरीभवे । परित्तजीवाउसाछल्ली जायावस्रातहाविहा ॥ १ ॥ जस्सकंदस्सकठाउ छल्लीतणुयरीभवे । परित्त

होरी॰ परित्तजीवतुआसाओ जयावस्रेतहाविहा । जेहनो त्वचाभागता विषमभगदीसे त्वचा प्रत्येकजीवमे कहिये एहवा जे अनेरा पिण इमहीज जाणिवा । जस्ससालस्सभगस्स होरीभ॰ परित्तजीवेउसेसाले जेयावस्रेतहाविहा । जेसाल भागेथके विषमभग दीसे ते साल प्रत्येकजीवमे हुवे जे एह वा अनेरा तेपिण इमहीज जाणवा । जस्सपवालस्सभगस्स होरीभ॰ परित्तजीवेपवालेसे जेयावस्रेतहाविहा । जे प्रवालभागेथके विषमभंग दीसे ते प्रवाल प्रत्येकजीवमे कहिये जे अनेरा तथाप्रकारे इमहीज जाणिवा । जस्सपत्तस्सभगस्स होरीभगोयदीसइ परित्तजीवेउसेपत्ते जेयावस्रेतहाविहा । जे प त्र भागेथके विषमभग दीसे ते पत्र प्रत्येकजीवमे हुवे एहवा जे अनेरा ते पिण इमहीज जाणिवा । जस्स पुप्फस्सभगस्स होरीभ॰ परित्तजीवेउसेपुप्फे जे यावस्रेतहाविहा । जे फूल भागेथके विषमभग दीसे ते फल प्रत्येकशरीरमे कहिये जे एहवा पिण तिमहीज जाणिवा । जस्सफलस्सभगस्स होरीभ॰ परित्तजीवफलेसेउ जयावस्रेतहाविहा । ज फल भागताथका विषमभग दीसे प्रत्येकफल कहीजे जे अनेरा पिण तथाप्रकारे-जाणिवा इमहीज । जस्स बीयस्सभगस्स होरीभ॰ परित्तजीवेउसेबीए जेयावस्रेतहाविहा । जेबीज भागताथका विषमभग दीसे ते बीज प्रत्येकशरीरमे कहीजे एहवा अनेरा पिण तथाप्रकारे जाणवा । जस्समूलकठाओ छल्लीबहलतरीभवे अणतजीवाउसाछल्ली जयावस्रेतहाविहा । जे मूलनो काठनीमाहिलो गर्भदल थोडो अने व

जीवाउसाछल्ली जायावन्नातहाविहा ॥ २ ॥ जस्सखंधस्सकट्ठाउ छल्लीतणुयरीभवे । परित्तजीवाउसाछल्ली
जायावन्नातहाविहा ॥ ३ ॥ जस्ससालाइकट्ठाउ छल्लीतणुयरीभवे । परित्तजीवाउसाछल्ली जायावन्नातहावि
हा ॥ ४ ॥ चक्कागंभज्जमाणस्स गंठीचुण्णघणोभवे । पुढवीसरिसभेएण अणंतजीववियाणाहि ॥ १ ॥ ॥ मूल

हिरली छाल जाडीहवे ते छालिमाहि अनन्ताजीव छाल बहुतजाडीहवे अनन्तजीवमें हुवे इम अनेरा तथाप्रकारे पिण कहवा । जस्सकंदस्सकट्ठाओ ॥ भाषा
छल्लीबहलतरीभवे अणंतजीवाउसाछल्ली जेयावन्नतहाविहा । जकन्दनी काष्ठनीछाल जाडीहुवे तेहने अनन्तजीव हुवे जेहनी अनेरा तथाप्रकारे तेपिण
इमहीज कहवा । जस्सखंधस्सकट्ठाओ छल्लीबहलतरीभवे अणंतजीवाउसाछल्ली जेयावन्नतहाविहा । जे कन्द काष्ठछालनाजाडी हुवे ते छालमें अनन्ता
जीवहुवे जे छाली अनेरा तथाप्रकारे इमहीज जाणिवा । जिसिसालाइकट्ठाओ छल्लीबहलतरीभवे अणंतजीवाउसाछल्ली जेयावन्नतहाविहा । जे सालना
काष्ठनी छाल जाडीहवे बाकुल रूप हुवे ते छाला अनन्तजीवमें कहिये तथाप्रकारे । जोसिमालाइकट्ठाओ छल्लीबहलतरीभवे अणंतजीवाउसाछल्ला जया
वन्नतहाविहा । जेसालकाष्ठमें छालजाडीहुवे तेसालमें अनन्ताजीव कहिये एहवा अनेरा पिणइमहीज जाणिवा । जस्समूलस्सकट्ठाओ छल्लीतणुयरीभवे
परित्तजीवाउसाछल्ली जया० । जेमूलना काष्ठनाछल थकी हुवे बाहिरली छाल पातली हुवे ते प्रत्येकरूप जाणिवी ते एहवा अनेरा पिण इमहीज
जाणिवा । जस्सकंदस्सकट्ठाओ छल्लीतणुयरीभवे परित्तजीवाउसाछल्ली जेयाव० । जेकन्दना काष्ठनीछाल पातलीहुवे ते छाल प्रत्येकशरीरमें कहिये ए
हवा अनेरा पिण इमहीज । जस्सखंधस्सकट्ठाओ छल्लीतणुयरीभवे परित्तजीवाउसाछल्ली जेयावन्नतहाविहा । जे स्कन्ध काष्ठनीछाल प्रत्येकशरीरमें क
हिये एहवा अनेरा पिण इमहीज । जिसिसालाइकट्ठाओ छल्लीतणुयरीभवे परित्तजीवाउसाछल्ली जेयाव० । जे सालना काष्ठनीछाल पातलीहवे तेछा
ल प्रत्येकजीवमें कहिये एहवा जे अनेरा पिण इमहीज । चक्कागभज्जमाणस्स गंठीचुण्णघणोभवे पुढवीसरिसभेएण अणंतजीवंवियाणाहि । जे भांजतेथ
के चक्राकार हुवे समोकरस्थानकमूल कन्दादिक हुवे जे गांठभांजते चूर्णघन हुवे पृथिवीनोपरे पण वर्णभेद रजहुवे ते पिण्ड अनन्तजीवमें हुवे ते फूल

न भवति सूर्यकरनिकरप्रतप्तकेदारतरिकाप्रतरखण्डस्ये व समो भङ्गो भवतीति भावस्तमनन्तकाय विजानीहि ॥ पुनरपि लक्षणान्तरमाह–गूढसि रागमित्यादि ॥ यत्पत्र सक्षीरं नि क्षीरम्वा गूढसिराकमलक्ष्यमाणशिराविशेष यदपि च प्रनष्टसन्धि सर्वथा नुपलक्ष्यमाणपत्राद्धद्वयसंधि तदऽनन्त जीव विजानीहि, सम्प्रतिपुष्पादिगत विशेषमभिधित्सु राह–पुष्पाणि चतुर्विधानि तद्यथा–जलजानि सहस्रपत्रादीनि स्थलजानि कोरण्टकादीनि एतान्यपिच प्रत्येक द्विधा तद्यथा–कानिचित् वृन्तबद्धानि अतिमुक्तकप्रभृतीनि कानिचिन्नालबद्धानि जातिपुष्पप्रभृतीनि अत्रै तेषा मध्ये कानिचि

गूढसिरागपत्तं सच्छीरंजंचहोइनिच्छीरं। जंपियपणट्ठसंधि अणंतजीवंवियाणाहि ॥ २ ॥ पुप्फाजलयाथलया विंटबद्धायणालिबद्धाय। संखिज्जमसंखेज्जा बोधव्वाणंतजीवाय ॥ ३ ॥ जेकेइनालियाबद्धा पुप्फासंखेज्जजी विया। णिहुयाअणंतजीवा जेयावन्नेतहाविहा ॥ ४ ॥ पउमुप्पलिणीकंदे अंतरकंदेतहेवज्झिल्ली य। एते

फल पचनो। गूढसिरागपत्त सच्छीरनचहोयनिच्छीर जपियपणट्ठसंधि अणंतजीववियाणाहि। गूढ सिरासंधि दीसेनही छीरसहित हुवे जे छीरविना हुवे जेहनो प्रतिष्टा गुप्तसंधिहुवे ए लक्षणेकरी अनन्तकायना जीव जाणिवा, हिवे फूल फलनोसख्यालक्षण कहेछे–पुप्फाजलयाथलया विंटबद्धाय णालबद्धाय संखिज्जामसंखिज्जा बोधव्वाणंतजीवाय। फूल चारभेदहुवे अर्थ कमलादि थलज चंपकादिक एहवा बेभेद हुवे बेटबद्ध चंपकादिक नालबद्ध जाईजूई आदिक एहनेविषे हुव्याताजीव पिणहुवे असख्याता पिणहुवे अनन्तजीव पिण जाणिवा। जेकेइनालियाबद्धा पुप्फासंखिज्जजीवियाभणियाउ णिहुयाअणंतजीवा जेयावन्नेतहाविहा। जे केई नालबद्ध जाई जूई आदिक ते फूल सख्यात जीवात्मक कह्या वीतरागे स्निग्ध फूलमे अनन्तजीव हुवे ए हवा अनेरा पिण एहवे लक्षणे सर्व जाणिवा। पउमुप्पलिणीकंदे अंतरकंदेतहेवज्झिल्लिय एएअणंतजीवा एगोजीवोभिसमुणाले। पद्मनीनामकंद उत्पल नामकंद अन्तरकंद जलवनस्पती तिमहीज झल्लकार वनस्पती सर्वजीव अनन्ता जाणिवा पद्मनीनेविषे मृणालनेविषे एगजीव। पलंडुएहसणकंदेय कंद लीयकुडुवए एएपरित्तजीवा जेयावन्नेतहाविहा। पडलीकंद लहसनकंद वनस्पती कदलीवनस्पती निर्विशेष एसर्व प्रत्येकजीवात्मक जाणिवा अनेरा पिण

॥ टीका ॥

त्पत्रादिगतजीवापेक्षया सङ्ख्येयजीवानि कतिचिद सङ्ख्येयजीवानि कानिचिदनन्तजीवानि यथागम बोद्धव्यानि, अत्रैवकिञ्चिद्विशेषमाह-जेकेइत्यादि ॥ यानि कानिचित् नालिकाबद्धानि पुष्पाणि जात्यादिगतानि तानि सर्वाण्यपि सङ्ख्यातजीवकानि भणितानि तीर्थकरगणधरैः, स्निहू स्निहूपुष्प पु नरनन्तजीव यान्यपिचा न्यानि स्निहूपुष्पकल्पानि तान्य पि तथाविधानि अनन्तजीवात्मकानि ज्ञातव्यानि ॥ पउमुप्पलिनीकंदेत्यादि ॥ पद्मिनी कन्द उत्पलिनीकन्द अन्तरकन्दजलजवनस्पतिविशेष कन्द जिल्लिका वनस्पतिविशेषरूपा, एते सर्वेप्यनन्तजीवा नवर पद्मिन्यादीना बिशे मृणाले चएकजीवात्मके बिसमृणाले इतिभाव ॥ पलंडूइत्यादि ॥ पलण्डुकन्दो लसुनकन्द कन्दुको वनस्पतिविशेष, कुस्तुम्बको प्येतमत एत सर्वे पि प रित्तजीवा प्रत्येकशरीरजीवात्मका प्रतिपत्तव्या, ये पि चा न्ये एव प्रकारा अनन्तजीवात्मकलक्षणविरहिता स्त पि तथाविधा प्रत्येकशरीरजीवा त्मका वेदितव्या, पउमुप्पलेत्यादिगाथाद्वय ॥ पद्माना मुत्पलाना नलिनाना सुभगाना सौगन्धिकाना अरविन्दाना कोकनदाना शतपत्राणा सह स्रपत्राणा प्रत्येक यद्वृन्त प्रसवबन्धन यानि च बाह्यपत्राणि प्रायो हरितरूपाणि पत्रकर्णिका पत्राधारभूता एतानि त्रीण्य प्येकजीवात्मकानि या

॥ मूल ॥

अणतजीवा एगोजीवोभिसमुणाले ॥ ५ ॥ पलंडूलहसुणकंदेय कंदलीयकुहुवए । एएपरित्तजीवा जेयावन्नेत हाविहा ॥ ६ ॥ पउमुप्पलणलिणाण सुभगसोगंधियाणय । अरविंदकुकणाण सतवत्तसहस्सपत्ताण ॥ ७ ॥ बिंटबाहिरपत्ता यकण्णियाचेवएगजीवस्स अभितरगपत्ता पत्तेयकेसरमिजा ॥ ८ ॥ वेणुनलइक्कुवाडिय

॥ भाषा ॥

तथाप्रकारे प्रश्न जाणिवा । पउमउप्पलनलिण सभगसोगंधियाणय अरविंदकोकणाण सयवत्तसहस्सपत्ताण । पद्म उत्पल नलिन सुभग सौगंधिक अरविंद कोकण वनस्पतीविशेष शतपत्र सहस्रपत्र । बिंटबाहिरपत्ता यकण्णियाचेवएगजीवस्स अभितरगापत्ता पत्तेयकेसरामिजा । एहना वृत्त वा ह्यपत्र प्राये रूपसहित कर्णिका ए त्रिणनेविषे एकजीवहुवे वाह्यपत्र कर्णिकाविषे एकजीव जाणिवो माहिलोपत्र पाखडी केसरामिजो एते प्रत्येकजी वहुवे । वेणुनडइक्कुवाडिय समासइक्कुइकडरंडे करकरसूठविहिंगू वणाणतणवगाणय । वेणुवंश इक्षुवाटिकादि तण वनस्पती एरंडइत्यादि वस्ताकी

नि पुरस्यन्तराणि पत्राणि यानि च केसराणि या अभिज्ञा फलानि एतानि प्रत्येक मेकैक जीवाधिष्ठितानि॥ वेणुनलइत्यादिगाथाद्वय॥ वेणु वंशो नल तृणविशेष इक्षु वाकियादयो लोकत प्रत्येतव्या, तृणानि दूर्वादीनि यानि च पर्वगानि पर्वोपेतानि एतषा यच्चि यच्च पर्व यच्च वलिमोडइति-पर्वपरिवेष्टन चक्राकार एतानि एकजीवस्य सम्बधीनि भवन्ति एकजीवात्मकानि भवन्तीति भाव, पत्राणि एतषा सैकजीवाधिष्ठानानि पुष्पाख्य नेकजीवात्मकानि॥ पूसफलमित्यादि॥ पुष्पफल एव कालिग तुब त्रपुष॥ एलवालुत्ति॥ चिर्भटविशेषरूप वालुक चिर्भट तथा घोषातक पटोल त न्दुक तिंदूस च्व य त्फल एतषु प्रत्येक वृन्त सम॥ सकटाहत्ति॥ समास सगिर तथा कटाह एतानि त्रीण्येकस्य जीवस्य भवन्ति एकजीवात्मका न्येतानि त्रीणि भवन्तीत्यर्थ, तथा एतेषा मेव पुष्पफलादीना तन्दुकपर्यन्ताना पत्राणि पृथक् प्रत्येक मिति प्रत्येकशरीराधिष्ठिता न्येकैकजीवाधिष्टि

समासइक्कूयइक्कोरुके। करकरसुंठिविहगु तणाणतहपव्वगाणच॥ ९॥ अच्छिंपव्वंपलिमो डएयएगस्सहोंतिजीवस्स। पत्तेयपत्ताइं पुप्फाइअणेगजीवाइं॥ १०॥ पुस्सफलकालिंग तुंबतउसेलुवालुक। घोसालयं पकोल तिंदूयचेवतिंदूस॥ ११॥ वेंटमसकडाह एयाइंहवंतिएगजीवस्स। पत्तेयपत्ताइं सकेसरमकेसरमिंजा

र हुवे ते सर्वजीव एसरधी एक जाणिवा। इम छप तथा पर्वकरी सहित। अच्छिपव्व पलिमो डआयएगस्सहोतिजीवस्स पत्तेयपत्ताइं पुप्फयमणेगजीवाइं। अंधिपर्वं चक्राकार हुवे एहने एकजीव हुवे प्रत्येकपत्र एकजीवाधिष्टित फूल अनेकजीवाधिष्टित हुवे। पूसफलकालिग तुंबतउसेलवालय।लुक वासाडयपटोल तिंदूयचेवतंदुस। फूलफल कोहलो कालिगडो तूंबो चिभंट घोषातक फलविशेष पटोल तिंदुक टिडसी। विंटमसकडाह एयाइंहव तिएगजीवस्स पत्तेयपत्ताइं सकेसरमकेसरमिज्जा। सम समास गिर कटाह पत्र मिले एकजीवहुवे केशरा अकेशरा एके जीवादिहत। सप्फासेसज्झाए उव्वेहलिआयकुहणकदुक्के एएअणतजीवा कडुकेचाइनयणाए। सप्फात सज्झातको उव्वेहलिका कुहण कडुक वनस्पती अनन्तजीवात्मक कंदुकहुवे अ नेरावि वनस्पतीविशेष एसर्व अनन्तकाय। जाणिअपुव्वीए जीवोवक्कमइसोविअणोना जोविअमूलेजोवो सोविअपत्तेपढमाए। जिवारे जीवयोनि अव

तात्पर्यं , तथा ऽकेसरा सकेसरा वा मिञ्जावीजानि प्रत्येकं मेकैकजीवाधिष्ठितानि ॥ सप्फाएत्यादि ॥ एते कुहणादिवनस्पतिविशेषा लोकत प्रत्येतव्या , एते चानन्तजीवात्मका नवरं कंदुक्के भजना स हि कापि देशविशेषा दनन्तोऽनन्तजीवो भवति कोपि संख्येयजीवात्मक इति आह-किं बीजजीव एव मूलादिजीवो भवति उता ऽन्य स्तस्मि न्नपक्रान्ते उत्पद्यते इतिपरप्रश्नमाशंक्याह-बीयजोणिब्भूएइत्यादि ॥ बीजे योनिभूते योन्यवस्था प्राप्ते योनिपरिणाम मुज्झन्तो ति भाव , बीजस्य हि द्विविधा ऽवस्था तद्यथा-योन्यवस्था ऽयोन्यवस्था च तत्र यदा बीजं योन्यवस्थान जहाति अथचो ज्झित जन्तुना तदा तत् योनिभूत मित्यभिधीयते , उज्झित ञ्च जन्तुना निश्चयतो ना वगन्तु शक्यते ततो ऽतिशयं विना सम्प्रति सचेतन मचेतनं वा अविध्वस्तयोनि योनिभूत मिति व्यवह्रियते विध्वस्तयोनि तु नियमा दचेतनत्वा दयोनिभूत मिति , अथ योनिरिति किम भिधीयते ? उच्यते-जन्तोरुत्पत्तिस्थान मविध्वस्तशक्तिक तत्रस्थजीवपरिणमनशक्तिसम्पन्न मितिभाव , तस्मिन् बीजे योनिभूते जीवो व्युत्क्रमति उत्पद्यते स एव पूर्वको बीजजीवो ऽन्यो वा , आगत्य तत्रो त्पद्यते किं मुक्तं भवति तदा बीजनिवर्तकेन जीवेन स्वायुष क्षयात् बीजपरित्याग कृतो भवति तस्य च बीजस्य पुन स्तत्कालाऽवनिसंयोगरूपसामग्रीसम्भव स्तदा कदाचि त्स एव प्राक्तनो बीजजीवो मूलादिनामगोत्र निबध्य तत्रा गत्य परिणमति कदाचि दन्य पृथिवीकायिकादिजीव या पि च मूले जीव इति य एव मूलतया परिणमते जीव सो पि पत्रे प्रथमतये ति ॥ स एव प्रथमपत्रतया पि च परिणमते इत्येकजीवकर्तृकेमूलप्रथमपत्रे इति आह-चशेष ॥ सव्वोविकिसलउग्गमाणोपत्ततउत्तणवोत्ति ॥

१२ ॥ सप्फाएसज्झाए उव्वेहलियायकुहणकुंदुक्के । एएअणंतजीवा कुंदुक्केहोइभयणाउ ॥ १३ ॥ जोणिब्भूएबीए जीवोवक्कमइसोवअण्णोवा । जोविअमूलेजीवो सोविअपत्तेपढमयाए ॥ १४ ॥ सव्वोविकिसलउत्तखलु उग्गम

स्थितछाडो तिहां ते पूर्वजीव साधारण जीव चवीने अनेजीवमा थाजीवो तेपने मूलसाधारण हुंय पछे एकजीव । सर्वोविकिसलनोपण उगमनार्थो अणतथाभणियो सोचेवविवडढतो होइपरत्तोअणतोवा । मवे किसलयनिश्च जगता अनन्ताकाय कहिये तेवीज वढतयको पछे अन्तर्मुहूर्त पछो प्रत्येक

इत्यादि वक्ष्यमाणं कथं न विरुध्यते ? उच्यते-इह बीजजीवो ऽन्यो वा बीजमूलत्वेनो त्पद्य तदुच्छूनावस्थां करोति तत सा ऽनन्तरं भाविनी कि सलयावस्था नियमतो ऽनन्ताजीवा कुर्वन्ति पुन श्च तेषु स्थितिक्षया त्परिणतेषु असा वेव मूलजीवो ऽनन्तजीवतनुं स्वशरीरतया परिणमय्य ताव द्वर्द्धते याव त्प्रथमपत्रमिति न विरोध । अन्ये तु व्याचक्षते-प्रथमपत्रमि ह या सौ बीजस्य समूर्च्छनावस्था तेन सकजीवकर्तृके मूलप्रथमपत्रे इति किं मुक्तं भवति-मूलसमुच्छूनावस्थे एकजीवकर्तृके मत श्च नियमप्रदर्शनार्थं मुक्तं मूलसमुच्छूनावस्थे एकजीवपरिणमिते यत शेष तु किसलयादिना ऽवश्य मूलजीवपरिणामावि भावितमिति तत ॥ सव्वो ऽवि किसलयो खलु उग्गममाणो अणंतओ भणिओ ॥ इत्यादि वक्ष्यमाणमविरुद्धं । मूलसमु च्छूनावस्थानिर्वर्तनारम्भकाले किसलयत्वाभावा दिति आह-प्रत्येकशरीरवनस्पतिकायिकानां सर्वकालशरीरावस्थामधिकृत्य किं प्रत्येकशरीरत्वमु त कस्मिंश्चिदवस्थाविशेषे ऽनन्तजीवत्वमपि सम्भवति, तथा साधारणवनस्पतिकायिकानामपि किं सर्वकालमनन्तजीवत्वमुत कदाचि त्प्रत्येकशरी रत्वमपि भवति तत आह-सव्वोवि किसलओइत्यादि ॥ इह सर्वशब्दो परिशेषवाची सर्वोपि वनस्पतिकाय इ प्येकशरीर साधारण एव किसल यावस्थामुपगत सन् अनन्तकाय स्तीर्थकरगणधरै र्भणित स एव किसलयरूप अनन्तकायिक प्रवृद्धि गच्छन् अनन्तो वा भवति परित्तोवा कथं ? उच्यते-यदि साधारणं शरीरं निर्वर्त्यते तद्साधारण एव भवति, अथ प्रत्येकशरीर तत प्रत्येक इति, कियत कालाद्र्ध्वं प्रत्येको भवति ? इति चे दुच्यते-अन्तर्मुहूर्ता त्तथाहि निगोदाना मुत्कर्षतो ऽप्यन्तर्मुहूर्त्तं काल यावत् स्थिति स्तस्मा ततो न्तर्मुहूर्ता त्परतो विवर्त्तमान प्रत्येको भवती ति सम्प्रति साधारणलक्षणमाह-समयमित्यादिगाथाद्वय ॥ समय युगपद्व्युत्क्रान्ताना मुत्पन्नाना सता तेषां साधारणजीवाना समकमेककाल शरीर

माणोऽणतऊत्तणिउ । सोचेवविवद्धतो होइपरित्तोऽणतोवा ॥ १५ ॥ समयंवक्कताण समयतेसिसरीरणि

प्रत्येक हुवे साधारण ते साधारण हुवे साधारणजीव तेसमें समकाल चापनेयके । समयवक्कताण समयतेसिसरीरनिव्वत्ती समयप्राणुगाहण समयऊसाग णीसासे । साधवको तेहना शरीरनो निर्वृत्तिहुवे समयकाले सासोच्छास ग्रहण करे समकाले ऊसास नीसास मूकवा करे । समयमोगाहण वग्गि

निर्वृत्ति र्भवति समकं च प्राणापानग्रहणं प्राणापानयोग्य पुद्गलोपादानं ततः समक मेककालं तदुत्तरकालभाविना वुच्छ्वासनिश्वासो तथा एकस्य यदाहारादिपुद्गलानां ग्रहणं तदेव बहूना मपि साधारणजीवानां मवसेयं' किमुक्तं भवति यदाहारादिक मेको गृह्णाति शेषा अपि तच्छरीराश्रिता बहवो पि तदेव गृह्णन्ति तथा च यद्बहूनां ग्रहणं तत्तद्रूपा देकत्रशरीरे समावेशात् एकस्यापि ग्रहणं, सम्प्रत्युक्तार्थोपसंहारमाह-साहारणेत्यादि॥ सर्वेषामप्येकशरीराश्रितानां जीवानामुक्तप्रकारेण यत्साधारणं साधारणसूत्रे नपुंसकतानिर्देश आर्षत्वा दाहारआहारयोग्यपुद्गलोपादानं यच्च साधारणं प्राणापानयोग्यपुद्गलोपादानं उपलक्षण मेतत् यौ साधारणउच्छ्वासनिश्वासौ या च साधारणशरीरनिर्वृत्ति रेत त्साधारणजीवानां लक्षणं, सम्प्रतियथै कस्मिन् निगोदशरीरे अनन्ता जीवा परिणता प्रतीति पथ मवतरन्ति तथा प्रतिपादय न्नाह-जहअयगोलोइत्यादि॥ यथा-अयागोलो ध्मातः सन् स तप्ततपनीयसङ्काशः सर्वोग्निपरिणतो भवति तथा निगोदजीवान् जानीहि निगोदरूपे ष्वे केकस्मिन् शरीरे तच्छरीरात्म

वृत्ती । समयञ्चाणग्गहणं समयउस्सासनीसासो ॥ १६ ॥ एक्कस्सउजगहणं बहूणसाहारणाणतच्चेव । जबहुयाणगहणं समासउंतपिएगस्स ॥ १७ ॥ साहारणमाहारो साहारणमाणपाणगहणंच । साहारणजीवाणं साहारणलक्खणएयं ॥ १८ ॥ जहअयगोलोधंतो जाउंतत्ततवणिज्जसकासो । सव्वोअगणिपरिणउ णिगोयजीवे

साहारणाणितच्चेव जबहुयाणगहण समासओतंपिएकस्स । एकलो जीव आहार प्रतिग्रहण करे समकालपके घणा साधारणनो तिम जीव निपजाओ वा व ण्यो तेहनो घणा आहारादिकग्रहण ते निगोदीयाजीव ते समास एकठो रहियो किमहुवे सूक्ष्मवनस्पतीमें तेहने अनन्तशरीर एककायापें किम रहेछे तिहा जहा अयगोलोधंतो एगाथा स्युअर्थ करिवो। साहारणमाणपाणगहणंच साहारणजीवाणं साहारणलक्खणएयं जहअयगोलोधं-तो । ए हार याअजीनो साधारणआहार सर्वजीवमेंछे साधारणछे अनुपान सास.उसासनो लेवो सर्वजीव साधारण एकठा छे ए साधारणनो लक्षण कह्यो हवे दृष्टांत कहेछे – जिम लोहनो गोलो धम्योथको थाय तप्त तपनीय राता सोनासरीखो ते सर्व अग्निकरी परिणतहुवे । जाओतत्ततवणिज्जसकासो सव्वोअग

कनया अनन्तान् जीवान् जानीहि एव व्यसति ॥ एगरसेत्यादि ॥ एकस्य द्वयो त्रयाणा याव त्सङ्ख्याना वा असङ्ख्याना वा निगोदजीवा ना शरीराणि द्रष्टु न शक्यानि कुत इति चे दुच्यते-अभावा न्नक्षे कादिजीवगृहीतानि अनन्तवनस्पतिशरीराणि सन्ति अनन्तजीवपिण्डात्मकत्वा तेषा कथ तर्हि पतस्यामीत्यत आह-दीसतीत्यादि ॥ दृश्यन्ते शरीराणि निगोदजीवाना बादरनिगोदजीवाना अनन्ताना ननु सूक्ष्मनिगोदजीवा ना तेषा शरीराणा मनन्तजीवसङ्घातात्मकत्वे ऽप्य नुपलभ्यस्वभावत्वात्, तथा सूक्ष्मपरिणामपरिणतत्वात्, अथ कथमे तदवसीयते निगोदरूपश रीर नियमा दनन्तजीवपरिणामाविर्भावित भवतीति उच्यते ? जिनवचना त्तचेद ॥ गोयलाअसखेज्जा हौतिनिगोया असखयागोले । एक्केको य निगोउ, अणतजीवो मुणेयव्वो ॥ १ ॥ सम्प्रत्ये तेषा मेव निगोदजीवाना प्रमाणमभिधित्सु राह-लोगागासेत्यादि ॥ एकैकस्मिन् लोकाकाशप्रदेशे एकैक निगोदजीव स्थापय एव मेकैकस्मिन् आकाशप्रदेशे एकैकजीवरचनया मीयमाना अनन्तलोकाकाशप्रदेशप्रमाणा निगोदजीवा भवन्ति सम्प्रति प्रत्येकवनस्पतिजीवप्रमाणमाह-लोगागासपएसेइत्यादि ॥ एकैकस्मिन् लोकाकाशप्रदेशे एकैक प्रत्येकवनस्पतिजीव स्थापय एव मुक्तप्रकारेण मीय

तहाजाण ॥ १९ ॥ एगस्सदोराहतिराहव सखेज्जाणवपासिउसक्का । दीसंतिसरीराइ णिगोयजीवाणणताण २० लोगागासपएसे णिगोयजीवठवेहिएक्केक्क । एवमविज्जमाणा हवतिलोयाअणताउ ॥ २१ ॥ लोगागासपएसे परित्तजीवठवित्तुएक्केक्क । एवमविज्जमाणा हवतिलोगाअसखेज्जा ॥ २२ ॥ पत्तेयापज्जत्ता पयरस्सअसख

णिपरिणवो निगोदजीवोतहाजाण । तरतम भेदेकरो व्यापिइवे तिम इहाते हेशिष्य निगोदजीव जाणरा । एगस्सदोराइतिराइव सखिज्जाणविपासिउँ नक्का दीसतिसरीराइ निगोयजीवाणणताण । एक बे त्रिण सख्याता जीवना शरीरना देखीनको बादरनिगोदना पिण्डथी दीसता, पण्डथी निगोदना जोव सूक्ष्म अनन्तापमाण कहेछे—लोगागासपएसे निगोयजीवठवेहिइक्किक्क एवमविज्जमाणा हवतिलोयाअसखिज्जा । एकेके लोकाकाशप्रदेशे एकेके निगोदनोजीव थापिये इम थापताथका हुवे अनन्तलोकाकाशप्रदेश सरीखा । पत्तेयापज्जत्ता ...

माना प्रत्येकतरुजीवा असङ्ख्येयलोकाकाशप्रदेशप्रमाणा भवन्ति, सम्प्रतिपर्याप्ताऽपर्याप्तभेदेन प्रत्येकसाधारणवनस्पतिजीवाना प्रमाणमाह-पत्तेयाप ज्जत्ताइत्यादि॥ पर्याप्ता प्रत्यकवनस्पतिजीवा घनीकृतस्य लोकस्य सम्बन्धिन प्रतरस्य असङ्ख्येतमे भागे यावत आकाशप्रदेशा स्ताव त्प्रमाणा भव न्ति अपर्याप्ताना पुन प्रत्येकतरुजीवाना मसङ्ख्येया लोका परिमाण पर्याप्तापर्याप्ताना च साधारणजीवानामनन्तलोका, कि मुक्त भवति असङ्ख्येयलोका काशप्रमाणा अपर्याप्ता प्रत्येकतरवो ऽनन्तलोकाकाशप्रमाणा पर्याप्ता अपर्याप्ता य साधारणजीवा इति॥ जयावन्नेतहरित॥ यपि चान्ये ऽनुक्तरूपा स्तथाप्रकारा प्रत्येकतरुरूपा य ते पि वनस्पतिकायत्वेन प्रतिपत्तव्या, तेसमासउइत्यादि प्राग्वत्' नवर यत्रै को यान्त्रपर्याप्त स्तत्र तन्निश्रया अपर्याप्ता कदाचि त्सङ्ख्येया कदाचिद सङ्ख्येया कदाचिद नन्ता । प्रत्येकतरव सङ्ख्येया असङ्ख्येया वा, साधारणा स्तु नियमा दनन्ता इतिभाव,

भागमित्ताउ । लोगाऽसखाऽप ज्जत्तयाणसाहारणमणता ॥ २३ ॥ एएहिसरीरेहिं पच्चक्खेपरूविआजीवा सुहुमाआणागिज्झा चक्खुप्फासनतेइति ॥ २४ ॥ जेयावन्ने तहप्पगारा ते समासउ दुविहा पणत्ता, त० पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य, तत्थण जे ते अपज्जत्तगा तेण असपत्ता, तत्थण जेते पज्जत्तगा तेसिण वन्ना

धारणमणता । पर्याप्त अपर्याप्त साधारणजीव हुव एकेके लोकाकाशप्रदेशे प्रत्यकजीव एकेक थापिये तथापि ये प्रतरना असख्यातभागनो मात्रा दन थापताथका असख्यात लोकाकाशप्रदेशे थाय असख्याताल्लोकाकाश हुवे पर्याप्त प्रत्येकजीव वनस्पतीनाथे नाघतलोक प्रतरने असख्यातमेभाग जेतला आकाश प्रदेशमान अपर्याप्ता प्रत्येक तरु अनन्ताकाश प्रदेशप्रमाण पर्याप्तअपर्याप्ता साधारणजीवेत्ति, लोकाकाश असख्याता अपर्याप्तमाहि साधा रणे अनन्तजीव। एएहिसरीरेहि पच्चखते परूविआजीवा सुहुमाअणागिज्झा चक्खुप्फासनतेइ ति । एहवे अनन्तशरीरे करी एहवा प्रत्येकजीव प्रत्यक्ष छे सूक्ष्म एहवा अनागिज्झवा चक्षु ते ग्राह्य नथाय नेत्रे दीसेनही । जेयावणतहप्पगारा ते समासओ दुविहा प० त० । जे एहवा अनेरा तथाप्रकारे ते सक्षेपथकी दोयप्रकारे कह्या ते कहेछे—पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय । पर्याप्ता अपर्याप्ता । तत्थणजेते अपज्जत्तगा तेण असपत्ता । तिहां जे अपर्या

प्पसिणमित्यादि ॥ एतेषां साधारणप्रत्येकतरूपाणां वनस्पतिविशेषाणां वक्ष्यमाणानामिमा विशेषप्रतिपादिका वक्ष्यमाणा गाथा अनुगन्तव्या प्र तिपत्तव्या स्ता एवाह–तजहा–कदायेत्यादि ॥ गाथाद्वय, कन्दा सूरणकन्दादय कन्दमूलानि वृक्षमूलानि वनस्पतिविशेष गुच्छा गुल्मा वल्लय श्च प्रतीता वेणुका वंशा स्तृणा न्यर्जुनादीनि पद्मोत्पलशृङ्गाटकानि प्रतीतानि, हढो जलजवनस्पतिविशेष सेवाल प्रसिद्ध कृष्णक पनक शवनक कच्छभाणि कन्दुका साधारणवनस्पतिविशेषा एतेषा मेकोनविंशतिसङ्ख्याना त्वगादिषु मध्ये कस्यापि कापि योनि ' किमुक्त भवति–कस्यापि त्वक् योनि कस्यापि वल्ली याव त्कस्यापि मूल कस्या प्यग्र कस्यापि मध्य कस्यापि बीज मिति, सेत्तमित्यादिनिगमनचतुष्टय सुगम ॥ तदेव मु

देसेण गधादेसेण रसादेसेण फासादेसेण सहस्सग्गसो विहाणाइ सखेज्जाइ जोणिप्पमुहसयसहस्साइ पज्ज त्तगणिस्साए अपज्जत्तगा वक्कमति, जत्य एगो तत्य सिय सखिज्जा सिय असखिज्जा सिय अणता एएसिणं इमाओ गाहाओ अणुगतव्वाओ तजहा—कदायकदमूलाय रुक्खमूलाइयावरे। गुच्छायगुम्मवल्लीय वेलुयाणितणा णिय ॥ १ ॥ पउमुप्पलसिघाडे हढेयसेवालकिण्हएपणए । अवएयकच्छभाणी कदुक्कोकूणवीसइमे ॥ २ ॥

पना ए नथी पाम्या वर्णादिक । तत्थ णं जे ते पज्जत्तगा तेणवण्णादेसेण गंधादेसेण रसादेसेण फासादेसेण सहस्सग्गसोविहाणाइ संखिज्जाइ । तिहां जे प र्याप्ता वर्णादेशे गन्धादेशे रसादेशे स्पर्शादेशे शतसहस्र प्रमुख एतले नाम । जोणिप्पमुहसयसहस्साइं पज्जत्तनीसाए अपज्जत्तगावक्कमति । प्रत्येक व नस्पती दशलाखयोनि साधारण १४ लाख पर्याप्तानियायें ऊपजे अपर्याप्त । जत्थएगो तत्थ सियसंखिज्जा सियअसंखिज्जा सिय अणता एएसिणइ माओ गाहाओ अणुगतव्वाओ । जिहा एकजीव तिहां हुवे संख्याता किवारे असंख्याता किवारे अनन्ता हुवे हिवे साधारण वनस्पती ओलखवा जाजे कहेछे तेकिम तेकिम । कदायकदमूलाय रुक्खमूलाइयावरे गुच्छायगुम्मवल्लीय वेणुयाणितणाणिय । कंद सूरणकंद कंदमूल वृक्षमूल एहवा बीज गु च्छा गुल्म वेलडी वेणुका वंश । पउमुप्पलसिघाडे हढेयसेवालकिण्हएपणए अवएअकच्छभाणी कदुक्कोणवीसइमे । ढप पद्म उत्पल सघाडा हढ सेवाल कृ

॥ टीका ॥

क्ता एकेन्द्रिया सम्प्रतिद्वीन्द्रियप्रतिपादनार्थं माह-सेकितमित्यादि ॥ अथ के ते द्वीन्द्रिया ? सूरिराह-द्वीन्द्रिया अनेकविधा प्रज्ञप्ता, तद्यथा पुलाकिमियाइत्यादि ॥ पुलाकिमियानाम पायुप्रदेशोत्पन्ना कृमय कुक्षिप्रदेशोत्पन्ना शङ्खा समुद्रोद्भवा प्रतीता शङ्खनका स्त एव लघव घुल्ला घुल्लिका खुल्ला लघव शङ्खा सामुद्रशङ्खाकारा वराटा कपर्दका ॥ सिप्पिसपुडहि ॥ सम्पुटरूपा शुक्तय चन्दनका अक्षा शपा स्तु यथासम्प्रदाय वाच्या ॥ जेयावन्नतहाप्पगाराइति ॥ य पि चा न्ये तथा प्रकारा एव प्रकारा मतकप्रवरनसूतकस्यादय ते सर्वे द्वीन्द्रिया ज्ञातव्या तेसम्मूर्च्छि

॥ मूल ॥

तयवल्लिपवालेसुय पत्तपुप्फफलेसुय । मूलग्गमज्झवीएसु जोणीकस्सइकेत्तिया ॥ ३ ॥ सेत्त साहारणसरीर बादरवणस्सइकाइया । सेत्तबादरवणस्सइकाइया ॥ सेत्त एगिंदिया ॥ से किंत बेइंदिया ? बेइंदिया अणेग विहा पणत्ता, तजहा—पुलाकिमिया कुच्छिकिमिया गंडूयलगा गोलोमा णेउरा सोमगलगा वंसीमुहा सूईमुहा गोजलोया जलोया जालाउया संखा संखणगा घुल्ला खुल्ला खया वराडा सोत्तिया मोत्तिया कलुया वासा एगओवत्ता दुहओवत्ता णंदियावत्ता संबुक्का माइवाहा सिप्पि संपुडा चंदणा समुद्दलिक्खा, जेयावण्णे

॥ भाषा ॥

एका पत्रना पत्रवर्णं फूलण अवय कत्थभाषो २ ए हमें कहुका ए १६ । तयछल्लिपवालेस पत्तपुप्फफलेसय मूलगमज्झबीएसु जोणिकस्सविकित्तिया । त्वचा छाल कोंहतोपवाल पान फूल फल मूलाग्र कोइनोमध्य बीज यानिकहनो कह्या । सेत साहारणसरीरबायरवणस्सइकाइया । ते एहवो साधारणवनस्प तो फर बादरवनस्पति पिणकही । सेत्त बायरवण० सेत्त वण० सेत्त एगिंदिया ॥ सेकित बेइंदिया २ अणेगविहा प०त० । ते एतले दोय वनस्पतीनाभेद साधारण बादरनाभेद अधिकार कह्यो पाचो एकेंद्रियजाति कहियाइ कह्या, हिवे शिष्य बेइन्द्रियको विवरो पूछेछै, ते बेंद्रियना अनेकभेदछे ते कहेछे गुरु । पुलाकिमिया कुच्छिकिमिया गडूयलगा गोलोमा णेउरोसा सगलगा वसीमुहा । पलाकृमिका कुक्षिकृमिका गडूग गोलोमा निउरास मगल वंशी मुख । सूइमुहा गोजलोया जलोया नूजला भो असपा संखणगा । सूचीमुख गोजलोक जलोका जलनू मग सखनक । घुला खुला कथा वरडा सोत्ति

मा सम्मूर्छिमत्वा देवच नपुसका सम्मूर्छिमानाम Sवश्य नपुसकत्वात्, नारकसम्मूर्छिना नपुसका इतिवचनात् ॥ तेसमासउ इत्यादि ॥ ते द्वीन्द्रिया समासत सङ्क्षेपेण द्विविधा प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-पर्याप्तका श्चापर्याप्तका श्चशब्दौ योनिकुलभेदेन स्वगतानेकभेदसूचकौ, एतेषा द्वीन्द्रियाणा मेवमादीना पुलकृम्यादीना द्वीन्द्रियाणा पर्याप्तापर्याप्तादीना सर्वसङ्ख्या सर्वजातिकुलकोटीना योनिप्रमुखानि योनिप्रवाहानि योनिशतसहस्राणि भवन्ति सप्तजातिकुलकोटिलक्षा भवन्तीतिभाव , इत्याख्यात तीर्थकृद्भि मकारो लाक्षणिक , इयमत्र भावना इह-जातिकुलयोनीना परिज्ञानार्थ मिद परिस्थूर मुदाहरण पूर्वाचार्यै रुपदर्शित तद्यथा-जातिरिति किल तिर्यग् गति तस्या कुलानि कृमिकीटवृश्चिकादीनि इमानि च कुला नि योनिप्रमुखानि तथा ह्ये कस्या मेव योनौ अनेकानि कुलानि भवन्ति यथा छगणयोनौ कृमिकुल कीटकुल वृश्चिककुल मित्यादि अथवा जाति कुल मित्ये क पद जातिकुलयोन्यो श्च परस्पर विशेष एकस्या मपि योनौ अनेकजातिकुलसम्भवात् यथा एकस्या मेव योनौ कृमिजातिकुल कीट जातिकुल वृश्चिकजातिकुल मित्यादि एव च एकस्यामेव योनाववान्तरजातिभेदभावाद Sनेकानि योनिप्रवाहाणि जातिकुलानि सम्भवन्तीत्यु पप

तहप्पगारा सव्वे ते समुच्छिमा नपुसगा ते समासउ दुविहा प०, त०—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य एएसिण एवमादियाण बेइंदियाण पज्जत्ता पज्जत्ताण सत्तजाइकुलकोडीजोणिप्पमुहसयसहस्सा भवंतीति मक्खाय ॥

ना मृत्तिका कलुयाभासा। घुल्ला खल्ला खरा कडा सीतिक मौक्तिक कलुयाभासा। एगओवत्ता दुहओवत्ता नंदियावत्ता। एगोपयुक्ता द्विधोपयुक्ता नंद्यावर्त्ता। सबुक्का माइवाहा सिप्पिसपुडा चदणा समुद्दलिक्खा। गरका माईवाहा सीप चदना समुद्रलीख। जेयावन्नेतहप्पगारा सव्वे ते सम्मुच्छिमा नपुसगा ते समासओ दुविहा प० त०। जे अनेरा तथाप्रकारना सर्व ते समूर्छिम नपुसकलिंगी ते सक्षेपथकी दोयप्रकारे कह्या तिकहेछे—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगाय। पर्याप्ता अपर्याप्ता। एएसिण एवमाइण बेइंदियाण पज्जत्तापज्जत्ताण सत्तजायकुलकोडी। इणाम इणतरे आदिदेई बेइन्द्रियजीव पर्याप्ता अपर्याप्ता सातलाख कुलकोडी। जोणियमुहसयसहस्सा भवतित्ति मक्खाय। बेलाख योनि एहनी उत्पत्तिस्थानक इये भिन्न छायाना अनेक

॥ टीका ॥

द्यन्ते द्वीन्द्रियाणां सप्तजातिकुलकोटीनां शतसहस्राणा मुपसंहार माह-सेत्तमित्यादि॥ से पा द्वीन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना, सम्प्रति त्रीन्द्रि यसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापनार्थं माह-सेकितमित्यादि ॥ अथ का सा त्रीन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना? आचार्य आह-त्रीन्द्रियसंसारसमापन्नजी वप्रज्ञापना अनेकविधा प्रज्ञप्ता। तानेव तद्यथेत्यादिना प्रदर्शयति-एते च औपचयिकप्रभृतय स्त्रीन्द्रिया देशविशेषतो लोकत श्चा वगन्तव्या ' नवरं॥ गोम्ह्रीकर्णसियालिया जेयावन्नेतहप्पगारा॥ ये पि चा न्ये तथा प्रकारा स्ते सर्वे त्रीन्द्रिया ज्ञातव्या इति शेष ॥ तेसहुंसमुच्छिमनपुंसकाइत्यादि ॥

॥ मूल ॥

सेत्तं बेइंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा ॥ से किंतं तेइंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा २ ? अणेगविहा पण्णत्ता, तंजहा—उवाइया रोहिणिया कुंथू पिपीलिया उद्दंसगा उद्देहिया उक्कलिया उप्पाया उप्पडा तण हारा कट्ठहारा पत्तहारा मालुया तणबिंटिया पत्तबिंटिया पुप्फबेंटिया फलबिंटिया बीयबिंटिया तेपुर णमिंजिया तउसिमिंजिया कप्पासट्ठिमिंजिया हिल्लिया झिल्लिया झिंगिरा किंगिरिडा बाहुया लहुया सु भगा सोवत्थिया सुयबेंटा इंदकाइया इंदगोवया तुरतुंबगा कोत्थलवाहगा जूया हालाहला पिसुया सत

॥ भाषा ॥

कुलकोडि हवे तिम जाणिवे ते एतले। सेत्त बेइंदियसंसारसमावण्णजीव पण्णवणा। बेंद्रिय संसार समापन्नजीव प्रज्ञापना। सेकिंत तेइंदियसंसारसमा वण्णजीव पण्णवणा २ अणेगविहा प० तं०। हिवे तेंद्रियनाभेद पूछे कुण गुरुकहे तेंद्रिय संसार समापन्नजीव प्रज्ञापना ते अनेकप्रकारे कह्या तेकहेछे। उवाइया रोहिणीया कुथ पिपिलियाथी उद्दंसगा उद्देहिया उक्कलिया उप्पया चोप्पडा। उत्पातिका रोहिणीया कन्थुवा पिपीलिया उद्दंसा उद्देही उ त्कलिता उत्पत्ता उत्पडानाम। तणाहारा काट्ठाहारा मूलाहारा पत्ताहारा। तृणाहार काष्टाहार मूलाहार पत्राहार। तणबेंटिया पत्तबेंटिया प प्फबेंटिया फलबेंटिया बीयबेंटिया ते सुरणमिंजिया। तृणबेंटो पत्रबेंटो पुष्पबेंटो फलबेंटो बीजबेंटो बीजबेंटो सूरणामिंज्जिता। तओसिमिंजिया कप्पा सट्ठिमिंजिया। तओसमजिता कर्पास अस्थिमिज्जी। हलिया झलिया झिंगरिया किंगरिडा। हल्लिका झलिका झिंगरिया किंगरिया। वहुया लहुया

मा सम्मूर्छिमत्वा देवच नपुसका सम्मूर्छिमानाम ऽवश्य नपुसकत्वात्, नारकसम्मूर्छिमा नपुंसका इतिवचनात् ॥ तेसमासउ इत्यादि ॥ ते द्वीन्द्रिया समासत सङ्क्षेपेण द्विविधा प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-पर्याप्तका श्चापर्याप्तका श्चशब्दौ योनिकुलभेदेन स्वगतानेकभेदसूचकौ, एतेषा द्वीन्द्रियाणा मेवमादीना पुलकृम्यादीना द्वीन्द्रियाणा पर्याप्तापर्याप्तादीना सर्वसङ्ख्या सर्वजातिकुलकोटीना योनिप्रमुखानि योनिप्रवाहानि योनिशतसहस्राणि भवन्ति सप्तजातिकुलकोटिलक्षा भवन्तीतिभाव , इत्याख्यात तीर्थकृद्भि र्मकारो लाक्षणिक , इयमत्र भावना इह-जातिकुलयोनीना परिज्ञानार्थ मिद परिस्थूर मुदाहरण पूर्वाचार्ये रुपदर्शित तद्यथा-जातिरिति किल तिर्यग् गति तस्या कुलानि कृमिकीटवृश्चिकादीनि इमानि च कुला नि योनिप्रमुखानि तथा ह्ये कस्या मेव योनौ अनेकानि कुलानि भवन्ति यथा छगणयोनौ कृमिकुल कीटकुल वृश्चिककुल मित्यादि अथवा जाति कुल मित्ये क पद जातिकुलयोन्यो श्च परस्पर विशेष एकस्या मपि योनौ अनेकजातिकुलसम्भवात् यथा एकस्या मेव योनौ कृमिजातिकुल कीट जातिकुल वृश्चिकजातिकुल मित्यादि एव च एकस्यामेव योनाववान्तरजातिभेदभावाद ऽनेकानि योनिप्रवाहाणि जातिकुलानि सम्भवन्तीत्यु पप

तहप्पगारा सव्वे ते समुच्छिमा नपुसगा ते समासउ दुविहा प०, त०—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य एएसिण एवमादियाण वेइंदियाण पज्जत्ता पज्जत्ताण सत्तजाइकुलकोडीजोणिप्पमुहसयसहस्सा भवतीति मक्खाय ॥

रा मुत्तिया कलुयावासा । घुल्ला खुल्ला खरा कडा सीतिक मौक्तिक कलुयावासा । एगओवत्ता दुहओवत्ता नदियावत्ता । एगोपयुक्ता द्विधोपयुक्ता नन्द्यावर्त्ता । सबुक्का माइवाहा सिप्पिसपुडा चंदणा समुद्दलिक्खा । शबका माइवाहा सीप चदना समुद्रलीख । जेयावन्नेतहप्पगारा सव्वे ते समुच्छिमा नपुसगा ते समासओ दुविहा प० त० । जे अनेरा तथाप्रकारना सर्व ते सम्मूर्छिम नपुसकलिंगी ते सक्षेपथको दोयप्रकारे कह्या तेकहेछे—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगाय । पर्याप्ता अपर्याप्ता । एएसिण एवमादिण वेइंदियाण पज्जत्तापज्जत्ताण सत्तजायकुलकोडी । इणाश इणतरे आदिदेई वेइन्द्रियजीव पर्याप्ता अपर्याप्ता सातलाख कुलकोडी । जोणियमुहसयसहस्सा भवतित्ति मक्खाय । वेलाख योनि पदनी उत्पत्तिस्थानक एहे जिम छाणाना अनेक

॥ टीका ॥

मित्यादि ॥ उक्ताचतुरिन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना । सम्प्रति पञ्चेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना माह-सेकितमित्यादि ॥ अथ का सा पञ्चेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना ? सूरिराह-पञ्चेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना चतुर्विधा प्रज्ञप्ता तद्यथा-निरयिरत्यादि ॥ अयमि इफल कम निर्गतमय यस्य स्तो निरया नरकावासा स्तपुन्नवानेरयिका स्तेचतेपञ्चेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवा श्च नैरयिका पञ्चेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवा

॥ मूल ॥

कुरु कुक्कुड, नंदावत्ते य सिंगिरिडे। किण्हपत्ता नीलपत्ता लोहियपत्ता हलिद्दपत्ता सुक्किलपत्ता चित्तपक्खा विचित्तपक्खा ओहंजलिया जलचारिया गम्भीरा णीणिया ततवा अच्छिरोडा अच्छिवेहा सारंगा नेउरा दोला भमरा भरिली जरुला तोट्टा विच्छुया पत्तविच्छुया छाणविच्छुया जलविच्छुया पिंगला कणगा गोमयकीडा जेयावन्ने तहप्पगारा सव्वे ते समुच्छिमा नपुंसगा ते समासओ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य। एएसिणं एवमाइयाणं चउरिंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं नवजाइकुलकोडि जोणिप्पमुहसयसह

॥ भाषा ॥

डतडापवगेर ढढपकसउकुक्कड नंदावत्तेरसिंगिरिडे। अथित पुच्छिक माखो मसा कोडा तिम पतङ्ग ढउंग कक्कड कक्कड नन्दावर्त्त सिगरडा । किण्ह पत्ता नोलपत्ता लोहियपत्ता हालिद्दपत्ता सुक्किलपत्ता चित्तपक्खा विचित्तपक्खा। कृष्णपाखा नीलपाखा रातोपाखा पीलोपाखा धवलीपाखा चित्रपाखा विचित्रपाखा। उहंजलिया जलचारिया गम्भीरा णीणिया ततवा अच्छरोडा सारंगा नेउरा दोला भमरा भमरा भमरिली । उघनलिक जलचारी गभीरनियत ततव अच्छिवेध सारंग नेउरा डोला भमरा भमरी भमरिली। जलरुहा तोटा विच्छुया पत्तविच्छुया छाणविच्छुया जलविच्छुया पिंगला कणगा गोमयकीडा । जलरुह तोटा विच्छुका पत्रविच्छुका छाणविच्छु जलविच्छु पिंगल कनक गोवरनाकीडा। जेयावण्णतहप्पगारा सव्वे ते समुच्छिमा नपुंसगा। एहवा जे अनेरा तथाप्रकारना ते सर्व समूर्च्छिम नपुंसक। ते समासओ दुविहा प० तं०। ते संक्षेपथको दोयभेद कह्या तेकहछे। पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय एएसिणं एवमाइयाणं। पर्याप्ता अपर्याप्ता ए आदिदेइ। चउरिंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं नवजाइकुलकोडी जोणिप्पमुहसयसह

पूर्ववत्॥ एतेसिणमित्यादि ॥ एतेषां त्रीन्द्रियाणां मेत्रमादिकानामौपचयिकप्रभृतीनां पर्याप्ताऽपर्याप्तानां सर्वसङ्ख्या अष्टौ जातिकुलकोटीनां योनि प्रमुखानि योनिप्रवाहाणि शतसहस्राणि भवन्ति अष्टौ कुलकोटिलक्षा भवन्तीति भाव , इत्याख्यात तीर्थकृद्भि , उपसंहारमाह-सेत्तमित्यादि ॥ तदेव मुक्ता त्रीन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना ॥ सम्प्रतिचतुरिन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना माह-सेकितमित्यादि ॥ एते पि चतुरिन्द्रिया लोकत प्रत्येतव्या एतेषां च पर्याप्ताऽपर्याप्तानां सर्वसङ्ख्या जातिकुलकोटीनां नवलक्षा भवति, शेषाक्षरगमनिका प्राग्वत्' उपसंहारमाह-सेत

वाइया गोम्ही हत्थिसोंडा जेयावन्ने त० सव्वे ते समूच्छिमनपुंसगा ते समासओ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा— पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य । एएसिणं एवमाइयाणं तेइंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं अट्ठजाइकुलकोडिजोणिप्पमुहसयसहस्सा हवंतीति मक्खायं । सेत्तं तेइंदियसंसा० । से किंतं चउरिंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा ? अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा—अंधिय पोत्तिय मच्छिय, मगसिरकीडे तहा पयंगे य । ढंकण कु

सभगा सौवस्थिरा सुरवेंटा इन्द्रकाइया इन्द्रगोपया । वाहूया लहुगा सुभग सौवस्तिक सुखविट इन्द्रकेतिका इन्द्रगोपा । तुरतुवगा कुलत्थवाहगा जूगा हालाहला पिसुगा सतवाइया गोम्ही हत्थिसोंडा । तुरतुवग कुलत्थवाहग जूका हालाहल पिशुक सतवायक कानसिलाइ हस्तिसोंड । जेयावन्नेतहप्पगारा सव्वे ते समूच्छिमा नपुंसगा । जे अनेरा तथाप्रकारे सर्वे ते सम्मूर्च्छिम नपुंसक जाणिवा । ते समासओ दुविहा प० त० । ते संक्षेपथकी दोप्रकार कह्या ते कहेछे—पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय । पर्याप्ता अपर्याप्ता । एएसिणं एवमाइयाणं तेइंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं । इणा ने इणेणादि तेंद्रियकुल कोडि पर्याप्ता अपर्याप्ता । अट्ठजाइकुलकोडि जोणिप्पमुहसयसहस्सा भवंतित्तिमक्खायं । आठलाख कुलकोडि हुवे वेलाख जोनि उत्पत्तिस्थान हुवे । सेत्तं तेइंदिय संसारसमावन्नजीव पन्नवणा । एतले तेंद्रियसंसार समाप्तजीव प्रज्ञापना कही । सेकिं तं चउरिंदिय संसारसमावन्नजीव पन्नवणा २ अणेगविहा प० त० । ते चउरिंद्रिय भेदपूछे थिय, गुरु इमकहे चउरिंद्रिय समाप्तजीव प्रज्ञापना अनेकप्रकारे कह्या तेकहेछे—अंधियपोत्तियमच्छिय मगसिरकी

॥ टीका ॥

नैरयिकप्रतिपादनार्थं प्रश्ननिर्वचनसूत्रे आह-सेकितमित्यादि ॥ सप्तविधस्य नैरयिकाणां पृथिवीभेदेना ऽन्यथा मनुतनेदत्वमपि घटते तत पृथि वीभेदत एव सप्तविधत्वं तद्यथ त्यादि नोपदर्शयति-रत्नानि वज्रवैडूर्यादीनि प्रभाशब्दो न स्वरूपा ऽपि स्वभाववाची रत्नानि प्रभा स्व ॥ यस्या सा रत्नबहुला रत्नमयी तिनावाय ,सा चा ऽसौ पृथिवी च तस्य नैरयिका रत्नप्रभापृथिवीनैरयिका , एव सक्करप्पभा पुढविनेरइया ऽत्यादि ॥ जावती यमुपसंहारमाह। सेत्त नेरइया ॥ अधुना ईशक्रमप्रमाण्यानुसरणात स्तियक्पचेन्द्रियान् प्रति पादयितु राह ॥ सेकितमित्यादि ॥ अथ के ते पञ्चेन्द्रियतिर्यग् योनिका ? सूरिराह-पञ्चेंद्रियतिर्यग्योनिका स्त्रिविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा ॥ जलयर त्यादि ॥ जलचरति पयटतीति जलचरा चा चारादि लिटप्रत्यये। ते च ते पञ्चेन्द्रियतियग्योनिका श्च जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका , स्थलचरन्तीति स्थलचरा , ख आकाश चरन्ती ति खचरा प्राकृतत्वा''द्दा यस्या

॥ मूल ॥

रयणप्पभा पुढविनेरइया सक्करप्पभापुढविनेरइया वालुयप्पभापुढविणेरइया धूमप्पभापुढविणेरइया तम प्पभापुढविणेरइया तमतमप्पभापुढविणेरइया । ते समासओ दुविहा पण्णत्ता , तंजहा—पज्जत्तगा अपज्जत्त गा य । सेत्त णेरइया । से किंत पंचिंदियतिरिक्खजोणिया? २ तिविहा पण्णत्ता , तंजहा—जलयरपंचिंदि यतिरिक्खजोणिया थलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया खहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया । से किंत जलयरप

॥ भाषा ॥

रत्नप्रभापृथिवी नारकी १ शर्करप्रभापृथिवी २ वालुप्रभ ३ पंकप्रभा ४ धूमप्रभा ५ तमप्रभा ६ तमतमप्रभा ७। ते समासथी दुविहा प०त०। ते संक्षेपथ की दायप्रकारे कह्या तेकहेछे। पज्जत्तगा अपज्जत्तगाय। पर्याप्ता अपर्याप्ता। सेत्त णेरइया सेकिंत पंचेंद्रिय तिरिक्खजोणिया २ तिविहा प० त०। एतले सातेप्रकारे नारकीकह्या। हिवे तिर्यंच पूछे पंचेंद्रिय तिर्यचजोनिया तेहना तीनभेद कह्या तेकहेछे ते हिवे। जलयर पंचेन्द्रिय तिरिक्खजोणिया २ थलयर प० खहयर प०। जलचर पंचेंद्रिय तिर्यंचजोनिया पंचेंद्रिय तिर्यंच थलचर खेचर पंचेंद्रिय तिर्यंच ३ पूछे थिय जलचरभेद जनकहे। सेकिंत जलयरपंचेंदिय तिर्यंचरा पंचप्रकार कह्या ते कहेछे। मच्छा कच्छा गाहा मगरा सुसमारा। मच्छ कच्छ गाह मगर सुसमार ५। सेकिंत मच्छा

तेषां प्रज्ञापना तथाच-गच्छन्ती तिरोञ्च तीति तिर्यञ्च , तिरस तिर्यग्देश, तेषां योनिरुत्पत्तिस्थान तिर्यग्योनि सात्र गत्यास्तिर्यग्योनिका तेच पञ्चेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवा श्च तेषां प्रज्ञापना तिर्यग्योनिकपञ्चेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना तथा मनुष्यशब्दः सन्जवाचा यथा राजश ब्दो राजन्याभिधायिक, मनोर ऽपत्यानि मनुष्या मनायाणोषश्रुति य प्रत्यय षकारश्चा ऽगम श्च य च ष प्रत्ययौ जाता विति मनुष्यशब्दो जाति वाची राजन्यशब्दवत्, ते च ते पञ्चेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवा श्च तेषां प्रज्ञापना मनुष्यपञ्चेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना, तथा दीव्यन्ति स्वच्छ या क्रीडन्ति इतिदेवा भवनपत्यादय , ते च त पञ्चेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवा श्च तेषां प्रज्ञापना देवपञ्चेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना, तत्र

रत्नाइ भवतीति सत्काय सेत्त चउरिंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा । से किंत पंचिंदियसंसारसमावन्न जीवपन्नवणा ? पंचिंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा चउव्विहा पन्नत्ता , तंजहा—नेरइयपंचिंदियसंसारस मावन्नजीवपन्नवणा तिरिक्खजोणियपंचिंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा मणुस्सपंचिंदियसंसारसमावन्न जीवपन्नवणा देवपंचिंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा । से किंत नेरइया२ ? सत्तविहा पन्नत्ता , तंजहा

आदि भवतीति सत्काय । चौरिंद्रिजीव पर्याप्ता अपर्याप्ता नवनाखकतर्जोडि योनिप्रमुख शतसहस्र हवे एहवो तीर्थंकरे कह्या । सेत्त चउरिंदिय स सारसमावन्नजीव पन्नवणा । एतले चउरिंद्रिय संसारी समापन्नजीव प्रज्ञापना, हिव पंचेंद्रिय पूछे तद गुरुबोल्या । सेकिंत पंचेंदिय संसारसमावन्न जीव पन्नवणा २ चउव्विहा प० त० । पंचेंद्रियसंसार समापन्नजीव प्रज्ञापना चारप्रकारे कह्या ते कहेछे—णेरइय पंचेंदिय संसारसमावन्नजीवपन्नव णा । नारकीपंचेंद्रिय संसारसमापन्नजीव प्रज्ञापनाना । तिरिक्ख पंचेंदियसंसारसमावन्नजी० मणुस्सपंचेंदिय स० देवपंचेंदिय स० । तिर्यंच पंचेंद्रिय स ंसारसमापन्नजीव प्रज्ञापना २ मनुष्य पंचेंद्रिय संसार समापन्नजीव० ३ देव पंचेंद्रिय स० ४ । सेकिंत णेरइया २ सत्तविहा प० त० । हिवे नारकी प्रश्न पूछे, नारकी सातप्रकारे कह्या तेकहेछे—रयणप्पभपुढविणेरइया सक्करप्पभपु० वालुयप्पभ० पंकप्पभपु० धूमप्पभपु० तमप्पभपु० तम २ प्पभपु० । र

॥ टीका ॥

जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका समासत सङ्क्षेपेण द्विविधा प्रज्ञप्ता–सम्मूर्च्छिमा य गर्भव्युत्क्रान्तिका य मूर्च्छा मोहसमुच्छ्राययो ञस्मा त्तत्पूर्वा त्सम्मूर्च्छे न समूर्च्छा ऽक्षतरीति न्याय घञ् प्रत्यय , गर्भोपपातव्यतिरेकेण एवमेव प्राणिना मुत्पाद इतिभाव स्तेन निर्वृत्ता सम्मूर्च्छिमास्तावा दिम इति इमप्रत्यय , गर्भे व्युत्क्रान्ति रुत्पत्ति येषा, व्युत्क्रान्तिशब्दो ऽत्रो त्पत्तिवाची तथा पूर्वाचार्यप्रसिद्धे य दि वा गर्भा द्गर्भावासात् व्युत्क्रान्ति निःक्रमण येषान्ते गर्भव्युत्क्रान्तिका , शेषाद्वि ति कच् समासान्त चशब्दौ प्रत्येक स्वगतानेकभेदसूचकौ, तत्र ये ते सम्मूर्च्छिमा स्ते सर्वे नपुसका सम्मूर्च्छिमभावस्य नपुसकत्वा ऽविना भावितत्वात्, य तु गर्भव्युत्क्रान्तिका स्ते त्रिविधा प्रज्ञप्ता स्तद्यथा–स्त्रिय पुरुषा नपुसका ' एतपा चा मयेपा मपि शरीरावगाहनादिषु य च्चिन्तन य च्च गर्भव्युत्क्रान्तिकाना स्त्रीपुनपुसकाना परस्पर मल्पबहुत्वचिन्तन त ज्जीवाभिगमटीकाया कृत

॥ मूल ॥

से किंत गाहा २ ? पचविहा पसत्ता , तजहा देलीवेढगा मुद्दुया पुलगा सीमागारा । सेत्त गाहा ॥ से कित मगरा २ ? दुविहा पसत्ता, तजहा–सोंडमगरा मच्छमगराय । सेत्त मगरा । से कित सुसुमारा २ एगागारा प०, सेत्त सुसुमारा । जेयावन्ने तहप्पगारा ते समासत्तो दुविहा पसत्ता, तजहा–सम्मुच्छिमा य गब्भवक्कंतिया य तत्थण जे ते सम्मुच्छिमा ते सव्वे नपुसका, तत्थण जे ते गब्भवक्कंतिया ते तिविहा प०,

॥ भाषा ॥

कना पाचभेद कह्या ते कहेछे। दिली वेढगा सुदया पुलगा सीमागारा । दिली वाटला मुद्द पुलका सीमागारा । सेत्तगाहा सेकित मगरा २ दुविह प० त० । एतले ग्राहक कह्या, हिवे मगरना ते मगरना दोयभेद कह्या ते कहेछे। सोडमगरा मच्छमगरा। सोण्डमगर मच्छमगरा। सेत्त मगरा सेकित सुसमारा २ एगागारा प० त० । एतले मगर कह्या, हिवे सुसमारनो एकभेद कह्यो तेकिम । सुसमारा सेत्तसुसमारा । सुसमारा एतले सुसमार कह्या। जेयावणेतहप्पगारा ते समासओ दुविहा प० तजह । जे अनेरा तथाप्रकारे ते सक्षेपथी दोयप्रकारे ते । समुच्छिमाय गभवक्कतियाय। समूर्च्छिम गर्भ ऊपने गर्भज पिण। तत्थण जेते समुच्छिमा ते सव्वे नपुसगा । तिहा जेते समूर्च्छिम तेसर्व नपुसक। तत्थण जेते गभवक्कतियाय ते तिविहा प० त० ।

च खहचरा इति सूत्रे पाठ, तत उभ यत्रापि पञ्चेन्द्रियतिर्यक्योनिकशब्देन सह विशेषणसमास ' सेकितमित्यादि ॥ अथ के ते जलचरपचेन्द्रियतिर्यग्योनिका ? सूरि राह–जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका पञ्चविधा प्रज्ञप्ता, तदेवपञ्चविधत्व तद्यथेत्यादिना पदर्शयति मत्स्या कच्छपा सूत्रे पकारस्य प्रकार प्राकृतत्वात् ग्राहा ३ मकरा ' शिशुमारा ५ प्राकृतत्वात्सूत्रेसुसुमारा इतिपाठ ' मत्स्यादीना च विज्ञया लोकतो वेदितव्या नवरम ऽस्थिकच्छपा मान्सकच्छपा इति, येऽस्थिबहुला कच्छपा स्ते ऽस्थिकच्छपा, येमासबहुला स्ते मासकच्छपा ॥ ते समासत इत्यादि ॥ ते

चिंदियतिरिक्खजोणिया २ ? पचविहा पन्नत्ता, तजहा मच्छा कच्छहा गाहा मगरा सुंसुमारा । सेकि त मच्छा२ ? अणेगविहा पण्णत्ता, तजहा सण्हमच्छा खवल्लमच्छा जुंगमच्छा विज्झिडियमच्छा हलिद्दमच्छा मग्गरिमच्छा रोहियमच्छा हलीसागरा गागरा वडा वडगरा तिमा तिमिंगिला णक्का तदुलमच्छा कणिक्का मच्छा सालिसच्छियामच्छा लभणमच्छा पडागा पडागाइपडागा । जेयावन्ने तहप्पगारा । सेत्तं मच्छा । से कित कच्छभा २ दुविहा पण्णत्ता, तजहा अट्ठिकच्छभा य मंसकच्छभा य । सेत्त कच्छभा ।

अणेगविहा प० त० । हिवे मच्छना अनेकभेद कहेछे, तेमच्छ अनेकभेदे कह्या तेकहेछे । मगहमच्छा खत्तलमच्छा युगमच्छा चिभिडियमच्छा हालिद्द मच्छा मगरमच्छा रोहियमच्छा । सन्हमच्छ खत्तलमच्छ युगमच्छ चिभडमच्छ हालिद्रमच्छ मगरमच्छ रोहितमच्छ । हलो सागरा गागरा चडा व डगरा गभरा उसगारा तिमितिमिगला । हलीमच्छ सागरमच्छ गागरमच्छ वडामच्छ वडगरा गर्भजारि उसगारा तिमितिमगला १५ । नक्का तदुल मच्छा कणिक्का सालि मच्छिया लभणमच्छा पडग पडागाई । नक्र तन्दुलमच्छ कनकमच्छ सालि मच्छि लभन पतक पताकानामे २३ । जेयावन्नेत हप्पगारा सेत्तमच्छा । एहवा जे अनेराईज तथाप्रकारे ते कह्या । सेकित कच्छा दुविहा प० त० । हिवे ते कच्छना दोयभेद कह्या ते कहेछे । अट्ठिक च्छा मासकच्छा । अस्थिकच्छभ हाडवधाने मासकच्छभो मासघणो । सेत्त कच्छया सेकित गाहा पचविहा प०त० । ते कच्छप कह्या, हिवे ग्राह

॥ टीका ॥

कभेदसूचकौ । तदेवानेकभेदत्व क्रमेण प्रतिपिपादयिषु राह-सेकितमित्यादि ॥ अथ के ते चतुष्पदस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका सूरिराह-चतुष्पदस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका श्चतुर्विधा प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-एगखुरा इत्यादि ॥ तत्र प्रतिपद मेक खुर शफो यषां ते एकखुरा अश्वाद य । द्वौ २ खुरौ प्रतिपद येषान्ते द्विखुरा उष्ट्रादय स्तथा च-एकैकस्मिन् पदे द्वौ द्वौ शफौ दृश्यंते गण्डी च सुवर्णकाराधिकरणिस्थान मिव पद

॥ मूल ॥

पण्णत्ता, तजहा एगखुरा दुखुरा गण्डीपया सणप्फया । से किंत एगखुरा २ ? अणेगविहा पण्णत्ता, त० अस्सा अस्सतरा घोडगा गद्दभा गोरक्खरा कंदलगा सिरिकंदलगा आवत्ता । जेयावन्ने तहप्पगारा। सेत्त एगखुरा । से किंत दुखुरा २ ? अणेगविहा पण्णत्ता, तजहा—उट्टा गोणा गवया रोज्झा ससया महिसा सवरा वराहा अया एलगा रुरु सरभ चमर कुरग गोकण्णमाई सेत्त दुखुरा। से किंत गण्डीपया २ ? अणेगविहा पण्णत्ता, तजहा हत्थी हत्थीयणा मकुणहत्थी खग्गा गण्डा। जेयावन्ने तहप्पगारा । सेत्त गण्डीपया

॥ भाषा ॥

कह्या ते कहछे । एगखुरा दुखुरा गडीपया सणपया । एकखुरा अश्वादि द्विखुरा गाइ प्रमुख गण्डीपद गजादि सनोपद व्याघ्रादि ४ । सेकित एगखुरा २ अणेगविहा प० त० । हिवे एकखुराना अनेकभेद कह्याछे ते सुणो – अश्व अश्वतरा घोडगा गद्दभा गोरखरा कंदलगा सिरिकंदलगा अव्वत्ता । घोडा अश्वतर घोटक गर्दभ गोखुर कन्दलग श्रीकन्दल आवर्त्त । जेयावण्णतहप्पगारा सेत्त एगखुरा । एहवा जे अनेरा तथाप्रकारे ते एकखुरा कह्या । सेकित दुखरा २ अणेगविहा प० त० । हिवे ते दुखुरा कहेछे ते अनेकप्रकारे कह्या ते सुणो । उट्टा गोणा गवया रोज्झा ससया महिसा सवरा वराहा अया एलगा रुरु सरभ चरम कुरग गोकण्णमाइ । ऊंट गाय गवय रोझ शश महिष सबर वराह छालो गाडर चमरीगाय मृग गोकर्ण । सेत्त दुखरा सेकित गंडीपया २ अणेगविहा प० त० । एतले बेखुराना भेद कह्या, हिवे गंडीपदना अनेकभेद कह्या ते कहेछे—हत्थी पूयणया मकुणहत्थी खग्गा । हाथी गेण्डा मुकनहाथी खङ्ग । जेयावणेतहप्पगारा सेत्तगंडीपया । जे अनेरा तथाप्रकारना गण्डीपद जाणिवा । सेकित सणपया २ अणेगविहा प० त० ।

मिति ततो ऽवधार्यं ॥ "जवसिग"मित्यादि ॥ एतेषा मेव सादिकाना मुपदर्शितप्रकारादीना जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाना पर्याप्ताऽपर्याप्ताना सयसङ्ख्या ऽर्द्धत्रयोदशजातिकुलकोटीना योनिप्रमुखानि योनिप्रवाहानि शतसहस्राणि भवन्तीत्याख्यात मायाद्रि स्तीर्थकरै, उपसंहरमाह-सेत मित्यादि ॥ तदेव मुक्ता जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका सम्प्रतिस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानभिधित्सुराह-सकितमित्यादि ॥ चत्वारि पदा नि येषा ते चतु पदा, अश्वादय स्ते च ते स्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका श्च चतुष्पदपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका, उरसा भुजाभ्याश्च परिसर्पन्तीति उर परिसर्पा, भुजपरिसर्पा अहिनकुलादय, सत्र पूर्ववत् स्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकपदेन सह विशेषसमास, चशब्दौ प्रत्येक स्वगताने

तजहा इत्थी पुरिसा नपुमगा। एतेसिण एवमाइयाण जलयरपचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पज्जत्तापज्जत्ताण अद्धतेरसजाइकुलकोडिजोणीप्पमुहसयसहस्सा भवतीति मक्खायं। सेत्त जलयरपचिंदिय०। से कित थल यरपचिंदियतिरिक्खजोणिया २ ? दुविहा पण्णत्ता, तजहा चउप्पयथलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिया परि सप्पथलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिया य। से कित चउप्पयथलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिया २ ? चउव्विहा

तिहा जेते गर्भज तेहना ३ भेद कह्या ते कहेछे—इत्थी पुरिसा नपुसगा। स्त्री पुरुष नपुसक। एएसिण एवमाइयाण। एहना इत्यादिक। जल यर पचेंद्रिय तिरिक्खजोणियाण। जलचर पचेंद्रिय तिर्यंचयोनिया। पज्जत्ता अपज्जत्ताण। पर्याप्ता अपर्याप्ता। अद्धतेरसजाति कुलकोडी जोणीपमुह सयसहस्सा भवतित्तिमक्खाय। साढाबारेलाख कुलकोडिप्रमुख शतसहस्र हुवे। इम तीर्थंकरे कह्या। सेत्त जलयरे पचेंदि तिरिक्खजोणिया। एतले जल चर पचेंद्रिय कह्या तिर्यंचयोनिया। सेकित थलयर पचिंदिय तिरिक्खजोणिया २ दुविहा प० त०। हिवे थलचर ते थलचर पचेंद्रिय तिर्यंचयोनिक बेप्रकारे कह्या ते कहेछे—चउप्पयथलयर पचेंदियतिरिक्खजोणिया परिसप्प थलयर पचेंदिय ति०। चउपद थलचर पचेंद्रिय तिर्यंचयोनिक उरपर पचेंद्रिय तिर्यंचयोनिका। सेकित चउप्पय थलयर पचिंदियतिरिक्खजोणिया २ चउव्विहा प० त०। हिव चौपदथलचर पचेंद्रियतिर्यंचयोनिका चारप्रकारे

जिणमटीकातो वेदितव्य ॥ सेत्तचउप्पयइत्यादि ॥ सेकिंतमित्यादि ॥ अथ के ते परिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रिया तिर्यग्योनिका प्रज्ञप्ताः ? सूरिराह-परिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका द्विविधा द्विप्रकाराः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-उरपरिसर्पेत्यादि ॥ उरसा परिसर्पन्तीति उरःपरिसर्पाः ते च ते स्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका श्च उरःपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः, भुजाभ्यां परिसर्पन्ति भुजपरिसर्पाः ते च ते स्थलचरपञ्चेन्द्रियतैर्यग्योनिका श्च भुजपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका, चशब्दौ प्रत्येकं स्वगतानेकभेदसूचकौ । तत्रो र परिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतैर्यग्योनिकभेदान् प्रतिदिदर्शयिषु रिद माह-सेकिंतउरपरिसप्पेत्यादि ॥ अथ के ते उरःपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः ? सूरिराह-उरःपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतैर्यग्योनिका चतुर्विधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-अहयो ऽजगरा आसालिका महोरगा तत्र अहयो द्विधा मुकुलिनः फणिनश्च

एएसिणं एवमादियाणं थलचरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं दसजाइकुलकोडिजोणिप्पमुह सयसहस्सा हवंतीति मक्खायं । सेत्तं चउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया । से किंतं परिसप्पथलयर पंचिंदियतिरिक्खजोणिया २ ? दुविहा पण्णत्ता, तंजहा उरपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया भुय परिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया य । से किंतं उरपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया २ ? च उव्विहा पण्णत्ता, तंजहा अही अयगरा आसालिया महोरगा । से किंतं अही २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा

द थलचर पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिया कह्या । सेकिंत परिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया २ दुविहा प० तं० । हिवे उरपरिसर्प थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक ना बे भेद कह्या । उरपरिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया भुजपरिसप्पथलयर० । उरपरसर्प थलचर पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिक भुजपरिसर्प थलचर भुजाइ चाले ते । सेकिंत उरपरिसप्प थलयर पंचिंदियतिरिक्खजोणिया २ चउव्विहा प० तं० । हिवे उरपरिसर्प थलचर पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिया ना ४ भेद कह्या ते कहछे—अही अयगरा आसालिया महोरगा । सर्प अजगर आसालीया महोरग । सेकिंत अही दुविहा प० तं० । हिवे

येषान्ते गण्डीपदा हस्त्यादय स्तथा सनखानि दीर्घनखरैरकलितानि पदानि येषान्ते सनखपदा श्वादय , प्राकृतत्वाच्चमग्रकयाइतिसूत्रेनिर्देश , अधुनाप्यतानेव मकरादीन् वदत क्रमेण प्रतिपिपादयिषु रिदमाह-सेकितमित्यादि ॥ सुगम' नवर ये केचि ज्जीवभेदा अप्रतीता स्ते लोकतो वेदितव्या ॥ तेसमासउ दुविहा प इत्यादि सूत्र ॥ प्राग्वद्भावनीय, नवरमत्र जातिकुलकोटीना योनिप्रमुखाणि शतसहस्राणि दश भवन्तीति वेदि तत्र मत्रापि च सम्मूर्छिमाना गर्भव्युत्क्रान्तिकाना च प्रत्येक य च्छरीरादिषु द्वारषु चिन्तन य च स्त्रीपुनपुसकाना परस्पर मल्पबहुत्व तज्जीवा

से कित सणप्फया २ ? अणेगविहा पण्णत्ता, तजहा सीहा वग्घा दीविया अच्छा तरच्छा परस्सरा सिया ला सुणगा कोलसुणगा (ग्रथ ५००) कोकतिया ससगा चित्तगा चिल्ललगा । जेयावन्ने तहप्पगारा । सेत्त सणप्फया । तेसमासउ दुविहा पण्णत्ता, तजहा समुच्छिमाय गब्भवक्कतियाय । तत्थण जे ते समुच्छि मा ते सव्वे णपुसगा, तत्थण जे ते गब्भवक्कतिया ते तिविहा पण्णत्ता , तजहा इत्थी पुरिसा नपुसगा ।

हिवे सणोपद भेद कह्या ते भेद अनेकप्रकारना कहछ—सींहा वग्घा दीविला अच्छा अरच्छा परस्सरा सियाला विराला सुणगा कोलसुणा कोकति या ससगा चित्तगा । सिंह व घ चीता अच्छा अरछा परासर स्याल विराल स्वान कोल कोकति ससगा चित्रक । जेयावन्नेतहप्पगारा सेत्त सणोपया त समासओ दुविहा प० त० जे अनेरा तथाप्रकार ते सणोपद कहिये ते सणोपद्रको दोयप्रकारे कह्या तेकहेछे । समुच्छिमाय गब्भवक्कतियाय । सम्मूर्च्छि म गर्भज । तत्थण जते समुच्छिमा ते सव्वे नपुसगा । तिहा जेते सम्मूर्च्छिम तिके सर्व नपुसक । तत्थण जते गब्भवक्कतियाय ते तिविहा प० त० । तिहा जे गर्भजका तीनभेद कह्या ते कहेछे—इत्थी पुरिसा नपुसगा एवमासिण एवमाइण । स्त्री पुरुष नपुसक इणा इणतरे आदिदेइ । थलयर पचिदिय ति रिक्खजोणियाण । थलचर पचेंद्रिय तिर्यचयोनिया थलचरपचेंद्रिया । पज्जत्तअपज्जत्ताय । पर्याप्ता अपर्याप्ता । दसजातिकुलकोडि जोणिपमुहसय सहस्सा भवतीतिमक्खाय । दशलाख कुलकोडि योनि शतसहस्र हुवे तीर्थंकर कह्या । सेत्त चउप्पय थलयर पचिदिय तिरिक्खजोणिया । एतले चउप

॥ टीका ॥

गौतमप्रश्न भगवन्निर्वचनरूप सूत्रमस्ति-तदेवागमबहुमानत पठति? कहिण भंते। इत्यादि॥ कथ णमिति वाक्यालङ्कारे भदन्त। परमकल्याणयोगिन् आशालिका समूर्च्छति? यथा हि गर्भजा न भवति किंतु सम्मूर्च्छिमैव, तत उक्त सम्मूर्च्छति भगवानाह-गोयमेत्यादि॥ गौतम। अन्तर्मध्ये मनुष्यक्षेत्रस्य बहिरेतावता मनुष्यक्षेत्रा द्बहिरस्या उत्पादा न भवतीति प्रतिपादित तत्रापि मनुष्यक्षेत्रे सवत्र न भवति किंत्व द्वृतीयेषु द्वीपेषु अर्द्ध तृतीय येषान्ते ऽर्द्धतृतीया अवयवेन विग्रह समुदाय समासार्थ स्तेषु, एतावता लवणसमुद्र कालोदे समुद्रे वा न भवतीत्या वेदित, निर्व्याघातेन व्याघातस्या भावो निर्व्याघात तेन यदि पञ्चसु भरतेषु पञ्चस्वैरावतेषु सुषमसुषमादिरूपदु समादिरूप श्च कालो व्याघातहेतुत्वात् व्याघातो न भवति तदा

॥ सूत्र ॥

विहा पण्णत्ता, तजहा दिव्वागा गोणसा कसाहीया वउला चित्तलिणो मउलिणो अही अहिसिलागा वाय फागा। जेयावणे तहप्पगारा। सेत्त मउलिया। सेत्त अही। से कित अयगरा २? एगागारा पण्णत्ता, सेत्त अयगरा। से कित आसालिया? कहिण भंते! आसालिया समुच्छति? गोयमा! अतोमणुस्सखे त्ते अड्ढाइज्जेसु दीवेसु णिव्वाघाएण पण्णरससु कम्मभूमीसु वाघात पडुच्च पचसुमहाविदेहेसु चक्कवट्टीखधावा

॥ भाषा ॥

लिणो २ अणेगविहा प० त०। हिवे मुकलफणाना अनेकभेद कह्या ते कहेछे—दिव्यागा गोणसा कसाहिया वउला चित्तलिणो मउलिणो मालिणाअही अहिसलगा वायडग। दिव्य गोणस कसाहारक वउल चित्तलीमाउलिन मालणीसर्प सनाकसर्प। जेयावणेतहप्पगारा सेत्त मउलिणो सेत्त अही। जे अनेरा तथाप्रकारे ते एतले मकुलनाभेद कह्या। सेकित अयगरा २ एगागारा प० त०। हिवे ते अजगरनो एकभेदछे—सेत्त अयगरा सेकित आलसीया। एतले अजगर हिवे ते अलसियानो एकभेद। कहुभते अलसीया समुच्छति। किम उपजे हेभगवन् आलसीया गौतम पूछेछे उ०—गो यमा अतोमणुस्सखेत्ते अढाइज्जेसु दीवेसु णिव्वाघाएण पण्णरससुकम्मभूमिसु वाघात पडुच्च। हेगौतम मनुष्यक्षेत्रमाहि अढाईद्वीपनेविषे निर्व्याघात पनरे भूमि कमभूमिनेविषे व्याघात न उपजे। पचसु महाविदेहेसु चक्कवट्टिखधावारेसु वासुदेवखधावारेसुवा। पच महाविदेहक्षेत्रनेविषे चक्रवर्तीरा खधा

व्याख्याह-सेकितमित्यादि ॥ अथ के ते अहयो गुरुराह-अहयो द्विविधा प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-दर्वीकरा श्च मुकुलिनश्च । तत्र दर्वीवद्दर्वी फणातत्करणशीला दर्वीकरा , मुकुल फणा विरहयोग्या शरीरावयवविशेषाकृति सा विद्यते येषान्ते मुकुलिन , फणाकरणशक्तिविकला इत्यर्थ अत्रापि च शब्दौ स्वगतानेकभेदसूचकौ । तत्र दर्वीकरभेदान् जिधित्सु राह-सेकितमित्यादि ॥ आश्यो दंष्ट्रा स्तासु विष येषान्ते आशीविषा , उक्त च-आसीदाढा तग्गयमहाविसा आसीविसा मुणेयव्वा इति, दृष्टौ विष येषान्ते दृष्टिविषा , उग्र विष येषा न्ते उग्रविषा', भोग शरीर तत्र विष येषा न्ते भोगविषा , त्वचि विष येषा न्ते त्वग्विषा , प्राकृतत्वा च्च तयाविसाइतिपाठ लाला मुखाश्राव तत्र विष येषा न्ते लालाविषा , नि श्वासे विष येषान्ते नि श्वासविषा , कृष्णसर्पादयो जातिभेदा लोकत प्रतिपत्तव्या , उपसंहारमाह-सेत दर्वीकरा । मुकुलिन प्रतिपिपादयिपुराह-सेकितमित्यादि ॥ एतेपि लोकतो वसेया , अजगराणामवान्तरजातिभेदा न विद्यन्ते तत उक्तमेकाकारा अजगरा प्रज्ञप्ताः ॥ आशालिगाम जिधित्सु राह-सेकित आसालिगा ॥ अथ का आसालिगा ? एव शिष्येण प्रश्ने कृते सति भगवान् आर्यश्यामो यदेव ग्रन्यातरेषु आशालिगाप्रतिपादिक

दव्वीकरा य मउलिणो य । से कितं दव्वीकरा २ ? अणेगविहा पण्णत्ता, तंजहा आसीविसा दिठीविसा उग्गविसा भोगविसा तयाविसा लालाविसा उस्सासविसा णिस्सासविसा कण्हसप्पा सेठसप्पा कउदरा दब्भ पुप्फा कोलाहा मेलिमिदा सेसिदा जेयावण्णे तहप्पगारा । सेत्त दव्वीकरा । से किंत मउलिणो २ ? अणेग

सर्पना दारभेद कह्या ते कहेछे—दर्वीकराय मउलिणोय । दर्वीकरा मुकलफणा । सेकित दर्वीकरा अणेगविहा प० त० । हिवे दर्वीफणाना अनेकभेद कह्या ते कहेछे । आसीविसा दिठ्ठिविसा उग्गविसा भोगविसा तयाविसा लालाविसा ऊसासविसा नीसासविसा । आसीविष दाढविष नेत्रेविष दृष्टि विष उग्रविष आकराविष भोगविष त्वचाविष लालविष उच्छ्वासविष नीस्वासविष । कण्हसप्पाइ सेढसप्पा काउदरा दब्भपुष्फा कोलाहा मेलिमदा । कृष्णसर्प स्वेतसर्प काटुवरा दर्भपुष्प कोलाह मौलिमद । जयावण्णेतहप्पगारा सत्त दर्वीकरा । जे एहवा अनेकभेद ते दर्वीकर भेदकह्या । सेकितं मउ

॥ टीका ॥

मुख वाहुल्येन जलनिर्गमप्रवेश ॥ आकरो हिरण्याकरादि , आश्रम तापसावसथोपलक्षित , आश्रय यत्राधो यात्रासमागतप्रभूतजननिवेश , राज धानी राजाधिष्ठान नगर ॥ एएसिणमित्यादि ॥ एतेषा चक्रवर्त्तिस्कन्धावारादीना सव विनाशेपू पस्थितपु ॥ एत्यत्राति ॥ एतेपु चक्रवर्त्तिस्कन्धावा रादिपु स्थानेपु आशालिका समूर्च्छति , सा च जघन्यतो अङ्गुलासङ्ख्येयभागमात्रया अवगाहनया समुत्तिष्ठतीति योग , उत्पत्तोत्पादप्रथमसमयो वदि तव्य , उत्कर्पतो द्वादशयोजनानि , तदनुरूप द्वादशयोजनप्रमाणदैर्घ्यानुरूप ॥ विक्खम्भबाहल्लेणति ॥ विष्कम्भ च बाहल्य च विष्कम्भबाहल्य समाहा रो द्वन्द्व तेन विष्कम्भो विस्तारो वाहल्य स्थूलता ॥ भूमिदारित्ताणति ॥ विदार्य उपतिष्ठति , स चक्रवर्त्तिस्कन्धावारादीना मध्ये भूमि रत उत्प द्यते इतिभाव , सा चा सञ्ज्ञिनी अमनस्कासमूर्च्छिमत्वात् , मिथ्यादृष्टि सास्वादनसम्यक्त्वस्यापि तस्या असम्भवात् अत एव अज्ञानिनी अन्तर्मुहू र्त्तायु रेव काल करोति , तदेवग्रथान्तरगत सूत्र पठित्वा सूत्रकृत् समस्तु पसहारमाह-सेत्त आसालिया ॥ सम्प्रतिमहोरगानभिधित्सुराह । सकित

॥ सूत्र ॥

समुच्छति । जहन्नेण अंगुलस्स असंखिज्जइभागमित्तीए उगाहणाए , उक्कोसेण बारसजोयणाइं । तदणुरू व च ण विक्खम्भबाहल्लेण भूमिदालित्ताण समुठेति । असन्नी मिच्छदिठी अन्नाणी अंतोमुहुत्तद्धाउया चेव काल करेइ । सेत्त आसालिया । से कित महोरगा २ ? अणेगविहा पन्नत्ता , तजहा अंगुलउया अगुल पि अंगुलपुहत्तिया वि वियच्छि पि वियच्छिपुहत्त पि रयणी पि रयणीपुहत्तिया पि कुच्छि पि कुच्छि

॥ भाषा ॥

गाहणाए । जघन्यथकी अवगाहना अगुलने असंख्यातमेभागे प्रमाणे । उक्कोसेण बारसजोयणाइं तणोकरवण । उत्कृष्टे १२ योजन अवगाहना पातलाश रीर घणोरूप । विक्खम्भबाहल्लेण भूमिदालित्ताण समुट्ठइ । विष्कम्भ नामपण १२ योजन भूमिविदारी स्वभाव रतो ऊठनी भूमिथी ऊपजे मनविना ऊपजे । असन्नीमिच्छदिठ्ठी अन्नाणी अंतोमुहुत्तद्धाउयचेव कालकरेइ । असन्नी मनरहित मिथ्या दृष्टी अज्ञानी अन्तर्मुहूर्त्त आउखाकाल निश्चे कालकरे । सेत्त आ लसिया । एतल असालियो कह्यो । सेकित महोरगा २ अणेगविहा प० त० । हिवे ते शिष्य पूछे कुण महोरग तदगुरु महोरगनाभेद अनेकप्रकारे

पञ्चदशसुकर्मभूमिषु समूर्च्छति' व्याघात प्रतीत्य कि मुक्त भवति ? यदि पञ्चसु भरतेषु पञ्चस्वैरवतेषु यथोक्तरूपो व्याघातो भवति तत पञ्चसु महाविदेहेषु समूर्च्छति, एतावता त्रिंशत्य प्य कर्मभूमिषु नो पजायते इति प्रतिपादित' पञ्चदशसु कमभूमिषु पञ्चसु वामहाविदेहेषु न सर्वत्र समूर्च्छति किन्तु चक्रवर्त्तिस्कन्धावारेषु वा शब्द सवत्रापि विकल्पार्थो द्रष्टव्य , बलदेवस्कन्धावारेषु, माण्डलिक सामान्यराजा, अल्पर्द्धिको इमाना मण्डलिक स एवा नेकदेशाधिपति तत स्कन्धावारेषु ग्रामनिवेशेषु इत्यादि ,ग्रसति बुद्ध्यादीन् गुणानिति ग्राम यदि च नस्य' शास्त्रप्रसिद्ध ना ष्टादशाना कराणा मिति ग्राम ' निगम प्रभूततरवणिग्वर्गावास: , प्राकारनिरुद्ध खट' क्षुल्लप्राकारवेष्टितकर्वट , अर्द्धतृतीयगव्यूतान्तर्ग्रामान्त ररहित मडव॥ पट्टणति॥ पट्टन पत्तन वा उभयत्रापि प्राकृतत्वेन निर्देशस्य समानत्वात्, तत्र य नौभि रेव गम्य त त्पट्टन , य त्पुन शकटै र्घो टकै र्नौभि र्वा गम्य तत्पत्तन , तथा भृगुकच्छ , उक्त च-पत्तन शकटै र्गम्य घोटकै र्नौभि रेव च। नौभि रेव तु यद्गम्य पट्टन तत्प्रचक्षते॥१॥ द्रोण

रेसु वासुदेवखधावारेसु बलदेवखधावारेसु मडलियखधावारेसु महामडलियखधावारेसु गामनिवेसेसु नगर निवेसेसु निगमनिवेसेसु खेडनिवेसेसु कब्बडनिवेसेसु मडबनिवेसेसु दोणमुहनिवेसेसु पट्टणनिवेसेसु आग रनिवेसेसु आसमनिवेसेसु सवाहनिवेसेसु रायहाणिनिवेसेसु एएसिण चेव विणासेसु । एत्थण आसालिया

वार कहिजे कटक वासुदेवना कटकनविषे। बलदेवखधावारेसुवा मडलियखधावारेसुवा महामडलियखधावारेसुवा। बलभद्रना कटकनेविषे महास डलीकना कटकनेविषे। गामनिवेसेसु नगरनिवेसेसु निगमनिवेसेसु। ग्रामनिवेसनविषे करविना नगर ते नगरनिवेसनेविषे। खेडनिवेसेसु कब्बडनिवे सेसु मडबनिवेसेसु। धूलकोट ते खेडनिवेसनेविषे कब्बडनेविषे मडबनेविषे। दोणमुहनिवेसेसु पट्टणनिवेसेसु आगरनिवेसेसु आसमनिवेसेसु। द्रोणमुख ज लपन्थ ते निवेसनेविषे धातुआगर ते निवेसनेविषे आश्रमनिवेसनेविषे। सवाहनिवेसेसु रायहाणिनिवेसेसु। सबाध साधारणस्थाननेविषे राजधानीनेविषे। एतेसिण चेव विणासेसु एत्थण आसालिया समुच्छति। इण स्थानके विनाशथये इहा आसालियाजीव ऊपजे। जहणेण अगुलस्स असखेज्जइभागमित्तीए उ

॥ टीका ॥

या महोरगा इह मानुषक्षेत्रे न तिष्ठन्ति किन्तु बाह्येषु द्वीपसमुद्रेषु सम्भवन्ति समुद्रेष्वपि च पर्वतदेवनगर्यादिषु स्थलेषू त्पद्यन्ते । न जलेषु स्थलचरत्वात्, तत इह न दृश्यन्ते जयावत्रेतद्रूपकारा इति ये पि चा य अङ्गुलदशकादि शरीरावगाहनमाना स्तथा प्रकारा सन्ति ते पि म होरगा ज्ञातव्या, उपसंहारमाह-सेत्तमित्यादि ॥ तेसमासउइत्यादिप्राग्वद्भावनीय, एतेषां सर्पि दशजातिकुलकोटीना योनिप्रमुखानि शतसहस्रा णि एतेषां मपि च य च्छरीरादिषु द्वारेषु चिन्तन य च स्त्रीपुंनपुंसकाना मल्पबहुत्व तज्जीवाभिगमटीकातो भावनीय, उर परिसर्पवक्तव्यतोपस हारमाह-सेत्तउर परिसर्पा, अधुना भुजपरिसर्पाना मभिधित्सुराह-सकितमित्यादि ॥ सुगम नवर य भुजपरिसर्पा अप्रतीता स्ते लोकतो वस

॥ मूल ॥

त०—सम्मुच्छिमाय गब्भवक्कंतिया य । तत्थण जेते सम्मुच्छिमा ते सव्वे णपुंसगा, तत्थण जेते गब्भवक्कंतिया तेण तिविहा प०, त०—इत्थी पुरिसा नपुंसगा, एएसिणं एवमाइयाणं पज्जत्ता २ ण उरपरिसप्पाण दसजा इकुलकोडीजोणिप्पमुहसयसहस्सा हवंती ति मक्खायं । सेत्त उरपरिसप्पा । से किंत भुयपरिसप्पा २ अणेग

॥ भाषा ॥

में विचरे । ते तत्थि द्वीपमध्ये दिपसमुद्रमध्ये हुवति । इण मनुष्यक्षेत्रमें नहीं बाहिरला द्वीपसमुद्रमाहि हुवेछै । जेतावळी तद्रूपकारा मेस महोरगा ते समासथी दुविहा प० त० । जे अनेरा तथाप्रकारे कह्या ते एतल महोरगा ते संक्षेपथी दोयप्रकारे कह्या ते कहेछै—सम्मुच्छिमाय गब्भवक्कंतियाय । समूर्च्छिम गर्भज । तत्थण जेते सम्मुच्छिमा ते सव्वे नपुंसगा । तिहा जे समूर्च्छिम ते सर्व नपुंसकपणै हुवै । तत्थण जेते गब्भवक्कंतिया तेण तिविहा प० त० । तिहां जे गर्भज ते तीनप्रकारे कह्या ते कहेछै, इत्थी परिसा नपुंसगा । स्त्री पुरुष नपुंसक । एएसिणं एवमाइयाणं पज्जत्त अपज्जत्ताण उरपरिसप्पा ण दसजाति कुलकोडि जोणिपमुहसयसहस्सा हवंतीति मक्खाय । एहने इणतरे आदिदेई पर्याप्ता अपर्याप्ता उरपरिसर्प दसलाख कुलकोडि योनिप्रमुख शतसहस्र दसलाख वीतरागे कह्या । सेत्त उरपरिसप्पा । एतलै उरपरिसर्प कह्या । सेकित भुयपरिसप्पा २ अणे गविहा प० त० । ते किवे भुजपरिसर्प तिह ना अनेकभेद कह्या ते कहेछै—घउल सेहा सरडा सल्ला सरता सारा खारा घरोइला विसंभरा मूसा मुंगुसा पयलाइया छीरविरालिया जाहा चउप्पद

मित्यादि ॥ युगम नवर वितस्ति द्वादशाङ्गुलप्रमाणा रत्नि हस्त कुक्षि द्विहस्तमानो धनु चतुर्हस्त गव्यूत द्विधनु सहस्रप्रमाणं। चत्वारि गव्यूतानि योजन इह च वितस्त्यादि उच्छ्रयाङ्गुलापेक्षया द्रष्टव्य शरीरप्रमाणस्य परिचिन्त्यमानत्वात्। तथा-अस्तीति निपातो त्र बहुत्वाभिधायी प्रतिपद च सम्बध्यते ततो यमर्थ सन्त्य के कचन महोरगा ये अङ्गुलमपि शरीरावगाहनया भवन्ति तथा सन्त्ये के केचन य अङ्गुलपृथक्त्विका अपि अङ्गुलपृथक्त्व विद्यते येषान्ते अङ्गुलपृथक्त्विका अतो नेकस्वरादि ती क प्रत्यय ते पि शरीरावगाहनया भवन्ति अङ्गुलपृथक्त्वमानशरीरावगाहना अपि भवन्तीतिभाव, एव शेषसूत्राण्यपि भावनीयानि, तण मित्यादि ॥ ते अनन्तरोदितस्वरूपा महोरगा स्थलचरपञ्चेन्द्रियत्वात् स्थलेजायन्ते स्थलेचजाता सन्तो जलपि स्थलइव चरन्ति तथा स्वाभाव्यात्, यद्येव कि त्तस्मा दिह नदृश्यन्त इत्याशङ्कायामाह-तेनत्थिइहमित्यादि ॥ ते यथोक्तस्वरू

पहत्तिया वि धणु पि धणुपुहत्तिया वि गाउय पि गाउयपुहत्तिया वि जोयणं पि जोयणपुहत्तिया वि जोयणसय पि जोयणसयपुहत्तिया वि जोयणसहस्सा पि तेण थले जाता जले विचरति थले विचरति ते णत्थि इह बाहिरएसु दीवसमुद्देसु हवंति जेयावन्ने तहप्पगारा। सेत्त महोरगा। ते समासत्त दुविहा प०,

कह्या ते कहेछे—अत्थाइया अगलपि अगलपहत्तियापि विहत्थपि विहत्थपहुत्तियापि। केतलाएक महोरग आगुलनी अवगाहना केतलाएक आगुल पृथक्त्वनी कह बलो केतलाएक वेहतनी अवगाहना छे केतलाएक विहत पृथक्त्वनी अवगाहना। रयणपिरयणपहुत्तियापि। कोई हाथनी केई हाथ पृथक्त्वनी अवगाहना। कत्यपि कत्थपहत्तियापि धणु पधणुपहत्तियापि। केइ बेइ हाथनी केइ बेहाथ पृथक्त्वनी केइ धनुषनी केई धनुषपृथक् त्वनी। गाउयपि गाउयपहुत्तियापि। कई गाउनी कई गाउपृथक्त्वनी। जोयणपि जोयणपहुत्तियापि। कोई योजननी कोई योजनपृथक्त्वनी। जोयण सयपि जोयणसयपहुत्तिया। कोई योजन सयनी कोई योजन सयपृथक्त्वनी। विजोयण सहस्सपि जोयणसहस्सपहुत्तियापि। कोई बेजोजनस हस्सनी कोई सहस्रयोजन पृथक्त्वनी। तेण थलजाया थल विचरति जलेजाया जले विचरति। तिहा थलमें उपना थलमे विचरे जलमें जन्मे जल

॥ टीका ॥

पा मारिगा इन्न मानुषक्षेत्रे न तिष्ठन्तिकिन्तुबाह्येषु द्वीपसमुद्रेषु सम्भवन्ति समुद्रेष्वपि च पर्वतदेवनगर्यादिषु स्थलेषू त्पद्यन्ते । न जलेषु स्थलचरत्वात्, तत इह न दृश्यन्ते जयावन्तेतरप्पगारा इति ये पि चा न्य अङ्गुलदशकादि शरीरावगाहनमाना स्तथा प्रकारा सन्ति ते पि म गोरगा ज्ञातव्या, उपसंहारमाह-सेत्तमित्यादि ॥ तेसमासउइत्यादिप्राग्उद्भावनीय, एतपा मपि दशजातिकुलकोटीना योनिप्रमुखानि शतसहस्त्रा णि एतपा मपि च य च्छरीरादिषु द्वारषु चिन्तन य च स्त्रीपुन्पुसकाना मल्पबहुत्व तज्जीवाजिगमटीकातो भावनीय, उर परिसर्पवक्तव्यतोपस हारमाह-सेतउर परिसर्पा, अधुना भुजपरिसर्पाना मभिधित्सुराह-सकितमित्यादि ॥ सुगम नवर य भुजपरिजिशपा अप्रतीता स्ते लोकतो वस

॥ मूल ॥

त०—सम्मुच्छिमाय गब्भवक्कंतिया य। तत्यण जेते समुच्छिमा ते सव्वे णपुंसगा, तत्यण जेते गब्भवक्कंतिया तेण तिविहा प०, त०—इत्थी पुरिसा नपुंसगा, एएसिण एवमाइयाण पज्जत्ता२ ण उरपरिसप्पाण दसजा इकुलकोडीजोणिप्पमुहसयसहस्सा हवंती ति मक्खाय। सेत्त उरपरिसप्पा। से किंत भुयपरिसप्पा २ अणेग

॥ भाषा ॥

में विचरे। ते तथिःछत्राडिरिण्मु टावसमहेसहवति। इण मनुष्यक्षेत्रमें नही बाहिरला द्वीपसमुद्रमादि हवेछे। जेआवत्री तहप्पगारा सेत्त महोरगा ते समासओ दुविहा प० त०। जे अनेरा तथाप्रकारे कह्या त एतल महोरगा ते संक्षेपथको दोयप्रकारे कह्या ते कहेछे—सम्मुच्छिमाय गब्भवक्कंतियाय। समूर्छिम गर्भज। तत्थण जेते समुच्छिमा ते सव्वे णपुंसगा। तिहा जे समूर्छिम ते सर्व नपुंसकाम्नभी हुवे। तत्थण जेते गब्भवक्कंतिया तेण तिविहा प० त०। तिहा जे गर्भज ते तीनप्रकारे कह्या ते कहेछे, इत्थी पुरिसा नपुंसगा। स्त्री पुरुष नपुंसक। एएसिण एवमाइयाण पज्जत्त अपज्जत्ताण उरपरिसप्पा ण दसजाति कुलकोडिजोणिपमुहसयसहस्सा हवतीति मक्खाय। एहने इणतरे आदिदेई पर्याप्ता अपर्याप्ता उरपरिसर्प दशलाख कुलकोडियोनिप्रमुख गतसहस्र इणनाथ वीतरागे कह्या। सेत्त उरपरिसप्पा। एतले उरपरिसर्प कह्या। सेकित भुयपरिसप्पा २ अणेगविहा प० त०। ते हिवे भुजपरिसर्प तेह ना अनेकभेद कह्या ते कहेछे—घउल सेहा सरडा सल्ला सरंठा सारा खोरा घरोइला विसभरा मूसा दुगसा पयलाइया छीरविरालिया जाहा चउपइ

या , अमीषा च नवजातिकुलकोटीना योनिप्रमुखानि शतसहस्राणि भवन्ति, च पुन शरीरादिषु चिन्तन स्त्रीपुंनपुंसकाना मल्पबहुत्व तज्जीवा भिगमटीकातो वेदितव्य ॥ सेत्तमित्यादि ॥ सम्प्रतिखचरपञ्चेन्द्रियतैर्यग्योनिका नभिधित्सुराह–सेकितमित्यादि ॥ अथ के ते खचरपञ्चेन्द्रियतैर्यग्योनिका सूरिराह–खचरपञ्चेन्द्रियतैर्यग्योनिका श्चतुर्विधा प्रज्ञप्ता–तद्यथा–चर्मपक्षीइत्यादि ॥ चर्मात्मको पक्षो चर्मपक्षोतो विद्यते येषान्ते चर्मपक्षिण लोमात्मको पक्षो लोमपक्षो तद्वन्तो लोमपक्षिण तथा गच्छता नपि समुद्गकवत् स्थितौपक्षौसमुद्गकपक्षौतद्वन्त समुद्गकपक्षिण वितलौ नित्य मनाकुञ्चितौ येषा विततपक्षौ पक्षौ तद्वन्तौ विततपक्षिण स्ते सकितमित्यादि ॥ अथ के ते चर्मपक्षिण चर्मपक्षिणो नेकविधा तद्यथा–वल्गु

विहा पण्णत्ता, तजहा–गउला सेहा सरडा सल्ला सरंठा सारा खारा घरोइला विस्संभरा मूसा मंगुसा पइलाइया छीरविरालिया जाहा चउप्पाइया जेयावन्नेतहप्पगारा । तेसमासओ दुविहा प०, त०–समुच्छिमा य गब्भवक्कंतियाय, तत्थणं जेते समुच्छिमा ते सव्वे नपुंसगा, तत्थणं जेते गब्भवक्कंतिया तेण तिविहा पण्णत्ता, तजहा–इत्थी पुरिसा नपुंसगा, एएसिण एवमाइयाण पज्जत्तार ण भुयपरिसप्पाण नवजाइकुल

या । नोल सेहला सरट सल्ल सरत्त सारखार घरोएला विसभर मूसा दुगस प्रचलादि छीरविरालो जोधा चउपद देशविशेष । जेवावणे तहप्पगारा ते समासथी दुविहा प० त० । एहवा जे अनेरा तथाप्रकारे ते संक्षेपथको दोयप्रकार कह्या ते कहेछे–समुच्छिमाय गब्भवक्कंतियाय । समूर्च्छिम गर्भज । तत्थण जेते समुच्छिमा तेसव्वे नपुंसगा । तिहा समूर्च्छिम सर्व सदा नपुंसकलिंगी । तत्थण जेते गब्भवक्कंतिया तेण तिविहा प० तंजहा । तिहा जे गर्भज तेहना तीनभेद कहे । इत्थी पुरिसा नपुंसगा । स्त्री पुरुष नपुंसक । एएसिण एवमाईयाण पज्जत्ता अपज्जत्ताण भुयपरिसप्पाण नवजाइकुलकोडी जोणीपमुह सयसहस्सा हवतीतिमक्खाय । एहने इणतरे आदिदेई पर्याप्ता अपर्याप्ता भुजपरसर्प नवजाति कुलकोडि योनिप्रमुख शतसहस्र हुवे वीतरागे कह्या । सेत्त भुयपरिसप्पथलयर पांचदिय तिरिक्खजोणिया । ते एतले भुजपरिसर्प थलचर पचेंद्रिय तिर्यंच कह्या । सेत्त परिसप्पथलयर पांचदिय

लीत्यादि-एते च भेदा लोकतो वसेया, जेयावन्नेतहप्पगाराउति ॥ ये पि चा न्ये तथा प्रकारा एव रूपा स्ते चर्मपक्षिणो द्रष्टव्या , उपसंहारमा ह-सेत्तचम्मपक्खी । लोमपक्षिप्रतिपादनार्थमाह-सकितमित्यादि ॥ एते च लोमपक्षिभेदा लोकतो वेदितव्या , समुद्गपक्षिप्रतिपादनार्थमाह-सेकित मित्यादिपाठसिद्ध ॥ एव विततपक्षिसूत्र मपि ते समासतो इत्यादि प्राग्वद्भावनीयम्, एतेषा द्वादशजातिकुलकोटीना योनिप्रमुखानि शतसह

कोडिजोणिप्पमुहसयसहस्साइ हवती तिमक्खाय। सेत्त भुयपरिसप्पथलयरपचेंदियतिरिक्खजोणिया । सेत्त परिसप्पथलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिया । से किंत खहयरपचिंदियतिरिक्खजोणिया २ चउविहा पन्नत्ता, तजहा—चम्मपक्खी लोमपक्खी समुग्गपक्खी वियतपक्खी । से किंत चम्मपक्खी २ अणेगविहा प०, त० वग्गुली जलोया अडिला भारडपक्खी जीवजीवा समुद्दवायसा कण्णत्तिया पक्खिबिराली जेयावन्नेतहप्पगा रा ॥ सेत्त चम्मपक्खी ॥ से किंत लोमपक्खी २ अणेगविहा प० , त० ढका कका कुरला वायसा चक्का

ति० । एतले उरपरिसर्प थलचर पचेंद्रिय कह्या । सेकित खहचर पचेंदिय तिरिक्खजोणिया २ चउव्विहा प० त० । हिवे खहचरपखी पचेंद्री तिर्यचयो नि तेहना ४ भेद कह्या ते कहेछे—चम्मपक्खी लामपक्खी समुग्गपक्खी बियतपक्खी । चर्मपची लोमपची समुद्गकपची विततपची विस्तारीपाख । सेकित च म्मपक्खी अणेगविहा प० त० । हिवे चर्मपची, ते चर्मपची अनेकप्रकारे कह्या ते कहेछे—वग्गुली जलोया अडला भारडपक्खी जीवजीवा समुद्दवायसा । वागुल जलोका अडिल भारण्डपची जीवजीवा समुद्रवायस । कण्णत्तिया पक्खविरालीया । कर्णत्तिया पचविराली । जेयावन्नेतहप्पगारा सेत्त चम्मपक्खी । जे एहवा अनेरा बीज तथाप्रकारे जाणिवा हिवे ते चर्मपची कह्या । सेकित लोमपक्खी २ अणेगविहा प० त० । हिवे लोमपचीनाभेद अनेकप्रकारे क ह्या ते कहेछे—ढका कका कुराला वायसा चक्कागा हसा कलहसा पायहसा रायहसा अडासेडी बग्गा बलागा । ढङ्कपची कक कराला कागलो चकवा हस कलहस पादहस राजहस अडासेडो बग बालग । पारिप्पावा कुचासारसा मेसरा मसूरी मयूरा सवक्या गहरा पोडरीया कागा कामिज

न्याणि अमीषा मपि शरीरादिषु द्वारेषु चिन्तनं स्त्रीपुंनपुंसकानां मल्पबहुत्वं च जीवाभिगमटीकातः प्रतिपत्तव्य मिहतु ग्रन्थगौरवभयान्न लिख्यते ' अधुना विनेयजनानुग्रहाय द्वीन्द्रियप्रभृतिजातिकुलकोटिशतसहस्रसङ्ख्याप्रतिपादिका सङ्ग्रहणिगाथा माह-सत्तट्ठजाइकुलकोडिलक्खनवअद्धतेरसा इव । दससदसर्वौतिनवगा तहबारसचेवबोधव्वा ॥ १ ॥ अत्र द्वीन्द्रियस्य यथाउक्तेन सङ्ख्यापदयोजना, सा चैव-द्वीन्द्रियाणां सप्तजातिकुलकोटिशता

गा ढंगा कलहंसा पायहंसा रायहंसा अडा सेडीबगा बलागा पारिप्पवा कुंचा सारसा मेसरा मसूरा मऊरा सतवच्छा गहरा पोंडरीया कागा कामिंजुगा वंजुलगा तित्तिरा वट्टगा लावगा कवोया कविंजला पारेवया चिडगा चासा कुक्कुडा सुगा बरहिणा मदणसला कोकिला सेरहा वरेल्लग माढी। सेत्तं लोमपक्खी। से किंतं समुग्गपक्खी२ एगागारा प०, तेणं नत्थि इह बाहिरएसु दीवसमुद्देसु नवंति। सेत्तं समुग्गपक्खी। से किंतं विततपक्खी२ एगागारा प०, तेणं नत्थि इह बाहिरएसु दीवसमुद्देसु हवंति। सेत्तं विततपक्खी। तेस

गा विंजानगा । पारिप्लवा कौंच सारस मेसर मसूरी मयूर शतवच्छ गहर पाण्डरक काग कामंजुगा विंजुलगा । तित्तिरा वट्टगा लावगा कवोयाक पिंजला पारेवया चिडगा चासा कुक्कुडा सुगा बरगाहरिणा । तीतर वट्टक लावक कपोत कपिञ्जल पारेवा चिटक नीलचास कूकडा सूवा बगला । मय णसिलागा कोइला सेहा वरिल्लगमाई । मयणपची सलाक कोइल सेढो बोलग इत्यादि । सेत्त लोमपक्खी सेकित समुग्गपक्खी २ एगागारा प० त० । अनेरा लोमपखी तथाकारे हिवे समुद्गकपचीनां एकहीज भेदछे पंखी लोममानयी । तेण नत्थि इह बाहिरिएसु दीवसमुद्देसु हवंति । इण दीपामांहि नहीछे बाहिरला दीपसमुद्रामांहि हुवेछे । सेत्त समुग्गपक्खी सेकित विततपक्खी २ एगागारा प० त० । एतले समुद्गकपची कह्या हिवे ते विततपची ते विततपचीनो एकहीज भेदछे । तेण नत्थि इह बाहिरिएसु दीवसमुद्देसु हवंति । ते इणा अढाईद्वीप ते जम्बूद्वीप धातकी पुष्करार्द्ध नही बाहिरिला दीपसमुद्रमांहि हुवे । सेत्त विततपक्खी ते समासओ दुविहा प०त० । एतले विततपची ते संक्षेपथकी दोयप्रकारे कह्या ते कहेछे—समुच्छिमा य गब्भवक्कं

णि, त्रीन्द्रियाणां अष्टौ, चतुरिन्द्रियाणां नव, जलचरपञ्चेन्द्रियाणां अर्द्धत्रयोदशानि, चतुष्पदस्थलचरपञ्चेन्द्रियाणां दश, उरःपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियाणां दश, भुजपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियाणां नव, खचरपञ्चेन्द्रियाणां द्वादशेति' उपसंहारमाह-सेत्तमित्यादि ॥ तदेवं मुक्ता पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः, सम्प्रतिमनुष्यान् विविधत्सु राह-सेकितमित्यादि ॥ अत्रापि सम्मूर्च्छिममनुष्यविषयं प्रवचनबहुमानतः शिष्याणामपि च साक्षाद्ग

मासउ दुविहा प०, त० समुच्छिमा य गब्भवक्कंतिया य । तत्थण जेते समुच्छिमा तेसव्वे नपुंसगा तत्थण जेते गब्भवक्कंतिया तेण तिविहा प०, त० इत्थी पुरिसा नपुंसगा । एएसिणं एवमाइयाणं खहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं बारसजाईकुलकोडिजोणिप्पमुहसयसहस्सा हवंतीतिमक्खायं, सत्तट्ठ जाइकुलकोडिलक्खनवअद्धतेरसाइंच । दसदसयहोंतिणवगा तहबारसचेवबोधव्वा ॥१॥ सेत्तं खहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया ॥ सेत्तं पंचिंदियतिरिक्खजोणिया ॥ सेत्तं तिरिक्खजोणिया ॥ से किंतं मणुस्सा२ दुविहा प०,

विचार । समूर्च्छिम गर्भज । तत्थण जेते समुच्छिमा ते नपुंसगा । तिहां जे समूर्च्छिम ते सर्व नपुंसक । तत्थण जेते गब्भवक्कंतिया तेण तिविहा प० त० । तिहां जे गर्भज ते तीनभेदे कह्या ते कहेछे—इत्थी पुरिसा नपुंसगा । स्त्री पुरुष नपुंसक । एएसिणं एवमाइयाणं खहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं बारसजाईकुलकोडिजोणिप्पमुहसयसहस्सा हवंतीतिमक्खायं । खेचरपक्षी पंचेंद्रिय तिर्यंचजोनिक पर्याप्ता अपर्याप्ता जातिनाम कुल कोडि योनिप्रमुख बारेलाख हुवे कह्या वीतरागे— सत्तट्ठजाइकुलकोडि लक्खनवअद्धतेरसाइंच दसदसयहोंतिणवगा तहबारसचेवबोधव्वा ॥ ये इनने सात लाखकुलकोडी तेंद्रिय आठलाख चौरिन्द्रिय नवलाख जलचर पंचेंद्रिय १२ ॥ लाख चोपद थलचर पंचेंद्रिय १० लाख उरपरसर्प थलचरपंचेंद्रिय दशलाख कुलकोडि भुजपरसर्प ९ लाख खेचर १२ लाख । सेत्तं खहयर पंचिंदियतिरिक्खजोणिया । एतले खेचर पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिक जाणवा । सेत्तं तिरिक्खजोणिया सेकितं मणुस्सा २ दुविहा प० त० । हिवे तिर्यंचयोनिया कह्या ते हिवे मनुष्यना भेद पूछेछे, ते मनुष्यना दोयभेद कह्या तेकहेछे—समुच्छि

वते द सुत्त मिति वरमानोत्पादनार्थमन्तर्गत माणप प्रठति-कहिणं भंते इत्यादि ॥ सुगमं नवर ॥ सव्वेसु चेव असुइठाणेसुति ॥ अन्यान्यपि या निकानिचित् मनुष्यसंसर्गवशादशुचिभूतानि स्थानानि तेषु सर्वेष्विति उक्ता सम्मूर्च्छिममनुष्या, अधुनागर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्यप्रतिपादनार्थमाह-सेकिं तमित्यादि ॥ कम्मभूमिगा इति ॥ कर्म कृषिवाणिज्यादि मोक्षानुष्ठान वा कर्म प्रधाना भूमि येषां ते कर्मभूमा आपत्वात्समासान्तोऽप्रत्यय कर्मभूमा एव कर्मभूमिका, एव अकर्मा यथोक्तकर्मविकला भूमि येषान्ते अकर्मभूमा स्त एव अकर्मभूमिका, अन्तरशब्दो मध्यवाची अन्तरे लवणसमुद्रस्य मध्ये द्वीपा अन्तरद्वीपा तद्गता अन्तरद्वीपगा अस्ति पश्चानुपूर्वीतिन्यायस्यापनार्थं प्रथमतोऽन्तरद्वीपगान् प्रतिपादयति ॥ सकितमित्यादि ॥ सुगम नव र अष्टाविंशतिविधा इति यादृशा एव यावत्प्रमाणा यावदपान्तराला यन्नामानो हिमवत्पर्वतपूर्वापरदिग्व्यवस्थिता अष्टाविंशतिविधा अन्तर

तं० सम्मूच्छिममणुस्सा य गब्भवक्कंतियमणुस्सा य । से किंतं सम्मुच्छिममणुस्सा, कहिणं भंते ! सम्मूच्छिम मणुस्सा समुच्छंति ? गोयमा ! अंतो मणुस्सखेत्ते पणयालीसाए जोयणसयसहस्सेसु अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु पणरससु कम्मभूमीसु तीसाए अकम्मभूमीसु छप्पन्नाए अंतरदीवएसु गब्भवक्कंतियमणुस्साण चेव उच्चारेसु वा पासवणेसु वा खेलेसु वा सिंघाणएसु वा वंतेसुवा पित्तेसुवा पूएसुवा सुक्केसुवा सुक्कपोग्गलपरिसाडेसु

सम्मूर्च्छिम मनुष्य गर्भव्युत्क्रान्तिक मनुष्य । ते सम्मूर्च्छिममनुष्य गर्भजमनुष्य । ते किंते सम्मूर्च्छिममनुष्य । किहां सम्मूर्च्छिम मनुष्य कहेछे—कहिणं भंते सम्मूर्च्छिम मनुष्य समुच्छंति । किम इत्यादि । सम्मूर्च्छिममनुष्य ऊपजे । अंतोमणुस्सखेत्ते पणयालीसाए जोयणसहस्सेसु । ४५ लाख जोजन मनुष्यक्षेत्रमाहि । अ ढाइज्जेसदीवसमुद्देसु पणरससु कम्मभूमीसु तीसाए अकम्मभूमीसु छप्पन्नाए अंतरदीवेसु ॥ अढाइद्वीप समुद्रमाहि १५ कर्मभूमिमाहि ३० अकर्मभूमिने विषे ५६ अन्तरद्वीपनेविषे । गब्भवक्कंतियमणुस्साण चेव । गर्भजमनुष्यना शरीरथी ऊपजे तिहां । उच्चारेसुवा पासवणेसुवा खेलेसुवा सिंघाणेसुवा वंतेसुवा । बडीनीतिने विषे लघुनीतिने विषे श्लेषमें नाकनामलमाहि वमनमाहि । पित्तेसुवा पूएसुवा सोणिएसुवा सुक्केसुवा सुक्कपुग्गलपरिसाडेसुवा । पित्तमाहि

द्वीपा स्तादृशा एव तात्र रमणा स्ताव दपान्तराता स्तत्रामान एव शिखरिपर्वतपूर्वापरदिग्व्यवस्थिता अपि ततो त्यन्तसदृशतया व्यक्तिभेद मनपेक्ष्य अन्तरद्वीपा अष्टाविंशतिविधा एव विवक्षिता इति तज्जाता मनुष्या अपि अष्टाविंशतिविधा उक्ता स्तानेव नामग्राहम् पदर्शयति-तजहा एगोरुया इत्यादि॥ एत सप्तचतुष्का अष्टाविंशतिसङ्ख्या त् एते च प्रत्येक हिमवति शिखरिणि तत्र हिमवद्गततयातावद्व्याख्यन्ते इह जम्बूद्वीपे भरतस्य ऐरवतस्य च क्षेत्रस्य सीमाकारी भूमिनिमग्नपञ्चविंशतियोजनयोजनशतोच्छ्रयपरिमाणो भरतक्षेत्रापेक्षयाद्विगुणविष्कम्भो हेममय चीनपट्टवर्णनानावर्ण

वा विगयकलेवरेसु वा इत्थीपुरिससंजोएसु वा नगरनिद्धमणेसु वा सव्वेसुचेव असुइएसु ठाणेसु एत्थण समुच्छिममणुस्सा समुच्छति, अगुलस्स असंखिज्जभागमित्ताए उगाहणाए असन्नी मिच्छदिठ्ठी अन्नाणी सव्वाहि पज्जत्तीहि अपज्जत्तगा अंतोमुहुत्ताउगा चेव कालं करंति। से किंत गब्भवक्कंतियमणुस्सा २ तिविहा पण्णत्ता, तजहा--कम्मभूमिगा अकम्मभूमिगा अंतरदीवगा से किंत अंतरदीवया? अंतरदीवया अठावीसतिविहा पण्णत्ता, तजहा एगोरुया आहासिया वेसाणिया णगोली १ हयकन्ना गयकन्ना गोक

राधविषे शोणित रक्तमाहि शुक्रमाहि सूकापुद्गलनो नाखवो तेहनेविषे जीवविना कलेवरमाहि। स्त्री पुरिससंजोएसुवा नगरनिद्धमणेसुवा नगरनिद्धमणेसुवा सव्वेसुचेव असुइएसठाणेसु। स्त्री पुरुष संयोगमाहि नगर खालमाहि ग्राम खालमाहि सगलो अशुचि अपवित्राइ स्थानकमाहि। एत्थण समुच्छिमा मणुस्सा समुच्छति। इहा समूच्छिम मनुष्य ऊपजे। अगुलस्स असंखिज्जइभागमित्ताए उगाहणाए। प्रथमसमै अगुलने असंख्यातभागे अवगाहना। असन्नी मिच्छादिठ्ठी अणाणी सव्वाहि पज्जत्तीहि अपज्जत्तगा अंतोमुहुत्ताउगाचेव कालंकरति। असन्नी मिथ्यादृष्टी अज्ञानी सर्वपर्याप्त अपर्याप्ते अन्तर्मुहूर्त आउखा निश्चे कालकरै। सेत्त समुच्छिममणुस्सा। ते समूर्च्छिममनुष्य कहिये। सेकित गभवक्कंतियमणुस्सा २ तिविहा प० त०। हिवे ते गर्भजमनुष्य पूछे शिष्य गुरुकहे, ते गर्भजमनुष्यना तीनभेद कह्या तेकहछै—कम्मभूमिगा १५ अकम्मभूमिगा ३० अन्तरदीवगा २ अट्ठावीसविहा प० त०। कर्मभू

विशिष्टद्युतिमणिनिकरपरिमण्डितोभयपार्श्वे सर्वत्र तुल्यविस्तारौ गगनमण्डलोऽस्मिरि रत्नमये कादशकूटोपशोभितो वज्रमयतलविविधमणिकनकम ण्डिततटनागदशयोजनावगाढपूर्वपश्चिमयोजनसहस्रायामदक्षिणोत्तरपञ्चयोजनशतविस्तार पद्मद्रहशोभितशिरोमध्यभाग सर्वत कल्पपादपश्रेणिर मणीय पूर्वापरपर्यन्ताभ्या लवणोदार्णवजलसस्पर्शी हिमवन्नामपर्वत स्तस्य लवणोदार्णवजलसस्पर्शादारभ्य पूर्वस्या पश्चिमायां च दिशि प्रत्यक द्वे द्वे गजदन्ताकारे दंष्ट्रे विनिगते तत्र ऐशान्यादिशि या विनिगता दंष्ट्रा तस्या हिमवत पर्यन्तादारभ्य त्रीणि योजनशतानि लवणसमुद्रमवगाह्य अत्रान्त रे योजनशतत्रयायामविष्कम्भ । किञ्चिन्न्यूनैकोनपञ्चाशदधिकनवयोजनशतपरिरय एकोरुकनामाद्वीपोवर्त्तते-अयञ्च पञ्चधनु शतप्रमाणविष्कमया

न्ना सक्कुलिकन्ना २ आयसमुहा मेढमुहा अयमुहा गोमुहा ३ आसमुहा हत्थिमुहा सीहमुहा वग्घमुहा ४ आसकन्ना सीहकन्ना अकन्ना कण्णपाउरणा ५ उक्कामुहा मेहमुहा विज्जुमुहा विज्जुदंता ६ घणदंता लट्ठ दंता गूढदंता सुद्धदंता ७। सेत्तं अंतरदीवगा। से किंत अकम्मभूमिगा ? २ तीसतिविहा पण्णत्ता, तं० पंचहिं हेमवएहिं पंचहिं हेरण्णवएहिं पंचहिं हरिवासेहिं पंचहिं रम्मगवासेहिं पंचहिं देवकुरुएहिं पंचहिं

मिना १५ अकर्मभूमिना ३० ५६ अन्तरद्वीपमाहि मनष्य २८ भेद कह्या ते कहेछे—एगरुया आभासिया वेसाणिया नंगोली ४। एकोरुक आभासिक वेसा णी नंगोली। हयकण्णा गयकण्णा गोकण्णा सक्कुलिकण्णा ८। हयकर्ण गजकर्ण गोकर्ण सकुलकर्ण। आयसमुहा मेढमुहा अयमुहा गोमुहा आसमुहा ह त्थिमुहा सीहमुहा वग्घमुहा १६। आदर्शमुख मेषमुख अयमुख गोमुख अश्वमुख हस्तिमुख सिंहमुख व्याघ्रमुख। अस्सकण्णा सीहकण्णा अकण्णा कण्णपा वरणा २०। अश्वकर्ण सिंहकर्ण अकर्ण कर्णप्रावर्ण। उक्कमुहा मेहमुहा विज्जुमुहा २३। उल्कामुख मेघमुख विद्युन्मुख। विज्जुदंता घणदंता लट्ठदंता गू ढदंता सुद्धदंता इत्यादि २८। विद्युद्दन्ता घनदंता लष्टदंता गूढदंता शुद्धदन्ता इत्यादि ए २८ ते। सेत्त अंतरदीवगा। अन्तरद्वीप २८ हिमवन्तशिखरीपर्वत परिमें २८ जीवाभिगम टीकामांहि विस्तारपणे। सेकिंत अकम्मभूमिगा २ तीसइविहा प०तं०। हिवे अकर्मभूमिना तीसभेदछे तेकहेछे—पचहिं हेमवए

द्विगव्यूतोच्छ्रितया पद्मवरवेदिकया सर्वत परिमण्डित तस्या श्च पद्मवरवेदिकाया वर्णको जीवाभिगमटीकाया मिव वेदितव्य , सा पि च पद्म वरवेदिका सर्वत सामस्त्येन वनखण्डपरिक्षिप्ता वना च वनखण्डस्या ऽय विशेष , प्रायो बहूना समानजातीयाना मुत्तमाना महीरुहाणा समुदायो वन यथा ऽशोकवन चम्पकवनमिति, अनेकजातीयाना मुत्तमाना महीरुहाणा समूहो वनखण्ड , उक्त च जीवाभिगमसूत्रटीकाया-एगजाइएहिं रुक्खेहिं वण अणेगजाइएहिं उत्तमेहिं वणसंडे इति। तस्य च वनखण्डस्य चक्रवालतया विष्कम्भो देशोने द्वे योजने परिक्षेप पद्मवरवेदिकाप्रमाण अस्य च वनखण्डस्यवर्णक प्रतिपादितोस्ति स चा तीवगरीयानिति नो पदर्शित ॥ केवल जीवाभिगमटीकातो वसेय , तस्यैव हिमवत पर्वतस्य पर्यन्तादारभ्य दक्षिणपूर्वस्या दिशि त्रीणि योजनशतानि लवणसमुद्र मवगाह्य द्वितीयदंष्ट्राया उपरि एकोरुकद्वीपप्रमाण आभासिकनामद्वीपो वर्तते' तथा तस्यैव हिमवत पश्चिमाया दिशि पर्यन्ता दारभ्य दक्षिणपश्चिमाया नैऋतकोण इत्यर्थ , त्रीणि योजनशतानि लवणसमुद्र मवगाह्य

दंष्ट्राया उपरि यथोक्तप्रमाणो वैषाणिकनामा द्वीप , तथा तस्यैव हिमवत पश्चिमाया दिशि पर्यन्ता दारभ्य पश्चिमोत्तरस्या दिशि वायव्यकोण इत्यर्थ ' त्रीणि योजनशतानि लवणसमुद्रमध्ये दंष्ट्रामतिक्रम्या त्रान्तरे पूर्वोक्तप्रमाणो नागोलिकनामा द्वीप एव मेते चत्वारो द्वीपा हिमवत स्तत्रापि विदिक्षु तुल्यप्रमाणा अवतिष्ठते, उक्त च-चुल्लहिमवतपुव्वा वरएविदिसासुसागरन्तिसए । गतूणतरदीवा तिण्णिसए हुति विच्छिन्ना ॥ १ ॥ अउणापन्ननवसए किंचूणपरिहि तेसि मे नामा एगारुय आभासिय वेसाणिय चेव नगूली ॥२॥ तत एषा मेकोरुकादीना चतुर्णा द्वीपाना परतो यथाक्रम पूर्वोत्तरादिविदिक्षु प्रत्येक चत्वारि २ योजनशतान्य तिक्रम्य चतुर्योजनशतायामविष्कम्भा किंचिन्न्यूनपञ्चषष्ठ्यधिकद्वादशयोजनशतपरि क्षेपा यथोक्तपद्मवरवेदिकावनखण्डमण्डितपरिसरा जम्बूद्वीपवेदिकात चतुर्योजनशतप्रमाणान्तरा हयकर्णगजकर्णगोकर्णशष्कुलीकर्णनामानश्चत्वारो द्वीपा स्तद्यथा-एकोरुकस्य परतो हयकर्ण ' आभासिकपरतो गजकर्ण , वैषाणिकस्य परतो गोकर्ण , नागोलिकस्य परत शष्कुलीकर्णइति, तत

एतेषा मपि हयकर्णादीना परत पुन रपि यथाक्रम पूर्वोत्तरादिविदिक्षु प्रत्येक पञ्च २ योजनशतानि व्यतिक्रम्य पञ्चयोजनशतायामविष्कम्भा एका शीत्यधिकपञ्चदशयोजनशतपरिक्षेपा पूर्वोक्तप्रमाणपद्मवरवेदिकावनखण्डमण्डितबाह्यप्रदेशा जम्बूद्वीपवेदिकात पञ्चयोजनशतप्रमाणान्तरा आ दर्शमुख १ मेढमुख २ अयोमुख ३ गोमुख ४ नामानश्चत्वारोद्वीपा स्तद्यथा-हयकर्णस्य परत आदर्शमुखो गजकर्णस्य पुरतो मेण्टमुख गोकर्णस्य परतो ऽयोमुख शष्कुलीकर्णस्य पुरतो गोमुख इति' एव मग्रेपि भावना कार्या, एतेषा मप्या दर्शमुखादीना चतुर्णा द्वीपाना परतो भूयो पि यथाक्रम पूर्वोत्तरादिविदिक्षु प्रत्येक षट्षट्योजनशतान्य तिक्रम्य षट्योजनशतायामविष्कम्भा सप्तनवत्यधिकाष्टादशयोजनशतपरिक्षेपा यथोक्तप्रमा णपद्मवरवेदिकावनखण्डमण्डितपरिसरा जम्बूद्वीपवेदिकात षट्योजनशतप्रमाणान्तरा अश्वमुखहस्तिमुखसिंहमुखव्याघ्रमुखनामान श्चत्वारो द्वीपा, एतेषा मप्य ऽश्वमुखादीना चतुर्णा द्वीपाना परतो यथाक्रम पूर्वोत्तरादिविदिक्षु प्रत्येक सप्तयोजनशतान्य तिक्रम्य सप्तसप्तयोजनशतायामविष्कम्भा

त्रयोदशाधिकद्वाविंशतियोजनशतपरिरया पूर्वोक्तप्रमाणपद्मवरवेदिकावनखण्डसमवगूढा जम्बूद्वीपवेदिकात सप्तयोजनशतप्रमाणान्तरा अश्वकर्ण हरिकर्णअकर्णकर्णप्रावरणनामान श्चत्वारो द्वीपा स्तत एतेषा मश्वकर्णादीना चतुर्णा द्वीपाना परतो यथाक्रम पूर्वोत्तरादिविदिक्षु प्रत्येक मष्टा वष्टौ योजनशतान्य तिक्रम्याष्टयोजनशतायामविष्कम्भा एकोनत्रिंशदधिकपञ्चविंशतियोजनशतपरिक्षेपा यथोक्तप्रमाणपद्मवरवेदिकावनखण्डमण्डितपरि सरा जम्बूद्वीपवेदिकातोऽष्टयोजनशतप्रमाणान्तरा उल्कामुखमेघमुखविद्युन्मुखविद्युद्दन्ताभिधाना श्चत्वारो द्वीपास्ततो ऽमीषा मप्युल्कामुखादीना चतुर्णा द्वीपाना परतो यथाक्रम पूर्वोत्तरादिविदिक्षु प्रत्येक नवनवयोजनशतानि व्यतिक्रम्य नवनवयोजनशतायामविष्कम्भा पञ्चचत्वारिंशदधिका ष्टाविंशतियोजनशतपरिक्षेपा यथोक्तप्रमाणपद्मवरवेदिकावनखण्डसमवगूढा जम्बूद्वीपवेदिकातो नवयोजनशतप्रमाणान्तरा घनदन्तलष्टदन्तगूढदन्त शुद्धदन्तनामान श्चत्वारो द्वीपा एव मेते हिमवति पर्वते चतसृषु विदिक्षु व्यवस्थिता सर्वसङ्ख्यया अष्टाविंशति, एव हिमवत्तुल्यवर्णप्रमाणे पद्म

ह्रस्वप्रमाणायामविष्कम्भावगाढपुण्डरीकह्रदोपशोभिते शिखरिण्यपि पर्वते लवणोदार्णवजलस्पर्शादारभ्य यथोक्तप्रमाणान्तरासु चतसृषु विदिक्षु व्यवस्थिता एकोरुकादिनामानः चूर्णापान्तरालायामविष्कम्भा अष्टाविंशतिसङ्ख्या द्वीपा वक्तव्याः सर्वसङ्ख्यया षट्पञ्चाशदन्तरद्वीपाः, एतद्गता मनुष्या अप्येतन्नामान उपचारात् उच्यन्ते यतात्स्थ्यात्तद्व्यपदेशो यथा पञ्चालदेशनिवासिनः पुरुषाः पञ्चाला इति, ते च मनुष्याः वज्रऋषभनाराचसंहनिनः कङ्कपक्षिपरिणामा अनुलोमवायुवेगाः समचतुरस्रसंस्थानाः तद्यथा-सुप्रतिष्ठितकूर्मचारुचरणाः सुकुमालसुश्लक्ष्णप्रविरलरोमकुरुविन्दवृत्तजङ्घा युगला निगूढसुबद्धसन्धिजानुप्रदेशाः करिकरसमवृत्तोरवः कण्ठीरवसदृशकटीप्रदेशाः शक्रायुधसममध्यभागाः प्रदक्षिणावर्त्तनाभिमण्डलाः श्रीवत्सलाञ्छित विशालमांसलवक्षःस्थलाः पुरपरिघानुकारिदीर्घबाहवः सुश्लिष्टमणिबन्धाः रक्तोत्पलपत्रानुकारिपाणिपादतलाः चतुरङ्गुलप्रमाणसमवृत्तकम्बुग्रीवाः शारदशशाङ्कसौम्यवदनाः छत्राकारशिरसो ऽस्फुटितस्निग्धकान्तिश्लक्ष्णमूर्द्धजाः कमण्डलुकलशयूपस्तूपवापीध्वजपताकासौवस्तिकयवमत्स्यमकरकूर्मरथवरस्थालांकुशाष्टापदाङ्कुशसुप्रतिष्ठमयूरश्रीदामाभिषेकतोरणमेदिनीजलधिवरभवनादर्शपर्वतगजवृषभसिंहचामररूपप्रशस्तोत्तमद्वात्रिंशल्लक्षण

उत्तरकुरुएहिं सेत्तं अकम्मभूमगा। से किं तं कम्मभूमगा? २ पण्णरसविहा पण्णत्ता, तंजहा पंचहिं भरहेहिं पंचहिं एरवएहिं पंचहिं महाविदेहेहिं ते समासओ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा आयरिया य मिलक्खू य। से

हि पंचहिं रण्णवएहिं पंचहिं हिरण्णवासेहिं पंचहिं रम्मगवासेहिं पंचहिं देवकुराहिं पंच उत्तरकुराहिं। पांच हेमवंत क्षेत्रना पांच हिरण्यवंत क्षेत्रना पांच हिरण्यवंत क्षेत्रना पांच रम्यकक्षेत्रना पांच देवकुरु क्षेत्रना पांच उत्तरकुरु क्षेत्रना। सेत्तं अकम्मभूमगा से किं तं कम्मभूमगा २ पण्णरसविहा प० त०। ते अकर्मभूमि कहिये हिवे कर्मभूमि प्रश्न पुछे छे १५ प्रकार कह्या ते कहे छे-पांच भरतहिं पांचहिं ऐरवएहिं पांचहिं महाविदेहेहिं एते समासओ दुविहा प०त०। पांच भरतक्षेत्रना ५ ऐरवतक्षेत्रना ५ महाविदेहक्षेत्रना ए संक्षेपथकी दोयप्रकारे कह्या ते कहे छे- आयरियाय मिलक्खू य। आर्य मनुष्य बीजा म्लेच्छ मनुष्य। से किं तं मिलक्खू २ अणेगविहा प० तंजहा। हिवे म्लेच्छ मनुष्य ते अनेकप्रकारे कहे छे। जवना चिलाया सबरा जव्व

वरा , स्त्रियोपि सुजातसर्वाङ्गसुन्दर्यः समस्तमहिलागुणसमन्विता संहताङ्गुलिपद्मदलवत् सुकुमारकूर्मसंस्थानमनोहारिचरणा रोमरहितप्रशस्तलक्षणोपेतजङ्घायुगला निगूढमांसलजानुप्रदेशा कदलीस्तम्भातिसंस्थितसुकुमारपीवरोरुका वदनायामप्रमाणत्रिगुणमांसलविशालजघनधारिण्य स्निग्धकान्तिसुविभक्तश्लक्ष्णरोमराजय प्रदक्षिणावर्ततरङ्गभङ्गुरनाभिमण्डला प्रशस्तलक्षणोपेतकुक्षय संहतपार्श्वा कनककलशोपमसंहतात्युन्नतवृत्ताकृतिपीवरपयोधरा सुकुमारबाहुलतिका सौवस्तिकशङ्खचक्राद्याकृतिलक्षणाङ्कितपाणिपादतला वदनत्रिभागोच्छ्रितमांसलकम्बुग्रीवा प्रशस्तलक्षणोपेतमांसल[illegible] दाडिमीपुष्पप्रकाशशोणिमाधरोष्ठा रक्तोत्पलतालुजिह्वा विकसितकुवलयपत्रायतकान्तलोचना आरोपितचापपृष्ठाकृतिसुसङ्गतभ्रूलता[illegible]पत्रललाटफलका सुस्निग्धकान्तसूक्ष्मशिरोरुहा पुरुषस्य किञ्चिदूनोच्छ्राया स्वभावतउदारशृङ्गारचारुवेषा प्रकृत्यैव हसितभणितपरमनैपुण्योपेता , स्तथा मनुष्या मानुष्यश्च स्वभावत एव सुरभिवदना प्रतनुक्रोधमानमायालोभा सन्तोषिणो निरुत्सुका मार्दववला नत्यपि मनोहारिणि मणिकनकमौक्तिकादौ ममत्वकारणे ममत्वाभिनिवेशरहिता सर्वथाऽपगतवैरानुबन्धा हस्त्यश्वकरभगोमहिष्यादि तत्परिभोगे पराङ्मुखा पादविहारिणो ज्वरादिरोगग्रहभूतपिशाचादिजनितमारिव्यसनोपनिपातविकला परस्परप्रेष्यप्रेषकभावर

मिलक्खू १ २ अणेगविहा पण्णत्ता , तंजहा सग जवण चिलाय सबर बब्बर काय मुरुण्डोड भडग णिण्णग पक्कणि कुलक्ख गोंड सीहल पारस गोधकोंच दमिल चिल्लल पुलिंद हारोस डोंबवोक्काण गंध

। काय मरुंडा उभडग णिण्ण । पक्कणि । यवनदेशजा चिलातदेशजा सबरदेशजा बब्बरदेशजा कायदेशजा मरुडदेशजा उभडगदेशजा तौर्णकदेशजा पक्कणजा । कुलक्ख गोंड सीहल पारस कोंच अंबड दमिल चिल्लल पलिं हारोस डोंब वोक्काण गंधहारग बहलिय अज्झल रोम पास पउस मलय बंधुय । कुलाक्षदेशजा गोंडजा सिंहलजा पारसजा क्रौंचजा अंबडजा दमिलजा चिल्ललजा पुलिंदजा हारोसजा डोंबजा वोक्काणजा गन्धाहारजा बहलजा अज्झलजा रोमजा पासजा पउसजा मलयजा बंधुजा । सूयलि कोंकणग मेयपल्हव मालव मग्गर आभासिय कणवीर ल्हासिय खस खासिय नेडर

ज्ञितत्वा दशमिद्रा, तेषां पूष्पकरणकानि च पहिमञ्जाकानि चतुर्थातिक्रमेण चा हारग्रहण आहारो पि च शाल्यादिधान्यनिष्पन्न किंत पृथिवीमृत्तिका कल्पद्रुमाणां पुष्पफलानि च, तथा हि जायन्ते यत्तु तत्रापि वत्रमात एव शालिगोधूममाषमुद्गादीनि धान्यानि परं न तानि मनुष्याणां सुपभोग गच्छन्ति या तु पृथिवी सा शर्करातो ऽप्यनन्तगुणमाधुर्या च कल्पद्रुमपुष्पफलानां मास्वादं न चक्रवर्त्तिभोजना दप्य धिकगुण, तथा चोक्त–तसिण भंत पुप्फफलाण करिस आसाए पन्नत्त गो०, से जहा नाम ए रन्नो चाउरंतसव्वक्कवट्टिस्स कल्लाणे भोयणजाए सयसहस्सनिप्पन्ने वन्नाववेणं धोववणमोववणफासोववेए आसायणिज्जेदप्पणिज्जे मयणिज्जे विहणिज्जे सव्विंदियगायपल्हायणिज्जे आसाएणं पन्नत्त गो० इणट्ठे समट्ठे तत पृथिवीकल्पद्रुमपुष्पफलानि च तेषां आहारः तथाभूत आहार आहार्य प्रासादादिसंस्थाना ये गृहाकाराः कल्पद्रुमास्तेषु यथासुखम् वतिष्ठन्ते, न च तत्र क्षुद्र दंशमशकयूकामत्कुणमक्षिकादयः शरीरोपद्रवकारिणो जन्तव उपजायन्ते ये ऽपि जायन्ते भुजगव्याघ्रसिंहादय ते पि मनुष्याणां न बाधायै प्रभवति नापि ते परस्परं हिंस्यहिंसकभाव वर्तन्ते कालानुभावतो रौद्रानुभावरहितत्वात्, मनुष्ययुगलानि च पर्यवसानसमये युगल प्रसूते तच्च युगलं कोनाशीतिदिनानि पालयन्ति तथा शरीरोच्छ्रयो ऽष्टौ धनुःशतानि पल्योपमा संख्येयभागप्रमाणमायु रुक्तंच अंतरदीवेसु नरो धणुसयअट्ठुसिया सया मुइया। पालति मिहुणधम्मं पल्लस्सअसंखभागाऊ ॥ १ ॥ चउसट्ठीपिट्ठकरंडयाण मणुयाण तेसिमाहारो। भत्तस्सचउत्थस्सय गुणसीइदिणाणि पालणया ॥ २ ॥ स्तोककषायतया स्तोकप्रेमानुबन्धतया च ऽते मृत्वा दिव मुपसर्पति मरणं च तेषां

हारग वहलिञ अज्जुल रोम पाम वउसा मलयाय वधुराय सूयलि कुकुणगमेच्छ पण्हव मालव मग्गर आभासिय कण वीरण ल्हासीय खसखासिय नेठूर मढ डोंबिलग लउस खउस कोंकणा अरवागा हूण

मढ डोंबिल गल उमल वउस कक्केय धरवा न्हूण रोम रझूण रोमग मढ मरुय चिलाय विसयवासीय एवमाई। सुयनना कोंकणना कनकना मेदना मालवना समरना आभासिकना कणवीरना वहासिना चउना पासिय नेउरना मढना डोंबिलना गनना उसानना वउसना कक्केनना अर्बना गोप

जृम्भकाकालुतादिमात्रव्यापारपुरस्सरं भवति न शरीरपीडारम्भपुरस्सर मिति, तदिव मुक्ता अन्तरद्वीपगा सम्प्रति अकर्मभूमिकप्रतिपादनार्थं माह-सेकिंत मित्यादि ॥ अथ के ते अकर्मभूमिका ? सूरिराह-अकर्मभूमिकास्त्रिंशद्विधा प्रज्ञप्ता -तद्यत्रिंशद्विधत्वक्षेत्रभेदात्-तथा चाह-तद्यथा पञ्चभिर्हैमवतैरित्यादि ॥ पञ्चभिर्हैमवतैः पञ्चभिर्हैरण्यवतैः पञ्चभिर्हरिवर्षैः पञ्चभि रम्यकवर्षैः पञ्चभि र्देवकुरुभिः पञ्चभि रुत्तरकुरुभि र्भिद्यमाना स्त्रिंशद्विधा भवन्ति यथा पञ्चानां त्रिंशत्सङ्ख्यात्मकत्वात्, तत्र पञ्चसु हैमवतेषु मनुष्या गव्यूतप्रमाणशरीरोच्छ्रया पल्योपमायुषो वज्रर्षभनाराचसंहनिनः समचतुरस्रसंस्थानाः चतुःषष्टिपृष्ठकरण्डका श्चतुर्थातिक्रमभोजिन एकोनाशीतिदिनान्यपत्यपालका उक्तञ्च-गाउयमुच्चा पलिउं व माउणो वज्जरिसहसंघयणा । हेमवएरन्नवए अहमिदनरा मिहुणवासी ॥ १ ॥ चउसट्ठीपिट्ठकरण्डया णमणुयाण तेसि माहारो । भत्तस्सचउत्थस्सय गुणसिइमिणवच्चपालणया ॥ २ ॥ पञ्चसु हरिवर्षेषु पञ्चसु रम्यकवर्षेषु द्विपल्योपमायुषो द्विगव्यूतप्रमाणशरीरोच्छ्रया वज्रर्षभनाराचसंहनिनः समचतुरस्रसंस्थानाः षष्ठभक्तातिक्रमाहारग्राहिणो ऽष्टाविंशत्यधिकशतसङ्ख्यापृष्ठकरण्डका श्चतुःषष्टिदिनान्यपत्यपालका, आह च-हरिवासरम्मएसु आउपमाण सरीरमुस्सेहो । पलिउवमाणि दोन्निय दोन्नियकोसुस्सिया भणिया ॥ १ ॥ छट्ठस्सय आहारो चउसट्ठिदिणाणि पालणा तेसिं । पिट्ठकरण्डा

रोमग नमरु विलाय वासीय एवमादी ॥ सेत्तमिलक्खू ॥ से किंत आयरिया ? आयरिया दुविहा पण्णत्ता, तंजहा इड्ढिपत्तारिया य अणिड्ढिपत्तारिया य । से किंत इड्ढिपत्तारिया ? २ छव्विहा पण्णत्ता, तंजहा—

ना रामना गौणना रामना मवना मरुनना चिलातना इणा देशवाशी इणतर आदिदेई । सेत्त मिलक्खू । म्लेच्छदेश कहिये । सेकित आयरिया दुविहा पणत्ता त० । हिवे आर्यदेश केतलाप्रकारे दायप्रकारे कह्या तेकहछे—इड्ढपत्तारिया अणिड्ढपत्तारिया । ऋद्धिवन्त आर्यमनुष्य ऋद्धिविना आर्यविना मनुष्य । सेकित इड्ढपत्तारिया २ छव्विहा पणत्ता त० । हिव ऋद्धिवत आर्यमनुष्य छप्रकारे कह्या ते कहेछे—अरिहंता चक्रवर्ती बलदेवा वासुदेवा चारणा विद्याहरा । अर्हन्त चक्रवर्त्त बलदेव वासुदेव चारण विद्याधर श्रमण । सेत्त इड्ढपत्तारिया । एतलेभेदे ऋद्धिवन्त कह्या आर्य ।

॥ टीका ॥

समय अष्टाविंस गुणेषु ॥ २ ॥ पञ्चसु देवकुरुषु पंचस्तुत्तरकुरुषु त्रिपल्योपमायुषो गव्यूतत्रयप्रमाणशरीरोच्छ्रया समचतुरस्रसंस्थान वज्रर्षभनाराचसं हनिन , षट्पञ्चाशदधिकशतद्वयप्रमाणपृष्ठकरण्डका अष्टमभक्तातिक्रमाहारिण एकोनपञ्चाशद्दिनान्यपत्यपालका , तथोक्तञ्च-दासु विकुरूसुमणुया तिपल्लपरमाउणोतिकोसुच्चा । पिठकरडसयाइ दोछप्पन्नाइमणुयाण ॥ १ ॥ सुसमसुसमाणुभाव अणुभवमाणाणवच्चगोवणया । अउणापन्नदिणाइ अट्ठमभत्तस्स आहारो ॥ २ ॥ एतेषु सर्वेष्वपि क्षेत्रेष्वन्तरद्वीपेष्विव मनुष्याणां मुपयाणां कल्पद्रुमसम्पादिता नवरं मन्तरद्वीपापेक्षया पञ्चसु हैरण्यव तेषु मनुष्याणां मुत्थानवलवीर्यादिक कल्पपादपफलानामास्वादोभूमेमाधुर्यमित्येवमादिकाभावा पर्याया नधिकृत्या नन्तगुणा द्रष्टव्या , तेभ्यो ऽपि पञ्चसु हरिवर्षेषु पञ्चसु रम्यकवर्षेषु अनन्तगुणा स्तेभ्यो ऽपि पञ्चसु देवकुरुषु पञ्चमू त्तरकुरुषु नन्तगुणा , तदेव मुक्ता अकर्मभूमिका सम्प्रतिक र्मभूमिकप्रतिपादनायमाह-सकिन्तमित्यादि अथ के ते कर्मभूमिका सूरिराह-कर्मभूमिका पञ्चदशविधा प्रज्ञप्ता स्तत्र पञ्चदशविधत्वक्षेत्रभेदात् तथा चाह-पञ्चहि भरतहि इत्यादि । पञ्चभिर्भरतै पञ्चभिरैरावतै पञ्चभिर्महाविदेहैर्भिद्यमाना पञ्चदशविधा भवन्ति , ते च पञ्चदशविधा

॥ मूल ॥

अरहंता चक्कवट्टी बलदेवा वासुदेवा चारणा विज्जाहरा ॥ सेत्तं इड्ढिपत्तारिया ॥ से किं तं अणिड्ढिपत्तारि या? २ नवविहा पण्णत्ता , तंजहा खेत्तारिया जातिआरिया कुलारिया कम्मारिया सिप्पारिया भासारिया

॥ भाषा ॥

सेकित अणिड्ढपत्तारियारिया २ नवविहा प० तं० । हिवे कुण अनऋद्धि , आर्य नवप्रकारे कह्या तेकहेछे—खित्तआयरिया जातिआयरिया कुलआयरि या कम्मआयरिया सिप्पआयरिया भासारिया नाणयरिया दंसणअरिया चरित्तआरिया । क्षेत्रार्य तीर्थंकर ऊपजे ते तीर्थंकरचेत जातिआर्य जेहनो जातिप्रसिद्ध कुलउत्तम ऊपना कलार्य कर्मविधानविषे डाहा सिल्पविषे आर्य भाषाआर्य बोलवैआर्य ज्ञानेआर्य दर्शनेकरीआर्य चारित्रेकरीआर्य । सेकि त खित्तारिया २ अद्धछव्वीस तिविहा प० तं० । हिवे क्षेत्रार्यना २५॥ साढापचवीस भेदकह्या तेकहेछे—रायगिहमगहचंपा अंगतहतामलित्तिवगा य कंचणपुरकलिंग वाणारसिचेवकासीया । राजगृही नगरी मगधदेश चम्पानगरी अंगदेश तिम तामलिप्तानगरी वंगदेश कञ्चनपुरी कलिंगदेश वा

समासतोद्विधा प्रज्ञप्ता तद्यथा-आर्या म्लेच्छा च तत्रारात् हेयधर्मेभ्यो याता प्राप्ता उपादेयधर्मैरित्यार्याः पृषोदरादय इति रूपनिष्पत्ति
म्लेच्छा अव्यक्तभाषासमाचारा म्लेच्छअव्यक्तायां वाचि इति वचनात् भाषाद्वारेण चोपलक्षणं तत शिष्टा, समस्त सकलव्यवहारा म्लेच्छा इति प्रति
पत्तव्य, तत्रा ल्पवक्तव्यत्वात् प्रथमतो म्लेच्छवक्तव्यतामाह-सेकितमित्यादि ॥ अथ के त म्लेच्छा मिलक्खू ? इतिनिर्देश प्राकृतत्वा दायत्वा च
सूरिराह-म्लेच्छा अनेकविधा प्रज्ञप्ता तद्या नेकविधत्व शकयवनचिलातशबरबर्बरादिदशनदात्-तथाचाह तद्यथा सगत्यादि शकदेशनिवासिन
शका यवनदेशनिवासिनोयवना एव सर्वत्र नवरं अमी नानादेशालोकतो विज्ञया । आर्यप्रतिपादनार्थमाह-सेकितमित्यादि॥सुगमं नवरं राजगि
हेत्यादि ॥ राजगृहं नगरं मगधाजनपद एव सर्वत्राप्यक्षरसस्कारोविधेय भावार्थस्त्वयं मगधेषुजनपदेषु राजगृहं नगरं १ अङ्गेषुचम्पा २ वङ्गेषुता
मलित्ती ३ कलिंगेषुकाञ्चनपुरं ४ काशीषु वाणारसी ५ कोसलासु साकेतं ६ कुरुषु गजपुरं ७ कुशावर्त्तेषु सौरिकं ८ पञ्चालेषु काम्पिल्यं ९ जङ्गलेषु
अहिच्छत्रा १० सुराष्ट्रेषु द्वारावती ११ विदेहेषु मिथिला १२ वत्सेषु कोशाम्बी १३ शाण्डिल्येषु नन्दिपुरं १४ मलयेषु भद्दिलपुरं १५ वत्सेषु वैराट

णाणारिया दसणारिया चरित्तारिया । से किंत खेत्तारिया ? २ अद्धछव्वीसतिविहा पण्णत्ता , तंजहा राय
गिहमगहचंपा अंगातहतामलित्तिवंगा य । कंचणपुरकलिंगा वाणारसि चेव कासीय ॥ १ ॥ साएयकोस

राणसीनगरी नियै काशो । साएयकोसलागाय पुरचकरसोरिञकुसट्टाय कापिल्लपञ्चाले अहिछत्ताजंगलाचेव । साकेतनगर कोशलदेश गजपुर कुरु सोरी
नगर कुश कापिलनगर पञ्चालदेश अहिछत्रानगरी ओथमा जङ्गलदेश नियै । दारवइयसुरट्ठा मिहिलविदेहायवत्थ कोसंबी नदीपुरसंडिल्ला भद्दिलपुरचे
वमलयाय । द्वारिकानगरी सोरठदेश मिथिलानगरी विदेहदेश कोसंबी नगरी वच्छदेश नान्दिपुर साण्डिलदेश भद्दलपुर नियै मलयदेश । वइराडि वच्छ
वरणा अच्छापुरहमित्तियावइदसणा सोत्तिमईयादेवी वीतभयसिंधुसोवीरा । वैराटदेश मच्छनगर वरणदेश वच्छापुरो मृत्तिकावतीनगरी दशार्णदेश
सोत्तिकावतीनगरी चेदिदेश वीतभयनगर सिंधुदेश सौवीरदेश । महुरायसूरसेणा पावाभंगीयमासपुरवट्टा सावत्थीयकुणाला कोडिवरिसायलाढाय ।

॥ टीका ॥

पुर १६ वरणेषु अच्छापुरी १७ दशार्णेषु मृत्तिकावती १८ चेदिषु शौक्तिकावती १९ वीतभय सिन्धुषु २० सौवीरेषु मथुरा २१ सूरसेनेषु पापा २२ भङ्गेषु मासपुरिवट्टा २३ कुणालेषु श्रावस्ती २४ लाटासु कोटीवर्षं २५ श्वेतम्बिका नगरी केकयजनपदस्यार्द्धं एतावद् द्वेपञ्चविंशतिजनपदात्मक क्षेत्र माय भणित, कुत इत्याह-जत्युप्पत्तिइत्यादि॥ यस्मा दत्र एतेषु अर्द्धषड्विंशतिसङ्ख्येषु जनपदेषु उत्पत्ति जिनानां तीर्थकराणां चक्रवर्तिनां रामाणां बलदेवानां कृष्णानां वासुदेवानां तत आर्यं गते न शेषार्यानायव्यवस्थिता दर्शिता, यत्र तीर्थकरादीनामुत्पत्ति स्तदार्यं शेषमनार्यमिति, उक्ता क्षेत्राया सम्प्रतिजात्यार्यप्रतिपादनाय माह-सकितमित्यादि सुगम॥ नवर यद्यपि शास्त्रान्तरेषु नेकजातय उपवर्ण्यन्ते तथापि लोके यता यत एम्य दकलिन्दवैदेहवदङ्गहरितचुञ्चुणरूपा इभ्यजातयो स्यचनीया जातय प्रसिद्धा स्तत एतास्त्रि जातित्रि रुपपता जात्यार्या न शेषजातिभि॥ तन्नागा इत्यादि॥ तुणाका सूच्याजीविन तन्तुवाया कुविन्दा पट्टकारा पट्टसूत्रकुविन्दा देयडा दृतिकारा वरुडा विच्छिका जड्डिका कटादिकारा॥ कठपात

॥ सूत्रं ॥

लागय पुरचक्कसोरियकुसट्टा य। कपिल्लपंचाला अहिछत्ताजगलाचेव॥ २॥ दारवतीयसुरट्ठा मिहिलविदेहायवच्छकोसंबी। नंदिपुरसंडिल्ला भद्दिलपुरमेवमलया य॥ ३॥ वइराडवच्छवरणा अच्छालहमत्तियावइदसणा। सोत्तियमइचावदी वीइभयसिंधुसोवीरा॥ ४॥ महुरायसूरसेणा पावाभंगीयमासपुरिवट्टा। सावत्थीयकुणाला कोडीवरिसचलाढाय॥ ५॥ सेयवियावियनगरी केयइअद्धंचआरियंभणियं। एत्थुप्प

॥ भाषा ॥

मथुरानगरी सूरसेनदेश पावानगरी भङ्गदेश मासपुर वास्योनगरी कुणालदेश कोटिवर्षनगरी लाटदेश। सेयविया विणयरी के अइदेश आधो आर्य देश थयो तीर्थकर चक्रवर्तिरामकृष्णा। श्वेताम्बिकानगरी विजाता तीर्थंकर अङदेश ते का अर्द्धे देशे आर्य इणा देशानरोत्पत्ति जिन च क्रो बलदेव कृष्ण। शेष खर्वार्यनार्या। तम ट चेत्रार्यदेश। सेंकि त जातिआर्यरिया २ छ प्रकारे प० त०। हिवे जातिआर्य कहछे—ते जातिआर्य छ प्रकारे कह्या ते कहेछे। प्र हआरक लदा। दृशावैरागाइर हरिय चुंचुणाचे। छ ए इभ्यजाइया। अंबट्टा न कलिन्दा न विदेहनामे चन्द्रगाइवनाम हरितनाम चन्चुणनामे ए

यारा॥ काष्ठपादुकाकारा एव ॥ भुजपात्रयारा छत्रारा ॥ छत्राकारा एव शेषाण्यपिपदानि भावनीयानि, यन्नीजवणागियाइत्यादि ॥ ब्राह्मी यवनानी त्यादयो लिपिभेदा स्तु सम्प्रदाया दवसेया , उक्ता भाषार्या सम्प्रतिज्ञानायानाह-सेकितमित्यादि सुगम ॥ अथ के ते दर्शनार्या सूरिराह-दर्शनार्या द्विविधा प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-सरागदर्शनार्या वीतरागदर्शनाया श्च तत्रसराग मकषाय सद्दर्शन तेनार्या सरागदर्शनार्या , वीतराग मुपशान्तकषायक्षीणक षाय वा य द्दर्शन तेनाया वीतरागदर्शनार्या , तत्र सरागदर्शनायप्रतिपादनाय माह-सकितमित्यादि ॥ अथ के ते सरागदर्शनार्या सूरिराह-सरागदर्शनार्या दशविधा प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-निसग्गुवएसित्यादि ॥ अथ रुचिशब्द प्रत्येकम भिसम्बध्यते ततो निसर्गरुचि रिति द्रष्टव्य ' तत्र निस र्ग स्वभाव स्तेन रुचि र्जिनप्रणीततत्त्वाभिलापरूपा यस्य स निसर्गरुचि , उपदेशो गुर्वादिना वस्तुतत्त्वकथन तेनरुचि रुक्तस्वरूपा यस्य स उपदे शरुचि , आज्ञा सर्वज्ञवचनात्मिका तस्या रुचिरो ऽभिलापो यस्य स आज्ञारुचि ' जिनाज्ञैव मेतत्व न शेष युक्तिजातमिति यो भिमन्यते स आ

त्तिजिणाण चक्कीणरामकण्हाण ॥ ६ ॥ सेत्तखेत्तारिया ॥ से कित जाइआयरिया ? २ छव्विहा पण्णत्ता, तजहा-अंबठायकलिंदा विदेहावेदगाइय । हरियाचुचुणाचेव छएयाइब्भजाइत्त ॥ ७ ॥ सेत्त जाइआरियाय ॥ से कित कुलारिया ? २ छव्विहा पण्णत्ता, तजहा-उग्गा भोगा राइण्णा इक्खागा नाता कोरव्वा । सेत्त कुलारिया ॥ से कितं कम्मारिया ? २ अणेगविहा पण्णत्ता, तजहा-दोस्सिया सुत्तिया कप्पासिया

छजाति आर्य कहिये । सत्तनाति आर्यारिया । ए ज ति आर्य कह्या । सेकित कुलआयरिया २ छ व्विहा प०त० । हिवे कुलआर्य कहेछे, ते कुलआर्य छ प्रकारे कह्या ते कहछे—उग्गाभोगाराइणा इक्खागानातायाकोरव्वा । उग्रकुल भोगकुल राजकुल इक्ष्वाकुकुल ज्ञातिकुल कौरवकुल ६ । सत्तकुलआयरिया ए छभेद आर्यकुल । सेकित कम्मायरिया २ अणगविहा प० त० । हिवे कर्मआर्य कहछे ते अनेकप्रकारे कह्या तेकहछ—दोसिया सुत्तिया कप्पा सीया मुत्तिवेयालिया भंडवेयालिया कोलालिया नरवाहणिया । दोसिका जातिविशेष सौत्रिका कर्पासिकामुक्तिवैतालिका भण्डवैतालिका जातिविशेष

॥ टीका ॥

शारुचि रिति भावार्थ , सुत्तवीयरुयमेवत्ति ॥ अत्रापि रुचिशब्द प्रत्येकम भिसवध्यते सूत्रमा चाराङ्गाद्यङ्गप्रविष्ट अङ्गबाह्य आवश्यकदशवैका लिकादि तन रुचि यस्य स तथा सूत्रमा चारादिक मङ्गप्रविष्ट अङ्गबाह्यवा आवश्यकादिक मभिधीयमानो य सम्यक्त्व मवगाहते प्रवन्न २ तराध्य वसाय श्च भवति स सूत्ररुचि रिति भावाथ , बीज मिव बीज य देक मप्यनेकार्थप्रबोधोत्पादक वच स्तेन रुचि यस्य स बीजरुचि• अनयो श्च पद यो समाहारो द्वन्द्व तेन नपुसकनिर्देश इतिसमुच्चये, अहिगमवित्थाररुइत्ति ॥ अत्रापि रुचिशब्दस्य प्रत्यक मभिसम्बन्धो धिगमरुचिविस्ताररुचि श्च तत्रा धिगमो विशिष्ट परिज्ञान तेनरुचि यस्या सा वधिगमरुचि विस्तारो व्यास सकलद्वादशाङ्गस्य नयै पर्यालोचन मितिभाव तेनो, पचृत्ति ता रुचिर्यस्य स विस्ताररुचि , किरियासखेवधम्मरुइत्ति॥ रुचिशब्दस्या ऽत्रापि प्रत्येकसम्बधात् क्रियारुचि सङ्क्षेपरुचि द्रुमरुचि रिति द्रष्टव्य-तत्र

॥ मूल ॥

मुत्ताविया जीया भरुवेयालिया कोलालिया नरवाहणिया जेयावन्ने तहप्पगारा। सेत्त कम्मारिया॥ से किंत सिप्पारिया ? २ अणेगविहा पन्नत्ता, तजहा–तुन्नागा ततुवाया पट्टागारा देयडा वरुडा कट्ठपाउयारा मुजपाउयारा छत्तारा वज्झारा पच्छारा पोत्थारा लेप्पारा चित्तारा सखारा दतारा भडारा जिब्भगारा सेल्ला रा कोट्टिगारा जेयावन्ने तहप्पगारा ॥ सेत्त सिप्पारिया ॥ से किंत भासारिया २ जेण अद्धमागहाए भा

॥ भाषा ॥

कालादिक नरवाहनिका । जेयावन्नेतहप्पगारा । ज बीजेरा तथाप्रकारे । सेत्त कम्मायरिया । ते कर्मार्य कह्या । सेकित सिप्पायरिया २ अणेगविहा प० त० । हिवे शिल्पार्य विज्ञाननाआर्य तेहना पिण अनकभेद कह्या ते कहेछे—तुणागा ततुवाया पट्टागारा देवडा वरुडागा कट्ठपाउयारा मुजपाउयारा छत्तारा वज्झारा पच्छारा लेप्पारा चित्तारा सखारा दतारा भडारा जिब्भगारा सेल्लारा कोट्टिगारा । तुन्नारा वणकर पट्टाकारा देवड कोइ टिगाविशे प लिप्पारा चित्रकारा शखारा दत्तारा । जयावन्नेतहप्पगारा सेत्त सिप्पायरिया । जे बीजेरा एहवा तथाप्रकारना ते शिल्पार्य कह्या । सेकित भासाय रिया २ अणेगविहा प० त० । हिवे भाषार्यनाभेद कहेछे—तहना अनेकभेद जाणिवा । जण अद्धमागहाए भासति । जे अर्द्धमागधीभाषा बोले । जत्थ

क्रिया सम्यक् संयमानुष्ठानं तत्र रुचि र्यस्य स क्रियारुचि सक्षेप संग्रह तत्र रुचि र्यस्य विस्तारार्थापरिज्ञाना त्सक्षेपरुचि धर्मे अस्तिकाये धर्मे श्रुतधर्मादौ वा रुचि र्यस्य स धर्मरुचि रिति गाथा सक्षेपार्थ तु सूत्रकृदेव स्वत आह भूयत्थेण इति । भावप्रधानो निर्देश स्ततो य र्थ -भूताथ त्वेन सद्भूता अमी पदार्था इत्येव रूपेण यस्या धिगता परिज्ञाता जीवा जीवा पुण्यपाप मास्रवसम्वर श्च शब्दा द्वन्धादय श्च कथ मधिगता इत्याह सहसम्मुइया इति ॥ आर्पत्वा द्विभक्तिलोपाच्चसहसन्मत्यासहात्मना या सङ्गता मति सा सहसन्मति स्तया कि मुक्त भवति परोपदेशनिरपेक्षया जातिस्मरणप्रतिभादिरूपया मत्या न केवल मधिगता किन्तु तान् जीवादीन् पदार्थान् वेदयते नुरोचयति-च तत्त्वरूपतया आत्मना स्वरेण । मयति चेति भाव , एष निसर्गो निसर्गरुचि विज्ञेय इति शेष , अमु मेवा र्थस्पष्टतर मभिधित्सु राह-जो जिणदिट्ठे भावे इत्यादि ॥ यो जिनदृष्टान् भावन् द्रव्यक्षेत्रकालभावभेदतो नामादिभेदतो वा चतुर्विधान् स्वय मेवा परोपदेशनिरपेक्ष श्रद्दधाति केनो ल्लेखन श्रद्दधाति तत आह-एव मेव एत ज्जीवादि यथा जिनै र्दृष्ट ना न्यथेति च समुच्चये एष निसर्गरुचि रिति ज्ञातव्य, उपदेशरुचि माह-एए चेव इत्यादि ॥ एतानेव जीवादीन् भावान् य परेण छद्मस्थेन जिनेन वा उपदिष्टान् श्रद्दधाति एष उपदेशरुचि ज्ञातव्या , आज्ञारुचि माह-जो हेउ मयाणतो इत्यादि॥ यो हेतु वि

साए आसति, जत्थविय ण बंभीलिवी पवत्तइ बंभीएण लिवीए अट्ठारसविहे लेखविहाणे पण्णत्ते, तजहा बंभीजवणाणिया दासापुरिसा खरुट्ठी पुक्खरसारिया भोगवइया पहराइया अतक्खरिया अक्खरपुट्ठिया वेणइया निण्हइया अंकलिवी गणियलिवी गधव्वलिवी आयासलिवी माहेसरी दोमिली पोलिंदी ॥१८॥

जिहां बंभीलिवी प्रवर्त्तइ । जिहा ए ब्राह्मीलिपि प्रवर्त्तके । बंभीएणं लिवीए अट्ठारसविहे लिपविहाणे प० त० । ते ब्राह्मीलिपी तेहनेविषे पहवी १८ प्रकारे लिपिविधान कह्या ते कहेछे—बभी जवना लिया दासा पुरिया खरोट्ठी पुक्खरसारिय भोगवइयाच्छ पहराइया अतक्खरिया अक्खरपुट्ठिया वेणइया निण्ह इया अंकलिवी गणियालिवी गधव्वलिपी आयसलिवी माहेसरी दामली प लिंदी १८ । ब्राह्मीलिपि यवनालिपि निखलिपि दासा पुरुषा खरोट्ठी पुष्कर

॥ टीका ॥

वस्तितार्थंगमत्र मथानान प्रवचन मार्गेव तु शब्द एवकारार्थे, केवलारोचते कथमि त्याह-एव मेतत् प्रवचनोक्त मयेजात ना न्यथेति एष आज्ञा रुचि र्नाम, सूत्ररुचिमाह-जोसुत्त मित्यादि ॥ य सूत्र मङ्गप्रविष्ट मङ्गबाह्य वा अधीयान स्तेन श्रुतेनाङ्गप्रविष्टेना ङ्गबाह्येन वा सम्यक्त्व मवगाहते स सूत्ररुचि रिति ज्ञातव्य, बीजरुचि माह-एगपएणगाइ इत्यादि ॥ एकेन पदेन प्रक्रमात् जीवादिना अनेकानि पदानि प्राकृतत्वेन विभक्तिव्य त्ययाद नेकेषु जीवादिषु पदेषु य सम्यक्त्व मिति धमधर्मिणो रभेदोपचारात् सम्यक्त्ववान् आत्मा प्रसरति तु शब्दो वधारणार्थ प्रसरत्येव कथमि

॥ मूल ॥

सेत्त भासारिया ॥ से किंत नाणारिया ? २ पचविहा पण्णत्ता, तजहा—आभिणिबोहियनाणारिया सुयना णारिया ओहिनाणारिया मणपज्जवनाणारिया केवलनाणारिया ॥ सेत्त नाणारिया ॥ से किंत दसणारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तजहा—सरागदसणारिया य वीयरागदसणा० । से किंत सरागदसणारिया य ? २ दस विहा पण्णत्ता, तजहा निस्सग्गुवदेसरुई आणारुइसुत्तबीयरुइचेव । अभिगमवित्थाररुई किरियासखेवध

॥ भाषा ॥

सारिका भोगवती अक्षरिचका अक्षरपृष्टिका वेणकीया निन्हिका अकलिपि गणितलिपि गन्धर्वलिपि आदर्शलिपी महेश्वरीलिपी दामलीलिपि पुलि न्दी १८। सेत्त भासायरिया। ते एतले भाषार्य। सेकित नाणयरिया २ पचविहा प० त०। हिवे ज्ञानार्य कहछे, ते ज्ञानार्य पचप्रकारे कह्या ते कहे छे। आभिणिबोहियनाणायरिया सुयनाणायरिया ओहियनाणायरिया मणपज्जवनाणायरिया केवलनाणायरिया। मतिज्ञानार्य श्रुतज्ञानार्य अव धिज्ञानार्य मनपर्यवज्ञानार्य केवलज्ञानार्य। सेत्त नाणायरिया। एतले ज्ञानार्य कह्या। सेकित दसणायरिया २ दुविहा प० त०। हिवे दर्शनार्य ते द र्शनार्यनाभेद दोयप्रकारे कहे। सरागदसणायरिया वीयरागदसणायरिया। सरागदर्शनार्य वीतरागदर्शनार्य। सेकित सरागदसणायरिया २ दसविहा प० त०। एतले सरागदर्शनार्यनाभेद तेहना १० प्रकार कहछे—निसग्गुवएसरुइ आणारुइसुत्तबीयरुइचेव अभिगमवित्थाररुइ किरियासखेवधम्मरु इ। १। निसर्गरुचि उपदेशरुचि आज्ञारुचि सूत्ररुचि बीजरुचि अभिगमरुचि शास्त्रविचाररुचि क्रिया सक्षेपरुचि धर्मरुचि। भूयत्थेणाहिगया जीवाजो

त्याद उदक इव तैलविन्दु किमुक्त भवति यथा उदकैकदेशगतो ऽपि तैलविन्दु समस्त मुदक माक्रामति तथैकदेशोत्पन्नरुचि रप्यात्मा तथावि धक्षयोपशमभावा दशेषेषु तत्वेषु रुचिमान् भवति स एवंविधो बीजरुचि रिति ज्ञातव्य । अधिगमरुचि माह-सो होइ इत्यादि ॥ यस्य श्रुतज्ञान

म्मरुई ॥१॥ भूयत्थेणाऽधिगया जीवाजीवायपुण्णपावंच । सहसमुइयासवस वरोयवेयइएणिसग्गो २ ॥ जोजिणदिठेभावे चउव्विहेसद्दहासयमेव । एमेवणणहत्तिय णिसग्गरुइत्तिणाइव्वो ॥ ३ ॥ एएचेव उभावे, उवदिठेजोपरेणसद्दहइ । छउमत्थेणजिणेणव उवएसरुइत्तिणायव्वो ॥ ४ ॥ जोहेउमयाणतो आणाएरोयएपव यणतु । एमेवणणहत्तिय एसोआणारुईनामा ॥ ५ ॥ जोसुत्तमहिज्जंतो सुएणउगाहईउसम्मत्त । अंगेणवा हिरेणव सोसुत्तरुइत्तिनायव्वो ॥ ६ ॥ एगपएणेगाइ पदाइजोपसरईउसम्मत्त उदउव्वतिल्लविंदू सोबीयरुइ त्तिनायव्वो ॥ ७ ॥ सोहोइअभिगमरुई सुयनाणजस्स अत्थओदिठं एकारसअंगाइ पइण्णगादिठिवाओय ॥८॥

वेयपुण्णपावच सहसमइआसवस वरेयहांऽआसणिसग्गो । २ । भूतार्थपणारा भव्यकरिके छठोछे बुद्धि जे पदार्थोंरा जाण्या जीवाजीव पुण्य पाप सहस्र मति आश्रव सम्वर तेहने निसर्ग कहिये । जोजिणदिठेभावे चउव्विहेसद्दहाऽसयमेव एमेवणणहत्तय निसग्गोरुइत्तिणायव्वो । ३ । जे जिन दीठाछे भाव द्रव्यभावेकरी ते सद्दहे खरोकरी माने पातेनो निमूगपणे सद्दहे ते निसर्गकहिय तत्र निसर्ग स्वभावस्तेनरुचि जिनप्रणीततत्त्वाभिलाषरूपोयस्यसनि । एएचेवउभावे उवइठेजोपरेणसद्दहइ छउमत्थेणजिणेणव उवएसरुइत्तिणायव्वो । ४ । हिवे उपदेशरुचि कहेछे, ते जीव अजीवादिनाभाव जे उपदिष्ट पर ने कहेथके साचो सर्व छद्मस्थेकह्यो ते तथाभावन्ते कह्यानी परमाणु ते उपदेशरुचि कहेछे, हिवे आज्ञारुचिभेद कहेछे —जोहेउमयाणतो आणाए रोइएपवयणतु एमेवणन्तइत्तिए एसोआणारुईनामाए ५ । जे हेतु सिद्धान्तना कह्या अर्थछे ते अणजाणतोथको प्रवचननी आज्ञा तेरुचि मनसू धर्मे शुभ वस्तुनोपरे वणभलागे एज सिद्धांतमाहि कह्या ते अन्यथा हुवे नहो एहवेभावे प्रवर्त्ते ते आज्ञारुचि कहिये । जोसुत्तमहिज्जंतो सुएणउगाहइउसम्मत्त अंगे

मर्यतो दृष्ट मेकादशाङ्गानि प्रकीर्णक मित्यत्र जाता वेकवचन-ततो यमर्थ प्रकीर्णानि उत्तराध्ययनादीनि दृष्टिवाद श्च शब्दादुपाङ्गानि च स भव त्यधिगमरुचि , विस्ताररुचि माह-दव्वाण त्यादि ॥ द्रव्याणा धर्मास्तिकायादीना मशषाणा मपि सर्व भावा पर्याया यथायोग सर्वप्रमाणै प्रत्य क्षादिभि सर्वैश्च नयविधिभि नैगमादिनयप्रकारै उपलब्धा स्स विस्ताररुचि रिति ज्ञातव्य ॥ सववस्तुपर्यायप्रपचावगमेन तस्या रुचे रतिवि मलरूपतया भावात् ॥ क्रियारुचिमाह-दसणत्यादि ॥ दर्शन च ज्ञान च चारित्र च दर्शनज्ञानचारित्र समाहारो द्वद्व स्तस्मिन् तथा तपसि विन य च तथा सवासु समितिषु ईर्यासमित्यादिषु सर्वासु च गुप्तिषु मनोगुप्तिप्रभृतिषु या क्रियाभावा रुचि रि मुक्त भवति यस्य भावतादर्शनाद्या चारानुष्ठाने रुचि रस्ति सखलु क्रियारुचिर्नाम, सङ्क्षेपरुचिमाह-अणभिग्गयिसत्यादिना ॥ अभिगृहीता कुत्सिता दृष्टि येन सो ऽनभिगृहीतकुदृष्टि रपि

दव्वाणसव्वभावा सव्वपमाणेहिजस्सउवलद्धा सव्वाहिनयविहीहि वित्थाररुइत्तिनायव्वो ॥ ९ ॥ दसणनाणच रित्ते तवविणएसव्वसमिइगुत्तीसु जोकिरियाभावरुईसो खलुकिरियारुईनामा ॥ १० ॥ अणभिग्गहियकुदिट्ठी

णयाहिरेणवा सोसत्तरुइत्तिनायव्वो ६ । जे सूत्र सिद्धान्त भणतोथको सूतने अगवाही सम्यक्त्वकरोने भणे अगप्रविष्ट आचारागादि अगबाह्य उत्तराध्ययना दि तेहने सूत्र रुचि कहिये । एगपएणेगाइ पयाइ जापसरइयसम्मत्त उदएव्वतिल्लबिंदू सोबीयरुइत्तिनायव्वो ७ । एक पदेकरी अनेक पदनाभाव अनुक्रमे पसरे विस्तरे एक जीवादिक पदार्थ सम्यक्त्वादि अनेकभावे जिम पाणीऊपर तेलबिंदुवा विस्तारपामे तेहने बीजरुचि कहिये । सोहोइअभिगमरुई सुय नाणजस्सअत्थओदिट्ठ इक्कारसअगाइ पइन्नगदिट्ठिवाओय ८ । जिणे सुतज्ञाने अर्थेकरी दीठा अर्थ जाणे अर्थकरी ११ अगना प्रकीर्णक उत्तराध्ययनादिक दृष्टि वाद उपागादि तेहना अर्थ समभ्या छै ते अभिगमरुचि कहिये । दव्वाणसव्वभावा सव्वपमाणेहिजस्सउवलद्धा सव्वाहिनयविहीहि वित्थाररु इत्तिनायव्वो ९ । छवि वस्ताररुचि कहछे—द्रव्यादि धर्मास्तिकायादि ६ बीजा पाकता अनेक सर्व भावपर्याय यथायोग्यप्रमाण प्रत्यक्ष सर्वप्रकार उपलब्ध पाम्याछे सर्व नैगमादिकनयनाविधिकरी समभ्या छै ते विस्तारुचि कहिये । दसणनाणचरित्ते तवविणएसव्वसमिइगुत्तीसु जोकिरियाभावरुई सोखलुकिरियारुईनामा १०।

समस्त मुदक माक्रामति तथैकदेशोत्पन्नरुचि रप्यात्मा तथावि

...माइ-सो होइ इत्यादि ॥ यस्य श्रुतज्ञान

...गो २ ॥

रिद मुत्पन्न मस्तीति निर्ग...

स्तपु मस्त ...

...सवन पर्युपास्ति सुदृष्टिपरम...

दसगाति ॥ दष्टानज्ञाव्द प्रत्यक मत्रिमस्य यतं व्यापन्न विनष्ट...

शाक्यादय स्तेषा वजन व्यापन्नकुदर्शनवजनम् अत्रापि स्त्रीत्व प्राकृतत्वात् ॥

...इनायवो अविनारत्तुपवयणे अगन्तिग्गहिंयसंमेसु ॥ ११ ॥ जो अस्तिकायकम्म सुयम...

...सोधम्मरुइत्तिनायव्वो ॥ १२ ॥ परमत्यसथवोवा सुदिठपरमत्यसेवणावा

...वेहनो क्रियानविषे भावरुच ते भावरुचि कहिये निश्चे क्रियारुचि कहिये छे—अणभिग्गहो उक्त...

ववणे अणभिग्गहियाय समेसु ११ । अभिग्रहीता कुमतादृष्टा, नम्रहो जेणे माठीइष्टि कापिलादि प्रणोत प्रव

कहिये संक्षेपसमझ तरनाचिंत्य मविस्ताथ परिज्ञाना संक्षेपरुचि अविसार प्रवचनविषे अप्रत्यक्ष अपरग्रंन पर

...यधम्म सुयधम्म चारित्तधम्म सद्दहइजिणाभिहिय सोधम्मरुइत्तिनायव्वा १२ । जे जीव अस्तिकाय धर्मा

॥ टीका ॥

न यति परमार्थसंस्तवादिभि सम्यक्त्व मस्तीति श्रद्धीयते इत्यर्थ , अस्य च दर्शनस्या चारा अष्टौ ते सम्यक् परिपालनीया तदतिक्रमे दर्शनस्या ऽव्यतिक्रमभावात् अत स्तानुपदर्शयितु माह-निस्संकिय इत्यादि ॥ शकन शङ्कित देशशङ्का सर्वशङ्का च त्यर्थ , निर्गत शङ्कित यस्मा दसौ नि॰ शङ्कितो देशसर्वशङ्कारहित इति भावार्थ , तत्र देशशंका समाने जीवत्व कथ मको भव्यो ऽपरस्त्व भव्य इति सर्वशङ्का प्राकृतनिबद्धत्वा त्सकल मवद प्रवचन परिकल्पित भविष्यतीति न चैव देशशङ्का सर्वशङ्का वा युक्ता यत इह द्विविधा भावा स्त यथा-हेतुग्राह्या अहेतुग्राह्या जीवा स्ति त्वादय स्तत्साधकप्रमाणसद्भावात् अहेतुग्राह्या भव्यत्वादय अस्मदाद्यपेक्षया तत्साधकहेतूना मसम्भवात् प्रकृष्टज्ञानगोचरत्वा त्तद्धेतूना मिति प्रा कृतो ऽपि च निबन्ध प्रवचनस्य बालाद्यनुग्रहाय उक्तञ्च-बालस्त्री मूढमूर्खाणा नृणा चारित्रकाङ्क्षिणा ॥ अनुग्रहार्थं तत्वज्ञै सिद्धान्त प्राकृत स्मृत ॥ १ ॥ अपि च प्राकृतो पि निबन्ध प्रवचनस्य दृष्टेष्टाविरोधी तत कथ मवान्तरपरिकल्पना शङ्का सर्वज्ञम न्तरेणान्यस्य दृष्टेष्टाविरोधवच नासम्भवात् निशङ्कित इति जीव एवा स्वेष्टासनप्रतिपन्नो दर्शनाचरण तत् प्राधान्यविवक्षाया दर्शनाचार उच्यते-एतेन दर्शनदर्शनिनो कथंचि द्भेद माह-एकान्तभेद त्व दर्शनिन इव तत्फला योगतो मोक्षाभावप्रसङ्ग एव मुत्तरेष्वपि त्रिषु पदेषु भावनाकाया, तथा नि काङ्क्षित इति काङ्क्षणं काङ्क्षित

॥ मूल ॥

वि । वावन्नकुदंसणवज्जणाय सम्मत्तसद्दहणा ॥१३॥ निसंकियनिक्कंखिय निव्वितिगिच्छाअमूढदिट्ठीय उववू हथिरीकरणे वच्छल्लपभावणेअट्ठ ॥ १४ ॥ सेत्तं सरागदंसणारिया । से किंत वीयरागदंसणारिया ? २ दु

॥ भाषा ॥

स्तिकायादिक स्वरूप स्वभाव श्रुतधर्म ते विषमै भगवन्तना जेवम साचा करी श्रद्धे ते धर्मरुचि कहिए, ए निसर्ग दर्शभेदे रुचिरूप दर्शनकह्यो, हिवे जिण लिंगे ए ऊपनाछे ते लिं। दर्शादिरूप छे दर्शनाचार। दर्शनस्वरादिदर्शनानि शामितानि इति। परमत्थसंथवोवा सुदिट्ठपरमत्थसेवणावावि वावन्नकुदंसणवज्जणाय सम्मत्तसद्दहणा ॥ १३ ॥ परमतत्त्वनाअर्थं जीवादिक तेपरमार्थ तेहना सम्तवन परिचयगुण करवो इति परमार्थ जीवादिकरूडो दीठो जेहनो सेवता सुदृष्टि परमार्थ । सेवनाकरे विणर्प २ कुदर्शन विपाते कुदर्शना ते जाव सम्यक्त्वनो अद्दहणा करवी, हिवे सम्यक्त्वना ८ अतीचार कहछे—प्रवचननी देश

शारद प्रवचने जिनप्रणीते शेषेषु च कपिलादिप्रणीतेषु प्रवचनेषु अनभिगृहीतो न विद्यते अभिमुख्येन उपादेयतया गृहीतं प्रवचनं यस्येत्यनभि गृहीत एव मनभिगृहीतकुदृष्टि रित्यनेन परदर्शनान्तरपरिग्रह प्रतिषिद्धा नेन परदर्शनपरिज्ञानमात्र मपि निषिद्ध मिति विशेष ' स इत्यमून सनपरुचि रिति ज्ञातव्य , धर्मरुचिमाह ॥ जोअत्थिकायत्यादि ॥ य खलु जीवो स्तिकायाना धर्मास्तिकायादीना धर्म गत्युपष्टम्भकत्वादिस्वभा व श्रुतधर्म चारित्रधर्म च जिनाभिहित श्रद्दधाति सधर्मरुचि ज्ञातव्य , तदेव निसर्गाद्युपाधिभेदा दशधा रुचिरूप दर्शनमुक्त-मनन्तरं ये लिङ्गै रिद मत्पन्न मस्तीति निश्चीयते तानि लिङ्गान्यु पदर्शयन्नाह-परमत्थसथवो इत्यादि ॥ परमा श्च तात्त्विका श्च ते ऽर्था श्च जीवादय स्ते परमार्था स्तेषु संस्तव परिचय तात्पर्येण बहुमानपुरस्सर जीवादिपदार्था नामाभ्यास इति यावत् वा शब्द समुच्चये सुष्ठु सम्यग्रीत्या दृष्टा परमार्था जीवादयो यै स्ते सुदृष्टिपरमार्था स्तेषा सेवन पर्युपास्ति सुदृष्टिपरमार्थसेवन स्त्रीत्व प्राकृतत्वा द्वा शब्दो नुक्तसमुच्चये यथाशक्ति त द्वैयावृत्त्य प्रवृत्ति श्च अपि समुच्चय तथा॥वावन्नकुदंसणवज्जणा॥दर्शनशब्द 'प्रत्येक मभिसम्बध्यते व्यापन्न विनष्ट दर्शन येषान्ते व्यापन्नदर्शना निह्नवादय , तथा कुत्सित दर्शन येषाते कुदर्शना शाक्यादय स्तेषा वर्जन व्यापन्नकुदर्शनवर्जनम् अत्रापि स्त्रीत्व प्राकृतत्वात् ॥ सम्मत्तसद्दहणा इति ॥ सम्यक्त्वश्रद्धा

सव्वेवरुइत्तिहोइनायव्वो अविसारओपवयणे अणभिग्गहिओयसेसेसु ॥ ११ ॥ जोअत्थिकायधम्मं सुयधम्मंखलु चरित्तधम्मंच सद्दहइजिणाभिहियं सोधम्मरुइत्तिनायव्वो ॥ १२ ॥ परमत्थसंथवोवा सुदिट्ठपरमत्थसेवणावा

दर्शन ज्ञान चरित्र तप विनय सत्य समिति गुप्ति ए वेहनी क्रियानेविषे भावरुचि ते भावरुचि कहिये निर्ये क्रियादेपि कहियेछे—अणाभग्गहीयकुदिट्ठी संखेवरुइत्तिहोइनायव्वो अविसारओपवयणे अणभिग्गहियसेसेसु ११ । अभिग्रहनोता क कताहष्ट', नम्हैो जेणे साठीदृष्टि कापिलादि प्रणीत प्रव चन ते सर्वेपिरि ते ए बने संक्षेपरुचि कहिये संक्षेपसमज तत्वावबस्य सविस्तार परिनाना संक्षेपरुचि अविसार प्रवचनविषे अप्रवत्त अपरदर्शन पर ज्ञानविषे त संक्षेपरुचि कहिये । जोअत्थिकायधम्म सुयधम्मखलुचरित्तधम्मंच सद्दहइजिणाभिहियं सोधम्मरुइत्तिनायव्वो १२ । जे जीव अस्तिकाय धर्म

उक्त सम्प्रतिगुणप्रधान माह-उववूहेत्यादि ॥ उपवृहण च स्थिरीकरण च उपवृहणस्थिरीकरणे तत्रो पवृहण नाम समानधार्मिकाणा सद्गुणप्रशसनेन तद्वृद्धिकरण धर्माद्विषीदता तत्रैव स्थापन, वाच्छल्य च प्रभावना च वाच्छल्यप्रभावने तत्र वाच्छल्यसमानधार्मिकाणा प्रीत्या उपकारकरण प्रभा वना धमकथादिभि स्तीर्थप्रख्यापना अय च गुणप्रधानो निर्देशो गुणगुणिनो कथचि द्भेदख्यापनार्थ मन्यथा एकान्ता भेदे गुणनिवृत्तौ गुणिनोपि निवृत्ते शून्यतापत्ति एते ऽष्टौ दर्शनाचारा स्त देव मुक्ता सरागदर्शनभेदा स्तदभिधानाच्चा भिहिता सरागदर्शनार्यभेदा, सम्प्रति वीतरागद र्शनार्यभेदानाह-सेकितमित्यादि सुगमा यावत् अहवा चरित्तारिया पचविहा प० त० सामाइयचरित्तारिया इत्यादि ॥ नवर पढमसमय अपढ

य अचरिमसमयउवसतकसायवीतरागदसणारिया य। से कित खीणकसायवीतरागदसणारिया ? २ दु विहा पणत्ता, तजहा छउमत्थखीणकसायवीतरागदसणारिया केवलिखीणकसायवीतरागदसणारिया य। से कित छउमत्थखीणकसायवीतरागदसणारिया ? २ दुविहा पणत्ता, तजहा सयबुद्धछउमत्थखीणकसाय वीतरागदसणारिया बुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागदसणारिया। से कित सयबुद्धछउमत्थखीणक

वीतरागदर्शनार्यना दोयभेद कह्या ते कहेछे—पढमसमयउवसतकसाय वीयरागदसणारिया। प्रथमसमय वर्त्तता उपशान्तकषाय वीतराग दर्शना यरिया। अपढमसमय उवसतकसाय वी०। द्वितीयादिकसमय वर्त्तता उपशान्तकषाय वीतराग दर्शनार्यना बेभेद कह्या। अहवा चरमसमयउवसत कसाय वी०। अथवा ते उपशान्तकषायने अन्तसमय वीतराग दर्शनार्य कहिये। अचरमसमयउवसतकसाय वी०। दूजे चौजसमय वर्त्तता सामायिक चारित्रादिके वर्त्तता ते उपशातकषाय दर्शनार्य कहे। सेकित खीणकसाय वीयरागदसणारिया २ दुविहा प० त०। हिवे क्षीणकषाय वीतराग दर्श नार्यना दोयभेद कह्या ते कहेछे—छउमत्थखीणकसाय वी०। छउमत्थखीणकसाय वी०। छद्मस्थ क्षीणकसाय वीतराग दर्शनार्य। केवलखीणकसायवी०। केवल क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्य कहिये। से कित छउमत्थ खीणकसाय वीयराग दसणारिया २ दुविहा प० त०। हिवे क्षीणकषाय वीतराग द

निर्गत काङ्क्षित यस्या दर्शौ नि काङ्क्षितो देश सर्वकाङ्क्षारहित इत्यर्थ , तत्र देशकाङ्क्षा एक दिगंबरादिदर्शन मज्जिकाङ्क्षिते सर्वकाङ्क्षा सर्वाण्ये व दर्शनानि शोभनानि इत्येव मनुचिंतन इय च द्विधा प्ययुक्ता शापदर्शनेषु षट्जीवनिकायपीडाया असत्प्ररूपणाया च भावात्, तथा विचिकित्सा मतिविभ्रम फलप्रति सशय इति यावत्, निर्गता विचित्सा यस्या दर्शौ निर्विचिकित्स ' साध्वे व जिनशासन कि तु प्रवृत्तस्य सतो ममा स्या त्फल भविष्यति न वा क्रियाया कृषीवलादिषु उभयथा ऽप्यु पलब्धे रिति विकल्परहित न ह्य विकल्प उपायउपेयवस्तुप्रापको न भवतीति स जातनिश्चयो निर्विचिकित्स इतिभाव , एतावताऽशेन नि शाङ्किता ङ्कित , यद्वा निर्विदुगुच्छो इति ॥ निर्विद्वज्जुगुप्स साधुजुगुप्सा रहित इत्यर्थ उदाहरण च विद्वज्जुगुप्साया श्रावकदुहिता तथा ॥ अमूढदिष्टीयत्ति ॥ बालतपस्वितपोविद्यातिशयदर्शनै नं मूढा स्वभावा चलिता दृष्टि सम्यग्द र्शनरूपा यस्या सा वमूढदृष्टि , अत्रोदाहरण सुलसाश्राविका सा ह्य वकपरिव्राजकसमृद्धी रुपलभ्यापि न समोह गता तदव गुणिप्रधान आचार

विहा पण्णत्ता , तजहा—उवसतकसायवीयरागदसणारिया खीणकसायवीतरागदसणारियाय । से कित उवसतकसायवीतरागदसणारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता , तजहा पढमसमयउवसतकसायवीतरागदसणारि या अपढमसमयउवसतकसायवीतरागदसणारिया , अहवा चरिमसमयउवसतकसायवीयरागदसणारिया

शका सर्वगका काचा देशकाचा सर्वकाचारहित । निस्संकियनिक्कखिय निव्वितिगिच्छाअमूढदिट्ठीय उववूहथिरीकरणे वच्छल्लपभावणेअट्ठ १४ । साधु नो जुगुप्सारहित प्रवर्त्ते कुदर्शननो महिमाथी माटो दृष्टिकरवा जिन सलसाश्राविकाये अम्बडपरिव्राजकने कह्यो सदह नपामो कुलिंगीसाथे परि चय नकरवा पधर्मविषे थिरताभाव साहमीनो प्रससाकरवी साहमीने उपगारकरवा वली धर्मनो प्रभावनाकरवी । सेत्तसरागदसणारिया । ए सराग दर्शनार्य कहिये । सेकित वीयरागदसणारिया २ दुविहा प० त० । हिवे वीतरागदर्शनआर्यना दोयभेद कह्या छे ते कहेछे— उवसतकसायवीयराग दसणारिया । उपशातकषाय वीतराग दर्शनार्यभेद ९ । खीणकसायवी० सेकित उवसतकसायवीयरागदसणारिया २ दुविहा प० त० । खीणकसाय

॥ टीका ॥

उक्त सम्प्रतिगुणप्रधान माह-उववूहेत्यादि ॥ उपवृंहण च स्थिरीकरण च उपवृंहणस्थिरीकरणे तत्रो पवृंहण नाम समानधार्मिकाणां सद्गुणप्रशंसनेन तद्वृद्धिकरण धर्माद्विषीदता तत्रैव स्थापन, वात्सल्य च प्रभावना च वात्सल्यप्रभावने तत्र वात्सल्यसमानधार्मिकाणां प्रीत्या उपकारकरण प्रभावना धर्मकथादिभि स्तीर्थप्रख्यापना अत्र च गुणप्रधानो निर्देशो गुणगुणिनो कथंचि द्भेदख्यापनार्थं अन्यथा एकान्ता भेदे गुणनिवृत्तौ गुणिनोपि निवृत्ते शून्यतापत्ति एते अष्टौ दर्शनाचारा स्त देव मुक्ता सरागदर्शनभेदा स्तदभिधानाच्चा भिहिता सरागदर्शनार्यभेदा, सम्प्रति वीतरागदर्शनार्यादिभेदानाह-सेकितमित्यादि सुगमा यावत् अहवा चरित्तारिया पंचविहा प० त० सामाइयचरित्तारिया इत्यादि ॥ नवरं पढमसमय अपढ

॥ मूल ॥

य अचरिमसमयउवसंतकसायवीतरागदंसणारिया य। से किंत खीणकसायवीतरागदंसणारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा छउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया केवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया य। से किंत छउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा सयंबुद्धछउमत्थखीणकसाय वीतरागदंसणारिया बुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया। से किंत सयंबुद्धछउमत्थखीणक

॥ भाषा ॥

वीतरागदर्शनार्यना दोयभेद कह्या ते कहेछे—पढमसमयउवसंतकसाय वीयरागदसणारिया। प्रथमसमय वर्त्तता उपशान्तकषाय वीतराग दर्शनारिया। अपढमसमय उवसंतकसाय वी०। द्वितीयादिकसमय वर्त्तता उपशान्तकषाय वीतराग दर्शनार्यना बेभेद कह्या। अहवा चरमसमयउवसंतकसाय वी०। अथवा ते उपशान्तकषायने अन्तसमय वीतराग दर्शनार्य कहिये। अचरमसमयउवसंतकसाय वी०। दूजे बीजसमय वर्त्तता सामायिक चारित्रादिके वर्त्तता ते उपशांतकषाय दर्शनार्य कहे। सेकिंत खीणकसाय वीयरागदंसणारिया २ दुविहा प० त०। द्विवे क्षीणकषाय वीतराग दर्शनना दोयभेद कह्या ते कहेछे—छउमत्थखीणकसाय वी०। छउमत्थखीणकसाय वी०। छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्य। केवलखीणकसायवी०। केवल क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्य कहिये। से किंत छउमत्थ खीणकसाय वीयराग दंसणारिया २ दुविहा प० त०। द्विवे क्षीणकषाय वीतराग द

ममसमय इति ये तेषा मेदो पशान्तकषायत्वादीना विशेषाणा प्रथमसमये वर्त्तते ते प्रथमममया स्ततो द्वितीयादिपु समयेषु वर्त्तमाना अप्रथमसमया तथा चरमसमय अचरमसमय इति ये तेषा मेवोपशान्तकषायत्वादीना विशेषाणा मत्यसमये वर्त्तन्ते तच्चरमसमया ये ततो ऽर्वाक् द्विचरमसमयादि चरमादिपु समयेपु वर्त्तन्ते ते ऽचरमा सामायिकादीना च चारित्राणा स्वरूपमिद-समो रागद्वेपरहितत्वा दयामन समाय सपचा न्यासामपि साधुक्रियाणा सुपलक्षण सर्वासा मपि साधुक्रियाणा रागद्वेपरहितत्वात्, समायेन निर्वृत्त समाय भव वा सामायिक यद्वा समाना ज्ञानदर्शनचारित्राणा मायो लाभ समाय सा ॥ माय एव सामायिक विनयादे राकृतिगणतया विनयादिभ्य इत्यनेन स्वार्थिक इकण् तच्च सर्वसावद्य विरति

सयंबुद्धछउमत्थखीण० दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—पढमसमयसयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारियाय अपढमसमयसयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया, अहवा चरिमसमयसयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया अचरिमसमयसयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया य । सत्त सयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया । से किंत बुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीत

र्शनार्य्या केतलाभेदछे उ० हे गौतम दोयभेद कह्या ते कहेछे—सयंबुद्धछउमत्थ खीणकसायवी० । स्वयंबुद्ध छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग दर्शना दोयभेद कह्या । बुद्धिबोधिय खीणकसायवी० । प्रतिबोधकरी बूझ्या छद्मस्थ वीतराग दर्शनार्य । सेकिंत छउमत्थ खीणकसाय वीयराग दंसणारिया २ दुविहा प० तं० । हिवे स्वयंबुद्ध छद्मस्थपणे वीतराग दर्शनार्य ते किम गौतम दोयभेद कह्या ते कहेछे—पढमसमय सयंबुद्ध छउमत्थखीणकसायवी० । प्रथमसमय वर्त्तता स्वयंबुद्ध छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्य ए प्रथमभेद । अपढमसमयसयंबुद्ध छउमत्थ खीणकसायवी० । दूजे तीजेसमय वर्त्तता स्वयंबुद्ध छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्य ए २ भेद । अहवा चरमसमयसयंबुद्ध छउमत्थखीणकसाय वी० । अथवा चरमसमय वर्त्तता छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्य । अचरमसमय सयंबुद्ध छउमत्थ खीणकसायवी० ।-अचरमसमयदूजे तीजसमय क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्य । सेत्त सयंबुद्ध छउमत्थ खी

रागदसणारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा पढमसमयबुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारि
या अपढमसमयबुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया, अहवा चरिमसमयबुद्धबोहियछउम
त्थखीणकसायवीतरागदसणारिया अचरिमसमयबुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया। से त्तं
बुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया। से त्तं छउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया। से किं
तं केवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा सजोगिकेवलिखीणकसायवीतराग
दंसणारिया अजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारियाय। से किंत सजोगिकेवलिखीणकसायवीतराग

णकषायवी०। एतले स्वयबुद्ध छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्य। सेंकित बुद्धबोहिय छउमत्थ खीणकसाय वीयराग दंसणारिया २ दुविहा प०
त०। तकिम हेगौतम तेहना दोयभेद छै ते कहेछ—पढमसमयबुद्धबोहियछउमत्थ खीणकसाय वीतराग। पहिलासमयना बुद्धबोधना छद्मस्थ क्षीणकषा
य वीतराग दर्शनार्य ए प्रथमभेद। अपढमसमयबुद्धबोहिय छउमत्थ खीणकसायवी०। दूजो बीजेसमय प्रवर्त्तता बुद्धबोधि सूक्ष्म छद्मस्थ क्षीणकषाय वी
तराग दर्शनार्य ए दूजाभेद। अहवा चरमसमयबुद्धबोहिय छउमत्थखीणकसाय वी०। अथवा चरमसमय बुद्धबोध छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग दर्शना
र्य। अच समयबुद्धबोहिय छउमत्थ खीणकसाय वी०। अचरिमसमयना बुद्धबोधित छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्य। सेत्तं छउमत्थ खीणकसा
य वी०। इम छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्य। सेकिंत केवल खीणकसाय वीयरागदसणारिया दुविहा प०त०। इम केवल क्षीणकषाय दर्शना
र्यना बभेद कह्या ते कहेछे– सजोगीकेवली खीणकसाय वी०। सजोगी गुणठाणे वर्त्तता केवली क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्य ए प्रथमभेद। अयोगी
केवली खीणकसाय वी०। अजोगीगुणठाणे वर्त्तता केवली क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्य। सेकिंत सजोगीकेवली खीणकसाय वीयरागदसणारिया
२ दुविहा प० त०। इम सयोगी केवली क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्य तहना दोयभेद कह्या तेकहेछे पढमसमय सयोगीकेवली खीणकसाय वी०।

दंसणारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा पढमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया अपढमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारियाय । अहवा चरिमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारियाय अचरिमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारियाय । सेत्तं सजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया । से किंतं अजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता तंजहा पढमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया अपढमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारियाय, अहवा चरिमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया अचरिमसमयअजो

पहिलेसमय सयोगी केवली खीणकषाय वीतराग दर्शनार्य । अपढमसमय सयोगी केवली खीणकसाय वी० । अप्रथमसमय सयोगी केवली खीणकषाय वीतराग दर्शनार्य । अहवा चरमसमय सयोगी केवली खीणकसाय वी० । अथवा चरमसमय सयोगी केवली खीणकषाय वीतराग दर्शनार्य । अचरमसमय सयोगी केवली खीणकसाय वी० । अचरमसमय सयोगी केवली खीणकषाय वीतराग दर्शनार्य । सेत्तं सयोगी केवली खीणकसाय वी० । एतले सयोगी केवली खीणकषाय वीतराग कह्या तेकहेछे—सेकित अयोगी केवली खीणकसाय २ दुविहा प० त० । हिवे अयोगी केवली खीणकषाय वीतराग दर्शनार्यना दोयभेद कह्या तेकहेछे—पढमसमय अयोगी केवली खीणकसाय वी० । पहिलेसमय अयोगी केवली खीणकषाय वीतराग दर्शनार्य । अपढमसमय अयोगीकेवली खीणकसाय वी० । बीजे बीजेसमय अयोगी केवली खीणकषाय वीतराग दर्शनार्य । अहवा चरमसमय अयोगी केवली खीणकषाय वीतराग दर्शनार्य । अचरमसमय अयोगी केवली खीणकसाय वी० । अचरमसमय अयोगी केवली खीणकषाय वीतराग दर्शनार्य । सेत्तं अयोगी केवली खीणकसाय वी० । एतले अयोगी केवली खीणकषाय वीतराग दर्शनार्यभेद कह्या, एतले खीणकषाय दर्शनार्य कह्या । सेत्तं केवलि खीणकषाय वी० । सेत्तं खीणकसाय वी० सेत्तं वी० सेत्तं दंसणारिया । एतले केवली खीणकषाय वीतराग दर्शनार्य कह्या दर्शनार्यनो अधिकार कह्यो । सेकि

गिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया य। सेत्त अजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया। सेत्त केवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया। सेत्त खीणकसायवीतरागदंसणारिया। सेत्त वीतरागदंसणारिया। सेत्त दंसणारिया। से किंत चरित्तारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा सरागचरित्तारिया वीतरागचरित्तारिया। से किंत सरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा सुहुमसंपरायसरागचरित्तारियाय बादरसंपरायसरागचरित्तारियाय। से किंत सुहुमसंपरायसरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—पढमसमयसुहुमसंपरायसरागचरित्तारिया अपढमसमयसुहुमसंपरायसरागचरित्तारिया य, अहवा चरिमसमयसुहुमसंपरायसरागचरित्तारिया अचरिमसमयसुहुमसंपरायसरागचरित्तारियाय अहवा सुहुमसंपरा

ते चरित्तारिया २ दुविहा प०त०। हिवे चारित्रार्थ कहके तेहना दोयभेद कह्या ते कहेछे। सरागचरित्तारिया वीतरागचरित्तारिया। सरागि चरित्र १ भेद वीतराग चारित्र य २। सेकित सरागचरित्तारिया २ दुविहा प०त०। हिवे सरागचारित्रार्यना दोयप्रकारे कह्या ते कहेछे—सुहुमसंपराय सरागचरित्तारिया बादरसंपराय च०। सूक्ष्मसंपराय सराग चारित्रार्य बादरसंपराय सरागचारित्रार्य। सेकित सुहुमसंपराय चरित्तारिया २ दुविहा प०त०। हिवे सूक्ष्मसंपराय सरागचारित्र येना दोयभेद कह्या ते कहेछे—पढमसमयसुहुमसंपराय चरित्तारिया अपढमसमयसुहुमसंपराय चरित्ता। प्रथमसमय सूक्ष्मसंपराय सरागचारित्र यें अप्रथमसमय सूक्ष्मसंपराय सरागचारित्र यें। अहवा चरमसमय सुहुमसंपराय सरागच०। अथवा चरमसमय सूक्ष्मसंपराय सराग चारित्रार्य। अचरमसमय सुहुमसंपराय सराग च०। अचरमसमय सूक्ष्मसंपराय सराग चारित्रार्य। अहवा सुहुमसंपराय सराग चरित्तारिया दुविहा प० त०। अथवा सूक्ष्मसंपराय सराग चारित्रार्यना दोयभेद कह्या ते कहेछे—संकिलिस्समाणाय विसुज्झमाणाय। संक्लिश्यमान संपरायें चारित्र, यें विशुद्धमान सूक्ष्मसंपराय सराग चारित्रार्य। सेत्त सुहुमसंपराय सराग चरित्ता। एतले सूक्ष्मसंपराय चारित्रार्य कह्या। सेकित बादर संपराय सराग

दंसणारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा पढमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया अपढमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारियाय । अहवा चरिमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारियाय अचरिमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारियाय । सेत्तं सजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया । से किंतं अजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता तंजहा पढमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया अपढमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारियाय, अहवा चरिमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया अचरिमसमयअजो

पहिलेसमय सजोगी केवली खीणकषाय वीतराग दर्शनार्य । अपढमसमय सजोगी केवली खीणकसाय वी० । अप्रथमसमय सजोगी केवली खीणकषाय वीतराग दर्शनार्य । अहवा चरमसमय सजोगी केवली खीणकसाय वी० । अथवा चरमसमय सजोगी केवली खीणकषाय वीतराग दर्शनार्य । अचरमसमय सजोगी केवली खीणकसाय वी० । अचरमसमय सजोगी केवली खीणकषाय वीतराग दर्शनार्य । सेत्तसजोगी केवली खीणकसाय वी० । एतले सजोगी केवली खीणकषाय वीतराग कह्या तकहेछे—सेकिंत अजोगी केवली खीणकसाय २ दुविहा प० तं० । हिवे अजोगी केवली खीणकषाय वीतराग दर्शनार्यना दोयभेद कह्या तेकहेछे—पढमसमय अजोगी केवली खीणकसाय वी० । पहिलेसमय अजोगी केवली खीणकषाय वीतराग दर्शनार्य । अपढमसमय अजोगीकेवली खीणकसाय वी० । बीजे समय अजोगी केवली खीणकषाय वीतराग दर्शनार्य । अहवा चरमसमय अजोगी केवली खीणकषाय वीतराग दर्शनार्य । अचरमसमय अजोगी केवली खीणकसाय वी० । अचरमसमय अजोगी केवली खीणकषाय वीतराग दर्शनार्य । सेत्त अजोगी केवली खीणकसाय वी० । एतले अजोगी केवली खीणकषाय वीतराग दर्शनार्यभेद कह्या, एतले खीणकषाय दर्शनार्य कह्या । सेत्त केवलि खीणकषाय वी० । सेत्त खीणकसाय वी० सेत्त वी० सेत्त दंसणारिया । एतले केवली खीणकषाय वीतराग दर्शनार्य कह्या दर्शनार्यनो अधिकार कह्यो । सेकिं

पढमसमयउवसतकसायवीतरागचरित्तारिया अपढमसमयउवसंतकसायवीतरागचरिया य अहवा चरिमसमयउवसतकसायवीतरागचरित्तारिया अचरिमसमयउवसतकसायवीतरागचरित्तारिया य सेत्त उवसतकसायवीतरागचरित्तारिया से किंत खीणकसायवीतरागचरित्तारिया २ दुविहा पणत्ता, तजहा छउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया केवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य से किंत छउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पणत्ता , तजहा सयबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया बुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागचरिया य से किंत सयबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पणत्ता , तजहा—पढमसमयसयबुद्धखीणकसायवीतरागचरित्तारिया अपढमसमयसयबुद्धछउमत्थखी

उपशान्तकषाय वीतराग चरित्रार्य । अचरमसमय उवसतकसाय वीतराग चरित्तारिया । अचारमसमय उपशातकषाय वीतराग चरित्रार्य । सेत्त उवसतकसाय वीतराग चरित्तारिया । यतले उपशान्तकषाय वीतराग चरित्रार्य कह्या । सेकित खीणकसाय वीयराग चरित्तारिया २ दुविहा प० त० । द्विवे क्षीणकषाय वीतराग चरित्रार्यना दोयभेद कह्या ते कहछे—छउमत्थ खीणकसाय वीयराग च० । छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग चरित्रार्य । केवली खीणकसाय वी० च० । केवल क्षीणकषाय वीतराग चरित्रार्य । सेकित छउमत्थ खीणकसाय वी० च० दु० प० त० । हिवे छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग चरित्रार्यना दोयभेद कह्या तेकहछे—सयबुद्धछउमत्थ खीणकसाय वी० च० । सयबुद्ध छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग चरित्रार्य । बुद्धबोहिय छउमत्थ खीणकसाय वी० च० । बुद्धबोध छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग चरित्रार्य । सेकित सयबुद्ध छउमत्थ खीणकसाय वी० च० दु० प० त० । हिवे स्वयबुद्ध छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग चरित्रार्यना दोयभेद कह्या तेकहछे—पढमसमय सयबुद्ध खीणकसाय वीयराग च० । प्रथमसमय स्वयबुद्ध क्षीणकषाय वीतराग चारित्रार्य । अपढमसमय सयबुद्ध खीणकसाय वीतराग च० । अप्रथमसमय सयबुद्ध खीणकसाय वी० च० । अप्रथमसमय स्वयबुद्ध छद्मस्थ

यसरागचरित्तारिया दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—संकिलिस्समाणाय विसुज्झमाणाय सेत्तं सुहुमसंपरायसरागचरित्तारिया से किंत बायरसंपरायसरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—पढमसमयबायरसंपरायसरागचरित्तारिया अपढमसमयबायरसंपरायसरागचरित्तारिया य अहवा चरिमसमयबायरसंपरायसरागचरित्तारिया अचरिमसमयबायरसंपरायसरागचरित्तारिया य अहवा बायरसंपरायसरागचरित्तारिया दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—पडिवाई य अपडिवाई य सेत्तं बायरसंपरायचरित्तारिया सेत्तं सरागचरित्तारिया से किंत वीतरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—उवसंतकसायवीतरागचरित्तारिया खीणकसायवीतरागचरित्तारिया य से किंत उवसंतकसायवीतरागचरित्तारिया ? २ दुविहा प०, तंजहा

त० । हवल हिव बादरसपराय चारनाय टांबभेद कह्याछे । सेकित बायरसपराय सरागचरित्तायरिया २ दुविहा प० त० । हिवे बादरसपराय चरित्रना टांबभेद कह्या तेकहछे—पढमसमयबायरसपराय सराग च० । प्रथमसमय बादरसपराय सराग चरित्रार्य । अपढमसमय बायरसपराय सराग चरित्ता । अप्रथमसमय बादरसपराय सराग चरित्रार्य । अहवा चरमसमय बादरसपराय सराग च० । अथवा चरमसमय बादरसपराय सराग चरित्रार्य । अचरमसमयबायरसपराय सराग च० । अचरमसमय सरागबादर चरित्रार्य । अहवा बादरसपराय सरागचरित्तायरिया दुविहा प० त० । अथवा बादरसपराय सराग चरित्रार्यना टांबभेद कह्या ते कहेछे—पडिवाइया अपडिवाइयाय । प्रतिपातिक अप्रतिपातिक । सेत्त बायरसपराय बायरसपराय सराग च० । हवल बादरसपराय चरित्रार्य कह्या । सत्त सराग चरित्ता । हिवे वीतराग चरित्र कहेछे । सेकित वीतराग चरित्तायरिया दुविहा प० तं० । हिवे वीतराग चरित्रार्यना टांबभेद कह्या तेकहछे—पढमसमयउवसतकसायवीतराग च० । प्रथमसमय उपशान्तकषाय वीतराग दर्शना । अपढमसमय उवसतकसाय वी० । अप्रथमसमय उपशान्तकषाय वीतराग चरित्रार्य । अहवा चरमसमय उवसतकषाय वी० । अथवा चरमसमय

रूप, यद्यपि च सर्वमपि चारित्र मविशेषत सामायिक तथापि छेदादिविशेषै विशेष्यमाण मर्थत शब्दान्तरत श्च नानात्व भजते प्रथम पुन रविशेषणात् सामान्यशब्द एवा वतिष्ठते, सामायिका मिति तच्च द्विधा इत्वर यावत्कथिक च तत्र त्वर भरतैरावतेषु प्रथमपश्चिमतीर्थकरतीर्थेष नारोपितमहाव्रतस्य शैक्षकस्य विज्ञेय यावत्कथित प्रव्रज्याप्रतिपत्तिकालादारभ्याप्राणोपरमात् तच्चभरतैरावतभाविमध्यद्वाविंशति तीर्थकरतीर्था न्तरगताना च विदेहतीर्थकरतीर्थान्तरगताना च साधूना मवसेय तया मुपस्थापनाया अभावात् उक्तच सव्व मिणं सामइयं छयाइविसेसियं पुण विभिन्नं। अविसेसइसामइयं चियमि ह सामन्नसन्नाए ॥ १ ॥ सावज्जजोगविरइत्ति तत्थ सामाइयं दुहा तं च इत्तरमावकहंतिय पढमपढमंतिय मज्झिमाण तित्थेसु अणारोविअ वयस्स सेहस्सथोवकालीय ॥ १ ॥ सेसाणमावकहियं तित्थेसु विदेहयाण च। ननु चत्वरमपि सामायिक करोमि भ दन्त सामायिक यावज्जीव मित्येव यावदायु र्गृहीत तत उत्थापनाकाल तत्परित्यजत कथ न प्रतिज्ञाभग उच्यते ननु प्रागवाक्त सवमवद चा

दुविहा पण्णत्ता, तंजहा सजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया अजोगिकेवलिखीणकसायवीतराग चरित्तारिया य। से किंत सजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा— पढमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया अपढमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीतराग

नहा। छिवे केवली क्षीणकषाय वीतराग चारित्रायना दोयभेद कह्या ते कहछे—सयोगी केवली खीणकसायवीतराग चरित्तारिया अयोगी केवली खीणकसाय वीतराग चरित्तारिया। छिवे सयोगी केवली क्षीणकषाय वीतराग चरित्रार्य अयोगी केवली क्षीणकषाय वीतराग चरित्रार्य। साक्षत स सयोगीकेवली खीणकसाय वीतराग चरित्तारिया २ दुविहा पण्णत्ता तंजहा। छिवे सयोगी केवली क्षीणकषाय वीतराग चरित्रायना दोयभेद कह्या ते कहछे—पढमसमयसयोगी केवली खीणकसाय वीतराग चरित्तारिया। प्रथमसमय सयोगी केवली क्षीणकषाय वीतराग चरित्रार्य। अपढमसमयस योगीकेवली खीणकसाय वीतराग चरित्तारिया। अप्रथमसमय सयोगी केवली क्षीणकषाय वीतराग चारित्रार्य। अहवा चरमसमय सयोगीकेवली खीण

णकसायवीतरागचरिया य, अहवा चरिमसमयसयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया अचरिम समयसयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य। सेत्तं सयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया। से किं तं बुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया? २ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा पढमसमयबुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया अपढमसमयबुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य, अहवा चरिमसमयबुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया अचरिमसमयबुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य। सेत्तं बुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया सेत्तं छउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया। से किं तं केवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया? २

क्षीणकषाय चरित्रार्य। अहवा चरमसमय स्वयंबुद्ध क्षीणकसाय वी० च०। अथवा चरमसमय स्वयंबुद्ध क्षीणकषाय वीतराग चरित्र य। अचरमसमयस्वयंबुद्ध क्षीणकसाय वी० च०। अचरिमसमय स्वयंबुद्ध छद्मस्थ क्षीणकषाय चरित्रार्य। सेत्त छउमत्थ खीणकषाय वी०। एतले स्वयंबुद्ध छद्मस्थ क्षीणकषाय चरित्रार्य। सेकिंतं बुद्धबोहिय क्षीणकषाय वी० च० दुविहा पण्णत्ता तंजहा। द्विव बुद्धबोध छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग चरित्रार्यना दोयभेद कह्या ते कहे छे—पढमसमय बुद्धबोहिय छउमत्थ खीणकसाय वी० चरित्तारिया। प्रथमसमय बुद्धबोध छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग चरित्रार्य। अपढमसमय बुद्धबोहिय छउमत्थ खीणकसाय वीतराग। अप्रथमसमय बुद्धबोध छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग चरित्रार्य। अहवा चरमसमयबुद्धबोहिय छउमत्थ खीणकसाय वीतराग। अथवा चरमसमय बुद्धबोध छद्मस्थ क्षीणकषाय चरित्रार्य। अचरमसमय बुद्धबोहिय छउमत्थ खीणकषाय वीतराग चरित्र य। सेत्त बुद्धबोहिय छउमत्थ खीणकसाय वीतराग चरित्तारिया। एतले बुद्धबोध छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग चरित्रार्य कह्या। सेत्त छउमत्थखीणकसाय वीतराग चरित्तारिया। द्विवे छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग चरित्र य। सेकिंतं केवली क्षीणकसाय वीतराग चरित्तारिया २ दुविहा पण्णत्ता त

॥ टीका ॥

रूप, यद्यपि च सर्वमपि चारित्र मविशेषत सामायिक तथापि च्छेदादिविशेषै विशेष्यमाण मर्थत शब्दान्तरत श नानात्व जनते प्रथम पुन रविशेषणात् सामान्यशब्द एवा वतिष्ठते, सामायिका मिति तच्च द्विधा इत्वर यावत्कथिक च तत्रे त्वर भरतैरावतेषु प्रथमपश्चिमतीर्थकरतीर्थेष नारोपितमहाव्रतस्य शैक्षकस्य विज्ञेय यावत्कथित प्रव्रज्याप्रतिपत्तिकालादारभ्योप्राणोपरमात् तत्रभरतैरावतभाविमध्यद्वाविंशति तीर्थकरतीर्था न्तरगताना च विदेहतीर्थकरतीर्थान्तरगताना च साधूना मवसेय तया मुपस्थापनाया अभावात् उक्तच सव्व मिण सामइय छयाइविसेसिय पुण विभिन्न । अविसेसइसामइय चियमि ह सामन्नसन्नाए ॥ १ ॥ सावज्जजोगविरइत्ति तत्थ सामाइय दुहा त च इत्तरमावकहंतिय पढमपढमतिय मजिणाण तित्थेसु अणारोविअ वयस्स सेहस्सथोवकालीय ॥ १ ॥ सेसाणमावकहिय तित्थेसु विदेहयाण च । ननु चत्वरमपि सामायिक करोमि न दत सामायिक यावज्जीव मित्येव यावदायु रागृहीत तत उत्थापनाकारा तत्परित्यजत कथ न प्रतिज्ञाभग उच्यते ननु प्रागवाक्त सवमवद चा

॥ मूलं ॥

दुविहा पण्णत्ता, तंजहा सजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया अजोगिकेवलिखीणकसायवीतराग चरित्तारिया य । से किंत सजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा— पढमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया अपढमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीतराग

॥ गाथा ॥

नहा । हिवे केवली खीणकषाय वीतराग चरित्रावना दायभेद कह्या ते कहछ—सयोगी केवली खीणकसायवीतराग चारित्तारिया अयोगी केवली खीणकस य वीतराग चरित्तारिया । हिवे सयोगी केवली खीणकषाय वीतराग चरित्र अयोगी केवली खीणकषाय वीतराग चरित्रार्य । साचत स सयोगीकेवली खीणकसाय वीतराग चरित्तारिया २ दुविहा पण्णत्ता तंजहा । हिवे सयोगी केवली खीणकषाय वीतराग चरित्रावना दायभेद कह्या त कहछे—पढमसमयसयोगी केवली खीणकस य वीतराग चारित्तारिया । प्रथमसमय सयोगी केवली खीणकषाय वीतराग चरित्रार्य । अपढमसमयसयो केवली खीणकसाय वीतराग चारित्तारिया । अप्रथमसमय सयोगी केवली खीणकषाय वीतराग चारित्र्य । अथवा चरमसमय सयोगीकेवली खीण

णकसायवीतरागचरित्तारिया य, अहवा चरिमसमयसयबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया अचरिमसमयसयबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य। सेत्त सयबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया। से किंतं बुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया? २ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा पढमसमयबुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया अपढमसमयबुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य, अहवा चरिमसमयबुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया अचरिमसमयबुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य। सेत्त बुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया सेत्त छउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया। से किंत केवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया? २

क्षीणकषाय चरित्रार्य। अहवा चरमसमय सयबुद्ध खीणकसाय वी० च०। अथवा चरमसमय स्वयंबुद्ध क्षीणकषाय वीतराग चरित्र यं। अचरमसमय सयबुद्ध खीणकसाय वी० च०। अचरिमसमय स्वयंबुद्ध छद्मस्थ क्षीणकषाय चरित्र य। सेत्त छउमत्थ खीणकषाय वी०। एतले स्वयंबुद्ध छद्मस्थ क्षीणकषाय चरित्रार्य। सेकित बुद्धबोहिय खीणकषाय वी० च० दुविहा पण्णत्ता तंजहा। हिवे बुद्धिबोध छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग चरित्रार्यना दोयभेद कह्या ते कहे छे – पढमसमय बुद्धबोहिय छउमत्थ खीणकसाय वी० चरित्तारिया। प्रथमसमय बुद्धबोध छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग चरित्रार्य। अपढमसमय बुद्धबोहिय छउमत्थ खीणकसाय वीयराय। अप्रथमसमय बुद्धबोध छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग चरित्रार्य। अहवा चरमसमयबुद्धबोहिय छउमत्थ खीणकस य वीयराग। अथवा चरमसमय बुद्धबोध छद्मस्थ क्षीणकषाय चरित्रार्य। अचरमसमय बुद्धबोहिय छउमत्थ खीणकषाय वीतराग चरित्र य। सेत्त बुद्धबोहिय छउमत्थ खीणकसाय वीयराग चरित्तारिया। एतले बुद्धबोध छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग चरित्रार्य कह्या। सेत्त छउमत्थखीणकसाय वीयराग चरित्तारिया। हिवे छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग चरित्रार्य। सेकित केवली खीणकसाय वीयराग चरित्तारिया २ दुविहा पण्णत्ता त

॥ टीका ॥

रूप, यद्यपि च सर्वमपि चारित्र मविशेषत सामायिक तथापि च्छेदादिविशेषै विशेष्यमाण मर्थत शब्दान्तरत श्च नानात्व भजते प्रथम पुन रविशेषणात् सामान्यशब्द एवा वतिष्ठते, सामायिका मिति तच्च द्विधा इत्वर यावत्कथिक च तत्रे त्वर भरतैरावतेषु प्रथमपश्चिमतीर्थकरतीर्थे नारोपितमहाव्रतस्य शैक्षकस्य विज्ञेय यावत्कथित प्रव्रज्याप्रतिपत्तिकालादारभ्याप्राणोपरमात् तच्चभरतैरावतभाविमध्यद्वाविंशति तीर्थकरतीर्था न्तरगताना च विदेहतीर्थकरतीर्थान्तरगताना च साधूना मवसेय तेषा मुपस्थापनाया अभावात् उक्तञ्च सव्व मिण सामइय छयाइविसेसिय पुण विभिन्न । अविसेसमइ सामइय चियमि ह सामन्नसन्नाए ॥ १ ॥ सावज्जजोगविरइत्ति तत्थ सामाइय दुहा त च इत्तरमावकहतिय पढमपढमतित्थ मज्झिमाण तित्थसु अणारोवित्र वयस्स सेहस्सथोवकालीय ॥ १ ॥ सेसाणमावकहिय तित्थेसु विदेहयाण च। ननु चत्वरमपि सामायिक करोमि भ दंत सामायिक यावज्जीव मित्येव यावदायु रागृहीत तत उत्थापनाकाले तत्परित्यज्यते कथ न प्रतिज्ञाभग उच्यते ननु प्रागवोक्त सर्वमेव चा

॥ सूत्र ॥

दुविहा पण्णत्ता, तजहा सजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया अजोगिकेवलिखीणकसायवीतराग चरित्तारिया य । से किंत सजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया १ २ दुविहा पण्णत्ता, तजहा— पढमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया अपढमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीतराग

॥ भाषा ॥

भेदा । किंते केवली क्षीणकषाय वीतराग चरित्रार्यना केटला भेद कह्या ते कहेछे—सयोगी केवली खीणकसायवीतराग चारित्तारिया अयोगी केवली खीणकस य वीयराग चरित्तारिया । किंते सयोगी केवली क्षीणकषाय वीतराग । चरित्रार्य सयोगी केवली क्षीणकषाय वीतराग चरित्रार्य । साकित स सयोगीकेवली खीणकसाय वीयराग चरित्तारिया २ दुविहा पण्णत्ता तजहा । किंते सयोगी केवली क्षीणकषाय वीतराग चरित्रार्यना केटला भेद कह्या ते कहेछे—पढमसमयसयोगी केवली खीणकसायवीयरागचरित्तारिया । प्रथमसमय सयोगी केवली क्षीणकषाय वीतराग चरित्रार्य। अपढमसमयस योगीकेवली खीणकसाय वीयरागचरित्तारिया । अप्रथमसमय सयोगी केवली क्षीणकषाय वीतराग चारित्रार्य । अहवा चरमसमय सयोगीकेवली खीण

॥ टीका ॥

विरमविनेयत सामायिक सर्वमपि सावद्ययोगविरतिमद्भावात केवलच्छेदादिविशुद्धिविशेषैः विशेष्यमाणं सर्वत शब्दान्तरत श्च नानात्वं भजते ततो यतो यावत्कथिकं सामायिकं छेदोपस्थापनं वा परमविशुद्धिविशेषरूपसूक्ष्मसंपरायादिचारित्रावाप्तौ न तद्भावमास्कन्दति तथैव इत्वरमपि सामायिकं विशुद्धिविशेषरूपच्छेदोपस्थापनावाप्तौ । यदि हि प्रव्रज्यापरित्यज्यते तर्हि तद्भङ्ग आपद्यते न तस्यैव विशुद्धिविशेषावाप्तौ उक्तं च-उक्तिकस्स मतोजगो जोपुमतविषयकरेइ। सुट्ठयरं मलाभित्तविमिह सुद्धमविजतम्मकोजद्धा॥१॥ तथा छेदः पूर्वपर्यायस्य उपस्थापना च महाव्रतेषु यस्मिन् चारित्रे तत् छेदोपस्थापनं तच्च द्विधा सातिचारं निरतिचारं च तत्र निरतिचारं च यत् इत्वरसामायिकवत शैक्षकस्यारोप्यते तीर्थान्तरसंक्रान्तौ वा यथा

॥ मूल ॥

चरित्तारिया य, अहवा चरिमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य अचरिमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारियाय । सेत्तं सजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया । से किंतं अजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा पढमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य अपढमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य, अहवा

॥ भाष ॥

कषाय वीतरागचरित्रार्या। अथवा चरमसमय सयोगीकेवली क्षीणकषाय वीतराग चरित्रार्य। अचरमसमय सयोगी केवली क्षीणकषाय वीतराग चरित्रार्या। अचरमसमय सयोगीकेवली क्षीणकषाय वीतराग चरित्रार्य। सेत्त सयोगी केवली क्षीणकषाय वीतराग चरित्रार्या। उक्त सयोगी केवली क्षीणकषाय वीतराग चरित्रार्य। सेकित अयोगीकेवली क्षीणकषाय वीतराग चरित्रार्या २ दुविहा पन्नत्ता तंजहा। द्विविध अयोगी केवली क्षीणकषाय वीतराग चरित्रार्यना दोयभेद कहेछे—पढमसमय अयोगीकेवली क्षीणकषाय वीतराग चरित्रार्या। प्रथमसमय अयोगीकेवली क्षीणकषाय वीतराग चरित्रार्य। अपढमसमय अयोगीकेवली क्षीणकषाय वीतराग चरित्रार्या। अप्रथमसमय अयोगीकेवली क्षीणकषाय वीतराग चरित्रार्य। अहवा चरमसमय अयोगीकेवली क्षीणकषाय वीतराग चरित्रार्या। अथवा चरमसमय अयोगीकेवली क्षीणकषाय वीतराग चरित्रार्य। अचरिमस

॥ टीका ॥

पाश्र्वनाथतीर्थात् वर्द्धमानतीर्थसंक्रामत पञ्चयामप्रतिपत्तौ सातिचारं यन्मूलगुणघातिन पुनर्व्रतोच्चारण उक्तं च–सेरस्स निरइयारस्स तित्थतरसंक्रमे व तं छाज्जा। मूलगुणघाइणोसा इयारमुभय च ठियकप्पो॥१॥ उभयं चैतत्सातिचारं निरतिचारं च स्थितकल्प इति प्रथमपश्चिमतीर्थंकरतीर्थकाल तथा परिहार तपोविशेष तेन विशुद्धिर्यस्मिन् चारित्रे तत्परिहारविशुद्धिकं तच्चद्विधा निर्विशमानकं निर्विष्टकायिकं च तत्र निर्विशमानका विवक्षितचारित्रासेवका निर्विष्टकायका आसेवितचारित्रका तद् व्यतिरकाच्चारित्र मप्येव मुच्यते इह नवको गण श्चत्वारोनिर्विशमानका श्चत्वार श्चानुचारक एक कल्पस्थितो वाचनाचार्यो यद्यपि च सर्वेपि श्रुतातिशयसम्पन्ना तथापि कल्पत्वात् तथा एक कश्चि त्कल्पस्थितो वस्थाप्यते निर्विशमानकानाञ्चाय परिहार, परिहारियाणत तवो जहन्नमज्झो तहय उक्कोसो। सीउण्हवासकाले भणिउ धीरेहि पत्तेय ॥१॥ जत्थ जहन्ना गिम्ह चउत्थइड तु होइमज्झिमउ। अठमसिइउक्कासो एत्तोसिसिरं पवक्खामि ॥२॥ सिसिरे उजहन्नाइ छठाइ दसमचरिमगो होइ। वासासु अठमाइ वारसपज्जतगोनउ ॥ ३ ॥ पारणगआयाम पचसु अगहो दोसु अभिग्गहो भिक्खे। कप्पट्ठियापइदिण करित एमेवआयाम ॥ ४ ॥ एवछम्मासतव चरिउपरिहारगाअणुचरति। अणुचरगे परिहारिय पइट्ठिय जाव छम्मासा ॥ ५ ॥ कप्पट्ठियविपव छम्मासतव करइ सेसाउ। अणुपरिहारगभाव वयति कप्पट्ठियत्त च ॥ ६ ॥ एवसोअट्ठारं ससासपमाणा उवण्णिउ कप्पो। संखेवउ विसेसा विसेससुत्ताउ नायव्वो ॥ ७ ॥ कप्पसमत्तीए तय जिणकप्प वा उवियति गच्छ वा। पडिवज्जमाणगा पुण जिणस्सगासे पवज्जति ॥ ८ ॥ तित्थयरसमीवासेवगस्सपास वनोउअन्नस्स। एएसि

॥ मूल ॥

चरिमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य अचरिमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य सत्त अजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया। सेत्त केवलिखीणकसायवीतराग

॥ भाषा ॥

मय अयोगीकेवली खीणकसाय वीयराग चरित्तारिया। अचरिमसमय अयोगीकेवली खीणकषाय वीतराग चरित्रार्य। सेत्त अयोगीकेवली खीणकसाय वीतराग चरित्तारिया। एतले अयोगी केवली क्षीणकषाय वीतराग चरित्रारिया। सेत्त केवलिखीणकसाय वीतराग चरित्रार्य।

॥ टीका ॥

ज चरण परिहारविशुद्धिय त तु ॥ ६ ॥ अथ ते परिहारविशुद्धिका कस्मिन् क्षेत्रे काले वा भवति ? उच्यते-इह क्षेत्रादिनिरूपणार्थं विंशतिद्वारा णि तद्यथा-क्षेत्रद्वार १ कालद्वार २ चारित्रद्वार ३ तीर्थद्वार ४ पर्यायद्वार ५ आगमद्वार ६ वेदद्वार ७ कल्पद्वार ८ लिंगद्वार ९ लेश्याद्वार १० ध्या नद्वार ११ गणद्वार १२ अभिग्रहद्वार १३ प्रव्रज्याद्वार १४ मुण्डापनाद्वार १५ प्रायश्चित्तविधिद्वार १६ कारणद्वार १७ नि प्रतिकर्मताद्वार १८ भिक्षाद्वा र १९ वद्वार २० । तत्र क्षेत्र द्विधा मार्गणा जन्मत सद्भावतश्च, यत्र क्षेत्र जात स्तत्र जन्मतो मार्गणा, यत्र च कल्प स्थिता वर्तते तत्र सद्भावत । उक्तच-खेत्ते दुविहमग्गणा जम्मणउसन्नावउ य । जम्मणउजत्थ जातो सतीभावो जहिं कप्पो ॥ १ ॥ तत्र जन्मत सद्भावतश्च पञ्चसु भरतेषु पञ्चस्वै रावतेषु न तु महाविदेहेषु न च तेषां संहरणं मस्ति यत अकल्पिका इव नरगत सर्वासु कर्मभूमिषु अकर्मभूमिषु वा प्राप्यरन्, उक्तं च-सि तत्तरहरउ सुहोतिसहरणवज्जियानियमा । कालद्वार-अवसर्पिण्या तृतीय चतुर्थ वारके जन्मसद्भाव, पञ्चमपि उत्सर्पिण्या द्वितीय तृतीये चतु र्थे वा जन्मसद्भाव, पुन स्तृतीय चतुर्थे वा उक्तच-उस्सप्पिणीउदासु जम्मणा होतानुमति भावग । उस्सप्पिणिविवरीउ जम्मणउसतिभावेय ॥ १ ॥

॥ मूल ॥

रित्तारिया। सेत्त खीणकसायवीतरागचरित्तारिया सेत्त वीतरागचरित्तारिया। अहवा चरित्तारिया पचविहा पण्णत्ता, तजहा–सामाइयचरित्तारिया छेदोवट्ठावणीयचरित्तारिया परिहारविसुद्धिचरित्तारिया सुहुमसपरायचरित्तारिया अहक्खायचरित्तारिया य। सकित सामाइयचरित्तारिया? २ दुविहा पण्णत्ता, तजहा

॥ भाषा ॥

सेत्त वीतराग चरित्तार्यारिया । एतले क्षीणकषाय वीतराग चारित्रार्य कह्या एतले वीतराग चारित्रार्य कह्या । अथवा चरित्तार्यारिया पचविहा पण्णत्ता तजहा । अथवा चारित्रार्य पांचभेद कह्या ते कहेछे—सामाइयचरित्तारिया छेदोवट्ठावणिय च परिहारविसुद्धि च सुहुमसपराय च अहक्खाय चरित्तारिया । सामायिक चारित्रार्य छेदोपस्थापनीय चारित्र परिहारविशुद्ध चारित्र सूक्ष्मसंपराय चारित्रार्य सूक्ष्म लोभना उदयनयथाख्यात चारित्रा र्य निष्क य । से किंत सामाइय चरित्तारिया २ दुविहा पण्णत्ता तजहा । ए चारित्रार्य कहिय, हिव सामायिक चारित्रार्य तहना दोयभेद कह्या ति

॥ टीका ॥

उत्सर्पिण्यवसर्पिणीरूपे तु चतुर्थारकप्रतिभागकाले न सम्भवति महाविदेहक्षेत्रे तेषा मसम्भवात्, चारित्रद्वारे-संयमस्थानद्वारेण मार्गणा तत्र सामायिकस्य च्छेदोपस्थापनस्य च चारित्रस्य यानि जघन्यानि संयमस्थानानि तानि परस्परतुल्यानि समानपरिणामत्वात् ततो ऽसङ्ख्येयलोकाका शप्रदेशप्रमाणानि संयमस्थानान्य तिक्रम्योर्द्ध यानि संयमस्थानानि तानि परिहारविशुद्धिकयोग्यानि तान्यपि च केवलिप्रज्ञया परिज्ञाप्यमाना नि असङ्ख्येयलोकाकाशप्रदेशप्रमाणानि, तानि प्रथमद्वितीयचारित्राविरोधीनि तेष्वपि सम्भवात्, तत ऊर्द्ध यानि सङ्ख्यातीतानि संयमस्थानानि ता नि सूक्ष्मसम्परायययाख्यातचारित्रयोग्यानि उक्तंच-तुल्ला जहन्नठाणे संयमठाणपढमबिइयाणं । तत्तो असंखलोए गंतुं परिहारियठाणा ॥ १ ॥

॥ मूल ॥

—इत्तरियसामाइयचरित्तारिया आवकहियसामाइयचरित्तारिया य । सेत्त सामाइयचरित्तारिया । से किंत छेदोवट्ठावणीयचरित्तारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—साइयारा छेदोवठावणीयचरित्तारिया निरइयारा छेदोवठावणीयचरित्तारिया । सेत्त छेदोवठावणीयचरित्तारिया । से किंत परिहारविसुद्धियचरित्तारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—निव्विस्समाणपरिहारविसुद्धियचरित्तारिया निव्विठकाइयपरिहारविसुद्धियचरित्ता

॥ भाषा ॥

कहेछे—इत्तरियसामाइय चरित्तारिया आवकहियसामाइय चरित्तारिया । तिहां ज कल्पसमीपे ते गच्छनेविषे पहुचे इतर सामायिकचरित्र कहो ज इत्तरचारित्रप्रते उपसर्ग नऊपजे अवकथिक ते कल्पसमाप्ते जिनकल्प पडिवजे उपसर्गादि खमे एतले सामायिक चारित्रार्य । सेकिंतछेओवट्ठावणिया चरित्तारिया २ दुविहा प० तं० । हिवे छेदोपस्थापनीय चरित्र यना दोयभेद कह्या ते कहेछे—साइयार छेओवट्ठावणिय च० निरइयार छेओवट्ठावणि य च० । अतीचार कोइलागा हवे सातीचार छेदोपस्थापनीय चरित्रार्य निरतिचार लिगार अतीचारलगान हुवे छेदोपस्थापनीय चारित्रार्य । सेत्तछेओ वट्ठावणिय च० । एतले छेदोपस्थापनीय कह्या । सेकिंत परिहारविसुद्धि च० दुविहा प० तं० । हिवे परिहारविशुद्धिना दोयभेद कह्या तेकहेछे—नि व्विस्समाण परिहारविसुद्धिय च० निविट्ठकाइय परिहारविसुद्धिय च० । निर्विसमानक निर्विष्टकायक एहवा परिहारविशुद्ध चउत्थ अट्ठम जघन्य मध्य

॥ टीका ॥

ज चरण परिहारविसुद्धिय त तु ॥ ६ ॥ अथ ते परिहारविशुद्धिका कस्मिन् क्षेत्रे काले वा भवन्ति ? उच्यते-इह क्षेत्रादिनिरूपणार्थं विंशतिद्वाराणि तद्यथा-क्षेत्रद्वार १ कालद्वार २ चारित्रद्वार ३ तीर्थद्वार ४ पर्यायद्वार ५ आगमद्वार ६ वेदद्वार ७ कल्पद्वार ८ लिंगद्वार ९ लेश्याद्वार १० ध्यानद्वार ११ गणद्वार १२ अभिग्रहद्वार १३ प्रव्रज्याद्वार १४ मुण्डापनाद्वार १५ प्रायश्चित्तविधिद्वार १६ कारणद्वार १७ निःप्रतिकर्मताद्वार १८ भिक्षाद्वार १९ वधद्वार २० । तत्र क्षेत्रे द्विधा मार्गणा जन्मतः सद्भावतश्च, यत्र क्षेत्रे जातः स तत्र जन्मतो मार्गणा, यत्र च कल्पं स्थितो वर्तते तत्र सद्भावतः । उक्तं च-खेत्तेदुविहमग्गण जम्मणओ संतिभावओ । जम्मणओ जहिंजाओ संतीभावोजहिंकप्पो ॥ १ ॥ तत्र जन्मतः सद्भावतश्च पञ्चसु भरतेषु पञ्चस्वैरावतेषु न तु महाविदेहेषु न च तेषां संहरणमस्ति येन जिनकल्पिका इव संहरणतः सर्वासु कर्मभूमिष्वकर्मभूमिषु वा प्राप्येरन्, उक्तं च-विरावतेषु जम्मन्नेव सुभूतिसंहरणवज्जियानियमा । कालद्वारे-अवसर्पिण्यां तृतीये चतुर्थे वारके जन्मसद्भावः, पञ्चमेऽपि उत्सर्पिण्यां द्वितीये तृतीये चतुर्थे वा जन्मसद्भावः, पुनस्तृतीये चतुर्थे वा उक्तं च-उस्सप्पिणीअवदोसु जम्मण ओसीसु संति भावम । उस्सप्पिणीविवरीओ जम्मणओसंतिभावेय ॥ १ ॥

॥ मूल ॥

रित्तारिया । सेत्तं खीणकसायवीतरागचरित्तारिया सेत्तं वीतरागचरित्तारिया । अहवा चरित्तारिया पंचविहा पण्णत्ता, तंजहा—सामाइयचरित्तारिया छेदोवट्ठावणीयचरित्तारिया परिहारविसुद्धिचरित्तारिया सुहुमसंपरायचरित्तारिया अहक्खायचरित्तारिया य । सेकिंतं सामाइयचरित्तारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा

॥ भाषा ॥

रूप वीतराग चरित्तार्यरिया । एतले क्षीणकषाय वीतराग चरित्रार्य कह्या एतले वीतराग चरित्रार्य कह्या । अथवा चरित्तार्यरिया पंचविहा पण्णत्ता तंजहा । अथवा चारित्रार्य पांचभेदे कह्या ते कहेछे—सामाइयचरित्तारिया छेओवट्ठावणिय च परिहारविसुद्धि च सुहुमसंपराय च अहक्खाय चरित्तारिया । सामायिक चरित्रार्य छेदोपस्थापनीय चारित्र परिहारविशुद्ध चारित्र सूक्ष्मसंपराय चारित्रार्य सूक्ष्म लोभना उदयने यथाख्यात चारित्रार्य निष्क य । सेकिंतं सामाइय चरित्तारिया २ दुविहा पण्णत्ता तंजहा । ए चारित्रार्य कहिये, हिवे सामायिक चारित्रार्य तेहना दोयभेद कह्या ते

॥ टीका ॥

उत्सर्पिण्यवसर्पिणीरूपे तु चतुर्थारकप्रतिभागकाले न सम्भवति महाविदेहक्षेत्रे तेषां मभावात्, चारित्रद्वारे-संयमस्थानद्वारेण मार्गणा तत्र सामायिकस्य च्छेदोपस्थापनस्य च चारित्रस्य यानि जघन्यानि संयमस्थानानि तानि परस्परतुल्यानि समानपरिणामत्वात् ततो ऽसङ्ख्येयलोकाकाशप्रदेशप्रमाणानि संयमस्थानान्य तिक्रम्योर्द्ध्वं यानि संयमस्थानानि तानि परिहारविशुद्धिकयोग्यानि तान्यपि च केवलिप्रज्ञया परिज्ञाव्यमानानि असङ्ख्येयलोकाकाशप्रदेशप्रमाणानि, तानि प्रथमद्वितीयचारित्राविरोधीनि तेष्वपि सम्भवात्, तत ऊर्द्ध्वं यानि सङ्ख्यातीतानि संयमस्थानानि तानि सूक्ष्मसम्परायययाख्यातचारित्रयोग्यानि उक्तंच-तुल्ला जहन्नठाणे संयमठाणाणपढमबिइयाण । तत्तो असंखलोए गंतुं परिहारियठाणा ॥ १ ॥

॥ मूल ॥

–इत्तरियसामाइयचरित्तारिया आवकहियसामाइयचरित्तारिया य । सेत्तं सामाइयचरित्तारिया । से किंतं छेदोवठावणीयचरित्तारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा–साइयारा छेदोवठावणीयचरित्तारिया निरइयारा छेदोवठावणीयचरित्तारिया । सेत्तं छेदोवठावणीयचरित्तारिया । से किंतं परिहारविसुद्धियचरित्तारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा–निव्विस्समाणपरिहारविसुद्धियचरित्तारिया निव्विट्ठकाइयपरिहारविसुद्धियचरित्ता

॥ भाषा ॥

कहेछे—इत्तरियसामाइय चरित्तारिया आवकहियसामाइय चरित्तारिया । तिहां जे कल्पसमोभ ते गच्छनेविषे पहुचे इतर सामायिकचरित्र कह्यो ज दुत्तरचारित्रप्रतें उपसर्गं नऊपजे अवकथिक ते कल्पसमाप्ते जिनकल्प पडिवजे उपसर्गादि खमे एतले सामायिक चारित्रार्य । सेकितं छेओवठावणिया चरित्तारिया२ दुविहा प० त० । हिवे छेदोपस्थापनीय चरित्र यना दोयभेद कह्या ते कहेछे– साइयार छेओवट्ठावणिय च० निरइयार छेओवट्ठावणिय च० । अतीचार कोइलागो हवे सातीचार छेदोपस्थापनीय चरित्रार्य निरतिचार लिगार अतीचारलगान हुवे छेदोपस्थापनीय चारित्रार्य । सेत्तं छेओवट्ठावणिय च० । एतले छेदोपस्थापनीय कह्या । सेकितं परिहारविसुद्धि च० दुविहा प० त० । हिवे परिहारविशुद्धिकना दोयभेद कह्या तेकहेछे–निव्विसमाण परिहारविसुद्धिय च० निव्विट्ठकाइय परिहारविसुद्धिय च० । निर्विसमानक निविष्टकायक एहवा परिहारविशुद्ध चउत्थ अट्ठम जघन्य मध्य

॥ टीका ॥

ज चरण परिहारविसुद्दिय त तु ॥ ६ ॥ अथ ते परिहारविशुद्धिका कस्मिन् क्षेत्रे काले वा भवन्ति ? उच्यते-तत्र क्षेत्रादिनिरूपणार्थं विंशतिद्वारा णि तद्यथा-क्षेत्रद्वार १ कालद्वार २ चारित्रद्वार ३ तीर्थद्वार ४ पर्यायद्वार ५ आगमद्वार ६ वेदद्वार ७ कल्पद्वार ८ लिंगद्वार ९ लेश्याद्वार १० ध्यानद्वार ११ गणद्वार १२ अभिग्रहद्वार १३ प्रव्रज्याद्वार १४ मुण्डापनाद्वार १५ प्रायश्चित्तविधिद्वार १६ कारणद्वार १७ निःप्रतिकर्मताद्वार १८ भिक्षाद्वार १९ वसद्वार २०। तत्र क्षेत्र द्विधा मार्गणा जन्मत सद्भावतश्च, यत्र क्षेत्रे जात स्तत्र जन्मतो मार्गणा, यत्रच कल्प स्थितो वर्तते तत्र सद्भावत । उक्तच-खेत्ते दुहेह मग्गणा जम्मणउ चेव संतिभावय । जम्मणउ जहिं जातो संतीभावो जहिं कप्पो ॥ १ ॥ तत्र जन्मत सद्भावतश्च पञ्चसु भरतेषु पञ्चस्वैरावतेषु न तु महाविदेहेषु न च तेषां संहरणं मस्ति यन जिनकल्पिका इव संहरणत सर्वासु कर्मभूमि अकर्मभूमिषु वा प्राप्यरन्, उक्त च-विरहरवएसु होति संहरणवज्जियानियमा । कालद्वारे-अवसर्पिण्यां तृतीय चतुर्थ वारके जन्मसद्भाव, पञ्चमपि उत्सर्पिण्यां द्वितीये तृतीये चतुर्थे वा जन्मसद्भाव, पुन स्तृतीय चतुर्थेरा उक्तच-उस्सप्पिणीउदौसु जम्मणा होतीसुमति भावण । उस्सप्पिणीविवरीउ जम्मणउ संतिभावेय ॥ १ ॥

॥ मूल ॥

रित्तारिया। सेत्त खीणकसायवीतरागचरित्तारिया सेत्त वीतरागचरित्तारिया । अहवा चरित्तारिया पचविहा पण्णत्ता, तजहा—सामाइयचरित्तारिया छेओवठावणीयचरित्तारिया परिहारविसुद्धिचरित्तारिया सुहुमसपरायचरित्तारिया अहक्खायचरित्तारिया य । सेकित सामाइयचरित्तारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तजहा

॥ भाषा ॥

सेत्त वीतराग चरित्तार्यारिया । एतले क्षीणकषाय वीतराग चरित्रार्य कह्या एतले वीतराग चरित्रार्य कह्या । अथवा चरित्तारिया पचविहा पण्णत्ता तजहा । अथवा चारित्रार्य पांचभेद कह्या ते कहेछे—सामाइयचरित्तारिया छेओवठावणिय च परिहारविसुद्धि च सुहुमसपराय च अहक्खाय चरित्तारिया। सामायिक चरित्रार्य छेदोपस्थापनीय चारित्र परिहारविशुद्धि चारित्र सूक्ष्मसपराय चारित्रार्य सूक्ष्म लोभना उदयनयथाख्यात चारित्रा र्य निश्चय। सेकित सामाइय चरित्तारिया २ दुविहा पण्णत्ता तजहा । ए चारित्रार्य कहिये, हिवे सामायिक चारित्रार्य तेहना दोयभेद कह्या ते

अन्नेसुवि होज्ज पुव्वपडिवन्नो । तेसु वि वट्टतो सो तीतनय पप्प वुत्तीउ ॥३॥ तीर्थद्वारे-परिहारविशुद्धिको नियमत स्तीर्थप्रवर्त्तमान एव भवति न तच्छेदे नानुत्पत्त्या वा तदभावे जातिस्मरणादिना, उक्तंच-तित्थत्तिनियमतोच्चिय होइसतित्थमिनउणतदभावे । विच्छिण्णुप्पन्नेवा जाईसरणाइएहिंतु ॥ १ ॥ पर्यायद्वारे-पर्यायो द्विधा गृहस्थपर्यायो यतिपर्यायश्च, एकैकोपि द्विधा जघन्यत उत्कृष्टत श्च, तत्र गृहस्थपर्यायो जघन्यत एकोनत्रिंशद्वर्षाणि यतिपर्यायो विंशति द्वावपि चोत्कृष्टतो देशोनपूर्वकोटीप्रमाणौ उक्तं च-एयस्सएसनेउ गिहिपरियाउजहन्नगुणतीसा । जइपरियाउवीसा दोसुविउक्कोसदसूणो ॥१॥ आगमद्वार-अपूर्व मागम स नाधीते यस्मा त स्कल्प मधिकृत्य प्रगृहीतोचितयोगाराधनतएव स कृतकृत्यता भजत, पूर्वाधीत तु विश्रोतसिकाक्षयनिमित्त नित्यमेवैकाग्रमना सम्यक् प्रायो नुस्मरति, आहच अपुव्वनहिज्जइ आगमेसोपकप्पं । जमुचिय पगहियजोगा राहणउचवकियकिच्चा ॥ १ ॥ पुव्वाहीयतुतयपा पयउसइनिधमवेस एगग्गमणोसम्म विस्सोयसिगाखयवएउ ॥ २ ॥ वेदद्वारे-नित्यप्र वृत्तिकाले वेदपुरुषवेदो भवत् नपुंसकवेदो वा न स्त्रीवेद स्त्रियाः परिहारविशुद्धिकल्पप्रतिपत्त्यसंभवात्, अतीत नय मधिकृत्य पुन पूर्वप्रतिपन्न श्चिन्त्यमान सवेदो वा ऽवेदो वा तत्र सवेद श्रेणिप्रतिपत्त्यभावे उपशमश्रेणिप्रतिपत्तौ त्व वेद इति, उक्तंच-पवेयणवित्तिकाले इत्थीवज्जाउवेयउएग यरो । पुव्वपडिवन्नगोपुण हाज्जसवेदाअवेदावा ॥ १ ॥ कल्पद्वारे-स्थितकल्प एवाय नास्थितकल्प ठियकप्पमियनियमा इति वचनात्, तत्र चेला क्यादिषु दशस्वपि स्थानेषु ये स्थिता साधव स्तत्कल्प स्थितकल्प उच्यते य पुनश्चतुर्षु शय्यातरपिण्डे वारस्थितेषु कल्पेषु स्थिता शेषेषु चा चलस्यादिषु षट्सु अस्थिता स्तत्कल्पो स्थितकल्प, उक्तंच-ठियअठिएउपकप्पो आचेलुक्काइएसुठाणेसु । सव्वेसुठियापढमो चउठियउसुअठिया बीउ ॥ १ ॥ आचेलक्यादीनिच दशस्थानान्यमूनि । आचेलक्कुद्देसिय सिज्जायररायपिंडकियकम्म । वयजेट्ठपडिक्कमणे मासपज्जोसवणकप्पो ॥ १ ॥

णवासी वाणमंतरा जोइसिया वेमाणिया से किंत भवणवासी ? भवणवासी दसविहा पण्णत्ता, तंजहा असु

॥ मणुष्या से.कौन हे ? २ भ.वेदा प० तं० । ए.त कर्मभूमजा कहा, पन्नि ,भेत रहा एतले सर्व मनुष कह्या , हिव देवताना ४ भेद कह्या ते कहे

॥ टीका

ते वि असखातोगा उविन्दा चेव पढमबिन्याग उवरिवित्तोऽसखा संयमठाणाउदोगप्पि ॥ २ ॥ तत्र परिहारविशुद्धिककल्पप्रतिपत्ति स्वकीये ष्वेव सयमस्थानेषु वर्त्तमानस्य भवति न शेषेषु' यदा त्वतीतनय मधिकृत्य पूर्वप्रतिपन्नो विवक्ष्यते तदा शेषेष्वपि सयमस्थानेषु भवति परिहारवि शुद्धिकल्पसमाप्त्यनन्तर मन्येष्वपि चारित्रेषु सभवात्, तेष्वपि च वर्त्तमानस्या तीतनय मपेक्ष्य पूर्वप्रतिपन्नत्वाविरोधात्, उक्तच-सठाणे वट्टिवत्ती

॥ मूल

रियाय। सेत्त परिहारविसुद्धियचरित्तारिया। से किंत सुहुमसपरायचरित्तारिया? २ दुविहा पण्णत्त, तंज हा—संकिलिस्समाण सुहुमसपरायचरित्तारिया विसुज्झमाण सुहुमसपरायचरित्तारियाय सेत्त सुहुमसपरा यचरित्तारिया से किंत अहक्खायचरित्तारिया? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा छउमत्थ अहक्खायचरित्तारिया केवलिअहक्खायचरित्तारियाय सेत्त अहक्खायचरित्तारिया सेत्त चरित्तारिया सेत्त अणिड्ढिपत्तारिया सेत्त आ यरिया सेत्त कम्मभूमिगा सेत्त गब्भवक्कतिया सेत्त मणुस्सा से किंत देवा २ चउव्विहा पण्णत्ता, तंजहा भव

॥ भाव

म उत्कृष्ट तपजरे निर्विशमानक परिहारविशुद्ध चारित्रार्य। सेत्त परिहारविशुद्धिक च०। एतले परिहारविशुद्धिक चारित्र र्य कह्या। सेकित सुहुमसप राय चरित्तायरिया दुविहा प० त०। हिवे सूक्ष्मसपराय ते स्यु सूक्ष्म लोभांशमात्र अत्र रे वाकी तेह दोयभेदछे। संकिलिस्समाण सहुमसपराय च०। स क्लिश्यमान सूक्ष्मसपराय चारित्रार्य ते उपशमश्रेणि क्षपकश्रेणिथकी पडित हुय। विसुज्झमाणसुहुमसपराय च०। विशुद्धमान सूक्ष्मसपराय चरित्रार्य ते उपशमश्रेणि क्षपकश्रेणिथकी पडित हुवे। सेत्त सुहुमसपराय च०। एतले सूक्ष्मसपराय चारित्रार्य कह्या। साकित अहक्खायचरित्तायरिया दुविहा प० त०। हिवे यथाख्यात चारित्रार्यना दोयभेद कह्या तकहेछे—छउमत्थ अहक्खाय च० केवलीअहक्खाय च०। छद्मस्थ यथाख्यात चारित्रार्य ते उपशांतमो हगुणठाण क्षीणमोहगुणठाणा छते केवलीयथाख्यात चारित्रार्य ते सयोगि अयोगिगुणठाण हुवे। सेत्त अहक्खाय सेत्त चरित्ताय० सेत्त अणिड्ढिपत्तायरिया सेत्त आयरिया। एतले यथाख्यात चारित्रार्य कह्या एतले अनऋद्धिप्राप्त आर्य कह्या एतले सर्व आर्य कह्या। सेत्त कम्मभूमगा सेत्त गब्भवकतिया से

अन्नेसुवि होज्ज पुव्वपडिवन्नो । तेसु वि वट्टतो सो तीतनय पप्प वुच्चतीउ ॥३॥ तीर्थद्वारे-परिहारविशुद्धिको नियमत स्तीर्थप्रवर्त्तमान एव सति भवति न तच्छेदे नानुत्पत्त्या वा तदभावे जातिस्मरणादिना, उक्तंच-तित्थेत्तिनियमतोच्चिय होइसतित्थंमिनउणतदभावे । विगएऽणुप्पन्ने वा जाईसरणाइएहितु ॥ १ ॥ पर्यायद्वारे-पर्यायो द्विधा गृहस्थपर्यायो यतिपर्यायश्च, एकैकोपि द्विधा जघन्यत उत्कृष्टत श्च, तत्र गृहस्थपर्याया जघन्यत एकोनत्रिंशद्वर्षाणि यतिपर्याया विंशति र्द्वावपि चोत्कर्षतो देशोनपूर्वकोटीप्रमाणौ उक्तं च-एगस्सुन्नत्तीसा गिहिपरियाउ जहन्नगुणतीसा । जइपरियाउवीसा दोसुविउक्कोसदेसूणो ॥१॥ आगमद्वारे-अपूर्व मागमं स नाधीते यस्मा त्तं कल्पं अधिकृत्य प्रगृहीतोचितयोगाराधनतएव स कृतकृत्यता भजते, पूर्वाधीत तु विस्रोतसिकाक्षयनिमित्त नित्यमेकाग्रमना सम्यक् प्रायो ऽनुस्मरति, आहच अप्पुव्वनाहिज्जइ आगमंसोपडुच्चकप्पं । जमुचियपगहियजोगा राहणउचवकियकिच्चो ॥ १ ॥ पुव्वाहीयतुतयपा पयएणनिच्चमवेस मणसाउ । भुज्जो विस्सोयसियाखयहेउ ॥ २ ॥ वेदद्वारे-प्रवृत्तिकाले वेदपुरुषवेदो भवेत् नपुंसकवेदो वा न स्त्रीवेद स्त्रिया परिहारविशुद्धिकल्पप्रतिपत्त्यभावात्, अतीत नय मधिकृत्य पुन पूर्वप्रतिपन्न चिन्त्यमान सवेदो वा ऽवेदो वा तत्र सवेद श्रेणिप्रतिपत्त्यभावे उपशमश्रेणिप्रतिपत्तौ त्ववेद इति, उक्तंच-वेदोपवित्तिकाले इत्थीवज्जोउ होइ एगयरो । पुव्वपडिवन्नगोपुण होज्जसवेदोअवेदोवा ॥ १ ॥ कल्पद्वारे-स्थितकल्प एवायं नास्थितकल्पे स्थितकल्पेनियमनियमा इति वचनात्, तत्र चेल-क्यादिषु दशस्वपि स्थानेषु ये स्थिता साधव स्तत्कल्प स्थितकल्प उच्यते ये पुनरुक्तं शय्यातरपिण्डं चातुर्यामव्रतं ज्येष्ठ कृतिकर्म चेति चतुर्षु स्थिता शेषेषु चा-चेलक्यादिषु षट्सु अस्थिता स्तत्कल्पो ऽस्थितकल्प, उक्तंच-ठियअट्ठियकप्पो आचेलक्काइएसुठाणेसु । सव्वेसुठियापढमो चउठियछसुअट्ठिया-बीउ ॥ १ ॥ आचेलक्यादीनि च दशस्थानान्यमूनि । आचेलक्कुद्देसिय सिज्जायररायपिंडकिइकम्मे । वयजेट्ठपडिक्कमणे मासपज्जोसवणकप्पे ॥ १ ॥

णवासी वाणमंतरा जोइसिया वेमाणिया से किंत भवणवासी ? भवणवासी दसविहा पण्णत्ता, तंजहा असुर

स मणुस्सा से कित देवा २ [illegible] प० तं० । ए० [illegible] भवणवासी [illegible] कहि, [illegible] ते कडे

चत्वारशत्रस्थिता कल्पाइमे सेज्झायरपिण्डमी चाउज्जामेयपुरिसजेट्ठेय । किइकम्मस्सयकरणे चत्तारिअवट्ठियाकप्पा ॥ २ ॥ लिगद्वारे-नियमितो द्विविधेपि लिंगे भवति तद्यथा-द्रव्यलिंगे भावलिंगे च एकेनापि विना विवक्षितकल्पोचितसामाचारयोगात्, लेश्याद्वारे-तेज प्रभृतिकासु उत्तरासु तिसृषु विशुद्धासु लेश्यासु परिहारविशुद्धिक कल्प प्रतिपद्यते पूर्वप्रतिपन्न पुन सर्वास्वपि कथं चि द्रवति तत्रापी स्वराविशुद्धिलेश्यासु नात्यन्तमक्लिष्टासुभवत तथाभूतासुवर्त्तमानोनप्रभूतकालमवतिष्ठते कितुस्तोक यत स्ववीर्यवशात्झटित्येव ताभ्योव्यावर्त्तते अथ प्रथमत एव कस्मा न्नप्रवर्त्तते उच्यते कर्मवशात् उक्तञ्च लेसासुविसुद्धासु पडिवज्जइतीसुनउणसेसासु पुव्वपडिवन्नउपुण होज्जासव्वासुविकहिंचि ॥ १ ॥ णच्चंतसंकिलिट्ठासु थोवकालंचनाणियेनदिइयरासु चित्तकम्माणाइ तहाविवीरियफलदेइ ॥ १ ॥ ध्यानद्वारे-धर्मध्याने न प्रवर्द्धमानेनपरिहारविशुद्धिकंप्रतिपद्यते पूर्वप्रतिपन्न पुनरार्त्तरौद्रयोरपिभवति केवल प्रायेण निरनुबंध आह च झाणंमिविनियमेण पडिवज्जइमो पवड्ढमाणेण इयरेसुविझाणेसु पुव्वपडिवन्नोनपडिसिद्धो ॥ १ ॥ एवचझाणजोगे उद्दामेतिव्वकम्मपरिणामा रोद्दट्टेसुविभावी इमस्सपायंनिरणुबंधो ॥ २ ॥ गणनाद्वारे जघन्यत स्त्रयो गणा प्रतिपद्यन्ते उत्कर्षत शतसंख्या पूर्वप्रतिपन्ना जघन्यत उत्कृष्टतो वा शतश पुरुषगणनया जघन्यत प्रतिपद्यमाना सप्तविंशति रुत्कर्षत सहस्र पूर्वप्रतिपन्नका पुनर्जघन्यत शतश उत्कर्षत सहस्रश आह च गणउतिन्निसयग्गसो जहन्नपडिवत्तिसयस उक्कोसा उक्कोसजहन्नेसो सयसोच्चियपुव्वपडिवन्ना ॥ १ ॥ सत्तावीसजहन्ना सहस्समुक्कोसउपपडिवत्ती सयसोसहस्ससोवा पडिवन्नजहन्नउक्कोसा ॥ २ ॥ अन्य च यदा पूर्वप्रतिपन्नकल्पमध्या देको निर्गच्छति अन्य प्रविशति तदो नप्रक्षेप प्रतिपत्ती कदाचि दकोपि भवति पृथक्त्व वा पूर्वप्रतिपन्नो प्येव भजनया कदाचिदेक प्राप्यते पृथक्त्व वा उक्तञ्च पडिवज्जमाणभयणाए होज्जएक्कोविऊणपक्खेवे पुव्वपडिवन्नयाविय भइयाएक्कोपुहुत्तवा ॥ १ ॥ अभिग्रहद्वारे-अभिग्रहा श्चतुर्विधा स्तद्यथा द्रव्याभिग्रहा क्षेत्राभिग्रहा कालाभिग्रहा भावाभिग्रहा श्च एते चा न्यत्र चर्चिता इति न भूय उच्यन्ते तत्र परिहारविशुद्धिकस्ये ते भिन्न

हा न प्रवन्ति यस्मा देतस्य कल्पएव यथोदितरूपो निग्रहो वर्त्तते उक्तञ्च दव्वाईअभिग्गह विचित्तरूवानत्तोंतिपुणकेई गयस्समीयकप्पो कप्पोचिय जिणकप्पजेण ॥ १ ॥ गयमिगोयराइ नियमानियमाणिरववादाय तप्पालणाविपर गयस्सविसुद्धिठाणंतु ॥ २ ॥ प्रव्रज्याद्वार-ना सा वन्य प्रव्राज यति कल्पस्थिति रेषेति कृत्वा आज्ञच पवाब्वेइ न गसो अन्नकप्पठिइसिकाऊणति उपदेश पुन यथाशक्ति प्रयच्छति मुण्डापनद्वारेपि ना सा वन्य मुण्डयति अथ प्रव्रज्यानन्तर नियमतो मुण्डनमिति प्रव्रज्याग्रहणेनैव तद्गृहीतमिति किमथ पृथक्द्वार तद युक्त प्रव्रज्याद्वार नियमतो मुण्डनस्या सम्भवात् अयोग्यस्य कथञ्चि द्दत्तायामपि प्रव्रज्याया पुनरयोग्यतापरिज्ञाने मुण्डनायोगादत पृथगिदद्वारमिति प्रायश्चित्तविधिद्वारे । मनसापि सूक्ष्ममप्यतिचारमापन्नस्य नियमत श्चतुर्गुरुक प्रायश्चित्तमस्य यत एष कल्प एकाग्रताप्रधान स्तत स्तद्भङ्गे गुरुतरदोप इति कारणद्वारे तथा कारण नाम आलम्बन य त्पुन सुपरिशुद्ध ज्ञानादिक तच्चा स्य न विद्यत येन तदाश्रित्यापवादपदसेविता स्यात् एष हि सर्वत्र निरपेक्ष क्लिष्टकर्मक्षपणनि मित्त मारब्ध मेव स्व कल्प यथोक्तविधिना समापयन् महात्मा वर्त्तते उक्तञ्च कारणमालम्बणमोतु पुणाणादियसुपरिसुद्ध गयस्सतनविज्जइ उचि यतपसाहणोपाय ॥ १ ॥ मज्झत्थनिरवयक्खो आढत्तचियदढसमाणतो वट्टइसगहप्पा किलिट्ठकम्मक्खयनिमित्त ॥ २ ॥ नि प्रतिकर्मताद्वारे एष महा त्मा नि प्रतिकर्मशरीरो अक्षिमलादिक मपि कदाचि न्ना पनयति न च प्राणान्तकपि समापतिते व्यसने द्वितीयपद सेवत उक्तञ्च निप्पडिकम्मसरी रो अच्छिमलाइविनाअणेइसया पाणतिए वियमहा वसणमिनतहण्णयीए ॥ १ ॥ अप्पबहुत्तालोयण विसयादीतुउगोइसत्ति अएयासुन्नावाउ यहु गपयचियन्मस्स ॥ २ ॥ भिक्षाद्वारे-एतदेवचारित्र तथा विहारक्रम श्च तृतीयस्या पौरुष्या भवति शेषासु च पौरुषीपु कायोत्सर्गो निद्रापि पा

रकुमारा नागकुमारा सुवण्णकुमारा विज्जुकुमारा अग्गिकुमारा दीवकुमारा उदहिकुमारा दिसाकुमारा वाउ

छे—भवणपतीआ वाणमन्तरा जोइसिया वेमाणिया । भवनपती वानव्यन्तर ज्योतिषी वैमानिक । सेकित भवणवासी दसविहा प० तं० । हिवे भवनप ती दशभेद कह्या ते कहछे— असुरकुमार नागकुमार सुवर्णकुमार विद्युत्कुमार अग्निकुमार द्वीपकुमार उदधिकुमार दिसिकुमार वायुकुमार स्तनि

चत्तारण्णाउस्थिता कल्पाडमे सेज्जायरपिडम्मी चाउज्जामेयपुरिसजेडेय । किडकम्मस्सयकरणे चत्तारिअवट्ठियाकप्पा ॥ २ ॥ लिंगद्वारे-नियमितो द्विविधेपि लिंगे भवति तद्यथा-द्रव्यलिंगे भावलिंगे च एकोनापि विना विवक्षितकल्पोचितसामाचारीयोगात्, लेश्याद्वारे-तेजःप्रभृतिकासू त्तरासु तिसृषु विशुद्धासु लेश्यासु परिहारविशुद्धिक कल्प प्रतिपद्यते पूर्वप्रतिपन्न पुन सर्वास्वपि कथंचि द्भवति तत्रापो स्वराविशुद्धिलेश्यासु नात्यन्तमक्लिष्टासु भवत तथाभूतासु वर्त्तमानोनप्रभूतकालमवतिष्ठते किंतु स्तोक यत स्ववीर्यवशात् झटित्येव ताभ्यो व्यावर्त्तते अथ प्रथमत एव कस्मान्न प्रवर्त्तते उच्यते कर्मवशात् उक्तञ्च लेसासु विसुद्धासु पडिवज्जइ तीसु नउण सेसासु पुव्वपडिवन्नउपुण होज्जा सव्वासु विकहिंचि ॥ १ ॥ णच्चंतसंकिलिट्ठासु थोवंकालंचपानत्थयेनदिइयरासु चित्तकम्माणाउ तव्वाविवीरियफलादेउ ॥ १ ॥ ध्यानद्वार-धर्मध्यान न प्रवर्द्धमानेनपरिहारविशुद्धिकप्रतिपद्यते पूर्वप्रतिपन्न पुनरार्त्तरौद्रयोरपिभवति केवल प्रायेण निरनुबंध आह च झाणम्मिविनय मेण पडिवज्जइसो पवड्ढमाणेण इयरसुविझाणेसु पुव्वप

वन्नो नपडिसिद्धो ॥ १ ॥ एवचझाणजोगे उद्दामतिव्वकम्मपरिणामा रोद्दट्टसुविझावो इमस्सपायनिरणुबंधो ॥ २ ॥ गणनाद्वारं जघन्यत स्त्रयो गणा प्रतिपद्यन्ते उत्कृषत शतसंख्या पूर्वप्रतिपन्ना जघन्यत उत्कृष्टतो वा शतशः पुरुषगणनया जघन्यत प्रतिपद्यमाना सप्तविंशति रुत्कृषत सहस्र पूर्वप्रतिपन्नका पुनर्जघन्यत शतशः उत्कृषत सहस्रश आह च गणातिन्निवगणा जहन्नपडिवत्तिमयस उक्कोसा उक्कोसजहन्नेण सयसोच्चियपुव्वपडिवन्ना ॥ १ ॥ सत्तावीसजहन्ना सहस्समुक्कोसउपडिवत्ती सयमोसहस्समोवा पडिवन्नजहन्नउक्कोसा ॥ २ ॥ अन्य च यदा पूर्वप्रतिपन्नकल्पमध्या देको निर्गच्छति अन्य प्रविशति तदो नप्रक्षेप प्रतिपत्तौ कदाचि देकोपि भवति पृथक्त्व वा पूर्वप्रतिपन्नो प्येव भजनया कदाचिदेक प्राप्यते पृथक्त्व वा उक्तञ्च पडिवज्जमाणभयणाए होज्जएक्कोविऊणपक्खेवे पुव्वपडिवन्नयाविय भइयाएक्कोपुहुत्तवा ॥ १ ॥ अभिग्रहद्वारि-अभिग्रहा श्चतुर्विधा स्तद्यथा द्रव्याभिग्रहा क्षेत्राभिग्रहा कालाभिग्रहा भावाभिग्रहा श्च एते चा न्यत्र चर्चिता इति न भूय उच्यंते तत्र परिहारविशुद्धिकस्ये ते भिग्र

वा कैवलिक सजोगि केवलिभवम योगिकेवलिभव च शैलमित्याद्यु पसहार कदवक सूत्र सुगम तदेव उक्ता मनुष्य सप्रति देवप्रतिपादनार्थमाह ॥ सेकितमित्यादि ॥ अथके ते देवा सूरिराह देवा चतुर्विधा प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-भवनवासिनो १ व्यन्तरा २ ज्योतिष्का ३ वैमानिका ४ तत्र भवनेषु वसन्तीत्येव शीला भवनवासिन एतद्बाहुल्यतो नागकुमाराद्यपेक्षया द्रष्टव्य, ते हि प्रायो भवनेषु वसन्ति कदाचिदावासेषु असुरकुमारा प्राचुर्यता वासेषु कदाचि द्भवनेषु अथ भवनानामा वासानाञ्चक प्रतिविशेष उच्यते भवनानि बहिर्वृत्तान्यन्त समचतुरस्राणि अध पुष्करकर्णिका सस्थाना नि आवासा कायमानस्थानीया महामण्डपा विविधमणिरत्नप्रदीपप्रभासितसकलदिक्चक्रवालाइति । अन्तर नाम अवकाश त येषाम् अयरूप द्रष्टव्य विविध भवननगरावासरूपम न्तर येषाते व्यन्तरा स्तत्र भवनानि रत्नप्रभाया प्रथमे रत्नकाण्ड उपर्यध श्च प्रत्येक योजनशतमपहाय शेषे ऽष्टयोजनशतप्रमाणे मध्यभागे भवन्ति नगराण्यपि तिर्यग्लोके तत्र तिर्यग्लोके यथा जम्बूद्वीपद्वाराधिपतेर्विजयदेवस्या न्यस्मिन् जम्बूद्वीपे द्वा

दशयोजनसहस्रप्रमाणा नगरी आवासा स्त्रिष्वपि लोकेषु तत्र ऊर्ध्वलोके पण्डकवनादाविति अथवा विगतमन्तर मनुष्येभ्यो येषाते व्यन्तरा तथाहि मनुष्यानपि चक्रवर्तिवासुदेवप्रभृतीन् भृत्यवदु पचरति केचि द्व्यन्तरा इति मनुष्येभ्यो विगतान्तरा यदि वा विविधम न्तर शैलान्तर वनान्तर वा आश्रयरूप येषात व्यन्तरा प्राकृतत्वा च सूत्रे वाणमन्तरा इति पाठ यदि वानमन्तरा इति पदसस्कार तत्रेय व्युत्पत्तिवनानाम न्तराणि वना न्तराणि तेषु भवा वानमन्तरा पृषोदरादित्वा दुभयपदपदान्तरालवर्तिमकारागम , तथा द्योतयन्ति प्रकाशयन्ति जगदिति द्योतींषि विमानानि औणादिकोशब्दव्युत्पत्ति तेषु भवा ज्योतिष्का अध्यात्मादिभ्य इती कण् तत्रैवर्णावर्णादेरिसुसइते इकण् आदि विकारस्य लोप मनुनिपाता न्न ज स्वभाव यदि वा द्योतयन्ति शिरोमुकुटोपगूहिभि प्रभामण्डलकल्पे सूर्यादिमण्डलै प्रकाशयन्तीति ज्योतिषो देवा सूर्यादय स्तथा हि सूर्यस्य सूर्याकार मुकुटाग्रभागे चिह्न चन्द्रस्य चन्द्राकार नक्षत्रस्यनक्षत्राकार ग्रहस्य ग्रहाकार तारकस्य तारकाकार ते प्रकाशयतीति' आह च तत्त्वार्थभा

स्या त्वा द्रष्टव्या यदि पुन कथमपि जङ्घाबलमस्य परिक्षीण भवति तथा प्ये पो विहरन्न पि महाभागो न द्वितीयपदमा पद्यते किन्तु तत्रैव यथा कल्पमा त्मीय योग विदधातीति उक्तञ्च तइयाएपोरिसीए भिक्खाकाराविहारकालोउ सेसासुउउस्सग्गो पायअप्पायनिद्दाउ ॥ १ ॥ जघाबलम्मि खीणे अविहरमाणोविनवरमावज्जे तत्थेवअहाकप्पजुगाइउजोगमहाभागो ॥ १ ॥ एते च परिहारविशुद्धिका द्विविधा तद्यथा–इत्वरा यावत्कथिकाश्च तत्र ये कल्पसमाप्त्यनन्तर तमेव कल्प गच्छवास मुपयास्यन्ति तेऽत्वराय पुन कल्पसमाप्त्यनन्तरमव्यवधानेन जिनकल्प प्रति पत्स्यन्ते ते यावत्कथिका, उक्तञ्च–इत्तरियथेरकप्प जिणकप्पेआवकहियत्ति अत्र स्थविरकल्प ग्रहणा उपलक्षणा त्यकल्प चेतिद्रष्टव्य तत्रे त्वराणा कल्पप्रभावा द्देव मनुष्यतैर्यग्योनिकृता उपसर्गा र सद्योघातिन आतङ्क अतीवा विपह्या श्च वेदना न प्रादु र्भवन्ति यावत्कथिकाना सम्भवयुरपि ते हि जिनकल्प प्रतिपत्स्यमाना जिनकल्पभावम नुविदधति जिनकल्पिकाना चो पसर्गादय सम्भवन्तीति उक्तञ्च इत्तरियाणुवसग्गा आतकावेयणायनहवन्ति आवकहियाणभइया इति तथा सूक्ष्मो लोभाशावशेष सम्पराय कषायोदयो यत्र तत्सूक्ष्मसम्पराय त च्च द्विधा विशुध्यमानक सक्लिश्यमानक च तत्र विशुध्यमानक क्षपकश्रेणिमुपशमश्रेणिवा समारोहत सक्लिश्यमान तू पशमश्रेणित प्रच्यवमानस्य अथाख्यातमिति अथ शब्दो यथार्थे आङ अभिविधौ यथातथ्यन अभिविधिना वा यत्ख्यात कथित अकषाय चारित्र मिति तदा ख्यात, उक्तञ्च अहसद्दोजहत्थे आङाभिविहीएकहियम क्खाय चरणमकसायमुइय तमहक्खायजहक्खाय ॥ १ ॥ यथाख्यातमितिक्त द्वितीयनाम तस्या य मन्वर्थ । यथा सर्वस्मिन् जीवलोके ख्यात प्रसिद्ध अकषाय भवति चारित्र मिति तथैव यत् यथाख्यात तच्च द्विधा छाद्मस्थिक कैवलिक च्च तत्रछाद्मस्थिकमुपशान्तमोह गुणस्थानके क्षीणमोहगुणस्थानके

कुमारा थणियकुमारा तेसमासउदुविहा पण्णत्ता, तजहा–पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय सेत्त भवणवासी से

कुमार १० । असुरकुमार नागकुमार सुवर्णकुमार विद्युत्कुमार अग्निकुमार द्वीपकुमार उदधिकुमार दिशिकुमार वायुकुमार स्तनितकुमार १० । एते समासथी दुविहा प० त० । ए सघपणो टीयभेद कह्या ते कहेछे–पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय । पर्याप्ता अपर्याप्ता । सेत्त भवणवासी । एतले भवनपती क

१०, गंधर्वाद्वादशविधा तद्यथा-हाहा १ हूहू २ तुम्बरव ३ नारदा ४ ऋषिवादिका ५ भूतवादिका ६ कादम्बा ७ महाकादम्बाः ८ रेवता ९ विश्वावसव १० गीतरतयो ११ गीतयशस १२, यक्षा स्त्रयोदशधा स्तद्यथा-पूर्णभद्रा १ माणिभद्रा २ श्वेतभद्रा ३ हरितभद्रा ४ सुमनोभद्रा ५ व्यतिपातिकभद्रा ६ सुभद्रा ७ सर्वतोभद्रा ८ मनुष्ययक्षा ९ वनाधिपतयो १० वनाहारा ११ रूपयक्षा १२ यक्षोत्तमा १३ राक्षसा सप्तविधास्तद्यथा-भीमा १ महाभीमा २ विघ्ना ३ विनायका ४ जलराक्षसा ५ राक्षस ६ राक्षसा ७, भूतानवविधा स्तद्यथा-सुरूपा १ प्रतिरूपा २ अतिरूपा ३ भूतोत्तमा ४ स्कन्दका ५ महास्कन्दका ६ महावगा ७ प्रतिच्छन्ना ८ आकाशगा ९, पिशाचा षोडशविधा स्तद्यथा-कूष्माण्डा १ पटका २ जोषा ३ आह्निका ४ काला ५ महाकाला ६ चोक्षा ७ अचोक्षा ८ तालपिशाचा ९ मुखरपिशाचा १० अधस्तारका ११ देहा १२ विदे

पंचविहा पण्णत्ता, तजहा चंदासूरागहनक्खत्तातारा तेसमासओ दुविहा पण्णत्ता, तजहा पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय से कित जोइसिया से कित वेमाणिया २ दुविहा पण्णत्ता, तजहा कप्पोवग्गाकप्पाईयाय सेकित कप्पोवग्गा २ बारसविहा पण्णत्ता, तजहा सोहम्मा ईसाणा सणकुमारा माहिंदा बंभलोया लंतया महासुक्का सहस्सारा आणया पाणया आरणा अच्चुया तेसमासओ दुविहा पण्णत्ता, तजहा पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय

क—पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय। पर्याप्ता अपर्याप्ता। सेत्त जोइसिया सेकित वेमाणिया दुविहा प० त० एतले ज्योतिषी कह्या, हिवे वैमानिक दोयप्रकार कह्या ते कहेछे—कप्पोवग्गा कप्पाईया। कल्पोत्पन्न कल्पातीत। सेकित कप्पोवगा २ बारसविहा प० त०। हिवे कल्पोत्पन्नना १२ भेद कह्या ते कहेछे। सोहम्मा ईसाणा सणतकुमारा माहिंदा बंभलोया लंतया सुक्का सहस्सारा आणया पाणया आरणा अच्चुया ते समासओ दुविहा प०त०। सौधर्म ईशान सनत्कुमार माहेन्द्र ब्रह्मलोक लांतक शुक्र सहस्रार आनत प्राणत आरण अच्युत ते संक्षेपथकी दोयप्रकारे कह्या ते कहेछे—पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय। पर्याप्ता अपर्याप्ता। सेत्त कप्पोवग्गा सेकित कप्पाईया २ दुविहा प० त०। ए कल्पोत्पन्न कह्या, हिवे कल्पातीतना दोयभेद कह्या ते कहेछे—गेवेज्ज

प्यकत् द्योतयते इति द्योतींषि विमानानि तेषु भवा द्योतिका यद्वाज्योतिषी देवा ज्योति रिव ज्योतिका मुकुटे शिरो मुकुटोपगूहिनि प्रभा मण्डले उज्वले सूर्यचन्द्रग्रहनक्षत्रतारकाणा मण्डलै यथा स्वचिन्हे विराजमाना द्युतिमतो ज्योतिका भवन्तीति तथा विविध मन्यते उपभुज्यन्ते पुण्यवद्भि जीवै रिति विमानानि तेषु भवा वैमानिका , सम्प्रत्ये तेषा मेव क्रमेणाभेदानभिधित्सुराह-सेकितंभवणवासी इत्यादि ॥ असुरा श्च ते कुमारा श्च असुरकुमारा एव नागकुमारा इत्याद्यपि भावनीय अथकस्मा देते कुमारा इति व्यपदिश्यन्ते उच्यते कुमारवच्चेष्टनात् तथाहि-कुमा रावे तेसुकुमारमृदुमधुरललितगतय शृंगाराभिप्रायकृतविशिष्टविशिष्टतरोत्तररूपक्रिया कुमारव च्चो द्धतरूपवेष भाषाभरणप्रहरणाचरण यान वा हन कुमारवच्चोल्वणरागा क्रीडनपरा श्च तत कुमार इव कुमारा इति, किनरा इत्यादि किन्नरा दशविधा स्तद्यथा किन्नरा॰ किंपुरुषा २ किंपु रुषोत्तमा ३ किन्नरोत्तमा ४ हृदयगमा ५ रूपशालिन ६ अनिंदिता ७ मनोरमा ८ रतिप्रिया ९ रतिश्रेष्ठा १०। किंपुरुषा दशविधा स्तद्यथा पुरु षा १ सत्पुरुषा २ महापुरुषा ३ पुरुषवृषभा ४ पुरुषोत्तमा ५ अतिपुरुषा ६ महादेवा ७ मरुत ८ मेरुप्रतिभा ९ यशस्वन्त १०, महोरगा दश विधा स्तद्यथा भुजगा १ भोगशालिन २ महाकाया ३ अतिकाय ४ स्कन्धशालिन ५ मनोरमा ६ महावेगा ७ महायक्षा ८ मेरुकान्ता ९ भास्वत

कित वाणमतरा२ अठविहा प०, तजहा किन्नरा किंपुरिसा महोरगा गधव्वा जक्खा रक्खसा भूया पिसा या ते समासअदुविहा पणत्ता, तजहा पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय सेत्त वाणमतरा से कित जोइसिया २

द्या। सेकित वाणमतरा २ अट्ठविहा प० त०। हिवे वानव्यन्तर देवताना ८ भेद कह्या ते कहेछे—किन्नरा किंपुरिसा महोरगा गधव्वा जक्खा राक्खसा भूया पिसाया एते समासओ दुविहा प० त०। किन्नर किंपुरुष महोरग गन्धर्व यक्ष राक्षस भूत पिशाच ए सघपयकी दोयभेद कह्या ते कहेछे—पज्जत्त गाय अपज्जत्तगाय। पर्याप्ता अपर्याप्ता। सेत्त वाणमतरा सेकित जोइसिया २ पचविहा प० त०। ते एतला वानव्यन्तर कह्या, हिवे ज्योतिषीना ५ भेद कह्या ते कहेछे—चदा सूरा गहा नक्खता तारा एते समासओ दुविहा प० त० चन्द्र सूर्य ग्रह नचत्र तारा ५। ए सघपयकी दोयप्रकारे कह्या ते कहे

॥ टीका ॥ मूल ॥ भाषा

॥ टीका ॥

१०, गन्धर्वाष्टादशविधा तद्यथा-हाहा १ हूहू २ तुम्बरव ३ नारदा ४ ऋषिवादिका ५ भूतवादिका ६ कादम्बा ७ महाकादम्बा ८ रैवता ९ विश्वावसव १० गीतरतयो ११ गीतयशस १२, यक्षा स्त्रयोदशधा तद्यथा-पूर्णभद्रा १ माणिभद्राः २ श्वेतभद्रा ३ हरितभद्रा ४ सुमनोभद्रा ५ व्यतिपातिकभद्रा ६ सुभद्रा ७ सर्वतोभद्रा ८ मनुष्ययक्षा ९ वनाधिपतयो १० वनाहारा ११ रूपयक्षा १२ यक्षोत्तमा १३ राक्षसा सप्तविधास्तद्य था-भीमा १ महाभीमा २ विघ्ना ३ विनायका ४ जलराक्षसा ५ राक्षस ६ राक्षसा ७, भूतानवविधा स्तद्यथा-सुरूपा १ प्रतिरूपा २ अति रूपा ३ भूतोत्तमा ४ स्कन्दका ५ महास्कन्दका ६ महावेगा ७ प्रतिच्छन्ना ८ आकाशगा ९, पिशाचा षोडशविधा स्तद्यथा-कूष्माण्डा १ पटका २ जोषा ३ आह्निका ४ काला ५ महाकाला ६ चोक्षा ७ अचोक्षा ८ तालपिशाचा ९ मुखरपिशाचा १० अधस्तारका ११ देहा १२ विदे

॥ मूल ॥

पंचविहा पण्णत्ता, तंजहा चंदासूरागहनक्खत्तातारा तेसमासओ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा पज्जत्तगाय अप ज्जत्तगाय से किंत जोइसिया से किंत वेमाणिया २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा कप्पोवग्गाकप्पाईयाय सेकिंत कप्पोवग्गा २ बारसविहा पण्णत्ता, तंजहा सोहम्मा ईसाणा सणकुमारा माहिंदा बंभलोया लंतया महासुक्का सहस्सारा आणया पाणया आरणा अच्चुया तेसमासओ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय

॥ भाषा ॥

छे—पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय। पर्याप्ता अपर्याप्ता। सेत जोइसिया सेकिंत वेमाणिया दुविहा प० त० एतले ज्योतिषी कह्या, हिवे वैमानिक दोयप्रका र कह्या ते कहेछे—कप्पोवग्गा कप्पाईया। कल्पोत्पन्न कल्पातीत। सेकिंत कप्पोवग्गा २ बारसविहा प० त०। हिवे कल्पोत्पन्नना १२ भेद कह्या ते कहेछे। सोहम्मा ईसाणा सणंकुमारा माहिंदा बंभलोया लंतया सुक्का सहस्सारा आणया पाणया आरणा अच्चुया ते समासओ दुविहा प०त०। सौधर्म ईशा न सनत्कुमार माहेन्द्र ब्रह्मलोक लांतक शुक्र सहस्रार आनत प्राणत आरण अच्युत ते संक्षेपथकी दोयप्रकारे कह्या ते कहेछे—पज्जत्तगाय अपज्जत्तगा य। पर्याप्ता अपर्याप्ता। सेत कप्पोवग्गा सेकिंत कप्पाईया २ दुविहा प० त०। ए कल्पोत्पन्न कह्या, हिवे कल्पातीतना दोयभेद कह्या ते कहेछे—गेवेज्ज

॥ टीका ॥

शा १३ महाविदेहा १४ तूष्णीका ५ वनपिशाचा १६ इति ॥ कप्पोवगा कल्पातीयत्ति ॥ कल्पाचार स चे ह इन्द्रसामानिकत्रयस्त्रिंशादिव्यवहाररूप स्तमुपगता सौधर्मेशानादिदेवलोकनिवासिन यथोक्तरूप कल्पमतीता अतिक्रान्ता कल्पातीता अधस्तनाधस्तनग्रैवेयकादिनिवासिन स्तेऽपि सर्वेप्य हमिन्द्रा स्तो भवन्ति कल्पातीता , कल्पोपगान् दर्शयति-सोहम्मीसाणाइत्यादि ॥ सौधमदेवलोकनिवासिन सौधमा , इशानदेवलोकनिवासिन

॥ मूल ॥

सेत्त कप्पोवगा से किंत कप्पाईया २ दुविहा पणत्ता , तंजहा गेविज्जगाय अणुत्तरोववाइयाय से किंत गेविज्जगा २ नवविहा पणत्ता, तंजहा हिट्ठिमहिट्ठिमगेविज्जगा हिट्ठिममज्झिमगेविज्जगा हिट्ठिमउवरिम गेविज्जगा मज्झिमहिट्ठिमगेविज्जगा मज्झिम २ गेविज्जगा मज्झिमउवरिमगेविज्जगा उवरिमहिट्ठिमगेविज्ज गा उवरिममज्झिमगेविज्जगा उवरिम२ गेविज्जगा तेसमासउ दुविहा पणत्ता, तंजहा पज्जत्तगाय अपज्ज

॥ भाषा ॥

गाय अणुत्तरोववाइयाय । ८ नव ग्रैवेयक ५ अणुत्तरविमान । सेकिंत गविज्जगा २ नवविहा प० त० । हिवे ग्रैवेयक वासीना नवभेद कह्या ते कहेछे । हिट्ठिम२ गेवज्जगा हेट्ठिममज्झिमगेविज्जगा हेट्ठिमउवरिमगेविज्जगा मज्झिमहेट्ठिमगेविज्जगा ४ । प्रथम ग्रैवेयकनो हेठलोग्रैवेयक प्रथम त्रिकनो उपरि लोग्रैवेयक प्रथम त्रिकनो मध्यग्रैवेयक द्वीतिय त्रिकनो प्रथम ग्रैवेयक द्वीतिय त्रिकनो मध्यमग्रैवेयक । मज्झिम २ गे० मज्झिमउवरिम गे० उवरिमहेट्ठिम गे० उवरिममज्झिम गे० उवरिम २ गेविज्जगा ५ । द्वीतिय त्रिकनो माजो ग्रैवेयक तीजा त्रिकनो प्रथमग्रैवेयक त्रीजा त्रिकनो मध्यमग्रैवेयक तीजा त्रिकनो उपरिलाग्रैवेयक । एते समासओ दुविहा प० त० । ए सघपे दोयप्रकारे कह्या तेकहेछे । पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय । पर्याप्ता अपर्याप्ता । सेत्त गेवेज्जगा । एतले ग्रैवेयकदेवता कह्या । सेकिंतं अणुत्तरोववाइया २ पंचविहा प०त० । हिवे अनुत्तरवासी कहेछे ते अनुत्तरवासीना पांचभेद कहेछे । विजया वेजयंता जयंता अपराजिया सव्वट्ठसिद्धा एते समासओ दुविहा पणत्ता तंजहा । विजय वैजयन्त जयन्त अपराजित सर्वार्थसिद्ध ए संक्षेपे दोय भेदछे । पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय । पर्याप्ता अपर्याप्ता । सेत्त अणुत्तरोववेया सेत्त कप्पाइया । सेत्तवेमाणिया । एतले अणुत्तरवासी कह्या एते कल्पा

॥ टीका ॥

इशाना, ग्रवसवत्रापिभावनीय ॥ तत्र तात्स्थ्या तद्यपदेशो यथापञ्चालदेशनिवासिन पञ्चाला इति ॥ इतिश्रीमलयगिरिविरचिताया प्रज्ञापना टीकाया प्रथम प्रज्ञापनाख्य पद समर्थितमिति ॥ १ ॥ ग्रथाग्र १८२५ ॥ त दव व्याख्यात प्रथम पद सम्प्रति द्वितीय मारभ्यते । तस्य चा य मभिसम्बन्ध प्रथमपदे पृथिवीकायिकादय प्र रूपिता इह तु तेषा मव स्थानानि प्ररूप्यते तत्र चेद मादिसूत्र-कहिण भते इत्यादि ॥ कहिति ॥ कस्मि न्'णम्शब्दोवाक्यालकारे॥ भदतेति॥ परमगुणमत्रय, बादरपृथिवीकायिकाना पर्याप्ताना स्थानानि स्वस्थानादीनि प्रज्ञप्तानि प्ररूपितानि एव गौ

॥ मूल ॥

त्तगाय सेत्त गेविज्जगा से किंत ऋणुत्तरोववाइया २ पचविहा पन्नत्ता, तजहा विजया वैजयता जयता ऋपराजिया सव्वठसिद्धा तेसमासत्त दुविहा पन्नत्ता, तजहा पज्जत्तगाय ऋपज्जत्तगाय सेत्त ऋणुत्तरोववा इया सेत्त कप्पाईया सेत्त वेमाणिया सेत्त देवा सेत्त पचिंदिया सेत्त ससारसमावन्नजीवपन्नवणा सेत्त जी वपन्नवणा सेत्त पन्नवणा पन्नवणाए पढमपयसम्मत्त ॥ १ ॥ कहिण भत ! बादरपुढविकाइ याण पज्जत्तगाण ठाणानिगणा प० ? गोयमा ! सट्ठाणेण ऋठसुपुढवीसु तजहा—रयणप्पनाए सक्करप्प

॥ भाषा ॥

तीत कह्या वैमानिक कह्या। सेत्त देवा सेत्त पचेंद्रिय समारसमावन्नजीव पन्नवणा सेत्त जीव पन्नवणा सेत्त पन्नवणा पन्नवणाए भगवइए पढ मपय समत्त। एतले देवता कह्या एतले पचेंद्रिय कह्या एतले ससारसमापन्नजीव प्रज्ञापनानो अधिकार कह्यो पहिले पद पृथ्वीकायादिक कह्या, हिवे दूजेपद जीवने ऊपजवानो ठाम कहेछे—एतले पन्नवणा भगवतीनो प्रथमपद समाप्त थयो ॥ १ ॥ कहणभते बायरपढवीका इयाण पन्नत्तगाण प० । किहा हेभगवन् बादर पृथ्वीकायना पर्याप्ताना थानक कह्या छ० । गोयमा सट्ठाणेण ऋट्ठसुपढवीसु तं रयणप्पभाए सक्करप्प० वालुय० पकप्प० धूम० तम० तमतमप्प० ईसिप० ८। रत्नप्रभा शर्कराप्रभा बालुकप्रभा पङ्कप्रभा धूमप्रभा तमप्रभा तमतमप्रभा ऋषीषिलासिद्धकी ८। ग्रहोलोए पायाले सुभवणेसु भवणपत्थडेसु णिरएसु णिरयावलियासु णिरयपत्थडेसु उड्ढलोयकप्पेसु विमाणेसु। पृथ्वीलगे अधोलोके पातालकलशे भुव

॥ टीका ॥

तमस्वामिना प्रश्नेकृते भगवानाह वर्द्धमानस्वामी गो० सहाणेणमित्यादि। ननु गोतमोपि भगवानुपचितकुशलमूलो गणधर तीर्थकरनापितमातृका पदश्रवणमात्रावाप्तप्रकृष्टश्रुतज्ञानावरणक्षयोपशम श्चतुर्दशपूर्ववित् सर्वाक्षरसन्निपाती विवक्षितार्थप्रतिज्ञानसमन्वित एव तत किमर्थं पृच्छति न हि चतुर्दशपूर्वविद सर्वोत्कृष्टश्रुतलब्धिसमन्वितस्य किञ्चित्प्रज्ञापनीयम विदितमस्ति यतवक्त-संखाइगविभवे साहइजवापुरोउपेच्छेज्जा। नयणंणाइमसी चियाणईगमछउमत्था ॥ १ ॥ सत्य मेतत् केवल जानन्नव गौतमस्वामी भगवान न्यत्र विनेयेभ्य प्रतिपाद्य तत्सम्प्रत्ययनिमित्त विवक्षिताथं पृच्छति यदि वा प्राय सवत्र गणधरप्रश्नतीर्थकरनिवचनरूप सूत्रमतो भगवाना यश्यामो पीत्यमव सूत्र रचयति, अथवा सम्भवति तस्यापि गणभृतो गौतमस्वामिनो ऽनाभोग छद्मस्थत्वात् उक्तच-न हि नामा नाभोग छद्मस्थस्येह कस्य चिन्नास्ति। ज्ञानावरणीय हि ज्ञानावरणप्रकृति कर्म॥१॥ ततो जातसंशय सन् पृच्छतीति न कश्चि द्दोष, गोयमा इति लोकप्रथितमहाविशिष्टगोत्रानिधायकोपमामन्त्रणध्वनि हेगौतम! गौतमगोत्रेति भावार्थ ॥ सठाणेण इति॥ स्वस्थान यत्र सते वादरपृथिवीकायिका पर्याप्ता आसना श्च वर्णादिविभागेना दृष्टु शक्यन्ते तत्स्वस्थानमिति भाव स्वस्थानग्रहण मुपपातसमुद्घातस्थाननिवृत्त्यर्थं तत स्वस्थानेन स्वस्थानम ङ्गीकृत्येति भाव ' अष्टासु पृथिवीषु सवत्र वादरपृथिवीकायिकाना पर्याप्ता

॥ मूल ॥

भाए वालुयप्पभाए पंकप्पभाए धूमप्पभाए तमप्पभाए तमतमप्पभाए अहेसत्तमाए ईसीप्पभाराए अहोलोए पायालेसु भवणेसु भवणपत्थडेसु निरएसु निरयावलियासु निरयपत्थडेसु उड्ढलोए कप्पेसु विमाणेसु वि

॥ भाषा ।

मस्त नर्के भवनपतिनिवासे नरकप्रकीर्णकपे नरकावास आवलीश्रेणि नरकने पाथडे ऊर्द्धलोके कल्पदेवलोके सौधर्मादिके विमान। विमाणवलिए विमाणपत्थडेसु तिरियलोए टंकेसु कूडेसु सेलेसु सिहरीसु पभारेसु विजएसु वक्खारेसु वासहरपव्वएसु वेलासु वेइयासु वारेसु तोरणेसु दीवेसु समुद्देसु एत्थण वायरपुढवीकाइयाण पज्जत्तगाण ठाणाण पण्णत्ता। विमानआवलिका विमानेनामे विमान ते प्रतरे तिरछेलोके छिन्नटूंकपर्वतणे कूटे सिद्धायतन कूटगिरिपर्वत शिखरसहित पर्वत तेनाम प्राग्भार विजये कच्छादि वक्षार विद्युत्प्रभादि मवर्त्त वर्षधरपर्वत हिमवन्तादि मेलसमुद्रादि वेदिक जंबूद्वीप

ना स्थानानीति योग , तावता द्वौ पृथिवीनामग्राह माह–तजहैत्यादि॥ तद्यथा रत्नप्रभाया यावदृष्म्या मीषत् प्राग्भाराया तथा ऽधोलोके पातालेषु पातालकलशेषु वलयामुखप्रभृतिषु भवनेषु भवनपतिनिकायावासरूपेषु भवनभूमिकारूपेषु इह भवनग्रहणेन भवनानामेव केवलानाग्रहणं भवनप्र स्तटग्रहणेन तु भवनानामपान्तरालस्यापि तथा नरकेषु प्रकीर्णकरूपेषु नरकावासेषु नरकावलिकासु आवलिकाव्यवस्थितेषु नरकावासेषु नरकप्रस्त

माणावलियासु विमाणपत्थडेसु तिरियलोए टंकेसु कूडेसु सेलेसु सिहरीसु पब्भारेसु विजयेसु वक्खारेसु वासेसु वासहरपव्वएसु वा वेलासु वेइयासु दारेसु तोरणेसु दीवेसु समुद्देसु एत्थण बादरपुढवीकाइयाणं

दि जगतीद्वार विजयादि तोरणधारादिसबंधी यर्वो सु सर्वद्वीप समुद्रप्रते ठामे पूर्वोक्तस्थानके जे पर्याप्ता आज्ञाओ भोगवै तेलेवा केतलाएक इमकहे पृथ्वीकायना असलगतिना लेवा पर्याप्ताना ठामकह्या ऊपजवो सर्वलोक । लोयस्स असखिज्जइभागे समुग्घाएण लोयस्स असखिज्जइभागे सट्ठाणेण । लोक ते असख्यातमेभागे समुद्घातआश्री लोकने असख्यातमेभागे स्वस्थान रत्नप्रभा अन्तरालगे जेते । लोयस्स असखिज्जइभागे कहिणभते बायरपुढवीकाइयाण अपज्जत्तगाण ठाणाण प० । लोकने असख्यातमेभाग ठामहुवे, हिवे किहा भगवन् बादर पृथ्वीकाइयाना अपर्याप्ताना ठामकह्या । गोयमा जत्थेव बायरपुढवीकाइयाण पज्जत्तगाण ठाणा । हेगौतम जिहा बादरपृथ्वीकाइया पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या । तत्थेव बायरपुढवीकाइयाण अपज्जत्तगाण ठाणा प० । तिहा बादर पृथ्वीकाय अपर्याप्ताना ठामकह्या । उववाएण समुग्घाएण सव्वलोए सट्ठाणेण लोयस्स असखिज्जइभागे । ऊपजवो समुद्घात सर्वलोके मरणसमुद्घातने वस्यहवै स्वस्थानलोकने असख्यातमेभागे । कहिणभते सुहुमपुढवीकाइयाण पज्जत्ता अपज्जत्तगाण ठाणा प० । किहा भगवन् सूक्ष्म पृथ्वीकाय पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या । गोयमा सहुमपुढवीकाइया पज्जत्ता जे अपज्जत्ता ते सव्वे एगविहा अविसेसा अणाणत्ता । हेगौतम सूक्ष्मपर्याप्ता अपर्याप्ता पृथिवीकायने सर्वनो एकविधछे विशेषरहित जिम पर्याप्ता तिम जाणिवा । सव्वलोय परियावन्नगा प० । सर्वलोक व्यापारह्याछे रहवो कह्यो । समणाउसो । अहो श्रमण आउखावन्तो । कहिण भते बायर आउकाइयाण पज्जत्तगाण ठाणा प० । किहा

तमस्वामिना प्रश्नेकृते भगवानाह वर्द्धमानस्वामी गो० सहाणेगमित्यादि। ननु गौतमोपि भगवा नुपचितकुशलमूलो गणधरः तीर्थंकरनामितमातृका
पदश्रवणमात्रावाप्तप्रकृष्टश्रुतज्ञानावरणक्षयोपशम श्चतुर्दशपूर्ववित् सर्वाक्षरसन्निपाती विवक्षितार्थप्रतिपादनसमन्वित एव तत किमर्थं पृच्छति न हि
पदश्रवणमात्रावाप्तप्रकृष्टश्रुतज्ञानावरणक्षयोपशम चतुर्दशपूर्वविद् सर्वोत्कृष्टश्रुतलब्धिसमन्वितस्य किञ्चिदप्यनाभोग विदितमस्ति यतउक्त-सखाद्यगविनये साक्षदनवापुरोवषद्देश्ना। नयन्तस्या
चतुर्दशपूर्वविद् सर्वोत्कृष्टश्रुतलब्धिसमन्वितस्य किञ्चिदप्यनाभोग विदितमस्ति यतउक्त-सखाद्यगविनये साक्षदनवापुरोवषद्देश्ना। नयन्तस्या
इमसी वियाणईयमवउमत्ता ॥ १ ॥ सत्य मेतत् केवलं जानन्नपि गौतमस्वामी भगवान् स्वयं विनेयेभ्यः प्रतिपाद्य तत्सम्प्रत्ययनिमित्त विवक्षिता
र्थं पृच्छति यदि वा प्रायः सर्वत्र गणधरप्रश्नतीर्थकरनिर्वचनरूप सूत्रमतो भगवान् यद्यपि पौत्यमव सूत्र रचयति, अथवा मन्यते तस्यापि
गणभृतो गौतमस्वामिनो ऽनाभोग छद्मस्थत्वात् उक्तञ्च-न हि नाम नाभोग छद्मस्थस्य कस्य चिन्नास्ति। ज्ञानावरणीय हि ज्ञानावरणप्रकृति
कर्म॥१॥ततो नाभोगत सन् पृच्छतीति न कश्चि द्दोष, गोयमा इति लोकप्रथितमहाविशिष्टगोत्रानिपातकोपमाभवणानि हे गौतम। गौतमगोत्र
ति भावार्थ ॥ सट्ठाणेण इति ॥ स्वस्थान यत्र सते बादरपृथिवीकायिका पर्याप्ता आसना व वर्णादिविभागेना दृष्ट शक्यन्त तत्स्थानमिति भाव
स्वस्थानग्रहण मुपपातसमुद्घातस्थाननिवृत्त्यर्थं तत्र स्वस्थान मास्थानम क्रीडन्ति जाय। अष्टासु पृथिवीषु सर्वत्र बादरपृथिवीकायिकानां पर्याप्ता

न्नाए वालुयप्पन्नाए पकप्पन्नाए धूमप्पन्नाए तमप्पन्नाए तमतमप्पन्नाए छट्ठेसत्तमाए ईसीप्पन्नाराए छट्ठोलोए
पायालेसु भवणेसु भवणपत्थडेसु निरएसु निरयावलियासु निरयपत्थडेसु उड्ढलोए कप्पेसु विमाणेसु वि

तत्र नर्कं भवनपतिनिवासे नरकप्रकीर्णक वे नरकावास पावलीरपि नरकने पाताले सर्वलोके कल्पदेवलोके सौधर्मादिके विमान। विमानश्रमिर वि
नाणपत्थडसु तिरियलोए टंकेसु कूडेसु सेलेसु सिहरीसु पब्भारेसु विजएसु वक्खारेसु वासहरपव्वएसु वेलासु वेइयासु दारेसु तोरणेसु दीवेसु समुद्देसु एत्थ
बादरपुढवीकाइयाण पज्जत्तगाण ठाणाणि उववाएणठाणा। विमानप्रावलिका विमानेनामे विमान ते प्रतरे तिरश्चीनलोके टङ्क छिन्नपर्वते कूटे शिखरवत
१ कूटमेयपर्वत शिखरसहित पर्वत तेनामे प्राग्भार विजय कच्छादि वक्षस्कार चित्रकूटादि प्रवर्त्तं वर्षधरपर्वत हिमवदादि वेलासमुद्रादि वेदिका जम्बूद्वीप

॥ टीका ॥

प्राग्भारेषु ईषत्कुब्जेषु विजयेषु कच्छादिषु वक्षस्कारेषु विद्युत्प्रभादिषु पर्वतेषु वर्षेषु भरतादिषु वर्षधरेषु हिमवदादिपर्वतेषु वेलासु समुद्रादिपा नीयरमणभूमिषु वेदिकासु जम्बूद्वीपजगत्यादिसम्बन्धिनीषु द्वारेषु विजयादिषु तोरणेषु द्वारादिसम्बन्धिषु किम्बहुना सामस्त्येन सर्वेषु समुद्रेषु॥ एत्थ णमित्यादि॥ अत्र एतेषु स्थानेषु बादरपृथिवीकायिकानां पर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि मया अन्यैरपि तीर्थकृद्भिः ॥ उववाएणमित्यादि॥ उपपातो बादरपृथिवीकायिकानां पर्याप्तानां यदनन्तरं मुक्तं तं प्राप्त्यास्थितस्य मिति भाव स्तेनो पपातमङ्गीकृत्येति भाव , लोकस्य चतुर्दशरज्ज्वात्मकस्या सङ्ख्येयभागे अत्रै के व्याचक्षते-ऋजुसूत्रनयो विचित्र स्ततो यदा परिस्थूरऋजुसूत्रनयदर्शनेन बादरपृथिवीकायिका पर्याप्ता श्चिन्त्यन्ते तदा ये स्वस्थान प्राप्ता आहारादिपर्याप्ति परिसमाप्त्या विशिष्टविपाकतो बादरपर्याप्तपृथिवीकायिकायुर्वेदयन्ते त एव द्रष्टव्या नापान्तरालगता अपि तदानीं वि पाकायुर्वेदना सद्भावात् स्वस्थान च्युतपारलब्धजादिकं समुदितमपि लोकस्यासङ्ख्येयभागेऽवर्तते तत उपपातेनापि लोकस्यासङ्ख्येयभागता वदितव्या अर्यत्वनिदधाति पर्याप्ता हि नाम बादरपृथिवीकायिका अवस्तोका स्तत स्त ऽपान्तरालगतावपि परिगृह्यमाणा लोकस्या सङ्ख्येयभाग भवति न कश्चि द्दोष तथा च समुद्घातेनापि लोकस्या सङ्ख्येयभाग एव वक्ष्यन्ते अन्यथा समुद्घातावस्थायामपि स्वस्थानातिरेकेण चात्रान्तरवर्तत्वसम्भवात् सङ्ख्ये

॥ मूल ॥

जत्थेव बादरपुढविकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता, तत्थेव बादरपुढविकाइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता, उववाएणं सव्वलोए समुग्घाएणं सव्वलोए सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे कहिणं भंते। सुहुम पुढविकाइयाणं पज्जत्तगाणं अपज्जत्तगाणयठाणा पन्नत्ता ? गोयमा। सुहुमपुढविकाइया जेपज्जत्तगा जे

॥ भाषा ॥

हेभगवन् बादरपृथ्वीकाय अपर्याप्ताने ठाम कहवो। गोयमा जत्थे। बायरआउकाइयाणं पज्जत्तगाण ठाणा तत्थेव बायरआउकाइयाण अपज्जत्तगाण ठा णा प०। हेगोतम जिहां बादर पृथ्वीकाया पर्याप्ताना ठाम कह्या तिहां बादर पृथ्वीकाय अपर्याप्ताना ठाम कह्या। उववाएणं सव्वलोए समुग्घाएण स व्वलोए सट्ठाणेण। उपजवा सबलोक के समुद्घात सर्वलोके। सट्ठाणेणं लोयस्स असंखिज्जइभागे। स्वस्थानक लोकने असंख्यातमे भागे। कहियो भने सुहुमपृ

॥ टीका ॥

टेषु नरकभूमिरूपेषु अत्रापि नरकनरकावलिकाग्रहणेन केवला एव नरकावासा परिगृह्यन्ते, नरकप्रस्तटग्रहणेन तु नरकापान्तरान् अपि ऊर्द्धलोके कल्पेषु सौधर्मिकादिकल्पेषु, अनेन द्वादशदेवलोकपरिग्रहविमानेषु ग्रैवेयकसम्बन्धिषु प्रकीर्णकरूपेषु विमानावलिकासु आवलिकाप्रविष्टेषु ग्रैवेय कादिविमानेषु विमानप्रस्तटेषु विमानभूमिकारूपेषु अत्रापि प्रस्तटग्रहणं विमानान्तरालभाविना अपि यथासम्भवभाविना बादरपर्याप्तपृथिवीका यिकानां स्थानपरिग्रहार्थं तथापि तिर्यग्लोके टङ्केषु छिन्नटंकेषु सिद्धायतनकूटप्रभृतिषु शैलेषु शिखरहीनपर्वतेषु शिखरिषु शिखरयुक्तेषु पर्वतेषु

॥ मूल ॥

पज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता, उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्ज० सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे । कहिणं भंते ! बादरपुढविकाइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा !

॥ भाषा ॥

भगवन् बादरअप्काय पर्याप्तान ठामकह्या । गोयमा सट्ठाणेणं सत्तसु घणोदहीसु वलिएसु । हेगौतम स्वस्थानआश्री सात पृथिवीये घनोदधि ठामे सात घनोदधिना वलयनेठामे । अहोलोए पायालेसु भवणेसु भवणपत्थडेसु । अधोलोके पातालना भुवनविषे भवनना पाथडाविषे । उड्ढलोए कप्पेसु विमाणे सु विमाणावलियाएसु । अर्द्धलोके कल्प बारेदेवलोके विमाननी श्रेणीविषे । विमाणपत्थडेसु तिरियलोए अगडेसु णइसु दहेसु वावीसु पुक्खरिणीसु । विमान प्रतरविषे तिरछलोके तलावपानविषे नदी गङ्गादिकविषे द्रहविषे पद्माद्रहादि वावडीविषे पुष्करणीविषे । दीहियासु गुंजालियाएसु सरेसु । दीर्घिकी गुञ्जालिकावाव विषे सरोवरविषे । सरपंतिएसु सरसरपंतिया बिलपंतियासु उज्झरेसु निज्झरेसु चिल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दीवेसु समुद्देसु । सरोवरनीपांती पा पाणवन्थ विषे बिलपंक्तिविषे जलस्थानके विलपीनामे पाणीना वक्खारविषे वणी स्यु द्वीपने समुद्रादि जलठामे । सव्वेसुचेव जलासएसु जलठाणेसु । सर्व जलआश्री जलस्थानक कह्या यावती भावना पाछलीपरे । एत्थणं बायरआउकाइयाणं पज्जत्ताणं ठाणा प० । इहां बादर अप्कायना पर्याप्तना ठाम कह्या । उववाएणं लोयस्स असंखिज्जइभागे । उपजवो लोकने असंख्यातमें भागे । समुग्घाएणं लोयस्स असंखिज्जइभागे । समुद्घातलोकने असंख्यातमें भाग हुवे । सट्ठाणेणं लोयस्स असंखिज्जइभागे । स्वस्थानके लोकने असंख्यातमेंभाग हुवे । कहिणं भंते बायर आउकाइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा प० । किहां

॥ टीका ॥

प्राग्भारेषु ईषत्कुब्जेषु विजयेषु कच्छादिषु वक्षस्कारेषु विद्युत्प्रभादिषु पर्वतेषु वर्षेषु भरतादिषु वर्षधरेषु हिमवदादिपर्वतेषु वेलासु समुद्रादिपा नीयरमणभूमिषु वेदिकासु जम्बूद्वीपजगत्यादिसम्बन्धिनीषु द्वारेषु विजयादिषु तोरणेषु द्वारादिसम्बन्धिषु किम्बहुना सामस्त्येन सर्वेषु समुद्रेषु॥ एत्थ णमित्यादि॥ अत्र एतेषु स्थानेषु बादरपृथिवीकायिकाना पर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि मया अन्यैरपि तीर्थकृद्भि ॥ उववाएणमित्यादि॥ उपपातो बादरपृथिवीकायिकाना पर्याप्ताना यदनन्तर सूक्त त स्थानमाश्रित्य मिति भाव स्तेनो पपातमङ्गीकृत्येति भाव , लोकस्य चतुर्दशरज्ज्वात्मकस्या सङ्ख्येयभागे अत्रै के व्याचक्षते-ऋजुसूत्रनयो विचित्र स्ततो यदा परिस्थूरऋजुसूत्रनयदर्शनेन बादरपृथिवीकायिका पर्याप्ता चिन्त्यन्ते तदा ये स्वस्थान [illegible] [illegible]पर्याप्ति परिसमाप्त्या विशिष्टविपाकतो बादरपर्याप्तपृथिवीकायिकायुर्वेदयन्ते त एव द्रष्टव्या नापान्तरालगता अपि तदानी वि [illegible] स्वस्थान रत्नप्रभादिक समुदितमपि लोकस्यासङ्ख्येयभागवर्तते तत उपपातेनापि लोकस्यासङ्ख्येयभागगता वादितव्या [illegible] बादरपृथिवीकायिका सर्वस्तोका स्तत स्ते ऽपान्तरालगतावपि परिगृह्यमाणा लोकस्या सङ्ख्येयभाग एवति न [illegible] लोकस्या सङ्ख्येयभाग एव वर्त्यन्ते अन्यथा समुद्घातावस्थायामपि स्वस्थानातिरेकेण चान्तरवर्तत्वसम्भावात् सङ्ख्ये

॥ मूल ॥

[illegible] पज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता , तत्थेव बादरपुढविकाइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा [illegible] सव्वलोए सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे कहिणं भंते ! सुहुम [illegible] पण्णत्ता ? गोयमा ! सुहुमपुढविकाइया जे पज्जत्तगा जे

॥ भाषा ॥

[illegible] पज्जत्तगाण ठाणा तत्थेव बायरआउकाइयाण अपज्जत्तगाण ठा [illegible] पर्याप्ताना ठाम कह्या । उववाएण सव्वलोए समुग्घाएण स [illegible] भाग । [illegible] लोकने असंख्यातमे भागे । कहिण भंते सुहुमआ

॥ टीक

यन्नागवर्त्तिता नो पपद्यतेति तस्य पुन केवलिनो विदन्ति विशिष्टश्रुतविदो वा तथासमुग्घाएणलोगस्सअसंखेज्जइभागेइति ॥ समुद्घातेनसमुद्घात मधिकृत्य लाकस्य ऽसङ्ख्येयभाग इय मत्र भावना यदा बादरपर्याप्तपृथिवीकायिका सोपक्रममायुषा निरुपक्रमायुषो वा त्रिभागाद्यवशेषायुष परत्रविक्रमा युवक्षु मारणान्तिकसमुद्घातेन समवहन्यन्ते तदा ते विनिप्तात्मप्रदेशदण्डा अपि लोकस्यासङ्ख्येयतमे एव भागे वर्त्तन्ते स्तोकत्वात्, बादरपृथिवीकायिकपर्याप्तायु श्च श्च एव तीर्णामिति पर्याप्तबादरपृथिवीकायिका अपि लभ्यन्ते इत्पूर्वपृथिव्यादिषु स्वस्थानमात्रमुक्तमिदानीं स्वस्थानेनापि कि यतिलाकस्यभागवर्त्ततेइतिनिरूपयति सट्ठाणेणलोगस्स असंखेज्जइभागेइति ॥ स्वस्थान रत्नप्रभादि त च समुदितमपि लोकस्यासङ्ख्येयभागवर्त्ति तथा हि रत्नप्रभा अशीतियोजनसहस्राधिकलक्षप्रमाणपिण्डभावा एवशेषा अपि पृथिव्य स्व २ घनभावेनवक्तव्या पातालकलशा अपि योजनलक्षावगा हा नरकावासा स्त्रिसहस्रयोजनोच्छ्रया विमानान्यपि द्वात्रिंशद्योजनशतबाहुल्यानि तत सर्वेषामपि परिमितभावात्, समुदितानाम एव सङ्ख्येयभा गवर्त्तितैवेति बादरापर्याप्तपृथिवीकायिकसूत्र उववाएणं सव्वलोएसमुग्घाएणं सव्वलोएइति ॥ इहा ऽपर्याप्ता बादरपृथिवीकायिका अपान्तरालगता वपि स्वस्थानेपि चा पर्याप्तबादरपृथिवीकायिकायु र्विशिष्टविपाकतोवेदयन्त तथा देवनैरयिकवर्ज्जेभ्य शेषसर्वकायेभ्य श्चो पपद्यन्ते उद्वृत्ता अपि च देवनैरयिकवर्जेषु शेषेषु सर्वेष्वपि स्थानेषु गच्छन्ति ततो ऽपान्तरालगतावपि वर्त्तमाना एमी गृह्यन्ते इति, प्रभूताश्च स्वभावतो पीत्यु पपातेन समुद्घातेन च सर्वलोकेवर्त्तन्ते, अन्यत्व अभिदधति स्वभावत एवा मीत्रय इति, उपपातेन समुद्घातेन च सर्वलोकव्यापिन तत्रो पपात केषाञ्चि द्वक्रग त्या तत्र ऋजुगति सुप्रतीतावक्रस्थापना चैव अत्र यदेव प्रथम वक्रमे क सहरन्ति तदेवा परे तद्वक्रदेशमा पूरयन्ति एव द्वितीयवक्रदेश सहरणेपि ततो

॥ मूल

अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसा अनाणत्ता सव्वलोएपरियावन्नगा पन्नत्ता , समणाउसो कहिण

॥ भाष

वड्ढाइराण पज्जत्त अपज्जत्तगाण ठाणा प० । किहा हेभगवन् सूक्ष्मअप्कायना पर्याप्ता अपर्याप्तानां ठाम कह्या । गोयमा सुहुमआउकाइया जे पज्जत्त गा जे अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसा अणाणत्ता । हेगौतम सूक्ष्मअप्काय जपर्याप्ता अपर्याप्ता तेसर्वएकभेदछे कोइ अविशेष कहिवा । सव्वलो

॥ टीका ॥

त्वात्तावपि प्रवाहतो निरन्तरं मापूरणं भावनीयं सहाणेणंतोगस्स असंखेज्जइभागे इति ॥ यथा पर्याप्तानां भावितं तथा अपर्याप्तानामपि भावनीयं तन्नि र्युक्तं स्वस्थानम् त्वाद्भावात सूक्ष्मपृथिवीकायिकपर्याप्तापर्याप्तसूत्रे जेपज्जत्ता अपज्जत्ता ते सव्वे एगविहा अणाणत्ता सव्वलोगपरियावन्ना इति ॥ सूक्ष्मपृथिवी कायिका ये ऽपर्याप्ता ये च पर्याप्ता ते सर्वेऽप्येकविधा एकप्रकाराः प्राकृतस्वस्थानादिविचारमधिकृत्य भेदाभावात् अविशेषा विशेषरहिता यथा पर्याप्ता स्तथा इतरेऽपि इति भावः, अनानात्वा नानात्ववर्जिता देशभेदेना लक्षितनानात्वा इत्यर्थः, किमुक्तं भवति यथा धारणैषां कायमहतो ये के ते ए व तरे पी ति सर्वलोकपर्यापन्नाः सर्वलोकव्यापिनः उपपातसमुद्घातस्वस्थानैः प्रज्ञापकोऽपि अन्यैः ऋषभादिभिः स्तीर्थकृद्भिः अनेनागमस्य कथंचि न्नित्यमावेदितं हे श्रमण हे आयुष्मन् । आमंत्रणमिदं भगवत्प्रयुक्तं गौतमस्य एवमप्कायिकसूत्राण्यपि बादरसूक्ष्मविषयाणि, नवरं पर्याप्तबादराप्का यिकसूत्रे सत्तसु घणोदहिवलयसुत्ति सप्तघनोदधिवलयानि च २ पृथिवीपर्यंतवेष्टिकानि वलयाकाराणि, अहोलोयपायालेसुत्ति पातालकलशेषु जल यामुसप्रकृतिषु तत्रापि द्वितीय त्रिभागे दशत तृतीय त्रिभागे सर्वात्मना जलभावात् भवनेषु कल्पेषु विमानेषु च जल वाप्यादिषु विमानादीनि चात्र कल्पगतानि वदितव्यानि ग्रैवेयकादिषु । वापीनामसंभवतो जलासंभवात्, अवटाः कूपाः स्वनामानि प्रतीतानि नद्यो गङ्गासिंधुप्रभृतयो

॥ मूल ॥

भंते ! बादरआउकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! सट्ठाणेणं सत्तसु घणोदधीसु सत्तसु घणोदधिवलएसु अहोलोए पायालेसु भवणेसु भवणपत्थडेसु उड्ढलोए कप्पेसु विमाणेसु विमाणावलियासु विमाणपत्थडेसु तिरियलोए अगडेसु तलाएसु सरेसु नदीसु दहेसु वावीसु पुक्खरिणीसु दीहियासु गुंजालि

॥ भाषा ॥

ए परियावन्नगा प० । सर्वलोकने व्यापीरह्या छे हे श्रमण । हे आयुष्मन् । कहि णं भंते बादर तेउकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा प० । किहां हे भगवन् बादर तेजकायना पर्याप्ताना ठाम कह्या । गोयमा सट्ठाणेणं अंतोमणुस्सखेत्ते अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु । हे गौतम स्वस्थाने मनुष्यलोक माहि अढाइद्वीप समुद्रविषे । निव्वाघाएणं पन्नरससु कम्मभूमीसु । व्याघातरहितपणे १५ कर्मभूमिविषे । वाघायं पडुच्च पंचसु महाविदेहेसु । व्याघात चि

॥ टीका

द्रहा पद्मद्रहादय वाप्य श्चतुरस्राकारा ता एव वृत्ताकारा पुष्करिण्य यदि वा पुष्कराणिपद्मानिविद्यन्ते यासु ता पुष्करिण्यो दीर्घिका ऋजु लघुनद्य स्ता एव वक्रा गुञ्जालिका बहूनि केवलकेवलानि पुष्पावकीर्णानि सरांसी त्युच्यन्ते, तथा बहूनि सरांसि एकपङ्क्त्या व्यवस्थितानि स र पङ्क्ति स्ता वाच्य सर पङ्क्तय तथा येषु सरस्सु पङ्क्त्याव्यवस्थितेषु कूपादक प्रणालिकया सञ्चरति सा सर सर पङ्क्तिस्ता वाच्य सर २ पङ्क्तय

॥ मूल

यासु सरेसु सरपंतियासु सरसरपंतियासु बिलपंतियासु उज्झरेसु णिज्झरेसु चिल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दी वेसु समुद्देसु सव्वेसु चेव जलासएसु जलठाणेसु जलजूमिआसु एत्थ ण बादरआउकाइयाण पज्जत्तगाण

॥ भाषा

नवी जन्मस्थानकविना पश्च महाविदेहमाहे सदाय ऊपजे। एत्थ ण बादर तेउकाइयाण पज्जत्तगाण ठाणा प०। इहा बादर तेउकाय पर्याप्तानो ठ म कह्या। उववाएण लोयस्स असंखिज्जइभागे समुग्घाएण लोयस्स असं० सट्ठाणेण लोयस्स असं०। ऊपजवो लोकने असंख्यातमेभागे समुद्घातलोकने असंख्यात मेभाग स्वस्थान लोकने असंख्यातमेभागे। कहिणभते बायरतेउकाइयाण अपज्जत्तगाण ठाणा प०। किहा हेभगवन् बायर तेउकायमें कह्या अपर्याप्ताना ठाम कह्या। गोयमा जत्थेव बायरतेउकाइयाण पज्जत्तगाण ठाणा प०। हेगौतम जिहा बादर तेउकाय पर्याप्ताना ठामकह्या। तत्थेव बायर तेउका इयाण अपज्जत्तगाण ठाणा प० उववाएण। तिहा बादरतेउकाय अपर्याप्ताना ठामकह्या कि पर्यंत अठारेसेजोजन बाहुल्य समस्त तिर्यक्लोक कहिये इ म तेजस्काय अपर्याप्ताना उपजवाना ठामकह्या विस्तार अभ्यान्तरथको जाणिवा ऊपजवो। लोगस्स दोसुउ कवाडेसु तिरियलोए तट्टेय समुग्घाएण सव्वलोए सट्ठाणेण लोयस्स असंखिज्जइभागे। लोकने अढाइद्वीपपरिमाण बाहिर पूर्वापर दक्षिणोत्तर स्वयंभूरमणपर्यंत जे पाढ केवल समुद्घात कपाटनो परे ऊर्ध्वअधोलोकान्त सुधी ते ऊर्ध्वकपाट तथा तिरियलोए त्ति, तदस्थलक्षण तिर्यक्लोक तद स्वयंभूरमणवद् समुद्घात सकललोक पूर एकेका पर्याप्तानो तेथाये असंख्याता अपर्याप्ता ऊपजे स्वस्थभवपर्यंत मरण तथ समुद्घात करे इम सकललोक पूरीया स्वस्थानके लोकने असंख्यातमेभाग मात्रावे हुवे। क हिणभते सुहुम तेउकाइयाण पज्जत्त अपज्जत्तगाणय ठाणा प०। किहा हेभगवन् सूक्ष्म तेजस्काय पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या। गोयमा सूक्ष्म ते

॥ टीका ॥

बिलानीव बिलानि स्वभावनिष्पन्ना जगत्यादिषु कूपिका स्तोया पत्तयो बिलपंक्तय उज्झरा गिरिस्थजला प्रश्रवा स्त एव सदा वरयायिनो नि भरा विप्ररारिण अखाता स्तोकजलाश्रयभूता भूप्रदेशा गिरिप्रदेशा वा पल्वानि अखातानि सरांसि वप्रा केदारा किम्बहुना सर्वेषु वजलाशयेषु

॥ सूत्र ॥

ठाणा पण्णत्ता, उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे कहिणं भंते ! बायरआउकाइयाणं अपज्जत्तगाणं ठा णा पण्णत्ता ? गोयमा ! जत्थेव बादरआउकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा तत्थेव बादरआउकाइयाणं अप

॥ भाषा ॥

उकाइया जे पज्जत्तगा अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा प० अविसेसा अणाणत्ता। हेगौतम सूक्ष्मतेजस्काय जे पर्याप्ता अपर्याप्ता ते सर्वना एकहीजभेद अविशेष सर्व कहिवा। सव्वलोए परियावण्णगा प०। सर्वलोक व्यापी रह्याछे। समणाउसो। अहो श्रमणो आयुष्यावन्तो। कहिणभंते बायर बाउकाइया ण पज्जत्तगाण ठाणा प०। किहां हेभगवन् बादरबाउकाय पर्याप्तानां ठाम कह्या। गोयमा सट्ठाणेण सत्तसुघणवाएसु सत्तसुघणवायवलएसु सत्तसुतणुवा एसु सत्तसु तणुवाय वलएसु। स्वस्थानके सात धनवातना वलयनेस्थानके वली सात तनुवातनावलय ठिकाणे। अहोलोए पायालेसु भवणेसु भवणपत्थड सु भवण छिड्डेसु भवणनिक्खुडेसु निरएसु निरयावलियाएसु। अधोलोक पातालनाभुवन घानके पाथडाविषे अवकाश ठामे भवनविषे टूकस्थानके नरके न रकना वलयनेविषे। निरयपत्थडेसु निरयाछिड्डेसु निरयनिक्खुडेसु। नरकनेछिद्रे नरकखूणे। उड्ढलोए कप्पसुविमाणेसु विमाणवलियाएसु विमाणपत्थ डेसु विमाणछिड्डेसु। उर्ध्वलोक कल्पविमान अवलोकविमाने विमानप्रतरे विमानछिद्रे। विमाणनिक्खुडेसु तिरियलोए पाईण पडिण दाहिणउदीण सव्वे सुचेव। विमानखूणे तिरछलोके पूर्व पश्चिम दक्षिण उत्तरे सर्व। लोगागासछिड्डेसु लोगनिक्खुडेसु। लोकाकाश छेहडे खूणे एहवे ठामे। एत्थण बायर बाउकाइयाण पज्जत्तगाण ठाणा प०। बादरबाउकाय पर्याप्तानां ठामकह्या। उववाएण लोयस्सअसंखेज्जइभागेसु समुग्घाएण लोयस्सअस०। सट्ठाणेण लोयस्स असंखेज्जइभागे। उपज वी लोकने असंख्यातमेंभागे समुद्घातलोकने असंख्यातमेंभागे। स्वस्थान लोकने असंख्यातमेंभागे। कहिणभंते अपज्जत्त बायरबाउकाइयाण ठाणा प०। किहां हेभगवन् अपर्याप्ता बाउकायना ठामकह्या। गोयमा जत्थेवबायरबाउकाइयाण ठाणा पज्जत्तगाण ठाणा प०।

द्रहा पद्मद्रहादय वाप्य श्चतुरस्राकारा ता यव वृत्ताकारा' पुष्करिण्य यदि वा पुष्कराणिपद्मानिविद्यन्ते यासु ता पुष्करिण्यो दीर्घिका ऋजु राघुनद्य स्ता यव वक्रा गुञ्जालिका वहूनि केवलकैवतानि पुष्पावकीर्णानि सरासी त्युच्यन्ते, तथा वहूनि सरांसि एकपङ्क्त्या व्यवस्थितानि स र पङ्क्ति स्ता वर्‌थ्य सर पङ्क्तय तथा यपु सरस्सु पङ्क्त्याव्यवस्थितेषु कूपादक प्रणालिकया सञ्चरति सा सर सर पङ्क्तिस्ता वर्‌थ्य सर २ पङ्क्तय

यासु सरेसु सरपतियासु सरसरपतियासु बिलपंतियासु उज्झरेसु णिज्झरेसु चिल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दी वेसु समुद्देसु सव्वेसु चेव जलासएसु जलठाणेसु जलभूमिआसु एत्थ ण बादरआउकाइयाण पज्जत्तगाण

त्यौ जलस्थानकविना पञ्च महाविदेहमांहे सदाव ऊपजे। एत्थ बादर तेउकाइयाण पज्जत्तगाण ठाणा प०। इहा बादर तेउकाय पर्याप्तानो ठ म कह्या। उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे समुग्घाएण लोयस्स अस० सट्ठाणेण लोयस्स अस०। ऊपजवो लोकनेअसंख्यातमेभागे समुद्घातलोकने असंख्यात मेभाग स्वस्थान लोकने असंख्यातमेभागे। कहिणभंते बायरतेउकाइयाण अपज्जत्तगाण ठाणा प०। किहा हेभगवन् वायर तेउकायमें कह्या अपर्याप्ताना ठाम कह्या। गोयमा जत्थेव बायरतेउकाइयाण पज्जत्तगाण ठाणा प०। हेगौतम जिहा वादर तेउकाय पर्याप्ताना ठामकह्या। तत्थेव बायर तेउका इयाण अपज्जत्तगाण ठाणा प० उववाएण। तिहा वादरतेउकाय अपर्याप्ताना ठामकह्या कि पर्यंत अठारेसेजोजन वाहुल्य समस्त तिर्यंक्लोक कहिये इ म तेजस्काय अपर्याप्ताना उपजवाना ठामकह्या विस्तार ग्रन्थान्तरथको जाणिवा ऊपजवो। लोगस्स दोसुउ कवाडेसु तिरियलोए तट्टय समुग्घाएण सव्वलोए सट्ठाणेण लोयस्स असंखेज्जइभागे। लोकने अढाईद्वीपपरिमाण वाहिर पूर्वापर दक्षिणोत्तर स्वयंभूरमणपर्यंत जे पाठ केवल समुद्घात कपाटनो परे ऊर्द्ध अधोलोकान्त स्पर्शे ते ऊर्द्धकपाट तथा तिरियलोएत्ति, तदस्थ तद्रूप तिर्यंक्लोक तट स्वयंभूरमणवद् समुद्घात सकललोक पूरे एकेका पर्याप्तानो तेपासें असंख्याता अपर्याप्ता ऊपजे स्वभवपर्यंत मरण तदसमुद्घात करे इम सकललोक पूरीया स्वस्थानके लोकने असंख्यातमेभाग मात्रावे हुवे। क हिणभंते सुहुम तेउकाइयाण पज्जत्त अपज्जत्तगाणय ठाणा प०। किहा हेभगवन् सूक्ष्म तेजस्काय पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या। गोयमा सुहुम ते

॥ टीका ॥

स्या तृतीय समुद्राणा न विद्यते इतीद विशेषेण द्वीपानां द्रष्टव्य, द्वीपा श्च समुद्रा श्च द्वीपसमुद्रा तेषु निर्व्याघातेन व्याघातस्या भावो निर्व्याघात तेन निर्व्याघातेन तृतीयाया इति पाक्षिका मादशाभाव' व्याघाताभावेन त्यय , पञ्चदशसु कर्मभूमिषु पञ्चभरतपञ्चैरावतपञ्चमहाविदेहरूपासु व्याघात प्रतीत्य व्याघाते सतीति भाव , पञ्चसु महाविदेहेषु, इय मत्र भावना–व्याघातो नामा तिस्निग्धो तिरूक्षा वा काल तस्मिन् सत्य ग्नि व्यवच्छेदा ततो यदा पञ्चसु भरतेषु पञ्चस्वैरावतेषु सुषमसुषमा सुषमासुषमदु षमा वा वर्त्तते तदा, तिस्निग्धकालो दु षमदु षमाया वा तिरूक्ष इत्य ग्निव्यवच्छेद तस्मिन्सति पञ्चसु महाविदेहेषु शेषकाल पञ्चदशस्वपि कर्मभूमिषु ॥ एत्थणमित्यादि॥ अत्र मतेषु स्थानेषु बादरतेजस्कायिका ना स्थानानि प्रज्ञप्तानि॥ उववाएणमित्यादि॥ उपपातेन यथोक्तस्थानप्राप्त्या भिमुखता पान्तरालगता वर्तीति भाव , चिन्त्यमाना लोकस्या सङ्ख्येय भाग स्तोकत्वात् समुद्घातेनापि चिन्त्यमाना लोकस्या सङ्ख्येयभाग मारणान्तिकसमुद्घातवशतो विक्षिप्तात्मप्रदेशदण्डानामपि स्तोकतया लोकासङ्ख्येय भागमात्रव्यापित्वात् स्वस्थानेन लोकस्या सङ्ख्येयभागे मनुष्यक्षेत्रस्य पञ्चचत्वारिंशद्योजनलक्षप्रमाणायामविष्कम्भतया लोकासङ्ख्येयभागमात्रत्वात्'

॥ मूल ॥

पज्जत्तगाण ठाणा पण्णत्ता, उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे । कहिणं भंते ! बादरतेउकाइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! जत्थेव बादरतेउकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा तत्थेव बादरतेउकाइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा प०,

॥ भाषा ॥

ऊर्ध्व वाशीम् पक्वरणास् दीर्घिकाम् गुनालिय म सरेम सरपतियाम् विलपतियासु उज्झरेम निज्झरेम। तिरछेलोकक्रूप तलाव नदी द्रहविषे वावी पुष्करणी दीर्घिकाविषे गंजालिकाविषे सरोवरे सरपातिविषे विलपातिविषे पाणीठामे निझरणे। चिल्लेसु पल्लेसु वप्पिणेसु दीवसु समुद्दसु सव्वेसुचेव। चीकणीठाम पलालसर ठामे दीप समुद्र सघलठामे। जलासएसु जलट्ठ णेसु एत्थण बादरवणस्सइकाइयाण पज्जत्तगाण ठाणा प०। जलनाठामनविषे इहा बादरवनस्पतिकायिया पर्याप्ता ना ठामकह्या। उववाएणंसव्वलोए समुग्घाएणंसव्वलोए। उपजवा सर्वलोके समुद्घात सर्वलोक। सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभा

एतदेव व्याचष्टे जलस्थानेषु ओपपातभावनाप्राग्वत्' अधुनाबादरपर्याप्ततेजस्कायिकस्थानानि पृच्छति कहिण भंते बायरतेउक्काइयाणमित्यादि प्रश्नसूत्र सुगम भगवानाह-गोयमेत्यादि । गौतम स्वस्थानेन स्वस्थानमङ्गीकृत्या तमनुष्यक्षेत्र मध्य इत्यर्थं अर्द्धतृतीय येषान्त अर्द्धतृतीया स्तत्रान्तर्मनुष्यक्षेत्र

ज्जत्तगाण ठाणा पन्नत्ता, उववाएण सव्वलोए समुग्घाएण सव्वलोए सट्ठाणेण लोयस्स असंखिज्जभागे। कहिण सुहुमआउकाइयाण पज्जत्ता अपज्जत्ताण ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा! सुहुमआउकाइया जेय पज्जत्तगा जे अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसा अनाणत्ता सव्वलोए परियावन्नगा प०, समणा ! कहिण भंते ! बादरतेउकाइयाण पज्जत्तगाण ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! सट्ठाणेण अंतोमणुस्सखेत्ते अड्ढाईज्जेसु दीवसमुद्देसु निव्वाघाए पन्नरससु कम्मभूमीसु वाघाय पडुच्च पचसु महाविदेहेसु एत्थण बादरतेउकाइयाणं

हेगौतम तिहां बादरवाउकाइया अपर्यापताना ठामकह्या । तत्थेव बायरवाउक्काइयाण अपज्जत्तगाण ठाणा प० । तिहां बादरवाउकाय बादरनिगोद आश्री । उववाएण सव्वलोएसमुग्घाएण सव्वलोएसंठाणेण लोयस्स असखेज्जइभागे । ऊपजवानोठाम सर्वलोके स्वस्थानके लोकनाअसख्यातमेभागे छुवे । कहिणभंते सुहमवाउकाइयाण पज्जत्तअपज्जत्तगाण ठाणा प० । किहां हेभगवन् सूक्ष्मवाउकाय पर्यापता अपर्यापताना ठामकह्या । गोयमा सुहमवा उक्काइया जे पज्जत्तगा जे अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसा अणाणत्ता । हेगौतम सूक्ष्मवायुकाय पर्यापता अपर्यापता तेसर्वं एकभेदे अविशेष स र्वे पाकलोपरे । सव्वलोए परियावण्णगा प० । सर्वलोक व्यापीरह्याछे । समणाउसा । अहो अमणोआयुधावन्तो । कहिणभंते बायरवणस्सइकाइयाण प ज्जत्तगाण ठाणा प० । किहां अहोभगवन् बादर वनस्पतीकाय पर्यापताना ठामकह्या । गोयमा सट्ठाणेण सत्तसुघणोदहिस् सत्तसुघणोदहिवलएसु । हेगौ तम स्वस्थानके घनोदधि घनोदधिनावलयविषे । अहोलोए पायालासु भवणेस् भवणपत्थडेस । अधोलोके पाताल भवनविषे भवनपाथडाविषे । उड्ढलोए कप्पेसु विमाणेसु विमाणवलिएसु विमाणपत्थडेसु । उर्द्धलोके कल्पविमाने विमाननावलयविषे विमानपाथडाविषे । तिरियलोए अगडेसु तडागेसु नईएसु

स्य द्वितीय समुद्राणां नविद्यते इतीदं विशेषणं द्वीपानां द्रष्टव्यं, द्वीपाश्च समुद्राश्च द्वीपसमुद्रा तेषु निर्व्याघातेन व्याघातस्याभावो निर्व्याघातं तेन निर्व्याघातेन तृतीयाया इति पाक्षिको सप्तम्यर्थ व्याघातभावेने त्वयं, पञ्चदशसु कर्मभूमिषु पञ्चभरतपञ्चैरावतपञ्चमहाविदेहरूपासु व्याघातं प्रतीत्य व्याघाते सतीति भावः, पञ्चसुमहाविदेहेषु, इयमत्र भावना–व्याघातो नाम अतिस्निग्धो अतिरूक्षो वा कालः तस्मिन् सत्यग्नि व्यवच्छेदः ततो यदा पञ्चसु भरतेषु पञ्चस्वैरावतेषु सुखमसुखमा सुखमा सुखमदुखमा वा वर्तते तदा, अतिस्निग्धकालो दुखमदुखमायां वा अतिरूक्ष इत्यग्निव्यवच्छेदः तस्मिन्सति पञ्चसु महाविदेहेषु अपकाले पञ्चदशस्वपि कर्मभूमिषु ॥ एत्थणमित्यादि ॥ अत्र एतेषु स्थानेषु बादरतेजस्कायिका नां स्थानानि प्रज्ञप्तानि ॥ उववाएणमित्यादि ॥ उपपातेन यथोक्तस्थानप्राप्त्याभिमुखेनापान्तरालगता वर्तते इति भावः, चिन्त्यमाना लोकस्यासङ्ख्येय भागे लोकत्वात् समुद्घातेनापि चिन्त्यमाना लोकस्यासङ्ख्येयभागे मारणान्तिकसमुद्घातवशतो विक्षिप्तात्मप्रदेशदण्डानामपि स्तोकतया लोकासंख्येय भागमात्रव्यापित्वात् स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे मनुष्यक्षेत्रस्य पञ्चचत्वारिंशद्योजनलक्षप्रमाणायामविष्कम्भतया लोकासंख्येयभागमात्रत्वात्,

पज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता, उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे। कहिणं भंते! बादरतेउकाइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता? गोयमा! जत्थेव बादरतेउकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा तत्थेव बादरतेउकाइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा प०,

रहस्य वावोमु पुकवरणासु दोहियासु गुंजालियासु सरेसु सरपंतियासु बिलपंतियासु उज्झरेसु निज्झरेसु। तिरछे वांके कूप तलाव नदी द्रहविषे नावी पुष्क रणी दीर्घिका गुंजालिकाये सरोवरे सरपांतिविषे बिलपांतिविषे पाणीठामे निझरणे। चिल्लरेसु पल्लरेसु वप्पिणेसु दीवेसु समुद्देसु सव्वेसु चेव। चौकखोठा में पनालमर ठामे द्वीप समुद्र सघलठामे। जलासएसु जलठाणेसु एत्थणं बादरवणस्सइकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा प०। जलनाठामनविषे इहां बादरव नस्पतिकायना पर्याप्तानां ठामकह्या। उववाएणसव्वलोए समुग्घाएणसव्वलोए। उपजवा सर्वलोके समुद्घात सर्वलोके। सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभा

॥ टीका

एतदेव व्याचष्टे उत्स्थानेषु ओघजावनाप्राग्वत्' अधुनाबादरपर्याप्ततेजस्कायिकस्थानानि पृच्छति कहिण भंते बायरतेउक्काइयाणमित्यादि प्रश्नसूत्र सुगम भगवानाह-गोयमेत्यादि । गौतम स्वस्थानेन स्वस्थानमङ्गीकृत्या तमनुष्यक्षेत्र मध्य इत्यर्थ अर्द्धतृतीय येषान्त अर्द्धतृतीया स्तत्रान्तर्मनुष्यक्षेत्र

॥ मूल

१ ॥ ज्जत्तगाण ठाणा पन्नत्ता, उववाएण सब्बलोए समुग्घाएण सब्बलोए सट्ठाणेण लोयस्स असखिज्जन्नागे । कहिण सुहुमआउकाइयाणं पज्जत्ता अपज्जत्ताण ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! सुहुमआउकाइया जेय पज्ज त्तगा जे अपज्जत्तगा ते सब्बे एगविहा अविसेसा अनाणत्ता सब्बलोए परियावन्नगा प०, समणा ! कहिण भंते ! बादरतेउकाइयाण पज्जत्तगाण ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! सट्ठाणेण अंतोमणुस्सखेत्ते अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु निव्वाघाए पन्नरससु कम्मनूमीसु वाघाय पडुच्च पचसु महाविदेहेसु एत्थण बादरतेउकाइयाणं

॥ भाषा

हेगौतम तिहा बादरवाउकाइया अपर्याप्तताना ठामकह्या । तत्थेव बायरबाउक्काइयाण अपज्जत्तगाण ठाणा प० । तिहा बादरबाउकाय बादरनिगोद माञ्चो । उववाएण सव्वलोएसमुग्घाएण सव्वलोएसठाणेण लोयस्स असखेज्जइभागे । उपजवानोठाम सर्वलोके स्वस्थानके लोकनाअसख्यातमेभागे छुवे । कहिणभंते सुहुमबाउकाइयाण पज्जत्तअपज्जत्तगाण ठाणा प० । किहा हेभगवन् सूक्ष्मबाउकाय पर्याप्ता अपर्याप्तताना ठामकह्या । गोयमा सुहुमबा उकाइया जे पज्जत्तगा जे अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसा अणाणत्ता । हेगौतम सूक्ष्मवायुकाय पर्याप्ता अपर्याप्ता तेसर्व एकभेद अविशेष स र्व पाकलोपरे । सव्वलोए परियावण्णगा प० । सर्वलोक व्यापीरह्याछे । समणाउसो । अहो श्रमणोआयुषावन्तो । कहिणभंते बादरवणस्सइकाइयाण प ज्जत्तगाण ठाणा प० । किहा अहोभगवन् बादर वनस्पतीकाय पर्याप्तताना ठामकह्या । गोयमा सट्ठाणेण सत्तसुघणोदहिसु सत्तसुघणोदहिवलएसु । हेगौ तम स्वस्थानके घनोदधि घनोदधिनावलयविषे । अहोलोए पायालासु भवणेसु भवणपत्थडेसु । अधोलोके पाताल भवनविषे भवनपाथडाविषे । उड्ढलोए कप्पेसु विमाणेसु विमाणवलिएसु विमाणपत्थडेसु । उर्द्धलोके कल्पविमाने विमाननावलयविषे विमानपाथडाविषे । तिरियलोए अगडेसु तडागेसु नईएसु

॥ टीका ॥

पादे केवलिसमुद्घातकपाटवत् ऊर्ध्वमधोलोकान्तस्पृष्टे ते ऊर्ध्वकपाटे तयो रूर्ध्वकपाटयो स्तथा॥ तिरियलोयतट्टेसु त्ति ॥ तट्ट स्थाल तिर्यग्लोकतट्टमिव तिर्यग्लोकतट्ट तस्मि श्चस्वयम्भूरमणसमुद्रवेदिकापर्यन्त अष्टादशयोजनशतबाहल्य समस्ततिर्यग्लोके चेत्यर्थ , उपपातेन बादरतेजस्कायिकानाम पर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि केचित्-तिरियलोयतट्टे इति पठन्ति २ तत्र व्याचक्षते तयो कपाटयो स्थित तत्स्य तिर्यग्लोक श्चा सौ तत्स्थ श्च तिर्यग्लोकतत्स्थ तयोरूर्ध्वकपाटयो रन्तर्वर्ती तिर्यग्लोक इत्यर्थ , तस्मिन्नकिमुक्त भवति द्वयो रूर्ध्वकपाटयो र्यथोक्तरूपयो स्तिर्यग्लोकापि च तथा

॥ मूल ॥

भवणपत्थडेसु भवणछिद्देसु भवणनिक्खुडेसु निरएसु निरयावलियासु निरयपत्थडेसु निरयछिद्देसु निरयनिक्खुडेसु उड्ढलोयकप्पेसु विमाणेसु विमाणावलियासु विमाणपत्थडेसु विमाणछिद्देसु विमाणनिक्खुडेसु तिरियलोएसु पाईणदाहिणपडीणउदीणसव्वेसु चेव लोगागासछिद्देसु लोगनिक्खुडेसु य एत्थ णं बादरवाउकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता, उववाएणं लोयस्स असंखेज्जेसु भागेसु समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जेसु भागेसु सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जेसु भागेसु । कहि णं भंते ! अपज्जत्तबादरवाउकाइयाणं ठाणा पण्णत्ता ? गोय

॥ भाषा ॥

पर्याप्ताना ठाम कह्या । गोयमा उड्ढलोए तदेकदेसभागे अहोलोए तदेकदेसभागे तिरियलोए अगडेसु तलावेसु जाव दीवेसु समुद्देसु सव्वेसुचेव जलासएसु जलठाणेसु । हे गौतम ऊर्ध्वलोकान्तक देशभागे मन्दरादि अधोलोकैक देशभागे ग्राम कूप तडागादि तिरछेलोके कूप तलाव यावत् द्वीपे समुद्रे नदी जलठामें । एत्थण बे इन्द्रिय पज्जत्त अपज्जत्तगाण ठाणा प० । इहां बेंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या । उववाएण लोयस्स असंखेज्जइभागे समुग्घाएण लोयस्स असं० सट्ठाणेण लोयस्स असं० । उपपात लोकने असंख्यातमेभागे समुद्घातलोकने असं० स्वस्थानलोकने असंख्यातमेभागे । कहि णं भंते तेइंदि । पज्जत्ता अपज्जत्तगाण ठाणा प० । किहां हेभगवन् तेंद्रिय पर्याप्ताना ठामकह्या । गोयमा उड्ढलोए तदेकदेसभागे अहोलोए तदेकदेसभागे तिरियलोए । हे गौतम ऊर्ध्वलोकातकदेशभागे अधोलोकातकदेशभागे तिरछालोके । अगडेसु तलाएसु जाव दीवेसु समुद्देसु सव्वेसुचेव जलासएसु जलठाणेसु य,

॥ टीका ॥

अपर्याप्तबादरतेजस्कायिकस्थानानि पृच्छति-कहिणं भंतेइत्यादिसूत्रगतार्थ, भगवानाह-गौतमेत्यादि-गौतम। यत्रैव बादरतेजस्कायिकानां पर्याप्ता ना स्थानानि तत्रैव बादरतेजस्कायिकानां मपर्याप्तानामपि स्थानानि प्रज्ञप्तानि पर्याप्तनिश्रयैव पर्याप्तानाम वस्थानात्॥ उववाएणं लोगस्स दोसु उड्ढकवाडेसु तिरियलोयतट्टे य इति॥ इहा ध्रुत्रीयद्वीपसमुद्रनिसृते अद्धतृतीयद्वीपसमुद्रप्रमाणानान्त्य पूर्वापरदक्षिणोत्तरत्रयपूर्व्यमणपर्यन्ते ये क

॥ सूत्र ॥

उववाएणं लोयस्स दोसु उड्ढकवाडेसु तिरियलोयतट्टेयसमुग्घाएणं सव्वलोए सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइ भागे। कहिणं भंते ! सुहुमतेउकाइयाणं पज्जत्तगाणं अपज्जत्तगाणय ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! सुहुमतेउ काइयाणं जे पज्जत्तगा अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसा अणाणत्ता सव्वलोए परियावन्नगा प०, समणाउसो ! कहिणं भंते ! बादरवाउकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! सट्ठाणेणं सत्तसु घणवाएसु सत्तसु घणवायवलएसु सत्तसु तणुवाएसु सत्तसु तणुवायवलएसु अहोलोए पायालेसु भवणेसु

॥ भाषा ॥

गे। स्वस्थाने लोकने असंख्यातमेंभागे। कहिणं भंते ब दरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगाण ठाणा प०। किहां यहो भगवन् बादरवनस्पतीकाय अपर्याप्ताना ठा मकह्या। गोयमा जत्थेव बायरवणस्सइकाइयाणं पज्जत्तगाण ठाणा प०। हेगौतम जिहां बादरवनस्पतीकाय पर्याप्ताना ठामकह्या। तत्थेववायरवण स्सइकाइयाण अपज्जत्तगाण ठाणाप०। तिहां बादरवनस्पतीकाय अपर्याप्ताना ठामकह्या। उववाएणं सव्वलोए समुग्घाएणं सव्वलोए सट्ठाणेणं लोयस्स असंखिज्जइभागे। उपजवांसर्वलोके समुद्घातसर्वलोके स्वस्थानलोकने असंख्यातमेभागे। कहिणंभंते सुहुमवणस्सइकाइयाणं पज्जत्तअपज्जत्तगाणं ठा प०। जिहां हेभगवन् सूक्ष्मवनस्पतीकाय पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या। गोयमा सुहुमवणस्सइकाइया जे पज्जत्तगा जे अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अवि सेसा अणाणत्ता। अहो गौतम सूक्ष्मवनस्पतीकाय पर्याप्ता अपर्याप्ता ते सर्व एकभेदे कह्या अविशेष प्र.कनीपरे। सव्वलोयपरियावन्ना प०। सर्वलोक व्यापी रह्या.छे। समणाउसो। अहोश्रमणो आयुष्यवन्तो। कहिणंभंते बेइंदियाणं पज्जत्तअपज्जत्तगाणं ठाणा प०। किहां हेभगवन् बेइन्द्रिय पर्याप्ता अ

॥ टीका ॥

पाटे केवलिसमुद्घातकपाटवत् अन्तरपिलोकान्तस्पृष्टे ते ऊर्द्ध्वकपाटे तयो रूर्द्ध्वकपाटयो स्तथा॥ तिरियलोयतट्टेइति॥ तट्ट स्थान तिर्यग्लोकतट्टमित्र तिर्यग्लोकतट्ट तस्मि श्चस्वयम्भूरमणसमुद्रवेदिकापर्यन्त अष्टादशयोजनशतबाहल्य समस्ततिर्यग्लोके चे त्यथ , उपपातेन बादरतेजस्कायिकानाम पर्या प्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि केचित्–तिरियलोयतट्ट इति पठन्ति २ तत्र व्याचक्षते तयो कपाटयो स्थित तस्य तिर्यग्लोक श्चा सौ तत्स्थ श्च ति र्यग्लोकतस्य तयोरूर्द्ध्वकपाटयो रन्तर्वर्त्ती तिर्यग्लोक इत्यथ , तस्मिन्किमुक्त भवति द्वयो रूर्द्ध्वकपाटयो यथोक्तस्वरूपयो स्तिर्यग्लोकपि च तथा

॥ मूल ॥

भवनपत्थडेसु भवणछिद्देसु भवननिक्खुडेसु निरएसु निरयावलियासु निरयपत्थडेसु निरयछिद्देसु निरयनि क्खुडेसु उड्ढलोयकप्पेसु विमाणेसु विमाणावलियासु विमाणपत्थडेसु विमाणछिद्देसु विमाणनिक्खुडेसु तिरि यलोएसु पाईणदाहिणउदीणसड्ढेसु चेव लोगागासछिद्देसु लोगनिक्खुडेसु य एत्थणं बादरवाउकाइयाणं पज्ज त्तगाणं ठाणा पण्णत्ता, उववाएणं लोयस्स असंखेज्जेसु भागेसु समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जेसु भागेसु सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जेसु भागेसु । कहिणं भंते ! अपज्जत्तबादरवाउकाइयाणं ठाणा पण्णत्ता ? गोय

॥ भाषा ॥

पर्याप्तानां ठ मकह्या । गोयमा उड्ढलोए तदेकदेसभागे अहोलोए तदेकदेसभाग तिरयलोए अगडेसु तलावेस जाव दीवेसु समुद्दे सु सव्वेसुचेव जलास एस जलट्ठ णेस । हेगौतम ऊर्द्धलोकान्तत देशभागे मन्दरादि अधोलोक देशभागे ग्राम कूप तडागादि तिरछेलोके कूप तलाव यावत् दीपे समुद्रे नदी जलठामे । एत्थण बेइंदिय पज्जत्त अपज्जत्तगाण ठाणा प० । इहा बेंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या । उववाएण लोयस्स असंखेज्जइभागे समुग्घाए ण लोयस्स अस० सट्ठाणेण लोयस्स अस० । उपज लोकने असंख्यातमेभागे समुद्घातलोकने अस० स्वस्थानलोकने असंख्यातमेभागे । कहिणंभंते तेइंदि । पज्जत्ता अपज्जत्तगाण ठाणा प० । किहा हेभगवन् तेंद्रिय पर्याप्ताना ठामकह्या । गोयमा उड्ढलोए तदेकदेसभागे अहोलोए तदेकदेसभागे तिरिय लोए । हेगौतम ऊर्द्धलोकातकदेशभागे अधोलोकातकदेशभागे तिरछालोके । अगडेसु तलाएसु जाव दीवेसु समुद्देसु सव्वेसुचेव जलासएसु जलट्ठाणेसु य

॥ टीका ॥

रेव कपाटयो रन्तर्गते नान्यत्र ग्रोपतिर्यग्लोकव्यवच्छेदनपरमेतद्वाक्य न विधानपरं विधानस्य कपाटग्रहणेनैव सिद्धत्वात्, तत्त्व पुन केवलिना विज्ञिष्टश्रुतविदा वा गम्य, इयमत्र भावना–इह त्रिधाबादरपर्याप्ततेजस्कायिका स्तद्यथा एकभविका बद्धायुषो ग्निमुखनामगोत्रा श्च तत्रयेएकस्मा द्भवतादिद्भवात् अनन्तर बादरपर्याप्ततेजस्कायिकत्वेन उत्पत्स्यन्ते ते एकभविका, ये तु पूर्वभवत्रिभागादिसमये बद्धबादरा पर्याप्ततेजस्कायिकायुष स्त बद्धायुषो ये पुन बादरा पर्याप्ततेजस्कायिकायुर्नामगोत्राणि पूर्वभवमोचनानन्तरसाक्षादुदयन्ते अभिमुखनामगोत्रा तत्र एकभविका बद्धायुष श्च द्रव्यतो बादरा पर्याप्ततेजस्कायिकानभावत स्तद युर्नामगोत्रवेदनाभावात् ततो नते रिहा धिकार, किन्त्वभिमुखनामायुर्गोत्रै स्तेषामेवोपपातस्य स्वस्थानप्राप्त्या भिमुख्यलक्षणस्य लभ्यमानत्वात्। तत्र यद्यपि ऋजुसूत्रनयदर्शनेन बादरा पर्याप्ततेजस्कायिका युर्नामगोत्रवेदनात् यथोक्तकपाटद्वय

॥ मूल ॥

मा ! जत्थेव बादरवाउकाइयाण पज्जत्तगाण तत्थेव बादरवाउकाइयाण अपज्जत्तगाण ठाणा पण्णत्ता। उववाएण सव्वलोए समुग्घाएण सव्वलोए। सट्ठाणेण लोयस्स असंखेज्जेसु भागेसु। कहिण भंते ! सुहुम वाउकाइयाण पज्जत्ता अपज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! सुहुमवाउकाइयाण जे पज्जत्ता अपज्जत्ताण

॥ भाषा ॥

कूप तलाव यावत् द्वीपे समुद्रे सर्व जलाश्रय जलनेठामे। एत्थण तेइंदिय पज्जत्तगाण ठाणा प०। इहा तेंद्रिय पर्याप्ताकह्या तिणाना ठामकह्या। उव वाएण लोयस्स असं० समुग्घाएण लोयस्स असं० सट्ठाणेणलोयस्स असं०। उपजवो लोकने असंख्यातमेभाग समुद्घातलोकने असंख्यातमेभागे स्वस्थानलोक ने असंख्यातमेभागे। कहिणभंते चउरिंदिय ण पज्जत्त अपज्जत्तगाण ठाणा प०। किहा हेभगवन् चौरिंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या। गोयमा उड्ढलोए तदेकदेसभागे अहोलोए तदेकदेसभागे तिरियलोए। हेगौतम ऊर्द्धलोकातक देशभागे अधोलोकातक देशभागे तिरछेलोके। अगडेसु तला एसु जाव दीवेसु समुद्देसु सव्वेसुचेव जलासएसु जलठाणेसु। कूप तलाव यावत् द्वीपसमुद्र सर्व जलासये जलठामे। एत्थण चउरिंदिय पज्जत्त अपज्जत्त गाण ठाणा प०। इहा चौरिंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या। उववाएणलोयस्स असं० समुग्घाएणलोयस्स असं० सट्ठाणेणलोयस्स असंखेज्जइभागे।

तिर्यग्लोकयाद्व्यवस्थिता अपि बादरा पर्याप्ततेजस्कायिकव्यपदेशं लभन्ते' तथा च न व्यवहारनयदर्शनानुपगमात् ये २ स्वस्थानसमश्रेणिक पाटद्वय व्यवस्थिता ये तु स्वस्थानानुगते तिर्यग्लोक प्रविष्टा न बादरपर्याप्ततेजस्कायिका व्यपदिश्यते न शेषा कपाटापान्तरालव्यवस्थिता विषमस्थानवर्त्तित्वात् तत ये अद्यापिकपाटद्वयमप्रविष्टा नापि तिर्यग्लोक ते किल पूर्वतयावस्था गच्छेति न गण्यन्ते, उक्तञ्च-पणयालसयसहस्सपिहुला दुन्निकवाडायबाहिसिपुहा । लोगतेतेसितो जेतेऊतेउगिण्हति ॥१॥ तत उक्त ॥ उववाएणं दोसुउड्ढकवाडेसु तिरियलोयतट्टेय इति' स्थापना, तदेव मिद सूत्र व्यवहारनयदर्शनेन व्याख्यात तथासम्प्रदायात्, युक्त चैतत्-विचित्रासूत्रस्यगति रिति वचनादिति ॥ समुग्घाएणं सव्वलोए इति ॥ इद सूत्रं

ते सव्वे एगविहा अविसेसा अनाणत्ता सव्वलोयपरियावन्नगा पन्नत्ता समणाउसो! कहिणं भंते बादरव्वण स्सइकाइयाण पज्जत्तगाणं ठाणा प० ? गो० । सट्ठाणेणं सत्तसु घणोदहीसु सत्तसु घणोदहिवलएसु अहोलोए पायालेसु भवणेसु भवणपत्थडेसु उड्ढलोए कप्पेसु विमाणेसु विमाणावलियासु विमाणपत्थडेसु तिरियलोए

अपजवो लोकने असंख्यातमेभागे समुद्घातलोकने असं० स्वस्थानलोकने असं० । कहिंपभते पचिंदिय पज्जत्त अपज्जत्तगाण ठाणा प० । किहा हेभगवन् पचेंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या । गोयमा उड्ढलोए तदेकदेसभागे अहोलोकतदेकदेसभागे तिरियलोए । हेगौतम ऊर्ध्वलोकातक देशभागे अधोलोकातक देशभागे तिर्छालोका टके । अगडेसु तलावेसु जावदीवेसु समुद्देसु सव्वेसुचेव जलासएसु जलठाणेसु । कूप तलाव यावत् द्वीपसमुद्र सर्व जलासये जलठामे । एत्थण पचेंदिय पज्जत्त अपज्जत्तगाण ठाणा प० । इहा पचेंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या । उववाएणं ल यस्स अ० समग्घा एण लोयस्स अ० सट्ठाणेण लोयस्स असंखेज्जइभागे । ऊपजवो लोकने असं० समुद्घातलोकने असं० स्वस्थानलोकने असं०यातमेभागे । कहिंणभंते णेरइय. ण पज्जत्त अपज्जत्तगाण ठाणा प० । किहा हेभगवन् नारका पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या । कहिंण णेरइया परिवसति । किहा नारकी वसे छे । गोयमा सट्ठाणेण सत्तसुपुढवीसु प० । हेगौतम स्वस्थान साते पृथिवीविषे ते कहे छे—रयणप्पभाए सक्कर० वालुय० पक० धूम० तम० तमतम० ७ । रत्नप्र

॥ टीका ॥

रेव कपाटयो रन्तर्गते नान्य त्रोपतिर्यग्लोकव्यवच्छेदनपरमेतद्वाक्य त विधानपर विधानस्य कपाटग्रहणेनैव सिद्धत्वात्, तत्व पुन केवलिना विशिष्टश्रुतविदा वा गम्य, इयमत्र भावना-इह त्रिधाबादरपर्याप्ततेजस्कायिका स्तद्यथा एकभविका बद्धायुषो त्रिमुखनामगोत्रा श्च तत्रयेएकस्मा द्विवताद्विद्भवात् अनन्तर बादरपर्याप्ततेजस्कायिकत्वेन उत्पत्स्यन्ते ते एकभविका, ये तु पूर्वभवत्रिभागादिसमये बद्धबादरा पर्याप्ततेजस्कायिकायुष स्ते बद्धायुषो ये पुन बादरा पर्याप्ततेस्कायिकायुर्नामगोत्राणि पूर्वभवमोचनानन्तरसाक्षाद्वेदयन्ते अभिमुखनामगोत्रा तत्र एकभविका बद्धायुष श्च द्रव्यतो बादरा पर्याप्ततेजस्कायिकानभावत स्तद युर्नामगोत्रवेदनाभावात् ततो नते रिहा धिकार, किन्त्वभिमुखनामायुर्गोत्रै स्तेषामेवोपपातस्य स्वस्थानप्राप्त्या भिमुख्यलक्षणस्य लभ्यमानत्वात्। तत्र यद्यपि ऋजुसूत्रनयदर्शनेन बादरा पर्याप्ततेजस्कायिका युर्नामगोत्रवेदनात् यथोक्तकपाटद्वय

॥ मूल ॥

मा। जत्थेव बादरवाउकाइयाण पज्जत्तगाण तत्थेव बादरवाउकाइयाण अपज्जत्तगाण ठाणा पण्णत्ता। उववाएण सव्वलोए समुग्घाएण सव्वलोए। सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जेसु भागेसु। कहिण भंते! सुहुम वाउकाइयाण पज्जत्ता अपज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता? गोयमा! सुहुमवाउकाइयाण जे पज्जत्ता अपज्जत्ताणं

॥ भाषा ॥

कूप तलाव यावत् द्वीपे समुद्रे सर्व जलाश्रय जलनेठामे। एत्थण तेइंदिय पज्जत्तगाण ठाणा प०। इहा तेंद्रिय पर्याप्ताकह्या तिणाना ठामकह्या। उववाएण लोयस्स अस० समुग्घाएण लोयस्स अस० सट्ठाणेणलोयस्स अस०। ऊपजवो लोकने असख्यातमेभाग समुद्घातलोकने असख्यातमेभागे स्वस्थानलोकने असख्यातमेभागे। कहिणभंते चउरिंदिय ण पज्जत्त अपज्जत्तगाण ठाणा प०। किहा हेभगवन् चौरिंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या। गोयमा उड्ढलोए तदेकदेसभागे अहोलोए तदेकदेसभागे तिरियलोए। हेगौतम ऊर्ध्वलोकातक देशभागे अधोलोकातक देशभागे तिरछेलोके। अगडेसु तलाएसु जाव दीवेसु समुद्देसु सव्वसुचेव जलासएसु जलठाणेसु। कूप तलाव यावत् द्वीपसमुद्र सर्व जलासये जलठामे। एत्थण चउरिंदिय पज्जत्त अपज्जत्तगाण ठाणा प०। इहा चौरिंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या। उववाएणलोयस्स अस० समुग्घाएणलोयस्स अस० सट्ठाणेणलोयस्स असखेज्जइभागे।

पान्तरालगतो वर्त्तमाना इति समुद्घातगताश्च सकललोकमा पूरयन्ति, उत्कृष्ट-समुद्घातेन सर्वलोकेऽति । अन्येत्व मिदधति-प्रतिवस्त्र खलु बा दरा पर्याप्ततैजस्कायिका एकैक पर्याप्तनिश्रया असंख्यातानामपर्याप्ताना मुत्पादात् ते च सूक्ष्मेष्वपि स मुत्पद्यन्ते सूक्ष्मा श्च सर्वत्र विद्यन्त इति बादरा पर्याप्ततैजस्कायिका स्व २ भवनपर्यंते कृतमारणान्तिकसमुद्घाता सन्त सकलमपि लोक मापूरयन्तीति न कश्चि द्दोष ' अपि तु निरुपच रिततैजस्कायिकसमुद्घातप्ररूपणागुणस्थापनस्थानेनलोकस्यासंख्येयभागे इति पर्याप्तनिश्रया अपर्याप्तानामु त्पादात्, पर्याप्ताना च स्थान मनुष्यक्षेत्र त च लोकासंख्येयतमभागमात्रमिति, सूक्ष्मपर्याप्ततैजस्कायिकसूत्र सूक्ष्मपर्याप्तापर्याप्तपृथिवीकायिकसूत्रव द्भावनीय, एव वायुकायिकत्रन

ठाणा पणत्ता ? गोयमा ! जत्थेव बादरवणस्सइकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा तत्थेव बादरवणस्सइकाइ याण अपज्जत्तगाण ठाणा पणत्ता। उववाएण सव्वलोए समुग्घाएण सव्वलोए सठाणेण लोयस्स असखेज्ज इभागे । कहिण भंते। सुहुमवणस्सइकाइयाण पज्जत्तगाण अपज्जत्तगाणय ठाणा प० ? गो० ! सुहुमवण स्सइकाइया जे पज्जत्तगा जे अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसा अणाणत्ता सव्वलोयपरियावण्णगा

अपज्जत्तगाण ठाणा प० । इणांठामे नारकीपर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या । उववाएण लोयस्स अस० समुग्घाएण लोयस्स अस० सट्ठाणेण लोयस्स अस० । उपजवा लोकने अस० समुद्घातलोकने अस० स्वस्थानलोकने असख्यातमेभागे । तत्थण बहवे नेरइयापरिवसति । तिहा नारकी वसेछे । कालाभा सागभौर नाम हरिसाभीमा उत्तणगा परमकिण्हाण पत्ता । कालोआभा कांतिजेहनी भयनेबसे उत्तास्रामछे जेहनो परम उत्कृष्टवर्ण कह्यो । तेण तत्थ निच्चभीया निच्चतत्था निच्चंतसिया निच्चउगा निच्चपरमसुहसवधनरगभयं पच्चणुभवमाणाविहरति । तिहां नित्य त्रास पाम्य छे परमाधार्मिक थकी नि त्य त्र से मांहामांहि नित्य उद्विग्नछे नित्य परमअशुभ दुखने सबध नरकनाभय भोगवता विचरै । कहिणभंते रयणप्पभपुढवी नेर याण पज्जत्त अपज्ज त्ताण ठाणा प० । किहा हेभगवन् रत्नप्रभानारकी पर्याप्ता अपर्याप्ता ठामकह्या । काहणभते रयणप्पभपुढवी निरया परिवसति । किहा हेभगवन्

॥ टीका

कपाटयो र्यथोक्त स्वरूपयो र्योन्य पान्तरालानि तेषु ये सूक्ष्मपृथिवीकायिकादयो बादरपर्याप्ततेजस्कायिकेषू त्पद्यमानमारणान्तिकसमुद्घातेन सम वहता स्ते किल विष्कम्भबाहल्याभ्या शरीरप्रमाणमात्रत्वात् आयामत उत्कर्षतो लोकान्तयावत् आत्मप्रदेशान् विनिपतन्ति तथा चा वगाहनासम्थाप नपदे वक्ष्यति पुढविकाइयस्सण भंते मारणांतिकसमुग्घाएण समोहयस्स तेयासरीरस्स केमहालिया सरीरोगाहणा पन्नता गो० सरीरपमाणमे त्त विक्खंभबाहल्लेण आयामेण जहन्नेण अंगुलस्स असंखेज्जइभाग उक्कोसेण लोगाओ लोगंतो इति„ तत स्ते सूक्ष्मपृथिवीकायिकादय उत्पत्तिदेश याव त् विविक्षात्मप्रदेशदण्डा अपान्तरालगतो वर्तमाना बादरापर्याप्ततेजस्कायिकायुर्वेदनाल्लब्धबादरापर्याप्ततेजस्कायिकव्यपदेशा समुद्घातगतावा

॥ मूल

अगडेसु तलागेसु ठदीसु दहेसु वावीसु पुक्करिणीसु दीहियासु गुंजालियासु सरेसु सरपतियासु सरपतिआसु पतियासु विलपतिआसु उज्झरेसु निज्झरेसु चिल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दीवेसु समुद्देसु सव्वेसुचेव जलास एसु जलठाणेसु एत्थण बादरवणस्सइकाइयाण पज्जत्तगाण ठाणा पन्नत्ता । उववाएण सव्वलोए, समुग्घा एण सव्वलोए सठाणेण लोगस्स असंखेज्जइभागे । कहिण भंते ! बादरवणस्सइकाइयाण अपज्जत्तगाण

॥ भाषा

भा सर्करप्रभा वालुप्रभा पङ्कप्रभा धूमप्रभा तमप्रभा तमतमप्रभा । एत्थण णेरइयाण चउरासिति णिरयावास सयसहस्सा भवंतित्ति मक्खाय तण णिर या । इहा नारकीना ८४ लाख नरकावासाछे इम तीर्थंकरे कह्यो तेकहेछे—अंतोवट्टावाहि चउरसा । माहि वाटलाकारछे वाहिर चौखूणा । अहे खुर प्प सठाणसठिआ । नीचे खुरप्पसस्थाने सस्थितछे । निच्चंधियारतमसाववगय गह चंद सूर नक्खत्त जोइसि पहाय । नित्य अन्धकार तमसा ग्रह चन्द्र सू र्य नक्षत्र ज्योतिषीनी प्रभारहितछे । वसा पूयपडिल रुहिर मंस चिक्खिल्ललित्ताणुलेवणतला । स्वभावें मेद वसा राधृत मास तिणें लीप्या छायपग । अस् र्इ वीसा परमदुब्भिगंधाकाऊ अगणिवण्णाभा । एतावता अपवित्रछे महादुर्गंधशरीर अग्निज्वलती सरीखी प्रभावछे जेहनी । कक्खडफासा दुरहिया सा असुभानरगा सुभानरएसु वेयणाओ । कर्कशस्पर्श असिपत्रपरे एहवा पाछा नगरनाठामे घतीव अशुभवेदना भोगवेछे । एत्थण णेरइयाण पज्जत्त

॥ टीका ॥

पात्मरानगतौ वत्तमाना एति समुद्घातगताश्च सकललोकमा पूरयन्ति, उत्कृष्ट-समुद्घातेन सर्वलोकेऽति । अन्येत्व भिदधति-अतिबहव खलु वा दरा पर्याप्ततैजस्कायिका एकैक पर्याप्तनिश्रया असंख्येयानामपर्याप्ताना मुत्पादात् ते च सूक्ष्मेष्वपि स मुत्पद्यन्ति सूक्ष्मा श्च सर्वत्र विद्यन्त इति बादरा पर्याप्ततैजस्कायिका स्व २ भवनपर्यंते कृतमारणान्तिकसमुद्घाता सन्त सकलमपि लोक मापूरयन्तीति न कश्चि दोष ' अपि तु निरुपचरिततेजस्कायिकसमुद्घातप्ररूपणागुणस्थापनस्थानेनलोकस्यासंख्येयभागे इति पर्याप्तनिश्रया अपर्याप्तानामु त्पादात्, पर्याप्ताना च स्थान मनुष्यक्षेत्र त च लोकासंख्येयतमभागमात्रमिति, सूक्ष्मपर्याप्तातैजस्कायिकसूत्र सूक्ष्मपर्याप्तापर्याप्तपृथिवीकायिकसूत्रव द्भावनीय, एव वायुकायिकवन

॥ मूल ॥

ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! जत्थेव बादरवणस्सइकाइयाण पज्जत्तगाण ठाणा तत्थेव बादरवणस्सइकाइयाण अपज्जत्तगाण ठाणा पण्णत्ता। उववाएण सव्वलोए समुग्घाएण सव्वलोए सठाणेण लोयस्स असंखेज्जइभागे । कहिण भंते। सुहुमवणस्सइकाइयाण पज्जत्तगाण अपज्जत्तगाणय ठाणा प० ? गो० ! सुहुमवणस्सइकाइया जे पज्जत्तगा जे अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसा अणाणत्ता सव्वलोयपरियावण्णगा

॥ भाषा ॥

अपर्ज्जत्तगाण ठाणा प० । इणाठामे नारकीपर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या । उववाएण लोयस्स अस० समुग्घाएण लोयस्स अस० सट्ठाणेण लोयस्स अस० । उपजवा लोकने अस० समुद्घातलोकने अस० स्वस्थानलोकने असंख्यातमेंभागे । तत्थण बहवे नेरइयापरिवसति । तिहा नारकी वसेछे । कालाभास गंभीर लाम हरिसाभीमा उत्पाता परमकिण्णाण पत्ता । कालीआभा कांति जेहनी भयनेवसे उत्कृष्टरामछे जेहना परम उत्कृष्टवर्ण कह्या । तेण तत्थ निच्चभीया निच्चत्था निच्चतसिया निच्चउव्विग्गा निच्चपरमसुहसवधनरगभयं पच्चणुभवमाणाविहरति । तिहां नित्य त्रास पाम्य छे परमाधार्मिक थकी नित्य त्रसे मांहामांहे नित्य उद्विग्नछे नित्य परमअशुभ दुःखने संबंध नरकनाभय भोगवता विचरे । कहिणभंते रयणप्पभपुढवी नेर याण पज्जत्त अपज्जत्ताण ठाणा प० । किहां हेभगवन् रत्नप्रभानारकी पर्याप्ता अपर्याप्ता ठामकह्या । कहिणभंते रयणप्पभपुढवी निरया परिवसति । किहा हेभगवन्

॥ टीका ॥

स्पनिकायिकसूत्राण्यपि प्रत्येकं त्रीणि २ भावनीयानि, नवरं बादरपर्याप्तवायुकायिकसूत्रे भवनच्छिद्राणि भवनानामवकाशान्तराणि भवननिकुटा गवाक्षादिकल्पा कथन भवनप्रदेशा नरकच्छिद्राणि नरकनिकुटा गवाक्षादिकल्पा नरकावासप्रदेशा एवविमानच्छिद्राणि विमाननिकुटा श्च प्रतिपत्तव्या, उववाएणलोगस्स असंखेज्जेसु भागेसु इत्यादि॥ वायवोहि यथाप्ता अतिवरो यतो यत्र सुषिरं तत्रवायु सुषिरञ्चनखलोक इति विग्र प्युपपातादिषु लोकस्या सख्येयेषु भागेषि त्यक्त अपर्याप्तबादरवायुकायिकसूत्रे उववाएणं समुग्घाएणसव्वलोएइति॥ इह देवनारकवर्जन्य शपका यन्य सर्वस्या बादरापर्याप्तवायुकायेषु समुत्पद्यन्ते बादरापर्याप्ताश्चा ऽपान्तरालगतावपि लभ्यन्ते बहूनि च स्वस्थानानि बादरपर्याप्तापर्याप्तवायुका

॥ मूल ॥

पण्णत्ता, समणाउसो! कहिण भंते! बेइंदियाण पज्जत्ता पज्जत्तगाण ठाणा पण्णत्ता? गोयमा! उड्ढलोए तदेकदेसभागे, अहोलोए तदेकदेसभागे, तिरयलोए अगडेसु तलाएसु नदीसु वावीसु पुक्करणीसु दीहियासु गुंजालियासु सरेसु सरपंतियासु सरसरपंतियासु उज्झरेसु निज्झरेसु चिल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दीवेसु समुद्देसु सव्वेसुचेव जलासएसु जलठाणेसु, एत्थण बेइंदियाण पज्जत्तापज्जत्तगाण ठाणा पण्णत्ता। उववाएण लोगस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएण लोयस्स असंखेज्जइभागे सट्ठाणेण लोयस्स असंखेज्जइभागे। कहिण

॥ भाषा ॥

रत्नप्रभा नारकी कहेछे—गोयमा इमासेरयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तर जोयणसहस्स बाहल्लाए उवरिं एग जोयणसहस्स उगाहित्ता हेट्ठ चेगजोयण सहस्स वज्जित्ता मज्झे अट्ठुत्तरे जोयणसयसहस्से। हेगौतम ए रत्नप्रभापृथिवीनें ८० योजन जाडपणें अबाधायें ऊपरि हजारयोजन मूकीने हेठले ह जार मूकीने मध्यविषे १००१०८ एकलाख अठोत्तरसहस्र योजनपरिमाण। इत्थण रयणप्पभापुढवी णेरइयाण तीस निरयावास सयसहस्सा हवंतित्ति मक्खाय। तिहां रत्नप्रभानारकी तीसलाख नरकावासछे इम तीर्थकरे कह्या। तेणनरगा अंतोवट्टा बाहिंचउरंसा अहेखुरप्पसंठाणसंठिया। ते नरका वासामांहि वाटलाकारे बाहिर चउरस नीचे खुरप्रने संस्थानछे। निच्चंधियार तमसा ववगय गह चंद सूर नक्खत्त जोइसपहा मेय वसा पूय पडल

॥ टीका ॥

यिकाना ततो व्यवहारनयमतेनोपपातमधिकृत्य सकललोकव्यापिता घटते इति न काचित् क्षिति , समुद्घातेन सकललोकव्यापिता सुप्रतीतैव सर्वेषु सूक्ष्मेषु सर्वत्र च लोके तेषां समुत्पादसम्भवात्, बादरापर्याप्तवनस्पतिकायिकसूत्र उववाएणसव्वलोएइत्यादरपर्याप्तवनस्पतिकायिकानां स्व स्थानं घनोदध्यादि । तत्र बादरनिगोदानां शैवालादीनां सम्भवात् सूक्ष्मनिगोदाना भवस्थितिरन्तर्मुहूर्त्त तत स्त बादरनिगोदेषु पर्याप्तेषु समुत्पद्य माना बादरनिगोदपर्याप्तायुरनुभवन्त सुविशुद्धऋजुसूत्रनयदर्शनाभ्युपगमेन लब्धबादरपर्याप्तवनस्पतिकायिकव्यपदेशा उपपातेन सकलकालं सर्व लोकं व्याप्नुवन्ति, तत उक्त–उपपातेन सर्वलोके इति समुग्घाएणं सव्वलोए इति ॥ यदा बादरनिगोदा सूक्ष्मनिगोदेषु आयु बद्ध्वा पर्यन्ते मारणा न्तिकसमुद्घातेन समवहता आत्मप्रदेशानुत्पत्ति देशयावत् विक्षिपन्ति तदा बादरनिगोदपर्याप्तायुरद्याप्य क्षीणमिति बादरपर्याप्तनिगोदा एव

॥ मूल ॥

भंते ! तेइंदियाणं पज्जत्तापज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! उड्ढलोए तदेकदेसभाए अहोलोए तदेक देसभागे , तिरियलोए अगडेसु तलाएसु वावीसु पुक्खरणीसु दीहियासु गुंजालियासु सरेसु सरपंतियासु सरसरपंतियासु बिलपंतियासु उज्झरेसु निज्झरेसु चिल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दीवेसु समुद्देसु सव्वेसुचेव जला सएसु जलठाणेसु एत्थणं तेइंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता , उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे समुग्घाएणं लोयस्स असंखिज्जइभागे सठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे । कहिणं भंते ! चउरिंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! उड्ढलोए तदेकदेसभाए , अहोलोए तदेकदेसभागे , तिरियलोए

॥ भाषा ॥

रहिर मस चिक्खल्लभूमितला निरन्तरलेपनतला । नित्य अंधकार रहितछै ग्रह चंद्र सूर्य नक्षत्र ज्योतिषीनो प्रभा रहितछै मेद वसा अधूत पडल रु धिर मांस तेणकरी चीकणाछै हाथ पग शरीर लेहना एतावता । असदवासा परमदुर्भिगंधा काउय अगणिवन्न भा । अपवित्र परमदुर्गंधकाय अग्नि वर्ण बलतीकातिछै । कक्खडफासादुरहियासा असुभानरगा असुभानरएसु वेयणाओ पचणभवमाणाविहरति । कर्कशस्पर्श दुखसहिवा एहवा माठानरग

॥ टीका

समुद्घातगताश्चसकललोकव्यापिनश्चेति समुद्घातेन सर्वलोके स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयतमे भागे घनोदध्यादीनां सर्वेषामपि समुदितानां लोकस्या संख्येयभागमात्रत्वात् ग्रंथाग्र २००० शेषसुगम एव द्वीन्द्रियत्रीन्द्रियचतुरिन्द्रियसामान्यत पञ्चेन्द्रियसूत्राण्यपि भावनीयानि नवरं द्वीन्द्रियादयो वलयो जलसम्भूता शङ्खप्रभृतय इति सर्वेष्वपि सूत्रेषु स्थानान्य वटादीनि उक्तानि, तथा ऊर्ध्वलोक तदेकदेशभागे मन्दरादि वाप्यादिषु अधोलोके तदेकदेश अधोलौकिकग्रामकूटतटागादिषु शेषेषू प्रयुज्य स्वय परिभावनीय, अधुना पर्याप्तापर्याप्तनैरयिकस्थानप्ररूपणार्थं माह–कहिणभंतेनेरया णमित्यादि ॥ कस्मिन् प्रदेशे भदन्तनैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि एतदेव व्यक्त पृच्छति यथान्ये प्यवनुध्यन्ते, कहिणमिति ॥

॥ सूत्र

अगडेसु तलाएसु वावीसु पुक्खरिणीसु दीहियासु गुंजालियासु सरेसु सरपंतियासु सरसरपंतियासु णिज्झ रेसु उज्झरेसु चिल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दीवेसु समुद्देसु सव्वेसुचेव जलासएसु जलट्ठाणेसु एत्थणं चउरि दियाणं पज्जत्ता पज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता । उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे समुग्घाएणं लोयस्स असं खेज्जइभागे, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे । कहिणं भंते! पंचिंदियाणं पज्जत्ता पज्जत्ताणं ठाणा प०

॥ भाषा

तेठामें तिहां माठोंघेटना भोगवतायका विचरेछे । एत्थणं रयण रयणप्पभ पुढवी णेरइयाणं पज्जत्तअपज्जत्तगाणं ठाणा प० । एणे प्रकारे रत्नप्रभा नार कीना पर्याप्ता अपर्याप्ता रहेछे । उववाएणं लोयस्स अस० समुग्घाएणं लोयस्स अस० सट्ठाणेणंलोयस्स अस० । उपजवो लोकने अस० समुद्घातलोकने अस० स्वस्थानलोकने अस० । तत्थणं बहवे रयणप्पभ पुढवीणेरइया परिवसंति । तिहां घणा रत्नप्रभा नारकी वसेछे ते केहवाछे । कालाकालाभासा गंभीरलो महरिसा भीमा उत्तासणगा परमकिण्हवण्णा वन्ना पण्णत्ता । कालाकाली आभाछे ग्लाटरोमछे जेहना भयानका परमकालेवर्णकह्या । समणाउसो । प्रशस्थमणी आयुष्यवन्तो । तेणं निच्चभीया निच्चतत्था निच्चतसिया निच्चवग्गा निच्चपरमसुहसंबधनरगभयं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति । नित्य बीहता नि त्य त्रास पामेछे नित्य उद्वेगकरे नित्य परमअसुखसंबंधी नरकना भयप्रते भोगवता विचरे । कहिणंभंते सक्करप्पभपुढवीणेरइयाणं पज्जत्ताणं अपज्जत्ताणं

॥ टीका ॥

एकस्मिन् प्रदेशे यमिति वैयालङ्कृतौ नैरयिका परिवसन्ति' भगवानाह-गौतम स्वस्थानेन सप्तपृथिवीषु ता एव नामग्राहं माह-तजहा॥ रय णप्पभाएइत्यादि ॥ गतार्थं गत्वणमित्यादि ॥ अत्रै तासु पृथिवीषु सप्तसु पृथिवीषु नैरयिकाणां सबसङ्ख्या चतुरशीतिनरकावासशतसहस्राणि भ वन्ति तथाहि-रत्नप्रभाया त्रिंशन्नरकावासशतसहस्राणि भवन्ति शर्करप्रभाया पञ्चविंशतिशतसहस्राणि वालुकप्रभाया पञ्चदशलक्षा पङ्कप्रभाया दशलक्षा धूमप्रभाया त्रीणिलक्षा तमःप्रभायामेक शतसहस्र पञ्चोन तमस्तमःप्रभाया पञ्चेति भवन्ति सबसङ्ख्या चतुरशीतिलक्षा नरकावासाना मित्याख्यात मया शेषे थ तीर्थकृद्भि , तेणनरकावासाइत्यादि ॥ तेनरकावासा श्चतुरशीति लक्षप्रमाणा सर्वेपि प्रत्येकम न्तर्मध्यभागे वृत्ताकारा बहिर्भागे चतुरस्रा श्चतुरस्राकारा इदञ्च पीठोपरिवर्तन मध्यभागम धिकृत्य प्रोच्यत सकलपीठाद्यपेक्षया त्वा वलिका प्रविष्टा वृत्तत्र्यस्रचतुरस्र

॥ मूल ॥

? गोयमा ! उड्ढलोए तदेकदेसभागे अहोलोए तदेकदेसभागे तिरियलोए अगडेसु तलाएसु नदीसु दहेसु वावीसु पुक्खरिणीसु दोहियासु गुंजालियासु सरेसु सरपंतियासु सरसरपंतियासु बिलपंतियासु उज्झरेसु णि ज्झरेसु चिल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दीवेसु समुद्देसु सब्वेसुचेव जलासएसु जलठाणेसु एत्थण पचिंदियाण पज्जत्ता पज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता, उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएण लोयस्स असंखिज्जइ भागे, सट्ठाणेण लोयस्स असंखेज्जइभागे। कहिण भंते ! नेरइयाण पज्जत्ता पज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता ?

॥ भाषा ॥

ठाणा प० । किहा हेभगवन् शर्करप्रभापृथिवीना नारकीना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठाम कह्याछे। कहिणभंते सक्करप्पभपुढवी णेरइया परिवसंति। कि हां हे भगवन् रत्नप्रभानारकी रह्याछे। गोयमा सक्करप्पभाए पढवीए बत्तीसुत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिएगजोयणसहस्स उगाहित्ता हिट्ठाविग जोयणसहस्स वज्जित्ता। हेगौतम शर्करप्रभाना पृथिवीयें एकलाख बत्तीसहजार जाडपणें तेहने ऊपर एकहजारयोजन मूकीने हेठले एकसहस्रयोज न मूकीने। मध्ये तीसुत्तरेजोयणसहस्स वाज्जा। मध्य एकलाख बत्तीसहजार जाडपणें। एत्थण सक्करप्पभपुढवी णेरइयान पणवीस तिरियावास

मस्थाना प्रतिपत्तव्या अरेसुरप्पसठाणसठियाइति ॥ अधोभूमितले क्षुरप्रस्येव प्रहरणविशेषस्य य स्तस्थानमाकारविशेष स्तीक्ष्णतालक्षण स्तेन स स्थिता, तथाहि-तेषु नरकावासेषु भूमितले मसृणत्वाभावत शर्करिल पादेषु न्यस्यमानेषु शर्करमात्रस्पर्शेपि क्षुरप्रेणेव पादा कृत्यंत, निच्चध यारतमसाइति ॥ नित्यान्धकारा उद्योताभावतो य तम स्तदिह तम उच्यते तेन तमसा नित्य सर्वकालमन्धकारा स्तत्रा पवरकादिष्विव नामान्ध कारा स्ति केवल बहि सूर्यप्रकाशे मन्दतमो भवति नरकेषु तीर्थकरजन्मदीक्षादिकालव्यतिरेकेण न्यदा सर्वकालमपि उद्योतलेशस्या प्य भावतो जात्यन्धस्येव मेघच्छन्नकालाद्धुरात्रइवा तीव बहलतरो वर्त्तत तत उक्त तमसा नित्यान्धकारा तम श्च तत्र सदावस्थित मुद्योतकारिणाम सम्भवात्

कहिण भंते । नेरइया परिवसंति ? गोयमा । सठाणेण सत्तसु पुढवीसु तंजहा—रयणप्पभाए सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए पंकप्पभाए धूमप्पभाए तमप्पभाए तमतमप्पभाए एत्थण नेरइयाण चउरासि निरयावास सयहस्साइ भवतीति मक्खाय, तेण णरगा अंतोवट्टा बाहिंचउरंसा अहे खुरप्पसठाणसंठिया निच्चंधयार तमसा ववगयगहचंदसूरनक्खत्तजोइसपहा मेदवसापूयरुहिरमंसचिक्खल्ललित्ताणुलेवणतला असुईवीसा परम

यसहस्रा भवतीत्त मक्खाय। इहा शर्करप्रभा पृथिवीनानारकी पचवीसलाख नरकावासे वसछे इम तीर्थकरे कह्याछे स्वयमुखे प्ररूप्या। तेण नरगा अ तावट्टावाहि चउरसा अहेखुरप्पसठिया। त नरकावासामाहि वाटला बाहिर चौरसछे नीचे खुरप्प सठाणछे। निच्चंधियार तमसा ववगयसूरचदगहन क्खत्त जोइसियमहामेयवसापूयपडलरुहिरमासचिक्खिल्लित्ताणलेवणतला। नित्य अन्धकारछे तमकरके गयाछे सूर्य चद्र ग्रह नक्षत्र ज्योतिषीनो प्रभ प्रम ख मेद वसा पूतपडल रुधिर मास तेणकरी चोकणाछे हाथ पगना तला। असुइ वीसा परमदुब्भिगंधाकाओ अगणिवणाभा। अपवित्र दुर्गन्धकाय लो ढा धमनो जहनेहन तेहवी आभा काली छट्ठो सातमीवर्जी कक्खडफासा दुरहियासा असुभानरगावासा असुभानरएसुवेयणा। कर्कशस्पर्शछे दुखे अहि वासर्वीच्या एहवामाठा नगरना। एत्थण सक्करप्पभापुढवी नेरइयाण पज्जत्तअपज्जत्तगाण ठाणा प० ॥ इहा शर्करप्रभापृथिवीना नारकी पर्याप्ता अपर्याप्ता

॥ टीका ॥

तथाचाह व्यपगतग्रहचन्द्रसूरनक्षत्रज्योतिष्पथा ॥ व्यपगत परिभ्रष्टो ग्रहचन्द्रसूरनक्षत्ररूपाणां ज्योतिष्काणां पन्थानो मार्गो यस्य स्ते व्यपगतग्रहचन्द्रसूर्यनक्षत्रज्योतिष्पथाः तथा मेदवसापूयरुधिरमांसचिक्खल्ललिप्तानुलेपनतलाः इति ॥ मेदोवसापूतिरुधिरमांसचिक्खिल्ल कर्दम तेन लिप्तमुपदिग्ध अनुलेपनेन स्रक्षितस्य पुनः पुनः रूपापनेन तलभूमिका यथा ते मेदोवसापूतिरुधिरमांसचिक्खल्ललिप्तानुलेपनतला अतएव अशुचयो अपवित्रा बीभत्सा दर्शनमात्रेण जुगुप्सोत्पादकाः क्वचित् बीसा इति पाठ स्तत्र विस्रा आमगन्धिका परमदुरभिगंधा

॥ मूल ॥

दुब्भिगंधा काऊअगणिवन्नाभा कक्खडफासा दुरहियासा असुभा नरगा असुभा नरएसु वेयणाओ एत्थ णं नेरइयाणं पज्जत्ता पज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता, उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, एत्थ णं बहवे नेरइया परिवसंति काला कालोभासा गंभीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणगा परमकण्हा वण्णेणं पन्नत्ता, ते णं तत्थ निच्चं भीया निच्चं तत्था निच्चं तासिया निच्चं उव्विग्गा निच्चं परममसुहसंबद्धनरगभयं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति । कहि णं भंते ! रयणप्पभा पुढवीनेरइयाणं पज्जत्ता पज्जत्ताणं ठाणा प० ? कहि णं भंते ! रयणप्पभापुढवीनेरइया परिवसंति ? गो० ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्समोगाहित्ता

॥ भाषा ॥

ना ठांमकह्या । उववाएण लोयस्स असं० समुग्घाएण लोयस्स असं० सट्ठाणेणं लोयस्स अ० । उपजवालोकने अ० समुद्घातलोकने अ० स्थानलोकने अ० असंख्यातमेभागि । तत्थण बहवे सक्करपभापुढवी नेरइया परिवसंति । तिहां घणा शर्कराप्रभाना नारकी वसैछ । कालाकालाभासा गंभीरलोमहरिसा भीमाउत्तासणगा परमकिण्हा वण्णेण प० । ते स्थानके काला काला आभाछे ऊंडने भयने वसै उत्कटरोमछे जेहना भयंकरा रूपछे उत्कृष्ट वर्णछे परमकाला दुखछे । तत्थणं ते निच्चं भीया निच्चं तत्था निच्चं तासिया निच्चं उव्विग्गा निच्चं परममसुहसंबद्धं नरगभयं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति । ति

मृतगवादिकलेवरेभ्यो ष्य तीवा निष्टदुरभिगन्धा ॥ काऊअगणिवन्नाभाइति ॥ लोहे धम्यमाने यादृक् कपोतो वहुकृष्णरूपो ग्ने वर्णो किमुक्त भवति यादृशी वहुकृष्णवर्णरूपा अग्निज्वाला विनिर्गच्छतीति तादृशी आभा आकारो येषा ते कपोताग्निवर्णाभा धम्यमानलोहाग्निज्वालाकल्पा इति भा व , नारकोत्पत्ति स्थानव्यतिरकेणा न्यत्र सर्वत्रा ष्य रूपत्वात् यत ष्य षष्ठसप्तमपृथिवीवर्जम वनय, तथा च वक्ष्यति नवर ॥ छट्ठसत्तमासुणकाऊ गणिवन्नाभानभवति॥ तथा ककशा रतु सशो विपत्रस्येव स्पर्शयेषु ते ककशस्पर्शा , अत एव दुरहियासा इति ' दु खनाध्यास्यन्ते सह्यन्त दुरध्यासा

॥ टीका

हेठाचेग जोयणसहस्स वज्जित्ता मज्झे अठहत्तरिजोयणसयसहरसे एत्थण रयणप्पभापुढविनेरइयाण तीस निरयावाससयसहस्सा भवतीति मरकाय , तेण नरगा अतो वहा बाहिं चउरंसा अहे खुरुप्पसठाणसठिया निच्चधयारतमसा ववगयगहचंदसूरनक्खत्तजोइसपहा मेदवसापूइयपडलरुहिरमसचिक्खललित्ताणुलेवणतला असुईवीसा परमदुब्भिगंधा काऊअगणिवन्नाभा कक्खडफासा दुरहियासा असुभा णरगा असुभा नरगेसु वे दणाओ एत्थण रयणप्पभापुढविनेरइयाण पज्जत्ता पज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता , उववाएण लोयस्स असखेज्ज

॥ मूल

इा ते नित्य वो-छे परमाधामीकरी नित्य त्रास्या नित्य चहिक्न नित्य परमअसुखवधी नरकनाभय भोगवतायका विचरेछे। कहिणभंते वालुयप्पभपु ढवीणेरइयाण पज्जत्त अपज्जत्ताण ठाणा प० । किहा हेभगवन् वालुकप्रभापृथिवी नारकी पर्याप्ता अपर्याप्ता ना ठामकह्या। गोयमा वालुयप्पभाएपु ढवीए अट्ठावीसुत्तर जोयणसयसहस्स बाहल्लाए उवरि एगजोयण सहस्स उगाहित्ता। हेगौतम वालुकप्रभा पृथिवीयें एकलाख अट्ठावीसहजार जाड पणे बाहुल्य तेहमांहि एकसहस्रयोजन ऊपरमूकीने। हेट्ठावेगजोयणसहस्स वज्जित्ता मज्झे छवीसुत्तरेजोयणसयसहस्से। हेठे एकयोजन सहस्र मूकी ने मध्य विचे एकलाख छवीसहजारनी अवकाश। एत्थण वालुयप्पभपुढवी णेरइयाण पन्नरसनिरयावाससयसहस्साभवतीत्तिमक्खाय। तिहा वालुकप्रभा पृथिवीना नारकीना पनरेलाख नरकावासाछे केवलज्ञानीयें कह्याछे। तेणनरगा अतोवट्टा बाहिं चउरसा जाव असुभानरगा असुभानिरएसु वेयणा

॥ भाषा

अशुभा दर्शनतो नरका स्तथा गन्धरसस्पर्शशब्दै रशुभा अतीवा सातरूपा नरकेषु वेदना ॥ तत्थणमित्यादि ॥ यावत् तत्थणबहवेनेरयापरिवसन्ति कालाइत्यादि ॥ काला कृष्णा तत्र कोपि नि प्रतिपत्रतया मन्द कृष्णोपि भवति तत स्तदा शक्यव्यवच्छेदार्थं विशेषणान्तरमाह–कालावभासा काल कृष्णा ग्रवास प्रतिभाविनिर्गमो यस्य ते कालावभासा कृष्णप्रभापटलोपचिता इतिभाव, अत एव गम्भीरलोमहर्षा गम्भीरो ऽतीवो त्कटो

इभागे, समुग्घाएण लोयस्स असखेज्जइभागे, सठाणेण लोयस्स असखेज्जइभागे। तत्थण बहवे सक्करप्पभापुढविनेरइया परिवसति। काला कालोभासा गभीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणगा परमकिण्हा वन्नेण पण्णत्ता, समणाउसो! तेण णिच्च भीया निच्च तत्था णिच्च तसिया णिच्च उव्विग्गा निच्च परममसुहसबद्ध नरगभय पच्चणुभवमाणा विहरति। कहिण भंते! सक्करप्पभापुढविनेरइयाण पज्जत्ता पज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता? कहिण भंते, सक्करप्पभापुढविणेरइया परिवसति? गोयमा! सक्करप्पभापुढविए बत्तीसुत्तर जोयणसयसहस्सबाहल्लाए। उवरि एग जोयणसहस्स उग्गाहित्ता हेठा चेग जोयणसहस्स वज्जित्ता मज्झे

थी। ते नरकावासामांहि वृत्ताकार बाहिरचौरस यावत् अशुभ नरकावासा अशुभनरकनी वेदना भोगवता। कहिण वालुयप्पभपुढवीणेरइयाण पज्जत्त अपज्जत्ताण ठाणा प०। इहांठामे वालुकप्रभा नारकीना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या। उववाएणंलोयस्स असं० समुग्घाएणंलोयस्स असं० सठाण लोयस्स असखेज्ज-भागे। कापजर्वालाकने असख्यातमेभाग समुद्घातलोकने असं० स्थानलोकने असं०। तत्थणबहवेवालुयप्पभपुढवीणेरइया परिवसति। तिहां घणा वालुकप्रभाना नारकी वसेछे। कालाकालोभासा जाव निच्च परममसुहसबद्धनरगभय पच्चणुभवमाणा विहरति। कालाशरीरे कालोआभ छे यावत् नित्य परमअसुखसबधी नरकनाभय प्रतिभोगवता विचरेछे। कहिणभंते पंकप्पभपुढवी णेरइयाण पज्जत्त अपज्जत्ताण ठाणा प०। किहा हे भगवन् पंकप्रभानारकी पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या। पंकप्पभपुढवीए वीसुत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरि एगजोयणसहस्स उग्गाहिया। हे

लोमहर्षा लोमोद्धर्षजनकत्वात् येन्य ते गम्भीरलोमहर्षा किमुक्त भवति एव नाम कराला कालावभासा ये दर्शनमात्रेपि औपनारकजन्तूना भयस्पा दनन मात्रातिग लोमहर्षमुत्पादय न्तीति, अत एव भयानका भीतत्वा देव उत्त्रासनका उत्त्रास्यन्त औपनारका जन्तव एभि रित्युत्त्रासन उत्त्रासना एव उत्त्रासनका किम्बहुना वर्णन वलमधि कृत्य परमकामा यत ऊर्द्ध न किमपि कारमस्ति भयानकवा बहूत्कपप्रासरूपवर्णा प्रज्ञप्ता मया अपै

तीसुत्तरजोयणसयसहस्से एत्थण सक्करप्पभापुढवीनेरइयाण पणवीसं निरयावाससहस्सा हवंतीति मक्खाय तेण नरगा अन्तो वट्टा बाहिं चउरंसा अहे खुरप्पसंठाणसंठिया णिच्चंधयारतमसा ववगयगहचंदसूरणक्ख त्तजोइसपहा मेयवसापूयपडलरुहिरमंसचिक्खिल्ललित्ताणुलेवणतला असुईवीसा परमदुब्भिगंधा काऊअगणि वण्णाभा कक्खडफासा दुरहियासा असुभा नरगा असुभा नरगेसु वेयणाओ एत्थण सक्करप्पभापुढविनेरइ याण पज्जत्ता पज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता । उववाएण लोयस्स असंखेज्जइभागे समुग्घाएण लोयस्स असंखे ज्जइभागे सठाणेण लोयस्स असंखेज्जइभागे । तत्थण बहवे सक्करप्पभापुढविनेरइया परिवसंति । काला

गौतम पङ्कप्रभापृथिवीयें एकलाख वीसहजारयोजन बाहल्य ऊपरिलेपासें एकहजारयोजन छाडीने । हिठे वेग जोयणसहस्स वज्जित्ता मज्झे अट्ठारसुत्तर जोयणसयसहस्से । हेठे पिण एकहजारयोजन छांडिवे विचे एकलाख अठारेहजार अवकाशे । एत्थण पङ्कप्पभ पुढवी णेरइयाण दस निरयावाससयस हस्स भवतीत्ति मक्खाय । इहा पङ्कप्रभापृथिवीमा दशलाख नरकावासा भगवन्ते कह्या छे । तेण नरगा अन्तोवट्टा बाहिं चउरंस जाव असुहा निर० सु वेयणाओ । ते नरकावासामाहि बाटलाकारें बाहिर चउरंस यावत अशुभनरकनी वेदना भोगवेछे इहां । एत्थण पङ्कप्पभपुढवी णेरइयाण पज्जत्तअपज्ज त्ताणठाणा प० । इहां पङ्कप्रभानारकी पर्याप्ताअपर्याप्तानां ठा० मकह्या । उववाएणलोयस्स अस० समुग्घ०एणलोयस्स अस सट्ठाणेण अस । उपजवीलोकने असंख्यातमभागे, समुद्घातलोकन असंख्यातमेभागे स्वस्थानकलोकने अस० । तत्थण बहवे पङ्कप्पभपुढवीणेरइया परिवसंति । तिहा घणा पङ्कप्रभा नार

॥ टीका ॥

श्च तीयकर्द रेन्नमण। रेआयुषन्॥ तेण निच्चजीया इत्यादि॥ ततो नैरयिकाणामिति वाक्यालंकारे, नित्य सर्वकाल चेत्रस्वज्ञावजनितमहानिबिडान्धकार दृशनसो जीता नित्य सवकाल त्रस्ता परमाधार्मिकपरस्परोदीरितदुःखसम्पातजया दृग्रपि नासमु पपत्ना नित्य सवकाल परमाधार्मिकै पर स्पर च त्रासिता त्रास ग्राहिताः तथा नित्य सवकाल यथायोग परमदुःखहशीतोष्णवेदनानुजवत परमाधार्मिकपरस्परोदीरितदुःखानुजवत श्चो

॥ मूल ॥

कालोन्नासा गम्भीरलोमहरिसा जीमा उत्तासणगा परमकिसहा वनेण पन्नत्ता। समणाउसो! तेण निच्च जीता निच्च तत्था निच्च तसिया निच्च उव्विग्गा निच्च परमममुत्तसबद्ध नरगजय पच्चणुब्जवमाणा विहरति। कहिण जंते। वालुयप्पन्नापुढवीणेरइयाण पज्जत्ता पज्जत्ताण ठाणा पन्नत्ता? गोयमा! वालुयप्पन्नापुढवीए छ्हहा वीसुत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एग जोयणसहस्स उग्गाहित्ता हेठा वेगंजोयणसहस्स वज्जित्ता मज्के छ्बीसुत्तरजोयणनयसहस्से एत्थण वालुयप्पन्नापुढविणेरइयाण पन्नरसनिरयावाससयहस्सा जवतीति मक्खाय। तेण नरगा श्चंतो वट्टा बाहिं चउरसा श्चहे खुरप्पसठाणसठिया निच्चंधयारतमसा ववगयगहचदसू

॥ भाषा ॥

को बसेछे। कालाकालोभासा जाव निच्च परमममुहसबद्ध नरगभय पच्चणुभवमाणा विहरति। कालाकालो आभा यावत् नित्य परमअसुखसबधी नर कोभय प्रतिभ गरता विचरछे। कहिणभते धूमप्पभ पढवी णेरइयाण पज्जत्त अपज्जत्ताण ठाणा प०। किहा हेभगवन् धूमप्रभानीनारको पर्याप्ता अ पर्याप्ताना ठाम कह्याछे ते कहेछे। गोयमा धूमप्पभाए पुढवीए अट्ठारसुत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए। हे गैतम धूमप्रभानानारकी एकलाख अठारेहजा र जोजनप्रमाण जाडपणे। उवरि एगजोयण सहस्स उग्गाहित्ता। ऊपरि एकहजारयोजन मूकी तेकहेछे। हिठावेगजोयणसहस्स वज्जित्ता। एकहजा रयोजन वर्जीने। मज्क सोलमुत्तर जोयणसयसहस्से। विचाले एकलाखसोलहजारमाहि पिडछे। एत्थणधूमप्पभपढवीणेरइयाण तिन्निनिरयावाससयसा हस्सा भवंतीतिमक्खाय। इहा धूमप्रभापृथिवी नारकीना तीनलाख नरकावासा कह्या तीर्थंकरे कह्याछे। तेणनरगा अतोवट्टा बाहिं चउरसा जाव

इत्यादिगतार्था ॥ तिर्यग्पञ्चेन्द्रियसूत्र प्राग्वत्' नवरं ऊर्द्धलोके तदेकदेशे तिर्यक् पञ्चेन्द्रिया मत्स्यादयो मन्दिरादि वाप्यादिषु अधोलोके तदे

लमग अठुत्तरमेवहेठिमया ॥ १ ॥ अठुत्तरचवत्तीस छव्वीसचेवसयसहस्सतु अठारमसोलसग चोद्दसमहिय तुछठीए। अठ्ठतेवन्नसहस्सा उवरिमहोवज्जिऊतोन्नणिय मज्झेउतिसुसहस्से सुहोंतिनरगातमतमाए। तीसा यपन्नवीना पन्नरसदसेवसयसहस्साइ। तिन्नियपचूणेग पचेवअणुत्तरानरगा ॥ ४ ॥ कहिण भंते ! पचि दियतिरिक्खजोणियाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा प० ? गो० ! उड्ढलोए तदेकदेसभाए अहोलोए तदेकदेस भाए तिरियलोएसु अगडेसु तलाएसु नदीसु दहेसु वावीसु पुक्खरिणीसु दीहियासु गुंजालियासु सरेसु स

रपिण्ड गर्भरप्रभानो एकलाख वत्तीसहजार एकलाख अठावीसहजार एकलाख वीसहजार एकलाख अठारेहजार एकलाख सोलेहजार एकलाख ८ हजार एमर्व पृथिवीनो पिण्डकह्यो, हिवे नरकनो अवकाशमान कहेछे—अठुत्तरचतीस छव्वीसचेवसयसहस्सतु अठारससोलसग चउदसमहियतुछठीए २। एकलाख अठहत्तरहजार रत्नप्रभा एकलाख तीसहजार श० एकलाखछव्वीसहजार वा० एकलाख अठारेहजार धू० एकलाख सोलेहजार प० एकला खचौदेहजार त० प्र० छठीपृथिवीनो। अहतेवणसहस्सा उवरिमहेवज्जिऊणतोभणियमज्झे तिसयसहस्से सुहुतिहुनरगातमतमाए ३। साढावावनहजा र सातमीयेंयोजन ऊपर मूकीने साढावावनहजारयोजन हेठे मूकीने मध्यविचे तीनहजारयोजन अवकाश तमतमापृथिवीयें हुवे। २। तीसायपण वीसा पणरसदसेवसतसहस्साइ तिणियपचूणेग पचेवअणुत्तरानरगा। ४। हिवे नरकावासानी संख्या कहेछे, ३०००००० तीसलाख नरकावासा पचवी सलाख नर० पनरेलाख नर० दसलाख न० तीनलाख नरकावासा पचे ऊन एकलाख नरकावासा तमप्र०। ४। कहिणभंते पचेंदियतिरिक्खजोणिया ण पज्जत्ताअपज्जत्ताण ठाणा प०। किहा हिवे हेभगवन् पचेंद्रिय तिर्यचयोनियाना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या। गोयमा उड्ढलोएतदेकदेसभाए अहोलोएतदेकदेसभा० तिरियलोए। हेगौतम उर्द्धलोके एकदेशभागे अधोलोके एकदेशभागे तिरछेलोके। अगडेसु तलाएसु नदीएसु दहेसु वावीसु पुक्खर

रपंतियासु सरसरपंतियासु बिलपंतियासु उज्झरेसु निज्झरेसु चिल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दीवेसु समुद्देसु सव्वेसुचेव जलासएसु जलठाणेसु एत्थण पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा प० । उववाएण लोगस्स असंखेज्जइभागे। समुग्घाएण लोयस्स असंखेज्जइभागे। सठाणेण लोयस्स असंखेज्जइभागे । कहिण भंते ! मणुस्साण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा प० । अंतो मणुस्सखित्ते पणयालीसाए जोयणसयसहस्सेसु अड्ढाईज्जेसु दीवसमुद्देसु पन्नरससु कम्मभूमीसु तीसाए अकम्मभूमीसु छप्पन्नाए अंतरदीवेसु एत्थण मणुस्साण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा प० । उववाएण लोयस्स असंखेज्जइभागे समुग्घाएण सव्वलोए सठाणेण लोयस्स असंखेज्जइभागे । कहिण भंते ! भवणवासीण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा प० ? कहिण

गीम ग्रीद्दियासु गुञ्जालियासु सरेस सरपंतियास बिलपंतियास। कूपे तलावे नदी द्रह वावि पुष्करणी दीर्घिका गुञ्जालिका सर सरपांतिनेविषे बिलपांतिविषे। उझरेस निझरेसु चिल्ललस पल्लस वप्पिणेसु दीवेसु समुद्देस सव्वेसुचेव जलासएसु जलठाणेसु। सर्वविषे पर्वत पाणीनोभरणो चौकणीठामेपालरपाणीठामे द्वीपे समुद्रे सर्व जलाश्रये जलठामे। एत्थण पंचेंदियतिरिक्खजोणियाण पज्जत्तअपज्जत्ताण ठाणा प०। इहां पंचेंद्रिय तिर्यचयोनियाना ठाम पर्याप्ता अपर्याप्ता कह्या। उववाएण लोयस्स असं० समुग्घाएणलोयस्स अ० सठाणेणलोयस्स अ०। उपजवालोकने अ० समुद्घातलोकमे अ० स्वस्थानलोकने असंख्यातमेभागे। काहणभंते मणुस्साण पज्जत्तअपज्जत्तगाण ठाणा प०। किहां हेभगवन् मनुष्यना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या। गोयमा अंतोमणुस्सखेत्ते पणयालीसाएजोयणसहस्सेसु। हेगोतम मनुष्यक्षेत्रमाहि ४५ लाखयोजनविषे। अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु पन्नरसकम्मभूमीसु तीसाए अकम्मभूमीसु छप्पन्नाएअंतरदीवेस। अढाइद्वीपविषे समुद्र द्वीप १५ कर्मभूमिविषे तीस अकर्मभूमिविषे ५६ अंतरद्वीपे। एत्थण मणुस्साण पज्जत्त अपज्जत्ताण ठाणा प०। इहां मनुष्य पर्याप्ता अपर्याप्ता कह्या। उववाएण लोयस्स अ० समुग्घाएण लोयस्स अ० सठाणेणलोयस्स प०। ऊपजवो लोकने असंख्यातमेभागे स्म

॥ टीका ॥

कदेशे अधोलौकिकग्रामादिषु मनुष्यसूत्रमपि सुगमं, नवरं ॥ समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे इति ॥ केवलिसमुद्घातमधिकृत्य सम्प्रति भवनपतिस्थान प्रतिपादनार्थ माह–कहिणं भंते भवणवासीणं देवाणमित्यादि ॥ असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए इति ॥ अशीत्युत्तरं अशीतिसहस्राधिकयोजनशतसहस्रं बाह ल्यं यस्याः सा तथा तस्याः ॥ सत्तभवणकोडीओ बावत्तरिं भवणावाससयसहस्सा भवन्तीति मक्खायमिति ॥ असुरकुमाराणां हि चतुःषष्टिशतसहस्राणि भवनानां तत सर्वसंख्यया यथोक्तं भवनसंख्यानं भवति ॥ तेणं भवणा इत्यादि ॥ तानि णमिति वाक्यालङ्कारे पुंस्त्वं प्राकृतत्वात् भवनानि बहिर्वृ त्तानि वृत्ताकाराणि अंतः समचतुरस्राणि अधस्तनभागे पुष्करकर्णिकासंस्थानसंस्थितानि कर्णिकानाम उन्नतसमचित्रबिन्दुकिनी ॥ उक्किन्नंतरविउलगंभी

॥ मूल ॥

भवणवासीदेवा परिवसंति ? गो० ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्सं उग्गाहित्ता हेट्ठा चेगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे अट्ठहुत्तरिजोयणसयसहस्से एत्थणं भवणवासीदेवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं सत्तभवणकोडीओ बावत्तरिं च भवणावाससयसहस्सा हवंतीति मक्खायं, तेणं भवणा बाहिं वट्टा अंतो समचउरंसा अहे पुक्खरकन्नियासंठाणसंठिया उक्किन्नंतरविउलगं

॥ भाषा ॥

ह लोकने अ० स्थानलोकने अ० । कहिणं भंते भवणवासीदेवाणं पज्जत्तअपज्जत्ताणं ठाणा प० । किहां हे भगवन् भवनवासीदेव पर्याप्ता अपर्याप्तानां स्थान कह्यां । कहिणं भंते भवणवासीदेवा परिवसंति । किहां हे भगवन् भवनपतीदेवता वसेछे । गोयमा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्स बाहल्लाए । हे गौतम ए रत्नप्रभापृथिवीने एकलाख असीयोजन प्रमाणमांहि । उवरिं एगं जोयणसहस्सं उग्गाहित्ता हिट्ठा एगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता । ऊपर एकहजार योजन प्रमाण मूकीने हेठे एकहजार योजन मूकीने । मज्झे अट्ठुत्तरजोयणसहस्से । विचाले एकलाख ७८ हजार योजन । तत्थणं भवणवासीदेवाणं सत्तभवणकोडीओ । तिहां भवनपती देवतानां सातकोडी ऊपर । बावत्तरी भवणवाससयसहस्सा हवंतीतिमक्खायं । ७२ लाख भवनपती ना आवास तीर्थंकरे कह्यां । तेणं भवणा बाहिं वट्टा अंतो समचउरंसा अहेसु पुक्खरकण्णिया संठाणसंठिया ओ । ते भवनपतीना भवन बाहिर वाटलाकार मा

॥ टीका ॥

रत्नायफलिहाइति ॥ उत्कीर्ण मिवो त्कीर्ण मतीव व्यक्तमित्यर्थं , उत्कीर्णमन्तरयासा खातपरिखाणा सा उत्कीर्णान्तरा किमुक्त भवति खातानां च परिखाणा च स्पष्टवैवक्त्योन्मीलनार्थं मपान्तराले महती पाली समस्तीति खातानि च परिखा श्च खातपरिखा उत्कीर्णान्तरा विपुला विस्तीर्णा गम्भीरा अलब्धमध्यभागा खातपरिखा यथा भवनाना परित स्तानि उत्कीर्णान्तरविपुलगम्भीरखातपरिखानि खातपरिखाणा चाय प्रतिविशेष परिखा उपरिविशाला अध सङ्कुचिता, खात तु भयत्रापि सममिति॥ पागारट्टाल कवाड तोरण पडिदुवारदेसभागाइति॥ प्रतिभवनप्रकारेषु शा लासु अट्टालककपाटतोरणप्रतिद्वाराणि अट्टालककपाटतोरणप्रतिद्वाररूपदेशभागा देशविशेषायेषु तानि प्राकाराट्टालककपाटतोरणप्रतिद्वारदेशभा गानि तत्र अट्टालका प्राकारस्योपरि भृत्याश्रयविशेषा , कपाटानि प्रतोलीद्वारसत्कानि गतन प्रतोल्य सवत्र सूचिता अन्यथा कपाटानाम सम्भवा त् तोरणानि प्रतोलीद्वारेषु प्रतिद्वाराणि स्थूलद्वारापान्तरालवर्त्तीनि लघुद्वाराणि तथा॥ जतसयग्घिमुसलमुसंढिपरिवारिया इति॥ यत्राणि नानाप्र काराणि शतघ्न्यो महायष्टयो महाशिला वा या पतिता सत्य पुरुषाणा शतानि घ्नन्ति मुसलानि प्रतीतानि मुसढय प्रहरणविशेषा स्तै परिवा रितानि समततो वेष्टितानि अत एवा योध्यानि परैर्योद्धुमशक्यानि अयोध्यत्वा देव च सदाजयानि सर्वकाल जयो येषु तानि सदाजयानि स र्वकाल जयवन्ती त्यथ , तथा सदा सवकाल गुप्तानि प्रहरणै पुरुषै श्च योद्धृभि सवत समन्ततो निरन्तरपरिवारिततया परेषामसहमानाना म

॥ मूल ॥

नीरखातफलिहा पागारट्टालयकवाडतोरणपडिदुवारदेसभागा जतसयग्घिमुसढिपरिवारिया अउज्झा सदाज
या सया अजेया सदा गुत्ता अडयालकोठरइया अडयालकवयणमाला खेमा सिवा किंकरा मरुडोवरक्खि

॥ भाषा ॥

दि पउरम मम छेठे कमलनो कर्णिका सस्थाने एतले मूलमार्य । उक्किन्नरविउलगभीर खायफलिहा पागारट्टालय कवाड तोरण पडिदुवारदेसभागा । जचा विस्तीर्ण फिटकमय प्रकार कपाटसहित तोरण मोटाद्वार तेमा छ टे बारणेयुत । जतसयग्घिमुसलमुसंढि परिवारियाय अओज्झासया अजयास गुत्ता । यचनाशनके जिहा मुशल प्रहरण विशेषपणे यस्ते परिवेष्टित व्यासके उफासेंकरी सदा जीपताछे सदा गुप्तछे । अडयालकुट्टगरइया अडया

॥ टीका

नागपि प्रवेशासम्भवात् ॥ अरुयालकोठरइया इति ॥ अष्टचत्वारिंशद्भेदभिन्नविच्छित्तिकलिता कोष्ठका अपवरका रचिता स्वयमेवरचना प्राप्ता येषु तानि अष्टचत्वारिंशत्कोष्ठकरचितानि सुखादिदर्शना त्वाक्तिकी निष्ठान्तस्य परनिपात , तथा अष्टचत्वारिंशद्भेदभिन्नविच्छत्तय कृतवनमाला येषु तानि अष्टचत्वारिंशत् कृतवनमालानि, अन्येत्व भिदधति अरुयालशब्दो देशीवचनत्वात् प्रशंसावाची ततो यमर्थ –प्रशस्तकोष्ठकरचितानि प्रशस्तकृतवनमालानीति तथा क्षेमाणि परकृतोपद्रवरहितानि शिवानि सदामङ्गलोपतानि तथा किङ्करभूता ये ऽमरा स्तै दंडकै कृतोपरक्षि तानि सवत समन्ततो रक्षितानि किङ्करामरदण्डोपरक्षितानि ॥ लाउल्लोइयमहियाइति ॥ इयनामय भूमे गोमयादिना उपलपन उल्लोइय, कुड्याना मालस्य च सेटिकादिभि सम्मृष्टीकरण लाइ उल्लोइयाभ्या महितानि पूजितानि लाइउल्लोइयमहितानि, तथा गोशीर्षेण गोशीर्षनामकच न्दनेन रक्तचन्दनेन चदरेण वहलेन चपेटाप्रकारेण वा दत्ता पञ्चाङ्गुलय स्तला हस्तका येषु तानि गोशीर्षसरसरक्तचन्दनदर्दरदत्तपञ्चाङ्गुलि त लानि, तयोपचिता निवेशिता चन्दनकलशा माङ्गल्यकलशा येषु तानि उपचितचन्दनकलशानि ॥ चन्दनघडसुकयतोरणपडिदुवारदेसभागाइति ॥ च न्दनघटै चन्दनकलशै सुकृतानि सुष्टुकृतानि शोभनानीति तात्पर्यार्थ , यानि तोरणानि तानि चन्दनघटसुकृतानि तोरणानि प्रतिद्वारदेशभाग द्वारदेशभागे येषु तानि चन्दनघटसुकृततोरणप्रतिद्वारदेशभागानि ' तथा ॥ आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावाइति ॥ आअवाड् अधोभूमौ

॥ मूल

या लाउल्लोइयमहिया गोसीससरसरत्तचदनदद्दरदिन्नपचगुलितला उवचियचदणकलसा चदणघडसुकयतो रणपडिदुवारदेसभागा आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावा पचवन्नसरससुरभिमुक्कपुप्फपुजोवया

॥ भाषा

लकरवणमाला । अडतालीसभेदे कोठरचनाकीधीछे अडतालीसभेदे कोठरचनाकीधीछे अडतालीस फूलमालासहित । खेमासिवा किंकरा मरदंडोवर क्खिया लाउल्लोइय महियागोसीसरसरसरत्तचदणा । खेमपरिकृतर्ना तथा उपद्रव तिणे रहित किंकरभूत जे देवता तेणे राख्यांछे जेवर लाललगणा ख डिये धवल्य.छे गोशीर्षनाम चन्दन रक्तचन्दन । दद्दरदिन्न पचागुलितलाओय चियचदण कलसा चदण घडसुकय तोरण पडिदुवारदेसभागा । दर्दर दी

॥ टीका ॥

सक्ता आसक्तो भूमीतन्न इत्यर्थ । उर्द्ध सक्तउत्सक्त उल्लोकतले उपरिसम्बद्ध इत्यर्थ , विपुलोपि स्तीर्णो वृत्तो वर्त्तुल वग्घारियइति प्रलम्बितो माल्यदाम कलापः पुष्पमालासमूहो येषु तान्य सक्तोत्सक्तविपुलवृत्तप्रलम्बितमाल्यदामकलापानि तथा पचवर्णेन सुरभिणा मुक्तेन छिप्तेन पुष्पपुञ्जलक्षणेनो पचारेण पूजया कलितानि पञ्चवर्णसुरभिमुक्तपुष्पपुञ्जोपचारकलितानि ॥ कालागुरुपवरकुन्दुरुक्कतुरुक्कधूवमघमघतगंधुद्धुयाभिरामेइति॥ कालागुरु प्रसिद्ध प्रवर प्रधान कुन्दुरुक्क चीडा तुरुक्कसिल्हक कालागुरु श्च प्रवरकुदुरुक्कतुरुक्कंचकालागुरुप्रवरकुदुरुक्कतुरुक्काणि तेषा धूपस्य यो मघमघायमानो गधउद्धुत इतस्तो विप्रसृत स्तेना भिरामाणि रमणीयानि कालागुरुकुदुरुक्कतुरुक्कधूपमघमघायमानगधोद्धूताभिरामाणि । तथा शोभनो गधो येषां ते सुगन्धा त च ते वरगन्धा श्चवासा सुगन्धवरगन्धा स्तेषा गन्ध स एषु स्तीति सुगन्धवरगधगधिकानि अतोनेकस्वरादितीकप्रत्यय , अत एव गन्धवर्त्तिभूतानि सौरभ्यातिशया द्गन्धगुटिकाकल्पानीति भाव , तथा अप्सरोगणाना सघ समुदाय स्तेन सम्यक् रमणीयतया विकीर्णानि व्याप्ता नि अप्सरोगणसङ्घविकीर्णानि तथा दिव्याना त्रुटिताना मातोद्याना वेणुवीणामृदगादीना ये शब्दा स्तै सम्प्रणादितानि सम्यक् श्रोतृमनोहारितया प्रकर्षेण सर्वकाल नदितानि शब्दवति सवरत्नमयानि सर्वात्मना सामस्त्येन नत्वे कदेशेन रत्नमयानि वा अच्छानि आकाशस्फटिकरत्नवदति स्वच्छानि श्लक्ष्णानि श्लक्ष्णपुद्गलस्कधनिष्पन्नापि श्लक्ष्णदलनिष्पन्नपटवत् ॥ लण्हानि ॥ मसृणानि घुटितपटवत् ॥ घट्ठाइति ॥ घृष्टानीवघृष्टानि खरशानया पाषाण

॥ मूल ॥

रकलिया (ग्र१४००) कालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कधूवमघमघतगंधुद्धुताभिरामा सुगंधवरगंधगंधिया गंधव ट्टिभूया अच्छरगणसंघसंकिन्ना दिव्वतुडियसद्दसंपनादित्ता सव्वरयणमया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा

॥ भाषा ॥

थाके पचांगुलीना थपेटा जिहा उपस्थितथाप्याछे मङ्गलीकमय चन्दननाकलशो मूड सोभित कोधाछे तोरण प्रतिद्वार देसभाग जिहा । आसत्तोसत्त रि यो लंबवग्घारियमल्लदामकलिया । भूमि ऊपर बाध्या विस्तीर्ण फूलमाला पंचवर्ग सरस सुगन्ध पुष्प मूक्याछे पूज्यनीपरे । पचवण्णसरससरभिमुक्क पुप्फ पुंजोवयारकलिया कालागुर पवरकुंदरुक्कतुरुक्क धूवम घमघंत गंधुद्धुया भिरामे। विखेरयाछे जिहा फूलकली तथा कृष्णागर प्रधानकुन्दरु चीड सेल्हा

॥ टीका

प्रतिमावत्॥ मठाइति॥ मृष्टानि सुकुमारशानया पाषाणप्रतिमेव अत एव नीरजांसि स्वाभाविकरजोरहितत्वात् निर्मलानि आगतुकमलाभावात् निष्पङ्कानि कलङ्कविकलानि कर्दमरहितानि वा निककङ्कच्छाइति । नि कङ्कटानि नि कवचा निरावरणानिरुपघातेति भावार्थ , छायादीप्तियेषा तानि निकङ्कटच्छायानि सप्रभानि स्वरूपत प्रभावन्ति समरीचीनि बहिर्विनिर्गतकिरणजालानि सोद्योतानि बहिर्व्यवस्थितवस्तुस्तोमप्रकाशनकराणि प्रसादीयानि मन प्रसादाय मन प्रसत्तये हितानि प्रसादीयानि मन प्रसत्तिकाराणि इतिभाव , तथा दर्शनीयानि दर्शनयोग्यानि यानि पश्यत चक्षुर्षी न श्रम गच्छत इति तात्पर्यार्थ , अभिरूपा इति अभिसर्वेषा द्रष्टृणा मन प्रसादानुकूलतया अभिमुख रूप येषान्तानि अभिरूपाणि अत्यन्तकमनीयानि इत्यर्थ , अतएव पडिरूवाइति । प्रतिविशिष्ट रूप येषा तानि प्रतिरूपाणि अथवा प्रतिक्षण नव नवमिव रूप येषान्तानि प्रतिरूपाणि

॥ मूल

णीरया निम्मला निप्पंका निक्ककडच्छाया सप्पभा ससिरिया सउज्जोया पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा एत्थण भवणवासीण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा प० । उववाएण लोगस्स असंखिज्जइ

॥ भाषा

रस जेहना धूपनें इरीगन्ध तिणेंकरी अइत मघमघायमानछे गन्ध जिहां । सुगधवरगंधिया गधवट्टिभूया अच्छरगण सघसविगिया दिव्वतुडियसहसपणादिया । सगन्ध प्रधानछे गन्धजेहनो गन्धनोवाल गोलीभूत सौगन्धनो अतिशय कह्यो अपसरना गणसमूह तिणे सकीर्णछे त्रुटितवेणु मृदङ्गादि सांभलवायोग्य मनोहरलागे साभले थके सुखऊपजे। सव्वरयणमया अच्छा सण्हा लट्ठा घट्ठामट्ठा नीरया निम्मला निप्पका निक्ककणच्छाया । सर्व रत्नमयछे आकाशनीपरे निर्मलछे सुकमाल सूक्ष्मपुद्गल निपटछे घुटतनीपरे निर्मलछे सुकमाल सूक्ष्म घठारा मठाराछे पाषाणनीपरे निर्मल उपघानादिकेंकरी रही । सप्पभा सच्चिरीया ससिरीया पडिरूवा सउज्जोया पासाईया दरसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा । सप्रभा मोतीनीपरे थोयेंकरी मोलायमानछे प्रतिरूप जूजूआरूप दीसेछे उद्योतसहित मननो प्रसादकारी देखवायोग्य अभिरूप रूपजाणु साहिमो आवे । एत्थण भवणवासीण देवाण पज्जत्त अपज्जत्ताण ठा० प० । एहवे नामे भवनपतीना देवारा पर्याप्ता अपर्याप्तानां ठामकह्या । उववाएणलोयस्स अ० समुग्घाएणलोयस्स अ० सठाणेणलोयस्स अ० ।

गते॥ नवणवासी त्यादि॥ गतेऽनन्तरोक्ता असुरकुमाराद्यो भवनवासिनो यथाक्रम चूडामणिर्नाम मुकुटे रत्न चिह्नभूत येषांते तथा नागकुमारा भूपणनियुक्तनागस्फटारूपचिह्नधरा मुकुटरत्नभूपणनियुक्ता नागस्फटादिचित्रचिह्नधरा श्च तथा हि असुरकुमारभवनवासिनश्चूडामणिमुकुटरत्ना ॥१॥ चूडामणिनाम मुकुटे रत्न चिह्नभूत येषान्ते तथा नागकुमारा भूपणनियुक्तनागस्फटारूपचिह्नधरा ॥ २ ॥ सुपर्णकुमारा भूपणनियुक्तगरुडरूपचिह्नधरा ॥ ३ ॥ विद्युत्कुमारा भूपणनियुक्तवज्ररूपचिह्नधरा वज्रनामशक्रस्यायुध ॥ ४ ॥ अग्निकुमारा मुकुटनियुक्तपूर्णकलशरूपचिह्नधरा ॥ ५ ॥ द्वीपकुमारा भूपणनियुक्तसिंहरूपधरा ॥ ६ ॥ उदधिकुमारा भूपणनियुक्तहयवररूपचिह्नधरा ॥७॥ दिक्कुमारा भूपणनियुक्तगजरूपचिह्नधरा ॥८॥ वायुकुमारा भूपणनियुक्तमकररूपचिह्नधारिण ॥ ९ ॥ स्तनितकुमारा भूपणनियुक्तवरवर्द्धमानरूपचिह्नधरा ॥ १० ॥ वर्द्धमानकशरावसम्पुट अत्तर गमनिकात्वेव भूपणेषु नागस्फुटागरुडवज्राणि यषांते भूपणनागस्फुटागरुडवज्रा पूर्णकलशेनाङ्कितउत्फेसो मुकुटो येषांते पूर्णकलशाङ्कितोत्फेसा

भागे समुग्घाएण लोयस्स असंखेज्जइभागे सठाणेण लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थण वहवे भवणवासीदेवा परिवसति त—असुरानागसुवन्ना विज्जूअग्गीयदीवउदहीय । दिसिपवणथणियणामा दसहाएएभवणवासी । चूडामणिमउडरयणभूसणा फणिगरुलवडरपुण्णकलसाकिउप्फेसा सीहमगरमयकअस्सवरवद्धमाणनि

उपजवोलोकने अ० समुद्घातलोकने अ० स्वस्थानलोकने असख्यातमेंभागे। तत्थण वहवे भवणवासी देवा परिवसति त० । तिहां घणा भवनपती देवता रहछे तेहनानाम कह्या । असरानागसुवन्ना विज्जुअग्गीउदीवउदहिय । दिसपवणथणियनामा दसहाएएभवणवासी ॥ १ ॥ असुरकुमार नागकुमार सवर्ण विद्युत अग्नि द्वीप उदधि दिशि पवन स्तनित ए नामछे दशप्रकारे भवनपती ॥ १ ॥ चूडामणिमउडरयण भूषण नागफण गरुल वइर पुण्ण कलस किउप्फेसा सीह हयवरया अकमगर वद्धमान निज्जुत्तचिपहचिधगया महवा महइड्ढया महज्जुइया महायसा महावला महाणुभागा महासुक्खा । चूडामणि रत्नांचित मुकुटे गाभे असुरकुमारनो चिह्न नागकुमारनो सर्प गरुड सुवर्णकुमारनो वज्र कलश सिंह अश्व गज मगर सरावसपुट १० ए चिन्हेस

तया सौन्दर्यवरगजा अङ्गा अर्थाद्रूपणेषु येषाते सौन्दर्यवराङ्गा तथा मकरवर्द्धमानिके नियुक्ते रूपणेषु नियोजिते चित्रे आश्चर्यभूते चिन्हे गते स्थिते यषाते मकरवर्द्धमाननियुक्तचित्रचिह्नधरा स्तत पूर्वपदैर्द्वंद्व समास , पुन सर्वे कथम्भूता इत्याह-सुरूपा शोभन रूप येषाते तथा अत्यन्त कमनीयरूपाइत्यर्थ , तथामहर्द्धिकाइति ॥ महती ऋद्धि भवनपरिवारादिका येषाते महर्द्धिका , तथा महती द्युति शरीरस्था आभरणगता च येषामिति महाद्युतय , तथा महत् बल शारीरप्राणायेषाते महाबला ' तथामहद्यश ख्याति येषाते महायशस , महान् अनुभागा सामर्थ्य शापानुग्रहविषय येषान्ते महानुभागा तथा ॥ महेसक्खाइति ॥ महानीश ईश्वर इत्याख्यात प्रसिद्धिर्येषाते महेशाख्या अथवा ईशान मीशो भावे घञ्प्रत्यय ऐश्वर्यमित्यर्थ , ईशऐश्वर्येइतिवचनात्, तत ईशमै श्वर्यमा त्मनाख्यान्ति अन्तर्भूतण्यर्थतया ख्यापयन्तीति ईशाख्या , महान्त श्च ते ईशाख्या श्च महेशाख्या , क्वचिन्महासोक्खाइतिपाठ , तत्रमहत्सौख्य प्रभूतसद्वेद्योदयवशाद्येषान्ते महासौख्या, अन्येपठन्ति महासक्खा इति ॥ तत्रायशब्दसस्कारो महाशाखा इय चात्रपूर्वसूरिप्रदर्शिता व्युत्पत्ति आशुगमनाद् अश्वो मन अश्वाणि इन्द्रियाणि स्वविषयव्यापकत्वात् अश्व श्च अश्वाणि चेत्यश्वाश्वाणि महान्ति अश्वाश्वाणि येषान्ते महाश्वाश्वा ॥ हारविराइयवत्था इति॥ हारै विराजित वक्षो येषाते हारविराजितवक्षस ॥ कडगतुडियथंभियभुया इति ॥ कटकानि कलाचिकाभरणानि त्रुटितानि बाहुरक्षका स्तै स्तम्भिता विव स्तम्भितौ भुजौ येषान्ते कटकत्रुटितस्तम्भितभुजा , तथा अङ्गदानि बाहुशीर्षाभरणविशेषरूपाणि कुण्डले कर्णाभरणविशेषरूपे तथा मृष्टौ मृष्टौ लष्टौ गण्डौ कपोलौ यै स्तानि मृष्टगण्डानि कर्णपीठानि कर्णाभरणविशेषरूपाणि धारयन्ती

जुत्तचित्तचिंधगता सुरूवा महिड्ढिया महज्जुतिया महायसा महाबला महाणुभावा महासोक्खा हारविराइयवत्था कडगतुडियथंभियभुया अंगदकुंडलमट्ठगंडतलकण्णपीढधारी विचित्तहत्थाभरणा विचित्तमालामउ

चित रूपवन्त महर्द्धिवन्त महद्युतिवन्त महायशवन्त महाबली महाभाग्यवन्त महासुखी । हारविराइवत्था कडगतुडियथंभियभुया । हारीकरी विराजमानहीयो जेहनो कडा बहीरखा तिणें थम्भ समकें भुजा । अगदकुडलमडगन्नतणकण पीढधारी विचित्त हत्थाभरणा । अगद कुण्डल कर्णाभरण धारा

॥ टीका ॥

त्येव शीना ॥ अङ्गदकुण्डलमृष्टगण्डकर्णपीठधारिण तथा विचित्राणि नानारूपाणि हस्ताभरणानि येषाते विचित्रहस्ताभरणा तथा॥ विचित्तमालाम
उलिमउडा विचित्रा माला कुसुमस्रक् मौलौ मस्तके मुकुट च यपाते विचित्रमालामौलिमुकुटा ' तथा कल्याण कल्लयाणकारि प्रवर वस्त्र परिहित यै स्ते
कल्याणकप्रवरवस्त्रपरिहिता , सुखादिदर्शनाद्निष्टान्तस्यात्र पाक्षिकपरनिपात ' तथा कल्याणक कल्याणकारि यत्प्रवरमाल्यपुष्पदाम यच्चानुलेपन तद्ध
तीति कल्याणकप्रवरमाल्यानुलेपनधरा तथा भास्वरा ददीप्यमाना थोन्दि शरीर येषान्त भास्वरबोन्दय तथाप्रलम्ब इति प्रलम्बा या वनमाला ता
धरतीति प्रलम्बवनमालाधरा ॥ दिव्वेण सघयणेणति॥ शक्तिविशेषम पद्य सहननेव सहनने न तु साक्षात्सहननेन देवाना सहननाऽसम्भवात् सहनन
हि अस्थिरचनात्मक न च दवानामस्थीनि सति तथा चोक्त जीवाभिगमे-देवाअसघयणी जम्हा तेसि नेवट्ठी नेव सिरा इत्यादि ॥ दिव्वाए इड्ढीए इति
दिव्यया प्रधानया ऋद्धा परिवारादिकया दिव्यया द्युत्या इष्टार्थसम्प्रयोगलक्षणया, द्युअभिगमने इति वचनात् दिव्यया प्रभया भवनावासगतया
दिव्यया छायया समुदयशोभया दिव्येना चिंषा शरीरस्थरत्नादितेजोज्वालया दिव्येन तेजसा शरीरप्रभवेन दिव्यया वा लेश्यया देहवर्णसुदरतया

॥ मूल ॥

लिमउडा कल्लाणगपवरवत्थपरिहिया कल्लाणगपवरमल्लाणुलेवणधरा भासुरबोंदी पलंबवणमालधरा दिव्वेण
वण्णेण दिव्वेण गंधेण दिव्वेण फासेण दिव्वेण सघयणेणं दिव्वेण संठाणेण दिव्वाए इड्ढीए दिव्वाए जुत्तीए
दिव्वाए पभाए दिव्वाए छायाए दिव्वाए अच्चीए दिव्वेण तेएणं दिव्वाए लेस्साए दसदिसाओ उज्जोवेमाणा
पभासेमाणा तेण तत्थ साण २ भवणवाससयसहस्साण साण २ सामाणियसाहस्सीण साणं २ तायत्तीसाण

॥ भाषा ॥

थका विचित्रहाथना आभरण । विचित्तमालामउलमाला कल्लाणग पवर वत्थ परिहिया । विचित्रमाला मस्तकेछे कल्याणमङ्गलीकनाकारक वस्त्र प
हिराछे । कल्लाणगपवरमल्लाणुलेवणधरा भासुरबोंदीपलंबवणमालधरा । मङ्गलीकनाकारक विलेपनकीधाछे देदीप्यमानशरीरे लांबीमाला धरीछे । दि
व्वेण वण्णेण दिव्वेण गंधेण दिव्वे णफासेण दिव्वेण सघयणेण दिव्वेण संठाणेण दिव्वाए इड्ढीए । दिव्यवर्ण दिव्यगन्ध दिव्यस्पर्श दिव्यसंघयणविशेष दिव्यसस्था

॥ टीका

दशदिशा उद्योतयत ॥ प्रकाशयंतप्रभासितमाणाइति॥ सोभमाना स्ते भवनवासिनो देवाणमिति वाक्यालङ्कारे तत्र स्वस्थाने साण २ मिति स्वेषा २ मात्मीयानामित्यथ ॥ आहेवृपोरवृमित्यादि॥ अधिपते कर्म आधिपत्य रक्षाडत्यर्थ , सा च रक्षा सामान्येना रक्षकेणेव क्रियते ततआह–पुरस्पति पुरपति तस्यकर्म पौरपत्य सर्वेषामा त्मीयानामग्रेसरत्वमितिभाव , तच्चाग्रेसरत्व नायकत्वमतरेणापित्वनायकानियुक्त तथाविधगृहचितकसामान्यपु रुषस्येव भवति ततोनायकत्वप्रतिपत्यर्थमाह–स्वामित्व स्वमस्यास्तीतिस्वामी तद्भाव स्वामित्वनायकत्वमित्यर्थ , तदपि च नायकत्व कस्यचि त्पोष कत्व मन्तरेणापि भवति यथा हरिणाधिपति र्हरिणस्य तत आह–भर्तृत्व अतएव महत्तरकत्व कस्यचिदा भाविकलस्यापि सबधि भवति यथाकस्य चिद्वणिज स्वदासीवर्गंप्रति तत आह–आणाइसरसेणावच्च॥ आज्ञाया ईश्वर आज्ञेश्वर सेनाया पति सेनापति आज्ञेश्वर श्चा सौ सेनापति श्च आ ज्ञेश्वरसेनापति स्तस्य कर्म आज्ञेश्वरसेनापत्यस्वसैन्ये प्रत्यद्भुत आज्ञाप्रधान्यमिति भाव , कारयतोन्यै र्नियुक्तकै पुरुषे पालयन्त स्वयमेव महतारवेणे

॥ मूल

साण २ लोगपालाणं साण २ अग्गमहिसीण साण २ परियाण साण २ अणीयाणं साण २ अणियाहिवईणं साण २ आयरक्खदेवसाहस्सीण अन्नेसिच बहूण भवणवासीण देवाणय देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्त भट्टित्त महत्तरगत्त आणाईसरसेणावच्च कारेमाणा पालेमाणा महयाहयनट्टगीयवाइयततीतलतालतुडि

॥ भा

न दिव्य ऋद्धि। दिव्वाए जुइए दिव्वाए पभाए दिव्वाए छायाए दिव्वाए अच्चीए दिव्वेण तेएण दिव्वाए लेसाए। दिव्यद्युति दिव्यप्रभा दिव्यछाया दिव्य अचित दिव्यतेज दिव्यलेश्या । दसदिसाओ उज्जोएमाणा पभासेमाणा । दशदिशिनेविषे उजवालो करता । तेण तत्थ साण २ भवणवासमयसहस्साण। ते तिहा पोताना भवन लाखेंकरी । साण सामाणियसाहस्सीण साण २ तायत्तीसगाण । आपणा सामानिक देवेंकरी आपणा त्रायत्रिंशेंकरी । साण २ लोगपालाण साण २ अग्गमहिसीण परिसाण साण अणियाण । आपणे लोकपालेंकरी आप आपणा अग्रमहिषीयेंकरी आपणा कटकेंकरी । साण २ अणियाहिवईण साण २ आयरक्खदेवसाहस्सीण अन्नेसिच बहूण भवणवासीण देवाणय देवीणय ।-आप आपणी कटकनाधणीयें करी आपणा आत्मर

॥ टीका ॥

ति योग ॥ अहयति ॥ आख्यानकप्रतिबद्धानि यदिवा अहतानि अव्याहतानि नित्यानुबन्धीनीति भाव, ये नाट्यगीते नाट्य नृत्त गीतं गान यानि च वादितानि तन्त्रीतलतालत्रुटितानि तत्र तन्त्री वीणा तलौ हस्ततलौ ताल कंसिका त्रुटितानि वादित्राणि तथा यश्च घनमृदङ्गपटुनापुरुषेणप्रवादित तत्र घनमृदङ्गोनामघनसमानध्वनिर्यो मृदङ्गस्तत एतेषा द्वद्व स्तेषा रवेण दिव्यान् दिवि भवान् प्रधानानिति भाव, भोगार्हो भोगा शब्दादयो

॥ मूल ॥

यघणमुइगपडुप्पवाइयरवेण दिव्वाइं भोगभोगाइं भुजमाणा विहरति। कहिण भंते ! असुरकुमाराण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता ? कहिण भंते ! असुरकुमारादेवा परिवसति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरि एग जोयणसहस्सं उग्गाहित्ता हेठावेगं जोयणसहस्स वज्जित्ता मज्झे अठहत्तरे जोयणसयसहस्से बाहल्लाए एत्थण असुरकुमाराण देवाण चोवठि भवणावाससयसहस्सा भवतीति मक्खाय, तेण भवणा बाहिं वट्टा अंतो चउरसा अहे पुक्खरकण्णियासंठा

॥ भाषा ॥

चक्र टर्वकरी घनेरा घणा भवनवासी देव देवागताना अधिपति। आहेवच्च पोरेवच्च सामित्त भट्टित्त महत्तरगत्त। रयपालपणो पुरागामिपणो स्वामीपणो पोषकपणो वडाईपणो। आणाईसरसेणावच्च कारेमाणा पालेमाणा महयाहय नट्टगीय वाईयरवेण ततीतलतालतुडिय घणमुइंग पडुप्प वाईयरवेण दिव्वाइं भोगभोगाइं भुजमाणा विहरति। आज्ञापालता पलावता करताकरावता मोटावाजा वजावता नृत्य गीत वादित्र तत्री तलताल त्रुटित वा मृदग मोटाशब्दे तिर्णेकरी दिव्य देवताना भोग भोगवता विचरेछे। कहिणभंते असुरकुमार देवाण पज्जत्ता पज्जत्ताण ठाणा प०। किहा हेभगवन् असुरकुमार देवताना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या। कहिण भंते असुरकुमारदेवा परिवसति। किहा हेभगवन् असुरकुमारदेवता वसेछे। गोयमा रयणप्पभा०पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरि जोयणसयसहस्स उग्गाहित्ता। हेगौतम एरत्नप्रभाने एकलाख असीहजारयोजन जाडपणे तेहमाहि ऊपर एकहजारयोजन मकीने। हिट्ठाएगू जोयणसहस्स वज्जित्ता मज्झे अठहुत्तरेजोयणसयसहस्से। हेठलो एकसहस्रयोजन वर्जीनेवि

भोगभोगा स्तान् भुञ्जमाना विहरन्त्या सते, असुरकुमारसूत्रे काला कम्मवर्णा ॥लोहितक्खबिम्बोठा॥ लोहिताक्षरत्नवत् बिम्बीफलवच्चोष्ठौ येषान्ते लोहिताक्षबिम्बोष्ठा आरक्तोष्ठा इति भाव, धवला पुष्पवत्सामर्थ्यात् कुन्दकलिका इव दन्ता येषाते धवलपुष्पदन्ता असिता कृष्णा केशा येषाते

णसंठिया किन्नंतरविउलगंभीरखायफलिहा पागारट्टालयकवाडतोरणपडिदुवारदेसभागा जंतसयग्घिमुसलमुसंढिपरिवारिया अउज्झा सदा सया वलया सदा गुत्ता अडयाला कोट्ठगरइया अडयालकयवनमाला खेमा सिवा किंकरामरदंडोवरक्खिया लाउल्लोइयमहिया गोसीससरसरत्तचंदणदद्दरदिन्नपंचंगुलितला उवचियचंदणकलसा चंदणघडसुकयतोरणपडिदुवारदेसभागा आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावा पंचवन्नसरससुरभिमुक्कपुप्फपुंजोवयारकलिया कालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कडज्झंतधूवमघमघंतगंधुद्धुयाभिरा

चाले एकलाख अठ्ठहत्तरहजारयोजन । एत्थण असुरकुमाराण देवाण चउसट्ठिभवणावाससयसहस्सा हवंतिमक्खाय । इहा असुरकुमारना ३४ दक्षिण ३० उत्तर ६४ भवनसंख्या हुवे भगवते कह्यो । तेण भवणावाहिवट्टा अंतो समचउरसा । ते भवन बाहिर वाटलाछे माहिनो चौखूणाछे । अहेपुक्खरकण्णिया संठाणसंठिया उक्किणंतर विउलगंभीर खायफलिहा पागारट्टालय किवाडतोरण पडिदुवारदेसभागा । हेठे कमलनी कर्णिकाने संस्थाने संस्थित उत्कीर्णं विचे पिहुलो गंभीर फिटकमयी प्राकारउपरि किवाड तोरण द्वारमोटा तेहना नान्हादार कर्डा देशभाग । जंतसयग्घि मुसलमुसंढि परिवारिया आओज्झासया जयासया गुत्ता । मूसलप्रहरणादिके वेष्टितछे साहमो देखवा समर्थनही सदाजीपताछे सदा गुप्तछे । अडयालकुट्ठगरइया । ४८ देशीभापायें प्रसस्त वचन । अडयालकयवणमाला खेमा सिवा किंकरा मरदंडोवरक्खिया । ४८ भेदेकरी फूलमाला कल्याणकारी उपद्रवविना किंकरभूत जे देवता तेणेंराख्योंछे जे भुवन । लाउल्लोइय महियागोसीस सरस रत्तचंदन दद्दरदिन्न पंचांगुलि तला उवचियचंदणकलसा । लीप्याछे मणादिकनापरे माहि गोशीर्षं चन्दन रक्तचन्दनादिकें दर्दरदीधाछे पंचांगुलिना हाथा उपचित थाप्याछे चन्दनकलश । चंदणघडसुकय तोरणपडिदुवार देसभागा । च

॥ टीका ॥

असितकेशा दन्त केशा श्रा मीपा वैक्रिया द्रष्टव्या न स्वाभाविका वैक्रियशरीरत्वात् वामेयकुण्डलधरा गफकर्णविसक्तकुण्डलधारिण तथा आर्द्र यासरसेनचन्दनेनानुलिप्तगात्रयैस्ते आर्द्रचन्दनानुलिप्तगात्रा ' तथा इषत् मनाक् शिलध्रपुष्पप्रकाशानि शिलिध्रपुष्पसदृशवर्णानि इंपद्रक्तानी' त्यर्थ असक्लिष्टानि अत्यन्तसुखजनकतयामनागपिसक्लेशानुत्पादिकानि सूक्ष्माणि मृदुलघुस्पर्शान्यच्छानि चेतिज्ञाव , वस्त्राणि प्रवराणि अत्र सूत्रे विभक्तिलोप

॥ मूल ॥

मा सुगंधवरगंधिया गंधवट्टिभूया अच्छरगणसंघसंविकिण्णा दिव्वतुडियसद्दसंपनदिया सव्वरयणामया अच्छा सण्हा घट्ठा मट्ठा नीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पभा ससिरिया सउज्जोया पासाइया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा एत्थण असुरकुमाराण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता । उववाएण लोयस्स असंखिज्जइभागे समुग्घाएण लोगस्स असंखेज्जइभागे सट्ठाणेण लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थण वहवे असुरकुमारादेवा परिवसंति काला लोहितक्खा बिंबोठा धवलपुप्फदंता असियकेसा वामेयकुंडलधरा अद्दचंदणाणुलित्तगत्ता ईसीसिलिंधपुप्फपगासाइं असंकिलिट्ठाइं सुहुमाइं वत्थाइं पवरपरिहिया वयं च पढमं समइक्कंता विइयं च असंपत्ता भद्दे जोव्वणे वट्टमाणा तलभंगयतुडियवरभूसणनिम्मलमणिरयणमंडियभुया दसमुद्दामंडियग्गहत्था चूडामणिविचित्तचिंधगता सुरूवा महिड्ढीया महज्जुइया महायसा महब्बला महाणुभागा महासोक्खा हारविराइयवच्छा कडयतुडियथंभियभुया अंगयकुंडलमट्टगंड

॥ भाषा ॥

न्तनकलशे करा शोभनकोधाछे तारणना प्रतिद्वार देशभागछे। आसत्तासत्तविउलवट्टवग्घारिय मल्लदामकलावा पंचवन्नसरसमुरभिमुक्कपुप्फ, जाइया रक्तालिर। जिहा आसत्तोसत्तभूमि अट्रा' ऊपर बांध्या विपुलविस्तीर्ण प्रलम्बित माल्य वानना कलापसमूह जिहा पचवर्ण सरस सुरभिगंधछे जेहनो अभिगंधनो वाटसहित। कालागुरुपवरकुंदरुक्क तुरुक्क धूवमघमघंत गंधुद्धुयाभिरामा सुगंधवरगंधिया गंधवट्टिभूया। कृष्णागर प्रधानकुन्द सेल्हारसे क

॥ टीका ॥

सुचीत्वेनाप्रत्ययंतवर्त्तिन इति भाव, द्वितीयञ्च मध्यमलक्षणं वयोऽसम्प्राप्ता प्राप्तत्वा त्परिष्ठितापरिरिष्टितवन्त तथा वय प्रथम कुमारत्वलक्षणम तिक्रान्ता सत्पर्यंतवर्त्तिन इति भाव, द्वितीयञ्च मध्यमलक्षणं वयोऽसम्प्राप्ता प्राप्तत्वा त्परिष्ठितापरिरिष्टितवन्त तथा वय प्रथम कुमारत्वलक्षणम तिक्रान्ता ॥ तलभद्वयतुडियवरभूषणनिम्मलमणिरयणमण्डियभुयाइति ॥ तलभद्रका बाहुभरणविशेषा एतदेवव्यक्ती करोति भद्रे अतिप्रशस्ते भद्रे यौवने वर्त्तमाना ॥ तलभद्वयतुडियवरभूषणनिम्मलमणिरयणमण्डियभुयाइति ॥ तलभद्रका बाहुभरणविशेषा एतदेवव्यक्ती करोति भद्रे अतिप्रशस्ते भद्रे यौवने वर्त्तमाना त्रुटितानि बाहुरक्षिका धन्यानि च यानि वराणि भूषणानि बाहुाभरणानि येषु ये निर्मला मणय चन्द्रकान्ताद्या यानि रत्नानि इन्द्रनीलादीनि तै मंडितौ भुजौ हस्ताग्रौ येषाते तथा, तथा दशाङ्गुलिमुद्राभिर्मण्डितौ भुजौ अग्रहस्तौ येषाते दशमुद्रामण्डिताग्रहस्ता ॥ चूडामणिचित्तचिंधगयाइति ॥

॥ मूल ॥

यलक्खणपीढधारी विचित्तहत्थाभरणा विचित्तमालामउलिमउडा कल्लाणगपवरवत्थपरिहिया कल्लाणगपवर मल्लाणुलेवणधरा भासरबोंदी पलंबवनमालधरा दिव्वेण वण्णेण दिव्वेण गंधेणं दिव्वेण फासेण दिव्वेण संघय णेण दिव्वेण संठाणेणं दिव्वाए इड्ढीए दिव्वाए जुईए दिव्वाए पभाए दिव्वाए छायाए अच्चीए दिव्वेणं एएणं दिव्वाए लेसाए दसदिसाउ उज्जोवेमाणा पभासेमाणा तेण तत्थ साण २ भवणावाससयसहस्साणं साण २ सामाणियसाहस्सीणं साण २ तायत्तीसाण साणं २ लोगपालाण साण २ अग्गमहिसीण साण २ परिसाण साणं २ अणियाण साण २ अणियाहिवईण साण २ आयरक्खदेवसाहस्सीण अन्नेसि च बहूण भवणवा सीण देवाणय देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणाईसरसेणावच्चं कारेमाणा पा

॥ भाषा ॥

रो मघमघायमान सुगन्ध प्रधानगन्ध जहनो अतिगन्धनो वाटसहित अपसराना। गणसघसविगणा टिचतुडियमइसपणंइया सव्वरजणमया। गणसमूह तिणेकरो सहित मृदङ्गादि शमशब्द सामलता सर्व रत्नमयछे। अच्छासणा लडा घहा महा नीरया निर्मला निष्पंका निक्कंकडछाया सप्पभा सम्मिरिया। ग्राह्याक घटाछे मठाराछे निरज निर्मल निप्रकम्प निकंण्टक प्रभासहित। सउज्जोया पासाइया दरसणिज्जा अभिरुवा पडिरूवा। उद्योतसहित दर्श नीक अभिरूप प्रतिरूप। एत्थण असुरकुमाराण देवाण पज्जत्ता २ ण ठाणा प०। इणठामे असुरकुमार देवता वसेछे पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या।

॥ टीका ॥

चूडामणिनामक चित्रमद्भुत चिह्नगत त स्थित येषाते चूडामणिचित्रचिह्नगता , चमरबलिसामान्यसूत्रे काला कृष्णवर्णा एतदेवो पमानत प्रतिपाद यति महानीलसरिसा महानील यत्किमपिवस्तु जात लोके प्रसिद्ध तेन सदृशा एतदेव व्याचष्टे नीलगुटिका नील्यागुटिका गवल माहिष शृंग अत सीकुसुम प्रतीत तेषामिव प्रकाश प्रतिभा येषाते नीलगुटिकागवलातसीकुमप्रकाशा तथा विकसितशतपत्रमिवनिर्मले ईषद्देशविभागेन मनाक् सिते रक्त ताम्रे च नयने येषा ते विकसितशतपत्रनिर्मलपत्शितरक्तताम्रनयना गरुडस्येवा यता दीर्घा ऋज्वी अकुटिला तुङ्गा उन्नता नासा नासिका येषाते गरुडायतदीर्घतुङ्गनासा , तथा उपचि त तेजित यत्शिला प्रवाल विद्रुमरत्न यच्च बिंबफल बिंब्या सत्क फल तत्सन्निभोधरोष्ठो येषाते तथा पा

॥ मूल ॥

लेमाणा महयाहयनट्टगीयवाइयतंतीतलतालतुडियघणमुइंगपडुप्पवाइयरवेण दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमा णा विहरंति, चमरबलिणो इत्थ दुवे असुरकुमारिंदा असुरकुमाररायाणो परिवसंति काला महानीलस रिसा नीलगुलियगवलयसिकुसुमप्पगासा वियसियसयवत्तनिम्मलसीसियरत्ततंबनयणा गरुलाययउज्जुतुंग नासा उयचियसिलप्पवालबिंबफलसन्निहा हरोठा पडुरससिसगलविमलनिम्मलदहिघणसखगोखीरकुंदद गरयमुणालिया धवलदंतसेढी हुयवहणिद्धंतधोयतत्ततवणिज्जरत्ततलतालुजीहा अंजणघणकसिणरुयगरमणि

॥ भाषा ॥

उववायण लो० अ० समुग्घायण लो० अ० सठाणेण लो० अ० । उपजवीलोकने अ० समुद्घातलो० अ० स्वस्थानलो० अ० । तत्यण बहवे असुरकुमारदेवा परिवसति । तिहा घणा असुरकुमारदेवता वसेछे । कालालोहियक्खाबिंबोट्ठा । कालेवर्ण रातानेत्र बिम्बफल समहोठ । धवलपुप्फदंता असियकेसा वा मेयकुडल धरा अद्दचंदणाणुलित्तगता । धवलफूल समदात कालाकेश डावेंकाने वाडल धाराछे आर्द्रसरसचंदने लीप्याछे गात्र । ईसिसिलिंध पुप्फप यासाइ असंकिलिट्ठाइ सुहुमाइ वत्थाइ पवरपरिहीया । लिगारेकराता शिलेंद्रनाफूलसरीखा असंक्लिष्ट अतिसुखकारी सूक्ष्मवस्त्रेकरी प्रधान पहिरा छे तथा । वयच पढमसमइक्कता बिइयचअसंपत्ता भद्देजुव्वणे वट्टमाणा । वय प्रथम कुमारत्वपण ओरवमण- अप्राप्तयका भद्रयोवने वर्त्तमानथका ।

शकुर नतु सन्ध्याकालनाव्यारक्त शशिसकल चद्रखण्ड तदपि च कथभूतमित्याह–विमल रजसा रहित कलङ्कविकल वा तथा निर्मलो यो दधिघनश्च गोक्षीर यानि कुन्दानि कुन्दकुसुमानि दकरज पानीयकणा मृणालिका च तद्वत् धवला दन्तश्रेणि र्येषाते तथा विमलशब्दस्य विशेष्या त्वरानि

ज्ञनिठ्ठकेसा वामेयकुंडलधरा ऋद्दचंदणाणुलित्तगत्ता ईसीसिलिंधपुप्फपगासाइं ऋसकिलिठाइं सुहुमाइं व त्थाइं पवरपरिहिया वय च पढम समइक्कता विइयच ऋसपत्ता नद्दे जोव्वणे वट्टमाणा तलनंगयतुडियप वरनूसणनिम्मलमणिरयणमडियनुया दसमुद्दामडियग्गहत्था चूडामणिविचित्तचिंधगता सुरूवा महिड्डीया महज्जुया महायसा महब्बला महाणुनागा महासोक्खा हारविराइयवत्था कडयतुडियथंनियनुया ऋगदकुंड लमठगडतलकस्मपीढधारी विचित्तहत्थानरणा विचित्तमालामउलिमउडा कल्लाणगपवरवत्थपरिहिया कल्ला णगपवरमल्लाणुलेवणा नासुरबोंदी पलंबवणमालधरा दिव्वेण वन्नेण दिव्वेण गंधेण दिव्वेणं फासेण दिव्वेणं

तालभगयतुडियपवरभूसण निम्मलमणि रयणमडिय भुयादसमुद्दामडियगहत्था । तालभग वावत् आभरणविशेष भूषण निर्मल मणिरत्नेकरी मण्डित भुज जेहनो दश मूद्री येसोनेहाथ । चूडामणि विचित्तचिंधगया सुरूवा महड्ढिया महज्जुइया महायसा महब्बला महाणुभावा महासुक्खा । चूडाम णिनामे चिह्नसहित स्वरुप महाऋद्धिवन्त महाद्युतिवन्त महायशवन्त महाबलवन्त महानुभाव महासुखी । हारविराइयवत्था कडतुडियथंभियभुया । हा रेकरी विराजमानछाती कडाबहेरखा तिर्णे थंभ्याछे भुज । अगयकुडल गडयल तणकण पीढधारी । अगद कुण्डलकाने कपोलाभरण पीठधरा छे । विचित्तहत्थाभरणा विचित्तमालामउलि कल्लाणगपवर वत्थपरहिया । विचित्रहाथ आभरण विचित्रमालाछे मस्तके कल्याणकारी प्रवरवस्त्र पहिराछे । कल्लाणगपवरमल्लाणुलेवणधराभासुरबोंदी पलंबवणमालधरा । कल्याणकारक प्रधानविलेपन धाराछे देदीप्यशरीरे मालाधरता । दिव्वेणवण्णेण दिव्वेण गंधेण दिव्वेण फासेण दिव्वेण सघयणेण दिव्वेणसठाणेण । दिव्यवर्णे दिव्यगंधेकरी दिव्यस्पर्शेकरी दिव्यसंघयणे दिव्यसंस्थाने । दिव्यएइड्ढीए दिव्वाएजुइए

॥ टीका ॥

पात प्राकृतत्वात् तथा हुतवहेन वैश्वानरेण निर्ध्मात सत् यद् जायते धौत निर्मल तप्तगुत्तप्त तपनीयमा रक्त सुवर्ण तद्वत् रक्तानि हस्तपादतलानि तालुजिह्वे च येषा ते हुतवहनिर्ध्मातधौततप्ततपनीयरक्ततलतालुजिह्वा , तथा अञ्जन सौवीराञ्जन घन प्रावृट्कालभावी मेघ स्तद्वत् कालात चकवत् रुचकरत्नवत् रमणीया स्निग्धा श्च केशा येषा ते अञ्जनघनकृष्णरुचकरमणीयस्निग्धकेशा ॥ तिसुविलोगस्स असंखेज्जइभागे इति॥ स्वस्थानो

॥ मूल ॥

सठाणेण दिव्वाए इड्ढीए दिव्वाए जुईए दिव्वाए पभासाए दिव्वाए छायाए दिव्वाए पहाए दिव्वाए अच्चीए दिव्वेण एएण दिव्वाए लेसाए दसदिसाओ उज्जोवेमाणा पभासेमाणा तेण तत्थ साण २ भवणावाससयसहस्साण साण २ सामाणियसाहस्सीण साण २ तायत्तीसाण साण २ लोगपालाण साण २ अग्गमहिसीण साण२ परिसाण साण २ अणियाण साण २ अणियाहिवईण साण २ आयरक्खदेवसाहस्सीण अन्नेसि च बहूण भवणवासीण देवाणय देवीणय आहेवच्च पोरेवच्च सामित्त भट्टित्त महत्तरगत्त आणाईसरसेणावच्च कारेमाणे पालेमाणे महयाहयनट्टगीयवाइयतंतीतलतुडियघणमुइगपडुप्पवाइयरवेण दिव्वाइ भोगभोगाइ भु

॥ भाषा ॥

दिव्वाए पभाए दिव्वाएछायाए दिव्वाए अच्चीए दिव्वेणतेएण दिव्वाएलेस्साए । देवतानीऋद्धि देवतानो द्युति देवतानीप्रभासे दिव्यछायायें दिव्यकिरणे दिव्यतेजे दिव्यलेश्यायें । दसदिसाओ उज्जोएमाणा पभासेमाणा । दशदिशा उद्योतकरता तिहा शोभतायका । तेण तत्थ साण २ भवणाण वासाण सयसहस्साण साण २ सामाणियसाहस्सीण साण २ तायत्तीसगाण २ साण २ लोगपालाण साण २ अग्गमहिसीण । ते तिहा आप आपणे भवने लाखगमे आप आपणें सामानिक सहस्रेकरी आप आपणा त्रायत्रिंसकेंकरी आप अपणा लोकपालेकरी आप आपणा अग्रमहिषीकरी । साण २ अणियाण साण २ परिसाण साण २ अणीयाहिवईण साण २ आयरक्खदेवसाहस्सीण अन्नेसिवबहूण भवणवासीण देवाणय देवीणय । आप आपणे अणीकाधिपेंकरी आपणी २ परषदाकरी आपरी अणीकाधिकेंकरी आपरा आपरा आतरक्षकेंकरी अनेरा भवनवासी देवता देवांगनानो । आहेवच्च पोरे

पपातसमुद्घातरूपेषु त्रिष्वपि स्थानेषु लोकस्या सङ्ख्येयतमे भागे वक्तव्यानि॥ चोवठीश्रसुराणमि त्यादि॥ गाथाद्वयं॥ सामान्यतो ऽसुरकुमारादीना भव नसङ्ख्याप्रतिपादक सुगम॥ चोत्तीसाचोयालाइत्यादि॥ गाथा दाक्षिणात्यानाम सुरकुमारादीना भवनसङ्ख्याविधायिका स्तस्या व्याख्या-दक्षिणतो ऽसुरकु माराणा भवनानि चतुस्त्रिंशतसहस्राणि नागकुमाराणा चतुश्चत्वारिंशत् सुवर्णकुमाराणाम द्वात्रिंशत् वायुकुमाराणा पञ्चाशत् द्वीपदिगुदधिवि द्युत्स्तनिताग्निकुमाराणा प्रत्येक चत्वारिंशत्शतसहस्राणि भवनानामिति॥ तीसा चत्तालीसा इत्यादि॥ उत्तरत उत्तरस्या दिशि श्रसुरकुमाराणा भ

जेमाणा विहरति, कहिणं भते ! दाहिणिल्लाणं श्रसुरकुमारदेवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पणत्ता ? कहिणं भते ! दाहिणिल्लाण श्रसुरकुमारा देवा परिवसति ? गो० ! जबुद्दीवे २ मदरस्स पव्वयस्स दाहिणेण इमी सेरयणप्पभाए पुढवीए श्रसीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरि एग जोयणसहस्स उग्गाहित्ता हेठावेग जोयणसहस्स वज्जित्ता मज्झे श्रठहत्तरजोयणसयसहस्से एत्थण दाहिणिल्लाण श्रसुरकुमाराणं देवाण देवी णय चोत्तीसं भवणावाससयसहस्सा हवतीति मक्खाय तेण भवणा बाहि वट्टा श्रंतो चउरसा सोचेव वस्सउ जाव पडिरूवा एत्थण दाहिणिल्लाण श्रसुरकुमारदेवाणं पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पणत्ता। तिसुवि लोगस्स श्रसखेज्जइभागे, तत्थणं बहवे दाहिणिल्ला श्रसुरकुमारदेवा देवीउ परिवसति काला लोहियक्खा तहेव जाव

वच सामित्त भट्टित्त महत्तरगत्त श्राणाईसर सेणावच्च कारेमाणे पालेमाणे । अधिपतिपणो पौराधिपपणो स्वामीपणो पोषकपणो मोटापणो आज्ञा पालता पलावता करता । महया हयनट्टगीयवाईय ततीतल ताडतुडिय घणमुइ ग पडुप्पवाईय रवेण दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणाविहरति । मोटा शब्दना नृत्य वादित्र तत्री ताल तालीटा त्रुटित घनमृदग पढहशब्द तिणेकरी देवताना भोग भोगवता विचरे चमर बलिणो इत्थुवे असुरकुमारसवा णपरिवसति । चमरेन्द्र बलेन्द्रनामेछे असुरकुमारना जीव बसेछे। कालामहानीलसरिसा नीलगुलियगलय श्रयसिकुसुमप्पगासा । कालेवर्णे महानील

भुंजमाणे विहरति, एत्थ सहुत्थ नीणियद्दा भवणवासीणं, चमरे इत्थ असुरकुमारिंदे असुरकुमारराया प रिवसइ काले महानीलसरिसे जाव पभासेमाणे सेणं तत्थ चउत्तीसाए भवणावाससयसहस्साणं चउसठीए सामाणियसाहस्सीणं तायत्तीसाए तायत्तीसगाणं चउण्हं लोगपालाणं पंचण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणियाणं सत्तण्हं अणियाहिवईणं चउण्हं च चउसठीणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं च बहूणं दाहिणिल्लाणं देवाणं देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं जाव विहरति। कहिणं भंते ! उत्तरि ल्लाणं असुरकुमाराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता । कहिणं भंते! उत्तरिल्ला असुरकुमारा देवा परिवसंति ? गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तर

कइ वस्तुन सरोखा नीलगुलीनोपरे स्याम विकस्वतपत्रनीपरे निर्मल। विर्यासयमरवत्त निर्मलईमिमिधत्ततवनणा। मशानिर्मल रातांछे नेत्र नइना। गुरुनाइयउज्जलगनासा उर्वाचतसिलपवालविवफल सविशाधका। गुरुडनीपरे सांगोनाक जहनो विकसित मिवपत्र समछाठ। पउरसमिमानविनल निर्मलसंखगोखीरकुंदगरयमृणालिय धवलदंतसठीछुघवइनिधतधायततवषिन्न करतलनखागुओश। गरु गाधीर कुन्द पांधोनाकच कमलना भांतु ग्रा धवलाटातनो अणो धीत निर्मल एश्वा राते सुवर्णनीपरे श्राय पग तला जीभ जिचरी तथा। श्रंजणघन कसिणरुयगरमणिज्ज निद्धकेसा। मस्तु सावारानना दिकें कीधाके काला चोकणाकग। वामेयकुंडलधरा अद्दचंदणाणलित्तगत्तमिमिलिध पाम्पतामार। वामेकाने कुंडल पहरे गात्र तथा लिगारेक पुष्पवर्ण जेहवा। असंकिलिठाइं सुहुमाइं वत्थाइं पवरपरिहियाइं। पसाहिट पत्यलमूत्म वर्लिक्षरी पहिरा छे। पढमवयसमइक्क ता वी यंतु असपत्ता भद्दे जुव्वणे वट्टमाणा। पहिलोवय कीढोने बीजो वयाघो पाम्या यौवनकुमारपणे पाम्याछे। तलभगतुडिय पवरभूसण निम्मल मणि रयणमंडियभुया दसमुद्दिया मंडियगहत्था। एतत्ततलभग बाहा आभरण बीहरखाप्रमुख प्रवरभूषण निर्मल मणिरत्नेकरी नाम छे नजग्न

जोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्सं उग्गाहित्ता हेट्ठाचेगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे अट्ठहत्तरिजोयणसयसहस्से एत्थणं उत्तरिल्लाणं असुरकुमाराणं देवाणं देवीणय तीसं भवणावाससयसहस्सा भवंतीति मक्खायं तेणं भवणा बाहिं वट्टा अंतो चउरंसा सेसं जहा दाहिणिल्लाणं जाव विहरंति, बली इत्थ वइरोयणिंदे वइरोयणराया परिवसइ, काले महानीलसरिसे जाव पभासेमाणे सेणं तत्थ तीसाए भवणा

मूंछोंवें अच्छा छे हाथ। चूडामणि चिलचिन्हगया सुरूपा महर्द्धिका महज्जुइा महाजसा महाबला महाणुभागा महासुक्खा हारविराइयवत्था कडग तुडग थंभियभुया। चूडामणिचिन्हेकरी सहितस्वरूप महाऋद्धिकरी महाद्युतिकरी महायशकरी महाबलेकरी महाभागे महासुखेकरो हारेकरो शोभित भीयो कडा बाहरखायें थंभ्याछे भुज। अंगदकुंडलमट्टगंडतलकण्णपीढधारी विचित्तहत्थाभरणा विचित्तमालामउलि। अंगदकुंडल मुकुट पहेरया कण्णाभरण धारा छे विचित्र हाथना आभरण विचित्रमाला। कल्लाणगपवरमल्लाणुलेवणा भासुरबोंदिपलंबवणमालधरा। कल्याणकारक लेपन देदीप्य लांबोमाला धरता। दिव्वेणं वण्णेणं दिव्वेणं गंधेणं दिव्वेणं फासेणं दिव्वेणं संघयणेणं दिव्वेणं संठाणेणं। दिव्यवर्णे दिव्यगंधे दिव्यस्पर्शे दिव्यसंघयणे दिव्यसंस्थाने। दिव्वाए इड्ढीए दिव्वाए जुईए दिव्वाए पभाए दिव्वाए छायाए दिव्वाए अच्चीए दिव्वेणं तेएणं दिव्वाए लेस्साए। दिव्यऋद्धि दिव्यद्युति दिव्य भावार्थे दिव्यछाया दिव्यप्रभा दिव्यकिरण दिव्यतेज दिव्यलेश्यायेंकरी। दसदिसाओ उज्जोएमाणा पभासेमाणा। दशदिशि उद्योतकरता विचरेछे। तेणं तत्थ साणं २ भवणावाससयसहस्साणं साणं २ सामाणियसाहस्सीणं। ते तिहां आपणा भवनमें लाखगमेंकरी आप आपणा सामानिकसहस्रे करी साणं तायत्तीसगाणं साणं २ लोगपालाणं साणं २ अग्गमहिसीणं साणं २ परिसाणं साणं २ अणियाणं। आपणा थावनिमेंकरी आपणा लोकपालेकरी अग्रमहिषीयेंकरी पोतानो परिषदायें करी आप आपणो अणियेंकरी। साणं २ आयरक्खदेवसाहस्सीणं अण्णेसिंच बहूणं भवणवासीणं देवाणय देवीणय। आत्मरक्षक सहस्रेकरी और घिणघणो भवणवासी देवता देवांगनो। आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं। अधिपतिपणो पोराधिपणो स्वामीप

वाससयसहस्साणं सट्ठीए सामाणियसाहस्सीणं तायत्तीसाए तायत्तीसगाणं चउण्हं लोगपालाणं पंचण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणियाणं सत्तण्हं अणियाहिवईणं चउण्हं सट्ठीणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं अण्णेसिं च बहूणं उत्तरिल्लाणं असुरकुमाराणं देवाणय देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं जाव कुव्वमाणे विहरति । कहिणं भंते ! नागकुमाराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता, कहिणं

गोवडापणे । पणाइसर सेणापणे कारेमाणे पालेमाणे । आज्ञापलाववतायका करावतायका । महयाहय नट्ट गीयवाइय ततीतलताल घणमुइंग पडुप वाइवरवेण । माटाशब्द नटगीत वाजित तंत्री ताल तलेटा मृदंग माटा पडहशब्दे । दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरति । दिव्य भोग भोगवता विचरेछे । कहिणभंते दाहिणिल्लाणं असुरकुमारदेवाण पज्जत्ता पज्जत्ताण ठाणा प० । किहा हेभगवन् दक्षिणदिशिना असुरकुमारदेवना पर्याप्ता अपर्याप्ता ना ठामकह्या । कहिणभंते दाहिणिल्ला असुरकुमारदेवा परिवसति । किहा हेभगवन् दक्षिण असुरकुमारदेवता वसेछे । गोयमा जंबूदीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं । हेगौतम जंबूद्वीप मेरुपर्वतथी दक्षिणदिशि । इमीसेरयणप्पभाएपुढवीए असीउत्तरजोयणसहस्स बाहल्लाए उवरि एगंजोयण सहस्स उग्गाहित्ता । ए रत्नप्रभा पृथिवीनेविषे एकलाख असीहजारयोजन जाडपणे ते ऊपर एकसहस्र योजन उगाहीने । हिट्ठाएगंजोयणसहस्स वज्जित्ता । नीचे एकयोजन सहस्र मूकीने । मज्झे अट्ठहुत्तरे जोयणसहस्से । विचे अठत्तरहजार एकलाखयोजन । एत्थणं दाहिणिल्लाणं असुरकुमाराणं देवाणं चउतीसं भवणावास सयसहस्साहिवइत्तिमक्खायं । तिहां दक्षिणना असुरकुमारदेवताना ३४ लाख भिभुवन् भगवंतेकह्या । तेणं भवणाबाहिंवट्टा अंतो चउरसा सोचेव वण्णओ जाव पडिरूवा । ते भवन बाहिर वाटलाछे मांहि चौखूणाछे । वर्णव सर्व पाछलीपरे जाणवो प्रतिरूप । एत्थणं दाहिणिल्लाणं असुरकुमाराणं देवाणं पज्जत्ता अपज्जत्ताणं ठाणा प० । तिहां दक्षिणना असुरकुमार देवताना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या । तिसुविलोयस्स असंखिज्जेभागे प० । तीन लोकने असंख्यातमेभागे हुवे । एत्थणं बहवे दाहिणिल्ला असुरकुमारदेवदेवीओ परिवसति । तिहां घणा असुरकुमारना दे

जोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्सं उग्गाहित्ता हेट्ठावेगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे अट्ठहत्तरिजोयणसयसहस्से एत्थणं उत्तरिल्लाणं असुरकुमाराणं देवाणं देवीणय तीसं भवणावाससयसहस्सा भवतीति मक्खायं तेणं भवणा बाहिं वट्टा अंतो चउरंसा सेसं जहा दाहिणिल्लाणं जाव विहरति, बली इत्थ वइरोयणिंदे वइरोयणराया परिवसइ, काले महानीलसरिसे जाव पभासेमाणे सेणं तत्थ तीसाए भवणा

मूटलोवें गह्या छे हाथ । चूडामणि चित्तचित्रगया मुकुटा महर्द्धिया महज्जुया महाजसा महाबला महाणुभागा महासुक्खा हारविराइयवच्छा कडय तुडय थंभियभुया । चूडामणिचिन्हेकरी मुकुटस्वरूप महाऋद्धेंकरी महाद्युतिकरी महायशेकरी महाबलेकरी महाभागे महासुखेंकरी हारेंकरी शोभित हीयो कडा बाहरखायें थंभ्याछे भुज । अंगदकुंडलमट्टगंडतलकण्णपीढधारी विचित्तवत्थाभरणा विचित्तमालामउलि । अंगदकुंडल मुकुट पहरया वा गांभरण धाराछे विचित्र हाथना आभरण विचित्रमाला । कल्लाणगपवरमल्लाणुलेवणा भासुरबोंदिपलंबमालधरा । कल्याणकारक लेपन देदीप्य मानोमा ला धरता । दिव्वेणं वण्णेणं दिव्वेणं गंधेणं दिव्वेणं फासेणं दिव्वेणं संघयणेणं दिव्वेणं संठाणेणं । दिव्यवर्णे दिव्यगंधे दिव्यस्पर्शे दिव्यसंघयणे दिव्यसंस्थाने । दिव्वाए इड्ढीए दिव्वाए जुईए दिव्वाए पभाए दिव्वाए छायाए दिव्वाए अच्चीए दिव्वेणं तेएणं दिव्वाए लेस्साए । दिव्यऋद्धि दिव्यद्युति दिव्य भाषायें दिव्यछाया दिव्यप्रभा दिव्यकिरणें दिव्यतेज दिव्यलेश्यायेंकरी । दसदिसाओ उज्जोवेमाणा पभासेमाणा । दशदिशि उद्योतकरता विचरेछे । ते णं तत्थ साणं २ भवणावाससयसहस्साणं साणं २ सामाणियसाहस्सीणं । ते तिहां आपणा भवनमें लाखगमेंकरी आप आपणा सामानिकसहस्रे करी साणं तायत्तीसगाणं साणं २ लोगपालाणं साणं २ अग्गमहिसीणं साणं २ परिसाणं साणं २ अणियाणं । आपणा त्रायस्त्रिंशेंकरी आपणा लोकपालेंकरी अग्रमहिषीयेंकरी पोतानी परिषदायें करी आप आपणी अणियेंकरी । साणं २ आयरक्खदेवसाहस्सीणं अण्णेसिंच बहूणं भवणवासीणं देवाणय देवीणय । आत्मरक्षक सहस्रकरी और पिणघणों भवणवासी देवता देवांगनों । आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं । अधिपतिपणो पोराधिपणो स्वामीप

सा जाव पडिरूवा तत्थण नागकुमाराण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पन्नत्ता । तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइ
भागे तत्थण बहवे नागकुमारादेवा परिवसंति , महिड्ढिया महज्जुइया सेस जहा ओहियाण जाव विहरंति
धरणभूयाणंदा एत्थ दुवे नागकुमाररायाणो परिवसंति महड्ढिया सेस जहा ओहियाण जाव विहरंति कहिण

जोयणसहस्स वज्जिता । हेठे एकयोजनसहस्र मूकीने । मज्झे अठहुत्तरजोयणसयसहस्से । बिचे एकलाख अठहत्तरसहस्र । एत्थण उत्तरिलाण असुर
कुमाराण देवाण तीसभवणावाससयसहस्स भवंतित्तिमक्खाय । तिहा ऊत्तरना असुरकुमारदेवताना तीसलाख भुवन कह्याछे तीर्थंकरे कह्या । तेण भव
ण बाहिवट्टा अंतोचउरंसा सेसजहा दाहिणिल्लाण जाव विहरंति । तेभुवन बाहिर बाटलाछे मध्ये चौखुणाछे शेष जिम दक्षिणनीपरे यावत् विचरेछे ।
इत्थ बलि वइरोयणिंदे वइरोयणराया परिवसति । इहा बलेन्द्रनामे रोहणी राजा बसेछे । काले महाणीलसरिसे जाव पभासेमाणा । कालेवर्ण महा
नीलवस्तुनीपरे यावत् शोभतारहेछे । सेण तत्थतीसाए भवणवाससयसहस्साण । ते तिहा तीसलाख भवनेकरी । सट्ठीए सामाणियसाहस्सीण तायत्ती
साए तायत्तीसगाण । साठसहस्र सामानिकदेवेकरी त्रायत्रिंशकदेवेकरी । चउण्हं लोगपालाण पंचण्हं अग्गमहिसीण सपरिवाराण तिण्ह परिसाण ।
चार लोकपालेकरी पंच अग्रमहिषीयेंकरी परिवारेंसहित तीन परषदायेंकरी । सत्तण्हं अणीयाण सत्तण्हं अणियाहिवईण । सात अनीकेकरी ७ अनी
काधिपतिकरी । चउण्हं सट्ठीण आयरक्खदेवसाहस्सीण अन्नेसिंचबहूण उत्तरिल्लाण असुरकुमाराण देवाणय देवीणय आहेवच्च पोरेवच्च जावमाणे विह
रइ । साठचौगुणाकरता दोयलाख चालीसहजार देवता आत्मरक्षक और दूजा घणा उत्तरदिशि असुरकुमारदेवता देवीनो अधिपतिपणो पोरपणो
विचरे । कहिण भंते नागकुमाराण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा प० । किहा हेभगवन् नागकुमारदेवना पर्याप्ता अपर्याप्तानां ठामकह्या । कहिण भ
ते नागकुमारादेवा परिवसंति । किहा हेभगवन् नागकुमारदेवता बसेछे । गोयमा इमीसेरयणप्पभाएपुढवीए असीउत्तरे जोयणसयसहस्स बाहल्लाए ।
हेगोतम एरत्नप्रभापृथिवीने एकलाख अंसीहजारयोजन जाडपणो । उवरि एगंजोयणसहस्सं उगाहित्ता । ऊपर एकयोजन सहस्र उगाहीने । हिहा

॥ मूल ॥

न्ते ! नागकुमारादेवा परिवसंति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्से बाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्सं वज्जिऊण मज्झे अठहत्तरिजोयणसयसहस्से एत्थणं नागकुमाराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं चुलसीइभवणावाससयसहस्सा हवंतीति मक्खायं, तेणं भवणा बाहिं वट्टा अंतो चउर

॥ भाषा

वता देवो वसेछे काला लोहियक्खा तहेव जाव भुंजमाणा विहरंति । कालोवर्णं रातीआख्या तिमहीज यावत् भोग भोगवता विचरेछे । एणंसि तहेव तायत्तिस० लोगपालाभवंति । एहने तिमहीज त्रायत्रिंसक देवता लोकपाल । एव सव्वत्थ भाणियव्वं भवणवासीण । इणतरें सर्व पाछली परे कहिवो भवणवासी ते । चमरे असुरकुमारिंदे असुरकुमारराया परिवसइ । चमरचंचा राजधानीयें असुरकुमारनामे इन्द्र वसेछे । काले महानीलसरिसे जाव पभासेमाणे । कालेवर्णं महानील वस्तुविशेष तेहनोप्रभा करता विचरेछे । सेणं तत्थ चउतीसाए भवणावाससहस्साणं चउसट्ठीए सामाणियसाहस्सीण । तिहां चउतीसलाख भवनेकरो ६४००० सामानिक देवतानेंकरो । तायत्तीसाए तायत्तीसगाणं चउण्हं लोगपालाणं । त्रायत्रिंशक देवेंकरो ४ लोकपालेंकरो । पचण्ह अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं । पांच अग्रमहिषेंकरी परिवारसहित । तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणियाणं सत्तण्हं अणियाहिवईणं चउण्ह चउसट्ठीणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं । तीन परिषदा करी ७ अनीकाकरी ७ अनिकाधिपति करी चौसठ चौगुणाकरता दोयलाख छप्पनहजार आत्मरक्षक देवेंकरी । अण्णेसिंचबहूणं दाहिणिल्लाणं देवाणय देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं जाव विहरंति । अनेरा घणा दक्षिणवासी देवता देवांगना अधिपतिपणो पौराधिपणो यावत् विचरे । कहिणंभंते उत्तरिल्लाणं असुरकुमाराणं पज्जत्ता पज्जत्ताणं ठाणा प० । किहां हेभगवन् उत्तरना असुरकुमारना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या । कहिणं भंते उत्तरिल्ला असुरकुमारादेवा परिवसंति । किहां हेभगवन् उत्तरना असुरकुमारदेवता वसेछे । गोयमा जंबूदीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं । हेगौतम जंबूद्वीपनामे द्वीप ते जंबूद्वीपने, मेरुपर्वतथकी उत्तरे । इमीसेरयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्स बाहल्लाए । ए रत्नप्रभापृथिवीने एकलाख असीहजार योजन जाडपणे । उवरिं एगंजोयणसहस्सं उगाहित्ता । ऊपर एकयोजनसहस्र उगाहीने । हिट्ठाएग

॥ मूल ॥

सा जाव पडिरूवा तत्थण नागकुमाराण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता। तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइ भागे तत्थण बहवे नागकुमारादेवा परिवसंति, महिड्ढिया महज्जुइया सेसं जहा ओहियाणं जाव विहरंति धरणभूयाणंदा एत्थ दुवे नागकुमाररायाणो परिवसंति महिड्ढिया सेसं जहा ओहियाणं जाव विहरंति कहिणं

॥ भाषा ॥

जोयणसहस्स वज्जित्ता। हेठे एकयोजनसहस्र मूकीने। मज्झे अठहुत्तरजोयणसयसहस्से। विचे एकलाख अठहत्तरसहस्र। एत्थण उत्तरिल्लाण असुर कुमाराण देवाण तीसभवणावाससयसहस्सं हवंतित्तिमक्खाय। तिहां उत्तरना असुरकुमारदेवताना तीसलाख भुवन कह्याछे तीर्थंकरे कह्या। ते भव ण बाहिवट्टा अंतोचउरसा सेसजहा दाहिणिल्लाण जाव विहरंति। ते भुवन बाहिर वाटलाछे मध्ये चौखूणाछे शेष जिम दक्षिणनीपरे यावत् विचरेछे। इत्थ बलि वइरोयणिंदे वइरोयणराया परिवसति। इहां बलेन्द्रनामे रोइणी राजा वसेछे। काले महानीलसरिसे जाव पभासेमाणा। कालेवर्ण महा नीलवस्तुनीपरे यावत् शोभतारहेछे। सेण तत्थतीसाए भवणवाससयसहस्साण। ते तिहां तीसलाख भवनेकरी। सट्ठीए सामाणियसाहस्सीण तायत्ती साए तायत्तीसगाण। साठसहस्र सामानिकदेवेंकरी त्रायत्रिंशकदेवेंकरी। चउण्हं लोगपालाण पंचण्ह अग्गमहिसीण सपरिवाराण तिण्ह परिसाण। चार लोकपालेंकरी पंच अग्रमहिषीयेंकरी परिवारेंसहित तीन परषदायेंकरी। सत्तण्ह अणीयाण सत्तण्ह अणियाहिवईण। सात अनीकेंकरी ७ अनी काधिपतिकरी। चउण्ह सट्ठीण आयरक्खदेवसाहस्सीण अन्नेसिंचबहूण उत्तरिल्लाण असुरकुमाराण देवाणय देवीणय आहेवच पोरेवच कारेमाणे विह रइ। साठचोगुणाकरता दोयलाख चालीसहजार देवता आत्मरक्षक और दूजा घणा उत्तरदिशि असुरकुमारदेवता देवीनो अधिपतिपणो पोरपणो विचरे। कहिण भंते नागकुमाराण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा प०। किहां हेभगवन् नागकुमारदेवना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या। कहिण भं ते नागकुमारादेवा परिवसति। किहां हेभगवन् नागकुमारदेवता वसेछे। गोयमा इमीसेरयणप्पभाएपुढवीए असीउत्तरे जोयणसयसहस्स बाहल्लाए। हेगौतम ए रत्नप्रभापृथिवीने एकलाख असीहजारयोजन जाडपणो। उवरि एगजोयणसहस्स उगाहित्ता। ऊपर एकयोजन सहस्र उगाहीने। हिहा

॥ मूल ॥

न्नते ! नागकुमारादेवा परिवसंति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्से वाहल्लाए उवरि एगं जोयणसहस्सं वज्जिऊण मज्झे अठहत्तरिजोयणसयसहस्से एत्थणं नागकुमाराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं चुलसीइभवणावाससयसहस्सा हवंतीति मक्खायं, तेणं भवणा वाहिं वट्टा अंतो चउरं

॥ भाषा ॥

वता देवो वसेछे काला लोहियक्खा तहेव जाव भुजमाणा विहरंति । कालावर्ण रातीआख्यां तिमहीज यावत् भोग भोगवता विचरेछे । एएसि तहेव तायतिस॰ लोगपालाभवंति । एहने तिमहीज चायत्रिसक देवता लोकपाल । एवं सव्वत्थ भाणियव्वं भवणवासीण । इणतरे सर्व पाछलो परे कहिवो भवणवासी ते । चमरे असुरकुमारिंदे असुरकुमारराया परिवसई । चमरचचा राजधानीयें असुरकुमारनामे इन्द्र वसेछे । काले महानीलसरिसे जाव पभासेमाणे । कालेवर्ण महानील वस्तुविशेष तेहनीप्रभा करता विचरेछे । सेणं तत्थ चउतीसाए भवणवाससहस्साणं चउसट्ठीए सामाणियसाहस्सीणं । तिहां चउतीसलाख भवनेकरी ६४००० सामानिक देवतायेंकरी । तायत्तीसाए तायत्तीसगाणं चउण्हं लोगपालाणं । त्रायत्रिंशक देवेंकरी ४ लोकपालेंकरी । पंचण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं । पांच अग्रमहिषीयेंकरी परिवारसहित । तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणियाणं सत्तण्हं अणियाहिवईणं चउण्हं चउसट्ठीणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं । तीन परिषदा करी ७ अनीकाकरी ७ अनिकेधिपति करी चौसठ चोगुणाकरता दोयलाख छप्पनहजार आत्मरक्षक देवेंकरी । अण्णेसिंचबहूणं दाहिणिल्लाणं देवाणय देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं जाव विहरंति । अनेरा घणा दक्षिणवासी देवता देवांगना अधिपतिपणो पौराधिपणो यावत् विचरे । कहिणंभंते उत्तरिल्लाणं असुरकुमाराणं पज्जत्ता पज्जत्ताणं ठाणा प॰ । किहां हेभगवन् उत्तरना असुरकुमारना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या । कहिणं भंते उत्तरिल्ला असुरकुमारादेवा परिवसंति । किहां हेभगवन् उत्तरना असुरकुमारदेवता वसेछे । गोयमा जंबूदीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं । हेगौतम जंबूदीपनामे द्वीप ते जंबूदीपने, मेरुपर्वतथकी उत्तरे । इमीसेरयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्स बाहल्लाए । ए रत्नप्रभापृथिवीने एकलाख असीहजार योजन जाडपणे । उवरिं एगंजोयणसहस्सं उगाहित्ता । ऊपर एकयोजनसहस्र उगाहीने । हिट्ठावि

॥ टीका ॥

वनानि त्रिंशत्शतसहस्राणि नागकुमाराणां चत्वारिंशत् चतुस्त्रिंशत् सुवर्णकुमाराणां षट्चत्वारिंशत् द्वीपदिगुदधिविद्युत्स्तनिताग्निकुमाराणां प्रत्येक षट्त्रिंशद्भवनशतसहस्राणि ॥ सम्प्रति सामानिकात्मरक्षदेवसङ्ख्यासंग्रहार्थमाह-चउसठीसठीखलु इत्यादि ॥ दाक्षिणात्यस्या ऽसुरकुमारेन्द्रस्य

॥ मूल ॥

ससत्तसहस्सा हवतीति मक्खाय, तेणं भवणा बाहिं वट्टा जाव पडिरूवा एत्थणं दाहिणिल्लाणं नागकुमाराणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता, तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे एत्थणं बहवे दाहिणिल्लाणं नागकुमारा देवा परिवसंति महिड्डिया जाव विहरंति । धरणे एत्थ नागकुमारिंदे नागकुमारराया परिवसति महिड्डिए जाव पभासेमाणे सेणं तत्थ चोयालीसाए भवणावाससयसहस्साणं छण्हं सामाणियसाहस्सीणं तायत्तीसाए तायत्तीसगाणं चउण्हं लोगपालाणं छण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणियाणं सत्तण्हं अणियाहिवईणं चउवीसाए आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं च बहूणं दाहिणिल्लाणं नागकुमाराणं

॥ भाषा ॥

मारदेवताछे। चामालीस भवणावाससहस्सा हवतित्तिमक्खाय। चौवालीसलाख भवन इम तीर्थंकर कह्यो। तेण भवणावाहिरवट्टा मतो चउरसा जाव पडिरूवा। तभवन बाहिर वटला मांहि चौरस यावत् प्रतिरूप। एत्थण दाहिणिल्लाण नागकुमाराण पज्जत्ता पज्जत्ताण ठाणा प०। इहा दक्षिणना नागकुमारना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या। तिसुविलोगस्स असंखिज्जइभाग। त्रे लोकनाअने असंख्यातमेभाग। एत्थण बहवे दाहिणिल्ला नागकुमारदेवा परिवसंति। इहा घणा दक्षिणना नागकुमारदेवता वसेछे। महिड्डिया जाव विहरति। म होटीऋद्धि यावत् विचरे। धरणे इत्थ नागकुमारिंदे नागकुमारराया परिवसति। धरणनाम नागकुमारनामे इन्द्र नागकुमारराजा वसेछे। महड्ढिया जाव पभासेमाणे। मोटीऋद्धि प्रभासहित। सेण तत्थ चउयालीसाए भवणावाससयाण छण्ह सामाणियसाहस्सीण। ते तिहा चौमालीसलाख भवननोसख्या कह्ी छसहस्र सामानिक करी। तायत्तीसाए तायतीसगाण चउण्ह लोगपालाण छण्ह अग्गमहिसीण सपरिवाराण। तानत्रीस त्रायस्त्रिंशककरी चारलोकपालकरी अग्रमहिषीएकरी

॥ मूल ॥

न्ते ! दाहिणिल्लाणनागकुमाराण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता । कहिण भंते ! दाहिणिल्लाण नागकुमारादेवा परिवसंति ? गोयमा ! जंबूद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेण इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरि एग जोयणसहस्स उग्गाहित्ता हेठावेग जोयणसहस्स वज्जित्ता मज्झे अठहत्तरिजोयणसयसहस्से एत्थण दाहिणिल्लाणं नागकुमाराण देवाण चोयालीसं भवणावा

॥ भाषा ॥

एग जोयणसहस्स वज्जित्ता । नीचे एकजोजनसहस्र मूकीने । मज्झे अठहुत्तरे जोयणसयसहस्से । विचे १७८००० परिमाण । एत्थण नागकुमाराण देवाण पज्जत्ता अपज्जत्ताण ठाणा प० । इहा नागकुमार देवताना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या । चुलसीति भवणावाससयसहस्सा हवतीत्तिमक्खाय । ८४ लाख भुवनसंख्या हवे भगवते कह्यो । तेण भवणावाहिवट्टा अंतो चउरंसा जाव पडिरूवा । ते भवन बाहिर वाटलाकारे माहि चोरस इमसर्व यावत् प्रतिरूप । तत्थण नागकुमारा देवाण पज्जत्ता २ ण ठाणा प० । तिहा नागकुमारदेवताना पर्याप्ता अपर्याप्ता ठामकह्या । तिसुविलोयस्स असंखिज्जइभागे । तीनलोकने असंख्यातमेभाग छुवे । तत्थण बहवे नागकमारा देवा परिवसंति । तिहा घणा नागकुमार देवता वसेछे । महड्ढिया महज्जुइया-सेसजहा ओहियाण जाव विहरंति । मोटोरुद्धि मोटी द्युतिकरी शेषयथा कतो तिम ओघनो आलावो यावत् विचरे । कहिणभंते दाहिणिल्लाण नागकुमाराण देवाण पज्जत्ता २ ण ठाणा प० । किहा हेभगवन् दक्षिणदिशिना नागकुमारदेवताना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या । कहिण भंते दाहिणिल्ला नागकुमारादेवा परिवसंति । किहा हेभगवन् दक्षिणदिशिना नागकुमार वसेछे । गोयमा जंबूद्दीवेदीवे मंदरस्सपव्वयस्स दाहिणेण । हे गौतम जंबूद्वीप २ मेरुपर्वतथकी दक्षिणदिशि । इमीसेरयणप्पभाएपुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्स बाहल्लाए । ए रत्नप्रभापृथिवीयें एकलाख असी हजार योजन जाडपणे । उवरि एगजोयणसहस्सं उग्गाहित्ता हिट्ठा एगजोयणसहस्स वज्जित्ता । ऊपर एकहजार उगाहीने नीचे एकयोजनसहस्र मूकीने । मज्झअट्ठहुत्तरजोयण सयसहस्से । विचाले एकलाख अठोतरसहस्र । एत्थण दाहिणिल्लाण नागकुमाराण देवाण । इहां दक्षिणदिशिना नागकु

॥ टीका ॥

वनानि त्रिंशत्शतसहस्त्राणि नागकुमाराणां चत्वारिंशत् चतुस्त्रिंशत् सुवर्णकुमाराणां षट्चत्वारिंशत् द्वीपदिगुदधिविद्युत्स्तनिताग्निकुमाराणां प्रत्येक षट्त्रिंशद्भवनशतसहस्त्राणि ॥ सम्प्रति सामानिकात्मरक्षदेवसङ्ख्याप्रतिपादनार्थमाह-चउसठीसठीखलु इत्यादि ॥ इदानीमल्पस्या असुरकुमारेन्द्रस्य

॥ मूल ॥

ससयसहस्सा हवतीति मक्खाय, तेणं भवणा बाहिं वट्टा जाव पडिरूवा एत्थणं दाहिणिल्लाणं नागकुमाराणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता, तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे एत्थणं बहवे दाहिणिल्लाणं नागकुमारा देवा परिवसंति महिड्ढिया जाव विहरंति । धरणे एत्थ नागकुमारिंदे नागकुमारराया परिवसति महिड्ढिए जाव पभासेमाणे सेणं तत्थ चोयालीसाए भवणावाससयसहस्साणं छण्हं सामाणियसाहस्सीणं तावत्तीसाए तावत्तीसगाणं चउण्हं लोगपालाणं छण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणियाणं सत्तण्हं अणियाहिवईणं चउवीसाए आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं च बहूणं दाहिणिल्लाणं नागकुमाराणं

॥ भाषा ॥

मारदेवताछे । चामालीस भवणावाससहस्त्र हवतित्तिमक्खाय । चौवालीसलाख भवन इम तीर्थंकर कह्यो । तेण भवणावाहिवट्टा आतो चउरसा जाव पडिरूवा । तेमवन बाहिर व ठना माहि चौरस यावत् प्रतिरूप । एत्थण दाहिणिल्लाण नागकुमाराण पज्जत्ता पज्जत्ताण ठाणा प० । इहा दक्षिणना नागकुमारना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या । तिसुविलोगस्स असंखिज्जइभाग । ते त्रणलोकने असंख्यातमेभाग । एत्थण वहवे दाहिणिल्ला नागकुमारदेवा परिवसंति । इहा घणा दक्षिणना नागकुमारदेवता वसेछे । महिड्ढिया जाव विहरंति । म होटाऋद्धि यावत् विचरे । धरणे इत्थ नागकुमारिंदे नागकुमारराया परिवसति । धरणनामे नागकुमारनामे इन्द्र नागकुमारराजा वसेछे । महिड्ढिया जाव पभासेमाणे । मोटीऋद्धि प्रभासहित । सेण तत्थ चउयालीसाए भवणावाससयाण छण्ह सामाणियसाहस्सीण । ते तिहा चौमालीसलाख भवननीसख्या कही छसहस्त्र सामानिक करी । तावत्तीसाए तावत्तीसगाण चउण्ह लोगपालाण छण्ह अग्गमहिसीण सपरिवाराणं । तायत्त्रीसहजार त्रायस्त्रिंशककरी चारलोकपालेकरी अग्रमहिषीकरी

सामानिकादेवा चतु पाश्चमसहस्राणि श्रौत्तराहस्य पष्टिमसहस्राणि असुरवर्जानाम सुरकुमारेंद्रवर्जानां सर्वेषां नपि दाक्षिणात्यानां मौत्तराहानां च षट् २ सहस्राणि प्रत्येक सामानिकाउ एतेऽनन्तरोक्तसंख्याकाश्च सामानिका ज्ञातव्या आत्मरक्षका पुन सर्वत्रापि सामानिकचतुर्गुणा प्रतिप

देवाणय देवीणय आहेवच्च पोरेवच्च जाव कुव्वमाणे विहरति कहिणं भंते ! उत्तरिल्लाण नागकुमाराण दे
वाणं पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पणत्ता, कहिण भंते ! उत्तरिल्ला नागकुमारा देवा परिवसंति ? गोयमा !
जंबूद्दीवे२ मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेण इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उ
वरिं एगं जोयणसहस्सं उग्गाहित्ता हेठावेगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे अठहत्तरिजोयणसयसहस्से एत्थण
उत्तरिल्लाण नागकुमाराण देवाण चत्तालीसं भवणावाससयसहस्सा हवंतीति मक्खायं, तेणं भवणा बाहिं
वट्टा सेसं जहा दाहिणिल्लाण जाव विहरति, भूयाणंदे इत्थ नागकुमारिंदे नागकुमारराया परिवसइ मह

परिवारसहित। तिण परिसाए सत्तवड अणियाण अणीयाहिवइए चउवीसाए आयरक्खदेवसाहस्सीण। तीन परषदासहित सात अनीककरी सात अनीकाधिपति करी चौवीसहजार आत्मरक्षक देवेंकरी। अन्नेसिंचबहूण दाहिणिल्लाण नागकुमारा देवाणय देवीणय आहेवच्च पोरेवच्च जावमाणे विहरति। अनेरा घणा दक्षिणना नागकुमारदेवता देवांगना अधिपतिपणो पालता विचरेछे। कहिणभंते उत्तरिल्लाण नागकुमाराण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा प०। किहां हेभगवन् उत्तरना नागकुमारदेवता पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या। कहिणभंते उत्तरिल्ला नागकुमारदेवा परिवसंति। किहां हेभगवन् उत्तरना नागकुमारदेवता वसेछे। गोयमा। जंबूद्दीवे २ मंदरस्स उत्तरेण इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्स बाहल्लाए। हेगौतम जंबूद्वीपे २ मेरुपर्वतथकी ए रत्नप्रभा पृथिवीने एकलाख असीहजारजोजन जाडपणे। उवरि एगजोयणसहस्स उग्गाहित्ता। ऊपर एकहजारजोजन उगाहीने। हिठाएगजोयणसहस्स वज्जित्ता। हेठे एकहजारयोजन वर्जीने। मज्झे अठहुत्तर जोयणसयसहस्से। माहि एकलाख अ

तथ्या इदानी दाक्षिणात्याना मौत्तराहाना चासुरकुमारादीना यथाक्रम मिद्रादीन् निर्दिशति चमरेभरणे इत्यादि दाक्षिणात्याना मसुरकुमारा णाम धिपति श्चमरोनागकुमाराणा धरण सुवर्णकुमाराणा वेणुदेव विद्युत्कुमाराणा हरिकान्त ग्निकुमाराणाम ग्निसिंह द्वीपकुमाराणा पू

हिए जाव पभासेमाणे तेण तत्थ चत्तालीसाए भवणावाससयसहस्साण आहेवच्च जाव विहरइ । कहिणं भंते ! सुवण्णकुमाराण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता । कहिण भंते ! सुवण्णकुमारादेवा परिवसं ति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए जाव एत्थण सुवण्णकुमाराण देवाण बावत्तरिभवणावाससय सहस्सा हवतीति मक्खाय, तेण भवणा बाहि वट्टा जाव पडिरूवा तत्थण सुवण्णकुमाराण देवाण पज्जत्ता पज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता । तिसुवि लोगस्स असखेज्जइभागे, तत्थण बहवे सुवन्नकुमारा देवा परिवसंति महिड्डिया सेस जहा ओहियाण जाव विहरंति, वेणुदेव वेणुदालीय इत्थ दुवे सुवण्णकुमारिंदा सुवन्नकुमार

ठोत्तरहजार । एत्थण चत्तरिलाण नागकुमारदेवाण चत्तालीस भवणावास सहस्सा हवंतिति मक्खाय । इहा धरणेदिगिना नागकुमारना धाभोगहा ण भवननोसव्या कही वोतरागे कह्यो । तेणभवणावाहिरहट्टा सेस जहा दाक्षिणात्याण जाव विहरति । ते भवन वाहिर वाटला शेष सर्व दक्षिण दिशिनोपरे यावत् विचरै । भूयाणंदे इत्थ नागकुमारिंदे नागकुमाररायां यों परिवसति । भूतानन्द नागकुमारनाथे राजा रहेछे । महड्डिए जाव प भासेमाणे । मोटो ऋद्धि यावत् प्रभासहित । सेण तत्थ चत्तालीसाए भवणावाससयसाहस्सीण चहेवण जाव विहरति । ते तिहा चालीसलाख भवन नीसव्या इवे अधिपतिपणों विचरेछे । कहिणभंते सुवण्णकुमाराण देवाण पज्जत्ता पज्जत्ता ठाणा प० । किहा हेभगवन् सुवर्णकुमारदेवता पर्याप्ता अप र्याप्ताना ठामकह्या । कहिणभंते सुवण्णकुमारदेवता परिवसति । किहा हेभगवन् सुवर्णकुमार वसेछे । गोयमा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए जाव एत्थ ण सुवण्णकुमाराण देवाण बावत्तरि भवणावास सयसहस्सा हवंतिति मक्खायं । हेगौतम ए रत्नप्रभापृथिवीये यावत् इहां सुवर्णकुमारदेव वसेछे बह

॥ टीका ॥

॥ बलिनूत्रणदेइत्यादि ॥ उत्तरदिग्वर्त्ति णं उदधिकुमाराणा जलकान्त दिक्कुमाराणाम मित वायुकुमाराणा वेलम्ब स्तनितकुमाराणा घोष नामसुरकुमाराणामिन्द्रोबलि नागकुमाराणा भूतानन्द सुपर्णकुमाराणा वेणुदालि विद्युत्कुमाराणा हरि सह अग्निकुमाराणामग्निमाणव द्वीप कुमाराणा विशिष्ट उदधिकुमाराणा जलप्रभ दिक्कुमाराणाम मितवाहन वायुकुमाराणा प्रभंजन स्तनितकुमाराराणा महाघोष सम्प्रतिवण

॥ मूल ॥

रायाणो परिवसति महढ्डिया जाव विहरति । कहिण भंते ! दाहिणल्लाण सुवन्नकुमाराणं पज्जत्तापज्जत्ता ण ठाणा पणत्ता । कहिण भंते ! दाहिणल्ला सुवन्नकुमारा देवा परिवसति ? गोयमा ! इमीसे जाव मज्झे अठहत्तरिजोयणसयसहस्से एत्थण दाहिणल्लाण सुवणकुमाराण अठतीस भवणावाससहस्सा हवतीति मक्खाय, तेण भवणा बाहि वट्टा जाव पडिरूवा, तत्थण दाहिणल्लाण सुवणकुमाराण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पणत्ता, तिसुवि लोगस्स असखेज्जइभागे, एत्थण बहवे सुवणकुमारा देवा परिवसति । वेणुदेवे इत्थ सुवन्निदे सुवणकुमारराया परिवसति सेस जहा नागकुमाराण । कहिण भंते ! उत्तरिल्लाणं सुवन्नकु

॥ भाषा

त्तरलाख भवनकह्या दक्षिणदिशि ३८ लाख उत्तरदिशि ३४ लाख तीर्थंकरे कह्यो । तेण भवणाबाहिवट्टा जावपडिरूवा । ते भवन बाहिर यावत् प्रतिरूप । तत्थण सुवणकुमाराण देवाण पन्नत्ता २ ण ठाणा प० । तिहा सवर्णकुमारना ठामकह्या । तिसुविलोगस्स असंखेज्जइभागे । तीने बोलनोकन असख्यातमेभागे । तत्थण बहवे सवणकुमारा देवा परिवसति । तिहा घणा सुवर्णकुमारना देवता वसेछे । सेस जहा औदियाण जाव विहरति । शेष ओवना आलावनीपरे विचरे । वेणुदेव वेणुदालिय इत्थदुवे सुवणकुमारेदा सुवणकुमारराया णं परिवसति । वेणुदेव वेणुदाली ए दोय सुवर्णकुमारना राजा जाणवा राजापणे विचरेछे । कहिणभंते दाहिणिल्लाण सुवणकुमाराण पज्जत्ता २ ण ठाणा प० । किहा हेभगवन् दक्षिणना सुवर्णकुमारना पर्याप्ता अपर्याप्तानां ठामकह्या । कहिणभंते दाहिणल्ला सुवणकुमारा देवा परिवसति । किहा हेभगवन् दक्षिणना सुवर्णकुमार वसेछे । गोयमा इमीसे

॥ टीका ॥

सयरार्थमाह-कालाअसुरकुमाराइत्यादि गाथाद्वय असुरकुमारा सर्वेपि काला कृष्णवर्णा नागकुमारा उदधिकुमाराश्चैते उभयेपि पाण्डुरा श्वेत वर्णा वर जात्य यत्कनक तस्य निघष कष पट्टकरेखातद्वत् गौरा भवंति सुवर्णकुमारा दिक्कुमारा स्तनितकुमारा श्च तथा विद्युत्कुमारा अग्नि कुमारा द्वीपकुमारा श्च भवत्युत्तमकनकवर्णा इपद्रक्तवर्णा इतिभाव वायुकुमारा श्यामा श्यामत्वमेवस्पष्टयति प्रियङ्गुवर्णा सम्प्रतिवस्त्रगतवर्णप्र

॥ मूल ॥

माराण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता । कहिण भंते ! उत्तरिल्ला सुवण्णकुमारा परिवसंति ? गोय मा ! इमीसे रयणप्पभाए जाव एत्थण उत्तरिल्लाण सुवण्णकुमाराण वत्तव्वया भणिया तहा सेसाणवि चोद सण्ह इंदाण भाणियव्वा नवर भवणनाणत्त इंदाणनाणत्त वण्णण नाणत्त परिहाणनाणत्त च इमाहि गाहाहि अनुगतव्व—चोवठ्ठिअसुराण चुलसीतीचेवहोइनागाणं । बावत्तरिसुवण्णे वाउकुमाराणछण्णउत्ति ॥ १ ॥ दीवदिसाउदहीण विज्जुकुमारिदथणियमग्गीण । छण्हपिजुवलयाण छावत्तरिमोसयसहस्सा ॥ २ ॥ चोत्ती साचोयाला अठत्तीसचहोइसयसहस्साइ । पण्णाचत्तालीसा दाहिणओहोंतिभवणाइ ॥ ३ ॥ तीसाचत्तालीसा

॥ भाषा ॥

जाव मज्झे अठ्ठुत्तरे जोयणसयसहस्से । हेगौतम ए यावत् माखिले एकलाख अठोत्तरहजार । एत्थण दाहिणिल्लाण सुवण्णकुमाराण अठतीस भवणावास सयसहस्सा हवतितिमक्खाय । इहा दक्षिणना सुवर्णकुमारदेवताना ३८ लाख भवन छुवे तीर्थंकरेंकह्यो । तेण भवणाबाहिवट्टा जाव पडिरूवा । ते भवन बाहिर बाटला यावत् प्रतिरूप । एत्थण दाहिणिल्लाण सुवण्णकुमाराण पज्जत्ता २ ण ठाणा प० । इहा दक्षिण सवर्णकुमारना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठा मकह्या । तिसुविलोगस्स असखिज्जइभागे । तीन बाललोकने असख्यातमेभागे छुवे । एत्थण बहवे सुवण्णकुमारा देवा परिवसंति । इहा घणा सुवर्णकुमा र देवता वसेछे । वेणुदेवेय इत्थ सवण्णकुमारिदे सुवण्णकुमाररायाणो परिवसंति । वेणु देवनामे सवर्णकुमारनो राजा वसेछे । सेस जहा नागकुमारा ण । थाकतो सर्व नागकुमारनीपरे । कहिण भंते उत्तरिल्लाण सुवण्णकुमाराण देवाण पज्जत्ता २ च ठाणा प० । किहा हेभगवन् उत्तरना सुवर्णकुमारदेव

तिपादनार्थमाह-असुरेसुहोतिरत्ता इत्यादिगाथाद्वय ॥ असुरेषु सुरकुमारेषु भवन्ति वस्त्राणिरक्तानि नागकुमारेषु उदधिकुमारेषु च शिलिंध्रपुष्प प्रवालिनीलवर्णा नीलत्यर्थं सुवर्णकुमारा दिक्कुमारा स्तनितकुमारा श्च अश्वास्यगवसनधरा अश्वस्याश्वमुखअश्वास्य तत्र गतो य फेन सोश्वास्यगत स्तद्वत् धवल यद्वस्त्रं तद्वरन्ती त्यश्वास्यगवसनधरा बाहुल्येन श्वेतवस्त्रपरिधानशीलाइत्यर्थं विद्युत्कुमारा द्वीपकुमारा अग्निकुमाराश्च नीलानुराग

चोत्तीसचेवसयसहस्साइ । बायालबत्तीसा उत्तरतेहोंतिभवणाइ ॥ ४ ॥ चउसठीसठीखलु छच्चसहस्साउ असुरवज्जाणं । सामाणियाउएए चउगुणाआयरक्खाउ ॥ ५ ॥ चमरेधरणेतहवे णुदेवहरिकतअग्गिसीहेय। पुणजलकंतेय अमियवेलबेयघोसेय ॥ ६ ॥ वलिभूयाणदेवे णुदालीहरिस्सहेअग्गिमाणवविसिठे । जलप्प भेअमियवाहणे पभजणेयमहाघोसे ॥ ७ ॥ उत्तरिल्लाण जाव विहरति , कालाअसुरकुमारा नागाउदहीप रुरादोवि । वरकणगणिहसगोरा होतिसुवण्णादिसाथणिया ॥ १ ॥ उत्तत्तकणगवन्ना विज्जुअग्गीयहोति दीवाय । सामापियंगुवण्णा वाउकुमारामुणेयव्वा ॥ २ ॥ असुरेसुहोतिरत्ता सिलिंध्रपुष्फभायणाउदही । आ

पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या । कहिणमते उत्तरिल्ला सुवण्णकुमारादेवा परिवसति । किहा हभगवन् उत्तरना सुवर्णकुमारदेवता वसेछे । गोयमा इमीसे रयणप्पभाए जाव एत्थण उत्तरिल्लाण सुवण्णकुमाराण चउतीस भवणावाससयसहस्सा हवतित्तिमक्खाय । हेगौतम ए रत्नप्रभाने यावत् इहा उ त्तरना सुवर्णकुमारना ३४ लाख भवननो सख्याकही तीर्थकरे कह्यो । तेण भवणा जाव एत्थण बहवे उत्तरिल्ला सवण्णकुमारादेवा परिवसति । ते भवन यावत् इहा घणा उत्तरना सुवर्णकुमारना देवता वसेछे । महड्ढिया जाव विहरति । महर्द्धिक यावत् विचरेछे । वेणुदालिय इत्थ सुवण्णकुमारिंदे सु वण्णकुमारराया णो परिवसति । वेणुदाली इहा सुवर्णकुमार सुवर्णकुमारनामेराजा वसेछे । महड्ढिया सेस जहा नागकुमाराण एव जहा सुवण्णकुमा राण वत्तव्वया भणिया । महर्द्धिक शेष जिम नागकुमार इम जिम सुवर्णकुमारनी कहिणी कही । तहा सेसाणवि चउदसण्ह इदाण भाणियव्वं । ति

म गेव पिण चोहे इन्द्रनो वक्तव्यता । नवरं भवणावस्स इंदाणाणं वणाणवत्त परिहरंयाणाणं इमाइं गाहाइं अणोगतव्य । एतलोविशेष भवननीसंख्या जू इन्द्रभानाम जू वर्णप्रधान जू यस्तवणे गाथेकरी समझवा ते कहेछे—चउसाठुइ असुराण चुलसोतइचवहोइनागाण । बावत्तरीसुवणे वायकुमाराणछ नउइ ॥ १ ॥ ६४ लाख भवन असुरकुमारना ८४ लाख भुवन नागकुमारना ७२ लाख सुवर्णकुमारना १०८ लाख वायुकुमारना ॥१॥ दीववदिसाउदहीण विज्जुकुमारंदथणिय अग्गीणं छण्हंपिजुगलियाणं छावत्तरिमोसयसहस्सा ॥ २ ॥ १२ इन्द्रना एतले ६ युगलांना भवन ॥ २ ॥ चउतीसाचउचत्ता अट्ठतीसचसयसहस्स पंच पण्णावत्तालीसा दाहिणओहुंतिभवणाइं ॥ ३ ॥ चमरेन्द्र ३४ धरणेंद्र ४४ वेणुदेव हरिकान्त अग्निसिख पूर्ण ३८ जलकान्त अमित ५० वेलम्ब घोष ४० ४०००००० ॥३॥ तोसा चत्तालीसा चउतीसचेवसयसहस्साइं छायालाछत्तीसा उत्तरओहोंतिभवणाइं ॥ ४ ॥ बलेंद्र ३० लाख भूतानेंद्र हरिस्सह वेणुदाली ४० लाख अग्नि माणव वासिष्ठ ३४ लाख जलप्रभ अमितवाहन ४६ लाख प्रभञ्जन महाघोष ३६ लाख उत्तरदिशिना इन्द्रना भवन

जाणिवा ३६६००००० ॥ ४ ॥ चउसट्ठीसट्ठीखलु छच्चसहस्साइं असुरवज्जाण सामाणियाउएए चउगुणा आयरक्खाओ ॥ ५ ॥ ६४ हजार चमरेंद्र ६० हजार बलेंद्र ६ हजार धरणेंद्रा दू एक असुरवर्जीने सामानिकथी चौगुणा करता आत्मरक्षकदेवता जाणिवा ५ ॥ चमरधरणतहवेणु देवहरिकंतअग्गिसीहेय पुण्णजलकंतअमिय विलंबघोसेय । ६ ॥ चमरेंद्र धरणेंद्र जिम वेणुदेव हरिकान्त अग्निसीहा पूर्ण जलकान्त अमित वेलम्ब घोषा १० इति दक्षिणश्रेणी । बलभूयाणंदे वेणुदालि हरिस्सहे अग्गिमाणववासिट्ठे । बलेंद्र भूतानेंद्र वेणुदाली हरिस्सह अग्निमाणव वसिष्ठ । जलप्पह तह अमितवाहणे पभंजण महाघोसे आसारिसाणु जाव विहरंति । जलप्रभ अमितवाहन प्रभञ्जन महाघोष २० उत्तरदिशिना यावत् विचरेछे । काला असुरकुमारा नागा उदहीय पंडुरादोवि । असुरकुमार काला नागकुमार उदधि पांडुरा । पवरकणग निहसगोराहोंति । प्रवर सवर्णवर्से कसौटीने जेहवो गौरवर्ण । सुवर्णकुमार दिसिकुमार स्तनितकुमार ३ । उत्तत्तकणयवण्णा विज्जुअग्गीयहुंतिदीवाय । सामापियंगुवण्णा वाउकुमारासुणि

सासयवलणधन्न होंतिसुवन्नादिसाथणिया ॥ ३ ॥ नीलाणुरागवसणा विज्जूग्गीयहोंतिदीवाय । सञ्झाणुरागवसणा वाउकुमारामुणेयव्वा ॥ ४ ॥ कहिण भंते ! वाणमंतराण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पन्नत्ता , कहिण भंते ! वाणमंतरा देवा परिवसंति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए रयणमयस्स कंडस्स जोयणसहस्सबाहल्लस्स उवरि एग जोयणसय उग्गाहित्ता हिट्ठावि एग जोयणसय वज्जित्ता मज्झे अट्ठसु जोयणसएसु एत्थण वाणमंतराण देवाण तिरियमसंखेज्जा भोमेज्जा नगरवाससयसहस्सा हवंतीति मक्खाय तेण भोमेज्जा णगरा बाहिं वट्टा अंतो चउरंसा अहे पुक्खरकन्नियासंठाणसंठिया उक्किन्नंतरविउलगंभीरखायफलिहा पागारट्टालयकवाडतोरणपडिदुवारदेसभागा जंतसयग्घिमुसलमुसंढिपरिवारिया अउज्झा सया जया सया गुत्ता अडयालकोट्ठरइयअडयालकयवणमाला खेमा सिवा किंकरा मरदंडोवरक्खिया लाउल्लोइयमहिया गोसीससरसरत्तचंदणदद्दरदिन्नपंचंगुलितला उवचियचंदणकलसा चंदणघडसुकयतो

वन्ना ॥ ? ॥ तथ्यासोना सरखा विद्युत्कुमार अग्निकुमार द्वीपकुमार श्यामछे श्रिवर्णनोपरे वायुकुमारनो वर्ण जाणवो । कहिणभंते बाउकुमारा वाणमंतराण पज्जत्ता २ ण ठाणा प० । किहा वायुकुमार हेभगवन् वाणमंतर पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या । कहिणभंते वाणमंतरा देवा परिवसंति । किहा हेभगवन वाणमंतरदेव वसेछे । गोयमा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए रयणमयस्स कंडस्स जोयणसहस्स बाहल्लस्स । हेगौतम ए रत्नप्रभानो ऊपरलो रत्नमयकांड योजनसहस्रने जाडपणें । उवरि एगजोयणसय उग्गाहित्ता । ऊपर एकयोजन शत उगाहीने । हिट्ठाएगजोयण सयवज्जित्ता । हेठे एकसोयोजन अवकाशछे । मज्झे अट्ठजोयणसएसु । माहि विचे ८०० योजन । एत्थण वाणमंतराण देवाण तिरियमसंखिज्जा । इहा वाणमंतर तिरछा असख्यातगुणा । भोमिज्जानगरावाससयसहस्साहवंतित्तिमक्खाय । भूमि स्टनीपरे नगरना लाखांगमे अरिहंते कह्या । तेण भोमिज्जानगरा बाहिवट्टा

॥ टीका ॥

वसना वायुकुमारा सध्यानुरागवसना वानमतरसूत्रे तिसुविलोगस्सअसखेज्जइभागे इति ॥ स्वस्थानोपपातसमुद्घातरूपेषु त्रिष्वपि स्थानेषु लोकस्या सङ्ख्येयभागे वक्तव्यानि तथा भुजगपतयोमहाकाया महोरगा किं विशिष्टा ते इत्याह-भुजगपतय गन्धर्वगणा गन्धर्वसमुदाया किं विशिष्टास्ते इत्यादि-निपुणगन्धर्वगीतरतयो निपुणा परमकौशलोपेता यगन्धर्वजातीया देवा स्तेषां यद्गीत तत्र रति येषां त तथा एते व्यन्तराणाम ष्टौ

॥ मूल ॥

रणपडिदुवारदेसभागा आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावा पचवन्नसरससुरभिमुक्कपुप्फपुंजोवयारकलिया कालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कधूवमघमघतगंधधूयाभिरामा सुगंधवरगंधिया गंधवट्टीभूया अच्छरगणसघविकिण्णा दिव्वतुडियसद्दसपनादिया पडागमालाउलाभिरामा सव्वरयणमया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा नीरया निम्मला निप्पंका निक्ककडच्छाया सप्पभा सस्सिरीया सउज्जोया पासादीया दरसणि

॥ भाषा ॥

अर्गलचउरसा। ते नगर बाहिर बाटला माहि चौरस। अहे पुक्खरकण्णिआण सठाणसठिआ। नीचे कमलनो कर्णिकाने आकारे। उक्किण्णतर विउलगंभीरखाय फलिहा पागारट्टालय कवाडतोरणपडिदुवारदेसभागा। उत्कीर्ण विचे पिहुलो गभीर फिटकमयी प्राकार ऊपर कपाट तोरण द्वार मोटा तेहमा नाना द्वार। जतस मवाघ मुसल मुसढिपरियरिया। कूडदेशभाग मूसलप्रहरणादिके परिवेष्टितछे। अयोध्य सदा जयासदा गुत्ता अडयालकट्टगरइया अडयाल कयवणमाला खमासवा किकरा मरदडोवरक्खिया। ताहमा देवता समर्थनहो सदा जीपछे सदा गुप्त ४८ देशीभाषाये प्रसंशाना वचन ४८ भेदेकरी फूलमाला कल्याणकारी उपद्रवविना किकर भूतजदेवता तेणे राख्याछे घर। लाउल्लोइयमहिया गोसीसरत्तचदण दद्दरदिन्न पचगुलितला थोपचिय चदणकलसा। ४८ भेदेकरी फूलमाला कल्याणकारी उपद्रवविना किङ्करभूत जेदेवता तेणे राख्याछे लीप्य छे मणादिकनीपरे महागोर्ष रक्तचदने दर्दर दीधाछे पञ्च गुलीनाहाथ उपचित थाप्याछे चन्दनकलशा। चदणकय तोरण पडिदुवारदेसभागा। चन्दनकलशे रुडा शोभन कीधोछे। आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारिय मल्लदामकलावा। आसतो सप्तभूमि अधोपर बाध्या विपुलविस्तीर्ण दामना कला। पचवण्ण सरससुरहिमुक्क

मूलभेदा इमे चान्ये ऽवान्तरभेदा अष्टौ ॥ अणपन्निपइत्यादि ॥ कथ भूता एते षोडशोपि त्यतआह-चलचलचपलचित्तक्रीडनद्रवप्रिया चञ्चला अ नवस्थितचित्ता स्तथा चलचपलम तिशयेन चपल य क्रीडन यश्च चित्तद्रव्य परिहास स्तौ प्रियौ यषा ते चलचपलचित्तक्रीडनद्रवप्रिया ततश्चञ्चल शब्दन विशेषणसमास तथा गहिरहसियगीयणच्चणरतौ ॥ गम्भीरषु हसितगीतनर्तनेषु रति येषा ते तथा ॥ वणमालामलमउलकुण्डलसच्छंदविउ व्वियाभरणचारुभूसणधराइति ॥ वनमालामयानि यानि आमेलमुकुटकुण्डलानि आमलइति ॥ आपीडशब्दस्य प्राकृतलक्षणवशत आपीड शेखरक

जा अन्निरूवा पडिरूवा एत्थण वाणमंतराण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पन्नत्ता । तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थण बहवे वाणमंतरा देवा परिवसंति तंजहा—पिसाया भूया जक्खा रक्खसा किन्नरा किं पुरिसा भुयगवतिणोय महाकाया गंधव्वगणा य निउणगंधव्वगीतरइणो अणवन्नियपणवन्नियइसिवा

दृफ पुंजोवयारकलियार । ० पाच वर्ण सरस सुगन्ध मूक्या पूजनीक कलो ० परिवर्या । कालागुरु पवरकुंदरुक्क तुरुक्कडज्झन धूम घमघत गंधद्धुया भिरामा सुगंधवरगंधिया गंधवट्टिभूया । कालागर पवरप्रधान कुन्दरुख तुरुक सलहारसेंकरी मघमघायमान सुगन्ध तिर्णेकरी गन्धनी वाट हुइछे । अच्छार गणसंघ संकिणा दिव्वतु डय सद्दसपणइया । अपसरानासमूहनीय करीसहित । पताकजालाउलाभिरामा सव्व रयणामया अच्छासण्हा । सृदङ्गा दि साम्भलता मनोहरशब्द सर्व रत्नमय आछाछे । घट्ठा मट्ठा नीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडछाया । घष्याछे मठारयाछे नीरज निर्मल निप्रकम्प नि ष्कण्टक प्रभासहित । सप्पहा समिरीया सउज्जोया पासाईया दरसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा । सद्यात दर्शनीकछे देखवायोग्य अभिरूप प्रतिरूप । एत्थण वाणमंतराण देवाण पज्जत्ता पज्जत्ताण ठाणा प० । इणा वाणव्यन्तर देवताना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या । तिसुविलोगस्स असंखिज्जइ भागे । तीन लोकने असंख्यातमेभागे छवे । तत्थण वहवे वाणमंतरादेवा परिवसंति तं० । तिहा घणा वाणव्यन्तर देवता वसेछे तेकहेछे—पिसाया भूया जक्खा रक्खसा किन्नरा किंपुरसा भुयगवयणो महाकाया । पिशाच भूत यक्ष राक्षस किन्नर किंपुरुष भुजपति महोरग महाकाय । गंधव्व गणाय

तथा स्वच्छन्द विकुर्वितानि यानि २ आभरणानि तै यत् चारुभूषण मण्डन तद्धरतीति वनमालापीनमुकुटकुण्डल स्वच्छन्दविकुर्विताभरणचारुभू पणधरा तथा सर्वर्तुकं सर्वर्तुजाविनि सुरभिकुसुमै सुरचिता सुष्टु निवर्त्तिता तथा प्रलम्बते इति प्रलम्बा शोभते इति शोभमाना कान्ता कमनीया विकसन्ती अमुकुलिता स्वानपुष्पमयीचित्रा नानाप्रकाराचवनमाला रचिता वक्षसि यैस्ते सर्वर्तुकसुरभिकुसुमरचितप्रलम्बशोभमानकान्तविक समनीया विकसन्ती मधित्रवनमालारचितवक्षस तथा काम स्वेच्छया गमो येषा ते कामगमा स्वेच्छाचारिण क्वचित्कामकामाइतिपाठ तत्र कामेन स्वेच्छया कामो मैथुनसेवा येषान्ते कामकामा ॥ अनियतकामा इत्यर्थ ॥ तथा काम स्वेच्छया रूप येषान्ते कामरूपा स्ते च ते देहा श्च कामरूपदेहा स्तान् धरन्ती त्येव शीला कामरूपदेहधारिण स्वेच्छाविकुर्वितनानारूपदेहधारिण इत्यर्थ तथा नानाविधै वर्णै रागो रक्तता येषा तानि नानाविधवर्णरागा णि वराणि प्रधानानि चित्राणि नानाविधानि अद्भुतानि वा चिह्नगानि देशीवचनात्, देदीप्यमानानि निवसनानि परिधानानि येषा ते नाना विधवर्ण रागवरवस्त्रचिल्लकनिवसना तथा विविधै र्देशीनेपथ्यै र्गृहीता वेषा यै स्ते विविधदेशीनेपथ्यगृहीतवेषा तथा प्रमुदयकन्दर्पकलहकेलि कोलाहलप्रियाइति कदर्प कामोद्दीपन चेष्टा च कलहो राटी केलि क्रीडा कोलाहलो बोल कदर्पकलहकेलिकोलाहल प्रिया येषा ते कदर्पकल

इसनूयवाइय कंदिय महाकंदिय कोहंडपयगदेवा चवलचवलचित्तकीलणदवप्पिया गहिरहसियपियगीयणि इरती वणमालामेलमउलकुंडलसच्छदविउव्वियाभरणचारुभूसणधरा सव्वोयसुरभिकुसुमसुरइयपलंबसोहंत

निउणगीतरइणा । गन्धर्वगण समुदाय निपुण गंधर्वनेविषे गीत रतिना । अणपन्निय पणपन्निय ईसवाइय भूयवाइय कंदिय महाकंदियाय कहंडे पय गदेवा चवलचलचपलचित्त कीडणदवप्पिया । अणपन्नो पणपन्नो ऋषिवादी भूतवादी कन्दो महाकन्दो कोहडो पतक १० एडवैनामे चवल विसस्थल छे क्रीडारमतेविषे । गहिरह सियपिय गीयनचणरइ । गहिरगम्भीर प्रियगीत नृत्यविषे रुचिछे । वणमालामेलमउल कुंडल सच्छद विउव्विया भरण चारुभूषणधरा सव्वोयसुरहिकुसुम पलवसोहतकत विहसतिचित्त वणमालरइयवच्छा । वनमालेकरी मस्तक सोभछे पोतानो छायायें निकुर्व्याछे आभरण

॥ टीका ॥

एकेलिकोलाहलप्रिया तत समुदितशब्देन सह विशेषणसमास ॥ हासबोलबहुलाइति ॥ हासबोलौ बहुलाव तिप्रचुरौ असिमुद्गरशक्तिकुन्ता हस्ते येषातेहासबोलबहुला तथा ॥ असिमुद्गरशक्तिकुन्ताहस्ता ॥ अणेगमणिरयणविविहनिजुत्तचित्तचिन्धगयाइति ॥ मणय श्चन्द्रकान्ताद्या रत्नानि कर्केतनादीनि अनके मणिरत्ने विविध नानाप्रकार नियुक्तानि चित्राणि नानाप्रकाराणि चिह्नानि गतानि स्थितानि येषा ते तथा शेष सुगम नवर कालेयमहाकाले इत्यादि॥ दक्षिणोत्तराणा पिशाचाना यथाक्रममिन्द्रौ कालमहाकालौ भूताना सुरूपप्रतिरूपौ यक्षाणा पूर्णभद्रमाणिभद्रौ रा क्षसा भीममहाभीमौ किन्नराणा किन्नरकिंपुरुषौ किंपुरुषाणा सत्पुरुषमहापुरुषौ महोरगाणाम ऽतिकायमहाकायौ गन्धर्वाणा गीतरतिगीतयशसौ ज्योतिष्कसूत्रे अद्धकविठगसठाणसठियाइ अर्द्ध कपित्थस्या र्द्धकपित्थ तस्य सस्थान तेन सस्थितानि अत्रा क्षेपपरिहारौ चन्द्रप्रज्ञप्तिटीकाया चाभि हिताविति ततो वचार्यौ सव्वफालियामया इति सर्वात्मना स्फटिकमयानि तथा अभ्युद्गता आभिमुख्येनसर्वतोविनिगता उत्सृता प्रबलतया सर्वासु

॥ मूल ॥

कतवियसितचित्तवन्नमालरइयवच्छा कामकामा कामरूवदेहधरा नाणाविहवन्नरागवरवच्छुललतचित्तचिल्ल
गणियवसणा विविहदेसिनेवत्थगहियवेसा समुइयकंदप्पकलहकेलिकोलाहलप्पिया हासा बोलबहुला असि
मोग्गरसत्तिकुंतहत्था अणेगमणिरयणविविहनिजुत्तविचित्तचिंधगयासुरूवा महिड्डिया महज्जुतिया महायसा

॥ भाषा ॥

चारु मनोहरभूषण धरणछे सुरभिफूल प्रलम्ब लहिकता शोभता अमनोर विकसित नानाप्रकारनी विभूषारचना कोधीछे। कामकमा कामरूपदेह धारी नाणाविहवणरागवत्थचिल्लग विचित्तरूपणा नियसणा विविहदेसे नेवत्थगहियावासा। होवाविषे कामातुरथके देहधारी अनेकविध विचित्रक पना चित्ररूप अनेकदेशना पहरस्तना ग्रह्याछे वेश जेणें। कंदप्पकेलिकोलाहलप्पिया हासबोलबहुला। प्रमुदित हर्ष पामीछे कन्दर्पचेष्टा क्रीडा को लाहल प्रियछे हासना बोल बहुलछे। असिमरसत्तिकुतहत्था। असिखड्गछे हाथनेविषे। अणेगमणिरयणविविहनिजुत्ति विचित्तचिंधगया सुरूवा। अनक मणिरत्न विविध विचित्रसहित चिह्नछे सुरूपछे। महड्डिया महज्जुइया महायसा महाबला महाणुभागा महासुक्खा हारविराइयवच्छा। म

॥ मूल ॥

महाबला महाणुभागा महासोक्खा हारविराइयावच्छा कडगतुडियथंभियभुया अंगयकुंडलमट्ठगंडजुयलकण्णपीढधारी विचित्तहत्थाभरणा विचित्तमालामउलीकल्लाणगपवरवत्थपरिहिया कल्लाणगपवरमल्लाणुलेवणधरा भासुरबोंदी पलंबवणमालधरा दिव्वेण वण्णेण दिव्वेण गंधेण दिव्वेण फासेण दिव्वेण संघयणेण दिव्वेण संठाणेण दिव्वाए इड्ढीए दिव्वाए जुईए दिव्वाए पभाए दिव्वाए छायाए दिव्वाए अच्चीए दिव्वेण तेएण दिव्वाए लेस्साए दसदिसाओ उज्जोवेमाणा पभासेमाणा तेणं तत्थ साणं २ भोमेज्जाणगरावाससयसहस्साणं साणं २ सामाणियसाहस्सीणं साणं २ अग्गमहिसीणं साणं २ सपरिसाणं साणं २ अणियाणं साणं २ अणियाहिव

॥ भाषा ॥

पृथ्वीकायनां महामोटा महाबल महाभाग्य महासुखी हारकरी शोभितछे हीयों। कडगतुडियथंभितभुजा अंगदकुंडलमट्ठगंडतलकर्णपीठधारी। कड़ा बहिरखा तिणे करीने भुजा थंभी छे। अंगदपरिधान विशेष कुंडल गाल पीठनविषे। विचित्रहस्थाभरणा विचित्रमालामउली कल्याणगपवरवस्त्रपहिरया कल्याणगपवरमाल्यानुलेपनधरा भासुरबोंदी पलंबवणमालधरा विचित्रहाथनाभरणछे। विचित्रमाला मुकुटछे मंगलीक वस्त्र पहिरयाछे तथा मंगलमाल्य लेपनधारीछे देदिप्यमान मनोहर धारीछे। दिव्वेण दिव्वेण गंधेण दिव्वेण फासेण दिव्वेण संघयणेण दिव्वेण संठाणेण। देवसंबंधी दिव्य वर्णकरी दिव्य गंधेकरी दिव्य संघयणकरी दिव्य संस्थानेकरी। दिव्वाए इड्ढीए दिव्वाए जुईए दिव्वाए छायाए दिव्वाए अच्चीए। दिव्य ऋद्धीकरी दिव्य प्रभाकरी दिव्य छायायेकरी दिव्य किरणेकरी। दिव्वेण तेएण दिव्वाए लेस्साए दसदिसाओ उज्जोवेमाणा पभासेमाणा। दिव्य तेजेकरी दिव्य लेश्यायेकरी दशदिशा उद्योतकरतायका रहेछे। तेणं तत्थ साणं २ भोमिज्जनगरा वाससयसहस्साण। ते तिहां आप आपणा भूमि नगरना लाख गमेकरी। साणं २ सामाणियसाहस्सीण साणं २ अग्गमहिसीण साणं २ परिसाण साणं २ अणियाण साणं २ अणियाहिवईण। आपआपणा सामानिक सहस्रेकरी। आपआपणी अग्रमहिषीयेकरी आपआपणी पर्षदायेकरी आपआपणी अनीकेकरी आप आपणे अनीकाधिपतियेकरी। आयरक्खदेवसाहस्सीण अन्नेसि

॥ मूल ॥

इंणं साणं २ आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं च बहूणं वाणमंतराणं देवाणय देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणाईसरसेणावच्चं कारेमाणा पालेमाणा महयाहयनट्टगीयवाइयतंतीतलताल तुडियघणमुइंगपडुप्पवाइयरवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरंति कहिणं भंते! पिसायाणं देवाणं पज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता। कहिणं भंते! पिसायादेवा परिवसंति? गोयमा! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए रयणामयस्सकंडस्स जोयणसहस्सबाहल्लस्स उवरिएगं जोयणसयं उग्गाहित्ता हिट्ठावेगं जोयणसयं वज्जित्ता मज्झे अट्ठसु जोयणसएसु एत्थणं पिसायाणं देवाणं तिरियमसंखेज्जा भोमेज्जा नगरावाससयसहस्सा भवंतीति मक्खायं तेणं भोमेज्जा नगरावाहिं वट्टा जहाहिट्ठभवणवासीणं तहा भाणियव्वो जाव पडिरू

॥ भाषा ॥

बहुण वाणमंतराणं देवाणय देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्त भट्टित्तं महत्तरगत्तं। आपणो आत्मरक्षकदेवने सहस्त्रको अनेरा घणां वाणव्यन्तरना देवता देवी अधिपतिपणो पोरपपणों स्वामीपणों धारता वडाईपणों। आणाईसर सेणावच्चं कारेमाणा पालेमाणा। आज्ञा ईश्वरपणो धारता करावता पालता। महयाहय नट्टगीयवाईय तंतीतलताल तुडिय घणमुयंग पडुपवाईयरवेणं। मोटाबाजा नृत्य गीत वाजित्र तंत्री ताल त्रुटित वाजित्रविशेष पडहने शब्देकरी। दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरंति। देवतानां भोगभोगवता विचरेछे। कहिणभंते पिसायाणं देवाणं पज्जत्ता २ णं ठा० पं०। किहां हेभगवन् पिशाचदेवता वसेछे पर्यापता अपर्यापतानां ठामकह्यां। कहिणभंते पिसायादेवा परिवसंति। किहां हेभगवन् पिशाचदेवता वसेछे। गोयमा इमीसेरयणप्पभाएपुढवीए रयणामयस्स कंडस्स जोयणसहस्सबाहल्लस्स। हेगौतम ए रत्नप्रभा पृथिवीये रत्नमयकांड योजनसहस्र जाडोछे। एगंजोयणसयं उग्गाहित्ता। तेहमांथि एकयोजन गत ऊपरथीमुके। हिट्ठा एगंजोयणसयं वज्जित्ता मज्झे अट्ठसु जोयणसएसु। हेठे एकसो योजन वर्जीने मांहि आठसोयोजन रह्यां। एत्थणं पिसायाणं देवाणं तिरियमसंखिज्जा भोमिज्जानयरावाससयसहस्सा भवंतित्तिमक्खायं। पिशाचदेवतारा घर

वा, एत्थणं पिसायाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पएत्ता, तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइनागे तत्थणं बहवे पिसाया परिवसंति महढिया जहा उहिया जाव विहरंति, काला महाकाला इत्थ दुवे पिसाया इंदा पिसायरायाणो परिवसंति, महढिया महाज्जुइया जाव विहरंति । कहिणं नंते ! दाहिणिल्लाणं पिसायाणं देवाणं ठाणा पएत्ता । कहिणं नंते ! दाहिणल्ला पिसाया देवा परिवसंति ? गोयमा ! जंबूदीवे २ मंदरस्स दाहिणेणं इमीसे रयणप्पनाए पुढवीए रयणामयस्स कंडस्स जोयणसहस्सबाहल्ला उवरि एगं जोयणसयं उग्गाहित्ता हिठावेगं जोयणसयं वज्जित्ता मज्झे अठसु जोयणसएसु एत्थणं दाहिणिल्लाणं पि

छे तिरछा असंख्याता मुहरानीपरे नगर तेहना लाखागमे तीर्थंकरे कह्या । तेणंभोमेज्जानयरावाहिवट्टा एवं जहाओहियभवणवणओ तहा भाणियव्वो जाव पडिरूवा । ते भुवन नगर केहवाछे बाहिर वाटलाकारे इम जिम ओघलमूव जिमकह्यो तिम कहाथयो यावत् प्रतिरूप । एत्थणं पिसायाणं देवाणं पज्जत्ताणं ठा० प० । इहां पिशाच देवो देवना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या । तिसुविलोयस्स असंखिज्जइभागे । तीने बोलेलोकने असंख्यातमे भागे छे । तत्थण बहवे पिसायादेवा परिवसंति । तिहां घणा पिशाचदेवता वसेछे । महड्ढिया जहा ओहिया जाव विहरंति । मोटीरुद्धि जिम ओघनोआलावो यावत् विचरे । काले महाकालेय इत्थदुवे पिसायरायाणो परिवसंति । कालेवली महाकालनामे इहां दोय पिशाचनामे राजा वसेछे । महड्ढिया जाव विहरंति । महर्द्धिक यावत् विचरे । कहिणंभंते दाहिणिल्लाणं पिसायाणं देवाणं पज्जत्ता २ णं ठा० पं० । किहां छेभगवन् दक्षिणना पिशाच पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या । कहिणंभंते दाहिणिल्ला पिसाया देवा परिवसंति । किहां छेभगवन् दक्षिणना पिशाच देवता वसेछे । गोयमा जंबूदीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं । जम्बूद्वीपनामे द्वीपमांहि मेरुपर्वत दक्षिणपासे । इमीसेरयणप्पभाए पुढवीए रयणमयस्सकंडस्स जोयणसहस्सबाहल्लस्स । ए रत्नप्रभानामे पृथिवीविषे रत्नमय कांडनो योजनसहस्र जाडपणो मांहि । उवरिं एगंजोयणसयं उगाहित्ता । उपरिलो एकसोयं जो

॥ मूल ॥

सायाणं देवाणं तिरियमसंखिज्जा भोमेज्जा नगरावाससयसहस्सा हवंतीति मक्खायं, तेणं भवणा जहा उहिंते भवणवासी तहेव भाणियव्वो जाव पडिरूवा एत्थणं दाहिणल्लाणं पिसायाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पणत्ता। तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थणं बहवे दाहिणिल्लापिसाया देवा परिवसंति महड्ढिया जहा उहिया जाव विहरंति काले जत्थ पिसायइंदे पिसायराया परिवसंति महड्ढिए जाव पभासेमाणे सेणं तत्थ तिरियमसंखेज्जाणं भोमेज्जा णगरावाससयसहस्साणं चउराहं सामाणियसाहस्सीणं चउराहं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं तिराहं परिसाणं सत्ताहं अणियाणं सत्ताहं अणियाहिवईणं सोलसराहं आय

॥ भाषा ॥

नउगाहीने। हिट्ठा०गजोयणसय वज्जित्ता मज्झे अट्ठसु जोयणसएसु। हेठे एकसोयोजन वर्जीने मध्ये आठसोयोजन विषे। एत्थणं दाहिणिल्लाणं पिसायाणं देवाणं तिरियमसंखिज्जाणं। इहां दक्षिणना पिशाचदेवताना तिरछादिशे असंख्याता। भोमेज्जानयरावाससयसहस्सा हवंतित्तिमक्खाय। भोमता नगरना लाखगमें कह्या वीतरागे। तेणं भवणा जहा ओहियभवणवासी तहा भाणि० जाव पडिरूवा। ते भवन जिम ओघनो आलावो तिम कहवो यावत् प्रतिरूप। एत्थणं दाहिणिल्लाणं पिसायाणं देवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पं०। इहां दक्षिणदिशिना पिशाचदेवता पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठाम कह्या। तिसुविलोगस्स असंखिज्जइभागे। तीन बोललोकने असंख्यातमेभागे। तत्थणं बहवे दाहिणिल्ला पिसायादेवा परिवसंति। इहां घणा दक्षिणना पिशाचदेवता वसेछे। महड्ढिया जहा ओहिया जाव विहरंति। महर्द्धिक जिम ओघनो आलावो तिम। कालेय इत्थ पिसाइंदे पिसायरायाणो परिवसंति। कालनामे पिशाचनो इन्द्र राजापणे वसेछे। महड्ढिए जाव पभासेमाणे। महर्द्धिक यावत् प्रभासहित। सेणं तत्थ तिरियमसंखिज्जाणं भोमेज्जानगरावाससयसहस्साणं चउराहं सामाणियसाहस्सीणं चउराहं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं। ते तिहां तिरछालोक असंख्याता भोमनगरवाससहस्र लाखगमें हुवे चारहजार सामानिक देवतासहित चारहजार अग्रमहिषीवे सपरिवारे। तिणं परिसाणं सत्ताहं अणियाणं सत्ताहं अणि

रक्कदेवसाहस्सीणं अन्नेसिंच बहूणं दाहिल्लाणं वाणमंतराणं देवाणयदेवीणय आहेवच्चं जाव विहरंति। उत्तरिल्लाणं पुच्छा गो०! जहेव दाहिणल्लाणं वत्तव्वया तहेव उत्तरिल्लाणंपि नवरं मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरे णं महाकाले जत्थ पिसायइंदे पिसायराया परिवसंति जाव विहरंति एवं जहा पिसायाणं तहा भूयाणंपि जाव गंधव्वाणं नवरं इंदेसु नाणत्तं भाणियव्वं इमेणंपि विहिणा भूयाणं सुरूवपडिरूवा जक्खाणं पुण्णभद्द माणिभद्द रक्खसाणं भीममहाभीमा किन्नराणं किन्नरकिंपुरुसा किंपुरिसाणं सप्पुरिसमहापुरिसा महोरगाणं अइकायमहाकाया गंधव्वाणं गीतरईगीतजसा जावगीयजसे विहरंति—कालेयमहाकाले सुरूवपडि

याहिवईणं। तीन परिषदा ७ अनीकैकरी ७ अनीकाधिपतेंकरी। सोलसण्हं आयरक्ख देवसाहस्सीणं अन्नेसिंच बहूणं दाहिणिल्लाणं वाणमंतराणं देवाणय देवीणय आहेवच्चं परिवच्चं जाव विहरंति। सोलेहजार आत्मरक्षकेंकरी और घणां दक्षिणदिशिना वाणमंतर देवता देवी अधिपति पौरपति यावत् विचरै। उत्तरिल्लाणं पुच्छा। उत्तरदिशिनो प्रश्न। गोयमा जहेव दाहिणिल्लाणं वत्तव्वया तहेव उत्तरिल्लाणंवि भाणि०। हेगौतम जिम दक्षिणदिशिनो कह्यो तिम उत्तरदिशिनो विशेष कहवो। नवरं मंदरस्स उत्तरेणं महाकालेव। एतलो मेरुने उत्तरपासे महाकालनामे इन्द्र। इत्थ पिसाइंदे पिसायरायाणो परिवसंति सेसतंचेव जाव विहरंति। पिशाचनोराजा तिहां वसेछे तिम शेष जांणवो। एवं जहापिसायाण तहा भूयाणंपि भाणि०। इम जिम पिशाचने तिम भूतनेंद्रने। जाव गंधव्वाणंवि भा०। यावत् आठमो गंधर्वनिकायलगे कहिवे। नवरं इंदेसु णाणत्तं भाणियव्वं। एतलोविशेष इन्द्रनानामतो विशेष कहिवो। इमेणं विहिणाभूयाणं सुरूव पडिरूवा। इणें विधेंकरी भूतने स्वरूप प्रतिरूप। जक्खाणं पुण्णभद्द माणभद्दाणं भीम महाभीमा। यक्षनिकायें पूर्णभद्र मानभद्र, २ राक्षसने भीम महाभीम २। किन्नराणं किंपुरुसा। किन्नर किंपुरुष ४,। किंपुरुसाणं सप्पुरिस महापुरिसा। किंपुरिषने सपुरुष महापुरुष, २। महोरगाणं अइकाय महाकाय। महोरगने अतिकाय महाकाय, २। गंधव्वाणं गीयरइ गीयजसा २। गन्धर्वने गी

रूवपुण्णभद्देय । अमरवइमाणभद्दे भीमेयतहामहाभीमे ॥ १ ॥ किन्नरकिंपुरिसेखलु सप्पुरिसेखलुतहामहा पुरिसे । अइकाएमहाकाए गीयरतिचेवगीयजसे ॥२॥ विहरति कहिणं भंते ! अणवन्नियाणं देवाणं ठाणा पं० । कहिणं भंते ! अणवन्निया देवा परिवसंति गो० ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए रयणामयस्स कंडस्स जोयणसहस्सबाहल्लस्स उवरि हिठावएगं जोयणसयं वज्जित्ता मज्झे अठसु जोयणसएसु अत्थ णं अणवन्नियाणं देवाणं तिरियमसंखिज्जा भवणा वाससयसहस्सा हवंतीतिमक्खायं तेण जाव पडिरूवा एत्थणं अणवन्निया देवाणं ठाणा पं० । उववाएलो समुग्घाएलो सठाणेणंलो तत्थणं अणवन्निया देवा परिवसंति महिड्ढिया जहा पिसाया जाव विहरंति सन्निहियसामाणा इच्छ दुवे अणवन्निंदा अणवन्नि

तरति गीतयश । जाव गीयजसा विहरंति गाहा । यावत् गीतयश विचरे गाथा—कालेयमहाकाले सुरूवपडिरूवमाणभद्दय अमरवतिमाणभद्दे भीमेय तहामहाभीमे ॥ १ ॥ काल महाकाल सुरूप प्रतिरूप पूर्णभद्र अमरपति माणभद्र भीम तिम महाभीम ८ ॥ १ ॥ किंनरकिंपुरिसेखलु सप्पुरिसेखलुतहा महापुरिसे अइकायमहाकाए गीयरइचेवगीयजसे ॥२॥ किन्नर किंपुरुष निश्चे सत्पुरुष तिम महापुरुष अतिकाय महाकाय गीतरति गीतयश १६ ॥२॥ कहिणंभंते अणपन्निआणं देवाणं पज्जत्ता २ ण ठा० पं० । किहां हेभगवन् अनेरा व्यन्तरना देवताना ठामकह्या । कहिणं भंते अणवन्नियादेवा परिवसंति । किहां हेभगवन् अनेरा व्यन्तर किहां वसे । गोयमा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए रयणामयस्सकंडस्स जोयणसयस्स बाहल्लस्स । हेगौतम ए रत्न प्रभापृथिवीने रत्नमयकांड योजनसहस्र जाडपणे । उवरिं जाव अट्ठसु जोयणसएसु । ऊपरला अट्ठसयोजन छांडीने तेमांहि १०० योजन अवकाश । एत्थणं अणियाणं देवाणं तिरियमसंखिज्जाणगरावाससयसहस्सा हवंतित्ति मक्खायं तेणं जाव पडिरूवा । समांहि इहां अनेरा व्यन्तरदेवता तिरछा असंख्याता भूवरानोपरे नगर लाखेगमा कह्या तीर्थंकरे यावत् प्रतिरूप विचरे । एत्थणं अणवण्णियाणं देवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पं० । इहां अनेरा व्य-

य कुमाररायाणो परिवसंति महड्ढिया जहा कालमहाकाला एवं जहा कालमहाकालाणं दोण्हंपि दाहिणि ल्लाणं उत्तरिल्लाणय भणिया तहा संनिहियसामाणाणंपि भाणियव्वा संगहणि गाहा—अणवन्नियपणवन्नि य इसिवाइयभूयवाइएचेव। कंदियमहाकंदिय कुहंडयपयंगदेवाय। इमे इंदा—संनिहियासामाणा धाइविधाए यइसीयइसिवाले इस्सरमहेस्सरेविय हवइसुवच्छेविसालेय ॥१॥ हासेहासरईविय सेएयभवेतहामहासेए पयगेप यगपएविज नेयव्वाआणुपुव्वीए ॥ २ ॥ कहिणं भंते ! जोइसियाणं देवाणं पज्जत्ताणं २ ठाणा पन्नत्ता ? कहिणं

णरना पर्यात्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या । तिसुविलोयस्स असंखिज्जःभागे। तीन लोकने असंख्यातमेंभागेहुवे । तत्थणं बहव अणवणिया देवा प रिवसंति महड्ढिया जहा पिसाया जाव विहरंति । तिहां घणा अनेरा व्यन्तरीक देवता वसेछे महर्द्धिक जिम पिशाच तिम विचरेछे । सन्निहिय सा माणिय इत्य अणवर्णिदा अणवणियकुमाररायाणो परिवसंति । सन्निहित सामानिक ए बेइन्द्र अने राजा वसेछे । महड्ढिया जहा काल महाकाला एवं जहा काल महाकाला । महर्द्धिक जिमकाल महाकालनोपरे बेहो उत्तरदक्षिणकह्या । एवं जहा दुण्हवि दाहिणिल्लाण उत्तराणिय भाणिय व्वा । इम जिम सन्निहित सामानिक दक्षिणमधंशो उत्तरसम्बधी कह्या । तहा सन्निहिय सामाणियाणंपि भाणियव्वं । तिम सन्निहित सामानिक भ णिवा ते प्रमाणे सामानिक जांणवा । इमा संघयण गाहा । ए संग्रहण गाथाकहिये । अणवणियपणवणिय इसिवाईयभूयवाइयाचेव । कंदियमहाकंदि य कुहंडपयंगियादेवा ॥ १ ॥ अणपन्नो पणपन्नो ऋषिवादी भूतवादी निचै कंदी महाकन्दी कोहण्डो पतंकाद ए देवताना इन्द्र कहेछे—इमेइंदा । सन्नि हियसामाणिय धाइविधाईयतहयइसिवाले ईसरमहेसरेविय हवईसुवत्थविसालेय ॥२॥ सन्निहित सामानिक धाता विधाता तिम ऋषि ऋषिपाल इं श्वर महेश्वर हुवे सुवत्स विशाल १० । हासेहासरईविय सेण्यभवतहामहासेए पयगेपयगपएविय नायव्वाआणुपुव्वीए ॥ १ ॥ हास्य हास्यरति स्वेत पुनै तिम महास्वेत पतक पतकापत ए १६ इन्द्रअनुक्रमे । कहिणं भंते जोइसियाणं देवाणं पज्जत्ताणं ठाणा पं० । किहां हेभगवन् ज्योतिषीदेवताना ठा

॥ मूल ॥

रूवपुण्णभद्दे य । अमरवइमाणभद्दे भीमेयतहामहाभीमे ॥ १ ॥ किन्नरकिंपुरिसेखलु सप्पुरिसेखलुतहामहा पुरिसे । अइकाएमहाकाए गीयरतिचेवगीयजसे ॥२॥ विहरति कहिणं भंते ! अणवन्नियाणं देवाणं ठाणा पं० । कहिणं भंते ! अणवन्निया देवा परिवसंति गो० ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए रयणामयस्स कंडस्स जोयणसहस्सबाहल्लस्स उवरि हिठायएगं जोयणसयं वज्जित्ता मज्झे अठसु जोयणसएसु अत्थ णं अणवन्नियाणं देवाणं तिरियमसंखिज्जा भवणा वाससयसहस्सा हवंतीतिमक्खायं तेण जाव पडिरूवा एत्थणं अणवन्निया देवाणं ठाणा पं० । उववाएलो समुग्घाएलो सठाणेणंलो तत्थणं अणवन्निया देवा परिवसंति महिड्ढिया जहा पिसाया जाव विहरंति सन्निहियसामाणा इच्छ दुवे अणवन्निंदा अणवन्नि

॥ भाषा ॥

तरति गीतयश । जाव गीयजसा विहरंति गाहा । यावत् गीतयश विचरै गाथा—कालियमहाकाले सुरूवपडिरूवमाणभद्दय अमरवतिमाणभद्दे भीमेय तहामहाभीमे ॥ १ ॥ काल महाकाल सुरूप प्रतिरूप पूर्णभद्र अमरपति माणभद्र भीम तिम महाभीम ८ ॥ १ ॥ किंनरकिंपुरिसेखलु सप्पुरिसेखलुतहा महापुरिसे अइकायमहाकाए गीयरईचेवगीयजसे ॥२॥ किंनर किंपुरुष निश्चै सत्यपुरुष तिम महापुरुष अतिकाय महाकाय गीतरति गीतयश १५ ॥२॥ कहिणंभंते अणपणिग्राणं देवाणं पन्नत्ता २ ण ठा० पं० । किहां हेभगवन् अनेरा व्यन्तरना देवताना ठामकह्या । कहिणं भंते अणवन्नियादेवा परिवसति । किहां हेभगवन् अनेरा व्यन्तर किहां बसै । गोयमा इमीसे रयणप्पभाए पढवीए रयणामयस्सकंडस्स जोयणसयस्स बाहल्लस्स । हेगौतम ए रत्न प्रभापृथिवीने रत्नमयकांड योजनसहस्र जाडपणे । उवरिं जाव अठ्ठसु जोयणसएसु । ऊपरला अठ्ठशतयोजन छांडीने तेमांहि १०० योजन अवकाश । एत्थणं पणिग्राणं देवाणं तिरियमसंखिज्जाणगरावाससयसहस्सा हवंतित्ति मक्खायं तेणं जाव पडिरूवा । ममांहि इहां अनेरा व्यन्तरदेवता तिरछा असंख्याता भूहरानोपरे नगर लाखेगमा कह्या. तीर्थंकरे यावत् प्रतिरूप विचरै । एत्थणं अणवणिताणं देवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पं० । इहां अनेरा व्य

वनविशिषु लोके प्रतीतानि तदन्तरेषु विशिष्टशोभितानि विचित्ररत्नानि यथा तानि तथा पञ्जरात् उन्मीलितमिव बहिष्कृतमिवपञ्जरोन्मीलितवत् तथाहि किल किमपि वस्तु पञ्जरात् वंशादिमयप्रच्छादनविशेषात् बहिष्कृतमत्यन्ताविनष्टच्छायत्वात् शोभते तथा तान्यपि विमानानीति भावः, तथा मणिकनकानां सम्बन्धिनी स्तूपिका शिखरं येषां तानि मणिकनकस्तूपिकाकानि ततः पूर्वपदाभ्यां सह विशेषणसमासः, तथाविकसितानि यानि शतपत्राणि पौण्डरीकानि च द्वारादौ प्रतिकृतित्वेन स्थितानि तिलका श्च भित्यादिषु पुण्ड्राणि रत्नमया श्च द्वंद्वाद्वारादिषु तैश्चित्राणि विकसितशतपत्रपुण्डरीकतिलकरत्नार्द्धचन्द्रचित्राणि, तथा नानामणिमयीभि र्दामभि रलंकृतानि नानामणिमयदामालंकृतानि, तथा अन्तर्बहिश्च श्लक्ष्णानि मसृणानि तथा तपनीयं सुवर्णविशेष स्तन्मय्या रुचिराया वालुकायाः प्रस्तटः प्रतरो येषु तानि तपनीयरुचिरवालुकाप्रस्त

विजयवेजयंतीपडागाच्छत्ताइच्छत्तकलिया तुंगा गगनतलमहिलंघमाणसिहरा जालंतररयणपंजरुम्मीलियव्व मणिकणगथूभियागा वियसियसयवत्तपोंडरीया तिलगरयणद्धचंदचित्ता नानामणिमयदामालंकिया अंतो बहिं च सण्हा तवणिज्जरुइलवालुया पच्छडा सुहफासा सस्सिरीयरूवा पासाईया दरसणिज्जा अभिरूवा

तेणेकरी धवलीप्रभा विस्तरीछे सघले अनेक मणिकणकना रत्नना भायवंकारी भीतें चित्रांम जेहतें वायें प्रेरी हलायो विजय अभ्युदय तेहनो करतार विजय वैजयंती पार्श्वकर्णिकानामे पताकाछे तिहां। छत्ताइछत्तकणिया तुंगा गगणतल मभिलंघमाणसिहरा जालंतर रयणपंजरुम्मिलियव्व मणिकणथूभियागा। छत्र ऊपर छत्रसहितछे ऊंचा गगनतल लघता एहवा ऊंचा शिखरछे जेहना तथा जालांतर पांजरा वांगनीजाली मणिमय गवाक्ष। वियसियसयवत्त पोंडरीया तिलयरयणचंदलित्ता नाणामणिमयदामालंकिया। विकस्या शतपत्रपरीखो भीतछे जिहां तिलकरत्न अर्द्धचंद्राकार द्वारे एहवा चित्रामछे जिहां अनेकमणिमय अलंकृतके चित्रामछे जिहां अनेक मलङ्कतछे मांहि। अंतोबाहिंच सण्हा। बाहिर सुकमालछे। तवणिज्जरुइलवालुया पत्थडा सुहफासा सस्सिरीया सुरूवा पासाईया दरसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा। तपनीय सोनानीपरे मनोहर प्रतर

दिक्षु प्रसृता याः प्रभा दीप्ति स्तया सितानि धवलानि अभ्युद्गतोत्सृतप्रभासितानि, तथा विविधानां मणिकनकरत्नानां या भक्तयो विच्छित्तिविशेषा स्ताभि श्चित्राणि आश्चर्यभूतानि विविधमणिकनकभक्तिचित्राणि॥ वाउद्धुयविजयवेजयंतीपडागच्छत्तातिच्छत्तकलिया वातोद्धूता वायुकम्पिता विजयोऽभ्युदय स्तत्संसूचिका वैजयंत्यभिधाना याः पताका अथवा विजयइति वैजयंतीनां पार्श्वकर्णिका उच्यते तत्प्रधाना वैजयंत्यः पताका स्ता एव विजयवैजयंत्यः पताकाः छत्रातिच्छत्राणि उपर्युपरि स्थितानि छत्राणि तैः कलितानि वातोद्धूतविजयवैजयंतीपताकाछत्रातिछत्रकलितानि तुङ्गानि उच्चानि तथा गगनतलमं बरतलं अनुलिखन् अभिलङ्घयन् शिखरं येषां तानि गगनतलानुलिखच्छिखराणि तथा जालानि जालकानि तानि च भ

भंते! जोइसिया परिवसंति? गो०! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ सत्तणउए जोयणसए उड्ढं उप्पइत्ता दसुत्तरं जोयणसयं बाहल्ले तिरियमसंखिज्जे जोइसविसए एत्थणं जोइसियाणं देवाणं तिरियमसंखिज्जा जोइसियविमाणावाससयसहस्सा हवंतीतिमक्खायं तेणं विमाणा अद्धकविठग संठाणसंठिया सव्वफालियामया अब्भुग्गयमुसियपहसियाइव विविहमणिकणगरयणभत्तिचित्ता वाउद्धुत

मकह्या। कहिणं भंते जोइसिया देवा परिवसंति। किंहां हे भगवन् ज्योतिषीदेवता वसेछे। गोयमा इमीसेरयणप्पभाएपुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ सत्तनउएजोयणसए उड्ढं उपइत्ता। हेगौतम ए रत्नप्रभापृथिवीथकी घणीं रमणीक भूमिभागछे तेहथकी सातसे नेउअयोजन ऊंचाछे। दसुत्तरंजोयणसयं बाहल्ले तिरियमसंखिज्जे जोइसियविसए पं०। ते तिहां ११० योजनमांहि तिछा असंख्याता ज्योतिषीना वासाकह्या। एत्थणं जोइसियाणं देवाणं तिरियमसंखिज्जा जोइसियविमाणावाससयसहस्सा हवंतित्तिमक्खायं। इहां ज्योतिषीदेवना तिरछा असंख्याताना ज्योतिषीनाविमान लाखांगमे तीर्थंकरे कह्या। तेणं विमाणा अद्धकविट्ठगसंठाणसंठियाणं सव्व फलिहमया। तेहनां विमांन अर्द्धकोठ संस्थान संस्थितछे सर्वफटिक रत्नमयछे तथा। अब्भुग्गयमूसियपहसियाइव विविहमणि कणगरयण भत्तिचित्ता वाउद्धुयविजयवैजयंतीपडागा। आसीकर्षं विनिर्गत प्रवर सवलो दिग्विसंबंधीछे दीपित

॥ टीका ॥

मुकुटे येषां ते प्रत्येकंस्वनामाङ्कप्रकटितचिह्नमुकुटाः किमुक्तं भवति चंद्रस्य स्वमुकुटे चंद्रमण्डलं लांछनं स्वनामांकितप्रकटितं सूर्यस्य सूर्यमण्डलं ग्रहस्यग्रहमण्डलं नक्षत्रस्य नक्षत्राकारं तारकस्य तारकाकारमिति। वैमानिकसूत्रे चतुरशीतिविमानलक्षाणि सप्तनवतिविमानसहस्राणि त्रयोविंशतिविमानानीति ॥ बत्तीसअठावीसा बारसअठ चउरोसयसहस्साइत्यादि ॥ सख्यामीलनेन परिभावनीयानि॥ तेणं मिगमहिसेत्यादि॥ सौधर्मदेवा मृगरूपप्रकटितचिह्नमुकुटाः, ईशानदेवामहिषरूपप्रकटितचिह्नमुकुटाः, सनत्कुमारदेवा वराहरूपप्रकटितचिह्नमुकुटाः, माहेंद्रदेवाः सिंहरूपप्रकटितमुकुटचिह्नाः, ब्रह्मदेवलोकाः छगलरूपप्रकटितमुकुटचिह्नाः, लांतकदेवा दर्दुररूपप्रकटितमुकुटचिह्नाः, शुक्रकल्पदेवा हयमुकुटचिह्नाः, सहस्रारकल्पदेवा गजपतिमुकुटचिह्नाः, आनतकल्पदेवा भुजगमुकुटचिह्नाः, प्राणतकल्पदेवाः खड्गमुकुटचिह्नाः, खड्गश्चतुष्पदविशेष आटव्यः आरणकल्पदेवा वृषभमुकुटचिह्नाः, अच्युतकल्पदेवा विडिममुकुटचिह्नाः॥ वरकुंडलुज्जोवियाणणाइति॥ वराभ्यां कुण्डलाभ्याम् द्योतितं भास्वरीकृत माननं येषां ते तथा शेषं सुगमं-सौधर्मकल्पसूत्रं। अचिमालीभासिवन्नाभे इति ॥ वज्जपाणी इति ॥ वज्रं पाणावस्य इति वज्रपाणिः असुरादिपुराणां दारणात् पुरंदरः॥ सय

॥ मूल ॥

यचिंधमउडा महिड्ढिया जावप्पभासेमाणा तेणं तत्थ साणं २ विमाणावाससयसहस्साणं साणं २ सामाणियसाहस्सीणं साणं २ अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं साणं २ परिसाणं साणं २ अणियाणं साणं २ अणि

॥ भाषा ॥

एतले सूर्यमण्डल लछन सर्व ते कहिवो सोभाव चन्द्रनो चन्द्रमण्डलनो मुकुटचिन्हके मर्डिक यावत् प्रभासहित ते। तेणं तत्थ साणं विमाणावाससयसहस्साणं। तिहां आप आपणेविमाने लाखागमेकरी। साणं २ सामाणियसाहस्सीणं। आप आपण सामानिकसहस्रेकरी। साणं २ अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं। आप आपणी अग्रमहिषीयेकरी सपरिवारे। साण २ परिसाणं साण २ अणियाणं साण २ अणियाहिवईणं साणं २ आयरक्खदेवसाहस्सीणं। आप आपणे परषदासहित आपआपणा अनीकेकरी आप आपणी अनीकाधिपते तिणेसहित आप आपणे आत्मरक्षकदेवे सहस्रेकरी। अन्नेसिंच बहूणं जोयसियाणं देवाणंय देवीणय आहेवच जाव विहरंति। अनेरा घणां ज्योतिषीना देवताना देवीनो अधिपतिपणो यावत् विचरेछे। चंद्रसूरो

टानि तथा सुस्वरपर्शानि शुभस्पर्शानि वा शेषं प्राग्वत् यावत् वहस्सईचंदा ॥ वृहस्पतिचंद्रसूर्यशुक्रशनैश्चरराहुधूमकेतुबुधांगारकाः कथंभूता ॥ टीका ।
इत्याद्-तप्ततपनीयकनकवर्णा ईषद्रक्तवर्णाः तथा ये ग्रहा उक्तव्यतिरिक्ता ज्योतिष्के ज्योतिश्चक्रे चारं चरंति केतवो ये च गतिरतिका ये चाष्टा
विंशतिविधा नक्षत्रा देवगणा स्ते सर्वेपि नानासंस्थानसंस्थिता श्च चशब्दात्तप्ततपनीयकनकवर्णाः तारकाः पञ्चवर्णाः एते च सर्वेपि स्थितलेश्या
अवस्थिततेजोलेश्याका स्तथा ये चारिण श्चाररता स्ते अविश्राममण्डलगतिका स्तथा सर्वेपि प्रत्येकं नामांकेन स्व २ नामांकेन प्रकटितं चिह्नं

पक्रिरूवा एत्थणं जोइसियाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पं०, तिसुविलोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थणं बहवे ॥ मूल ॥
जोइसिया देवा परिवसंति तं०-वहस्सईचंदासूरासुक्कासणिच्छराराहूधूमकेतुबुधाअंगारगा तत्ततवणि
ज्जकणगवन्ना जेगहा जोइसंमि चारं चरंति केत्तूयगतिरइया अठावीसइविहाय नक्खत्ता देवयगणा ना
णासंठाणसंठियाउय पंचवन्नाउ तारयाउ ठवियलेस्साचारिणो अविस्साममंडलगई पत्तेयं णामंकपगडि

प्रत्यक्षसुख स्पर्शछे सश्रीकछे सुरूपदेवता देखवायोग्य अभिरूप संमुख प्रतिरूप । यत्थणं जोइसियाणं देवाणं पज्जत्तापं ठा० पं० । इहां ज्योतिषीना प ॥ भाषा
र्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या । तिसलोयस्स असंखिज्जइभागे । तीन योललोकने असख्यातमेंभागे छे । तत्थणबहवे जोइसिया देवा परिवसंति तं० ।
तिहां घणाज्योतिषीदेवता वसेछे तकहेछे । वहस्सइ चंदासूरा सुका सणिसरराहू धूमकेउ बुहा अंगारका तत्ततवणिज्ज कणगवन्नाभा । बृहस्पति चन्द्र
सूर्य शुक्र शनैश्चर राहू धूमकेतु बुध मंगल वले केहवाछे तपत तपनीय कनकवर्णछे । जेग्गहा जेयसंमि चारचरंति कइंयाइं वगयरइंया । जं ग्रह
ज्योतिषीचार चालेछे गतिकरी सुखमानेछे एहवा । अठ्ठवीसइविहाय नक्खत्त देवगणाओ नाणासंठाणसंठियाओ । २८ नक्षत्र आदिदेवताना आदिसमू
ह आकार अनेकसंस्थितछे । पंचवणाओ तारयाओ ठियलेसचारिणो । तारा पञ्चवर्णकरी अवस्थितछे तथा ते चाररतछे । अविस्सामामंडल गइपत्तेयना
मंकिय पगडियचिधमउडा मंहिड्डिया जाव पभासेमाणा । ते विसामाविना मांडलानीगति फिरता प्रत्येके २ स्वनामाङ्कित प्रकट मुकुट चिन्हछे जेहने

णिज्जाउ भूमिभागाउ उड्ढं चंदिमसूरियगहनक्खत्ततारारूवाणं बहूइं जोयणसयाइं बहूइं जोयणसहस्सा इं बहुगाउ जोयणकोडीउ बहुगाउ जोयणकोडाकोडीउ उड्ढं दूरं उप्पइत्ता एत्थणं सोहम्मीसाणसणंकुमारमाहिंदबंभलोगलंतगमहासुक्कसहस्सारआणयपाणयआरणअच्चुयगेविज्जाणुत्तरेसु तत्थ एत्थणं वेमाणियाणं देवाणं चउरासीविमाणसयसहस्सा सत्ताणउइंचसहस्साइं तेवीसं विमाणा हवंतीतिमक्खायं तेणं विमाणा सव्वरयणामया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा नीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पहा सस्सिरीया सउज्जोया पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा इत्थणं वेमाणियाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पं० तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थणं बहवे वेमाणिया देवा परिवसंति तं०—सोह

दूरं उप्पइत्ता । घणां जोजननी कोडाकोडी ऊंचा उपाडी जाय । एत्थणं सोहम्मीसाणं सणंकुमार माहिंद बंभलोय लातग महासुक्क सहस्सार आणय पाणय आरण अच्चुय गेविज्ज अणुत्तरेसु । इहां सौधर्म ईशान सनत्कुमार माहेंद्र ब्रह्मलोक लांतक महाशुक्र सहस्सार आनत प्राणत आरण अच्युत ग्रैवेयक ८ अनुत्तर ५ । एत्थणं वेमाणियाणं देवाणं चउरासीतिविमाणावाससयसहस्सा सत्ताणउयंचसहस्सातिवीस विमाणाहवंतित्तिमक्खाय । तिहां वैमानिकदेवताना ८४ लाखविमान ऊपर सताणुहजार अनें वली ते वीस एतली विमाननीसख्या कहीछे वीतरागें कह्यो । तेणविमाणा सव्वरयणामया । तेविमान सर्वं रत्नमयछे । अच्छा सण्हा घट्ठामट्ठा नीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडछाया सप्पभा सस्सिरीया सउज्जोइया पासाइया दरसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा । सूक्ष्म घठारा मठारा नीरजा निर्मल निःपङ्क कचरानी प्राप्ति नथी प्रभासहित सश्रीक उद्योतसहित मनप्रसन्नकारी जोयवायोग्य अभिरूप प्रतिरूप । एत्थणं वेमाणियाणं देवाणं पज्जत्ताणं २ ठा० पं० । इहां वैमानिकदेव पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठाम कह्या । तिसुविलोयस्स असंखिज्जइभागे । तीन लोकने असख्यातमेभागे । तत्थणं बहवे वेमाणिया देवाणं परिवसंति तं० । तिहां घणां वैमानिकदेवता वसेछे । सोहम्मीसाण स

याहिवईणं साणं २ आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिंचबहूणं जोइसियाणं देवाणय देवीणय आहेवच्चं जाव विहरंति चंदिमसूरियाय एत्थ दुवे जोइसिंदा जोइसियरायाणो परिवसंति महिड्ढिया जाव पभासेमाणा ते णं तत्थ साणं २ जोइसियविमाणावाससयसहस्साणं चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं चउण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणियाणं सत्तण्हं अणियाहिवईणं सोलसण्हं आयरक्खदेवसाहस्सीणं जोइसियाणं देवाणय देवीणय आहेवच्चं जाव विहरंति। कहिणं भंते ! वेमाणियाणं देवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पं० ? कहिणं भंते ! वेमाणियादेवा परिवसंति ? गो० ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरम

याय इत्थदुवे जोइसिंदा जोइसिरायाणो परिवसंति । चन्द्रमा सूर्य एदोय इहां ज्योतिषीदेवतारो राजपणो वसैछे। महर्द्धिया जाव पभासेमाणा । सर्द्धिक यावत् प्रभासहितथका । तेण तत्थसाणं जोइसियविमाणावास सयसहस्साणं । ते तिहां आपणा ज्योतिषीनाविमान लाखागमेंकरो । चउ वहं सामाणियसाहस्सीण चउण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं तिण्हंपरिसाणं सतण्हं अणियाणं सतण्हं अणिआहिवईणं सोलसण्हं आयरक्ख दे वसाहस्सीण अन्नेसिंचबहूणं जोइसियाणं देवाणय देवीणय आहेवच्चं जाव विहरंति । चार अग्रमहिषीयेंकरो सपरिवारें नीतिपरिषदायेंकरो ७ अनी केंकरो ७ अनीकाधिपतियेंकरो सोलेहजार आत्मरक्षदेवेंकरो अनेराघणां ज्योतिषीना देव देवीना अधिपतिपणे यावत् विचरै। कहिणंभंते वेमाणियाणं पज्जत्ता २ णं ठा० प० । किहां हेभगवन् वैमानिक पर्याप्ता अपर्याप्तानां ठामकह्या । कहिणं भंते वेमाणियादेवा परिवसंति । किहां हेभगवन् विमान वासो वसेछे । गोयमा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ उड्ढं चंदिम सूरिय गहगणणक्खत्ततारारूवाणं । हेगौतम ए रत्न प्रभावे घणो समोरमणीक भूमिभागथी उंचो चन्द्र सूर्य ग्रहगण नक्षत्र ताराकप घणां योजनना सैकडा । बहूइं जोयणसहस्साइं बहूइं जोयणसयस हस्साइं बहूइं जोयणकोडीओ । घणांयोजनना सैकडा घणां योजननो शतसहस्र लाखे घणांयोजननी कोडी । बहुगीओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढं

॥ मूल ॥

णिज्जाउ भूमिभागाउ उड्ढं चंदिमसूरियगहनक्खत्ततारारूवाणं बहूइं जोयणसयाइं बहूइं जोयणसहस्सा
इं बहूगाउ जोयणकोडीउ बहूगाउ जोयणकोडाकोडीउ उड्ढं दूरं उप्पइत्ता एत्थणं सोहम्मीसाणसणंकु
मारमाहिंदबंभलोगलंतगमहासुक्कसहस्सारआणयपाणयआरणअच्चुयगेविज्जणुत्तरेसु तत्थ एत्थणं वेमाणि
याणं देवाणं चउरासीविमाणसयसहस्सा सत्ताणउइंचवेसहस्साउ तवीसं विमाणा हवंतीतिमक्खायं तेणं वि
माणा सव्वरयणामया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा नीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पहा
सस्सिरीया सउज्जोया पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा इत्थणं वेमाणियाणं देवाणं पज्जत्ताप
ज्जत्ताणं ठाणा पं० तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थणं बहवे वेमाणिया देवा परिवसंति तं०—सोह

॥ भाषा ॥

दूरं उपइत्ता। घणां वाजननी कोडाकोडी ऊंचा उपाडो जाय। एत्थणं सोहम्मीसाणं सणंकुमार माहिंद बंभलोय लातग महासुक्क सहस्सार आणय
पाणय आरण अच्चुय गेविज्ज अणुत्तरेसु। इहां सौधर्म ईशान सनत्कुमार माहेंद्र ब्रह्मलोक लांतक महाशुक्र सहस्सार आनत प्राणत आरण अच्युत ग्रै
वेयक ८ अनुत्तर ५। एत्थणं वेमाणियाणं देवाणं चउरासीतिविमाणावाससयसहस्सा सत्ताणउयंचसहस्सातिवीस विमाणाहवंतित्तिमक्खाय। तिहां वैमा
निकदेवताना ८४ लाखविमान ऊपर सताणुहजार अने वले ते वीस एतलो विमाननीसंख्या कहीछे वीतरागे कह्यो। तेणविमाणा सव्वरयणामया।
तेविमान सर्व रत्नमयछे। अच्छा सण्हा घट्ठामट्ठा नीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पभा सस्सिरीया सउज्जोया पासाइया दरसणिज्जा अभि
रूवा पडिरूवा। सूक्ष्म घठारा मठारा नीरजा निर्मल निःपङ्क कचरानी प्राप्ति नथी प्रभासहित सश्रीक उद्योतसहित मनप्रसन्नकारी जोवायोग्य
अभिरूप प्रतिरूप। एत्थणं वेमाणियाणं देवाणं पज्जत्ताणं २ ठा० पं०। इहां वैमानिकदेव पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठाम कह्या। तिसुविलोयस्स असंखि
ज्जइभागे। तीन लोकनें असंख्यातमेभागे। तत्थणं बहवे वेमाणिया देवाणं परिवसंति तं०। तिहां घणां वैमानिकदेवता वसेछे। सोहम्मीसाण स

॥ ८ ॥

मूल

सीसाणसणंकुमारमाहिंदबंभलोगलंतगमहासुक्कसहस्सारआणयपाणयआरणअच्चुयगेवज्जगाणुत्तरोववाइया देवा तेणं मियमहिसवराहसीहछगलदद्दुरहयगयवइभुयगखग्गउसभंकविडिमपागडियचिंधमउडा पसढिल वरमउडतिरीडधारिणो वरकुंडलुज्जोइयाणणा मउडदित्तसिरया रत्ताभा पउमपम्हगोरा सेया सुहवण्णगं धफासा उत्तमवेउव्विणो पवरवत्थगंधमल्लाणुलेवणधरा महिड्ढिया महज्जुइया महायसा महाबला महाणुभा गा महासोक्खा हारविराइयवच्छा कडगतुडियथंभियभुया अंगदकुंडलमट्ठगंडतलकण्णपीढधारी विचित्त

भाषा

…कुमार माहेंद्र ब्रह्मलोक लांतक महाशुक्र सहस्रार आणत प्राणत आरण अच्युत ग्रैवेयक अनुत्तरोववाइया देवा। सौधर्म ईशान सनत्कुमार माहेंद्र ब्रह्म लोक लांतक महाशुक्र सहस्रार आनत प्राणत आरण अच्युत ग्रैवेयक अनुत्तरोपपातिक देवता वसे छे। तेण मिग महिष वराह सींह छगल दादुर ह यगय भुयग खग्ग उसभ कविडि पगडिय चिंधमउडा। तेहना चिन्ह कहे छे— मृग महिष वराह सींह छाग दर्दुर अश्व गज भुजग खड्ग वृषभ छोकडा ए १२ देवलोकना प्रधान चिन्ह। सढिलवरमउड तिरीडधारणा वरकुंडल उज्जोयआणणा। उनकना प्रधानमुकुट तिरीटमाह आभरण धरया कुंडलेक री उद्योत जेहना। मउडदित्तसिरयारत्ताभा वरपम्हभगोरासेयासुहवण्ण गंध फासा। मुकुटेकरी मस्तकरता पद्मनीपरे गौरदेह श्वेत शुभवर्ण गंधस्प र्श। उत्तमविउव्विणापवरवत्थगंध मल्लालंकारेणं। उत्तमरूडी विकुर्वणा जेहनी प्रवरवस्त्र गंधमालाविलेपनना धरणहार। महड्ढिया महायसा महाणु भागा महासुक्खा हारविरायवत्था कडयतुडियथंभियभुया। महर्द्धिक महायशवन्त महाभागी महासुखी हारेकरी विराजमान होयो कडा बहेरखा तिणेकरी थंभ्या छे भुज। अंगयकुंडलमट्ठगडपीठधारी विचित्तहत्थाभरण विचित्तमाला मउल कल्लाणगपवर वत्थ परिहिया। अंगद बांहाभरणकुंडल तिणे करी कर्णपीठधारता विचित्र आभरण धरा छे विचित्रमाला मुकुट कल्याणकारक वस्त्र पहिरा छे। कल्लाणग पवरमल्लाणुलेवणा भासुरबोंदीपलंब व णमालधरा। कल्याणकारी विलेपनकीधां छे भासुरदेदीप्यमानबोंदी प्रलंबमाला धारी छे। दिव्वेणं गंधेणं दिव्वेणं वण्णेणं दिव्वेणं फासेणं दिव्वेणं संघयणेणं

॥ मूल ॥

हत्थाभरणा विचित्तमालामउलीकल्लाणपवरवत्थपरिहिया कल्लाणगपवरमल्लाणुलेवणा भासुरबोंदीपलंबव णमालधरा दिव्वेणं वन्नेणं दिव्वेणं गंधेणं दिव्वेणं फासेणं दिव्वेणं संघयणेणं दिव्वेणं संठाणेणं दिव्वाए इड्ढीए दिव्वाए जूईए दिव्वाए पभाए दिव्वाए छायाए दिव्वाए अच्चीए दिव्वेणं तेएणं दिव्वाए लेसाए दसदिसाओ उ ज्जोवेमाणा पभासेमाणा तेणं तत्थ साणं २ विमाणावाससयसहस्साणं साणं २ सामाणियसाहस्सीणं सा णं २ तायत्तीसगाणं साणं २ लोगपालाणं साणं २ अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं साणं २ परिसाणं साणं २ अणियाणं साणं २ अणियाहिवईणं साणं २ आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं च बहूणं वेमाणियाणं

॥ भाषा ॥

दिव्येण संठाणेणं । दिव्यगंध दिव्यस्पर्शेकरी दिव्य संघयणेकरी दिव्यसंस्थानेकरी । दिव्वाएइड्ढीए दिव्वाएजूइए दिव्वाएपभाए दिव्वाएछायाए दिव्वाएअ च्चीए दिव्वेणतेएणं दिव्वाएलेस्साए । दिव्यऋद्धिकरी दिव्यद्युतिकरी दिव्यप्रभायेंकरी दिव्यछायायेंकरी दिव्यकिरणेंकरी दिव्यतेजेंकरी दिव्यलेश्यायेंकरी । दसदिसाओ उज्जोएमाणा पभासेमाणा । दश दिशिनेविषे उद्योतकरता प्रभाकांत विस्तारताथका । तेणं तत्थसाणं विमाणआवाससयसहस्साणं । ते ति हां आपआपणांविमानने लाखगमेंकरी । साणं २ सामाणियसाहस्सीणं साणं २ तायत्तीसगाणं साणं २ लोगपालाणं साणं २ अग्गमहिसीणं सपरिवारा णं । आपआपणां सामानिकसहस्रेंकरी आपआपणां त्रायस्त्रिंशकेंकरी आपआपणां लोकपालेंकरी आपआपणा अग्रमहिषायेंकरी सपरिवारें । साणं२ परि साणं साणं २ अणियाणं साणं २ अणियाहिवईणं साणं २ आयरक्खदेवसाहस्सीणं । आप आपणी परिषदायेंकरी आप आपणी अनीकेंकरी आप आप णी अनीकाधिपतेंकरी आपआपणां आत्मरक्षकसहस्रेंकरी । अन्नेसिंचबहूणं वेमाणियाणं देवाणं देवीणय आहेवच्च पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं । घनेरापणां वैमानिकदेवता देवीना अधिपतिपणें पौराधिकपणें स्वामीथका बडाईधरताथका । आणाईसरसेणावच्चं कारेमाणा पालेमाणा । आज्ञा ई श्वरपणे पलावता करता पालता । महयाहयनट्टगीयवाईयतंतीतलतालतुडिय घणमुयंग पडुप्पवाईयरवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरंति ।

॥ मूल ॥

देवाणं देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणाईसरसेणावच्चं कारेमाणा पालेमाणा महयाहयनट्टगीयवाइयतंतीतलतालतुडियघणमुइंगपडुप्पवाइयरवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विह रंति । कहिणं भंते ! सोहमगदेवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पं० कहिणं भंते ! सोहम्मगदेवा परिवसंति ? गो० ! जंबूद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभा गाओ उड्ढं चंदिमसूरियगहगणनक्खत्ततारारूवाणं बहूणि जोयणसयाइं बहूणि जोयणसहस्साइं बहूणि जोयण सयसहस्साइं बहुगाओ जोयणकोडीओ बहुगाओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढं दूरं उप्पइत्ता एत्थणं सोहम्मे ना मं कप्पे पन्नत्ते पाईणपडीणायते उदीणदाहिणविच्छिन्ने अद्धचंदसंठाणसंठिए अच्चिमालिभासरासिवन्ना

॥ भाषा

संटानृत्य गीत वाजित्र तंत्री तल ताल त्रुटित घणमृदङ्ग पटह वाजित्रने शब्देकरी दिव्य भोगवतायका विचरेछे । कहिणंभंते सोहम्मगदेवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पं० । किहां हेभगवन् सौधर्मदेवताना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या । कहिणंभंते सोहम्मगदेवा परिवसंति । किहां हेभगवन् सौधर्मदेवता व सेछे । गोयमा जंबूद्दीवे २ मंदरस्सपव्वयस्स दाहिणेणं । हेगौतम जंबूद्वीपनामा द्वीपनेविषे मेरुपर्वत दक्षिणपासे । इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहु स मरमणिज्जाओ भूमिभागाओ । ए रत्नप्रभापृथिवीथकी घणीं समारमणीक भूमिभागथकी ऊंचा । चंदासूरियाओगहगणणक्खत्ततारारूवाणं । चन्द्र सूर्य ग्रहगण नक्षत्र तारा रूपथी । बहूणि जोयणसयाइं जाव बहुगीओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढंदूरं उप्पइत्ता । योजननासय जांलगे यावत् घणांयोजननी कोडाकोडी ऊंचा उपाडो जे । एत्थणसोहम्मेनामंकप्पे पं० । तिहां सौधर्मनामे कल्पकह्यो । पाईण पडीणाई० उदीणदाहिणविच्छिण्णे अद्धसंठाण संठिया । पूर्व पश्चिमलांबो उत्तर दक्षिण पिहुलोछे अर्द्धचन्द्रसंस्थाने संस्थितछे । अच्चीमाली भासिरासिवण्णाभे । किरणनीश्रेणी सहितछे भासुरासने वर्णने तेजसरी खोछे । असंखिज्जाओ जोयणकोडीओ असंखिज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ आयामविक्खंभेणं । असंख्यातायोजननी कोडी असंख्यातायोजननी कोडा

॥ मूल ॥

जे असंखेज्जाउ जोयणकोडीउ असंखेज्जाउ जोयणकोडाकोडीउ आयामविक्खंभेणं असंखेज्जाउ जोयण कोडाकोडीउ परिक्खेवेणं सव्वरयणामए अच्छे जाव पडिरूवे तत्थणं सोहम्मगदेवाणं बत्तीसं विमाणावास सयसहस्सा हवंतीतिमक्खायं तेणं विमाणा सव्वरयणमया अच्छा जाव पडिरूवा तेसिणं विमाणाणं ब हुमज्झदेसभाए पंचवडंसएया पं० तं—असोगवडंसए सत्तवन्नवडंसए चंपगवडंसए चूयवडंसए मज्झे तत्थ सोहम्मवडंसए तेणं वडंसया सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा, एत्थणं सोहम्मगदेवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पं०, तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थणं बहवे सोहम्मगदेवा परिवसंति महिड्ढिया जाव पभा सेमाणा तेणं तत्थ साणं २ विमाणावाससयसहस्साणं साणं २ अग्गमहिसीणं साणं २ सामाणियसाहस्सी

॥ भाषा ॥

कोडी लांबपणे पिहुलपणे। असंखिज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ परिक्खेवेणं पं०। असंख्यातायोजननो कोडाकोडी परिधछे चोफेर। सव्वरयणामए अच्छे जाव पडिरूवे। सर्वं रत्नमयछे निर्मल जालगे प्रतिरूप। तत्थणं सोहम्मगदेवाणं बत्तीसं विमाणावाससयसहस्साइवंतीत्तिमक्खायं। तिहां सौधर्मना मदेवताना ३२ लाखविमान तीर्थंकरे कह्यां। तेणंविमाण सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा। ते विमाण सर्वरत्नमयछे निर्मल यावत् प्रतिरूप। तेणं विमाणाणं बहुमज्झदेसभाए पंचवडंसिया पं०। ते विमानने घणों मध्यदेशभागे मोटा पांच वतंशकविमान कहेछे—असोगवडंसए सत्तवन्न व० चंप गव ० चूय व० मज्झे इत्थ सोहम्मव०। अशोकवतंशक सप्तपर्ण व० चम्पक व० चूतवतंशक विचे इहां सौधर्मावतंशक ५। तेणंवडिंसिया सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूया। ते वतंशकविमान सर्वं रत्नमय निर्मल यावत् तेहने तुल वीजोरूपनथी। एत्थणं सोहम्मग देवाणं पज्जत्ता २ ठाणा प०। इहां सौधर्मदेवताना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या। तिसुविलोयस्स असंखिज्जइभागे। तीन वोललोकने असंख्यातमेभागे। तत्थणं बहवे सोहम्मगदेवाण परिवसंति। तिहां घणां सौधर्मदेवता वसेछे। महड्ढिया जाव पभासेमाणे। महर्द्धिक यावत् प्रभासहित। तेणं तत्थ साण २ विमाणावाससयसहस्सा

॥ टीका ॥

क्रतुइति॥ शतं क्रतूनां प्रतिमानाम भिग्रहविशेषाणां श्रमणोपासकपञ्चमप्रतिमारूपाणां वा कार्त्तिकश्रेष्टित्वापेक्षया यस्या सौशतक्रतुः॥ सहस्सक्खे इति॥ सहस्रमक्ष्णां यस्या सौ सहस्राक्षः इंद्रस्य हि किलमंत्रिणां पञ्चशतानि संति तदीयानां चाक्ष्णा मिंद्रप्रयोजनव्यावृततया इंद्रसंबंधित्वेम विवक्षणात् सहस्राक्षत्वमिंद्रस्य॥ मघवंइति॥ मघामहामेघा स्ते यस्य वशे संति समघवाम् तथा पाको नाम बलवान् रिपुः स शिष्यते निराक्रियते येन सः पाकशासनः॥ अरयंवरवत्थधरे॥ अरजांसि रजोरहितानि स्वच्छतया अंबराणि वस्त्राणि धारयंतीति अंबरवस्त्रधरः॥ आलइयमालमउडेइति॥ माला च मुकुटश्च मालामुकुटं मालगित माविद्धं मालामुकुटं येन स आलगितमालामुकुटं॥ नवहेमचारुचित्तचंचलकुंडलविलिहिज्जमाणगंडे॥ नवमिव अत्युत्कटचारुवर्णतया प्रत्यग्रमिव हेम यत्र ते नवहेमनी नवहेमभ्यां चारुचित्राभ्यां चंचलाभ्यां कुंडलाभ्यां विलिख्यमानौ गंडौ यस्य स तथा स

॥ सूत्र ॥

णं एवं जहेव उहियाणं तहेव एतेसिंपि भाणियव्वं जाव आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं च बहूणं सोहम्मगकप्पवासीणं वेमाणियाणं देवाणं देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं जाव विहरंति । सक्के इत्थ देविंदे देवराया परिवसइ वज्जपाणी पुरंदरे सयक्कउ सहस्सक्खे मघवं पाकसासणे दाहिणड्ढलोगाहिवई बत्तीसविमाणवाससयसहस्साहिवई एरावणवाहणे सुरिंदे अरयंवरवत्थधरे आलइयमालमउडे नवहेमचारुचित्तचंचल

॥ भाषा ॥

णं माणं २ सामाणियसाहस्सीणं एवं जहेव ओहियाणं तहेव एएसिंपि भाणि० । ते इहां आपआपणां विमानना लाखगमे करी आपआपणां सामानिकसहस्रेंकरी इम जिम ओघनेविषै कह्यो तिम सर्व इहां कहिवो । जाव आयरक्खदेवसाहस्सीणं अणेसिंचबहूणं सोहम्मगकप्पवासीणं वेमाणियाणं देवाण य देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं जाव विहरंति । यावत् आत्मरक्षकना सहस्र अनेराघणां सौधर्मकल्पनावासी वैमानिक अनेक देवता देवीनो अधिपतिपणे यावत् विचरे। सक्के इत्थ देविंदे देवरायाणो परिवसंति । शक्र तिहां देवतारो राजादेवेन्द्र वसेछे वज्रपाणीपुरंदरे सयक्कउसहस्सक्खे। वज्रकरी पुरंदर असुरेनाश करविदारे ते शतक्रतु कार्त्तिकसेठभवे सोवार प्रतिमा पूर्व सहस्रनेत्रधणी सहस्राक्ष । मघवं पाकसासणे दाहिणड्ढलोगाहिवइ बत्तीसविमाणा

॥ टीका ॥

नत्कुमारकल्पे–सपक्खं सपडिदिसिंति ॥ समानाः पक्षाः पूर्वापरदक्षिणोत्तररूपाः पार्श्वा यस्मिन् दूरमु त्पतने तत्सपक्षं समानस्य धर्मादिषु चेतिस मानस्य सद्भावः ॥ सपडिदिसिंति ॥ समानाः प्रतिदिशो विदिशो यत्र तत्सप्रतिदिक् सामानिकसंग्रहणिगाथा–चउरासीइत्यादि ॥ सौधर्मेंद्रस्य चतुर शीतिसामानिकसहस्राणि ईशानेंद्रस्या शीतिः सनत्कुमारस्य द्वासप्ततिः माहेंद्रदेवराजस्य सप्ततिः ब्रह्मलोकेंद्रस्य षष्टिः लांतकेंद्रस्य पंचाशत् महा शुक्रेंद्रस्य चत्वारिंशत् सहस्रारेंद्रस्य त्रिंशत् आनतप्राणतेंद्रस्य दशसामानिकसहस्राणि ॥ अवतंसकाशातिदेशेनोक्ताइति दुरवबोधा सतो विने

॥ मूल ॥

कुंडलविलिहिज्जमाणगंडे महिड्ढिए जाव पभासेमाणे सेणं तत्थ बत्तीसाए विमाणवाससयसहस्साणं चउरा सीए सामाणियसाहस्सीणं तायत्तीसाए तायत्तीसगाणं चउण्हं लोगपालाणं अट्ठण्हं अग्गमहिसीणं सपरि वाराणं तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणियाणं सत्तण्हं अणियाहिवईणं चउण्हं चउरासीणं आयरक्खदेवसाह स्सीणं अन्नेसिं च बहूणं सोहम्मकप्पवासीणं वेमाणियाणं देवाणय देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं कुव्वमाणे

॥ भाषा ॥

वाससयसहस्साहिवई । मघवो पाकशासन देवताना वस्त्रभोगा दक्षिणार्द्ध लोकाधिपति ३२ लाखविमाननोधणी । ऐरावणवाहणसुरेंद्रे अरयंबरवत्थ धरे । ऐरावण वाहनके जेहने सुरेंद्र रजविना गगनपरे निर्मलवस्त्रधारी । आलइयमालमउडे नवहेमचारुचित्तचंचल कुंडल विलहिज्जमाणगंडे । धाया छे फूल मुकुट नवा हेमनाचारु विचित्र कुण्डलेकरी विलपमान गलस्थलछे जे इन्द्रना । महिड्ढिए जाव पभासेमाणे । महर्द्धिक यावत् सर्वेउजवालो कर तो । तत्थ बत्तीसाए विमाणावाससयसहस्साण चउरासीए सामाणिय साहस्सीणं तायत्तीसाए तायत्तीसगाण चउण्हं लोगपालाण अट्ठण्ह अग्गमहिसीणं सपरिवाराण । तिहां ३२ लाखविमाननो स्वामी ८४ सहस्र सामानिकेंकरी त्रायत्रिंशक पूजनीकदेवतायें करी ४ लोकपाले ८ अग्रमहिषीयेंकरी सपरि वारिम णं सत्तण्हं अणियाण सत्तण्हं अणियाहिवइण । तीन परषदायें ७ अनीककरी ७ अनीकाधिपतेंकरी । चउण्ह चउरासीणं आयरक्ख ... सोहम्मकप्पवासीणं वेमाणियाणं देवाणय देवीणय आहेवच्च जाव विहरइ । चारदिशिनें ८४ हजार आत्मरक्षकेंकरी अने

नत्कुमारकल्पे-सपक्खं सपडिदिसिंति ॥ समानाः पक्षाः पूर्वापरदक्षिणोत्तररूपाः पार्श्वा यस्मिन् दूरमु त्पतने तत्सपक्षं समानस्य धर्मादिषु चेतिस मानस्य सन्नावः ॥ सपडिदिसंति ॥ समानाः प्रतिदिशो विदिशो यत्र तत्सप्रतिदिक् सामानिकसंग्रहणिगाथा-चउरासीइत्यादि ॥ सौधर्मेंद्रस्य चतुर शीतिसामानिकसहस्राणि ईशानेंद्रस्या शीतिः सनत्कुमारस्य द्वासप्ततिः माहेंद्रदेवराजस्य सप्ततिः ब्रह्मलोकेंद्रस्य षष्ठिः लांतकेंद्रस्य पंचाशत् महा शुक्रेंद्रस्य चत्वारिंशत् सहस्रारेंद्रस्य त्रिंशत् आनतप्राणतेंद्रस्य दशसामानिकसहस्राणि ॥ अवतंसकाश्चातिदेशेनोक्ताइति दुरवबोधा स्तेतो विने

कुंडलविलिहिज्जमाणगंडे महिड्ढिए जाव पन्नासेमाणे सेणं तत्थ बत्तीसाए विमाणवाससयसहस्साणं चउरासीए सामाणियसाहस्सीणं तायत्तीसाए तायत्तीसगाणं चउण्हं लोगपालाणं अट्ठण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणियाणं सत्तण्हं अणियाहिवईणं चउण्हं चउरासीणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं च बहूणं सोहम्मकप्पवासीणं वेमाणियाणं देवाणय देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं कुव्वमाणे

वाससयसहस्साहिवई । सवशो पाकशासन देवताना वस्त्रीना दक्षिणार्द्ध लोकाधिपति ३२ लाखविमाननोधणी । ऐरावणवाहणसुरेंदे अरयंबरवत्थ धरे । ऐरावण वाहनछे जेहने सुरेंद्र रजविना गगनपरे निर्मलवस्त्रधारी । आलइयमालमउडे नवहेमचारुचित्तचंचल कुंडल विलिहिज्जमाणगंडे । घाल्या छे कड मकुट नवा हेमनाचारु विचित्र कुण्डलेकरी विलपमान गलस्थलछे जे इन्द्रना । महिड्ढिए जाव पभासेमाणे । महर्द्धिक यावत् सर्वेउजुवालो कर तो । तत्थ बत्तीसाए विमाणावासमयसहस्साण चउरासीए सामाणिय साहस्सीणं तायत्तीसाए तायत्तीसगाण चउण्हं लोगपालाण अट्ठण्ह अग्गमहिसीणं सपरिवाराण । तिहां ३२ लाखविमाननो स्वामी ८४ सहस्र सामानिकेकरी त्रायत्रिंशक पूजनीकदेवतायें करी ४ लोकपाले ८ अग्रमहिषीयेंकरी सपरि वारे । तेण ८ रमाणं सत्तण्हं अणियाण सत्तण्हं अणियाहिवईणं । तीन परषदायें ७ अनीककरी ७ अनीकाधिपतेंकरी । चउण्ह चउरासीणं आयरक्ख सहस्स सोहम्मकप्पवासीणं वेमाणियाणं देवाणय देवीणय आहेवच्च जाव विहरइ । चारदिशिनें ८४ हजार आत्मरक्षकेंकरी अने

क्रतुइति॥ शतं क्रतूनां प्रतिमानाम भिग्रहविशेषाणां श्रमणोपासकपञ्चमप्रतिमारूपाणां वा कार्त्तिकश्रेष्ठित्वापेक्षया यस्य सौ शतक्रतुः॥ सहस्सक्खे इति॥ सहस्रमक्ष्णां यस्य सौ सहस्राक्षः इंद्रस्य हि किलमंत्रिणां पञ्चशतानि संति तदीयानां चाक्ष्णा मिंद्रप्रयोजनव्यापृततया इंद्रसंबंधित्वेन विव क्षणात् सहस्राक्षत्वमिंद्रस्य॥ मघवंइति॥ मघामहामेघा स्ते यस्य वशे संति समघवान् तथा पाको नाम बलवान् रिपुः स शिष्यते निराक्रियते येन सः पाकशासनः॥ अरयंबरवत्थधरे॥ अरजांसि रजोरहितानि स्वच्छतया अंबराणि वस्त्राणि धारयंतीति अंबरवस्त्रधरः॥ आलइयमालमउडेइति॥ माला च मुकुटश्च मालामुकुट मालगित माविद्धं मालामुकुटं येन स आलगितमालामुकुटं॥ नवहेमचारुचित्तचंचलकुण्डलविलिहिज्जमाणगंडे॥ नवमिव अत्युत्कटचारुवर्णतया प्रत्यग्रमिव हेम यत्र ते नवहेमनी नवहेमभ्यां चारुचित्राभ्यां चंचलाभ्यां कुण्डलाभ्यां विलिख्यमानौ गंडौ यस्य स तथा स

णं एवं जहेव ओहियाणं तहेव एतेसिंपि भाणियव्वं जाव आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं च बहूणं सोह म्मगकप्पवासीणं वेमाणियाणं देवाणं देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं जाव विहरंति। सक्के इत्थ देविंदे देव राया परिवसइ वज्जपाणी पुरंदरे सयक्कउ सहस्सक्खे मघवं पाकसासणे दाहिणड्ढलोगाहिवई बत्तीसविमा णवाससयसहस्साहिवई एरावणवाहणे सुरिंदे अरयंबरवत्थधरे आलइयमालमउडे नवहेमचारुचित्तचंचल

णं साणं २ सामाणियसाहस्सीणं एवं जहेव ओहियाणं तहेव एएसिंपि भाणि०। ते इहां आपआपणां विमाननां लाखगमे करी आपआपणां सामानि कसहस्रेकरी इम जिम ओघनेविषे कह्यो तिम सर्व इहां कहिवो। जाव आयरक्खदेवसाहस्सीणं अणेसिंचबहूणं सोहम्मगकप्पवासीणं वेमाणियाणं देवाण य देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं जाव विहरंति। यावत् आतमरक्षकनां सहस्र अनेरावणां सौधर्मकल्पनावासी वैमानिक अनेक देवता देवीनो अधिपतिपणे यावत् विचरे। सक्के इत्थ देविंदे देवरायाणो परिवसंति। शक्र तिहां देवतानो राजादेवेन्द्र वसेछे वज्रपाणी पुरंदरे सयक्कउसहस्सक्खे। वज्रेकरी पुरंदर अ सुरेवजकरविदारे ते शतक्रतु कार्त्तिकसेठभवे सौवार प्रतिमा पूर्व सहस्रनेत्रधणी सहस्राक्ष। मघवं पाकसासणे दाहिणड्ढलोगाहिवइ बत्तीसविमाणा

नत्कुमारकल्पे-सपक्खं सपडिदिसंति ॥ समानाः पक्षाः पूर्वापरदक्षिणोत्तररूपाः पार्श्वा यस्मिन् दूरमु त्पतने तत्सपक्षं समानस्य धर्मादिषु चेतिस मानस्य सद्भावः ॥ सपडिदिसंति ॥ समानाः प्रतिदिशो विदिशो यत्र तत्सप्रतिदिक् सामानिकसंग्रहणीगाथा-चउरासीइत्यादि ॥ सौधर्मेंद्रस्य चतुर शीतिसामानिकसहस्राणि ईशानेंद्रस्याशीतिः सनत्कुमारस्य द्वासप्ततिः माहेंद्रदेवराजस्य सप्ततिः ब्रह्मलोकेंद्रस्य षष्ठिः लांतकेंद्रस्य पंचाशत् महा शुक्रेंद्रस्य चत्वारिंशत् सहस्रारेंद्रस्य त्रिंशत् आनतप्राणतेंद्रस्य दशसामानिकसहस्राणि ॥ अवतंसकाश्चातिदेशेनोक्ताइति दुरवबोधा सतो विने

कुंडलविलिहिज्जमाणगंडे महिड्ढिए जाव पभासेमाणे सेणं तत्थ बत्तीसाए विमाणवाससयसहस्साणं चउरासीए सामाणियसाहस्सीणं तायत्तीसाए तायत्तीसगाणं चउण्हं लोगपालाणं अठण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणियाणं सत्तण्हं अणियाहिवईणं चउण्हं चउरासीणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं च बहूणं सोहम्मकप्पवासीणं वेमाणियाणं देवाणय देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं कुव्वमाणे

वाससयसहस्साहिवइ । मघवो पाकशासन देवताना वस्त्रकौना दक्षिणार्द्ध लोकाधिपति ३२ लाखविमाननोधणी । ऐरावणवाहणेसुरिंदे अरयंबरवत्थधरे । ऐरावण वाहनछे जेहने सुरेंद्र रजविना गगनपरे निर्मलवस्त्रधारी । आलइयमालमउडे नवहेमचारुचित्तचंचल कुंडल विलिहिज्जमाणगंडे । थाप्या छे कउ मकुट नवा हेमनाचारु विचित्र कुण्डलेकरी विलपमान गल्लस्थलछे जे हना । महिड्ढिए जाव पभासेमाणे । महर्द्धिक यावत् सर्वउजवालो कर तो । तत्थ बत्तीसाए विमाणावाससयसहस्साण चउरासीए सामाणिय साहस्सीणं तायत्तीसाए तायत्तीसगाण चउण्हं लोगपालाण अट्ठण्ह अग्गमहिसीणं सपरिवाराण । तिहां ३२ लाखविमाननो स्वामी ८४ सहस्र सामानिकेकरी त्रायत्रिंशक पूजनीकदेवतायें करी ४ लोकपाले ८ अग्रमहिषीयेंकरी सपरिवारे । तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणियाण सत्तण्हं अणियाहिवइण । तीन परषदायें ७ अनीकाकरी ७ अनीकाधिपतेंकरी । चउण्ह चउरासीणं आयरक्ख देवसाहस्सीण अन्नेसिंच बहूण सोहम्मकप्पवासीणं वेमाणियाणं देवाणय देवीणय आहेवच्च जाव विहरइ । चारदिशिनें ८४ हजार आत्मरक्षकेंकरी अने

जाव विहरति। कहिणं भंते! ईसाणगदेवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पं० ? कहिणं भंते! ईसाणगदेवा परिवसंति ? गो०! जंबूद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ उड्ढं चंदिमसूरियग्गहगणनक्खत्ततारारूवाणं बहूइं जोयणसयाइं बहूइं जोयणसहस्साइं जाव उप्पइत्ता एत्थणं ईसाणे नामं कप्पे पन्नत्ते, पाईणपडीणायए उदीणदाहिणविच्छिन्ने एवं जहा सोहम्मे जाव पडिरूवे तत्थणं ईसाणगदेवाणं अट्ठावीसं विमाणावाससयसहस्सा हवंतीति मक्खायं तेणं विमाणा सव्व रयणामया जाव पडिरूवा, तेसिणं बहुमज्झदेसभाए पंच वडंसगा पण्णत्ता, अंकवडंसए फलिहवडंसए

रा पणां सौधर्म कल्पनावासी वैमानिकदेवता देवो अधिपतिपणें यावत् विचरे। कहिणंभंते ईसाणगदेवाणं पज्जत्ता २ णं ठा० पं०। किहां हेभगवन् ईशान देवलोकना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या। कहिणंभंते ईसाणगदेवा परिवसंति। किहां हेभगवन् ईशानदेवता वसेछे। गोयमा जंबूद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं। हेगौतम जंबूद्वीपनामाद्वीप विषे मेरुपर्वत उत्तरपासे। इमीसेरयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ। ए रत्नप्रभापृथ्वीथी घणी समोरमणीक भूमिभागथकी। उड्ढं चंदिमसूरियगहगणणक्खत्ततारारूवा णं। ऊंचा चन्द्र सूर्य ग्रहगण नक्षत्र तारारूपथी। बहूणि जोयणसयाइं जाव उप्पइत्ता। घणां योजनना सैकडास् यावत् कोडाकोडी ऊंचा जाय ते। एत्थणं ईसाणेनामंकप्पे पं०। इहां ईशाननामा कल्पकह्या। पाईणपडिणायए उदीणदाहिणविच्छिण्णे एवं जहा सोहम्मे जाव पडिरूवे। पूर्व पश्चिम लांबोछे उत्तरदक्षिण विस्तीर्णछे इम जिम सौधर्मनीपरे यावत् प्रतिरूप। तत्थणं ईसाणगदेवाणं अट्ठावीसविमाणावाससयसहस्सा हवंतिमक्खायं। तिहां ईशान देवताना २८ लाखविमाननी संख्याकही तीर्थंकरे कह्या। तेणं विमाणासव्वरयणामया जाव पडिरूवा। ते विमान सर्व रत्नमय यावत् प्रतिरूप। तेसिणं बहुमज्झदेसभाए पंचवडेंसए पं०तं०। तिहां वणी मध्य विचाले ५ अवतंसकविमानछे ते कहेछे—अंकवडिंसए फलिहव० रयणव० जायरूवव०। अंकावतंसक पूर्वे दक्षिणे स्फटिकावतंसक रत्नावतंसक याव

॥ टीका ॥

यजनानुग्रहार्थं वैविक्त्येन मूलत आरभ्यो पदइयेते-सौधर्मे पूर्वस्यां अशोकावतंसको दक्षिणतःसप्तपर्णावतंसकः पश्चिमायां चंपकावतंसकः उत्तरत चूतावतंसकः मध्ये सौधर्मावतंसकः एव पूर्वादिक्रमेण ईशाने अङ्कावतंसकः स्फाटिकावतंसको रत्नावतंसको जातरूपावतंसकः मध्येईशानावतंसकः सनत्कुमारे अशोकः सप्तपर्णः चंपकः चूतः सनत्कुमारावतंसकः माहेंद्र अङ्कस्फाटिकरत्नजातरूपमाहेंद्रावतंसकाः ब्रह्मलोके अशोकसप्तपर्णचंपकचूत

॥ मूल ॥

रयणवडंसए जाव सव्ववडिंसए मज्झे इत्थ ईसाणवडंसए, तेणं वडंसया सव्वरयणामया जाव पडिरूवा एत्थणं ईसाणाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता। तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे सेसं जहा सो हम्मगदेवाणं जाव विहरंति, ईसाणे अत्थ देविंदे देवराया परिवसति सूलपाणी वसभवाहणे उत्तरड्ढलो गाहिवई अट्ठावीसविमाणावाससयसहस्साहिवई अरयंबरवत्थधरे सेसं जहा सक्कस्स जाव पभासेमाणे तत्थ अट्ठावीसाए विमाणावाससयसहस्साणं असीतीए सामाणियसाहस्सीणं तावत्तीसाए तावत्तीसगाणं

॥ भाषा ॥

त् रूपवातंसक। मज्झे इत्थई साणवडेंसए तेणं वडिंसिया सव्वरयणामया जाव पडिरूवा। विचे ईशानेंद्र नावतंसक ते वतंसक सर्व रत्नमय यावत् प्रतिरूप। एत्थ णं ईसाणदेवाण पज्जत्ता २ ठाणापं०। इहां ईशानदेवता पर्या ता अपर्याप्ताना ठामकह्या। तिसुवि लोयस्स असंखिज्जइभागे सेसं जहा सोहम्मदेवाणं जाव विहरंति। तीन लोकलोकने असंख्यातमेभागे छे ते थाकता जिम सौधर्मदेवता यावत् विचरे छे। ईशाणे इत्थ देविंदे देवरायाणो परिवसंति। ईशानना भे इन्द्र राजा वसे छे। सूलपाणिवसभवाहणे। त्रिशूल हाथमें जेहने। उत्तरड्ढ लोगाहिवई। उत्तरार्द्ध लोकनो धणी। अट्ठावीसविमाणावाससयसहस्साहिव ई। २८ लाख विमाननो धणी अतिरिक्त। अरयंबरवत्थधरे सेसं जहा सक्कस्स जाव पभासेमाणे। रजरहित वस्त्रधारक थाकता जिम शक्रनोपरे यावत् प्रभामंडित। सेणं तत्थ अट्ठावीसाएविमाणावाससयसहस्साणं असिइए सामाणियसाहस्सीणं तायत्तीसाए तायत्तीसगाण। ते तिहां २८ लाख विमानें करी सहित ८०००० सामानिकेंकरी सहित ३३ त्रायस्त्रिंशकेंकरी। चउण्हंलोगपालाणं अट्ठण्हंअग्गमहिसीणं सपरिवाराणं। ४ लोकपालेंकरी ८ अग्रमहि

ब्रह्मलोकावतंसकाः लांतके अङ्कस्फटिकरत्नजातरूपलांतकावतंसकाः महाशुक्रे अशोकसप्तपर्णचंपकचूतमहाशुक्रावतंसकाः सहस्रारे अङ्कस्फटिकरत्न

चउरहं लोगपालाणं अठरहं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं तिरहं परिसाणं सत्तरहं अणियाणं सत्तरहं अणि याहिवईणं चउरहं असीतीणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं च बहूणं ईसाणकप्पवासीणं वेमाणियाणं देवाण य देवीण य आहेवच्चं पोरेवच्चं कुव्वमाणे जाव विहरइ, कहिणं भंते ! सणंकुमारदेवाणं पज्जत्ता पज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता । कहिणं भंते ! सणंकुमारा देवा परिवसंति ? गोयमा ! सोहम्मस्स कप्पस्स उ प्पिं सपक्खिं सपडिदिसिं बहुइं जोयणाइं बहूइं जोयणसयाइं बहूइं जोयणसयसहस्साइं बहुगाउ जोय णकोडीउ बहुगाउ जोयणकोडाकोडीउ उड्ढं दूरं उप्पइत्ता तत्थणं सणंकुमारे नामं कप्पे पण्णत्ते । पाईण

पतिकरी सपरिवारेंकरी । तिणइं परिसाणं सत्तणइं अणियाणं सत्तणइं अणियाहिवईणं चउणइं असईणं । तीन परिषदाकरी ७ अनीकेकरी ७ अनीका धिपतेंकरी ४ दिशि । चउरासी आयरक्खदेवसाहस्सीणं । ८४ आत्मरक्षकने सहस्रेंकरी । अन्नेसिंचबहूणं ईसाणकप्पवासीणं वेमाणियाणं देवाणय देवीण य आहेवच्चं कुव्वमाणे विहरति । अनेरा घणां ईशान कल्पवासी वैमानिक देवदेवीनो अधिपतिपणों करतो यावत् विचरे । कहिणंभंते सणंकुमाराणं दे वाण पज्जत्ता २ णं ठाणा पं० । किहां हेभगवन् सनत्कुमारदेवतारा पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या । कहिणंभंते सणंकुमारदेवा परिवसंति । किहां हेभगवन् सनत्कुमारदेवता वसेछे । गोयमा सोहम्मस्स कप्पस्स उप्पिंसपक्खिं सपडिदिसिं बहूइं जोयणसयाइं । हेगौतम सौधर्मकल्पने उपरेसपक्षपणे सप्रतिदिशि घणायोजननासैकडा । बहूइं जोयणसयसहस्साइं बहुगीओ जोयणकोडीओ बहुगीओ जोयणकोडाकोडीओ । घणां योजनना सहस्र स णां योजनना सहस्रलाख घणीयोजननी कोडी घणी योजननी कोडाकोडी । उड्ढदूरं उप्पइत्ता । ऊंचा उपाडीने जाय । तत्थणं सणंकुमारेणामं कप्पे पं० । इहां सनत्कुमारनामे कल्पकह्यो । पाईणपडीणायए उदीणदाहिणविच्छिन्ने जहा सोहम्म जाव पडिरूवे । पूर्व पश्चिम लांबा उत्तरदक्षिण पिहु

पडीणायए उदीणदाहिणविच्छिन्ने जहा सोहम्मे कप्पे जाव पडिरूवे, तत्थणं सणंकुमाराणं देवाणं वारस विमाणावाससयसहस्सा हवंतीति मक्खायं, तेणं विमाणा सव्वरयणामया जाव पडिरूवा तेसिणं विमाणाणं बहुमज्झदेसभागे पंच वडंसगा पणत्ता, तंजहा—असोगवडंसए संत्तवणवडंसए चंपगवडंसए चूयवडंसए मज्झे जत्थ सणंकुमारवडंसए तेणं वडंसया सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा तत्थणं सणंकुमारदेवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पणत्ता। तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थणं वहवे सणंकुमारा देवा परिवसंति महिड्डिया जाव पभासेमाणा विहरंति नवरं अग्गमहिसीउ णत्थि, सणंकुमारे इत्थ देविंदे देवराया परिवसइ अरयंवरवत्थधरे सेसं जहा सक्कस्स सेणं तत्थ वारसण्हं विमाणावाससयसहस्साणं वाव

लो जिम सौधर्म यावत् प्रतिरूप। एत्थणं सणंकुमाराणं देवाणं वारसविमाणावाससयसहस्साइवंतीतिमक्खायं। इहां सनत्कुमारना १२ लाख विमानकह्या तीर्थंकरे। तेणं विमाणा सव्वरयणामया जाव पडिरूवा। ते विमान सर्व रत्नमय यावत् प्रतिरूपने। तेसिणं विमाणाणं बहुमज्झदेसभाए पंचवडेंसया पं० तं०। विमानने घणीं मध्यदेशभाग विचाले पच्च अवतंसकाविमान कह्या। असोगवडिंसए सत्तवण्ण० चंपकय व० चूय व० मज्झे इत्थ सणंकुमार व० तेणं वडेंसया सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा। अशोकवतंशक पूर्वं सप्तपर्ण वतंशक दक्षिणे चंपकवतंशक पश्चिमें चूतवतंशक उत्तरे विचे सनत्कुमारावतंशक ते वतंशक सर्व रत्नमय यावत् प्रतिरूप। एत्थणं सणंकुमाराणं देवाणं पज्जत्ताणं ठाणा पं०। इहां सनत्कुमारना पर्याप्ताअपर्याप्ताना ठामकह्या। तिसुविलोगस्स असंखिज्जइभागे। तीन वोललोकने असंख्यातमेभाग हुवे। तत्थणं वहवे सणंकुमारादेवा परिवसंति। तिहां घणां सनत्कुमारदेवता वसेछे। महड्डिया जाव पभासेमाणा विहरंति। महर्धिक यावत् प्रभासहित विचरेछे। नवरं अग्गमहिसीओ नत्थि सणंकुमारे इत्थ देविंदे देवरायाणो परिवसति। एतलोविशेष अग्रमहिषी नहीं सनत्कुमारनामे देवेंद्र देवराजा वसेछे। अरयंवरवत्थधरे सेसं जहा सक्कस्स। रजरहित गगन

जातरूपसहस्रारावतंसकाः प्राणते अशोकसप्तपर्णचंपकचूतप्राणावतंसकाः अच्युते अङ्कस्फटिकरत्नजातरूपाच्युता अवतंसका इति ॥ ग्रैवेयकसूत्रे-सम ञ्चियाइति ॥ समा ऋद्धि यैषांते समर्द्धिकाः एवं ॥ समुज्जुइया इत्याद्यपि भावनीयं ॥ अणिंदाइति ॥ नविद्यते इंद्रो ऽधिपति यैषांते अनिंद्राः ॥ अपेस्सा इति ॥ नविद्यते प्रेष्यः प्रेष्यत्वं येषांते अप्रेष्याः ॥ अपुरोहियाइति ॥ नविद्यते पुरोहितः शांतिकर्मकारी येषामशांतेरभावात् ते अपुरोहिताः

त्तरीए सामाणियसाहस्सीणं सेसं जहा सक्कस्स अग्गमहिसीवज्जं नवरं चउण्हं बावत्तरीणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं जाव विहरइ । कहिणं भंते ! माहिंदाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता । कहिणं भंते ! माहिंदगा देवा परिवसंति ? गोयमा ! ईसाणस्स कप्पस्स उप्पिं सपक्खिं सपडिदिसिं बहूइं जोयणाइं जाव बहुगाओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढं दूरं उप्पइत्ता तत्थणं माहिंदे नामं कप्पे पण्णत्ते, पाईणपडीणायए जाव एवं जहेव सणंकुमारे, नवरं अट्ठ विमाणावाससयसहस्सा वडंसया जहा ईसाणे नवरं मज्झे तत्थ माहिं

वतंसधारी शेषजिम शक्रनीपरे । सेसंतथबारसवंहविमाणावाससयसहस्राणं । तिहां१२ लाखविमानेकरी । बावत्तरीए सामानिकदेवसाहस्सीणं जहा सक्कस्स अग्गमहिसीणं वज्जा । ७२ सामानिकसहस्रेंकरी जिम शक्रनीपरे अग्रमहिषी विना । नवरं चउण्हं बावत्तरीण आयरक्खदेवसाहस्सीणं जाव विहरंति । एतलोविशेष ७२ चौगुणाकरता २८८ आत्मरक्षक सहस्रेंकरी यावत् विचरे । कहिणं भंते माहिंददेवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पं० । किहां हेभगवन् माहेंद्रदेव पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठाम कह्या । कहिण भंते माहिंददेवा परिवसंति । किहां हेभगवन् माहेंद्रदेवता वसे छे । गोयमा ईसाणस्स कप्पस्स उपिं सपक्खिं सपडिदिसिं बहूइं जोयणाइं जाव बहुगीओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढं दूरं उप्पइत्ता । हेगौतम ईशानकल्पने ऊपर पक्षसहित सर्व दिशिविदिशि घणा योजनना यावत् घणा योजननी कोडाकोडी ऊंचोजाय । एत्थणं माहिंदेनामे कप्पे पं० । तिवारे तिहां माहेंद्रनामे देवलोक कह्यो । पाईण पडिणायए उदीण दाहिणविच्छिण्णे । पूर्व दिसालांबो उत्तर दक्षिण पिहुलो । एवं जहेव सणंकुमारे नवरं अट्ठविमाणावाससयसहस्सा । इम सर्व

दवमंसए एवं सेसं जहा सणंकुमारदेवाणं जाव विहरंति माहिंदे इत्थ देविंदे देवराया परिवसइ अरयंवर वत्थधरे एवं जहा सणंकुमारे जाव विहरइ नवरं अठण्हं विमाणावाससयसहस्साणं सत्तरीए सामाणिय साहस्सीणं चउण्हं सत्तरीणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं जाव विहरइ । कहिणं भंते ! बंभलोगदेवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पन्नत्ता । कहिणं भंते ! बंभलोगा देवा परिवसंति ? गो० ! सणंकुमारमाहिंदाणं कप्पाणं उप्पिं सपक्खिं सपडिदिसिं बहूइं जोयणाइं जाव उप्पइत्ता एत्थणं बंभलोए नामं कप्पे पाईणपडीणायत उदीणदाहिणविच्छिन्ने पडिपुन्नचंदसंठाणसंठिए अच्चिमालीभासरासिप्पभे अवसेसं जहा सणंकुमा

जिम सनत्कुमार एतलोविशेष। अठविमाणावासमयसहस्सा वडेंसिया जहा ईसाणे नवरं मज्झे। ८ लाखविमान कह्या वतंसक जिम ईशाने कह्या एतलोविशेष विचे। इत्थ माहिंदवडिंसए एवं सेसं जहा सणकुमारदेवाण जाव विहरंति। इहां माहेन्द्रवतंसक इम शेषजिम सनत्कुमारदेवता यावत् विचरेछे। माहिंदे इत्थ देविंदे देवरायाणो परिवसंति। माहेन्द्रनामे देवेन्द्र देवराजा वसेछे। अरयवरवत्थधरे एवं जहा सणकुमाररराजा विहरंति। रजरहित गगनवत् वस्त्रधारी इम सर्व जिम सनत्कुमार यावत् विचरे। नवरं अठुण्हं विमाणावाससयसहस्साणं सत्तरिए सामाणियसाहस्सीणं चउण्हं मिसरीण आयरक्खदेवसाहस्सीणं जाव विहरंति। एतलोविशेष ८ लाख विमानकरी ७० सहस्र सामानिके ७० चोगुणा करता २८० आतमरक्षक सहस्रेकरी विचरे। कहिणभंते बंभलोयदेवाण पज्जत्ता २ णं ठाणा प०। किहां हेभगवन् ब्रह्मलोकनादेवता पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठाम कह्या। कहिणंभंते बंभलोया परिवसंति। किहां हेभगवन् ब्रह्मदेवलोक वसे। गोयम। सणंकुमारमाहेंदाण कप्पाणं उप्पिं सपक्खिंसपडिदिसि बहूइंजोयण जाव उप्पइत्ता। हेगौतम सनत्कुमार माहेंद्रकल्पथी। ऊपर सपक्ष सर्वदिशे घणांजोजन कोडाकोडी ऊंचा जाइंजी। एत्थण बंभलोए नामं कप्पे पं०। तिहां ब्रह्मलोकनामा कल्प पूर्वपश्चिमे दिशिये लांबो। उदीणदाहिणविच्छिणे पडिपुन्नचंदसंठाणसंठिया। उत्तरदक्षिणे पिहुलो पूर्णचंद्र संस्थाने संस्थितछे। अचिमाली भासिरा

राणं नवरं चत्तारि विमाणावाससयसहस्सा वडंसगा जहा सोहम्मस्सवडंसया नवरं मज्झे इत्थ बंभलोयव डंसए एत्थणं बंभलोगाणं देवाणं ठाणा पं० सेसं तहेव जाव विहरंति। बंभे इत्थ देविंदे देवराया परिवस इ अरयंबरवत्थधरे एवं जहा सणंकुमारे जाव विहरति नवरं चउण्हं विमाणावाससयसहस्साणं सट्ठीए सामाणियसाहस्सीणं चउण्हयसट्ठीणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं च बहूणं जाव विहरइ । कहिणं भंते ! लंतगदेवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता , कहिणं भंते ! लंतगदेवा परिवसंति ? गोयमा ! बंभलोगस्स कप्पस्स उप्पिं सपक्खिं सपडिदिसिं बहूइं जोयणसयाइं जाव बहुईओ जोयणकोडाकोडीओ

सिटपमें अविसेसं सणकुमाराणं भणिय तहा भा० । किरणने समांहेकरी भाषा थाकती जिम सनत्कुमारे कह्यो तिम कहवो । नवरं चत्तारिविमाणा वाससयसहस्सा वडेंसया जहा सोहम्मवडेंसया । एतलोविशेष ४ लाखविमान कह्या वतंशक जिम सोधर्मनीपरे । नवरं मज्झे इत्थ बंभलोयवडेंसए । ए विशेष विचे इहां ब्रह्मलोकावतंशक । एत्थणं बभलोयाणं देवाण ठाणा पं० सेसंतहेव जाव विहरंति । इहां ब्रह्मलोकदेवतारा ठामकह्या शेष तिम यावत् विचरे । बंभेत्थ देविंदे देवरायाणो परिवसंति । ब्रह्मनामे इहां देवेन्द्र देवराजा वसेछे । अरयबरवत्थधरे एवं जहा सणकुमारे जाव विहरंति । रजवि न वस्त्रधारी इम सर्व सनत्कुमारनीपरे यावत् विचरे । नवरं चउण्हं विमाणावाससयसहस्साणं सट्ठीए सामाणियसाहस्सीणं । एतलोविशेष ४ लाख विमानेकरी ६० हजार सामानिककरी । चउण्हं सट्ठीण आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिंच बहूणं जाव विहरंति । साठ चोगुणां करता २४० हजा र आत्मरक्षकेकरी अनेरा घणांदेवता यावत् विचरे । कहिणंभंते लंतगदेवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पं० । किहां हेभगवन् लान्तकदेवता पर्याप्ता अपर्या प्ताना ठामकह्या । कहिणंभंते लंतगादेवापरिवसंति । किहां हेभगवन् लांतकदेवता वसेछे । गोयमा बंभलोयस्स कप्पस्स उप्पिंसपक्खिं सपडिदिसिं ब हूइं जोयण जाव बहुगीओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढं दूरं उप्पइत्ता । हेगौतम ब्रह्मलोक कल्पथी ऊपर सपक्ष सर्वदिशि घणीयोजननीकोडाकोडी ऊंचा

उड्ढं दूरं उप्पइत्ता एत्थणं लंतए नामं कप्पे पण्णत्ते पाईणपडीणायते जहा बंभलोए नवरं पन्नासाविमाणावाससहस्सा हवंतीतिमक्खायं, वडंसगा जहा ईसाणवडंसगा नवरं मज्झे अत्थ लंतगवडंसए देवा तहेव जाव विहरंति, लंतए अत्थ देविंदे देवराया परिवसइ जहा सणंकुमारे नवरं पन्नासाए विमाणावाससहस्साणं पन्नासाए सामाणियसाहस्सीणं चउण्हं पन्नासाणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिंच बहूणं जाव विहरइ। कहिणं भंते ! महासुक्काणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता। कहिणं भंते ! महासुक्कादेवा परिवसंति ? गोयमा ! लंतस्स कप्पस्सउप्पिं सपक्खिं सपडिदिसिं जाव उप्पइत्ता एत्थणं महासुक्के

जाय। एत्थणं लंतएनामं कप्पे पं०। इहां लान्तकनामा कल्पकह्यो। पाईणपडीणायए एवं जहा बंभलोए। पूर्वपश्चिम लांबो इम जिम ब्रह्मलोक। नवरं पन्नासं विमाणावाससहस्साहिवइं वडेंसगा जहा ईसाणवडेंसगा। एतलोविशेष ५० सहस्र विमानकह्या वतंसक जिम ईशाननोपरे। नवरं मज्झे इत्थलंतगवडेंसए देवा तहेव जाव विहरंति। एतलोविशेष इहां लांतकावतंसकदेव तिमहीज यावत् विचरे। लंतए इत्थ देविंदे देवरायाणो परिवसंति। लांतक देवेन्द्र देवराजा वसेछे। एवं जहा सणंकुमारे नवरं पण्णासाए विमाणावास सहस्साणं पन्नासाए सामाणियसाहस्सीणं। इम जिम सनत्कुमार एतलोविशेष ५० लाख विमान ५० हजार सामानिकसहस्रेंकरी। चउण्हं पण्णासाणं आयरक्ख देवसाहस्सीणं अन्नेसिंच बहूणं जाव विहरंति। ५० हजारने चौगुणा आत्मरक्षक देवतायेंकरी अनेरा घणादेव यावत् विचरे। कहिणं भंते महासुक्काणं देवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पं०। किहां हेभगवन महाशुक्रदेवता पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या। कहिणभंते महासुक्का देवा परिवसंति। किहां हेभगवन् महाशुक्रदेवता वसेछे। गोयमा लंतस्स कप्पस्स उप्पिं सपक्खिं सपडिदिसिं जाव उप्पइत्ता। हेगौतम लांतककल्पथी ऊपर पक्षसहित यावत् ऊंचाजाय। एत्थणं महासुक्केनामं कप्पे पं०। इहां महाशुक्रनामे कल्पकह्यो। पाईणपडीणायए उदीणदाहिणविच्छिण्णे एवं जहा बंभलोए। पूर्व पश्चिमें लांबो उत्तरदक्षिणे पिहुलो इम ते जि

नामं कप्पे पणत्ते । पाईणपडीणायते उदीणदाहिणविच्छिन्ने जहा बंभलोए नवरं चत्तालीसं विमाणावा ससहस्सा हवंतीति मक्खायं, वडंसगा जहा सोहम्मवडंसगा नवरं मज्झे तत्थ महासुक्कवडंसए जाव विहरइ महासुक्के इत्थ देविंदे देवराया जहा सणंकुमारे नवरं चत्तालीसाए विमाणावाससाहस्सीणं चत्तालीसाए सामाणियसाहस्सीणं चउण्हं चत्तालीसाणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं जाव विहरंति । कहिणं भंते ! सहस्सारदेवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पं० । कहिणं भंते ! सहस्सारादेवा परिवसंति ? गो० ! महासुक्कस्स कप्पस्स उप्पिंसपक्खिंसपडिदिसिं जाव उप्पइत्ता एत्थणं सहस्सारे नामं कप्पे पं० । पाईणपडीणायते ज

म ब्रह्मलोक । नवरं चत्तालीस विमाणावाससहस्सा हवंतित्तिमक्खायं । एतलोविशेष ४० हजारविमानकह्या तीर्थंकरे । वडेंसगा जहा सोहम्मवडेंसगा नवरं मज्झे इत्थ महासुक्कवडेंसए जाव विहरति । वतयक जिम सौधर्मनीपरे एतलोविशेष विचे इहां महाशुक्रनामावतंशक यावत् विचरे । महासुक्के वडेंसए जाव विहरति । महाशुक्रनामे । महासुके इत्थ देविंदे देवरायाणो परिवसंति । महाशुक्रनामे देवेंद्र देवराजा वसेछे । एवं जहा सणंकुमारे नवरं चत्तालीसाए विमाणावाससहस्साणं चत्तालीसाए सामाणियसाहस्सीणं । इम जिम सनत्कुमार एतलोविशेष ४० हजार विमानसंख्याहुवे ४० हजार सामानिकसहयेकरी । चउण्हं चत्तालीसाणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं जाव विहरंति । एकलाख साठहजार देवता आत्मरक्षक हुवे यावत् विचरे । कहिणंभंते सहस्सारदेवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा प० । किहां हेभगवन् सहस्सारदेवताना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या । कहिणं भंते सहस्सारगदेवा परिवसंति । किहां हेभगवन् सहस्सारदेवता वसेछे । गोयमा -महासुक्कस्स कप्पस्स उप्पिंसपक्खिं सपडिदिसिं जाव उप्पइत्ता । हेगौतम महाशुक्र कल्पने ऊपर पक्षसहित यावत् ऊंचा जाइने । एत्थणं सहस्सारेनामं कप्पे पं० । इहां सहस्सारनामे कल्पकह्यो । पाईणपडीणायए जहा बंभलोए । पूर्व पश्चिम लांबो जिम ब्रह्मलोक । छविमाणावाससहस्सा हवंतित्ति मक्खायं देवातहेव वडेंसगा जहा ईसाणे नवरं मज्झे इत्थ सहस्सवडेंसए जाव विहरंति ।

हा बंभलोए नवरं छविमाणावाससहस्सा हवंतीति मरकायं देवा तहेव वमंसगा जहा ईसाणस्स वमंसगा नवरं मज्झे जत्थ सहस्सारवमंसए जाव विहरंति, सहस्सारे इत्थ देविंदे देवराया परिवसइ जहा सणंकुमारे नवरं छएहं विमाणावाससहस्साणं तीसाए सामाणियसाहस्सीणं चउएहय तीसाणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं जाव आहेवच्चं कारेमाणे विहरंति । कहिणं भंते ! आणयपाणयदेवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पं० ? कहिणं भंते ! आणयपाणयदेवा परिवसंति ? गो० ! सहस्सारस्स कप्पस्स उप्पिं सपक्खिं सपडिदिसिं जाव उप्पइत्ता एत्थणं आणयपाणयनामेणं दुवे कप्पा पन्नत्ता पाईणपडीणायते उदीणदाहिणविच्छिन्ना अद्धचंदसंठाणसंठिया अच्चिमालीभासरासिप्पभा सेसं जहा सणंकुमारे जाव पडिरूवा तत्थणं आण

एतलोविशेष छ हजारविमान केवलोकह्या वतंसक जिम ईशानतोपरे एतलोविशेष विचे इहां सहस्रावतंसक यावत् विचरे । सहस्सारे इत्यदेविंदे देवरायाणो परिवसंति । सहस्रारनामे देवेंद्रदेवराजा वसेछे । जहा सणंकुमारे नवरं छएहं विमाणावाससहस्साणं तीसाए सामाणियसाहस्सीणं । जिम सनत्कुमार एतलोविशेष छहजार विमान । तीसाएसामाणियसाहस्सीणं चउएहं तीसाए आयरक्खदेवसाहस्सीणं जाव आहेवच्चं कारेमाणे जाव विहरंति । ३० हजार सामानिककेकरी एकसोवीसहजार आत्मरक्षकेकरी यावत् अधिपतिपणे विचरे । कहिणंभंते आणयपाणयकप्पाणं देवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पं० । किहां हेभगवन् आनत प्राणतदेवताना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या । कहिणंभंते आणयपाणयाणं देवाणं परिवसंति । किहां हे भगवन् आनत प्राणतदेवता वसेछे । गोयमा सहस्सारस्स कप्पस्स उप्पिंसपक्खिं सपडिदिसि जाव उप्पइत्ता । हेगौतम सहस्रारकल्पथी उपरि प्रतिदिसे जालगे ऊंचा जाइजे । एत्थणं आणयपाणयनामं दुवेकप्पा पं० । तिहां आनत प्राणतनामे दोयकल्प कह्या । पाईणपडीणायया उदीणदाहिणविच्छिणा अद्धचंदसंठाणसंठिया । पूर्वपश्चिम लांबो उत्तरदक्षिण पिहुलो अर्द्धचन्द्रमाने संस्थाने संस्थितछे । अच्चीमाली भासरासिसमप्पभा सेसंजहासणंकु

यपाणयदेवाणं चत्तारि विमाणावाससया हवंती मक्खायं जाव पडिरूवा, वडंसगा जहा सोहम्मे नवरं मज्झे पाणयवडंसए तेणं वडंसगा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा, एत्थणं आणयपाणयदेवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थणं बहवे आणयपाणयदेवा परिवसंति महड्ढिया जाव पभासेमाणा तेणं तत्थ साणं २ विमाणवाससयाणं जाव विहरंति पाणएत्थ देविंदे देवराया परिवसंति जहा सणंकुमारे णवरं चउण्हं विमाणावाससयाणं वीसाए सामाणियसाहस्सीणं असीतीए आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं च बहूणं जाव विहरंति। कहिणं भंते ! आरणच्चुयाणं देवाणं पज्जत्ता

नारि जाव पडिरूवा। किरणने समूहे प्रभादिक शेष जिम सनत्कुमारनोपरे जांप्रतिरूप। तत्थणं आणयपाणयदेवाणं चत्तारिविमाणावाससया हवंतितिमक्खायं जाव पडिरूवा। तिहां आनत प्राणत देवताना चारविमाननासेंकडा तीर्थंकरे कह्या यावत् प्रतिरूप। वडेंसगा जहा सोहम्मे नवरं मज्झेत्थ पाणयवडेंसए तेणंविमाणा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा। वतंसक जिमसोधर्म ए विशेष विचे प्राणावतंसक ते विमान सर्व रत्नमयछे यावत् प्रतिरूप। एत्थणं आणयपाणयदेवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पं०। इहां आनतप्राणतदेवताना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या। तिसुविलोयस्स असंखिज्जइभागे। तीन बोललोकने असंख्यातमेंभागे हुवे। तत्थणं बहवे आणयपाणयदेवा परिवसंति महड्ढिया जाव पभासेमाणा। तिहां घणां आनत प्राणतदेवता वसेछे महर्द्धिक यावत् प्रभासहित। तेणं तत्थ साणं २ विमाणावाससयाणं जाव विहरंति। ते तिहां आप आपणे विमानना सेंकडाये विचरे। पाणएनामं एत्थ देविंदे देवराया परिवसंति जहासणकुमारे। प्राणतनामें इहां इन्द्रराजा वसेछे जिम सनित्कुमार। णवरं चउण्हं विमाणावाससयाणं वीसाएसामाणिय साहस्सीणं असीइ आयरक्ख देवसाहस्सीणं अणेसिंचबहूणं जाव विहरंति। एतलोविशेष चारसे विमानेकरी वीसहजार सामानिक देवतायेकरी ८० हजार आत्मरक्षकेकरी अनेरा घणादेवता यावत् विचरे। कहिणंभंते आरणअच्चुयाणं देवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पं०।

२ णं ठाणा पण्णत्ता । कहिणं भंते ! आरणच्चुया देवा परिवसंति ? गोयमा ! आणयपाणयाणं कप्पाणं उप्पिं सपक्खिं सपडिदिसिं एत्थणं आरणच्चुयानाम दुवे कप्पा पण्णत्ता । पाईणपडीणायया उदीणदाहिणवित्थिन्ना अद्धचंदसंठाणसंठिया अच्चिमालीभासरासिवन्नाभा असंखिज्जाउ जोयणकोडाकोडीउ आयामविक्खंभेणं असंखेज्जाउ जोयणकोडाकोडीउ परिक्खेवेणं सव्वरयणामया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा नीरया निम्मला णिप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पभा ससिरीया सउज्जोया पासाईया दरसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा एत्थणं आरणच्चुयाणं देवाणं तिन्नि विमाणावाससया हवंतीति मक्खायं, तेणं विमाणा सव्वरय

किहां हेभगवन् आरण अच्युतदेवताना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या । कहिणं भंते आरणअच्युदेवा परिवसति । किहां हेभगवन् आरणाच्युत देवता वसेछे । गोयमा आणयपाणयाणं कप्पाण उप्पिंसपक्खि सपडिदिसिं उप्पइत्ता । हेगौतम आनतप्राणत ऊपर सपद्य चौतरफदिशे । एत्थणं आरणअच्चुएनामं दुवे कप्पा । इहां आरण अच्युत दोयकल्प कह्या । पाईणपडीणाऽयया उदीणदाहिणा विच्छिण्णा अद्धचंदसंठाणसंठिया अच्चिमाली भासिरासि वण्णाभा । पूर्व पश्चिमें लांबा उत्तरदक्षिणे पिहुला अर्द्धचंद्रने संस्थितसंस्थान किरणनीमालाये सोभित देदीप्यमानवर्ण । असंखिज्जाओ जोयण कोडाकोडीओ आयामविक्खंभेण । असंख्यातायोजननी कोडाकोडी लांबा पिहुलाछे । असंखिज्जाओ जोयणकोडाकोडी परिक्खेवेणं पं० सव्वरयणामया । असंख्यातायोजननी कोडाकोडी प्रमाण परिधिछे सर्वरत्नमय । अच्छासण्हा लट्ठा घट्ठा मट्ठा नीरया निम्मला निपंका निक्कंकडछाया । आच्छा स्फटिकरी परेछे मसृणछे रजरहित निर्मल निकंप कचरादिकेरहित । सप्पभा सस्सिरिया सउज्जोया पासाईया दरसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा । प्रभासहित सश्रीक उद्योतसहित प्रसन्नकारी देखवायोग्य अभिरूप प्रतिरूप । एत्थण आरणअच्चुयाण देवाणं तिण्णिविमाणावाससया हवंतित्तिमक्खाय । इहां आरण अच्युतनामदेवताना तीनसैविमान केवलीये कह्या । तेणंविमाणासव्वरयणामया । तेविमान सर्वरत्नमय । अच्छासण्हा घट्ठा मट्ठा नीरया निम्मला

णामया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा नीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पभा सस्सिरीया सउज्जोया पासादीया दरसणिज्जा अभिरूवा तेसिणं विमाणं वडिंसमज्झदिसभाए पंच वडंसया पन्नत्ता, तं०— अंकवडंसए फलिहवडंसए रयणवडंसए जाव रूववडंसए मज्झे जत्थ अच्चुयवडंसए, तेणं वडंसया सव्वरयणामया जाव पडिरूवा, एत्थणं आरणच्चुयाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता। तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थणं वहवे आरणच्चुया देवा जाव विहरंति, अच्चुए तत्थ देविंदे देवराया परिवसइ। जहा पाणए जाव विहरंति नवरं तिण्हं विमाणावाससयाणं दसण्हं सामाणियसाहस्सीणं चत्तालीसाए

जाव पडिरूवा। निर्मलसुनिर्मल यावत् प्रतिरूप। एत्थणं आरणअच्चुयाणय देवाणं तिण्णविमाणावाससया हवंतित्तिमक्खाय। इहां आरण अच्युतदेव तणा तीनसेविमान कवलीयें कह्या। तेसिणं कप्पाणं वहुदेसभाए पचवडिसगा पं० तं०। तिहां सूधापदले नीपना विमानने घणे मध्यविच.लै पचवतंश कविमान कहेछे। अंकवडंसिए फलिहव० रयणव० जायरूवव० मज्झे इत्थ अच्चुयव०। अंकवतंशक स्फुटिकव० रत्नव० जातिरूपव० विचे इहां अच्युतवतंशक। ते वडेंसया सव्वरयणामया जाव पडिरूवा। ते वतंशक सर्वे रत्नमय यावत् प्रतिरूप। एत्थणं आरणअच्चुयाणं देवाणं पज्जत्ता २ णं ठा० प०। इहां आरण अच्युतदेवतारा पर्याप्ता अपर्याप्तारा ठामकह्या। तिसुविलोयस्स असंखिज्जइभाग। तीन वोलनोकने असंख्यातमेभागे हुवे। तत्थणं वहवे आरणअच्चुयगादेवा परिवसंति जाव विहरंति। तिहां घणां आरण अच्युतदेवता वसैछे यावत् विचरै। अच्चुए इत्थ देविंदेदेवरायाणो परिवसंति। अच्युतनामे इहां देवेंद्र देवराजापणे वसैछे। जहा पाणए जाव विहरंति। जिम प्राणतनीपरे यावत् विचरै। नवरं तिण्हविमाणावाससयाणं दसण्हं सामाणियसाहस्सीणं चत्तालीसाए आयरक्खदेवसाहस्सीणं आहेवच्चं कुव्वमाणे जाव विहरंति। एतलोविशेष तीनसैविमान कह्या दसहजार सामानिकदेवता ४० हजार आत्मरक्षक देवेंकरी आधिपतिपणे यावत् विचरै—वत्तीसट्ठावीसा वारसअट्ठचउरसयसहस्साव पण्णचत्तालीसा छच्चसहस्सासहस्सा

आयरक्खदेवसाहस्सीणं आहेवच्चं जाव कुव्वेमाणे विहरति, बत्तीसअट्ठावीसा बारसअट्ठचउरोसयसहस्सा पन्नाचत्तालीसा छच्चसहस्सासहस्सारे ॥ १ ॥ आणयपाणयकप्पे चत्तारिसयारणच्चुएतिन्नि । सत्तविमाणससाइं चउसुविएएसुकप्पेसु ॥ २ ॥ सामाणियसंग्गहणीगाहा—चउरासीईअसीति बावत्तरिसत्तरीयसट्ठीए । पन्नाचत्तालीसा तीसावीसादससहस्सा ॥ ३ ॥ एएचेव आयरक्खा चउगुणा कहिणं भंते ! हेट्ठिमगेविज्जगदेवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पण्णत्ता ? कहिणं भंते ! हेट्ठिमगेविज्जगा देवा परिवसंति ? गोयमा ! आरणच्चुयाणं कप्पाणं उप्पिं जाव उड्ढं दूरं उप्पइत्ता एत्थणं हेट्ठिमगेविज्जगाणं देवाणं ततो गेवेज्जविमाणा

र ॥ १ ॥ सौधर्मे ३२ ईशाने २८ सनत्कुमारे १२ माहेंद्र ८ ब्रह्मेंद्रे ४ शतसहस्र लांतके ५० सहस्र शुक्रे ४० हजार सहस्रारे ६ ॥ १ ॥ आणयपाणयकप्पे चत्तारिसयारणाच्चुएति य सत्तविमाणसयाइं चउसुविएएसुकप्पेसु । आनत प्राणत कल्प ४०० आरण अच्युते पहिलोत्रिक १११ हि० त्रिके १०७ ह० त्रिके १०० पंचानुत्तरे ५ एवं सर्व ३२३ हुये ॥ २ ॥ सामाणियाणगाहा । हिवे सामानिकदेवता संघयननी गाथायेंछै—चउरासीतिअसीइबावत्तरि सत्तारसट्ठीयपणचत्ताला तीसावीसादससहस्सा एएसिंआयरक्खचउगुणिया ।३। चौरासीसहस्र सौधर्म ईशाने ८० सहस्र सनत्कुमारे ७२ सहस्र माहेंद्रे ७० सहस्र ब्रह्मेंद्रे ६० सहस्र लांतके ५० सहस्र शुक्रे ४० सहस्र सहस्रारे ३० सहस्र आनतप्राणते २० सहस्र आरणअच्युते १० सहस्र इणांरा ए आत्मरक्षकदेवता जाणवा । कहिणंभंते हिट्ठिमगेविज्जगाणं देवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा प० । किहां हेभगवन् हेठला ग्रैवेयकना पर्याप्ता अपर्याप्तांना ठामकह्या । कहिणं भंते हेट्ठिमगेविज्जगा देवा परिवसंति । किहां हेभगवन् हेठला ग्रैवेयकदेवता वसेछै । गोयमा आरणअच्चुयाणं कप्पाणं उप्पिं जाव उड्ढं उप्पइत्ता । हे गौतम आरण अच्युत कल्पथी ऊंचाजाईजे ऊपरि यावत् । एत्थणं हेट्ठिमगेविज्जगाणं देवाणं तओगेविज्जगविमाण पत्थडा पं० । इहां हेठला ग्रैवेयकना देवता वसेछै तिण ग्रैवेयकना प्रतर कह्या । पाईणपडीणाययाउदीणदाहिणविच्छिन्ना पडिपुणचंद सठाणसंठिया । पूर्वपश्चिमे लांबा उत्तरदक्षिण

पत्यफा पन्नत्ता पाईणपईणायंगा उदीणदाहिणविच्छिन्ना पडिपुन्नचंदसंठाणसंठिया अच्चिमालीभासरासि वन्नाभा सेसं जहा बंभलोगे जाव पडिरूवा, तत्यणं हेठिमगेविज्जगाणं देवाणं एक्कारसुत्तरे विमाणावास सए हवंतीति मक्खायं तेणं विमाणा सव्वरयणामया जाव पडिरूवा, एत्थणं हेठिमगेविज्जगाणं देवाणं पज्जत्ताणं २ ठाणा पन्नत्ता । तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्यणं बहवे हेठिमगेविज्जगा देवा परि वसंति सव्वे सममहिड्ढीया सव्वे समज्जुतीया सव्वे समजसा सव्वे समबला सव्वे समाणुभावा महासोक्खा अ

पिहुला पूर्णचन्द्र संस्थानेसंस्थितछै । अच्चिमाली भासिरासिवन्नाभा सेसं जहा बंभलोए जाव पडिरूवा । किरणनीश्रेणीकरी आभासहित जिम ब्रह्मलोक तिम यावत् प्रतिरूप । तत्यणं हेठिमगेविज्जगाणं देवाण इक्कारसुत्तरविमाणावाससए हवंतित्तिमक्खायं । तिहां हेठली ग्रैवेयकनादेवता एकसोइग्यारह विमाननीसंख्याकही तीर्थंकरे । तेणं विमाणा सव्वरयणामया जाव पडिरूवा । ते विमान रत्नमय यावत् प्रतिरूप । तत्यणं हेठिमगेविज्जगाणं देवाणं प ज्जत्ता २ णं ठाणा पं० । तिहां हेठला ग्रैवेयकदेवताना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या । तिसुविलोगस्स असंखिज्जइभागे । तीन बोललोकने असंख्या तमेभागे हुवे । तत्यणं वहवे हेट्ठिमगेविज्जगा देवा परिवसंति । तिहां घणां हेठलाग्रैवेयकनादेवता वसेछे । सव्वेसमहड्ढिया सव्वे समज्जुइया सव्वेसम जसा सव्वेसमव्वला सव्वेसमाणुभावा । सर्व महर्द्धिक समऋद्धि समद्युतिकरी सर्वसरीखे यश बलेसरीखा सर्वसरीखेभावे । महासक्खा अणिंदा अपेसा अपुरोहिया । महासुखी इंद्र कोइनेनहीं कोइने दासनथी पुरोहितनथी । अहमिंदानाम तेदेवगणा पं० । सबला इद्रनीपरे रहेछे ते देवगण कह्या । सम णाउसो । अहो समणो आयुषावन्तो । कहिणंभंते मज्झिमगेविज्जगदेवाणंठा परिवसंति । किहां हेभगवन् मध्यमग्रैवेयकनादेवता वसेछे । गोयमा हिट्ठि मगेविज्जगाणं उप्पिं सपक्खिं सपडिदिसिं जाव उप्पइत्ता । हेगोतम हेठला ग्रैवेयकथी ऊपर ऊंचा फेर यावत् जाइये । एत्थणं मज्झिमगेविज्जगदेवाणं त णो पज्जत्ता २ णं ठाणा पं० । तिहां मध्यम ग्रैवेयकदेवताना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या । कहिणंभंते मज्झिमगेविज्जगादेवा परिवसंति । किहां

णिंदा अपेस्सा अपुरोहिया अहमिंदा नामं ते देवगणा पन्नत्ता । समणाउसो ! कहिणं भंते ! मज्झिमगाणं गेविज्जगदेवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पन्नत्ता । कहिणं भंते ! मज्झिमगेविज्जगदेवा परिवसंति ? गोयमा ! हेठिमगेविज्जगाणं उप्पिं सपक्खिं सपडिदिसिं जाव उप्पइत्ता एत्थणं मज्झिमगेविज्जगदेवाणं ततोगेविज्जगविमाणपत्थडा पन्नत्ता पाईणपडीणायता जहा हेठिमगेविज्जगाणं नवरं सत्तुत्तरे विमाणावाससए हवंतीति मक्खाए, तेणं विमाणा जाव पडिरूवा एत्थणं मज्झिमगेविज्जाणं देवाणं जाव तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थणं बहवे मज्झिमगेविज्जगा देवा परिवसंति जाव अहमिंदा नामं देवगणा पन्नत्ता । समणाउसो ! कहिणं भंते ! उवरिमगेविज्जगा देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता । कहिणं भंते ! उवरिम

हेभगवन् मध्यम ग्रैवेयकना देवता वसेछे । गोयमा हिट्ठिमगेविज्जगाणं उप्पिंसपक्खिं सपडिदिस जाव उप्पइत्ता । हेगौतम हेठला ग्रैवेयकथकी ऊपर घणा योजन यावत् जाइजे । एत्थणं मज्झिमगेविज्जदेवाणं तओगेविज्जविमाणपत्थडा पं० । तिहां मध्यमग्रैवेयकना देवता तीनग्रैवेयकना प्रतरछे । पाईण पईणायया एवं जहा हिट्ठिमगेविज्जगाणं नवर सत्तुत्तरे विमाणावाससए हवतित्तिमक्खाय तेणं विमाणा जाव पडिरूवा । पूर्वपश्चिमें लांबा उत्त जिम हेठलाग्रैवेयकनोपरे एतलोविशेष एकसोसात विमान तीर्थंकरे देवेकह्या तेविमान यावत् प्रतिरूप । एत्थण मज्झिमगेविज्जगाणं जाव तिसुविलोग स्स असंखिज्जइभागे । इहां मध्यमग्रैवेयकना देवताछे यावत् तीन बोललोकने असंख्यातमेंभागे छुवे । तत्थणं बहवे मज्झिमगेविज्जगदेवा परिवसंति । तिहां घणा मध्यम ग्रैवेयकना देवता वसेछे । जाव अहमेंदानामे तहेवगणा पं० । यावत् अहमिंद्रानामापदक कह्या । समणाउसो । अहोश्रमण आयुष्मन्तो । कहिणंभंते उवरिम गेविज्जगदेवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पं० । किहां हेभगवन् ऊपरिला ग्रैवेयकना देवता पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या । कहिणंभंते उवरिमगेविज्जगादेवा परिवसंति । किहां हेभगवन् ऊपरलाग्रैवेयकना देवता वसेछे । गोयमा मज्झिमगेविज्जगाण जाव उप्पइत्ता । हेगौत

किंरूपा पुनस्ते इत्याह अह मिंद्रानाम ते देवगणा प्रज्ञप्ता ? हेश्रमण हेश्रायुष्मन् ! सिद्धसूत्रे एगाजोयणकोडीइत्यादि ॥ परिरयपरिमाण विक्ख मवग्गदहगुणेत्यादि ॥ करणवशा त्स्वय मानेतव्य सुगमत्वात् क्षेत्रसमासटीका या परिभावनीया तत्र पंचचत्वारिंशल्लक्षप्रमाणविष्कम्भमनुष्यक्षेत्रपरि रयस्य एतावत्प्रमाणस्य सविस्तर भावितत्वात् तस्याश्च ईषत्प्राग्भारायाः पृथिव्या बहुमध्यदेशभागे अष्टयोजनिकनायामविष्कम्भाभ्याम अष्टयोजन

गेविज्जगा देवा परिवसंति ? गोयमा ! मज्झिमगेविज्जगदेवाण उप्पिं जाव उप्पइत्ता तत्थण उवरिमगेविज्ज गाण देवाण तउ गेविज्जगविमाणपत्थडा पण्णत्ता । पाईणपडीणाउ सेस जहा हेठिमगेविज्जगाण नवर एगे विमाणावाससए भवतीति मक्खाए, सेस तहेव भाणियव्व जाव अहमिंदा नामं ते देवगणा पण्णत्ता समणाउसो ! एक्कारसुत्तरहे ठिमएसुसत्तुत्तरचमज्झिमए । सयमेगउवरिमए पचेवअणुत्तरविमाणा ॥ १ ॥ कहिण भंते ! अणुत्तरोववाइयाण देवाण पज्जत्ता २ णं ठाणा पण्णत्ता ? कहिण भंते ! अणुत्तरोववाईया

म मध्यमग्रैवेयकथी ऊचा यावत् ऊचा । एत्थण उवरिमगेविज्जगाण देवाण तओगेविज्जविमाणपत्थडा प० इहा उपरिलाग्रैवेयकना देवताछे तीन विमा नना प्रतरछे । पाईण पडीणाइया सेस जहा हिट्ठिमगेविज्जगाण । पूर्वपश्चिम लाबा शेष सर्व जिम नीचलाग्रैवेयकनीपरे । णवर एगेविमाणावाससए हवतित्तिमक्खाय सेसतचेव भाणि० जाव अहमिंदानामे तेदेवगणा प० । एतलाविशेष एकसौविमानछे तिर्थंकरे कह्यो शेष तिमहीज कहवो यावत् अ हमिंद्र नामदेवता समूहकह्या । समणाउसोगाहा भोश्रमणा आयुषावन्तो गाथा । इक्कारसत्तरहि ट्ठमसुसत्तत्तरचमझमए । सयमेगउवरिमए पचेवअणुत्त रविमाणा ॥ १ ॥ हेठलाग्रैवेयकनेविषै एकसोइग्यारहविमान मध्यमग्रैवेयक पाचविमान अनुत्तरविमाने । कहिणभंते अणुत्तरोववाईयादेवा परिवस ति । किहा हेभगवन् अनुत्तरवासो देवता वसेछे । गोयमा इमीसे रयणप्पभाएपुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ । हेगौतम ए रत्नप्रभा पृथि वीथी घणो समोरमणीक भूमिभागथको । उड्ढंचदिम सूरिय गहगणणक्खत्ततारारूवाण । ऊचा सूर्य चंद्र गृहगण नक्षत्र तारारूपथी । वहूइंजोयणस ।

देवा परिवसंति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ उड्ढं चंदिमसूरियगहगणनक्खत्ततारारूवाणं बहूइं जोयणसयाइं बहूइं जोयणसहस्साइं बहूइं जोयणसयसहस्साइं बहुगाओ जोयणकोडीओ बहुगाओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढं दूरं उप्पइत्ता सोहम्मीसाणसणंकुमारमाहिंदबंभलोगलंतगसुक्कसहस्सारआणयपाणयआरणअच्चुयकप्पा तिण्णिय अट्ठारसुत्तरे गेविज्जविमाणावाससए वितीवइत्ता तेण परं दूरं गता णीरया निम्मला वितिमिरा विसुद्धा पंचदिसिं पंच अणुत्तरा महतिमहालया महाविमाणा पन्नत्ता, तंजहा—विजये वेजयंते जयंते अपराजिए सव्वट्ठसिद्धे । ते णं विमाणा सव्वरयणामया अच्छा सण्हा घट्ठा मट्ठा णीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पभा सस्सिरीया सउज्जोया पासा

याइं बहूइं जोयणसयसहस्साइं बहुगीओ जोयणकोडीओ बहुगीओ जोयणकोडाकोडीओ । घणा योजनना सैकडा घणा योजनना सहस्र घणा योजनना लाख घणा योजननी कोडाकोडी । उड्ढं जाव उप्पइत्ता । ऊंचा जाइने । सोहम्मीसाणसणकुमार माहिंद बंभलोग लंतग सुक्कसहस्सार आणय पाणय आरण अच्चुय कप्पा । सौधर्म इशान सनत्कुमार माहेंद्र ब्रह्म लांतक शुक्र सहस्रार आनत प्राणत आरण अच्युत । तिण्णिय अट्ठारसुत्तरे गेविज्जविमाणावाससए वीइवइत्ता । उपर तीनसें अढारह ग्रैवेयकनाविमान मूकीने जयाजाइजे । तेण परंदूरं गया नीरयावि तिमिरा विसुद्धा । तिहांथकी दूरगया रजरहित अंधारेरहित शुद्ध । पंचदिसि पंच अणुत्तरामहइमहालया महाविमाणा प० तं० । पांचेदिशि पंच अणुत्तर उत्कृष्टा मोटाथीमोटा विमान कह्या ते कहेछे—विजए वेजयंते जयंते अपराजिए सव्वट्ठसिद्धे । विजय वैजयंत जयंत अपराजित सर्वार्थसिद्ध ५ । तेण विमाणा सव्वरयणामया । ते पांचविमान सर्व रत्नमयछे । अच्छा सण्हा लट्ठा घट्ठा मट्ठा नीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया । आछा सूक्ष्मदलनोपना घांघस्या मस्या रजविना निर्मल कचरेरहित । सप्पभा सस्सिरीया सउज्जोया पासादीया दरसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा । प्रभासहित सश्रीक उद्योतसहित प्रस

प्रमाण क्षेत्र चाष्टौ योजनानि बाहुल्येन चोच्चत्वेनो चैस्त्वेनेति भाव मध्यमा तदनन्तरं सर्वासु दिक्षु विदिक्षु च मात्रया स्तोकया २ प्रदेशप्रहान्या

दीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा एत्थणं अणुत्तरोववाईयाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा प० । तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थणं बहवे अणुत्तरोववाइया देवा परिवसंति सव्वे समसड्ढिया सव्वे समबला सव्वे समाणुभावा महासोक्खा अणिंदा अप्पेस्सा अपुरोहिया अहमिंदा त देवगणा पण्णत्ता । समणाउसो ! कहिणं भंते ! सिद्धाणं ठाणा पण्णत्ता । कहिणं भंते ! सिद्धा परिवसंति ? गोयमा ! सव्वट्ठस्स महाविमाणस्स उवरिल्लाउ थूभियग्गाउ दुवालजोयणे उड्ढं अबाहाए एत्थणं इसीपब्भारा नाम पुढवी प०, पणयालीसं जोयणसयसहस्साइं आयामविक्खंभेणं एगजोयणकोडीबायालीसं च सयसहस्साइं तीसं सह

प्रकारो दृष्टव्यायोग्य अभिरूप प्रतिरूप । एत्थण अणुत्तरोववाईयाण देवाण पज्जत्ता २ ठा० प० । इहां अणुत्तरवासीदेवता पर्याप्ता अपर्याप्तानां ठाम कह्या । तिसुविलोयस्स असंखिज्जइभागे । तीने लोकने असंख्यातमेभागे । तत्थण बहवे अणुत्तरोववाईया देवा परिवसति । तिहां घणा अणुत्तरवासीदेवता वसछे । सव्वे समड्ढिया सव्वेसमबला सव्वेसुमहाणुभावा महासुक्खा । सर्व महर्द्धिक सर्व समबला सर्व महानुभाव महासुखी । अणेंद्रा अप्पेसा अपुरोहिया अहमिंदानाम देवगणा प० । इन्द्ररहीत प्रेष्यरहीत पुरोहितरहीत सर्व अहमिंद्रनामे देवकह्या । समणाउसो । आयुष्मत आयुषावन्तो । कहिणभंते ठाणा प० । किहा हेभगवन् सिद्धना स्थानक कह्या । कहिणभंते सिद्धा परिवसति । किहा हेभगवन् सिद्ध वसेछे । गोयमा सव्वट्ठस्सविमाणस्स उवरिल्लाओ थूभियग्गाओ दुवालस जोयण उड्ढं अबाहाए । हेगौतम सर्वार्थसिद्ध महाविमान ऊपरलो थूभिकाथकी १२ योजनप्रमाण ऊंचो आवाधावे । इत्थण इसीप्पभारानाम पुढवी प० । तिहां मनुष्यनी अपेक्षाये मस्तिस्करभाव माटे ईषत्प्राग्भारपृथिवी कही । पणयालीसजोयणसयसहस्साइं आयामविक्खंभेण । ४५ लाखयोजन लांबपणें पिहुलपणें, हिवे परिधि कहछे – एग जोयणकोडी बायालीसचसयसहस्साइं । एककोडी योजन ४२ लाख

परिहीयमाना सर्वेषु चरमांतेषु मक्षिकापत्रतो ऽप्य तितन्वी अंगुलासंख्येयभाग बाहल्येन प्रज्ञप्ता स्थापना ईषदिंत्याति पदैकदेशो पदसमुदायोपचा रात् ईषत्प्राग्भारा इति वा तनूतिवा तन्वीवा शेषपृथिव्यपेक्षया अतितनुत्वात् तनुतनूइतिवाइति ॥ तनुत्योपि जगत्प्रसिद्धेभ्य स्तन्वी मक्षिका पत्रतोपि पर्यंतप्रदेशेति तनुत्वात् तनुतन्वी सिद्धिरिति वा सिद्धक्षेत्रस्य प्रत्यासन्नत्वात् सिद्धालय इति वा इति सिद्धक्षेत्रस्य प्रत्यासन्नतयोपचारत सिद्धानामा लय सिद्धालय एव मुक्ति रिति वा मुक्तालय इति चेत्यपि परिभावनीय तथालोकाग्रेवर्त्तमानत्वात् लोकाग्रमिति लोकाग्रस्य स्तूपि

स्साइ दोन्नि य अउणापन्ने जोयणसए किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेण पण्णत्ता । इसीपभाराएण पुढवीए वहुमज्झदेसभाए अट्ठजोयणिए खेत्ते अट्ठजोयणाइ बाहल्लेण पन्नत्ते , ततो अणंतर चण मायाए २ पए सपरिहाणी २ परिहायमाणी २ सव्वेसु चरिमंतेसु मच्छियपत्तातो तणुयरी अंगुलस्स संखेज्जइभागे बाहल्ले ण पण्णत्ता , इसीपभाराएण पुढवीए दुवालसनामधेज्जा पण्णत्ता इसीतिवा इसीपभाराइवा तणुत्तिवा तणु

योजन । टोणियर्धाया पणजोयणसएइ किंचिविसेसाहिए परिक्खिवेण प० । टोइलारयोजननेविषे ओगणपचास योजन काइकविशेषाधिक परिधि क हियो । इसिपभाराएण पुढवीए बहुमज्झदेसभाए अट्ठजोयणिएखेत्ते अट्ठजोयणाइ बाहल्लेण प० । इम क्षेत्रसमासनी टीकाथी सर्व विस्तार जाणवो ईषत्प्रा ग्भारा पृथिवीनो घणो मध्यदेशभागे ८ योजनप्रमाणक्षेत्र ८ योजन बाहुल्य ऊंचापणे एतलो कहियो । तयाणंतरचण मायाए सपरिहाणीए परिहाय माणी २ । तिवारपछी सघलीदिशि विदिशिमात्रायें २ प्रदेशे परिहरिजमान घटत २ थकी । सव्वेसु चरिमंते समच्छियपत्ताउतणयरी अंगुलस्य असंखि ज्जइभागे बाहल्लेण प० । सघलाने छेहडे माखीनो पाखडी थिथ पातली अंगुलनो असंख्यातमेंभागनी मात्रायें बाहुल्यपणे कही । ईसिपभाराए पुढवी ए दुवालनामधिज्जा प० त० । ईषत्प्राग्भारा पृथिवीना १२ नामकह्या तेकहेछे । इसिपभाराए ताणइवा सिद्धइवा सिद्धालएत्तिवा मुत्तीइवा मुत्तालए त्तिवा लोयग्गेत्तिवा लोयग्गथूभिएइवा लोयग्गपडिवुज्झणाइवा । एकदिशि पातली तेमाटे ईषत्प्राग्भार मोटीपणेछे तेमाटे वेसो पातलोछे पातलीसू पा

केव लोकाग्रस्तूपिका तथा लोकाग्रेण प्रत्यूह्यते इति लोकाग्रप्रतिवाहिनी सव्वपाणभूयजीवसत्तसुहावहा इति ॥ प्राणा द्वित्रिचतुरिंद्रिया इति भूता स्तरवो जीवा पञ्चेंद्रिया ज्ञेया प्राणिन सत्वा उक्तञ्च प्राणाद्वित्रिचतु प्रोक्ता भूता श्च तरव स्मृता । जीवा पचेंद्रिया ज्ञेया॰ शेषा सत्वा उ दीरिता ॥ १ ॥ सर्वेषा प्राणभूतजीवसत्वाना सुखावहा उपद्रवकारित्वाभावा त्सवप्राणभूतजीवसत्वसुखावहा सा च इषत्प्राग्भारा पृथिवी श्वेता श्वेतत्वमेवो पमया प्रकटयति सखदलविमलेत्यादि शङ्खदलस्य शङ्खदलचूर्णस्य विमलोनिर्मल स्वस्तिक शङ्खदलविमलस्वस्तिक स च मृणाल च द करज श्च तुषार च हिम च गोक्षीर च हार श्च तेषा मिव वर्णो यस्या स्या तथा उत्तानकमु त्तानीकृत यत् छत्र तस्य य दसस्थान येन सस्थिता उत्तानछत्रसस्थानसस्थितत्व च प्रागुपदर्शितस्थापनातोभावनीय ॥ सव्वज्जुणसुवन्नमयी सर्वात्मनाश्वेतसुवर्णमयी इसीपब्भाराएणमित्यादि ईषत्प्राग्भा

तणुयरीतिवा सिद्धितिवा सिद्धालएतिवा मुत्तीइवा मुत्तालएइवा लोयग्गेतिवा लोयग्गथूभियातिवा लोय पडिवुज्झणाइवा सव्वपाणभूयजीवसत्तसुहावहा वइवा । इसीपब्भाराण पुढवी सेता संखदलविमलसोत्थिय मुणालदगरयतुसारगोखीरहारवन्ना उत्ताणयछत्तसठाणसठिया सव्वज्जुणसुवन्नमई अच्छा सण्हा लण्हा घठा मठा णीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पभा सस्सिरीया सउज्जोया पासादीया दरसणिज्जा अ

तलो सिद्धालय सिद्धत्वात् मुक्तिकर्मणा मुक्तित्वात मुक्तालयनोभावना ए ४ नाम गुणफलके लोकनेअग्र लोकने थुभिकानीपरे लोकाग्र ए प्रतिवुद्धत्वात् । सव्वपाण भूय जीव सत्त सहावहा । सर्व प्राण भूत जीव सत्वने तिहाजाय तेहने सुखदाई । ईसिपब्भाराण पढवी सेय सखदल विमलसोत्थिय मुणाल दगरय तुसार गोखीरहारवन्ना । ए १२ नोनाम ईषत्प्राग्भारपृथ्वी कहवीके श्वेतनो ओपमा शङ्खदल जिसो निर्मल स्वस्तिक मृणाल कमलपत्र जलपरे जल नीरज श्वेतगोष मोतीनाहार कललो जेहवो दूधसम । उत्ताणयछत्तसठाणसठिया सव्वज्जुण सुवन्नमई आ । उत्तान छत्रने,सस्थाने सस्थितके सर्व अ र्जुन स्वेत स्वर्णमय । अच्छा सण्हा लह्व घठा मठा नीरया निम्मला निप्पका निक्कंकडछाया । आछा सूक्ष्मपुद्गल निष्पन्न घठारा मठारा नीरज निमल

राया पृथिव्या ऊर्द्ध सीयाए इति नि श्रेणिगत्या योजने लोकातो भवति तस्य च योजनस्य य दुपरितन गव्यूत चतुर्थं तस्य गव्यूतस्य य सर्वो परितनो य भागो ऽत्रमितिवाक्यालकारे सिद्धाभवत सादिका कर्मक्षयानतर सिद्धत्वभावात् एतेन अनादिवुद्धपुरुषप्रवादप्रति पक्षे आवेदितो द्रष्टव्य अपर्यवसिता रागाद्यभावेन प्रतिपातासम्भवात् रागादयो हि सिद्धत्वा च्च्यावयितु प्रभविष्णवो न च ते भगवता सति तेषा निर्मूलकाषक षितत्वात् न च निर्मूलकाषकषिता अपि भूय प्रादु र्भवति बीजाभावादिति तथा नेके जातिजरामरणजन्मजरामृत्युभि र्यस्त्र तासु योनिषु ससार सवरण तेन च य कलकलीभाव कदर्थ्यमानता य श्च दिव्यसुखमनुप्राप्ताना मपि पुनर्भव ससारे गर्भवसति प्रपञ्च तौ समतिक्रान्ता अत एव शा

निरूवा पडिरूवा ईसीपब्भाराएण सीताएजोयणमिलोगतोतस्सण जोयणस्स जेसे उवरिल्ले गाऊए तस्सणं गाउयस्स जेसे उवरिल्ले छब्भागे एत्थण सिद्धा भगवतो सादिया अपज्जवसिया अणेगजातिजरामरणजोनिससारकलकलीभावपुणब्भवगब्भवासवसही एवच समइक्कता सासयमणागयद्ध काल चिठति , तत्थवियते

नि पङ्क निर्कंकटछाया । सप्पभा ससिरिया सउज्जोया पासाईया दरसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ईसिपब्भाराए मायाए । प्रभासहित सश्रीक शो भायमान उद्योतसहित मनप्रसन्नकारी देखवायोग्य अभिरूप प्रतिरूप ईषत्प्राग्भारनी माया । जोयणम्मिजोयतो तस्सण जोयणस्स जेसे उवरिल्लगाउए तस्सण गाउयस्स जेसे उवरिल्ले छभागे । योजने लोकाते ते योजने जते ऊपरिलोगाऊ छइलो ते गाऊनो जे ऊपरिलोगाऊनो छट्ठाभाग । एत्थण सि द्धाभयवतो साईया अपज्जवसिया । तिहा सिद्ध भगवन्त सोधाकर्मक्षये अनादिपक्षे दीठा कह्या अपर्यवसित रागादिकन अभाव पाछो ऊपजवो । अणेगजाइजरामरण जोणिससार कलकलीभाव पुणब्भव गब्भवाससही । अनेकजाति जरामरणयोनि ससार तेहनो कलेकलो कदर्थभाव मूको दिव्यसुख पाम्या पुनर्भवससारे गर्भनो वसति प्रपचेकरीने,वसे । एवच समयक्के तासासयमणागयद्धकाल चिठ्ठति । इम समय तिका ते तेणे दुखआक्रमनथी एतले शाश्वत अनागतकालपर्यत रह्याछे तिहाथी तेठामनो चयनथी । तत्थवियते अवेया अवेयानानिम्मला । तिहा सिद्धक्षेत्र पहुताछे भगवन्त ते वेदरहित

श्वतम नागत्त काल तिष्ठति ॥ तत्यविमतेश्रवेयाइत्यादि ॥ तत्रापि च सिद्धमेत्रगता संत स्ते भगवतो ऽवेदा पुरुषवेदादिवेदरहिता श्रवेदना सा तासातावेदनाभावात्, निर्ममाममत्वरहिता श्रसगा बाह्याभ्यन्तरसङ्गरहिता , कस्मादेवमतश्राह–ससारविप्रमुक्ता हेतो प्रथमा यत ससाराद्वि प्रमुक्ता स्तस्मादयेदा श्रवेदना निर्ममा श्रसगाश्च, पुन कथंभूता इत्याह–पएसनिवत्तसठाणा ॥ प्रदेशै रात्मप्रदेशै र्नतु बाह्यपुद्गलै शरीरपञ्चकस्या पि सर्वात्मना त्यक्तत्वात्, निर्वृत्त निष्पन्न सस्थान येषाते प्रदेशनिर्वृत्तसस्थाना श्रत्र शिष्य पृच्छन्नाह–कहिपडियासिद्धाइत्यादि ॥ कहि इत्यत्र सप्तमी तृतीयार्थेप्र कृतत्वात् ॥ यथा तिसुतिसुश्रलकियापुढवीइत्यादि ॥ सतोयमर्थ –केन प्रतिहता केन सूवलिता सिद्वा मुक्ता स्तथा क्क कस्मिन्

अवेदा अवेयणा निम्ममा असगाय ससारविप्पमुक्का पदेसनिव्वत्तिसंठाणा । कहिपडिहयासिद्धा कहिसि द्धापइठिया । कहिंवोदींचइत्ताण कत्यगतूणसिज्झइ ॥ १ ॥ अलोएपडिहयासिद्धा लोयग्गेयपइठिया । इहवोंदीचइत्ताण तत्यगतूणसिज्झइ ॥ २ ॥ दीहवाहस्सवा जचरिमभवेहविज्जसठाण । तत्तोतिभागहीणा सिद्धाणोगाहणाभणिया ॥ ३ ॥ सठाणंतुइहं भवचयतस्सचरमसमयम्मि । आसीयपदेसघण तसंठाणतहिं

वेदनारहित ममतारहित । ससगाय ससारविप्पमुक्का पएसनिव्वत्तिसठाणा २ । बाह्याभ्यंतर सगरहित ससारथीमूकाणा श्रात्मप्रदेशे बाह्यपुद्गल ५ शरीर सस्थान रहितछे । कहिपडिहयासिद्धा कहिसिद्धापयट्ठिया कहिबोंदिचइत्ताण कत्यगतूणसिज्झइ ॥१॥ शिष्यपूछे किणे प्रतिहत केणे सकलितछे सिद्ध किहा सिद्धरह्याछे किहा बोधशरीर मूकीने किहा जाइने सीझे—श्रलोएपडिहियासिद्धा लोयग्गेयपट्ठिया इहबोंदिचइत्ताण तत्यगतूणसिज्झइ॥ २ ॥ श्रलोकको खल्याछे धर्मास्तिकायादिकनो श्रभाव लोकाग्रे रह्याछे इहा मनुष्यलोके शरीरछोडीने तिहा जाइने सीझे—दीहवाहस्सवाज चरिमभवे हविज्जसठाण तत्तोतिभागहीणा सिद्धाणोगाहणाभणिया ॥ ३ ॥ दीर्घ ५०० धनुष ह्रस्व एकहाथ प्रमाणे जे छेहलेभवे सस्थाने हुवे ते सस्थानथकी त्रिभाग हीनपणे सिद्धनी श्रवगाहना कही, हिवे सठ देखाडछे—जसठाणतुइह भवचयतस्सचरमसमयम्मि श्रसीयपएसघयण तसठाणतहितस्स ॥ ४ ॥ जे इहा म

॥ टीका ॥

स्वने सिद्दा प्रतिष्टिता व्यवस्थिता , तथा क्व कस्मिन् क्षेत्रे बोंदि तनु शरीरमित्यनर्थान्तरं ता त्यक्त्वा क्व गत्वा सिध्यन्ति निष्ठितार्था भवति, सि ऊ॰इत्यत्रानुस्वारलोपो द्रष्टव्य , अथवैकवचनोपन्यासापि सूत्रशैल्या न विरोधभाक् तथाचान्यत्राप्येव प्रयोग –वत्यगधमलकार इत्यौत्तसयणाशिय। अच्छराजनत्नुनति नसैवाइत्तिवुत्तई इति । एव शिष्येण प्रश्न कृते सूरिराह–अलोएपडिहयासिद्धाइत्यादि ॥ अत्रापि सप्तमी तृतीयार्थे, लोकेन केवलाकाशास्तिकायरूपेण प्रतिहता स्खलिता सिद्धा इह तत्र धर्मास्तिकायाद्यभावा सदानन्तर्यावृत्तिरेव प्रतिस्खलन नतु सबधसति विघातो ऽप्रतिघत्वात्, सप्रतिघानामपि सबधेसति विघातो नान्यथामिति । तथा लोकस्य पञ्चास्तिकायात्मकस्य अग्र मूर्द्धनि प्रतिष्ठिता अपुनरागत्या व्यवस्थिता इह मनुष्यलोके बोंदि तनु त्यक्त्वा तत्र लोकाग्र समयान्तरप्रदेशान्तरास्पर्शनेन गत्वा सिध्यन्ति निष्ठितार्था भवन्ति, सम्प्रति तत्रगताना यत्सस्थानमान तदभिधित्सु राह–दीहंवाहस्सवाइत्यादि॥दीर्घ वा पञ्चधनु शतप्रमाण ह्रस्व वा हस्तद्वयप्रमाण, वा शब्दात् मध्यमवा विचित्र य च्चरमभवे पश्चिमभवे भवेत् सस्थान तत स्तस्मा त्सस्थाना त्त्रिभागहीना वदनोदरादिरन्ध्रपूरणेन तृतीयेन भागेन हीना सिद्धानामवगाहना अवगा हन्ते अस्यामित्यवगाहना स्वावस्थैव भणिता तीर्थकरगणधरैरिति, अत्र गत सस्थानप्रमाणापेक्षया त्रिभागहीन तत्र सस्थानमितिभाव , एतदेव स्पष्टतरमुपदर्शयति–जसठाणतुइहइत्यादि ॥ यत्सस्थान यावत्प्रमाण सस्थान इह मनुष्यभवे आसीत् तदत्र, भवति प्राणिन कर्मवशवर्तिनो ऽस्मिन्निति भव शरीर त्यजत परित्यजत काययोग परिजिहानस्येति भाव , चरमसमये सूक्ष्मक्रियाप्रतिपातिध्यानबलेन वदनोदरादिरन्ध्रपूर णात्त्रिभागेन हीन प्रदेशघनमासीत्॥ तसठाणतहितस्सेति॥ तदेव च प्रदेशघन मूलप्रमाणापेक्षया त्रिभागहीनप्रमाण सस्थान तत्र लोकाग्रे तस्य सि

॥ मूल ॥

द्धस्य ॥ ४ ॥ तिन्निसयातेत्तीसा धणुत्तिभागोयहोइनायव्वो । एसाखलुसिद्धाण उक्कोसोगाहणाभणिया ॥ ५ ॥ चत्तारियरयणीउ रयणितिभागूणियायबोधव्वा । एसाखलुसिद्धाण मज्झिमोगाहणाभणिया ॥ ६ ॥ एगाय

॥ भाषा ॥

नथनवे भय तद्द्वे तेभवे कर्मनचे शरीरछ डीने छेहलसमे सूक्ष्मक्रियाध्यान वदनोदररंध्र पूरन कह्या घनआसीत हुवे ते प्रदेश घनमूल प्रमाणपेक्षाये

हस्य ना न्यादिति । साम्प्रतमुत्कृष्टावगाहनादिन्नेदभिन्नाम निधित्सु राह-तिन्निसयातित्तीसाइत्यादि ॥ त्रीणिशतानि त्रयस्त्रिंशानि त्रयस्त्रिंशदधिका नि धनुस्त्रिभाग श्च नवति बोद्धव्य एषाखलु सिद्धाना मुत्कृष्टावगाहना नणिता तीर्थंकरगणधरैः सा च पञ्चधनु शततनुकानाम वसेया, ननु मरुदेवा नाभिकुलकरपत्नी नाभे श्च पञ्चविंशत्यधिकानि पचधनु शतानि शरीरप्रमाण यदेवच तस्य शरीरमान तदेव मरुदेवाया अपि, सघयण सठाण उच्च त चेव कुलगरेहिसममितिवचनात्, मरुदेवाच नगवती सिद्धा तत स्तस्या दहमानस्य त्रिन्नागे पातिते सिद्धावस्थाया सार्द्धानि त्रीणि धनु शता न्येवावगाहना प्राप्नोति कथ मुक्तप्रमाणा उत्कृष्टावगाहना घटते? इति नैषदोष मरुदेवाया नाभे किंचिदूनप्रमाणत्वात्, स्त्रियोह्युत्तमसस्थाना उत्तमसस्थानेभ्य पुरुषेभ्य स्व २ कालापेक्षया किंचिदूनप्रमाणा नवन्ति ततो मरुदेवापि पचधनु शतप्रमाणेति न कश्चिद्दोष, अपिच हस्तिस्कन्धा धिरूढा सकुचितागी सिद्धा तत शरीरसकोचनभावा न्नाधिकावगाहनासभव इत्यविरोध, आहच भाष्यकृत्-कहमरुदेवामाणं नाभीतोजणकिंचि

होइरयणी अठेवयअगुलाइसाहियाईया । एसाखलुसिद्धाण जहन्नोगाहणानणिया ॥ ७ ॥ नुगाहणाएसिद्धा

त्रिभाग हीनरुस्थानहुवे, हिवे ५०० धनुषअपेक्षायें ३ ३३ धनुष ऊपरे धनुषनो त्रीजोभाग सिद्धनो अवगाहना हुवे—तिन्निसयातित्तीसा धणुत्तिभागोहो इनायव्वो एसखलुसिद्धाण उक्कोसोगाहणाभणिया ॥ ६ ॥ ५०० धनुषनो कायायें सिद्धहुवे तेहनो ए निश्चे सिद्धनो उत्कृष्टअवगाहना कही । चत्तारियरय णीओ रयणतिभागूणियायबोधव्वा एसाखलुसिद्धाण मज्झिमओगाहणाभणिया ॥ ७ ॥ हिवे ७ हाथनो अवगाहना हुवे तेहने सिद्ध थयि एतलो अवगा हना ४ हाथना बीजोभाग ऊणोहुवे जघन्य ७ हाथ देहहुव ए निश्चे सिद्धनो मध्यमकही अवगाहना —एगायहोइरयणी अठेवयअगुलाइ साहियाइया एसाखलु सिद्धाणजहण्णोगाहणाभणिया ॥ ८ ॥ हिवे साढेतीनहाथनो देहहुवे तेहनो अवगाहना कहेछे एक ऊपर हाथ आठअगुलो कहिये साढा तीन ए ऊण हाथ देहहुवे ए निश्चे सिद्धनो जघन्यअवगाहना भगवन्तेकही—उगाहणाएसिद्धा भवत्तिभागेणहुतिपरहीणा सठाणमणित्थ्या जरामर णाविप्पमुक्काण ॥ ९ ॥ जेहनो अवगाहनायें सिद्ध तेहनो अवगाहनायकी त्रिभागवदनोदरादि पूर्णकहिये पूर्णकरी हीन हुवे सस्थान अनेककरी स्तु खे

दूणासा तोकिरपघसयघिय अहवासकोचतोसिद्धा। ॥ चत्तारियरयणीओ इत्यादि॥ चतस्रोरत्नयो रत्निश्च त्रिभागोना च॥ सा योधद्यासखलुसिद्धाना मवगाहना भणिता मध्यमा आह-जघन्यपद स तोच्छ्रितानां मागमे सिद्धि रुक्ता तत एषा जघन्या प्राप्नोति कथ मध्यमा तदयुक्त वस्तुतत्त्वाप रिज्ञानात्, जघन्यपदे हि सप्तहस्तानां सिद्धि ता तीर्थंकरापक्षया सामान्यकेवलिना तु हीनप्रमाणानामपि भवति इदमपि चावगाहनामान चित्य ते सामान्यसिद्धापेक्षया ततो न कश्चिद्दोष, एगायणीयइत्यादि ॥ एकारत्नि परिपूर्णा अष्टौ चागुलान्यधिकानि एषा भवति सिद्धा नामवगाहना जघन्या साच कूर्मापुत्रादीनां द्विहस्तानामवसेया, यदिवा सप्तहस्तोच्छ्रितानामपि यन्त्रपीलनादिना संवर्तितशरीराणां माह च भाष्यकृत्-जेठाउपच घणुसय मज्झामसत्तहत्थस्स । देहत्तिभागहीणा जहन्नियाजाविहत्थस्स॥१॥ सत्तूसिएसुसिद्धी जहन्नतोकहमिहविहत्थेसु साकिरतित्थयरेसु सेसाणसि ज्झमाणाण ॥ २ ॥ तेपुणहोज्जविहत्था कुम्मापुत्तादयोजहन्नेण । अन्नसयच्छियसत्त हत्थसिद्धस्सहीणत्ति ॥३॥ साम्प्रतमुक्तानुवादेनैव लक्षण सिद्धानाम भिधित्सुराह-ओगाहणाएइत्यादि ॥ सुगम, नवर-अनित्यत्थमिति ॥ इद प्रकारमापन्नमित्थं इत्थं तिष्ठतीति इत्थस्थ न इत्थस्थ अनित्थस्थ वदना दिशुषिरप्रतिपूरणेन पूर्वाकारान्यथात्वभावतो ऽनियताकारमितिभाव, योपिच सिद्धादिगुणेषु, सिद्धेनदीहेनहस्सेइत्यादिना, दीर्घत्वादीनां प्रति षध सोपि पूर्वाकारापेक्षया सस्थानस्यानित्थस्थत्वा त्प्रतिपत्तव्यो नपुन सर्वथा सस्थानस्याभावत आह च भाष्यकृत्-सुसिरपडिपूरणाओ पुव्वागार न्नहावयत्थातो । सठाणमणित्थत्थ जंभणियमणियपागार ॥ १ ॥ इत्तोच्चियपडिसेहो सिद्धाइगुणेसुदीहयाईण जमणित्थत्थपुव्वा गाराविक्खाएना भावो ॥ नन्वेतिसिद्धा परस्पर देशभेदेन व्यवस्थिता उमति नेति तद्ब्रूम कस्मादितिचेत् ॥ जत्थयइत्यादि ॥ यत्रैव देशे च शब्दस्य एवकाराथ

भवतिभागेणहोइपरिहीणा । सठाणमणित्थत्थ जजरामरणविप्पमुक्काण ॥ ८ ॥ जत्थयएगोसिद्धो तत्थअण

रादि परवैकरी जरामरण विप्रमुक्तपणेकरी सिद्धथाय—जत्थयएगोसिद्धो तत्थअणताभवक्खयविमुक्का अण्णाण्णसमोगाढा पुट्ठासव्वेविलोगते ॥ १० ॥ जिहा एक सिद्धछे तिहा अनन्तासिद्ध भवचयथको मूकाणा निजस्वभावे करीरह्याछे पिण किम अन्योन्य समवगाढपणे अचित्तपरिणाम भणी धर्मास्तिकायनीप

त्वात्, एक सिद्धो निर्वृत स्तत्रानन्ताश्नवक्षयविमुक्ता अत्र नवक्षयग्रहणेन स्वेच्छया नवावतरणशक्तिमतिसद्धव्यवच्छेदमाह–अन्योन्यसमवगाढा स्तथा विधाचिन्त्यपरिणामत्वा द्धर्मास्तिकायादिवत्, तथा स्पृष्टा लग्ना सर्वेपि लोकांते फुसइत्यादिस्पृशत्यनतान् सिद्धान् सर्वप्रदेशै रात्मसबंधिभि नि यमत्र सिद्ध तथा तेपि सिद्धा सर्वप्रदेशस्पृष्टेभ्यो ऽसख्येयगुणा वर्त्तते ये देशप्रदेशै स्पृष्टा कथमितिचे दुच्यते, इहैकस्य सिद्धस्य यदवगाहनक्षेत्र तत्रैकस्मिन्नपि परिपूर्णे अवगाढा अन्येप्यनन्ता सिद्धा प्राप्यते अपरतु ये तस्य क्षेत्रस्य एकैक प्रदेशमाक्रम्यावगाढा स्तेपि प्रत्येकमनता एव द्वि त्रिचतु पञ्चादिप्रदेशवृद्ध्या ये ऽवगाढा स्तेपि प्रत्येकमनता स्तथा तस्य मूलक्षेत्रस्य एकैक प्रदेश परित्यज्य ये ऽवगाढा स्तेपि प्रत्येकमनता एवच सति प्रदेशवृद्धिहानिभ्या ये समवगाढा स्ते परिपूर्णक्षेत्रावगाढेभ्यो ऽसख्येयगुणा भवन्ति अवगाढप्रदेशाना मसङ्ख्यातत्वात्, आहच–एगेखेत्तेणता पएसपरिवुड्ढीहाणिउ तत्तो। गुतिअसखेज्जगुणा असखपएसोजमवगाढो॥ सम्प्रति सिद्धानेव लक्षणत प्रतिपादयति–असरीरा इत्यादि॥ अविद्यमानश

ताभवक्खयविमुक्का। अन्नोन्नसमोगाढा पुट्ठासव्वेविलोयते ॥ ९ ॥ फुसइअणतेसिद्धे सव्वपएसेहिनियमसो सिद्धा। तेविअसखेज्जगुणा देसपदेसेहिजेपुट्ठा ॥ १० ॥ असरीराजीवघणा उवउत्तादसणेयनाणेय। सागा

रे फरस्याछे लोगान्तकलश करीने फरसे अनन्तासिद्ध सर्वप्रदेश ते आत्मासबधी ते सिद्ध सर्वप्रदेश स्पर्श्याथकी असख्यातगुणा ज प्रदेश फरसा किम कहि य एक सिद्धनी जे अवगाहना।चर्वे एक प्रतिपूर्ण अवगाढे अनन्तासिद्ध हवे बीजाक्षेत्र एकेक प्रदेशअवगाढने प्रत्येके अनन्ता तथा —फुसअणतेसिद्धे सव्व पएसहिनियमसिद्धो तेवियसखेज्जगुणा देसपएसेहिजेपुट्ठा ॥ ११ ॥ जिम त्रिणचार प्रदेशवृद्धि जे अवगाहना ते प्रत्येके अनन्ता तथा मूलक्षेत्र एकेक प्रसिद्ध प्रदेश परित्यागअवगाढ ते अनन्ता इमछे ३। ४ प्रदेशहीनने अनन्ताप्रदेश वृद्धिहान कहे गाथा—कायमरुदेवामाणतो नाभीतोकिंचिदूणमाणासा किरप चासयविय अहवामिकाचतोसिद्धा ॥ १ ॥ मरुदेवी ५२५ शरीरसिद्धो २२३ ए बिमदाद सकोचलात् प्रमाण औदारिकशरीर पाच रहितजीव घणा वट नादिरन्ध्र पूरणादिक उपयोगसहित दर्शनकरी ज्ञाने सामान्यविषय दर्शनविशेष ज्ञान साकारोपयोग अनाकारोपयोगसहित सुखसिद्धामें हिवे केवल

॥
॥ ७
॥ भ

रीरा अशरीरा औदारिकादिपञ्चविधशरीररहिता इत्यर्थ , जीवाश्च ते घनाश्च वदनोदरादिशुषिरपूरणात् जीवघना , उपयुक्तादर्शने केवलदर्शने ज्ञाने च केवलज्ञाने यद्यपि सिद्धत्वप्रादुर्भावसमये केवलज्ञानमिति ज्ञान प्रधान तथापि सामान्यसिद्धलक्षणमेतदिति ज्ञापनार्थ मादौ सामान्यालम्बन दर्शनमुक्त, तथाच सामान्यविषय दर्शन विशेषविषय ज्ञानमिति, तत साकारानाकार सामान्यविशेषोपयोगरूपमित्यर्थ , सूत्रे मकारो लाक्षणिको लक्षण तदन्यव्यावृत्तिस्वरूप मेतत् अनन्तरोक्त तु शब्दो वक्ष्यमाणनिरुपमसुखविशेषणार्थ , सिद्धाना निष्ठितार्थाना मिति, सम्प्रति केवलज्ञानदर्शनयो रशेषविषयता मुपदर्शयति- केवलणाणुवउत्ताइत्यादि॥ केवलज्ञानेनो पयुक्ता नत्वन्त करणेन तदभावादिति, केवलज्ञानोपयुक्ता जानन्त्यवगच्छन्ति, सर्वभावगुणभावान् सर्वपदार्थगुणपर्यायान् प्रथमो भावशब्द , पदार्थवचनो द्वितीय पर्यायवचन , गुणपर्याययो स्त्वय विशेष -सहवर्त्तिनो गुणा क्रमवर्त्तिन पर्याया इति, तथा पश्यति सर्वत खलु खलुशब्दस्या वधारणात्' सर्वतएव केवलदृष्टिभि रनताभि रनतै केवलदर्शने रित्यर्थ., केवलदर्शनाना चानतता सिद्धानामनतत्वात्' इहादौ ज्ञानग्रहण प्रथमतया तदुपयोगस्था सिध्यन्तीति ज्ञापनार्थ, सम्प्रति निरुपमसुखभाज स्ते इति दर्शयति-नविअत्थिइत्यादि । नैवास्ति मनुष्याणा चक्रवर्त्यादीनामपि तत्सौख्य नैव सर्वदेवाना मनुत्तरपर्यवसानानामपि य

रमणागार लक्खणमेयतुसिद्धाण ॥ ११ ॥ केवलणाणुवउत्ता जाणतीसव्वभावगुणभावे । पासतिसव्वंखलु केवलदिठीहिणताहि ॥ १२ ॥ नविअत्थिमाणुसाण तसोक्खनत्थिसव्वदेवाण । जसिद्धाणसुक्ख अव्वावाहउ

ज्ञान दर्शननाविशेष देखाडेछे—असरीराजोवघणा उवउत्तादसणेयनाणेय सागारमणागार लक्खणमेयतुसिद्धाण ॥ १२ ॥ केवलज्ञानेसहित जाणवा सर्वगुणनापर्याय सहस्रवर्त्ती गुणक्रमवर्त्ती पर्याय तेहने देखे सकलखलुशब्दस्य अवधारणार्थे केवलदीठो अनत केवलदर्शन अनन्तादर्शन सिद्धवर्त्ती इहा प्रथम ज्ञानगृहण उपयोग पिणसीझे इम जाणवो अर्थ निरुपम सुखभाजनछे ते देखाडेछे केवल दीवानोअर्थ कह्योनथी सूक्ष्म मनुष्यने चक्रवर्त्यादिकछे—केवलनाणुवउत्ता जाणतीसव्वभावपासती सुक्खेणसव्वओखलु केवलदिट्ठोअणताहि ॥ १३ ॥ नविअत्थमणुस्साण तसुक्खनविअसव्वदेवाण जेसिद्धाणसुक्ख अव्वा

सिद्धाना सौख्यमव्याबाधामुपगतानां न विविधा आबाधा अव्याबाधा ता मुपसामीप्येन गताना प्राप्तानां यथा नास्ति तथा न्यग्योपदर्शयति-सुरगणसुहमित्यादि ॥ सुरगणसुख देवसघातसुख समस्त सपूर्ण अतीतानागतवर्त्तमानकालोद्भवमित्यर्थ , पुन सर्वाद्धापिण्डित सर्वकालसमयगुणित तथा नतगुणमिति, तदेव प्रमाण किलासत्कल्पनया एकैकाकाशप्रदेशे स्थाप्यते, इत्येव सकलाकाशप्रदेशपूरणेन यद्यप्यनत भवति तदनन्तरमप्यनतै वर्गै वर्गितम् तथाप्येव प्रकर्षगतमपि मुक्तिसुख सिद्धिसुख न प्राप्नोति, एतदेव स्पष्टतर न्यग्यतरेण प्रतिपादयति-सिद्धस्ससुहोरासीइत्यादि॥ सुखाना राशि सुखराशि सुखसङ्घात सिद्धस्य सुखराशि सिद्धसुखराशि सर्वाद्धापिण्डित सर्वथा साद्यपर्यवसितया अद्धया यत्सुख सिद्ध प्रतिसमयमनुभवति तदेकत्र पिण्डीकृत मितिभाव, सोनतवर्गभक्तो ऽनतै वर्गमूलै रपवर्तित अनतै वर्गमूलै स्तावदपवर्त्तितो यावत्सर्वाद्धालक्षणेन गु

वगयाण ॥१३॥ सुरगणसुहसम्मत्त सव्वद्धापिण्डियअणतगुण। नविपावइमुत्तिसुह णंताहिविवग्गवग्गूहि ॥१४॥ सिद्धस्ससुहोरासी सव्वद्धापिण्डिएजइहविज्जा । सोणतवग्गभइउं सव्वागासेणमाइज्जा ॥ १५ ॥ जहनामको

वाइतवगयाण ॥ १४ ॥ नथी सुख तेहवो देवताना इन्द्रादिकन जेहवो सुखप्रसिद्धछे नथी काइ बाधा जे सिद्धने उपसमी गतिछे—सुरगणसुहसम्मत्त सव्वद्धापिंडियअणतगुण नविपावियमुत्तिसुह अणतेहिवग्गविग्गूहि ॥ १५ ॥ देवतानासघात सुखसमस्त अतीता नागत वर्त्तमानकालो हुवे जेतलासुख सर्वाद्धापिण्डित सर्वकालसमय गुणित अनन्तगुणने प्रमाणछे असत्कल्पनायें एक एकाकाशप्रदेश थापिये इम सकललोकाकाशप्रदेश शरीरे जे अणुथाय ते अनन्ता गिणिये ते गिणताथकाने अवगाढ ते परिपूर्ण क्षेत्रावगाढथकी असख्यातगुणा हुवे अवगाढप्रदेश असख्यातवर्त्ती उत्कृष्ट—एगखेत्तपता अपएसपरिवड्ढहाणिओ तत्तोहाणीओ तत्तोहवति असखिज्जगुणा असखपएसो जमवगाढो, हिवे सिद्धनोलक्षण कहेछे—सिद्धस्ससुहोरासी सव्वद्धापिंडिओजइहविज्जा सोणतवग्गभइयो सव्वागासेनमाइज्जा ॥ १६ ॥ सिद्धना सुखनीराशि सर्वाद्धापिण्डित सर्वसादि अपर्यवसितपणे मोक्षनासुख समवड तथा हिवे स्पष्टपणेभाव देखाडेछे, तेसिद्ध सुखसमये अनुभव ते एकठाकीजे तेगुणाकार अनन्तवर्गे भजिये तो सर्व लोकाकाशप्रमाने, हिवे एहनासुख आन्ताछे—ज

णकारेण गुणने यदधिक जात तस्य सर्वस्यापवर्त्तने सिद्धत्वा द्य समयज्ञाविसुखमात्रता प्राप्त इतिज्ञाय , सर्वाकाशे न माति एतावन्मात्रेपि सर्वा काशे न माति सवस्तु दूरापास्तप्रसर भवति ज्ञापनार्थं , पिण्डयित्वा पुनरपवर्त्तन सुखराशे , इयमत्रभावना-इह किल विशिष्टाह्लादरूप सुख प रिगृह्यते ततश्च यत आरभ्य शिष्टाना सुखशब्दप्रवृत्ति स्तमाह्लादमधिकृत्य एकैकगुणवृद्धितारतम्येन तावदसावाह्लादो विशिष्यते यावदनन्तगुण वृद्धया निरतिशयनिष्ठा मुपगत सोय मत्यन्तापमातीतेक्रान्तौत्सुक्यविनिवृत्तिरूप स्तिमिततमकल्प श्चरमाह्लाद सदा सिद्धाना यस्मा च्चारत प्रथमा च्चाद्वमपान्तरालवर्त्तिनो ये गुणा स्तारतम्यना ह्लादविशेषरूपा स्ते सर्वाकाशप्रदेशेभ्यो प्यतिभूयास स्तत किलोक्त-सव्वागासेनमाएज्जा इति ॥ अन्यथा तत्सर्वाकाशे न माति, तत्कथमकस्मिन् सिद्ध मायादिति पूर्वसूरिसंप्रदाय ' साम्प्रत मस्य निरुपमता प्रतिपादयति-जहनामेत्या दि ॥ यथा नाम कश्चिन्म्लेच्छो नगरगुणान् गृहनिवासादीन् बहुविधान् अनेकप्रकारान् विजानन् अरण्यागत सन् अन्यम्लेच्छेभ्यो न शक्नोति परिक थयितु कस्मा न्नशक्नोतीत्यत आह-उपमाया तत्रासत्या निमित्तकारणहेतुषु सर्वासा विभक्तीना प्रायो दर्शनमिति न्यायात् हेतौ सप्तमी' तत्र उ पमाया अभावादितिद्रष्टव्य , एषगाथाक्षरार्थ , भावार्थ कथानकादवसेयस्तच्चद-वनोमत्तारण्यराशी मिच्छो रण्णे चिठति इत्तोय वनोराया आसेण

इमिच्छो नगरगुणबहुविजाणतो । नचएइपरिकहेउ उवमाएतहिअसतीए ॥ १६ ॥ इयसिद्धाणसोक्ख अ णोवमनत्थितस्सउवम्म । किंचिविसेसेणितो सारिक्खमिणसुणहवोच्छ ॥ १७ ॥ जहसव्वकामगुणिय पुरिसो भोत्तूणभोयणकोइ । तण्हाछुहाविमुक्को अच्छिज्जजहाअमियतित्तो ॥ १८ ॥ इयसव्वकालतित्ता अउलनि

हव म ॥ इमिच्छो नगरगुणिबहुविवेविजाणतो नवप परिकहेउ उवमाएतहिअसतीए ॥ १७ ॥ जिम नगरनोवासी म्लेच्छनगरना गुणवणा ते वनवासी म्लेच्छ आगले अणजाणता आगलकहे तो ते कहो नसके नगरना रूप न कहिसके अ पमा वनमा इसो कहो देखाडे, अछतावती छतीवस्तु वनमें का ई नहीं से ण दृष्टांते करी-- इयसिद्धाणसुख अणोवमनत्थितस्सआवम्म किंचिविसेसेणित्ता सारिक्खमिणसुणहवोच्छ ॥ १८ ॥ एहवा सिद्धनासुख उपमारहित

अवहरितो त अहवि पवेसतो तेण दिठ्ठो सक्कारेऊण आणाय नीतो रन्नावि सो नगरं पच्छा उवगारित्ति गाढमुपचरितो अन्ना राया चिठ्ठइ धवल घरोवलोयणत्थं वि वासा कालेण रम्म सरिअमारढो रन्ना विसज्जिउं ततो राणेणा पुच्छन्ति केरिस नयरंति सो वियाणतो वि तत्थोवमाभावा न न एइ नयरगुणे परिकहेउ एस दिट्ठंतो अयमर्थोपनय ॥ इयसिद्धाणमित्यादि ॥ इति, अत सिद्धाना सौख्यमनुपम वर्त्तते किमिति तन आह–यतो नास्ति तस्यौपम्य तथापि बालजनप्रतिपत्तये किंचिद्विशेषण॥इत्तो॥ इति आपत्त्या दस्येत्यय, साद्दश्य मिद वक्ष्यमाण शृणुत ॥ जहसव्वेत्यादि ॥ यथेत्युदाहरणोपदर्शनार्थ, भुज्यते इति भोजन सर्वकामगुणित सकलसौन्दर्यसंस्कृत कोपि पुरुषो भुक्त्वा क्षुत्तृड्विमुक्त सन् यथा अमृततृप्त तथा तिष्ठति ॥ इयइत्यादि ॥ इति, एव निर्वाण मोक्षमुपगता सिद्धा सर्वकाल नाद्यपर्यवसित काल तृप्ता सर्वौत्सुक्यविनिवृत्तिभावत परमसतो षमधिगता अतुलमनन्यसदृश मुपमातीतत्वात्, शाश्वत प्रतिपाताभावात्, अव्याबाध लशतोपि व्याबाधाया असम्भवात्, सुख प्राप्ता, अत एव सुखिन स्तिष्ठति, एतदेव सविशेषतर भावयति–सिद्धत्तियइत्यादि ॥ सित बद्धमष्टप्रकार कर्म ध्मात भस्मीकृत यै स्ते सिद्धा पृषोदरादय इति रूपनिष्पत्ति, निर्दग्धानेकभवकर्मेधना इत्यर्थ, तच सामान्यत कर्मादिसिद्धा अपि भवन्ति, यत उक्त–कम्मेसिप्पयविज्जाय मतेजोगेयआगमे।

सासयमव्वाबाहं चिठ्ठंतिसुहीसुहंपत्ता ॥ १९ ॥ सिद्धत्तियबुद्धत्तिय पारगत्तियपरंपरगत्तिय। उम्मुक्ककम्मकवया अजराअमराअसंगाय ॥ २० ॥ णिच्छिन्नसव्वदुक्खा जातिजरामरणबंधणवि

तद्वत् सुखमो आपमा इहा मनुष्यलानयो ताठो पिण बालजनने समझावाने अर्थ स्या इस्याभाव वन्त्रमाण अर्णतो एष्वों जो तथाकशी ते सामल—ज इसव्वकामगुणिय परिमोभत्तूणजायणकोइ तणहाछुहाविमुक्का चान्छित्रजनहाअभिरततहा ॥ १९ ॥ जिम सर्वकामगुणित सकलसौन्दर्य सम्भू पइनाभाव न कोइपरुष जीमीने भाजनजपान तृषा क्षुधा ये मुकाणाथका ईपिरा अमृतेण ता जिमरहे—इमसव्वकालतित्ता आउलनिव्वाणमुवगयासिद्धा सासयम व्वाबाह चिट्ठतिसुआमुहपत्ता ॥ २० ॥ इम सर्वकाल सिद्धादि अपर्यवसित कालनगे तृप्तथका परमसतोष पाम्या अतुल अन्योन्यैवरांसा सुखपा म्या

प्रत्यागताश्चनिष्ठाव तदेकमवलम्बया ॥ १ ॥ तत कर्मादिविद्या व्यपोहायाह-बद्धा इति ॥ अज्ञाननिद्राप्रसुप्तेजगत्यपरोपदेशेन जीवादिरूप तत्त्व बुद्धवतो बुद्धा सकलमवदर्शास्वभावबोधरूपा इतिभाव , एतेपि ससारनिर्वाणोभयपरित्यागेन स्थितवत , कैश्चिदिष्यते-ससारे न च निर्वाणे, स्थितो भुवनभूतय अचिन्त्य सर्वलोकाना , चिन्तारत्नाधिकोमहानि तिवचनात्, तत स्तन्निरासायमाह-पारगताइति ॥ पार पयत ससारस्य प्रयो जनव्रातस्य वा गता पारगता , तथा भव्यत्वाक्षिप्तसकलप्रयोजनसमाप्त्या निरवशेषकर्त्तव्यशक्तिविप्रमुक्ता इतिभाव , उत्पन्नता अपि कैश्चित् य दृच्छावादिनिरक्रमसिद्धत्वनापि गीयते' तथोक्त-नैकादिसङ्ख्याक्रमतो चित्तप्राप्तिनियोगत । दरिद्रराज्याप्तिसमा तद्वन्मुक्ति क्वचित्क्कचि ॥ १ ॥ तत स्तन्निरासायाह-परम्परागता इति ॥ परम्परया ज्ञानदर्शनचारित्ररूपया मिथ्यादृष्टिसासादनसम्यग्मिथ्यादृष्ट्यविरतिसम्यग्दृष्टिदेशविरतिप्र मत्तनिवृत्त्यनिवृत्तिबादरसम्परायसूक्ष्मसम्परायोपशान्तमोहक्षीणमोहसयोगिकेवल्ययोगिकेवलिगुणस्थानभेदजनितया गता , एतच कैश्चि सत्त्वतो मुक्त क्रमरूपा अभ्युपगम्यन्त तीर्थनिकारदर्शनादिहागच्छतीति वचनत पुन ससारावतरणाभ्युपगमा दत स्तन्निराकरणायमाह-उन्मुक्तकर्मकवचा उत्प्रायत्वेना पुनर्भवरूपतया मुक्त परित्यक्त कर्मकवचमिव कर्मकवच यै स्ते उन्मुक्तकर्मकवचा , अत एव अजरा शरीराभावतो जरसोऽभावात्, अमरा अशरीरत्वादेव प्राणत्यागासम्भवात्' उक्तञ्च-वयसोहानोरजरा पाणत्यागेमरणमाहि । सद्वद्वमितद्वितय तदभावेनकस्सेव ॥ १ ॥ अ

निर्वाण पोहता सिद्ध साश्वती प्रतिपातनोअभाव अबाधो विगारथबाधा नहो जिहा एतले सुखपाम्या एतले सुखरहेछे, हिवे विशेषपणो वखाणेछे— सि द्धसिवसादि पारगसियपरपरगसिय उमक्कम्मकवचा अजराअमराअसगाय ॥ २१ सौधाकम रगजराले अघ ननिद्रा सूनी जाणव छे ससारनोपार पाम्याछे परपराये मिथ्यात्व १ सास्वादन २ जा चौदमो अयोगीगुणठाणे परपराविचढाने मोयाछे मूक्याछे कर्मनाकवच बले टन्तपणेकरी वले मूक्याछे कर्मकवच शरीरभावे जरानोअभाव अमर् अशरीरोस टे बाह्याभ्यन्तरसगरहित—निच्छिणसव्वदुक्खा जाइजरामरणबंधणविमुक्का अव्वाबाहमुव्व अ णुहवइसासयसिद्धा ॥ २२ । छे निस्तिण सर्वदुखथकी तजिनछे जाति जरामरण कर्मनाबन्धनथी मूकाणा अबाधाविना सुखप्रति पाम्या एहवा सास

सगा वाह्याभ्यन्तरसङ्गरहितत्वात् ॥ निच्छिन्नेत्यादि ॥ निस्तीर्णं लङ्घितं सर्वं दुःखं यैस्ते निस्तीर्णसर्वदुःखा ' कुत इत्याह-जातिजरामरणबन्धनवि मुक्ता ॥ जाति जन्म जरा वयोहानिलक्षणा मरणं प्राणत्यागरूपं बन्धनानि तन्निबन्धरूपाणि कर्माणि तैः विशेषतो निःशेषापगमनेन मुक्ता जाति जरामरणबन्धनविमुक्ता , हेतावियं प्रथमा, यतो जरामरणबन्धनविमुक्ता स्ततो निस्तीर्णसर्वदुःखा कारणाभावात्, ततो व्याबाधं सौख्यं शाश्वतं सिद्धा अनुभवन्ति ॥ इतिश्रीमलयगिरिविरचितायां प्रज्ञापनाटीकायां द्वितीयं पदं समाप्तं ॥ २ ॥ व्याख्यातं द्वितीयपदं मधुना तृतीय मारभ्यते-तस्यचाय मभिसम्बन्धः , इह प्रथमे पदे पृथिवीकायिकादयः प्रज्ञप्ता , द्वितीये ते एव स्वस्थानादिना चिंतिता अस्मिंस्तु तथा दिग्विभागादिना अल्पबहुत्वादि निरूप्यते, तत्रेदमादौ द्वारसंग्रहगाथाद्वय-दिसिगइइंदियकाएइत्यादि॥ प्रथमं दिग्द्वार१ तदनन्तरं गतिद्वार२ ततः इन्द्रियद्वारं ३ ततः कायद्वारं ४ ततो योगद्वारं ५ तदनन्तरं वेदद्वारं ६ ततः कषायद्वारं ७ ततो लेश्याद्वारं ८ सम्यक्त्वद्वारं ९ तदनन्तरं ज्ञानद्वारं १० ततो दर्शनद्वारं ११ ततः संयमद्वारं १२ ततः उपयोगद्वारं १३ ततः आहारद्वारं १४ ततो भाषकद्वारं १५ ततः परित्त इति, परीता प्रत्येकशरीरिणः शुक्लपाक्षिका श्च तद्द्वारं १६ तदनन्तरं पर्याप्तिद्वारं १७ ततः सूक्ष्मद्वारं १८ तदनन्तरं संज्ञिद्वारं १९ ततो ॥ भवन्ति ॥ भवसिद्धिद्वारं२० ततो स्तीति

मुक्का । अव्वाबाहसुक्खं अणुहोंतीसासयसिद्धा ॥ २१ ॥ त्रितिय पद सम्मत्त ॥ २ ॥
दिसिगइइंदियकाए जोएवेएकसायलेसाय । सम्मत्तणाणदंसण संजयउवओगआहारे ॥ १ ॥ भासगपरित्तप

ता सुखप्रति पाम्या तेहवासुख अनुभवछे ॥ पन्नवणाएठाणपयविवरणसम्मत्त २ ॥ इति श्रीप्रज्ञापनाख्यायां पन्नवणाउपांगे द्वितीयपद समाप्तयो देवता मनुष्य नारकी तिर्यंच उत्पातस्थानक विचारो ॥ २ ॥ दिसिगइइंदियकाए जोएवेएकसायलेसाए सम्मत्तणाणदंसण संजउवओग आहारे ॥ १ ॥ दिशिद्वार गतिद्वार इंद्रियद्वार कायद्वार जोग वेद कषाय लेश्या सम्यक्त्व ज्ञान दर्शन संयत उपयोग आहार १४—भासापरित्तपज्जत्त सुहुमसण्णीभवत्थीए चरिमेजीवेयखित्तबंधे पुग्गलमहदंडएचेव २७ द्वार दिसाणुवाएण • भाषाद्वार प्रत्येकशरीर शुक्लपक्ष ध्याय पर्याप्ता सूक्ष्म सन्नी भव

॥ टीका ॥

ऽस्तिकायद्वार २१ तत श्चरमद्वार २२ तदनन्तर जीवद्वार २३ तत क्षेत्रद्वार २४ ततो बन्धद्वार २५ तत पुद्गलद्वार २६ ततो महादण्डक २७ इति सर्वसङ्ख्या सप्तविंशतिद्वाराणि ॥ तत्र प्रथमद्वार मभिधित्सु राह-दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा जीवा पच्चत्थिमेण मित्यादि ॥ इह दिश प्रथमे ग्राचाराङ्ग्ये अगे अनेकप्रकारा व्यावर्णिता स्तत्रेह क्षेत्रदिश प्रतिपत्तव्या स्तासा नियतत्वा दितरासाच प्रायो ऽनवस्थितत्वा दनुपयोगित्वाच्च' क्षेत्रदिशाच प्रभव स्तिर्यग्लोकमध्यगताष्टप्रदेशका द्रुचकात्, यत उक्त-ग्रठपएसोरुयगो तिरियलोयस्समज्झियारम्मि । एसपभवोदिसाण एसेवभवे ग्रणुदिसाणमिति ॥ १ ॥ दिशा मनुपातो दिगनुसरण तेन दिशो धिकृत्येति तात्पर्यार्थ ' सर्वस्तोका जीवा पश्चिमेन पश्चिमाया दिशि कथमितिचेत् -उच्यते-इद ह्यल्पबहुत्व वादरानधिकृत्य द्रष्टव्य नसूक्ष्माणा सर्वलोकापन्नाना प्राय सर्वत्रापि समत्वात्, वादरेष्वपि मध्ये सवबहवो वनस्पति

॥ मूल ॥

जाव सुहुमसण्णीयभवत्थिसेचरिमे । जीवयखेत्तबधे पुग्गलमहदण्डएचेव ॥ २ ॥ दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा जीवा पच्चच्छिमेण पुरच्छिमेण विसेसाहिया दाहिणेण विसेसाहिया उत्तरेण विसेसाहिया दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा पुढविकाइया दाहिणेण उत्तरेण विसेसाहिया पुरच्छिमेण विसेसाहिया पच्चच्छिमेण विसेसाहिया दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा आउकाइया पच्चच्छिमेण पुरच्छिमेण विसेसाहिया दाहिणेण विसेसाहिया उत्त

॥ भाषा ॥

सिद्धि अस्ति चरमद्वार जीवद्वार क्षेत्रद्वार बध पुद्गल महादण्ड २७ एमनावासद्वार कह्या दिगिश्राश्री । सव्वत्थोवा जीवा पच्चच्छिमेण पुरत्थिमेण विसेसाहिया दाहिणेण विसेसाहिया उत्तरेणविसेसाहिया । सर्वजीव थोडा पश्चिम जेभणी सुस्थित देवतानावास गौतमद्वीप पश्चिमनें लवण तेमाटे पाणी थोडो घणा वनस्पतीनोअभाव तेमाटे पूर्वं विशेषाधिक जमाटे गौतमद्वीप नथी दक्षिण सर्वजीव विशेषाधिक जेभणी तेमाटे पाणीघणों तिहा वा वधणा चन्द्र सूर्य द्वीपनथी तेमाटे अधिक उत्तरे विशेषाधिक जीवस ८ योजन कोडाकोडीप्रमाण मानस २ असख्यातमेद्वीप तेमाटे । दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा आउकाइया पच्चच्छिमेण वि० दाहिणेण वि० उत्तरेण वि० । घणादिक्श्राश्री लेखवता सर्वथकी पुण्यानाय थोडा दक्षिण जिहा घन तिहा

कायिका अनन्तसङ्ख्याततया तेषां प्राप्यमाणत्वात्, ततो यत्र ते बहव स्तत्र बहुत्वं जीवानां यत्र त्वल्पे तत्राल्पत्व वनस्पतय श्च तत्र बहवो यत्र प्र भूता आप "जत्थजलतत्थवणमितिवचनात्„ स्तत्रावश्य पनकसेवालादीनां भावात्, तेच पनकसेवालादयो बादरनामकर्मोदये वर्त्तमाना अपि अ त्यन्तसूक्ष्मावगाहनत्वा दतिप्रभूतपिण्डीभावाच्च सर्वत्र सन्तोपि न चक्षुषा ग्राह्या, तथाचोक्तमनुयोगद्वारेषु-तेण बालग्गाउ सुहुमपणगजीवस्स सरी रोगाहणाहिन्तो असखेज्जगुणा इति„ ततो यत्रापि नैते दृश्यन्ते तत्रापि ते सतीति प्रतिपत्तव्या आहच मूलटीकाकार -इह सवयत्थो वनस्प

रेण विसेसाहिया, दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा तेउकाइया दाहिणुत्तरेण पुरच्छिमेण विसेसाहिया पच्चच्छि मेणं विसेसाहिया दिसाणुवाएण सव्वत्थोवाएण सव्वत्थोवा वाउकाइया पुरच्छिमेणं पच्चच्छिमेण विसेसाहि या दाहिणेण विसेसाहिया उत्तरेण विसेसाहिया। दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा वणस्सइकाइया पच्चच्छिमेण पुरच्छिमेण विसेसाहिया दाहिणेणं विसेसाहिया उत्तरेण विसेसाहिया। दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा बेइंदि

घणापृथ्वीकाय सर्वेरहे तिहां थोडा नरकावास घणा, तेमाटे पोलाड घणोइने पृथ्वीकाय थोडा पूर्वे उत्तरे विशेषाधिक घनभाव घणावती पूर्वं विशेषाधि क पृथ्वीकायछे चन्द्र सूर्य द्वीपमाटे। पुरच्छिमेण वि० पच्चच्छिमेण वि०। चन्द्र सूर्यद्वीप पूर्वपश्चिमेछे पश्चिम विशेषाधिक पृथ्वीकायछे। हेगौतम द्वीपमा टे पृथ्वीकायविशेष तथा पश्चिमे पृथ्वीकायविशेष धिक तथा किम पश्चिम अधोलोक सामादिसहस्रयोजनादि अवगाहछे खात पूरित न्यायेन तन्तुल्य न विशेषाधिक। दिसाणवाएण सव्वथोवा आउकाइया पचच्छिमेणदाहिणेण वि० उत्तरेण वि०। दिशनीमेले जोवता सर्वथोडा अपकायाजीव पश्चिम जेमाटे गौतमद्वीप पश्चिमे तेमाटे पाणी तिहांथोडो पूर्वे २ विशेषाधिकछे द्वीपने अभावे दक्षिणे विशेषाधिक जेभणी चन्द्रसूर्यद्वीप नथी उत्तरविशेषाधि क जेमाटे मानसरोवरछे। दिसाणवाएण सव्वथोवा तेउकाइया दाहिण उत्तरेण पुरच्छिमेण सखिज्जगुणा पचच्छिमेण वि०। दिशआश्री जोयता थो डाभर्य तेजस्काय दक्षिण भरत उत्तर भरतऐरवत थोडा विस्तारवन्तो मनुष्यथोडे अग्नि पिणथोडो तदपक्षी पूर्वं असंख्यातगुणा महाविदेहमाटे प

तथ इति कृत्वा यत्र ते सन्ति तत्र बहुत्वं जीवानां तेषां च बहुत्वं "अत्थिआउकाउत्तत्थनियमावणस्सइकाइयाइति, पणगसेवालहढाईबायराविहोंति सुहुमाआणगिज्झामणचरणाइति „ उदकं च प्रभूतं समुद्रेषु द्वीपद्विगुणविष्कम्भात्, तेष्वपि च समुद्रेषु प्रत्येकं प्राचीप्रतीचीदिशो यथाक्रमं चन्द्रसूर्य द्वीपा यावतिच प्रदेशे चन्द्रसूर्यद्वीपा अवगाढा स्तावत्युदकाभाव , उदकाभावाच्च वनस्पतिकायिकाभाव केवल प्रतीच्यां दिशि लवणसमुद्राधि पतसुस्थितनामदेवावासभूतो गौतमद्वीपो लवणसमुद्रे ऽभ्यधिको वर्तते तत्र च उदकाभावाद् वनस्पतिकायिकानां मभावात् सर्वस्तोका जीवा पश्चिमा यां दिशि तेभ्यो विशेषाधिका पूर्वस्यां दिशि तत्रहि-गौतमद्वीपो न विद्यते तत स्तावता विशेषाधिका भवन्त्य तिरिच्यते तेभ्योपि दक्षिणस्यां

या पच्चत्थिमेणं पुरच्छिमेणं विसेसाहिया दाहिणेणं विसेसाहिया उत्तरेणं विसेसाहिया, दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा तेइंदिया पच्चत्थिमेणं पुरच्छिमेणं विसेसाहिया दाहिणेणं विसेसाहिया उत्तरेणं विसेसाहिया,

विस विशेषाधिक अधायामाटे घणामाटे। दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा आउक्काइया पुरच्छिमेण पच्चत्थिमेण वि०। दिगआश्री जोवता सर्वथीथोडो वायु पूर्वे जनना घनभूमि घणी छै तेमाटेवाउथोडा पश्चिमे विशेषाधिक जभणी अधोलोकवणा तेमाटे वाउघणा उत्तरे विशे० नरकावासानेठामे पोलाड घणो माटे दक्षिणे विशेषाधिक नरकावासा घणा तिहा वाउ घणो। दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा वणस्सइकाइया पच्चत्थिमेण पुरच्छिमेण वि०। दिगनीमेले सर्व थोडा वनस्पतीकाय पश्चिम जभणी गौतमद्वीप जलथोडो तिणे माटे वनस्पती पिणथोडो पूर्वे विशेषाधिक गौतमद्वीप नथी तेमाटे पाणीघणाने वन पि णघणी। दाहिणेण वि० उत्तरेण विसेसाहिया। दक्षिणनेविषे चंद्रसूर्यद्वीपनथी तेमाटे उत्तरेवि० मानसरोवरनी अपेक्षाये वनघणी। दिसाणुवाएणं स व्वत्थोवा बेइंदिया पच्चत्थिमेण पुरच्छिमेण विसेसाहिया दाहिणेणविसेसाहिया उत्तरेण विसे०। दिगनीमेले सर्वथोडा बेइंद्रिय पश्चिम जिहा पाणीथो डा तेमाटे शंखादिक थोडा पूर्वे विशेषाधिक पाणी घणो छै तेमाटे दक्षिणे विशेषाधिक चंद्र सूर्य द्वीपनथी तेमाटे पाणीघणा बेइंद्रिय पिणघणा उत्तर वि शेषाधिक मानसरोवरमाटे। दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा तेइंदिया पच्चत्थिमेण पुरच्छिमेण वि० दाहिणेण वि० उत्तरेण वि०। दिगनीमेले सर्वथोडा तेंद्रि

दिशि विशेषाधिका । यत -तत्र चन्द्रसूर्यद्वीपा न विद्यन्ते तदभावात्, तत्रोदक प्रभूत तत्प्राभूत्यात्त वनस्पतिकायिकाअपि प्रभूता इति विशेषाधिका स्तन्योऽप्युदीच्यां दिशि विशेषाधिका किंकारणमितिचेत् उच्यते-उदीच्या हि दिशि सङ्ख्येययोजनेषु द्वीपेषु मध्ये कस्मिंश्चित् द्वीपे आयामविष्कम्भाभ्यां सङ्ख्येययोजनकोटाकोटीप्रमाण मानस नाम सर समस्ति ततो दक्षिणदिग्पेक्षया अस्यां प्रभूतमुदक सुन्कबाहुल्या च प्रभूता वनस्पतय, प्रभूता द्वीन्द्रिया शङ्खादय, प्रभूता स्तटलग्नशङ्खादिकलेवराश्रिता स्त्रीन्द्रिया पिपीलिकादय, प्रभूता पद्मादिषु चतुरिन्द्रिया भ्रमरादय, प्रभूता पञ्चेन्द्रिया मत्स्यादय इति विशेषाधिका स्तदेव समान्यतो दिगनुपातेन जीवानामल्पबहुत्व मुक्त मिदानीं विशेषेण तदाह-दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा पुढविकाइया दाहिणेणमित्यादि॥ दिगनुपातेन दिगनुसारेण दिशोधिकृत्येति भाव, पृथिवीकायिका श्चिन्त्यमाना सर्वस्तोका दक्षिणस्यां दिशि कथमिति चेत् उच्यते-इह यत्र घन तत्र बहव पृथिवीकायिका यत्र सुषिर तत्र स्तोका दक्षिणस्यां दिशि बहूनि भवनपतीनां भव

एव चउरिंदियावि, दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा णेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमेण उत्तरेणं दाहिणेणं असंखेज्जगुणा, दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा रयणप्पभापुढविणेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमेण उत्तरेण दाहिणेण असंखेज्जगुणा, दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा सक्करप्पभापुढविणेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेण दाहिणेण असंखेज्जगुणा । दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा णेरइया वालुयप्पभापुढविपुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेण दाहिणेणं असं

त पश्चिमे गौतमद्वीपमाटे पाणीथोडा थोडपाणी सेवालादिकनी निश्रा ये कथुआथोडा पूर्वे विशेषाधिक गौतमद्वीपनथा तेमाट दक्षिणे विशेषाधिक चन्द्रद्वीपनथी उत्तरे विशे० मानसरोवरमाटे। दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा चौरिंदिया पच्छिमेण पुरच्छिमेण वि० दाहिणेण उत्तरेण वि०। दिशनीसर्ले सर्वथीथोडा चउरिंद्रिय पश्चिमे गौतमद्वीपछे तेवती पाणीथोडो तिहां कमलथोडा तिहां भमरो चौरिंद्रियादिक थोडा पूर्वे विशेषाधिक गौतमद्वीपनथी तेमाटे दक्षिणे वि० चन्द्र सूर्यद्वीपनथी तेमाटे उत्तरे वि० मानसरोवरे भमरादि घणा। दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा णेरइया पुरच्छिम पच्छिम उत्तरेण

नानि यज्जो नरकावासा स्तत सुषिरप्राचूर्यसम्भवात् सर्वस्तोका दक्षिणस्यां दिशि पृथिवीकायिका स्तेभ्य उत्तरस्यां दिशि विशेषाधिका यत उत्तरस्यां दिशि दक्षिणदिगपेक्षया स्तोकानि भवनानि स्तोकानरकावासा स्ततो घनप्राचूर्यसम्भवा द्बहव पृथिवीकायिका इति विशेषाधिका , ते भ्योपि पूर्वस्यां दिशि विशेषाधिका रविशशिद्वीपानां तत्र भावात्, तेभ्योपि पश्चिमायां दिशि विशेषाधिका किंकारणमितिचेत्-उच्यते-यावतो रविशशिद्वीपा पूर्वस्यां दिशि तावन्त पश्चिमायामपि ततएव तावता साम्य पर लवणसमुद्र गौतमनामाद्वीप पश्चिमायामधिकोस्ति तेन विशे

खिज्जगुणा । दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा पंकप्पभापुढविणेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेण दाहिणेण असंखे ज्जगुणा । दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा धूमप्पभापुढविनेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेण दाहिणेण असंखेज्ज गुणा। दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा तमप्पभापुढविनेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेण दाहिणेण असंखेज्जगुणा

दाहिणेण असंखिज्जगुणा । दिशनोमिलै सर्वथोडा नारकी पूर्वेथोडा पश्चिमथोडा उत्तरेथोडा स्यामाटे पष्पावकीर्ण नरकावासाथी दक्षिणे असंख्यातगणा अधिका जेभणी दक्षिणेदिशे पुष्पकीर्ण नरकावासाछै तेमाटे कृष्णपक्षीजीव । दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा रयणप्पभा पुढवी णेरइया पुरच्छिमेण पच्छि मउत्तरेण दाहिणेण असंखिज्जगुणा । दिशानी मेलै सर्वथोडा रत्नप्रभापृथिवीना नारकी पूर्वदिशे पष्पावकीर्ण नथी पश्चिमदिशे उत्तरदिशने असंख्यात विस्तारै नरकावास छै तिहां कृष्णपक्षी घणाछै ऊपजै । दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा सक्करप्पभापढवी णेरइया पुरच्छिमेण पच्चच्छिमेण उत्तरेण दाहिणेण असं खिज्जगुणा । दिशनेमिलै सर्वथीथोडा शर्कराप्रभापृथिवीना नारकी पूर्वदिशि पुष्पावकीर्ण नथी पश्चिमें मोटा नरकावासा उत्तरनी दक्षिणे असंख्यात गुणा असंख्यातयोजनने विस्तारें कृष्णपक्षी घणा ऊपजै। दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा वालुयप्पभपढवीणेरइया पुरच्छिम पच्चच्छिम उत्तरेण दाहिणेण असं खिज्जगुणा । दिशनोमिलै सर्वथोडा वालुकप्रभाना नारकी सर्वदिशे पुष्पावकीर्ण नथी पश्चिमउत्तरथी मोटा असंख्यात विस्तरै दक्षिणे संख्यातगणा कृ ष्णपाक्षिक घणा ऊपजै तेमाटे। दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा पंकप्पभपुढवीणेरइयापुरच्छिम पच्चच्छिमउत्तरेण दाहिणेण असंखिज्जगुणा । दिशनोमिलै सर्व

पाधिका, अत्राह-ननु यथा पश्चिमायां दिशि गौतमद्वीपो ऽभ्यधिकः समस्ति तथा तस्यां पश्चिमायां दिशि अधोलौकिकग्रामा अपि योजनसहस्रावगाहाः सन्ति ततः प्रागुक्तन्यायेन तत्तुल्या एव पृथिवीकायिकाः प्राप्नुवन्ति न विशेषाधिकाः, नैतदेव-यतो ऽधोलौकिकग्रामावगाहो योजनसहस्रं गौतमद्वीपस्य पुनः षट्सप्तत्यधिकं योजनसहस्रं मुच्चैस्त्वं विष्कम्भस्तस्य द्वादशयोजनसहस्राणि यच्च मेरोरारभ्य ऽधोलौकिकग्रामेभ्यो ऽर्वाक् हीनत्वं हीनतरत्वं तत्पूर्वस्यामपि दिशि प्रभूतगर्त्तादिसम्भवात् समानं ततो यद्यधोलौकिकग्रामच्छिद्रेषु बुद्ध्या गौतमद्वीपः प्रक्षिप्यते तथापि समधिक एव प्राप्यते न तुल्य इति, तेन समधिकेन विशेषाधिकाः पश्चिमायां दिशि पृथिवीकायिकाः, उक्तं दिगनुपातेन पृथिवीकायिकानामल्पबहुत्व मिदानीमप्कायिकानामल्पबहुत्वमाह-दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा आउक्काइया इत्यादि ॥ सर्वस्तोका अप्कायिकाः पश्चिमायां दिशि गौ

दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा तमप्पभापुढविनेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेणं दाहिणेणं असंखेज्जगुणा, दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा अहे सत्तमापुढविनेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेणं दाहिणेहिंतो अहे सत्तमापुढविनेरइएहिंतो छट्ठीए तमाए पुढवीए नेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेणं असंखेज्जगुणा, दाहिणेणं असं

थोडा धूम्रप्रभापृथ्वी नारकी पूर्वदिशें पुष्पावकीर्ण नथी तेमाटे पश्चिम उत्तर नथी दक्षिणे असंख्यातगुणा कृष्णपाक्षिक घणा ऊपजे। दिसाणुवाएणं सव्व त्थोवा धूमप्पभपुढविणेरइया पुरच्छिम पच्चच्छिम उत्तरेण दाहिणेणं असंखिज्जगुणा। दिगनामेनें सर्वथोडा धूम्रप्रभानारकी पूर्व पुष्पावकीर्ण नथी ते माटे पश्चिम उत्तर नथी दक्षिणे असंख्यातगुणा कृष्णपक्षी घणा माटे। दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा तमप्पभपुढवीणेरइया पुरच्छिमउत्तरेणं दाहिणेणं असंखिज्जगुणा। दिगनामेनें सर्वथोडा तमप्रभानारकी पूर्वे पुष्पावकीर्ण नथी तेमाटे पश्चिमउत्तर नथी दक्षिणे असंख्यातगुणा। दिसाणुवाएणं सव्व त्थोवा अहेसत्तमपुढवीणेरइया पुरच्छिम पच्चच्छिम उत्तरेणं दाहिणेणं असंखिज्जगुणा। दिगनामेनें सर्वथोडा हेठ सातमीनारकी पूर्वें पुष्पावकीर्ण नरकावासा नथी तेमाटे पश्चिम उत्तर दक्षिणे असंख्यातगुणा विस्तारे कृष्णपक्षी घणा माटे, हिवे सात पृथ्वीयकी दिशिनो अल्पबहुत्व कहेछे—दाहि

॥ टीका ॥

तमद्वीपस्थाने तेषा मभावात्, तेभ्योपि विशेषाधिका पूर्वस्यांदिशि तेभ्योपि विशेषाधिका दक्षिणस्यांदिशि चन्द्रसूर्यद्वीपाभावात्, तेभ्योप्युत्तर स्या दिशि विशेषाधिका मानसर सद्भावात्, तथा दक्षिणस्या मुत्तरस्या च दिशि सर्वस्तोका तेजस्कायिका यतो मनुष्यक्षेत्रे एव वादरा स्तेज स्कायिका नान्यत्र तत्रापि यत्र वहवो मनुष्या तत्र ते वहवो वाहुल्येन पाकारम्भसम्भवात्, यत्र त्वल्पे तत्रस्तोका स्तत्र दक्षिणस्या दिशि पचसु भरतेषु उत्तरस्या दिशि पचस्वैरावतेषु क्षेत्रस्याल्पत्वात्, स्तोका मनुष्या स्तेषा स्तोकत्वेन तेजस्कायिका अपि स्तोका अल्पपाकारम्भसम्भवा तत सवस्तोका दक्षिणोत्तरयो र्दिशो तेजस्कायिका स्वस्थानेतु प्राय समाना तेभ्य पूर्वस्या दिशि सङ्ख्येयगुणा क्षेत्रस्य सङ्ख्येयगुणत्वात्, ततोपि प श्चिमाया दिशि विशेषाधिका अधोलौकिकग्रामेषु मनुष्यबाहुल्यात् ॥ दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा वाउकाइया पुरच्छिमेणमित्यादि ॥ इह यत्र शुषिर

॥ मूल ॥

खेज्जगुणा, दाहिणल्लेहिंतो तमापुढविनेरइएहिंतो पचमाधूमप्पभाए पुढवीए नेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिम उत्तरेण असखेज्जगुणा, दाहिणेण असखेज्जगुणा। दाहिणल्लेहिंतो धूमप्पभापुढविणेरइएहिंतो चउत्थीए पङ्कप्पभाए पुढवीए णेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेण असखेज्जगुणा। दाहिणेण असखेज्जगुणा। दाहि णल्लेहिंतो पङ्कप्पभापुढविनेरइएहिंतो तइयाए वालुयप्पभाए पुढविनेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेणं अ

॥ भाषा ॥

णहितो अहेसत्तमाएपुढवी णेरइयाणहितो छट्ठीएतमाएपुढवी णेरइए पुरच्छिम पच्चच्छिम उत्तरेण असखिज्जगुणा। छठे सातमीपृथ्वीनी दक्षिणदिश थी सातमीथी छट्ठीए नानारकी पूर्व पश्चिम उत्तरे असख्यातगुणा स्यामाटे होन २ तर पापकर्मना करणहार होन नरकगति उपजे तेमाटे सात मीपृथ्वीथी छट्ठीनरके असख्यातगुणा ऊपजे। दाहिणेण असखिज्जगुणा दाहिणिल्लेहिंतो तमापुढवीणेरइएहिंतो पचमाए धूमप्पभाएपढवी णेरइया पुर च्छिम पच्चच्छिम उत्तरेण असखिज्जगुणा। दक्षिणे असख्यातगुणायुक्त सर्व पाछलीपरे जाणवो दक्षिणदिशनो तमापृथ्वीनो पाचमी धूमप्रभा पृथ्वी ना नारकी होनतर पापकर्मना करणहार तेमाटे पूर्वपश्चिम उत्तरनानारकी असख्यातगुणे अधिका हुवे। दाहिणेण असखिज्जगुणा। तेहथकी दक्षि

तत्र वायुर्यत्र च घन तत्र वायवश्चाव तत्र पूर्वस्या दिशि प्रभूत घनमित्युत्पावायव पश्चिमायादिशि विशेषाधिका अधोलौकिकग्रामेषु सम्भवात् उत्तरस्या दिशि विशेषाधिका भवननरकावासबाहुल्येन शुषिरबाहुल्यात्, ततोपि दक्षिणस्या दिशि विशेषाधिक उत्तरदिगपेक्षया दक्षिणस्या दिशि भवनाना नरकावासाना चातिप्रभूतत्वात्, तथा यत्र प्रभूता आपस्तत्र प्रभूता पनकादयो ऽनन्तकायिका नवस्पतय प्रभूता शङ्खादयो द्वीन्द्रिया प्रभूता पिण्डीभूतसेवालाद्याश्रिता कुन्थ्वादय स्त्रीन्द्रिया प्रभूता पद्माद्याश्रिता भ्रमरादय श्चतुरिन्द्रिया इति, वनस्पत्यादिसूत्राणि चतुरिन्द्रियसूत्र

सखेज्जगुणा, दाहिणेण असखेज्जगुणा । दाहिणल्लेहितो वालुयप्पभापुढविणेरइएहितो वीयाए सक्करप्पभाए पुढवीए णेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेण असखेज्जगुणा दाहिणेणं असखेज्जगुणा दाहिणल्लेहितो सक्करप्पभापुढविणेरइएहितो इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए णेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेण असखेज्जगुणा । दाहिणल्लेण असखेज्जगुणा, दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा पचिदियतिरिक्खजोणिया पच्चच्छिमेणं पुरच्छि

ण असखेज्जगुणा कृष्णपक्षी घणा तेमाटे । दाहिणिल्लेहितो धूमप्पभाएपुढवीए णेरइएहितो चउत्थीए पकप्पभाए पुढवीए णेरइया पुरच्छिम पच्चच्छिम उत्तरेण असंखिज्जगुणा । दक्षिणदिशिना धूमप्रभापृथ्वीना नारकी दक्षिणदिशिथी चौथी पङ्कप्रभानानारकी पूर्व पश्चिम उत्तरना असंख्यातगुणे अधिकछे । दाहिणेण असंखिज्जगुणा दाहिणिल्लेहितो पकप्पभाएपुढवीणेरइएहितो । तेहथी दक्षिणे असख्यातगुणा कृष्णपक्षी घणा तेमाटे दक्षिणदिशिना पङ्कप्रभाना नारकीथी । तइयाए वालुयप्पभाएपुढवीए णेरइया पुरच्छिम पच्चच्छिम उत्तरेण असंखिज्जगुणा । त्रीजी वालुकप्रभापृथ्वीना नारकी पूर्व पश्चिम उत्तरना असख्यातगुणा हीनकर्मना करणहार तेमाटे । दाहिणेण असंखिज्जगुणा । तेहथकी असख्यातगुणा युक्ति पाछलीपरे । दाहिणिल्लेहितो वालुयप्पभपुढवी णेरइएहितो । दक्षिणदिशिना नारकी वालुकप्रभाना नारकीथकी । दुइयाए सक्करप्पभाए पुढवीए णेरइया पुरच्छिम पच्चच्छिम उत्तरेण असंखिज्जगुणा । दूजी शर्करप्रभाना नारकी पूर्व पश्चिम उत्तरना असख्यातगुणा हुवे थोडापापी तेमाटे दक्षिणे असख्यातगुणा हुवे थोडापापी तेमाटे ।

॥ टीका ॥

पर्यंतानि अप्कायिकसूत्र ज्ञावनीयानि, नैरयिकसूत्रे-सर्वस्तोका पूर्वोत्तरपश्चिमविदिग्नाविनो नैरयिका पुष्पावकीर्णनरकावासाना चात्रालपत्वात् यहूना प्राय सख्येययोजनविस्तृतत्वाच्च, तेन्यो दक्षिणदिग्नागविनाविनो सख्येयगुणा पुष्पावकीर्णनरकावासाना तत्र बाहुल्यात्, तथाच प्रायो सङ्ख्येययोजनविस्तृतत्वात्, कृष्णपाक्षिकाणा तस्या दिशि प्राचुर्येणो त्पादाच्च, तथाहि-द्विविधा जन्तव शुक्लपाक्षिका कृष्णपाक्षिकाश्च, तथा लक्षणमिद-किञ्चिदूनपुद्गलपरावर्तार्द्धमात्रससारास्ते शुक्लपाक्षिका अधिकतरससारज्ञाजिन स्तु कृष्णपाक्षिका, उक्तञ्च-जसिमवड्ढोपुग्गल परियट्टोसेसउयससा

॥ मूल ॥

मेण विसेसाहिया, दाहिणण विसेसाहिया, उत्तरेण विसेसाहिया, दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा मणुस्सा दाहिणउत्तरेण पुरच्छिमेण सखेज्जगुणा । पच्चच्छिमेण विसेसाहिया । दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा जवणवासी देवा पुरच्छिमपच्चच्छिमेण उत्तरेण असखेज्जगुणा । दाहिणेण असखेज्जगुणा, दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा

॥ भाषा ॥

दाहिणेण असखिज्जगुणा । दक्षिणे असख्यातगणा अधिक पाछलीपरे । दाहिणिलाहितो सक्करप्पभपुढवी णेरइएहितो । दक्षिणदिशिना शर्करप्रभापृथ्वीना नारकीथी । इमीसेरयणप्पभार पुढवीए णेरइया पुरच्छिम पच्चच्छिम उत्तरेण असखिज्जगुणा । आ पहिली रत्नप्रभापृथ्वीना नारकी पूर्व पश्चिम उत्तरना असख्यातगणा हुवे । दाहिणेण असखिज्जगणा । तेहथकी दक्षिणे असख्यातगणा, असख्यात कृष्णपक्षी माटे । दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा पचेंदिय तिरिक्खजोणिया पच्छिमेण पुरच्छिमेण विसेसाहिया उत्तरेण वि० । दिशनीमने सर्वथीथोडा पचेंद्रिय तिर्यचयोनिया पश्चिमें ते गौतमद्वीपछे लवणसमुद्र तिहापाणी थोडा तेमाटे तिर्यचयोनिया मच्छादिक थोडा ऊपजे पूर्वे विशेषाधिक गौतमद्वीप नथी उत्तरे विशेषाधिक मानसरोवर द्रह मच्छादिक घणा । दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा मणुस्सा दाहिण उत्तरेण पुरच्छिमेण सखिज्जगुणा पच्चच्छिमेण वि० । दिशथकी जोता सर्वथीथोडा मनुष्य दक्षिण उत्तर जंभणी उत्तरे ऐरवत दाक्षणे भरतक्षेत्र थोडा पूर्वे मनुष्यसख्यातगुणा अधिक जभणी महाविदेह नाटक्षेत्र पश्चिमदिशि विशेषाधिक जभणी अधोलोकग्रामिक मनुष्य घणा । दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा भवणवासीदेवा पुरच्छिम पच्चच्छिमेण उत्तरेण असखिज्जगुणा दाहिणेण असखिज्जगुणा । दिशनी

रो। तेसुकण्हपक्खियासलु अहीयपुणकयहपस्तीउ॥१॥ अतएवच स्तोका शुक्लपाक्षिका अल्पसंसारिणा स्तोकत्वात्, बहव कृष्णपाक्षिका प्रभूतसंसारि णामतिप्रचुरत्वात्, कृष्णपाक्षिकाश्च प्राचुर्येण दक्षिणस्यां दिशि समुत्पद्यन्ते न शेषासु दिक्षु तथास्वाभाव्यात्, तच्च तथास्वाभाव्य पूर्वाचार्य रेव यु क्तिभि रुपबृंह्यन्ते, तद्यथा-कृष्णपाक्षिका दीर्घतरसंसारभाजिन उच्यते दीर्घतरसंसारभाजिनश्च बहुपापोदया कुर्वन्ति, बहुपापोदया श्च क्रूरकर्माण क्रूरकर्माश्च प्राय स्तथास्वाभाव्यात्, तद्भवसिद्धिका अपि दक्षिणस्यां दिशि समुत्पद्यन्ते नशेषासु दिक्षु यत उक्त-पायमिहकूरकम्मा भवसिद्धीयाविदा हिणल्लेसु। नेरइयतिरियमणुया सुराइठाणेसुगच्छन्ति॥१॥ ततो दाक्षिणस्यां दिशि बहूना कृष्णपाक्षिकाणा मुत्पादसम्भवात्, पूर्वोक्तकारणद्वयाच्च स भवन्ति, पूर्वोत्तरपश्चिमदिग्भाविभ्यो दाक्षिणात्या असंख्येयगुणा, यथाच सामान्यतो नैरयिकाणां दिग्विभागेना ल्पबहुत्वमुक्तमेव प्रतिपृथिव्यपि

वाणमंतरादेवा पुरच्छिमेणपच्चच्छिमेण विसेसाहिया, उत्तरेण विसेसाहिया, दाहिणेण विसेसाहिया, दि साणुवाएणं सव्वत्थोवा जोइसिया देवा पुरच्छिमपच्चच्छिमेण दाहिणेणं विसेसाहिया, उत्तरेण विसेसाहिया दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा देवा सोहम्मे कप्पे पुरच्छिमपच्चच्छिमेण उत्तरेणं असंखेज्जगुणा, दाहिणेण विसे

मेले सर्वथोडा भवनवासीदेवता पूर्वपश्चिमें भवन थोडा उत्तरे असंख्यातगुणा ३० लाख भवननी अपेक्षायें दक्षिणें भुवनपती असंख्यातगुणा ३४ लाख भुवननी अपेक्षायें कृष्णपक्षी घणा ऊपजे। दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा वाणमंतरादेवा पुरच्छिमेण पच्चच्छिमेण विसेसाहिया उत्तरेण वि० दाहिणेण विसे साहिया। दिशनीमले सर्वथोडा वाणव्यंतर देवता पूर्वे स्थानकें वनभूमि घणा पश्चिमें विशेषाधिक अधोग्राम सुभेरने तिहांघणा उत्तरे विशेषाधिक नगरनीआवास घणानी अपेक्षायें दक्षिण विशेषाधिक नगरावास घणा ते भणी। दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा जोइसियादेवा पुरच्छिम पच्चच्छिमेण दा हिणेण विसेसाहिया। दिशनीमले सर्वथोडा ज्योतिषीदेवता पूर्वपश्चिम चन्द्रसूर्यना विमानछे तेमाटे विमानथोडा दक्षिणे विशेषाधिक चन्द्रसूर्यद्वीप नथी। उत्तर विशेषाधिक जेभणी मानसरोवर ज्योतिषीरहिवा आवेछे तेहनारूप सम्पदेखी जातिस्मरण पामी घणाघणा तेहे ज्योतिषीमध्ये ऊपजे तेमाटे ज

॥ टीका ॥

वक्तव्य मुक्तं सर्वत्रापि समानत्वा त्तदेव प्रतिपृथिव्यपि दिग्विभागेना ल्पबहुत्व मु क्तमिदानीं सप्तापि पृथिवीरधिकृत्य दिग्विभागेना ल्पबहुत्व माह-दाहिणिल्लेहिंतो अहे सत्तमपुढविनेरइएहिंतो छट्ठीए तमाए पुढवीए नेरइया इत्यादि ॥ सप्तमपृथिव्या पूर्वोत्तरपश्चिमदिग्विभाविभ्यो नैरयिके भ्योपि सप्तमपृथिव्यामेव दाक्षिणात्या स्ते ऽसङ्ख्येयगुणा स्तेभ्य षष्ठपृथिव्या तमप्रभाभिधानाया पूर्वोत्तरपश्चिमदिग्विभाविभ्यो ऽसङ्ख्येयगुणा कथमिति चेत्, उच्यते-इह सर्वोत्कृष्टपापकारिण सञ्ज्ञिपचेन्द्रियतिर्यग्मनुष्या सप्तमनरकपृथिव्या मुत्पद्यन्ते, किंचिद्धीनहीनतरपापकर्मकारिणश्च पष्ठ्यादिषु पृथिवीषु सर्वोत्कृष्टपापकर्मकारिणश्च सर्वस्तोका बहवश्च यथोत्तर किंचिद्धीनतरादिपापकर्मकारिण स्ततो युक्तमसङ्ख्येयगुणत्व, सप्तमपृथिवीदाक्षि णात्यनारकापेक्षया षष्ठपृथिव्या पूर्वोत्तरपश्चिमनारकाणा मेव मुत्तरोत्तरपृथिवीरप्यधिकृत्य भावयितव्य, तेभ्योपि तस्यामेव षष्ठपृथिव्या दक्षिणस्या

॥ मूल ॥

साहिया, दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा देवा ईसाणेकप्पे पुरच्छिमपच्चच्छिमेण उत्तरेण असंखेज्जगुणा दाहिणे ण विसेसाहिया, दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा देवा सणकुमारेकप्पे पुरच्छिमपच्चच्छिमेण उत्तरेण असंखेज्जगु णा, दाहिणेण विसेसाहिया दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा देवा माहिंदे कप्पे पुरच्छिमेणपच्चच्छिमेण, उत्तरेण

॥ भाषा ॥

पर घणा। दिसाणुवाएण सव्वत्थोवादेवा सोहम्मेकप्पे पुरच्छिम पच्चच्छिमेण उत्तरेण असंखिज्जगुणा दाहिणेण विसेसाहिया। दिशनीमेले सर्वथोडा सौधर्म कल्पे पूर्वदिशे जेभणी पुष्पावकीर्ण नथी पश्चिमेंपिण एहजभाव उत्तरे असंख्यातगुणा अधिक दक्षिणदिशि विशेषाधिक जेमाटे कृष्णपक्षी। दि साणुवाएण सव्वत्थोवा देवा इसाणेकप्पे पुरच्छिम पच्चच्छिमेण उत्तरेण असंखिज्जगुणा। दिशनीमेले जावता सर्वथोडा इशानकल्पे पूर्वे पुष्पावकीर्ण नथी तेमाटे पश्चिम उत्तरे असंख्यात विस्तारविशेष। दाहिणेण विसेसाहिया। दक्षिणे असंख्यातगणा कृष्णपक्षी घणा ऊपजे। दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा दशा माहिंदे कप्पे पुरच्छिम पच्चच्छिमेण उत्तरेण असंखिज्जगुणा। दिशाआश्री जीवता सर्वथोडा देवता माहेंद्र कल्पना देवता सर्वपश्चिमे पुष्पावकीर्ण नथी उत्तरे असंख्यातगुणा। दाहिणेण विसेसाहिया। दक्षिणविशेषाधिक कृष्णपक्षी ऊपजे। दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा बंभलोए कप्पे देवा पुरच्छिम प

दिशि नारका असंख्येयगुणा युक्तिरत्र प्रागेवोक्ता तेभ्योऽपि पञ्चमपृथिव्यां धूमप्रभाभिधानायां पूर्वोत्तरपश्चिमदिग्भाविनो संख्येयगुणा तेभ्योऽपि तस्यामेव पञ्चमपृथिव्यां दाक्षिणात्या असंख्येयगुणा ' एवं सर्वास्वपि क्रमेण वाच्य, तिर्यक्पचेन्द्रियसूत्र त्वप्कायसूत्रवत्–दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा मणुस्सा दाहिणउत्तरेणमित्यादि ॥ सर्वस्तोका मनुष्या दक्षिणस्या मुत्तरस्यां च पञ्चानां भरतक्षेत्राणां पञ्चानां मैरावतक्षेत्राणां मत्यल्पत्वात्, तेभ्य पूर्वस्यां दिशि संख्येयगुणा क्षेत्रस्य सख्येयगुणत्वात्, तेभ्योऽपि पश्चिमायां दिशि विशेषाधिका स्वभावत एवाधोलौकिकग्रामेषु मनुष्यबाहुल्यभावा त् ॥ दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा भवणवासीत्यादि ॥ सर्वस्तोका भवनवासिनो देवा पूर्वस्यां पश्चिमायाच दिशि तत्र भवनानामल्पत्वात्, तेभ्यो उ त्तरदिग्भाविनो ऽसंख्येयगुणा स्वस्थानतया तत्र भवनानां बाहुल्यात्, तेभ्योऽपि दक्षिणदिग्भाविनोऽसंख्येयगुणा स्तत्र भवनानां मतीवबाहुल्यात्,

असंखेज्जगुणा, दाहिणेणं विसेसाहिया। दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा बम्भलोए कप्पे देवा पुरच्छिमपच्चच्छिमउ त्तरेण दाहिणेण असंखेज्जगुणा दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा बम्भलोए कप्पे देवा पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेण दाहिणेण असंखेज्जगुणा। दिसाणुवाएणं लंतए कप्पे देवा पुरच्छिमपच्चच्छिम उत्तरेण दाहिणेण असंखेज्ज

पच्छिम उत्तरेण दाहिणेण असंखिज्जगुणा। दिशनीमेले सर्वथोडा ब्रह्मलोक कल्पनादेवता पूर्व पश्चिमे पण्यावकीर्ण नथी उत्तरे दक्षिणे असंख्यातगुणा। दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा लंतएकप्पे देवा पुरच्छिम पच्चच्छिम उत्तरेण दाहिणेण असंखिज्जगुणा। दिशनीमेले सर्वथोडा लांतककल्पनादेवता पूर्व पश्चि म उत्तरे दक्षिणे असंख्यातगुणा जाणवा। दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा देवा महासुक्ककप्पे पुरच्छिम पच्चच्छिम उत्तरेण दाहिणेण असंखिज्जगुणा। दिशनीमेले सर्वथोडा देवता महाशुक्र कल्पना पूर्व पश्चिमे उत्तरे दक्षिणे असंख्यातगुणा शुक्रपाक्षी घरे। दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा सहस्सारे कप्पे दे वा पुरच्छिम पच्चच्छिम उत्तरेण दाहिणेण असंखिज्जगुणा। दिशनीमेले जोवता सर्वथोडा देवता सहस्रारकल्पना पूर्व पश्चिमे उत्तरे दक्षिणे असंख्यात कृष्णपक्षी माटे। तेण पर बहुसमोववण्णगा समणाउसो। तिवारपछे सरीखा स्यामाटे तिहां मनुष्य ऊपजे ते समावती सरीखा हुवे अर्हाग्रमणो आयु

तयाहि-निकाये २ चत्वारि २ भवनशतसहस्राण्यतिरिच्यंते, कृष्णपाक्षिकाश्च बहवो स्तत्रोत्पद्यन्ते, ततो भवन्त्यसंख्येयगुणा, व्यन्तरसूत्रे भावना यत्र शुषिरं तत्र व्यन्तरा प्रचरन्ति, यत्र घनं तत्र न, तत पूर्वस्या दिशि घनत्वात् स्तोका व्यन्तरा स्तेभ्यो ऽपरस्या दिशि विशेषाधिका, अधो लौकिकग्रामेषु शुषिरसम्भवात्' तेभ्योप्युत्तरस्या दिशि विशेषाधिका स्वस्थानतया नगरावासबाहुल्यात्, तेभ्योपि दक्षिणस्या दिशि विशेषाधिका अतिप्रभूतनगरावासबाहुल्यात्, तथा सर्वस्तोका ज्योतिष्का पूर्वस्या पश्चिमाया च दिशि चन्द्रादित्यद्वीपेषूद्यानकल्पेषु कतिपयानामेव तेषा भावात्' तेभ्योपि दक्षिणस्या दिशि विशेषाधिका विमानबाहुल्यात्'' कृष्णपाक्षिकाणा दक्षिणदिग्भावित्वाच्च, तेभ्यो प्युत्तरस्या दिशि विशेषाधिका यतो मानसे सरसि बहवो ज्योतिष्का क्रीडास्थान मिति क्रीडनव्यापृता नित्यमासते, मानससरसि च ये मत्स्यादयो जलचरा स्ते आसन्नविमानदर्शनत समुत्पन्नजातिस्मरणात् किंचिद्व्रत प्रतिपद्या नशनादिच कृत्वा कृतनिदाना स्तत्रोत्पद्यन्ते, ततो भवन्त्यौत्तराहा दाक्षिणात्येभ्यो

विशेषाधिका, तथा सौधर्म कल्पे सर्वस्तोका पूर्वस्या पश्चिमाया च दिशि वैमानिकादेवा यतो यान्यावलिकाप्रविष्टानि विमानानि तानि चतसृष्वपि दिक्षु तुल्यानि यानि पुन पुष्पावकीर्णानि तानि प्रभूतानि असंख्येययोजनविस्तृतानि तानि च दक्षिणस्यामुत्तरस्या दिशि नान्यत्र तत सर्वस्तोका पूर्वस्या पश्चिमाया च दिशि तेभ्य उत्तरस्या दिशि असङ्ख्येयगुणा पुष्पावकीर्णविमानाना बाहुल्या दसंख्येययोजनविस्तृतत्वाच्च, तेभ्योपि दक्षिणस्या दिशि विशेषाधिका, कृष्णपाक्षिकाणा प्राचुर्येण तत्र गमनात्, एवमीशानसनत्कुमारमाहेन्द्रकल्पसूत्राण्यपि भावनीयानि, ब्रह्मलोककल्पे सर्वस्तोका पूर्वोत्तरपश्चिमदिग्भाविनो देवा यतो बहव कृष्णपाक्षिका स्तिर्यग्योनयो दक्षिणस्या दिशि समुत्पद्यन्ते शुक्लपाक्षिका पुन पूर्वोत्तरपश्चिमासु शुक्लपाक्षिकाश्च स्तोका इति पूर्वोत्तरपश्चिमदिग्भाविन सर्वस्तोका तेभ्यो दक्षिणस्या दिशि असंख्येयगुणा कृष्णपाक्षिकाणा बहूना तत्रोत्पादात्, एव लान्तकशुक्रसहस्रारसूत्राण्यपि भावनीयानि, आनतादिषु पुन मनुष्या एवोत्पद्यन्ते तेन प्रतिकल्प प्रतिग्रैवेयक प्रत्यनुत्तरविमान चतसृषु दिक्षु

प्रायो बहुसमावेदितव्या स्तथाचाह ॥ तेणपर बहुसमीवक्तगा समणाउसो । इति दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा सिद्धा दाहिणउत्तरेणमित्यादि ॥ सर्वस्तोका सिद्धा दक्षिणस्या मुत्तरस्या च दिशि कथमितिचेत् ? उच्यते-इह मनुष्याएव सिध्यन्ति नान्ये मनुष्या अपि सिध्यतो येषु आकाशप्रदेशे विह चरमसमये अवगाढा स्तेष्वेवाकाशप्रदेशेषू र्ध्वमपि गच्छन्ति, तेष्वेव चोपर्यवतिष्ठन्ति, न मनागपि वक्रं गच्छन्ति, सिध्यन्तिच, यत्र दक्षिणस्या दिशि पचतु भरतेषुत्तरस्या दिशि पञ्चस्वैरावतेषु मनुष्या अल्पा क्षेत्रस्याल्पत्वात्, सुखमसुखमादौ च सिद्धेरभावादिति तत्रत्यसिद्धा सर्वस्तोका तेभ्य पूर्वस्या दिशि सङ्ख्येयगुणा पूर्वविदेहाना भरतैरावतक्षेत्रेभ्य सङ्ख्येयगुणतया तद्गतमनुष्याणामपि सङ्ख्येयगुणत्वात्, तेषा च सर्वकाल सिद्धिभावात्, तेभ्य पश्चिमाया दिशि विशेषाधिका अधोलौकिकग्रामेषु मनुष्यबाहुल्यात् गत दिग्द्वार मिदानी गतिद्वार-तत्रेदमादिसूत्र-एए सिण भते । नेरइयाणमित्यादि ॥ सर्वस्तोका मनुष्या पण्णवतिच्छेदनकच्छेद्यराशिप्रमाणत्वात् सच पण्णवतिच्छेदनकदायीराशि रग्रे दर्शयिष्यते, त

गुणा । दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा देवा महासुक्के कप्पे पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेणं दाहिणेण असंखेज्जगुणा दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा देवा सहस्सारे कप्पे पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेणं दाहिणेण असखेज्जगुणा , तेण

सन् । दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा सिद्धा दाहिणुत्तरेण पुरच्छिमेण सखिज्जगुणा पच्छिमेण विसेसाहिया द्वार १ । दिशनीमेले जोता सर्वथोडा सिद्ध दक्षिण उत्तरे भरतऐरवतना थाडा तेभणी थोडासिद्ध पूर्व महाविदेह भणी सख्यातगुणा पश्चिमे अधोग्रामे मनुष्यघणा तेभणी सिद्धा विशेषाधिक इति दिशिद्वार ॥ १ ॥ हिवे गतिद्वारनो अल्पबहुत्व कहेछे—एएसिण भते णेरइयाण तिरिक्खजोणियाण मणुस्साण देवाण सिद्धाणय पचगईसमासे । एहने हेभगवन् नारकीनो तिर्यचयोनियाने मनुष्यने देवताने सिद्धने पाचगति ते समासेकरी । सेण कयरे २ हितो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहिया । ते किहा २ थोडाहुवे घणाहुवे सरीखाहुवे किहा विशेषाधिक हुवे । गोयमा सव्वत्थोवा मणुस्स णेरइया असखिज्जगुणा देवा असखिज्जगुणा सिद्धा अणतगुणा तिरिक्खजोणिया अणतगुणा । हेगौतम सर्वथोडा मनुष्यछनुछेदनकछे इत्यादि प्रमाणने आगे विचार कहेछे—तेहथको नारकी असख्यातगुणा

॥ टीका ॥

भ्यो नैरयिका असङ्ख्येयगुणा अङ्गुलमात्रक्षेत्रप्रदेशराशेः सम्बन्धिनि प्रथमवर्गमूले द्वितीयवर्गमूलेन गुणिते यावान् प्रदेशराशिः भवति, तावत्प्रमाणासु घनीकृतस्य लोकस्यैकप्रादेशिकीषु श्रेणिषु यावन्तो नभःप्रदेशास्तावत्प्रमाणत्वात्, तेभ्यो देवा असङ्ख्येयगुणा व्यन्तराणां ज्योतिष्काणां च प्रत्येकं प्रतरासङ्ख्येयभागवर्त्तिश्रेणिगताकाशप्रदेशराशिप्रमाणत्वात्, तेभ्यः सिद्धा अनन्तगुणा अभव्येभ्योऽप्यनन्तगुणत्वात्, तेभ्यस्तिर्यग्योनिका अनन्तगुणा वनस्पतिकायिकानां सिद्धेभ्योऽप्यनन्तगुणत्वात्, तदेवं नैरयिकतिर्यग्योनिकमनुष्यदेवसिद्धरूपाणां पञ्चानामल्पबहुत्वमुक्तमिदानीं नैरयिकतिर्यग्योनिकतिर्यग्योनिकीमनुष्यमानुषीदेवदेवीसिद्धलक्षणानामष्टानामल्पबहुत्वमभिधित्सुरिदमाह-एएसि णं भंते! नेरइयाणमित्यादि ॥ स

॥ मूल ॥

पर वङ्कसमोयवन्नगा समणाउसो ! दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा सिद्धा दाहिणउत्तरेण पुरच्छिमेण सखेज्जगुणा, पच्चच्छिमेणं विसेसाहिया दार १ । एएसि णं भंते ! णेरइयाणं तिरिक्खजोणियाणं मणुस्साणं देवाणं सिद्धाणय पचगइसमासेणं कयरे कयरेहितो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहिया वा ? गोयमा !

॥ भाषा ॥

अंगुलमात्र क्षेत्रप्रदेश राशिनुं पहिले वर्गमूल गुणते बीजे वर्गमूले गुणते प्रदेशराशि हुवे तेतलमान सू घनकीजे लोकना एकेको एकप्रदेशकीजे जेतलो ते नभप्रदेश तेतलाप्रमाणवती असंख्यातगुणा व्यन्तरज्योतिषीनो प्रत्येकप्रतर संख्येयभागवर्त्ती श्रेणिगत आकाश प्रदेशराशिछे ते प्रमाणछे सिद्ध अनन्तगुणा अभव्यथी अनन्तगुणा तमाटे तिर्यंचयोनिया अनन्तगुणा । वनस्पतीकाय अनन्तकाय तम टे । एएसिणंभंते णेरइयाणं तिरिक्खजोणियाणं मणुस्साणं मणुस्सीणं देवाणं देवीणं सिद्धाणय अट्ठगइसमासेणं कयरे २ हितो अप्पावा ४ । एह हेभगवन एह नारकीने तिर्यंचने तिर्यंचणीने मनुष्यने मनुष्यणीने देवने देवीने सिद्धने ए आठपद समासेकरी माहोमाहि करो किहा २ थोडा अधिका । गोयमा सव्वत्थोवाओ मणुस्सीओ मणुस्सा असंखिज्जगुणा णेरइया असंखिज्जगुणा । हेगौतम सर्वथोडी मनुष्यणी मनुष्यथी सत्तावीसगुणी सत्तावीसअधिकछे पिण इहां थोडी ते सम्मूर्छिममनुष्य माहिभल्या तेमाटे स्त्रीथी मनुष्य असंख्यातगुणा तमनुष्यथी नारकी असंख्यातगुणा । तिरिक्खजोणिणीओ असंखिज्जगुणाओ देवा असंखिज्जगुणा देवीओ संखिज्जगुणीओ सि

वंसीका मानुष्यो मनुष्यस्त्रिय संख्येयकोटाकोटीप्रमाणत्वात्, ताभ्यो मनुष्या असंख्येयगुणा इह मनुष्या सम्मूर्च्छनजा अपि गृह्यन्ते, वेदस्या विर हणात्, तत्र सम्मूर्च्छनजा वान्तादिषु नगरनिर्द्धमनान्तेषु जायमाना असंख्येया प्राप्यन्ते तेभ्यो नैरयिका असंख्येयगुणा मनुष्या उत्कृष्टपदे ऽपि श्रे ण्यसङ्ख्येयभागगतप्रदेशराशिप्रमाणा लभ्यन्ते, नैरयिकास्त्वङ्गुलमात्रक्षेत्रप्रदेशराशिसत्कद्वितीयवर्गमूलगुणितप्रथमवर्गमूलप्रमाणश्रेणिगताकाशप्रदेशरा शिप्रमाणा स्ततो नैरयिका असङ्ख्येयगुणा स्तेभ्य स्तिर्यग्योनिका स्त्रियो ऽसङ्ख्येयगुणा प्रतरासङ्ख्येयभागवर्त्यसङ्ख्येयश्रेणिगत प्रदेशराशिप्रमाणत्वात्, ताभ्यो

सव्वत्थोवा मणुस्सा णेरइया असंखेज्जगुणा देवा असंखेज्जगुणा सिद्धा अणंतगुणा तिरिक्खजोणिया अनंतगुणा। एएसि णं भंते! णेरइयाणं तिरिक्खजोणियाणं तिरिक्खजोणिणीणं मणुस्साणं मणुस्सीणं देवाणं देवीणं सिद्धाणय अट्ठगतिसमासेणं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा? गोयमा! सव्वत्थोवा मणुस्सीओ मणुस्सा असंखेज्जगुणा। णेरइया असंखेज्जगुणा तिरिक्खजोणिणीओ असंखेज्जगुणा

दा अनंतगुणा तिरिक्खजोणिया अणंतगुणा द्वार २। ते नारकीथी तिर्यंच स्त्री असंख्यातगुणी प्रतर असंख्यातभाग वर्त्तमान श्रेणि नभप्रदेश राशिप्र माण ते तिर्यंचणीथी देवता असंख्यातभाग वर्त्ति गतप्रदेश राशिप्रमाण ते देवताथी देवांगना संख्यातगुणी ३२ गुण ३२ रूप इति वचनात देवीथी सि द्धजीव अनंतगुणा ते सिद्धथकी तिर्यंचयोनिया अनंतगुणा सूक्ष्मबादर निगोद थिवात् इति गतिद्वार संपूर्ण हुवे, हिवे इन्द्रियद्वार कहिछे—दूजपदे तीजोद्वार॥ ३॥ एएसि णं भंते सइंदियाणं। एह हेभगवन् सेन्द्रिय। एगिंदियाणं बेइंदियाणं तेइंदियाणं चउरिंदियाणं पंचेंदियाणं अणिंदियाणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४। एकेंद्रियने बेइन्द्रियने तेइन्द्रियने चौरिन्द्रियने पंचेन्द्रियने अनेन्द्रियने सिद्धने कोहरा २ थी थोडा अथवा घणा। गोयमा सव्वत्थोवा पंचेंदिया। हेगौतम सर्वे पंचेंद्रि संख्यातयोजन कोडाकोडी तेहथी। चउरिंदिया विसेसाहिया तेइंदियाविसेसाहिया बेइंदियाविसेसाहिया। चौरिंद्रि यविशेषाधिक विष्कंभ सूचीप्रभूत संख्यातयोजन कोडाकोडी प्रमाण तेंद्रिविशेषाधिक विष्कंभ सूचीप्रभूत तर संख्यातयोजन कोडाकोडी प्रमाण तेह

॥ टीका ॥

पि देवा असंख्येयगुणा प्रतरासंख्येयभागवर्त्त्यसंख्येयश्रेणिगतप्रदेशराशिमानत्वात्, तेभ्योपि देव्य संख्येयगुणा द्वात्रिंशद्गुणत्वात्, ताभ्योपि सिद्धा अनन्तगुणा स्तेभ्योपि तिर्यग्योनिका अनन्तगुणा, अत्र युक्ति प्रागेवोक्ता, गत गतिद्वार मिदानी मिन्द्रियद्वार मधिकृत्याह-एएसिण भंते ! सइंदियाणमित्यादि ॥ सर्वस्तोका पञ्चेन्द्रिया संख्येया दशयोजनकोटाकोटीप्रमाणविष्कम्भसूचीप्रतिप्रतरासंख्येयभागवर्त्त्यसंख्येयश्रेणिगताकाशप्रदे

॥ मूल ॥

णु । देवा असंखेज्जगुणा । देवीउ संखेज्जगुणाउ सिद्धा अणंतगुणा तिरिक्खजोणिया अणंतगुणा दार २। एएसिण भंते ! सइंदियाण एगिंदियाण बेइंदियाण तेइंदियाण चउरिंदियाण पंचिंदियाण अणिंदियाणय कयरे कयरेहितो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पंचिंदिया चउरिंदियाविसेसाहियातेइंदिया विसेसाहिया बेइंदिया विसेसाहिया अणिंदिया अणंतगुणा । एगिंदिया अ० सइंदिया वि० । एएसिण भंते ! सइंदियाण एगिंदियाण बेइंदियाण तेइंदियाण चउरिंदिया पंचिंदियाण अपज्जत्तगाण कयरे कयरेहितो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पंचि

॥ भाषा ॥

थी बेंद्रिय विशेषाधिक सूचीप्रभूत असंख्यातयोजन कोडाकोडी प्रमाण । अणिंदिया अणंतगुणा एगिंदिया अणंतगुणा सइंदिया विसेसाहिया । तेह थी अनेंद्रियासिद्ध अनन्तगुणा एकेंद्रिय अनन्तगुणा वनस्पतिमाहि चालतेथकी तेहथी सेंद्रिय विशेषाधिकते बेंद्रियमाहिला । एएसिणभंते सइंदियाण बेंदियाण तेइंदियाण चउरिंदियाण पंचिंदियाणय अपज्जत्तगाण कयरे २ हितो अप्पावा ४ । भगवन् एह सेंद्रियने एकेंद्रियने बेन्द्रियने तेरिंद्रियने चौरिंद्रियने पचेंद्रियने अपर्याप्तामाहि किहा २ थकी थोडा घणा । गोयमा सव्वत्थोवा पंचिंदिया अपज्जत्तगा चउरिंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया तेंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया बेइंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया एगिंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया सइंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया । हे गौतम सर्वथीथोडा पचेंद्रिय अपर्याप्ता एकप्रतरे जेतला अगुल असंख्यातभागमात्र खण्ड तेतलेप्रमाण तेहथी चउरिंद्रिय अपर्याप्ता विशेषाधिक प्रभूतअगुल

शशिप्रमाणत्वात्, तेभ्य श्चतुरिन्द्रिया विशेषाधिका विष्कम्भसूच्या स्तेषा प्रभूतसंख्येययोजनकोटाकोटीप्रमाणत्वात्, तेभ्योपि त्रीन्द्रिया विशेषाधिका स्तेषा विष्कम्भसूच्या प्रभूततरसंख्येययोजनकोटाकोटीप्रमाणत्वात्, तेभ्योपि द्वीन्द्रिया विशेषाधिका स्तेषा विष्कम्भसूच्या प्रभूततरसंख्येययोजनकोटाकोटीप्रमाणत्वात्, तेभ्यो ऽनीन्द्रिया अनन्तगुणा सिद्धाना मनन्तत्वात्, तेभ्योपि एकेन्द्रिया अनन्तगुणा वनस्पतिकायिकाना सिद्धेभ्यो प्यनन्तगुणत्वात् तेभ्योपि सेन्द्रिया विशेषाधिका द्वीन्द्रिया दीनामपि तत्र प्रक्षेपात्, तदेवमुक्त मेकमौघिकाना मल्पबहुत्व मिदानी मेतेषा मेवा पर्याप्तना द्वितीयमल्पबहुत्वमाह-एएसि णं भंते! सइंदियाणं मित्यादि ॥ सर्वस्तोका पचेंद्रिया अपर्याप्ता एकस्मिन्प्रतरे यावन्त्यङ्गुलासंख्येयभागमात्राणि खण्डानि तावत्प्रमाणत्वात्' तेषा तेभ्य श्चतुरिन्द्रिया अपर्याप्ता विशेषाधिका प्रभूताङ्गुलासंख्येयभागखण्डप्रमाणत्वात्, तेभ्य स्त्रीन्द्रिया अपर्याप्ता विशेषाधिका प्रभूततरप्रतराङ्गुलासंख्येयभागखण्डमानत्वात्, तेभ्योपि द्वीन्द्रिया अपर्याप्ता विशेषाधिका प्रभूततमाङ्गुला

दिया अपज्जत्तगा चउरिंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, तेइंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, बेइंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, एगिंदिया अपज्जत्तगा अणंतगुणा, सइंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया। एएसिणं भंते! सइंदियाणं एगिंदियाणं बेइंदियाणं तेइंदियाणं चउरिंदियाणं पंचिंदियाणं पज्जत्तगाणं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा? गोयमा! सव्वत्थोवा पज्जत्तगा चउरिंदिया

असंख्यातभाग खण्ड तेतने प्रमाण तेहथी तेंद्रिय अपर्याप्ता विशेषाधिक प्रभूतप्रतर असंख्यात भागमात्र खण्डप्रमाण तेहथी बेंद्रिय अपर्याप्ता विशेषाधिकप्रभूतप्रतर असंख्यातभाग खण्डप्रमाण एकेंद्रिय अपर्याप्ता अनन्तगुणा सदा अनन्ता पामिये तेहथी अपर्याप्ता विशेषाधिक बेंद्रिय अपर्याप्तानाहि घालता। एएसिणंभंते सइंदियाणं। हेभगवन एह सेंद्रियने। एगिंदियाणं बेइंदियाणं तेइंदियाणं चउरिंदियाणं पचेंदियाणं पज्जत्तगाणं कयरे २ हिंतो अप्पावा ४। एकेंद्रियने बेइन्द्रियने तेइन्द्रियने चौरिन्द्रियने पचेंद्रियने पर्याप्ताने किहा २ थकी अल्पबहुत्व ४। गोयमा सव्वत्थोवा चउरिंदिया पज्जत्त

संख्येयभागरखण्डप्रमाणत्वात्, तेभ्य एकेन्द्रिया अपर्याप्ता अनन्तगुणा वनस्पतिकायिकानामपर्याप्तानामनन्ततया सदा प्राप्यमाणत्वात्, तेभ्योपि सेन्द्रिया अपर्याप्ता विशेषाधिका द्वीन्द्रियाद्यपर्याप्तानामपि तत्र प्रक्षेपात्, गत द्वितीयमल्पबहुत्व मधुनैतेषामेव पर्याप्तानामल्पबहुत्वमाह-स एसिणं भंते ! सइंदियाणमित्यादि ॥ सर्वस्तोका चतुरिन्द्रिया पर्याप्ता यतोल्पायुष चतुरिन्द्रिया स्तत प्रभूतकालमवस्थानाभावात्, पृच्छासमये

पंचिंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, तेइंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, बेइंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, एगिंदिया पज्जत्तगा अणंतगुणा, सइंदिया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा। एएसिणं भंते ! सइंदियाणं पज्जत्ताप ज्जत्तगाणं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सइंदिया अपज्जत्ता पज्जत्तगा सइंदिया संखेज्जगुणा। एएसिणं भंते ! एगिंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरे हिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा एगिंदिया पज्जत्तगा एगिंदिया अपज्जत्ता असं०। एएसिणं भंते !

था पचेंद्रिय पज्जत्तगा विसेसाहिया। हेगौतम सर्वथोडा चौरिंद्रिया पर्याप्ता जेभणी थोडा आउखामाहि तेहथी पचेंद्रिय पर्याप्ता जेभणी विशेषाधिक प्रभूत अगुल असख्यात भागमात्र खण्डप्रमाण। बेइंदियपज्जत्तगा विसेसाहिया तेइंदिय पज्जत्तगा विसेसाहिया एगिंदिय पज्जत्तगा विसेसाहिया अण तगणा सइंदियपज्जत्तगा विसेसाहिया। बेइंद्रिय पर्याप्ता विशेषाधिक प्रभूततर अगुल असख्यात भागमात्रखड तेतले प्रमाण तेंद्रियपर्याप्ता विशेषा धिक एकेंद्रियपर्याप्ता अनन्तगुणा वनस्पतिपर्याप्ता अनन्तामाटे तेहथी सेंद्रिय पर्याप्ता विशेषाधिक बेइन्द्रियपर्याप्तामाहि घालता। एएसिण भते सइ दियाण पज्जत्ताण अपज्जत्ताणय कयरे २ हितो अप्पावा ४। हेभगवन् एह सेंद्रियने पर्याप्ता अपर्याप्ताने विषे २ कवो थोडा इत्यादि ४ ॥ गोयमा सव्वत्थोवा सइंदिया अपज्जत्तगा सइंदिया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा। हेगौतम सर्वथोडा सेंद्रिय अपर्याप्ता इहा सेंद्रियमाहि एकेंद्रिय घाले सूक्ष्म पर्या प्ता सेंद्रिय सख्यातगुणा हुवे। एएसिणभते एगिंदियाण पज्जत्त अपज्जत्तगाणय कयरे २ हितो अप्पावा ४। हेभगवन् एह एकेंद्रियने पर्याप्ता अपर्याप्ता

स्तोका अपि प्रतरे यावन्त्यङ्गुलसंख्येयभागमात्राणि खण्डानि तावत्प्रमाणा वेदितव्या स्तेभ्य पञ्चेन्द्रियपर्याप्ता विशेषाधिका प्रभूताङ्गुलसंख्येयभागखण्डमानत्वात्, तेभ्योऽपि द्वीन्द्रिया पर्याप्ता विशेषाधिका प्रभूततरप्रतराङ्गुलसंख्येयभागखण्डमानत्वात्, तेभ्योऽपि त्रीन्द्रियाः पर्याप्ता विशेषाधिका स्वभावत एव तेषां प्रभूततमप्रतराङ्गुलसंख्येयभागखण्डप्रमाणत्वात्' तेभ्य एकेन्द्रियाः पर्याप्ता अनन्तगुणा वनस्पतिकायिकानां पर्याप्तानामनन्तत्वात्, तेभ्य सेन्द्रिया पर्याप्ता विशेषाधिका द्वीन्द्रियादीनामपि पर्याप्तानां तत्र प्रक्षेपात्, गत तृतीयमल्पबहुत्व-सम्प्रत्येतेषामेव सेन्द्रियाणां प्रत्येकपर्याप्ताऽपर्याप्तगतान्यल्पबहुत्वान्याह-एएसिणं भंते ! इत्यादि सर्वस्तोका सेन्द्रिया अपर्याप्तका इह सेन्द्रिया एव बहव स्तत्रापि

बेइंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा । सव्वत्थोवा बेइंदिया अपज्जत्ता बेइंदिया अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । एएसिणं भंते ! तेइंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा तेइंदिया पज्जत्तगा तेइंदिया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा। एएसिणं भंते ! चउरिंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा चउरिंदियापज्जत्तगा चउरिंदिया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा। एएसिणं भंते ! पंचेंदियाणं पज्जत्ता पज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो

माहि किहाथकी थोडा घणा सरीखा विशेषाधिक हुवे ४ ॥ गोयमा सव्वत्थोवा एगिंदिय अपज्जत्तगा पज्जत्तगा संखेज्जगुणा । हे गौतम सर्वथोडा एकेंद्रिय पर्याप्तावादर सूक्ष्मअपर्याप्ता घणाहुवे एकेंद्रिय पर्याप्ता संख्यातगुणाछे। एएसिणं भंते पज्जत्ता २ णं कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । हेभगवन् एह बेइन्द्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ताने किहा २ थकी थोडा घणा इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा बेइंदिया पज्जत्तगा बेइंदिया अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा । हे गौतम सर्वथोडा बेइन्द्रिय पर्याप्ता जेतला प्रतरना अंगुल संख्यातप्रमाण तेहथी बेइन्द्रिय अपर्याप्ता असंख्यातगुणा असंख्यात प्रतरभाग । एएसिणं भंते तेइंदियाणं पज्जत्ताणं कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । हेभगवन् एह तेंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ताने किहा २ थी थोडा घणा सरीखा विशेषाधिक हुवे ।

॥ टीका ॥

सूक्ष्मा स्तेषां सर्वलोकापन्नत्वात्, सूक्ष्माश्चापर्याप्ता सर्वस्तोका पर्याप्ता संख्येयगुणा इति, सेन्द्रिया अपर्याप्ता सर्वस्तोका पर्याप्ता संख्येयगुणा एवं मेकेन्द्रिया अप्यपर्याप्ता सर्वस्तोका पर्याप्ता संख्येयगुणा भावनीया, तथा सर्वस्तोकाद्वीन्द्रिया पर्याप्ता यावन्ति प्रतरे ऽङ्गुलस्य असंख्येयतमा

॥ मूल ॥

अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पंचिंदिया पज्जत्तगा पंचिंदिया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । एएसिणं भंते ! सइंदियाणं एगिंदियाणं बेइंदियाणं तेइंदियाणं चउरिंदियाणं पंचिंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे २ हितो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा चउरिंदिया पज्जत्तगा पंचिंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, बेइंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, तेइंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, पंचिंदिया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा

॥ भाषा ॥

गोयमा सव्वत्थोवा तेंदिया पज्जत्ता २ असंखेज्जगणा । हेगौतम सर्वथोडा तेंद्रियपर्यापता जेतला प्रतरना अंगुल संख्यात खंडप्रमाण तेंद्रियपर्यापता असंख्यातगुणा हवे प्रतरगत असंख्यातगुणा हवे । एएसिणं भंते चउरिंदिया ण पज्जत्ता २ णय कयरे २ हितो अप्पावा ४ । हेभगवन् एह चौरिंद्रिय ते पर्यापता अपर्यापता किहा २ थकी थोडा हवे घणा हवे ४ ॥ गोयमा सव्वत्थोवा चउरिंदिया पज्जत्तगा असंखिज्जगुणा । हेगौतम सर्वथोडा चउरिंद्रिय पर्यापता जेतला प्रतरना अंगुल संख्यात भागप्रमाण प्रतरगत अंगुल २ असंख्यातभाग प्रमाण । एएसिणं भंते पंचेंदियाण पज्जत्ता २ णय कयरे २ हितो अप्पावा ४ । हेभगवन् एह पंचेंद्रिय पर्यापता अपर्यापताने किहा २ थकी थोडा घणा विशेषाधिक हुवे । गोयमा सव्वत्थोवा पंचेंदिया पज्जत्तगा पंचिंदिया अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा । हेगौतम सर्वथोडा पंचेंद्रिय पर्यापता प्रतरांगुल संख्यातभाग प्रमाण पंचेंद्रिय अपर्यापत असंख्यातगणा प्रतरगत असंख्यातप्रमाण । एएसिणं भंते सइंदियाण एगिंदियाण बेइंदियाण तेइंदियाण चउरिंदियाण पंचेंदियाण पज्जत्ता० णय कयरे२ हितो अप्पावा४ । भगवन् एह सेंद्रियने एकेन्द्रियने बेंद्रियने तेइन्द्रियने चउरिंद्रियने पंचेंद्रियने पर्यापता अपर्यापताने किहा२ थी थोडा घणा हुवे । गोयमा सव्वत्थोवा चउरिंदिया पज्जत्तगा पंचेंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया तेइंदियपज्जत्तगा विसेसाहिया बेइंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया । हेगौतम सर्वथोडा चौरिंद्रिय

स्तोका अपि प्रतरे यावन्त्यङ्गुलसङ्ख्येयभागमात्राणि खण्डानि तावत्प्रमाणा वेदितव्या स्तेभ्य पञ्चेन्द्रियपर्याप्ता विशेषाधिका प्रभूताङ्गुलसङ्ख्येयभागखण्डमानत्वात्, तेभ्योपि द्वीन्द्रिया पर्याप्ता विशेषाधिका प्रभूततरप्रतराङ्गुलसङ्ख्येयभागखण्डमानत्वात्, तेभ्योपि त्रीन्द्रिया पर्याप्ता विशेषाधिका स्वभावत एव तेषा प्रभूततमप्रतराङ्गुलसङ्ख्येयभागखण्डप्रमाणत्वात्' तत्र एकेन्द्रियाः पर्याप्ता अनन्तगुणा वनस्पतिकायिकाना पर्याप्ताना मनन्तत्वात्, तेभ्य सेन्द्रिया पर्याप्ता विशेषाधिका द्वीन्द्रियादीनामपि पर्याप्ताना तत्र प्रक्षेपात्, गत तृतीयमल्पबहुत्व-सम्प्रत्येतेषामेव सेन्द्रियाणा प्रत्येकपर्याप्ताऽपर्याप्तगतान्यल्पबहुत्वान्याह-एएसिण भते। इत्यादि सवस्तोका सेन्द्रिया अपर्याप्तका इह सेन्द्रिया एव बहव स्तत्रापि

वेइंदियाण पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा। सव्वत्थोवा वेइंदिया अपज्जत्ता वेइंदिया अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा। एएसिण भंते! तेइंदियाण पज्जत्तापज्जत्ताण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा! सव्वत्थोवा तेइंदिया पज्जत्तगा तेइंदिया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा। एएसिण भंते! चउरिंदियाण पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा! सव्वत्थोवा चउरिंदियापज्जत्तगा चउरिंदिया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा। एएसिण भंते! पचेंदियाण पज्जत्ता पज्जत्ताण कयरे कयरेहिंतो

माहि किहाथकी थोडा घणा सरीखा विशेषाधिक हुवे ४ ॥ गोयमा सव्वत्थोवा एगिंदिय अपज्जत्तगा पज्जत्तगा संखेज्जगुणा। हेगौतम सर्वथोडा एकेंद्रिय पर्याप्तावादर सूक्ष्मअपर्याप्ता घणाहुवे एकेंद्रिय पर्याप्ता सख्यातगुणाछे। एएसिण भते पज्जत्ता २ ण कयरे २ हिंतो अप्पावा ४। हेभगवन् एह बेइन्द्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ताने किहा २ थकी थोडा घणा इत्यादि। गोयमा सव्वत्थोवा वेइंदिया पज्जत्तगा वेइंदिया अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा। हे गौतम सर्वथोडा वेइन्द्रिय पर्याप्ता जेतला प्रतरना अगुल सख्यातप्रमाण तेहथी बेइन्द्रिय अपर्याप्ता असख्यातगणा असख्यात प्रतरभाग। एएसिण भ ते तेइंदियाण पज्जत्ताण कयरे २ हिंतो अप्पावा ४। हेभगवन् एह तेंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ताने किहा २ थी थोडा घणा सरीखा विशेषाधिक हुवे।

॥ टीका ॥

त्वात्' तेभ्य स्तेजस्कायिका असंख्येयगुणा असंख्येयलोकाकाशप्रमाणत्वात्, तेभ्य पृथिवीकायिका विशेषाधिका प्रभूतासङ्ख्येयलोकाकाशप्रदेशप्रमाणत्वात्, तेभ्यो ऽप्कायिका विशेषाधिका प्रभूततरासङ्ख्येयलोकाकाशप्रदेशप्रमाणत्वात्, तेभ्यो वायुकायिका विशेषाधिका प्रभूततमासङ्ख्येयलोकाकाशप्रदेशमानत्वात्, तेभ्यो ऽप्कायिका अनन्तगुणा, सिद्धाना मनन्तत्वात्, तेभ्यो वनस्पतिकायिका अनन्तगुणा अनन्तलोकाकाशप्रदेशराशिमानत्वात्, तेभ्य सकायिका विशेषाधिका पृथिवीकायिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात्, उक्तमौघिकानामल्पबहुत्व मिदानी मेतेषामेवा पर्याप्तानां द्वितीयमल्पबहुत्वमाह-एएसिण भंते। सकाइयाणमित्यादि ॥ सुगम, सम्प्रत्येतेषामेव पर्याप्तानां तृतीयमल्पबहुत्वमाह-एएसिण भंते। सकाइयाणमित्यादि ॥

॥ मूल ॥

याण कयरे कयरेहितो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा तसकाइया तेउकाइया असंखेज्जगुणा, पुढविकाइया विसेसाहिया, आउकाइया विसेसाहिया, वाउकाइया विसेसाहिया अकाइया अणंतगुणा, वणस्सइकाइया अणंतगुणा, सकाइया विसेसाहियावा । एएसिणं भंते ! सकाइयाणं पुढविकाइयाण आउकाइयाण तेउकाइयाण वाउकाइयाण वणस्सइकाइयाण तसकाइयाणय अपज्जत्तगाण कयरे कय

॥ भाषा ॥

हा २ थकी थोडा इत्यादि ॥ ४ ॥ गोयमा सव्वत्थोवा तसकाइया तेउकाइया असंखिज्जगुणा । हे गौतम सर्वथोडा त्रसकाया भाजना पाछलीपरे तेहथी असख्यातगुणा । पुढवीकाइया वि० आउकाइया वि० वाउकाइयावि० अकाइया अण० वणस्सइकाइया अण० सकाइया वि० । तेहथी पृथिवीकायिक विशेषाधिक प्रभूत असख्यात लोकाकाश प्रमाण तेहथी वाउकाय वि० प्रभूत तमस० लोकाकाश तेहथी अकाइया अणतगुणा सिद्धता भणी तथा वनस्पतीकाय अनन्तगुणा अनन्तलोकाकाश प्रमाण तेहथी सकाइय विशेषाधिक पृथ्वीकायादिमाहि घालताथोघपणे । एएसिण भंते सकाइयाण पढवीकाइयाण आउ० तेउ० वाउ० वणस्सइ० तसकाय० अपज्जत्तगाणय कयरे २ हितो अपपावा ४ । हेभगवन् एह सकाइयाने पृथ्वीकायने अपकाय तेउ वाउ वनस्पती त्रसकायने अपर्याप्ताने किहा २ थकी थोडा वणा विशेषाधिक ४ । गोयमा सव्वथोवा तसकाइया अपज्जत्तगा तेउकाइया अपज्जत्तगा अ

॥ टी

गमात्राणि खण्डानि तावत्प्रमाणत्वा त्तेषा तेभ्यो ऽपर्याप्ता असंख्येयगुणा प्रतरगताङ्गुलासंख्येयभागखण्डमानत्वा देव त्रिचतुरिन्द्रियाल्पत्वान्यपि वक्तव्यानि, गत पञ्चल्पबाहुल्यत्वात्मक चतुर्थमल्पबहुत्व सम्प्रत्येतषा सन्द्रियादीना समुदितानां पर्याप्तापर्याप्तानामल्पबहुत्वमाह-एएसिण भंत । इत्यादि ॥ इद प्रागुक्तद्वितीयतृतीयाल्पबहुत्वभावनानुसारेण स्वय भावनीय, तत्वतो भावितत्वात्, गत मिन्द्रियद्वार मिदानी कायद्वार मधि कृत्याह-एएसिण भंत । सकाइयाण मित्यादि ॥ सवस्तोका स्त्रसकायिका द्वीन्द्रियादीनामेव त्रसकायिकत्वात्, तेषाच शेषकायापेक्षया अत्यल्प

॥ मू

चउरिंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, तेइंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, बेइंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, एगिंदिया अपज्जत्तगा अणंतगुणा, सइंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, एगिंदिया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा, सइंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सइंदिया विसेसाहिया दार ३ । एएसिणं भंते ! सकाइयाण पुढविकाइयाण आउकाइयाण तेउकाइयाणं वाउकाइयाण वणस्सइकाइयाण तसकाइयाण अकाइ

॥ भा

पर्याप्ता भावना पाछलीपरे तेहथी पचेंद्रिय पर्याप्ताविशेषाधिक जाणिवा तेहथी तेन्द्रियपर्याप्ता विशेषाधिक तेहथी बेइंद्रिय पर्याप्ता विशेषाधिक । पचेंदिया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा चउरिंदिया अपज्जत्तगा वि० तेइंदिया अपज्जत्तगा वि० बेइंदिया अपज्जत्तगा वि० एगिंदिया अपज्जत्तगा अ० । सइंदिया अपज्जत्तगा वि० । तेहथी पचेंद्रिय अपर्याप्ता असंख्यातगुणा तेहथी चौरिंद्रिय अपर्याप्ता विशेषाधिक तेहथी तेन्द्रिय अपर्याप्ता विशेषाधिक तेहथी बेइन्द्रिय अपर्याप्ता विशेषाधिक तेहथी एकेन्द्रिय अनन्तगुणा तेहथी सेइन्द्रिय अपर्याप्ता विशेषाधिक । एगिंदिया पज्जत्तगा संखिज्जगुणा सइंदियपज्जत्तगा वि० दार ॥ ३ ॥ तेहथकी एकेन्द्रियपर्याप्ता संख्यातगुणा तेहथी सेन्द्रिय पर्याप्ता विशेषाधिक जाणवा इति तृतीयद्वार तीजे पदे तीसरोद्वार सपूर्णहुवो ॥ एएसिणभंते सकाइयाणं पढवीकाइयाण आउका० तेउका० वाउका० वणस्सइ का० तसका० अकाइयाणं कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । हेभगवन् कायद्वारकह्यो एह सकायने पृथ्वीकायने अपकायने तेउकायने वाउकायने वनस्पतीकायने त्रसकायने अकायने एकमांहि कि

वधा ८ १ ॥

॥ टीका ॥

सुगम, साम्प्रतमेतेषामेव सकायिकादीना प्रत्येक पर्याप्ताऽपर्याप्तगत मल्पबहुत्वमाह-एएसिण भते ! सकाइयाण पज्जत्ताऽपज्जत्ताणमित्यादि ॥
सुगमम्, सम्प्रत्येतेषामेव सकायिकादीना समुदिताना पर्याप्ताऽपर्याप्ताना मल्पबहुत्व पञ्चममाह-एएसिण भते ! सकाइयाणमित्यादि ॥ सर्वस्तो

॥ मूल ॥

विसेसाहिया । एएसिण भते! सकाइयाण पज्जत्ता पज्जत्ताण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा! सव्वत्थोवा सकाइया अपज्जत्तगा, सकाइया पज्जत्तगा सखेज्जगुणा । एएसिण भते ! पुढविकाइयाण पज्जत्ता पज्जत्ताण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पुढविकाइया अपज्जत्तगा, पुढविकाइया पज्जत्तगा सखिज्जगुणा। एएसिण भते ! आउकाइयाण पज्जत्ता पज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा आउकाइया अप

॥ भाषा ॥

नस्पतीकाय पर्याप्ता अनन्तगुणा। सकाइया पज्जत्तगा वि० । तेहथी सकाइया पर्याप्ता विशेषाधिक । एएसिण भते सकाइयाण पज्जत्तापज्जत्ताणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । भगवत एह सकाइयाने पर्याप्ता अपर्याप्ताने किहा २ थी थोडा इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा सकाइया अपज्जत्तगा सकाइया पज्जत्तगा सखेज्जगुणा । हेगौतम सर्वथोडा सकाइया अपर्याप्ता तेहथी सकाइया पर्याप्ता सख्यातगुणा। एएसिण भते पढवीकाइयाण पज्जत्ता २ णय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । हेभगवन् एह पृथ्वीकायिकने पर्याप्ता अपर्याप्ताने कहा २ थी थोडा घणा विशेषाधिक हुवे । गोयमा सव्वथोवा पुढवीकाइया अपज्जत्तगा पुढवीकाइया पज्जत्तगा सखिज्जगुणा । हेगौतम सर्वथोडा पृथ्वीकाय अपर्याप्ता पृथ्वीकाय पर्याप्ता सख्यातगुणा । एएसिण भते आउकाइयाण पज्जत्तापज्जत्ताणय कयरे २ हिंता अप्पावा ४ । हेभगवन् एह अपकायने पर्याप्ता किहाथी थोडा घणा सरीखा विशेषाधिक । गोयमा सव्वत्थोवा आउकाइया अपज्जत्तगा आउकाइया पज्जत्तगा सखेज्जगुणा । हेगौतम सर्वथोडा अपकाय अपर्याप्ता अपकाय पर्याप्ता सख्यातगुणा। एएसिण भते तेउकाइयाण पज्जत्ता २ णय कयरे २ हिंतो अप्पावा । हेभगवन् एह तेउकायने पर्याप्ता अपर्याप्ताने किहाथी थोडा घणा ६

रेहितो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा तसकाइया अपज्जत्तगा, तेउकाइया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा, पुढविकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, आउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, वाउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, वणस्सइकाइया अपज्जत्तगा अणतगुणा। सकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया एएसिणं भंते ! सकाइयाणं पुढविकाइयाण आउकाइयाण तेउकाइयाण वाउकाइयाण वणस्सइकाइयाणं तसकाइयाणय पज्जत्तगाण कयरे कयरेहितो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा तसकाइया पज्जत्तगा, तेउकाइया पज्जत्तगा असखेज्जगुणा, पुढविकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया। आउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, वाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, वणस्सइकाइया पज्जत्ता अणंतगुणा, सकाइया पज्जत्ता

सखिज्जगुणा। हेगौतम सर्वथीथोडा त्रसकाइया अपर्यापता तेहथी तेउकाय अपर्यापता असख्यातगुणा। पुढवीकाइया अपज्जत्तगा वि० आउकाइया अपज्जत्तगा वि० वाउकाइया अपज्जत्तगा वि० वणस्सइकाइया अपज्जत्तगा अणतगुणा। तेहथी पृथिवीकाइया अपर्यापता विशेषाधिक तेहथी अपकाइया अपर्यापता विशेषाधिक तेहथी वाउकाइया अपर्यापता विशेषाधिक तेहथी वनस्पतीकाइया अपर्यापता अनन्तगुणा। सकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया वाउकाइया अपज्जत्तगा वि०। तेहथी सकाइया अपर्यापता विशेषाधिक तेहथी वाउकाय अपर्यापता विशेषाधिक। एएसिण भंते सकाइयाण पुढवीकाइयाण आउ० तेउ० वाउ वणस्स० तसका० पज्जत्तगाणय कयरे २ हितो अप्पावा ४। हेभगवन् ए सकायने पृथ्वीकाइयाने अपका० तेउ वाउ वनस्पती त्रस० पर्यापताने किहा २ थी थोडा अथवा घणाहवे ४। गोयमा सव्वत्थोवा तसकाइया पज्जत्तगा वि० तेउकाइया पज्जत्तगा वि० असं०। हेगौतम सर्वथोडा त्रसकाय पर्यापता तेहथी तेउकाय पर्यापता वि० असख्यातगुणा। पढवीकाइया पज्जत्तगा वि० आउकाइया पज्जत्तगा वि० वाउकाइया अपज्जत्तगा वि० वणस्सइकाइया पज्जत्तगा अण०। पृथ्वीकाइया पर्यापता वि० अपकाइया पर्यापता वि० वायुकाय पर्यापताविशेष तेहथी व

॥ टीका ॥

विशेषाधिका १०। ततो वनस्पतयो ऽपर्याप्ता अनन्तगुणा ११। पर्याप्ता असंख्येयगुणा १२। तदेवं कायद्वारे सामान्येन पञ्चसूत्राणि प्रतिपादितानि। सम्प्रत्यस्मिन्नेव द्वारे सूक्ष्मबादरादिभेदेन पञ्चदशसूत्राण्याह-एएसिणं भंते। सुहुमाणमित्यादि ॥ सर्वस्तोकाः सूक्ष्मतैजस्कायिका असंख्येय

॥ मूल ॥

त्तगा सखेज्जगुणा। एएसिण भंते ! तसकाइयाण पज्जत्ता पज्जत्ताण कयरे कयरेहितो अप्पावा४ गोयमा ! सव्वत्थोवा तसकाइया पज्जत्तगा, तसकाइया अपज्जत्तगा असखेज्ज०। एएसिण भंते! सकाइयाण पुढविकाइयाण आउकाइयाण तेउकाइयाण वाउकाइयाण वणस्सइकाइयाण तसकाइयाण पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहितो अप्पावा४ ? गो०। सव्वत्थोवा तसकाइया पज्जत्तगा, तसकाइया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा, तेउकाइया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा पुढविकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, आउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, वाउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, तेउकाइया पज्जत्तगा सखेज्जगुणा, पुढवि

॥ भाषा ॥

असख्यातगुणा। एएसिण भंते सकाइयाण पुढवीकाइयाण आउ० तेउ० वाउ० वणस्सइ० तसकाइयाणय पज्जत्ता २ णय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४। हेभगवन् एह सकायने पृथ्वीकायने अप्कायने तेउकायने वायुकायने वनस्पतीकाय त्रसकाइया पर्या० अप० किसा २ थी थोडा इत्यादि। गोयमा सव्वत्थोवा तसकाइया पज्जत्तगा तसकाइया अपज्जत्तगा असखिज्जगुणा। हेगौतम सर्वथोडा त्रसकाइया पर्याप्ता त्रसकाइया अपर्याप्ता असख्यातगुणा। तेउकाइया अपज्जत्तगा असखिज्जगुणा। तेहथी तेउकाय अपर्याप्ता असख्यातगुणा। पढवीकाइया अपज्जत्तगा वि० आउका अप० वि० वाउका अप० वि० तेउका० अप० सखेज्जगुणा। तेहथी पृथ्वीकायिक अपर्याप्त विशेषाधिक तेहथी अप्काइया अपर्याप्ता विशेषाधिक वायुकायिक अपर्याप्ता विशेषाधिक तेहथकी तेउकाय पर्याप्ता सख्यातगुणा। पुढवीकाइयाण पज्जत्तगा वि० आउकाइया पज्जत्तगा वि० वाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया वणस्सइकाया अपज्जत्तगा अणतगुणा। पृथ्वीकाय पर्याप्ता विशेषाधिक अप्काय पर्याप्ता विशेषाधिक वायुकाय पर्याप्ता विशेषाधिक वनस्पतीकाय पर्याप्ता

का त्रसकायिका १ । पर्याप्तका स्तेभ्य त्रसकायिका एवा ऽपर्याप्तका असङ्ख्येयगुणा द्वीन्द्रियादीनामपर्याप्तानां पर्याप्तद्वीन्द्रियादिभ्यो ऽसङ्ख्येयगुणत्वात् २ । तत स्तेजस्कायिका अपर्याप्ता असङ्ख्येयगुणा असङ्ख्येयलोकाकाशप्रदेशप्रमाणत्वात् ३ । तत पृथिव्यम्बुवायवो ऽपर्याप्ता क्रमेण विशेषाधिका ६ । तत स्तेजस्कायिका पर्याप्तका सङ्ख्येयगुणा सूक्ष्मेषपर्याप्तेभ्य पर्याप्तानां सङ्ख्येयगुणत्वात् ७ । तत पृथिव्यप्वायव पर्याप्ता क्रमेण

ज्जत्तगा, आउकाइया पज्जत्तगा सखिज्जगुणा । एएसिण भंते ! तेउकाइयाण पज्जत्ता पज्जत्ताण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा! सव्वत्थोवा तेउकाइया अपज्जत्तगा, तेउकाइया पज्जत्तगा सखेज्जगुणा एएसिण भंते ! वाउकाइयाण पज्जत्ता पज्जत्ताण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वाउकाइया अपज्जत्तगा, वाउकाइया पज्जत्तगा सखेज्जगुणा । एएसिण भंते ! वणस्सइकाइयाण पज्जत्ता२ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वणस्सइकाइया अपज्जत्तगा, वणस्सइकाइया पज्ज

त्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा तेउकाइया अप० तेउका० पज्ज० सखिज्जगुणा । हेगौतम सर्वथोडा तेउकाइया अपर्यापता तेउकाइया पर्यापता सख्यातगुणा । एएसिणभते वाउकाइयाण पज्जत्ता २ जाव कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । हेभगवन् एह वाउकायने पर्यापता अपर्यापताने किहा २ थी थोडा घणा इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा तेउकाइया अप० वाउका० पज्ज० सखिज्जगुणा । हेगौतम सर्वथोडा तेउकाइया अप० वाउकाइया पर्यापता सखितगणा । एएसिण भते वणस्सइकाइयाण पज्जत्ता २ जाव कयरे२ हिंतो अप्पा ४ । हेभगवन् एह वनस्पतीकायने पर्या० अप० ने किहा २ थी थोडा घणा इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा वणस्सइकाइया अप० वणस्सइकाइया पज्ज० सखिज्जगुणा । हेगौतम सर्वथोडा वनस्पतीकायिक पर्या० वनस्पतीकायिक अपर्या० सङ्ख्यातगुणा । एएसिण भते तसकाइयाण पज्जत्ता २ जाव कयरे२ हिंतो अप्पावा ४ । हेभगवन् एह त्रसकाय पर्या० अप० किहा २ थी थोडा घणा इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा तसकाइया पज्जत्तगा तसकाइया अपज्जत्तगा असखिज्जगुणा । हेगौतम सर्वथोडा त्रसकाइया पर्या० त्रसकाय अप०

॥ टीका ॥

सर्वलोकापन्ना तेव प्रतिगोलकमसंख्येया इति सूक्ष्मवायुकायिकेभ्यो ऽसंख्येयगुणा, तेभ्य सूक्ष्मवनस्पतिकायिका अनन्तगुणा- प्रतिनिगोदमनन्तानां भावात्, तेभ्य सामान्येन सूक्ष्मजीवा विशेषाधिका सूक्ष्मपृथिवीकायिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात्, गतमौघिकानामिदं मल्पबहुत्व मिदानीमेतेषा मेवा ऽपर्याप्तानामाह-एएसिण भंते ! सुहुमअपज्जत्तगाणमित्यादि सर्वं प्रागेव भावनीय, सम्प्रत्येतेषामेव पर्याप्तानां तृतीयमल्पबहुत्वमाह-एएसिण भंते ! सुहुमपज्जत्तगाणमित्यादि॥ इदमपि प्रागुक्तक्रमेणैव भावनीय, अधुना अमीषामेव सूक्ष्मादीना प्रत्येक पर्याप्तगतानि अल्पबहुत्वान्या

॥ सूत्र ॥

विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया विसेसाहिया, सुहुमनिगोदा असंखेज्जगुणा, सुहुमवणस्सइकाइया अणंतगुणा, सुहुमा विसेसाहिया। एएसिण भंते! सुहुमअपज्जत्तगाण सुहुमपुढविकाइया अपज्जत्तगाण सुहुमआउकाइया अपज्जत्तगाण सुहुमतेउकाइया अपज्जत्तगाण सुहुमवाउकाइया अपज्जत्तगाण सुहुमवणस्सइकाइया अपज्जत्तगाण सुहुमनिगोदा अपज्जत्तयाणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमतेउकाइया अपज्जत्तया, सुहुमपुढविकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमआउका

॥ भाषा ॥

तगुणा सूक्ष्मा वि०। तेहथी सूक्ष्मवनस्पतीकाइया अनन्तगुणा सूक्ष्म सर्व पृथिव्यादि वि०। एएसिण भंते सुहुम अपज्जत्तगाण सुहुमपुढवीकाइया अपज्जत्तगाण सुहुम आउकाइया अपज्जत्तगाण सुहुम तेउकाइय अप० सुहुमवाउकाइय अप० सुहुम वणस्सइकाइय अप० सुहुमनिगोद अपज्जत्तगाणय कयरे २ हिंता अप्पावा ४। हेभगवन् एह सूक्ष्म अपर्याप्ताने सू० पृथ्वीकाय अप० सू० अप्काय अप० सू० तेउकाय अप० सू० वाउकाय अप० सू० वनस्पतीकाय अप० सू० निगोद अप० किहां २ थी थोडा सरीखा विशेषाधिक छे। गोयमा सव्वत्थोवा सुहुम तेउकाइया अप० सु० पुढवीकाइया अप० वि० सु० आउका० अप० वि० सु० वाउका० वि० सु० निगोदा अप० असं० सु० वणस्स अप० अणंत सु० अपज्जत्तगा वि०। हेगौतम सर्वथोडा सूक्ष्म तेउकाय अप० सू० पृथ्वीकाय अप० वि० सू० अप्काय अप० वि० सू० वायुकाय अप० वि० सू० निगोद अप० असंख्यातगुणा सू० वनस्पतीकाय अप०

लोकाकाशप्रदेशप्रमाणत्वात्, तेभ्य सूक्ष्मपृथिवीकायिका विशेषाधिका प्रभूतासंख्येयलोकाकाशप्रदेशप्रमाणत्वात्, तेभ्य सूक्ष्माप्कायिका, प्रभूततरासंख्येयलोकाकाशमानत्वात् २। तेभ्य सूक्ष्म वायुकायिका विशेषाधिका प्रभूततमासंख्येयलोकाकाशप्रदेशराशिमानत्वात्, तेभ्य सूक्ष्मनिगोदा असंख्येयगुणा (ग्रयाग्र ३०००) सूक्ष्मग्रहण बादरव्यवच्छेदार्थं, द्विविधाहि-निगोदा सूक्ष्मा बादरा श्च, तत्र बादरा सूरणकंदादिषु सूक्ष्मा

काइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, अप्पकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, वाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, अपज्जत्तगा वणस्सइकाइया पज्जत्तगा सखेज्जगुणा, सकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, सकाइया पज्जत्तगा सखेज्जगुणा सकाइया विसेसाहिया, एएसिण भंते ! सुहमाण सुहुमपुढविकाइयाण सुहुमआउकाइयाण सुहुमतेउकाइयाण सुहुमवाउकाइयाण सुहुमवणस्सइकाइयाण सुहुमणिगोयाणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा! सव्वत्थोवा सुहुमतेउकाइया, सुहुमपुढविकाइया विसेसाहिया सुहुमआउकाइया

असंखगुणा। सकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया वणस्सइकाइया पज्जत्तगा संखिज्जगुणा। सकाइया अपर्याप्ता विशेषाधिक वनस्पतीकाइया पर्याप्ता सख्यातगुणा। सकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया। सकाइया पर्याप्ता विशेषाधिक। पंचसूत्रीयिसामान्येन प्रतिपादितानि अधुनासूक्ष्मबादरादिभेदेन पंचदशसूत्रराह। ए पांचसूत्र सामान्यपणे कायद्वारे कह्या, हिवे सूक्ष्मबादर भेदेंकरी १५ सूत्र कहेछे—एएसिणभंते सुहुमाण सुहुमपुढवीकाइयाण सुहुमआउकाइयाण सुहुम-तेउ सुहुमवाउ- सुहुम वणस्स- सुहुमनिगोयाणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४। हेभगवन् एहने सूक्ष्मपृथ्वीकायने सूक्ष्मअप्कायने सूक्ष्मतेउकायने सूक्ष्मवायुकायने सूक्ष्मवनस्पतीकाय सूक्ष्मनिगोदने किहा २ थोडा घणां सरीखा विशेषाधिक हुवे। गोयमा सव्वत्थोवा सुहुम तेउकाइया सुहुमपुढवीकाइया विसेसाहिया। हेगौतम सर्वथोडा सूक्ष्म तेउकाय तेहथी सूक्ष्म पृथ्वीकाय विशेषाधिक। सुहुम आउकाइया वि० सुहुमवाउकाइया वि० सुहुमनिगोया असं०। सूक्ष्म अप्काय विशेषाधिक सूक्ष्मवायुकायिक वि० तेहथी सूक्ष्म निगोद असंख्यातगुणो। सुहुमवणस्सइकाइया अण

॥ टीका ॥

इ-एएसिण भंते ! सुहुमाण पज्जत्तापज्जत्ताणमित्यादि ॥ इह बादरेषु पर्याप्तेभ्यो ऽपर्याप्ता असङ्ख्येयगुणा एकैकपर्याप्तनिश्रया असङ्ख्येयानामपर्याप्तानामुत्पादात् तथाचोक्त-प्राक् प्रथमे प्रज्ञापनाख्ये पदे-पज्जत्तगनिस्साए अपज्जत्तगा वक्कमन्ति, जत्थ एगो तत्थ नियमा असंखेज्ज इति, सूक्ष्मेषु पुन र्नायं क्रमः पर्याप्ताश्च पर्याप्तापेक्षया चिरकालावस्थायिन इति सदैव ते बहवो लभ्यन्ते, ततः उक्त-सर्वस्तोका सूक्ष्मा अपर्याप्ता स्तेभ्यः सूक्ष्मा पर्याप्तका सङ्ख्येयगुणा, एवं पृथिवीकायिकादिष्वपि प्रत्येकं भावनीयं, गतं चतुर्थमल्पबहुत्व मिदानीं सर्वेषां समुदितानां पर्याप्तापर्याप्तगतं पञ्च

॥ मूल ॥

मनिगोदा पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, सुहुमवणस्सइकाइयापज्जत्तया अणंतगुणा, सुहुमापज्जत्ता विसेसाहिया दारं ३। एएसिणं भंते ! सुहुमाणं पज्जत्ता२ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? सव्वत्थोवा सुहुमा अपज्जत्तगा सुहुमा पज्जत्तगा संखेज्जगुणा। एएसिणं भंते ! सुहुमपुढविकाइयाणं पज्जत्ता२ णं कयरे२ हिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमपुढविकाइया अपज्जत्तया, सुहुमपुढविकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा। एएसिणं भंते ! सुहुमआउकाइयाणं पज्जत्ता२ णं कयरे२ हिंतो अप्पावा४ गोयमा ! सव्व

॥ भाषा ॥

वा सहुमपुढवीकाइया अप० सुहुमपुढवीकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा। हे गौतम सर्वथोडा सूक्ष्मपृथ्वीकाय अपर्याप्ता सूक्ष्मपृथ्वीकाय पर्याप्ता संख्यातगुणा पर्याप्ता अपर्याप्ताने। एएसिणं भंते सुहुम आउकाइयाणं पज्जत्ता २ णं कयरे २ हिंतो अप्पावा ४। हे भगवन् एह सूक्ष्म अपकायने पर्याप्ता अपर्याप्ता किहा २ थी थोडा घणा इत्यादि। गोयमा सव्वत्थोवा सुहुमआउकाइया अपज्जत्तगा सुहुम आउकाइयाए पज्जत्तगा संखिज्जगुणा। हे गौतम सर्वथोडा सूक्ष्म अपकायने पर्याप्ता अपर्याप्ता तेहथी सूक्ष्म अपकाइया पर्याप्ता संख्यातगुणा। एएसिणं सुहुम तेउकाइयाणं पज्जत्ता २ णं कयरे २ हिंतो अप्पावा ४। हे भगवन् एह सूक्ष्म तेउकाय पर्याप्ता अपर्याप्ताने किहां २ थी थोडा घणा। गोयमा सव्वत्थोवा सुहुम तेउकाइया अपज्जत्तगा सुहुमतेउकाइया पज्जत्तगा संखिज्जगुणा। हे गौतम सर्वथोडा सूक्ष्म तेउकाय अपर्याप्ताने सूक्ष्म तेउकाय पर्याप्ताने संख्यातगुणा। एएसिणं भंते सु

अपज्जत्तया विसेसाहिया, सुज्ञमवाउकाइया अपज्जत्तया विसेसाहिया, सुज्ञमनिगोदा अपज्जत्तगा अ संखेज्जगुणा, सुज्ञमवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा अणतगुणा, सुज्ञमा अपज्जत्तगा विसेसाहिया एएसिण भंते ! सुज्ञमपज्जत्तगाणं सुज्ञमपुढविकाइयपज्जत्तगाणं सुज्ञमआउकाइयपज्जत्तगाण सुज्ञमतेउकाइयपज्जत्तगाण सुज्ञमवाउकाइयापज्जत्तगाणं सुज्ञमवणस्सइकाइयापज्जत्ताणं सुज्ञमनिगोदपज्जत्तगाणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुज्ञमतेउकाइया पज्जत्तगा, सुज्ञमपुढविकाइयापज्जत्तगा विसेसाहिया, सुज्ञमआउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुज्ञमवाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुज्ञ

अणततगुणा सू॰ अप॰ विशेषाधिक । एएसिण भंते सुहुम पज्जत्तगाण सुहुमपुढवीकाइया पज्जत्तगाणं सु आउ॰ पज्जत्तगा सु॰ तेउ॰ पज्ज सु॰ वाउका॰ पज्ज॰ स॰ वणस्स॰ पज्ज॰ सु॰ निगोय पज्जत्तगाणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । हेभगवन् एह सूक्ष्म पर्याप्ताने सू॰ पृथ्वीकायपर्याप्ताने सू॰ अप्काय पर्या॰ सू॰ तेउका॰ पर्या॰ सू॰ वायुकाय पर्या॰ सू॰ वनस्पतीकाय पर्या॰ सू॰ निगोद पर्याप्ताने किंहा २ थी थोडा इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा सुहुम तेउकाइया पज्जत्तगा सु॰ पुढवीकाइया अप॰ वि॰ सु॰ आउकाइया पज्ज॰ वि॰ सु॰ वाउका॰ पज्ज॰ सु॰ निगोया पज्जत्तगा संखिज्जगुणा स॰ वणस्स इका॰ पज्जत्तगा अणतगुणा सुहुम पज्जत्तगा विसेसाहिया । हेगोतम सर्वथोडा सूक्ष्म तेउकाय पर्याप्ता तेहथी सूक्ष्म पृथ्वीकाय पर्या॰ वि॰ सू॰ अप्काय पर्याप्ता वि॰ सूक्ष्म वायुकाय प॰ विशेषाधिक सूक्ष्म निगोद प॰ सख्यातगुणा सूक्ष्म वनस्पतीकाय प॰ अनन्तगुणा सूक्ष्म सर्वपर्याप्ता विशेषाधिक । एएसिण भंते सहुमाण पज्जत्ता २ णय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । एहने हेभगवन् सूक्ष्म पर्या॰ अप॰ ने किंहा २ थी थोडा इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा सुहुम अपज्जत्तगा सहुमपज्जत्तगा संखिज्जगुणा । हेगोतम सर्वथोडा सूक्ष्म अपर्याप्ता सूक्ष्मपर्याप्ता सख्यातगुणा । एएसिण भंते सुहुमपुढवीकाइयाण पज्जत्ता २ णय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । एहने हेभगवन् सूक्ष्म अप्कायने पर्या॰ अप॰ ने किंहा २ थी थोडा घणा । गोयमा सव्वत्थो

॥ टीका ॥

इ-एएसिण भंते ! सुहुमाण पज्जत्तापज्जत्ताणमित्यादि ॥ इह बादरेषु पर्याप्तेभ्यो ऽपर्याप्ता असङ्ख्येयगुणा एकैकपर्याप्तनिश्रया असङ्ख्येयानामपर्याप्तानामुत्पादात् तथाचोक्त-प्राक् प्रथमे प्रज्ञापनाख्ये पदे-पज्जत्तगनिस्साए अपज्जत्तगा वक्कमन्ति, जत्थ एगो तत्थ नियमा असंखेज्जा इति, सूक्ष्मेषु पुन नायं क्रम पर्याप्ताश्च पर्याप्तापेक्षया चिरकालावस्थायिन इति सदैव ते बहवो लभ्यन्ते, तत उक्त-सर्वस्तोका सूक्ष्मा अपर्याप्ता स्तेभ्य सूक्ष्मा पर्याप्तका सङ्ख्येयगुणा, एवं पृथिवीकायिकादिष्वपि प्रत्येकं भावनीय, गतं चतुर्थमल्पबहुत्व मिदानी सर्वेषां समुदितानां पर्याप्तापर्याप्तगतं पञ्च

॥ मूल ॥

मनिगोदा पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, सुहुमवणस्सइकाइयापज्जत्तया अणंतगुणा, सुहुमापज्जत्ता विसेसाहिया दारं ३ । एएसिणं भंते ! सुहुमाणं पज्जत्ता२ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? सव्वत्थोवा सुहुमा अपज्जत्तगा सुहुमा पज्जत्तगा संखेज्जगुणा । एएसिणं भंते ! सुहुमपुढविकाइयाणं पज्जत्ता २ णं कयरे २ हिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमपुढविकाइया अपज्जत्तया, सुहुमपुढविकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा । एएसिणं भंते ! सुहुमआउकाइयाणं पज्जत्ता२ णं कयरे२ हिंतो अप्पावा४ गोयमा ! सव्व

॥ भाषा ॥

वा सहमपृढवीकाइया अप० सुहमपुढवीकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा । हे गौतम सर्वथोडा सूक्ष्मपृथ्वीकाय अपर्याप्ता सूक्ष्मपृथ्वीकाय पर्याप्ता संख्यातगुणा पर्याप्ता अपर्याप्ताने । एएसिण भंत सहुम आउकाइयाण पज्जत्ता २ णय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । हे भगवन् ए सूक्ष्म अपकायने पर्याप्ता अपर्याप्ता किहा २ थी थोडा घणा इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा सुहुमआउकाइया अपज्जत्तगा सुहुम आउकाइयाए पज्जत्तगा संखिज्जगुणा । हे गौतम सर्वथोडा सूक्ष्म अपकायने पर्याप्ता अपर्याप्ता तेहथी सूक्ष्म अपकाइया पर्याप्ता संख्यातगुणा । एएसिण सुहुम तेउकाइयाण पज्जत्ता २ णय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । हे भगवन् एह सूक्ष्म तेउकाय पर्याप्ता अपर्याप्ताने किहा २ थी थोडा घणा । गोयमा सव्वत्थोवा सुहुम तेउकाइया अपज्जत्तगा सुहुमतेउकाइया पज्जत्तगा संखिज्जगुणा । हे गौतम सर्वथोडा सूक्ष्म तेउकाय अपर्याप्ताने सूक्ष्म तेउकाय पर्याप्ताने संख्यातगुणा । एएसिण भंते सु

ऋपज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया ऋपज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमनिगोदा ऋपज्जत्तगा ऋसंखेज्जगुणा, सुहुमवणस्सइकाइया ऋपज्जत्तगा ऋणतगुणा, सुहुमा ऋपज्जत्तगा विसेसाहिया एएसिणं भंते! सुहुमपज्जत्तगाणं सुहुमपुढविकाइयपज्जत्तगाणं सुहुमऋाउकाइयपज्जत्तगाणं सुहुमतेउकाइयपज्जत्तगाण सुहुमवाउकाइयापज्जत्तगाणं सुहुमवणस्सइकाइयापज्जत्ताण सुहुमनिगोदपज्जत्तगाणय कयरे कयरेहिंतो ऋप्पावा४ ? गोयमा! सव्वत्थोवा सुहुमतेउकाइया पज्जत्तगा, सुहुमपुढविकाइयापज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमऋाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहु

ऋणततगुणा सू० ऋप० विशेषाधिक। एएसिण भंते सुहुम पज्जत्तगाण सुहुमपुढवीकाइया पज्जत्तगाण सु ऋाउ० पज्जत्तगा सु० तेउ० पज्ज सु० वाउका० पज्ज० सु० वणस्स० पज्ज० सु० निगोय पज्जत्तगाणय कयरे २ हिंतो ऋप्पावा ४। हेभगवन् एह सूक्ष्म पर्याप्ताने सू० पृथ्वीकायपर्याप्ताने सू० ऋप्काय पर्या० सू० तेउका० पर्या० सू० वायुकाय पर्या० सू० वनस्पतीकाय पर्या० सू० निगोद पर्याप्ताने किहा २ थी थोडा इत्यादि। गोयमा सव्वत्थोवा सुहुम तेउकाइया पज्जत्तगा सु० पुढवीकाइया ऋप० वि० सु० ऋाउकाइया पज्ज० वि० सु० वाउका० पज्ज० सु० निगोया पज्जत्तगा सखिज्जगुणा सु० वणस्सइका० पज्जत्तगा ऋणतगुणा सुहुम पज्जत्तगा विसेसाहिया। हेगौतम सर्वथोडा सूक्ष्म तेउकाय पर्याप्ता तेहथी सूक्ष्म पृथ्वीकाय पर्या० वि० सू० ऋप्काय पर्याप्ता वि० सूक्ष्म वायुकाय प० विशेषाधिक सूक्ष्म निगोद प० सख्यातगुणा सूक्ष्म वनस्पतीकाय प० ऋनन्तगुणा सूक्ष्म सर्वपर्याप्ता विशेषाधिक। एएसिण भंते सुहमाण पज्जत्ता २ णय कयरे २ हिंतो ऋप्पावा ४। एहने हेभगवन् सूक्ष्म पर्या० ऋप० ने किहा २ थी थोडा इत्यादि। गोयमा सव्वत्थोवा सुहुम ऋपज्जत्तगा सुहुमपज्जत्तगा संखिज्जगुणा। हेगौतम सर्वथोडा सूक्ष्म ऋपर्याप्ता सूक्ष्मपर्याप्ता सख्यातगुणा। एएसिण भंते सुहुमपुढवीकाइयाण पज्जत्ता २ णय कयरे २ हिंतो ऋप्पावा ४। एहने हेभगवन् सूक्ष्म ऋप्कायने पर्या० ऋप० ने किहा २ थी थोडा यथा। गोयमा सव्वत्थो

॥ टीका ॥

इ-एएसिण भंते ! सुहुमाण पज्जत्तापज्जत्ताणमित्यादि ॥ इह बादरेषु पर्याप्तेभ्यो ऽपर्याप्ता असङ्ख्येयगुणा एकैकपर्याप्तनिश्रया असङ्ख्येयानामपर्याप्तानामुत्पादात् तथाचोक्त-प्राक् प्रथमे प्रज्ञापनाख्ये पदे-पज्जत्तगनिस्साए अपज्जत्तगा वक्कमन्ति, जत्थ एगो तत्थ नियमा असंखेज्ज इति, सूक्ष्मेषु पुन नायं क्रम पर्याप्ताश्च पर्याप्तापेक्षया चिरकालावस्थायिन इति सदैव ते बहवो लभ्यन्ते, तत उक्त-सर्वस्तोका सूक्ष्मा अपर्याप्ता स्तेभ्य सूक्ष्मा पर्याप्तका सङ्ख्येयगुणा, एवं पृथिवीकायिकादिष्वपि प्रत्येक भावनीय, गत चतुर्थमल्पबहुत्व मिदानी सर्वेषां समुदितानां पर्याप्तापर्याप्तगत पञ्च

॥ सूत्र ॥

मनिगोदा पज्जत्तगा असखेज्जगुणा, सुहुमवणस्सइकाइयापज्जत्तया अणतगुणा, सुहुमापज्जत्ता विसेसाहिया दार ३ । एएसिण भंते ! सुहुमाण पज्जत्ता२ ण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? सव्वत्थोवा सुहुमा अपज्जत्तगा सुहुमा पज्जत्तगा सखेज्जगुणा । एएसिण भंते ! सुहुमपुढविकाइयाण पज्जत्ता २ ण कयरे २ हिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमपुढविकाइया अपज्जत्तया, सुहुमपुढविकाइया पज्जत्तगा सखेज्जगुणा । एएसिण भंते ! सुहुमआउकाइयाण पज्जत्ता२ ण कयरे२ हिंतो अप्पावा४ गोयमा ! सव्व

॥ भाषा ॥

वा सहमपुढवीकाइया अप० सुहमपुढवीकाइया पज्जत्तगा सखेज्जगुणा । हेगौतम सर्वथोडा सूक्ष्मपृथ्वीकाय अपर्याप्ता सूक्ष्मपृथ्वीकाय पर्याप्ता सख्यातगुणा पर्याप्ता अपर्याप्ताने । एएसिण भंत सहुम आउकाइयाण पज्जत्ता २ पय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । हेभगवन् एह सूक्ष्म अप्कायने पर्याप्ता अपर्याप्ता किहा २ थी थोडा घणा इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा सुहमआउकाइया अपज्जत्तगा सुहम आउकाइयाए पज्जत्तगा सखिज्जगुणा । हेगौतम सर्वथोडा सूक्ष्म अप्कायने पर्याप्ता अपर्याप्ता तेहथी सूक्ष्म अप्काइया पर्याप्ता सख्यातगुणा । एएसिण सुहुम तेउकाइयाण पज्जत्ता २ पय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । हेभगवन् एह सूक्ष्म तेउकाय पर्याप्ता अपर्याप्ताने किहा २ थी थोडा घणा । गोयमा सव्वत्थोवा सुहुम तेउकाइया अपज्जत्तगा सुहुमतेउकाइया पज्जत्तगा सखिज्जगुणा । हेगौतम सर्वथोडा सूक्ष्म तेउकाय अपर्याप्ताने सूक्ष्म तेउकाय पर्याप्ताने सख्यातगुणा । एएसिण भंते सु

ममल्पबहुत्वमाह-एएसिण भंते ! सुहुमपुढविकाइयाणमित्यादि ॥ सर्वस्तोकाः सूक्ष्मास्तेजस्कायिका अपर्याप्ताः कारणं प्रागेवोक्तं, तेभ्यः सूक्ष्माः पृथिवीकायिका अपर्याप्ता विशेषाधिका तेभ्यः सूक्ष्मा ऽप्कायिका अपर्याप्ता विशेषाधिका, तेभ्यः सूक्ष्मवायुकायिका अपर्याप्ता विशेषाधिका, अत्रापि कारणं प्रागेवोक्तं, तेभ्यः सूक्ष्मतेजस्कायिकाः पर्याप्ताः सङ्ख्येयगुणा अपर्याप्तेभ्योहि पर्याप्ताः सङ्ख्येयगुणा इत्यनन्तरं भावित तत्र सर्वस्तोका सूक्ष्मतेजस्कायिका अपर्याप्ता उक्ता, इतरेच सूक्ष्मपर्याप्तपृथिवीकायिकादयो विशेषाधिका विशेषाधिकत्वंच मनागधिकत्वं न द्विगुणत्वं न त्रिगुणत्वंवा, ततः सूक्ष्मतेजस्कायिकेभ्यो पर्याप्तेभ्यः पर्याप्ताः सूक्ष्मतेजस्कायिका सङ्ख्येयगुणा सन्तः सूक्ष्मवायुकायिकाऽपर्याप्तेभ्योपि सङ्ख्येयगुणा भवन्ति

त्थोवा सुहुमआउकाइया अपज्जत्तया, सुहुमआउकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा । एएसिण भंते ! सुहुमतेउकाइयाण पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहितो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमतेउकाइया अपज्जत्तगा सुहुमतेउकाइया पज्जत्तगा संखिज्जगुणा एएसिण भंते सुहुमवाउकाइयाण पज्जत्ता २ ण कयरे २ हितो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमवाउकाइया अपज्जत्तगा, सुहुमवाउकाइया पज्जत्तगा स

उकाइयाण पज्जत्तापय कयरे २ हितो अप्पावा ४ । भगवन्त एहने सूक्ष्मवायुकाय पर्यापता अपर्यापता ने किहा २ थी थोडा घणा इत्यादि । । सव्वत्थोवा सुहुम आउकाइया अपज्जत्तगा सुहुमवाउकाइयाण पज्जत्तगा संखि० । हेगौतम सर्वथोडा सूक्ष्म वायुकाय अपर्यापता सूक्ष्म वायुकाय पर्यापता सख्यातगुणा । एएसिण भंते सुहुमवणस्सइकाइयाण पज्जत्ता अपज्जत्ताणय कयरे २ हितो अप्पावा ४ । हेभगवन् एहने सूक्ष्म वनस्पतीना पर्यापता अपर्यापताने किहा २ थी थोडा । गोयमा सव्वत्थोवा सुहुमवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा सुहुमवणस्सइकाइया पज्जत्तगा संखिज्जगुणा । हेगौतम सर्वथोडा सूक्ष्मवनस्पतीकाइया अपर्याप्ता सूक्ष्म वनस्पतीकाइया पर्यापता सख्यातगुणा । एएसिण भंते सुहुमनिगोयाण पज्जत्ता २ णय कयरे २ हितो अप्पावा ४ । हेभगवन् एह सूक्ष्मनिगोदने पर्यापता अपर्यापताने किहा २ थी थोडा घणा । गोयमा सव्वत्थोवा सुहुमनिगोया अपज्जत्त

सेज्ज० । एएसिण भंते ! सुहुमवणस्सइकाइयाणं पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा, सुहुमवणस्सइकाइया पज्जत्तगा संखिज्जगुणा । एएसिणं भंते ! सुहुमनिगोदाण पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमनिगोदा अपज्जत्ता, सुहुमनिगोदा पज्जत्तगा संखेज्जगुणा । एएसिण भंते ! सुहुमाण सुहुमपुढविकाइयाण सुहुम आउकाइयाण सुहुमतेउकाइयाण सुहुमवाउकाइयाण सुहुमवणस्सइकाइयाण सुहुमनिगोदाणय पज्जत्ता२ ण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमतेउकाइया अपज्जत्तया, सुहुमपुढविकाइया अपज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमआउकाइया अपज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया अपज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमतेउकाइया पज्जत्तया संखेज्जगुणा, सुहुमपुढविकाइया पज्जत्तया विसेसाहिया, सुहु

गा सुहुमनिगोया पज्जत्तगा सं० । हे गौतम सर्वथोडा सूक्ष्मनिगोदिया अपर्याप्ता तहथी सूक्ष्मनिगोद पर्याप्ता संख्यातगुणा । एएसिण भंते सुहुमाण सुहुमपुढवीकाइयाण सुहुमआउकाइयाण सुहुम तेउ० सुहुम वाउ० सुहुमवणस्सइकाइयाण सुहुम निगोयाण पज्जत्ता २ णय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । हेभगवन् एह सूक्ष्मने सूक्ष्मपृथिवीकायने सू० अपकायने सू० तेउकायने सू० वायुने सू० वनस्पतीकायने सू० निगोदने पर्याप्ता २ ने किहा २ थी थोडा इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा सुहुम तेउकाइया अपज्जत्तगा सुहुम पुढवीकाइया अपज्जत्तगा वि० सु० आउकाइया अपज्जत्तगा वि० । हे गौतम सर्वथोडा सू० तेउकाय अपर्याप्ता सू० पृथ्वीकाय अप० वि । सू० अपकाय अपर्याप्ता विशेषाधिक । सुहुम वाउकाइया पज्जत्ता वि० सू० तेउकाइया पज्जत्तगा संखिज्जगुणा सु० पुढवीकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया सुहुम आउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया सुहुम वाउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया सुहुमनिगोया अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा । सूक्ष्म पृथ्वीकाय पर्याप्ता विशेषाधिक सूक्ष्म अपकाय पर्याप्ता विशेषाधिक सूक्ष्मनिगोद अप

तेभ्य सूक्ष्मपृथिवीकायिका पर्याप्ता विशेषाधिका, तेभ्य सूक्ष्माप्कायिका पर्याप्ता विशेषाधिका, तेभ्योऽपि सूक्ष्मवायुकायिका पर्याप्ता विशेषाधिका, तेभ्य सूक्ष्मनिगोदा अपर्याप्ता असङ्ख्येयगुणा स्तेषा मतिप्राचुर्यात्, तेभ्य सूक्ष्मनि ... पर्याप्ता सङ्ख्येयगुणा सूक्ष्मेभ्यपर्याप्तेभ्य पर्याप्ता ना मोघत सङ्ख्येयगुणत्वात्, तेभ्य सूक्ष्मवनस्पतिकायिका अपर्याप्ता अनन्तगुणा प्रतिनिगोद मनन्ताना तेषा भावात्, तेभ्य सामान्यत सूक्ष्मा अपर्याप्तका, विशेषाधिका, सूक्ष्मपृथिवीकायिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात्, तेभ्य सूक्ष्मवनस्पतिकायिका पर्याप्तका सङ्ख्येयगुणा, सूक्ष्मेभ्योऽपि च पर्याप्तेभ्य पर्याप्तका सङ्ख्येयगुणा, यद्यपान्तराले विशेषाधिकत्व तदल्पमिति न सङ्ख्येयगुणत्वव्याघात, तेभ्य सूक्ष्मपर्याप्तका विशेषाधिका,

मआउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमनिगोदा अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, सुहुमनिगोदा पज्जत्तगा संखेज्जगुणा, सुहुमवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा अणंतगुणा, सुहुमा अपज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमा वणस्सइकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा, सुहुमा पज्जत्तगा विसेसाहिया, एएसिणं भंते! बादरगाणं बादरपुढविकाइयाणं बादरआउकाइयाणं बादरतेउकाइयाणं बादरवाउकाइयाणं बादरवणस्सइकाइयाणं पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइयाणं बादरनिगोदाणं बादरतसका

र्याप्ता असंख्यातगुणा। सुहुमनिगोया पज्जत्तगा संखिज्जगुणा सुहुमवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा अणंतगुणा। तेहथी सूक्ष्मनिगोद पर्याप्ता संख्यात गुणा तेहथी सूक्ष्मवनस्पतीकाय अपर्याप्ता अनन्तगुणा। सुहुम अपज्जत्तगा विसेसाहिया सुहुम वणस्सइकाइया पज्जत्तगा असंखिज्जगुणा। तेहथी सूक्ष्म अपर्याप्ता विशेषाधिक तेहथी सूक्ष्म वनस्पतीकाइया पर्याप्ता असंख्यातगुणा। सुहुम पज्जत्तगा विसेसाहिया सुहुमा विसेसाहिया। सूक्ष्म पर्याप्ता विशेषाधिक सर्व सूक्ष्म विशेषाधिक। एएसिणं भंते बायराणं बायरपुढवीकाइयाणं बायरआउकाइया बायर तेउ बायर वाउ बायर वणस्सइ। भगवन् एह बादर पृथ्वीकायने बादर अपकायने बादर तेउकायने बादर वाउकायने बादर वनस्पतीकायने। पत्तेयसरीरबायर वणस्सइकाय बाय

॥ टीका ॥

सूनमपृथिव्यादीनामपि पर्याप्तानां तत्र प्रक्षेपात् १४। तेभ्य सूक्ष्मा विशेषाधिका अपर्याप्तानामपि तत्र प्रक्षेपात् १५। तदेवमुक्तानि सूक्ष्माश्रितानि पञ्चसूत्राणि साम्प्रतिबादराश्रितानि पर्वोक्तक्रमणाभिधित्सुराह-एएसिणं भंते। बायराणं बायरपुढविकाइयाणमित्यादि। सर्वस्तोका बादरा त्रसकायिका द्वीन्द्रियादीनामेव बादरत्रयत्वात्, तेषाच शेषकायेभ्यो ऽल्पत्वात् १। तेभ्यो बादरतेजस्कायिका असंख्येयगुणा २। असंख्येयलोका

॥ सूत्र ॥

इयाणय कयरे२ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा? गो०! सव्वत्थोवा बादरतसकाइया बादरतेउकाइया असखेज्जगुणा, पत्तेयसरीर बादरवणस्सइकाइया असखेज्जगुणा बायरनिगोया असखेज्जगुणा, बादरपुढविकाइया असखिज्जगुणा, बादरआउकाइया असखेज्जगुणा बादरवाउकाइया असखेज्जगुणा बादरवणस्सइकाइया अणंतगुणा बादरा विसेसाहिया, एएसिणं भंते। बादरापज्जत्तगाणं बादरपुढविकाइया अपज्जत्तगाणं बादरआउकाइया अपज्जत्तगाणं बादरतेउकाइयाअपज्जत्तगाणं बादरवाउ

॥ भाषा ॥

रनिगोयाण बायर तसकाइयाणय कयरे२ हिंतो अप्पावा। प्रत्येकशरीर बादर वनस्पतीकायने बादरनिगोदने बादर त्रसकायने किहायी थोडा वणा। गोयमा सव्वत्थोवा बायरतसकाइया बायर तेउकाइया असंखिज्जगुणा। हेगौतम सर्वथाडा सकाया बादर त्रसकाइया तेहथी बादर तेउकाइया असंख्यातगुणा। पत्तेयसरीर बायरवणस्सइकाइया असंखिज्जगुणा। प्रत्येकशरीर बादरवनस्पतीकाइया असंख्यातगुणा। बायरनिगोया असंखिज्जगुणा बायर पढवीकाइया अस० बायर आउ० अस०। बादरनिगोद असंख्यातगुणा बादरपृथ्वीकाय अस० तेहथी बादरअपकाय असंख्यातगुणा। बायर वाउकाइया अस० बायर वणस्सइकाइया अणंता बायरा विसेसाहिया। बादर वायुकाय असंख्यातगुणा बादर वनस्पतीकाय अनन्तगुणा तेहथी बादर विशेषाधिक। एएसिणं भंते बायर अपज्जत्तगाण बायरपढवीकाइया अपज्जत्तगाण बायरआउकाइय अप० बायर तेउकाइय अप० बायर वाउकाय अप० बायर वणस्सइकाइय अप०। हेभगवन् एह बादर अपर्याप्ताने बादर पृथ्वीकाय अपर्या० बादर अपका० अपर्या० बादर तेउकाय अपर्या०

९ काशप्रदेशप्रमाणत्वात्, तेभ्योऽपि प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका असङ्ख्येयगुणा ३। स्थानस्यासङ्ख्येयगुणत्वात्, बादरतेजस्कायिका हि मनुष्यक्षेत्र एव भवन्ति, तथाचोक्तं द्वितीये स्थानाख्ये पदे–कहिणं भंते! बादरतेउकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता? गोयमा! सट्ठाणेणं अंतो मणुस्सखित्ते अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु निव्वाघाएणं पन्नरससु कम्मभूमीसु वाघाएणं पंचसु महाविदेहेसु एत्थणं बायरतेउकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता, तत्थेव बायरतेउकाइयाणमपज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता इति॥ बादरवनस्पतिकायिकास्तु त्रिष्वपि लोकेषु भवनादिषु, तथाचोक्तं–तस्मिन्नेव द्वितीये स्थानाख्ये पदे–कहिणं भंते! बायरवणस्सइकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता? गोयमा! सट्ठाणेणं सत्तसु घणोदहीसु सत्तसु घणोदहिवलएसु अहोलोए पायालेसु भवणेसु भवणपत्थडेसु उड्ढलोए कप्पेसु विमाणेसु विमाणावलियासु विमाणपत्थडेसु तिरियलोए अगडेसु तलाएसु न

काइया अपज्जत्तगाणं बादरवणस्सइया अपज्जत्तगाणं पत्तेयसरीरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगाणं बादरनिगोदा अपज्जत्तगाणं बादरतसकाइया अपज्जत्तगाणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा वहुयावा तुल्लावा विसेसाहिया? गोयमा! सव्वत्थोवा बादरतसकाइया अपज्जत्तगा, बादरतेउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बादरनिगोदा अपज्जत्तगा असंखेज्ज

बादर वायुकाय अप० बादर वनस्पतीकाय अप०। पत्तेयसरीर बायरवणस्सइकाइय अप० बायरनिगोय अप० बायर तसकाइय अपज्जत्तगाणय कयरे २ हिंती अप्पावा ४। प्रत्येकशरीर बादरवनस्पतीकाइया अपर्यापताने बादरनिगोद अपर्या० बादर त्रसकाइया अप० किहा २ थी थोडा घणा सरीखा विशेष हुवे। गोयमा सव्वत्थोवा बायर तसकाइया अप० बायर तेउकाइया अपज्जत्तगा अस। हेगौतम सर्वथोडा बादरत्रसकाइया अपर्यापता तेहथी बादर तेउकाय अपर्यापता असङ्ख्यातगुणा। पत्तेयसरीर बायरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा बायरनिगोया अपज्जत्तगा अस०। तेहथी प्रत्येकशरीरी बादर वनस्पतीकाइया अप० असङ्ख्यातगुणा बादरनिगोद अपर्यापता असङ्ख्यातगुणा। बायरपुढवीकाइया अपज्जत्तगा अस०।

॥ टीका ॥

दीगु दहेसु वावीसु पुक्खरिणीसु दीहियासु गुंजालियासु सरेसु सरपंतियासु सर २ पंतियासु विलपंतियासु उज्झरेसु निज्झरेसु चिल्लरेसु पल्ललेसु विप्पिनेसु दीवेसु समुद्देसु सव्वेसु चेव जलासएसु जलठाणेसु एत्थणं वायरवणस्सइकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता, तथा जत्थेव वायरवणस्सइकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा तत्थेव वायरवणस्सइकाइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता इति „ तत क्षेत्रस्याऽसख्येयगुणत्वात् उपपद्यन्ते, बादरतेजस्कायिकेभ्यो ऽसख्येयगुणा प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका स्तेभ्यो बादरनिगोदा असख्येयगुणा स्तेषा मत्यन्तसूक्ष्मावगाहनत्वा ज्जलेषु सर्वत्रापिच भावात्, पनक सेवालादयोहि जले अवश्य भाविन स्तेच बादरानन्तकायिका इति तेभ्योपि बादरपृथिवीकायिका असख्येयगुणा अ

॥ मूल ॥

गुणा, वादरपुढवीकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, वादरआउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, वादरवाउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, वादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा अणंतगुणा, वादरअपज्जत्तगा विसेसाहिया २। एएसिणं भंते! बादरपज्जत्तयाणं वादरपुढविकाइया पज्जत्तयाणं, वादरआउकाइया पज्जत्तयाणं वादरतेउकाइयापज्जत्तयाणं वादरवाउकाइया पज्जत्तयाणं वादरवणस्सइकाइया पज्जत्तयाणं पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया पज्जत्तयाणं वादरनिगोदपज्जत्तयाणं वादरतसकाइयपज्जत्तयाणय

॥ भाषा ॥

बादर पृथ्वीकाय अप० असख्यातगुणा। बादर आउकाइया पज्जत्तगा अस० बादर वाउकाइया अप० अस०। बादर अपकाय अपर्या० अस० बादर वायुकाइया अपर्या० अस०। बादर वणस्स० अप० अण० बादर अपज्जत्तगा विसेसाहिया। बादर वनस्पतीका० अपर्या० अनन्तगुणा बादर अपर्या० विशेषाधिक। एएसिणं भंते बादरपज्जत्तगाणं बादरपुढवीकाइया प० बादर आउका० प० बादर तेउका० प० बादर वाउका० प० बादर वणस्सइकाइय पज्जत्ता। हेभगवन् इन बादर प० बादर पृथ्वीकाय प० बादर अपका० प० बादर तेउकाय प० बादर वाउका० प० बादर वनस्पतीकाय प०। पत्तेयसरीर बादरवणस्सइकाइया प० बादर निगोय प० बादर तसका० पज्जत्तगाणय कयरे२ हिंतो अप्पावा ४। प्रत्येक बादरवनस्पतीकाय प० बाद

घासु पृथिवीषु सर्वेषु विमानभवनपर्वतादिषु भावात्, तेभ्यो ऽसंख्येयगुणाबादराप्कायिका समुद्रेषु जलप्राभूत्यात्, तेभ्यो बादरवायुकायिका असंख्येयगुणा सुषिरे सर्वत्र वायुसम्भवात्, तेभ्यो बादरवनस्पतिकायिका अनन्तगुणा, प्रतिबादरनिगोद मनन्तानां जीवानां भावात् ८, तेभ्य सामान्यतो बादरा जीवा विशेषाधिका बादरत्रसकायिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् ८। गतमेकमौघिकानां बादराणामल्पबहुत्व मिदानीं तेषामेवा ऽपर्याप्तानां द्वितीयमाह-एएसि णं भंते। बायरापज्जत्तगाण मित्यादि ॥ सर्वस्तोका बादरत्रसकायिका अपर्याप्तका युक्तिरत्र प्रागुक्तैव, तेभ्यो बाद रतेजस्कायिका अपर्याप्ता असंख्येयगुणा असंख्येयलोकाकाशप्रदेशप्रमाणत्वा दित्येव प्रागुक्तक्रमेणेद मल्पबहुत्व भावनीय, गत द्वितीयमल्पबहुत्व

कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरतेउकाइया पज्जत्तया, बादरतसकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । बादरनिगोदा पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । बादरपुढविकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । बादर आउकाइया पज्जत्तया असंखेज्जगुणा । बादरवाउकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । बादरवणस्सइकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । बादरापज्जत्तगा विसेसाहिया ३ । एएसि णं भंते ! बादराणं पज्जत्ता २ णं

रनिगोद प० बादर त्रसकाय प० किहा २ था थोडा बहुल इत्यादि। गोयमा सव्वत्थोवा बायर तेउकाय प० बायर व॰ स्सइका० प० असं० । हेगौतम सर्वथोडा बादर तेउका० अप० तेहथी बादर त्रसका० अप० असं० । पत्तेयसरीर बायरवणस्सइकाय प० असं० बायरनिगोद प० असं० । प्रत्येकशरीर बादरवनस्पतीकाय प० असं० बादरनिगोद-असंख्यातगुणा । बायर पुढवीका प० असं० बायर आउका० प० असं० । बादर पृथ्वीकाय पर्यापता असंख्यातगुणा बादर अपकाय पर्यापता असंख्यातगुणा । बायर वाउका० प० असं० बायरवणस्सइका० प० अणतगणा । बादर वायुका० प० असंख्यात गुणा बादर वनस्पतोकाय पर्यापता अनन्तगुणा । बायर पज्जत्तगा विसेसाहिया । बादर पर्यापता विशेषाधिक । एएसि णं भंते बायराण पज्जत्ता २

मिदानीं मेतेषामेव पर्याप्तानां तृतीयमल्पबहुत्वमाह–एएसिणं भंते ! बादरपज्जत्तयाणमित्यादि ॥ सर्वस्तोका बादरतेजस्कायिकाः पर्याप्ता आवलिकासमयवर्गस्य कतिपयसमयन्यूनैरावलिकासमयैर्गुणितस्य यावान् समयराशिर्भवति तावत्प्रमाणत्वं तेषां मुक्तंच–आवलिवग्गोकुणावलिएगु

कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरापज्जत्तगा । बादरा अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । एएसिणं भंते ! बादरपुढविकाइयाणं पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरपुढविकाइया पज्जत्तगा १ । बादरपुढविकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । एएसिणं भंत ! बादरआउकाइयाणं पज्जत्ता२ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरआउकाइया पज्जत्तगा बादरआउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । एएसिणं भंते ! बादरतेउकाइयाणं पज्जत्ता२ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहिया ? गोयमा !

पद कयर कयरेहिंता अपपा ४ । हेभगवन एह बादर पर्याप्ता अपर्याप्ताने किहा २ थी थाडा इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा बादरपज्जत्तगा बायर अपज्जत्तगा असंखेज्जगणा । हेगौतम सर्वथोडा बादरपर्याप्ता तेहथी बादर अपर्याप्ता असंख्यातगणा । एएसिणं भंतेबायरपुढवीकाइयाणं पज्जत्ता २ णं कयरे २ हिंतो अपपावा ४ । हेभगवन् एह बादरपृथिवीकायने प० अप० किहा २ थी थोडा इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा बायरपुढवीकाइया अप० असंखेज्जगणा । हेगौतम सर्वथोडा बादर पृथ्वीकाय पर्या० बादर पृथ्वीकाय अप० असंख्यातगुणा । एएसिणं भंते बायरआउकाइयाणं पज्जत्ता २ णं कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । हेभगवन् एहने बादर अपकायने पर्या० अप० किहा थी थोडा घणा इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा बायर आउकाइया प० अप० असं० । हेगौतम सर्वथोडा बादर अपकाय प० बादर अप० असंख्यातगुणा । एएसिणं भंते बायर तेउकाइयाणं पज्जत्ता २ णं कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । हेभगवन् एह बादर तेउकायने प० अप० ने किहा २ था अल्प घणा इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा बायर तेउकाय प० बायर तेउकाय अ

वायराण पज्जत्तापज्जत्ताणमित्यादि ॥ इह बादरैकैकपर्याप्तनिश्रया असङ्ख्यावादरा अपर्याप्ता उत्पद्यन्ते ॥ पज्जत्तगनिस्साए अपज्जत्तगा वक्कमन्ति जत्थ एगो तत्थ नियमा असंखेज्जा इतिवचनात्, ततः सर्वत्र पर्याप्तेभ्यो ऽपर्याप्ता असङ्ख्येयगुणा वक्तव्या, त्रसकायिकसूत्रं प्रागुक्तयुक्त्या भावनीयं, गतं चतुर्थमल्पबहुत्वं, साम्प्रतमेतेषामेव समुदितानां पर्याप्तापर्याप्तानां पञ्चममल्पबहुत्वमाह-एएसि णं भंते । वायराणं वायरपुढविकाइयाणमि

वादरतसकाइया पज्जत्तगा । वादरतसकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा४ । एएसि णं भंते ! बादराणं वादरपुढविकाइयाणं वादरआउकाइयाणं वादरतेउकाइयाणं वादरवाउकाइयाणं वादरवणस्सइकाइयाणं पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइयाणं वादरनिगोदाणं वादरतसकाइयाणं पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वादरतेउकाइया पज्जत्तया १ । वादरतसकाइया पज्जत्तया असंखेज्जगुणा २ । वादरतसकाइया अपज्जत्तया असंखिज्जगुणा ३ । वादरपत्तेय

अपर्याप्ता असंख्यातगुणा हुवे इति चौथो अल्प बहुत्व कह्यो, हिवे समुदित अल्प बहुत्व पांचमो कहेछे—एएसि णं भंते वायराणं वायरपुढवीकाइयाणं वायर अप० तेउ० वाउ० वणस्स०काइया । हेभगवन् एहने बादर पृथ्वीकायने अप्कायने तेउकायने वाउकायने वनस्पतीकायने । पत्तेयसरीर बादर वणस्सइकाइया बादर निगोयाणं वायर तसकाइयाणं कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । प्रत्येकशरीर बादर वनस्पतीकायने बादर निगोदियाने बादर त्रसकायनेपर्याप्ता अपर्याप्ताने किहा २ थी थोडा घणा इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा बायर तेउकाइया पज्जत्तगाणं वायर तसकाइया पज्जत्तगा अस० । हेगौतम सर्वथोडा बादर तेउकाय पर्याप्ता एहनी युक्ति सर्व पाछलीपरे कहिवा बादर त्रसकाय पर्याप्ता असंख्यातगुणा । वायर तसकाइया अपज्जत्तगा अस० । बादर त्रसकाय अपर्याप्ता असंख्यातगुणां । पत्तेयसरीर वायर वणस्सइकाइया पज्जत्तगा अस० । तेहथकी बादर प्रत्येकवनस्पती प० असंख्यातगुणा हुवे । वायर निगोया बायर पुढवीकाइया बायर आउकाइया बायर वाउ बायर तेउकाइया अप० अस० । तेहथकी बादरनिगोद बा०

त्यादि ॥ सर्वस्तोका वादरतेजस्कायिका पर्याप्ता १ । तेभ्यो वादरत्रसकायिका पर्याप्ता असंख्येयगुणा २ । तेभ्यो वादरत्रसकायिका अपर्याप्ता असंख्येयगुणा ३ । तेभ्यो वादरप्रत्येकवनस्पतिकायिका पर्याप्ता असंख्येयगुणा ४ । तेभ्यो वादरनिगोदा पर्याप्ता असंख्येयगुणा ५ । तेभ्यो वादरपृथिवीकायिका पर्याप्तका असंख्येयगुणा ६ । तेभ्यो वादराऽप्कायिका पर्याप्ता असंख्येयगुणा ७ । तेभ्यो वादरवायुकायिका पर्याप्ता असंख्येयगुणा ८ । एतेषु पदेषु युक्ति प्रागुक्ता अनुसरणीया, तेभ्यो वादरतेजस्कायिका अपर्याप्तका असंख्येयगुणा, यतो वादरवायुकायिका पर्याप्ता संख्येयेषु प्रतरेषु यावन्त आकाशप्रदेशा स्तावत्प्रमाणा वादरतेजस्कायिकाश्चापर्याप्ता असंख्येयलोकाकाशप्रदेशप्रमाणा स्ततो जघन्यसंख्येयगुणा ९ । तत प्रत्येकबादरवनस्पतिकायिका १० । वादरनिगोद ११ । वादरपृथिवीकायिक १२ । वादराप्कायिक १३ । वादरवायुकायिका अपर्याप्ता यथोत्तर

वणस्सइकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा ४ । वादरनिगोदा पज्जत्तगा असखेज्ज० ५ । वादरपुढविकाइया पज्जत्तगा असखेज्जगुणा ६ । वादरआउकाइया पज्जत्तगा असखेज्जगुणा ७ । वादरवाउकाइया पज्जत्तगा असखिज्जगुणा ८ । वादरतेउकाइया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा ९ । पत्तेयसरीरवादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा १० । वादरनिगोदा अपज्जत्ता असखेज्जगुणा ११ । वादरपुढविकाइया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा १२ । वादरआउकाइया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा १३ । वादरवाउकाइया

पृथ्वीकाय वादर अप्काय वादर वायुकाय वादर तेजस्काय अपर्याप्ता असंख्यातगुणा जेभणी वादर वायुकाय पर्याप्ता० असंख्यात प्रतर जेतला आकाश तेमाट असंख्यातगुणा । तेतलि प्रमाणछे वादर तेउकाय अपर्याप्ता अस० लोकाकाश प्रमाणछे । पत्तेयसरीर वादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा अस० । प्रत्येकशरीर वनस्पतीकाय अपर्याप्ता असंख्यातगुणा । वादरनिगोदा वादर पुढवीकाइया वादर आउकाइया वादर वाउकाइया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा । तेहथी वादरनिगोद वादर पृथ्वीकाइया वादर अप्काय वादर वाउकाय अपर्याप्ता असंख्यातगुणा । वादर वणस्सइकाइया अपज्जत्तगा अ

मसंख्येयगुणा वक्तव्याः, यद्यपि चैते प्रत्येकमसंख्येयलोकाकाशप्रदेशप्रमाणा स्तथाप्यसङ्ख्या तस्या सङ्ख्यातभेदभिन्नत्वा दित्य यथोत्तरमसङ्ख्येयगुणत्वं न विरुध्यते १४। तेभ्यो बादरवनस्पतिकायिका जीवा पर्याप्ता अनन्तगुणा, प्रतिबादरैकैकनिगोदमनन्तानां जीवानां भावात् १५। तेभ्य सामान्यतो बादरा पर्याप्ता विशेषाधिका बादरतेजस्कायिकादीनामपि पर्याप्तानां तत्र प्रक्षेपात् १६। तेभ्यो बादरवनस्पतिकायिका अपर्याप्ता असंख्येयगुणा एकैकपर्याप्तबादरवनस्पतिकायिकनिगोदनिश्रया असंख्येयाना मपर्याप्तबादरवनस्पतिकायिकनिगोदाना मुत्पादात् १७। तेभ्य सामान्यतो बादराऽपर्याप्ता विशेषाधिका बादरतेजस्कायिकादीना मप्यपर्याप्ताना तत्र प्रक्षेपात् १८। तेभ्य पर्याप्तापर्याप्तविशेषणरहिता सामान्यतो बादरा विशेषाधिका बादरपर्याप्ततेजस्कायिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् १९। एतानि बादराश्रितान्यपि पञ्चसूत्राणि, सम्प्रति सूक्ष्मबादरसमुदायगता पञ्चसूत्रीमभिधित्सु प्रथमत औघिक सूक्ष्मबादरसूत्रमाह-एएसिणं भंते। इत्यादि ॥ इह प्रथम बादरगतमल्पबहुत्व बादरसूत्र्या यत्प्रथम सूत्र तद्व द्भावनीय, यावद्बादरवायुकायिकापद ७। तदनन्तर यत्सूक्ष्मगतमल्पबहुत्व तत सूक्ष्मपञ्चसूत्र्या यत्प्रथम सूत्र तद्वत् तावद्यावत्सूक्ष्मनिगोदचिन्ता

अप० असंखेज्जगुणा १४। बादरवणस्सइकाइया पज्जत्तगा अणंतगुणा १५। बादरपज्जत्तगा विसेसाहिया १६। बादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा १७। बादरा अपज्जत्तगा विसेसाहिया १८। बादरा विसेसाहिया २०। एएसि णं भंते! सुहुमाणं सुहुमपुढविकाइयाणं सुहुमआउकाइयाणं सुहुमतेउ

णतगुणा बायर पज्जत्तगा विसेसाहिया बायर वणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा बायर अपज्जत्तगा विसेसाहिया बायराविसेसाहिया ५। बादर वनस्पतीकाय अपर्याप्ता अनन्तगुणा बादर पर्याप्ता विशेषाधिक बादर वनस्पतीकाइया अपर्याप्ता असंख्यातगुणा बादरअपर्याप्ता विशेषाधिक तेहथी सर्वबादर विशेषाधिक, हिवे ५ सूत्र कहेछे—एएसिणं भंते सुहुमाण सुहुमपुढवीकाइयाण सुहुम आउकाय सुहुम तेउकाय सुहुम वाउ वणस्सइकाइया सुहुमनिगोयाण बायराण बायरपुढवीकाइयाण। हेभगवन् एह सूक्ष्मपृथ्वीने सूक्ष्मअप्कायने सूक्ष्मतेउकायने सूक्ष्मवाउकायने सूक्ष्मवनस्पती

॥ टीका ॥

१२। तदनन्तर् वादरवनस्पतिकायिका अनन्तगुणा प्रतिवादरनिगोदमनन्तानां जीवानां भावात् १३। तेभ्यो वादरा विशेषाधिका वादरतैजस्कायिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् १४ तेभ्य सूक्ष्मवनस्पतिकायिका असंख्येयगुणा वादरनिगोदेभ्य सूक्ष्मनिगोदाना मसंख्येयगुणत्वात् १५। तेभ्य सामान्यत सूक्ष्मा विशेषाधिका, सूक्ष्मतैजस्कायिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् १६। गत मेकमल्पबहुत्व मिदानी मेतेषामेवा ऽपर्याप्तानां द्वितीयमाह-एएसिणं भंते। इत्यादि॥ सवस्तोका वादरत्रसकायिका अपर्याप्ता १। ततो वादरतेजस्कायिका वादरप्रत्येकवनस्पतिकायिक वादरनिगोद वादरपृथिवीकायिकवादराप्कायिकवादरवायुकायिका अपर्याप्ता क्रमेण यथोत्तर मसंख्येयगुणा अत्र भावना वादरपञ्चसूत्र्या यत् द्वितीयमपर्याप्त

॥ मूल ॥

काइयाण सुहुमवाउकाइयाण सुहुमवणस्सइकाइयाण सुहुमनिगोदाण वादराण वादरपुढविकाइयाण वादरआउकाइयाण वादरतेउकाइयाण वादरवाउकाइयाण वादरवणस्सइकाइयाण पत्तेयसरीरवादरवणस्सइकाइयाण वादरनिगोदाण वादरतसकाइयाणय कयरे कयरेहितो अप्पावा४? गोयमा। सव्वत्थोवा वादरतसकाइया १। वादरतेउकाइया असंखेज्जगुणा पत्तेयसरीरवादरवणस्सइकाइया असंखेज्जगुणा। वादरनिगोदा असंखिज्जगुणा। वादरपुढविकाइया असंखेज्जगुणा ५। वादरआउकाइया असंखेज्जगुणा

॥ भाषा ॥

ने सूक्ष्म निगोदने वादरपृथ्वीकायने। वादर आउ तेउ वाउ वणस्सइकाय। वादर अप्कायने वाउकायने तेउकायने वनस्पतीकायने। पत्तेयसरीर वादरवणस्सइकाय वादर निगोदा ण वादर तसकाइयाणय कयरे २ हिंतो अपावा ४। प्रत्येकवादर वनस्पतीकायने वादर निगोदने वादर त्रसकायने किहा किहाथी थोडा घणा इत्यादि। गोयमा सव्वत्थोवा वादर तसकाइया वादर तेउकाय असंखेज्जगुणा। हे गौतम सर्वथोडा वादर त्रसकाइया तेहथी वादर तेउकाय असंख्यातगुणा। पत्तेयसरीर वादर वणस्सइकाइया असंखेज्जगुणा। प्रत्येकशरीर वादर वनस्पतीकाय असंख्यातगुणा। वादरनिगोदा वादर पुढवीकाइया वादर आउकाइया असं०। वादरनिगोद वादर पृथ्वीकाय वादर अप्काय असंख्यातगुणा। वादर वाउकाय सूक्ष्म तेउकाय असं०

कसूत्र तद्वत्कर्त्तव्या ७ । ततो वादरवायुकायिकेभ्यो ऽसङ्ख्येयगुणा सूक्ष्मतेजस्कायिका अपर्याप्ता अतिप्रभूतासङ्ख्येयलोकाकाशप्रदेशप्रमाणत्वात् ८ । तेभ्य सूक्ष्मपृथिवीकायिका १ । सूक्ष्माप्कायकायिका २ सूक्ष्मवायुकायिक ३ सूक्ष्मनिगोदा ४ । पर्याप्ता यथोत्तर मसख्येयगुणा, अत्र भावना–सू

वादरवाउकाइया असखेज्जगुणा । सुहुमतेउकाइया असखेज्जगुणा । सुहुमपुढविकाइया विसेसाहिया । सुहुमआउकाइया विसेसाहिया । सुहुमवाउकाइया विसे[illegible]या । सुहुमनिगोदा असखेज्जगुणा । वादरवणस्सइकाइया अणतगुणा वादरा विसेसाहिया । सुहुमवणस्सइकाइया असखेज्जगुणा १५ । सुहुमाविसेसाहिया १ । एएसिण भते ! सुहुमअपज्जयाण सुहुमपुढविकाइयाण अपज्जत्तगाण सुहुम आउकाइया अपज्जत्तयाण सुहुमतेउकाइयाण अपज्जत्तयाण सुहुमवाउकाया अपज्जत्तयाणं सुहुमवण स्सइकाइयाण अपज्जत्तयाण सुहुमनिगोदा अपज्जत्तयाण वादरा अपज्जत्तयाण वादरपुढविकाइया अप ज्जत्तयाण वादरआउकाइया अपज्जत्तयाण वादरतेउकाइया अपज्जत्तयाण वादरवाउकाइया अपज्जत्तया

सूक्ष्म पृथ्वीकाया वि० सूक्ष्मआउकाय वि० सूक्ष्म वाउकाय वि० सूक्ष्मनिगोदा असं० । बादर वायुकाय असं० सूक्ष्मतेउकाय असं० सूक्ष्म पृथ्वीकाय वि शेषाधिक सूक्ष्मअप्काइया विशेषाधिक सूक्ष्म वाउकाय विशेषाधिक सूक्ष्मनिगोदा असं० । बादर वणस्सइकाइया अणतगुणा बादरा विसेसाहिया । ति हथी बादर वनस्पतीकाय अनन्तगुणा बादरविशेषाधिक । सूक्ष्म वणस्सइकाइया असं० सूक्ष्माविसेसाहिया ॥ १ ॥ सूक्ष्मवनस्पतीकाय असख्यातगुणा सूक्ष्मविशेषाधिक । एएसिण भते सूक्ष्म अपज्जत्तगाण सूक्ष्मपुढवीकाइय अपज्जत्तगाण सु० आउका अ० सू० तेउका अप० सू० वाउका अप० सु० वणस्स इका अप० । हेभगवन् एह सूक्ष्मअपर्याप्ताने सूक्ष्मपृथ्वीकायने अपर्याप्ताने सूक्ष्मअप्काय पर्या० सू० तेउकाय अप० सू० वायुकाय अप० सू० वनस्पती काय अपर्याप्ताने । सूक्ष्म निगोय अप० बायर अप० बायरपुढवीकाय अप० बायर आउकाय अपज्जत्ता बायर बाउकाय अपज्जत्ता बायर वणस्सइका

॥ टीका ॥

त्पयन्त्सूत्रा यद्वितीय सूत्र तद्वत् १२ । तेभ्य सूक्ष्मनिगोदाऽपर्याप्तेभ्यो बादरवनस्पतिकायिका जीवा अपर्याप्ता अनन्तगुणा प्रतिबादरैकेकनिगोदमनन्तानां सद्भावात् १३ । तेभ्य सामान्यतो बादरा अपर्याप्तका विशेषाधिका बादरत्रसकायिका पर्याप्तादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् १४ । तेभ्य सूक्ष्मवनस्पतिकायिका अपर्याप्ता असङ्ख्येयगुणा बादरनिगोदपर्याप्तेभ्य सूक्ष्मनिगोदापर्याप्तानां मसङ्ख्येयगुणत्वात् १५ । तेभ्य सामान्यत सूक्ष्मापर्याप्ता विशेषाधिका सूक्ष्मतेजस्कायिकापर्याप्तादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् १६ । गत द्वितीयमल्पबहुत्व मधुनैतेषामेव पर्याप्तानां तृतीयमल्पबहुत्वमाह-सव्वत्थोवा इत्यादि ॥ सर्वस्तोका बादरतैजस्कायिका पर्याप्ता १ । तेभ्यो बादरत्रसकायिका २ बादरप्रत्येकवनस्पतिकायिका ३

॥ मूल ॥

ण बादरवणस्सइकाइया अपज्जयाण पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तयाण बादरनिगोदा अपज्जत्तयाण बादरतसकाइया अपज्जत्तगाणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरतसकाइया अपज्जत्तगा । बादरतेउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा , पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा ३ । बादरनिगोदा अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा । बादरपुढविकाइया अपज्ज

॥ भाषा ॥

त अपज्जत्ता । स० निगोद अप० बादर अप० बादर पृथ्वीकाय अप० बादर अप्काय अप० बादर तेउकाय अप० बादर वायुकाय अप० बादर वनस्पतीकाय अप० । पत्तेयसरीर बायरवणस्सइकाइया अप० बायरनिगोया अप० बायर तसकाइया अप० कयरे २ हिंता अप्पावा ४ । प्रत्येकशरीर बादर वनस्पतीकाय अप० बादरनिगोद अप० बादर त्रसकाय अप० किहा २ थी थोडा घणा सरीखा विशेष हुवै । गोयमा सव्वत्थोवा बायरतसकाइया अपज्जत्तगा तथी प० असङ्खज्जगुणा । हेगोतम सर्वथोडा बादर त्रसकाइया अप०तेहथी पर्या० असङ्खातगुणा । पत्तेयसरीर बायरवणस्सइकाइया अप० असं० । तेहथी प्रत्येकशरीर बादरवनस्पतीकाय अप० असं० । बायरनिगोया अप० असं० । बादरनिगोद अप० असङ्खातगुणा । बायर पुढवीकाइया अप० असं० । बादरपृथ्वीकाय अप० असं० । बायर आउकाइया अपज्जत्तगा० असं० । बादर अप्काय अप० असं० । बायर तेउकाय अपज्जत्ता असं० ।

वादरनिगोदा ४ वादरपृथिवीकायिका ५ वादराप्कायिका ६ वादरवायुकायिका ७ पर्याप्ता यथोत्तर सङ्ख्येयगुणा अत्र भावना-वादरपञ्चसूत्र्या यत् तृतीय पर्याप्तसूत्र तद्वक्तव्या ७, वादरपर्याप्तवायुकायिकेभ्य सूक्ष्मतेजस्कायिकापर्याप्ता असङ्ख्येयगुणा वादरवायुकायिका हि असङ्ख्येयप्रतरप्रदेशराशिप्रमाणा सूक्ष्मतेजस्कायिकास्तु पर्याप्ता असङ्ख्येयलोकाकाशप्रदेशराशिप्रमाणा स्ततोऽसङ्ख्येयगुणा ८। तत सूक्ष्मपृथिवीकायिक ९ सूक्ष्माप्कायिका १० सूक्ष्मवायुकायिका ११ पर्याप्ता क्रमेण यथोत्तर विशेषाधिका ११, तत सूक्ष्मवायुकायिकेभ्य पर्याप्तेभ्य सूक्ष्मनिगोदा पर्याप्तका असङ्ख्येयगु

त्तगा असंखेज्जगुणा। वादरआउकाइया अपज्जत्तगा असंखे० ६। वादरवाउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, सुहुमतेउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा। सुहुमपुढविकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया ९ सुहुमआउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया १०। सुहुमवाउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमनिगोदा अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, वादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा अणतगुणा, वादरा अपज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा, सुहुमा अपज्जत्तगा विसेसाहिया २।

वादर तेउकाय अपर्याप्ता अस०। वायर वाउकाय अप० अस०। वादर वायुकाय अप० अस०। सुक्ष्म तेउकाय अप० अस० सूक्ष्म पुढवीकाइया अप० विसेसाहिया। सूक्ष्म तेउकाय अप० अस० सूक्ष्म पृथ्वीकाइया विशेषाधिक। सूक्ष्म आउकाइया अप० विसे० सूक्ष्म वाउका० अप० विसे०। सूक्ष्म अपकाइया अप० विशेषाधिक सूक्ष्म वाउकाइया अपर्याप्ता विशेषाधिक। सूक्ष्म निगोद अप० अस० वायरवणस्सइकाइया अप० अणतगुणा। सूक्ष्मनिगोद अप० अस० गुणा। वादर वनस्पतीकाय अप० अनन्तगुणा। वायर अप० विसे०। वादर अप० विशेषाधिक। सूक्ष्म वणस्सइकाइया अप० अस०। सूक्ष्म वनस्पतीकाय अपर्याप्ता असख्यातगुणा। सुहुमा अपज्जत्ता विसेसाहिया ॥ २ ॥ सूक्ष्म अपर्याप्ता विशेषाधिक। एएसिण भंते सुहुम पज्जत्तगा सुहुमपुढवीकाइया पज्जत्तयाणं। हे भगवन् एह सूक्ष्म पर्याप्ताने सूक्ष्म पृथ्वीकाय पर्याप्ताने। सुहुम आउकाय पज्जत्तगाण। सुहुम तेउका

णा स्तेपामतिप्रभूततया प्रतिगोलक भावात् १२ । तेभ्यो बादरवनस्पतिकायिका जीवा पर्याप्तका अनन्तगुणा प्रतिबादरैकैकनिगोदमनन्तना ना वात् १३ । तेभ्य सामान्यतो बादरापर्याप्तका विशेषाधिकाः, बादरतेजस्कायिकादीनामपि पर्याप्तानां तत्र प्रक्षेपात् १४ तेभ्य सूक्ष्मवनस्पतिकायिका पर्याप्ता असंख्येयगुणा बादरनिगोदपर्याप्तेभ्य सूक्ष्मनिगोदपर्याप्तानां मसङ्ख्येयगुणत्वात् १५। तेभ्य सामान्यत सूक्ष्मा पर्याप्ता विशेषाधिका, सूक्ष्मतेजस्कायिकादीनामपि पर्याप्तानां तत्र प्रक्षेपात् १६ । गत तृतीयमल्पबहुत्व मिदानी मेतपामेव सूक्ष्मबादरादीना प्रत्येक पर्याप्तापर्याप्ताना

एएसिण भते ! सुहुमपज्जत्तयाण सुहुमपुढविकाइयपज्जत्तगाण सुहुमआउकाइयपज्जत्तगाण सुहुमतेउकाइयपज्जत्तयाण सुहुमवाउकाइयपज्जत्तयाण सुहुमवणस्सइकाइयपज्जत्तयाण सुहुमनिगोयपज्जत्तयाणं बादरपज्जत्तगाण बादरपुढविकाइयपज्जत्तयाण बादरआउकाइयपज्जत्तयाणं बादरतेउकाइयपज्जत्तयाण बादरवाउकाइयपज्जत्तयाण बादरवणस्सइकाइयपज्जत्तयाण पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइयपज्जत्तयाण बादरनिगोदपज्जत्तया बादरतसकाइयपज्जत्तयाणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वा

य पर्याप्तान । सुक्ष्म तेउका० वाउका० वणस्स० निगोया पर्या० । सूक्ष्म तेजस्काय वायुकाय वनस्पतीकाय निगोदन पर्याप्ताने । बायर पुढवीका० पज्जत्ता बायर आउका प० बादर तेउकाय बादर वाउकाय बायर वणस्सइकाइया पज्जत्ता । बादर पृथ्वीकाय पर्याप्ताने बादर अपकाय पर्या० बादर तेउकाय पर्या० वायुकाय पर्या० बादर वनस्पतीकाय पर्याप्ताने । पत्तेयसरीर बायर वणस्सइ बायर निगोया बायर तसकाय पज्जत्ता २ पाय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४। प्रत्येकशरीर बादर वनस्पतीकाय पर्याप्ताने बादरनिगोद प० बादर त्रसकाय प० किहा २ थी थोडा घणा इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा बायर तेउकाय प० बादर तसकाय पज्जत्तगा असं० । हेगौतम सर्वथोडा बादर तेउकाय पर्याप्ता बादर त्रसकाय पर्याप्ता असंखेज्जगुणा । पत्तेयसरीर बायरवणस्सइकाइया बायरनिगोया बायर पुढवीकाइया बायर आउकाइय बायर तेउकाय अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा बायर वाउकाय

पृथग् २ अल्पबहुत्वमाह-एएसिणं भंते ! सुहुमाणं बायराणं पज्जत्तापज्जत्ताणमित्यादि ॥ सर्वत्रेय भावना-सर्वस्तोकाबादरा पर्याप्ता॰ परमित क्षेत्रवर्तित्वात्, तेभ्यो बादरा अपर्याप्ता असङ्ख्येयगुणा एकैकबादरपर्याप्तनिश्रया असङ्ख्यानां बादरापर्याप्तानामुत्पादात्, तेभ्य सूक्ष्मा अपर्याप्ता असख्येयगुणा, सर्वलोकोपपन्नतया तपा क्षेत्रस्या सख्येयगुणत्वात्' तेभ्य सूक्ष्मपर्याप्तका सख्येयगुणा चिरकालावस्थायितया तेषा सदैव सख्येय गुणतया वाप्यमानत्वात् ॥ गत चतुर्थमल्पबहुत्वम् ॥ इदानी मेतेषामेव सूक्ष्मपृथिवीकायिकादीना बादरपृथिवीकायिकादीना च प्रत्येक पर्याप्ता

दरतेउकाइया पज्जत्तगा । बादरतसकाइया पज्जत्तया असखिज्जगुणा । पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया पज्जत्तगा असखेज्जगुणा । बादरनिगोदा पज्जत्तया असखेज्जगुणा, बादरपुढविकाइया पज्जत्तया असं॰ बादरआउकाइया पज्जत्तया असखेज्जगुणा, बादरवाउकाइया पज्जत्तगा असखेज्जगुणा । सुहुमतेउकाइया पज्जत्तया असखेज्जगुणा, सुहुमपुढविकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमआउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया । सुहुमनिगोदा पज्जत्तया असंखेज्जगुणा, बाद

अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा । प्रत्येकशरीर बादर वनस्पतीकाय बादरनिगोद बादर पृथ्वीकाय बादर अपकाय बादर तेजस्काय बादर वायुकाय अपर्याप्ता असख्यातगुणा । सुहुमतेउकाय सुहुम पुढवीकाय सुहुम आउकाय सुहुम वाउकाय पज्जत्तगा विसेसाहिया सुहुम निगोया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा । सूक्ष्म तेउकाय पृथ्वीकाय अप्काय वायुकाय निगोदिया अपर्याप्ता असख्यातगुणा । बादर वणस्सइकाइया अपज्जत्तगा अणतगुणा । बादर वनस्पतीकाय अपर्याप्ता अनन्तगुणा । बादर अपज्जत्तगा विसेसाहिया । बादर अपर्याप्ता विशेषाधिक । सुहुम वणस्सइकाय अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा सुहुमा अपज्जत्तगा विसेसाहिया । सूक्ष्म वनस्पतीकाय अपर्याप्ता असख्यातगुणा सूक्ष्म अपर्याप्ता विशेषाधिक । २ । एएसिण भंते सुहुमपज्जत्तगाण सुहुम पुढवीकाइय पज्जत्तगाण । हेभगवन् एह सूक्ष्म पृथ्वीकाय पर्याप्ताने । सुहुम आउकाय पज्जत्तयाण । सूक्ष्म अपकाय पर्याप्ताने ।

॥ ॥ ॥ भ

वणस्सइकाइया पज्जत्तया अणंतगुणा, बादरपज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमवणस्सइकाइया पज्जत्तगा असंखिज्जगुणा। सुहुमपज्जत्तया विसेसाहिया ३। एएसिणं भंते! सुहुमाणं बादराण य पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४? गोयमा! सव्वत्थोवा बादरा पज्जत्तगा, बादरा अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा सुहुमा अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, सुहुमा पज्जत्तगा संखेज्जगुणा। एएसिणं भंते! सुहुमपुढविकाइया

सूक्ष्म तेउकाय वाउकाय वणस्सइकाय निगोद पज्जत्ता। सूक्ष्म तेजस्काय वायुकाय वनस्पतीकाय निगोद पर्याप्ताने। बादर पुढवीकाइया आउकाय तेउकाय वाउकाय वणस्सइकाय पज्जत्ता। बादर पृथ्वीकाय अपकायने तेजस्काय वायुकाय वनस्पतीकाय पर्याप्ताने। पत्तेयसरीर बादरवणस्सइकाय बादर निगोद बादर तसकाइया पज्जत्तगाणय कयरे २ हिंता अप्पावा ४। प्रत्येकशरीर बादर वनस्पतीकाय बादर निगोदने बादर त्रसकाय पर्याप्ताने किहा थी थाडा घणां इत्यादि। गोयमा सव्वत्थोवा बादर तेउकाइया प० असं० बादर तसकाइया अ० असं०। हे गौतम सर्वथोडा बादर तेउकाय पर्याप्ता बादर त्रसकाय पर्याप्ता असंख्यातगुणा। पत्तेयसरीर बादरवणस्सइकाइय बादर निगोद बादर पुढवीकाय अपज्जत्तगा असं०। प्रत्येकशरीर बादर वनस्पतीकाय पर्याप्ता असंख्यातगुणा बादरनिगोद बादर पृथ्वीकाय असंख्यातगुणां। बादरआउकाइय बादर वाउकाय पज्जत्ता असंखिज्जगुणा बादर अपकाय बादर वाउकाय अपर्याप्ता असंख्यातगुणां। सूक्ष्म तेउकाय प० असं० सु० पुढवीकाय पज्जत्तगा विसेसाहिया स० आउकाय स० वाउकाय सु० निगोद पज्जत्तगा असंखिज्जगुणा। सूक्ष्म तेउकाय पर्याप्ता असंख्यातगुणां सू० पृथ्वीकाय प०र्याप्ता विशेषाधिक सू० अपकाय पर्या० विशे० सू० वायुकाय प० विश सू० निगोद पर्या० असंख्यातगुणां। बादरवणस्सइकाय पज्जत्तगा अणंतगुणा। बादर वनस्पतीकाय पर्याप्ता अनंतगुणा। बादर पज्जत्तगा विसेसाहिया। बादर पर्याप्ता विशेषाधिक। सूक्ष्म वणस्सइकाय पज्जत्तगा असंखिज्जगुणा। सूक्ष्म वनस्पतीकाय पर्याप्ता असंख्यातगुणा। सुहुमपज्जत्तगा विसेसाहिया। ३। सूक्ष्म पर्याप्ता विशेषाधिक अल्प बहुत्व, इति त्रीजो अल्प बहुत्व। एएसिणं भंते सुहुमाणं बादराणं

ण वादरपुढविकाइयाणय पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वादरपुढवि काइया पज्जत्तया वादरपुढविकाइया अपज्जत्तया असखेज्जगुणा, सुहुमपुढविकाइया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा, सुहुमपुढविकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा । एएसिणं भंते ! सुहुमआउकाइयाण वादरआउ काइयाण पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वादरआउकाइया पज्जया वादरआउकाइया अपज्जत्तया असखेज्जगुणा, सुहुमआउकाइया अपज्जत्तया असखेज्जगुणा, सुहुमआ

पज्जत्ता २ णय कयर २ हिंतो अप्पावा ४ । हेभगवन् ए सूक्ष्मवादरने पर्याप्ता अपर्याप्ताने किहा २ थी थोडा घणा सरीखा विशेष हुवे । गोयमा स व्वत्थोवा वायर पज्जत्तगा अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा । हेगौतम सर्वथोडा बादर पर्याप्ता तेहथी ब दर अपर्याप्ता असंख्यातगुणा । सहम अपज्जत्तगा अ संखिज्जगणा । सक्ष्म अपर्याप्ता असंख्यातगुणा । सहम पज्जत्तगा सखिज्जगुणा । सूक्ष्मपर्याप्ता असंख्यातगुणा । एएसिणं भंते सहम पुढवीकाइयाण वा यरपढवीकाइयाण पज्जत्ता २ णय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । हेभगवन् ए सू० पृथ्वीकायने बादर पृथ्वीकाय पर्याप्ता अपर्याप्ताने किहा २ थी थोडा घणा इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा वायरपुढवीकाइया पज्जत्तगा वायर पुढवीकाइया अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा । हेगौतम सर्वथोडा बादर पृथ्वीकाय पर्या० तेहथी बादर पृथ्वीकाय अपर्याप्ता असंख्यातगुणा । सहम पुढवीकाइया अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा सुहुमपुढवीकाइया पज्जत्तगा संखिज्ज० । सूक्ष्म पृथ्वीकाय अपर्याप्ता असंख्यातगुणा सू० पृथ्वीकाय पर्याप्ता संख्यातगुणा । एएसिणं भंते सुहुम आउकाइयाण बायर आउकाइयाण पज्जत्ता २ णय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । हेभगवन् ए अपकायने बादर अपकायने पर्याप्ताने किहा २ थी थोडा घणा इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा बायर आउकाइया पज्जत्तगा बायर आउकाइया अपज्जत्तगा असं० । हेगौतम सर्वथोडा बादर पर्याप्ता बादर अपर्याप्ता असंख्यातगुणा । सहम आउकाइ या पज्जत्ता असंखिज्जगुणा सुहुमआउकाय अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा । सू० अपकाय पर्याप्ता असंख्यातगुणा सू० अपकाय अपर्याप्ता असंख्यातगु

उकाइया पज्जत्तगा सखेज्जगुणा । एएसिण भंते ! सुहुमतेउकाइयाण बादरतेउकाइयाणय पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहितो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरतेउकाइया पज्जत्तया, बादरतेउकाइया अपज्जत्तया असखेज्जगुणा, सुहुमतेउकाइया अपज्जत्तया असखेज्जगुणा, सुहुमतेउकाइया पज्जत्ता सखेज्जगुणा । एएसिण भंते ! सुहुमवाउकाइयाण बादरवाउकाइयाणय पज्जत्ता२ ण कयरे कयरेहितो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरवाउकाइया पज्जत्तया बादरवाउकाइया अपज्जत्तया असखेज्जगुणा । सुहुमवाउकाइया अपज्जत्तया असखेज्ज० । सुहुमवाउकाइया पज्जत्तया असखेज्जगुणा । एएसिण भंते ! सुहुमवणस्सइकाइयाण बादरवणस्सइकाइयाणय पज्जत्ता२ ण कयरे कयरेहितो अप्पावा४ ? गोयमा !

णा । एएसिण भंते सूक्ष्म तेउकाइयाण बादर बादरतेउकाइयाणय पज्जत्ता २ णय कयरे २ हितो अप्पावा । ४ । हे भगवन एह सू० तेउकायने बादर तेउकायने पर्यापता अपर्यापताने किहाथी थोडा घणा इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा बादर तेउकाय पज्जत्तगा बादर तेउकाय अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा । हे गौतम सर्वथी थोडा बादर तेउकाय पर्यापता बादर तेउकाय अपर्यापता असंख्यातगुणा । सूक्ष्म तेउकाय अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । सूक्ष्म तेउकाय अपर्यापता असंख्यातगुणा । सूक्ष्म तेउकाय पज्जत्तगा संखिज्जगुणा । सूक्ष्म तेउकाय पर्यापता असंख्यातगुणा । एएसिण भंते सहुम वाउकाइयाण बादर वाउकाइयाण पज्जत्ता २ णय कयरे २ हितो अप्पावा ४ । हे भगवन् एह सूक्ष्मवायुकायने बादर वायुकायने पर्यापता अपर्यापताने किहा २ थी थोडा घणा इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा बादर वाउकाइया पज्जत्तगा बादर वाउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । हे गौतम सर्वथी थोडा बादर वायुकाय पर्यापता बादर वायुकाय अपर्यापता असंख्यातगुणा । सहुम वाउकाय अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा सहुम वाउकाइया पज्जत्तगा संखिज्जगुणा । सूक्ष्म वायुकाय अपर्यापता असंख्यातगुणा सूक्ष्म वायुकाय पर्यापता असंख्यातगुणा । एएसिणभंते सुहुम वणस्सइकाइयाण बादर वणस्सइकाइयाण पज्ज

पर्याप्तानां च समुदायेन पञ्चम मल्पबहुत्वमाह-एएसिणं भंते ! सुहुमाणं सुहुमपुढविकाइयाणमित्यादि ॥ सर्वस्तोका बादरतेजस्कायिका पर्याप्ता आवलिकासमयवर्गकतिपयसमयन्यूने रावलिकासमयै र्गुणिते यावान् समयराशि स्तावत्प्रमाणत्वात् तथा, तेभ्यो बादरत्रसकायिका पर्याप्ता असंख्येयगुणा प्रतरे यावन्त्यङ्गुलसंख्येयभागमात्राणि खण्डानि तावत्प्रमाणत्वा त्तेषां, तेभ्यो बादरत्रसकायिका अपर्याप्ता असंख्येयगुणा प्रतरे यावन्त्य

सव्वत्थोवा बादरवणस्सइकाइया पज्जत्तया, बादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तया असंखिज्जगुणा, सुहुम वणस्सइकाइया अपज्जत्तया असंखिज्जगुणा। सुहुमवणस्सइकाइया पज्जत्तया संखिज्जगुणा। एएसिणं भंते! सुहुमनिगोदाणं बादरनिगोदाणय पज्जत्ता२ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा! सव्वत्थोवा बादरनिगोदा पज्जत्तया, बादरनिगोदा अपज्जत्तया असंखे०, सुहुमनिगोदा अपज्जत्तया असंखिज्जगुणा, सुहुमनिगोदा पज्जत्तया संखेज्जगुणा ४। एएसिणं भंते ! सुहुमाणं सुहुमपुढविकाइयाणं सुहुमआउकाइयाणं सुहुमतेउकाइयाणं सुहुमवाउकाइयाणं सुहुमवणस्सइकाइयाणं सुहुमनिगोदाणं बादराणं बादर

त्ता २ णय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४। हेभगवन् एह वनस्पतीकायने बादरवनस्पतीकायने पर्याप्ता अपर्याप्ताने किहा २ थी थोडा घणा इत्यादि। गोयमा सव्वत्थोवा बायर वणस्सइकाइया पज्जत्तगा बायरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा। हेगौतम सर्वथोडा बादर वनस्पतीकाय पर्याप्ता बादर वनस्पतीकाय अपर्याप्ता असंख्यातगुणा। सुहुम वणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा। सूक्ष्म वनस्पतीकाय अपर्याप्ता असंख्यातगुणा। सुहुम वणस्सइकाइया पज्जत्तगा संखिज्जगुणा। सूक्ष्म वनस्पतीकाय पर्याप्ता संख्यातगुणा। एएसिणं भंते सुहुमनिगोयाणं बायरनिगोयाणं पज्जत्ता २ णय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४। हेभगवन् एह सूक्ष्मनिगोदने बादरनिगोदने पर्याप्ता अपर्याप्ताने किहा २ थी थोडा घणां इत्यादि। गोयमा सव्वत्थोवा बायरनिगोया पज्जत्तगा बायरनिगोया अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा। हेगौतम सर्वथोडा बादरनिगोद पर्याप्ता बादर निगोद अपर्याप्ता असंख्यातगुणा।

ङ्गुलासङ्ख्येयभागमात्राणि खण्डानि तावत्प्रमाणत्वात् तेषां ततः प्रत्येकबादरवनस्पतिकायिक ४ बादरनिगोद ५ बादरपृथिवीकायिका ६ बादराप्कायिक ७ बादरवायुकायिका ८ पर्याप्ता यथोत्तरं असङ्ख्येयगुणा, यद्यप्येते प्रत्येकं प्रतरे यावत्यङ्गुलासङ्ख्येयभागमात्राणि खण्डानि यावत्प्रमाणा स्तथा प्यङ्गुलासङ्ख्येयभागस्या सङ्ख्येयभेदभिन्नत्वा दित्य यथोत्तर मसङ्ख्येयगुणत्व मभिधीयमानं न विरुध्यते ८। एतेभ्यो बादरतेजस्कायिका अपर्याप्ता असङ्ख्येयगुणा असङ्ख्येयलोकाकाशप्रदेशप्रमाणत्वात् ९। ततः प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिक १० बादरनिगोद ११ बादरपृथिवीकायिक १२ बाद

पुढविकाइयाणं बादरआउकाइयाणं बादरतेउकाइयाणं बादरवाउकाइयाणं बादरवणस्सइकाइयाणं पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइयाणं बादरनिगोदाणं बादरतस्सकाइयाणं पज्जत्ता२णं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरतेउकाइया पज्जत्तया १। बादरतसकाइया पज्जत्तया असंखिज्जगुणा २ बादरतसकाइया अपज्जत्तया असंखिज्जगुणा ३। पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया पज्जत्तया असंखिज्जगुणा ४। बादरनिगोदा पज्जत्तया असंखिज्जगुणा ५। बायरपुढविकाइया पज्जत्तया असंखेज्जगुणा ६। बादरआउकाइया पज्जत्तगा असंखिज्जगुणा ७। बादरवाउकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा ८। बादरतेउ

सुहुम निगोदा अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा सुहुम निगोया पज्जत्तगा संखिज्जगुणा। सूक्ष्म निगोद अपर्याप्ता असंख्यातगुणा सूक्ष्म निगोद पर्याप्ता संख्यातगणा। एएसिणं भंते सुहुमाणं सुहुमपुढवीकाइयाणं सुहुम आउकाय सु० तेउ सु० वाउ सु० वणस्सइकाय सु० निगोयाण बायराण बायरपुढवीकाइयाण बायर आउ० बायर तेउ० वाउ० सुहुम वणस्सइ०। हेभगवन् एस सू० पृथ्वीकायने सू० अपकायने सू० तेउकायने सू० वायुकायने सू० वनस्पतीकायने सू० निगोदने, बादर पृथ्वीने बादर अपकायने बादर तेउने बादर वायुने बादर वनस्पतीने। पत्तेयसरीर बायरवणस्सइकाइया बायर निगोया य बायरतसकाइयाणय पज्जत्ता अपज्जत्ताण कयरे २ हिंतो अप्पावा ४। प्रत्येकशरीर बादर वनस्पतीने बादर निगोदने बादर त्रसकायने पर्याप्ता अ

राप्कायिक १३ बादरवायुकायिका अपर्याप्ता यथोत्तर मसङ्ख्येयगुणा १४। ततो बादरवायुकायिकेभ्यो ऽपर्याप्तेभ्य सूक्ष्मतेजस्कायिका अपर्याप्ता अ सङ्ख्यगुणा १५ तत सूक्ष्मपृथिवीकायिका १६। सूक्ष्माप्कायिक १७ सूक्ष्मवायुकायिका अपर्याप्ता यथोत्तर विशेषाधिका १८ तत सूक्ष्मपर्याप्ता स्ते जस्कायिका सङ्ख्यातगुणा, सूक्ष्मेष्वपर्याप्तेभ्य पर्याप्तानां मोघत एव सङ्ख्यगुणत्वात् १९। तत सूक्ष्मपृथिवीकायिक २० सूक्ष्माप्कायिक २१ सूक्ष्मवायु

काइया अपज्जत्तया असंखिज्जगुणा ९। पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तया असंखेज्ज० १०। बादरनिगोदा अपज्जत्तया असखे० ११। बादरपुढविकाइया अपज्जत्तया असखे० १२। बादरआउकाइया अपज्जत्तया असखे० १३। बादरवाउकाइया अपज्जत्ता असखे० १४। सुहुमतेउकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा १५। सुहुमपुढविकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया १६। सुहुमआउकाइया अप

पर्याप्ताने किहा २ थी थोडा घणा सरीखा विशेष हुवे। गोयमा सव्वथोवा बादर तेउकाइया पज्जत्तगा बायरतसकाइया पज्जत्ता असंखिज्जगुणा बादरतसकाइया अप० असंखिज्जगुणा। हे गौतम सर्वथोडा बादर तेउकाय पर्याप्ता बादर त्रसकाय पर्याप्ता असंख्यातगुणा बादर त्रसकाइया अपर्याप्ता असंख्यातगुणा। पत्तेय सरीर बायरवणस्सइ० पज्जत्तगा असंखिज्जगुणा बायरनिगोद पज्जत्तगा असंखिज्जगुणा। प्रत्येकशरीर बादरवनस्पतीकाय पर्याप्ता असंख्यातगुणा बादर निगोद पर्याप्ता असंख्यातगुणा। बायर पुढवीकाइय पज्जत्तगा असंखिज्जगुणा बायर आउकाइय पज्जत्तगा अस० बायर वाउकाय अप० अस० बायर तेउकाय अप० अस०। बादर पृथिवीकाइया पर्याप्ता अस० बादर अप्काय पर्या० अस० बादर वायुकाय अप० अस० बादर तेउकाय अप० अस०। पत्तेयशरीर बायर वणस्सइकाइया अपज्जत्तगा अस० बायरनिगोय अपज्जत्तगा अस० बायरपुढवीकाइय अप० अस० बायर आउकाय अप० अस० बायर वाउकाय अप० अस०। प्रत्येकशरीर बादरवनस्पतीकाय अपर्याप्ता अस० बादर निगोदिया अपर्याप्ता अस० बादर पृथ्वीकाय पर्या० अस० बादर अप्काय पर्या० अस० बादर वायुकाय अप० अस०। सुहुम तेउकाय अपज्जत्तगा अस० सु० पुढवीकाय अप० सु० आउ०

॥ टीका ॥

कायिका पर्याप्ता यथोत्तर विशेषाधिका २२, तेभ्य सूक्ष्मनिगोदा अपर्याप्ता असङ्ख्येयगुणा तेषा मतिप्राचुर्येन सर्वलोकेषु भावात् २३, तेभ्य सूक्ष्मनिगोदा पर्याप्तका सङ्ख्येयगुणा सूक्ष्मअपर्याप्तेभ्य पर्याप्ताना ओघत एव सदा सङ्ख्येयगुणत्वात्, एतच बादरापर्याप्ततेजस्कायिकादय पर्याप्तसूक्ष्मनिगोदपर्यवसाना षोडश पदार्था यद्यप्यन्यत्र विशेषेण सङ्ख्येयलोकाकाशप्रदेशप्रमाणतया सङ्गीयते, तथाप्यसङ्ख्येयस्या सङ्ख्येयभेदभिन्नत्वा दित्थमसङ्ख्येयगुणत्व विशेषाधिकत्व सङ्ख्येयगुणत्व प्रतिपाद्यमानं न विरोधमागिति २४। तेभ्य पर्याप्तसूक्ष्मनिगोदेभ्यो बादरवनस्पतिकायिका पर्याप्ता अनन्तगुणा, प्रतिबादरैकैकनिगोदमनन्तानां जीवाना भावात् २५। तेभ्य सामान्यतो बादरा पर्याप्ता विशेषाधिका, बादरपर्याप्ततेजस्कायिका

॥ मूल ॥

ज्जत्तगा विसेसाहिया १७। सुहुमवाउकाइया अपज्जत्तया विसेसाहिया १८। सुहुमतेउकाइया पज्जत्तया संखि० १९। सुहुमपुढविकाइया पज्जत्तया विसेसाहिया २०। सुहुमआउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया २१ सुहुमवाउकाइया पज्जत्तया विसेसाहिया २२। सुहुमनिगोदा अपज्जत्तया असंखे० २३। सुहुमनिगोदा पज्जत्तया संखि० २४। बादरवणस्सइकाइया पज्जत्तया अणंतगुणा २५। बादरपज्जत्ता विसेसाहिया २६ बादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा २७। बादरअपज्जत्तया विसेसाहिया २८। बादरा

॥ भाषा ॥

अप० विसे० सू० वाउकाय अप० विसे०। सूक्ष्म तेउकाय अप० असं० सू० पृथ्वीकाय अप० विशेषाधिक सू० अपकाय अप० विशेषाधिक सू० वायुकाय अप० विशेषाधिक। सू० तेउकाय पज्जत्तगा असं० सू० पृथ्वीकाय पज्जत्तगा विसे० सू० अपकाय० वाउकाय निगोद पज्ज० विसे०। सू० तेउकाय अप० असं० सू० पृथ्वीकाय अपर्याप्ता विशे० सू० अपकाय अप० विशे० सू० वायुकाय अप० विशे० सू० निगोदीया अप० सङ्ख्यातगुणा। बादर वणस्सइकाइया पज्ज० अनन्तगुणा बादर पज्जत्तगा विसे०। बादर वनस्पतीकाय पर्या० अनन्तगुणा बादर पर्या० विशेषाधिक। बादर वणस्सइकाइय अप० असं० बादर अपज्जत्तगा विसे० बादरा विसेसाहिया। बादर वनस्पतीकाय अप० असं० बादर अप० विशेषाधिक बादर विशेषाधिक। सूक्ष्म

राप्कायिक १३ बादरवायुकायिका अपर्याप्ता पर्याप्तर असङ्ख्येयगुणा १४। ततो बादरवायुकायिकेभ्यो ऽपर्याप्तेभ्य सूक्ष्मतेजस्कायिका अपर्याप्ता अ सङ्ख्यगुणा १५ तत सूक्ष्मपृथिवीकायिका १६। सूक्ष्माप्कायिक १७ सूक्ष्मवायुकायिका अपर्याप्ता पर्याप्तर विशेषाधिका १८ तत सूक्ष्मपर्याप्ता स्ते जस्कायिका सङ्ख्यातगुणा, सूक्ष्मेषपर्याप्तेभ्य पर्याप्ताना मोघत एव सङ्ख्यगुणत्वात् १९। तत सूक्ष्मपृथिवीकायिक २० सूक्ष्माप्कायिक २१ सूक्ष्मवायु

काइया अपज्जत्तया असंखिज्जगुणा ९। पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तया असंखेज्ज० १०। बादनिगोदा अपज्जत्तया असंखे० ११। बादरपुढविकाइया अपज्जत्तया असंखे० १२। बादरआउकाइया अपज्जत्तया असंखे० १३। बादरवाउकाइया अपज्जत्ता असंखे० १४। सुहुमतेउकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा १५। सुहुमपुढविकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया १६। सुहुमआउकाइया अप

पर्याप्ता तेह किहा २ थी थोडा घणा सरीखा विशेष छे। गोयमा सर्वथोडा बादर तेउकाइया पज्जत्तगा बादरतसकाइया पर्याप्ता असंखिज्जगुणा बादरतसकाइय अप० असंखिज्जगुणा। हे गौतम सर्वथोडा बादर तेउकाय पर्याप्ता बादर त्रसकाय पर्याप्ता असंख्यातगुणा बादर त्रसकाइया अपर्याप्ता असंख्यातगुणा। पत्तेय सरीर बायरवणस्सइ० पज्जत्तगा असंखिज्जगुणा बायरनिगोद पज्जत्तगा असंखिज्जगुणा। प्रत्येकशरीर बादरवनस्पतीकाय पर्याप्ता असंख्यातगुणा बादर निगोद पर्याप्ता असंख्यातगुणा। बायर पुढवीकाइय पज्जत्तगा असंखिज्जगुणा बायर आउकाइय पज्जत्तगा अस० बायर वाउकाय अप० अस० बायर तेउकाय अप० अस०। बादर पृथिवीकाइया पर्याप्ता अस० बादर अप्काय पर्या० अस० बादर वायुकाय अप० अस० बादर तेउकाय अप० अस०। पत्तेयशरीर बायर वणस्सइकाइया अपज्जत्तगा अस० बायरनिगोद अपज्जत्तगा अस० बायरपुढवीकाइय अप० अस० बायर आउकाय अप० अस० बायर वाउकाय अप० अस०। प्रत्येकशरीर बादरवनस्पतीकाय अपर्याप्ता अस० बादर निगोदिया अपर्याप्ता अस० बादर पृथ्वीकाय पर्या० अस० बादर अप्काय पर्या० अस० बादर वायुकाय अप० अस०। सूक्ष्म तेउकाय अपज्जत्तगा अस० सु० पुढवीकाय अप० सु० आउ०

कायिका पर्याप्ता यथोत्तर विशेषाधिका २२, तेभ्य सूक्ष्मनिगोदा अपर्याप्ता असङ्ख्येयगुणा तेषा प्रतिप्रभूत्येन सर्वलोकेषु भावात् २३, तेभ्य सूक्ष्मनिगोदा पर्याप्तका सङ्ख्येयगुणा सूक्ष्मपर्याप्तेभ्य पर्याप्तानां ओघत एव सदा सङ्ख्येयगुणत्वात्, एतच्च बादरापर्याप्ततैजस्कायिकादय पर्याप्तसूक्ष्मनिगोदपर्यवसाना षोडश पदार्था यद्यप्यन्यत्र विशेषेणा सङ्ख्येयलोकाकाशप्रदेशप्रमाणतया सङ्गीयते, तथाप्यसङ्ख्येयस्य सङ्ख्येयभेदभिन्नत्वा दित्य ममसङ्ख्येयगुणत्व विशेषाधिकत्व सङ्ख्येयगुणत्व प्रतिपाद्यमानं न विरोधमागिति २४। तेभ्य पर्याप्तसूक्ष्मनिगोदेभ्यो बादरवनस्पतिकायिका पर्याप्ता अनन्तगुणा, प्रतिबादरैकैकनिगोदमनन्तानां जीवानां भावात् २५। तेभ्य सामान्यतो बादरा पर्याप्ता विशेषाधिका, बादरपर्याप्ततेजस्कायिका

ज्जत्तगा विसेसाहिया १७। सुहुमवाउकाइया अपज्जत्तया विसेसाहिया १८। सुहुमतेउकाइया पज्जत्तया संखि० १९। सुहुमपुढविकाइया पज्जत्तया विसेसाहिया २०। सुहुमआउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया २१ सुहुमवाउकाइया पज्जत्तया विसेसाहिया २२। सुहुमनिगोदा अपज्जत्तया असंखे० २३। सुहुमनिगोदा पज्जत्तया संखि०२४। बादरवणस्सइकाइया पज्जत्तया अणंतगुणा २५। बादरपज्जत्ता विसेसाहिया २६ बादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा २७। बादरअपज्जत्तया विसेसाहिया २८। बादरा

अप० विस० सू० वाउकाय अप० विसे०। सूक्ष्म तेउकाय अप० असं० सू० पृथ्वीकाय अप० विशेषाधिक सू० अपकाय अप० विशेषाधिक सू० वायुकाय अप० विशेषाधिक। सू० तेउकाय पज्जत्तगा असं० सू० पढवीकाय पज्जत्तगा विसे० सू० आउकाय० वाउकाय निगोय पज्ज० विसे०। सू० तेउकाय अप० असं० सू० पृथ्वीकाय अपर्याप्ता विशे० सू० अपकाय अप० विशे० सू० वायुकाय अप० विशे० सू० निगोदीया अप० सङ्ख्यातगुणा। बायर वणस्सइकाइया पज्ज० अणंतगुणा बायर पज्जत्तगा विसे०। बादर वनस्पतीकाय पर्या० अनन्तगुणा बादर पर्या० विशेषाधिक। बायर वणस्सइकाइय अप० असं० बायर अपज्जत्तगा विसे० बायरा विसेसाहिया। बादर वनस्पतीकाय अप० असं० बादर अप० विशेषाधिक बादर विशेषाधिक। सूक्ष्म

तिष्का स्तेजोलेश्याका स्तथासौधर्मेशानकल्पदेवाश्च तत प्रामुर्वल्यसंख्येयगुणा स्तदयुक्तं वस्तुतत्वापरिज्ञानात्. लेश्यापदेऽपि गर्भव्युत्क्रान्तिकतिर्यग्योनिकाना सम्मूर्छिमपचेंद्रियतिर्यक्योनिकाना च कृष्णलेश्याद्यल्पबहुत्वे सूत्र वक्ष्यति–सव्वत्थोवा गब्भवक्कंतियतिरिक्खजोणिया सुक्कलेसा तिरिक्खजोणिणीओ संखेज्जगुणाओ पम्हलेसागब्भवक्कंतियतिरिक्खजोणिया संखेज्जगुणा, तिरिक्खजोणिणीओ संखेज्जगुणाओ तेउलेसा गब्भवक्कंतियतिरिक्खजोणिया संखेज्जगुणा, तेउलेसाओ तिरिक्खजोणिणीओ संखेज्जगुणाओ इति॥ महादण्डके च तिर्यग्योनिकस्त्रीभ्यो व्यन्तरज्योतिष्का श्च संख्येयगुणा वक्ष्यते ततो यद्यपि भवनवासिभ्यो ष्य संख्येयगुणा ज्योतिष्का तथापि पद्मलेश्याकेभ्य स्तेजोलेश्याका संख्येयगुणाएव इद मत्र तात्पर्यार्थं, यदि केवलान् देवान् व पद्मलेश्यान धिकृत्य देवाएव तेजोलेश्याका श्चिन्त्यन्ते ततो भवत्य संख्येयगुणा यावता तिर्यक्सम्मिश्रया पद्मलेश्याकेभ्य स्तिर्यग्सम्मिश्राएव तेजोलेश्याका श्चिन्त्यन्ते तिर्यञ्चश्च पद्मलेश्या अपि अतिबहव स्तत संख्येयगुणा इति। तेभ्य अलेश्याका अनन्तगुणा सिद्धाना मनन्तत्वात् तेभ्य कापोतलेश्या अनन्तगुणा वनस्पतिकायिकाना मपि कापोतलेश्याया सम्भवात् वनस्पतिकायिकाना च सिद्धेभ्यो प्यनन्तगुणत्वात् तेभ्योपि नीललेश्याविशेषाधिका प्रभूततराणा नीललेश्यासम्भवात् तेभ्योपि कृष्णलेश्याका विशेषाधिका प्रभूताना कृष्णलेश्यकत्वात्, सामान्यत सले

लेसाण तेउलेसाण पम्हलेसाण सुक्कलेसाण अलेसाणय कयरे कयरेहितो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा सुक्कलेसा पम्हलेसा संखिज्जगुणा तेउलेसा संखिज्ज० अलेसाअणंतगुणा काउलेसा अणंतगुणा नील

कापोतलेशीने तेजोलेशीने पद्मलेशीने शुक्ललेशीने अलेशीने किहा२ थोडा घणा इत्यादि। गोयमा सव्वत्थोवाजीवा सुक्कलेसगा पम्हलेसगा संखिज्जगुणा। हेगौतम सर्वथोडा जीव शुक्ललेश्याना लतकथी ऊपरिला देवने थाय पद्मलेश्याना घणो संख्यातगुणा इंशानादिक देव मणुष्यने हुवे तेमाटे। तेउलेसगा संखिज्जगुणा अलेसगा अणंतगुणा काउलेसगा अणंतगुणा नीललेसगा विसेसाहिया किण्हलेसगा विसेसाहिया सलेसगा विसेसाहिया द्वार ८। तेजोलेश्या ज्योतिषीने हुवे तेमाटे संख्याता अलेशीसिद्ध तेहथी अनंता कापोतलेश्याना धणी अनंता वनस्पती भणी नीललेश्याना धणी विशेषाधिक घणा

इया विशेषाधिका नीललेश्याकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात्, गतं लेश्याद्वारं, मिदानीं सम्यक्त्वद्वारं माह–एएसिण भंते ! जीवाणं सम्मदिठीण मित्यादि ॥ सर्वस्तोका सम्यग्मिथ्यादृष्टय । सम्यग्मिथ्यादृष्टिपरिणामकालस्या तर्मुहूर्त्तप्रमाणतयाऽतिस्तोकत्वेन तेषां पृच्छासमये स्तोकानामेव लभ्यत्वात्, तेभ्य सम्यग्दृष्टयोऽनन्तगुणा सिद्धाना मनन्तत्वात्, तेभ्योपि मिथ्यादृष्टयो नन्तगुणा वनस्पतिकायिकाना सिद्धेभ्यो प्यनन्तगुणत्वात्, तेषाच मिथ्यादृष्टित्वा दिति । गत सम्यक्त्वद्वारं, मधुना ज्ञानद्वार माह–एएसिण भंते ! जीवाण आभिणिबोहियणाणीण मित्यादि ॥ सर्वस्तोकामन पर्यवज्ञानिन संयताना मेवा मर्षौषध्यादिऋद्धिप्राप्ताना मन पर्यवज्ञानसंभवात्, तेभ्यो ऽसंख्येयगुणा अवधिज्ञानिनो नैरयिकतिर्यक्पंचेंद्रियमनुष्यदेवाना मप्य वधिज्ञानसंभवात्, तेभ्य आभिनिबोधिकज्ञानिन श्रुतज्ञानिन श्च विशेषाधिका संज्ञितिर्यग्पंचेंद्रियमनुष्याणा मेवा वधिज्ञानविकलाना

लेसा विसेसाहिया कण्हलेसा विसेसाहिया, दार ८। एएसिण भंते ! जीवाण सम्मदिठीण मिच्छादिठीण समामिच्छदिठीण च कयरे कयरेहितो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा सम्मामिच्छदिठी, सम्मदिठी अणंतगुणा मिच्छदिठीअणंतगुणा, दार ९। एएसिण भंते ! जीवाण आभिणिबोहियणाणीण

नीलनेथाय कृष्णलेश्याना धणी विशेषाधिक सातमानरक तथा मनुष्य तिर्यंचने सर्वलेश्यानाधणी विशेषाधिक थाय इति लेश्याद्वार, हिवे सम्यक्त्वद्वार कहेछे—एएसिण भंते जीवाण सम्मदिठीण मिच्छदिठीण सम्मामिच्छादिठीणय कयरे २ हितो अप्पावा ४ । हेभगवन् एह जीवने सम्यक्त्वदृष्टिने मिथ्यादृष्टि सम्यक्त्वमिथ्यादृष्टिने किहा २ थी अल्प घणा इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा जीवा सम्मामिच्छादिठ्ठी सम्मदिठ्ठी अणंतगुणा मिच्छदिठ्ठी अणंतगुणा द्वार । हेगौतम सर्वथोडाजीव सम्यक्मिथ्यादृष्टि जेभणी मिश्रगुणठाणानोकाल तभणी तेहथी सम्यक्त्वदृष्टि अनन्तासिद्ध भेलता तेहथी मिथ्यादृष्टि अनन्ता वनस्पती भेलता इति सम्यक्त्व ८ हिवे ज्ञानद्वार कहेछे—एएसिणभंते जीवाण आभिणिबोहियणाणीण सुयनाणी ओहिणाणी मणपज्जवणाणी केवलणाणीणय कयरे २ हिता अप्पावा ४ । हेभगवन् एह जीवाने मतिज्ञानीने श्रुतज्ञानीने अवधिज्ञानीने मनपर्यवज्ञानीने केवलज्ञानीने किहा २ थी थोडा

त्यासुयग्रन्नाण ज्जस्य सुयश्रन्नाण तत्यमइश्रन्नाण मितिवचनात-सम्प्रत्युनयेषा ज्ञानाज्ञानिना मल्पबहुत्व माह-एएसिण भंते । जीवाण मित्यादि ॥

मपि केषाचि दाभिनिबोधिकश्रुतज्ञानभावात्, स्वस्थाने तु त्वेपि परस्पर तुल्या जत्थमइश्रन्नाण तत्थसुयश्रन्नाण जत्थसुयश्रन्नाण तत्थमइश्रन्नाण मितिवच नात्, तेभ्य केवलज्ञानिनो श्रनन्तगुणा सिद्धाना मनन्तत्वात्, उक्तानि-ज्ञानानि मल्पबहुत्व मिदानी तत्प्रतिपक्षभूताना मज्ञानिना मल्पबहुत्व माह-एएसिण भंत । जीवाण मइश्रन्नाणीण मित्यादि ॥ सर्वस्तोका विभङ्गज्ञानिन कतिपयानामेव नैरयिकदेवतिर्यक्पंचेंद्रियमनुष्याणा विभङ्गभा वात्, तेभ्यो मत्यज्ञानिन श्रुताज्ञानिनो ऽनन्तगुणा, वनस्पतीनामपि मत्यज्ञान श्रुताज्ञानभावात्, स्वस्थानेतु परस्पर तुल्या जत्थमइश्रन्नाण त

सर्वस्तोका मन पर्यवज्ञानिन संयताना मेवा मर्षौषध्या वृद्धिप्राप्ताना मन पर्यवज्ञानसंभवात्, तेभ्यो ऽसंख्येयगुणा अवधिज्ञानिन स्तेभ्य आभिनि

सुयणाणीण ओहिणाणीण मणपज्जवनाणीण केवलनाणीणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्व त्थोवा मणपज्जवनाणी ओहिणाणी अस० आभिणिबोहियनाणी सुयनाणी दोवि तुल्ला विसेसाहिया केव लनाणी अण० । एएसिण भंते ! जीवाण मइअण्णाणीण सुयअण्णाणीण विभंगनाणीणय कयरे कयरेहिंतो

घणा इत्यादि गोयमा सव्वथोवा जीवा मणपज्जवणाणी ओहिणाणी असंखेज्जगणा । हेगौतम सर्वथोडा मनपर्यवज्ञानीने किम अमोसही लब्धिना धणी ते हवे तेमाटे तेहथी अवधिज्ञानी असंख्यात देवता नारकी मनुष्य तिर्यचने हवे तेमाटे आभिणिबोहियणाणी सुयणाणी दोवितुल्ला विसेसा हिया केवलणाणी अणतगणा । मतिज्ञानी श्रुतज्ञानी विसेसा जीवाभिगमे कह्याछे जत्थमइणाण तत्थसुयणाण, मइनाण अवधिणाणीथी विशेषाधिक केवलज्ञानी अनन्तगणा सिद्धनालेवा भणी, हिवे ज्ञानना प्रतिपक्षानो अल्पबहुत्व कहेछे—एएसिण भंते जीवाण मइअन्नाणीण सुयअन्नाणीण विभंगणा णीणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । हेभगवन् एहजीवने मतिअज्ञानीने श्रुतअज्ञानीने विभंगज्ञानीने किहा २ थी थोडा इत्यादि । गोयमा सव्वथोवा विभंग णाणी मइअणाणी सुयअणाणी दोवितुल्ला अणतगुणा । हेगौतम सर्वथोडा विभंगज्ञानी देव नारकी मनुष्य तिर्यचमे तेभणी मतिअज्ञानी श्रुतअज्ञानी दो

योधिकज्ञानिन श्रुतज्ञानिन श्च विशेषाधिका स्वस्थाने तु द्वावपि परस्परं तुल्या अवज्ञावना प्रागेवोक्ता, तेभ्योऽसंख्येयगुणा विभंगज्ञानिनो यस्मा त्सुरगतौ निरयगतौ च सम्यग्दृष्टिभ्यो मिथ्यादृष्टयो ऽसंख्येयगुणा पठ्यन्ते, देवनैरयिका श्च सम्यग्दृष्टयो ऽवधिज्ञानिनो मिथ्यादृष्टयो विभंगज्ञानिन इत्य सम्येयगुणा स्तेभ्य केवलज्ञानिनो ऽनन्तगुणा- सिद्धाना मनन्तत्वात् , तेभ्यो मत्यज्ञानि श्रुताज्ञानिनश्चा नन्तगुणा वनस्पतिकायिकाना सिद्धेभ्यो प्यनन्त

अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा विभंगनाणी मइअन्नाणी सुयअन्नाणी दोवि तुल्ला अणतगुणा। एएसिणं भंते ! जीवाण आभिनिबोहियनाणीण सुयनाणीण ओहिनाणीणं मणपज्जवनाणीण। केवलनाणी ण मतिअन्नाणीण सुयअन्नाणीण विभंगनाणीणय कयरे कयरेहितो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा मणपज्जवनाणी ओहिनाणी असंखिज्जगुणा , आभिणिबोहियनाणी सुयनाणीय दोवि तुल्ला विसेसाहिया , विभंगनाणी असंखेज्जा० , केवलनाणी अणतगुणा मइअन्नाणी सुयअन्नाणीय दोवि तुल्ला अणतगु

र सरीखा विभगथी अनन्तगुणा जेभणी मतिअज्ञानी श्रुतअज्ञानी वनस्पतीने थाय तेमाटे। एएसिण भंते जीवाण आभिणिबोहियणाणीण सुयणाणीं ओहिणाणी मणपज्जवणाणी केवलणाणी। हेभगवन एहने मतिज्ञानीने श्रुतज्ञानीने अवधिज्ञानीने मनपर्यवज्ञानीने केवलज्ञानीने। मइअणाणीण सुयअणाणीण विभगणाणीणय कयरे २ हितो अप्पावा ४। मतिअज्ञानीने श्रुतअज्ञानीने विभगज्ञानीणे किहा २ थोडा घणा सरीखा विशेष होवे। गोयमा सव्वत्थोवा जीवा मणपज्जवणाणी ओहिणाणी असंखिज्जगुणा आभिणिबोहियणाणी सुयणाणी दोवितुल्ला विसेसाहिया। हेगोतम सर्वथोडा जीव मनपर्यवनाणी नथना धणी साधने हुवे। तेहथी अवधिज्ञानी असंख्यातगुणा मतिज्ञानी श्रुतज्ञानी बेसरीषा अवधिज्ञानीथी विशेषाधिक। विभगणाणी असंखिज्जगुणा केवलणाणी अणतगुणा मइअणाणी दोवितुल्ला अणतगुणा द्वार १०। विभङ्गज्ञानी असंख्यातगुणा मिथ्यात्वीने हुवे पिण सम्यक्ज्ञानी नथी तेमाटे केवलज्ञानी अनन्तगुणा सिद्ध भेलता मतिअज्ञानी श्रुतअज्ञानी दोय सरीखा केवलज्ञानीथी अनन्तगुणा वनस्पतीमाटे इति ज्ञानद्वार।

त्वात्, तेषाच मत्यज्ञानिश्रुताज्ञानित्वात्, स्वस्थानेतु द्वावपि परस्पर तुल्या' गतं ज्ञानद्वार मिदानीं दर्शनद्वारमाह-एएसिण भंते! जीवाणं चक्खु दसणीण मित्यादि॥ सवस्तोका अवधिदर्शनिनो देवनैरयिकाणा कतिपयाना च सज्ञिपचेंद्रियतिर्यग्मनुष्याणा मवधिदर्शनभावात्, तेभ्यो चक्षुदर्शनिनो ऽसख्येयगुणा सर्वेपा देवनैरयिक गर्भजमनुष्याणा सज्ञितिर्यग्पचेंद्रियाणा चतुरिंद्रियाणा च असज्ञितिर्यग्पचेंद्रियाणा चक्षुदर्शनभावात्, तेभ्य केवल दर्शनिनोऽनन्तगुणा सिद्धानामनन्तत्वात्, तेभ्यो ऽचक्षुदर्शनिनो ऽनन्तगुणा वनस्पतिकायिकानासिद्धेभ्योप्यनंतत्वात्, गत दर्शनद्वार, मधुना सय तद्वार माह-एएसिण भंते! जीवाण मित्यादि॥ सवस्तोका संयता उत्कृष्टपदेपि तेपा कोटिसहस्रपृथक्त्वप्रमाणतया लभ्यानत्वात्, कोटिसहस्सपुहुत्त मणुयलोए सजयाण मितिवचनात्, तेभ्य सयतासयतादेशविरता असख्येयगुणा स्तिर्यक् पचेंद्रियाणा मसख्यातानां देशविरतिसद्भावात्, तेभ्यो

णा, दारं १० । एएसिण भंते ! जीवाण चक्खुदसणीण अचक्खुदसणीण उहिदसणीण केवलदसणीणय क यरे कयरेहिंतो अप्पवा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा उहिदसणी चक्खुदसणी असखेज्जगुणा, केवलदंस णी अणतगुणा अचक्खुदसणी अणतगुणा, दार ११ । एएसिण भंते ! जीवाण सजयाण असजयाण सज यासजयाण नोसजया नोअसजया नोसजया२ णय कयरे२ हिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा

एएसिण भंते जीवाण चक्खुदसणीण अचक्खुदसणीण ओहिदसणीण केवलदसणीणय कयरे२ हिंतो अप्पावा४ । हेभगवन् एह चक्षुदर्शनि दर्शनद्वार कहेछे अचक्षुदर्शनि अवधिदर्शनीने केवलदर्शनीने किहा २ थी थोडा घणा इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा जीवा ओहिदसणी चक्खुदसणी असखिज्जगुणा । हे गौतम सर्वथोडा जीव अवधिदर्शनी जेभणी मनुष्य तिर्यंच देव नारकीने हुवे चक्षुदर्शनी असख्यातगुणा चौरिन्द्रियादिकने । केवलदसणी अणतगुणा अ चक्खुदसणी । केवलदर्शनी अनन्तगुणा अचक्षुदर्शनी अनन्ता पाचेथाव थावरमाटे इति ११ । एएसिण भंते जीवा सजयाण असजयाण सजयासजयाण नोसजय नोअसजय नासजय सजयाणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । हेभगवन् एह जीवाने सयतने असयतने सयतासयतने नोसयत नोअसयतने नोसंय

नोसंयता नोअसंयतासंयता अनन्तगुणा प्रतिषेधत्रयवृत्ता ति सिद्धा स्ते चा नंता इति तेभ्यो ऽसंयता अनन्तगुणा वनस्पतीनां सिद्धेभ्यो प्यनन्त त्वात्, गत संयतद्वार, मथ्यु पयोगद्वार माह-एएसिण भंते ! जीवाण सागारोवउत्ताण मित्यादि॥ इहा नाकारोपयोग काल सर्वस्तोका सा कारोपयोगकाल स्तु सङ्ख्येयगुणा ततो जीवा अप्य नाकारोपयोगोपयुक्ता सर्वस्तोका पृच्छासमये तेषा स्तोकानामेवा वाप्यमानत्वात्, तन्य सा कारोपयोगोपयुक्ता सङ्ख्येयगुणा साकारोपयोगकालस्य दीर्घतया तेषा पृच्छासमये वहूनाप्राप्यमाणत्वात्, गत मुपयोगद्वार, मिदानी माहार द्वार-एएसिण भंते ! आहारगाण मित्यादि॥ सवस्तोका जीवा अनाहारका विग्रहगत्यापन्नादीना मेवा नाहारकत्वात्, उक्त च-विग्गहगइमाव न्ना केवलिणोसमुहयाअजोगीय सिद्धायअणाहारा सेसाआहारगाजीवा ॥ १ ॥ तेभ्य आहारका असङ्ख्येयगुणा ननु वनस्पतिकायिकाना सिद्धेभ्यो

जीवा संजया संजया असंजया असंखेज्जगुणा, नोसंजता नोअसंजता नोसंजतासंजता अणतगुणा, असंज ता अणतगुणा, दार १२। एएसिण भंते ! जीवाण सागारोवउत्ताण अणागारोवउत्ताणय कयरे२ हितो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा अणागारोवउत्ता सागारोवउत्ता संखिज्जगुणा, दार १३। एए

तासयतने किहा २ थी थोडा घणा इत्यादि। गोयमा सव्वत्थोवा जीवा संजयासंजय असंखिज्जगुणा नोसंजय नो असंजय अणतगुणा नो संजयासंजय अणतगुणा असंजया अणतगुणा द्वार १२। हे गौतम सर्वथोडा जीव संयतासंयत कोडिसहस्स पुहुत्त मणुलोए संजयाणमिति वचनात् देशविरति असं ख्यातगुणा तिर्यंच पंचेंद्रिने थाय त्रय प्रतिषेधवर्त्ती सिद्ध अनन्तगुणा तेहथी असंयत अनन्तगुणा वनस्पतीकायमाटे तेहथी असंयत अभव्य अनन्तगुणा इति १२। एएसिण भंते जीवाण सव्वत्थोवा सागारोवउत्ता अणागारोवउत्ताणय कयरे २ हितो अप्पावा ४। हेभगवन् एह जीवने साकारोपयोगीने अनाकारोपयोगीने किहा २ थी थोडा घणा इत्यादि। गोयमा सव्वत्थोवा अणागारोवउत्ता सागारोवउत्ता संखिज्जगुणा द्वार। हेगौतम सर्वथोडा जी व अनाकारोपयोगी पृच्छासमये थोडालाभे तेहथी साकारोपयोगी संख्यातगुणा पृच्छासमय घणा लाभे। एएसिण भंते जीवाण आहारगाण अणाहा

प्य नन्तत्वात्, तेषाधा रारकतयापि लभ्यमानत्वात्, कथमनंतगुणा न भवति तदयुक्तं वस्तुतत्वापरिज्ञानात्' इह सूक्ष्मनिगोदा सर्वसङ्ख्या प्य सङ्ख्येया तत्रा प्यन्तर्मुहूर्त्तसमयराशितुल्या सूक्ष्मनिगोदा- सवकालविग्रहे वर्त्तमाना लभ्यन्ते ततो नाहारका अप्यतिबहव सकलजीवराश्यसङ्ख्येयभागतुल्या इति' तत्र आहारका असङ्ख्येयगुणा स्तेष नानन्तगुणा, गत माहारद्वार, अभाषकद्वार माह-एएसिण भते ! जीवाण भासगाण मित्यादि सवस्तोका भाषका भाषालब्धिसपन्ना द्वीन्द्रियादीना मेवभाषकत्वात्, अभाषका भाषालब्धिहीना अनन्तगुणा वनस्पतिकायिकाना मनन्तत्वात्' गत भाषकद्वार, सप्रति परीत्तद्वार माह-एएसिण भते ! जीवाए मित्यादि ॥ इह परीत्ता द्विविधा, भवपरीत्ता कायपरीत्ता श्च तत्र भवपरीत्ता

सिण भते ! जीवाणं आहारगाण अणाहारगाणय कयरे२ हिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा अणाहारगा आहारगा असंखिज्जगुणा, दार १४ । एएसिण भते ! जीवाण भासगाण अभासगाणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा भासगा अभासगा अणंतगुणा, दार १५ । एएसिण भते ! जीवाण परित्ताण अपरित्ताण नोपरित्ता नोअपरित्ताणय

रगाणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । हेभगवन् एह जीवने आहारीने किहा ? थोडा घणा इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा जीवा अणाहारगा आहारगा असंखिज्जगुणा । हेगौतम सर्वथोडा जीव अनाहारी विग्रहगति आहारनही तथा सिद्ध अनाहारी गाथा—विग्गहगइमावणा केवलिणोसमुहयाअयोगी य सिद्धायअणाहारा सेसाआहारगाजीवा इति वचनात तेहथी आहारीजीव असंख्यातगुणा हुवे अनन्तगुणा नही तेकिम सूक्ष्मनिगोद सर्वकाले विग्रहगति वर्त्तमानपामे तेमाटे अनाहारी घणा पिण सकलजीवराशि संख्यातभाग तुल्यछे तेमथी आहारकजीव संख्यातगुणा लाभे पिण अनाहारीथी अनन्तगुणा नलाभे ए आहारकद्वार १४ मो कह्यो । एएसिण भते भासगाण अभासगाणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४। हेभगवन् जीवाने भाषकाने वली अभाषकाने किहा २ थी थोडा घणा देव मनु तिर्यंच नारकी इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवाजीवा भासगा अभासगा अणंतगुणा दार १५ । हेगौतम सर्व

॥ टीका ॥

येषांकिंचिदूना ऽपार्द्धपुद्गलपरावर्त्तमानसंसार कायपरीता प्रत्येकशरीरिण तत्तत्नयेपिपरीता' सर्वस्तोका शुक्लपाक्षिकाणा प्रत्येकशरीरिणा च जी पजीवापेक्षया तिस्ताकत्वात्' ततो नोपरीता नोअपरीता अनन्तगुणा उभयप्रतिषेधवृत्ता हि सिद्धा स्तेचा नता इति तभ्यो ऽपरीत्ता अनन्तगुणा कृष्णपाक्षिकाणा साधारणवनस्पतीना वा सिद्धेभ्यो प्यनन्तगुणत्वात्, गत परीत्तद्वार । सम्प्रति पर्याप्तिद्वार-एएसिण भंते ! जीवाण पज्जत्तगाण मित्यादि ॥ सर्वस्तोका नोपर्याप्तका नोअपर्याप्तका उभयप्रतिषेधवर्तिनो हि सिद्धा स्तेचा पर्याप्तकादिभ्य सर्वस्तोका इति, तभ्यो ऽपर्याप्तका

॥ मूल ॥

कयरे कयरेहितो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा परित्ता नोपरित्ता नोअपरित्ता अणतगुणा अपरित्ता अणतगुणा, दार १६ । एएसिण भंते ! जीवाण पज्जत्ताण अपज्जत्ताण नोपज्जत्ता नोअपज्जत्ता णय कयरे कयरेहितो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा नोपज्जत्तगा नोअपज्जत्तगा अपज्जत्तगा

॥ भाषा ॥

थाडा जीवभाषक नाख्यिसम्पन्न बेंद्रयादिक तेहथी अभाषक अनन्तगुणा वनस्पती भेलता इति १५ भाषक समाप्त, हिव प्रत्येकद्वार कहेछे—एएसिण भंते जीवाण परित्ताण अपरित्ताण नोपरित्ता परित्ताणय कयर २ हिंतो अप्पावा ४ । हेभगवन एह जीव परित्त अपरित्त दोयभेदे भवपरित्ता काय परित्ता तिहां भवपरित्ता जेहने जणो अद्धपुद्गल कहिये कायपरित्ता प्रत्येकजीवना परित्ता अपरिता सिद्ध कहिये एहमाहि किहा २ थी थोडा घ णा इत्यादि सरीखा विशेषाधिक हुवे । गोयमा सव्वत्थ'वा जीवा परित्ता नोपरित्ता २ अणतगणा अपरित्ता अणतगुणा द्वार १६ । हेगोतम सर्वथोडा जीव शुक्लपक्षी प्रत्येकशरीर दोय प्रतिषेधवर्त्ती सिद्ध ते अनन्त तेहथी अपरित्ता अप्रत्येक अनन्तगुणा साधारण वनस्पता भेलता इति प्रत्येकद्वार १६ । एएसिण भंते जीवाण पज्जत्ताण अपज्जत्ताण नो पज्जत्ता २ णय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । हेभगवन् एह जीव पर्याप्ता अपर्याप्तानि दोय प्रतिषेधी सि द्धने अपर्याप्ता पर्याप्ता किहा २ थी थोडा घणा इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा जीवा नो पज्जत्तगा नो अपज्जत्तगा अपज्जत्तगा अणतगुणा पज्जत्तगा स खिज्जगुणा द्वार १७ । हेगोतम सर्वथोडा जीव उभयप्रतिषेधी सिद्धभणी सिद्धथोडा तेहथी अपर्याप्ता अनन्तगुणा साधारणवनस्पती भणी तेहथी सख्या

अनन्तगुणा साधारणवनस्पतिकायिकाना सिद्धेभ्योनन्तगुणाना सर्वकालमपर्याप्तत्वेन लभ्यमानत्वात्' तेभ्य पर्याप्ता सङ्ख्येयगुणा इह सर्वस्तवो जीवा सूक्ष्मा सूक्ष्माश्च सर्वकाल मपर्याप्तेभ्य पर्याप्ता सङ्ख्येयगुणा इति। सङ्ख्येयगुणाउक्ता गत पर्याप्तिद्वार १७। सम्प्रति सूक्ष्मद्वार-एएसिणा भंते ! जीवाण सुहुमाण मित्यादि ॥ सर्वस्तोका जीवा नोसूक्ष्मा नावादरा सिद्धाइत्यर्थ , तेषा सूक्ष्मजीवराशे र्वादरजीवराश श्चा नन्तभागकल्पत्वात्' तभ्यो बादरा अनन्तगुणा बादरनिगोदजीवाना सिद्धेभ्यो नन्तगुणात्वात्, तेभ्य सूक्ष्मा असङ्ख्यगुणा बादरनिगोदेभ्य सूक्ष्मनिगोदाना मसङ्ख्येयगुणत्वात्' गत सूक्ष्मद्वार १८। इदानी सञ्ज्ञिद्वार-एएसिणा भंते ! जीवाण सन्नीण मित्यादि॥ सर्वस्तोका सञ्ज्ञिन समनस्कानामेव सञ्ज्ञित्वात्, तेभ्यो नोसञ्ज्ञिनो नोऽसञ्ज्ञिनो ऽनन्तगुणा उभयप्रतिषेधवृत्ता हि सिद्धा स्तेच सञ्ज्ञिभ्यो ऽनन्तगुणा एवेति, तेभ्यो ऽसञ्ज्ञिनो ऽनन्तगुणा वनस्पतीना सिद्धे

अणतगुणा पज्जत्तगा सखेज्जगुणा । एएसिण भंते ! सुहुमाण बादराण नोसुहुमाण नोबादराणय कयरे २ हिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा नोसुहुमा नोबादरा, बादरा अणतगुणा सुहुमा असंखेज्जगुणा, दार १८। एएसिण भंते ! जीवाण सन्नीण असन्नीण नोसन्नीण नोअसन्नीणय कयरे कयरे हिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सन्नी नोसन्नी नोअसन्नी अणतगुणा , असन्नी अणतगुणा ।

तगुणा पर्याप्ता इति पर्याप्ताद्वार सपूर्ण हुआ, हिवे सूक्ष्मद्वार १८ मो कहेछे—एएसिण भंते सुहुमाण बायराण नो सुहुमाण नो बायराणय कयर २ हिंतो अप्पावा ४ । हेभगवन् एह सूक्ष्मबादरने उभयप्रतिषेधवर्त्ती सिद्धने किहा २ थी थोडा घणा इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा नो सुहुमा नो बायरा बायरा अणतगुणा सुहुमा असंखिज्जगुणा दार। हेगौतम सर्वथोडाजीव उभय प्रतिवर्त्ती सिद्धना जेभणी सूक्ष्मबादर जीवराशिने अनन्तमेभागे सिद्धछे ते हथी बादर अनन्तगुण निगोदिया तेहथी सूक्ष्मनिगोद असख्यातगुणाछे इति २ एह सूक्ष्मद्वार १८ मो कह्यो, हिवे सज्ञीद्वार कहेछे—एएसिण भंते जी वाण सन्नीण असन्नीण नो सन्नीणय नो असन्नीणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । हेभगवन् एह जीव सज्ञीअसज्ञीने नसज्ञी नअसज्ञी उभयवर्त्ती सिद्धने

भ्यो प्यनन्तगुणत्वात्, गत सप्रतिद्वार १९। इदानीं भवसिद्धिकद्वार माह-एएसिण भंते। जीवाण भवसिद्धियाण मित्यादि॥ सर्वस्तोका अभवसिद्धिका अभव्या जघन्ययुक्ता नन्तकपरिमाणत्वात्, उक्तं चा नुयोगद्वारेषु उक्कोसएपरित्ताण तरूवेपक्खित्तेजहन्नयजुत्ताण तयंतोऽभव सिद्धियावित्तियाचेवे ति, तेभ्यो नोभवसिद्धिका नोअभवसिद्धिका अनन्तगुणा यत उभयप्रतिषेधवृत्तय- सिद्धा स्तेषा ऽजघन्योत्कृष्टयुक्तानन्तकपरिमाणा इत्य नन्तगुणा, तेभ्यो भवसिद्धिका अनंतगुणा यतो भव्यनिगोदस्यै कस्या नन्तभागकल्पा सिद्धा भव्यजीवराशिनिगोदा या सङ्ख्या लोके इति, गत

दार १९। एएसिण भंते! जीवाण भवसिद्धियाण अभवसिद्धियाण नोभवसिद्धिया नोअभवसिद्धियाणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा! सव्वत्थोवा अभवसिद्धिया नोभवसिद्धिया, नोअभवसिद्धिया अणंतगुणा भवसिद्धिया अणंतगुणा, दार २०। एएसिण भंते! धम्मत्थिकाय अधम्मत्थिकाय आगास

किहां २ थी थोडा घणा इत्यादि। गोयमा सव्वत्थोवा जीवा सन्नी नोसन्नी नोअसन्नी अणंतगुणा असन्नी अणंतगुणा दार १९। हे गौतम सर्वथोडा जीव सन्नी मनना धणी नोसन्नी नोअसन्नी सिद्ध अनन्तगुणा उभयवर्ज्जी तेहथी असन्नी अनन्तगुणा इति सन्नीद्वार १९ नो पूरोथयो। एएसिण भंते जीवाण भवसिद्धिया अभवसिद्धियाण नो भवसिद्धिय नो अभवसिद्धियाणय कयरे २ हिंता अप्पावा ४। हे भगवन् जीवने भवसिद्धने अभवसिद्धने नहीं भवसिद्ध नहीं अभवसिद्ध उभयप्रतिषधवर्त्ती सिद्धने किहां २ थी थोडा घणा इत्यादि। गोयमा सव्वत्थोवा जीवा अभवसिद्धिया नोभवसिद्धिया नोअभवसिद्धिया अणंतगुणा भवसिद्धिया अणंतगुणा द्वार २०। हे गौतम सर्वथोडा अभव्य जघन्य युक्तानन्त प्रमाणछे तेहथी उभय प्रतिषेधी सिद्ध अनन्तगुणा जेभणी जघन्योत्कृष्ट युक्तानन्त प्रमाणछे तेमाटे अनन्ता तेहथी भव्यसिद्ध अनन्ता जेभणी भव्य एक निगोदने अनन्तमेंभागेछे इति भव्यसिद्धि, हिवे अस्तिकाय कहेछे—एएसिण भंते धम्मत्थिकाय अधम्मत्थिकाय आगासत्थिकाय जीवत्थिकाय पुग्गलत्थिकाय अद्धासमयाण दव्वट्ठाए कयरे २ हिंता अप्पावा ४। हे भगवन् एहने धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय जीवास्तिकाय पुद्गलास्तिकाय अद्धासमय ६ द्रव्यथी किहां २ थी थोडा घणा इत्यादि। गोय

प्रवसिद्धिकद्वार २० । साम्प्रत मस्तिकायद्वार माह-एएसिण भंते । धम्मत्थिकाये त्यादि ॥ धर्मास्तिकायो ऽधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय एते न यापि द्रव्यार्थतया द्रव्यमथवा यद्रव्याथ स्तस्यभावो द्रव्यार्थता तया द्रव्यरूपतया इत्यर्थ , तुल्या समाना प्रत्येक मेकसङ्ख्याकत्वा दतएव सर्वेस्तो का, स्तेभ्यो जीवास्तिकायो द्रव्यार्थतया नन्तगुण जीवाना प्रत्येक तद्द्रव्यस्त्वात्तथा च जीवास्तिकाये ऽनन्तत्वात्, तस्मादपि पुद्गलास्तिकायो द्रव्या र्थतया नन्तगुण कथ मितिचेत् उच्यते-इह परमाणु द्विप्रदेशकादीनि पृथक् २ द्रव्याणि तानि च सामान्यत स्त्रिधा तद्यथा-प्रयोगपरिणतानि मिश्रपरिणतानि विस्रसापरिणतानिच तत्र प्रयोगपरिणतान्यपि तावज्जीवेभ्यो ऽनन्तगुणानि एकैकस्य जीवस्या नंते प्रत्यक ज्ञानावरणीयादिकर्म सु पुद्गलस्कन्धे रावेष्टितत्वात् किंपुन शेषाणि तत प्रयोगपरिणतेभ्यो मिश्रपरिणतान्य नन्तगुणानि तेभ्यो पि विस्रसापरिणतान्य नन्तगुणानि,

---

त्थिकाय जीवत्थिकाय पुग्गलत्थिकाय अद्धासमयाण दव्वट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए आगासत्थिकाए एए तिन्निवि तुल्ला दव्वट्ठयाए सव्वत्थोवा जीवत्थिकाए दव्व ट्ठयाए अणंतगुणे, पुग्गलत्थिकाए दव्वट्ठयाए अणंतगुणे अद्धासमए दव्वट्ठयाए अणंतगुणे। एएसिण भंते! धम्मत्थिकाय अधम्मत्थिकाय आगासत्थिकाय जीवत्थिकाए पोग्गलत्थिकाए अद्धासमयाण पदेसट्ठयाए

साधम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए आगासत्थिकाए एएण तिणवितुल्ला दव्वट्ठयाए । हेगौतम धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय ए ३ द्रव्यार्थपणे द्रव्यरूपपणे २ २ सरीखाछे असंख्यातपणामाटे । सव्वथोवा जीवत्थिकाए दव्वट्ठयाए अणंतगणा पुग्गलत्थिकाए दव्वट्ठयाए अणंतगणे अद्धासमए दव्वट्ठ याए अणंतगुणे। सर्वथोडाजीव जीवास्तिकाय द्रव्यथी अनन्तगणा हुवे जीवास्तिकायथी पुद्गलास्तिकाय द्रव्यार्थपणे अनन्तगुणा तेमाटे पुद्गलना ३ भेदकह्या प्रयोगपरिणित मिश्रपरिणित विस्रसापरिणित ३ तिहां जे प्रयोगपरिणत ते जीवथी अनन्तगुणाछे जिमारे एकजीवने अनन्त ज्ञानावरणा दिक पुद्गल स्कन्ध आवेष्टितछे ते प्रयोगपरिणतथकी मिश्रप० अनन्तगुणा तेहथी विस्रसा परिणत अनन्तगुणा एतलेथ- प्रश्नो सर्वथोडा पुद्गल प्रयो

तथा चोक्त प्रज्ञप्तौ सव्वत्थोवा पुग्गलापयोगपरिणया मीसपरिणया अनन्तगुणा वीससापरिणया अनन्तगुणा इति । ततो भवति जीवास्तिकायात् पुद्गलास्तिकायो द्रव्यार्थतया अनन्तगुण , तस्मादप्य द्धासमयो द्रव्यतया अनन्तगुण कथ मितिचत् उच्यते–इहै कस्यैवपरमाणो रनागतेकाले तत्तद्दि प्रदेशकत्रिप्रदेशकयाव द्दशप्रदेशक सख्यातप्रदेशका ऽसख्यातप्रदेशका ऽनन्तप्रदेशकस्कन्धान्त परिणामितया अनन्ता भाविन सयोगा पृथक्२ काला केवलवेदोपलब्धा यथा चैकस्य परमाणो स्तथा सर्वेषा प्रत्येक द्विप्रदशकादिस्कन्धाना च अनन्ता सयोगा पुरस्कृता पृथक् २ कालाउपलब्धा स सर्वेषामपि मनुष्यक्षेत्रान्तवर्त्तितया परिणामसम्भवात्, तथा क्षेत्रतो प्यय परमाणु रमुष्मिन् आकाशप्रदेशे अमुष्मिन्काले अवगाहिष्यते इत्येव मन ता एकस्य परमाणो र्भाविन सयोगा यथै कस्य परमाणो स्तथा सर्वेषा परमाणूना तथा द्विप्रदेशकादीनामपि स्कन्धाना मनन्तप्रदेशस्कन्धपर्यंता ना प्रत्येक तत्तदेकप्रदेशाद्यवगाहभेदतो भिन्न २ काला अनता भाविन सयोगा स्तथा कालतो प्यय परमाणु रमुष्मिन्ना काशप्रदेशो एकसमयस्थि

कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ गोयमा ! धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए एएसिण दोवि तुल्ला पदेसठयाए स व्वत्थोवा जीवत्थिकाए पदेसठयाए अणतगुणा पोग्गलत्थिकाए पदेसठाए अणतगुणा अद्धासमए पदेसठ

गपरिणता अपरिणता अनन्तगुणायो ससापरिणया अनन्तगणा इति, एक परमाणु अनन्ताकालेके तिवतु पच दस सख्यात अनन्त प्रदेशस्कन्ध परमाणुमते अनन्तभावा सयोगकेवलि ए दीठा इम सर्व मनुष्यक्षेत्र पुद्गल जे अनन्तप्रदेशाखन्ध असत भावीसयोग पूर्व अनन्तकाल सयोग इम इत्यादिक सगले जाणिवो द्रव्यथकी अल्प बहुत्व कह्यो, हिवे प्रदेशथी अल्प बहुत्व कहेछे। एएसिण भते धम्मत्थिकाय अधम्मत्थिकाय आगासत्थिकाय जीवत्थिकाय पगलत्थिकाय अद्धासमयाण एए पएसठ्ठाए कयरे २ हितो अप्पावा ४। हेभगवन् एह धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय जीवास्तिकाय पुद्गलास्तिकाय अद्धासमय प्रदेशार्थे किहा २ थी थाडा घणा इत्यादि। गायमा धम्मत्थिकाय अधम्मत्थिकाय एएण ट पहवितमा। हेगौतम धर्मास्तिका य अधर्मास्तिकाय ए दोय सरीखाछे। पदेसठ्ठाए सव्वत्थोवा जीवत्थिकाए पएसठ्ठ याए अनन्तगुणे पुग्गलत्थिकाए पएसठ्ठाए अणतगुण अद्धासमए प

तिक इत्येव मेकस्यापि परमाणो रेकस्मिन्नाकाशप्रदेशे सख्येया भाविन संयोगा एव सर्वेष्वप्या काशप्रदेशेषु प्रत्येकमसख्येया भाविन सयोगा स्त तो भूयोभूय स्तथाकाशप्रदेशेषु परावृत्तो कालस्या नन्तत्वा दनन्ता कालतो भाविन सयोगा यथा चैकस्यपरिमाणो स्तथा सर्वेषा परमाणूना स र्वेषा च प्रत्येक द्विप्रदेशकादीना स्कन्धाना, तथा भावतो प्य य परमाणुरमुष्मिन्काले एकगुणकालको भवती त्येव मेकस्यापि परमाणो भिन्न २ काला ग्रनतो सयोगा, यथा चैकस्यपरमाणो स्तथा परमाणूना सर्वेषाच द्विप्रदेशकादीना स्कन्धाना पृथक् २ अनन्ता भावत पुरस्कृता सयोगा तदेव मेकस्यापि परमाणो द्रव्यक्षेत्रकालभावविशेषसबधजा दनन्ता भाविन समयाउपलब्धा, यथैकस्य परमाणो स्तथा सर्वेषा परमाणूना सर्वे षाञ्च प्रत्येक द्विप्रदेशकाना स्कन्धाना नचै तत्परिणामकालवस्तुव्यतिरेकपरिणामिपुद्गलास्तिकायादि व्यतिरेके चोपपद्यन्ते तत सर्वमिद च तात्वि क मवसेय । उक्तच-सयागपुरक्खार श्च नाम भाविनि हि युज्यते कालेन हि सयोगपुरक्खारो ह्यसता केषाचि दुपपन्न इति। यथा च सर्वेषा पर

याए ग्रणतगुणा ग्रागासत्थिकाए पदेसठाए ग्रणतगुणा । एएसिण भते ! धम्मत्थिकायस्स दव्वठयाए पदेसठयाए कयरे कयरेहिंतो ग्रप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा एगे धम्मत्थिकाए दव्वठयाए सोचेव पदेसठयाए ग्रसखिज्जगुणा । एएसिण भते ! ग्रधम्मत्थिकायस्स दव्वठयपदे

एसट्टयाए अणतगुणे ग्रागासत्थिकाए पएसट्टयाए अणतगुणे। प्रदेशथकी लोकाकाशप्रदेश परिमान सर्वथोडा जीवास्तिकायप्रदेशार्थ अनन्तगुणा जी वना अनन्ता सारे एकेका जीवनाप्रदेश लोकाकाशप्रदेश प्रमाणछे पुद्गलास्तिकायप्रदेशार्थं अनन्तगुणा अनन्ताकर्मना परमाणु वाराविंटितछे एकेका जी वनाप्रदेश तेमाटे अनन्ता पद्गलास्तिकाय हुवे श्रद्धासमय प्रदेशार्थ अनन्तगुणा हुवे श्राकाशास्तिकाय अनन्ताछे, हिवे द्रव्यार्थ प्रदेशार्थआश्रयी परस्परे अल्प बहुत्व कहेछे—आकाशास्तिकाय प्रदेशथी अनन्तगुणा अनन्तता अनन्ताभावथी तेहथी श्रद्धासमय अनन्तगुणाप्रदेशथी अनन्ता अनागतसमयमें भा व तेहथी श्रद्धासमया अनन्तगुणा। एएसिण भंते धम्मत्थिकायस्स दव्वट्ट पएसट्टयाए कयरे २ हिंतो अप्पावा ४। हेभगवन् एह धर्मास्तिकायादिकने

माणूना च द्विप्रदेशकादीना स्कन्धाना प्रत्येक द्रव्यक्षेत्रकालभावविशेषसंबन्धवशा दनन्ताभाविनो द्धासमया स्तथा अतीता अपीति सिद्ध पुद्गलास्तिकायाद नन्तगुणो द्धासमयो द्रव्यार्थतयेति । उक्त-द्रव्यार्थतया परस्पर मल्पबहुत्व मिदानी मेतेषामेव प्रदेशार्थतया तदाह-एएसिण भंते । ध म्मत्थिकाय त्यादि ॥ धर्मास्तिकायो ऽधर्मास्तिकाय एतौ द्वावपि परस्पर प्रदेशार्थतया तुल्या बुभयोरपि लोकाकाशप्रदेशत्वात्, आकाशास्तिकाया ऽद्धासमयापेक्षया च सर्वस्तोकौ ततो जीवास्तिकाय प्रदेशार्थतया अनन्तगुण , जीवास्तिकाये जीवाना मनन्तत्वात्, एकैकस्यच जीवस्य लोकाकाशप्रदेशपरिमाणप्रदेशत्वात्, तस्मादपि पुद्गलास्तिकाय प्रदेशार्थतया अनन्तगुण कथ मिति उच्यते-इहकमस्कन्धप्रदेशा अपि तावत्सर्वजीवप्रदेशेभ्यो ऽनन्तगुणा एकैकस्यच जीवप्रदेशस्या नन्तानन्तै कर्मपरिमाणुभि रावेष्टितपरिवेष्टितत्वात्, किंपुन सकलपुद्गलास्तिकायप्रदेशा ततो भवति जीवास्तिकाया त्पुद्गलास्तिकाय प्रदेशार्थतया अनन्तगुण , तस्मादप्य द्धासमय प्रदेशार्थतया अनंतगुण एकैकस्य पुद्गलास्तिकायप्रदेशस्य प्रागुक्तक्रमेण तत्तद्द्रव्यक्षेत्रकालभावविशेष संबन्धभावतो ऽनन्ताना मतीताद्धासमयाना मनन्ताना मनागतसमयाना भावात्, तस्मा दाकाशास्तिकायप्रदेशार्थतया

सठयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा । सव्वत्थोवे एगे अधम्मत्थिकाए दव्वठयाए सोचेव पदे सठयाए असंखिज्जगुणे। एतस्सण भंते। आगासत्थिकायस्स दव्वठपदेसठयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४

द्रव्यप्रदेशना श्रर्थो जोवता किहा २ थी थोडा घणा इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा धम्मत्थिकाए दव्वट्ठयाए सोचेव पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा । हेगोतम सर्वथोडा धर्मास्तिकाय द्रव्यथको एकमाटे ते धर्मास्तिकाय प्रदेशथको असंख्यातगुणा लोकाकाश । एयस्सण भंते अधम्मत्थिकायस्स दव्वट्ठपएसट्ठया० कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । हेभगवन एहने अधर्मास्तिकाय द्रव्यथी प्रदेशथी किहा २ थी अल्प घणा इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा एगे अधम्मत्थिकाए दव्वट्ठयाए सोचेवपएसट्ठयाए असंखिज्जगुणे। हेगोतम सर्वथोडा एक अधर्मास्तिकाय द्रव्यथी एकमाटे अधर्मास्तिकाय प्रदेशथी असंख्यातगुणा लोकाकाश प्रदेशप्रमाणछे। एएसिण भंते आगासत्थिकायस्स दव्वट्ठ पएसट्ठयाए कयरे २ हिंतो अप्पावा। हेभगवन् एह आकाशास्तिकायने द्रव्यथी प्रदेशथी कि

अनन्तगुण अलोकस्य सर्वतोप्यनन्ततामावात्, गत प्रदेशार्थतया प्यल्पबहुत्व, मिदानी प्रत्येक द्रव्यार्थप्रदेशार्थतया ल्पबहुत्व माह-एएसिण भंते। इत्यादि ॥ सर्वस्तोकोधर्मास्तिकायो द्रव्यार्थतया एकत्वात् प्रदेशार्थतया असंख्येयगुणो लोकाकाशप्रदेशपरिमाणप्रदेशात्मकत्वा देव मधर्मास्तिकायम् प्रमपि भावनीय, आकाशास्तिकायो द्रव्यार्थतया सर्वस्तोक एकत्वात् प्रदेशार्थतया अनंतगुणो ऽपरिमितत्वात्, जीवास्तिकायो द्रव्यार्थतया सर्वस्तोक प्रदेशार्थतया असंख्येयगुण प्रतिजीव लोकाकाशप्रदेशभावात्, तथा सर्वस्तोक पुद्गलास्तिकायो द्रव्यार्थतया द्रव्याणा सर्वत्रापि स्तोकत्वात्, सएव पुद्गलास्तिकाय स्तद्द्रव्यापेक्षया प्रदेशार्थतया चित्यमानो ऽसंख्येयगुण, ननु बहव खलु जगत्यनंतप्रदेशका अपि स्कन्धा विद्यन्ते। ततो ऽनंतगुणा कस्मा न्नभवति तदयुक्त-वस्तुतत्वापरिज्ञाना दिह हि स्वल्पा अनंतप्रदेशका स्कन्धा परिमाणवाद्यस्त्वतिबहव, तथा वक्ष्यति सूत्र-सवृत्यो

? गोयमा ! सव्वत्थोवे एगे आगासत्थिकाए दव्वठ्याए सोचेव पदेसठ्याए अणंतगुणा, एतस्सण भंते ! जीवत्थिकायस्स दव्वठपदेसठ्याए कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवे जीवत्थिकाए दव्वठ्याए सोचेव पदेसठ्याए असंखिज्जगुणा, एतस्सण भंते ! पुग्गलत्थिकायस्स दव्वठपदेसठ्याए कयरे २

हा २ थी थोडा घणा इत्यादि। गोयमा सव्वत्थोवे एगे आगासत्थिकाए दव्वठ्याए सोचेव पएसठ्याए अणंतगुणे। हेगौतम सर्वथोडा आकाशास्तिकाय द्रव्य एकमाटे आकाशास्तिकाय प्रदेशथी अनंतगुणे अपरिमितमाटे। एएसिणं भंते जीवत्थिकायस्स दव्वठ्याए पएसठ्याए कयरे २ हिंतो अप्पावा ४। हेभगवन् एहने जीवास्तिकाय द्रव्यथी प्रदेशथी किहा २ थी थोडा छे। गोयमा सव्वत्थोवे जीवत्थिकाए दव्वठ्याए सोचेव पएसठ्याए असंखिज्जगुणे। हेगौतम सर्वथोडा जीवास्तिकाय द्रव्यथी ते जीवास्तिकाय प्रदेशथी अनन्तगुणा प्रतिजीव ते लोकाकाश प्रदेशप्रमाण प्रदेशछे। एएसिणं भंते पुग्गलत्थिकायस्स दव्वठ पएसठ्याए कयरे २ हिंतो अप्पावा ४। हेभगवन् एह पुद्गलास्तिकाय द्रव्यथी प्रदेशथी किहा २ थी थोडा घणा इत्यादि। गोयमा सव्वत्थोवे पुग्गलत्थिकाए दव्वठ्याए सोचेव पएसठ्याए असंखिज्जगुणे भवासमए न पुच्छिज्जा पएसाभावा। हेगौतम सर्वथीथोडा पुद्गलास्तिकाय द्रव्यथी

॥ टीका ॥

वा अणतपज्जवियाएवा दव्वट्ठयाए परिमाणुपोग्गला दव्वट्ठयाए अनंतगुणा संखेज्जपएसिया एवा दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा असंखेज्जपएसिया एवा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा इति । ततो यदा सर्व एव पुद्गलास्तिकाया प्रदेशार्थतया चिन्त्यते तदा अनन्तप्रदेशकाना स्कन्धाना मतिस्तोकत्वा त्परमाणूना चा तिबहुत्वा तेषाच पृथक् २ द्रव्यत्वात् असंख्येयप्रदेशकाना च स्कन्धाना परमाण्वपेक्षया असंख्येयगुणत्वा दसंख्येयगुणा एवो पपद्यते नानन्तगुणा अद्धासमय न पुच्छिज्जइति । अद्धासमयो द्रव्यार्थप्रदेशार्थतया नपृच्छ्यते कुत इत्याह-प्रदेशाभावात्, आह को य मद्धासमयाना द्रव्यार्थतानियमो यावता प्रदेशार्थता पि तथा विद्यते एव तथाहि-यथा अनन्ताना परमाणूना समुदायस्कन्धो भण्यते स च द्रव्य तदवयवा श्च प्रदेशा स्तथे हापि सकल कालो द्रव्य तदवयवाश्च समया प्रदेशा इति । तदयुक्त दृष्टान्तदार्ष्टान्तिकवैषम्या त्परमाणूना समुदाय तदा स्कन्धो भवति यदा ते परस्परसापेक्षतया परिणमते परस्परनिरपेक्षाणा केवलपरमाणूनामिव स्कन्धत्वायोगात्, अद्धासमयास्तु परस्परनिरपेक्षाएव वर्त्तमानसमयभावे पूर्वापरसमययो रभावात्, ततो नस्कन्धत्वपरिणाम स्तदभावा च ना द्धासमया प्रदेशा किंतु पृथक्द्रव्याण्येवेति सम्प्रत्यमीषा धर्मास्तिकायादीना सर्वेषा युगपद्द्रव्यार्थप्रदेशार्थतया ल्पबहुत्व माह-एएसिण भंते ! इत्यादि ॥ धर्मास्तिकायो ऽधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय

॥ मूल ॥

हितो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पुग्गलत्थिकाए दव्वट्ठयाए सोचेव पदेसट्ठयाए असंखिज्जगुणा अद्धासमए ण पुच्छिज्जइ पदेसाभावा । एएसिण भंते ! धम्मत्थिकाय अधम्मत्थिकाय आगासत्थिकाय जीव

॥ भाषा ॥

द्रव्यपणे सघले थोडा माटे तेथी पद्गलथी प्रदेशद्रव्य सुचिन्तवना असंख्यातगणा हुवे तेकिम परमाणुवा घणा अनन्तप्रदेशिक स्कन्धना थोडा माटे असंख्यातप्रदेशस्कन्ध संख्यातपणामाटे असंख्यातगणा हुवे पिण अनन्तानन्तगण न जपजे द्रव्यार्थमय द्रव्यार्थ प्रदेशार्थथकी न पूछिये प्रदेश अभावछे जेमाटे अनन्ता परमाणुवाने स्कन्धकहिये ते द्रव्य तेहना अवयव ते प्रदेश कहिये ते अद्धासमय स्कन्धनो अयोगछे तमाटे द्रव्यप्रदेशानो विशेष नथी, हिव द्रव्यथी धर्मास्तिकायादिकना द्रव्यथी प्रदेशनो एकठीज अल्प बहुत्व कहेछे—एएसिण भंते धम्मत्थिकाय अधम्मत्थिकाय आगासत्थिकाय जीवत्थिकाय पुग्गल

॥ टी ॥

एते त्रयोपि द्रव्यार्थतया तुल्या सर्वस्तोकाश्च प्रत्येकमेकसंख्याकत्वात् ३ । तेभ्यो धर्मास्तिकायो ऽधर्मास्तिकाय एतौ द्वावपि प्रदेशार्थतया ऽसंख्येयगुणौ स्वस्थानेतु परस्परं तुल्यौ ताभ्यां जीवास्तिकायो द्रव्यार्थतया अनंतगुण अनंतानां जीवद्रव्याणां भावात् ६, सएव जीवास्तिकायः प्रदेशार्थतया असंख्येयगुणः प्रतिजीवमसंख्येयानां प्रदेशानां भावात् ७ । तस्मादपि प्रदेशार्थतया जीवास्तिकायात्पुद्गलास्तिकायो द्रव्यार्थतया अनंतगुणः प्रतिजीवप्रदेशं ज्ञानावरणीयादिकर्मपुद्गलस्कन्धानामप्यनंतानां भावात् ८ । स एव पुद्गलास्तिकायः प्रदेशार्थतया असंख्येयगुणः अत्र भावना प्रागिव ९ । तस्मादपि प्रदेशार्थतया पुद्गलास्तिकायात् अद्धासमयो द्रव्यार्थतया अनंतगुणः अत्रापि भावना प्रागिव १० । तस्मादप्याकाशास्तिकायः प्रदेशार्थतया अनंतगुणः सर्वास्वपि दिक्षुविदिक्षु तस्यात्तभावात्, अद्धासमयस्य च मनुष्यक्षेत्रमात्रभावात् ११, गतमस्तिकाय, मिदानीं चरमद्वार

॥ सू ॥

त्थिकाय पोग्गलत्थिकाय ऋद्धासमयाण दव्वठयाए पदेसठयाए कयरे कयरेहिंतो ऋप्पावा४ ? गोयमा ! धम्मत्थिकाए ऋधम्मत्थिकाए ऋागासत्थिकाएय एएणं तिन्निवि तुल्ला, दव्वठयाए सव्वत्थोवा धम्मत्थिकाए

॥ भा ॥

त्थिकाय अद्धासमयाण दव्वठ्ठयाए पएसठ्ठयाए कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । हेभगवन् ए धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकायने जीवास्तिकायने पुद्गलास्तिकायने अद्धासमयने द्रव्यप्रदेशथी किहा २ थी थोडाछे । गोयमा धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए आगासत्थिकाए एए तिन्निवितुल्ला दव्वठ्ठयाए सव्वत्थोवे पएसठ्ठयाए धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए दव्वठ्ठयाए अणंतगुणे सोचेव पएसठ्ठयाए असंखिज्जगुणे । हेगौतम धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय ए ३ ने द्रव्यथकी सरीखाछे सर्वथोडाछे प्रत्येके २ असंख्याताछे द्रव्यथी सरीखा हुवे प्रदेशथी सर्वथोडाछे धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय ए दोय सरीखास्थानके द्रव्यथी असंख्यातगुणे प्रदेश अधिकाछे तेह जीवास्तिकायप्रदेशथी असंख्यातगुणा द्रव्यप्रदेशछे तेमाटे पुद्गलास्तिकाय द्रव्यथी अनंतगुणा ते पुद्गलास्तिकायप्रदेशथी असंख्यातगुणा । अद्धासमए दव्वठ्ठपएसठ्ठयाए अणंतगुणे आगासत्थिकाए पएसठ्ठयाए अणंतगुणे द्वार । अद्धासमय द्रव्यप्रदेशथी अनंतगुणा आकाशास्तिकाय प्रदेशथकी अनंतगुणा सर्वादिशि विदिशने अंतछे इति २१ मो अस्तिद्वार २ पदे पूरोथयो

॥ टीका ॥

माह-एएसिण भंते । जीवाण चरिमाण मित्यादि ॥ इह येषां चरिमोभव सम्भवी योग्यतयापि ते चरमा उच्यन्ते-तेषां यांद्रूप्या इतरे ऽचरमा अभव्या सिद्धा श्च उभयेषामपि चरमाचरमभवाभावात्, तत्र सर्वस्तोका अचरमा अभव्यानां सिद्धानां च समुदितानाम जघन्योत्कृष्टयुक्तानंतक परिमाणत्वात्, तेभ्यो ऽनंतगुणा चरमा अजघन्योत्कृष्टानंतानंतकपरिमाणत्वात्, गतं चरमद्वार, मधुनाजीवद्वार माह-एएसिण भंते । जीवाण पोग्गलाण मित्यादि ॥ सर्वस्तोका जीवा स्तेभ्य पुद्गला अनंतगुणा २ तेभ्यो ऽद्धासमया अनंतगुणा अत्रभावना प्रागेवकृता ३ तेभ्यो ऽद्धासमये भ्य सर्वद्रव्याणिविशेषाधिकानि कथ मितिचेत् उच्यते-इह येषां अनंतरमद्धासमया पुद्गलेभ्यो ऽनन्तगुणा उक्ता स्तेप्रत्येक द्रव्याणि ततो द्रव्यचिं तायां तेपिपरिगृह्यते तेषुच मध्ये सर्वजीवद्रव्याणि सर्वपुद्गलद्रव्याणि धर्माधर्माकाशास्तिकायद्रव्याणि च प्रक्षिप्यते तानिच समुदितान्यप्य द्धासम यानां मनंतभागकल्पानी ति तेषु प्रक्षिप्तेष्वपि मनागधिकत्व जात मित्यद्धासमयेभ्य सर्वद्रव्याणि विशेषाधिकानि ४। तेभ्य सर्वप्रदेशा अनंतगुणा आ काशानंतत्वात् ५ तेभ्य सर्वपर्यवा अनंतगुणा एकैकस्मिन्नाकाशप्रदेशे ऽनन्तानां मगुरुलघुपर्यायाणां भावात् ६ गतं जीवद्वार, मधुनाक्षेत्रद्वारमाह-

॥ मूल ॥

अधम्मत्थिकाएय एएण दोन्निवितुल्ला पदेसठयाए असंखेज्जगुणा, जीवत्थिकाए दव्वठयाए अणंतगुणे सो चेव पदेसठयाए असंखिज्जगुणे पोग्गलत्थिकाए दव्वठयाए अणंतगुणे सोचेव पएसठयाए असंखेज्जगुणे

॥ भाषा ॥

हिवे चरमद्वार कहेछे—एएसिण भंते जीवाण चरमाण अचरमाणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । हेभगवन् एह चरमभव जेहने ते चरम ते भव्यकहिये अचरम ते अभव्य ते सिद्धने कहिये किहा २ थी थोडा २ हुवे । गोयमा सव्वत्थोवा जीवा अचरमाचरमा अणतगुणा द्वार । हेगौतम सर्वं थोडा सिद्धछे अनें जघन्योत्कृष्ट युक्तानंत परमाणछे चरमभव्य अनंतगुणा जघन्योत्कृष्ट युक्तानंत प्रमाणवती इति चरम तीसरे पदे २२ मो द्वार पूरो हुवो । हिवे जीवद्वार कहेछे—एएसिण भंते जीवाण पुग्गलाण । हे भगवन् एह जीवारा पुद्गलानें । अद्धासमयाणं सव्वदव्वाण सव्वपएसाण । अद्धासमयछे सर्वपर्याय नें सर्वद्रव्यनें सर्वप्रदेशानें । सव्वपज्जवाणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । केहा २ थी अल्प बहु इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा जीवा पुग्गला अणतगुणा ।

खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा जीवा उड्ढलोयतिरियलोए इत्यादि॥ क्षेत्रस्यानुपातो नुसारःक्षेत्रानुपात स्तेन विचिंत्यमाना जीवा सर्वस्तोका ऊर्द्धलोकति
र्यग्लोके इह ऊर्द्धलोकस्य यदधस्तन माकाशप्रदेशप्रतर यच्च सर्वतिर्यग्लोकस्य सर्वोपरितनमाकाशप्रदेशप्रतर मेपऊर्द्धलोकप्रतर स्तथा प्रवचने
प्रसिद्धे तत्र च मत्र भावना इहसामस्त्येन चतुर्दशरज्ज्वात्मकोलोक सच त्रिधा भिद्यते तद्यथा-ऊर्द्धलोक तिर्यग्लोकोऽधोलोक श्च रुचका द्वतेषां
विभाग स्तथा हि रुचकस्या धस्ता न्नवयोजनशतानि रुचकस्योपरिष्टा न्नवयोजनशतानि तिर्यग्लोकस्तिर्यग्लोकस्याधस्तादधोलोक उपरिष्टा दूर्द्ध
लोको देशोनसप्तरज्जुप्रमाण ऊर्द्धलोक समधिकसप्तरज्जुप्रमाणो ऽधोलोको मध्येष्टादशयोजनशतोच्छ्रय स्तिर्यग्लोक स्तत्र रुचकसमा द्भूतलभागा
न्नवयोजनशतानि गत्वा य ज्ज्योतिश्चक्रस्योपरितन तिर्यग्लोकस्यधि यकप्रदेशिक माकाशप्रतर त त्तिर्यग्लोकप्रतर तस्य चो परियदेकप्रदेशिकमा

अद्धासमए दव्वट्ठपदेसट्ठयाए अणंतगुणे आगासत्थिकाए पदेसट्ठयाए अणंतगुणा दारं २१। एएसिणं भंते! जीवाणं चरिमाण अचरिमाणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा! सव्वत्थोवा जीवा अचरिमा चरिमा अणंतगुणा दारं २२। एएसिणं भंते! जीवाणं पोग्गलाणं अद्धासमयाणं सव्वदव्वाणं सव्वपएसाणं

हेगोतम सर्व थोडा जीवछे तेहथी पुद्गल अनंतगुणा इहां भावना पाछली परें तेहथी अद्धासमय अनंतगुणा सर्व पुद्गलद्रव्य धर्मास्तिकायादिक वाले ते
हथकी सर्व द्रव्य विशेषाधिक कह्यो। अद्धासमया अणंतगुणा सव्वदव्वा विसेसाहिया सव्वपएसा अनंतगुणा सव्वपज्जवा अणंतगुणा दार। तेहथकी-सर्व
द्रव्यविशेषगुणा आकाश अलोकादि अनंतवती तेहथी सर्वपर्याय अनंतगुणा एकेकआकाशप्रदेश अनंताअगुरुलघुपर्यायगुणा विशेषछे एतले जीवद्वार कह्यो
इति २२ मो द्वार तीजे पदे समाप्त हुवो। हिवे क्षेत्रद्वार कहेछे—खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा जीवा उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोए तिरियलोए तिरि
यलोए अपतिक्षोए असंखिज्जगुणा उड्ढलोए असं० अहोलोए विसेसाहियावाखित्ताणुवाएणं। आयोनोता जे जीव मरणांत ग्रेत समुद्घातकीतला ने
प्रतरनूर्द्ध मध्य रह्याकेवनोकवायो नोचाउपजने इहां भनेरा सर्वथोडाजीव ऊर्द्धलोकतिर्यक्लोके जे आठरिसेंयोजन तिर्यक्लोकतेहनो ऊपरलोप्रदेशोन

॥ टीका ॥

काशप्रतरं तदूर्द्ध्वलोकप्रतरं मतेच द्वे अप्यूर्द्ध्वलोकतिर्यग्लोकइति व्यवह्रियते, तथा ऽनादिप्रवचनपरिज्ञाषा प्रसिद्धे तत्रवर्त्तमानाजीवा सर्वस्तोका कथमितिचेत् उच्यते-इहये ऊर्द्ध्वलोका त्तिर्यग्लोक तिर्यग्लोका दूर्द्ध्वलोक समुत्पद्यमाना विवक्षित प्रतरद्वय स्पृशन्ति ये च तत्रस्था एव कचन त त्प्रतरद्वयाध्यासिनो वर्त्तते तकिल विवक्षिते प्रतरद्वये वर्त्तते, नान्ये येपुन रूर्द्ध्वलोका दधोलोके समुत्पद्यमाना स्तत्प्रतरद्वय स्पृशन्ति त नगण्यते, तेषां सूत्रान्तरविषयत्वात्, तत स्तोकाएवा ऽधिकृतप्रतरद्वयवर्त्तिनो जीवा ननु द्वुलोकगतानामपि सर्वजीवानाम ऽसङ्ख्येयजागो ऽनवरत म्रियमा णानाम्, तथाहि यद्यपि ऊर्द्ध्वलोकगतानां सर्वजीवलोकानाम ऽसङ्ख्येयोजागो नवरत म्रियमाणोवाप्यते तथापि न ते सर्वव तिर्यग्लोके स मुत्पद्यते... ततो ऽधिकृतप्रतरद्वयवर्त्तिन सर्वस्तोका एव १ तेभ्यो ऽधोलोकतिर्यग्लोके विशेषाधि का ... आकाशप्रदेशप्रतरं यच तिर्यग्लोकस्य सर्वाधस्तनमेकप्रादेशिक माकाशप्रदेशप्रतर मेतद्द्वय मध ऽ धोलोकतिर्यग्लोक इत्युच्यते, तत्र ... तत्रस्थतया वा वर्त्तते तेविशेषाधिका कथ मितिचेत् उच्यते-इह ये अधो

॥ मूल ॥

सङ्घ्पज्जमाणय ... गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा पोग्गला अणंतगुणा अद्धास मया अणंतगुणा सव्वदव्वा विसेसाहिया सव्वपएसा अणंतगुणा सव्वपज्जवा अणंतगुणा दार २३ । खित्ता

॥ भाषा ॥

[illegible]

-लोका तिर्यग्लोके तिर्यग्लोकाद्वा ऽधोलोके ईलिकागत्या समुत्पद्यमाना अधिकृतं प्रतरद्वय स्पृशन्ति येच तत्रस्थाएव केचन तत्प्रतरद्वयम ऽध्यासीना वर्त्तते तेविवक्षितप्रतरद्वयवर्त्तिनो येपुन रधोलोका दूर्द्ध्वलोके समुत्पद्यमाना स्तत्प्रतरद्वय स्पृशन्ति ते न परिगृह्यन्ते तेषा सूत्रातर्गविषयत्वात्, केवल मूर्द्ध्वलोका दधोलोको विशेषाधिक इत्यधोलोका तिर्यग्लोके ईलिकागत्या समुत्पद्यमाना ऊर्द्ध्वलोकापेक्षया विशेषाधिका अवाप्यते ततो विशेषाधिका २। तेभ्य स्तिर्यग्लोकवर्त्तिनो ऽसख्येयगुणा, उक्तक्षेत्रद्विका त्तिर्यग्लोके क्षेत्रस्यासख्येयगुणत्वात्, ३। तेभ्य स्त्रैलोक्ये त्रिलोकसस्पर्शिनो ऽसख्येयगुणा' इह ये केवलेऊर्द्ध्वलोके अधोलोके तिर्यग्लोके वा वर्त्तते येचविग्रहगत्या ऊर्द्ध्वलोकतिर्यग्लोकौ स्पृशन्ति ते नगण्यते किंतु ये विग्रहगत्यापन्ना स्त्रीनपिलोकान् स्पृशन्ति ते परिगृह्यामूत्रस्यविशेषविषयत्वात्, तेचतिर्यग्लोकवर्त्तिभ्यो ऽसख्येयगुणाएव कथ मितिचेत् उच्यते-

णुवाएणं सव्वत्थोवा जीवा उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोय तिरियलोए विसेसाहिया तिरियलोए असखिज्जगुणा तेलुक्के असखेज्जगुणा उड्ढलोए असखेज्जगुणा अहोलोए विसेसाहिया, खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा

रुचिक सम भूतथकी नवसेंयोजनऊंचें तिहा ज्योतिषचक्र उपरितिर्यक्लोकसर्वाएकप्रदेशोआकाशप्रतर तिर्यक्लोकप्रतर उपरिजे एकदेशनो आकाशप्रतर ऊर्द्धलोक तिर्यक्लोक कहिये ऊर्द्धलोक तिर्यक्लोकें विशेषाधिक तिहा जे विग्रहगतिवर्त्तेछे ते विशेषाधिककिमजे अधोलोक तिर्यक्लोक अधोलोकप्रतरफरसें ऊर्द्धलोक उपजतानगणीवे तेमाटें विशेषाधिककहिये तेथकी तिर्यक्लोक ३ असख्यातगुणामाटें असख्यातगुणाक्षेत्रफरसें ते असख्यातगुणा जे विग्रहगतिऊर्द्धलोक तिर्यक्लोकफरसें तेनगिणिवें निगोदीया उपजिवाभणीतेहथकी ऊर्द्धलोकना असख्यातगुणा उपपातक्षेत्रपणामाटें तेहथकी अधोलाके विशेषाधिकछे क्षेत्रविशेषाधिकपणामाटें सामान्यपणे सर्वजीवआश्रीक्षेत्रपणे अल्पबहुत्वपणेकह्यो। सव्वत्थोवानेरईयातिलोके अहोलोयतिरियलोए असं० अहोलोए असखिज्जगुणा। हिवेपारगतिआश्रीनरकनो अल्पबहुत्वकहेछे क्षेत्रआश्रीसर्वथोडानारकी त्रिलोकनासर्शनाकिनजे मेरुप्रमुखनीवावनामध्यनरकमाहिउपजता त्रिलोकतेसर्वथोडाछे तेहथकी अधोलोक तिर्यलोकस्पर्शना असख्यातगुणा जे द्वीपाद्वीपसमुद्रने तिर्यंचनारकी

इत्ववत्व प्रतिसमय मूर्द्धलोकेऽधोलोकेच सूक्ष्मनिगोदा उद्वर्त्तते, येतु तिर्यग्लोकवर्त्तिन सूक्ष्मनिगोदा उद्वर्त्तते तेऽर्पादऽधोलोके ऊर्द्धलोकें वा केचित्तस्मिन्नव वा तिर्यग्लोकसमुत्पद्यते, ततो नतेलोकत्रयसस्पर्शिन इति, नाऽधिकृतसूत्रविषया तत्रोर्द्धलोकाधोलोकगताना सूक्ष्मनिगोदानामु द्वर्त्तमानाना मध्य केचित्स्वस्थान मवऊर्द्धलोके अधोलोकेवा समुत्पद्यते, केचि त्तिर्यग्लोके तभ्यो ऽसख्येयगुणा अधोलोकगता ऊर्द्धलोके ऊर्द्धलोकग ता अधोलोके समुत्पद्यते, तेच तयोत्पद्यमाना स्त्रीनऽपिलोकान् स्पृशन्तीत्यऽसख्येयगुणा ' कथ पुन रेतदवसीयते य दुत एवप्रमाणा वह्वोजीवा सदाविग्रहगत्यापन्ना लभ्यत इति चत् उच्यते-युक्तिवशात्, तथाहि प्रागुक्तमि दमऽत्रैवसूत्रपर्याप्तिद्वारे । सव्वत्थोवाजीवानोपज्जत्ता नोत्रपज्जत्ता अपज्जत्ता अनतगुणा पज्जत्ता सखेज्जगुणा इति, ॥ ततएवनामाऽपर्याप्ता वह्वो ये नैतेभ्य पर्याप्ता सख्येयगुणा एव नाऽसख्येयगुणा नाऽप्यऽनतगुणा स्तथाऽपर्याप्तावह्वोऽतरगतौवर्त्तमानालभ्यते इति ४ । तभ्य ऊर्द्धलोके ऊर्द्धलोकावस्थिता असख्येयगुणा उपपातक्षेत्रस्यातिवहुत्वात्' असख्येयानाच नागानामुद्वर्त्तनायाश्च सभवात्, तेभ्यो ऽधोलोके अधोलोकवर्त्तिनो विशेषाधिका ऊर्द्धलोकक्षेत्रा दधोलोकक्षेत्रस्य विशेषाधिकत्वात्, तदेव सामान्य

नेरइया तेलुक्के अहोलोगतिरियलोगे असखेज्जा० अहोलोए असखेज्जगुणा । खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा तिरिक्खजोणिया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोगतिरियलोए विसेसाहिया तिरियलोए असखेज्जगुणा, ते

माहिजपनेनाछे प्रतरनैस्पर्शे असख्यातगुणामाटे अधोलोके असख्यातगुणा । खित्ताणुवाएण सव्वत्थोवा तिरिक्खजोणिया । क्षेत्र आश्रीतिर्यचयोनिया सर्वथोडाऊर्द्धलोक तिर्यक्लोकिसामान्यजीवसूत्रने अलावेकह्याछे तिमजाणिवो । उड्ढलोय तिरियलोए अहोलोए । तिर्यक्लोके विशेषाधिक । तिरियलोए विसे० तिरियलोए अस० तिलक्के अस० । तेहथीतिर्यक्लोके असख्यातगुणा तेहथीत्रिलोके असख्यातगुणा । उड्ढलोए असखिज्जगुणा । ऊर्द्धलोके असख्यातगुणाइवे । अहोलोए विसेसाहिया खित्ताणुवाएण सव्वत्थोवाओ तिरिक्खजोणिणीओ । अधोलोके विशेषाधिकए सामान्यसूत्रथीजाणिवो तिर्यचना अल्पवहुत्वकहेछे क्षेत्रआश्रीसर्वथोडीतिर्यचयोनिनीओ । उड्ढलोए तिरियलोए असखिज्जगुणा । ऊर्द्धलोकक्षेत्रमेमेरुपर्वत अजनमुखदधिनोवा

तो जीवाना क्षेत्रानुपातेना ऽल्पबहुत्वमुक्त, मिदानीं चतुर्गतिदण्डकक्रमेण तदभिधित्सु प्रथमतो नैरयिकाणा माह-खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा नेरइया तेलोक्के इति ॥ क्षेत्रानुपातेन क्षेत्रानुसारेण नैरयिका चिन्त्यमाना सर्वस्तोका स्त्रैलोक्ये लोकत्रयसंस्पर्शिन कथलोकत्रयसंस्पर्शिनो नैरयिका कथवा तेसर्वस्तोका इतिचेत्, उच्यते-इह ये मेरुशिखरे अञ्जनदधिमुखपर्वतशिखरादिषु वा वापीषु वर्त्तमानामत्स्यादयोनारकेषूत्पित्सव इलिकागत्या प्रदेशा न् विक्षिपति तेकिल त्रैलोक्यमपि स्पृशति नारकव्यपदेशमलभते तत्कालमेवनरकेषूत्पन्नेनारकायुष्कप्रतिसंवेदनात् , तचेत्यद्भुताकतिपयेऽतिसर्वस्तो का , अन्येतु व्याचक्षते नारकाएवयथोक्तवापीषु तिर्यक्पञ्चेन्द्रियतयो त्पद्यमाना समुद्घातवशतो विक्षिप्तनिजात्मप्रदेशदण्डा परिगृह्यन्ते तेऽपिकिल त दा नारका एव निर्विवादंतदायुष्कप्रतिसंवेदनात्, त्रैलोक्यसंस्पर्शिनश्च यथोक्तवापी यावदात्मप्रदेशदण्डस्य विक्षिप्तत्वादिति । तेभ्यो ऽधोलोकति र्यग्लोकसंज्ञा प्रागुक्तप्रतरद्वयस्य संस्पर्शिनोऽसंख्येयगुणा' यतो बहवोऽसंख्येयेषु द्वीपसमुद्रेषु पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानरकेषू त्पद्यमाना यथोक्तप्र

लुक्के असंखेज्जगुणा उड्ढलोए असंखिज्ज० अहोलोए विसेसाहिया, खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा तिरिक्खजो णिणीओ उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्ज०, तेलुक्के असंखेज्ज० अहोलोयतिरिलोए संखिज्जगुणाओ अहोलोए संखेज्जगुणाओ तिरियलोए संखिज्जगुणाओ खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा मणुस्सा तेलुक्के उड्ढलोयतिरिय

वघातोतिर्यचयानियानोम्होइवें चेवम्राम्योसर्वथोडाकहिये तेहथी ऊर्ध्वलोकतिर्यक्लोकवर्त्तमान असंख्यातगुणा किनमहस्रारदेवलोकादिकथी तिर्यचनो म्होमाहिउपजतेहथोभिन्नाके असंख्यातगुणो । तिम्रक्ष असंखिज्जगुणाम्रा भवनपतिव्यतरथको ऊर्ध्वलोकतिर्यंचउपजे । अहोलोय तिरियलोए असंखिज्ज गुणाओ अहोलोएसंखिज्जगुणाओ । तेहथो अधोलोकतिर्यक्लोक संख्यातगुणा घणानारकोमरणसमुद्घात तिर्यचनोस्त्रीपणेछे । तिरियलोए संखिज्जगु गुणाओखित्ताणुवाएण तेमाटेतेहथी अधोलोकसंख्यातगुणोजिमाटे अधोग्रामथकोइवें समुद्रमा नवसैयोजनमच्छोना घणीछे। सव्वत्थोवा 'मणुस्सातिलु क्के उड्ढलोयतिरियलोए असंखिज्जगुणा । सेवम्राम्योसर्वथोडा मनुष्यलोकपुरुषे वेक्रियसमुद्घातना करणहारपुरुषे तेहथो ऊर्ध्वलोकतिर्यक्लोके अस

तदृद्ध्य स्पृशति ततो भवति पूर्वोक्तेभ्यो ऽसंख्येयगुणा ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोकस्यासंख्येयगुणत्वात्, मंदरादिचत्रो ऽसंख्येयद्वीपसमुद्रात्मिकं तत्र मऽसंख्येयगुणामत्य तो भवत्यऽसंख्येयगुणा, अन्येत्व त्रिदधति नारकाएवा ऽसंख्येयेषु द्वीपसमुद्रेषु तिर्यक्पञ्चेन्द्रियतयोत्पद्यमाना मारणांतिकसमुद्घातेन विक्षिप्तनि जात्मप्रदेशदण्डा द्रष्टव्या स्तेहि नारकायु प्रतिसंवेदना नारका उद्वर्त्तमाना अपि ऽसंख्येया प्राप्यते इति । प्रागुक्तेभ्यो ऽसंख्येयगुणा स्तेभ्यो ऽधोलो के ऽसंख्येयगुणा स्तस्य तेषां स्वस्थानत्वात्, उक्त नारकगति मधिकृत्य क्षेत्रानुपातेना ऽल्पबहुत्व, मिदानी तिर्यग्गति मधिकृत्या ह-खेत्ताणुवा एण सव्वत्थोवा तिरिक्खजोणिया उड्ढलोयतिरियलोए इत्यादि ॥ इदं सर्वमपि सामान्यतो जीवसूत्रमिव भावनीय । तदपि तिर्यञ्चएव सूक्ष्मनिगो दान ऽधिकृत्य भावित मधुना तिर्यग्योनिकस्त्रीविषय मऽल्पबहुत्वमा ह-खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवाउ तिरिक्खजोणिणीउ उड्ढलोए इत्यादि । के

लोए असंखेज्जगुणा अहोलोयतिरियलोए संखिज्जगुणा अहोलोए संखेज्जगुणा तिरियलोए संखेज्जगुणा। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवाउ मणुस्सीउ तेलुक्के उड्ढलोयतिरियलोए संखेज्जगुणाउ अहोलोयतिरियलोए संखे ज्जगुणाउ उड्ढलोए संखेज्जगुणाउ अहोलोए संखेज्ज० तिरियलोए संखेज्ज०, खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा

ख्यातगुणा । अहोलोयतिरियलोए असंखिज्जगुणा अहोलोए संखि० । जेमाटे वैमानिकदेवतामनुष्यमाहि उपजतेपतरछेनैपरसे अधोलो॰ ति॰ ॰के संख्यातगुणा भवनपति आदि मनुष्यलोकमाहि उपजेतके ऊर्ध्वलोक सं० गणविद्याधरादि पद्मनमाहि समूर्छिमनमनुष्यउपजे तेहथी अधोल॰ संख्यात गुणा अधोग्रामादि स्वभाविकमनुष्यपणामाटेनथी । तिरियलोए संखि० तिर्यग्लोकमनुष्येतपणानछे लोकघणामनुष्यस्पर्शे छिवेस्तोकछे, खि॰ णुवाए ण सव्वत्थोवाओ मनुस्सयो तिलोके उड्ढलोयतिरियलोए संखिज्जगुणाओ । घनतोमिलेजोता सर्वथोडोमनुष्यचेनैलाके तेमाटेवैक्रियसमद्घात केवलीस मुद्घातवसैमेलोय स्पर्शेतेहथी ऊर्ध्वलोकतिर्यक्लोक वैमानिकदेवता मनुष्यणीमाउपजे तेहथी संख्यातगुणीहुवे । अहोलोयतिरियलोए संखिज्जगुणोओ उड्ढलोएसंखिगुणाओ अहोलोए संखिज्जगुणाओ । तेहथी अधोलोकतिर्यक्लोके संख्यातगुणी अधोलोकग्रामादि तिर्यचांमरीने मनुष्यस्त्रीपणै उपजतो

वणा
पद
३
८० ॥

ऊनुपातेन तिर्यग्योनिकस्त्रियश्चिन्त्यमाना सर्वस्तोका ऊर्द्धलोके इत्यमंदरादिवापीप्रभृतिष्वपिहि पचेंद्रियतिर्यग्योनिका स्त्रियोनवंति ताश्च चे त्रस्याऽल्पत्वात् सर्वस्तोका स्ताभ्य ऊर्द्धलोकतिर्यग्लोक ऊर्द्धलोकतिर्यग्लोकसंज्ञे प्रतरद्वये वर्त्तमाना असख्येयगुणा कथ मितिचेत् उच्यते-याव त्सहस्रारदेवलोक स्तावद्देवा अपि गर्नव्युत्क्रातिकतिर्यक्पचेंद्रिययोनिषू त्पद्यते किपुन शेषकाया स्तेऽपि यथासन्नमुपरिवर्त्तनोऽपि तत्रो त्पद्यते ततो ये सहस्राराताद्देवा अन्येऽपिच शेषकाया ऊर्द्धलोका त्तिर्यग्पचेंद्रियस्त्रीत्वेन तदायु प्रतिसवेदसमाना उत्पद्यते, या स्तिर्यग्लोकवर्त्तिन्य स्ति र्यग्पचेंद्रियस्त्रिय ऊर्द्धलोके देवत्वेन शेषकायत्वेनचो त्पद्यमाना मारणातिकसमुद्घातेनोत्पत्तिदेशे निजनिजात्मकप्रदेशदडान् विक्षिपति ता य थोक्तप्रतरद्वय स्पृशति तिर्यग्योनिकस्त्रियश्च ता स्ततो ऽसख्येयगुणा चेत्रस्या ऽसख्येयगुणत्वात्, ताभ्य स्त्रैलोक्ये संख्येयगुणा यस्माद ऽधो

देवा उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असखेज्जगुणा तेलुक्के असखेज्जगुणा अहोलोए तिरियलोए असंखेज्ज० अहोलोए सखिज्जगुणाउ तिरियलोए सखिज्जगुणाउ खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवाउ देवीउ उड्ढलोय उड्ढलोए तिरियलोए असखेज्जगुणाउ तेलुक्के सखेज्जगुणाउ अहोलोयतिरियलोए असखेज्जगुणाउ अहोलोए संखे

प्रदेशस्पर्शे ऊर्द्धलोकसुध्यानगणी क्रीडार्थेचैत्यवदनार्थे विद्याधरोजातियकें प्रदेशसर्शे अधोलोके सख्यातगुणा अधोग्रामछपजतो। तिरियलोएसखिज्जगुणा ओ। तिर्यक्लोकसख्यातगुणो चेत्रसख्यातगुणामाटे। खित्ताणुवाएण सव्वत्थोवादेवाउड्ढलोए। छिवेदेवतानो अल्पबहुत्वकहेछे चेत्रथीसर्वथोडादेवता ऊर्द्धलोके जे भवनपतिजिनेंद्रते महोत्सवेमेरुपर्वतेजायतेमाटे। उड्ढलोयतिरिलोए असखिज्जगुणा। तेहथी ऊर्द्ध लोकतिर्यग्लोक असख्यातगुणा भवन पतिव्यतरज्योतिषो सौधर्मादिगतवेप्रतरस्पर्शे। तिर्यक्लोकसखिज्जगुणा अहोलोयतिरियसखिज्जगुणा। तेहथीत्रैलोक्ये असख्यातगुणा भवनपतिव्यतरवैक्रिय समुद्घातत्रिलोकनेस्पर्शे तेहथी अधोलोकतिर्यक्लोक असख्यातगुणा भवनपतिव्यतरतिर्यक्लोक आवते तिर्यचयोनिमाहि उपजेतेसख्यातगुणा। अहो लोएसखिज्जगुणा तिरियलोएसखिज्जगुणा। अधोलोकसख्यातगुणा भवनपतिनेपोतानाठामतेहथी तिर्यक्लोकसख्यातगुणा व्यतरज्योतिषो स्वस्थानमाटे

॥ टीका ॥

लोला भ्रुवनपतिव्यंतरनारका शेपकाया अपि चोर्द्धलोकेऽपि तिर्यक्पचेंद्रियस्त्रीत्वेनो त्पद्यते ऊर्द्धलोकाद्देवादयो प्यऽधोलोकेच ते समवहता निज निजात्मप्रदेशदंडैः स्त्रीनऽपि लोकान् स्पृशंति प्रभूताश्चते तथा तिर्यग्योनिकस्त्र्यायु प्रतिसंवेदनात्, तिर्यग्योनिकस्त्रियश्च तत संख्येयगुणा ३। ताभ्यो ऽधोलोकतिर्यग्लोके अधोलोकतिर्यग्लोकसंज्ञे प्रतरद्वये वर्त्तमाना संख्येयगुणा बहवोहि नारकादय समुद्घातमंतरेणाऽपि तिर्यग्लोके तिर्यक्पचेंद्रियस्त्रीत्वेनो त्पद्यते, तिर्यग्लोकवर्त्तिनश्च जीवा स्त्रियंग्योनिकस्त्रीत्वेना ऽधोलौकिकग्रामेषु ऽपि च तत्र तथो त्पद्यमाना यथोक्तप्रतरद्वय स्पृशंति' तिर्यग्योनिकस्त्र्यायु प्रतिसंवदना च तिर्यग्योनिकस्त्रियोऽपि तथा ऽधोलौकिकग्रामायोजनसहस्त्रावगाहापर्यंते ऽर्वाक् क्वचित्प्रदेश नवयोजनशतावगाहाश्चपि तत्र काश्चित्तिर्यग्योनिकस्त्रियो ऽवस्थानेनाऽपि यथोक्तप्रतरद्वयाऽध्यासिन्यो वर्त्तंते, ततो भवति पूर्वोक्ताभ्य संख्येयगुणा ४। ताभ्यो ऽधोलोक संख्येयगुणा यतोऽधोलौकिकग्रामा सर्वेऽपिच समुद्रा योजनसहस्त्रावगाहा स्ततो नवयोजनशतानामऽधस्तात् या वर्त्तंते मत्स्यीप्रभृतिका तिर्यग्योनिकस्त्रिय स्ता स्वस्थानत्वात् प्रभूता इति संख्येयगुणा क्षेत्रस्य संख्येयगुणत्वात्, ताभ्य स्तिर्यग्लोक संख्येयगुणा, उक्त तिर्यग्गतिमप्यधिकृत्या ल्पवहुत्व मिदानी मनुष्यगतिविषय माह- खेत्ताणुवाएणमित्यादि॥ क्षेत्रानुपातेन मनुष्या श्चिंत्यमाना स्त्रैलोक्ये त्रैलोक्यसंस्पर्शिन सर्वस्तोका यतो य ऊर्द्धलोकाद ऽधोलौकिकग्रामेषु समुत्पित्सवो मारणांतिकसमुद्घातेन समवहता भवंति ते केचित्समुद्घात वशा द्विनिर्गते स्वात्मप्रदेशै स्त्रीनऽपिलोकान् स्पृशंति येपिच वैक्रियसमुद्घात माहारकसमुद्घात वा गता तथाविधप्रयत्नविशेषा द्दूरतर मूर्द्धाऽधोविक्षिप्तात्मप्रदेशा यच केवलसमुद्घातगता स्तेपि त्रीनपिलोकान् स्पृशंति स्तोकाश्चेति सर्वस्तोका स्तेभ्य ऊर्द्धलोकतिर्यग्लोक ऊर्द्धलोकतिर्यग्लोकसंज्ञेप्रतरद्वयसंस्पर्शिनो ऽसंख्येयगुणा यत इहवैमानिकदेवा शेपकायाश्च यथासंभवमूर्द्धलोका त्तिर्यग्लोक मनुष्यत्वेन समुत्पद्यमाना

॥ मूल ॥

ज्जगुणाउ तिरियलोए संखिज्जगुणाउ खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा भवणवासीदेवा उढ्ढलोए उढ्ढलोयतिरियलोए

॥ भाषा ॥

ख्येयगुणीछे। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोकाछे देवीओ उढ्ढलोए। भवनपतियोजाता सर्वथाडादेवतागना ऊर्द्ध लोकनेविषे एसर्वदेवतानीपरेभावना। उढ्ढलोए

यथोक्तप्रतरद्वयसंस्पर्शिनो भवति विद्याधराणामपि च मन्दरादिषु गमनं तेषां च शुक्रशोणितादिपुद्गले सम्मूर्च्छिममनुष्याणामुत्पाद इति । ते विद्याधरास्थिरादिपुद्गलसम्मिश्रा अधोगच्छति तथा सम्मूर्च्छिममनुष्या अपि यथोक्तप्रतरद्वयस्पर्शवत उपजायते नचा निवन्त्र बहुत्वसंख्येयगुणा, तेभ्योऽधोलोकतिर्यग्लोके अधोलोकतिर्यग्लोकसंज्ञे प्रतरद्वये संख्येयगुणा यतोऽधोलौकिकग्रामेषु स्वभावत एव बहवो मनुष्या स्ततो ये तिर्यग्लोका न्नेर्दुपकायेभ्योवाऽधोलौकिकग्रामेषु गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्यत्वेन सम्मूर्च्छिममनुष्यत्वेनवा समुत्पित्सवो यदा ऽधोलोकादऽधोलौकिकग्रामरूपात् इपाद्वा मनुष्या द्वीपकायेभ्योवा तिर्यग्लोके गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्यत्वेनवा सम्मूर्च्छिममनुष्यत्वेनवा समुत्पत्तुकामा स्त यथोक्तं किल प्रतरद्वयस्पर्शानि बहुतराश्च ते, तथा स्वस्थानतोऽपि कश्चिदधोलौकिकग्रामेषु यथोक्तप्रतरद्वयस्पर्शिन इति प्रागुक्तेभ्यो संख्येयगुणा स्तेभ्य ऊर्द्ध्वलोके संख्येयगुणा सौमनसादिषु क्रीडार्थं चैत्यवन्दननिमित्तंवा प्रभूततराणा विद्याधरचारणमुनीना भावात्, तथा च यथायोग रुधिरादिपुद्गलयोगत सम्मूर्च्छिममनुष्यभवात्' तेभ्योऽधोलोके संख्येयगुणा स्वस्थानत्वेन बहुत्वभावा त्तेभ्य स्तिर्यग्लोके संख्येयगुणा क्षेत्रस्य संख्येयगुणत्वात् स्वस्थानत्वाच, सम्प्रति क्षेत्रानुपातेन मानुषीविषय मल्पबहुत्व माह-खेत्ताणुवाएणं मित्यादि ॥ क्षेत्रानुपातेन मानुष्यश्चिन्त्यमाना सर्वस्तोका त्रैलोक्यस्पर्शिन्य ऊर्द्ध्वलोका ऽऽधोलोक समुत्पित्सूना मारणान्तिकसमुद्घातवशविनिर्गतदूरतरात्मप्रदेशाना मऽथवा वैक्रियसमुद्घातगताना केवलिसमुद्घातगताना वा त्रैलोक्यसंस्पर्शान् तासाञ्च त्रिलोकत्वमिति । सर्वस्तोका स्तेभ्य ऊर्द्ध्वलोकतिर्यग्लोके ऊर्द्ध्वलोकतिर्यग्लोकसंज्ञे प्रतरद्वये संख्येयगुणा वैमानिकदेवाना द्वीपकायाणां वा ऊर्द्ध्वलोका तिर्यग्लोके मनुष्यस्त्रीत्वेनो त्पद्यमानाना तथा तिर्यग्लोकगतमनुष्यस्त्रीणाम् ऊर्द्ध्वलोके समुत्पित्सूना मारणान्तिक

असंखेज्जगुणाओ तेलुक्के संखिज्जगुणा अहोलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, तिरियलोए असंखिज्जगुणा

तिरियलोए असंखिज्जगुणाओ तिलोके संखिज्जगुणाओ । ऊर्द्ध्वलोकतिर्यग्लोके असंख्यातगुणो देवतानोपरितश्चो त्रैलोक्ये संख्यातगुणो । अहोलोयतिरियलोए संखिज्जगुणाओ । अधोलोकतिर्यग्लोके संख्यातगुणो । अहोलोए संखिज्जगुणाओ अधोलोके संख्यातगुणो देवाना एवं सर्वदेवानामोघेनाभाना

कसमुद्घातवशा दूरतरमूर्द्धविक्षिप्तात्मप्रदेशा नाम ऽप्याऽपि कालमकुर्वतीना यथोक्तप्रतरद्वयसंस्पर्शनभावात्, तासाञ्च नयापामऽपि बहुतरत्वात्, ताभ्या ऽधोलोकतिर्यग्लोक प्रागुक्तस्वरूपप्रतरद्वयरूप सङ्ख्येयगुणा तिर्यग्लोका न्मनुष्यस्त्रीभ्य इापेभ्यो वा ऽधोलौकिकग्रामेषु यदिवा ऽधोलोका दधोलौकिकग्रामरूपात ब्रापाद्वा तिर्यग्लोक मनुष्यस्त्रीत्वनो त्पित्सूना काश्चिद ऽधोलौकिकग्रामेषऽवस्थानतोऽपि यथोक्तप्रतरद्वयसंस्पर्शनभावात्, तासाञ्च प्रागुक्ताभ्यो ऽतिबहुत्वात्, ताभ्यो ऽप्यूर्द्धलोकसङ्ख्येयगुणा कौतार्थ चैत्यवदनानिमित्त वा सौमनसादिषु प्रभूततराणा विद्याधरीणा तत्र व त्, ताभ्योऽपि अधोलोकसङ्ख्येयगुणा स्वस्थानत्वेन तत्रापि बहुतराणां भावात्, ताभ्य स्तिर्यग्लोके सङ्ख्येयगुणा क्षेत्रस्या सङ्ख्येयगुणत्वात् स्वस्था नत्वा च, गत मनुष्यगतिमधिकृत्या ल्पबहुत्व मिदानी देवगतिमधिकृत्याह-खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा उड्ढलोए इत्यादि॥ क्षेत्रानुपातेन चिन्त्यमाना देवा सर्वस्तोका ऊर्द्धलोके, ऊर्द्धलोके वैमानिकानामेव तत्रभावात्, तेषाञ्च ऽल्पत्वात् येपि भवनपतिप्रभृतयो जिनेन्द्रजन्ममहादौ मन्दरादिषु गच्छ न्ति तेऽपि स्वल्पा एवे ति सर्वस्तोका स्तेभ्य ऊर्द्धलोकतिर्यग्लोके ऊर्द्धलोकतिर्यग्लोकसंज्ञे प्रतरद्वये असङ्ख्येयगुणा स्वाद्रिज्योतिष्काणा प्रत्यासन्न मि ति स्वस्थान तथा भवनपतिव्यन्तरज्योतिष्का मन्दरादौ सौधर्मादिकल्पगता स्वस्थानगमागमन तथा यसौधर्मादिषु देवत्वेनोत्पित्सवो देवायु प्र तिसंवेदयमाना स्वोत्पत्तिदेशमभिगच्छन्ति यथोक्त प्रतरद्वय स्पृशन्ति तत स.मस्त्येन यथोक्तप्रतरद्वयसंस्पर्शिन परिभाव्यमाना अतिबहव इतिपू र्वोक्तेभ्यो ऽसङ्ख्येयगुणा, तेभ्य स्त्रैलोक्यसंस्पर्शिन सङ्ख्येयगुणा ३। यतो भवनपतिव्यन्तरज्योतिष्कवैमानिका देवा तथाविधप्रयत्नविशेषवशातो वैक्रियसमुद्घातेन समवहता सत स्त्रीनपिलोकान् स्पृशन्ति तेषे त्यसमवहता प्रागुक्तप्रतरद्वयस्पर्शिभ्य सङ्ख्येयगुणा केवलवेदसोपलभ्यन्त इति

अहोलोए असंखेज्ज०, खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा भवणवासिणीउ देवीउ उड्ढलोए तिरियलोए असंखि०,

---

थोडारिज्जाईबो। इवैविशवभवनपतिनो अल्पबहुत्व कहेछे। तिरिच्छनाअसंखिज्जगणाओ तिर्यञ्चनाकहेवाननो अधिकारुतानु तो। खित्ताणुवाएण सव्वत्थोवा भवणवासीदेवा घणथोडाता सर्वथाथोडादेवभवनवासी ऊर्द्धलोके कोइपूर्वसंगति आपसदेवल के तथा तीर्थकरने जन्ममहोत्सवपर्वतजावे तेमाटे थोडा तेहथो

सख्येयगुणा' स्तेभ्यो ऽधोलोकतिर्यग्लोके ऽधोलोकतिर्यग्लोकसंज्ञे प्रतरद्वये वर्त्तमाना सख्येयगुणा स्तद्धि प्रतरद्विक भवनपतिव्यंतरदेवाना प्रत्या सन्नतया स्वस्थान तथा बहवोभवनपतय स्वभावस्था स्तियग्लोकगमागमेन तयो द्वर्त्तमाना स्तथावैक्रियसमुद्घातेनसमवहता स्तथा तिर्यग्लोक वर्त्तिन स्तिर्यक्पञ्चेन्द्रियमनुष्या वा भवनपतित्वेनो त्पद्यमाना भवनपत्याऽऽयुरऽनुभवतो यथोक्तप्रतरद्वयसस्पर्शिनो ऽतिबहव इति सख्येयगुणा ' तेभ्यो ऽधोलोके सख्येयगुणा भवनपतीना स्वस्थानमिति कृत्वा तेभ्य स्तिर्यग्लोके सख्येयगुणा ज्योतिष्कव्यतराणा स्वस्थानत्वात्, अधुना देवी रधिकृत्याल्पबहुत्व माह-खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवादेवीओ उड्ढलोए इत्यादि ॥ सर्वदेवसूत्रमिवाऽविशेषेण भावनीय, तदेवमुक्त देवविषयमौघिक मल्पबहुत्व मिदानी भवनपत्यादिविशेषविषय प्रतिपिपादयिषु प्रथमतो भवनपतिविषयमाह-खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा देवा भवणवासीओउड्ढलो ए इत्यादि ॥ क्षेत्रानुपातेन भवनवासिनो देवा श्चिन्त्यमाना सर्वस्तोका ऊर्द्ध्वलोके तथाहि-केषाचि त्सौधर्मादिष्वपि कल्पेषु पूर्वसगतिकनिश्रया ग मन भवति केषाचि न्मन्दरे तीर्थकरजन्ममहिमानिमित्त मजनदधिमुखेष्वाह्निकानिमित्त मपरेषा मन्दिरादिषु क्रीडानिमित्तं गमन मेतेच सर्वेपि स्वल्पा इति, सर्वस्तोका ऊर्द्ध्वलोके तेभ्य ऊर्द्ध्वलोकतिर्यग्लोके ऊर्ध्वप्रतरद्वये ऽसख्येयगुणा , कथमितिचेत् उच्यते-इहहि तिर्यग्लोकस्थावैक्रियसमु द्घातेन समवहता ऊर्द्ध्वलोकतिर्यग्लोक च स्पृशति यथा ते तिर्यग्लोकस्थाएव मारणान्तिकसमुद्घातेन समवहता ऊर्द्ध्वलोके सौधर्मादिषु देवलो केषु बादरपर्याप्तपृथिवीकायिकतया बादरपर्याप्ताऽप्कायिकतया बादरपर्याप्तप्रत्येकवनस्पतिकायिकतया च शुभेषु मणिविमानादिषु स्थानेषूत्प

तेलुक्के सखेज्जगुणाउ अहोलोएतिरियलोए असखेज्ज०, तिरियलोए असखिज्ज० अहोलोए असखिज्ज०

उड्ढलोयतिरियलोए असखिज्जगुणा ऊर्द्ध्वलोकतिर्यग्लोक असख्यातगुणा मरणसमुद्घात ऊर्द्ध्वलोकेबादर पृथ्व्यादिकपणे उपजता त्रिलोकस्पर्शी त्रैलोक्य असख्यातगुणा वैक्रियसमुद्घातेकराने । तिलोकेसाखिज्जगुणा अहोलोयतिरियलोए असखिज्जगुणा । तेहथी अधोलोकतिर्यग्लोक असख्यातगुणाप्रतरने स्पर्शी तिर्यक्लोकगमनागमनभाव । तिरियलोए असखिज्जगुणा अहोलोए असखिज्जगुणा । तेहथी तिर्यग्लोक असख्यातगुणा समोसरणक्रीडार्थे समाग

त्पत्तुकामा श्रद्याऽपि स्वभावायु प्रतिसवेदयमाना न पारभविक पृथवीकायिकाद्यायु द्विविधान्ि मारणान्तिकसमुदघाते समवहता केचित्पारभ विकमायु प्रतिसवेदयते केचिन्नेति, तथा चोक्त प्रज्ञप्तौ-जीवेण भते मारणतिकसमुग्घाएण समोहए सम्मोहणित्ता जेभविए मदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेण वायरपुढविकाइत्ताए उववज्जित्तए सेण भते कि तत्थ गए उववज्जेज्जा उयाउ पडिनियत्तेत्ता उववज्जइ गो०। श्रत्येगइए तत्थगए चेव उववज्जइ, श्रत्येगइए तउ पडिनियत्तित्ता दोच्चपि मारणातियसमुग्घाएण समोहणति समोहणित्ता तउ पच्छा उववज्जइति„ स्वभावायु प्रतिसवेद नाध ते भवनवासिन एव लभ्यते ते इत्थभूता उत्पत्तिदेशे विक्षिप्तात्मप्रदेशदण्डा स्तथा ऊर्द्ध्वलोकगमनागमनत स्तत्प्रतरद्वयप्रत्यासन्नक्रीडास्थानश्च यथोक्त प्रतरद्वय स्पृशन्ति, तत प्रागुक्तेभ्यो ऽसख्येयगुणा स्तेभ्य स्त्रैलोक्ये त्रैलोक्यसस्पर्शिन सख्ययगुणा यतो ये ऊर्द्ध्वलोके तिर्यग्पञ्चेन्द्रिया भ वनपतित्वेनोत्पत्तुकामा येष स्वस्थाने वैक्रियसमुद्घातेन मारणान्तिकप्रथमसमुद्घातेन वा तथाविधतीव्रप्रयत्नविशेषेण समवहता स्ते त्रैलोक्यसस्प र्शिन इति सख्येयगुणा, परस्थानसमवहतेभ्य स्वस्थानसमवहताना सख्येयगुणत्वात्, तेभ्यो ऽधोलोकतिर्यग्लोके श्रधोलोकतिर्यग्लोकसज्ञे प्रतरद्व ये ऽसख्येयगुणा स्वस्थानप्रत्यासन्नतया तिर्यग्लोके गमनागमनभावत स्वस्थानस्थितक्रोधादिसमुद्घातगमनतश्च बहूना यथोक्तप्रतरद्वयसस्पर्शना

खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा वाणमतरादेवा उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए ग्रसखिज्जगुणा, तेलुक्के ग्रसखिज्ज० ग्रहोलोए तिरियलोए ग्रसखेज्जगुणा ग्रहोलोए सखेज्जगुणा तिरियलोए सखिज्ज०, खेत्ताणुवाएण सव्वत्थो

मचिरकालस्थायीमाटे घणा तेहथी अधोलोक असख्यातगुणा भवनपतिनोदेवीनो। खित्ताणुवाएण सव्वत्थोवाश्रो भवनवासणीश्रो देवीश्रो उड्ढलोए। षेत्रन्यायो अल्पबहुत्वकहेछे सर्वथोडीदेवागना ऊर्द्ध्वलोके भवनपतिदेवतानोपरेसर्वकहिवो। उड्ढलोयतिरियलोए असखिज्जगुणाश्रो ऊर्द्ध्वलोकतिर्यकलोके असख्यातगुणीकहिवे। तिल्लोके सखिज्जगुणाश्रो अहोलोयतिरियलोए अस० अहोलोए अस० तिरियलोए अस०। त्रिलोकसख्यातगुणाकहिवे वैक्रियसमुद्घात वेला अधोलोकतिर्यग्लोक असख्यातगुणो तिर्यगलोके असख्यातगुणो समोसरणे अधोलोके असख्यातगुणा स्वस्थान माटे त्रिर्यग्लोके अ०। खित्ताणुवाएण

विवणा
पद
२
८३ ॥

[illegible] तेभ्य तिर्यग्लोके ऽसङ्ख्येयगुणा समवसरणादौ वन्दननिमित्तं द्वीपेषु च रचकोपेषु क्रीडानिमित्तमागमसम्भवा दागतानाच चिरकालमऽप्यऽ वस्थानात्, तेभ्यो ऽधोलोके ऽसङ्ख्येयगुणाभुवनवासिनामधोलोकस्य स्वस्थानत्वात्, एव भवनवासिदेवीगतमल्पबहुत्व भावनीय, साम्प्रतिव्यन्तर गतमल्पबहुत्वमाह-खेत्ताणुवाएणमित्यादि ॥ क्षेत्रानुपातेन चिन्त्यमाना व्यंतरा सर्वस्तोका ऊर्ध्वलोके कतिपयानामेव पण्डकवनादौ तेषा भावात्,

वाणमंतरा देवा उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखिज्जगुणा तेलुक्के संखिज्जगुणा अहोलोए तिरियलोए असंखिज्ज० अहोलोए संखिज्ज० तिरियलोए संखिज्जगुणा खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा जोइसिया देवा उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखिज्ज० तेलुक्के संखेज्जगुणा अहोलोएतिरियलोए असंखिज्जगुणा अहोलोए संखेज्जगुणा तिरियलोए असंखेज्जगुणा खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा जोइसिणीओ देवीओ उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणाओ तेलुक्के संखेज्जगुणाओ अहोलोयतिरियलोए संखेज्ज०, अहो

सव्वत्थोवा वाणमंतरादेवा उड्ढलोए। [illegible] सर्वथाद्यंतर ऊर्ध्वलोके विशेषधर्मे पूर्वसंगतिने मित्रवाभेतीर्थकरजन्मे। उड्ढलोय तिरियलोए असं० तिलोके संखिज्जगुणा। तद्वयो ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके असं० मरणसमुद्घात तथा बादरमा पृथ्वीकायउपन्ने ते असंख्याता त्रैलोक्ये संख्यात गुणा वैक्रियसमुद्घाते। अहोलोयतिरियलोए असं०। अधोलोकतिर्यग्लोके वै प्रतरद्वयेगमनागमनकरने। अहोलोए असंखिज्जगुणा तिरियलोए असं० खित्ताणुवाएण। तद्वयो अधोलोके असंख्यातगुणा स्वस्थानमाटे तिर्यग्लोके असं० समोसरणादिके। [illegible] सव्वत्थोवा जोइसिणी देवीओ उड्ढलोए। सर्वथाजोइसियव्यंतरी ऊर्ध्वलोके पर्वमाति अथ तीर्थकरजन्मे। उड्ढलोयतिरियलोए असं० तिलोका संखिज्जगुणाओ। तद्वयो ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके असंख्यातगुणी त्रैलोक्ये असंख्यातगुणी वैक्रियसमुद्घातकरता। अहोलोयतिरियलोए असंखिज्जगुणाओ। अधोलोके तिर्यग्लोके असंख्यातगुणी गमनागमनवती। अहोलोए असं० तद्वयो अधोलोके असंख्यातगुणी। तिरियलोए असंखिज्जगुणाओ खित्ताणुवाएणं। तिर्यग्लोके च

तेभ्य ऊर्द्धलोके तिर्यग्लोके प्रतरद्वयरूपे असंख्येयगुणा केषाचित्स्वस्थानातवर्त्तितया अपरेषा स्वस्थानप्रत्यासन्नतया ऽन्येषा बहूना मन्दरादिषु गमनागमनभावतो यथोक्तप्रतरद्वयसंस्पर्शात् तथा समुदायेन चिन्त्यमानानामतिबहुत्वभावात्, तेभ्य स्त्रैलोक्ये संख्येयगुणा यतोलोकत्रयवर्त्तिनोपि व्यन्तरा स्तथाविधप्रयत्नविशेषभावतो वैक्रियसमुद्घातेन समवहता सन्त स्त्रीनपि लोकानात्मप्रदेशै स्पृशन्ति तत्र प्रागुक्तेभ्यो तिबहव इति संख्येय गुणा' स्तेभ्यो धोलोकतिर्यग्लोके प्रतरद्वयरूपे ऽसंख्येयगुणा स्तद्धि बहूना व्यन्तराणा स्वस्थानाना तत स्तत्संस्पर्शिनो बहव इत्यसंख्येयगुणा , अधोलोके संख्येयगुणा अधोलौकिकग्रामेषु तेषा स्वस्थानभावा द्बहूना मधोलोके क्रीडार्थगमनभावात्, तेभ्य स्तिर्यग्लोके ऽसंख्येयगुणा स्तिर्यग्लोकस्य तेषा स्वस्थानत्वात्, एव व्यन्तरदेवीविषयमप्यल्पबहुत्व वक्तव्य साम्प्रत ज्योतिष्कविषय मल्पबहुत्व माह-खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा जोइसिया इत्यादि ॥ क्षेत्रानुपातेन ज्योतिष्का श्चिन्त्यमाना सर्वस्तोका ऊर्द्धलोके केषाचिदेव मन्दरे तीर्थकरजन्ममहोत्सवनिमित्त मञ्जनदधिमुखेषु प्राह्निकानि

मित्त मपरेषा केषाचि न्मन्दरादिषु क्रीडानिमित्त गमनसम्भवात्, तेभ्य ऊर्द्धलोकतिर्यग्लोके प्रतरद्वयरूपे ऽसंख्येयगुणा स्तद्धि प्रतरद्वय केचित्स्व स्थाने स्थिता अपि स्पृशन्ति प्रत्यासन्नत्वा दपरे वैक्रियसमुद्घातसमवहता अन्ये ऊर्द्धलोके गमनागमनभावत स्ततो ऽधिकृतप्रतरद्वयस्पर्शिन पूर्वो क्तेभ्यो ऽसंख्येयगुणा, स्तेभ्य स्त्रैलोक्ये त्रैलोक्यसंस्पर्शिन संख्येयगुणा , यद्धि ज्योतिष्का स्तथाविधतीव्रप्रयत्नवैक्रियसमुद्घातेन समवहता स्त्रीनऽपि लोकान् स्वप्रदेशै स्पृशन्ति ते स्वभावतो ऽप्य ऽतिबहव इति । पूर्वोक्तेभ्य संख्येयगुणा स्तेभ्यो ऽधोलोकप्रतरद्वये वर्त्तमाना असंख्येयगुणा, यतो बहवो ऽधोलौकिकग्रामेषु समवसरणादिनिमित्त अधोलोके क्रीडानिमित्त गमनागमनभावतो बहवश्च ऽधोलोका ज्योतिष्केषु समुत्पद्यमाना यथो क्त प्रतरद्वय स्पृशन्ति, ततो घटन्ते पूर्वोक्तेभ्यो ऽसंख्येयगुणा, स्तेभ्य संख्येयगुणा अधोलोके बहूनामधोलोके क्रीडानिमित्त मधोलौकिकग्रामेषु स मवसरणादिषु चिरकालमवस्थानात्, तेभ्यो ऽसंख्येयगुणा स्तिर्यग्लोके तिर्यग्लोकस्य तेषा स्वस्थानत्वात्, एव ज्योतिष्कदेवीसूत्रमपि भावनीय ।

पा ४॥

॥ टी

सांप्रति वैमानिकदेवविषयमल्पबहुत्व माह-खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा वेमाणिया देवा उड्ढलोयतिरियलोए इत्यादि ॥ क्षेत्रानुपातेन क्षेत्रानुसारेण चिंत्यमाना वैमानिकादेवा सर्वस्तोका ऊर्द्धलोके ऊर्द्धलोकतिर्यग्लोकसंज्ञे प्रतरद्वये यतोय अधोलोके तिर्यग्लोके वा वर्त्तमाना जीवा वैमानिकेषू त्प द्यन्ते येच तिर्यग्लोके वैमानिका गमनागमन कुर्वंति, येच विवक्षितप्रतरद्वयाध्यासिन क्रीडास्थान संश्रिता येच तिर्यग्लोकेस्थिता एव वैक्रियसमु द्घातमारणांतिकसमुद्घातवा कुर्वाणा स्तथाविधप्रयत्नविशेषा दूर्द्ध मात्मप्रदेशदण्ड निसृजंति त विवक्षित प्रतरद्वय स्पृशंति, तेचा ऽल्पे इति । सर्वस्तोका स्तेभ्य स्त्रैलोक्ये संख्येयगुणा, कथ मिति चे दुच्यते-इह ये ऽधोलौकिकग्रामेषु समवसरणादिनिमित्त मऽधोलोकेवा क्रीडानिमित्तग ता सतो वैक्रियसमुद्घात मारणांतिकसमुद्घातवा कुर्वाणा स्तथाविधप्रयत्नविशेषात् दूरतर मूर्द्धविक्षिप्तात्मप्रदेशदण्डा यच वैमानिकत्वा दौलिकाग त्या च्यवमाना अधोलौकिकग्रामेषु समुत्पद्यते तेकिल त्रीनपि लोकान् स्पृशंति, यत्वश्च पूर्वोक्तेभ्य इति संख्येयगुणा, स्तेभ्योपि अधोलोकतिर्य ग्लोके प्रतरद्वयसंज्ञे संख्येयगुणा, अधोलौकिकग्रामेषु समवसरणादौ गमनागमनभावतो विवक्षितप्रतरद्वयाध्यासिन समवसरणादौवा ऽवस्थानतो

लोए संखि० तिरियलोए असंखे० खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा वेमाणिया देवा २००० उड्ढलोयतिरियलोए तेलुक्के संखेज्ज० अहोलोयतिरियलोय संखेज्ज० अहोलोए संखेज्जगुणा तिरियलोय संखेज्ज० उड्ढलोए

॥ सू

सख्यातगणो समोसरणक्रीडार्थे ज्योतिषीकवेदे चेत्रवाथो । सव्वत्थोवा जोयसियादेवा उड्ढलोए । सर्वथोडा ज्योतिषी ऊर्द्धलोके मेरुनेविषे जन्मोत्सवेरामति कालें। उड्ढलोयतिरिलोए असंखिज्जगुणा। तेहथी ऊर्द्धलोकतिर्यक्लोके वे प्रतरस्पर्शे असं० वैक्रियसमुद्घातवेला। तिलोके संखिज्जगुणा । त्रैलोक्ये स ख्यातगुणा वैक्रियसमुद्घातवेला । अहोलोयतिरियलोए असंखिज्जगुणा । अधोलोके तिरछेलोके असंख्यातगुणा गमनागमनभणीतिर्यचमां उपजता। अहोलोए संखिज्जगुणा तिरियलोए संखिज्जगुणा। अधोलोके संख्यातगुणा समोसरणादिक्रीडार्थे तिर्यक्लोके संख्यातगुणा स्वस्थानवती। खित्ताणुवाएण सव्वत्थोवाओ जोयसिणीओ देवीओ उड्ढलोए। सर्वथोडीज्योतिषणी कहेछे सर्वथोडीज्योतिषणी ऊर्द्धलोके ज्योतिषीनीपरेभावना । उड्ढलोयतिरिय

॥ भ

वहूना यथोक्तप्रतरद्वयसंस्पर्शनाभावात्, तेभ्यो धोलोके सङ्ख्येयगुणा ; अधोलौकिकग्रामेषु बहूना समवसरणादाव ऽवस्थानाभावात्, तेभ्य स्तिर्य ग्लोके सङ्ख्येयगुणा बहुषुसमवसरणेषु बहुषुच क्रीडास्थानेषु बहूना मवस्थानाभावात्' तेभ्य ऊर्द्धलोके ऽसङ्ख्येयगुणा ऊर्द्धलोकस्य स्वस्थानत्वात्, त

असंखिज्ज० खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवाउ वेमाणिणीउ देवीउ उड्ढलोयतिरियलोए तेलुक्को संखेज्जगुणाउ अ होलोयतिरियलोए संखिज्ज० अहोलोयसंखेज्ज० तिरियलोए संखेज्ज० उड्ढलोए असंखि० खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा एगिंदिया जीवा उड्ढलोए तिरियलोए, अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असं

लाए असंखिज्जगुणाओ। ऊर्द्धलोके तिर्यक्लोके असंख्यातगुणा। तिम के संखि० त्रिलोके संख्यातगुणा। अहोलोयतिरियलोए असं० अधोलोकतिर्यक्लोक असंख्यातगुणो। अहोलोए संखि० अधोलोके संख्यातगुणो। हिवे वैमानिकना कहेछे। खित्ताणुवाएण सव्वत्थोवा विमाणीयादेवा उड्ढलोयतिरियलो ए। सर्वथोडावैमानिकदेवता ऊर्द्धलोकतिर्यक्लोकेने किमतिर्यक्लोके वर्त्ततोजीव वैमानिकमा उपजे तथा वैक्रिय समुद्घात स्वप्रदेशेकरी बेप्रतरस्पर्श तिलोके संखिज्जगुणा। तेजीव थोडाछे त्रैलोक्यसंख्यातगणा समोसरणार्थे। अहोलोयतिरियलोए संखिज्जगुणा। अधोलोक तिर्यक्लोके बेप्रतरस्पर्श समोस रणार्थे। अहोलोए स० तिरियलोए स०। अधोलोके संख्यातगणा समोसरणार्थे तिरछेलोके संख्यातगुणा रमवाभणी। उड्ढलोए असं० खित्ताणुवाएण। ऊर्द्धलोक असंख्यातगुणा स्वस्थानमाटे हिवे देवीनो कहेछे। सव्वत्थोवाओ वेमाणणीओ देवीओ उड्ढलोयतिरियलोए तिलोके स०। सर्वथोडीवैमानिक नीदेवी ऊर्द्धलोके तिरछेलोके वैक्रियसमुद्घातकरता मनुष्यादिदेवीमा उपजे ते थोडीत्रिलोकने संख्यातगणी समोसरणार्थे। अहोलोयतिरियलोए संखि०। अधोलोके संख्यातगुणी समोसरणभणी तिरछेलोके संख्यातगुणा। अहोलोए स० तिरियलोए स०। अधोलोके समोसरणभणी तिरछेलोके स ख्यातरमवाभणी। उड्ढलोए असंखिज्जगणाओ। ऊर्द्धलोके असंख्यातगणी स्वस्थानभणी। खित्ताणुवाएण सव्वत्थोवा एगेंद्रिजीवा उड्ढलोए तिरिलोए। एकेंद्रियनो कहेछे सर्वथोडा जेनायोनोता एकेंद्रियजीव ऊर्द्धलोक तिरछेलोक मरणांतसमुद्घातकरता प्रतरबेस्पर्श तेजीवथोडा। अहोलोयतिरियलोए।

एव वैमानिकदेवीविषयसूत्र मपि भावनीयं, सांप्रत्ये केंद्रियादिगत अल्पबहुत्व माह-खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा एगिंदि
त्र सदैवबहुतरभावात्, एव वैमानिकदेवीविषयसूत्र ... सर्वस्तोका ऊर्द्धलोकतिर्यग्लोके ऊर्द्धलोकतिर्यग्लोकसंज्ञे प्रतरद्वये यतो ये तत्रस्थाएव केचन
या इत्यादि ॥ क्षेत्रानुपातेनचिन्त्यमाना एकेंद्रियाजीवा सर्वस्तोका ऊर्द्धलोकतिर्यग्लोके ... कृतमारणान्तिकसमुद्घाता स्ते किल विवक्षित प्रतरद्वय स्पृशन्ति स्वल्पाश्च ते इति
येचो र्द्धलोका त्तिर्यग्लोके तिर्यग्लोकाद्वा ऊर्द्धलोके समुत्पित्सव ... तिर्यग्लोके तिर्यग्लोकाद्वा ऽधोलोके ईलिकागत्या समुत्पद्यमाना विव
सर्वस्तोका, तेभ्यो ऽधोलोकतिर्यग्लोके विशेषाधिका यतो ये अधोलोका त्तिर्यग्लोके ... तथा धोलोका त्तिर्यग्लोके समुत्पद्यमाना अवाप्यते इति विशेषाधि
क्षित प्रतरद्वय स्पृशन्ति तत्रस्थाश्च ऊर्द्धलोकाधो लोकोविशेषाधिक स्ततो वरयो धोलोका त्तिर्यग्लोके ... तेभ्य स्त्रैलोक्ये संख्येयगुणा वरवोद्धि ऊर्द्धलोका द
का; तेभ्य स्तिर्यग्लोके असंख्येयगुणा उक्तप्रतरद्विकक्षेत्रा त्तिर्यग्लोकक्षेत्रस्याऽसंख्येयगुणत्वात्, तेभ्य स्त्रैलोक्ये संख्येयगुणा ...

एगिंदिया जीवा अपज्जत्तगा, उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा एगिंदिया जीवा अपज्जत्तगा, उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोए तिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असं०, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा खेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखिज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया ।

खेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा ... विशेषाधिक उपजता वेमतरनैरयिक तेमाटे तिरछेलोके असंख्यातगुणा घणमाटे । तिलोके
अधोलोके तिरछेलोके । विसेसाहिया तिरियलोए असं० । विशेषाधिक उपजता वेमतरनैरयिक तेमाटे तिरछेलोके असंख्यातगुणा घणमाटे । अहोलोए विसेसाहियाथा खेत्ताणुवाएणं । अधोलो
असंखिज्जगुणा उड्ढलोए असं० । तेहथो त्रिलोके असंख्यातगुणा जे जघायो नीचा ऊर्द्धलोकथी । अहोलोए विसेसाहिया खेत्ताणुवाएणं । सर्वथोडा जीव एकेंद्रिय अपर्याप्ता ऊर्द्धलोक तिर्यक्लो
के विशेषाधिक उपजावता घणा चतुर्थो । सव्वत्थोवा एगिंदीपज्जत्तगा उड्ढलोयतिरियलोए । सर्वथोडा जीव एकेंद्रिय अपर्याप्ता ऊर्द्धलोक तिर्यक्लो
के सर्वपर्याप्तानी परें । अहोलोयतिरियलोए वि० तिरियलोए असं० । अधोलोके तिरछेलोक विशेषाधिक तिरछेलोके असं० । त्रिलोके असं० उड्ढलोए
असं० । त्रिलोके असं० ऊर्द्धलोक । अहोलोए विसेसाहिया । ऊर्द्धलोके विशेषाधिक । खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा एगिंदियपज्जत्तगा उड्ढलोयतिरियलोए ।
... ऊर्द्धलोकतिर्यक्लोके भावनापाछलीपरें । अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया तिरियलोए । अधोलोके तिरछेलोके

॥ टीका ॥

भोगीके अधोलोकाद्वा ऊर्द्धलोके समुत्पद्यते तेषाच मध्ये बहवो मारणांतिकसमुद्घातवशा द्विविधामलप्रदेशदला स्त्रीनपिलोकान् स्पृशति ततो भवत्यऽसंख्येयगुणा, तेभ्य ऊद्धलोके असंख्येयगुणा उपपातक्षेत्रस्या ऽतिबहुत्वा तेभ्यो ऽधोलोके विशेषाधिका ऊद्धलोकक्षेत्रा दधोलोकक्षेत्रस्य विशेषाधिकत्वात्' एवम ऽपर्याप्तविषय पर्याप्तविषय च सूत्र भावयितव्य मऽधुना द्वीन्द्रियविषय मल्पबहुत्व माह-खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा बेइंदिया इत्यादि ॥ क्षेत्रानुपातेन क्षेत्रानुसारेण चिंत्यमाना द्वीन्द्रिया सर्वस्तोका ऊर्द्धलोके ऊद्धलोकस्यैकदेशे तेषा सम्भवात्, तेभ्य ऊर्द्धलोकतिर्यग्लोके प्रत

॥ मूल ॥

सव्वत्थोवा एगिया जीवा पज्जत्तगा, उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा बेइंदिया उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असं०, अहोलोए तिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए संखेज्जगुणा। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा बेइंदिया अपज्जत्तया उड्ढलोए। उड्ढलोयतिरियलोए संखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, अहोलोयतिरियलोए अस

॥ भाषा ॥

विशेषाधिक तिरछेलोकें असंख्यातगुणा। तिलोक अस० उड्ढलाए अस० त्रिलोके असंख्यातगुणा ऊर्द्धलोके असंख्यातगुणा। अहोलोए विसेसाहिया अधोलोके विशेषाधिक। खित्ताणुवाएण सव्वत्थोवाबेंदिया उड्ढलोय उड्ढलोयतिरियलोए असंखिज्जगुणा तिलोके असंखिज्जगुणा। क्षेत्राश्रीजाता सर्वथोडाबेंद्रिय ऊर्द्धलोके मेरुनीचूलिकावाविमाहिद्वे तेभणी तिर्यक्लोकें किमऊर्द्ध्वो अधउपज अधथो ऊर्द्ध उपजे तेभणी समुद्घातवसें मरणांतकरता तीनलोकस्पर्शे। अहोलोयतिरियलोए असंखिज्जगुणा। अधोलोक तिर्यक्लोके असंख्यातगुणा स्वस्थानभणी। अहोलोए संखि० तिरियलोए संखिज्जगुणा। अधोलोके संख्यातगुणा उपजे तिरछेलोकें संख्यातगुणा उपजणनाठाम। खित्ताणुवाएण सव्वत्थोवाबेंदिया अपज्जत्तगा उड्ढलोए। क्षेत्रनामनें सर्वथोडा बेंद्रिय अपर्याप्ता ऊर्द्धलोकें भावनाश्रीघनोपरे। उड्ढलोयतिरियलोए अस०। ऊर्द्धलोके तिर्यक्लोक असंख्यातगुणा। तिलोके अस० तीनलोकस्पर्शे अस

रद्वयरूपे असंख्येयगुणा , यतो ये ऊर्द्धलोका तिर्यग्लोके तिर्यग्लोकाद्वा ऊर्द्धलोके द्वीन्द्रियत्वेन समुत्पत्तुकामा स्तदायुरनुभवत ईलिकागता समुत्प द्यन्ते येच द्वीन्द्रियाएव तिर्यग्लोका दूर्द्धलोके ऊर्द्धलोकाद्वा तिर्यग्लोके द्वीन्द्रियत्वेना ऽन्यत्वेनवा समुत्पत्तुकामा कृतप्रथममारणान्तिकसमुद्घाता अ तएव द्वीन्द्रियायु प्रतिसवेदयमाना समुद्घातवशा च दूरतरविक्षिप्तनिजात्मप्रदेशदण्डा येच प्रतरद्वयाऽध्यासितक्षेत्रसमासीना स्ते यथोक्तप्रतरद्वय स्पर्शिनो वन्व श्चेति पूर्वोक्तेभ्यो ऽसख्येयगुणा, स्तेभ्य स्त्रैलोक्ये ऽसख्येयगुणा यतो द्वीन्द्रियाणा प्राचुर्येणो त्पत्तिस्थानान्य ऽधोलोके तस्माद्वा ऽति प्रभूतानि तिर्यग्लोके तत्र य द्वीन्द्रिया अधोलोका दूर्द्धलोके द्वीन्द्रियत्वेना ऽन्यत्वेन वा समुत्पत्तुकामा कृतप्रथममारणान्तिकसमुद्घाता समुद्घात वशाच्चो त्पत्तिदेश यावद्विक्षिप्तात्मप्रदेशदण्डा स्ते द्वीन्द्रियायु प्रतिसवेदयमाना येचो ऽद्र्ध्वलोका ऽदधोलोके द्वीन्द्रियाशेषकाया याव द्वीन्द्रियत्वेन समु

खेज्जगुणा, अहोलोए सखे०, तिरियलोए सखे० खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा वेइंदिया पज्जत्तया उड्ढलो उड्ढलोयतिरियलोए असखेज्जगुणा, तेलुक्के असखेज्जगुणा, अहोलोयतिरियलोए असखेज्जगुणा, अहोलोए सखेज्जगुणा, तिरियलोए सखेज्जगुणा। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा तेइंदिया उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलो

ख्यातगुणा। अहोलोयतिरियलोए अस० अधोलोके तिर्यकलोके असख्यातगुणा। अहोलोए सखि० अधोलोके सख्यातगुणा। तिरियलोए सखि० तिर छलोके सख्यातगुणा। खित्ताणुवाएण सव्वत्थोवा वेइंदियपज्जत्तगा उड्ढलोए। येतनोमिलेज्ञाता सर्वथोडा बेंद्रियपर्याप्ता ऊर्द्धलोके भावनाप्राघनोपरें। उड्ढतिरियलोए अस० तिलोके अस०। ऊर्द्धलोक तिर्यकलोक असख्यातगुणा त्रिलोके असख्यातगुणा। अहोलोए तिरियलोए अस०। अधोलोके तिरछेलो के असख्यातगुणा। अहोलोए सखि० तिरियलोए सखि०। अधोलोके सख्यातगुणा तिरछेलोके सख्यातगुणा हिवे तेंद्रियकहेछे। खित्ताणुवाएण सव्वत्था वातेइंदिया उड्ढलोए उड्ढलोए तिरियलोए अस० तिलोके अस०। येतनोमले सर्वथाडातेंद्रिय ऊर्द्धलोके बेंद्रियनोपरि तेंद्रियनोपरें भावनाकीजे ऊर्द्धलो क तिरछेलोक असख्यातगुणा त्रिलोके असख्यातगुणा। अहोलोयतिरियलोए अस० अधोलोके तिर्यकलोके असख्यातगुणा। अहोलोए स० तिरियलोए

॥ टीका ॥

त्पद्यमाना द्वीन्द्रियायु रनुभवति त्रैलोक्यसंस्पर्शिन स्तेच पूर्वोक्तेभ्यो ऽसंख्येयगुणा तेभ्यो ऽधोलोकतिर्यग्लोके ऽसंख्येयगुणा यतो ये द्वीन्द्रिया त्र धोलोका त्तिर्यग्लोके येच द्वीन्द्रिया स्तिर्यग्लोका दधोलोके द्वीन्द्रियत्वेन ग्रीपकायत्वेनो त्पित्सव कृतप्रथममारणांतिकसमुद्घाता द्वीन्द्रियायु रनुभव त समुद्घातवशेनो त्पत्तिदेशयाव द्विविस्तात्मप्रदेशदण्डा स्ते यथोक्त प्रतरद्वय स्पृशंति । प्रभूतार्थंति, पूर्वोक्तेभ्यो ऽसंख्येयगुणा स्तेभ्यो ऽधोलो के संख्येयगुणा स्तत्रो त्पत्तिस्थानाना मतिप्रचुराणा भावात्, तेभ्योपि तिर्यग्लोके संख्येयगुणा अतिप्रचुरतराणा योनिस्थानाना तत्र भावात्,

॥ मूल ॥

ए असं० । तेलुक्के असंखेज्जगुणा, अधोलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए संखेज्जगुणा । खेत्ताणुवाएणं स व्वत्थोवा तेइंदिया अपज्जत्तगा उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखिज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, अ होलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए संखेज्जगुणा । खेत्ताणुवाएणं सव्व त्थोवा तेइंदिया पज्जत्तगा उड्ढलोए उड्ढलोएतिरियलोए असंखिज्जगुणा, तेलुक्के असंखिज्जगुणा, अहोलो ए तिरियलोए असंखिज्जगुणा, अहोलोए संखिज्जगुणा, तिरियलोए संखिज्जगुणा । खेत्ताणुवाएणं सव्व

॥ भाषा ॥

संख्ये० । अधोलोके तिरछेलोके संख्य तगुणा । खित्ताणुवाएण सव्वत्थोवातेइंदिया अपज्जत्तगा । क्षेत्रनीमेलेसर्वथोडातेंद्रिय अपर्याप्ता । उड्ढलोए उड्ढ लोयतिरियलोए असं० । ऊर्ध्वलोके भावनावेंद्रनीपरे ऊर्ध्वलोकतिर्यक्लोके असंख्यातगुणा । तिलोके असंखिज्जगुणा । त्रिलोके असंख्यातगुणा अहोलोए तिरियलोए असं० । अधोलोके तिरछेलोके असंख्यातगुणा । अहोलोए संखे० । अधोलोके संख्यातगुणा । तिरियलोए संखि० । तिरछेलोके स ख्यातगुणा । खित्ताणुवाएण सव्वत्थोवा तेइंदियपज्जत्तगा उड्ढलोए । क्षेत्रनामेने सर्वथोडा तेंद्रियपर्याप्ता ऊर्ध्वलोके । उड्ढलोए तिरियलोए असं० । ऊर्ध्व लोक तिरछेलोके असंख्यातगुणा । तिलोके असं० । त्रिलोके असंख्यातगुणा । अहोलोयतिरियलोए असं० । अधोलोके तिरछेलोके असंख्यातगुणा । अहो लोए संखि० तिरियलोए संखि० । अधोलोके संख्याता तिरछेलोके संख्यातगुणा तेंद्रियनीपरि चौरिंद्रिय कहेछे । खित्ताणुवाएण सव्वत्थोवा चउरिंदिया

यथे दमौघिक द्वीद्रियसूत्र तथा पर्याप्ताऽपर्याप्तद्वीद्रियसूत्रौघिकत्रीद्रियपर्याप्तापर्याप्तौघिकचतुरिंद्रियपर्याप्तापर्याप्तसूत्राणि ज्ञावनीयानि, साम्प्रत मौघिकपचेंद्रियविषय मल्पबहुत्वमाह-खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा पचिंदिया तेलोक्के इत्यादि ॥ क्षेत्रानुपातेन चिन्त्यमाना पचेंद्रिया सर्वस्तोका त्रैलोक्ये त्रैलोक्यस्पर्शिनो यतो ये ऽधोलोका दूर्द्धलोके कर्द्धलोकाद्वा ऽधोलोके शेषकाया पचेंद्रियायुरनुभवत इलिकागत्या समुत्पद्यते, येच प चेंद्रिया कर्द्धलोकाद ऽधोलोके अधोलोका दूर्द्धलोके शेषकायत्वेन पचेंद्रियत्वेनचो त्पित्सव कृतमारणांतिकसमुद्घाता समुद्घातवशा चोत्पत्ति

त्थोवा चउरिंदिया जीवा उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा । तेलुक्के असखेज्जगुणा, अहोलोयतिरियलोए असखेज्जगुणा, अहोलोए सखेज्जगुणा, तिरियलोए सखेज्जगुणा। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा चउरिंदियाजीवा अपज्जत्तगा उड्ढलोए, उड्ढलोयतिरियलोए असखेज्जगुणा, तेलुक्के असखेज्जगुणा, अहोलोयतिरियलोए असखेज्जगुणा, अहोलोए सखेज्जगुणा, तिरियलोए सखेज्जगुणा । खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा चउरिंदिया जीवा पज्जत्तगा उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असखेज्जगुणा, तेलुक्के असखेज्जगुणा

जीवा उड्ढलोए। क्षेत्रनेमेले सर्वथोडा चौरिंद्रिय जीव ऊर्द्ध लोक इमसर्वभावना बेंद्रियनीपार करवी। उड्ढलोयतिरियलोए अस० तिलोके अस० अहोलोयतिरियलोए अस०। तिरिछेलोक असख्यातगुणा अधोलोके तिरछेलोके असख्यातगुणा। अहोलोए संखि० तिरियलोए स०। अधोलोके सख्यातगुणा तिरछेलोके सख्यातगुणा। खित्ताणवाएण सव्वथोवा चउरिंदिय अपज्जत्तगा उड्ढलोए। क्षेत्रनेमेले सर्वथोडा चतुरिंद्रिय जीव अपर्याप्ता ऊर्द्ध लोके बेंद्रियनीपरे ऊर्द्ध लोके। उड्ढलोयतिरियलोए अस० तिलोके अस०। ऊर्द्ध लोक तिरछेलोक अ० त्रिलोके असख्यातगुणा । अहोलोयतिरियलोए अस० अधोलोक तिरछेलोके असख्यातगुणा। अहोलोए स० तिरियलोए संखि०। अधोलोके सख्येयगुणा तिरछेलोके सख्यातगुणा । खित्ताणुवाएण सव्वथोवा चउरिंदियपज्जत्तगा उड्ढलोए। क्षेत्रनेमेले सर्वथोडा चतुरिंद्रिय जीव पर्याप्ता ऊर्द्ध लोके। उड्ढलोए तिरियलोए अ० तिलोके अस०। ऊर्द्ध लोक ति

॥ टीका ॥

देशयाधत् विविप्तात्मप्रदेशदण्डा पचेंद्रियायु रथाप्यनुभवति ते त्रैलोक्यस्पर्शिन स्तोषा स्पैइति । सर्वस्तोका स्तेभ्य ऊर्द्धलोकतिर्यग्लोके प्रतरद्वयरूपे सख्येयगुणा प्रभूततराणा मुपपातेन समुद्घातेन वा यथोक्तप्रतरद्वयसस्पर्शसम्भवात्, तभ्यो ऽधोलोकतिर्यग्लोके सख्येयगुणा अतिप्रभूततराणा मुपपातसमुद्घाताभ्या मऽधोलोकतिर्यग्लोकसत्कप्रतरद्वयसस्पर्शभावात्, तेभ्य ऊर्द्धलोके सख्येयगुणा वैमानिकाना मऽवस्थानभावात्, तेभ्यो ऽधोलोके सख्येयगुणा वैमानिकदेवेभ्य सख्येयगुणाना नैरयिकाणा तत्र भावात्' तेभ्य स्तिर्यग्लोके ऽसख्येयगुणा समूर्च्छिमजलचरखचरादीना व्यन्तरज्योतिष्काणा समूर्च्छिममनुष्याणाच तत्र भावात्, एव पचेंद्रियाऽपर्याप्तसूत्रमपि भावनीय, पचेंद्रियपर्याप्तसूत्र सिद्-खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा पचिंदिया पज्जत्ता उड्ढलोए इत्यादि ॥ क्षेत्रानुपातेन चिन्त्यमाना पचेंद्रिया पर्याप्ता सर्वस्तोका ऊर्द्धलोके प्रायोवैमानिकानामेव तत्र भावात्, तेभ्य ऊर्द्धलोकतिर्यग्लोके प्रतरद्वयरूपे ऽसख्येयगुणा विवक्षितप्रतरद्वयप्रत्यासन्नज्योतिष्काणा तदध्यासितक्षेत्राश्रितव्यन्तरतिर्यग्पचेंद्रि

॥ मूल ॥

अहोलोयतिरियलोए असखेज्जगुणा, अहोलोए सखेज्जगुणा, तिरियलोए सखे० । खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा पचिंदिया तेलुक्के उड्ढलोयतिरियलोए असखेज्जगुणा, अहोलोए तिरियलोए सखेज्जगुणा, उड्ढलोए सखेज्जगुणा, अहोलोए सखेज्जगुणा, तिरियलोए असखेज्जगुणा । खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा पचिंदिया

॥ भाषा ॥

रछेलोके असख्यातगुणा । ऊर्द्धलोके असख्यातगुणा । अहोलोयतिरियलोए असं० । अधोलोके तिरछेलोके असख्यातगुणा । अहोलोए स० तिरियलोए स० । अधोलोके तिरछेलोके सख्यातगणा । खित्ताणुवाएण सव्वत्थोवा पचिंदिया तिलोके उड्ढलोए तिरियलोए स० अहोलोयतिरियलोए स० । चेत्रमेलोने सर्वथाडा पचेंद्रिय तीनलोकना अर्णफार कह्या अधअधना ऊर्द्ध सेलकागति उपजे तेथाडा ऊर्द्धलोक तिरछेलोक सख्यातगुणा । उड्ढलोए स० अहोलोए असं० तिरियलोए असखिज्जगणा । उपपातसमुद्घातवसे वेप्रतरपुरसे अधोलोक तिर्यग्लोके सख्यात० अतिप्रभूततर उपपातसमुद्घात न वसे बे प्रतरसर्श ऊर्द्धलोके असख्यातविमानमा उपजता तेहथी अधोलोके असख्यातानारकी माहि उपजे घणा तेमाटे घणा मनुष्य तिरछेलोके उपजे ।

यचे दमौघिक द्वीद्रियसूत्र तथा पर्याप्ताऽपर्याप्तद्वीद्रियसूत्रौघिकत्रीद्रियपर्याप्तापर्याप्तौघिकचतुरिंद्रियपर्याप्तापर्याप्तसूत्राणि भावनीयानि, साम्प्रत मौघिकपचेंद्रियविषय मल्पबहुत्वमाह-खत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा पचिंदिया तेलोक्के इत्यादि ॥ क्षेत्रानुपातेन चिन्त्यमाना पचेंद्रिया सर्वस्तोका त्रैलोक्ये त्रैलोक्यसस्पर्शिनो यतो ये ऽधोलोका दूर्द्धलोके ऊर्द्धलोकाद्वा ऽधोलोके शेषकाया पचेंद्रियायुरनुभवत इलिकागत्या समुत्पद्यते, येच प चेंद्रिया ऊर्द्धलोकाद ऽधोलोके अधोलोका दूर्द्धलोक शेषकायत्वेन पचेंद्रियत्वेनचो त्पित्सव कृतमारणातिकसमुद्घाता समुद्घातवशा चोत्पत्ति

त्थोवा चउरिंदिया जीवा उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा । तेलुक्के असंखेज्जगुणा, अहोलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए संखेज्जगुणा। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा चउरिंदियाजीवा अपज्जत्तगा उड्ढलोए, उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, अहोलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए संखेज्जगुणा । खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा चउरिंदिया जीवा पज्जत्तगा उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा

जीवा उड्ढलोए। क्षेत्रनीमेले सर्वथोडा चौरिंद्रिय जीव ऊर्द्धलोक इमसर्वभावना बेंद्रियनीपरे करवी। उड्ढलोयतिरियलोए असं० तिलोके असं० अहो लोयतिरियलोए असं०। तिरिछेलोक असंख्यातगुणा अधोलोके तिरछेलोके असंख्यातगुणा। अहोलोए संखि० तिरियलोए सं०। अधोलोके संख्यातगु णा तिरछेलोके संख्यातगुणा। खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा चउरिंदिय अपज्जत्तगा उड्ढलोए। क्षेत्रनीमेले सर्वथोडा चतुरिंद्रिय जीव अपर्याप्ता ऊर्द्धलोके बेंद्रियनीपरे ऊर्द्धलोके। उड्ढलोयतिरियलोए असं० तिलोके असं०। ऊर्द्धलोक तिरछेलोक अ० त्रिलोके असंख्यातगुणा। अहोलोयतिरियलोए असं० अधोलोक तिरछेलोके असंख्यातगुणा। अहोलोए सं० तिरियलोए संखि०। अधोलोके संख्यातगुणा तिरछेलोके संख्यातगुणा। खित्ताणुवाएणं सव्वत्थो वा चउरिंदियपज्जत्तगा उड्ढलोए। क्षेत्रनीमेले सर्वथोडा चतुरिंद्रिय जीव पर्याप्ता ऊर्द्धलोके। उड्ढलोए तिरियलोए अ० तिलोके असं०। ऊर्द्धलोक ति

विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखिज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया, खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा पुढविकाइया अपज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखिज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा पुढविकाइया पज्जत्तया उड्ढलोए तिरियलोए तिरियलोयअहोलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलोक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया, खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा आउकाइया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए वि

धोलोक तिरछेलोके सख्यातगुणा यथाव्यतर स्वस्थान पणा माटे। स० तिरियलोए सखिज्जगणा खित्ताणुवाएण सव्वत्थोवा पुढवीकाइया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया। तेहथी तिर्यक्लोके सख्यातगुणा पचेंद्रियस्वस्थान तिर्यचमनुष्यमाहि नावै। हिवै एके द्रजनो अल्पबहुत्व कहेछे क्षेत्रनोमेले सर्वथोडा पृथिवीकाइक ऊर्द्धलोक तिर्यग्लोके भावना सर्वपाछलो परिजाणवो। अधोलोके तिरछेलोके विशेषाधिक। तिरियलोए असं० तिलोके असं० उड्ढलोए असं० अहोलोए विसेसाहिया। तिर्यक्लोके असख्यातगुणा त्रिलोके असख्यातगुणा ऊर्द्धलोक असख्यातगुणा अधोलोके विशेषाधिक। खित्ताणुवाएण सव्वत्थोवा पुढवीकाइय अपज्जत्तगा उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया। क्षेत्रनोमेले सर्वथोडा पृथ्वीकाइया अपर्याप्ता ऊर्द्धलोक तिरछेलोके भावनापाछलो परे। ऊर्द्धलोक अधोलोके विशेषाधिक। तिरियलोए असं० तिलोके असं० उड्ढलोए असंखि०। तिरछेलोके असख्यातगुणा त्रिलोके असख्यातगणा ऊर्द्धलोके असख्यातगुणा। अहोलोए विसेसाहिया। अधोलोके विशेषाधिक। खित्ताणुवाएण सव्वत्थोवा पुढवीकाइयपज्जत्तगा उड्ढलोयतिरियलोए। क्षेत्रनोमेले सर्वथोडा पृथिवीकाइयापर्याप्ता ऊर्द्धलोके तिर्यक्लोके भावनापाछलोपरे। अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया। अधोलोके विशेषाधिक तिरछेलोके। तिरियलोए असं० तिलोके असं० उड्ढलोए असं० अहोलोए विसेसाहिया। तिरछेलोके

याणा वैमानिकव्यंतरज्योतिष्कविद्याधरचारणमुनितिर्यग्पंचेंद्रियाणा मूर्द्धलोके तिर्यग्लोके च गमनागमने कुर्वंता मऽधिकृतप्रतरद्वयस्पर्शात्, तेभ्य स्त्रैलोक्ये त्रैलोक्यसस्पर्शिन सख्येयगुणा कथ मितिचत् यतो ये भवनपतिव्यंतरज्योतिष्कवैमानिका विद्याधरा वा ऽधोलोकस्था कृतवैक्रियसमुद्घाता स्तथाविधप्रयत्नविशेषा दूर्द्धलोकविक्षिप्तात्मप्रदेशदंडा स्ते त्रीनऽपि लोकान् स्पृशंती ति सख्येयगुणा, स्तेभ्यो ऽधोलोकतिर्यग्लोके प्रतरद्वय रूपे सख्येयगुणा बहवोहिव्यंतरा स्वस्थानप्रत्यासन्नतया भवनपतय स्तिर्यग्लोके ऊर्द्धलोकेवा व्यंतरज्योतिष्कवैमानिका देवा अधोलौकिकग्रामेषु स मवसरणादा वऽधोलोके क्रीडादिनिमित्त च गमनागमनकरणत स्तथा समुद्रेषु केचित्तिर्यग्पंचेंद्रिया स्वस्थानप्रत्यासन्नतया अपरे तदध्यासितक्षेत्रा श्रिततया यथोक्त प्रतरद्वय स्पृशंति तत सख्येयगुणा तेभ्यो ऽधोलोके सख्येयगुणा नैरयिकाणा भवनपतीनाच तत्रा ऽवस्थानात्, तेभ्य स्तिर्यग्

अपज्जत्तया, तेलोक्के उड्ढलोयतिरियलोए असखेज्जगुणा, अहोलोयतिरियलोए सखेज्जगुणा, उड्ढलोए सखेज्जगुणा, अहोलोए सखेज्जगुणा तिरियलोए संखिज्जगुणा खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा पंचिंदिया पज्जत्ता उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए अस०, तेलुक्के अस०, अहोलोयतिरियलोए सखेज्ज० अहोलोए सखेज्ज० तिरियलोए असखेज्ज०, खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा पुढविकाइया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए

खित्ताणवाएण सव्वत्थोवा पचेंदिय अपज्जत्तगा तिलोके। चेत्रनोमेले सर्वथोडा पचेंद्रिय अपर्याप्ता तिरछेत्रिलोके भावना ओघनी परि कहवो। उड्ढ लोयतिरियलोए अस०। ऊर्द्धलोके तिरछेलोके असख्यातगुणा। अहोलोयतिरियलोए संखिज्जगणा उड्ढलोए संखिज्जगुणा अहोलोए स० तिरियलोए असंखिज्जगुणा। अधोलोके तिरछेलोके सख्यातगुणा ऊर्द्धलोके अधोलोके सख्यातगुणा तिरछेलोके असख्यातगुणा। खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा पचेंदि यपज्जत्तगा उड्ढलो उड्ढलोयतिरियलोए अस०। चेत्रनोमेले सर्वथोडा पचेंद्रिय पर्याप्ता ऊर्द्धलोके वेमानिकने भावे तेहथी ऊर्द्धलोके तिर्यग्लोके अ सख्यातगुणा वेप्रतरपुरसे ज्योतिषी विद्याधरचारण श्रमणने गमनागमने। तिलोके सखिज्जगुणा। त्रिलोके सख्यातगुणा। अहोलोयतिरियलोए। अ

विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखिज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया, खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा पुढविकाइया अपज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखिज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा पुढविकाइया पज्जत्तया उड्ढलोए तिरियलोए तिरियलोयअहोलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलोक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया, खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा आउकाइया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए वि

धालोक तिरछेलोके सख्यातगुणा घणाथ्यतर स्थान घणा माटे। स० तिरियलोए संखिज्जगणा खित्ताणुवाएण सव्वत्थोवा पुढवीकाइया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया। तेहथी तिर्यकलोके सख्यातगुण पचेंद्रियस्थान तिर्यंचमनुष्यमाहि नावे। हिवे एके द्रनो अल्पबहुत्व कहेछे क्षेत्रनीमेले सर्वथोडा पृथिवीकाइक ऊर्द्धलोक तिर्यलोके भावना सर्वपाछली परिजाणवी। अधोलोके तिरछेलोके विशेषाधिक। तिरियलोए असं० तिल्लोके असं० उड्ढलोए असं० अहोलोए विसेसाहिया। तिर्यकलोके असख्यातगुणा त्रिलोके असख्यातगुणा ऊर्द्धलोक असख्यातगुणा अधोलोकेविशेषाधिक। खित्ताणुवाएण सव्वत्थोवा पुढवीकाइय अपज्जत्तगा उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया। क्षेत्रनीमेले सर्वथोडा पृथवीकाइया अपर्याप्ता ऊर्द्धलोक तिरछेलोके भावनापाछली परें। ऊर्द्धलोक अधोलोके विशेषाधिक। तिरियलोए असं० तिल्लोके असं० उड्ढलोए असंखि०। तिरछेलोके असख्यातगुणा त्रिलोके असख्यातगुणा ऊर्द्धलोके असख्यातगुणा। अहोलोए विसेसाहिया। अधोलोके विशेषाधिक। खित्ताणुवाएण सव्वत्थोवा पुढवीकाइयपज्जत्तगा उड्ढलोयतिरियलोए। क्षेत्रनीमेले सर्वथोडा पृथिवीकाइयापर्याप्ता ऊर्द्धलोके तिर्यकलोके भावनापाछलीपरे। अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया। अधोलोके विशेषाधिक तिरछेलोके। तिरियलोए असं० तिल्लोके असं० उड्ढलोए असं० अहोलोए विसेसाहिया। तिरछेलोके

सेसाहिआ तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असखेज्जगुणा, उड्ढलोए असखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा आउकाइया अपज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया तिरियलोए असखेज्जगुणा, तेलोक्के असखेज्जगुणा, उड्ढलोए असखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा आउकाइया पज्जत्तया उड्ढलोएतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असखेज्जगुणा, तेलुक्के असखेज्जगुणा, उड्ढलोए असखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा तेउकाइया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया,

असख्यातगुणा त्रिलोके असख्यातगुणा ऊर्द्धलोके असख्यातगुणा अधोलोके विशेषाधिक। खित्ताणुवाएण सव्वत्थोवा आउकाइया उड्ढलोयतिरियलोए। चेवनोमले सर्वथोडा अप्काइया अपर्याप्ता ऊर्द्धलोके तिरछेलोके। अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया तिरियलोए अस०। अधोलोके तिरछेलोके विशेषाधिक तिरछेलोके असख्यातगणा। तिलोके अ० उड्ढलोए अ०। त्रिलोके असख्यातगणा ऊर्द्धलोके असख्यातगुणा। अहोलोए विसेसाहिया खित्ताणुवाएण। अधोलोके विशेषाधिक चेवनोमले सर्वथोडा। आउकाइयअपज्जत्तगा उड्ढलोयतिरियलोए। अपकाइया अपर्याप्ता ऊर्द्धलोके तिरछेलोके सर्व एके द्रिवनोपरे भावना। अहोलोए तिरियलोए विसेसाहिया। अधोलोके तिरछेलोके विशेषाधिक। तिरियलोए असखेज्जगुणा तिलोके अ०। तिरछेलोके असख्यातगुणा त्रिलोके असख्यातगुणा। उड्ढलोए अस० अहोलोए विसेसाहिया। ऊर्द्धलोके असख्यातगुणा अधोलोके विशेषाधिक। खित्ताणुवाएण सव्वत्थोवा आउकाइयपज्जत्तगा। चेवनोमले सर्वथोडा अपकाइयापर्याप्ता। उड्ढलोयतिरियलोए विसेसाहिया। ऊर्द्धलोके तिर्यक्लोके। अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया तिरियलोए अ०। अधोलोके तिर्यक्लोके विशेषाधिक तिरछेलोके असंख्यातगुणा। तिलोके अ० उड्ढलोए अ० अहोलोए विसेसाहिया। त्रिलोके असख्यातगुणा ऊर्द्धलोके असख्यातगुणा अधोलोके विशेषाधिक। खित्ताणुवाएण सव्वत्थोवा तेउकाइया उड्ढलोयतिरियलोए। चेव

॥ मूल ॥

तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्ज०, उड्ढलोए असंखिज्ज०, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा तेउकाइया अपज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखिज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा तेउकाइया पज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा वाउकाइया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया। तिरियलोए अ

॥ भाषा ॥

नीमेले सर्वथोडा तेउकाइया ऊर्द्धलोक तिर्यक्लोके भावनापाछलीपरे। अहोलोयतिरियलोए विशेषाहिया तिरियलोए अ०। अधोलोके तिरछेलोके विशेषाधिक तिरछेलोके असंख्यातगुणा। तिलोके अस० उड्ढलोए अ० अहोलोए विसेसाहिया। त्रिलोके असंख्यातगुणा ऊर्द्धलोके असंख्यातगुणा अधोलोके विशेषाधिक। खित्ताणुवाएण सव्वत्थोवा तेउकाइयअपज्जत्तगा। चवनोमले सर्वथोडा तेउकाइया अपर्याप्ता। उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया। ऊर्द्धलोकतिर्यक्लोके अधोलोके तिरछेलोके विशेषाधिक। तिरियलोए अ० तिलोके अ० उड्ढलोए अ० अहोलोए विसेसाहिया। तिरछेलोके असंख्यातगुणा त्रिलोके असंख्यातगुणा ऊर्द्धलोके असंख्यातगुणा अधोलोके विशेषाधिक। खित्ताणुवाएण सव्वत्थोवा तेउकाइयपज्जत्तगा चवनोमले सर्वथोडा तेउकाइयापर्याप्ता। उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया। ऊर्द्धलोके तिर्यक्लोके अधोलोके तिर्यक्लोके विशेषाधिक। तिरियलोए अ० तिलोके अ० उड्ढलोए अ०। तिर्यक्लोके असंख्यातगुणा ऊर्द्धलोके असंख्यातगुणा। अहोलोए वि० खित्ताणुवाएण सव्वत्थोवा। अधोलोके विशेषाधिक चेत्रनोमले सर्वथोडा। वायुकाईया उड्ढलोयतिरियलोए। वायुकाईया ऊर्द्धलोके तिर्यक्लोके। अहोलोयतिरियलोए विसे० अधोलोके तिरछेलोके विशेषाधिक। तिरियलोए अ० तिलोके अ० उड्ढलोए अ० अहोलोए विसेसाहिया। तिरछेलोके असंख्यातगुणा त्रिलोके असंख्या

सेसाहिया तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा आउकाइया अपज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलोक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा आउकाइया पज्जत्तया उड्ढलोएतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा तेउकाइया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया,

असंख्यातगुणा त्रिलोके असंख्यातगुणा ऊर्द्धलोके असंख्यातगुणा अधोलोके विशेषाधिक। खित्ताणुवाएण सव्वत्थोवा आउकाइया उड्ढलोयतिरियलोए। क्षेत्रनीमले सर्वथोडा अपकाइया अपर्याप्ता ऊर्द्धलोके तिरछेलोके। अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया तिरियलोए अस०। अधोलोके तिरछेलोके विशेषाधिक तिरछेलोके असंख्यातगुणा। तिलोके अ० उड्ढलोए अ०। त्रिलोके असंख्यातगुणा ऊर्द्धलोके असंख्यातगुणा। अहोलोए विसेसाहिया खित्ताणुवाएण। अधोलोके विशेषाधिक क्षेत्रनीमले सर्वथोडा। आउकाइअपज्जत्तगा उड्ढलोयतिरियलोए। अपकाइया अपर्याप्ता ऊर्द्धलोके तिरछेलोके सर्व एके द्रियनीपरें भावना। अहोलोए तिरियलोए विसेसाहिया। अधोलोके तिरछेलोके विशेषाधिक। तिरियलोए असंखेज्जगुणा तिलोके अ०। तिरछेलोके असंख्यातगुणा त्रिलोके असंख्यातगुणा। उड्ढलोए अस० अहोलोए विसेसाहिया। ऊर्द्धलोके असंख्यातगुणा अधोलोके विशेषाधिक। खित्ताणुवाएण सव्वत्थोवा आउकाइयपज्जत्तगा। क्षेत्रनीमले सर्वथोडा अपकाइयापर्याप्ता। उड्ढलोयतिरियलोए विसेसाहिया। ऊर्द्धलोके तिर्यकलोके। अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया तिरियलोए अ०। अधोलोके तिर्यकलोके विशेषाधिक तिरछेलोके असंख्यातगुणा। तिलोके अ० उड्ढलोए अ० अहोलोए विसेसाहिया। त्रिलोके असंख्यातगुणा ऊर्द्धलोके असंख्यातगुणा अधोलोके विशेषाधिक। खित्ताणुवाएण सव्वत्थोवा तेउकाइया उड्ढलोयतिरियलोए। क्षेत्र

लोके ऽसङ्ख्येयगुणा तिर्यक्पञ्चेन्द्रियमनुष्यव्यन्तरज्योतिष्काणा मवस्थानात्, तदेव मुक्तं पञ्चेन्द्रियाणा मल्पबहुत्व मिदानी मेकेन्द्रियभेदाना पृथिवी कायिकादीना पञ्चाना मौघिकपर्याप्तापर्याप्तभेदेन प्रत्येक त्रीणित्रीण्य ऽल्पबहुत्वान्या ऽह-खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा पुढविकाइया उड्ढलोयतिरिय

उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा वणस्सइकाइया अपज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखिज्जगुणा, तेलुक्के असंखिज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा वणस्सइकाइया पज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखिज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा तसकाइया तेलुक्के

तिकाइया अपर्याप्ता ऊर्द्ध्वलोक तिरछेलोके। अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया तिरियलोए अ० तिलोक अ०। अधोलोके तिरछेलोके विशेषाधिक तिरछेलोके त्रिलोके असंख्यातगुणा। उड्ढलोए अ० अहोलोए विसेसाहिया। ऊर्द्ध्वलोके असंख्यातगुणा अधोलोके विशेषाधिक। खित्ताणुवाएण सव्वत्थोवा वणस्सइकाइयपज्जत्तगा। क्षेत्रनीमेलै सर्वथोडा वनस्पतिकाइयापर्याप्ता। उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया। ऊर्द्ध्वलोके तिरिछेलोके अधोलोके तिरछेलोके विशेषाधिक। तिरियलोए अ० तिलोके अ० उड्ढलोए अ०। तिरछेलोके असंख्यातगुणा त्रिलोके असंख्यातगुणा ऊर्द्ध्वलोके असंख्यातगुणा। अहोलोएविसेसाहिया खित्ताणुवाएण सव्वत्थोवा तसकाइया। अधोलोके विशेषाधिक क्षेत्रनीमेलै सर्वथोडा त्रसकाइया। तिलोके उड्ढलोयतिरियलोए अस० अहोलोयतिरियलोए सखि०। त्रिलोके परसे ते इहां पञ्चेन्द्रियनीपरे भावना ऊर्द्ध्वलोके तिर्यक्लोके असंख्यातगुणा अधोलोके तिरछेलोके सख्यातगुणा। उड्ढलोए सखि० अहोलोए सखि० तिरियलोए असं०। ऊर्द्ध्वलोके सखिज्जगुणा अधोलोके सखिज्जगुणा तिरछेलोके असंख्यातगुणा। खित्ताणुवाएण सव्वत्थोवा तसकाइय अपज्जत्तगा। क्षेत्रनीमेलै सर्वथोडा त्रसकाइया अपर्याप्ता। तिलोके उड्ढलोयतिरियलोय अस० अहोलोय

सखेज्जगुणा, तेलुक्के असखिज्जगुणा उढ्ढलोए असखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा वाउकाइया अपज्जत्तया उढ्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया। तिरियलोए असखेज्जगुणा, तेलुक्के असखेज्जगुणा, उढ्ढलोए असखिज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा वाउकाइया पज्जत्तया उढ्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया। तिरियलोए असखेज्जगुणा, तेलोक्के असखेज्जगुणा, उढ्ढलोए असखेज्जगुणा, अधोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा वणस्सइकाइया उढ्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया। तेलुक्के असखेज्जगुणा

तगुणा ऊर्द्धलोके असंख्यातगुण अधोलोके विशेषाधिक। खित्ताणुवाएण सव्वत्थोवा वायुकाइय अपज्जत्तगा उड्ढलोयतिरियलोए विसेसाहिया। चेत्रनो मेलेसर्वथोडा वायुकाइया अपर्याप्ता ऊर्द्धलोके तिर्यक्लोके। अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया तिरियलोए अस०। अधोलोके तिर्यक्लोके विशेषाधिक तिरछेलोके असंख्यातगुणा। तिलोके अस० उड्ढलो० अस० अहोलोए विसेसाहिया। त्रिलोके असंख्यातगुणा ऊर्द्धलोके असंख्यातगुणा अधोलोके विशेषाधिक। खित्ताणवाएण सव्वत्थोवा वाउकाईयपज्जत्तगा उड्ढलोयतिरियलोए। चत्रनोमेले सर्वथोडा वनस्पतिकाईया ऊर्द्धलोक तिर्यक्लोके। अहोलोय तिरियलोए विसेसाहिया तिरियलोए अस०। अधोलोके तिरछेलोके विशेषाधिक तिरछेलोके असंख्यातगुणा। तिलोके अस० उड्ढलोए अस०। त्रिलोके असंख्यातगुणा ऊर्द्धलोके असंख्यातगुणा। अहोलोए विसेसाहिया। अधोलोके विशेषाधिक। खित्ताणुवाएण सव्वत्थोवा। चेत्रनोमेले सर्वथोडा वणस्सइकाइया उड्ढलोयतिरियलोए। वनस्पतिकाईया अपर्याप्ता ऊर्द्धलोके तिरछेलोके। अहोलोयतिरियलो० विसेसाहिया तिरियलोए अस०। अधोलोके तिर्यक्लोके विशेषाधिक तिरछेलोके असंख्यातगुणा। तिलोके अस० उड्ढलोए अस० अहोलोए विसेसाहिया। त्रिलोके असंख्यातगुणा ऊर्द्ध लोके असंख्यातगुणा अधोलोके विशेषाधिक। खित्ताणुवाएण सव्वत्थोवा वणस्सइकाइय अपज्जत्तगा उड्ढलोयतिरियलोए। चेत्रनोमेले सर्वथोडा वनस्

॥ टीका ॥

लोके ऽसंख्येयगुणा स्तिर्यक्पचेंद्रियमनुष्यव्यंतरज्योतिष्काणा मवस्थानात्, तदेव मुक्त पचेंद्रियाणा मल्पबहुत्व मिदानी मेकेंद्रियभेदाना पृथिवी कायिकादीना पचाना मौघिकपर्याप्तापर्याप्तभेदेन प्रत्येक त्रीणित्रीण्य ऽल्पबहुत्वान्या ऽऽ-खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा पुढविकाइया उड्ढलोयतिरिय

॥ मूल ॥

उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा वणस्सइकाइया अपज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखिज्जगुणा, तेलुक्के असंखिज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा वणस्सइकाइया पज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखिज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा तसकाइया तेलुक्के

॥ भाषा ॥

तिकाइया अपर्याप्ता ऊर्द्ध लोक तिरछैलोके। अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया तिरियलोए अ० तिलोक अ०। अधोलोके तिरछैलोके विशेषाधिक तिरछैलोके त्रिलोके असंख्यातगणा। उड्ढलोए अ० अहोलोए विसेसाहिया। ऊर्द्ध लोके असंख्यातगुणा अधोलोके विशेषाधिक। खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा वणस्सइकाइयपज्जत्तगा। क्षेत्रनीमेले सर्वथोडा वनस्पतिकाइयापर्याप्ता। उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया। ऊर्द्ध लोके तिरछैलोके अधोलोके तिरछैलोके विशेषाधिक। तिरियलोए अ० तिलोके अ० उड्ढलोए अ०। तिरछैलोके असंख्यातगुणा त्रिलोके असंख्यातगणा ऊर्द्ध लोके असंख्यातगणा। अहोलोएविसेसाहिया खित्ताणुवाएण सव्वत्थोवा तसकाइया। अधोलोके विशेषाधिक क्षेत्रनीमेले सर्वथोडा त्रसकाइया। तिलोके उड्ढलोयतिरियलोए अस० अहोलोयतिरियलोए संखि०। त्रिलोके परसे ते इहां पचेंद्रियनीपरे भावना ऊर्द्ध लोके तिर्यक्लोके असंख्यातगुणा अधोलोके तिरछैलोके संख्यातगणा। उड्ढलोए संखि० अहोलोए संखि० तिरियलोए अस०। ऊर्द्ध लोके संखिज्जगुणा अधोलोके संखिज्जगुणा तिरछैलोके असंख्यातगणा। खित्ताणुवाएण सव्वत्थोवा तसकाइय अपज्जत्तगा। क्षेत्रनीमेले सर्वथोडा त्रसकाइया अपर्याप्ता। तिलोके उड्ढलोयतिरियलोय अस० अहोलोय

लोए इत्यादि ॥ इमानि पंचदशापिसूत्राणि प्रागुक्तैकेंद्रियसूत्रवत् भावनीयानि सांप्रत औघिकत्रसकायापर्याप्तपर्याप्तत्रसकायसूत्राण्याह-खेत्ताणुवा एणं सव्वत्थोवा तसकाइया तेलोक्के इत्यादि ॥ इमानि पंचेंद्रियसूत्रवत् भावनीयानि गतं क्षेत्रद्वार २४ । इदानीं बंधद्वार वक्तव्य, बंधोपलक्षितं द्वार तदाह-एएसिणं भंते । जीवाणं आउयस्स कम्मस्स बंधगाणं अबंधगाणं मित्यादि ॥ इहा यु कर्मबंधकाबंधकानां पर्याप्ताऽपर्याप्तानां सुप्तजाग्रतां

उड्ढलोयतिरियलोए असंखिज्जगुणा, अहोलोयतिरियलोए संखेज्जगुणा, उड्ढलोए संखेज्जगुणा, अहोलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए असंखिज्जगुणा। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा तससकाइया अपज्जत्तया तेलुक्के उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए संखिज्जगुणा, अहोलोए संखिज्जगुणा, तिरियलोए असंखेज्जगुणा। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा तसकाइया पज्जत्तया तेलुक्के उड्ढलोयतिरियलोए असंखिज्जगुणा, अहोलोयतिरियलोए संखेज्जगुणा, उड्ढलोए संखिज्जगुणा, अहोलोए संखिज्जगुणा, तिरियलोए असंखेज्जगुणा। दारं २४। एएसिणं भंते! जीवाणं आउस्स कम्मस्स बंधगाणं अबंधगाणं अपज्जत्ताणं पज्जत्ताणं

तिरियलोए संखिज्जगुणा । त्रिलोके ऊर्द्धलोके तिर्यक्लोके असंख्यातगुणा अधोलोके तिर्यक्लोके संख्यातगुणा । उड्ढलोए संखिज्जगुणा अहोलोए संखि० । ऊर्द्धलोके संख्यातगुणा अधोलोके संख्यातगुणा तिरछेलोके असंख्यातगुणा । खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा तसकाइयपज्जत्तगा । क्षेत्रनेमेले सर्वथोडा त्रसकाइयापर्याप्ता । तिलोके उड्ढलोयतिरियलोए अस० । त्रिलोके ऊर्द्धलोकतिर्यक्लोके असंख्यातगुणा । अहोलोयतिरियलोए संखि० उड्ढलोए स० । अधोलोकतिर्यक्लोके संख्यातगुणा ऊर्द्धलोके संख्यातगुणा । अहोलोए स० तिरियलोए अस० दार । अधोलोके संखिज्जगुणा तिरछेलोके असंख्यातगुणा इति तीजे ३ पदे २४ । चौवीसमो द्वार जाणिवो ॥ एएसिणं भंते जीवाणं । हिवे बंधद्वार कहेछे—हेभगवन् एहजीवने । आउकम्मस्सबंधगाणं अबंधगाणं पज्जत्तगाणं अपज्जत्तगाणं । आयुकर्मनाबंधकने आठकर्मना अबंधकनेपर्याप्ता अपर्याप्तावे । सुत्ताणं जागराणं समोहयाणं असमोहयाणं । सूताने जा

समवहतासमवहताना सातावेदकाऽसातवेदकाना इन्द्रियोपयुक्तनोइन्द्रियोपयुक्ताना साकारोपयुक्ताऽनाकारोपयुक्ताना समुदायेनाऽल्पबहुत्व वक्तव्य, तत्र प्रत्येक तावद्रूमो येन समुदाये सुखेन तद ऽवगम्यते तत्र सर्वस्तोका आयुषो बधका अबधका सख्येयगुणा, यतो ऽनुभूयमानभवायुरपि त्रिभागाऽवशेषपारभाविक मायु जीवा बध्नति त्रिभागत्रिभागाद्यऽवशेषे वा ततो द्वौ त्रिभागा बऽबधकाल एक त्रिभागो बधकाल इति । बधकेभ्यो ऽबधका सख्येयगुणा' स्तथा सर्वस्तोका अपर्याप्तका पर्याप्तका सख्येयगुणा, एतच्च सूक्ष्मजीवान ऽधिकृत्य वेदितव्य' सूक्ष्मेषु हि बाह्यो व्याघातो न भवति तत स्तदऽभावा द्बहूना निष्पत्ति स्तोकानामेव चा ऽनिष्पत्ति स्तथा सर्वस्तोका सुप्ता जागरा सख्येयगुणा, एतदऽपि सू

सुत्ताण जागराण समोहयाण असमोहयाण सातावेदगाण असातावेदगाण इंदियउवउत्ताण णोइंदियउवउत्ताण सागारोवउत्ताण अणागारोवउत्ताणय कयरे कयरेहितो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा आउस्स कम्मस्स बधगा अपज्जत्तया सखिज्जगुणा, सुत्ता सखिज्जगुणा, समोहया सखिज्जगुणा, सातावेदगा सखिज्जगुणा, इंदियउवउत्ता सखिज्जगुणा, अणागारोवउत्ता

गताने समोह्याने असमोह्याने। सायावेयगाण असायावेयगाण। सातावेदकने असातावेदकने। इदिओवउत्ताण नोइंदियावउत्ताण । इंद्रियोपयुक्तने नोइंद्रियोपयुक्तने। सागारोवउत्ताण अणागारोवउत्ताणय। साकारोपयुक्तने अनाकारोपयुक्तने। कयरे २ हितो अप्पावाजाव विसेसाहियावा गो० सव्वत्थोवा जीवा आउकम्मस्सबधगा अपज्जत्तगा सखिज्जगुणा सत्तासखिज्जगुणा। एहमा किहा २ थी थोडा अथवा घणा सरीषा विशेषाधिक हुवे । हेगोतम सर्वथोडा जीव आयुकर्मनाबध त्रिभागविशषे परभवनो आयु बधधेनो थोडा तेहथी अबधक असख्यातगुणाछे वांचिण भावना अबधकाल त्रिभाग बधकालमाटे अबधक असख्यातगुणा सर्वथोडा अपर्याप्ताए सूक्ष्मनीवाश्रीजाणिवा सर्वथोडा सताने जागता सख्यातगुणाए पिणसूक्ष्मएकेंद्रिनें जमाटे अपर्याप्ता सूता कहिये। असमोहयासखिज्जगुणा सायवेयगा स० इदिओवउत्ता स० अणागारोवउत्ता स० सागारोवउत्ता स० नोइदिओवउत्ता वि० ।

स्माने केंद्रियान ऽधिकृत्य वेदितव्य, यस्माद् ऽपर्याप्ता सुप्ता एव लभ्यंते जागराअपि, उक्त मूलटीकाया-जम्हा अपज्जता सुत्ता लब्भंति, केइ अपज्जत्तगा जेसि सखिज्जा समया अतीता ते यथोवा इयरे वियोधगा चेव सेसा जागरा पज्जत्तगा ते संखिज्जगुणा इति „ जागरा पर्याप्ता स्तो न सख्येयगुणा इति, तथा समवहता सर्वस्तोका यतइह समवहता मारणांतिकसमुद्घातन परिगृह्यते मारणांतिक श्च समुद्घातो मरणकाले न शेषकाल तत्राऽपि न सर्वेषा मिति सर्वस्तोका' स्तेभ्यो ऽसमवहता संख्येयगुणा जीवनकालस्या ऽतिबहुत्वात्, तथा सर्वस्तोका सातवेदका यत इह व हव साधारणशरीरा अल्पे प्रत्येकशरीरिण साधारणशरीरा श्च यहवो ऽसातवेदका स्वल्पा सातवेदिन प्रत्येकशरीरिण स्तुनूयास , सातवेदका , स्तोका असातवेदिन, सत स्तोका सातवेदका, स्तेभ्यो ऽसातवेदका- संख्येयगुणा स्तथा सर्वस्तोका इंद्रियोपयुक्ता इन्द्रियोपयोगो हि प्रत्युत्पन्नकालविषय स्तत तदुपयोगकालस्य स्तोकत्वात्, पृच्छासमये स्तोका अवाप्यते यदातु तमेवार्थं इंद्रियेण दृष्ट्वा विचारयत्यो ऽयसञ्चया ऽपि तदा नेंद्रियोपयुक्त स व्यपदिश्यते ततो नेन्द्रियोपयोगस्या ऽतीताऽनागतकालविषयतया बहुकारात्या त्संख्येयगुणा नोइंद्रियोपयुक्ता स्तथा सर्वस्तोका अनाकारोपयुक्ता अनाकारोपयोगकालस्य स्तोकत्वात्' साकारोपयुक्ता संख्येयगुणा' अनाकारोपयोगकाला त्साकारोपयोगस्य संख्येयगु

सखेज्जगुणा, सागारोवउत्ता संखिज्जगुणा, नोइंदियउवउत्ता विसेसाहिया, असातावेदगा विसेसाहिया, असमोहिया विसेसाहिया, जागरा विसेसाहिया, पज्जत्तगा विसेसाहिया, आउस्स कम्मस्स अबंधगा

ने पर्याप्ता जागता कहिये। तेमाटें असंख्यातगुणा सर्वथोडा समोहित मरणसमुद्घात आयोने पविसैं मरणांतसमुद्घात मरणकाले हुवें। तेमाटें अ समोहना संख्यातगुणा छे जीववानाकाल घणा माटें सर्वथोडा सातावेदनीय प्रत्येकशरीरी साधारण शरीरी असातावेदकने असंख्यातगुणा सर्वथोडा इंद्रियोपयुक्त असंख्यातगुणा इंद्रियोपयुक्त प्रत्युत्पन्नकालें ते उपयोगकाल थोडोछे पृच्छासमयें थोडा पामियें नोइंद्रियोपयुक्तकालाथी अतीतानागतनो विषय घणा माटें असंख्यातगुणा सर्वथोडा अनाकारोपयोगनाकाल थोडामाटें। आसायवेयगा वि० असमोहया वि० जागरविसे० पज्जत्तगा वि०

त्वात्, इदानीं समुदायगत सूत्रोक्त मऽल्पबहुत्व भाव्यते, सर्वस्तोका जीवा आयु कर्मणो बंधका आयुर्बंधकालस्य प्रतिनियतत्वात्, तेभ्यो ऽ पर्याप्ता सख्येयगुणा, यस्मा दपर्याप्ता अनुभूयमानभवत्रिभागाद्यऽवशेषायुष पारभविक मायु बध्नाति ततो द्वौ त्रिभागाव बधकाल एको बध काल इति बधकालाद ऽबधकाल सख्येयगुण तेन सख्येयगुणास्ते ऽपर्याप्ता आयुर्बंधकस्य, तेभ्यो ऽपर्याप्तस्य सुप्ता सख्येयगुणायस्माद ऽप र्याप्तेषु च पर्याप्तेषु च सुप्ता लभ्यते, पर्याप्ताश्च पर्याप्तस्य सख्येयगुणा इत्य ऽपर्याप्तस्य सुप्ता सख्येयगुणा स्तस्य समवहता सख्येयगुणा वहूना

विसेसाहिया, दार २५। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा पोग्गला तेलुक्के उड्ढलोयतिरियलोए अणंतगुणा अहो लोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा उड्ढलोए असंखिज्जगुणा अहोलोए विसेसाहिया दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा पोग्गला उड्ढदिसाए अहोदिसाए विसेसाहिया उत्तरपुरच्छिमेण दाहिणपच्चच्छि मेणय दोवि तुल्ला असंखेज्जगुणा। दाहिणपुरच्छिमेण उत्तरपच्चच्छिमेणय दोवि तुल्ला विसेसाहिया पुरच्छि

आउकम्मस्सअबंधगा द्वार। तेहथी साकारोपयोग असंख्यातगणा अनाकारोपयोग थी साकारोपयोगनो काल वधो छे पर्याप्ता विशेषाधिक आउ कर्म ना बधथी अबंधक विशेषाधिक एतले द्वार २५। मा त्रीजे पदे अल्पबहुत्वनाद्वार पूरा हुवा ॥ खित्ताणुवाएण सव्वत्थोवा पुग्गल तिलोके उड्ढलोयति रियलोए अणतगुणा। हिवे पुद्गलद्वार कहेछे—चेत्रने प्रमाणेकरी द्रव्यथी जे महास्कन्ध ते त्रैलोक्यव्यापी थोडा पद्गलछे ऊर्ध्वलोक तिरछेलोके अनतगुणा। ऊर्ध्वलोकना अधप्रदेशछे प्रतरनेफरसे तेमाटे अनतगुणा छे। अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया तिरियलोए असंखिज्जगुणा उड्ढलोए असंखिज्जगुणा। तेहथी अधोलोक तिर्यक्लोके प्रागुक्त आकार बेप्रतरने फरसे विशेषाधिकमाटे तेहथी तिर्यक्लोके असंख्यातगुणा अनअसंख्यातगुणा माटे ऊर्ध्वलोके अ संख्यातगुणा तिर्यक्लोकथी ऊर्ध्वलोक असंख्यातगुणा माटे। अहोलोए विसेसाहिया दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा पुग्गल उड्ढदिसाए अहोदिसाए विसेसा हिया उत्तरपुरच्छिमेण। अधोलोक विशेषाधिक चेत्रचेत्रअधिका माटे ७ राजकाइक अधिकावनो विशेषाधिक हिवेदिशि च्यारप्रदेश घणा ७ राजप्रमा

पर्याप्तेषु ऽपर्याप्तेषु च मारणान्तिकसमुद्घातेन समवहतानां सदा लभ्यमानत्वात्, तेभ्यः सातवेदका सङ्ख्येयगुणा आयुर्बन्धकापर्याप्तकसुप्तेष्वपि सा तवेदकानां लभ्यमानत्वात्, तेभ्य इन्द्रियोपयुक्ता सङ्ख्येयगुणा असातवेदकानामपि इन्द्रियोपयोगस्य लभ्यमानत्वात्, तेभ्यो ऽनाकारोपयोगोपयु क्ता इन्द्रियोपयोगेषु नो इन्द्रियोपयोगेषु वा ऽनाकारोपयोगस्य लभ्यमानत्वात्, तेभ्यः साकारोपयुक्ता सङ्ख्येयगुणा इन्द्रियोपयोगेषु नोइन्द्रियो पयोगेषु साकारोपयोगकालस्य बहुत्वात् तेभ्यो नोइन्द्रियोपयुक्ता विशेषाधिका नोइन्द्रियोऽनाकारोपयुक्तानामपि तत्र प्रक्षेपात्, साकारानाका रोपयुक्तानामपि तत्र प्रक्षेपात्, अत्र विनयजनानुग्रहार्थम ऽसद्भावस्थापनया निदर्शन मुच्यते–इह सामान्यत किल साकारोपयुक्ता द्विनवत्यधिक शत १९२ ते च किल द्विधा इन्द्रियसाकारोपयुक्ता नोइन्द्रियसाकारोपयुक्ताश्च तत्रे न्द्रियसाकारोपयुक्ता किलाऽतीवस्तोका इति विंशतिसङ्ख्या कल्प्यन्ते, शेष द्विसप्तत्युत्तर शत १७२। नोइन्द्रियसाकारोपयुक्ता नोइन्द्रियाऽनाकारोपयुक्ताश्च द्विपञ्चाशत्कल्पा स्तत सामान्यत साकारोपयुक्ते

४ मेणं असंखेज्जगुणा पच्चत्थिमेणं विसेसाहिया दाहिणेणं विसेसाहिया उत्तरेणं विसेसाहिया खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवाइं दव्वाइं तेलुक्के उड्ढलोयतिरियलोए अणंतगुणाइं अहोलोयतिरियलोए विसेसाहियाइं उड्ढलोए

ण अधोलोक समधिक ७ सातराज कहिए विशेषाधिक पूर्वे इशानकूणे विद्युत्प्रभमाल्यवाननव कूट तेहथी उपरिलनपडल । दाहिणपच्चत्थिमेणव दोवितुल्ला असंखेज्जगुणा दाहिणपुरत्थिमेण उत्तरपच्चत्थिमेणयदोवितुल्ला विसेसाहिया पुरच्छिमेण असंखेज्जगुणा पच्चच्छिमेण विसेसाहिया दाहिणेण विसेसाहिया उत्तरेण विसेसाहिया। दक्षिण पश्चिमे वैताढ्यने असंख्यातगुणे अधिकाछे तेहथी दक्षिणपूर्वे उत्तरपश्चिमे प्रत्येकें २ विशेषाधिक स्वस्थान कें परस्परेसरिषा इहा सौमनसगंधमादननानव कूट तिहां सूक्ष्मपुद्गलप्रभूत चपजताछे तेहथी पूर्वे असंख्यातगुणा चेतना असंख्यातपणा माटे तेहथी पश्चिमे विशेषाधिक अधोलोकग्रामनें सुषिरभावे घणा पुद्गलना थानकछे दक्षिणे विशेषाधिक भुवनने सुषिरभावें पुद्गलविशेषाधिकछे उत्तरपुद्गल विशे षाधिक मानसरोवरछे तेमाटे घणा पुद्गलनो अवगाहुसद्भ्यायो कहेछे। खित्ताणुवाएण सव्वत्थोवा द द्व्वाइ तिलोके उड्ढलोयतिरियलोए अणतगु

स्य इन्द्रियसाकारोपयुक्तेषु विंशतिकल्पेष्वपनीतेषु द्विपञ्चाशत्कल्पेषु अनाकारोपयुक्तेषु तेषु मध्ये प्रक्षिप्तेषु द्वेशते चतुर्विंशत्यधिके भवत तत
साकारोपयुक्तेभ्यो नोइन्द्रियोपयुक्ता विशेषाधिका स्तेभ्यो ऽसातवेदका विशेषाधिका इन्द्रियोपयुक्तानामप्य ऽसातवेदकत्वात् १० तेभ्यो ऽसमव
हता विशेषाधिका सातवेदकानामप्यऽसमवहतत्वभावात्, तेभ्यो जागरा विशेषाधिका समवहतानामपि केषाञ्चि ज्जागरत्वात् १२। तेभ्य
पर्याप्ता विशेषाधिका सुप्तानामपि केषाञ्चि त्पर्याप्तत्वात्, सुप्ताहि पर्याप्ताऽपर्याप्ता अपि भवन्ति जागरास्तु पर्याप्ता एवेतिनियम १३। तेभ्यो
ऽपि पर्याप्तेभ्य आयु कर्मोऽबन्धका विशेषाधिका अपर्याप्तानामप्यायु कर्माबन्धकभावात् १४। इदमेवाऽल्पबहुत्व विनेयजनानुग्रहाय स्थापनारा
शिभि रुपदर्श्यते-इह द्वे पङ्क्ती उपर्यधोभावेन न्यस्येते तत्रोपरितन्या पङ्क्तौ आयु कर्मबन्धका अपर्याप्ता सुप्ता समवहता सातवेदका इन्द्रियोपयु
क्ता अनाकारोपयुक्ता क्रमेण स्थाप्यत तस्या अधस्तन्या पङ्क्तौ तषामेव पदानामधस्तात् यथासङ्ख्य मायुरबन्धका पर्याप्ता जागरा असमवहता अ
सातवेदका नोइन्द्रियोपयुक्ता साकारोपयुक्ता स्थापनाचेय माद्यमिति तत्परिमाण सरयायामेक स्थाप्यते तत आपपदानि किल जघन्येन सङ्ख्ये
यगुणानीति द्विगुणो द्विगुणाक स्तेषु स्थाप्यते तद्यथा-द्वौ चत्वार अष्टौ षोडश द्वात्रिंशत् चतु षष्टि सर्वोऽपि जीवराशि रनन्तानन्तस्वरूपो ऽप्य
ऽसत्कल्पनया षट्पञ्चाशदधिकशतद्वयपरिमाण परिकल्प्यते ततो ऽस्मा द्राशेरायुर्बन्धकादिगता सङ्ख्या शोधयित्वा यत् शेष मऽवतिष्ठति तदायुर

असखेज्जा० अहोलोए अणतगुणाइ तिरियलोए सखिज्जगुणाइ दिसाणुवाएण सव्वत्थोवाइ दव्वाइ अहेदि
साए उड्ढदिसाए अणतगुणाइ उत्तरपुरच्छिमेण दाहिणपच्चच्छिमेण दोवि तुल्लाइ असखेज्जगुणाइ दाहिण

णाइ अहोलोयतिरियलोए विसेसाहियाइ उड्ढलोए असखिज्जगुणाइ अहोलोए अणतगुणाइ तिरियलोए सखिज्जगुणाइ। क्षेत्राथी सर्वथोडा द्रव्यधर्मा
स्तिकायादिकने लोकें फरस्याछे धर्मास्तिकायपद्गल महास्कध समदुघातजीवनें पणित्र तीनलोक फरसें तेहद्रव्यथोडाछे अनताजीवनें पुद्गलनें द्रव्येक
रो जीवद्रव्यनें फरसेंकरीनें अनतगुणा हुवें तेहथी ऊर्द्धलोकातयकलोके प्रगुल्ल स१पप्रतरबेने फरसें बेअनतगुणा हुवें। तेहथी अधोलोकतिर्यक्लोकें वि

पा
८
३
३॥

८

पर्याप्तेषु ऽपर्याप्तेषु च मारणान्तिकसमुद्घातेन समवहताना सदा लभ्यमानत्वात्, तेभ्य सातावेदका- सद्भ्येयगुणा आयुर्वन्धकापर्याप्तकसुप्तेष्वपि सा तवेदकाना लभ्यमानत्वात्, तेभ्य इन्द्रियोपयुक्ता सङ्ख्येयगुणा असातवेदकानाम पि इन्द्रियोपयोगस्य लभ्यमानत्वात्, तेभ्यो ऽनाकारोपयोगोपयु क्ता इन्द्रियोपयोगेषु नो इन्द्रियोपयोगेषु वा ऽनाकारोपयोगस्य लभ्यमानत्वात्, तेभ्य- साकारोपयुक्ता सङ्ख्येयगुणा इन्द्रियोपयोगेषु नोइन्द्रियो पयोगेषु साकारोपयोगकालस्य बहुत्वात् तेभ्यो नोइन्द्रियोपयुक्ता विशेषाधिका नोइन्द्रियोऽनाकारोपयुक्तानामपि तत्र प्रक्षेपात्, साकारानाका रोपयुक्तानामपि तत्र प्रक्षेपात्, अत्र विनयजनानुग्रहार्थम ऽसद्भावस्थापनया निदर्शन मुच्यते-इह सामान्यत किल साकारोपयुक्ता द्विनवत्यधिक शत १९२ तेच किल द्विधा इन्द्रियसाकारोपयुक्ता नोइन्द्रियसाकारोपयुक्ताश्च तत्रे न्द्रियसाकारोपयुक्ता किलाऽतीवस्तोका इति विंशतिसङ्ख्या कल्प्यन्ते, शेष द्विसप्तत्युत्तर शत १७२। नोइन्द्रियसाकारोपयुक्ता नोइन्द्रियाऽनाकारोपयुक्ताश्च द्विपञ्चाशत्कल्पा स्तत सामान्यत साकारोपयुक्ते

मेण असंखेज्जगुणा पच्छिमेण विसेसाहिया दाहिणेण विसेसाहिया उत्तरेण विसेसाहिया खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवाइ दव्वाइ तेलुक्के उड्ढलोयतिरियलोए अणंतगुणाइ अहोलोयतिरियलोए विसेसाहियाइ उड्ढलोए

च अधोलोक समधिक ७ सातराज काईक विशेषाधिक पूर्वे ईशानकूणे विद्युत्प्रभमाल्यवाननव कूट तेहथी उपरिलनपद्गल । दाक्षिणपश्चिमेणव दोवितुल्ला असंखेज्जगुणा दाहिणपुरत्थिमेण उत्तरपच्चत्थिमेणयदोवितुल्ला विसेसाहिया परच्छिमेण असंखेज्जगुणा पच्छिमेण विसेसाहिया दाहिणेण विसेसाहिया उत्तरेण विसेसाहिया। दक्षिण पश्चिमें वेसरियाने असख्यातगुणे अधिकाछे तेहथी दक्षिणपूर्वे उत्तरपश्चिमें प्रत्येकें २ विशेषाधिक स्वस्थान के परस्परेसरिया इहा सौमनसगधमादननानव कूट तिहा सूक्ष्मपद्गलप्रभूत उपजताछे तेहथी पूर्वे असख्यातगुणा चेतना असख्यातपणा माटे तेहथी पश्चिमें विशेषाधिक अधोलोकगामने सद्भावे घणा पद्गलना थानकछे दक्षिणे विशेषाधिक भुवननैसद्भावे पद्गलविशेषाधिकछे उत्तरपद्गल विशे षाधिक मानसरोवरछे तेमाटे कह्यो पुद्गलनो अल्पबहुत्वद्रव्यार्थी कहेछे । दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा इ दव्वाइ तिलोके उड्ढलोयतिरियलोए अणंतगु

शेषाधिकत्वात्' तत्र पुद्गला विशेषाधिका सौम्य उत्तरपूर्वस्या दक्षिणपश्चिमायाच प्रत्येकमऽसख्येयगुणा स्वस्थानेतु परस्पर तुल्या यत स्ते द्वेअपि दिशौ रुचकाद्विनिगते मुक्तावलिसंस्थिते तिर्यग्लोकातमऽधोलोकातमूर्द्ध्वलोकात पर्यवसिते तेन क्षेत्रस्या ऽसङ्ख्येयगुणत्वा तत्र पुद्गला असख्येयगुणाः क्षेत्रतु स्वस्थाने समभिति पुद्गला अपि स्वस्थाने तुल्या सौम्योऽपि दक्षिणपूर्वस्या मुत्तरपश्चिमायाच प्रत्येक विशेषाधिका स्वस्थानेतु परस्प

पुरच्छिमेण उत्तरपच्चच्छिमेणय दोवि तुल्लाइ विसेसाहियाइ पुरच्छिमेण असखेज्जगुणाइ पच्चच्छिमेण विसेसाहियाइ दाहिणेण विसेसाहियाइं उत्तरेण विसेसाहियाइ। एएसिण भंते ! परमाणुपोग्गलाण सखेज्जप

शेषाधिक निगारेक ७ राज अधिकाभणी तेहथी ऊर्द्धलोके असख्यातगुणा क्षेत्र असख्यातगुणा माटे अधोलोके अनतगुणा अधोलोकग्रामे क्षेत्रभावद्रव्यकालना अनतापर्याय माटे तिर्यक्लोके कालसद्भावविशेषाधिक असख्यातगुणा हुवे । दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा इ दव्वाइ अहोदिसाइ उड्ढदिसाइ अनतगुणाइ उत्तरपरच्छिमेण दाहिणपच्चच्छिमेण दोवितल्लाइ असखिज्जगुणाइ । हिवेदिशि आश्रयी सामान्यपणे द्रव्यनी अल्पबहुत्वकहेछे—दिशिने अनुसारे सर्वथोडाद्रव्य अधोदिशि पाछलीपरे बधापथी तेहथी ऊर्द्धदिशि अनतगुणा किम ऊहा ऊर्द्धलोके मरुनो पाचसैजोजन स्फटिकमयकाड तिहा चद्रादिक प्रभायेकरी ऊर्द्धदिसे अनतगुणाछे तेहथी इशानकूणे तथा नैऋतिकूणे ए विदिशि सरीषाछे क्षेत्रथी असख्यातगुणा माटे। दाहिणपुरच्छिमेण उत्तरपच्छिमेणय दोवितुल्लाइ विसेसाहियाइ। असख्यातगणा अग्निकूणे वायवकूणेए सरिषाछे अनेविशेषाधिकछे विद्युत्प्रभमाल्यवत कूटाग्रेधूमकातादि छायपुद्गल घणा उपजेछे तेमाटे विशेषाधिकछे। पुरच्छिमेण असखिज्जगणाइ पच्चच्छिमेण विसेसाहियाइ दाहिणेण विसेसाहियाइ उत्तरेण वि०। तेहथी पूर्वनीदिशिद्रव्य असख्यातगुणा क्षेत्रअसख्यातगुणा माटे तेहथी पश्चिमे विशेषाधिक अधोलोकग्रामादि सुखीभावघणा पुद्गलद्रव्य रहित तेहथी दक्षिणे विशेषाधिक घणे सघनेभावे । तेहथी उत्तरदिशि विशेषाधिक मानसरोवरने विषे जीवद्रव्यनी तेजस्कार्मण पुद्गलस्कधनीय द्रव्यघणाछे तेमाटे विशेषाधिक कहिये। एएसिण भंते परमाणुपुग्गलाण सखिज्जपएसियाण असखिज्जपएसियाण अणतपएसियाण खधाण दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए दव्वट्ठप

गा
७ ॥

वन्धकादीना परिमाणं स्थापयितव्य तद्यथा-आयुर्वन्धकादिपदे द्वे शते पञ्चपञ्चाशदधिके शेषेषु यथोक्तक्रम द्वेशते चतुःपञ्चाशदधिके द्वेशते द्वि पञ्चाशदधिके द्वेशते अष्टचत्वारिंशदधिके द्वेशते चत्वारिंशदधिके द्वेशते चतुर्विंशत्यधिके द्विनवत्यधिकं शतम्, एवचसति उपरितनपङ्क्तिगतान्यना कारोपयुक्तपर्यन्तानि पदानि सङ्ख्येयगुणानि द्विगुणाद्विगुणाऽधिकत्वात्, तत पर साकारोपयुक्तपदमऽपि सङ्ख्येयगुण त्रिगुणत्वात्, शेषाणितु नो इन्द्रियोपयुक्तादीनि प्रतिलोम विशेषाधिकानि द्विगुणत्वस्यापि क्वचिदभावात्। तदेव गतं वयद्वार मिदानी पुद्गलद्वारमाह ॥ खेत्ताणुवाएणं सव्व त्थोवा पोग्गलातेलोक्के इत्यादि ॥ इदमल्पबहुत्व पुद्गलाना द्रव्यार्थत्व मङ्गीकृत्य व्याख्येय तथा सम्प्रदायात् तत्र क्षेत्रानुपातेन क्षेत्रानुसारेण चिन्त्य माना पुद्गला स्त्रैलोक्ये त्रैलोक्यसस्पर्शिन सर्वस्तोका सर्वस्तोकानि त्रैलोक्यव्यापीनीति पुद्गलद्रव्याणीति भाव, यस्मा न्महास्कन्धाएव त्रैलोक्य व्यापिन स्तेचाल्पा इति तेभ्य ऊर्द्ध्वलोकतिर्यग्लोके अनन्तगुणा यतस्तिर्यग्लोकस्य य स्सर्वोपरितनमेकप्रादेशिक प्रतर यश्चोर्द्ध्वलोकस्य सर्वाधस्तनमेक

प्रादेशिक प्रतर मेते द्वे अपि प्रतरे ऊर्द्ध्वलोकतिर्यग्लोक उच्यते-तेचाऽनन्ता सङ्ख्येयप्रादेशिका अनन्ता असङ्ख्यप्रदेशिका अनन्ता अनन्तप्रदेशिका स्क न्धा स्पृशन्तीति द्रव्यार्थतया अनन्तगुणा स्तेभ्यो ऽधोलोकतिर्यग्लोकप्रागुक्तप्रकारेण प्रतरद्वयरूपे विशेषाधिका क्तत्स्य आयामविष्कम्भाभ्या मना क्विशेषाधिकत्वात्, तेभ्य स्तिर्यग्लोके असङ्ख्येयगुणा क्षेत्रस्याऽसङ्ख्येयगुणत्वात्, तेभ्य ऊर्द्ध्वलोके असङ्ख्येयगुणा यत स्तिर्यग्लोकक्षेत्रा दूर्द्ध्वलोकक्षेत्र म सङ्ख्येयगुणमिति तेभ्यो ऽधोलोके विशेषाधिका ऊर्द्ध्वलोकादऽधोलोकस्य विशेषाधिकत्वात्, देशोनसप्तरज्जुप्रमाणो ह्यूर्द्ध्वलोक समधिकसप्तरज्जुप्रमा ण स्त्वऽधोलोक, सम्प्रति दिगनुपातेनाऽल्पबहुत्वमाह-दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा पोग्गला उड्ढदिसाए इत्यादि ॥ दिगनुपातेन दिगनुसारेण चिन्त्यमाना पुद्गला सर्वस्तोका ऊर्द्ध्वदिशि इह रत्नप्रभासमभूमितलमेरुमध्ये अष्टप्रादेशिको रुचक स्तस्माद्विनिर्गता चतु प्रदेशा ऊर्द्ध्वादिक्याव ल्लो कान्त स्तत स्तत्र सर्वस्तोकाः पुद्गला स्तेभ्यो ऽधोदिशि विशेषाधिका अधोदिगपि रुचकादेव प्रभवति चतु प्रदेशा याव ल्लोकान्त स्तत स्तस्यावि

यस्मात्प्रदेशा प्रतिपरमाण्वादिद्रव्यमनन्तता ततो नवस्त्वधोलोके ऽनन्तगुणानि तेभ्य स्तिर्यग्लोके सङ्ख्येयगुणानि अधोलौकिकग्रामप्रमाणानां स्वगतानां मनुष्यलोके कालद्रव्याधारभूते सङ्ख्यानामवाप्यमानत्वात्, साम्प्रतिदिगनुपातेन सामान्यतो द्रव्याणा मल्पबहुत्वमाह-दिसाणुवाएण सव्व त्थोवाइ दव्वाइ अहे दिसाए इत्यादि ॥ दिगनुपातेन दिगनुसारेण चिन्त्यमानानि सामान्यतो द्रव्याणि सवस्तोकानि अधोदिशि प्राग्व्यावर्णित स्वरूपाया तेभ्य ऊर्द्धदिश्यनन्तगुणानि किंकारणमितिचेत्, उच्यते-इह ऊर्द्धलोके मेरौ पञ्चयोजनशतक स्फटिकमयं काण्ड तत्र चन्द्रादित्यप्रभानु प्रवेशात् द्रव्याणा क्षणादिकालप्रतिभागोस्ति कालस्यच प्रागुक्तनीत्या प्रतिपरमाण्वादिद्रव्यमानन्त्या तत्त्वो ऽनन्तगुणानि तेभ्य उत्तरपूर्वस्यामीशान्या दक्षिणपश्चिमाया नैर्ऋतकोणे इत्यथः असङ्ख्येयानि चत्रस्यासङ्ख्येयगुणत्वात्, स्वस्थाने तु द्वयान्यपि परस्पर तुल्यानि समानत्वत्वात्, सैन्यां दक्षिणपूर्वस्यामाग्नेय्यामुत्तरपश्चिमाया वायव्यकोणे इतिभाव, विशेषाधिकानि विद्युत्प्रभमाल्यवन्तकूटाश्रितानां धूमिकावश्यायादिश्लक्ष्णपुद्गलद्रव्याणा बहूना सम्भवा तेभ्य पूर्वस्या दिशि असङ्ख्येयगुणानिक्षेत्रस्या सङ्ख्येयगुणत्वात्, तेभ्य पश्चिमाया विशेषाधिकानि अधोलौकिकग्रामेषु शुषिरभावतो बहूना पुद्गलद्रव्याणामवस्थानात्, ततो दक्षिणस्यां दिशि विशेषाधिकानि बहुभवनशुषिरभावात्, तत उत्तरस्यां विशेषाधिकानि तत्र मानससरसि जीवद्रव्याणा तदाश्रितानां तैजसकार्मणपुद्गलस्कन्धद्रव्याणा च भूयसा भावात्, साम्प्रति परमाणुपुद्गलाना सङ्ख्यप्रदेशाना असङ्ख्येयप्रदेशानामनन्तप्रदेशाना परस्परमल्पबहुत्वमाह-एएसिण भंते ! परमाणुपुग्गलाण संखेज्जपएसियाण मित्यादि ॥ पाठसिद्ध ॥ नवरं मत्राल्पबहुत्व प्रवनाया सर्वत्र तथा स्वाभाव्य कारण वाच्य साम्प्रत्यतेपामेव क्षेत्रप्राधान्येनाल्पबहुत्वमाह-एएसिण भंते । एगपएसोगाढाणमित्यादि ॥ इह क्षेत्रा

कयरे२ हिंतो अप्पावा२ ? गो० ! सव्वत्थोवा अणंतपदेसिया खंधा दव्वठ्याए परमाणुपोग्गला दव्वठ्याए अ

परमाणु पुद्गलअनंतगुणाछे । संखिज्जपएसिया खंधा दव्वठ्याए संखिज्जगुणा असंखिज्जपएसिया खंधा दव्वठ्याए अस० पएसठ्याए सव्वत्थोवा अणंत पएसियाखंधा । संख्यातप्रदेशखंध द्रव्यथी संख्यातगुणाछे स्वभावे असंख्यातप्रदेशी खंध द्रव्यथी असंख्यातगुणाछे सर्वथोडा अनंतप्रदेशाखंध । परमाणु

गा
८
५ ॥

र तुल्याः कथ विशेषाधिका इति चेत् उच्यते-इह सौमनसगन्धमादनेषु सप्त २ कूटानि विद्युत्प्रभमाल्यवतो नव २ तेषुच कूटेषु धूमिका अवश्या यादिसूक्ष्मपुद्गला प्रभूता सम्भवन्ति ततो विशेषाधिका स्वस्थानेतु क्षेत्रस्य पर्वतादेश्च समानत्वा तुल्या स्तेभ्य पूर्वस्या दिशि असंख्येयगुणा क्षे त्रस्याऽसंख्येयगुणत्वात्, तेभ्य पश्चिमाया विशेषाधिका अधोलौकिकग्रामेषु शुषिरभावतो बहूना पुद्गलानामऽवस्थानभावात्, तेभ्यो दक्षिणस्या विशेषाधिका बहुभवनशुषिरभावात्, तेभ्य उत्तरस्या विशेषाधिका यत उत्तरस्यामाऽयामविष्कम्भाभ्या संख्येययोजनकोटीकोटीप्रमाणं मानस सर स्तत्र ये जलचरा पनकसेवालादयश्च सत्वा स्ते अतिबहव इति तेषा ये तैजसकार्मणपुद्गला स्ते अधिका प्राप्यते इति पूर्वोक्तेभ्यो विशेषाधि का तदेव पुद्गलविषयमल्पबहुत्वमुक्त मिदानी सामान्यतो द्रव्यविषय क्षेत्रानुपातेन आह-खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवाइ दव्वाइ तेलोक्के इत्यादि ॥ क्षे त्रानुपातेन चिन्त्यमानानि द्रव्याणि सर्वस्तोकानि त्रैलोक्यसस्पर्शानि यतो धर्मास्तिकायाऽधर्मास्तिकायाकाशास्तिकायद्रव्याणि पुद्गलास्तिकायस्य महास्कन्धाजीवास्तिकायस्य मारणान्तिकसमुद्घातेना तीवसमवहता जीवा स्त्रैलोक्यव्यापिन स्तेचाल्पे इति सर्वस्तोकानि, तेभ्य ऊर्द्धलोकतिर्यग्लोके प्रागुक्तस्वरूपप्रतरद्वयात्मके अनन्तगुणानि अनते पुद्गलद्रव्ये रनतै जीवद्रव्यै स्तस्य सस्पर्शनात्, तेभ्यो ऽधोलोकतिर्यग्लोके विशेषाधिकानि ऊर्द्ध लोकतिर्यग्लोकादधोलोकतिर्यग्लोकस्य मनाग् विशेषाधिकत्वात्, तेभ्य ऊर्द्धलोके असङ्ख्येयगुणानि क्षेत्रस्याऽसख्येयगुणत्वात्' तेभ्यो ऽधोलोके अ नन्तगुणानि' कथमितिचेत् उच्यते इहाधोलोकग्रामेषु कालोस्ति तस्यच कालस्य तत्तत्परमाणुसख्येयाऽसख्येयाऽनन्तप्रादेशिकद्रव्यक्षेत्रकालभावपर्या

देसियाणं असंखिज्जपदेसियाणं अणतपदेसियाणय खंधाणं दव्वठयाए पएसठयाए दव्वठ पदेसठयाए

एसठयाए। हिवे परमाणुपुद्गल सख्यातप्रदेश अनंतपदेशाओ अल्पबहुत्वकहेछे—हेभगवन् एहने परमाणुपुद्गलद्रव्यने संख्यातप्रदेशी असख्यातप्रदेशीने अनतप्रदेशीने खधनें द्रव्यथी प्रदेशीथी द्रव्यने अर्थे प्रदेशनें द्रव्यार्थ प्रदेशायप माहि। कयरे २ हितो अप्पावा ४ गोयमा सव्वत्थोवा अणतपएसिया खंधा दव्वठ्ठाए परमाणुपुग्गलादव्वठ्ठाए अणतगुणा। केहा २ थी थोडा घणा ४ हेगौतम सर्वथोडा अनतप्रदेशी मिलो नोपनाखध तेथोडा स्वभावेज द्रव्यथी

॥ टीका ॥

यसम्यव्यया स्मतिपरमाण्वादिद्रव्यऽमनन्तता ततो भवत्यऽधोलोके ऽनन्तगुणानि तेभ्य स्तिर्यग्लोके सङ्ख्येयगुणानि अधोलौकिकग्रामप्रमाणानां स्व यानां मनुष्यलोके कालद्रव्याधारभूते सङ्ख्यानां मवाप्यमानत्वात्, साम्प्रतिदिगनुपातेन सामान्यतो द्रव्याणा मल्पबहुत्वमाह–दिसाणुवाएण सव्व त्थोवाइ दव्वाइ अहे दिसाए इत्यादि ॥ दिगनुपातेन दिगनुसारेण चिन्त्यमानानि सामान्यतो द्रव्याणि सवस्तोकानि अधोदिशि प्राग्व्यावर्णित स्वरूपाया तेभ्य ऊर्द्धदिश्यऽनन्तगुणानि किकारणमितिचेत्, उच्यते–इह ऊर्द्धलोके मेरौ पञ्चयोजनशतक स्फटिकमयं काण्ड तत्र चन्द्रादित्यप्रभानु प्रवशात् द्रव्याणां क्षणादिकालप्रतिभागोस्ति कालस्यच प्रागुक्तनीत्या प्रतिपरमाण्वादिद्रव्यमानन्त्या तभ्यो ऽनन्तगुणानि तेभ्य उत्तरपूर्वस्यामीशान्या दक्षिणपश्चिमाया नैर्ऋतकोणे इत्यर्थः असङ्ख्येयानि क्षेत्रस्यासख्येयगुणत्वात्, स्वस्थाने तु द्वयान्यपि परस्पर तुल्यानि समानक्षेत्रत्वात्, तेभ्यो दक्षि णपूर्वस्यामाग्नेय्यामुत्तरपश्चिमाया वायव्यकोण इतिभाव , विशेषाधिकानि विद्युत्प्रभमाल्यवन्तकूटाश्रितानां धूमिकावश्यायादिश्लक्ष्णपुद्गलद्रव्याणा बहूना सम्भवा तेभ्य पूर्वस्या दिशि असख्येयगुणानिक्षेत्रस्या सख्येयगुणत्वात्, तेभ्य पश्चिमाया विशेषाधिकानि अधोलौकिकग्रामेषु शुषिरभा यतो बहूनां पुद्गलद्रव्याणामवस्थानात्, ततो दक्षिणस्यां दिशि विशेषाधिकानि बहुभवनशुषिरभावात्, तत उत्तरस्यां विशेषाधिकानि तत्र मा नससरसि जीवद्रव्याणा तदाश्रितानां तैजसकार्मणपुद्गलस्कन्धद्रव्याणां च भूयसा भावात्, साम्प्रति परमाणुपुद्गलानां सख्येयप्रदेशानां असख्येयप्रदे शानामनन्तप्रदेशानां परस्परमल्पबहुत्वमाह–एएसिण भंते ! परमाणुपुग्गलाणं सखेज्जपएसियाण मित्यादि ॥ पाठसिद्ध ॥ नवर मत्राल्पबहुत्व भवनाया सर्वत्र तथा स्वाभाव्य कारण वाच्य साम्प्रत्यतेषामेव क्षेत्रप्राधान्येमाल्पबहुत्वमाह–एएसिण भंते । एगपएसोगाढाणमित्यादि ॥ इह क्षेत्रा

॥ मूल ॥

कयरे२ हिंतो अप्पावा४ ? गो० ! सव्वत्थोवा अणंतपएसिया खंधा दव्वट्ठयाए परमाणुपोग्गला दव्वट्ठयाए अ

॥ भाषा ॥

परमाणु पुद्गलअनंतगुणाछे । संखिज्जपएसिया खंधा दव्वट्ठयाए संखिज्जगुणा असंखिज्जपएसिया खंधा दव्वट्ठयाए अस० पएसट्ठयाए सव्वत्थोवा अणंत पएसियाखंधा । सख्यातप्रदेशखंध द्रव्यथी संख्यातगुणाछे स्वभावे असंख्यातप्रदेशी खंध द्रव्यथी असंख्यातगुणाछे सर्वथोडा अनंतप्रदेशीखंध । परमाणुपु

चिकारत. तेनस्य प्राधान्या त्परमाणुकाद्यनन्ताणुका स्कन्धा अपि विवक्षितैकप्रदेशावगाढा आधाराधेययोरभेदोपचारा देकद्रव्यत्वेन व्यवह्रियन्ते द्रव्यभूता एकप्रदेशावगाढा पुद्गला पुद्गलद्रव्याणि सर्वस्तोकानि लोकाकाशप्रदेशप्रमाणानीत्यर्थ ' नहि स कश्चि द्रव्यभूत आकाशप्रदेशोऽस्ति य

णतगुणा सखेज्जपदेसिया खधा दव्वठयाए सखेज्जगुणा असखेज्जपदेसिया खधा दव्वठयाए असखेज्जगुणा पदेसठयाए सव्वत्थोवा अणंतपदेसिया खधा पदेसठयाए परमाणुपोग्गला अणतगुणा सखेज्जपदेसिया खधा पदेसठयाए सखेज्जगुणा असखेज्जपएसिया खधा पदेसठयाए असखेज्जगुणा दव्वठपदेसठयाए सव्वत्थोवा अणतपदेसिया खधा दव्वठयाए तेचेव पदेसठयाए अणतगुणा परमाणुपोग्गला दव्वठपदेसठयाए अणतगुणा सखिज्जपदेसिया खधा दव्वठयाए सखिज्जगुणा तेचेवय पदेसठयाए सखिज्जगुणा असखिज्ज पएसिया खधा दव्वठयाए असखिज्जगुणा तेचेव पदेसठयाए असखेज्जगुणा । एएसिणं भंते ! एगपदेसो

गला पएसठ्याए अणतगुणा सखिज्जपएसिया खधा पएसठ्याए सखिज्जगुणा। परमाणुपुद्गल अप्रदेशार्थपणे अनतगणाछे सख्यातप्रदेशीखध प्रदेशार्थकरी सख्यातगणा। असखिज्जपएसियाखधा पएसठ्याए असखिज्जगुणा दव्वठ्पएसठ्याए। असख्यातप्रदेशी खधप्रदेशार्थे असख्यातगणा द्रव्यार्थप्रदेशार्थकरी सव्वत्थोवा अणतपएसियाखधा दव्वठ्याए तचेवपएसठ्याए अणतगणा। सर्वथोडा अनतप्रदेशीखध द्रव्यथी तिम सर्वप्रदेश अनतगणाछे। परमाणुपुग्गला दव्वठ्याए पएसठ्याए अणतगणा। परमाणुपुद्गलद्रव्यार्थ प्रदेशार्थकरी अनतगणाछे। सखिज्जपएसियाखधा दव्वठ्याए सखिज्जगणा तचेव पएसठ्याए सखिज्जगणा। सख्यातप्रदेशीखधा द्रव्यार्थे सख्यातगणा ते सर्वप्रदेशसख्यातगणा। असखिज्जपएसियाखधा दव्वठ्याए असखिज्जगणा तचेव पएसठ्याए अस०। असख्यातप्रदेशीखधा द्रव्यार्थे असख्या० तिमहीजप्रदेशार्थे असख्या०। एएसिण भते एगपएसोगाढ सखिज्जपएसोगाढ असखि० ओगाढाणय पोग्गलाण। हेभगवन् एकप्रदेशावगाढनें सख्यातप्रदेशावगाढ-पुद्गलनें असख्यप्रदेशावगाढपुद्गलनें। दव्वठ्याएपएसठ्याए कयरेर हिंतो अप्पावाअ गो०

॥ टीका ॥

यकप्रदेशावगाहनपरिणामपरिणतानां परमाण्वादीनां मवकाशप्रदानपरिणामेन परिणतो नवर्त्तते इति तेभ्यः संख्येयप्रदेशावगाढा पुद्गला द्रव्यार्थतया संख्येयगुणाः, कथमितिचेत्? उच्यते-इहापि क्षेत्रस्यप्राधान्यात् द्व्यणुकाद्यनन्ताणुकस्कन्धा द्विप्रदेशावगाढा यकद्रव्यत्वेन विवक्ष्यन्ते तानि

॥ मूल ॥

गाढाण सखेज्जपदेसोगाढाण असखिज्जपदेसोगाढाणय पोग्गलाण दव्वठ्याए पदेसठ्याए दव्वठपदेसठ्याए कयरे २ हिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा एगपदेसोवगाढा पुग्गला दव्वठ्याए सखेज्जपएसोवगाढा पुग्गला दव्वठ्याए सखिज्जगुणा असखिज्जपदेसोगाढा पोग्गला दव्वठ्याए असखिज्जगुणा पदेसठ्याए सव्वत्थोवा एगपदेसोगाढा पोग्गला पदेसठ्याए सखिज्जपदेसोगाढा पोग्गला पदेसठ्याए संखेज्जगुणा असखेज्जपदेसोगाढा पोग्गला पदेसठ्याए असखेज्जगुणा दव्वठपदेसठ्याए सव्वत्थोवा एगपदेसोगाढा पोग्गला दव्वठ्यपदेसठ्याए सखेज्जपदेसोगाढा पोग्गला दव्वठ्याए सखेज्जगुणा तेचेव पएसठ्याए सखेज्जगुणा

॥ भाषा ॥

द्रव्यार्थी प्रदेशार्थी द्रव्यार्थ प्रदेशार्थपणा किहांरथी थोडा घणा इत्यादि हे गौतम । सर्वथी थोडा पुद्गला एगपएसोगाढा दव्वठ्याए संखिज्जपएसोगाढा पुग्गला दव्वठ्याए संखिज्जगुणा । सर्वथोडा पुद्गलप्रदेशावगाढद्रव्यार्थे संख्यातप्रदेशावगाढ पुद्गलप्रदेशी संख्यातगुणा। असंखिज्जपएसोगाढा पुग्गला दव्वठ्याए असंखिज्जगुणा। असंख्यातप्रदेशावगाढ पुद्गल द्रव्यार्थे असंख्यातगुणा। पएसठ्याए सव्वत्थोवा एगपएसोगाढा पुग्गला पएसठ्याए। प्रदेशार्थे सर्वथोडा प्रदेशावगाढ पुद्गलप्रदेशार्थी । संखिज्जपएसोगाढा पुग्गला पएसठ्याए संखिज्जगुणा । संख्यातप्रदेशावगाढ पुद्गलप्रदेशार्थी संख्यातगुणा । असंखिज्जपएसोगाढा पुग्गला पएसठ्याए असंखिज्जगुणा । असंख्यातप्रदेशावगाढ पुद्गलप्रदेशार्थी असंख्यातगुणा । दव्वठ्पएसठ्याए सव्वत्थोवा एगपएसोगाढा पुग्गला दव्वठ्पएसठ्याए । द्रव्यार्थप्रदेशार्थेकरी सर्वथोडा एकप्रदेशावगाढ पुद्गलद्रव्यार्थे अप्रदेशार्थ । संखिज्जपएसोगाढा पुग्गलादव्वठ्याए संखिज्जगुणा । संख्यातप्रदेशावगाढ पुद्गल द्रव्यार्थे संख्यातगुणा । तचेव पएसठ्याए स० । तिमहीज प्रदेशार्थे संख्यातगुणा । असंखिज्जपएसोगाढा पुग्गला दव्वठ्याए ।

च तथाभूतानि पुद्गलद्रव्याणि पूर्वोक्तेभ्य सख्येयगुणानि तथाहि-सर्वलोकप्रदेशा स्वत्वतो ऽसख्येया अपि असत्कल्पनया दश परिकल्प्यन्ते तेच प्रत्येकचिन्तायां दशैवेति दश एकप्रदेशावगाढानि पुद्गलद्रव्याणि लभ्यानि तेष्वेव दशसु प्रदेशयन्यग्रहणान्यसोलक्षणद्वारेण बहवो द्विकसयोगा लभ्यन्ते इति एवमस्येकप्रदेशावगाढेभ्यो द्विप्रदेशावगाढानि पुद्गलद्रव्याणि सख्येयगुणानि' एव तेभ्योपि त्रिप्रदेशावगाढानि एवमुत्तरोत्तर याव दुत्कृष्ट सख्येयप्रदेशावगाढानि, तत स्थितमेतत् एकप्रदेशावगाढेभ्य सख्येयप्रदेशावगाढपुद्गला द्रव्यार्थतया सख्येयगुणा इति, एव तेभ्यो ऽसख्येयप्रदेशावगाढा पुद्गला द्रव्यार्थतया सख्येयगुणा असङ्ख्यातस्य असङ्ख्यातभेदभिन्नत्वात्, प्रदेशार्थतासूत्र द्रव्यार्थपर्यायार्थतासूत्रञ्च सुगमत्वात् स्वय भाव

असंखिज्जपएसोगाढा पोग्गला दव्वठयाए असंखेज्जगुणा तंचेव पएसठयाए असंखिज्जगुणा । एएसिणं भंते ! एगसमयठितीयाणं संखिज्जसमयठितीयाण असंखिज्जसमयठितीयाणय पोग्गलाण दव्वठयाए पदेसठयाए दव्वपदेसठयाए कयरे २ हितो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा एगसमयठिईया पोग्गला दव्वठयाए सखेज्जसमयठितीया पोग्गला दव्वठयाए सखेज्जगुणा असंखिज्जसमयठिईया पोग्गला दव्वठयाए असंखिज्जगुणा पदेसठयाए सव्वत्थोवा एगसमयठिईया पोग्गला पदेसठयाए सखेज्जसमयठिईया पोग्गला

असख्यातप्रदेशावगाढ पुद्गला द्रव्यार्थं। असंखिज्जगुणा तचेव पएसठ्याए अस०। असख्यातगुणा तिमड्डोअपदेशार्थं असख्यातगुणा एएसिणं भंते एगसमयठिईयाण संखिज्जसमयठिईयाण। हेभगवन् एष एकसमयनो प्रतिमानो सख्यातसमयनो प्रतिमानो। असंखिज्जसमयठिईयाणय पुग्गलाण दव्वठ्याए असंखिज्जसमयनो प्रतिमापुद्गला द्रव्यनो। पएसठ्याए पदेसठ्याए। प्रदेशथी द्रव्यार्थप्रदेशार्थं। कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ गो०। किहा २ थी अल्पबहुत्वा इत्यादि हेगौतम। सव्वत्थोवा एगसमयठिईया पुग्गला दव्वठ्याए। सर्वथोडा एकसमयनो प्रतिमापद्गलके तेहथी। संखिज्जसमयठिईया पुग्गला दव्वठ्याए संखि०। सख्यातसमयनो प्रतिमापुद्गलके तहथी सख्यातगुणा। असंखिज्जसमयठिईया पुग्गला दव्वठ्याए अस०। असख्यातसमयनो प्र

पएसठयाए संखिज्जगुणा असंखिज्जसमयठिईया पोग्गला पदेसठयाए असंखिज्जगुणा दव्वठयपदेसठयाए सव्वत्थोवा एगसमयठिईया पुग्गला दव्वठपएसठयाए सखेज्जसमयठिईया पोग्गला दव्वठयाए सखेज्जगुणा तेचेव पदेसठयाए सखेज्जगुणा असंखिज्जसमयठिईया पोग्गला दव्वठयाए असंखिज्जगुणा तेचेव पदेसठयाए असंखिज्जगुणा । एएसिण भंते । एगगुणकालगाण संखिज्जगुणकालगाणं असखेज्जगुणकालगाण अणतगुणकालगाणय पोग्गलाण दव्वठयाए पदेसठयाए दव्वठपदेसठयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! जहा परमाणुपोग्गला तहा भाणियव्वा, एव सखेज्जगुणकालयाणवि, एव सेसाणवि वण्णरस

तिमपुद्गलछे तिमद्रव्यथी द्रव्य असख्यातगुणा । पएसठ्याए सव्वत्थोवा एगसमयठितीया । प्रदेशार्थे सर्वथोडा एकसमयस्थितानि । पुग्गला पएसठ्याए संखि ज्जसमयठितीया । पुद्गलप्रदेशार्थे सख्यातसमयस्थितिना । पग्गला पएसठ्याए संखि० । पद्गलप्रदेशार्थे सख्यातगुणा । असंखिज्जसमयठितीया पुग्गला पए सठ्याए अस० दव्वठ्पएसठ्याए । असख्यातसमयनो स्थितिपुद्गलप्रदेशो असख्यातगुणा द्रव्यप्रदेशार्थे । सव्वत्थोवा एगसमयठितीया पुग्गला दव्वठ्पएसठ्याए सर्वथोडा एकसमयनो स्थितिमान पद्गलद्रव्यप्रदेशने । संखिज्जसमयठितीया पुग्गला दव्वठ्याए संखि० । सख्यातसमयनो प्रतिमा पुद्गलद्रव्यार्थे सख्यात गुणो । तचेव पएसठ्याए संखि० । तिमहीजप्रदेशार्थे सख्यातगुणा । असंखिज्जसमयठितीया पुग्गला दव्वठ्याए अस० । असख्यातसमयस्थितिना पुद्गल द्रव्यथी असख्यातगुणा । तचेव पएसठ्याए अस० एएसिण भंते । तिमहीजप्रदेशे असख्यातगुणा हेभगवन् । एगगुणकालगाण संखिज्जगुणकालगाण एकएकगुणकालादिकालने सख्यातगुणाकाले । असंखिज्जगुणकालगाण । असख्यातगुणा कालने । अणतगुणकालगाणय पग्गलाण दव्वठ्याए पएसठ्याए । अनतगुणाकालने पद्गलने द्रव्यथी प्रदेशथी । दव्वठ्पएसठ्याए कयरे२ हिंतो अप्पावा४ गो० । द्रव्यथी प्रदेशार्थे किहा२ अल्प बहु इत्यादि हेगौ० । सव्वत्थोवा जहा परमाणुपुग्गला तहा भा० । सर्वथोडा जिमपरमाणुपुद्गल तिम सर्वकहिवो एवं संखिज्जगुणकालगाणवि एव सेसावि वण्णगधरसा भाणि

नीयम्, कालाभावसूत्राण्यपि सुगमत्वा त्स्वयमावयितव्यानि नवर॥ जहा पोग्गला तहा भाणियव्वा इति॥ यथा प्राक् सामान्यत पुद्गला उक्तास्तथा एकगुणकालकादयोपि वक्तव्या-, तेचैव-सव्वत्थोवा अणतपएसिया खधा एगगुणकालगा परमाणुपोग्गला दव्वट्ठयाए एगगुणकालगा अणतगुणा सखेज्जपएसिया खधा एगगुणकालगा सखेज्जगुणा असखेज्जपएसिया खधा एगगुणकालगा असखेज्जगुणा पएसट्ठयाए सव्वत्थोवा अणतपएसिया खधा एगपरमाणुपोग्गला एगगुणकालगा अणतगुणा इत्यादि॥ एव सख्येयगुणकालकाना मनन्तगुणकालकानामपि वाच्य मेव शेषवर्णगन्धरसा अपि वक्तव्या, कर्कशमृदुगुरुलघव स्पर्शा यथा एकप्रदेशाद्यवगाढा भणिता स्तथा वक्तव्या तेचैव-सव्वत्थोवा एगपएसोगाढा एगगुणकक्खडफासा दव्व ट्ठयाए सखेज्जपएसोगाढा एगगुणकक्खडफासा दव्वट्ठयाए सखेज्जगुणा इति, एव सख्येयगुणकर्कशस्पर्शा असख्येयगुणकर्कशस्पर्शा वाच्या, एव मृदुगुरुलघव अवशेषा श्चत्वार शीतादय स्पर्शा यथा वर्णादय उक्ता स्तथा वक्तव्या स्तत्र पाठोप्युक्तानुसारेण सुगमत्वात् स्वय भावनीयो, गत पुद्गलद्वार ॥ २६ ॥ इदानी महादण्डक विवक्षु र्गुरुमापृच्छति-अहभते । त्यादि ॥ अथ भदन्त । सर्वजीवाल्पबहुत्व सर्वजीवाल्पबहुत्ववक्तव्यतात्मक

गधा भाणियव्वा, फासाण कक्खडमउयगरुयलहुयाण जहा एगपदेसोगाढाणं भणिय तहा भाणियव्वं अव सेसा फासा जहा वन्ना भणिया तहा भाणियव्वा दार २६ । अह भते ! सव्वजीवप्पबहु महादंडयं वत्तइ स्सामि सव्वत्थोवा गब्भवक्कतियमणुस्सा मणुस्सीओ सखेज्जगुणाओ बादरतेउकाइयापज्जत्तया असखिज्जगुणा

यथा । इम सख्या० कालपिण इम बोला वर्ण गधरस सर्व कहिवा । फासाण कक्खडमउयगुरुयल हुयाण । फरसधी कर्कशमृदुगुरुलघु । जहाएगपएसोगाढाण भणिय तहाभा० । एहने एकजिम प्रदेशावगाढ कह्यो तिमकहिवो । अवसेसा फासा तजहा वन्ना भणिया तहा भा० दार। थाकताफरस जिम क ह्या तिम कहिवा पुद्गलद्वार इति ३ पदे २६ द्वार समाप्त हुवो। हिवे महादडककहेछे जीवनो अल्पबहुत्व । अह भते सव्वजीवप्पबहुमहादडयवत्तइस्सामि हेभगवन् एह सर्वजीवनो अठा भागे। सव्वत्थोवागब्भवक्कतियमणुस्सा । सर्वथोडा जीवगर्भजमनुष्य । मणुस्सीओ सखिज्जगुणाओ बायरतेउकाइयपज्जत्तया ।

॥ टीका ॥

मन्नादृशकं वक्तयिष्यामि रचयिष्यामीति तात्पर्यार्थ', अनेन मततं ज्ञापयति-तीर्थंकरानुज्ञामाप्यापैव भगवान् गणधर सूत्ररचना प्रतिप्र त्तते नपुन श्रुताभ्यासपुरस्सरमिति, यद्वैतज्ज्ञापयति कुशलेपि कर्मणि विनेयेन गुरुमनापृच्छ्य न प्रवर्तितव्य किन्तु तदनुज्ञापुरस्सर मन्यथा विने यत्वायोगात् विनेयस्यहि लक्षणमिद-गुरोर्निर्वदितात्मायो गुरुनाथानुवर्तक'। मुक्तपर्यचएतनित्य सविनेय प्रकीर्तित ॥ १ ॥ गुरुरपि च प्रच्छनी

॥ मूल ॥

अणुत्तरोववाइया देवा असखेज्जगुणा उवरिमगेवेज्जगा देवा सखेज्जगुणा मज्झिमगेवेज्जगा देवा सखेज्ज गुणा हेट्ठिमगेवेज्जगा देवा सखेज्जगुणा अच्चुएकप्पे देवा सखेज्जगुणा आरणे कप्पे देवा सखेज्जगुणा पा णए कप्पे देवा सखेज्जगुणा आणएकप्पे देवा सखिज्जगुणा अहे सत्तमाए पुढवीए णेरइया असखेज्जगुणा छट्ठीए तमाए पुढवीए नेरइया अस० सहस्सारे कप्पे देवा असखिज्जगुणा महासुक्के कप्पे देवा असखि ज्जगुणा पचमाए धूमप्पभाए पुढवीए णेरइया अस० लतए कप्पे देवा असखेज्जगुणा, चउत्थीए पकप्प

॥ भाषा ॥

असंखिज्जगुणा अणुत्तरोववाइया असखिज्जगुणा। तेहथी मनुष्यथी सख्यातगुणो २७ गणो तेहथी बादरतेउकायपर्याप्ता असख्यातगुणा असख्यात अनु त्तरोपपातदेवता असख्यातगुणा। उवरिमगविज्जगादेवा संखिज्जगुणा। तेहथी उपरिलाग्रैवेयकदेवता सख्यातगुणा। मज्झिमगविज्जगादेवा स खिज्जगुणा हिट्ठिमगेविज्जगादेवा संखिज्जगुणा। मध्यमग्रैवेयकथकीनादेवता सख्यातगुणा तेहथी हेठलाग्रैवेयकनादेवता सख्यातगुणा। अच्युतकल्पदेवा संखिज्जगुणा। तेहथी अच्युतदेव सख्यातगुणा। आरणेकप्पेदेवा संखिज्जगुणा पाणएकप्पेदेवा संखिज्जगुणा। आनतनादेव सख्यातगुणा। अहेसत्तमाए पढवीएनेरइया संखिज्जगुणा छट्ठीएतमाए पढवीएनेरइया असंखिज्जगुणा। तेहथी नीचे सातमीनरकनानारकी सख्यातगुणा छट्ठी नरकनानारकी अ सख्यातगुणा। सहस्सारेकप्पदेवा असंखिज्जगुणा। तेहथी सहस्सारकल्पनादेवता असख्यातगुणा। महासुक्केकप्पदेवा असंखिज्जगुणा। तेहथी महाशुक्र नादेव असख्यातगुणा। पचमाए धूमप्पभाए पुढवीएनेरइया असंखिज्जगुणा। पाचमीनरकनानारकी असख्यातगुणा। लंतककप्पदेवा असंखिज्जगुणा

नीयम्, कातत्रावसूत्राण्यपि सुगमत्वा स्त्वयमावयितव्यानि नवर॥ जहा पोग्गला तहा भाणियव्वा इति॥ यथा प्राक् सामान्यत पुद्गला उक्तास्तथा एकगुणकालकादयोपि वक्तव्या-, तंचेव-सव्वत्थोवा अणतपएसिया खधा एगगुणकालगा परमाणुपोग्गला दव्वठयाए एगगुणकालगा अणतगुणा सखेज्जपएसिया खधा एगगुणकालगा सखेज्जगुणा असखेज्जपएसिया खधा एगगुणकालगा असखेज्जगुणा पएसठयाए सव्वत्थोवा अणतपएसिया खधा एगपरमाणुपोग्गला एगगुणकालगा अणतगुणा इत्यादि॥ एवं सख्येयगुणकालकाना मनन्तगुणकालकानामपि वाच्य मेव शेषवर्णगन्धरसा अपि वक्तव्या, कर्कशमृदुगुरुलघव स्पर्शा यथा एकप्रदेशाद्यवगाढा भणिता स्तथा वक्तव्या तंचेव-सव्वत्थोवा एगपएसोगाढा एगगुणकक्खडफासा दव्व ठयाए सखेज्जपएसोगाढा एगगुणकक्खडफासा दव्वठयाए सखेज्जगुणा इति,, एव सख्येयगुणकर्कशस्पर्शा असख्येयगुणकर्कशस्पर्शा वाच्या, एव मृदुगुरुलघव अवशेषा श्चत्वार शीतादय स्पर्शा यथा वर्णादय उक्ता स्तथा वक्तव्या स्तत्र पाठोप्युक्तानुसारेण सुगमत्वात् स्वय भावनीयो, गत पुद्गलद्वार॥ २६॥ इदानी महादण्डक विवक्षु र्गुरुमापृच्छति-अहभते। त्यादि॥ अथ भदन्त। सर्वजीवाल्पबहुत्वं सर्वजीवाल्पबहुत्ववक्तव्यतात्मक

गधा भाणियव्वा, फासाण कक्खडमउयगरुयलहुयाण जहा एगपदेसोगाढाणं भणिय तहा भाणियव्वं अव सेसा फासा जहा वण्णा भणिया तहा भाणियव्वा दार २६। अह भते! सव्वजीवप्पबहु महादण्डयं वत्तइ स्सामि सव्वत्थोवा गब्भवक्कतियमणुस्सा मणुस्सीओ सखेज्जगुणाओ वादरतेउकाइयापज्जत्तया असखिज्जगुणा

वर्ण। इम सप्त॰ कालपिण इम बीजा वर्ण गधरस सर्व कहिवा। फासाण कक्खडमउयगुरुयल हुयाण। फरसयो कर्कशमृदुगुरुलघु। जहा एगपएसोगा ढाणं भणिय तहाभा॰। एहने एकजिम प्रदेशावगाढ कह्यो तिमकहिवो। अवसेसा फासा तजहा वण्णा भणिया तहा भा॰ दार। थाकता फरस जिम व ह्या तिम कहिवा पुद्गलद्वार इति३ पदे २६ द्वार सम.त हुवे। हिवे महादण्डककहेछे जीवनो अल्पबहुत्व। अह भते सव्वजीवप्पबहुमहादण्डय वत्तइस्सामि हेभगवन् एह सर्वजीवनो मोटा भागे। सव्वत्थोवागब्भवक्कतियमणुस्सा। सर्वथोडा जीवगर्भजमनुष्य। मणुस्सीओ सखिज्जगुणाओ वायरतेउकाइयपज्जत्तया

ऽतो श्रेण्यसख्येयभागस्या सख्येयगुणत्वात् १४, तेभ्यो महाशुक्रे कल्पे देवा असख्येयगुणा विमानबाहुल्यात्, तथाहि-षट्सहस्राणि विमानानां सहस्रारकल्पे चत्वारिंशत् सहस्राणि महाशुक्रे अन्यच्चाधोविमानवासिनो देवा बहुबहुतरा स्तोकस्तोकतरा श्चोपरितनोपरितनविमानवासिन तत सहस्रारदेवेभ्यो महाशुक्रकल्पे देवा असख्येयगुणा १५। तेभ्योपि पञ्चमधूमप्रभाभिधाननरकपृथिव्या नैरयिका असख्येयगुणा बृहत्तमश्रेण्य सख्येयभागवर्त्तिनभ प्रदेशराशिप्रमाणत्वात् १६। तेभ्योपि लान्तके कल्पे देवा असख्येयगुणा अतिबृहत्तरश्रेण्यसख्येयभागगतनभ प्रदेशराशिप्रमाणत्वात् १७। तेभ्योपि चतुर्थ्या पङ्कप्रभाया पृथिव्या नैरयिका असख्येयगुणा युक्तिप्रागुक्तैव भावनीया १८। तेभ्योपि ब्रह्मलोके कल्पे देवा असख्येयगुणा युक्तिप्रागुक्तैव १९। तेभ्योपि तृतीयस्या वालुकाप्रभाया पृथिव्या नैरयिका सख्येयगुणा २०। तेभ्योपि माहेन्द्रकल्पे देवा असख्येयगुणा २१। तेभ्योपि सनत्कुमारकल्पे देवा असख्येयगुणा २१। तेभ्योपि सनत्कुमारकल्पे देवा असख्येयगुणा युक्तिरसर्वत्रापि प्रागुक्तैव २२। तेभ्यो द्वितीयस्या शर्कराप्रभाया पृथिव्या नैरयिका असख्येयगुणा एते च सप्तमपृथिवीनारकादयो द्वितीयपृथिवीनरकपर्यन्ता प्रत्येक स्वस्थाने चिन्त्यमाना स

प्पभाए पुढवीए नेरइया असंखेज्जगुणा बंभलोए कप्पे देवा असंखेज्जगुणा तच्चाए वालुयप्पभाए पुढवीए णेरइया असंखेज्जगुणा माहिंदे देवा असंखेज्जगुणा सणंकुमारे कप्पे देवा असंखेज्जगुणा दोच्चाए सक्करप्पभाए पुढवीए णेरइया अस० समुच्छिममणुस्सा असंखेज्ज० ईसाणे कप्पे देवा अस० ईसाणे कप्पे देवीओ

चउथीए पंकप्पभाए पुढवीएनेरईया असंखिज्जगुणा। लांतकदेवता असंख्यातगुणा तेहथी चोथीनारकनानारकी असंख्यातगुणा। ब्रह्मलोककल्पेदेवा असंखिज्जगुणा। ब्रह्मलोकनादेव असंख्यातगुणा। तच्चीए वालुयप्पभाए पुढवीएनेरइया असंखिज्जगुणा। त्रीजीनरकनानारकी असंख्यातगुणा। माहेंद्रकप्पे देवा अस० सणंकुमारेकप्पेदेवा असंखिज्जगुणा। माहेंद्रकल्पनादेव असंख्यातगुणा सनत्कुमारदेव असंख्यातगुणा। दोच्चाए सक्करप्पभाए पुढवीएनेरइया अस० समुच्छिममणुस्सा अस०। बीजीनरकनानारकी असंख्यातगुणा तेहथी समूच्छिममनुष्य असंख्यातगुणा। ईसाणेकप्पेदेवा असंखिज्जगुणा

य स सर्वरूपो-धर्मद्योधर्मकर्त्तांच सदाधर्मप्रवर्त्तक ॥ सत्वेभ्योधर्मशास्त्रार्थं देशकोगुरुरुच्यते ॥ १ ॥ इति, महादण्डक वर्त्तयिष्यामीत्युक्त तत प्रतिज्ञातमेव निर्वाहयति-सव्वत्थोवा गब्भवक्कतियमणुस्सेत्यादि ॥ सर्वस्तोका गर्भव्युत्क्रान्तिका मनुष्या सङ्ख्येयकोटीकोटीप्रमाणत्वात् १, तेभ्यो मानुष्यो मनुजस्त्रिय सङ्ख्येयगुणा सप्तविंशतिगुणत्वात्, उक्तञ्च-सत्तावीसगुणापुण मणुयाणतदहियाचेवंति ॥ २ ॥ ताभ्यो बादरतैजस्कायिका पर्याप्ता असङ्ख्येयगुणा कतिपयवर्गन्यूनावलिकाघनसमयप्रमाणत्वात् ३, तेभ्यो ऽनुत्तरोपपातिनो देवा असङ्ख्येयगुणा, क्षेत्रपल्योपमासङ्ख्येयभागवर्तिनभ प्रदेशराशिप्रमाणत्वात् ४, तेभ्य उपरितनग्रैवेयकत्रिकदेवा सङ्ख्येयगुणा बृहत्तरक्षेत्रपल्योपमासङ्ख्येयभागवर्त्तिनभ प्रदेशराशिप्रमाणत्वा देतदपि कथमवसेय मितिचे दुच्यते-विमानबाहुल्यात्, तथाह्यनुत्तरदेवाना पञ्चविमानानि विमानशत तूपरितनग्रैवेयकत्रिकप्रतिविमानवा ऽसङ्ख्येया देवा यथा २ चाधोवर्त्तीनि विमानानि तथा २ देवा अपि प्राचुर्येण लभ्यन्ते, ततोऽवसीयते अनुत्तरोपपातिदेवेभ्यो बृहत्तरक्षेत्रपल्योपमासङ्ख्येयभागवर्त्याकाश

प्रदेशराशिप्रमाणा उपरितनग्रैवेयकत्रिकदेवा एव मुत्तरत्रापि भावना कार्या यावदानतकल्प ५, तेभ्योप्युपरितनग्रैवेयकत्रिकदेवेभ्यो मध्यमग्रैवेयकत्रिकदेवा सङ्ख्येयगुणा ६, तेभ्यो प्यधस्तनग्रैवेयकत्रिकदेवा सङ्ख्येयगुणा ७, तेभ्यो प्यच्युतकल्पदेवा सङ्ख्येयगुणा ८, तेभ्यो प्यारणकल्पदेवा सङ्ख्येयगुणा यद्यप्यारणाच्युतकल्पौ समश्रेणीकौ समविमानसङ्ख्याकौच तथापि कृष्णपाक्षिका स्तथास्वाभाव्यात्' प्राचुर्येण दक्षिणस्या दिशि समुत्पद्यन्ते नोत्तरस्या बहव श्च कृष्णपाक्षिका स्तोका शुक्लपाक्षिका स्ततो च्युतकल्पदेवापेक्षया आरणकल्पे देवा सङ्ख्येयगुणा ९, तेभ्योपि प्राणतकल्पे देवा सङ्ख्येयगुणा १०' तेभ्योप्यानतकल्पे देवा सङ्ख्येयगुणा भावना आरणकल्पवत् कर्त्तव्या ११, तेभ्यो ऽध सप्तमनरकपृथिव्या नैरयिका असङ्ख्येयगुणा श्रेण्यसङ्ख्येयभागगतनभ प्रदेशराशिप्रमाणत्वात् १२, तेभ्य षष्ठपृथिव्या नैरयिका असङ्ख्येयगुणा एतच्च प्रागेव दिगनुपातेन नैरयिकाल्पबहुत्वचिन्तायां भावित १३, तेभ्योपि सहस्रारकल्पदेवा असङ्ख्येयगुणा षष्ठपृथिवीनैरयिकपरिमाणहेतुश्रेण्यसङ्ख्येयभागापेक्षया सहस्रारकल्पदेवपरिमाण

तकिंचिदूनद्वात्रिंशत्तमभागकल्पा ईशानदेवा स्ततो देवा समूर्च्छिममनुष्येभ्यो ऽसंख्येयगुणा २४। तेभ्य ईशानकल्पे देव्य ऽसंख्येयगुणा द्वात्रिंशगु णत्वात्, बत्तीसगुणाबत्तीसरूवअहियाउहोंतिदेवीउ इतिवचनात् २६। ताभ्य सौधर्मकल्पे देवा संख्येयगुणा स्तत्र विमानबाहुल्यात्, तथाहि- तत्र द्वात्रिंशतशतसहस्राणि विमानानां अष्टाविंशतिशतसहस्राणि ईशाने कल्पे अपिच दक्षिणादिग्वर्त्ती सौधर्मकल्प ईशानकल्प स्तूत्तरदिग्वर्त्ती द क्षिणस्यां च दिशि बहव कृष्णपाक्षिका समुत्पद्यन्ते तत ईशानदेवेभ्य सौधर्मदेवा संख्येयगुणा, नन्वियं युक्ति र्माहेन्द्रसनत्कुमारकल्पयो रप्यु क्ता पर तत्र माहेन्द्रकल्पापेक्षया सनत्कुमारकल्पदेवा असंख्येयगुणा उक्ता इहतु सौधर्मकल्पे संख्येयगुणा स्तदेव तत्कथं उच्यते-वचनप्रामाण्यात्

चिंदियतिरिक्खजोणिया पुरिसा सखेज्जगुणा जलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिणीउ संखिज्जगुणाउ वाणमंतरा देवा संखेज्जगुणा वाणमंतरीउ देवीउ संखेज्ज० जोइसिया देवा संखेज्जगुणा जोइसिणीउ देवीउ संखिज्ज गुणाउ खहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया नपुंसया संखिज्ज० थलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया नपुंसया सं खेज्ज० जलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया नपुंसया संखे० चउरिंदिया पज्जत्तया संखेज्ज० पंदिया पज्जत्ता

लचरपंचेंद्रितिर्यंच योनिया संख्यातगुणा। जलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिणीओ स० वाणमंतरादेवा संखिज्जगुणा वाणमंतरीओ देवीओ स०। जलचरनी स्त्री संख्यातगुणा तेहथी वानव्यंतरदेव संख्यातगुणा तेहथी वाणव्यंतरनीस्त्री संख्यातगुणा। जोइसियादेवा स० जोइसिणीओ देवीओ स०। तेहथी ज्योतिषी संख्यातगुणा ज्योतिषीनीस्त्री संख्यातगुणा। खहयरपंचेंदियतिरिक्खजोणीया नपुंसगा स०। तेहथी खचरपंचेंद्रितिर्यंच योनियानपुंसक सं ख्यातगुणा। थलचरपंचेंदियतिरिक्खजोणीया नपुंसगा स०। तेहथी थलचरपंचेंद्रितिर्यंच योनियानपुंसक संख्यातगुणा। जलचरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया नपुंसगा चउरेंदियपज्जत्तगा स० पंचेंदियपज्जत्तगा विसे० बेंदियपज्जत्तगा विसे० तेइंदियपज्जत्तगा वि०। तेहथी जलचरपंचेंद्रिय नपुंसक संख्यात गुणा चौरिंद्रियपर्याप्ता संख्यातगुणा पंचेंद्रियपर्याप्ता विशेषाधिक बेंद्रियपर्याप्ता विशेषाधिक तेंद्रियपर्याप्ता विशेषाधिक। पचेंदिय अपज्जत्तगा अस० प

वैपि घनीकृतलोकश्रेण्यसंख्येयभागवर्त्तिनभःप्रदेशराशिप्रमाणा द्रष्टव्या केवलं श्रेण्यसंख्येयभागोऽसंख्येयभेदभिन्न स्तत इत्यनसंख्येयगुणतया अल्पबहुत्वमभिधीयमानं न विरुध्यति २३ । तेभ्यो द्वितीयनरकपृथिवीनारकेभ्य समूर्च्छिममनुष्या असंख्येयगुणा स्तेहि अङ्गुलमात्रक्षेत्रप्रदेशराशे र्यस्य तृतीयवर्गमूलेन गुणिते प्रथमवर्गमूले यावान् प्रदेशराशि स्तावत्प्रमाणानि खण्डानि यावन्त्यकस्यामेव प्रादेशिक्यांश्रेणी भवन्ति तावत्प्रमाणा २४ । तेभ्य ईशाने कल्पे देवा असंख्येयगुणा यतोऽङ्गुलमात्रक्षेत्रप्रदेशराशे सम्बन्धिनि द्वितीये वर्गमूले तृतीयेन वर्गमूलेन गुणिते यावान् प्रदेशराशि र्भवति तावत्प्रमाणा स्तु घनीकृतस्य लोकस्यैकप्रादेशिकीषु श्रेणिषु यावन्तो नभःप्रदेशा स्तावत्प्रमाणा ईशानकल्पगतो देवदेवीसमुदाय स्तद्ग

संखे०, सोहम्मे कप्पेदेवा संखेज्ज० सोहम्मे कप्पे देवीउ संखेज्जगुणाउ भवणवासीदेवा असंखेज्जगुणा भवणवासिणीउ देवीउ संखिज्जगुणाउ । इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए णेरइया असंखिज्जगुणा खहचरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया पुरिसा असंखेज्जगुणा खहचरपंचिंदियतिरिक्खजोणिणीउ संखिज्जगुणाउ थलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया पुरिसा असंखेज्जगुणा थलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिणीउ संखिज्जगुणाउ जलयरपं

ईशानकल्पेदेव्यो संख्येयगुणाः । तेभ्यो ईशानदेवा असंख्यातगुणा तेभ्यो ईशानदेव्यो असंख्यातगुणाः । सौधर्मदेवा संख्येयगुणा सौधर्मकल्पे देव्यो संख्येयगुणाः । तेभ्यो सौधर्मदेवा संख्यातगुणा तेभ्यो सौधर्मदेव्यो संख्यातगुणाः । भवणवासीदेवा अस० भवणवासिणीओ देवीओ संखि० । तेभ्यो भवनपतिदेवता असंख्यातगुणा तेभ्यो भवनपतिदेव्यो संख्यातगुणाः । इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए नेरइया अस० खहचरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया पुरिसा संखि० । तेभ्यो रत्नप्रभानारका असंख्यातगुणा तेभ्यो खचरपंचेंद्रियतिर्यग्योनिया संख्यातगुणा । खहचर पंचिंदियतिरिक्खजोणीओ स० थलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया पुरिसा स० । तेभ्यो खचरपंचेंद्रियतिर्यग्योनियास्त्री संख्यातगुणा थलचरपंचेंद्रियतिर्यग्योनिया संख्यातगुणा । थलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिणीओ स० । थलचरपंचेंद्रियतिर्यग्योनियास्त्री संख्यातगुणा । जलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया पुरिसा स० । तेभ्यो ज

प्रज्ञाया पृथिव्या नैरयिका असख्येयगुणा अङ्गुलमात्रक्षेत्रप्रदेशराशे सम्बन्धिनि प्रथमवर्गमूले द्वितीयेन वर्गमूलेन गुणिते यावान् प्रदेशराशि स्ता वत्प्रमाणासु श्रेणिषु यावन्त आकाशप्रदेशा स्तावत्प्रमाणत्वात् ३१ । तेभ्योऽपि खचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका पुरुषा असङ्ख्येयगुणा प्रतरा ऽसङ्ख्येयभा गवर्त्यसङ्ख्येयश्रेणिगत प्रदेशराशिप्रमाणत्वात् ३२ । तेभ्योऽपि खचरपञ्चेन्द्रिया स्तिर्यग्योनिका स्त्रिय सख्येयगुणा स्त्रिगुणत्वात्, तिगुणातिरूवअ हिया तिरियाणइत्थियामुणेयव्वा इतिवचनात् ३३ । ताभ्य स्थलचरपञ्चेन्द्रिया स्तिर्यग्योनिका पुरुषा सख्येयगुणा बृहत्तरप्रतरासख्येयभागवर्त्यस ख्येयश्रेणिगताकाशप्रदेशराशिप्रमाणत्वात् ३४ । तेभ्य स्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका स्त्रिय सख्येयगुणा स्त्रिगुणत्वात् ३५ । ताभ्यो जलचरपञ्चे न्द्रियतिर्यग्योनिका पुरुषा सख्येयगुणा बृहत्तमप्रतरासख्येयभागवर्त्यसख्येयश्रेणिगताकाशप्रदेशराशिप्रमाणत्वात् ३६ । तेभ्यो जलचरपञ्चेन्द्रियति र्यग्योनिकास्त्रिय सख्येयगुणा स्त्रिगुणत्वात् ३७ । ताभ्यो व्यन्तरा देवा पुवेदोदयिन सख्येयगुणा यत -सख्येययोजनकोटाकोटीप्रमाणानि शूची

रूपाणि खण्डानि यावन्त्येकस्मिन् प्रतरे भवति तावन्त सामान्येन व्यन्तरा केवलमिह पुरुषाविवक्षिता इति सकलसमुदायापेक्षया किंचिदूनद्वा त्रिंशत्तमभागकल्पा वेदितव्या ततो घटते जलचरयुवतिभ्य सख्येयगुणा ३८ । तेभ्यो व्यन्तय सख्येयगुणा द्वात्रिंशद्गुणत्वात् ३९ । ताभ्यो ज्योतिष्क देवा सख्येयगुणा स्तेहि सामान्यत षट्पञ्चाशत् अधिकशतद्वयाङ्गुलप्रमाणानि शूचीरूपाणि खण्डानि यावन्त्येकस्मिन् प्रतरे भवति तावत्प्रमाणा परमिह पुरुषा विवक्षिता इति ते सकलसमुदायापेक्षया किंचिदूनद्वात्रिंशत्तमभागकल्पा प्रतिपत्तव्या स्तत उपपद्यन्ते व्यन्तरीभ्य सख्येयगुणा ४० । तेभ्यो ज्योतिष्कदेव्य सख्येयगुणा द्वात्रिंशद्गुणत्वात् ४१ । ताभ्य खचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानपुसका सख्येयगुणा क्वचित असख्येयगुणा इ तिपाठ स न समीचीनो यत इत ऊर्द्ध य पर्याप्तचतुरिन्द्रिया वक्ष्यते तेऽपि ज्योतिष्कदेवापेक्षया सख्येयगुणा गवोपपद्यन्त तथाहि-षट्पञ्चाशदधि कशतद्वयाङ्गुलप्रमाणानि शूचीरूपाणि खण्डानि यावन्त्येकस्मिन्प्रतरे भवति तावत्प्रमाणा ज्योतिष्का उक्त च-छप्पन्नदोसयागुल सूइपएसहिंभाइय

नचात्र पाठक्रमो यतोन्यत्राप्युक्तं-ईसाणेसव्वत्थवि बत्तीसगुणाउहोंतिदेवीउ । संखेज्जासोहम्मे तउअसखाभवणवासी ॥ १ ॥ २७ । इति, तेभ्योपि त स्मिन्नेव सौधर्मकल्पे देव्य सख्येयगुणा द्वात्रिंशद्गुणत्वात् । सव्वत्थविबत्तो सगुणाउहोंतिदेवीउइतिवचनात् २८ । ताभ्योप्यसख्ययगुणा भवनवासि न कथमितिचेत् इह अङ्गुलमात्रक्षेत्रप्रदेशराशे सम्बन्धिनि प्रथमे वर्गमूले तृतीयेन वर्गमूलेन गुणिते यावान् प्रदेशराशि भवति तावत्प्रमाणासु घ नीकृतस्य लोकस्य एकप्रदेशिकोपु श्रेणिषु यावतो नभ प्रदेशा स्तावत्प्रमाणो भवनपतिदेवदेवीसमुदाय तद्गतकिंचिदूनद्वात्रिंशद्भागकल्पा श्च भवनप तयो देवा स्ततो घटन्ते सौधर्मदेवीभ्य स्ते ऽसख्येयगुणा २९ । तेभ्यो भवनवासिनोदेव्य सख्येयगुणा द्वात्रिंशत्गुणत्वात् ३० । ताभ्यो प्यस्या रत्न

विसेसाहिया बेइंदिया पज्जत्ता विसे० । पचिंदिया अपज्जत्तया असंखिज्जगुणा चउरिंदिया अपज्जत्तया विसेसाहिया तेइंदिया अपज्जत्तया विसेसाहिया बेइंदिया अपज्जत्तया विसेसाहिया पत्तेयसरीरबादरव णस्सइकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा बादरनिगोदा पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा बादरपुढविकाइया अप ज्जत्तगा असंखेज्जगुणा बादरआउकाइया पज्जत्तया असंखिज्जगुणा बादरवाउकाइया पज्जत्तगा असंखि

उरेंदियपज्जत्तगा वि० । पचेंद्रिय अपर्याप्ता असख्यातगुणा चौरिंद्रिय अपर्याप्ता विशेषाधिक । तेइंदिय अपज्जत्तगा वि० बेइंदिय अपज्जत्तगा विसेसा० तेंद्रिय अपर्याप्ता विशेषाधिक बेंद्रिय अपर्याप्ता विशेषाधिक । पत्तेयसरीरबायरवणस्सइकाईयापज्जत्तगा अस० । प्रत्येकशरीरबादर वनस्पतिकाइक पर्या प्ता असख्यातगणा । बायरनिगोयपज्जत्ता अस० बायरपुढवीकाईयपज्जत्तगा अस० । बादरनिगोदोपर्याप्ता असख्यातगुणा बादरपृथिवीकाइयपर्या प्ता असख्यातगणा । बायरआउकाइयपज्जत्तगा अस० बायरवाउकाइयपज्जत्तगा अस० । बादर अप्काइयापर्याप्ता असख्यातगुणा बादरवाउकाइ यापर्याप्ता असख्यातगणा । बायरतेउकाईय अपज्जत्तगा अस० । बादरतेउकाईया अपर्याप्ता असख्यातगणा । पत्तेयसरीरबायरवणस्सइकाईय अप ज्जत्तगा अस० । प्रत्येकशरीरीबादर वनस्पतिकाईया अपर्याप्ता अस० । बायरनिगोय अपज्जत्तगा अ० बायरपुढवीकाईय अपज्जत्तगा अ० । बादर

माणा अन्यत्रोक्ता स्तथाप्यङ्गुलासंख्येयभागस्या संख्येयभेदभिन्नत्वात्, बादरपर्याप्तप्रत्येकवनस्पतिपरिमाणचिन्तायां मङ्गुलासंख्येयभागो ऽसंख्येय गुणहीन परिगृह्यते ततो न कश्चिद्विरोध ५३। तेभ्यो बादरनिगोदा अनन्तकायिकशरीररूपा पर्याप्ता असंख्येयगुणा ५४। तेभ्योपि बादरपृथिवीकायिका पर्याप्ता असंख्येयगुणा ५५। तेभ्योपि पर्याप्तबादराप्कायिका असंख्येयगुणा यद्यपि च पर्याप्तबादरप्रत्येकवनस्पतिकायिकाऽप्कायिकाः प्रत्यक्षमङ्गुलासंख्येयभागमात्राणि सूचीरूपाणि खण्डानि यावत्येकस्मिन् प्रतरे भवति तावत्प्रमाणा अन्यत्राविशेषेणोक्ता स्तथाप्यङ्गुलासंख्येयभागस्या संख्येयभेदभिन्नत्वा दित्यसंख्येयगुणत्वा दित्य मभिधाने न कश्चिद्दोष ५६। तेभ्यो बादरपर्याप्ताप्कायिकेभ्यो बादरवायुकायिका पर्याप्ता असंख्येयगुणा घनीकृतलोकासंख्येयभागवर्त्त्यसंख्येयप्रतरगतनभ प्रदेशराशिप्रमाणत्वात् ५७। तेभ्यो बादरतेजस्कायिका अपर्याप्ता असंख्येय

ज्जगुणा बादरतेउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा बादरनिगोदा अपज्जत्तया संखिज्जगुणा बादरपुढविकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा बादरआउकाइया अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा बादरवाउकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा सुहुमतेउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा सुहुमपुढविकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया सुहुमआउकाइया अपज्जत्तया विसेसाहिया सुहुमवाउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया सुहुमतेउकाइया पज्जत्तगा असंखिज्ज० सुहु

निगोद अपर्याप्ता अस० बादरपृथवीकाइका अपर्याप्ता अस०। बादर आउकाईया अपज्जत्तगा अ०। बादर अपकाईया अपर्याप्ता असंख्यातगुणा। बादरवाउकाइया अपज्जत्तगा अ०। बादरवायकाइक अपर्याप्ता असंख्यातगुणा। सुहुमतेउकाइया अपज्जत्तगा अस०। सूक्ष्मतेउकाईक अपर्याप्ता असंख्यातगुणा। सुहुमपुढवीकाईया अपज्जत्तगा वि० सुहुम आउकाई अपज्जत्तगा वि० सुहुमवाउकाईय अपज्जत्तगा वि०। सूक्ष्मपृथिवीकाइकपर्याप्ता विशेषाधिक सूक्ष्मअपकाइक विशेषाधिक सूक्ष्मवायुकाइक अपर्याप्ता विशेषाधिक। सुहुमतेउकाइयपज्जत्तगा स० सुहुमपुढवीकाइयपज्जत्तगा वि० सु

पयर । जोऽसिमक्हीरइति अङ्गुलसङ्ख्येयनागमात्राणि शूचीरूपाणि खण्डानि यावत्येकस्मिन्प्रतरे नवति तावत्प्रमाणा श्चतुरिन्द्रिया उक्तच-प ज्जत्तापज्जत्ता विति चउत्रमणिणोश्रवहरति । अगुलसखा ऽसस प्यमसन्नउयपुढोपयर । अगुलसख्येयनागापेक्षया षट्पञ्चाशदधिकमङ्गुलशतद्वय स ङ्ख्येगुणा ततो ज्योतिष्कदेवापेक्षया परिज्ञाव्यमाना पर्याप्तचतुरिन्द्रियाण्यपि सङ्ख्येयगुणा एवघटते किंपुन पर्याप्तचतुरिन्द्रियापेक्षया सङ्ख्येयनागमा त्राखरपञ्चेन्द्रियनपुसका इति ४२ । तेभ्योपि थलचरपञ्चेन्द्रियनपुंसका सङ्ख्येयगुणा ४३ । तेभ्योपि जलचरपञ्चेन्द्रियनपुसका सङ्ख्येयगुणा ४४ । ते भ्योपि पर्याप्तचतुरिन्द्रिया सङ्ख्येयगुणा ४५ । तेभ्योपि पर्याप्ता सञ्ज्ञसञ्ज्ञिभेदभिन्ना पञ्चन्द्रिया विशेषाधिका ४६ । तेभ्योपि पर्याप्ता द्वीन्द्रिया विशेषाधिका ४७ । तेभ्योपि पर्याप्तत्रीन्द्रिया विशेषाधिका ४८ । यद्यपि पर्याप्तचतुरिन्द्रियादीना पर्याप्तत्रीन्द्रियपर्यन्ताना प्रत्येकमङ्गुलासङ्ख्येयना गमात्राणि शूचीरूपाणि खण्डानि यावत्येकस्मिन् प्रतरे नवति तावत्प्रमाणत्वमविशेषेणान्यत्र वण्यते तथाप्यङ्गुलासङ्ख्येयनागस्य सङ्ख्येयभेदभिन्नत्वा

दित्यविशेषाधिकत्वमुच्यमान न विरुद्ध उक्तचेत्थ मल्पबहुत्व मन्यत्रापि ततो नपुसक खचरसरेज्जा थलयरजलयरनपुसका चतुरिंदिय तत्तोपणवि तिपज्जत्तकिंचहिया इति ४८ । तेभ्योपि पर्याप्तत्रीन्द्रियेभ्यो ऽपर्याप्ता पञ्चेन्द्रिया असङ्ख्येयगुणा ४९ । अङ्गुलासङ्ख्येयनागमात्राणि खण्डानि सूचीरू पाणि यावत्येकस्मिन् प्रतरे नवति तावत्प्रमाणत्वात् ४९ । तेभ्य श्चतुरिन्द्रिया अपर्याप्ताविशेषाधिका ५० । तेभ्योपि त्रीन्द्रिया अपर्याप्ता विशे षाधिका ५१ । तेभ्यो द्वीन्द्रिया अपर्याप्ता विशेषाधिका यद्यपि चापर्याप्ता श्चतुरिन्द्रियादयो ऽपर्याप्तद्वीन्द्रियपर्यन्ता प्रत्येकमङ्गुलासङ्ख्येयनाग मात्राणि खण्डानि शूचीरूपाणि यावत्येकस्मिन् प्रतरे नवति तावत्प्रमाणा अन्यत्राविशेषेणोक्ता स्तथाप्यङ्गुलासङ्ख्येयनागस्य विचित्रत्वा दित्य वि शेषाधिकत्व मुच्यमान न विरोधमास्कन्दति ५२ । तेभ्योपि द्वीन्द्रियापर्याप्तेभ्य प्रत्येकबादरवनस्पतिकायिका पर्याप्ता असङ्ख्येयगुणा यद्यपि चा पर्याप्तद्वीन्द्रियादिवत् पर्याप्तबादरवनस्पतिकायिका ऽप्यङ्गुलासङ्ख्येयनागमात्राणि सूचीरूपाणि खण्डानि यावन्त्येकस्मिन् प्रतरे नवति तावत्प्र

॥ टीका ॥

शेषाधिका ७१ । तेभ्योपि सूक्ष्मनिगोदा अपर्याप्तका असख्येयगुणा ७२ । तेभ्योपि पर्याप्ता सूक्ष्मनिगोदा सख्येयगुणा यद्यपिच पर्याप्ततेज स्कायिकादय पर्याप्तसूक्ष्मनिगोदपर्यन्ता अविशेषेणाऽन्यत्राऽसख्येयलोकाकाशप्रदेशराशिप्रमाणा उक्ता तथाऽपि लोकाऽसख्येयत्वस्याऽसख्येय भेदभिन्नत्वादित्यमल्पबहुत्वमभिधीयमानमुपपन्न द्रष्टव्य ७३ । तेभ्यो ऽभवसिद्धिका अनन्तगुणा जघन्ययुक्तानन्तकप्रमाणत्वात् ७४ । तेभ्य प्रतिपति तसम्यग्दृष्टयोऽनन्तगुणा ७५ । तेभ्य सिद्धा अनन्तगुणा ७६ । तेभ्योपि वादरवनस्पतिकायिका पर्याप्ता अनन्तगुणा ७७ । तेभ्योपि सामान्यतो वादरपर्याप्ता विशेषाधिका वादरपर्याप्तपृथिवीकायिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् ७८ । तेभ्यो वादरापर्याप्तवनस्पतिकायिका असख्येयगुणा ए कैकवादरनिगोदपर्याप्तनिश्रयासख्येयगुणाना वादरापर्याप्तनिगोदाना सम्भवात् ७९ । तेभ्य सामान्यतो वादरापर्याप्ता विशेषाधिका वादरा पर्याप्तपृथिवीकायिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् ८० । तेभ्य सामान्यतो वादरा विशेषाधिका पर्याप्ताऽपर्याप्ताना तत्र प्रक्षेपात् ८१ । तेभ्य सूक्ष्मवनस्पतिकायिका अपर्याप्ता असख्येयगुणा ८२ । तेभ्य सामान्यत सूक्ष्मा अपर्याप्ता विशेषाधिका सूक्ष्माऽपर्याप्त पृथिवी कायिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् ८३ । तेभ्य सूक्ष्मवनस्पतिकायिका पर्याप्तका सख्येयगुणा पर्याप्तसूक्ष्माणामऽपर्याप्तसूक्ष्मेभ्य स्वत

॥ मूल ॥

विसेसाहिया वादरा विसेसाहिया सुहुमवणस्सइकाइया अपज्जत्तया असखेज्जगुणा सुहुमा अपज्जत्तया विसेसाहिया सुहुमवणस्सइकाइया पज्जत्तया सखेज्ज० सुहुमपज्जत्तगा विसेसाहिया सुहुमा विसेसाहि

॥ भाषा ॥

वि० बायरवणस्सइकाइय अपज्जत्तगा अस० । बादरपर्याप्ता विशेषाधिक बादरवनस्पतिकाइक अपर्याप्ता असख्यातगुणा । जीवाबायरा अपज्जत्तगा वि० बायराविसेसाहिया । सुहुमवणस्सइका.य अपज्जत्तगा अस० सुहुमअपज्जत्तगा वि० । सूक्ष्मवनस्पतिकाइक अपर्याप्ता असख्यातगुणा सूक्ष्म अप र्याप्ता विशेषाधिक । सुहुमवणस्सइकाइयपज्जत्तगा स० सुहुमपज्जत्तगा वि० । सूक्ष्मवनस्पतिकाइकपर्याप्ता सख्यातगुणा सूक्ष्मपर्याप्ता विशेषाधिक । सुहुमावि० भवसिद्धिया विसेसाहिया निगोयजीवा विसेसाहिया । सूक्ष्मविशेषाधिक तेहथी भवसिद्धिया विशेषाधिक तेहथी निगोदजीव विशेषाधिक ।

गुणा असंख्येयलोकाकाशप्रदेशराशिप्रमाणत्वात् ५८। तेभ्य प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका अपर्याप्ता असंख्येयगुणा ५९। तेभ्योपि बादर निगोदा अपर्याप्तका असंख्येयगुणा ६०। तेभ्यो बादरपृथिवीकायिका अपर्याप्तका असंख्येयगुणा ६१। तेभ्यो बादराप्कायिका अपर्याप्ता असंख्येयगुणा ६२। तेभ्यो बादरवायुकायिका अपर्याप्ता असंख्येयगुणा ६३। तेभ्य सूक्ष्मतेजस्कायिका अपर्याप्ता असंख्येयगुणा ६४। तेभ्य सूक्ष्म पृथिवीकायिका अपर्याप्ता विशेषाधिका ६५। तेभ्य सूक्ष्माप्कायिका अपर्याप्ता विशेषाधिका ६६। तेभ्य सूक्ष्मवायुकायिका अपर्याप्ता विशेषाधिका ६७। तेभ्य सूक्ष्मतेजस्कायिका पर्याप्तका असंख्येयगुणा अपर्याप्तकसूक्ष्मेभ्य पर्याप्तसूक्ष्माणां स्वभावतएव प्राचुर्येण भावात् तथाचाह- अस्यामेव प्रज्ञापनायां सङ्ग्रहणिकार -जीवाणमपज्जत्ता बहुतरगाबायराणविन्नेया सुहुमाणयपज्जत्ता ओहेणयकेवलीविति ॥ ६८ ॥ तेभ्योपि सूक्ष्म पृथिवीकायिका पर्याप्ता विशेषाधिका ६९। तभ्योपि सूक्ष्माप्कायिका पर्याप्ता विशेषाधिका ७०। तेभ्योपि सूक्ष्मवायुकायिका पर्याप्ता वि

मपुढविकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया सुहुमआउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया सुहुमवाउकाइया पज्ज त्तगा विसेसाहिया सुहुमणिगोदा अपज्जत्ता असंखे० सुहुमणिगोदा पज्जत्तया संखिज्जगुणा अभवसिद्धि या अणंतगुणा पडिवडिय सम्मदिट्ठी अणंतगुणा सिद्धा अणंतगुणा बादर वणस्सइकाइया पज्जत्तगा अ णंतगुणा बादरपज्जत्ता विसेसाहिया बादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तया असंखिज्जगुणा बादरअपज्जत्तया

हुमवाउकाईय पज्जत्तगा वि० । सूक्ष्मतेउकाइकपर्याप्ता सख्यातगुणा सूक्ष्मपृथवीकाइकपर्याप्ता विशेषाधिक सूक्ष्मअप्काइकपर्याप्ता विशेषाधिक । सुहुमवाउकाईयपज्जत्तगा वि० सु०मनिगोय अपज्जत्तगा ष० । सूक्ष्मवायकाइकपर्याप्ता विशेषाधिक सूक्ष्मनिगोद अपर्याप्ता असख्यातगुणा । सहुम निगोयपज्जत्तगा स० अभवसिद्धिया अणंतगुणा पडिवडिउमसमत्ता गण० सिद्धा अण० । सूक्ष्मनिगोदपर्याप्ता सख्यातगुणा तेहथी अभवसिधिक अनतगुणा प्रतिपतितसम्यग्दृष्टि अनतगुणा सिद्ध अनतगुणा । बायरवणस्सइकाईयपज्जत्तगा अण० । बादरवनस्पतिकाइकपर्याप्ता अनतगुणा । बायरपज्जत्तगा

॥ टीका ॥

ऽपाधिका ७१ । तेभ्योपि सूक्ष्मनिगोदा अपर्याप्तका असंख्येयगुणा ७२ । तेभ्योपि पर्याप्ता सूक्ष्मनिगोदा संख्येयगुणा यद्यपिच पर्याप्ततेज स्कायिकादय पर्याप्तसूक्ष्मनिगोदपर्यन्ता अविशेषेणाऽन्यत्राऽसंख्येयलोकाकाशप्रदेशराशिप्रमाणा उक्ता स्तथाऽपि लोकाऽसंख्येयत्वस्याऽसंख्येय भेदभिन्नत्वादित्थमल्पबहुत्वमभिधीयमानमुपपन्नं द्रष्टव्य ७३ । तेभ्यो ऽभवसिद्धिका अनन्तगुणा जघन्ययुक्तानन्तकप्रमाणत्वात् ७४ । तेभ्य प्रतिपतितसम्यग्दृष्टयोऽनन्तगुणा ७५ । तेभ्य सिद्धा अनन्तगुणा ७६ । तेभ्योपि वादरवनस्पतिकायिका पर्याप्ता अनन्तगुणा ७७ । तेभ्योपि सामान्यतो वादरपर्याप्ता विशेषाधिका वादरपर्याप्तपृथिवीकायिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् ७८ । तेभ्यो वादरापर्याप्तवनस्पतिकायिका असंख्येयगुणा ग कैकवादरनिगोदपर्याप्तनिश्रयासंख्येयगुणाना वादरापर्याप्तनिगोदाना सम्भवात् ७९ । तेभ्य सामान्यतो वादरापर्याप्ता विशेषाधिका वादरापर्याप्तपृथिवीकायिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् ८० । तेभ्य सामान्यतो वादरा विशेषाधिका पर्याप्ताऽपर्याप्ताना तत्र प्रक्षेपात् ८१ । तेभ्य सूक्ष्मवनस्पतिकायिका अपर्याप्ता असंख्येयगुणा ८२ । तेभ्य सामान्यत सूक्ष्मा अपर्याप्ता विशेषाधिका सूक्ष्माऽपर्याप्त पृथिवी कायिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् ८३ । तेभ्य सूक्ष्मवनस्पतिकायिका पर्याप्तका संख्येयगुणा पर्याप्तसूक्ष्माणामऽपर्याप्तसूक्ष्मेभ्य स्वभा

॥ सूत्र ॥

विसेसाहिया वादरा विसेसाहिया सुहुमवणस्सइकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा सुहुमा अपज्जत्तया विसेसाहिया सुहुमवणस्सइकाइया पज्जत्तया संखेज्ज० सुहुमपज्जत्तया विसेसाहिया सुहुमा विसेसाहि

॥ भाषा ॥

वि० बायरवणस्सइकाइय अपज्जत्तगा असं० । बादरपर्याप्ता विशेषाधिक बादरवनस्पतिकाइक अपर्याप्ता असंख्यातगुणा । जीवाबायरा अपज्जत्तगा वि० बायराविसेसाहिया । सुहुमवणस्सइकाइय अपज्जत्तगा असं० सुहुमअपज्जत्तगा वि० । सूक्ष्मवनस्पतिकाइक अपर्याप्ता असंख्यातगुणा सूक्ष्म अपर्याप्ता विशेषाधिक । सुहुमवणस्सइकाइयपज्जत्तगा सं० सुहुमपज्जत्तगा वि० । सूक्ष्मवनस्पतिकाइकपर्याप्ता संख्यातगुणा सूक्ष्मपर्याप्ता विशेषाधिक । सुहुमावि० भवसिद्धिया विसेसाहिया निगोयजीवा विसेसाहिया । सूक्ष्मविशेषाधिक तेहथी भवसिद्धिया विशेषाधिक तेहथी निगोदजीव विशेषाधिक ।

गुणा असंख्येयलोकाकाशप्रदेशराशिप्रमाणत्वात् ५८। तेभ्य प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका अपर्याप्ता असंख्येयगुणा ५९। तेभ्योपि बादर निगोदा अपर्याप्तका असंख्येयगुणा ६०। तेभ्यो बादरपृथिवीकायिका अपर्याप्तका असंख्येयगुणा ६१। तेभ्यो बादराप्कायिका अपर्याप्ता असंख्येयगुणा ६२। तेभ्यो बादरवायुकायिका अपर्याप्ता असंख्येयगुणा ६३। तेभ्य सूक्ष्मतेजस्कायिका अपर्याप्ता असंख्येयगुणा ६४। तेभ्य सूक्ष्म पृथिवीकायिका अपर्याप्ता विशेषाधिका ६५। तेभ्य सूक्ष्माप्कायिका अपर्याप्ता विशेषाधिका ६६। तेभ्य सूक्ष्मवायुकायिका अपर्याप्ता विशे षाधिका ६७। तेभ्य सूक्ष्मतेजस्कायिका पर्याप्तका असंख्येयगुणा अपर्याप्तकसूक्ष्मेभ्य पर्याप्तसूक्ष्माणां स्वभावतएव प्राचुर्यभावात् तथाचाह- अस्याएव प्रज्ञापनाया सङ्ग्रहणिकार -जीवाणमपज्जत्ता बहुतरगाबायराणविन्नेया सुहुमाणयपज्जत्ता उहेणयकेवलीविंति ॥ ६८ ॥ तेभ्योपि सूक्ष्म पृथिवीकायिका पर्याप्ता विशेषाधिका ६९। तेभ्योपि सूक्ष्माप्कायिका पर्याप्ता विशेषाधिका ७०। तेभ्योपि सूक्ष्मवायुकायिका पर्याप्ता वि

मपुढविकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया सुहुमआउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया सुहुमवाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया सुहुमणिगोदा अपज्जत्ता असंखे० सुहुमणिगोदा पज्जत्तया संखिज्जगुणा अभवसिद्धिया अणंतगुणा पडिवडिय सम्मदिट्ठी अणंतगुणा सिद्धा अणंतगुणा बादर वणस्सइकाइया पज्जत्तगा अणंतगुणा बादरपज्जत्ता विसेसाहिया बादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तया असंखिज्जगुणा बादरअपज्जत्तया

क्ष्मआउकाइय पज्जत्तगा वि० । सूक्ष्मतेउकाइकपर्याप्ता संख्यातगुणा सूक्ष्मपृथवीकाइकपर्याप्ता विशेषाधिक सूक्ष्मअपकाइकपर्याप्ता विशेषाधिक। सुहमवाउकाईयपज्जत्तगा वि० सुहुमनिगोय अपज्जत्तगा अ०। सूक्ष्मवायुकाइकपर्याप्ता विशेषाधिक सूक्ष्मनिगोद अपर्याप्ता असंख्यातगुणा। सहुम निगोयपज्जत्तगा सं० अभवसिद्धिया अणंतगुणा पडिवडिअसमत्ता अणं० सिद्धा अणं०। सूक्ष्मनिगोदपर्याप्ता संख्यातगुणा तेहथी अभवसिद्धिक अनंतगुणा प्रतिपतितसम्यग्दृष्टि अनंतगुणा सिद्ध अनंतगुणा। बायरवणस्सइकाईयपज्जत्तगा अणं०। बादरवनस्पतिकाइकपर्याप्ता अनंतगुणा। बायरपज्जत्तगा

॥ टीका ॥

षेपाधिका ७१ । तेभ्योऽपि सूक्ष्मनिगोदा अपर्याप्तका असंख्येयगुणा ७२ । तेभ्योऽपि पर्याप्ता सूक्ष्मनिगोदा संख्येयगुणा यद्यपिच पर्याप्ततेज स्कायिकादय पर्याप्तसूक्ष्मनिगोदपर्यन्ता अविशेषेणाऽन्यत्राऽसंख्येयलोकाकाशप्रदेशराशिप्रमाणा उक्ता तथाऽपि लोकाऽसंख्येयत्वस्याऽसंख्येय भेदभिन्नत्वादित्यमल्पबहुत्वमभिधीयमानमुपपन्नं द्रष्टव्य ७३ । तेभ्यो ऽभवसिद्धिका अनन्तगुणा जघन्ययुक्तानन्तकप्रमाणत्वात् ७४ । तेभ्य प्रतिपति तसम्यग्दृष्टयोऽनन्तगुणा ७५ । तेभ्य सिद्धा अनन्तगुणा ७६ । तेभ्योऽपि बादरवनस्पतिकायिका पर्याप्ता अनन्तगुणा ७७ । तेभ्योऽपि सामान्यतो बादरपर्याप्ता विशेषाधिका बादरपर्याप्तपृथिवीकायिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् ७८ । तेभ्यो बादरापर्याप्तवनस्पतिकायिका असंख्येयगुणा ए कैकबादरनिगोदपर्याप्तनिश्रयाऽसंख्येयगुणानां बादरापर्याप्तनिगोदानां सम्भवात् ७९ । तेभ्य सामान्यतो बादरापर्याप्ता विशेषाधिका बादरा पर्याप्तपृथिवीकायिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् ८० । तेभ्य सामान्यतो बादरा विशेषाधिका पर्याप्ताऽपर्याप्तानां तत्र प्रक्षेपात् ८१ । तेभ्य सूक्ष्मवनस्पतिकायिका अपर्याप्ता असंख्येयगुणा ८२ । तेभ्य सामान्यत सूक्ष्मा अपर्याप्ता विशेषाधिका सूक्ष्माऽपर्याप्त पृथिवी कायिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् ८३ । तेभ्य सूक्ष्मवनस्पतिकायिका पर्याप्तका संख्येयगुणा पर्याप्तसूक्ष्माणामपर्याप्तसूक्ष्मेभ्य स्वभा

॥ सूत्र ॥

विसेसाहिया बादरा विसेसाहिया सुहुमवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा सुहुमा अपज्जत्तया विसेसाहिया सुहुमवणस्सइकाइया पज्जत्तया संखेज्ज० सुहुमपज्जत्तगा विसेसाहिया सुहुमा विसेसाहि

॥ भाषा ॥

वि० बायरवणस्सइकाइय अपज्जत्तगा अस० । बादरपर्याप्ता विशेषाधिक बादरवनस्पतिकाइक अपर्याप्ता असंख्यातगुणा । जीवाबायरा अपज्जत्तगा वि० बायराविसेसाहिया । सुहुमवणस्सइकाइय अपज्जत्तगा अस० सुहुमअपज्जत्तगा वि० । सूक्ष्मवनस्पतिकाइक अपर्याप्ता असंख्यातगुणा सूक्ष्म अप र्याप्ता विशेषाधिक । सुहुमवणस्सइकाइयपज्जत्तगा स० सुहुमपज्जत्तगा वि० । सूक्ष्मवनस्पतिकाइकपर्याप्ता संख्यातगुणा सूक्ष्मपर्याप्ता विशेषाधिक । सुहुमावि० भवसिद्धिया विसेसाहिया निगोयजीवा विसेसाहिया । सूक्ष्मविशेषाधिक तेहथी भवसिद्धिया विशेषाधिक तेहथी निगोदनीव विशेषाधिक ।

वत सदैव सर्येयगुणतया प्राप्यमाणत्वात्, तथाकेवलवेदसोनुपलब्धे ८४ । तेभ्योपि सामान्यत सूक्ष्मा पर्याप्ता विशेषाधिका पर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकादीनामऽपि तत्र प्रक्षेपात् ८५ । तेभ्य पर्याप्ताऽपर्याप्तविशेषणरहिता सूक्ष्मा विशेषाधिका अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिव्यप्तेजोवायुवनस्पतिकायिकानामऽपि तत्र प्रक्षेपात् ८६ । तेभ्योऽपि भवसिद्धिका भवे सिद्धि येषा ते भवसिद्धिका भव्याविशेषाधिका जघन्ययुक्तानन्तकमात्राऽभव्यपरिहारेण सर्वजीवानां भव्यत्वात् ८७ । तेभ्य सामान्यतो निगोदजीवा विशेषाधिका इह भव्या अभव्या श्चाऽतिप्राचुर्येण बादरसूक्ष्मनिगोदजीवराशावेव प्राप्यन्ते नाऽन्यत्राऽन्येषा सर्वेषाऽमपि मिलिता नामसङ्ख्येयलोकाकाशप्रदेशराशिप्रमाणत्वात्, अभव्याश्च युक्तानन्तकसङ्ख्यामात्रपरिमाण स्ततो भव्यापेक्षया ते किंचिन्मात्रा भव्याश्च प्रागऽभव्यपरिहारेण चिन्तिता इदानीतु बादरसूक्ष्मनिगोदचिन्तायां तेपि प्रक्षिप्यन्ते इति विशेषाधिका ८८ । तेभ्य सामान्यतो वनस्पतिजीवा विशेषाधिका प्रत्यकशरीरिणामपि वनस्पतिजीवाना तत्र प्रक्षेपात् ८९ । तेभ्य सामान्यत एकेन्द्रिया विशेषाधिका बादरसूक्ष्मपृथिवीकायिकादीनामपि तत्क्षेपात् ९० । तेभ्य सामान्यत स्तिर्यग्योनिका विशेषाधिका पर्याप्तापर्याप्तद्वित्रिच

या भवसिद्धिया विसेसाहिया निगोदा जीवा विसेसाहिया वणस्सइजीवा विसेसाहिया एगिंदिया विसेसाहिया तिरिक्खजोणिया विसेसाहिया मिच्छदिठी विसेसाहिया अविरया विसेसाहिया छउमत्था विसेसाहिया सजोगी विसेसाहिया ससारत्था विसेसाहिया सव्वजीवा विसेसाहिया ॥ पण्णवणाए भगवईए

वणस्सइजीवा विसेसाहिया एगिंदिया विसेसाहिया । वनस्पतिजीव विशेषाधिक एकेंद्रिय विशेषाधिक । तिरिक्खजोणिया विसेसाहिया मिच्छदिठी विसेसाहिया । तेहथी तिर्यचयोनिया विशेषाधिक तेहथी मिथ्यादृष्टि विशेषाधिक । अविरती विसेसाहिया सकसाई विसेसाहिया छउमत्था विसेसा० सयोगी विसेसाहिया ससारत्था विसेसाहिया । तेहथी अविरती सम्यग्दृष्टी विशेषाधिक सकषाई विशेषाधिक छद्मस्थ विशेषाधिक सयोगी विशेषाधिक ससारीजीव विशेषाधिक । सव्वजीवा विसेसाहिया ९८ पण्णवणाए भगवईए बहुवत्तया पय सम्मत्त । तेहथी सर्वजीव विशेषाधिक सिद्धजीवाए ९८

तुरिन्द्रियतिर्यक्पञ्चेन्द्रियाणामपि तत्र प्रक्षेपात् ८१ । तेभ्य श्चतुर्गतिभाविनो मिथ्यादृष्टयो विशेषाधिका इह कतिपयाविरतसम्यग्दृष्ट्यादिसंज्ञि व्यतिरेकेण शेषा सर्वेऽपि तिर्यञ्चो मिथ्यादृष्टिचिन्तायां चासंख्येयनारकादय स्ता प्रक्षिप्यन्ते तत स्तिर्यग्जीवराश्यपेक्षया चतुर्गतिका मिथ्यादृष्टय श्चिन्त्यमाना विशेषाधिका ८२ । तेभ्योऽप्यविरता विशेषाधिका अविरतिसम्यग्दृष्टीनामपि तत्र प्रक्षेपात् ८३ । तेभ्य सकषायिणो विशेषाधिका दे शविरतादीनामऽपि तत्र प्रक्षेपात् ८४ । तेभ्य छद्मस्था विशेषाधिका उपशान्तमोहादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् ८५ । तेभ्य सयोगिनो विशेषाधिका सयोगिकेवलिनामऽपि तत्र प्रक्षेपात् ८६ । तेभ्य संसारस्था विशेषाधिका अयोगिकेवलिनामऽपि तत्र प्रक्षेपात् ८७ । तेभ्य सर्वजीवा विशेषाधि का सिद्धानामऽपि तत्र प्रक्षेपात् ८८ ॥ इतिश्री मलयगिरिविरचितायां प्रज्ञापनाटीकायां बहुवक्तव्याख्य तृतीय पद समाप्तम् ॥ ३ ॥

व्याख्यातं तृतीयपद मिदानीं चतुर्थमारभ्यते-तस्य चायमभिसम्बन्ध इहानन्तरपदे दिगनुपातादिनाऽल्पबहुत्वसङ्ख्या निर्द्धारिता अस्मिंस्तु तया अल्पबहुत्वसङ्ख्या निर्द्धारितानां जीवानां सत्त्वानां जन्मत प्रभृत्यामरणात् यन्नारकादिपर्यायरूपेण व्यवच्छिन्न मवस्थानं त च्चिन्त्यते, अनेन स म्बन्धेनायातस्यास्येदमादिमं सूत्र-नेरइयाणं भंते । केवइयं कालं ठिइ पन्नत्ता इति ॥ नैरयिकाणां भदन्त । कियन्तं कालं स्थिति प्रज्ञप्ता तत्र स्थी

बहुवक्तव्यपदं सम्मत्तं ॥ ३ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

णेरइयाणं भंते । केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणं तेत्तीसं साग

नैरयिकाणां भदन्त । कियन्तं कालं स्थिति प्रज्ञप्ता ? गौतम । जघन्येन दशवर्षसहस्राण्युत्कर्षतस्त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि' अपर्याप्तनैर

हारनो महादंडक अल्पबहुत्वना पद त्रीजा समाप्तथया इणतीजे पदे अल्पबहुत्व जीवनां कह्या २७ द्वार प्रज्ञापना भगवती मा ह्य ॥ ३ ॥

नेरइयाण भंते केवतिय कालाठइ प० । हिवे चउथेपदे पर्याप्त उत्कृष्टजघन्यास्थिति आउखो कहेछे—नारकीनो हेभगवन केतला काल नीस्थिति कही । गो०

जहन्नेणं दसवाससहस्साइं उ० तित्तीससागरोवमाइं । हेगौतम जघन्य थाकी दसहजारवर्षनो स्थितिरत्नप्रभानो अपेक्षायें उत्कृष्टो तेतीससागरोपम

वणा
ट ४
०५ ॥

यते ऽवस्थीयते अनया ऽयु कर्मानुभूत्येति स्थिति स्थितिरायु कर्मानुभूति जीवनमितिपर्याया ' यद्यप्यत्र जीवेन मिथ्यात्वादिभिरुपात्ताना कर्मपु

रोवमाइ अपज्जत्तगणेरइयाण भंते ! केवइय काल ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेण अंतोमुहुत्तं उक्को सेणवि अंतोमुहुत्तं पज्जत्तगणेरइयाण भंते ! केवइय काल ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेण दसवासस हस्साइ अंतोमुहुत्तूणाइ उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ अंतोमुहुत्तूणाइ रयणप्पभापुढविणेरइयाण भंते !

यिकाणा भदन्त ! कियन्त काल स्थिति प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षेणाप्यन्तर्मुहूर्त, पर्याप्तकनैरयिकाणा कियन्त काल स्थिति प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्यतो दशवर्षसहस्राणि अन्तर्मुहूर्तोनानि उत्कर्षत त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि अन्तर्मुहूर्तोनानि, रत्नप्रभापृथि वीनैरयिकाणा भदन्त ! कियन्त काल स्थिति प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्यतो दशवर्षसहस्राण्युत्कर्षत सागरोपमम्, अपर्याप्तरत्नप्रभापृ

नी स्थिति तमतमा पृथिवीनो अपेक्षायें । अपज्जत्तग नेरइयाण भंते केवतिय कालठिइ प० । अपर्याप्तानारकीनो केतलाकालनीस्थितिकही । गो० जह न्नेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्त । हेगौतम जघन्येपिण अंतर्मुहूर्त उत्कृष्टेपिण अंतर्मुहूर्त । पज्जत्तगनेरइयाण भंते केवतिय कालठिइ प० । पर्याप्ता नारकीनो केतलाकालनीस्थितिकही । गो० जहन्नेण दसवाससहस्सा" । हेगौतम जघन्येदसहजारवर्ष । अंतोमुहुत्तूणाइ उक्कोसेण तेत्तीससागरोव माइ अंतोमुहुत्तूणाइ । अंतर्मुहूर्तऊणो उत्कृष्टोतेतीससागरोपम अंतर्मुहूर्तऊणो । रयणप्पभाए पुढवीए नेरइयाणभंते केव० । रत्नप्रभा पृथिवीना नारकीनो हेभगवन् केतलाकालनीस्थिति । गोयमा जहन्नेण दसवाससहस्साइ उक्कोसेण सागरोवम । हेगौतम जघन्यदसहजारवर्ष उत्कृष्टे एकसागरोपम । अपज्ज त्तरयणप्पभपुढवीनेरइयाण भंते के० । अपर्याप्ता रत्नप्रभाना नारकीनो केतलीस्थिति हेभगवन । गोयमा जहन्नेणवि अंतोमुहुत्त उक्कोसेणवि अंतो मुहुत्त । हेगौ म जघन्येपिण अंतर्मुहूर्त उत्कृष्टेपिण अंतर्मुहूर्त । पज्जत्तरयणप्पभपुढवीनेरइयाण भंते के० । पर्याप्ता रत्नप्रभाना नारकीनो केतलीस्थिति हेभगवन् ।
९ गोयमा जहन्नेण दसवाससहस्साइ । हेगौतम जघन्येदसहजारवर्ष । अंतोमुहुत्तूणाइ उक्कोसेण सागरोवम अंतोमुहुत्तूण सक्करप्पभपुढवीनेरइयाण भंते

॥ मूल ॥

केवइय काल ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण दसवाससहस्साइं उक्कोसेण सागरोवमं अपज्जत्तरयणप्पभापुढविणेरइयाण केवइय काल ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणवि अंतोमुहुत्त उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्त पज्जत्तयरयणप्पभापुढविणेरइयाण भंते ! केवइय काल ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण दसवाससहस्साइ अंतोमुहुत्तूणाइ उक्कोसेण सागरोवम अंतोमुहुत्तूण । सक्करप्पभापुढविणेरइयाण भंते ! केवइय काल ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण एग सागरोवम उक्कोसेण तिण्णि सागरोवमाइ अपज्जत्तसक्करप्पभापुढविणेरइयाण भंते ! केवइय काल ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्त पज्जत्तसक्करप्पभापुढविणेरइयाण भंते ! केवइय काल ठिई प० ? गोयमा ! जहण्णेण साग

॥ अ० ॥

थिवीनैरयिकाणा भदन्त ! कियन्त काल स्थिति प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनाप्यन्तर्मुहूर्तमुत्कर्षेणाप्यन्तर्मुहूर्त, पर्याप्तकरत्नप्रभापृथिवीनैरयिकाणा भदन्त ! कियन्त काल स्थिति प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन दशवर्षसहस्राण्यन्तर्मुहूर्तोनानि उत्कर्षेण सागरोपममन्तर्मुहूर्तोनम् । शर्कराप्रभापृथिवीनैरयिकाणा भदन्त ! कियन्त काल स्थिति प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनैक सागरोपममुत्कर्षेण त्रीणि सागरोपमाणि, अपर्याप्तकशर्कराप्रभापृथिवीनैरयिकाणा भदन्त ! कियन्त काल स्थिति प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षेणाप्यन्तर्मुहूर्तं

॥ भाषा ॥

रू० । अंतर्मुहूर्तकणी उत्कृष्टी सागरोपम अंतर्मुहूर्त ऊन शर्कराप्रभाना नारकीनी स्थिति केतला काल हे भगवन ! गोयमा जहन्नथ एगसागरोवम, उक्कोसेण तिन्नसागरोवम । हे गौतम जघन्य एकसागरोपम उत्कृष्ट तीनसागरोपमनी स्थिति । अपज्जत्तसक्करप्पभपुढवीनेरइयाण भंते के० । अपर्याप्ता शर्कराप्रभाना नारकीनो केतलोस्थिति हे भगवन ! गोयमा जहन्नेण अंतोमुहुत्त उ० अंतोमुहुत्त । हे गौतम जघन्यअंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त । पज्जत्त सक्करप्पभपुढवीनेरइयाण भंते के० । पर्याप्ताशर्कराप्रभापृथिवीना नारकीनी स्थिति हे भगवन् केतलीस्थिति कही । गोयमा जहन्नेण सागरोवम अंतोमुह

सेयम अंतोमुहुत्तूण उक्कोसेण तिण्णि सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं वालुयप्पभापुढविनेरइयाणं भंते ! केवइय कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेण तिण्णि सागरोवमाइं उक्कोसेण सत्त सागरोवमाइं अप ज्जत्तयवालुयप्पभापुढविणेरइयाण भंते ! केवइय कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयवालुयप्पभापुढविणेरइयाण भंते ! केवइय कालं ठिई पण्णत्ता ? गोय

म् । पर्याप्तशर्कराप्रभापृथिवीनैरयिकाणां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तोनं सागरोपमं उत्कर्षतोऽन्तर्मुहूर्त्तोनानि त्रीणि सागरोपमाणि । वालुकाप्रभापृथिवीनैरयिकाणां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन त्रीणि सागरोपमाणि उत्कर्षेण सप्तसागरोपमाणि । अपर्याप्तकवालुकाप्रभापृथिवीनैरयिकाणां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तकवालुकाप्रभापृथिवीनैरयिकाणां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघ

त्तूण उ० तिन्निसागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । हे भगवन् जघन्य एकसागरोपम अंतर्मुहूर्त्तऊणो उत्कृष्टो तीनसागरोपम अंतर्मुहूर्त्तऊणो । वालुयप्पभापुढवीनेरइयाण भंते के० । वालुकप्रभाना नारकीनो केतलीस्थिति हे भगवन् । गोयमा जहन्नेण तिन्निसागरोवमाइं उ० सत्तसागरोवमाइं । हे गौतम जघन्य तीनसागरोपम उत्कृष्ट सातसागरोपम । अपज्जत्तवालुयप्पभपुढवीनेरइयाण भंते के० । अपर्याप्ता वालुकप्रभाना नारकीनी केतलीस्थिति हे भगवन् गोयमा जहन्नेण अंतोमुहुत्त उक्को० अंतमुहुत्त । हे गौतम जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त । पज्जत्तगवालुयप्पभपुढवीनेरइयाण भंते के० । पर्याप्ता वालुकप्रभाना नारकीनो केतलीस्थिति हे भगवन् । गोयमा जहन्नेण तिन्निसागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । हे गौतम जघन्य तीनसागरोपम अंतर्मुहूर्त्तऊण । उ० सत्तसागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । उत्कृष्ट सातसागरोपमनी अंतर्मुहूर्त्तऊणी । पंकप्पभपुढवीनेरइयाण भंते के० । पंकप्रभाना नारकीनी केतलीस्थिति कही प्र० । उत्तर हे गौतम जघन्य सात सागरोपम उत्कृष्ट दश सागरोपमनी स्थिति कही । अपज्जत्तपंकप्पभा० । अपर्याप्त पंकप्रभाना नारकीनी

॥ टीका ॥

द्गलानां ज्ञानावरणीयादिरूपतया परिणतानां यदवस्थानं सा स्थिति रितिप्रसिद्ध तथापि नारकादिव्यपदेशहेतुरायु कर्मानुभूति स्थायाः-यद्यपि नरकगतिपञ्चेन्द्रियजात्यादिनामकर्मोदयाश्रयो नारकत्वपर्याय स्तथापि नारकायु प्रथमसमयसंवेदनकालएव तन्निबन्धननारकक्षेत्रमप्राप्तोपि नारक स्य व्यपदेश लभन्ते, तथाच मौनीन्द्र प्रवचन-नेरइएणं भंते ! नेरइएसु उववज्जइ अनेरइए नेरइएसु उववज्जइ ? गो० ! नेरइए नेरइएसु उवव ज्जइ नो अनेरइए नेरइएसु उववज्जइ इत्यादि,, तत सैवायु कर्मानुभूति रिह यथोक्तव्युत्पत्त्या स्थिति रभिधीयते इति, अत्र निर्वचनमाह-गो यमेत्यादि ॥ एतच्च पर्याप्तापर्याप्तविभागाभावेन सामान्यत उक्तं यदा तु पर्याप्तापर्याप्तभागेन चिन्ता तदेदं सूत्र-अपज्जत्तनेरइयाणं भंते ! इत्यादि ॥ इहापर्याप्ता द्विविधा लब्ध्या करणैश्च तत्र नैरयिका देवा सङ्ख्येयवर्षायुष स्तिर्यग्मनुष्या करणैरेवाऽपर्याप्ता न लब्ध्यालब्ध्यऽपर्याप्तकानां तेषु मध्ये उत्पादासम्भवात् तत भंते उपपातकालएव करणैः कियन्तं कालं मपर्याप्ता द्रष्टव्या, सेषास्तु तिर्यग्मनुष्या लब्ध्या अपर्याप्ता उपपातकाले च, उ क्तञ्च-नारगदेवातिरिमणु यगब्भजाजेअसंखवासाऊ । एएअपज्जत्ती उववाएचेवबोधव्वा ॥ १ ॥ सेसायतिरियमणुया लद्धपप्पोववायकालेय । दुहत्त वियजन्यव्वा पज्जत्तियरेयजिणवयणं ॥ २ ॥ अपर्याप्तका श्च जघन्यत उत्कर्षतोवान्तर्मुहूर्त्त मत उक्त-गोयमा ! जहन्नेणं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं, ॥ अपर्याप्ताद्यापगमे च शेषकाल पर्याप्ता तत उक्त पर्याप्तसूत्रे-गोयमा ! जहन्नेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तऊणाइं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोव माइं अंतोमुहुत्तऊणाइं ॥ एतच्च पृथिव्यऽविभागेन चिन्तितं सम्प्रति पृथिवीविभागेन चिन्तयति-रयणप्पभापुढविनेरइयाणं भंते ! इत्यादि सुग

॥ मूल ॥

मा ! जहन्नेण तिन्नि सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं सत्तसागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं पङ्कप्प

॥ अ० ॥

येन त्रीणि सागरोपमाणि अन्तर्मुहूर्त्तोनानि उत्कर्षत सप्तसागरोपमाणि अन्तर्मुहूर्त्तोनानि । पङ्कप्रभापृथिवीनैरयिकाणां भदन्त ! कियन्त

॥ भाषा ॥

हे भगवन् केतला कालनी स्थिति कही प्र० । उत्तर हे गौतम जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त नी उत्कृष्ट पिण अन्तर्मुहूर्त्त नी कही । पज्जत्तय पञ्चपभत्ति । पर्याप्ता पङ्कप्रभापृथिवीना नारकीनी हे भगवन् केतला कालनी स्थिति कही प्र० । उत्तर हे गौतम जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त न्यून सात सागरोपम उत्कृष्ट अन्तर्मुह

प्पापुढविनेरइयाणं भंते ! केवइयं काल ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं सत्तसागरोवमाइं उक्कोसेणं दससागरोवमाइ । अपज्जत्तयपंकप्पभापुढविनेरइयाण भंते ! केवइय काल ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्त । पज्जत्तयपंकप्पभापुढविणेरइयाण भंते ! केवइय काल ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेण सत्तसागरोवमाइ अंतोमुहुत्तूणाइ उक्कोसेण दससागरोवमाइ अंतोमुहुत्तूणाइ धूमप्पभापुढविणेरइयाण भंते ! केवइय काल ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेण दससागरोवमाइ

काल स्थिति प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन सप्तसागरोपमाणि उत्कर्षतो दशसागरोपमाणि, अपर्याप्तपङ्कप्रभापृथिवीनैरयिकाणां भदन्त ! कियन्त काल स्थिति प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्यतो प्यन्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतोप्यन्तर्मुहूर्तम्, पर्याप्तकपङ्कप्रभापृथिवीनैरयिकाणां भदन्त ! कियन्त काल स्थिति प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन सप्तसागरोपमाणि अन्तर्मुहूर्तोनानि उत्कर्षतो दशसागरोपमाणि अन्तर्मुहूर्तोनानि । धूमप्रभापृथिवीनैरयिकाणां भदन्त ! कियन्त काल स्थिति प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्यन दश सागरोपमाण्युत्कर्षत सप्तदश सागरोपमाणि । अपर्याप्तधूमप्रभापृथिवीनैरयिकाणां भगवन् ! कियन्त काल स्थिति प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनाप्यन्तर्मुहूर्त मुत्कर्षतोप्यन्तर्मुहूर्तम् ।

र्त न्यून दश सागरोपम नी कही । धूमप्पभत्ति । धूमप्रभापृथिवी ना नारकीनी हे भगवन् केतला कालनी स्थिति कही प्र० । उत्तर हे गौतम जघन्य दश सागरोपम नी उत्कृष्ट सतरह सागरोपम नी कही । अपज्जत्तय धूमत्ति । अपर्याप्त धूमप्रभा पृथिवीना नारकीनो हे भगवन् केतला कालनी स्थिति कही प्र० । उत्तर हे गौतम जघन्य पिण अन्तर्मुहूर्त नो उत्कृष्ट पिण अन्तर्मुहूर्त नो कही । पज्जत्तधूमत्ति । पर्याप्त धूमप्रभा पृथिवीना नारकीनो हे भगवन् केतला कालनी स्थिति कही प्र० । उत्तर हे गौतम जघन्य अन्तर्मुहूर्त न्यून दश सागरोपम उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त कम सतरे सागरोपम कही । तमप्पभत्ति । तमप्रभा पृथिवीना नारकीनो हे भगवन् केतला कालनी स्थिति कही प्र० । उत्तर हे गौतम जघन्य सतरह सागरोपम

उक्कोसेण सतरसागरोवमाई । अपज्जत्तयधूमप्पभापुढविणेरइयाणं भंते ! केवइय कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणवि अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयधूमप्पभापुढविणेरइयाणं भंते! केवइय कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दससागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं सतरसागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं , तमप्पभापुढविनेरइयाणं भंते ! केवइय कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं सतरसागरोवमाइं उक्कोसेणं बावीससागरोवमाइं । अपज्जत्तयतमप्पभापुढविनेरइयाणं केवइय कालं ठिई प० ? गोयमा ! जहण्णेणवि अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि । अंतोमुहुत्तं पज्जत्तयतमप्पभापुढविनेरइयाणं भंते ! केव

पर्याप्तधूमप्रभापृथिवीनैरयिकाणां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन दश सागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्तोनानि उत्कृष्टत सप्तदशसागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्तोनानि, तमप्रभापृथिवीनैरयिकाणां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन सप्तदशसागरोपमाण्युत्कर्षतो द्वाविंशति सागरोपमाणि । अपर्याप्ततमप्रभापृथिवीनैरयिकाणां कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षेणाप्यन्तर्मुहूर्तम् । पर्याप्ततमप्रभापृथिवीनैरयिकाणां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन सप्तदश

उत्कृष्ट बावीस सागरोपम नो कह्यो । अपज्जत्ततमत्ति । अपर्याप्त तमप्रभा पृथिवीना नारकीनो हे भगवन् केतला कालनी स्थिति कही प्र० । उत्तर हे गौतम जघन्य पिण अन्तर्मुहूर्त नो उत्कृष्ट पिण अन्तर्मुहूर्त नो कह्यो । पज्जत्तयतमत्ति । पर्याप्ता तमप्रभा पृथिवीना नारकीनो हे भगवन् केतला कालनी स्थिति कही प्र० । उत्तर हे गौतम जघन्य अन्तर्मुहूर्त न्यून सतरह सागरोपमनी उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त न्यून बावीस सागरोपम नो कह्यो अहेसत्तमत्ति । अधोसातमी पृथिवी ना नारकीनो हे भगवन् केतला कालनी स्थिति कही प्र० । उत्तर हे गौतम जघन्य बावीस सागरोपम नो उत्कृष्ट तेतीस सागरोपम ना प्ररूप्यो । अपज्जतय अहेसत्तमत्ति । अपर्याप्त नीच सातमी पृथिवीना नारकीनो केतला कालनी स्थिति प्ररूपी प्र० । उत्तर

उक्कोसेणं पणपन्नपलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । भवणवासीणं भंते ! देवाणं केवइयं कालं ठिई प० ? गोयमा ! जहन्नेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणं सातिरेगं सागरोवमं । अपज्जत्तयभवणवासीणं भंते ! देवाणं केवइयं कालं ठिई प० ? गोयमा ! जहन्नेणवि अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयभवणवासीणं भंते ! देवाणं केवइयं कालं ठिई प० ? गोयमा ! जहन्नेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं सातिरेगं सागरोवमं अंतोमुहुत्तूणं । भवणवासिणीणं भंते ! देवीणं केवइयं कालं ठिई प०

यन्त कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्यनान्तर्मुहूर्त्तोनानि दशवर्षसहस्राणि उत्कर्षतः पञ्चपञ्चाशत्पल्योपमान्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि ॥ भवनवासिदेवानां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन दशवर्षसहस्राणि उत्कर्षतः सातिरेकं सागरोपमम् । अपर्याप्तकभवनवासिदेवानां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनाप्यन्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तकभवनवासिदेवानां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन दशवर्षसहस्राण्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि उत्कर्षतः सातिरेकं सागरोपममन्तर्मुहूर्त्तोनम् । भवनवासिनीनां देवीनां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन दशवर्षसहस्राण्युत्कर्षतोऽर्द्धपञ्चमानि

छे । भवणवासीणं भंते । भवनवासी देवतानी हे भगवन कितना कालनी स्थिति कही प्रश्न । उत्तर गौतम जघन्य थी दश हजार वर्षनी उत्कृष्ट थी सातिरेक सागरोपम कही । अपज्जत्तयभवणवासीणंति । अपर्याप्त भवनवासी देवतानी कितना कालनी स्थिति कही प्र० उत्तर गौतम जघन्य थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त उत्कृष्ट थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । पज्जत्तभवणवासीणंति । पर्याप्त भवनवासी देवतानी हे भगवन् कितना कालनी स्थिति कही प्र० उत्तर गौतम जघन्य थी दश हजार वर्षनी अन्तर्मुहूर्त्त ऊन उत्कृष्ट थी अन्तर्मुहूर्त्त न्यून सातिरेक सागरोपम । भवणवासिणीणंति । भवनवासि देवीनी हे भगवन् कितना कालनी स्थिति कही प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी दश हजार वर्षनी उत्कृष्ट थी साढे चार पल्योपम नी कही । अपज्जत्तिया

? गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणं अद्धपंचमाइं । पलिओवमाइं अपज्जत्तियाणं भंते ! भवणवासिणीणं देवीणं केवइयं कालं ठिई प० ? गोयमा ! जहन्नेणवि अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तियाणं भंते ! भवणवासिणीणं देवीणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं अद्धपंचमाइं पलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । असुरकुमाराणं भंते ! देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणं साइरेगं सागरोवमं अपज्जत्तयअसुरकुमाराणं भंते ! देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणवि अंतोमुहुत्तं

(सार्द्धचतु) पल्योपमानि । अपर्याप्तभवनवासिदेवीनां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनाप्यन्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षेणाप्यन्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तभवनवासिदेवीनां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन दशवर्षसहस्राण्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि उत्कर्षतो द्व्यर्धपञ्चमानि पल्योपमान्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि ॥ असुरकुमाराणां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्यतो दशवर्षसहस्राण्युत्कर्षतः सातिरेकं सागरोपमम् । अपर्याप्तासुरकुमारदेवानां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनाप्यन्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतो

य भवणवासिणीणंति । अपर्याप्त भवनवासि देवीनो हे भगवन केतला कालनी स्थिति कही प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त उत्कृष्ट नो पिण अन्तर्मुहूर्त्त कही । पज्जत्तयाण भवणवासिणीणंति । पर्याप्त भवनवासी देवीनी हे भगवन् केतला कालनी स्थिति कही प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त न्यून दश हजार वर्ष उत्कृष्ट थी अन्तर्मुहूर्त्त न्यून साढे चार पल्योपम नी कही । असुरकुमाराणं भंतेत्ति । असुरकुमारदेवतानी हे भगवन केतला कालनी स्थिति कही प्र० उ० हे गौतम जघन्य दश हजार वर्षनी उत्कृष्ट थी सातिरेक सागरोपम नी कही । अपज्जत्त असुरकुमाराणंति । अपर्याप्त असुरकुमार देवतानी हे भगवन् केतला कालनी स्थिति कही प्र० उत्तर गौतम जघन्य थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त उत्कृष्ट पिण अन्तर्मुहूर्त्त

उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं। पज्जत्तयअसुरकुमाराणं भंते! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता? गोयमा! जहन्नेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं सातिरेगं सागरोवमं अंतोमुहुत्तूणं। असुरकुमारीणं भंते! देवीणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता? गोयमा! जहन्नेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणं अद्धपंचमाइं पलिओवमाइं। अपज्जत्तियाणं असुरकुमारीणं भंते! देवीणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता? गोयमा! जहन्नेणवि अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं। पज्जत्तियाणं असुरकुमारीणं भंते! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता? गो

प्यन्तर्मुहूर्तम्। पर्याप्तकासुरकुमाराणां देवानां भदन्त! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता? गौतम! जघन्येनान्तर्मुहूर्तोनानि दशवर्षसहस्राण्युत्कर्षतः सातिरेकं सागरोपममन्तर्मुहूर्तोनम्॥ असुरकुमारदेवीनां भदन्त! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता? गौतम! जघन्येन दशवर्षसहस्राण्युत्कर्षतोऽर्द्धपञ्चमानि पल्योपमानि। अपर्याप्तकासुरकुमारदेवीनां भदन्त! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता? गौतम! जघन्येनाप्यन्तर्मुहूर्तमुत्कर्षेणाप्यन्तर्मुहूर्तम्। पर्याप्ता सुरकुमारदेवीनां भदन्त! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता? गौतम! जघन्येन दशवर्षसहस्राण्यन्तर्मु

नी कही। पज्जत्त असुरकुमाराणंति। पर्याप्त असुरकुमार देवतानी हे भगवन् केतला कालनी स्थिति कही प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त न्यून दश हजार वर्षनी उत्कृष्ट थी अन्तर्मुहूर्त न्यून कांइक अधिक सागरोपम कही। असुरकुमारीणं भंते देवीणंति। असुरकुमार देवीनी हे भगवन् केतला कालनी स्थिति कही प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य दश हजार वर्षनी उत्कृष्ट साढा चार पल्योपमनी कही। अपज्जत्तियाणं असुरकुमारीणंति। अपर्याप्त असुरकुमारदेवीनो हे भगवन् केतलो आयु कह्यो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी पिण अन्तर्मुहूर्त नो उत्कृष्ट थी पिण अन्तर्मुहूर्त नो। पज्जत्तियाणं असुरकुमारीणंति। पर्याप्ता असुरकुमारनी देवीनो केतलो आयु कह्यो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त न्यून दश हजार वर्षनो उत्कृष्ट थी अन्तर्मुहूर्त न्यून साढा चार पल्योपमनो कह्यो। नागकुमाराणं देवाणंति। नागकुमार देवतानो हे भगवन् केतलो आयु कह्यो प्र० उ० हे गौ०

यमा ! जहण्णेण दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं अद्धपंचमाइं पलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं। नागकुमारीणं भंते ! देवीणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणं दोवि पलिओवमाइं देसूणाइं । अपज्जत्तयाणं भंते ! नागकुमारीणं देवीणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयाणं भंते ! नागकुमारीणं देवीणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं दोन्नि पलिओवमाइं देसूणाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । नागकुमारीणं भंते ! देवीणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण ॥ सूत्र ॥

हूर्त्तोनान्युत्कर्षतोऽर्द्धपञ्चमानि पल्योपमान्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि । नागकुमाराणां भदन्त ! देवानां कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन दशवर्षसहस्राण्युत्कर्षतो देशोने द्वे पल्योपमे । अपर्याप्तकनागकुमाराणां भगवन् ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्यतोऽप्यन्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तकानां भदन्त ! नागकुमाराणां देवानां कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन दशवर्षसहस्राण्यन्तर्मुहूर्त्तोनान्युत्कर्षतो देशोने द्वे पल्योपमेऽन्तर्मुहूर्त्तोने । नागकुमारीणां भदन्त ! देवीनां कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन दशवर्षसहस्राणि उत्कर्षतो (देशेन ऊनं) देशोनं (किञ्चिन्न्यूनं) पल्योपमम् । अपर्याप्तकनागकुमारीणां भदन्त ! देवीनां कियन्तं ॥ अ० ॥

जघन्य थी दसहजार वर्षनों उत्कृष्ट थी देशोन दोय पल्योपम कह्या । अपज्जत्तियाण नागकुमाराणंति । अपर्याप्त नागकुमारना हे भगवन कितलो आयु कह्यो प्र० उ० जघन्य थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त कह्यो उत्कृष्ट थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त कह्यो । पज्जत्तयाण नागकुमाराणंति । पर्याप्त नागकुमार देवताना हे भ० कितलो आयु कह्यो प्र० उ० हे गौ० जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त न्यून दसहजार वर्षनों उत्कृष्ट देशोन दोय पल्योपम एतले अन्तर्मुहूर्त्त न्यून दोय पल्योपम कह्या नागकुमारीणंति । नागकुमारी देवीना हे भ० कितलो आयु कह्यो प्र० उ० हे गौ० जघन्य दसहजार वर्षनों उत्कृष्ट देशोन पल्योपम । अपज्जत्तियाण नागकु ॥ भाषा ॥

उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं। पज्जत्तयअसुरकुमाराणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं सातिरेगं सागरोवमं अंतोमुहुत्तूणं। असुरकुमारीणं भंते ! देवीणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणं अद्धपंचमाइं पलिओवमाइं। अपज्जत्तियाणं असुरकुमारीणं भंते ! देवीणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणवि अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं। पज्जत्तियाणं असुरकुमारीणं भंते! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गो

प्यन्तर्मुहूर्त्तम्। पर्याप्तकासुरकुमाराणां देवानां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तोनानि दशवर्षसहस्राण्युत्कर्षतः सातिरेकं सागरोपममन्तर्मुहूर्त्तोनम्॥ असुरकुमारदेवीनां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन दशवर्षसहस्राण्युत्कर्षतोऽर्द्धपञ्चमानि पल्योपमानि। अपर्याप्तकासुरकुमारदेवीनां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनाप्यन्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षेणाप्यन्तर्मुहूर्त्तम्। पर्याप्तासुरकुमारदेवीनां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन दशवर्षसहस्राण्यन्तर्मु

नो कह्यो। पज्जत्त असुरकुमाराणंति। पर्याप्त असुरकुमार देवतानो हे भगवन् केतला कालनी स्थिति कही प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त न्यून दश हजार वर्षनी उत्कृष्ट थी अन्तर्मुहूर्त्त न्यून कांइक अधिक सागरोपम कह्यो। असुरकुमारीण भंते देवीणंति। असुरकुमार देवीनो हे भगवन् केतला कालनी स्थिति कही प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य दश हजार वर्षनी उत्कृष्ट साढा चार पल्योपमनी कही। अपज्जत्तियाण असुरकुमारीणंति। अपर्याप्त असुरकुमारदेवीनो हे भगवन् केतलो आयु कह्यो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त नो उत्कृष्ट थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त नो। पज्जत्तियाण असुरकुमारीणंति। पर्याप्ता असुरकुमारनी देवीनो केतलो आयु कह्यो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त न्यून दश हजार वर्षनो उत्कृष्ट थी अन्तर्मुहूर्त्त न्यून साढा चार पल्योपमनो कह्यो। नागकुमाराण देवाणंति। नागकुमार देवतानो हे भगवन् केतलो आयु कह्यो प्र० उ० हे गौ०

॥ मूल ॥

यमा ! जहराणेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं अद्धपंचमाइं पलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं। नागकुमारीणं भंते ! देवीणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहराणेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणं दोवि पलिओवमाइं देसूणाइं । अपज्जत्तयाणं भंते ! नागकुमाराणं देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहराणेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयाणं भंते ! नागकुमाराणं देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहराणेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं दोणि पलिओवमाइं देसूणाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । नागकुमारीणं भंते ! देवीणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहराणेणं

॥ अ० ॥

हूर्तोनान्युत्कर्षतोऽर्धपञ्चमानि पल्योपमान्यन्तर्मुहूर्तोनानि । नागकुमाराणां भदन्त ! देवानां कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन दशवर्षसहस्राण्युत्कर्षतो देशोने द्वे पल्योपमे । अपर्याप्तकनागकुमाराणां भगवन् ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्यतोऽप्यन्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्तम् । पर्याप्तकानां भदन्त ! नागकुमाराणां देवानां कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन दशवर्षसहस्राण्यन्तर्मुहूर्तोनान्युत्कर्षतो देशोने द्वे पल्योपमेऽन्तर्मुहूर्तोने । नागकुमारीणां भदन्त ! देवीनां कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन दशवर्षसहस्राणि उत्कर्षतो (देशोन ऊन) देशोनं (किञ्चिन्न्यूनं) पल्योपमम् । अपर्याप्तकनागकुमारीणां भदन्त ! देवीनां कियन्त

॥ भाषा ॥

जघन्य थी दशहजार वर्षनो उत्कृष्ट थी देशोन दोय पल्योपम कह्यो । अपज्जत्तियाणं नागकुमाराणंति । अपर्याप्त नागकुमारना हे भगवन कतलो आयु कह्यो प्र० उ० जघन्य थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त कह्यो उत्कृष्ट थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त कह्यो । पज्जत्तयाणं नागकुमाराणंति । पर्याप्त नागकुमार देवतानो हे भ० केतलो आयु कह्यो प्र० उ० हे गौ० जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त न्यून दशहजार वर्षनो उत्कृष्ट देशोन दोय पल्योपम एतले अन्तर्मुहूर्त्त न्यून दोय पल्योपम कह्यो नागकुमारीणंति । नागकुमारी देवीनो हे भ० केतलो आयु कह्यो प्र० उ० हे गौ० जघन्य दशहजार वर्षनो उत्कृष्ट देशोन पल्योपम । अपज्जत्तियाणं नागक

उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं। पज्जत्तयअसुरकुमाराणं भंते। केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं सातिरेगं सागरोवमं अंतोमुहुत्तूणं। असुरकुमारीणं भंते ! देवीणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणं अद्धपंचमाइं पलिओवमाइं। अपज्जत्तियाणं असुरकुमारीणं भंते ! देवीणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणवि अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं। पज्जत्तियाणं असुरकुमारीणं भंते! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गो

प्यन्तर्मुहूर्तम्। पर्याप्तकासुरकुमाराणां देवानां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तोनानि दशवर्षसहस्राण्युत्कर्षतः सातिरेकं सागरोपममन्तर्मुहूर्तोनम् ॥ असुरकुमारदेवीनां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन दशवर्षसहस्राण्युत्कर्षतोऽर्द्धपञ्चमानि पल्योपमानि। अपर्याप्तकासुरकुमारदेवीनां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनाप्यन्तर्मुहूर्तमुत्कर्षेणाप्यन्तर्मुहूर्तम्। पर्याप्ता सुरकुमारदेवीनां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन दशवर्षसहस्राण्यन्तर्मु

नो कह्यो। पज्जत्त असुरकुमाराणंति। पर्याप्त असुरकुमार देवतानो हे भगवन् केतला कालनो स्थिति कही प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त न्यून दश हजार वर्षनो उत्कृष्ट थी अन्तर्मुहूर्त न्यून कुछ अधिक सागरोपम कह्यो। असुरकुमारीणं भंते देवीणंति। असुरकुमार देवीनो हे भगवन् केतला कालनो स्थिति कही प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य दश हजार वर्षनो उत्कृष्ट साढे चार पल्योपमनो कही। अपज्जत्तियाणं असुरकुमारीणंति। अपर्याप्त असुरकुमारदेवीनो हे भगवन् केतलो आयु कह्यो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी पिण अन्तर्मुहूर्तनो उत्कृष्ट थी पिण अन्तर्मुहूर्त नो। पज्जत्तियाणं असुरकुमारीणंति। पर्याप्ता असुरकुमारनी देवीनो केतलो आयु कह्यो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त न्यून दश हजार वर्षनो उत्कृष्ट थी अन्तर्मुहूर्त न्यून साढ चार पल्योपमनो कह्यो। नागकुमाराणं देवाणंति। नागकुमार देवतानो हे भगवन् केतलो आयु कह्यो प्र० उ० हे गौ०

॥ मूल ॥

सेण दो पलिओवमाइं देसूणाइं अंतोमुहुत्तूणाइं। सुवण्णकुमारीणं देवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवा ससहस्साइं उक्कोसेणं देसूणं पलिओवमं। अपज्जत्तियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अं तोमुहुत्तं। पज्जत्तियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं देसूणं पलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं, एवं एएणं अभिलावेणं ओहिअपज्जत्तपज्जत्तसुत्ततयं देवाणं देवीणय णेयव्वं जाव थणियकुमाराणं जहा नागकुमाराणं। पुढविकाइयाणं भंते! केवइयं कालं ठिई प० ? गो० ! जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं। अपज्जत्तयपुढविकाइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई प० ? गो० !

॥ अ० ॥

पर्णकुमारदेवीनां पृच्छा ? गौतम ! जघन्येन दशवर्षसहस्राण्युत्कर्षतो देशोनं पल्योपमम्। अपर्याप्तकसुपर्णकुमारदेवीनां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्त्तम्। पर्याप्तकसुपर्णकुमारदेवीनां पृच्छा ? गौतम ! जघन्येन दशवर्षसहस्राण्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि उत्कर्षतो देशोनं पल्योपममन्तर्मुहूर्त्तोनम्। एवमेतेनाभिलापेनौघिकापर्याप्तपर्याप्तसूत्रत्रयं देवानां देवीनाञ्च ज्ञातव्यं यावत्स्तनितकुमाराणां यथा नागकुमाराणाम्॥ पृथिवीकायिकानां भदन्त ! कियत्कालं स्थितिः प्रज्ञ० ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतो द्वाविंशतिवर्षसहस्राणि। अपर्याप्त

॥ भाषा ॥

र्णकुमारीनी पृच्छा। सुवर्णकुमारीनो प्रश्न कीधो उत्तर हे गौतम जघन्य दशहजारवर्ष उत्कृष्ट देशोन पल्योपम। अपज्जत्तियाणं पुच्छा। अपर्याप्त सुवर्णकुमार देवीनो प्रश्न कीधो उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त उत्कृष्ट थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त। पज्जत्तियाण पुच्छा। पर्याप्त सुवर्णकुमारनी देवीनो प्रश्न कीधो उत्तर हे गौतम जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त न्यून दशहजारवर्ष उत्कृष्ट थी अन्तर्मुहूर्त्त न्यून देशोन पल्योपम, इम एणे अभिलावे औधिक १ अपर्याप्त २ पर्याप्त ३ सूत्र तीन देवता देवीना जाणवा यावत्स्तनितकुमार लगे कहवो जिम नागकुमारने कह्या तिम कहवा। पृथिवीकायिकनो हे भगवन् केतलो आयु कह्यो हे गौतम जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त नो उत्कृष्ट बावीसहजार वर्षनो। अपज्जत्तयपुढविकाइयाणंति। अपर्याप्त पृथिवीकायनो

दसवाससहस्साइ उक्कोसेण देसूण पलिउवम । अपज्जत्तियाणं नागकुमारीणं भंते ! देवीण केवइय कालं ठिई प० ? गोयमा । जहन्नेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तियाण नागकुमारीण भंते ! देवीण केवइयं काल ठिई प० ? गोयमा । जहन्नेण दसवाससहस्साइ अंतोमुहुत्तूणाइ उक्कोसेणं देसूण पलिउवम अंतोमुहुत्तूण । सुवण्णकुमाराण भंते ! देवाण केवइय काल ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेण दसवाससहस्साइ उक्कोसेण दो पलिउवमाइ देसूणाइ । अपज्जत्तयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयाणपुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण दसवाससहस्साइ अंतोमुहुत्तूणाइ उक्को

काल स्थिति प्रज्ञप्ता ? गौतम । जघन्यतोऽप्यन्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तकनागकुमारीणां भदन्त । देवीनां कियन्त काल स्थिति प्रज्ञ० ? गौतम । जघन्येन दशवर्षसहस्राण्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि उत्कर्षतो देशोनं पल्योपममन्तर्मुहूर्त्तोनम् ॥ सुपर्णकुमाराणां भगवन् । देवानां कियन्त काल स्थिति प्रज्ञ० ? गौतम । जघन्येन दशवर्षसहस्राण्युत्कर्षतो द्वे पल्योपमे देशोने । अपर्याप्तकानां पृच्छा' गौतम । जघन्येनाप्युत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तकानां पृच्छा' गौतम । जघन्येन दशवर्षसहस्राण्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि उत्कर्षतो देशोने द्वे पल्योपमेऽन्तर्मुहूर्त्तोने । सु

माराणात । अपर्याप्त नागकुमार देवीनो हे भगवन् केतलो आयु कह्यो प्र० उ० हे गौ० जघन्य पिण अन्तर्मुहूर्त्त उत्कृष्ट पिण अन्तर्मुहूर्त्त । पज्जत्तियाण नागकुमारीण । पर्याप्त नागकुमारी देवीनो हे भगवन केतलो आयु कह्यो प्र० उ० हे गौ० जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त न्यून दशहजार वर्षनो उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त्त न्यून देशोन पल्योपम । सुवन्नकुमाराणति । सुवर्ण कुमार देवतानो केतलो स्थिति कही प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी दशहजार वर्ष उत्कृष्ट थी देशोन दोय पल्योपम । अपज्जत्तियाण पुच्छा, अपर्याप्त सुवर्णकुमारनो प्र० चौथो उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कृष्ट थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । पज्जत्तयाण पुच्छा । पर्याप्तो प्र० चौथो उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त न्यून दशहजारवर्ष उत्कृष्ट थी अन्तर्मुहूर्त्त न्यून देशोन दोय पल्योपम । सुव

पज्जत्तयबादरपुढविकाइयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं । आउकाइयाण भंते ! केवइयं कालं ठिई प० ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं सत्तवाससहस्साइं । अपज्जत्तयआउकाइयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयआउकाइयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं सत्तवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं । आउकाइयाणं ओहियाणं अपज्जत्तयाणं पज्जत्तयाणं जहा सुहुमपुढविकाइयाणं तहा भा

मुहूर्त्तमुत्कर्षतो द्वाविंशतिवर्षसहस्राणि । अपर्याप्तकबादरपृथिवीकायिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनाप्यन्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतोप्यन्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तकबादरपृथिवीकायिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतो द्वाविंशतिवर्षसहस्राण्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि ॥ अप्कायिकानां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञ० ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतः सप्तवर्षसहस्राणि । अपर्याप्तकाप्कायिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतोप्यन्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तकाप्कायिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतः सप्तवर्षसहस्राण्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि । अप्का

गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त नो उत्कृष्ट थी बावीसहजारवर्ष नो । अपज्जत्तबादरपुढविकाइयाणंति । अपर्याप्त बादर पृथिवीकायिक नो प्रश्न कीधो उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कृष्ट थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त नो । पज्जत्तयबादरपुढविति । पर्याप्त बादरपृथिवीकायिक नो प्र० कीधो उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त नो उत्कृष्ट थी अन्तर्मुहूर्त्त न्यून बावीसहजार वर्ष नो । आउकाइयाणं भंते त्ति । अप्कायिक नो हे भगवन् केतलो आयु कह्यो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त नो उत्कृष्ट थी सातहजारवर्ष नो । अपज्जत्तयआउकाइयाणंति । अपर्याप्ताप्कायिक नो प्र० कीधो उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त नो कह्यो । पज्जत्तय आउकाइयाणंति । पर्याप्त अप्कायिक नो प्र० कीधो उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्ष थी सातहजारवर्ष अन्तर्मुहूर्त्त न्यून । आउकाइयाणं ओहियाणंति । अप्कायिक औघिक १ अपर्याप्त २ पर्याप्तने जिम सू

जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयपुढविकाइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई प० ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं । सुहुमपुढविकाइयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं अपज्जत्तयसुहुमपुढविकाइयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयसुहुमपुढविकाइयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । बादरपुढविकाइयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं । अपज्जत्तयबादरपुढविकाइयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं ।

कपृथिवीकायिकाना भदन्त ! कियत्काल स्थिति प्रज्ञ० ? गौतम ! जघन्यतोप्युत्कर्षतोप्यन्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तकपृथिवीकायिकाना भदन्त ! कियन्त काल स्थिति प्रज्ञ० ? गौतम ! जघन्यनान्तर्मुहूर्त्तं मुत्कर्षतो द्वाविंशतिवर्षसहस्राण्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि । सूक्ष्मपृथिवीकायिकाना पृच्छा, गौतम ! जघन्यतोप्यन्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतोप्यन्तर्मुहूर्त्तम् । अपर्याप्तकसूक्ष्मपृथिवीकायिकाना पृच्छा, गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षेणाप्यन्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तकसूक्ष्मपृथिवीकायिकाना पृच्छा, गौतम ! जघन्यतोप्युत्कर्षतो प्यन्तर्मुहूर्त्तम् । बादरपृथिवीकायिकाना पृच्छा, गौतम ! जघन्यनान्त

हे भगवन् केतलो आयु कह्यो प्रश्न उत्तर हे गौतम [जघन्य थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त उत्कृष्ट थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त नो कह्यो । पज्जत्तपुढविकाइयाणंति । पर्याप्त पृथिवीकाय नो हे भगवन् केतलो आयु कह्यो प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कृष्ट था अन्तर्मुहूर्त्त न्यून २२हजारवर्ष नो कह्यो । सुहुमपुढविकाइयाणंति । सूक्ष्मपृथिवीकाय ना प्रश्न कीधा उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कृष्ट थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त नो । अपज्जत्तयसुहुमपु० । अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिक नो प्र० कीधो उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कृष्ट थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त नो । पज्जत्तयसुहुमत्ति । पर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिक ना प्र० कीधा उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कृष्ट थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त नो । बादरपुढविकाइयाणंति । बादरपृथिवीकायनो प्र० कीधो उत्तर हे

उक्कोसेणं तिण्णि राइंदियाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । सुहुमतेउकाइयाणं पुच्छा ? गो० ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । अपज्जत्तापज्जत्ताण सुहुमाण पुच्छा ? गो० ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । बायरतेउकाइयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण तिण्णि राइंदियाइं । अपज्जत्तयाण पुच्छा, ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण तिण्णि राइंदियाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । वाउकाइयाण भंते ! केवइयं कालं ठिई प० ? गोयमा ! जहन्नेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण तिण्णि वाससहस्साइं । अपज्जत्तवाउकाइयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्ने

॥ प्र० ॥

नाप्युत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्तम् । अपर्याप्तपर्याप्तसूक्ष्मतेजस्कायिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्तम् । बादरतेजस्कायिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतस्त्रीणि रात्रिंदिवानि । अपर्याप्तकबादरतेजस्कायिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनोत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्तम्, पर्याप्तकबादरतेजस्कायिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतस्त्रीणि रात्रिंदिवानि अन्तर्मुहूर्तोनानि । वायुकायिकाना

॥ भाषा ॥

पणे तीन रात्रिदिन। सुहुमतेउकाइयाणंति। सूक्ष्मतेजस्कायिक नो प्र० कोधो उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कृष्ट थी पिण अन्तर्मुहूर्त नो कह्यो। अपज्जत्तापज्जत्ताण सुहुमाणं। अपर्याप्त पर्याप्त सूक्ष्म तेजस्कायिक ना प्र० कीधो उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कृष्ट थी पिण अन्तर्मुहूर्त नो। बादरतेउकाइयाणंति। बादरतेजस्काय नो प्र० कीधो उत्तर हे गौतम जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन अहोरात्र। अपज्जत्तयाणंति। अपर्याप्त बादरतेजस्काय नो प्र० कीधो उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कृष्ट थी पिण अन्तर्मुहूर्त। पज्जत्तयाणंति। पर्याप्त बादर तेजस्काय ना प्र० कीधो उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट थी तीन रात्रिदिन अन्तर्मुहूर्त ऊन। वाउकाइयाणंति। वायुकायिक नो हे भगवन् केतला काल नी स्थिति कही। गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त नी उत्कृष्ट था तीन हजार वर्ष नी। अपज्जत्तवाउकाइयाणंति। अपर्याप्त वायुकायिक नो प्र० कीधो उत्तर हे गौतम जघ

णियव्वं । बादरआउकाइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं सत्तवाससहस्साइं अपज्ज
त्तयबादरआउकाइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयाणं पुच्छा ?
गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं सत्तवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं । तेउकाइयाणं भंते ! केवइयं
कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिन्नि राइंदियाइं । अपज्जत्तयाणं पुच्छा
? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं

यिकानामौघिकानामपर्याप्तकानां पर्याप्तकानां यथा सूक्ष्मपृथिवीकायिकानां "भणितं" तथा भणितव्यम् । बादराप्कायिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतः सप्तवर्षसहस्राणि । अपर्याप्तबादराप्कायिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्तं । पर्याप्तकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतः सप्तवर्षसहस्राण्यन्तर्मुहूर्तोनानि । तेजस्कायिकानां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञ० ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतस्त्रीणि रात्रिदिवानि । अपर्याप्तकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनाप्यन्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्तम् । पर्याप्तकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतस्त्रीणि रात्रिदिवानि अन्तर्मुहूर्तोनानि । सूक्ष्मतेजस्कायिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्ये

क्ष्म पृथिवी कायिकने कह्या तिम कहवो । बादरआयुकाइयाणंति । बादर अप्कायिकनो प्र० कीधो हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट थी सात हजारवर्ष नी कह्या । अपज्जत्तयबादर आउकाइयाणंति । अपर्याप्तबादर अप्कायिक नो प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त । पज्जत्तयाणंति । पर्याप्तक नो प्र० कीधो उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त उत्कर्ष थी सातहजारवर्ष अन्तर्मुहूर्त ऊन कह्यो । तेउकाइयाणंति । तेजस्काय नो प्र० कीधो उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त उत्कर्ष थी तीन अहोरात्र । अपज्जत्तियाणंति । अपर्याप्त तेजस्कायिक नो प्र० कीधो उ० हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त । पज्जत्तियाणंति । पर्याप्त तेजस्कायिक नो प्र० कीधो उ० हे गौतम जघन्य अन्तर्मुहूर्त नो उत्क

उक्कोसेण तिन्नि राइंदियाइं अंतोमुहुत्तूणाइं। सुहुमतेउकाइयाणं पुच्छा? गो० ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं। अपज्जत्तापज्जत्ताण सुहुमाण पुच्छा? गो०। जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं। बायरतेउकाइयाण पुच्छा? गोयमा! जहन्नेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण तिन्नि राइंदियाइं। अपज्जत्तयाण पुच्छा, ? गोयमा। जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं। पज्जत्तयाण पुच्छा? गोयमा! जहन्नेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण तिन्नि राइंदियाइं अंतोमुहुत्तूणाइं। वाउकाइयाण भंते! केवइय कालं ठिई प०? गोयमा! जहन्नेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण तिन्नि वाससहस्साइं। अपज्जत्तवाउकाइयाण पुच्छा? गोयमा! जहन्ने

नाप्युत्कर्षताप्यन्तर्मुहूर्तम्। अपर्याप्तपर्याप्तसूक्ष्मतेजस्कायिकानां पृच्छा, गौतम। जघन्येनाप्युत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्तम्। बादरतेजस्कायिकानां पृच्छा, गौतम। जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतस्त्रीणि रात्रिंदिवानि। अपर्याप्तकबादरतेजस्कायिकानां पृच्छा, गौतम। जघन्येनोत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्तम्, पर्याप्तकबादरतेजस्कायिकानां पृच्छा, गौतम। जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतस्त्रीणि रात्रिंदिवानि अन्तर्मुहूर्तोनानि। वायुकायिकानां

प थी तीन रात्रिदिन। सूक्ष्मतेउकायाणंति। सूक्ष्मतेजस्कायिक नी प्र० कौधा उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कृष्ट थी पिण अन्तर्मुहूर्त नी कह्या। अपज्जत्तापज्जत्ताण सुहुमाण। अपर्याप्त पर्याप्त सूक्ष्म तेजस्कायिक ना प्र० कौधा उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कृष्ट थी पिण अन्तर्मुहूर्त नो। बादरतेउकायाणंति। बादरतेजस्काय नो प्र० कौधा उत्तर हे गौतम जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन अहोरात्र। अपज्जत्तयाणंति। अपर्याप्त बादरतेजस्काय नो प्र० कौधो उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कृष्ट थी पिण अन्तर्मुहूर्त। पज्जत्ताणंति। पर्याप्त बादर तेजस्काय नो प्र० कौधो उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट थी तीन रात्रिदिन अन्तर्मुहूर्त ऊन। वाउकाइयाणंति। वायुकायिक नी हे भगवन् केतला कालनी स्थिति कही। गौतम जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त नी उत्कृष्ट थी तीन हजारवर्ष नी। अपज्जत्तवाउकाइयाणंति। अपर्याप्त वायुकायिक नो प्र० कौधा उत्तर हे गौतम जघ

॥ मूल ॥
॥ अ० ॥
॥ भाषा ॥

णवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्ताण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिन्नि वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं । सुहुमवाउकाइयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । अपज्जत्ताणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । बादरवाउकाइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिन्नि वाससहस्साइं । अपज्जत्तबादरवाउकाइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसे

पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतस्त्रीणि वर्षसहस्राणि । अपर्याप्तकवायुकायिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्तम् । पर्याप्तकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतस्त्रीणि वर्षसहस्राण्यन्तर्मुहूर्तोनानि ॥ सूक्ष्मवायुकायिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्यतोऽप्युत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्तम् । अपर्याप्तकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्यतोऽप्युत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्तम् । पर्याप्तकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षेणाप्यन्तर्मुहूर्तम् । बादरवायुकायिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतस्त्रीणि वर्षसहस्राणि । अपर्याप्तबादरवायुकायि

न्य थी पिण उत्कृष्ट थी पिण अंतर्मुहूर्त । पज्जत्ताणति । पर्याप्त वायुकायनो प्र० कीधो उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट थी तीनहजार वर्ष अन्तर्मुहूर्त ऊन । सुहुमवायुकाइयाणति । सूक्ष्मवायुकाय नो प्रश्न कीधो उ० हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त । अपज्जत्तियाणति । अपर्याप्त सूक्ष्मवायुकायिक ना प्रश्न कीधो उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कृष्ट थी पिण अन्तर्मुहूर्त । पज्जत्तयाणति । पर्याप्त सूक्ष्मवायुकाय ना प्रश्न कीधो उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त । बादर वाउकाइयाणति । बादर वायुकाय नो प्रश्न कीधो उत्तर हे गौतम ज घन्य थी अन्तर्मुहूर्त उत्कर्ष तीनहजारवर्ष नो । अपज्जत्तबादरवाउकाइयाणति । अपर्याप्तबादर वायुकायिक नो प्र० कीधो उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त । पज्जत्तबादर वायु० । पर्याप्तबादर-वायुकाय नो प्रश्न कीधो उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त उत्कर्ष थी तीन

णवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तबादरवाउकाइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिन्नि वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं । वणस्सइकाइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं दसवाससहस्साइं । अपज्जत्तयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं । सुहुमवणस्सइकाइयाणं ओहियाणं अपज्जत्तापज्जत्ताणय अंतोमुहुत्तं । बादरवणस्सइकाइयाणं

कानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तबादरवायुकायिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतस्त्रीणि वर्षसहस्राण्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि ॥ वनस्पतिकायिकानां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञ० ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतो दशवर्षसहस्राणि । अपर्याप्तकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तकवनस्पतिकायिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतो दशवर्षसहस्राण्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि । सूक्ष्मवनस्पतिकायिकानामौघिकानामपर्याप्तपर्याप्तकानां च्चान्तर्मुहूर्त्तम् ॥ बादरवनस्पतिकायिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतो दशवर्षसहस्राणि । अपर्याप्तबादरवनस्पतिकायिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनोत्कर्षतश्चान्त

हजारवर्ष अन्तर्मुहूर्त्त ऊन । वणस्सइकाइयाणंति । वनस्पतिकाइक नो हे भगवन् केतला कालनो स्थिति कही । हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कृष्ट दश हजार वर्षनो । अपज्जत्तियाण पुच्छा । अपर्याप्त वनस्पतिकाय नो प्रश्न कीधो उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त पज्जत्तयाणंति । पर्याप्त वनस्पतिकाय नो प्र० कीधो उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्ष थी दशहजारवर्ष अन्तर्मुहूर्त्त ऊन । सुहुमवणस्सइ काइयाणंति । सूक्ष्मवनस्पतिकायिक औघिक अपर्याप्त पर्याप्त नो अन्तर्मुहूर्त्त ना आयु कह्या । बादरवणस्सइकाइयाणंति । बादरवनस्पतिकाय नो प्र० कीधो उत्तर हे गौतम जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त उत्कृष्ट दशहजारवर्ष नो कह्यो । अपज्जत्तबादर वणस्सइकाइयाणंति । अपर्याप्त बादर वनस्पतिकाय ना प्र०

१८
४
१५॥

पुच्छा ? गो० ! जहन्नेण अतोमुहुत्तं उक्कोसेणं दसवाससहस्साइं। अपज्जत्तबादरवणस्सइकाइयाणं पुच्छा ? गो० ! जहन्नेण उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तबादरवणस्सइकाइयाणं पुच्छा ? गो० ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं । बेइंदियाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गो० ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बारस संवच्छराइं । अपज्जत्तबेइंदियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तबेइंदियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बारस संवच्छराइं अंतोमुहुत्तूणाइं । तेइंदियाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं

मुहूर्त्तम् । पर्याप्तबादरवनस्पतिकायिकानां पृच्छा ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतो दशवर्षसहस्राण्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि । द्वीन्द्रियाणां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञ० ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतो द्वादश संवत्सराणि । अपर्याप्तद्वीन्द्रियाणां पृच्छा ? गौतम ! जघन्येनोत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तद्वीन्द्रियाणां पृच्छा ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतो द्वादश संवत्सराणि अन्तर्मुहूर्त्तोनानि ॥ त्रीन्द्रियाणां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञ० ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षत एकोनपञ्चाशद्रात्रिंदिवानि । अपर्याप्तत्रीन्द्रियाणां भदन्त !

कीधी छे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । पज्जत्तबादर वणस्सइकाइयाणंति । पर्याप्त बादर वनस्पतिकाय नो प्र० कीधी उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्ष थी दशहजारवर्ष मां अन्तर्मुहूर्त्त ऊन । बेइंदियाणंति । बेइन्द्रियनी हे भगवन् केतला कालनी स्थिति कही प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्ष थी बारेवर्ष । अपज्जत्तयाणं बेइंदियाणंति । अपर्याप्त बेइन्द्रिय नो प्र० कीधी उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण अ० मुहूर्त्त उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । पज्जत्तबेइंदियाणंति । पर्याप्त बेइन्द्रिय नो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्ष थी बारे वर्ष अन्तर्मुहूर्त्त ऊन । तेइंदियाणंति । तेइन्द्रियनी हे भगवन् केतला कालनी स्थिति कही प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्ष थी ओगण

उक्कोसेण एगूणपण्णराइंदियाइं । अपज्जत्ततेइंदियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्ततेइंदियाण पुच्छा ? गोयमा ! अंतोमुहुत्तं जहण्णेण उक्कोसेण एगूणपण्णराइंदियाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । चउरिंदियाण भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं छम्मासा । अप्पज्जत्तयचउरिंदियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयचउरिंदियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण छम्मासा अंतोमुहुत्तूणा । पंचिंदियतिरिक्खजोणियाण भंते ! केवइयं कालं ठिई प० ? गोयमा ! जहन्नेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइं ।

पृच्छा, गौतम ! जघन्येनोत्कर्षत आन्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तत्रीन्द्रियाणां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षत एकोनपञ्चाशद्रात्रिंदिवानि अन्तर्मुहूर्त्तोनानि । चतुरिन्द्रियाणां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतः षण्मासाः । अपर्याप्तकचतुरिन्द्रियाणां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तकचतुरिन्द्रियाणां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतः षण्मासा अन्तर्मुहूर्त्तोनाः ॥ पञ्चेन्द्रिय

चास अहोरात्र । अपज्जत्ततेइंदियाणंति । अपर्याप्त तेइंद्रिय नो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । पज्जत्ततेइंदियाणंति । पर्याप्त तेइंद्रिय ना प्र० पूछ्यां उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्ष थी उगुणपचास अहोरात्र अन्तर्मुहूर्त्त ऊन । चउरिंदियाणंति । चौरिंद्रियनो हे भगवन् केतला कालनी स्थिति कही प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कृष्ट थी छ मासनी कही । अपज्जत्तयचउरिंदियाणंति । अपर्याप्त चउरिंद्रियनी केतला कालनी स्थिति कही प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त कही । पज्जत्तचउरिंदियाणंति । पर्याप्त चौरिंद्रीनी केतला कालनी स्थिति कही प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कृष्ट थी अन्तर्मुहूर्त्त न्यून छ मास । पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणंति । पंचेंद्रियतिर्यंच योनिकनी हे भगवन् केतला कालनी स्थिति कही प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कृष्ट थी तीन पल्यो

अपज्जत्तपचिंदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं , पज्जत्तपंचिंदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण तिन्नि पलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । सम्मूच्छिमपचिंदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी । अपज्जत्तयसम्मूच्छिमपचिंदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयसम्मूच्छिमपचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण अंतोमुहुत्तं उ

तिर्यग्योनिकानां भदन्त ! कियन्त काल स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतस्त्रीणि पल्योपमानि । अपर्याप्तकपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतस्त्रीणि पल्योपमान्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि । सम्मूर्च्छिमपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतः पूर्वकोटिं । अपर्याप्तकसम्मूर्च्छिमपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्यत उत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तसम्मूर्च्छिमपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतः पूर्वकोटिरन्तर्मुहूर्त्तोना । गर्भव्युत्क्रान्तिकपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्त

पम । अपज्जत्तपचिंदियत्ति । अपर्याप्त पचेंद्रिय तिर्यंच योनिक नो प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । पज्जत्तपचिंदियत्ति । पर्याप्त पचेंद्रिय तिर्यंच योनिक नो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कृष्ट थी तीन पल्योपम अन्तर्मुहूर्त्त न्यून । सम्मूच्छिमपचिंदियतिरिक्खजोणियाणत्ति । सम्मूर्च्छिम पचेंद्रिय तिर्यंच योनिक नो प्र० चोथो उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्ष थी पूर्वकोटी । अपज्जत्तयसम्मूच्छिमत्ति । अपर्याप्त सम्मूर्च्छिम पचेंद्रिय तिर्यंच नो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । पज्जत्तयसम्मूच्छिमत्ति । पर्याप्त सम्मूर्च्छिम पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच योनिक नो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्ष थी अन्तर्मुहूर्त्त न्यून पूर्वकोडी । गब्भवक्कंतियत्ति । गर्भव्युत्क्रान्तिक

॥ मूल ॥

क्कोसेण पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तूणा । गब्भवक्कंतियपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गो० । जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइं । अपज्जत्तगगब्भवक्कंतियपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तगगब्भवक्कंतियपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । जलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी । अपज्जत्तजलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयज

॥ छा० ॥

मुहूर्त्तमुत्कर्षतः त्रीणि पल्योपमानि । अपर्याप्तगर्भव्युत्क्रान्तिकपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्यत उत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तगर्भव्युत्क्रान्तिकपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतः त्रीणि पल्योपमान्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि । जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतः पूर्वकोटिः । अपर्याप्तजलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्यत उत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तजलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतः पूर्वकोटिरन्तर्मुहूर्त्ता

॥ भाषा ॥

पचेंद्रिय तिर्यञ्च योनिकनो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कृष्ट थी तीन पल्योपम । अपज्जत्तगब्भवक्कंतियाणं । अपर्याप्त गर्भव्युत्क्रान्तिक पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चयोनिकना प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । पर्याप्तगर्भव्युत्क्रान्तिक पचेंद्रिय तिर्यञ्चयोनिकना प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्ष थी तीन पल्योपम अन्तर्मुहूर्त्त ऊणा । जलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं । जलचरपंचेंद्रिय तिर्यञ्च योनिकना हे भगवन् केतला कालनी स्थिति कही प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्ष थी पूर्वकोडी । अपज्जत्त जलयरपंचिंदियत्ति । अपर्याप्त जलचर पचेंद्रिय तिर्यञ्चयोनिक ना प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त ना । पज्जत्तपंचिंदियत्ति । पर्याप्त जलचर पचेंद्रिय तिर्यञ्चयोनिक नो

लयरपचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तूणा । सम्मूच्छिमजलयरपचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी । अपज्जत्तयसम्मूच्छिमजलयरपचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तसम्मूच्छिमजलयरपचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तूणा । गब्भवक्कंतियजलयरपचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी । अपज्जत्तयगब्भवक्कंतियजलयरपचिंदियतिरिक्खजो

ना । सम्मूर्च्छिमजलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम । जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षेण पूर्वकोटिं । अपर्याप्तसम्मूर्च्छिमजलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम । जघन्यत उत्कर्षत आन्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तसम्मूर्च्छिमजलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम । जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षेण पूर्वकोटिरन्तर्मुहूर्त्ताना । गर्भव्युत्क्रान्तिकजलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा' गौतम । जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षेण पूर्वकोटि । अपर्याप्तगर्भव्युत्क्रान्तिकजलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम । जघन्यत उत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तगर्भव्यु

प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कृष्ट था अन्तर्मुहूर्त्त न्यून पूर्वकोडी । समुच्छिमजलयरपचिंदियतिरिक्खाणं । समूर्च्छिम जलचर पचेंद्रिय तिर्यंचयोनिक नो प्रश्न उ० हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्ष थी पूर्वकोडी । अपज्जत्तसमुच्छिमजलयरपचिंदियाणं । अपर्याप्त समूर्च्छिम जलचर पचेंद्रिय तिर्यंचयोनिक नो प्रश्न उ० हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । पज्जत्तसमुच्छिमजलयरपचिंदियाणं । पर्याप्त समूर्च्छिम जलचर पचेंद्रिय तिर्यंचयोनिक नो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्ष थी पूर्वकोटी अन्तर्मुहूर्त्त न्यून । गब्भवक्कंतियजलयराणं । गर्भव्युत्क्रान्तिक जलचर पचेंद्रिय तिर्यंचयोनिक नो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्ष थी पूर्वकोटी । अपज्जत्तगब्भवक्कंतियाणं । अपर्याप्त गर्भव्यु

णियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अन्तोमुहुत्तं । पज्जत्तगब्भवक्कंतियजलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण अन्तोमुहुत्तं उक्कोसेण पुव्वकोडी अन्तोमुहुत्तूणा । चउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण अन्तोमुहुत्तं उक्कोसेण तिन्निपलिओवमाइं अपज्जत्तयचउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अन्तोमुहुत्तं । पज्जत्तयचउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण अन्तोमुहुत्तं उक्कोसेण तिन्नि पलिओवमाइं अन्तोमुहुत्तूणाइं । सम्मूच्छिमचउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा,

---

त्क्रान्तिकजलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाना पृच्छा, गौतम। जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतोऽन्तर्मुहूर्त्तोना पूर्वकोटि । चतुष्पदस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाना पृच्छा, गौतम। जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतः त्रीणि पल्योपमानि । अपर्याप्तस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाना पृच्छा, गौतम। जघन्यत उत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तचतुष्पदस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाना पृच्छा, गौतम। जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतस्त्रीणि पल्योपमान्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि । सम्मूर्च्छिमचतुष्पदस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाना पृच्छा, गौतम। जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतः चतुरशीतिवर्ष

त्क्रान्तिक जलचर पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिक ना प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त । पज्जत्तगब्भवक्कंतियजलयरपंचिंदियत्ति । पर्याप्त गर्भव्युत्क्रान्तिक जलचर पंचेंद्रिय तिर्यंच योनिक नो प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त उत्कर्ष थी अन्तर्मुहूर्त ऊन पूर्वकोडी । चउप्पय थलयरपंचिंदियतिरिक्खत्ति । चतुष्पदस्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक नो प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त उत्कर्ष थी तीन पल्योपम अपज्जत्तयचउप्पयथलयरपंचिंदियत्ति । अपर्याप्त चतुष्पदस्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक नो प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त । पज्जत्तयचउप्पयथलयरपंचिंदियत्ति । पर्याप्त चतुष्पदस्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक ना प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त उत्कर्ष थी

? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण चउरासीइं वाससहस्साइं अपज्जत्तयसम्मूच्छिमचउप्पयथलयरपचिंदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा ? गो० ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्त पज्जत्तगसम्मूच्छिम चउप्पयथलयरपचिंदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा ? गो० ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्त उक्कोसेणं चउरासीइं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइ । गब्भवक्कंतियचउप्पयथलयरपचिंदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइ । अपज्जत्तगगब्भवक्कंतियचउप्पयथलयरपचिंदियतिरिक्खजोणियाण

सहस्राणि । अपर्याप्तसम्मूर्च्छिमस्थलचरचतुष्पदपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाना पृच्छा, गौतम । जघन्येनोत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तसम्मूर्च्छिमचतुष्पदस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाना पृच्छा, गौतम । जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतश्चतुरशीतिवर्षसहस्राण्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि । गर्भव्युत्क्रान्तिकचतुष्पदस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाना पृच्छा, गौतम । जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतस्त्रीणि पल्योपमानि । अपर्याप्तकगर्भव्युत्क्रान्तिकचतुष्पदस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाना पृच्छा, गौतम । जघन्यनोत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तकगर्भव्युत्क्रान्तिकचतुष्पदस्थलचरपञ्चे

तीन पल्योपम अन्तर्मुहूर्त्त ऊन । सम्मूच्छिमचउप्पयथलयरपचिंदियत्ति । सम्मूर्च्छिमचतुष्पदस्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक नो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्ष थी चौरासी सहस्र वर्ष नो । अपज्जत्तसम्मूच्छिमचउप्पयथलयरपचिंदियतिरिक्खत्ति । अपर्याप्त सम्मूर्च्छिम चतुष्पदस्थलचर पचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक नो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त नो । पज्जत्तसम्मूच्छिमचउप्पयथलयरपचिंदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा । पर्याप्त सम्मूर्च्छिम चतुष्पदस्थलचर पचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक नो प्रश्न उ० हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्ष थी चौरासी हजारवर्ष अन्तर्मुहूर्त्त ऊन । गब्भवक्कंतियचउप्पयथलयरपचिंदियत्ति । गर्भव्युत्क्रान्तिकचौपद थलचर पचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक नो प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्ष थी तीन पल्योपम । अपज्जत्तगब्भवक्कंतियचउप्पयथलयरत्ति । अपर्याप्त गर्भज चौपदथलचर पचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक नो प्रश्न । उत्तर

पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं पज्जत्तगअवक्कंतियचउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । उरपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेणं पुव्वकोडी अपज्जत्तयउरपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्त । पज्जत्तगउरपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तूणा । सम्मूच्छिमसामन्नपुच्छा कायव्वा, गोयमा ! जहन्नेणं

न्द्रियतिर्यग्योनिकाना पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतस्त्रीणि पल्योपमान्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि । उर परिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाना पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षत पूर्वकोटि । अपर्याप्तकोर परिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाना पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षत आन्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तकोर परिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाना पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतोऽन्तर्मुहूर्त्तोना पूर्वकोटि । सम्मूर्च्छिमसामान्यपृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतस्त्रिपञ्चाशद्वर्षसहस्राणि । अपर्याप्तकसम्मूर्च्छिमो

हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । पज्जत्तगअवक्कंतियचउप्पयथलयरत्ति । पर्याप्त गर्भव्युत्क्रान्तिक चौपद थलचर पंचिंद्रिय तिर्यग्यो निक नो प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्ष थी तीन पल्योपम अन्तर्मुहूर्त्त न्यून । उरपरिसप्पथलयरत्ति । उरपरसर्प थलचर पचेंद्रिय तिर्यंच योनिकनो प्र० गौतम जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्षथी पूर्वकोडी । अपज्जत्तयउरपरिसप्पथलयरत्ति । अपर्याप्त उरपरिसर्प थलचर पचेंन्द्रिय तिर्यंच योनिक नो प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्षथी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । पज्जत्तगउरपरिसप्पथलयरत्ति । पर्याप्त उरपरसर्प थलचर पचेंद्रिय तिर्यंच योनिक नो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्ष थी पूर्वकोडी अन्तर्मुहूर्त्त न्यून । सम्मूच्छिमसामन्नत्ति । सम्मूर्च्छिमनो सामान्य पृच्छा

अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण तेवसवाससहस्साइं। अपज्जत्तगसम्मूच्छिमउरपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं। पज्जत्तगसम्मूच्छिमउरपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण तेवसं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं। गब्भवक्कंतियउरपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी। अपज्जत्तगगब्भवक्कंतियउरपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं। पज्जत्तगगब्भवक्कंतियउरपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्ख

र परिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनोत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्तम्। पर्याप्तकसम्मूर्च्छिमोर परिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतस्त्रिपञ्चाशद्वर्षसहस्राण्यन्तर्मुहूर्तोनानि। गर्भव्युत्क्रान्तिकोर परिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतः पूर्वकोटिं। अपर्याप्तकगर्भव्युत्क्रान्तिकोर-परिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्तम्। पर्याप्तकगर्भव्युत्क्रान्तिकोर परिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियति

करवो उ० हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त उत्कर्ष थी त्रेपनहजारवर्षनो। अपज्जत्तसम्मूच्छिमउरपरिसप्पत्ति। अपर्याप्तसमूर्च्छिम उरपरिसर्प थलचर पचेंद्रिय तिर्यंच योनिक नो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त। पज्जत्तगसमूच्छिमउरपरिसप्पत्ति। पर्याप्तसमूर्च्छिमउरपरिसर्प थलचर पचेंद्रिय तिर्यग्योनिक नो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त उत्कर्ष थी त्रेपनहजार वर्ष अन्तर्मुहूर्त न्यून। गब्भवक्कंतिउरपरिसप्पत्ति। गर्भव्युत्क्रान्तिक उरपरिसर्प थलचर पचेंद्रिय तिर्यग्योनिक नो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त उत्कर्ष थी पूर्वकोडी। अपज्जत्तयगब्भवक्कंतिय उरपरिसप्पत्ति। अपर्याप्त गर्भज उरपरिसर्प थलचर पचेंद्रिय तिर्यंच योनिक नो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त। पज्ज

॥ मूल ॥

जोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तूणा । भुयपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण पुव्वकोडी । अपज्जत्तयभुयपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं पज्जत्तयभुयपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तूणा । सम्मूच्छिमभुयपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण बायालीस वाससहस्साइं । अपज्जत्तयसम्मूच्छिमभुयपरिसप्पथलयरपंचिंदि

॥ अ० ॥

यग्योनिकाना पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतः पूर्वकोटिरन्तर्मुहूर्त्तोना । भुजपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाना पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतः पूर्वकोटि । अपर्याप्तभुजपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाना पृच्छा, गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तभुजपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाना पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतः पूर्वकोटिरन्तर्मुहूर्त्तोना । सम्मूर्च्छिमभुजपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाना पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतो द्विचत्वारिंशद्वर्षसहस्राणि । अपर्याप्तसम्मू

॥ भाषा ॥

त्तगर्भजतिर्यञ्चउरपरिसर्पनी । पर्याप्त गर्भज उरपरिसर्प थलचर पंचेंद्रिय तिर्यंच योनिक नो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कृष्ट थी पूर्व कोडी अन्तर्मुहूर्त्त न्यून । भुजपरिसर्पथलचरनी । भुजपरिसर्प थलचर पंचेंद्रिय तिर्यंच योनिक नो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कृष्ट थी पूर्वकोडी । अपर्याप्तभुजपरिसर्पनी । अपर्याप्त भुजपरिसर्प थलचर पंचेंद्रिय तिर्यंच योनिक नो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कृष्ट थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । पर्याप्तक भुजपरिसर्प थलचर नो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कृष्ट थी पूर्वकोडी अन्तर्मुहूर्त्त न्यून । सम्मूर्च्छिम भुजपरिसर्प पंचेंद्रिय नो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कृष्ट थी बेतालीस हजारवर्ष । अपज्जत्तयसम्मूर्च्छिमभुजपरिसर्पनी । अपर्याप्त सम्मूर्च्छिम भुज

यतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तगसम्मूच्छिमभुयपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण बायालीसं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं । गब्भवक्कंतियभुयपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी । अपज्जत्तगगब्भवक्कंतियभुयपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तगगब्भवक्कंतियभुजपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण पुव्वकोडी अंतोमु

च्छिंमभुजपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम । जघन्येनाप्युत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तसम्मूच्छिंमभुजपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम । जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतो द्विचत्वारिंशद्वर्षसहस्राण्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि । गर्भव्युत्क्रान्तिकभुजपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम । जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतः पूर्वकोटिं । अपर्याप्तगर्भव्युत्क्रान्तिकभुजपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम । जघन्यत उत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तगर्भव्युत्क्रान्तिकभुजपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका

परिसर्प थलचर पंचेंद्रिय तिर्यंच योनिक नो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । पज्जत्तगसम्मूच्छिमभुजपरिसर्पपज्जत्ति । पर्याप्तकसमूर्च्छिम भुजपरिसर्प थलचर पंचेंद्रिय तिर्यंच योनिकनो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्ष थी बेतालीस हजार वर्ष अन्तर्मुहूर्त्त ऊन गब्भवक्कंतियभुजपरिसप्पत्ति । गर्भव्युत्क्रान्तिक भुजपरिसर्प थलचर पंचेंद्रिय तिर्यंच योनिक नो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्ष थी पूर्व कोडी । अपर्याप्तक गर्भव्युत्क्रान्तिक भुजपरिसर्प थलचर पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिक नो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । पज्जत्तगगब्भवक्कंतियभुयपरिसप्पत्ति । पर्याप्त गर्भव्युत्क्रान्तिक भुजपरिसर्प थलचर पंचेंद्रिय तिर्यंच योनिक नो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्ष

॥ मूल ॥

त्तूणा । खहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागो । अपज्जत्तयखहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयखहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखिज्जइभागो अंतोमुहुत्तूणो । सम्मूच्छिमखहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बावत्तरिवाससहस्साणि । अपज्जत्तयसम्मूच्छिमखहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतो

॥ अ० ॥

ना पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतः पूर्वकोटिरन्तर्मुहूर्तोना । खचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतः पल्योपमस्यासंख्येयो भागः । अपर्याप्तखचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्तम् । पर्याप्तखचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतः पल्योपमस्यासंख्येयो भागोऽन्तर्मुहूर्तोनः । सम्मूच्छिमखचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतो द्विसप्ततिवर्षसहस्राणि । अपर्याप्तसम्मूच्छिमखचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतो द्विसप्ततिवर्षसहस्राण्यन्तर्मुहूर्तोनानि । गर्भव्युत्क्रान्तिक

॥ भाषा ॥

थी पूर्वकोडी अन्तर्मुहूर्त ऊन । खहयरपंचिंदियाणं । खचर पचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक नो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त उत्कर्ष थी पल्योपम नो असंख्यातमो भाग । अपज्जत्तखहयरत्ति । अपर्याप्त खचर पचेंद्रिय तिर्यंच योनिक नो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त । पज्जत्तयखहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणंति । पर्याप्त खचर पचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक नो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त उत्कर्ष थी पल्योपम नो असंख्यातमो भाग अन्तर्मुहूर्त न्यून । सम्मूच्छिमखहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा । सम्मूच्छिम खेचर पचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक नो

मुहुत्त । पज्जत्तयसम्मूच्छिमखहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण बावत्तरिवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं । गब्भवक्कंतियखहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा ? गोयमा । जहन्नेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागे । अपज्जत्तयगब्भवक्कंतियखहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा ? गोयमा । जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्त । पज्जत्तयगब्भवक्कंतियखहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्त उक्कोसेण पलिओवमस्स असंखेज्जइभागो अंतोमुहुत्तूणो । मणुस्साण भंते ! केवइय कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं

खचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाना पृच्छा ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतो पल्योपमस्याऽसंख्येये भागे । अपर्याप्तगर्भव्युत्क्रान्तिकखचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाना पृच्छा ? गौतम ! जघन्यनाप्युत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्तम् । पर्याप्तकगर्भव्युत्क्रान्तिकखचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाना पृच्छा? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षत पल्योपमस्यासंख्येयतमे भागे ऽन्तर्मुहूर्तोने । मनुष्याणा भदन्त ! कियन्त काल स्थिति प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतस्त्रीणि पल्योपमानि । अपर्याप्तकमनुष्याणा पृच्छा ? गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्तम् । पर्याप्तकमनुष्याणा पृच्छा ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षत त्रीणि पल्योपमानि अन्तर्मुहूर्तोनानि । सम्मूर्च्छिममनुष्याणा पृच्छा ? गौतम ! जघन्येना

प्रश्न उ० हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त उत्कर्ष थी बहत्तर हजार वर्ष । अपज्जत्तसम्मूच्छिमखहयरपंचिंदियत्ति । अपर्याप्त सम्मूर्च्छिम खचर पचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक नो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त । पज्जत्तयसम्मुच्छिमखहयरपंचिंदियत्ति । पर्याप्त सम्मूर्च्छिम खचर पचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक नो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त उत्कर्ष थी बहत्तर हजार वर्ष अन्तर्मुहूर्त न्यून । गब्भवक्कंतियखहयरपंचिंदियत्ति गर्भव्युत्क्रान्तिक खचर पचेंद्रिय तिर्यंच योनिक नो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त उत्कर्ष थी पल्योपम नो असंख्यात मा भाग । अपज्जत्तयग

अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं । अपज्जत्तगमणुस्साणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयमणुस्साण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । सम्मुच्छिममणुस्साण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं गब्भवक्कंतियमणुस्साण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइं । अपज्जत्त गब्भवक्कंतियमणुस्साण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तगब्भवक्कंतियमणुस्साण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । वाणमंतराण

॥ मूल ॥

प्युत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्त्तम् । गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्याणां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनाऽन्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतस्त्रीणि पल्योपमानि । अपर्याप्तगर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्याणां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तगर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्याणां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतस्त्रीणि पल्योपमानि अन्तर्मुहूर्त्तोनानि । वानव्यन्तराणां देवानां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता, गौतम ! जघन्येन दस वर्षसहस्रा

॥ अ० ॥

भवक्कंतियखहयराणं । अपर्याप्त गर्भव्युत्क्रान्तिक खेचर पचेंद्रिय तिर्यंच योनिक नो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अंतर्मुहूर्त्त । पज्जत्तगभवक्कंतियखहयराणं । पर्याप्त गर्भव्युत्क्रान्तिक खेचर पचेंद्रिय तिर्यंच योनिक नो प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्ष थी पल्योपम नो असंख्यातमो भाग अन्तर्मुहूर्त्त न्यून । मणुस्साण भंते त्ति । मनुष्य नो हे भगवन् केतला काल नी स्थिति कही प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्ष थी तीन पल्योपम । अपज्जत्तगमणुस्साण पुच्छा । अपर्याप्त मनुष्य नो प्र० उ० गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । पज्जत्तयमणुस्साण त्ति । पर्याप्त मनुष्य नो प्र० कीधो उत्तर हे गौतम जघन्य थी अंतर्मुहूर्त्त उत्कर्ष थी तीन पल्योपम अन्तर्मुहूर्त्त न्यून । समूच्छिममणुस्साण पुच्छति । समूर्च्छिम मनुष्य नो प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्ष थी पिण तेहिज । गब्भवक्कंतियमणुस्साण पुच्छा । गर्भज मनुष्य

॥ भाषा ॥

न्नते ! देवाण केवइयं कालं ठिई पएात्ता ? गोयमा ! जहन्नेण दसवाससहस्साइं उक्कोसेणं पलिउवमं । अपज्जत्तवाणमतरदेवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहएणेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयवाणमतर देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण दसवाससहस्साइ अंतोमुहुत्तूणाइ उक्कोसेण पलिउवम अंतोमुहु त्तूणं । वाणमतरीणं देवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहएणेण दसवाससहस्साइ उक्कोसेण अद्धपलिउवम । अ पज्जत्तियाणं न्नते ! वाणमतरीणं देवीण पुच्छा ? गोयमा ! जहएणेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्त । पज्ज

षो उत्कर्षत पल्योपमम् । अपर्याप्तकवानव्यन्तर देवाना पृच्छा, गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतोप्यतर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तकवानव्यन्तराणा देवा ना पृच्छा, गौतम ! जघन्येन दस वर्षसहस्राणि अन्तर्मुहूर्त्तोनानि उत्कर्षतोन्तर्मुहूर्त्तोन पल्योपमम् । वानव्यन्तरीणा देवीना पृच्छा' गौत म ! जघन्येन दस वर्षसहस्राणि उत्कर्षतो अर्द्धपल्योपमम् । अपर्याप्तदेवीना न्नदन्त ! पृच्छा' गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तकवानव्यन्तरीणा न्नदन्त ! पृच्छा, गौतम ! जघन्येन दस वर्षसहस्राणि अन्तर्मुहूर्त्तोनानि उत्कर्षतोऽर्द्धपल्योपमम् अन्तर्मुहूर्त्तोनम् । ज्योतिष्काणा न्नदन्त ! देवाना कियन्त काल स्थिति प्रज्ञप्ता, गौतम ! जघन्येन पल्योपमाष्टन्नागो उत्कर्षत पल्योपम वर्षसहस्राभ्यधिकम् ।

नो प्रश्न उत्तर हेगौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्ष थी तीन पल्योपम । अपज्जत्तग गब्भवक्कंतियमणुस्साण ति । अपर्याप्त गर्भज मनुष्य नो प्रश्न कीधो उत्तर हेगौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त नो । पज्जत्तगगब्भवक्कंतियमणुस्साणति । पर्याप्त गर्भज मनुष्य ना प्र॰ उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्ष थी तीन पल्योपम अन्तर्मुहूर्त्त न्यून । वाणमतराण भंते देवाणति । वानव्यन्तर देवनी हे भगवन् केतला काल नी स्थिति क ही प्र॰ उ॰ हे गौतम जघन्य थी दशहजार वर्ष उत्कर्ष थी पल्योपम । अपज्जत्तयवाणमतराणति । अपर्याप्त वानव्यन्तर देवता नो प्र॰ उ॰ हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । पज्जत्तयवाणमंतराण देवाणं ति । पर्याप्त वानव्यन्तर देवता नो प्र॰ उ॰ हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त

॥ मूल ॥

णियाणं भंते ! वाणमंतरीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं । उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं । जोइसियाणं भंते ! देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं पलिओवमट्ठभागो उक्कोसेणं पलिओवमं वाससयसहस्समब्भहियं । अपज्जत्तयजोइसियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयजोइसियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं पलिओवमट्ठभागो अंतोमुहुत्तूणो उक्कोसेणं पलिओवमं वाससयसहस्समब्भहियं अंतोमुहुत्तूणं । जोइसिणीणं

॥ अ० ॥

अपर्याप्तज्योतिष्काणां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तकज्योतिष्काणां पृच्छा, गौतम ! जघन्येन पल्योपमाष्टभागमन्तर्मुहूर्त्तोनमुत्कर्षतः पल्योपमं वर्षशतसहस्राभ्यधिकमन्तर्मुहूर्त्तोनम् । ज्योतिष्कदेवीनां पृच्छा, गौतम ! जघन्यतः पल्योपमाष्टभागं उत्कर्ष

॥ भाष ॥

न्यून दशहजार वर्षना उत्कर्ष थी पल्योपम अन्तर्मुहूर्त न्यून । वाणमंतरीणं देवीणं ति । वानव्यन्तर देवी नो प्र० उ० गौतम जघन्य थी दश हजारवर्ष उत्कर्ष थी अर्द्ध पल्योपम । अपज्जत्तियाणं भंते वाणमंतरीणं देवीणं ति । अपर्याप्त वानव्यन्तर देवी ना हे भगवन केतलो आयु कह्यो हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त । पज्जत्तियाणं भंते वाणमंतरीणं देवीणं ति । पर्याप्त वानव्यन्तरनी देवी ना प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी दशहजार वर्ष अन्तर्मुहूर्त ऊन उत्कर्ष थी अर्द्ध पल्योपम अन्तर्मुहूर्त न्यून । जोइसियाणं भंते देवाणं ति । जोतिष्क देवता नो हे भगवन् केतला कालनी स्थिति कह्यो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी पल्योपम नो आठमो भाग उत्कर्ष थी पल्योपम एकलाख वर्ष अधिक । अपज्जत्तयजोइसियाणं पुच्छा । अपर्याप्त जोतिष्क नो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त । पज्जत्तयजोइसियाणं ति । पर्याप्त जोतिषी ना प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी पल्योपम नो आठमो भाग अन्तर्मुहूर्त न्यून उत्कर्ष थी पल्योपम लाख वर्ष अधिक अन्तर्मुहूर्त न्यून । जोइसणीणं भंते देवीणं ति । जोतिष्क देवी नो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी पल्योपम ना आठमो भाग उत्कर्ष थी अर्द्ध पल्योपम पचास हजारवर्ष अधिक । अपज्जत्तियाणं जोइसणीणं ति । अ

भंते ! देवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं पलिओवमट्ठभागो उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं पण्णासवाससहस्स मब्भहियं । अपज्जत्तियाणं जोइसिणीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तियाणं जोइसिणीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं पलिओवमट्ठभागो अंतोमुहुत्तूणो उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं पण्णासवाससहस्सेहिं अब्भहियं अंतोमुहुत्तूणं । चंदविमाणेणं भंते ! देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं चउब्भागपलिओवमं उक्कोसेणं पलिओवमं वाससयसहस्समब्भहियं । चंदविमाणेणं भंते ! अपज्जत्तयाणं देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । चंदविमाणेणं भंते ! पज्जत्तयाणं देवाणं

र्धोऽर्द्ध पल्योपमं पञ्चाशद्वर्षसहस्राण्यधिकम् । अपर्याप्तकज्योतिष्कदेवीनां पृच्छा, गौतम ! जघन्यत उत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तज्योतिष्कदेवीनां पृच्छा, गौतम ! जघन्यतः पल्योपमाष्टमभागोऽन्तर्मुहूर्त्तोन उत्कर्षतोऽर्द्धपल्योपमं पञ्चाशद्वर्षसहस्रैरधिकमन्तर्मुहूर्त्तोनम् । चन्द्रविमाने भदन्त ! देवानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येन चतुर्भागं पल्योपममुत्कर्षतः पल्योपमं वर्षलक्षाण्यधिकम् । चन्द्रविमाने भदन्त ! अपर्याप्तकदेवानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्त्तम् । चन्द्रविमाने भदन्त ! पर्याप्तकानां देवानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येन पल्योपमचतुर्भागम

पर्याप्त ज्योतिष्क देवी ना प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । पज्जत्तियाणं जोइसणीणंति । पर्याप्त ज्योतिष्क देवी ना प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी पल्योपम ना आठमो भाग अन्तर्मुहूर्त्त न्यून उत्कृष्ट थी अन्तर्मुहूर्त्त ऊन पचास हजार वर्ष अधिक अर्द्ध पल्योपम । चंदविमाणेणं भंते देवाणंति । चन्द्रविमाने भदन्त देवतानो कतला कालनो स्थिति कही प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य थी चतुर्भाग पल्योपम उत्कर्ष थी पल्योपम लाख वर्ष अधिक । चंदविमाणेणं भंते अपज्जत्तयाणं देवाणंति । चन्द्रविमान ना हे भगवन् अपर्याप्त देवनी पृच्छा हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । चंदविमाणेणं भंते पज्जत्तयाणंति । चन्द्रविमान ना देवतानो हे भगवन् केतलो आयु प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य थी चतुर्भाग पल्योपम

म ॥ शेषमपि सुगम मापदपरिसमाप्ते र्यावत् चंदविमाणेण भंते ! देवाणमित्यादि ॥ चन्द्रविमाने चन्द्र उत्पद्यते शेषाश्च तत्परिवारभूता स्तत्र त त्परिवारभूतानां जघन्यतश्चतुर्भागपल्योपमप्रमाणा उत्कर्षत केषांचिदिन्द्रसामानिकादीनां वर्षलक्षाभ्यधिकं पल्योपमं चन्द्रदेवस्य तु यथोक्तमुत्क

पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण चउब्भागपलिओवम अंतोमुहुत्तूण उक्कोसेण पलिओवम वाससयसहस्समब्भहियं अंतोमुहुत्तूण । चंदविमाणेण देवीण पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेण चउब्भागपलिओवम उक्कोसेण अद्धपलिओवम पण्णासाए वाससहस्सेहि अब्भहियं । चंदविमाणेण अपज्जत्तियाण देवीण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण वि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । चंदविमाणेण पज्जत्तियाण देवीण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण चउब्भागपलिओवम अंतोमुहुत्तूण उक्कोसेण अद्धपलिओवम पण्णासाए वाससहस्सेहि अब्भहियं अंतोमुहुत्तूण । सूरवि

मन्तर्मुहूर्तोनमुत्कर्षत पल्योपमं वर्षलक्षाभ्यधिकमन्तर्मुहूर्तोनम् । चन्द्रविमाने देवीनां पृच्छा, गौतम ! जघन्येन पल्योपमचतुर्भागमुत्कर्षतोऽर्द्ध पल्योपमं पञ्चाशद्वर्षसहस्रैरधिकम् । चन्द्रविमाने अपर्याप्तकदेवीनां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनोत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्तम् । चन्द्रविमाने पर्याप्तकदे वीनां पृच्छा, गौतम ! जघन्येन पल्योपमचतुर्भागमन्तर्मुहूर्तोनमुत्कर्षतोऽर्द्धपल्योपमं पञ्चाशद्वर्षसहस्रैरधिकमन्तर्मुहूर्तोनम् । सूर्यविमाने भद

अन्तर्मुहूर्त ऊन उत्कर्ष थी पल्योपम लाखवर्ष अधिक अन्तर्मुहूर्त ऊन । चंदविमाणे देवीणंति । चन्द्रविमान मा देवीनो प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य थी पल्योपम नो चोथो भाग उत्कृष्ट थी पचास हजार वर्ष अधिक अर्द्ध पल्योपम । चंदविमाणे अपज्जत्तियाण देवीणंति । चन्द्रमा ना विमानने विषे अपर्याप्तक देवीनो स्थितिनो प्रश्न उ० हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त । चंदविमाणे पज्जत्तियाण देवीणंति । चन्द्रमाना विमान ने विषे पर्याप्तक देवीनी स्थिति नो प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य थी पल्योपम नो चोथो भाग अन्तर्मुहूर्त न्यून उत्कर्ष थी अन्तर्मुहूर्त न्यून पचास ह जारवर्ष अधिक अर्द्ध पल्योपम । सूरविमाणेण भंते यावति । सूर्यना विमानने विषे हे भगवन् देवतानी केतला कालनी स्थिति कही प्रश्न उत्तर हे गौ

माणेणं भंते ! देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं चउभागपलिओवमं उक्कोसेणं पलिओवमं वाससहस्समब्भहियं । सूरविमाणे अपज्जत्तदेवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । सूरविमाणेणं पज्जत्तदेवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं चउभागपलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं उक्कोसेणं पलिओवमं वाससहस्समब्भहियं अंतोमुहुत्तूणं । सूरविमाणदेवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं चउभागपलिओवमं उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं पंचहिं वाससएहिं अब्भहियं । सूरविमाणे अपज्जत्तियाणं देवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । सूरविमाणे पज्जत्तियाणं देवीणं पुच्छा ? गो

न्त ! देवानां कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन पल्योपमचतुर्भागमुत्कर्षतः पल्योपमं वर्षसहस्राभ्यधिकम् । सूर्यविमाने ऽपर्याप्तदेवानां पृच्छा ? गौतम ! जघन्येनोत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्त्तम् । सूर्यविमाने पर्याप्तदेवानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येन चतुर्भागपल्योपममन्तर्मुहूर्त्तोनम् उत्कर्षतः पल्योपमं वर्षसहस्राभ्यधिकमन्तर्मुहूर्त्तोनम् । सूर्यविमाने देवीनां पृच्छा, गौतम ! जघन्येन पल्योपमचतुर्भागमुत्कर्षतोऽर्द्धपल्योपमं पञ्चभिर्वर्षशतैरधिकम् । सूर्यविमाने ऽपर्याप्तदेवीनां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनोत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्त्तम् । सूर्यविमाने पर्याप्तकदेवीनां पृ

तम जघन्य थी चोथे भागे पल्योपमने उत्कृष्ट पल्योपम हजारवर्ष अधिक । सूरविमाणे अपज्जत्तदेवाणंति । सूर्यना विमानने विषे अपर्याप्त देवनो प्रश्न उ० हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कृष्ट थी पिण अंतर्मुहूर्त्त । सूरविमाणे पज्जत्तदेवाणंति । सूर्यविमानने विषे पर्याप्त देवनो प्रश्न उ० हे गौतम जघन्य थी अंतर्मुहूर्त्त न्यून पल्योपमनो चोथो भाग उत्कृष्ट थी अंतर्मुहूर्त्त न्यून हजारवर्ष अधिक पल्योपम । सूरविमाणे देवीणंति । सूर्यना विमानने विषे देवीनो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी पल्योपमनो चोथो भाग उत्कृष्ट पांच वर्ष अधिक अर्द्ध पल्योपम । सूरविमाणे अपज्जत्तियाण देवीणंति । सूर्यना विमानने विषे अपर्याप्त देवीनो प्र० उ० हे गौ० जघन्य थी पिण उत्कृष्ट थी पिण अंतर्मुहूर्त्त । सूरविमाणे पज्जत्तियाण देवीणंति । सूर्यना विमानने विषे

यमा ! जहन्नेण चउन्भागपलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं पंचहिं वाससएहिं अब्भहियं अंतोमुहुत्तूण। गहविमाणे देवाण पुच्छा? गो० ! जहन्नेण चउन्भागपलिओवम उक्कोसेण पलिओवमं। गहविमाणे अपज्जत्तदेवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्त । गहविमाणे पज्जत्तदेवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं चउन्भागपलिओवम अंतोमुहुत्तूण उक्कोसेणं पलिओवम अंतोमुहुत्तूण । गहविमाणे देवीण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण चउन्भागपलिओवम उक्कोसेण अद्धपलिओवम । गहविमाणे अपज्जत्तियाण देवीण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्त । पज्जत्तियाण गहविमाणे

च्छा, गौतम ! जघन्येन चतुर्भागपल्योपममन्तर्मुहूर्त्तोनमुत्कर्षतोऽर्द्धपल्योपमं पञ्चभिर्वर्षशतैरधिकमन्तर्मुहूर्त्तोनम् । ग्रहविमाने देवानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येन चतुर्भागपल्योपममुत्कर्षतः पल्योपमम् । ग्रहविमानेऽपर्याप्तदेवानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनोत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्त्तम् । ग्रहविमाने पर्याप्तदेवानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तोनं पल्योपमचतुर्भागमुत्कर्षतः पल्योपममन्तर्मुहूर्त्तोनम् । ग्रहविमाने देवीनां पृच्छा, गौतम ! जघन्येन चतुर्भागपल्योपममुत्कर्षतोऽर्द्धपल्योपमम् । ग्रहविमानेऽपर्याप्तदेवीनां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनोत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्त्तम् । ग्रह

पर्याप्त देवीनी स्थिति नो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी अंतर्मुहूर्त न्यून पल्योपम नो चोथो भाग उत्कर्ष थी पांच वर्ष अधिक पल्योपम अंतर्मुहूर्त न्यून । गहविमाणे देवाण पुच्छा । ग्रहना विमानने विषे देवता नो प्र० उ० हे गौ० जघन्य थी पल्योपमनो चोथो भाग उत्कर्ष थी पल्योपम । गहविमाणे अपज्जत्तदेवाण ति । ग्रहना विमान मां अपर्याप्त देवता नो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अंतर्मुहूर्त । गहविमाणे पज्जत्तदेवाण पुच्छा । ग्रहना विमानने विषे पर्याप्त देवनो प्र० उ० हे गौतम जघन्य अंतर्मुहूर्त न्यून पल्योपम नो चोथो भाग उत्कृष्ट थी पल्योपम अंतर्मुहूर्त ऊन गहविमाणे देवीण पुच्छा । ग्रहना विमानने विषे देवीना प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी पल्योपम चतुर्भाग उत्कृष्ट अर्द्ध पल्योपम । गहविमाणे अपज्ज

देवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण चउब्भागपलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं उक्कोसेणं अद्धपलिओवम अंतोमुहुत्तूण। नक्खत्तविमाणे देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं चउब्भागपलिओवमं उक्कोसेणं अद्धपलिओवम । नक्खत्तविमाणे अपज्जत्तयाण देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्त । णक्खत्तविमाणे पज्जत्तयाण देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण चउब्भागपलिओवम अंतोमुहुत्तूण उक्कोसेण अद्धपलिओवम अंतोमुहुत्तूण । नक्खत्तविमाणदेवीण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं चउब्भागपलिओवम उक्कोसेणं

विमाने पर्याप्तकदेवीना पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तोन पल्योपमचतुर्भागमुत्कर्षतोऽर्द्धपल्योपममन्तर्मुहूर्त्तोनम् । नक्षत्रविमाने देवाना पृच्छा, गौतम ! जघन्येन चतुर्भागपल्योपममुत्कर्षतोऽर्द्धं पल्योपमम् । नक्षत्रविमानेऽपर्याप्तदेवाना पृच्छा, गौतम ! जघन्येनोत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्त्तम् । नक्षत्रविमाने पर्याप्तकदेवाना पृच्छा, गौतम ! जघन्येन चतुर्भागपल्योपममन्तर्मुहूर्त्तोनमुत्कर्षतोऽर्द्धपल्योपममन्तर्मुहूर्त्तोनम् । नक्षत्रविमाने देवीना पृच्छा, गौतम ! जघन्यतश्चतुर्भाग पल्योपममुत्कर्षतस्सातिरेक चतुर्भागपल्योपमम् । नक्षत्रविमानेऽपर्याप्तकदेवीना पृच्छा, गौतम !

त्तियाण देवीण पुच्छा । ग्रहविमानने विषे अपर्याप्त देवोना प्र० उ० हे गौतम जघन्य था पिण उत्कर्ष थो पिण अन्तर्मुहूर्त्त । पज्जत्तियाणति । पर्याप्त ग्रहविमाननो देवोना प्र० उ० हे गौतम जघन्य थो अन्तर्मुहूर्त्त न्यून पल्योपम चतुर्भाग उत्कृष्ट थो अन्तर्मुहूर्त्त न्यून अर्द्ध पल्योपम । नक्खत्तविमाणे देवाण पुच्छा । नक्षत्र विमानमा देवता नो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थो चतुर्भाग पल्योपम उत्कर्ष थो अर्द्ध पल्योपम । नक्खत्तविमाणे अपज्जत्तयाण देवाणति नक्षत्रना विमानने विषे अपर्याप्त देवतानो प्र० उ० हे गौ० जघन्य थो पिण उत्कर्ष थो पिण अन्तर्मुहूर्त्त । नक्खत्तविमाणे पज्जत्तदेवाणति । नक्षत्रना विमानने विषे पर्याप्त देवतानो प्र० उ० हे गौ० जघन्य थो अन्तर्मुहूर्त्त ऊन पल्योपम चतुर्भाग उत्कर्ष थो अन्तर्मुहूर्त्त ऊन अर्द्ध पल्योपम । नक्खत्तविमाणे देवीण पुच्छा । नक्षत्रना विमानने विषे देवीनो प्र० उ० हे गौतम-जघन्य थो चतुर्भाग पल्योपम उत्कर्ष-थो सातिरेक चतुर्भाग पल्योपम । नक्षत्र विमान नें

॥ मूल ॥

सातिरेग चउब्भागपलिओवम। नक्खत्तविमाणे अपज्जत्तियाणं देवीणं पुच्छा? गो०! जहरणेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्त। नक्खत्तविमाणे पज्जत्तियाण देवीण पुच्छा? गो०! जहरणेण चउब्भागपलिओवम अंतोमुहुत्तूणं उक्कोसेण सातिरेग चउब्भागपलिओवम अंतोमुहुत्तूण। ताराविमाणे देवाण पुच्छा? गो०! जहरणेण अट्ठ भागपलिओवम उक्कोसेण चउब्भागपलिओवम। ताराविमाणे अपज्जत्तदेवाण पुच्छा? गो०! जहरणेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्त। ताराविमाणे पज्जत्तदेवाण पुच्छा, गो०! जहरणेण अट्ठभागपलिओवम अंतोमुहुत्तूण उ

॥ अ० ॥

जघन्येनाप्युत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्त्तम्। नक्षत्रविमाने पर्याप्तकदेवीनां पृच्छा, गौतम! अन्तर्मुहूर्त्तोन चतुर्भागपल्योपममुत्कर्षतोऽन्तर्मुहूर्त्तोन सातिरेकं चतुर्भागपल्योपमम्। ताराविमाने देवानां पृच्छा, गौतम! जघन्येनाष्टभाग पल्योपममुत्कर्षतश्चतुर्भाग पल्योपमम्। ताराविमानेऽपर्याप्तदेवानां पृच्छा, गौतम! जघन्यतश्चोत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्त्तम्। ताराविमाने पर्याप्तदेवानां पृच्छा, गौतम! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तोनमष्टभागपल्योपममुत्कर्षतोऽन्तर्मुहूर्त्तोन चतुर्भागपल्योपमम्। ताराविमाने देवीनां पृच्छा, गौतम! जघन्येनाष्टभागपल्योपममुत्कर्षेण सातिरेकमष्टभागपल्या

॥ भाषा ॥

विषे अपर्याप्त देवीनो प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त। नक्खत्तविमाणे पज्जत्तियाणंति। नक्षत्र विमानने विषे पर्याप्त देवीनो प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य थी चतुर्भाग पल्योपम अन्तर्मुहूर्त्त न्यून उत्कर्ष थी सातिरेक चतुर्भाग पल्योपम अन्तर्मुहूर्त्त न्यून। ताराविमाने देवाणंति। ताराविमानने विषे देवतानो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी अष्टभाग पल्योपम उत्कर्ष थी चतुर्भाग पल्योपम। ताराविमाणे अपज्जत्तदेवाणंति। ताराविमान ने विषे अपर्याप्त देवतानो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त। ताराविमाणे पज्जत्तदेवाणंति। ताराविमानने विषे पर्याप्त देवतानो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी अष्ट भाग पल्योपम अन्तर्मुहूर्त्त न्यून उत्कर्ष थी चतुर्भाग पल्योपम अन्तर्मुहूर्त्त न्यून ताराविमाणे देवीणंति। ताराविमानने विषे देवीनो प्रश्न उ० हे गौतम जघन्य थी अष्ट भाग पल्योपम उत्कर्ष थी सातिरेक अष्ट भाग पल्योपम।

मुक्त । सोहम्मे कप्पे पज्जत्तदेवाण पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणं पलिउवम अन्तोमुहुत्तूण उक्कोसेणं दो सागरोवमाइ अतोमुहुत्तूणाइ । सोहम्मे कप्पे देवीण पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणं पलिउवम उक्कोसेण पन्नास पलिउवमाइ। सोहम्मे कप्पे अपज्जत्तियाण देवीण पुच्छा? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अन्तोमुहुत्त (ग्रन्थाग्र २५००) सोहम्मे कप्पे पज्जत्तियाण देवीण पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेण पलिउवमं अतोमुहुत्तूण उक्कोसेण पन्नास पलिउवमाइ अतोमुहुत्तूणाइ । सोहम्मे कप्पे परिग्गहियाणं देवीण पु

द्वे सागरोपमेऽन्तर्मुहूर्तोने । सौधर्मे कल्पे देवीना पृच्छा, गौतम । जघन्येन पल्योपममुत्कर्षत पञ्चाशत्पल्योपमानि । सौधर्मे कल्पेऽपर्याप्तकदेवीना पृच्छा, गौतम । जघन्येनाप्युत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्तम् । सौधर्म कल्प पर्याप्तकदेवीना पृच्छा, गौतम । जघन्येनान्तर्मुहूर्तोन पल्योपममुत्कर्षत पञ्चपञ्चाशत्पल्योपमान्यन्तर्मुहूर्तोनानि । सौधर्म कल्प परिगृहीताना देवीना पृच्छा, गौतम । जघन्यन पल्योपममुत्कर्षत सप्तपल्योपमानि । सौधर्मे कल्पे परिगृहीतानामपर्याप्तकदेवीना पृच्छा, गौतम । जघन्येनाप्युत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्तोनम् । सौधर्मे कल्पे परिगृहीत

सोहम्मे कप्पे पज्जत्तदेवाण पुच्छा । सौधर्म कल्प पर्याप्त देवनी प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी पल्योपम अन्तर्मुहूर्त न्यून उत्कर्ष थी दोय सागरोपम अन्तर्मुहूर्त न्यून । सोहम्मे कप्पे देवीणंति । सौधर्म कल्पने विषे देवीना प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी पल्योपम उत्कर्ष थी पचास पल्योपम । सोहम्मे कप्पे अपज्जत्तियदेवीणंति । सौधर्म कल्पने विषे अपर्याप्तक देवीनो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त । सोहम्मे कप्पे पज्जत्तियाण देवीणंति । सौधर्म कल्पने विषे पर्याप्तक देवीनो प्रश्न उ० हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त न्यून पल्योपम उत्कर्ष थी अन्तर्मुहूर्त ऊन पचास पल्योपम सोहम्मे कप्पे परिग्गहियाण देवीणंति । सौधर्म कल्पने विषे परिग्रहीत देवनो प्रश्न उ० हे गौतम जघन्य थी पल्योपम उत्कर्ष थी सात पल्योपम । सोहम्मे कप्पे परिग्गहियाण अपज्जत्तियाणंति । सौधर्म कल्पने विषे परिग्रहीत अपर्याप्तक देवीनो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त

वग्गा ८ ४ ३ ॥

८९४

च्छा, गोयमा । जहन्नेण पलिओवमं उक्कोसेण सत्त पलिओवमाइ। सोहम्मे कप्पे परिग्गहियाण अपज्जत्तियाण पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्त । सोहम्मे कप्पे परिग्गहियाण पज्जत्तियाणं देवीण पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेण पलिओवम अंतोमुहुत्तूण उक्कोसेण सत्त पलिओवमाइ अंतोमुहुत्तूणाइ सोहम्मे कप्पे अपरिग्गहियाण देवीण पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेण पलिओवम उक्कोसेण पन्नासपलिओवमाइ। सोहम्मे कप्पे अपरिग्गहियाण अपज्जत्तियाण देवीण पुच्छा, गो० ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्त । सोहम्मे कप्पे अपरिग्गहियाण पज्जत्तियाण देवीण पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेण पलिओवम अंतो

॥ मूल ॥

पर्याप्तकदेवीना पृच्छा, गौतम ! जघन्येन पल्योपममन्तर्मुहूर्त्तोनमुत्कर्षेण सप्तपल्योपमान्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि । सौधर्मे कल्पेऽपरिगृहीताना देवीना पृच्छा, गौतम ! जघन्येन पल्योपममुत्कर्षत पञ्चाशत्पल्योपमानि । सौधर्मे कल्पेऽपरिगृहीतानामपर्याप्तकाना देवीना पृच्छा, गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्त्तम् । सौधर्मे कल्पेऽपरिगृहीताना पर्याप्तकाना देवीना पृच्छा, गौतम ! जघन्येन पल्योपममन्तर्मुहूर्त्तोनमुत्कर्षेण

॥ छा० ॥

सोहम्मे कप्पे परिग्गहियाण पज्जत्तियाण देवीणति । सौधर्म कल्पने विषे परिग्रहीत पर्याप्तक देवीनो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थो अंतर्मुहूर्त ऊन पल्योपम उत्कर्ष थो अंतर्मुहूर्त ऊन सात पल्योपम । सोहम्मे कप्पे अपरिग्गहियाण देवीणति । सौधर्म कल्पने विषे अपरिग्रहीत देवीनो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थो पल्योपम उत्कर्ष थो पचास पल्योपम । सोहम्मे कप्पे अपरिग्गहियाण अपज्जत्तियदेवीणति । सौधर्म कल्पने विषे अपरिग्रहीत अपर्याप्ता देवीना प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थो पिण उत्कर्ष थो पिण अन्तर्मुहूर्त । सोहम्मे कप्पे अपरिग्गहियाण पज्जत्तियाण देवीणति । सौधर्म कल्पने विषे अपरिग्रहीत पर्याप्तक देवीना प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थो पल्योपम अंतर्मुहूर्त ऊन उत्कर्ष थो पचास पल्योपम अन्तर्मुहूर्त ऊन। ईसाणे कप्पे देवाण पुच्छा । ईशान कल्पने विषे देवतानो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थो सातिरेक पल्योपम उत्कर्ष थो सातिरेक दो

॥ भाषा ॥

मुहूत्तूणाइ । ईसाणे कप्पे देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं साइरेगं पलिओवम उक्कोसेण साइरेगाइं दो सागरोवमाइ । ईसाणे कप्पे अपज्जत्तयाण देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं ईसाणे कप्पे पज्जत्तयाणं देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं सातिरेगं पलिओवम अंतोमुहुत्तूणं उक्कोसेणं सातिरेगाइ दो सागरोवमाइ अंतोमुहुत्तूणाइ । ईसाणे कप्पे देवीण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं सातिरेगं पलिओवम उक्कोसेण पणपन्नपलिओवमाइ । ईसाणे कप्पे देवीण अपज्जत्तियाणं पुच्छा, गोयमा ! जहन्ने णवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । ईसाणे कप्पे पज्जत्तियाण देवीण पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणं साइरेगं

पञ्चाशत्पल्योपमान्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि । ईशाने कल्पे देवाना पृच्छा, गौतम ! जघन्येन सातिरेक पल्योपममुत्कर्षेत सातिरेके द्वे सागरोपमे । ईशाने कल्पेऽपर्याप्तकदेवाना पृच्छा, गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतोप्यन्तर्मुहूर्त्तम् । ईशाने कल्पे देवाना पर्याप्तकाना पृच्छा, गौतम ! जघन्येन सातिरेकं पल्योपममन्तर्मुहूर्त्तोनम् । उत्कर्षेत सातिरेके द्वे सागरोपमेन्तर्मुहूर्त्तोने । ईशाने कल्पे देवीना पृच्छा, गौतम ! जघन्यत सातिरेक पल्योपममुत्कर्षेत पञ्चपञ्चाशत्पल्योपमानि । ईशाने कल्पेऽपर्याप्तकदेवीना पृच्छा, गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतोप्यन्तर्मुहूर्त्तम् । ईशाने

सागरोपम । ईशाणे कप्पे अपज्जत्तयाण देवाणति । ईशान कल्पने विषे अपर्याप्तक देवनो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त । ईशाणे कप्पे पज्जत्तयाण देवाणति । ईशान कल्पने विषे पर्याप्तक देवतानो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी सातिरेक पल्योपम अन्तर्मुहूर्त ऊन उत्कर्ष थी सातिरेक दोय सागरोपम अन्तर्मुहूर्त ऊन । ईशाणे कप्पे देवीणति । ईशान कल्पने विषे देवीनो प्रश्न उत्तर हे गौतम-जघन्य थी सातिरेक पल्योपम उत्कर्ष थी पचावन पल्योपम । ईशाणे कप्पे अपज्जत्तियदेवीणति । ईशान कल्पने विषे अपर्याप्तक देवीनो प्रश्न उ० हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त । ईसाणे कप्पे पज्जत्तियदेवीणंति । ईशान कल्पने विषे पर्याप्तक देवीनो प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य थी सातिरेक

॥ मूल ॥

पलिउवम अंतोमुहुत्तूणं उक्कोसेणं पणपन्नपलिउवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइ । ईसाणे कप्पे परिग्गहियाण देवीण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण साइरेग पलिउवम उक्कोसेण नव पलिउवमाइं । ईसाणे कप्पे परिग्गहियाण अपज्जत्तियाण देवीण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्त । ईसाणे कप्पे परिग्गहियाण पज्जत्तियाण देवीण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण साइरेग पलिउवम अंतोमुहुत्तूण उक्कोसेण नव पलिउवमाइ अंतोमुहुत्तूणाइ । ईसाणे कप्पे अपरिग्गहियाण देवीण पुच्छा ? गोयमा ! जह

॥ अ० ॥

कल्प पर्याप्तकदेवीनां पृच्छा, गौतम ! जघन्येन सातिरेकं पल्योपममन्तर्मुहूर्त्तोनमुत्कर्षतः पञ्चपञ्चाशत्पल्योपमान्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि । ईशाने कल्पे परिगृहीतानां देवीनां पृच्छा, गौ० ! जघन्येन सातिरेकं पल्योपममुत्कर्षतो नव पल्योपमानि । ईशाने कल्पे परिगृहीतानामपर्याप्तक देवीनां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतोप्यन्तर्मुहूर्त्तम् । ईशाने कल्पे परिगृहीतानां पर्याप्तकदेवीनां पृच्छा, गौतम ! जघन्येन सातिरेकं पल्योपममन्तर्मुहूर्त्तोनमुत्कर्षतो नवपल्योपमान्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि । ईशाने कल्पेऽपरिगृहीतानां देवीनां पृच्छा, गौतम ! जघन्येन सातिरेकं

॥ भाषा ॥

पल्योपम अंतर्मुहूर्त्त ऊन । उत्कर्ष थी पचावन पल्योपम अंतर्मुहूर्त्त ऊन । ईसाणे कप्पे परिग्गहियाण देवीणंति । ईशान कल्पने विषे परिग्रहीत देवीनो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी सातिरेक पल्योपम उत्कर्ष थी नव पल्योपम । ईसाणे कप्पे परिग्गहियाण अपज्जत्तियदेवीणंति । ईशानकल्पने विषे परिग्रहीत अपर्याप्तक देवीनो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । ईसाणे कप्पे परिग्गहियाण पज्जत्तियाण देवीणंति ईशान कल्पने विषे परिग्रहीत पर्याप्तक देवीनो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी सातिरेक पल्योपम अन्तर्मुहूर्त्त न्यून उत्कर्ष थी नव पल्योपम अन्तर्मुहूर्त्त ऊन । ईसाणे कप्पे अपरिग्गहियाण देवीण पुच्छा । ईशान कल्पने विषे अपरिग्रहीत देवीनो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी सातिरेक पल्योपम उत्कर्ष थी पचावन पल्योपम । ईसाणे कप्पे अपरिग्गहियाण अपज्जत्तियाण देवीण पुच्छा । ईशान कल्पने विषे अपरिग्रहीत अपर्याप्तक देवीनो प्र० उ० हे

? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । बंभलोए पज्जत्ताणं पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणं सत्त सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । उक्कोसेण दससागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । लंतए पुच्छा ? गो० । जहन्नेण दससागरोवमाइं उक्कोसेण चउदससागरोवमाइं । लंतए अपज्जत्ताण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । लंतए पज्जत्ताण पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेण दससागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेण चउदससागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । महासुक्के देवाण पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेण चउदससागरोवमाइं उक्कोसेण सत्तरससागरोवमाइं । महासुक्के अपज्जत्ताणं पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसे

ण्यान्तर्मुहूर्तम् । ब्रह्मलोक कल्पेपर्याप्तकाना पृच्छा, गौतम । जघन्येन सप्तसागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्तोनानि उत्कर्षतो दशसागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्तोनानि । लान्तके पृच्छा, गौ० । जघन्येन दशसागरोपमाण्युत्कर्षत चतुर्दशसागरोपमाणि । लान्तकेऽपर्याप्तकाना पृच्छा, गौतम । जघन्येनोत्कर्षत श्चान्तर्मुहूर्तम् । लान्तके पर्याप्तकाना पृच्छा, गौतम । जघन्येन दशसागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्तोनान्युत्कर्षतश्चतुर्दशसागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्तोनानि । महाशुक्रे देवाना पृच्छा, गौतम ! जघन्येन चतुर्दश सागरोपमाण्युत्कर्षत सप्तदश सागरोपमाणि । महाशुक्रे ऽपर्याप्तकदेवाना पृच्छा, गौतम ! जघन्येनोत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्तम् । महाशुक्रे पर्याप्तकाना पृच्छा, गौतम ! जघन्येन चतुर्दशसागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्तोनान्युत्कर्षत सप्तदशसागरोपमाण्य

रोपम अंतर्मुहूर्त थी ऊन । लंतए पुच्छा । लंतकनो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी दश सागरोपम उत्कर्ष थी चउदे सागरोपम । लंतए अपज्जत्ताणति । लंतक देवलोकने विषे अपर्याप्त देवतानो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त । लंतए पज्जत्ताणति । लंतकने विषे पर्याप्त देवतानो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी दस सागरोपम अन्तर्मुहूर्त थी ऊन उत्कर्ष थी अन्तर्मुहूर्त थी ऊन चउदे सागरोपम । महासुक्केदेवाणंति । महासुक्क देवलोकने विषे देवतानो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी चउदे सागरोपम उत्कर्ष थी सतरे सागरोपम । महासुक्के

॥ मूल ॥

णवि अंतोमुहुत्तं । महासुक्के पज्जत्ताणं पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणं चोदससागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं सत्तरसागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । सहस्सारे देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं सत्तरसागरोवमाइं उक्कोसेणं अट्ठारससागरोवमाइं । सहस्सारे अपज्जत्ताणं पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । सहस्सारे पज्जत्ताणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं सत्तरसागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं अट्ठारस सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । आणए देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अट्ठारस

॥ छा० ॥

न्तर्मुहूर्तोनानि । सहस्रारे देवानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येन सप्तदश सागरोपमाण्युत्कर्षतोऽष्टादशसागरोपमाणि । सहस्रारेऽपर्याप्तकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनोत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्तम् । सहस्रारे पर्याप्तकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येन सप्तदश सागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्तोनान्युत्कर्षतो ऽष्टादश सागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्तोनानि । आनते कल्पे देवानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनाष्टादशसागरोपमाण्युत्कर्षत एकोनविंशति सागरोपमाणि । आनते कल्पेऽपर्याप्तकानां देवानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनोत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्तम् । आनते कल्पे पर्याप्तकदेवानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनाष्टा

॥ भाषा ॥

अपज्जत्ताणंति । महासुक्र देवलोकने विषे अपर्याप्त देवतानो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त । महासुक्के पज्जत्ताणंति । महासुक्रने विषे पर्याप्त देवताना प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी चउदे सागरोपम । अंतर्मुहूर्त करि ऊन उत्कर्ष थी सतरे सागरोपम अंतर्मुहूर्त करि ऊन । सहस्सारे देवाणंति । सहस्रार देवलोकने विषे देवतानो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी सतरह सागरोपम उत्कृष्ट थी अठारे सागरोपम । सहस्सारे अपज्जत्ताणंति । सहस्रारकल्पने विषे अपर्याप्त देवतानो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त । [illegible] पज्जत्ताण देवाणंति । सहस्रारे कल्पने विषे पर्याप्त देवताना प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य थी सतरह सागरोपम अन्तर्मुहूर्त ऊन उत्कर्ष थी अठारे सागरोपम अन्तर्मुहूर्त ऊन । आणए कप्पेति । आनतकल्पे देवताना प्रश्न उ० हे गौतम जघन्य थी अठारे सागरोपम उत्कृष्ट उगणीस सागरोपम ।

ण्णेणं तेवीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । हिट्ठिममज्झिम गेविज्जदेवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं तेवीस सागरोवमाइं उक्कोसेणं चोवीस सागरोवमाइं । हिट्ठिममज्झिम अपज्जत्तयदेवाण पुच्छा, गो० ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । हिट्ठिममज्झिम पज्जत्तदेवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं तेवीस सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेण चोवीस सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । हिट्ठिमउवरिमगेविज्जदेवाण पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेण चउवीस सागरोवमाइं उक्कोसेण पणवीससागरोवमाइं । हेट्ठिमउवरिमगेविज्जदेवाण अपज्जत्ताणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । हेट्ठिमउवरिमगेवि

तुर्विंशतिसागरोपमाण्युत्कर्षतः पञ्चविंशतिसागरोपमाणि । अधस्तनोपरितन ग्रैवेयकदेवानामपर्याप्तानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनोत्कर्षतः

हेठ्ठमहेठ्ठिम ग्रैवेयकना देवतानो प्रश्न उ० हे गौ० जघन्य थी पिण तेवीस सागरोपम उत्कर्ष थी पिण चोवीससागरोपम । हेठ्ठिमहेठ्ठिम अपज्जत्तदेवाणंति । हेठ्ठिमहेठ्ठिम ग्रैवेयकने विषे अपर्याप्त देवतानो प्रश्न उ० हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । हिट्ठिमहिट्ठिमगेविज्जदेवाण पुच्छेति । हेठ्ठिममध्यम ग्रैवयकना देवतानो प्रश्न उ० हे गौतम जघन्य थी पिण तेवीस सागरोपम उत्कृष्ट थी पिण चोवीस सागरोपम । हेट्ठिममज्झिम अपज्जत्तदेवाणंति । हेठ मध्यम अपर्याप्त देवतानो प्रश्न उ० हे गौतम । जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । हेट्ठिममज्झिम पज्जत्तदेवाणंति । हेठिम मध्यम पर्याप्त देवतानो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी तेवीस सागरोपम अन्तर्मुहूर्त्त ऊन उत्कर्ष थी चोवीस सागरोपम अन्तर्मुहूर्त्त ऊन । हिट्ठिम उवरिमगेविज्जदेवाणंति । हेठिम उपरिमग्रैवेयक देवतानो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी चउवीस सागरोपम उत्कर्ष थी पचविंशति सागरोपम । हेठिम उवरिमगेविज्जदेवाण अपज्जत्ताणंति । हेठिम उवरिमग्रैवेयक देवता अपर्याप्ता नो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । हेठ्ठिमउवरिमगेविज्जदेवाण पज्जत्ताणं पुच्छत्ति । हे ठ्ठमउपरिम ग्रैवेयकना पर्याप्त देवतानो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी चोवीस सागरोपम अन्तर्मुहूर्त्त ऊन

ज्जदेवाण पज्जत्ताण पुच्छा, गोयमा! जहन्नेण चउवीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं पणवीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं। मज्झिमहेट्ठिमगेविज्जदेवाण पुच्छा, गोयमा! जहण्णेण पणवीस सागरोवमाइं उक्कोसेण छव्वीस सागरोवमाइं। मज्झिमहेट्ठिमगेविज्जदेवाण अपज्जत्ताण पुच्छा? गोयमा! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं। मज्झिमहेट्ठिमगेविज्जदेवाणं पज्जत्ताण पुच्छा, गोयमा! जहण्णेण पणवीस सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेण छव्वीस सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं। मज्झिम२ गेवि

र्यान्तर्मुहूर्तम्। अधस्तनो परितनग्रैवेयकदेवानां पर्याप्तानां पृच्छा, गौ०। जघन्येन चतुर्विंशतिसागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि उत्कर्षेण पञ्चविंशति सागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि। मध्यमाधस्तनग्रैवेयकदेवानां पृच्छा, गौतम। जघन्येन पञ्चविंशतिसागरोपमाण्युत्कर्षत षड्विंशति सागरोपमाणि। मध्यमाऽधस्तन ग्रैवेयकदेवानामपर्याप्तानां पृच्छा, गौतम। जघन्येनाप्युत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्त्तम्। मध्यमाधस्तनग्रैवेयकपर्याप्त देवानां पृच्छा, गौतम। जघन्येन पञ्चविंशतिसागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि उत्कर्षेण षड्विंशतिसागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि। मध्यममध्यम ग्रैवेयकदेवानां पृच्छा, गौतम। जघन्येन षड्विंशतिसागरोपमाणि उत्कर्षेण सप्तविंशतिसागरोपमाणि। मध्यममध्यमग्रैवेयके अपर्याप्तानां दे

उत्कर्षे थी पचीस सागरोपम अन्तर्मुहूर्त्त ऊन। मज्झिमहेट्ठिमगेविज्जदेवाणत्ति। मध्यम हेट्ठिमग्रैवेयक देवतानो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी पचीस सागरोपम उत्कर्षे थी छवीस सागरोप। मज्झिम हेट्ठिमगेविज्जग अपज्जत्तदेवाणति। मध्यम हेठिम ग्रैवेयकना अपर्याप्त देवतानो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्षे थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त। मज्झिमहेट्ठिमगेविज्जदेवाण पज्जत्ताणति। मध्यम हेठिम ग्रैवेयकना पर्याप्त देवतानो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी पचीस सागरोपम अन्तर्मुहूर्त्त ऊन उत्कृष्ट थी छवीस सागरोपम अन्तर्मुहूर्त्त ऊन। मज्झिम २ गेविज्जदेवाणति। मध्यम २ ग्रैवेयक देवताना प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी छावीस सागरोपम उत्कर्ष थी सत्तावीस सागरोपम। मज्झिम २ गेविज्ज अपज्जत्तदेवाणति। मध्यम२

पुच्छा , गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । उवरिममज्झिमगेविज्जगदेवाणं पज्जत्ताणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण एगूणतीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । उवरिम २ गेविज्जगदेवाणं पुच्छा ,गोयमा ! जहन्नेणं तीसं सागरोवमाइं उक्कोसेण एक्कतीसं सागरोवमाइं । उवरिम २ गेविज्जदेवाण अपज्जत्ताण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । उवरिम २ गेविज्जदेवाण पज्जत्ताण पुच्छा , गोयमा जहन्नेणं तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं

गौतम ! जघन्येनैकोनत्रिंशत्सागरोपमाण्युत्कर्षत स्त्रिंशत्सागरोपमाणि । उपरितन मध्यमग्रैवेयकदेवानामपर्याप्तानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्त्तम् । उपरितनमध्यमग्रैवेयकदेवानां पर्याप्तानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनैकोनत्रिंशत्सागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्त्तोनान्युत्कर्षत स्त्रिंशत्सागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि । उपरिमोपरिमग्रैवेयकदेवानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येन त्रिंशत्सागरोपमाण्युत्कर्षत एकत्रिंशत्सागरोपमाणि । उपरिमोपरिमग्रैवेयका पर्याप्तकदेवानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्त्तम् । उपरिमोपरिमग्रैवेयकदेवानां पर्याप्तानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येन त्रिंशत्सागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि उत्कर्षत एकत्रिंशत्सागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि । विजयवैजयन्तजयन्तापराजि

हूर्त । उवरिममज्झिमगेविज्जगदेवाण पज्जत्ताणति । उपरिममध्य गरेवेयकना पर्याप्त देवता नो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी एगुणत्रीस सागरोपम अंतर्मुहूर्त्त ऊन उत्कर्ष थी त्रीस सागरोपम अन्तर्मुहूर्त्त ऊन । उवरिम २ गविज्जगदेवाणति । उपरिम२ गरेवेयकना देवतानो प्रश्न उ० हे गौतम जघन्य थी त्रीस सागरोपम उत्कर्ष थी एकत्रीस सागरोपम । उवरिम २ गेविज्जगदेवाण अपज्जत्ताणति । उपरिम २ गरेवेयकना अपर्याप्त देवतानो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । उवरिम २ पज्जत्तदेवाणति । उपरिमोपरिम गरेवेयकना पर्याप्त देवतानो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी त्रीस सागरोपम अंतर्मुहूर्त्त ऊन उत्कर्ष थी एकत्रीस सागरोपम अन्तर्मुहूर्त्त ऊन । विजयवेजयतजयतापराजितेसु देवाणति । विजयवेजयन्त

उक्कोसेणं एक्कतीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । विजयवेजयंतजयंतअपराजिएसुणं भंते देवाणं केवइ य कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं एक्कतीसं सागरोवमाइं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं । विजयवेजयंतजयंतअपराजितदेवाणं अपज्जत्ताणं पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । विजयवेजयंतजयंतअपराजितदेवाणं पज्जत्ताणं पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणं एक्कतीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । सव्वट्ठसिद्धगदेवाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! अजहन्नमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता । सव्वट्ठसिद्धगदेवाणं अपज्जत्ताणं ॥ मूल

तेषु भदन्त ! देवानां कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनैकत्रिंशत्सागरोपमाण्युत्कर्षतस्त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि । विजयवैजयन्तजयन्तापराजितदेवानामपर्याप्तानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्त्तम् । विजयवैजयन्तजयन्तापराजितेषु पर्याप्तदेवानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनैकत्रिंशत्सागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि उत्कर्षतस्त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि । सर्वार्थसिद्धकदेवानां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! अजघन्यानुत्कर्षेण त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि स्थितिः प्रज्ञप्ता । सर्वार्थसिद्धकदेवानामपर्याप्तका ॥ अ०

अपराजित विमानना देवतानी प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी एकत्रीस सागरोपम उत्कर्ष थी तेत्रीस सागरोपम । विजयवेजयंतजयंत अपराजितदेवाणं अपज्जत्ताणंति । विजय वेजयंत जयंत अपराजितना अपर्याप्त देवतानो प्र० उ० हे गौ० जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । विजयवेजयंतजयंतअपराजितदेवाण पज्जत्ताणंति । विजय वेजयंत जयंत अपराजित विमानना पर्याप्त देवतानो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी एकत्रीस सागरोपम अन्तर्मुहूर्त्त ऊन उत्कर्ष थी तेत्रीस सागरोपम अन्तर्मुहूर्त्त ऊन । सव्वट्ठसिद्धगदेवाणं भंते केवइयंति । सर्वार्थसिद्ध विमानना देवताना ॥ भा

१ ।, एवं सूर्यादिविमानेष्वपि भावनीयं । इतिश्री मलयगिरिविरचितायां प्रज्ञापनाटीकायां चतुर्थं स्थित्याख्यं पदं समाप्तं ॥ ४ ॥
तदेवं व्याख्यातं चतुर्थपदमिदानीं पञ्चममारभ्यते तस्य चायमभिसम्बन्धः, इहानन्तरपदे नारकादिपर्यायरूपेण सत्त्वानामास्थितिरुक्ता इहत्वौ
दयिकक्षायोपशमिकक्षायिकभावाश्रयपर्यायावधारणं प्रतिपाद्यते तदादावेवेदं सूत्र-कइविहा णं भंते । पज्जवा पन्नत्ता इति ॥ अथ कतिविधा
येन गौतमस्वामिना भगवानेवं पृष्टः? उच्यते-उक्तमादौ प्रथमपदे प्रज्ञापना द्विविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा-जीवप्रज्ञापना अजीवप्रज्ञापनाचेति, तत्र जी

पुच्छा, गोयमा! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । सव्वट्ठसिद्धदेवाणं पज्जत्ताणं केवइयं कालं ठिई
पन्नत्ता ? गोयमा! अजहन्नमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ठिई पन्नत्ता । पन्नव
णाए भगवतीए चउत्थं ठिइपदं सम्मत्तं ॥ ४ ॥ कइविहा णं भंते! पज्जवा पन्नत्ता ? गोयमा!

ना पृच्छा, गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्त्तम् । सर्वार्थसिद्धकदेवानां भदन्त । पर्याप्तकानां पृच्छा, गौतम । अजघन्यानुत्कर्षेण त्र
यस्त्रिंशत्सागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि स्थितिं प्रज्ञप्ता ॥ इति श्रीप्रज्ञापनासूत्रसंस्कृतानुवादे रामचन्द्रगणिविनेयेन नानकचन्द्रेण विरचित
चतुर्थं स्थितिपदं सम्पूर्णम् ॥ ४ ॥ कतिविधा भदन्त । पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम । द्विविधाः प्रज्ञप्तास्तद्यथा-जीवप

र्वार्थसिद्ध विमानना अपर्याप्त देवतानी हे भगवन् केतला कालनी स्थिति कही प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त नी कही
सव्वट्ठसिद्धदेवाणं पज्जत्ताणंति । सर्वार्थसिद्ध विमानना पर्याप्त देवतानी केतला कालनी स्थिति कही प्र० उत्तर हे गौतम अजघन्य थी अनुत्कर्ष थी
तेत्रीस सागरोपम अन्तर्मुहूर्त्त न्यून नी कही ॥ एतले प्रज्ञापना नो चौथो स्थिति पद पूर्ण थयो ॥ ४ ॥ चतुर्थ पदने विषे नारकादि पर्या
यरूप थी जीव नी स्थिति कही इहां पंचम पदने विषे तो औदयिक क्षायोपशमिक क्षायक भाव आश्री पर्याय नो अवधारण कहेछे—कति विहा ण
भंतेति । केतले भेदे हे भगवन् पर्याय कह्या प्रश्न उत्तर हे गौतम बे प्रकारना कह्या ते कहेछे—जीव पर्याय अने अजीव पर्याय। जीवपज्जवा य भंतेसि। जी